

हिन्दी-मुहावरे

(बप्यक्षमः संकलम एवं स्टाहिस्तिक प्रयोगः)

डाक्टर प्रतिभा अप्रवाल एक ए० छ। जिल



0

शकासक ।

भी शिवेन्द्रवाच क्रीकीसात मुपरिन्टेन्डेन्ट, कलकत्ता युविवर्धिटी प्रेस ४८, हाजरा सेड, कलकता-१६

 सर्वाधिकार सुरक्षित १९६९
 प्रतिभा क्येपाल
 भी विद्यायतम् कालेक क्रम्बन्ताः DCU 3479

पेंचर - यह)

मुद्रक : अजन्ता फाईन जार्ट प्रेस. २०, बास्भुकुन्द वक्कर रोड. कुळकता-७ 080 c. U. 266/5,



पूज्य वावूजी को



आमुख

मुक्ते हारिक प्रमन्तना है कि लम्बे व्यवधान के प्रमान बन्दना विस्वविद्यालय पूना हिन्दी पत्थी का प्रकाशन कर रहा है। इस यात्रना का स्वारम्भ कान्दर प्रतिभा अववान एक एक है। फिला के द्याप-प्रवत्य हिन्दी-मुहाकरें में हो रहा है। यह प्रवत्य बन्दना विस्वविद्यालय की हो। फला उपाधि के लिए स्वोक्त हुआ था एवं शोच प्रवन्य के परीहाकों ने पत्य की सराहण करते हुए इसके प्रमान की भी मस्तिन की यो। भारताय में स्वातकांसर हिन्दी-फिला का प्रारम्भ सर्व प्रथम कल्कता विस्वविद्यालय हारा पन् १६१६ में किया गया था। इसका थेय मुप्तिबद्ध विद्यायिह स्वर्तीय गर ब्राह्माय नृत्यति को है। बीववी गरी के तीमरे दशक में विद्यविद्यालय द्वारा हिन्दी के कई महत्त्वपूर्ण पत्य प्रवाशित किए एए जिनका समावेद और निर्धारण स्वातकांत्रर पाद्यक्रम में विधिन्त विद्यविद्यालयों द्वारा किया गया। प्राप्तः बार हानों के पद्यान कल्कता विद्यविद्यालयों के प्रवाद प्रथम कर रहा है और मुक्ते बिद्याय है कि हिन्दी साहित्य के उच्चस्तरीय अध्ययन की दिया में विध्या गया हमारा यह मनुष्यास एवं पोग्दान सर्व साधाण सभा बिद्यवर्तनों हारा समादन होता।

इसेन् गयं सेन

धोपंचमी—संबद् २०२१ सिवंट हाउस, कलकता क्याचाम्यं कत्रवसा विश्वविद्यालय



प्रकाशकीय विवृति

हा- प्रतिमा अग्रवान है गांच प्रवन्त किया मुहाबर एक अव्यान" पर कण्याता विश्वविद्यालय ने उन्हें हो- फिल- को ज्यावि प्रशान की है। यह प्रकल्प हिन्दी मण्या और माहित्य के अध्यावन की दिशा में एक मीकिक प्रयान है। भीजिक इसलिए कि जिस वैक्षानिक हिंदि से हा- अग्रवाल ने यह अध्यान प्रस्तृत किया है, यह ग्रवाल नवीन है। इक्ष्मी महाना भी स्वतः मिद्ध है। हिन्दी मृहावरों के प्रारक्त्य, विकाश, प्रयोग, अध्यावन, आकार, व्योक्शन, अर्थव्यकता और ऐतिहास्त्रक विकास के साध-साथ उनको साधायन विवेचताओं का भी इसमें विवेचन किया ग्रया है। हिन्दी-महावरों के संगत का कार्य तो अनेक विद्यानों ने किया पर उनके साधिश्यक प्रयोग और वर्षावरण का अध्यावन अभी तक अधिता रहा। हा- ओमप्रकाश ने अपने शीध-प्रकल्य "मृहावरा घोष्मीसा" ये इस और स्तत्य कार्य विवाद है। हा- प्रतिकरण और संग्रह, हिन्दी मुहावरों के अध्यावन की वैक्षानिक प्रदेशि अपनायों है। यहने के तीनो अभी भीमका, क्यीकरण और संग्रह, हिन्दी मुहावरों के विभिन्न प्रशो के सम्यक विवेचन है।

प्रस्तृत शत्य का सर्वाधिक परस्थाण अंत है, मुहाबरों का संकल्पन, जिसमें हिन्दों साहित्य में प्रयुक्त प्रायः १.,००० महावरों वो संप्रहोंत किया गया है। कर्वार से लकर गन् ११६० तक की प्रकाशिन रक्षताओं में में चुनों हुई १४३ पुस्तकों से लिए एए पुरायरों के अर्थ, प्रयोग एवं प्रयंग निर्वेश करने वाला ग्रह अंश अस्पत्त क्रम्यां में हैं। हिन्दों मुहाबरों के सोन्दर्भ एवं मुहम अर्थ को स्मार करने के साथ-ग्राय पण्यात्म लेखकों हार। प्रयुक्त होने के कारण उनकों प्रायमित्रकों और प्रयोगशीनता भी इस अद्य के हारा पृष्ट होती है। मुहाबरा मद्ध का क्ष्मी है। अस्पति हैं निर्मा से प्रयोग पर अधिकार प्राप्त हों अस्पति हैं निर्मा से पुरायरे माया और सार्वाधित प्रयोग का अस्पास, जिससे उसके प्रयोग पर अधिकार प्राप्त हों गरे को भाषा की सुहाबरे माया और समृद्धि में उनका पायदान कम नहीं होता। मुहाबरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्थासीयगत्त भी अपना वीजन्य समृद्धि में उनका पायदान कम नहीं होता। मुहाबरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्थासीयगत्त भी अपना वीजन्य समृद्धि में उनका पायदान कम नहीं होता। मुहाबरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्थासीयगत्त भी अपना वीजन्य समृद्धि में उनका पायदान कम नहीं होता। मुहाबरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्थासीयगत्त भी अपना वीजन्य समृद्धि में उनका पायदान को साम्राणिक और प्रयुक्त क्रमित के सोनक कौर प्रमाण है। सास्तिक रोति-रिवाज, स्हत-सहन एवं उसकी कन्या और सस्कृति मी मुहाबरों में मुन्यान होती हैं। सास्तृतिक और साम्राणिक रोति-रिवाज, स्हत-सहन एवं उसकी कन्या और सम्बन्धित अथ्योन को एक वैज्ञानिक मुम्बित प्रस्तृत करने हैं। महापंडित राहुक साहत्वायन के रहनों में 'सनार में मन्द्रों में अर्थ विचारों को बहे क्रमुक्त से देता है, सम्मा है तथा सार बार अनुक्त किया है, उत्तर क्रम्यों में साम है। यह सम्बन्धित सम्बन्धित स्थ इनमें प्रतिकृत्य होता है। पर सम्बन्धित सम्बन्धित स्थ हमें हमें स्थान है। यह सम्बन्धित स्थ इनमें प्रतिकृत्य हमा है। पर सम्बन्धित स्थ इनमें प्रतिकृतित होता है। पर सम्बन्धित स्थ हमें हमें सम्बन्धित स्थ हमें हमें सम्बन्धित स्थ हमें स्थान होता है। यह सम्बन्धित स्थान हमें हमें सम्बन्धित स्थ इनमें प्रतिकृति हमा है। पर सम्बन्धित सम्बन्धित स्थान हमें हमें स्थान हमें हमें स्थान हमें हमें सम्बन्धित स्थान हमें हमें स्थान हमें स्थान स्थान हमें हमें स्थान हमें स्थान स्



दशका प्रमाण है। मुहायर वह वहां होते. परिवर्धित परिवर्ध बानावरण और युव स भी अपना पोपण बाले रहते हैं। प्रत्येक भाषा में ऐसे अनक पुहाबर प्राप्त होते हैं, जो परम्परा को होन्दि से हो नहीं पूर्व की होन्दि से भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। अनक पुहाबरों का विषयणत और संदर्भणत बर्च भी विवेच्य है जैंगे— 'देही का दूच याद जा जाना" ''नानी याद आना" ' परे को पार साह महार" आदि ऐसे ही पुहाबरों है। लोकान्ति, मुभावित सुन्ति और कहावत से मुहाबरों का क्या सम्बन्ध है और किम प्रकार उनमें प्रयोगगत मिसता आगी है हमका कथ्ययन भी अत्यन्त उपयोगी है। महाबरों का प्रयोग प्रायः देश काल और व्यक्तियत हम्या करना है और इनके प्रयोग का भीवित्य भी इन पर निभर करता है। रही अनी आहि से प्रम्वन्तित कियो मुहाबरों की प्रयोगगत विविधता आक्ष्म में दाल देशों है। हाथ पनावना ' एर पनाइना' कान पनाइना' पूर वर भागा' पूर्व पदना'', 'मूंह पूलना' आदि, मूहाबरों के प्रयोग और अर्थ में आकाल-पालाव का अन्तर है, ठीक उसी प्रकार ''लाल-पोला होना'', हरा होना'', 'स्याह हाना'', 'युवेह होना' आदि से। 'हरा होना'', 'स्याह हाना'', 'युवेह होना आदि से।

पदि भारतीय भाषाओं के मुहाबरों का त्यनात्मक अध्ययन किया जाय तो उनमें अन्तिनित अर्थनत एकता यह प्रमाणित करेगी कि इन भाषाओं में बाह्य विविधना के सध्य सी इस शृष्टि से एक विविध साम्य है। संस्तृत की "गृष्ठलिका प्रवाह" जैमी अनेक कामीतियों से लेकर साम्तीय भाषाओं में प्रयुक्त मुहाबरों का विकासात्मक इतिहास भी कम रोचक नहीं।

हिन्दी के जिन विधिष्ट लेखकों ने अवनी रचनाओं ये पुशावरों का प्रयोग किया है, उनको आपा कीठी का पदि इस द्वित से अध्ययन किया जाय तो वह भी सहस्वपूर्ण होया। जेमचन्द्र, हरिओध, विवपूत्रन महाय, अमृतलाल नापर, फणीदवरनाथ "रेणु" आदि कुछ ऐसे लेखक हैं जिनके क्ट्रांस्व को गरिया और प्रमुखिणुना का एक कारण उनको भाषा का मृहावरेदार होना है। आंचलिक रचनाओं और एचनाओं में स्थानीय रच : Local Colour : लाने के लिए पुहाबरे सशक्त माध्यम है। शिवपूत्रन सहाय का "देहानी दुनिया" इस रिप्ट में अनत्य प्रन्य है। हिन्दों पुहाबरों के अध्ययन का एक और पक्ष है और वह है जनके दोषों का अध्ययन। ये दोष क्याव और प्रयोगान दोनों होते हैं। बही-कहीं आधुनिकोक्षरण के द्वारा भी इनका प्रयोग आमक और अधूद्ध हो आता है, जैसे "राज भर खाती" का प्रयोग कुछ वर्षों के बाद अमेहीन हो आयेगा।

हिन्दी में अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी मुद्दावरों के संकारन का कार्य किया है। इस कार्य के दो क्य-मिलते हैं—हिन्दी मुद्दावरे और हिन्दुस्तानी मुद्दावरें। एस० डब्ल्यू फासेन और पं॰ मिनका प्रसाद वाजपेयी ने अपने संकारनों को 'हिन्दुस्तानी' नाम दिया है। पालन इन सबसे अपनी है। उनकी मृत पुस्तक अपेजी में थी, जिसका 'नेक्सल कुक ट्रस्ट आफ इण्डिया" द्वारा हिन्दी संस्कारण अब प्रकाशित हो गया है। हिन्दी मुद्दावरों के प्रमुख संकारन इस प्रकार है।—

१-- एस० हज्ज्यू • फालेन — 'ए दिस्छनरी आफ दिन्दुस्तानी प्रावन्ते" : १००४ : २-- रामदहिन मिध--हिन्दी भूहाबरे : १६२४ :



- ३ -- बहादुर चन्द्र--लोकंटियां और मृहावरें : १६३२ :
- ४-अम्बृशायन -- हिन्दी बुहाबरा कोप : १६३५ :
- प्र आए० त्री० सिरहिन्दी-- हिन्दी मुटाबरा गण : १६३६ :
- ६ बहास्थरूर दिवकर वर्षा ब्रिन्दी-पृहावरे : १६३८ :
- ७ अस्त्रिका प्रसाद बाजपेयी हिन्दुस्तानी मुहाबरे : १६४० :
- ८ हार भोलामाथ निवासी हिन्दी महावस काश दूसरा संस्कारण : ११६० :

हा॰ अपनान के परोक्षकों ने उसके शोध-प्रकास को अकाशित करने का सुधाव कारणाली विद्याविद्यालय को दिया। इस विद्वानों को सम्मति में दा॰ अपनान का यह शोधकार्य में विद्या में दिस्ती मुहावरों के वैज्ञानिक अध्यक्त की निश्चित दिशा परनान करने में सपान होया। कारणाला विश्वविद्यालय के लिए हमें का पिद्रम है कि अनेक वर्षों के अन्तार ऐसे महत्त्वपण और उपनानों कर्यों हो वह पूनः हिन्दी प्रकाशन का शुभारम्भ कर रहा है। हम कारणाला विश्वविद्यालय के उपनानों कारणाल है। हम कारणाला विश्वविद्यालय के उपनानों हाल सन्तेन्द्रनाच सेम, एम० ए० पीएम० हों। एवं अन्य अधिकारियों के प्रति करण है जिल्लान हमके प्रकाशन में उसे मुकर सहयोग प्रदान निज्ञा । इस वस्त्र का मुद्रण आहत्ता कारणा कारणा हों में स्वान करने मुद्रण से स्वान करने से सम्मत्त्र और संचालक औ प्रानिक वन्त्रावन को प्रमाणाई देश है, जिल्लान इसके मुद्रण में माध्य प्राप्त और सन्तराह और संचालक औ प्राप्तिक वन्त्रावन को प्रमाणा हिस्साई। हमारा विद्यास है कि सुधी साहित्य क्षणान इस पोजना और वन्त्र का समन्तित स्वानत करेगा।

हिन्दी-विभाग कलकता निश्चनिकामय कश्चकता श्री पंचर्मी - प्रथम २०२४

करवाणमर सोदा



प्राक्कथन

भारते व वृथ्वर राज्यर वृद्धवार तेन के निर्देशन एवं आदीओर की हाया में ही यह कार्य प्राप्तन हुआ है, उन्हें भेरा नमन है। भी कार्याणमन नोंड़ा, अध्यक्ष हिन्दी विश्वात, कलकता विश्वविद्यालय की आधारी है जिनका प्रीरमाहन थीर वरामर्श बहुत मृत्यवान रहा है। कलकता विश्वविद्यालय की में अनुवृद्धित है जिसने इस गोय-प्रकृष की प्रकाशित करने का निर्देश विद्या और इस द्वार मुखे आदित्य के विद्याविद्यों के एक वरे समृद्धाद के ममश्र आने का स्वस्तर प्रदान किया। उन सभी कल्पणों की भी हतक है जिनमें इस सन्वन्य में बरावर क्यों की है और जिनका प्रयोग्य समय एवं शक्ति मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

श्री विकासतम् कालेज ११, लाई सिम्हा रोड कलकत्ता-१६

प्रतिमा अप्रवाल



अनुक्रमणिका

तिन्दी मुहाबरे--- एक अध्ययन पर्योकरण

शंजा-किया दुस्त मुहाबरे

गंजा युक्त मुहाबरे

थियोपण शंजा-किया युक्त पुहाबरे

थियोपण-संज्ञा एवं वियोपण युक्त मुहाबरे
वियोपण-संज्ञा एवं वियोपण युक्त मुहाबरे
किया युक्त मुहाबरे

समस्मिल-यह युक्त मुहाबरे

सुहाबरे की तरह प्रयुक्त यूरे वाक्य
विविच मुहाबरे

अप्रयुक्त मुहाबरे

अप्रयुक्त मुहाबरे

संदेत-सासिका संकारण वर्ष साहित्यिक प्रयोग एक से एकडीत तेवन ने एक सी नतासी

रेड में एक वो वचह

एक वो समझ व एक वो मसाइम

एक वो समुद्रस स एक को वैनोस

एक वो समुद्रस स एक को वैनोसी

एक को बेनामीय स एक मो वैनामीस

एक वो प्रवास स एक वो उनस्ठ

एक वो प्रवास स एक वो वीवठ

एक वो वीवठ से एक वो विद्रस्तर

एक वो उनस्तों से एक वो समुद्रस्तर

एक वो उनस्तों से एक वो समुद्रस्त



हिन्दी मुहावरे—एक अध्ययन

मुहाबरों का बारम्भ एवं विकास

भाषा अधिकातिन वह सर्वाधिक एकवन माध्यम है। मावक माध्यम एवं विकास की विधिक्त विवित्ति पर कृष्टि बालने से स्पष्ट होता है कि सन्दर्भ के नाब ही बाब प्रमाह अधिकार्यका के मानवार्य कर और विकास होता रहा है। सात्रव बीवन की प्रारंतिक रिवर्ट में प्रत्ये पानी का विकास एक विकास मानी पार्शित विकास के वान स्वृत अनुभूतियों को पह स्थ्य देश वे बद्धार कर देश वा । जारीरिक विशादों एवं दक्षिणे विदेश व्यक्तियों के अनुवास एवं मामकृद के द्वारा पादिम मानव जरने इच-विषाद के अगर को अगर काना था। आफा एवं वाणी का बरतान मानव विकास की एक महत्वपूर्ण प्रदेश है । बारहरे की प्रतिक के पूर्व महत्व प्रतिश नाया, विक-प्रत्या एवं ध्यत्यान-करण के आधार पर अपनी बान करणा था। कीरे-बीरे उसके विकित जानुकों के किए कुछ व्यक्ति की निर्धारित किया जो कालांगर में उन्हीं प्रणी में एड़ हो गई और इस जनार इन सार्थर शब्दों की नाप पहीं की आज आया की सम्पत्ति है। कानि से वर्ष, तस्त एवं बास्य तक की बाधा की शावा बाजव-ओवन के बाव-साथ करते बढ़ती रही और धात मानव ने अपनी देश शांकित की एकता विकासित कर विका है कि ब्यून की बना, मुख्य से बुध्यनर माना, अन-भतियों एवं विवास को वह अवन कुछवता एवं पारित के साथ, एक नहीं सर्वत इस से ब्यन्त करते में बावस है। अर्थ-व्याप्ति के द्वारा उसमें साथ-पश्चि को अर्थारवेद क्याबा है, विध्वाप क्याबा के प्रयोग हाम वर्ध आपा को भोदये, माध्ये एवं भोदिनिया प्रवान को है, यहां को गाँव विश्वित गाव में गाँव कर उपने पूर्व मोदक एवं रावध्य बनाया है। यह क्रम हजारी हतारों क्या वह प्रकार प्रता ना, प्रशा ने न क्षेत्र में मोचा न अवा, वह लो सहज स्थामासिक स्था ने पारते मन के प्रदेशार अवितः के वितर प्रधानमूर्ण देन ने स्थान करेशा गता । पान कह बनाना नहिन है कि दिस मामय मनदव प्राचा के व्यक्ति यहन हुना एवं इसके दूरत नायों पर विकेशन करने की और प्रवृत्त हुना fing enmi fafene ? far feit fe mitel ga gunt und bie ein niene ein ant in mir faner-fauft fin क्या या । भाषा को समूद्र, शस्त्रक एवं प्रकारणाओं कराने वानी विकित्त प्रकारण में महानरा का वपना निकित्त स्पान है। बाब्द की तीकी कांच्याची अधिया, सकता और कांच्या में लगाना पर जावारित वह अधिकांवन-प्रकार, शुक्त या बाव्यात के साव्यम से बाँचव्यक्ति को एड अन्दायक, एक डीका क्रीकापन एवं मार्थिकता प्रदान करना है । महाकरों का उपनक्त एवं संग्रिय प्रयोग प्राथा को तथा हुए, नक्ष प्रीप्त तथा नदी प्रक्ति हैता है युवं स्टब्स शाहा औ बनाया है।

पाक प्रतिना प प्रतिन र र र १ १ वर्ष स्वयं स्वयं ना बुद्ध शना है। अना पाई को सुनन ही हमार सामन द्वार दिल्ल कोच का विश्व देवर क्षेत्र है। इनरों की बारेन का है। या रंग कीमधील कीम बाद्धि अर्थाह Tr अवन्य मार्ग्य देशेत-अवा स श्रादेशके हैं। १ ए मार्ग्य वाला संभा के वर पर्य अने म मानव्य देश कर अव मारु है और सम पर पत्रा है देन के के प्या रहू र यह से महिला के पत्र में महिला माना अन्ति कर दन है। यह भाग बांध अधिया पर पर उन रेन है जा पाछ पर राज के हैं और हो उन समाय अध्या है पानतलायों में ध्वानित है। इसो व स्थान पर हर हमा र माराप ने बनन है हहा। या तथापन या वाधा पुर खड़ी होता है। पूर्व हारत के अध्यार पर तम हारतक है कि रास मारता है जा राष्ट्रा शतका है जल कथा है यह देखिल हुने वृद्धार म दान देशी है। पूरा यह बहु मारा हुनार कर करा है पान पर हु देशक र में है पीर बहु बहा रवहर बहुनी है कि सभा म बन्ता के जागाय प्रम नजाय: यस अजवा में बटा करते प्राची संगता स है। अगढ यस से हैं। बह यह करर कर्म करते हैं। साच कर समान मना र अवकर के ते को उसने प्रोग प्राप्त प्रचारण में क्वान का जिला इत्या में राम गार है। जनमा मा अर मा वा वा पान विश्व वा राम हा है देशी व्यवसा क द्वारा प्राथम भागा । है। ता पर वास्ता विकास करती हर पुरिवर्ता के तर होत्रव कि वर रह तक है के ते कि कि कि वर में मिल देव नहीं की देवा है कि व न देर हो तर भारत्य । वस 🐪 है अप र १४ वरत्य पर व वह केर प्रत्य क्षा कि विकास क्षतिक के दृश्या अपने बात र अधिक क्षतिक कृतिक करते हैं। पान पत्र का कहते हैं कि क्षतिक मुख्य की gung migramet ein unt ? na gin ein fie mi fin. 3 e. je frein bi gun 49 fent क्रियम द्रम प्रांत कर याप तर दर दन दन - है कि य प्रवश्नाः महोता कृत् को व र ममान वह - महत्त्व म नात प्रांते कि यह मनत्य की मनत्र रव परिवर्त प्रवास तारे हैं कि वह अल्पन बान की बढ़ा भर कर बहुना कहा है। अह ह हमाना केमा ही संभावत कांध्र करना और करण पर देशमांका तम प्राटन है कर कि उसे बान का मूत्र तुन मा कारत। उसम् कृष्टिक मी में तक चामण्यन गारंग गाँउ गाँउ पार पार अस्ता पार विकास विकास होती हो नहें पान प्रतिक प्रकाशक है । हो है को करके कर ने के कार के सक प्रवास के प्रवास के प्र पाम बाह-काह कर हेंगू देशों प्रवृत्ति से संग्ये हैं अभी देश में अपने हैं अभी वे अस्ति में स्वास्थ्य स्थापन हतान । पुरित क्षित प्राचार के विकास के स्वास । प्राचन से करण प्राच्यानी है। साम संस्थानी कार कर अस्तर दर्श पर्रावद राजनर कर राजना, पर पाचर र अप पास रेग सरवाद है। अवस्य की खुपनी आहित्य अवस्था म मनाय न इम प्रांत्य क प्रदान द्वाराच्या कर राज्या प्रदान पर देश र पान राज्य करते विकित्त । naim agi ? Fr um u unar bi fenfa gu un an gen ann ? fa geret und u u neuen er f. मह अनग बान है कि विभी विकास कर पर कृति व अव क्ष्मव हुआ। मना व र मध्य प्रमान प्रमान प्रमान करते हैं है। दूधने स्वतित हुत्या क्षेत्रत हो कम । । कात समाहि स्वता, न कम किस प्राप्त मन प्राप्त हा अधिनव्यक्ति क्य का प्रवाद शिवा हरता जिल प्रत्य में स्थापन करा अन्त है पर करवाल प्रत्यास । त्यान ए से पहल प्रत्य के क्रमाण मही बिन्तु पर् विकास अववर्ष अहर नाव, इस अविकास का बाच प्रमाण प्रमान राज्यको लेक्स्पनाम प्रमाण गर्व पानव रस्त के साथ इसके पुर्णावित अस्तित्व कर ब्राप्ट इतित करता है।



प्रतिकृति । विकास प्रतिकार प्रतिकार प्रतिकार । अपने विकास स्वाची विकास स्वाची । विकास स्वाची विकास स्वाची । त्रकृतक हमा विकृतिक न भी प्राप्तक सम् । यह पर विकास विद्या है। यह वह के स्वरूप प्रस्ति क्षाप्त की पूर्णिक मण्यतः हिः विकित्स विद्वारणाने सन सावा । पानत्र प्रवेश्य हस्या सर्गतान प्रवास के पान सावा र विभिन्न भवा है देखने में बारण प्रवेशन है का है कि सहरक्षण जनतियान प्रांति ने भीत रहा है। ते प्रांति के सेमनो एक बर लागत प्राप्त हे का है। जिल्लाम प्राप्त कहार का नक्ष्य प्राप्त निम्मार अर्थान है। प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त करूपा मुक्तानात् है पह है। पार्शिय प्राप्त प्रहाशा है। जनकित्य है कार्य है के पूर्व प्रतिकृति विकास स्था अविधान है। कहें होता प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग की में देन प्रयोग है। जा प्रयोग प्रयोग के विधान प्रयोग म महत्त्वरा महत्त्वरा हा हो नहीं सरना । अर्थान प्रतान एक मान्यर के बीच साथ रक्ष मान्य गर । कर बतेत मा का लियार प्रवास अपना रणाड आरहातीत्वादा द्वार कर या बर को सामा रणा करन र और हर दापना दिया में तो बंद ना कर पेटक प्रधान के कहें। यह बहना बहिन है । यह बहिनाई और वर शेवर प्रशेत होते. ह रह है व प्रान्धित पृथ्वर के मादान प्रक्रियात करते सम्भाग कर राज्य है हर रहे पर अधिक पर नाम ह अन्य मा कर्षा ने हुन्तु जनर पर नहश्च है। इस विवेहन व्यक्तिक अर्थ में न न न मेरेफ ले भी मान पर कार का ना पास्त् कता है कि महत्त कोती क्षेत्री हुए पर पाला का एप ब्रावना बाता है। येम हा एक व दिली वर सात पाद न विका दूसर शक् के प्रतास की प्रति हर तह होते हंग्य अजनगर संबद्ध समय तह । यह वाल पर करने वा देश साथ तह ना महार होती है उपनी ही नहर प्रथम प्रकृति किल्लाह मात्रा । अन्य सालगर क्या पाला का धाम प्रजी पाला ववर भा यह रोक होर तहा कर व वा पा पा रा । कारत की पाना की राज्या गायवा के प्राप्ता पर उस उसके अनुमान घर कर छकते हैं।

कभी कभी वह अनर भागा कारणा स बहुत गहरा धीर स्वदर होता है और कभी कम पर होता अस्ट्रम है 'भाषा' अमोन जन भाषा द रामनोरन दानम की रचना कान की स्वदर केल्ला करनवार वृज्यभीक्षम भी द्राविकतर



त्रभाष्या में हुर रहे कीर दायाण प्रजान । याण प्रशास प्रभाव हुए प्रशास कर किया में प्रणास किया में प्रणास कर किया में प्रणास किया में

ित जापूर भी हजार नग म हा र हा है। स्था चान वाच दिन जा बहुत र समूच है और उसके मांच ही महर्म्या व द्वित्र हा द्वित व विकास कर है । अस्त विकास स्वत व वक्षा स्वत हर स्वास स्वति स्वति। le et unger geng a feiffe i gire bie in in ergin bei und er er ig nowen gegen og niegen næ के अप्ता का लक्ष्य है। एक्ष्य है कि शक्त करवान करता अपने भाषाचा का बदवा गर्दी है स्टाधक गर्द समाजानी कोई शहर नहां देशन नाम दिन एक्का एकाद यह नहां कि संस्कृत में महत्वर चार्टी करें। स्वित्त्व का कर तह विवास प्रकार भी अवस्त कि म दूरत अधिक प्रमुक्ति नह या । हो समान है जि दिलक सरवृत स्थानकता-हरमेन सम्बद्ध भाषा स सहस्वार व यू ज कहा पहर का व व राग साहा है कि व व वास्त्र स वास्त्र साहित है। धन म जिल्ला कई बार सबवा हर र १ वच न १ वच न १ वच च वर्ष वस्त्र हरन १ व हुमरा कारण तर भी क्षा महत्र द रेट सरहत्र असूर र प्रति भाग १५ न प्रति तस सामहत्रण भू पुण्डांभव अरथ प्रवास को स्वास को ए जाता है। कि काम सारथ की प्रकार के अध्यान के सामन कुरत अर्थान का या। मृत्यून करा प्रभाव स्वास स्वास प्रभाव कर प्रभाव का प्रशासिक के अर्थान का स्वास का प्रभाव का भूबर हुए हो है। या साम बन बन प्रमान के विकास है कर है जाता करोगा नाम पार प्रमान है कि तम म वर्शकृत पुरुष प्रवास है के जान प्रतिकृति के साथ पान विवास के पान पर प्रवास से प्रतिकृत हा प्रसर प्रशास किस्तान है जब कि क्यान करते के प्रसार का त्राह करते हैं कि प्रसार सहित है। भाषा के इस मुन्या प्रियम म क्षेत्राच अर प्रस्त च मण्डल के पुरूष के रहा है। उत्पाद कर न मण्डल मार्गिन्द महत्त्वप्रणा एक श्रीकार नियम है। कि र चराइट प पहरीन प्रकार कर र प प पर विश्व विश्वास सन् विकासनाम् पर भागामी गुरुरा स विकास प्रसन् किछ हो रही । उन्हें के उन्हें में के प्राप्त में का प्राप्त करता गर पहिल्ल मलायक होता ।

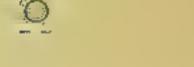
मुहाप्यमें का क्षेत्र एवं आकार

जेला कि पहले कहा। जर चन्नाहै सटान्या वह विकास पट-स्वता है का प्रशिव्य के से जिल्ला कर्ण विकास साक्षणिक प्रथं की महत्रक रामनी है या किया पांचवराये की बीता बनावर काई दिशा अब की अबि दनी है 'स्मिन्याथ व मिन्द विद्यान अब' पृष्टि दुन्द कहाबन। का मान्य बल्ला माना अन्य ना प्रमाह सात करत है विवास है। पाला है। अपने बालवान में हम न बारे शिवार तत्त्वम एवं देशक प्राथ्ण कर प्रयोग करते हैं भा माने या असे म शिका अस म प्रतासन ज्ञान है था कोई विद्रांत शाधितक अब ही नहीं रामन । बरामान्यर व तक व गत हुनर व है ही अपने हैं कि उनका बार-नंत्रण मात्र तक संसं विश्यार हा बान्ता है। और जा मी न का विकासन संस है। मान्त्रा जान प्रधान व प्राप्ता में एस चलमिल अहन है कि उनकी विकासना की ब्रांत हमारत प्राप्त हो नहीं जाता । जिल्लिन कप स् मनी रहित अपना महानरायन की बेहकी है। यदि इस प्रकार के सुधा दिशालन प्रयाग है। इस महानर प्राप्त था। को नार्त यह बह बहा ही महावंश विकास के यह । इस प्रकार के बहु (वासन प्रवास व कि में की महावंद निकास व उत्तरण किया का सकता है। पूरता करता, बन्दा, बहुता बस्तता करा पहुना पाना बेठता, मारता पहुना मना वाना पार्टि कियान स्थान हर मु भी प्रवास होती है सीर समायक विकास हर या भी मैस व बाल पर नम वाल मध्यों नहसीर बाला पार रहे मैंन पुरुष पह पाला राम का मान का कान वा पार महा अला अला पहला में सह मधी कर पार्द्धिको नुस्त सेने साम्य स्वाक कर करिनात न दक्ष प्रत्या किया स्वाक कर कर कर कर पर प्रवास प्रकार मैन बात देख दिया कार्यह मायमा व प्रकार है कि प्राप्त , बाबना प्रदेशक नामा अर्थन है कि माय अपने मान अप र नाम । सतायन कर में प्रवास हुए है एवं यंबानवता. प्रथमा कामध्य, अनमान व कन्ना और भाव वर व्यक्ति करता. १ य काल उन्न पहरव की होना दिया जा का भिन्न कर का का याला अध्यात का बाहरतार और कारण ता हत । ता हुए भिरम् भाग भ्यत्वित राजरंग जस कि ग्रेक्श का ताथरंग अध्यानक कामन के आप में है। इसा प्रश्न आ अस्त्र का बहु भागे अस्त वास क्या इतन कहारा गणात तीर दानो विश्ववान का गया या पर त कि जातक ते कराव । या संकार्यकान नाम हमाह । रनक महत्रमान को अपर क्यान नह जाता । किन्तु भाज या को सन हो प अन्य आहार प्रदेश के की नहीं भाग सक्तर हमना रामन सहावार महावार महा है है। यह दिवाद हरने भारत तम और कारत नहींना है। नहीं बहुन अहमान भी करिन रेमीन्स कि सह हो सा पर रेगान समान से प्राप्त के प्राप्त के बाली होत्य से सामग्री तक का धरावरर पाना बाद और दूधशी का नते, प्रतारहा मार है। पहा कर निपूप नावन सह स्थान, वस एक प्रतिन महावार है करते व नहावता माना अन्तर है और दूवकी नह क्यांच लाग नमें नहां मानत यह देखें निर्णय को आसान क्या देना है। अब न्याना की कटायकान एम प्राप्ता की क्रांतनशान सम्भानकार है। अक्षांतिन विश्वादना है ही उसके धानों कीज है। यह कारण है कि एक ही अधिक विश्वास पूर्वा का विकास प्राप्त स भिष्य-भिन्न अधी म प्रवस्त हाना है। इतम न विश्वी एक का युनन मा सही कहना, होनन तह बद्यांत हम श्राप विदास में उसी अब ना क्यातना के जिल उसका प्रयोग क्या एक प्रचलित हो तथा होता है

मुद्रावर का सन् जिसमा विकास है। इसके का सामहत को विविधाना थी जनमें हो। बहसामा । एक भीर एक इसके काम महामारे काफी साध्या में उपमध्य है। भीर दूसरों आर एक पूना को परा वाक्य महाबय की बार प्रथमन देशा 0

साला है। बहुत्त्व (विश्वास) होते ति है व. न. १ (१४) ब्रोग (१९४० न.स. १६४ न) माना १ तस) आहे. विलेखाण क्षेत्र त्रावहका केवल सामा पानका अने कार कार कार पहल्ला होता कर कार कार कार कार कार कार कार कार क विकास (पनित्र होता) निकास परित्र करण) काला अकालक स्वकृत हो बात आले किया पर अल्प (पनिभ अन्त्र), प्रत्य (याम) पर्वत् (वाम) द्वारों काल, तार (प्रत्या दिन्द्वत्) इस (दाः म व्यवस्थान हीता (दिन भूतर । अर्थर सङ्गान्यम् स्वरू र राज रण भूते बलती रिण्ययना नमान है। एक किया भी प्रधाय ना विराद अर्थनान स्वासी है। कुमारे भारत क्यर मान्य में तम मध्यापर में। अल्प रे तो बहत बाद है। यहा है। यहा बाव मह बहायन जिला विशाप मन की अक्षाप्त करना है जैने मान कर निया किया हमना इकर कुथा तुकर बावना एक पेर पहा एक पेर करा হলে। বা এবৰ ৰ পৰে নলা এনা মৰ জনাখালে মীবদ টাৱন হণ হাতিবং পনঃ এবদ হণি মাৰু। পৰি মৰুনো क्षा कि सम्बाद मूर्विया मा इसी प्रकार मा अन्य मान्यवार देखा जा मानत है। जाता बाक वर्ग प्रवर्श महावार मा सप म हुआ है बार तर बार विद्या कर में निकारण तरना है। कि कावरांश बाल घटनकर प्रश्ना न ला। पर आधारित है। क्षीत पर बान्नव क्षाने कराबर नव कार पर - गान गान कहा बहुत बहुत करना गान महाबा का अधिकार बहुत्वनी पर भागानिक होता है। बच्च माला का पारतम जारणम चीर जाराजा था नाकारत के साजन्य व नपटर कही दिशालाई नकती। प्राप्त शावर्यकर और महादर होनों के करा का मध्यम दिना हुन्हें एक द्वा दूसरा कारिया हुन्। दिया आसा) किन्तु क्षेत्र) इद्यालना स्वयंद है। या पानाम नामांगान प्रचार है गया गया द्वाब्द के कार पान क्षाव्य तक सहस्रह क क्षा में प्रयोग व किया का नव ना है। सामा पता कर कावराश व क्षा मा कि ती बावत मा पतार मी तीन प्रमा कर कर मुस्तर्य होता है तम तथ विराम मार्च की अमानवा कर प्राप्तन को मार्गिक राम नामध्यारिक मन ना है। इसका मुपरान कराजना कर मध्यान्य अनीत में लोक कीवान में ये किया काता से हरता है हो किसी व प्रशास विद्यास प्रशासन्त होत के कारण प्रत संत्य पर धावन प्रमान क्षित जाता है जब बामाना में बसे हैं बाद प्रत प्रत प्रत पान पर पुराहरण ब्रमण पुरामत की अला है। या व वहरहका है पास बाई न कोट कथा रहती है और यह अपनी स्थन की वृद्धित हो व्यक्तिकारण के लिए पुरवस्तार क्षणा प्रदेशन का अन्तर है। यह अन्तर अन्य से पूर्ण है। यह नहीं पहि कहाबन समय-समय यह मुहाबर का क्षा भर माना है। तम तो जिल्हा कहाई काम पानवह भी जिल्हा आहे अक्षाई व सह कारता और नीम बढ़ा होता (एक तो करवा) हुए वह नाथ, भेगर भागे कात सकात भेग के सामे होते एवं भी भूत कही पतराव मिवा की अभी नियों है जिन करना नेपाल की अभी मिवा की बन , शोनशार पेंड के पत पर है ता (हान्द्र र विश्वान के हान में वन पान, अर्थि । इसव अर्थिनक्ष्य एका की बहन की पवित्रक है अर कारन विदाय अर्थ म ही प्रमुख्य होती है क्षेत्र सार की माद म राज दानजा, तह बहार कर तक माद पान जा अर्थात उन प्रकास का अधीरक श्रम म कही कर्ष सक्का दरा हान्य नवादि वक्ता का तालाय न अन्तरी माद व राव पालन में है और स स्थिकार पाने वा बाक रहते के जाब को ध्यक्त करता 🖁 ।

वित् पक प्राप्त वाले प्राप्ती काक्ष्य नाल कहार क्याताकृत कार है है। इन प्रश्नीय का र द्वाप प्रमु सृतक्षा की गंग्या क्षिक है का दो पा तीन नाथ प्राप्ती न कर है। ये प्राप्त की अर्थित दिल्ली की प्रमुख



मुहायरों का गठन एवं वर्गीकरण

महायश को भारता की दृष्टिन विदेश न कार्य प्रदान के प्राचन के विदेश न कार्यक के ति के कार्यक के ति के कार्यक कि के कार्यक के ति के कार्यक के ति कार्यक कार्यक के ति कार्यक कार्यक के ति कार्यक के ति कार्यक के ति कार्यक कार्यक के ति कार्यक कार्यक के ति कार्यक कार्यक कार्यक के ति कार्यक कार्यक कार्यक कार

दिन्दी स श्री र दिन्दी में ही नया गयहर यथी अपाय है है। राग जी राग पर अगा पर विया पर यान सुप्ताना है है । या पर विरा है अपाय स्वीप है कि प्रा के विरा है । या पर विरा के प्रा या पर विरा है विरा में कि स्था में स्था में कि स्था में स्था में कि स्था में स्था मे

क्ष्मी राज्या के असल से ही एक स्ट्रीर प्रश्नि मुक्ति में भी है और बर है सक्त-ज्या है। अपने सन उत्तर रूप से



भिन्त प्रकार कर कर कर करने पहले हैं। - असे सहरे के दिन में देश शक्त रहता है जा एक के हैं जा ए अपन जा सकता है हि बहुत पत्र विकास राज्य अपन अध्य के बारत हरना है की बाद का पत्र को अध्यानित स्वापनिकास के समितिक स्था मुद्रो अस्ति है। उत्पारमा देवभा बताम क्या कर करन प्रधान स्थान स्थानी पहला प्रक्रमा क्षेत्रका और होता एक्टर प्राप्त नवकरणायी करता, एक बारता प्राप्ताच्याचा करता हो होता क्षेत्रील कारता प्राप्त करता अवार बारता अध्यास ना में या बारता तथा का दूनर राष्ट्र करता छात्र पहादा जिले हैं। सकते हैं। इस संभी में प्रस्कत करता करना करना करना जनता करना आर्थ क्यार भी विकास समा प्रस्ता से विकास कार्ट क्षेत्र नहीं राजनी अन्यादन का दर्भन मा किन्त मानि अन्य अन्या, सेमा, इका राग आदि एक जाना है हुनीय गेरा। pflieren tieg eint gie eingefen) fon ein ber auf bie eine ber fingen in bereiten fin fine fan महीर । इसी प्रकार अनक विकादका कार में किया है मान जरूर होगर विकाद । या वारत है बदाबर-किया बनाते हे हुन बाल इ.से हरना रही हरना नीचा हरना न काना ग्रीचा करना चटना होना पहना नेका पुश्चा नगरह पत्रमा, सहती हुई। सरमह हुई। परना हुनी होता पीयन होता, असमस होत्री १४मा, विवाह योग होता योग 300 हो जाता, शास्त्रा माण करने या शासा: मेर प्राथना गंव करना । इस्त माथ, करने वर्णह । स्वयन है कि इसी हुन्। श्रीभी, हुनी दीवी, बार, क्रार कार बार बिल्यम बरना पहला हाना प्रारं कियाजा स परवर्त होदर क्रिया क मुमान ही प्रचरत हुए हैं। यास्त अपन विराधना बननानकान तत्व का होत कर वे विद्या के एक अप नहीं हुए है बुरुन सुद्रती विश्वपुनः विश्व अस्त हे । इस प्रसम् ६ वर च्यान्त है कि कान्तर किया के दोना सामग्रे किया क्रम अधिकार बने हैं। इसके बाद स्थान हान- किया न दार में का तकता का है। यहना, नगना धार्यत् के प्रांग से मान गर्न जिल्लाम्या शाली भी किया का लग कम ही किस परवा है।

सुनाहरों में पहिल्ली क्रियान के निर्माण को प्रार्थित पहली है यह अन्यान्य ग्रास्ट क्या भी विकास है। महत्त में क्या एक्ट क्या को नाम प्रार्थित है। महत्त में क्या एक्ट क्या को नाम प्रार्थित है। महत्त में क्या एक्ट क्या को नाम प्रार्थित है। महत्त में क्या एक्ट क्या को नाम क्या के क्या के

'काया प्रस्त्व पूक्त प्रस्ता को सैन सक्षा के अन्तरत ही काम है अब नव कि व निविधन कर स विद्योग्य के साम आको अपने विशिधनात्त्व की ध्वयर परिवार्ग न करते हो। आंगनाका स्वयन्त्राना, गावा, कारनवीत्वा (तलवार) इंडोनेनाना, नवानवासर निविधन करा म स्विधित विराय को ध्यातन करते हैं हो इनमें साम उद्यक्त को लोगानी नाम कान में य विशेषक माने ना है। इसी प्रकार प्रथा, बहता कराव गावा, बहा। यूनी एन पर प्रस्त को है।

विमाणिक विन्हीं का की रवक्ष करान कर दिया गया है कि लेकिया तीन अने कर बात पीछ भीतर

बाहर कारि बध्यमों की उपका नहीं की वा नकतो । येथे मुहाबकों की वैने क्षतम कार्यकृत किया है—दसकी संकार समूत कम है ।

हर माणा में कुछ ऐसे भी गुहाबरे होते हैं भी ध्वित-माध्य पर आवादित हात है चीर मुख भी ही निष्यंक सारों को निक्ष बना लिए जाने हैं। संभव है पहले प तब्द बुध अब रुपन रहे हो, वा किया दूमरे मधे है साध्य पर निर्मा गर्मे हो। इस्ते हम देशन बयोग कह मधन है। बांब-कान करना, टांम-टांब करना टांब-टांब दिख होना निर्मा गर्मे हों। इस्ते व्यवस देश अब मारना निर्माण करना, तेन मारना मजन भी-भी गरना, सम्मो-भागों करना, सी-भी गरमा हट्टा-कट्टा, हर होना घरि पर्म प्यायमान या दशक ग्राव पनन महावरे हैं जिले विविध में हानरा के अनिने रुपा गया है। कुछ एम भी मन्द है जिनका अपने मन अब में सबंदा निर्मा अब में प्रयोग महावरों में हुआ है यहां आकर्षा पालान हे हुनाने विवादा कर बाता वादिया ना करना जानो करना, बहुद होना। कुमान करन, कालिया जानी मन्द आदि सब्द अपने मुन्न अब में किया कर रुपने हैं। बेम तो महावरा म प्रयुक्त वादन का प्राप्त प्रयाप गुण है कि ने पाने प्रथित प्रयोग निर्मा कर कर किया कर रुपने हैं। बेम तो महावरा म प्रयुक्त वादन का प्रश्निय पुरा है कि ने पाने प्रथित प्रथम किया निर्मा कर नहीं प्रयाप कर रुपने महावर में प्रथम महावर में प्रथम महावर में प्रयाप माला है का साम प्रथम कर नहीं विवाद कर नहीं प्रयाप माला है कर पाने प्रथम कराई विवाद निर्मा विवाद कर नहीं प्रयाप माला माला है पर प्रयाप माला है पर प्रथम कराई प्रथम निर्मा विवाद कर नहीं विवाद कर नहीं प्रयाप माला माला है पर प्रथम कराई प्रथम कराई विवाद निर्मा निर्माण कर प्रथम ।

स्तावरों की अर्ध-स्थनना

अध्य न्याना ही अश्वारों का द्वारा है। तार य नहनं कर दला पह अगावारों के आधाम में ही संभव है। हा, इसके निर्माय श्रावदाय है कि प्रवास कर्या ना प्रश्वारों के बच या टीक ताक आप ही तथा धीना भी प्रमें हीक ही या प्रश्ना कर गई। अल्पाया जय का प्रत्य ही सतना है। य कि प्रश्नायों से प्रश्ना का स्थार निर्मात ही ना है तथा प्रया भी सवता कर होने है क्षान प्रश्ना कर नी है क्षान प्रश्ना कर साम होने हैं। या कर कर कर में क्षान कर प्रत्य है। या कर कर कर महान प्रश्ना कर प्रत्य होने के नाम की स्थान करना है वही प्रश्ना तीना होना क्षांच्या होने है। जान हरना प्रश्ना होना प्रयास होने के नाम की स्थान करना है वही प्रश्ना तीना होना क्षांच्या होने है। अल्पो को का स्थान का प्रयास होने के साम को। "ऊ भी भान" से प्रहान प्रति होना का को प्रश्ना होना है। अल्पो को का नाम का को प्रति होना है। अल्पो को का नाम होनी है। अल्पो को बोना की प्रति प्रयार को प्रति कारी है। अल्पो कोची करना में भी प्रती प्रयार को प्रति कारी है।

पहुने नहा का बना है कि महाबंध में हिमी विद्या को होना अपनि हिमी आंच की व्यानत पृत्य होती है
पान हमी कराय विद्या के पान म बने महाबंध की महाबंध नहन अधिव है। बहन कार प्रभाव करण किया हो पर

प्राथा है र एक देन दिन होना में किस देनता की उपन किया हो का प्रधाय रमें प्रधान विद्या में मांवरिक्य किस

क जिल मने हैं, ही के उसी प्रकार ने भी चान पह है। परण उसी नजना लोकों कर करने हैं सहना, मेर पीछे र मना

देश प्रकार होनी मांच भारता हाए पीना का कि । हम एक में अपने इसर करने हैं सहने हैं सरका में मांचने देख

मही पाने विभाग होना महारा प्रभा का है। हम कर पर पांच है हो के हैं किसी से जिननी करने का कर उसका

पैत प्रकार होने हैं दुष्य में हिमी मांच कर है। हम कर पर पांच में कर राव पीना है। इस्ती स्थान विद्याश पर

आधारित में महारा उन्हों पानी में कर्न है। हमें क्षेत्र बरन हार नदनक्य प्राणाधिक विद्याश के अभाव में मी में

अस्त साथ की स्थानन करने हैं। राम सन के अधी हाय है हमा विश्वाह ने वानम प्रमुख काम करने हैं। राम सन के अधी हाय है हमा कि नाम है वानम प्रमुख काम करने हैं। राम सन के अधी हाय है हमा है वानम प्रमुख काम करने हैं। राम सन के अधी हाय है हमा है वानम प्रमुख काम करने हैं।



बात बहुता है सवाचि सभव है वह अवध्य से हो भागतं की बात करता हो। हाच न चीपाटा हा ब्रिट की 'हाक फैसाना' मुहाकरा बपटे चुन अर्थ की व्यवस्त करता है।

इसी प्रकार कार बनावर सून्य बावना पर आपारित होता है। संका दवाना मनावार देश की जुनिएह का श्रीच कुरुक्त है जैसे कार्ड सवारों में अमें हुई नाव की देश कर कर । क्या किटनी पार लगाना टाई से देश शिक्षाना क्षाना-मानी उर जाना, भव स बार मधीर करना पाना प्रत्यों की स होता क्षा बाबना, श्रीमना स्वय मितान गरम होता कई म त्यांनी जांग आदि सरावर पर्यो है। शहन करता करते हैं , हजा। आही, मान्य मान्य क्रमा भीवा वर्गाट विवायमा गयी सम्म व्यापना में सहायक हात है। हरूकी बहतू का बाम, बहन क्रमा सहय है आरी का बारतूद दुर्गांक्त की हुनका शिवा और आही शेवा मन की दुर्गकता है। सारक का हुए होने हा बहु इसमें की प्रदेशनों कारत है। यह देश कर कुछ में सहय ही अपन नहीं हा सबका अने किया मजबन होता सम स्महित की और दुर्भित करण है जरे इट एवं कियर प्रकृषि कावा है। उत्पन्न का गावित जीवनाओं स्थापित के उपने हाती पहला है कई दिल्ला म पान पान पान में नहें है करना है नाम में नहात पहला है हुती कारण उन्ने पहला द्ध के बहुता धर्मात के गोवक भीर जीव गिरता, मीच न्यंग्या अर्था प्रवास के गोवक है ... हमारे पूजा विभिन्न श्य विभिन्न भागों व दर्भव बाज कर 💎 करन भनगण हो, हमा प्रसन्तर ना, काया द स वा करण का, नीता बागरर का दक्त पश्चिमा एवं भिष्यमध्य हर स्थानम् म दक्ता कृतन प्रयोग क्या गया है, ध्यक्ति लाम शाहा है जी हु। लोगा है, बहुता हवाल कहता है वा दरर पर कर्मकक्षा पूक्ता है हवत हुन बहुत क्षा माना है। दिलाभी नव्यव का नव्या हाता है। पायन नव्या विकास राजा है व्यवण भी कार्य है। अवस्था साम ही नहीं स्वरणीक्षर भी होते हे तो रचका वर अद्यक्त रचन तम च या, दोना कृत्या की अनि देन हैं। यो प्रधार में भी तालाई हमम् अधारा से नहीं बरत प्रत प्रतार हुए। जिल्ला नाम्य अध्य तव पावप स वर्गन वम्र स ही 🐉 🕽

स्थानिकार को स्थानक प्रश्निक प्रश्निक को कि प्रश्निक है। वहाँ को हम की महाका) को पाने हैं विकास अर्थ किस्तार हुआ है प्रश्निक कर पर्वाचिक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक है। वहाँ को स्थानक कर करने नहीं नहीं है प्रश्नी प्रश्निक स्थानक है। यह से प्रश्निक स्थानक कर स्थानक अर्थ करने स्थानक कर स्थानक अर्थ कर स्थानक अर्थ के स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक प्रश्निक हो। यह स्थानक प्रश्निक हो। यह प्रश्निक हो स्थानक स्थ

हिन्दी मुहाबरों का ऐतिहासिक विकास

मोहित्य में प्रयम्न महाकृता पर दृष्टियान करने से अपूर्ण हा अला है कि हम कुर्तन एक हर प्रकृति साह

माहित्यकरर ने प्रयंगानुसार स्थासरों का प्रयोग किया है। इस्तर एक प्राप्तनी जैसे माधक, गुलको एक सूर वैसे सकत, विहारी-मनिशय-देश हेथे प्राणिक-अवि, यसन्दर हेम वेगी आस्तरत् हेम अन्तन राष्ट्र एव मधात के साहित्यकार, तका प्रेमकर-कीर्यक मृत्यान हैसे जन श्रीयन कर विकित करनवरण कृतान बलाकर समान समान कर है मुहावर्षी का प्रयोग किया है। ही विषय की विजिल्लाना के परिमास स्वाच्या तथन महिन्यकारा हाता प्रयक्त महानारी का रवक्षण मिला बृध्दिमत होता है। वर्षात बोवन परण है। जिला ने ग्रम्भ में, बढा क मासान्त्रात में सित स्वाकृत बहायय होकर अवहत्वमन के अज्ञास ने २५न होत कर राजना हुई रह य सन उनके बास्य में सम काटने काल के पाल, जीनाओं लाज वर्गन में भरकने क्यन नेपाने, सर-नव्या अस के तत हुदय की गार जानन आदि की जाई की गई है इस प्रकार के मुहाबर पर्याप्त काला थे हैं। जायभी का गये भी साधनाध्यक का पर जीवन-सराव जाकि के बनकार करें तही पर, उनका प्रेम का पार्च कथा पहलन यह बहुकर तथा होने जेना में स्थान रहें, प्रेम से स्टब्स होते बार बदने, किर पर भारा सने बादि की क्की बचना है। कुलको बीर सुर का बात इनसे जिल्लाका बदावि लक्षा एक ही था। वैसे मुखर्गा क्षीर सुर को प्रवृति का जिल्ला की, मुख्यी कर प्रवित प्रस्थ कार की की जन्ताते क्षेपनी प्राप्ता को मधनत नालाम अन्यत होने पाद से ब्रीटन विकादा उनकी विकास से बन्द वह नाने क्याप्त है महाबारों के लेक म की। व जग धिर्मित शत (अगवन प्रमान) आज की पुत्रकी क्रमांकर रहते, कुछ हा बरकरों, सुन्द्र नह वेट रचन, कार्ट बदन से बनाने करत । अगवन गण। नाम का बदा बच्च की तुना कनाने (अगवन नामध्ये) पम का रीका प्रान, पद रश निरुदा पदान प्रानी क स्मान्य प वान मादि की बान केवते हैं। मूर की अधिन समय भाग की की अववान को समकक्ष मान गर्भरण तक विनय अपनो है। इसके की खुब व्यरी-वाही मुनाली है, कृष्ण के विरह में ब्हाकुल होती है अने मूर अंतर कपट मालन एक अंद भी क्ष्मवी ने होने एक यह होते. त्र करने तम कमन दाव पहन - मन ब हरान पन भागात पर बहान नेत बाल मारन विर पर बहतर नावने, मूल के सरान होता, हिया की नगन दिशान की अर्था में जीन दिलालाई पहल है। स्थितकालीय पश्चिम का साथ यह सबस चिन्त हो। एका - यू गारिकता । अकित वैनिष्य एक यर ज्यान के यायर न वैन काम महावका के प्रयान की बोर इतर परित्र किया-आका व प्राप्त उपरक्षण नावना एट निक्षण बाता एटटार करायी देना, असेंद्र गुनाब होता, ध हा बंदना द्विया दिया होना हीन क्षत्र, भाव क यन नवाना नारही किया पान का पान सुनामा पानी प्रवक्षा, कात वर्ष तर भक्ति करावा जानवा सुर भवता सिर स्थरका सो सी करा सावर किन्यों का १३३ करन बाता, हुद्ध म होनी लगना नेय बलावर कवल धीनकान य ही दिलनाई पहन है।

आधानिक प्रगाप के संघ्या की विशिष्ण एक यह के प्रयोग ने पहानकों के लिए बहन करा क्षेत्र कोल दिया है। उन् (जो मुहाबर) के संघ्या बहुन समझ है) के निवार मापने ने जो इस कार प्रणान में सहस्थार हो। नाम। विषयों नान। सार्थों एक नामा बाग सवर्थों महादार बाज विश्व न प्रधान। में दिलानाई पहले हैं। किन्तु जिस बकाएं जहरी विश्व समृद्य में साम बाग नान में पराकरण का प्रणान केने हाल में एक किन्ति के किन्ति के प्रशास के प्रशास के प्रशास के प्रधान के प्रशास के प्रथा के प्रधान के प्रधा मिल पर शिव का माम तक ही भीशिक रहा है। शाय: १००० महाको ऐस है जिनका प्रयोग आमितिक के साम ही मिल पर शिव को मामितिक अवित मोर शिव कोन शें करवा में हुआ है। इसम में। बिलका मामित और आधितिक काल में एक से प्रयान महाकर की है जोति को अधितिक काल में किया है। इसम में। विश्व प्रयान महाकर की है जिनका प्रयोग जाना ही काल में किया करवा है में पा हैना अस्ता, जाना, अधा होना काल कराना, —रही करता — करता — करता करता करता करता करता करता काल है। सामितिक करता, काल करता, वाल करता, काल करता, वाल करता, काल करता, वाल करता, काल करता करता करता करता करता करता करता काल है। है कि के हैं। हो में विश्व करता, वाल करत

बाहरों के बारित को दरित में कर जात. उनका अध्यतिक यस में स्वामतिक परिन्तनंत्र दिखालाई प्रश्ता है इति बीच टीड कर बतान नियान और तमा न स्विदा है कर का साम न हदय और उन का भी और दिखाल भाषांत्र समें महोता को प्रशास की महस्य अधिक है को बान से बीच मी से बार्गन किया का रह है। विवस परिन्तनंत्र हो जान के बारता विविध्य पदाक्षों का उपास कर गया हो। यह और बान है किया अस्य की एक शब्दों के प्रशास संवयन जनगानी जात है। नयी प्रतिकारिक अस गया का सहस्य का द्वित किया है।

विकासन्त्राम क्षेत्र होता आसी की राजी होता धारवाद्य होती कार है जा एवं स्थानिक विषयी , महाबादन की नात । अर्थाद प्रशास भागनीय इतिहास की एक इंद प्रशासित्या की प्रशासी पर प्राथादित है एवं तमें प्रयोग हैं। इसी द्वा पर प्राथादित है एवं हो दाना है प्रवर्ण प्रयाद मानाच कई सनावित्या पर्व के इतिहास में हैं। से प्रयोग मामादिक एवं अन्तर्भावक विभिन्न का उन्नर्भाव में विभाग एक्ष्र मानाच्या होता है इसका प्रमाण हैं। (प्रयुक्त मानाचिक में प्रमाण का प्रशास करते हैं है है)। सद्दा प्रयोग की मानाच प्रयोग प्रायोग प्रायोग का प्रयोग उपनाव्य नहीं है है। सद्दा प्रयोग की मानाच प्रयोग प्रायोग प्रायोग प्रायोग का प्रयोग उपनाव्य नहीं है हो है। सद्दा प्रयोग की मानाच प्रयोग प्रायोग प्रायोग की स्थान स्थान होता है।

भीतिन। र प्रत्या रन । प्रत्या प्रत्या कार्या है कि प्रत्याधा एक प्रश्नाम समाप्त हुए सिंदिता हा भीति रे रेकोण जन्म भीति हर है है की स्वयंत्र के एक प्रत्याचन प्रणान्त्यों तक तम घटनाओं हो अर्थितिया है प्रत्या प्रत्या क्षेत्र के प्रत्या के तम कार्या के प्रत्या के होंगे तत्या की स्वयंत्र के होंगे तत्या की सहस्त की पहले पूर्व का प्राप्त की सम्बद्ध स्वयंत्र के हैं।

पर विकास कर का जा कर एक का का प्रश्निक का अपने अपने आहे. बात कर है। आहे का कर है। आहे का कर है। अहिल कर है। अहिल

कुछ विजिल्लाम्

पह ता वर पर दे वर राज्य पर राज्य पर राज्य पर प्रकृति महाकर का स्थिति होता है को ना वह वह वह वह से वा का से वा का से का कर कर कर है। इसी प्रकार काल के क्ष्म प्रकार की का से कार के का है। इसी प्रकार काल के क्षम प्रकार की का से कार की का कर है। इसी प्रकार काल के क्षम प्रकार की का से का से

04

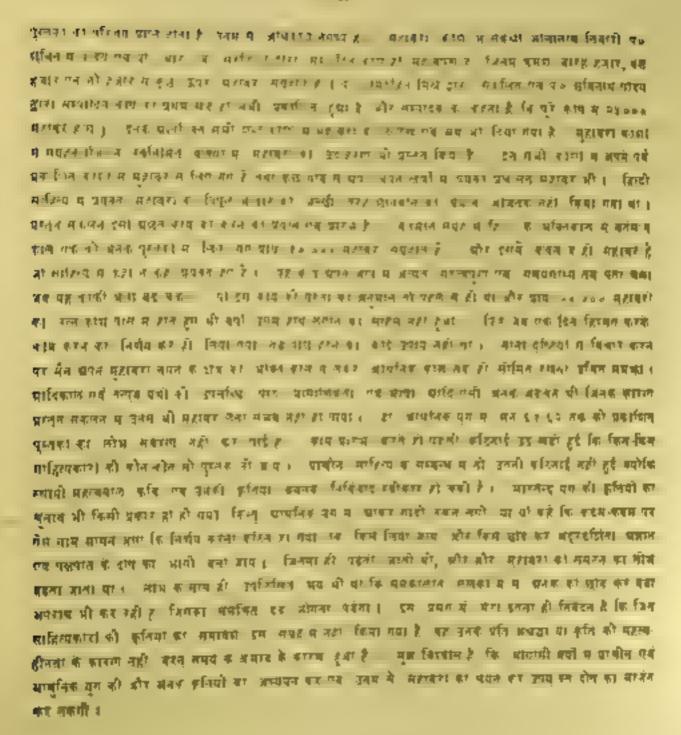
O P 35

हिन्दी व (बन् महान्यक र व सन्दर्भ के प्रकार स्वार विद्या है एक मृत्र प्रकार हो। बीध प्रस्ति व वेदहें स्वार प्रकार क्या है कि प्रकार क्या है कि के त्र प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार क्या के प्रकार प्रकार के प्रकार प्रकार के प्रकार प्रकार के प्रकार के

प्रस्तृत संपद-क्षेत्रः सीमार्थः एवं स्वस्य

हिंदी भाषा र मार्ग्य प्रियम में र ने पान में या नवा त्या प्राप्त के विशेषन का उपन उपना मही किया प्राप्त के प्

सहाबका कोता है पावला है भी हुल नक नी दिवति एकियान हाता है। सहाबराज्य मा सामे प्रित्न हुछ हुए





नोमह

महिल्लात से 1 के 5 र तर की प्रशासित प्रति है से सैन निस्तितित से सहाका प्रवृत्ति किए है

মালিকাল

१ अवरिय

२ बागमी

३ मुख्याम

८ संख्यांटाम

५ संबदास

६ वाह्यबनाम

७ ज्ञान्त्य गरीत मानवाना

क्योर क्वानकी

वरभावन

सुर सरगर जाग 👫 🕝 जाग्र गांव स्थार

रामकरित मानम् । वतम् १ विद्याः । राजितस्य ।

द्यादावका । मीतस्त्राकं

क्टडाम क्यावर्गः

रणव प्रधानकः श्रातः । -

रतीय राविकायकः

राशिकाम

9 figerat

4 34

३ मधिराम

५ विद्यास्त

प्र क्षणाव

६ वंशापति

३ द्वापुत

= वाधा

१ पतानक

10 98

११ किरियर

\$7" 2" 7 MITE /

गब्द स्मापन

मनियाय सक्तर

पदाभग्य जगोद्दतात

आण के के देखा

वर्गवल स्थादर

रतकृत शक्क

इंडिस-साम्

प्रमानद-कृष्टिक

इंद सनगर्

रिर्णिका की बुद्धिशी

भाष्क्रिक कारह

ो देशा अला जो

२ सराव मित्र

३ यसह सार्व मित्र

र भारतंत्र्

रका जनक राज्य और शनी केन्द्रि की दक्षात्री नामिनानाक्ष्यान : महन्त्र फिन्न क्रमावली

प्रविभागात्र

अपरसंद्ध् प्रत्यावकी भाग 🔻 🗸 🤔

SHILL

- ५ राष्ट्राकृतमालस्य
- ६ प्रमाप नागायण विश्व
- ७ भारतमृष्ट्य गा
- व अपलेकृत्या प्रदेश
- **६ विद्योगीमास गोम्ब्स्मी**
- १० औ निवास दास
- ११ चननत्त्व महाय
- १२ अमृतलाख जातर
- १३ अयध्यासिह उपाध्याव
- १४ इलाचंद्र बोधी
- १५ उद्यागकर मह
- १६ उपेन्द्रशास अवस
- १७ गुरुमक सिंह सक
- १८ गुलाबराय
- १६ बन्हभर गर्मा गुलरी
- २० बतुर तेन साम्बी
- २१ अग्रदीश चन्द्र साच्य
- २२ अध्यक्षक प्रसाद
- २३ जैनेन्द्र
- २४ देवगत
- २५ रेवेन्द्र मत्याणी
- **८६ धमबीर भारती**
- २७ वसमञ्जन
- २८ पद्मताल पुरनासाल बन्दीर
- वह वर्ष्वामह समा
- ३० प्रमानंद
- ३१ कशीडबरनाय रेण
- ३० क्षेत्रम शर्मा उग्र
- ३३ अगतनोधाण वर्मा
- . <
- O 8 85

- राधाकृष्ण प्रव्यावको प्रश्नाप-रोध्य पृत्र प्रन्यावको मारित्य पृत्रनः सद्द-निषंणावको मारुतो साध्य भाग १, २ पर्याकान्यः मोदयोपासक वृद और समृद्ध सुद्धाग के भृपूर वे कोठणानियां प्रिय प्रवासः वेददी-बनवासः सर्वस्परीः पुत्रने-कोपदेः
- पास-नोपदः ठठ हिन्दी का ठाठः बोलबाल जनाम का पश्ची भूमांत्रका बेनन देनरे नरमहां
- भरे निवल्यः जीवन और ज्ञात गुलेरी प्रत्य-भाष १ : कुलेरी की जनर कहानियाँ वैद्याली की कारकबू आय १, २ : वीली
 - मोरका नाग
- तितलीः समानः सामनाः ध्रृष्टमाणितीः व्यवस्य राज्यालीः सामगणः सुनीनाः परणः अपन्यन
- भनव की बाधरोः बाहर-मौनर इक्सासः बाह्यपुत्रः करपुतानी
- क्ल्प्रिका
- **बन्धनमा**
- **14**
- क्यांगह क्रमां के एक क्या पराग
- रक्तप्रसि भाग १ २ शाहानः वर्जनिक्षः प्रेमालनः संबर
- भटनः निर्मेनाः ध्रवतः मानसरोवरभाग १, २, ३, ४, ७
- मैना जोषकः परती-परिकया
- गया का बेटाः कमा का पुरस्कारः भएनी कमा
- अने दिसरे विका इंग्टालमेटः विक्लेबा

भहारह

आत्मक धः

विषयान

वर्षवास्थाः महावान

३४ महादेवी वर्षी

३५ महाबीर प्रमाद द्विवेदी

३६ मैथिलीशस्य गुप्त

देश संद्रापाल

देव परिव राधक

३६ रामकृतार वर्मा

🕫 रामचंद्र अंक्ट

हरे एमधारी मित्र दिनकर

🕫 रामकृत बेर्नागरी

हरे शहर मांग्रयायन

८८ वस्मानसम्बद्धाः विश्व

रप्र विव्यवस्थानस्य सर्मा गोरिका

४६ विका प्रभावत

🖎 कृत्यागम् स्यम् वर्षा

६६ सन्दिशानर राशनर वात्मवायन अज्ञाय

∉€ स्वान

५० मध्यार्थान पीराज

४१ मुषिपानेक पत

४२ मूर्यकांस विवासी जिल्ला

¥हे हतिस्मी प्रायक्ष्य द्वितेदा

४ ८ हर्ग्यास्थान वण्यान

५५ हरिकुला प्रजी

ब्रमीन के दलनिय माहिन्द्र संदर साकतः प्रतद्वयं वदः यंजवरी, यहांभारा भुद्धा-सन्त भाग १,२: जानदान बोल और पायल कहा भारती का मधन: देवशी का बंगर नेत्रमां-टाई निकामणि भाग र कुम्क्षेत्रः प्रक्रवान प्राव्यानी सन्त्री क बच्च मिदर की हाओ भितारिकी: मा: चित्रसामा निविकात-धारती अब औ पार उसी है भारत की राजी कृत्वयकी रोक्टनस्य जावती भाग १,२१ नदी के दीप मुद्रशंत सुमन मुख्य पहार स्वर्ण-अस्ति करना और बढ़ा सोर्' परिमन्दः अन्तर्भाषका, विकाः अनुरी-बमादः कुन्को भाट बॉरो की खड़: मुग्ह की बीबी असार के फून्स कवीर: हिन्दी माहित्य: बाण प्रहेट की

क्षयंका भूकी ने श्याप्त हो। कायगा कि तत संध्यताहित्यों के किसी साहित्य के प्रमुख माहित्यकारों से ने अधिकारा की मदत्वाचे कृतिया कर समाका इसन किय वया है। साथ ही बाध्य उपन्यास कहाती, नारक निकल गर्व प्रान्धन र अन्ति प्राप्त सभी विषया की पुरवका को जिल्ला ग्रह है। आओजनरूमक येथे बहुत कम निरंग गर हैं। नसका कारण केमें सन्धास मुक्तकर का करन कस हो प्रधान विश्ववर्ग पहला है। सलकरा के बधन के शक्त सहर मृत से निशी मुहाबर के इस से कम दा प्रवास की । अदि प्रत्याध हुए है तह-अवस्थित करने का प्रवत्न विकासका है। भक्तिकाल में कहार, बादमी मूर एवं नृत्रमी व में मधी के द्वाप वर्ति किये हैं ना अह सबदव निया गया है करने का कारण एक तो उसन करिया की प्राविश्यन भटना है तथा दूसरा उनकी आयानन भिन्ना है। य नार्ग क्रमता मिली कुसी भाषा ठठ अवधी क्रमांग्या तब सहकृत सिधित अवधी तथा क्रमांगा के विवि रहे हैं मत उस्त भाषाओं य सुप्रायको के प्रयोग पर को प्रयास गर सकता है। आर्थानक प्रयास भारतेन्त् यूग (१६०० ६० सक्ष) त्य परकर्ति काल को मेरे इस दृष्टि से धनग सम्बद्ध रहाई यादा है। क्यांक चारतन्तु युव की आणा अपनी प्रारम्भिक अवस्था म पी सन १६०० के बाद उसे मरहून किया गयर। या अपने और यह स्थान म आई जिल्लिक कह नियम का परवान मही विका गर्थ है। अबद्ध तब मेराक द्वान इयलब्द राज दव हो से माधक प्रयोग भी मनन नाव न गर्दाज हुए है। क्षेत्रा कि में परल ही कह कुकी है दिन्ही मर्थात्य के कुन हुए १०४ घर्षी। बनम कई द्यार्थालया भी सामित्रत है। से ही मुहाबर जिल्लाम है अन माहि दक मुहाबर। दा पालिय के प्रचलन बुहाबर्ग का यह मगद एक है, इस दान का का प्रदेश ही लहा उठका । द्वारा याँद विद्या का सकता है ना कबन देवना है। दि बतमान प्रयुद्ध व पद्धान प्रवादन विद्या ह किसी पूर्व संसाहित्य में प्रयक्त हुए हैं। बन । एक कार भीत त्याद्य कर है कि में यह दावर भी नहीं, बार समसी कि किन प्रभी की मैंक निया है, पनके सब महत्त्वण का नेत ने समय हो तरह है। प्राथान प्रथम में हर्ति मुख्या सार गण है मृद्ध अंध का अध्ययनमा क अध्यक्ष भीत हार पंकर म ही नहां बात । जिन्न जेलका न घटाकरा हा बहुन भूभिक प्रदोश किया है। जैसे प्रमण्ड उनका क्षानाओं के भी सक अहाको गुला है ने भी परा है। नुस्तिय व भूहाबारी कर सन्त बना अवार तिहा पहा है जिसका प्रदेशन आवडवत है . मैं यह निस्सार व स्वीतान करती है कि प्रमुद काश, दि दी क सारिश्य में प्रयुक्त महाता है करन तर क्षण वा प्राप्त परमण क्या हर है।

इस वा इनके भी क्य विश्वल पृहावरों के सम्बन्ध में ही की मानी वर्णहर । इसी प्रसंग में यह उपनेका बन्धित में होना कि वर्णमान संवत के प्राय ६० प्रतिस्त पृहावर जब तक के प्रकारतार किसी भी कोच में नहीं संप्रहीत हैं । हो, मो क्यों मृहावर्ग हैं या नहीं, इस निर्मय की वर्णमाई की हो गत्रों की । बाज ने कई भी वर्ष पूर्व कीन मी उक्ति अन् म्यानित क्या मृहावर्ग की थी, और कीच भी विश्वत सम्बर्गिक उच्चित, इस निर्मय क्याना सबंदर नहीं की बनेक बार महान ही मृद्यिक हुआ है । विष्ठदानन कर इस कर बंध वर्षनी नाम्यानि देवर यह जान की विश्वसित एवं हिन्दी साहित्य के विश्वावीं का ठीक-ठीक विश्वत विश्वत कर समें में।

हिन्दी के जिन पूर्व हुए बचा में निए नाए मुहाबर इस सम्मान में बादिश है के सभी धंध हिन्दी के धौनिक बंध है, सन्तित नहीं (सावाद स्वमय आस्मोन्द्र को राम अविदान रचनाए उद्युक्त की जा सकती है) । इस अवृति का कारण अपने क्षेत्र को गीनित करना ही या । यो तो बाला और विश्वकर सहावदी की वृत्ति के सौनिक और सन्दित्त रचनाओं से कोई सन्तर नहीं बादमा चाहिए बचाकि दोनों ही आचा के नान्यानीक अर्थवान क्य का परिचय देती है किन्तु दनना निर्विवाद है कि ऐसी रचनाओं का स्वान मौनिक कृतियों के बाद ही आवना चाहिए । जन प्रस्तुत संबच्च में मेंने अपने कार को मीनिक रचनाओं तक ही नीचिन प्रकाह है।

कीश का स्वक्ष हिल्दी में बान मीर पर मुहीन ही के अंतर्गन अगर है। अवार्गीर कर के मुहानरी की क्षावितन किया गया है एवं अनुशामिक तथा अनुस्वार पुरत वर्ण (जिनस प्रवस वर्ण के लिए अपूरत अनुस्वार भी कांगितन है जिनका गंगर प्रयोग आप किसी में गृहित ही पुना है जैसे अब और अंतर्गा) प्राप्त में तथा क्षाव हीन प्रवस वर्ण वर्षात संपुरत नाम जत में दिने तथ है। बाउटों के विधिनन जाने तैमें अग्र और जनम, टीकार, दिवार और विभाग करा मीर अंग अगर में किसी एक करा पर दीना करा विधा गया है भी अधिकार अपन्य देशी वास करा हो? के शुरू एवं बहुववित्तन कर ही बहान विधा तथा अग्रीम सुहानरों में प्रयुक्त कर की प्राथमिक सहस्य देने की बहन हीना नहा है।

बिनका अर्थ प्रान्त भृताको जैसा है। है एवं जो उसी सर्थ में आम बान बान से बारवर प्रमुक्त होते हैं। बहुत संस्था है. भीर पुरतको के संभ्यवन पर उनके प्रसीम की विस्त जायों । आधनिक शुग में माना की स्विकारिक क्रवसित स्थाभरिक अप म राजन को प्रवृत्ति नरीतन होती है और दर्जातर बाब सर्गहरूप में अपनी विधित उस जिनही भागा के दायं देशन क्षति हैं , विराय कर कथा संगतिन्य से जो शिक्षित को बातबोन से दरावर सक्षित होती है। फिर भी पह नहीं कहा जा सकता कि साथ के सर्गहरूम को जाना का कर कारावती सादि वहीं है जो बीतवाल की है का कि क्षांत्रकाल में प्रमानन महिक्तार द्वारों कर प्रमान क्षांत्रक में हुआ है। मुहाबारों के प्रमान में भी शह बात दिवालाई पहली है। अरम बोमनाम में प्रयुक्ति बहुत में यहावशी क्या भवीत महित्य में नहीं हुआ है विदेश कर सक्सीम मुहानरों का । जोजबर्स में प्रमुक्त बहुत में तम महामने भी क्यांनी मर्थकावना में तो मंत्रान प्रभावपण है कि लू शिक्ष-मंगुराय के अवलील कार्त काले हैं (पाह क्योग भाग चित्रके ही बदाले के क्यों न करत हो), काहित्य में नहीं प्रमुख किए गए हैं। इसी प्रकार विधिन्त क्षेत्रों में प्रधीत व बाते बाते क्षेत्रज या काशीय स्टावरे ती शाहित्य में अपने भारतीयक अयोग के सनवान में कम ही प्रवतन हुए हैं, बदारि बाल का बाचिनक माहित्य इस दृष्टि से अपने संब-विशेष के बंदाकर को पाठकों के बामना रखन व बचन हो रहा है। यहकीय तथ सामन महाबरों के जीनरिक्त जी बहुत में एन देन प्रथमित मुहाबर है या प्रस्तृत मध्य में नहीं हा यह है बवर्गब उनके प्रवास सभी तक नहीं दिसकाई पत्र है जैसे असे रहता बाहता असार बामनर प्रमाने रामना, अभरे य रामना हटाअनर धनन दिवाने हरता, अहनक-परम् विष्यानाः अपने मानं, आर्था पहना पा पालना काम कोठती, कामा पानी वातार व मानत पृथ्यि हती कामा होगार नर नद जाता ताई का देलका हजाबत बहता नाय-बाय होता बाजार विकास प्रकार विकास विकास किर स केपन बायका, ाम करापरा की और बानगर जनान चारपुरत युरायरा सुधी के रक्षी जा गवानी है बर्चाप बह शानगी कार्य

ें में भी भी प्रतिक कम प्रथमिन बहाकारे के आधार में कोड़ सक्तर का नवना है। बनना हो नहीं सन्तारय बहाकार कोड़ी में संबद्धीन बहाकरों में में कि करीय-करीड़ १०६० प्रतिसन महायों बनमान अपह में नहीं नियं का एक है क्यांकि हनका संबद्धीय में प्रयोग नहीं किया है। किन्तु मुख्य विकास है कि मक्तिय के इसे कांग का कलेगर वर्षीन

बृद्धि प्राप्त कर मकेना (

हा । भावा पर बहार मा के बहार वा सराइन के जीवीं का मैंन एक चीर वार्ध किया है—महाबरों के अवीकरण हा । भावा पर बहार मा के इंदिर से महाबरों के गठन एक उनम प्रवक्त सादों के ग्रामण अर्थ की नंकर वीर्ध भी अनीकरण चार्य कर नहीं किया है । महाबरों का नहीं एक पर वार्थित कर वहां है । इस दिसा से चंदा पर प्रविच्य के बाव कर नहीं है किया पर महिष्य में अध्यान सम बंध के नवा कर नहीं है किया पर महिष्य में अध्यान सम बंध के नवा के उद्योग के उद्योग

सक् बान और नर दिन। बात पूरी नहीं हाती । यभव है इस कीय म बुध तम बहावर हो जिनका बहावरणन मध्यप्र हो । देवय पासे भी कई जगह सका हुई है किर भी असीत इसन प्याद्ध एवं आवक पिने हैं कि उसी पहेंच कानों ही प्रतिन लगा है । जैसा से पहेंचे ही कह चुनी हैं बहावर को विस्तान खड़ द न तो जनक हिस्तवा यूटावरें के जनानि या सकती है । अस्तास्य कोणी के तम बहुत में मुद्रावर दिलंचे हैं पहले हैं जिसका महान्यापन पूनी प्रवाद

बहुत बिल्दुत अर्थ लेने यर ही बाह्य हो बनना है।



वर्गीकरण



मुहावरों का वर्गीकरण

मंडा पर्व किया पर युक्त शुक्षावरे

संक होता यह घरना अक संगाना वंक सना

मकवार घरना जनुर गममा जनुश देश संभूत स्थान

जेकुना रहता जब जब किन्द्र अन्त

भग तम मृतकृत्रन)

क्षेग करना अन कृता अने गपना

र्थम म अंग समारा

अय मोहनां अग समाना अन नामा अग्रहाई नेमा

भगामे पर नेरना

जंगका बटाना भगका समना धगका विज्ञाना

जनम् दान कर नेना जनम् दमार कर

इंदन धर कर नेदा

श्रमन में बचना श्रीहिया गर्दना

जन मना

इनिहियाँ भ बन परना

वनहीं की क्षांत प्रदित्ता अन्य क्षांत्र न म्हेमानी भन्य मालेन) वेषकार हुए माना क्षांत्र नवर माना बेषकार में रहती

अवस्य ही अवस्य दिवाई परता

बबरेव स्टानना अवरेवेनीर कारना अवरेवे सम्बन्ध

बस्य को गाउँ गोन्दर। सन्त्र वृत्र अस्ता प्रका दाय गाना

बक्य चरता

बंबन क्षकर में पहला काम का जाता बंबन करन जाता

बक्त चवरी म चदता

प्रकार हिनाने जाता प्रकार हिनान होता प्रकार पर देंग प्रकार अक्ट पर प्रकार प्रकार

धनन पर परदा शहना धनन माने जाना

बन्य ह्या हो नाना धन्य के गृहें नहानी

भवारः होतः सरकारी स्था वयं रहवः स्थाः स्थातः



भौगोम

व्यवस्था समस्याः शहरे पर पाना बानात की मिट्टी सुदता संघर वे भुक्ता बनी पर पहुंगा द्यपनयी बॉना अधनवी स्त्रिपानी क्रपन्ती पहलामना अपनयी पाना अपन्यो भूम ज्यानी अपनः अपनः चन्नी भारतः। इपिना करना द्मदम। मेमा अपना धर समाध्याः बांधना राग श्लापना श्चप्रकृत कान गाना श्चापना राजना नेना ध्यकः गरभक्ताः लक्षा मा यह नेकर पर्य पाना ध्यमा मा मृह लंकर गह जाता बचनी द्यांस न रमना अपनी प्रांट जानर कानी करती बन्धानना भवनी करती हाकता क्यानी काद का यहारा होना **ब**पनी संद बनना श्चर्यनी मह जगना इत्या ही गाना क्षपत्रों ही पणाना श्रपनी विक्ली का कोणियान।

आपन को प्रक्रमण

क्यत को यह बंदना पानं को लोकना प्रपत्ने को इक देना भारत को मिहा देवां अपन को हो लाना अपने घर बेटवर वयस यन्त्रे विपेन तक रखना मददे पर धाना बंधन पात्र म कृत्याही मामना भवने वेशो पत्र साह हरना धारते यह व शायद सारता बहर्ने सुरू में न होता प्राप्त रंग स जुल भागा धारत राज्ये कारता अपन रोहर्न केल्ला भरने वित्र धाहना अपने बिक्त लेका भारत ही भिरायस्तर भगमान कर पट कीता. ध्यकोर बहाता बारवाह रहता, इसना बरीय याण होता. विभागत इकता भविभाग वे समग अवस्य व नवी हुई। क्षमत संगर्नाहरी खबार की विश्वार देना सरदय म शासना भागी कारमा उपना प्रथमात रङ्गानना

वस्योग

अरमाण निरादका धारमध्यो पर गामा ग्रेहमा अमे लाखना अली की फटकार वशक अवधि निवतः रांदिय हरना धक्तर वृक्षश भवसंत्र नागानाः अकार अध्य अध्य अवसर हाच से जातां जवारकः प्रवास श्चरण मेरिका परिवास प्राप्ता क्षांना प्रशास द्वाच उत्तरका बारक प्रथमित रहागा ज्ञांक प्रहत्ता याम वडाकर देवना ब्रोग्ट प्रकाशन वेम्पनेयांचा अस्य उठाका न नेमनः ज्ञान वहाता ं बाक् चनभगा_,—चनभाना प्राम् उत्तर नामा —हेना अश्री कवर्गाना आमा करना आम का कविन कराना क्रांच का दिल का देता भ्रांब क केल निकलकारों आज का पानी पिरता, जरता आम का वाली समस क्षाच्या दश मारा 07

OP 85

वास का इनका ू वीत पावता षाम काम रेना काम काम कोम कर माम की बाट करना बाल की प्रवास में आश धान्य की पुनर्ना किए जाता भाषा की पुरतरी, बनाकर रखना मान की पुतकी समधना बाब 🕏 तारे जिल्हा प्राप्त जुलना अस्य योजना क्षांक मध्यक्रम Q100 45201 भाग बहुत्रकर देखना भाग गहाना प्राप्त प्रवासीय होता दान बहुनः क्षाम महानः हरण परेवन। अस्य भारत शासा क्षान असना — असना बाल बुगहर देवश(बाक करा नता दान दशका प्राम पुरुषा याम सुर में नगरा ज्ञाम भिदाना क्षांच बसन्। 🕒 बमाना क्षांच अभीत संगदना वस्य प्रथमा

हर्तन स

अध्य बाला अपय बहुतर आस्य बंधतनर आस अध्यक्ता आंग स्पानना आस दृती परता बाल दिश्वता -- नहरता अध्य कार्यन

भागात भागा प्राप्त विकास स्राप्त विकास स्राप्त विकास स्राप्त विकास

शाः देखन भौता दनग भ्राम्य नेद्याना अपन न प्रमुखा भौता म प्रमुखा

पाल व रताना प्राप्त व विकास प्राप्त वक्ष

ब्राम्य रिवस्थानाः अस्य विद्यालयाः उपस्य याच्याः आव्यः

भागा प्रदेश

भाग पेपारा त्राका धारा पर बहुता धारा पर प्रदा पहला

भाग कर पहुँ समना आस कर पहुँ समना आस कर कही सोधन

प्राप्त प्रमान कर देखना

क्षा र व - वह व ते ते. क्षा र व - वह व ते ते.

चार करवना

भाग्य पान कर उसके।

Nod (La sea)

tiene & sien

दास कर

क्षा प्रकार अस

Dro distri

श्राम् इधाना

भगव वस्य कः

दास्य वश्यास्य। भ्राम्य वश्यास्य

षाम् वस्त्रवः याम्य विश्वतः

अर्थ्य जिस्ता विद्यान्त

भाग कर राज प्रांत घर नामा नाम प्रांत देखना नाम प्रारंत महरूत

द्रांस (एक्स प्रांस (एक्स

भाग पिएका विवास

RIM HE FT

प्राप्त में उननी राजा

प्रांत में रह एउटा पान में रहरता

ज्ञान व एवं क्षेत्रका

माल में पूज राजना



मनारंग

होत्ती साचार तक बाग संपानी वाना बाव है स्पन शाल म राष्ट्रं नोत कानका आल प मूर्व शायत। श्रीम् गल्दा अंश्रेष जगरा arm morat शाल नगी रहता क्षात्र सद्दर् --- लद्दातः दान विरामः अध्या संस्थाः ब्राप्त में अंगार बारमता बाला में बाद विकलमा भाग पुरसा द्राप्त संपत्ता श्राम विवयः धान्य से उत्तर प्राना आत्म ने योधल होना भ्राम से वित्र जाता द्यान उठी होना आसं किती पर होता शाबे मांचता प्रांक क्ल जाना क्षांकं क्षेत्रसमा जाना अपो जनता बार्क जानी रहना बाध तिरमिश भाग भाने दशकर देवना

आचे दरवाने में लगी होग।

बीमा १५ तर क्षेत्र मानका प्रात्त तिक्रम प्रदेश प्राप्त किशान करा बरेक एक वर समा होना धाल येमा रता ज्ञान किस्पत्रका चाल करना भागम् प्राप्तकाः Cité Schat. अंग्ल सदस्याः बाध मिनना भाग नगाए हेहना भाग्य नारात गहना काम सह में होता यामा अस्तरे व कान होता क्षाकी का बहु जाना क्षांची का काका समया बामों की ओर काना हाना को योग काना ---होना श्राम की पट्टी मुखना बाबो व निर्माणको प्रदेश बालों क परिवेद विशास अस्त्री की न्यांचर्ना बामा हो बीचियाना बाजा को पर हता भगवा देखी। बाला पर जवेरा बाता बाना पर टीकरी रचन।

अहरक

क्षाको पर परदा प्राप्तको क्षामार हरने बंद्धानर बाका म अथारे जनगर अरेगरे स् अंदर्ग बाला वे असी रामग क्षांको च उत्तर आसी क्षामा में कार्ट की नवा महकना । क्षान्। में बारे की नगर मुख्या धानां में नातन भूतना -भनाना क्षाओं में काशन न रिकता कारी में देश काता बाला में जून प्रकरना क्षाको है भूमना प्राथी में माना 🤺 द्याची विशिवता अन्तो में बर करना भाषी में भूम जाता क्षाची में काबी दाना क्षाची में गुभवा द्यांकों में प्रथमा मानों में अन कता 🤚 क्षामा व पाद होता. द्याना य भार रह गरना क्रांत्री में बंगवार क्षीता बामी स नामना हाला स्रापनी आना इसलो संगति भागभाना प्राचन में विश्वस आध्या स असता

क्राप्ता म बेठना

∉ता य व प्राप्त रसः काल संगहना अध्या = राज ४ वतः । कारता अर्थना संभवा र ना बाका व सरका पासना লকাণ হাত্ৰ বৰকা बालाश्च लाव आ त र यो संयत र राम् शहर कामा व लग ग प्रांग जिस्साना अगर्धा म गर्मा अपना बरना प्राप्ता से गतानी युक्ता म चित्रमारा बेरेने वाग व विजय रा प्रदेशी चार्या व (ब्रह्मानी क्टरी) eru a gam याना म वर्ग भाग, जनपति। प्राच्या स इसक्ष अवदी निगमना अध्यक्त व इयन हाया स व उपना प्राची से स निकल्या बाक्षा से बीट उर क्रांता शासा व परदर १८मा बारधे म बरमती वाया म शहरा अच्या स साना भागना क्षाको से उस करमना श्रामा से सम्पन्ना प्रथमों से विश्व हमनमा द्याप अस्ता

श्रीक पानी



Section 1

श्राप मानः भाव समहा भाग सहसा आपम की भीर सेवा वरवाम वागरावाः दांचल में दोपता आंचल होएकर बार पर पहना भाग उन्नदी पाना मांत प्रके प्रकार प्रति गरी में भारा मांद्र मुद्र में भाग कार्त कुलकुलानर कार्ते समेरका श्राते तृत्वना शानों से बार्ने निकास केता आंधी जाना बाबी यउना दावी बनना अधि धनना शंधी में लेलता क्षांस्थों का सार वंपता शासूबों का तार बारका आमुली का एरशामा बहुना आमुची की भन्नी अगना भागुओं में बुदना बामुओं से बुह क्षेता बांसू का बूंट पीकर रह जाता द्यांसू गारमा जासू चलना 08

D.P.--185

बरम् द्याना शम् सङ्ग बान् स्रका क्राम् पूछ्नः क्षाम् पाछ्ना स्रोम् वर्गन्य धाम् बहाता बारत चीरदश बाइने में बूंह देवना आकास बीच प्राप्तान में होता. बाबराव का हाथ को दग क्षानाम की बाते करता MITTER NEWS आकृष्य पहाला धाराज व्यास्त्री आशास पर्व पदना बाबाहर कर कड़ानी बाबहरा पर दिया समाना लाकास पर क्षतक उठाए होना क्षाराम बांपना भाषाम में एंडना आकास में शेट करना वाकाय से किरमा बाकान है बातान वे दिश्य। श्राम जुनम्बरी बाब की तुबा देगां भाग देना बाग में तेन ज़ितकता बान में प्रना श्राव पर पानी बालना

मीम

अधा बरकता धार कारानर श्राम बोना साम भवन उनन बात में देशन राजना साम्ब से गाउँ परना भग व भंक है। असा भ पाव राजनी क्षाम सम्बद्ध बात जनकर वानी को शेवना द्वार जनस्य अस्य गर गना भाग सुलवता - श्वतामा क्राय में यांग बन्धान की क्रोनिया काना प्रापं व सनवर son plan आगम् सम्बतः अध्या कथा पर होता. द्वारत पाप श्रीका अरक्षा बाबा पर रणना काला बाचा पर लेखा. अवस्था देखा वर करा MIR COL क्षात्र में भाग भागता बार्च में हना प्राप्तसम्पन्न वनना

शास्त्री का बहुत्वी विकासस्य

धारमी जगाना

ब्राज्य से प्राप्तः

भारत की बादा परना

बरन्द उरमा बार बोचना अल्ड हर जल का सन्दर्भ शास्त्र व्यक्त आराप्ट मिनास बावर मान्त्रः श्राप्तः भौत्रकः शाय य न रहना क्षात्र से बाहर होता. अस्कृत के बादन उमेरिया काव अंशी भागम पर घर बंगली क्षाबद्य पर पानी विजना भारत पर बहुत अवनी यावत स्टना बाषदर्भ रजना चाय महीनेत बाद कुरातः अस्य दिन अपर की प्रकारका प्राप्तका गानिक वारणक उठाना ब्राकात वं देशा शादाय गिरहा बाबाब देशा समाना धाना रहता क्षाचा नाइनी शाम कर क्वारावात होना भागा पर पत्ने फिरना 🕳 केरना वाका कामा



गुक्रमीय

अरखर वश्चाना भाषा बस्पन्। प्रापन जमानः धानम दिनमा ---गोनना अधिन देवा भौगोले गेह्रमालनाः मासन मारता.—मारता धासन दिलाना धारमान के तारे तीवना बानधान भूलवर प्राप्तमान पहला - प्रशंना आसमान दिना देना अस्मान पूर्व देवना आममान फाई शतना द्वानयात मिर पर उठाना भागवान मूलना बाधवाम में बात करना षाधवान से शिरमा श्रास्त्रीत में बोध पालता पाह वीचना बाहु पहुंचा भाह भरना,---नारना श्राष्ट्र नेता साहर सेवा इंडिय पारता इच्छा वकाता इच्छत दलारना द्वाप्रता बाक में विका देता इंडबत वृष में मिना देगा

इन्द्रत पर योग आसा

इप्रकार कर होने सामग्र इंडडन क्षेत्रका इध्यन बिट्टी य बिन्हा देश प्रस्तेत स बहुः नगाना इत्रवय सुराना इस्थान मेना इन्हें पाना मोहनाः इद्यारां पर नावना ध्यक्ष नक्षता देशा पात सीरना द्वेश हा देश बाधनर । बाधानर (इ.सनानाः (म र का मुख्यास्त (शान का पैसा बाका) र्गानी स अनुसन्दर्भाः कृतिया का सा अला व मलिया पर निज पित कर रिज १९७५ रु गमिया पर दिन गिनदा व गरियो पर नवाना इ.म.की उक्ता — उपाना इनको बयकाना पृत्रकी दिलागर रोमनी न दगन। द्व गर्मा प्रकार पहुंचा प्रवासी ३ तथी पर दिनन रात बहना पु तको ध्यापन। इतकी स्थला इसरी उसरा बाने राजा पुरुषी कारिका उदारी कोन





बुलंब

उठको उस प्रदेशी आया हुदती श्रदा प्रदर्भ विदिश्य के प्रण विजना पुरुषी चितिया एक इन्ह उद्देशी सञ्जा प्रदर्भा अवस्य प्राप्तना उन्नती निवाह उपने बुलवुन क पर बर्धन। पुरी पुढ़ी बाद गाना अस्तरी गांदी 340 19 रवाका गाउँगा उलग प्राचा प्रशास की बहर डीवनर पदर धरना इच्छा भाग बंडना उन्हों पैसे मौर पाना प्रयाद अनुनार 34.4 5441 उम्र इत्रका तुष्ट प्रकार **१५** सहस्र 77 8887 देव साहना प्रथमा प्रदेश प्रदेश इर य पाना तर य उपारमा

ज़र में गहता

बर में पाई रहना

इर म धरेती उर में ल समान उर य रखना 37 R RIST पर स हलता इंग लग्ना इंग साधना हर से टावना पुरिया करनर होना और भी अपनी फरशा इस्त कमन्। रस्य वस्ता ---बतावा रेक्टी श्रीकेटी राज्य सम्बद्धाराः कृष्णय संभा प्रकार का काता. उस द्वार का आंक विधारका क्या कदना गरिया विशवः । स्वरूताः सही चोरी का अर समाना ग्रह्मान का नवदा कवना गहराज का शेषक जादवा एक्ष्मान संघाती पर जाउना गर निद्रम आसः एक में बढ़ना एट निषय अस्तर बाद चंदानर बोटा पर रायका, जाधना बाठो पर रुखी ना बना बोटा से हमी फरपर

तंतीम

शेक्की म निर्देश घोट करा अपि पंतना केवन बहुनका केंट करना केंड स्वरा बाद पटना कड मिलाक्स कड म कफ घटकता कर कारता - अपाना कंट माना र्षेत्र सीचना कर्या इंटना क्षा नद्रामा कथा यहतनः कथा अत्यक्त क्या राम देवा कंपा दता क्षंथा यक्षक कर जनतर क्या समन्त्र असमाना कुछ में कथा प्रियत। क्रथ में क्या मिद्राहर क्षे से क्या विमाहर क्रम व क्रम जगकर क्या पर प्रानः क्यों का उठाना क्षा यर पहला कथी पर बोध्हें लेता कंपी पर बोध होता कपर्कानी भाषा

क्षक्षी शुरुवा रूपवाणी पंडा होता. **ए**वल नात्कर मोन्। रचमर निष्यमनः कवंट वामा **ग**त्रक उत्तरका करनी नाक इंद जाना कराइर करना पटो उपको पर न मुत्रता बटी भी वास कट पर मी बेठ दाना कहाका कर दावा कदम हत्वाहम्। कश्य उटना,—**उठान**। कटम दमदा करमा पर भूकता करमा ये बेहदर €नको स्ता क्रमोदन करमा बनोरा रास्तः कर्ना सरसा क्षप्र व्यक्तिक क्यह य होना क्याट मुख्या बफ्ज को सोर वेश बहाता क्षाचा करना का में पेर लटकमा,—नेटक्सनी क्षप्रद क्ष्मान करना कमर करना कमर कसरी।

09 O P.— 185



चीनाय:

इ.स्.र तायना इयर अल्ला क्षत्र स्तना क्षमण होजना क्या भारत क्षाम अध्यक्त कमर रह महता संबंधि काली करम री रहा पर मन मारना करम वसर कर शासा ∉रम् करनीः बारबार व जान राज बोजना करवट बद्धाना कुई संस्ता कलक का दीका देशा क्लक का लोका लगाली कारक क≒ोका भदाना कारक की को उसे बनता -सोना कतार पदना कुल्य स्थान कल प्यान। इन्हें उपन्ता, -मनना कुलई योजन हमान प्रथम कथम विषया बालम् जनासः कलम बूबना

इताय नोहरू।

कताई उक्यम

कलह पर पानी जिल्लाना

क्षत्रभा प्रकृतना शक्तकः इका जानी इ.स.चा इसहा पहला क्षेत्रा कायसा हराया । योगना कल वर वयाचा होना इंड्रास स्टाल्य पालका संदर्भ राजा पाणका काईका बाराजा क्रमा करणा व्याना क्षण्या विकास क केन्द्र गुण्यता गण्या लोकना बकता बन्दर वर्गा देना क्रवामा बलानी होता बन्दना विश्वा गानका विश्वक कार्यका अस्तर मलका अवाता क्षां का न्य होना पळका दृहत्। धनाना वालना बादाया तीह-भाट क्या क्याहा रतन्त्रा वाम कर रह काता कलक। धरम कर रोन्ड क्षेत्रा भाग केता क्षेत्रका द्रश्याना

गणाहा इतकाता

कलबा पर् पर करना



<u>पैनौत</u>

करिता एक में द्रोलर क वेजः । प्रकलाः करोजा धनकता रूपे बार्जिश सन्। बल्डन विकास कर रहनः गलक नगना मलद्रा पर जाना पाल हर अस द्वर गुल्हाका गान्यम् का नामला गाउँका प्रथम का होता क अप्रायमी प्रता कर्षका पारता पत्येजा कारकी ब केबा प्रकरा कारामा कुल उटनर फलप्रां सद् जाना कलेला बॉब्स्या एइसमा **राज्या सम्य**ासनम् कमात्रा विद्या देता कलवा बंद जाता क्षत्रका मनना कारणा सगरमा क्षत्रहा बंगोन कर रह जाता कर्मेजा मृह तक जान। मलेबा मृष्यमः कलत्रा सुबनानाः कलेका हाची उपलब करात्रे का यात्रा दिवना कलते का दुकडा-दुकडा करना कलेले पर पान होना

कलेब पर पीट समना क्लंब पर छाता कराज पर सुरा चलाती कलात पर परवर की गिरा रामशा कर्तेत्र पर प्रथम स्वका मन्द्रभ पर किजानी गिरमा कारत पर माग संहता कलज पर निम रामकर क्षानेजे का त्यव स्थवत करोज पर हाथ रचना गाराह म खाले पहला बाराज मान्यद करना कल्लो स छक पंत्रता मनेने म ठटन परना क्लेडे में देव सवता क्रमंत्री से गैठना कार्य में विशास क्षेत्र में रक्षता रुक्त में सुन बुधना बारके संसुई बुधना कलेज य नगाना करणा धर भ्राता बस में बहता क्षम वाता कमर काटनी रूपर सारा क्रमार स इट्टा स्थिती कमा विकास कमर रहता कसर संग्रना



सनोग

क्रास्थला यजन्त

कमोरी पर काना

इस्मोर्थ का शेलक

बहुन है। पहला

बाह्यकरा गाउना

इत्रहा बारका हमना

करकर कारको

क्षक्रका नदाना

कहुन हरना

महर शिरमा —हरना

बहुर क्षमा बरगाता

कहानी वहना

बङ्गाली बचना

वक्राची वह जन्मी

करून है विकास समाना

कारा मधना

कोटा गुरुक्तर

काटा करता, – अभना

क्षार स्थान

बार। दिवापना

कारत राजुना

काहा विषया

कारा बोना

करत हरूना

कार जुनन

कृत्या यस सम्बन्धाः

कारो पर पुतास

wigi Hal

काटः यस सम्बा

कारं व प्रमीतना

काटो म पटना

काम उटाना

शामित ६६ पर समाना

बारचंत्र वर्ग हें इस्ते बेनाना

गाव निषाहना

काल सरना

बाह पानता

बाठ में पाव देश --पहला

काउ होना

कान नवादना

बान उरामा

साम गड्ना

कात करता

कान का पर्दा फटना

कान का बेल निकलनी

साम साम्याः

परत की चैंची घरता

कान की किस्की फेटना

कार की गई निकासना

रात गर करनाः,—होना

काम मूलना

रात स्थाप कर मुनवा

काम कोमना

कान गरब करना

कान विशेषाण होना

कान चोण्या

कान प्राप्त कर निकल जाना

राम दस्तना

कात (लकता

कान देखर मुख्या

देशोग

कान देशा कान चरता

काम न विवा काना

कान वकदन्।

कान पकड़ते का काम करना

पतन पर्यक्ता परन परना

बान पर अन्य रहना

कार पर विकास न होना

कान पर प्रापं रापना

कान प्रथम

हे सा फरका

कांन का इनक

काल यक जाना

कान प्रका

पान करनाः

काम गाउँचा

के जि. क्यान्त्रक

are area

कान भेर भारता

काम भारता

कारा मनका

कास पुर बदना

कात व प्रांती

बान मा अपने देना

कान में उदनी बान परना

कात य कान संगता

कात में गरम समाला भरता

कान म दीन दोहता

कान म हाल देना

010

O.P. 185

गान च ४ हमा गान स ४ हमा

चान में जने हे राजना

करन व पहला

बात स्थान

वान अवना

कान जगायक मुनका

कान य क्याना

बार कियाना

र विकास

शाबि संस्ता

क्षानि क्षारताः

बात्तत बद्धाला

गिनेश्च प्रक्रम रणकरा

हाक्षा व पत्रका

कारतः सः रहारत्।

नेहते। या तल तल ब्रेटना

करना या मात्र राज्ये वेटना

काक बहुन्दर

काम प्रभावत

बाम नित्र हाला

कार्य क्याना

काम जनमञ्जूता

काम इंग्डन

बंबमें निवासना

क्या जिल्लामा

गाम पटना

बाम दशना

काम में उन रहना

काम मापर चारत



स्हर्गान

वामी में ताव रिवता काम प्रजास करेडी के सम्बद्धान कारण प्रवास प्राप्ता काल अस्तर कार के का सामा क्रांग्य को नेश्च पन हरू करल गाः सर संग्रांना काल का चारी। क् राज्ञा और टोना काल के एवं में होता. इस्त के मेर हैं। है जैने काल ह पत्र स टीना काल यह असी काल पः १४१ The fall of a state इ. व्ह. विक. यह अपना भारत क्षेत्र संस्ता कार्यपुरः प्रथमः क्षार्थिक प्रथम दिवास पर पाता विशेष कार अपना dann andr क्रिकामा व सका Sparra Guerra किनारि १४२। क्षिक समाना विज्ञार होना िवहर देवा

किए पाट अवना

रियो के मा है दिना किया की और उसन हर जाता पर अस्ति। किसी राज्या गाँचा हिमा पुर अपन विक्षी कर राज्य किन्नान स्वयंत्रा prespending बिरमन चन्नर म टाना fema areas fauna men विकास व र नर बहेब् शहायन FINE DENT TIN TEST ereit a getragt. प्रमाणका कीता विद्यालयाः FIRS PRIS The garat य व होय में दिना हड़ी शरका ENG-HOLDS कृष्ण अवश्व ्या दन म क्रम च किरसा कृत में हुश्लम कुण सं इकारता. रण व परना रण संदर्भ हुन्य व्यक्ति



रुवायोक

कृष्य जिल्लाहा कृतव दुवान। कुटब पालना कुठाव भाग्या फुल की मीत महता कुलें को भी न बचना कृषय पर पेर समझा कुरमी का नाम हमाना कुरसी लोहना कुरसी पा केटना कुपनी मिलना इन्द को स्वता कुल कोरता भूम में कलक संवादी कुल व अली जाना कुल व दान समाना पृत्र क्षेत्रका क्षा कर देना शके का तहा इनसा हैट काटटा शीम सुनदा भागमंत्र प्राप्ति आसा कोड पर बैठना कोना-काना सानना कोता पित पाता कोपन की दमानी करता कोश दवना कौभा बोलना कीन का कीयन होना

कीडियों के मौल विकास

गोरिया पर अपन दना कीया कोन्द्रे आहता. की की की तर दान मा प्रकारत। कीरों और संगामा कोष यहरतः कथा स असना शाम करना का हात्र सरका विश्वता सारका नवा रहता. संगरक के स्था गर ६ व मीवता मरिया शनमः धशं अवस्ती। राष्ट्र प्रथ्य सङ्घिर इच्छा म्बारक पुरस्कीय 2571 H7431 करण अपरास्था संबंध प्रदेश वक्षा चनता. मबर न पातर संबंध न ने राग कदन मदरम शाना 海井 下非洲 संयक्ति अनुना नकार होरना नदान गेराना प्रशास का बाम होता सम्ब न्यंना वस नाइना



नावध्य

हारोग नेना ध्वत्रकोः प्रदेश भवत्रको पदा र नो शारे घटना स्थापन

राज्य सरमा सार्वः स्थान सार्वः स्थानमा सार्वः सार्वनः सार्वः व सिम्म सार्वः

त्याक व विश्व जाना याक ग मिनान स्वान: प्रणानी स्वाय: प्रणानी स्वाय प्राप्ता स्वाय प्राप्ता

सीर का यह लाजा। सार पर प्रस्तात दिव विकास

मुख्य । यम उद्यो माट येथा माट येथा माट याथ माल उद्यास

व्याल विश्वभः विश्वभः प्रयानः विश्वभः स्थानः विश्वभः स्थानः विश्वभः स्थानः

स्रोत विश्वतिका स्रोत विश्वतिका समार करना

इक्का में हमीन पर पर व उस्ता

हे_{द्रिय} जनात स्थान संपर्जा ।

भाग प्राचीन

47 74 TF

연구 후 교 수 공1

र इंग जना के स्व

धार र ४ १ वटाना, जीन

20 1 Full

त्यतः च्याचन स्मृतः

ाम अस्तर । विस्तर अस्तर ।

47 G |

धन उन

धान पन पना

वित्र स्थापना

P 2, - 71

THE WHITTHA

Sa care 254)

the are de tible ofthe

ma a land

THE COL

24 2341

कर्म १९ मीरम

युक्त गरेल्द्र।

गान को बोर करेंग

सम्बद्धाः च्या

भाग मा चार शता

खन स्थानः

भागे रहतेर - राज्य

मान सरामा

म में भूग पर वाले प्राथश



ग€लेखाँ य

क्षेत्र विश्ववा वीज मास्त्रा योग नेता सांपनी काना मोपडी मुजनाना लोपही बाटना कोपही अवाना मौपड़ी पर सहर होता र्मगड स्टारा नेगा महाना मदर बाधनह र्गप प्राता रोच किलगा मध शहनह महापक्त केता महरी उदाना षठरी कादमः गहरी बंदाना गहरी बांधना महरी पाएना एड्र हो ताथ आनी महे वर्ष प्रवादना वयुक्त को दर्ग गढ़-गढ़ कर कार्त करना पढ़े में विस्का गरदन पर सून सवार होना क्षादम पर सून होना गरदन पर सुरी बलाना भरदन पर सुरी किंगना

वरवस पर कृष्टि कंतना

O.P ←185

011

गहे में देर पराना न्त्र क्यातः दनि पाना मही पर बैठना वा बैठाका सम्ब दहानां मण्य भारतह क्या हारेगा क्य काला यम्य हरिका वन काता यम यमत कारमर दवा करता वरदव उठावा नरदन उदमः। मरच्य उदाना नरदम उत्तरमा बरदन हमास्क वश्थन कटवाना बरधन काटना बरदव क्रमा यादन भगना गरदन भ्रामा **एरदन हरना** करका इन्द्रमा बारत स्वतः परदम देना गरदत न इंडर संकर्ता बरदन नथना या अपना गरदन पकरना बरदन पर जून हेगा



इचर्गसम

गरदम पर मधा रामा माना गरदम पर द्वार जाना गरदम पर राप हालना गरदम प्रेमनी

गाउन क्याना ग्रह्म क्रियमा सर्थम् म्राह्मा म्रह्म स्टाह्मा

बर्गदन च क्या अन्तर्ग, —देवर

स्वरत्व म इत्यार देवा स्वरत्व दिशाना स्वर्दनिया देवा स्वर्मी दाना स्वर्मी निकल्पना स्वर्मी क्षरमना संद्राभी न पाना

क्षेत्र में विकास गई के दिलाट में अपनी

वर्ष गमन। वर्ष गारमा गर्द विस्मा

सञ्ज्ञासक कर दता

गर्व पुर राजा गर्व फार देनी गर्व नवाली

स्टब्सी राज होती

दक्ष उनग्ना गना गठन्। गना क्टना गना क्टना

एका कत्रका

पत्ना काम्यव गता पत्नमा क्षण पादना विभा पत्नमा मना चापमा दाया दिवामा गया दुवना गया दुवना

राजा दवाकर क्षेत्रका

गया वेदाना गया है इस्ता गया वदान्या गया वदान्य ग्रास्ट्

तामां पहना सना क्षेत्रा गता क्षेत्रा गता केवना गता केवना गता केवना गता केवना गता केवना

गर राज पर कहना

तमा पाटना त्राभा कंटना तटा कंट बाना तटा कंट बाना तटा कंटना तटा कंटना तटा कंटना तटा कंटना

कवी क्यों की क्षेत्री सामा



वैवासीम्

गर्जी-हर्ज में प्रियम। मले इतरबर गतं उत्तरका गल का पहली सहस्र गैली गांज वर फिराना मुख्य प्रकृतिक क्ते पही हाल बजाना मन्द्र पर कुठार दना गर्भ पर यादा समाना वले पर हुए। अकाश मान पद्चना गर्ने स कपदा दालकर गुल में पक्षी का पार होता. एकं म मुक्ता गईना क्षेत्रे म नथ्या हानना क्ले म और अध्यक्त गलें में एक स्टब्स्टा सम्बंध प्राची देना बसं च पानी पहना गले व बाध लेगा तस में पांटु शासना क्षेत्र में उम्म होता मुले में हाय राजना एक लगना हल पराना **ग**ने सु गला मिनानी सहते दरना गाँउ वलकता पाठ करना गाउ काटना

पांठ जोनमा बांद बोड्ना मार्थ प्रदेश वार, बाधना साठ क बाधना क्कड व उपना गार मुख्यका सरक्र किरना साव परना गरंब मध्यम्। गाउँ दल ले बहुन। गाडी प्रकारता गरको पहला गानां उपक जान। संन्य त्रथना वालं करता गाने बच्चन वस्य कोरना केल नवनका उपना रान क्रमास् दान बजाना यान संपना गामी साना गरनी इना विद्यो दिवनी भिननी में हाना गिरका बमाना मिरती हानन नियमें दिन कियों दशी

474.4

विवाहती हा रह का है। दीन गाना शीनक वार्तांत वयना **日本名 本本 中日 - 日 2.4** कारण गर्नक वर्त्तरे वर्त्रकातः स्वतिक के व spere fabrest. **61 474** मृत्र विकास the finance RIES TEST Manual Malana atter da ge ora of a st ment en men BERT STEAM PENE PE PE THE PER ere it meet STEEL STREET THE RESIDENCE OF ALESS, R. Land BEECH EXC erg ferigs होत्र शाला गोना हराका सरेष क्लाम कर

मन्त्र कलना

र्गात प्रत्या

fi beads 1.4 21 41 19 f. r 4 1 4 9 80 4.7 7 £ 1 g 4 (*) and manage W. N. MARKET 71 1 4 7.6 87 6 11 to our new 5 4 17 6 47 RE LEST NY A PART MARKET ... THE PERSON LAW भाग गाम बाह्य सामान NAME OF STREET 27 0 4 4 A TRACT PAR 40.052 N N A STREET 127 40 77 124 NA WARA 4 10 50

\$1 A

. . 70 4 974 A Q 4 P T 47 4 57 4 D 2 Q HUONEL * * * * * * * * * 42 4 4 4 4 741 1 花 4 4 4 4 40 4 20 GIMA 14 **77 4** 4 57 14 4 * 4.7 · Q = A+ 4 gr 2 at 17 4 4 4 7 4 5 5 5 012

1 1 4 4 24 64 11/ 4 -- 41 . . . 4 0.41 * 10 * . . 1 4 4 444 . . . 4 ** , -0 1 1 100 - 100 2 2 SET PERSON 2 4 45 1 141 - .



सदायंग्य

होति का ६८८ में अब जाना नगण चतुरमा प्रमुख य क्याना सगप में अवना षदम पदाना चवर (र्यत) गुक्तमा देवा बारेशर अग्नर सक्तर भारता **प्रक**र म श्रामनः QUEL B TYRE प्रकार का देख दवाना मुक्ती विश्ववस्ताः श्वकी विसन्त प्रको सं तक्ता **१९७३** म सिक्ता वाली प्रवस्ता भागकती प्रत्या पारकी गहना वयत। योजन अकृत्यो साम्य पदानी नदाना बनकार्त १५७३ **प्रदेश सामना** सन्धर्भ के व्यक्ता बयत् मणानः पपन संस्ति। बारत पड़ना धवाधवाकर बस्य करता

वर्षाए कोट बदाशः

बर्देश राजा 4क्षण्डर जुल्ला चरकर व्यक्ति। चरमा इता पराव प्रदेश च में कि स्वा अराग केंद्राने इक्ता चररण सनामध प्रकार समय। बराव लेखा श्वरण विरुपर पराजा बारको तथ पहुंचना बन्या पर स्था स्वता चरणां म चताना परको ये यह रहता क्रिकार व जारजा स्टब्र ज्लारना बासा हरा देश नवा सरसर नर्गा समाप्ता वर्षी बहुदा वर्गे कुरता क्ला अस्टबी चलना हाम धारत। अवट परता विकास वानमी आया चलती स्थाप ¥िंक्ष उछ्ना খনৰ বিচাৰ বস্তুত স্থান্ত



मैनामं क

वनका जनका चशक्तात्मी करता

पांच नगरा। बादी करना बर्वेदी काटना

बोदी के दरमगा व तीयज्ञ

चादी बनगा चार पहेला चाट शगना भार नगरन

षांत्र वायकर मौना

पावक जपावा चाभी गयाना पानी हार्ग में होना पाय पर आता पारवाई प्रथम देशा

बारा करना चारा व होता वास चमता षांत्रजी हेना जिन्द दिया अगन। विना का नामें पहला विदा का लग्दे भागा

बिया का मार्ग डान्डना चित्र में इब्दा बिट सगना भिट्ठा बंटना विष्ठा प्रका विश्विष्य उस जाना बिडिया में दुध निकानना चिक्ति हाय य निकल जाता

निवदत रातता बिता पर बहुत्व वित धट्टाता भिन उपार होता. बिल इंबरन्ड बिस कर देश: किल करना विमे सिन्दरा विम कहता

बिल बार पर बढ़ा होता

वित्र विष्टुम्बा वित बगाया निम बर होता चित्र केरवा विन दिवना विकार स्टबर विश्व रास्त्रा विम दिशाना विस हेना निम पाना विन पर बहुतर

বিস গ্রহণ वित्र दश्या पिन इसता विने संपत्ता विकासिका निस्त म अस्त निमंग जबना बित य पाना



अंक्ट्रार्वेशी

जिल ६ न मगरना

भिन्न य वेहनर

चित्र भ पाउँ शिला

चित्र राधनाः

थित प्रति

जिस नगरा

विच वादा

चित्र पता

कित समा १७७१

[बल में उपरक्ष]

ज़िल स विभावता

बिक्स साम गाउना

दिया होता.

(बन मीन रेतर

बिनगारी ने सा

विकास सम्म हरता

(बार्गा अन्य

विकास अक्षास्त

द्यीके को दश निकटनो

वृष्या वास

gefest det.

ब्रह्महर्व का देश दर्जा

बुरुविका पत्र वर्तनम् अत्र होता

भूतरी इस

मुख्यी बजाने

मुख्यी भाग्या

मुख्यो प्रत्यन।

मुलंबी अला

पुण्या ११व म देश

सरिया हाय में होता

बुधोरी देता

चल्रमा र भागा न स्थम।

A: 2.0 119

च रत के धेराई

कुर भ ३५% राजा

चुनः गरना

स्टिन्द्रभावता

भाग न्ता

चेता नगरना

ना पर । सन्हें

बन्ज के अंद

बार मा बाद विकास

TREETING IN P

4 63 4256

ब्राप्त संदर्भ।

4. 5. 2.4.41

MILE GRAT

4 7 4 5131

म हम १ छन

पार्ट में दश्ता

ष्ट्रस याद भावना

पट्ट का इर पनना

श्वनका को छना

भाग सामा

din juridi

क्ष्रप्रा शिक्षा शन

भूत्रा शिम् उदेश

बर्दर को सहस्र

बहर का निकार कुन, धाना

अहर का रंग हर जाना

चटर पा पान् हो चाना



दुपसाम

भी पर पर अविभागन कालना व 🔭 😅 तस्त्रीतः पुरुष्टा कार कर कुल बहुना नहर गर अस्य एक जीवर नारं एवं जिल्लान बाना बार्ट के सामग्री विकास बन्ध पर हवाई उद्देश न्द्री व स्वकता सेन की बकी बहरा। र्वत व र स्वतः न भ गःतता जोबका वर्धाना मोर काता बोट उत्तर। धोर गमाना भौत पत्र सतुन्त प्राप्त विकास प्रतिकार करती क्राना क्षोत्री कर कानां कोशी की बाज गंगांग क्षेत्री गरी होता चोटो एख म होना क्षेत्र के यह फिलोर परना नोरी पुषादना चौजा प्रदर्शनी चीक प्रता दीवर्ग भूतना जीवरी प्रचा देगा पहेबाडी सन जाना बीका देवा 013

OP RS

भौवा लगाना मोबी हेता कोर्ना परना मीव बेरता भोष्य पर सावा नवान बोलद पर सरदा राजना ध्यानी करना हुँ गा। क्षा । एउस्स gert Cear ख्राता प्राप्त भारत हर्मका १:५ स्टब्स् दशी का दूध प्राप्त जाना हिं। का दूध प्राप्त गामना खुरो संग प्रता क्षुपा का एक देवर क्षिपाय कार्यकर हैता सुमान प्राप्ताः दिक में मानी हैं द्धार करना tree of are seen rea. हरत नव न ५ प्राप्तर tre a ma car स्ट प पटना सुरह व वनवर हरूह य बेंग्या कुर्माः प्रदासनः क्षाओं दुरन। सारो उपरता द्वारी उभए दाना

कृषांम

क्षानी कार्यका Qual at Any Anger स्वानी करना द्यान क व्यक्त वा दे होता. द्वाची चर कुर टीनी ह्या अस्ति दशासा क्षान हुन्यों कर देश स्थानम् । के नी नी नास्त्रा mar figna स्वा रिकास द्वा । मुख्या 1 3/41/07 dies hatel सुर्भ रहता रमुओ प्राप्त पानी कर कर रहेगा may stra हुइकी जबा दहन पूर्वा वालकर संग्रह होता हर्मी सम्बद्धा ह्यू की दलका हाली दशक्ता न्त्राची हत्तर संको यह यह करता संस्थे धवरना हर्ता से असर प्रकृति करता. कुर १८ विकास सम्बद्धाः होती निक महत्र रख देवा साओं कवर की करना ञ्चान) पर कृतिया रसना

कार्य पर व यो देखना त्र तो प्रश्नमक्ष्य सन्त्रा गानी पर सुर उसना पर प्रथमा कर बच दला सम्बद्ध वेंड्स (四) 77 司[3] ल्या के कर करण मेलाना A) 17 TERI ा के केर अप चहुता। सं m gr gril ा । ५३० में पाना कार गाउँ विकास अपन रणार्वते यह राज्याच प्रज्ञात हाली पर यात्र सहस्ता क्षानी पूर म बोधा प्रनारका m - 1 as 254 45641 क के केरता e । पटना कुल सर वाच सरेव 9 x 2 94.8 2(4) क्रमा वाहना R 40 电相相 हाल फूल उठवर एका विश्वना प्राया दशकाना हा अपारत विद्या कुना में एक प्रता हाला म छुर चलना ूना भ गुड़ करना spat vereiget



एकावन

हर । से दर क्षेत्र। भाग या सकती होता। अल्पे स नवकार क्रेनर श्रीनर छानी म निच रखना ह्नु की अपना ह्याओं विकास णः समाप्तः खुरको सुमा द्वाना शाने व नगरपार रखना मानीय प्रकात। खान ८ नहा ह्माण पहला म्हारा भरत्रको दावा का बरह बाब गहना काराधीन संभवा क्षार जगना (सार) स्तार जगाना हर्श्वास्त्र वाला ह्रिका गुराको स्था रचना क्षांतर जमानग that far. पुरश पदना होल फाना श्रीक्षा सदय करना ह्यान्यकार होता सभी पनामा दुश करेंगा

भूग माद होना

सुंह बारता

द्योग विनन्। ध्रीय बतना वय ययम्। and the state इस्ट द्रान्य प्रगाम नाशना इस्ट व्यक्तनः कर है देखा। बहर सामग्री वह नवाहना महायोदनाः बच्चे मध्यत्ताः TE WPAL कड़ कारता NE MISHE इट प्रधनी बह संयाना महारमा महारदाहा लगा क्ट पर कुलाई। बसामा प्रक्र मार देना त्रक पश्यताः बद्ध दिन होता. जन दिन्द्रा देता

बनवामा देना

इस्से ग्रहाना

क्रम अन्तर

कस्य विगटनग

इस्य दिस्पेटना

कम् भरतः

साहन

জন্ম শ্ৰী য়াম ≃ং হামৰ মিৰবা m# \$5500 रवह में करना Mittel with Phate प्रचारत कार्यका इक्षाद्ध को कनाव्यी वसना प्रचास योजना Hall beitraft. इकान चारकी इन्द्रिय प्रकार ह्रवास ग्रामा ज्ञवान साम्बर क्षाम दस श्रुवान प्रानी য়ুখ না প্ৰত্যা प्रकार परवार ही होगा अवस्ति धर चत्रको ज्ञापान पर पानः ज्योगी इन्होंने पर न पाना प्रकृति वर अस्तिक तिए न पर मरुगता अवान पर महर सामंत्र कुरान पर मोना BREEF GEFFE Sain Gerte. ज्ञान संस्टर के के केना সহার বিবরণ

शयान रिपानो

अवस्त इत। सहता

वृद्ध द्वारका रणाया क्षेत्र अस्त रूप ने। यद अस्तः अस्य र ११ घर चरत्र बार्य र १ व्याप्त दश हार 2016 At 100 944 स्योग स्थाप **प**द्योग चयन्। बक्षा व पुरस् इत्सा वृक्ष से विश्वविदे भव्योग २ लगर प्राणिक पर विकास देवा तक संभाग पण स्व करना on a se far gret बाद व पर किए काला बाहुर्य में गुरू है।बार NAME OF BUILDING १५ ६२ वर जन्म की होता. रतक पर गरेर गरे गरा बुधान **२७४) धाल क्या है।** प्रस्त पान म १ मा क्रमाना दृष्टिकः राज्य कर व हार सकता असर हरफ पर पानी के ब्राप्ट देना करण सीच कार्मा रक्षाकार प्रश्य कर देखा बले जि.स. च काले परिदर्भा प्रकेषण वर्षण दिवस्त्रा रने पर नमार देना कर र वे दोन कर्ना

Farga.

क्षाशी रहा ति हाच जब्द चल्ला मुद्राचे जना तवाच भनना केटर मामा अंता वृत्र अस स परवर तरा व्यक्तना ज्ञास के एक प्रदेशक तहरें को दर्भावें ब्रह्म कर जनाया छुटा विकास में के लिए अंतर तथा तहर प्राप्त तहर काला भूगा व शोबा भू न दिलाला मधीन गावस्ता अस्तु वृत्रस्ता तातू गाउँ। भागू समना तरह अस्टिन। अस्तू भिरं पर गहकर दोलना जान की बाजी असाना क्षान के नाते पहला शान को आ परना ब्राव हो आसे। ज्ञान योजा वाल पान म राजनाः

क्रान चारी पर असा

जाने हाताना

OP 185

014

राज गलना रानि नीरत गए मुदेशन क्रमन अस नामग ब्राप्त िय दव वित्त हरा। भारत संस्थान म समाना भाग गणना बार्व पर पा इनका प्रसिवार एक बाता 4 1 पर यम भारत बान गाउँचा अन्य बर्गाना बाब बकार में कारण अध्य व्यवस वान मध्यक्त व अञ्चल बान म शत शता वात प्रकार बान र कर संस्थान क्षा मुक्तं को बाग पर लेका अपन वयी पर नदा होता. भाग है अब प्रांता কান ইয়াৰ বহু বিশ তালা अस्त्र व्याप म् रहता बाल फेंगाला बाद रेसद्वाना अन्य व प्राप्त गीनी बाह्य टोना जिल्ली करना विश्ली ए उना विक्रमी देखना

मौतन

z* नामा वी इसार शना ही बदया की प्रधान की उपगल्ह की प्रकारत भी नगर अस्ता **্যা ক্রা**ক্রা श्री कथात्ता बी कर जस्तः की राग्यको भी का राग पहना श्री का नृहार निकलने। श्री का नदार निवादना की है। इसको दुसारको भी बत संभ विकता ही की कमक मिन्ना की हो समय विकासिक त्री की प्रस्ता श्री की जनन समना

र्श्व की जलन बनाता

त्री को भगेमा धाना

ही सपानी

की विकास

श्री भारकर

की विश्वा

ही चतना

की की भ्रष्टाम विकासका भी के कन्नोंचे कार्टना

विका पर द्वारा जनना

कं बढाता री भगवा की दिसाना हो जिल्लाहर की दोनगर भागनी वी वयाना भी बनना 2) उत्सव शे प्रकश र्धा≭का करता की बारा जाना प्रीक्षिण जन। A 2542 की प्रदेश की शतका की लोक कर की कारका भी नव जाता भी शहसना तो हता की शीरका की गोहाला की पता काना री पश्चिक करता की न मरण्या की संस्थाना को विकास देना जी पश्चा जी परचंद सरका वी पायर होता

इन्द्रेपन

भी पर जा बनना वो पर समना ही करावा जो फिरना वी किमसना की क्षत्रपट की दहाता भी विकास की बेंद्र बाता अर्थ अर्थ कर तो उरमर श्री प्रवय क्रांग भी धर बना कि क्रिक्त प्रदेश काईट होता भी मा एएसर भी म भारत कहना का सामग्र करता ही म अगह करेंग क्षीय तसका की वाजी भारता क्री व ए। स की व वेंद्रवा मी य क्यांने क्या तो स बसना ही म बार प्रशन्ध की में बेंटनी हो म घर उसना भी प्रमान नेना और मेल तमना

की संग्रामा की माजना बी म राज होना क्षी में समाधा बी म सुई चुधानर की संबंदर की रहता मी नगवः जो नगररा को महाना মা দৰ্শ की सहस्रका की मानः भी सुरामा की लेका प्रापाना जी सवा की सभी पर दशा होता की गन भाना भी मृत्य प्रध्या की से उत्तर अपना की संकाता भी हाच म गणना की राध में रहता भी हारक की दिलना की दिलाना वी होता बीट प्रशास कीने की नाम न देना जीते जी भग जाना

€ H H 10 A P. Sec. and 374 N F श्रीय जगम Man and Lore AT A THE My bearing 8 4 4 4 4 4 A M Later Total Audi ANT CO MI CHARGE. and the seconds fin ber fan fraut. E will read की क्र किया ता I to a bid upon \$193 x 17 1 2 15 MARK WITH A BALL A HILLY A PARTY 4 30 4531 बाहित ध्यान gifge erre जन्म सामानी

2 4 1 517

क्षेत्र का त

1 4 4 54

RANGE PORT

a springer of

1.1.1 7.7.01 र र े र हतास्त रूप मा 2 t 24 , 2 4 4 47 र अ. इ. च. स्टार इन्हरनी T Ar J* 97 4 2 (7 (773) 1 (*** 4 र । व । प्रत्यात 477 *2 No State. A STATE OF THE r 4 9 7-81 11177 2 1 7 77 2 37 4 4 4 W * - 1 - 12.431 em q me megt 24 4431 F 5 67-81 राज ६ जा र विश्वक भागा AND THE AT 2114424 Appl 4 Lts \$500 T-41

0

0

and the foreign ATT THEFT THE THIRTY Nin day बीटर अजन 4,54 1941 101 - 241 10 2 45 7 47 11 4 (De ea tant TA NOTE 교기 또 : 제 MEL HETER MIN IS LITTLE STATE FAIRLY . 471 51 1 of Part IF PURE and the street a har TO F P ST क्षेत्र के वेचर is a minet o 10 4 Par *** \$44° हक की क्षप्रका 4 41 4 41 0,3 OF 35

- - - T 71

4 4 4 4 7 7 7 7 REAL PROPERTY. PRES PAGE रक्षा र जादर भी क्षा के विद्याप्त संस्कृत CH 6 C) 4 Transmit 2 11 121 2 6 41 F F F F F THE PROPERTY AND F 39.60 4 5 1 1 7 1 2 4 27 2 1 STATES THE REPORT FRANCE F 10 E T 14 A F # 4 75 412 / 3 () 4 50 191 4 77 \$ 45° A1 作 化 图 可利 4777 4 L. 20 5 THE PERSON

क्या पर

रकारी पुरसत्स रवत्रा १ दरा र्वज्ञ भागता हुएक् क लिए नम्बन्ध हक है के दिला वर गायिक होता हकती को गामर महादेश पर गाउन इंड वर करने। श्रम व पदना हरा दिल हुती दुला हरे । या ः रह में होता Se meat *१व चणत्*। प्रेक्ष क्षेत्रका टब्, स्ट्रोटना 2年 2年町 त्रद्ध प्रदेशी नर्भाः सहस्याः रम् बतनी होता कप्या रोक्ट स्थानः यह का बीच दश an a may met उपनिते कामभा इंक्षेत्री पहुत्ता

द्रावेदी जन्मा

उत्तर नगमा

क्रान्त्रं वहांन्त्र

नर्दाः सारक्षयः तनाम्। मामा अस्तिक देखा राज्य प्राप्त कर दशना संक स्वयं िकान स्वयाना ब्रोक्ट नेनर रम् निहान् च्या विश्व पर करेंग प्रशासिक वर्षा ने स्थाप en ga graar 181 181 र व गोरकार बेट बनाव प्रकार में केर भे नेनई शहर माम क्रिया मध्यम न्यान्य नांका क्रारंगरे त्र सारका वं विस्त इक्ष भागता PAT BROOM रशः समान रह पनना रंच्य रिशामा रहा गैएसा र से बारश दश भूतना रत पापना PF TENAT राक पुरुषा লাভ এলনা

इक्स

राज्याचे हार देव। हात असम्बद्ध दानी देता. र्थेष प्रदान। र्माय का साथ व जुड़का र्वाग मारता हींग हांकना इब मरन की बात उदनी किइनी पार अवना देश व्यास 27 (CT4) पराकृत होता प्राप्त नवासर ष्ट्रपट हान्द्रहों। रोग इक्तां धेश भणना घोगी हिन्छना शोभी म उनस्ते ही श्रीरी किंग्याना रीते कंपना शेश वनग इक्षेत्री जाना तुम करना त्रका वजाना वर्षे पर शाना बुरे पर मुक्तना रमधी उप इनवी हवागी द्वाद मात्र कर रोठा

विद्रीम देना

ियंग विश्व जाता द्वितायः गारंत्रः रीय करता र्शन रापना रीत दना देर हो जाना होन रेना बंदन वीरबर राज गाउना होत्य ब्राह्मकर दीन बहरा र्राप्त वायाना नवी उत्तरका तयो संपद्रता नगीय गना तकरीर का पंजरा नाता नशरीय धुनना तकदीर राजना तन करना तन रसना तन का नाम कुन्नाना तन का होंग न सहस जन को दहा। यह बाना नव की सुधि न हाना वर्त्त प्रकारा तन भारता तन ग्रीवना तक धूरता क्षत्र ज्ञानाः हम बीदना

0

did nad. जन्द जनक **使用一定位约** वात देशा F-7 427-3 AN A FEST वस जेल भारत पन यन क्षेत्र राज्य केत यह की का इन्हें व पूर्ण कर प्रार्थ लाम प्रकार केले अध्यान सदम सभागा MERCHANIST PARTY मुब्रावय राजा न देता सम्बोध व विकास tegling fem gege matter meeren वड़ी पारत प्रांती 対策では17 単アス वाद्धां सामान्य प्रमुख्या अध्याना वसायः इत्या नंदय सामा मन्द्रम् अस्ति। वस्ता पर प्रथा बाद्धवं के उक्ता स प्रकृति जनगर many weeks

बारमा सुरुवा शहर

करन हो गर पंचा करका संबंध sains in day gall भवा । पा भारत पर महत्र मनदार का नवन विकास करता ने धार जनका ANCHOR AND A TOP T12 1 x 7/87 TETH, TETE राष्ट्रा स्थानातः 4 4 1 21 21 21 * १३ - १९ लाई) बहरमू रणकार विकास के बाजना र वर्ग में जन्म प्रमान START O TOST - 11 Y THE S 4 1 424 42 3 MAR OF A S IN THE PURPLE लाम् स संगता TIE U TTO लाम राजा त्राह व्यक्तिक বাল বৃহ নিজ কমন্য भाग नाम THE PERSON कान देश है।

214 A 141

144

व्यवस्य स्थानः fligt great १९३ हम diet Ofear the states; TITL STREET ALL AL SALE भूके पुजरूत ALT TAKE तीर नाम वरत A 2 ATT PERS ATT 3 7 758" wit a graat ATT BURST बार नग प्राप्त atter e que grunt बार मिन्न राज दीवता नार म चरता लाल करना बाल पान एक कहा जाना मान र समा नाम पर सामग्रे काल प्रकार र जनवर केल करना कामा हासमा सारा दिल प्राप्ता वहरी भीतवा भाग्या क्या नगाई अस्त्री च दरगर

गामरे मार्ग सभा

TP DIS

0.6

war and to lear TEX YEAR 4.75 (1.434 4444) बार संभी व वस्त्रा TIN OTHER TTO THE WHAT रिकारम चित्रका fearn use: विवास कर काम अवद्यान fame a mer ferner meers. faque mauras र्गतक्षा न प्रथम वास्त्रका fear meat (Made Held Street) frant git a fein mat विकास का नावका frage or urt un a apar fear a geer find 45 ATE GATAT face or left detail. प्रसं ६१ व्हाइ स्थाना fein ell ute fe allig wiert fein gra at une a giet fran mega feme west frag wenet बीट काता और प्रोटिंग नोप निवास पर हेरला

可能行为

बोर किएक का नाना लीक बण्या भीत हम्म य शिवास अभ लीवश्रीक सर्व दलक तुन्दि वीप्यवद कृषात्र अस कुणान गाउन नवास भाग गणह कुकान कर होता ৰুজ ঘটপ্ৰট नुष १७३ मुख यक हैंगा भूषा शिवन। अंधा काष्ट्रातः क्या वसम्बद्धाः क्षा वस्ति। नुष्याच्या द्याग्यसः ने प्रदेश भागर न की उन्नता क्षात्र कर्त भाग साम जोता गाउँ पर मेम जिल्लाकर नेप्रश अञ्चल नेबर पर उस पहल नेवर बरन्दरा केन्द्र शहला नेहर पदना नोष् वास्म नते की करत गाला नावई ह्याकना

मार्चेरी चत्रत)

कारी प्रदानां ---इतिना क्ष्मणी पर बन्ध आसा भवदे गानाः क्याह स्वाहर क्षणात सार्थनी चापह जगना वश्या वा ।सः बायर कलाता भाग्न व हात्वा dry mm. बुरङ्ग नेतर धुन बारताः पुत्र सूच राजा त्य स चरिया जिल्हा वकी कावना द्रात कार्यक दर्द कर कांगर CULTAIN. इफ्ता हमना दबी अध्या में दक्षना **'की हकान से बहुता** दकी बिगारी का बुद्ध में बाम, बटाना दर्वे कर में कहता. इम् चरकत्रो रम उपरक्षा दय का बल्ला राजा इद्यास^{म्}जना १म पोनना इय चगता द्या नृत्याः

निरम्ह

देश तोइतर दम देशा दम निक्तता दम भवता वय मारता दम म दम गुल्ला दम फुलका तम भग अला देष लगरना एम अन दम् माधनाः इम् मुखन्। द्याया देशः इम्पादा पीरता दमग्मा कत्रका इंग-दर को होतर भागा दरन्दर को प्रश्न कार्यन दर दर ही होन देश देश निवक्त सन्ता दर दर फिरमा दर पर जान कुरबार य खड़ होता द्रमामः सरभगनः द्रावाम भागमा देशकाका समाहरा इरबाज का यह व दसता ६१वाजे राजा इस्थाप्त पुर पुरस वहात हाला

इरबाजे आना

दरबाजे पर नदे रहता

ारबंदक पर नजर देनर दरनाई पर नाक स्महना दरेवाचे पर एदा रहनाः दरकाङ पर हाथी अध्यक्त दर्गन पहला दराज अब जाना दृश सम्बद्ध हमें बदन ४ रजा। धेपेटल स्पर्वेश रखना इसाम संनिधादकः इष्टाची वाना दहरद मार कर राज्य officet ein munn. राम साहका दान दिन कताका द्राप्त स्वयंत्र होसा चल प्रश्लाका tid FERt शन मोहन्। दरम दक्षा इ.व. विश् अवर राज निकासका दर्भ विकासका धन योग कर रह जाना ताल कीसना रात कोर देशा रात दवना दान हेठ जानर राम जत बाला हात स्थातः

LOF.

राजी जाताः राजी समाग भूगओं यसीना जाता लाम प्राप्तानी देनां हाको स कानी लगना हाला स बोर्टिना प्रकारना हरेना ताल भारत ना राज्य से पैसा प्रशास द्वा के वास प्रकार हरत में बेपना दाव बनावर राय पानना gra maar ताम देश सहस्र हाब थाना दाक वंश आसा होंच् जराजर eta esti-राज हररका कार्ट स पेट विद्याला हात लगना क्षांग नगाना हाडी पश्चन दाद दवा

देति विषयमा यान देश का नामना दाम के चान। दाम में समना वीमें उदना देशमें बदना ्स्म च्याना दाम नगना दामन श्रीदना दामन श्रीदना दामन श्रीदाम नगन द्रामन श्रीदमन दामन श्रीदमन

दश्यान्य वर बडी बहुतना दिसान के दात दिव गरन्त दिन कारता दिस स्थापना रिक दुवे दिन भरता रिज क्षेत्रर fen meint दिन शिरमा fen near दित प्रमहत्वा दिन दला अध्य दिसं जाता. दिय १९२१ रित बुदासमा হিন পুরুত্র।

दिन कीतना न प्रानमा

दिन घटना रिम व नार दिलाई पंत्रम

दिन धर जाना दिन भौरका

रिक किश्मा

1 3

विवास प्रस्मान का नहन रेक्ष्माम अध्यामान पर काला दिषाण उनस्था दिमान का गृहा बट हो जाना दिमान सपाना दिमाग धरकर साना दिमाग संहता दिमाणपूर्वा करना विमान किर जन्म दिमाग बढ़ जाना दिमाय महाना दिल प्राचा दिन इएन पहना दिम उठना दिम वठा-वठा फिल्का दिस उम्रह पहला दिया उपारताः दिन कचोटना दिल कर में होता ब्रिम का विकास निकलना विल का पान भरतर दिस का बुखार विकासना दिल का बोम उतान। दिस की आयं वृक्षाना दिन की कली मिलना दिन की दिन में रहता विसादी सगना दिन की हबस निकलना दिल क्षता दिश के फफोले ट्रहनर

017

OP. - 185

रिव के प्रकार प्राप्ता **. इंड वहरश** टिम भिन्न उटनी दिन वंद्यका दिन वन्त्र रवना दिन बांचना दिस नवाही दवा डिय केमना दिन कुर कुर होता रिन दिनता दिन हान नेना दिस छ हता दिय अस्त्रा दिस प्रमानः रिम जरुता दिल जोहना tan erteat दिन दर्गा दणमा होना दिल स्टबा दिन दिवाने होता दिल नदास्य दिल नोब कर दिस नारवंगकामी बान विक बाम राजा दिन स्वता टिल टंपकता दिन हेना दिव शेषता दिन दोइस्का क्ति प्रकार



1 4 22

रिक विकास समा देखा है। जन्म

हिन गक्ष देन।

रिक पहर किस्ता

fra un ere e at

[58 77 41 719"

दिल विश्वतना

दिल पर्यातन

िक्क कृत्य सम्बद्ध

िया कारना

fign foren-

জিৰ ক্ৰম

दिक इंग्ला

Fre again

िक दामा पाउपनर

किया द्वारा साम होता.

द्वित व्यवस

रेख देशमा

हिल क्षेत्र स दक्ता

विश्व शासकार

दिया भारतासः

क्स भर भरता

तम प्राप्त

किम बनना

रिक समय हेना

हिल प्राप्तिका

रिम विकश

िक विभाग

दिस स प्राप्त सहस्र।

दिल क चना जनातः

दिस में ए ह कर रह जाना

1 1 B F F 70 4[3]

ि कु इसके कोल्स

ित् छ प्र⁴्र सः सम्बर

रिच ५ वर में होते.

िल संघर गरन

1 THE REST SHIP

िल हा चलांच प्रशास

EP # #48

रिकाम केरना

र्ग या पाला नजना

िया सार्वेण प्रश्ती

र दं जगना

िन यसका

दिव करा

दिन व अवत्र वात

दिन से निवास क्रांचनी

fen a fagge bet

१८७७ स प्रमाण जिल्हाम दना

िस हाथ च उनहा

रित्त हात में जाता

रिन्स ११वः उद्येषको

few few grat.

दिव दिना स्मा

िवस्था अहमा

रिकार विकासना

च्यित्र विश्वासम्

र्ग का प्रित्रका

fem finent

रिकार देहम अनी

रीत पुरसा

संकृतिक

रेसाल अस स्वयासक

दीय इतरता दीरु धरात पर शहरा देखि प्रकृतन्त्र दीठ जुबनः दौठ हिपाना दोठ हुइनः दोड दहरता दोठ यह बना दीठ फिल्ला दीठ फंग्ला रीट बदाना बीड महीरता दीठ प दहराता रोड लएना दींद्र सङ्ग्रह रीठ संशाना दीदा फातकर देगना दीना फेरना दीयक बुधला दीया बढ़ाना दीया लेकर वृह्या दीये की बसी टालन की न कहन। दीकार उठावर और इहाता दीवार के कान होता दीबार ट्रुट शाना क्षीबार लोगगा दीवार रखना दीवार में करता दुदुमी बजना भुद्रशी बजाना

हरान स्थानः हुन का पर कीना रीय का प्रशास कुरका इस प्रश्ना द्रभावः बीच बानाः दृश्य व चयद म पहला दुस व लावर य बुबसा दुर्ग कर रक्षक दृष्ट अवस्था दम देखाः got ander दुरु स्थानक gie utemat ger merrag दल स गाउँचा टम व पर्य अस्त इष व असत। इस व कलाता इपरा वाचना र्यानका चन्द्रस इतिया भी त्या नगरः वृत्रिक इलदा इतिया दश्य उत्ता र्रातका बन कर बहुत्या दुर्गिका म जर जस्का इतियास राज्य कर जाना दनिया य बहा पार होता दुम भार हर चन देना हुम देवाचार जागता

80.00

有效 有效 用作力 इस नवर बेरना বম একবং इस जिल्ला इक्षाम के र है गाउँ इक्षांबद्धाः क्रान्त्राः इतार सम्बद्ध रूपानी साथ तना gert bat. कुलं दिश्यां कुरारे बायता कुछ का गांधा हुव को श्रामियो करता हु। की अपन्न से ने ग्राप्ता हुए 🕫 त्रांत न हरना हुए है पत की दल में अदता दुष्ट बहुएतर इत हर तना हुअ की समन दुवार दन । कृतना नेगंका दुवको कर जीवन क्यानाः हुम । ह । वंट तत्त्वता बुक्त को अभी पर सम्बन्ध हुमर । के लिए क्या मार्चना मूलक के जिल की बात मीत्रमा क्षारत व क्षाप विक आता. हुसर। के हाथ के चौटी होना द्य प्रकार इस कोहला

* h . 143 दर्शित वष्टवर द्वरिक दान्त्रक हॉव्ह हानना इंटिंग नामका इच्छि देवर दक्ति क्षेत्रमा रूप्टि दौराय। चुटिंग केंग्रजा इस्ति फेरमा इंग्टिय बाता दृष्टि य स्टब्स् इध्हिलानाः रुच्यि समाना देखकर भी यहची निवलना देवना कष कर जाता देवना प्रमाना देवनायों ही श्राम प्रमा रेत्र की नदा न होता देश ही दक्षा गंबाहर देह को समया रेह गुराना रे/बटना देह स्रोदना देह हुएता. टेह दनना देह तजना देह स्थापता देश मनदा

रेह न नमनना

इन्हसर

देह विमान्त्रा वेह भलक

वेह म आग गणना

देश रहाना दह महस्तर दह भित्रता

देश हदश।

सीपहर दलता डीच बढ़ावा सीमनी साठना

रीद लगाता हार जुलना

द्वार कर लडे होना

द्वार वर भागमा

हार शयता भक्ता मध्य

पणका लगना पश्चिमया उत्तन)

श्रुविजयां प्रशंता

ब्द्य लज्या

धन जोडनः धन वर्गनी

ध्या आग

धव्या नवना

बरती प्रोरमा

बाली यह पैर न पहला

संस्ती पर पैर स्थल

चरती स उट जना

धरना देना

वर्ष विश दना

018

O P - - 85

D 19-4

बंद क्या

धन व न सस्त्रक

भार दशना शास वजना भार राजना भार देखाः

unte genom

gren an farmage

धार र व्याना भीरक वधाना कोड र वापना भीरता धारता भूषा वण्ट्या

स्र प्रता प्रतान।

पुन नगरा

एक व्यवस्य अध्या

षण उत्तरनाः भूजी त्रयानाः भूषः भवताः

पर संबंधित न प्रदेश

वृत्र केला इस सम काली एस होता एस होता एस कहना यस हसले विज्ञास

ध्य करता

पूर्व क्राम कर पत देन।

धन कार्यना पन करना



197

बल म पड़ी हाना भूत म मिलन पूज में विकास पूल व रहती बंदना पुत्र से लग्ड प्राप्तका धूल ह गानना धन सम्बद्धाः दल हना वानाः धाना दौनी विगडना पौष जमाना दौस महना चौत सपना भौत नगाना भवत्त्र स्टना बग्रात चेत्रता म्यान पर मनना भ्यान पर भवनी **अपूजा कहारामा** वकाम उत्तरका वर्गाण काम में राजना नकेल हाय म होता मेहरू जनग भगादा असेने । नदेश प्रस्कार सञ्जय गंगित्रह शहार गावेती नवर पुरस्ता संबंध स्थासना बकार हालवा

सहर दौदानः बक्रम सं प्रशासक नद्राप्त प्रतने। सार कर चहुना सत्तर प्रशास संचयः च गरने । संबर १ जन अपनी न अन्तर अस्ति। स १७ अस्ताच देखना संजय घरती कार महरता. ∌बर विवयर त्रकार क्रिकाना **#27 7841** बढर नगरा नप्रदानगणा नवर गरना नप्रस्थानाः भवर काला नजर म विरुद्धाः बाहर होता. तत्रमं स मरकत्र मधी कहना नदी **बहा**ना तका उदानी दका पाना नक्षत्र गरोमना तस्य प्रशासना तमक नाना नियक श्विष्टर ना



- बहु सर

ৰমত ৰাধ্নত सम्बद्धाः सारद् समाम ज्यामा न्यंग्रहत्त्व करताः साम अयाता स्पन की कार जोरूना नयन का अधिकि राज्य नाम मुसमा व्यत र पनारी बहुना क्षत्रक का कुछ वा पत्रका सरक म दिन पीतना बरकाये पहला नक्ता महोता वर्षाती करती। अरधी दरनका नक्षा पुरवहनाः ब्रुक्ता पुनानाः तृहार चक्क स बता विश्लो होता नदा। दिश्या शेला नदी संदेश की मा नसन्त का पना होता मगसय व विश्वनी शैर्था मनीव के मार्ग मतीय प्रच प्राना अधीय किरनी नगीय फटा होना मह जिल्लाहरू बहु में कीय डॉक्स महर दहा देशा

F 4 354 भग्न हुनसभा नाम कर प्राचा ara erarar प्रकार नगर वेशनी नार शास्त्रका नक्षा के बन नावका व्यक्त चनाताः नार वहना वहारा स ४ हिल्ला क्षत जाना क्षा हारका ath eath. बार प्रशास का प्राप्ता अन्य पर गरमा राग रहनी बाह पर सम्बंध न बंधन हैना काम पुर राष्ट्र दुना भाग प्रश्ना राष वसना शाक्ष सम्बन वाक वार्यकः कार्या या गर्म आम अप संदेश करना तान स उपन वादन तः इ. गानाः नाक प्रवाह कर पह जाना क्षा रहर ने कृष्ट क्षत्रकात। कावा रहना स्टर रिज्योगम्

4 FART

नाका ज्ञाना झाको खानः नाहर प्रश्नवदाना नावा धन विस्ताना बार्क) इस राज नाष्ट्रम द्यावर नात की उवानर বাৰ নৰ ক काम व सवा नग्द उठावर बाह्ये मिले हाना माबी परचानना वर्षाः कटरामः माना गोरता सामा त्रका सम्बद्ध करिया नापिक नाम परेना न तरे सर भरतः नाम उद्यापना क्षम प्रशासन करता नाम करनेर नाम रामध्य नगर के जनगण्डरका नाम का देश दिए प्रकार माम की भग सकता नाम की माना काना नेप्स को चलता नाम को नाइना बाद की बन्दा बयता नीम की बहरा क्यान्य

कार को जात D D 有可引用。 विश्वकात्राह ज्ञाम प्रथमा भाग सर्वा नाम ४ तः। अञ्चल सम्बद्धाः नात एकान नाम प्रवर्ध नाम तक न गाँउ हैना नाम तक चलेता कार धाना नाम प्राप्ता गाम न नना MIR GRALL नाम पर भार देना बाद पर प्रजार लगना नाम पर पन्ना मगाना अहम पर इन्हर अगन्। नवक पर बहुद्दा नकानर नाम पर विकास नाम पर मधना काम पाना बाय देश करता शाम फेनना नगम बदानाः नाम क्षत्र। नाम बोग्या भाग पिटा देशा नाम मिटाका नाम एक केनर



विद्वासद

नेश्म रहन

मध्य रह अना

नाम रोशन करना

नाम रोजन होना

नाम हिस्स

नाम अन्।

नाम संदेशसनाः

नगम सहस्रा

भाग हंगका

দাহিল ভারন।

अध्य कलना

साम ध्वता

ज्ञाब पार्व अंशाला

माच भंदर सं निकम्पना

नाब अंबर से निकालना

नाव प्रभाग में प्रता

विश्वाह बढामा

निगाह प्राता

विवाह शामता

निगाह देशना

विवास दौरतः

निवाह दौहाना

नियाह गहना

निवाह पर ग्रामा

निगाह पर पहना

निवाह किस्ता

दिवाह केलना

नियाहं देवना

तियाह स्टमना

निगरह में (ते) उत्तर बना

019

O P - 185

विकाह में (म्द) किय जाना निवाह में भावना जिकाह में पड़ना

निवाह रणना

निगाह रहता

विगात तक्ती

निद्धा देवी ही सरण मेना

विकास करना, उसेना

निकाह जेता

विकास बजाना

विधान समाना

नीद जाना

और उस माना

बीर द्वना

मीद दूरना

नोदं पहना

नीए पर गोप।

बीद भवा

नीय रामना

मीप देना

नीव पहला

नीयन राजाबास होना

नवना वि.म्बर

मेह बोहना

वह दृहेशा

नंह नोहना

जैन जानम्य पर नवना

देन बाराम पर रहानी

नैन रमध्या

र्वत बुद्धाना

4-47

हत कि वी d Quant बैन सरवाना **सेन एटबर**् नेत्र अस्तर बेब भग पाना वैन भूर पाना इस अला आली श्त मिनना र्वत विभावा नत्र में भागे नदता वैज्ञास मार्ग्य रहता सन्दर्भ वयसा वेतर सं प्रधाना तमा ए स्वतं देना जीवन को प्रकृतना नीवन जन्म नीयग यातान प्रमुख्यानाः वृष् के मध भागान करेता प कर बल्याका गता वर्गना का सहाप्रा नमा देवा पत्रे भार का रोग राजा यकेष अ/सर पञ्च करना वज वर्गना पर्व नावर

श्राम अञ्च पत्र साहरता ०वा के बार समया बाद्धा से यह दोनर पद वसाना वय जोहरू। पण दिवानः पय दलका वय निहारमा प्रम सगरा पकर (६२वा वक्को कर लेका पश्च गुजना पगरी उद्यालमा वगक्षे द्वनवन्त्र पगरी हैन। रवहीं पर क्षाय शासना एनहीं बधवा वनकी आध्या गंबका में बैंडना प्रदार वान्या का गना बद्धार साना पटकतिया मानः पटका हो जाना पराधि लागः परशे पर लाजा पटची पर बैटना

परकी दर बैठाना

गरेरी पुत्रस

पहुरी में पाना

रहक्त

TRZ Class

किया संवादनी श्याच महत्रमध पंतृक्षर सिर प्रश्ने हासना पता उद्य जाना पत उत्तरका वंग मोना प्रमासानाः पन उत्पत्ना पन अपूर पेतन क गहरूर स विश्वा पश्चित उन्हता पुल्ल ग्रह्मान क्षाल करूका पर्सा गर प्राना वला कादना पना बहरता वरण भारतर गलः होननः प्रकार मुज्यासम्बद्धाः पना न गोएनं देता पन्। न रिक्ट सङ्ग्रह यम्। व द्विषया अवश्रासाः वियवसाः पश्चार के अने द्वार राजा क्ष्मिक को भोग सन्दर्भ यन्त्रम् यत्रना पावर का दुब तथना पाधक करवा

पत्थर नुबर्धना

⁸⁸ पर गणन १४५६ परकतः गल उपटना बार्ग रहिना पर क्लर हानः की कार कर अस्ता हो हान 17 नियासना वर क्षाप्तकाना at bittat प्रशासकता । का लगाना कार्य माल्याः प्रदेश गाल्या test for test पारा हुए होता. परका प्रकार होता वरदर स्थापन प्रशास राजा पश्चीती त्रेका परक्षरा होता. गरिएका के यह अन्यर देशा वरियारी यह बनना परिवर्धन चल्लाकी इतिकात हरूका प्रशिक्ष काल होता चनन को जिल को आर करन केवन कर राहि बनाना १व गामना पर्मक अध्यक्त



विद्वसम्ब

धमक होलेका वसक न पहलें वृक्षा न नगरा धवत न मानः यमक महरते पनक महर्गा पुरुषः समयः वनक विद्यो होता प्रकारी कर उसा देना यसको यर पानी विजना व्यक्ती का उधना प्रमुक्ती र लेखा वश्रको से पुन्न प्राचना वसीता देता पनियम नगरा। कुल्ला भार देश गञ्जा यकद्रमा गळ्या नाम होता. शतके प्रकार प्रस्के बोधना प्रस्ति काष्ट्रकाः दर्बरमा स्टब्स वर्षीका बहाता प्रतीनं की क्षण सूत्र बहुता पानीय पंगीये होता पहरावती हेता पहलू दवाना पहार बदा काना पहाड में उनकर नेना

पक्षक हो जाना

वर्गचा वेसदा वहुनाई दानना चावहा परता क्षवर्व विद्याना धरी पाना बाही पद्माना पारी पारना पाठ एएका वाड वहाना पानाम तक बांबी पान की तरह करे जाना गान देता पान फेरना वात नेकर पृत्रता पान वयभन्ता पानी उत्तरका पानी उत्तरकाना क्षात्री उत्तरमहा कारी कर देशा रामी की कुशरी होता वानी की उन्हें बहाता पानी को भी न पृक्षना पानी कोना वानी पहना वाही प्राप्ता वानी सीरमर पानी छून। पत्नी रिमाना यानी हेना

पानी न पचना



सनहस्र

वस्य करना

रानी व मागवा पानी पर दानः पानी पर रिकार उठाना पानी पना पानी-पानी करना पानी पीका पुस्ता पानी रोक्ट आत प्रमा पानी पी-मी कर कोनता पानी योगा पानी फिर जाना पर्छा केरना पानी बदलना पानी विश्वपता पानी घरना पति भरो कान पानी मचना पानी में विश् भागा यानी शक देना पानी रायना पानी काना गाप कमाना पाप गणता प्रशा जगना क्षप जनाना पराद बेलका पार उत्तरनी पार उपारता कार परमा पार पाना

पारा बद्राका पाराकार उपद्रवा पेरली प्रवास पाका मध्यमा पान्या धन्तरनः पित्रणं का प्रस्ति बनान। पिष्ट छहाना चिर गुरुका विशा वाला रियमका वानी होना रिवकारी क्समा विषयारी बनाना रिक बोक्स विक प्रवता विक प्रति करना विकास क्रीमाओ वीदा श्रदानर पीमा न होतना पीछा प्रकारता वीम जना र्वेश्व्याः वीत्रका व बैडका पीट करना वीठ की बाल उपेत्रका पीठ बारपाई से लग काना पीठ से दृह आगा पीट डीकनः पीठ दिलाचर वाना पोठ दिलाका

020 O.P -- 185

वार सर्वनः

बहरीर

बोठ देवा वीष्ट्र नवाना नीत वायसा पीट पर सदा हाना पोठ या रादश होता वीड पर बल होना चीत पर संबंध होता पीउ पर हाथ फरना गीठ पर शब स्थानः बीहरू पुर जाना नार कर कर बेरना वीर प्राप्त पात बुधाकर सन्द हैंगा चीर श्रमना चीर मीतना नोट व सुग भीगना दीर य सम माना कार व एक नवाना कार व किन्द्री समाजा भीड़ बांदना वीट ज्याना कोड़ समा देखा रोद जनानाः धीर महत्त्वानां वीषव के यल की नगई गाना गीने को प्रामना पुष्ता गरना **एकार** नगतर पुष्पात सुन्नना पुकार होता

0

पूर्वे पर हाम न रखन देना ग्राम दुस्तत करमा प्रशास्त्र होता प्राचीय पंजना गल बन्धनी पाल वस्त्रको । च की अस्तर বুজা বর্ণ रहा होता. गणा प्रदेशिक गण्ड दला य जर होता. पञ्जी कष्णजाः वर्षा का स्थातम् मं प्रातः। पराही होलन पुर्श्वी भूग प्रान्त पत्नी म उठ जाना वन सहस्र त्रवासे भागा प्रकार प्रदेशी पय में होता. पर एंडमा रेट और उन कारनी देश का पानी न प्रजना पट का पानी दिन जाना वेट काटना वर की भाग सम्बद्धा पेट की पाह पहना पट की बाह नेना वेट के साल पहला



स्सरी

प्रशास वर्ग पर गष्टना पृथ् प्रदेशमा पेट किन्न पर विश्वन पट गृहयदानाः पेट बसना पर अस्ताः पेट छात्रका पैट उल्लंब पेट जनाना पेट हारी गहना बेट बाबे किएता पेट पणडे किरता गेट दियाका पेट देखाः पेट पणकृती। पेट पढड़ा किरना केर पर करी चयाता पेट पर पट्टी बांधरा केट पर नात महरना गेट पनवर पेट पाटना वेट पानी होना पेट पश्चना देश कींद्र मा लगना पेट फाइकर परना वेट कुलना वेट बाधना पुत्र भूग करें

पेट बरना पेट मारका घट म ≝ ग लक्ज़ों धन अ क्यार होता. पेट य राजबंकी यजना पेट से चड़ा करना पट म वहा दोहना पेर में छश्दर सुधवाना पट ए दर्ग भोरतर पर प ताला पेट संबी न होना येर में कारका पर से प्रता पर व उपय होता. पट में पहले ने पंचनर वेग मुख्यती न हत्तम होता. पेट व पाना परना पर कंप ने नी रोगा पर संपेदना देश में बाग पहला पर के बात की ग्रंब ने पंचार तेर में काद न गयना पंत्र में कान न पहला पर व बनवन्त्र हरता पर में गमाना पर यहीना वेट गहरा 186 10 पंत्र स साम्बा प्रकार यात्रा सीमाग

कृत्यः

पंत्र योज्यों कर दीना

17 0541 म । हार कर भवा स्थान प्रदासना वंजानी पर वस परना कर बादना नेन धदाना के पश्या ग्रेडी देखना वैद सदस वैसी पत्रवा पर ह्याने स्था पै के चहनर के हानन। वेताम बाग्या दर उदस वैक्का बन्धना देश प्रधानी। नेपण भवना पर अधीन पर न पहनर रेज पण जाना वेर टलका **धं हरत पाणावर** वेश शतना वैष अक्तना र्थन जिल्लास केर आस म जवारा fr feeign. केंद्र प्रवास्त्रक वैश रहता। केंद्र प्रमाणना तेर तकता। ्रेच भागमाः -ने र दशकता र्वत प्रशासन्त अपना वे र एक्यमध्याः An genet पुँक सामग्र नेज कारहरा वेर तोइकर केंद्रना er wir a पेर कवता पुँच और । सामानामा वेश बाधना पुर को रहेगा लाग वंत्र धर्माता पैर व भन्न सर्वती पेर दक्षा कर असती। पैर की पनि बात पश्चा वेश रमधन में फसना रेट की पश्चिमान कराता र्वेश देशम बलना देश की मानि भागे दना नैय देता भैंद की प्रोपन होता. र्वत चनना नैप के अक्षत्र क्षण्या। र्वेट ब्रह्मानी है। स्थेयना

पेर बदन।

लक्ष्यां और

पेर पान पालक व अन्य प्रश्निक सम्बद्ध पैश्व शिकालकः forman er gen graft पेट प्रकार ne verte an grat de na saci गैर भइना पैर प्रथम हो अस्त वेर पत्र विकास पर पर पंगकी रसना चीर पर पर रशका मोना पुर पुर स का उम्रदेश। भूर पर सिर रामना वैश प्रमाण्यम वैज वसात कर वर्ष रहता र्षेत्र प्रसार कर गास्त्र बेट वयाध्य क्षेत्र भीरत्यः। र्व र य जन्म वेश विश्वसम्बद्ध में र फेलावर पेर क्या जाना वेद अवाश्य भैर बाध देना र्वर विश्वत्रका वैश भग अस्तर वैश प्रभुव्यम भए के होता नेर से कार गवना नैक में प्रकार होता.

कर भाउनी करता पेर व पहुंची नहीं होता वेर म विशे देवा र्देश एक्ट्रना पेर राजन की बगह होता र्वेश स्थापनाः र्वत रहत्या fr ip graf पेंग दशका र्वेग मंत्रकाः देश रोग कर देश भाषताः र्देश हराया। देश अन्यदायाः वेर सवत्रता पैत्र सरकार प्रत काला देर बहुदावर वेश मिक्रोहरा। पूर किर पर रखना र्वत व का उपना रम में प्रमान वेंग में बॉध की उस्तात्र पैत्र हुआ स पहला नेत हिन्दाना पैश को चनि बारमा वैशे पर यह होता वेशों पर जिस्ता वेंगी पर प्रशास वेश पर बाद गिमना पैसे पर नाम समझा

021

O P 185



१२) पर जोटना पेसे पर विर स्वाना र्गेशों में बान देना र्वेश सं का अवसा गैरो में बंदियां जान हेता रंश में बेबिया पत्र अला। वे हो स पन समझ वृत्ते हे हुनल शंसना वैश्री सं पुत्रका जीना दैश में हुमाना देशों स सम्बन्ध र्वेशा वासर र्वमा जीवना वैसा बगीरमा वैवा चादना र्वता प्रशी वैशा बनावर रेंसे को टीकारे नवकता वैके को रात से पंतक्रमा वंश वर्षे काता योगे दुह की कानी বাদ ক্ল বৰে। पश्चि भोलका यो गटना वीवा जाता. न्यादे स प्राची होना रवार प्रशेषकी ध्याना भर जला ध्यामा संबद्धि होता रवाम करकता

व्यक्ति सम्बन्धः व्यास विश्व प्यान में मंग्या प्रशास काननी घराक्ष पर प्राप्ती प्रकृति यहभा प्राप्त असम्बद्ध प्राप्त राज्यका धाम भोषत्र दागाम करती वताय वनाया प्रवत्। १२८। व्रतीर्थं बार्यः इसम् अवस्थि। वर्तना करने न वस्त्र। क्षक उठ कहा होता. इतनो की मही नगना इत्तर भोडो नह असी श्रम औरतर प्राम जिल्हा प्रत्य बहाता धान दिस्कार बाग्य बृहत्त द्वाम खारमा शल वाक पाम बुहाना क्रांस न्यामना शाल देना प्राप्त नहीं में गयाना प्रकृतिकता



निर्मार्थः

द्राप्त दिया १ एक अण पंक जाता ब्राभ विधनन बाग कुनना प्रांग समना प्राप्त मृह तक भरतः <mark>प्राण म</mark>ूरी के लिए रहता प्रस्मा लगाः स्थाना द्याण नगी रिप्तर प्राण मुखना धामा हरना प्राथ हाथ में निय खता द्वाची वर जेनमा प्राणीं में हाथ चीना भ्रीति की बेक्स बोतर वृत्त संदना चेव अपन्य प्रकृति सार मानगरा प्रेम की यही पहला क्षम नोपना क्रम हानना प्रेम नोपना प्रमास यगना भ्रम म स्थितहे पहला चेम अकार प्रमाम काप होता फद से पहला क्टकार पहला क्षेत्रकार प्रयुक्त

पाद । भाग

करा करा रहता पटी जाम पटी-कटी जानों ने रेमना परी हानत **4**.टे बाम मा स्वर पुष्ट शामना क्षत्री पद्मश प्रवती पगना महत्त्वन देशी पत्रं एक देशा कृष चलना क्षतः चन्द्राताः दल रेगा पता शना फानी पर बढ़ काता पामी (मा पाम संतरा। प्राप्त गापना कियान प्रथम कृष्यी केता कर-कुर कर पैर रखन। क्षत व उद्या देना क्षर ने प्रदान उद्याना पूर की बन बहुना कृत के बीज शासना फूट के बीम बीना कृत दानको कुरा साम्ब कृती प्राप्त न रेल गरुन। करी द्वांस न भागां



ब्रोधसङ्ख

 क्षण कृष् क्षत्रः किश्यन फर्टी बील की नहीं क्षत्र सूत्र स क्षा उत्तरमा शन प्रशस्त्र क्षुत्र कर पूर्णा होता पुरुष को सरो ए और सुन क्रम भक्रमा एम चडारा कृति अरती क्रम यह मुख्यम काल असमार कुछ अब न प्रधाना कुर सम्बद्ध 精神 现在现代 क्षत्र ह्या प्रकार स्टार स्टार्ग भारतः हेले। पूरी समानः पील करेलां। क्षा वाचन कोब स्यान पहित्र कर आईमा दिखाना बन्द्रक एडियामा ∎धन नामकः वर्षे गर दशका सची शीड वस प्राप्ता बक्ती की तरह मृह बनामा

बुक्त सम्बद्ध क्षाताः वरागः इतियह द्वेष स्था इगल भारती इसल निवयना इनक अवस्तर बसन्त में देवां प ब्रान्ट के तमाहोता **श**पन (तरतनाः इप्या सं शना क्षक विशासा इटरा प्रका 677 AP181 \$77 219.71 बहाई रहात। बटाई देन। बदाई सारता बहुआह हर बाद परना बहु बह कर बाल मारहा बद्धान्त शाल प्राप्ता बर्ग मोहना क्टम म प्राप्त समन्त्र बचाई अध्यक्त बचाबा सम्बद प्रविद्या केंद्र जाना का का की पहली जुतना बना बनायाः सन्द विगय नानाः क्षेत्री क्षांत्र विगाद जाता दम भारता इत्रांची करता

वचामा

दल इस्मिना बल नोड्ना बस भूपता बम पहना बान पर वामना बन पाना बल मचना बना वाना बन। रमनाः बना सम्ब बना निवादन मेना बनाय नेमा बबाल पालना बसेरा देखा रहमापा कोहता बहरा कर तेना बहुरकी बनाना इहुअविवादन करता बह अने का यहारा होतर बाह्य निमना बोध टुटना षांच नोष्ट कर काना वांस पर नदना मसो उधनना श्रीयो पानी संशना बांसी दहना बाह् बठाकर पुकारता बाह की खाद नेना

\$1F 2741 बाह्य देखा। बाह्य प्रकारका बाह्य ५,दक्ता बाह्र में बगता हाहा स कमना बाई धुना बाई प्रका बाई पनाना बर्ग्ड लगना बाक्ती व उद्या रक्षका दाको निक्यनह बार्याः निहासना बाग की बता बाग न प्रापृताः बामचीर राघ म मन बावदोर हान म टानर बाह्य सम्बद बाह्यर करने हाथ पटकाना बाकार यहरता शाक्षण मिनना क्रकार म साग गाना बाजार व बेटनर बाजो बदनः बाकी प्राप्त नेता साबी हाए में इहन। बाल् चकडता बाद कानाः बाट जोहरा। कार दिखाना

022 OP -185

बाह गहे सी बाज नियाना

बाह्य गहना



भिकाया

भूगते पृष्टन बार्व प्रान्त बाह्य मा बहा जानी क्षात आती वात उपन देना क्षान प्रधार कर कहता हात उद्धानना बान उड़ाती बान कर जाना शत करने इंग्ल कानी बाल कमना बान कर कारनी बान का गार उद्याग हात का बकार करना बान काटेना इंग्स की फर्क मनना द्यान की भन्नी लोगपा शत की नह तक पहुननी इत्तर की तान दूरना दान की मार गाना शांत महत्त्वाः बान चलना बान बॉन्ड कर सहना वात जीवता बात तर गढ़ कर बनाना बाल गंडना बान गांस करना बान गिरह में काधना बान नवर जाता

दार पनस्य प्राप्त नामान्। इन्हें द्वीलया बात देशना बात अहते। क्षात अधना बान अमाना द्धान अन्त कृति राजनी হাৰ দুবৰ। शास मोदना बान तील कर कहता कान् दक्का बात देवांना कार देखाः बार व इंडो स्वर्ग बान न पृथका बान निकलका लेगा क्षान गर्यक्ष संस्था बान गणना बान परना बाल पढ़ाता बास पर अमा बान वी जाना মাল জুননা हाल कुरुना बात प्रीमनः बान फेनना क्षान चैताना

बान कोहना



मनावा

श्रीत बगाएका बात बढ़ता बात बढ़ाना बाह्य बना नेना शांत बनाना बात बहुशना बात विगदना बात विनाइता बात बेदना बात पद्मेरतः दान मधना बात पर में बैठना बाल महिन्दा बात शृह हे निकलना शत में व होता बात में शस पहला बाह्य दलका क्षात रह जाता बग्तं संगमाः इत्त सन्ताना बाह्य समृता बात संवारता बात भूगना बात सुनाना बात से फिर जाना बात से दिक्तना कात हुवा में उद्युवन। बान हत्य में याना बात हारमा

बानकीत नगरा

बार जारवा कान मोदना दान मगोहना बाने बनाना शानं मापन्तः दाना में पानर बालों स उद्य जाता बानो म रहता क्षता में अधाना क्षाना ये नगान्। कानी स नान। शास्त्र गुनमा बादन प्रत्या बाता बनना क्षांका पहल होता. क्षाप क जाग इस इनामा श्वापन देता. बारात उहरेता कारीकियों स उनस्ता बाम स्टामा बान की वास काइना क्षाम की मान मीमना बाम की बाल विकासना बाब कियरी होता द्यास कृतवाला काम मोजना काम गणनाः क्षाम क्षेत्रा न कर मकता बाम शास क्योंगे होना

$d\tilde{\xi},\alpha,$

क्षान्य झाल क्षेत्रक शहर द्वाल दिन काला झाल भी न दशना द्वाल भने होता साल भाग देखां निरामका

बामा देवा विकास हभा धन दिवसी बनना विकास समाना

क्षिताह कर बील बीला

विवसी गांता विकार पटना विकार गिरता विकार गिरता दिक्रमी गुरता विकार यह सामा

विजय वन राना विजयी मार ताना दिशादरी करना

वीन हरता बाद में भागा बीच में काणी बीच में गणना

बांच म दोवार मंत्री होता

वीत म गरमा वीत म गन्नना मेन म गन्नना मेन बोना मेरा उठाना बीटा देना बोटा देना क्षेत्रक स्वतः वस्तार प्रदेश वस्तार वसारता वस्तार प्रदेश

राज की अपस व की गहता राज का में के शहरा

बाज हाना हुई में बुक्ता वहीं मार्गरे कर्त में पाना यह बन रक्षमा बहि बा पाने मान बहि या हमा बहि दोहना बहि होहना

क्षति पर पहा गरदा दूर होता

बंडि पारी जाना ब प्यून हो प्राना ब सबादी होना

ष प्राप्ता सूरी गृहत्त्वतः सन् क्याना

बंद की परश्चापना

वत गरान। बड़ी यहं होना बड़ा दबना बड़ा दुवना बड़ा पार करना बंडा पार त्रमाना बंडा पार होना

बंक प्रश्न (मदे) कडका

नवानी

बेमा जुनका वना दवना बेटन का दिलामा रहता बैरन कर दिकाना होना बेन भएना बैध काइना वेर हानना बीर पहला वैग लेखा सेन के स दीदे विकासना श्रम में दूध निकालक बेसाकी मोहना क्षेत्र, प्रदानः क्षेश्च इत्यमा बोटी नुबना बोलक उपाना क्षेत्र न शना बोल कुरता होती कमना बोजी बोलमा बोली मण्या बोली स पिठाम पोलना बोली म धमून रणक्या होसार पहला बीने का गाँद पकाना इस्तेत करती क्षांत समनी ब्रह्मांव फुटना भंग साय होगा

023 O P =185

भीन मन्द्राना

भौग देवता भटा फरना भौद|परेड करना भेगत देतीका भगवा पहलतः भगवात के "र जाना धववान क यहाँ जाना प्रदर्भ या नगना भूतरम् कान्तरे इंडर इंगरेनर शहर उन्हरना मधन गमना भग्न गाना MOTER ATAI भ्रशेषा स्वय सदा वापना ध्यः नगना

श्रीकरम् हाय व होना भव वनना भव्म पहना भव्म भव्मना भव्मे होलना भव्मे भव्मना भव्मे भव्मना

मानर पहला भारत होता भारत किंग्ली भारत नेता भारत भूत की जनाती भारत सामित

押箱

अगद्ध प्रवस श्चाम नगणना भ्रमण सम्बन्ध भाग्य तार्गना असद राज्या नाम फिरना भारत्य कृतन्त्र भाष्य अस होता क्षाम व राज्ञाना धारो भूतक सं विश्वा क्षता भगव में लोग विकी होती भारत मी जाना भाग्य भौतनः গছে ও সাকা माद में फ़ीरका जात देखा भार उठावा भारत गीनमा भाग विरम् भाग गरना भ्राम जिलामः भावनाम मोर्च होना भिष्ठ को छुन्छ। होना NEEDE भेरर हुआ। एका चीपरका क्षेत्र नीगा हुमा पमनोधा जवामा भीगनास्तर भीगी प्रांच भीती विज्ञते

4 7 10 **新维 3 2 71** 9 A 24 भारत हिना निष्**ानाना** भीत या दो दता भन्ना उथान्य रहतः भूत्रा देश कर बहुना भूदा रोक पर कहता बुधा घर घटना भूजाय फट्टा उटना नुष्टानी प्रचार देना भूगावी व धर देखा बदर सर उक्षाता भूरकृष करता म की भागन होता. वस बाव स्थान बुक्ष विश्वतः मय से जीव ताजना धन उत्तरका सून उपारता मृत की नरेट बट बाना धत भद्रता भूग चामन मुख लगना भूग गर पर समार होता भूत सवार होता भूमभनेया से प्रदेश मुबर पटकर्मा भूषणी सदावा मन्दी वनका



<u>रियोत्स</u>

न्त । भारता नेहरी य देख भारता मृष्ट्री म देस पहला भद करना चेद का नाम काम्या

भेद सामना भेद पाना भेद स्वतः

भैस संबीत की प्रदानना

भौत् पत्या भौत् उटना भौत् उटाना भौत् पदना भौत् पदना भौत पदना भौत् समना भौत् समना

भीत मधेहना भीत गिकावना भीतो के तमारे पर नायना

भौता सं वस पहना भौता से शिकन पहना

प्रतिन थारता मंत्री भाषा प्रभाग में सोहना प्रभागर में सोहना प्रभागर में नाव द्वारा में भ्रपण में नाव दोना

सर्व बनावर संघ देवः स्य उपना स्वारमना

एकप्त हैंद जाना प्रस्थि किरासना

मस्यो पर शहरी प्राप्ता

भक्ती क्षांत्रा वयीय उद्याना यगत व्यान्ता वयाम सहस्रा

समय नार्याः समय । काण्यः हो अस्तरः स्वा किर्मात्तः होताः स्वाकः प्रदेशः स्वाकःनी स्वयंशः स्वाकःनी स्वयंशः स्वयंग्येशः का स्वयंग्येशः स्वयं स्वयंगः स्वयं काण्यः

पति काती
पति हर जन।
पति हरण्या
करम काता
पत्य पत्रमा
सम्भ पत्रमा
सम्भ पत्रमा
सम्भ हर्ग्यमा
सम्भ हर्ग्यमा
सम्भ हर्ग्यमा
सम्भ हर्ग्यमा
सम्भ हर्ग्यमा

यद प्रारमा सद्द प्रतम

0.18

q n T प्तन व हिंसी वात अस्तादा मः हता धान क्षात्रक. धन गपन QT THE श्रम पत्र का जोशर ध्या (प्रमा मन । । । पुत्र परस्का मन कर देर रह अस्ता पन करने हम रहन वत गर्भ marine a female वक् मिला प्राप्त हर 🚁 😂 र गाउँ प्रश्नेप कृत की जनन जन स na Chair 2 D सन् कर पान स्वरंपन्त यन प्राप्त यन ग्रामनः हर व अनुसूरकर) HA FR TO GITAL सक्त्री दिली को कारा धन की सारी जेना राज क्षण राज्या प्ति के बीनाई क्रिको। व भव ६ सङ्गालकाः गर के तर ए जन फिराना मन को नाव जन्म

64.7 914 सन को गैर्दन इन संग्वतः वन राज्या यम भागता सम्बद्धाः वन गिरसा মূধ বিশবর मन प्रयास्ता मन चक्रा होमा मन अन्यक्त मन वृह्यता पन छुण्या मेन हुन। मेन अयुग्ध GR WING मन् अस्त्रित्। मन योहना प्रमुख राज्य हारा पम जनावका मन शृहका मेन दहरवाः सम् रतकतः यन राजासीन होता। मन हाल बाब दौरता मन दियम। मन गुडना पर्व राजन

प्रवाहरणे

धन नपत्रः

रिकार स

धन नाइतः धन नीदन मन चंत्रना मन चंद्रना धन दहना धन दहना धन दुसर के हाथ देना

मन देतः मन दोवतः मन दोवतः मन वरनः मन वरनः मन पुणना मन प्रका मन प्रका

वश पत्रतः

क्षत पर यहनी सन पर नगरीर जननी सन पर नगरी देनी

मन पाना मन पोहना मन पहना मन पहना मन पिट अना मन पिट अना

इन किमलना पन कुनना पन केरना पन बेटना पन वपना

024 OP -- 185 मन बरना मन बर्गना

मन परिचया उत्समना

सन कारना
सन कारमा
सन किकेना
सन कुरुमा
सन केरणा
सन कर कारा
सन कर कारमा
सन कर कारमा
सन कर कारमा
सन कारमा

मन माना मन संसोध राग माना मन महोता की रहे जीवा मन मान कर केंद्रवा मन मार कर रहे जाता

सन प्राप्ता सन मिट्टी होता सन सिकता सन सेंड पर बाता सम मृत्यांनी सन मृत्यांनी सन मृत्यांनी

वर व कार्या

सन् व उपाना



बोधानव

बन में होटें की तरह बदकनी मन में गाना श्रम में गोंड बैंटना यन में गांठ पहना मन में दश नरनर वन में चूचना सब में बीर परन्ता वन में चोर वैहना मन में कृती रचना धन में जबह करना यन में जनह बनाना यन में अनह होना धन में भीत करना यन में भूकान उठना भन में दसर पहला सल में अंशना संध में भएता घन में रेजना मन मैं फ़टकरें व बेना दन में कमना सन व वयना ब्रुवय वान उपना धन य हिन्छ वन य वैद्याना मन प्रज्ञानी प्रवता सन में मुख्य उद्यक्त सन में मुख्या पर पं पंत शता प्रेन प मैंने गरना

भैन प मैन जमना

यन य नेतः होता सन् में रचना वन वे रमना मन में भागा धन में जुल होता सन में समाना षत पोडना यम रचना वन रवना बन रह जाना मन् नवनः भव सवस्या विके जाना यम केता वय सौदया देव साधना मन से मुध्यम मन से देखना यन ने निश्म वाता यस में निकास देशा वन प प्रता यन य सहना सन भोधना यन हरना वन हाय म करना यत हाम में होता यत हाथ वे पता जाना सन हाको पर किए रहता मनमूब बापनः

मनोरम पुरवत्।

24.48

भेरमा बनना मरने की फुनंद न होया **मरहम** रसना मरोड़ यहना मर्म का भग्नाः नगरः। मर्प की भोट लगता मर्मकी सुलेगा मर्थ लेता मर्थांबा के द्वार गोरता मवदि प्रापना मस्यिम गदना मक पुलना मन्द्रने भाग। मध्य करना मसं भागसः वस भीवता सस भीतनः प्रमान अन्तरका मयाना विकर सम्बन्धाः प्रतिदा करेन। प्रका नगरा मध्यक आवतः महाजन का पर भरता महार नी माना बाइन में भागना मांग से दावता माटी होता मात मा जाना प्राथा न। क्रांना प्रधासक तून वर्गहरूना

中 1 まわげ लाया बंग्ह्य सापा अगली भाग साना बार स्था बार स मृत प्रत्यका मान होता. भाग सन्दरा बार्ग देल) मर्ग्यं पर सामा माय य चडा होता मार्ग व नायन होना सामें ये रावे विद्यात। साने लगना दामं नेता मान्य देशन्यम् संस्थ मान पुराना मान क्टमा मान गामना मान निगधना BIN BITTEL मामा प्राप्ता जाना बाया कारा वाना कंपना क्रिकाक दासमान पर पहला मिकार श्रामधान पर होना मिट्टी उपना विद्री का उता विट्टी की नरह फरना बिद्धी सूत्रे मोना होता

महरू न र

भिन्नी विश्व गाँउ। विक्री प्राप्ते जनारः भिन्नी पार नगाना

विशे व विस जाता

विद्वी होता विद्यी प्रमान विद्यी चौथना

मह वस्ता मह उत्तरना

म्हे उत्तर शेला मृह ऐसा मृह केवर

वंद्र स्टब्स

एड़ का बाग उपल्या

MR 41 48 541

म्ह का शीव दिला जाना

महाका कीर दिवस

क्*र का सका राज्य*

बार पर पानी पत्तर असा

मृत्यो समा

मूर की बात होने नेना

भरू की रोगी सिन काना

पर की बाली रेगका

यह को मानो २८ जना

ब्रुट के भारत पहला

म् सिण्याः

शत स्वतः

पट स्थापन

बह शोवदर

मह मोनस सम्बन

म्/ लोमनः

medical pre-

er citts

इर नजना

पह चनान।

वर वरस्य

मह विद्यास

यह बराता

यह विकास

महा बोहाना

घट समाना

पर रह सम्ला

पुत्र हरकती

मह राज्ये ए बाना

पट राष्ट्रता

षर गेर देना

या वासीका

वह चुवाना

मन दर मन करता

यर दिलाता

महर्गिताच मध्यक न (वंधन)

पट देखबर

कट देखकर क्षेत्रर

महा इसकार बीबा देशा

सट इंग्लंग

पह देखें का

मह देवा

मह यो गमना

शक्त मोर गहना

মূত্ৰ বিজ্ঞান্য



श्रीय । सम

मत न इंधना मेंद्र न रान मह निवस वासर भर काम क्या महा गंज इतर यत वर धाना मुळ एक कटना महापर कर्ण रख प्रथम पर पर गया है स इप्राप्त बार्ट बनना **६१ पर भ्**नः पोतना **47 पर मन्द्र फिल्का** बह पुत्र प्रश्न मारतः कर पर अमृत्या लागा मह भर तथाचा मारकर बुद्ध पर लाखा पहला वह का बाला गालका स्ह पर ताम। पहना सह पर ताला नगना सृह पर यापक लाजा मृह पर पुक देना सह का फरकार बहसती मृत पर बकाई काला मृह पर मृहर भगना गृह पर रचनर मृत् पर पहुंचा मृह पर नाना मृह दर म्याही पूर्व कारा म्म पर लग जाना मूह पर हवाई अध्या 025

OP -185

मृत पर त्रांबर 97 (74) बर्ग विकास DE WIFET BEAL He wit the WE RESIDE RE THE ! बार प्रच≪र ∮रना मह कराना মত কুলেৰ B/ 9749 धर चैताना REMEMBER DE BRATE DE WATER मह बाबार रह साना BE GAT मुड काय होती र्बर दिन देश मट किवयत्त्र। RY REST वह वास्त्र वह सरक्षत्रनी वर् बदया मृद्द स उत्तर व साना दर व सम्बद्ध वर्षण् वर व क्षत्रक नकाना मह वे क्रानिया प्रति। यह में कालिया परिता

ता क्ष का व नवना



अस्टात्र

महास पदन नयना श्रद्ध स उत्ता पहला मृह म (१º शोला मार्थ पे दश अपना मात्र मा शांच के हैं° गढ़ स्टब्रहीय होता. इति व प्राप्त सामितः कर स एक प्रशा हरू सुपानी भर धाना भूग संद्राती भागता म गवार आया मृत्य व क्षान न प्रश्ना बर में एक्स असा व संबर्गिक ग प्रश्न व लगान रचना कर मंजन व कवाना महाम करणम काहीता RC म लग न होता. **छह म** नाड़ी संस्ता गर संक्रिना भाग लगना मूंह यह स 日本 42年 東京 महास्थान । स मह नपट कर पर पर रहता प्रश्न वर्षात्रका क्षेत्रका मह योगः पर स्वाप्त मह पुरवत बह स अध्य न फरना

य स्पर्भ न (नरनत स्टबंद स्वत्र B र म संजय नह या 1 মং মুনিৰ্নালনা भा^क से लिए जनग बह स कुला लगा शंबर म संफल अपन भेटे में पूजे दश्यका वट में अप भेजन। म गवान न घना सर से बाज विकासना ष्ट्रम् । व विश्वव केना 四人名 ストップ・() HZ ZIAL गरावारो होना स्ट्रीया स्थाना मस्या नवाता मृत्य र स्थल ना मेल अञ्चलकात्र मध्य प्रदेशका शास्त्र करना THIP STREET मङ्ग धालला मही मासना बहुर व काना सङ्ग व ४ वर्गा मुद्रा रखना मदुर रहत। 四方首章 7741 मुद्र सद्द कर प्रद्याद गाना



निः दानव

मुगेदन रामक्ष महन गर्दे नाग १८७। भद्र म जान भाषेना मद्र म जानी प्रकार मान्य मद्र नद्वाना

मनात देशका मनात देशका मुख्य भवता

स्टब्स्ट क्लाक् सहस्र

मुख्य उत्पादनग

वच उथा रहा

बाब ए स्वर

प्राप्त क कुछ किन आना

भ्रम् गरी तथा

बद्री एका

माह जाना

異項です。

मञ्जू कोच कर

वसुनोच लेगा

बुद्ध वसकता

मृद्धा पर तीना

मेर्स क्षणकारना

मध्यमहा राजना

ब्राह्म की कात्र गंलना

मृत्ता पर यः व देन।

मृद्ध चहेता

वर वार-छ

मुक्त संवाना

मरी हिनाता

मृत चलाना

षुठ मग्रता

मन्द्रो जागना सनि वन जाना

मन नदाना मन प्रजा

मनका होत्र कीरता मनको राजु ब्रह्मका मन्द्र व महामे प्रकार

मन्य तत्त्रानी प्रथ्य सप्पात्त्रा सुमुगलन्त्रा

धरार्थ का अवास होता

महाराजना संस्ता उपना

बारतन का राजी तसना

क्षत्रमानी कानर बदान खाली नारना बैदान छोटना भणनी

प्रदान काना प्रदान प्रदान होना प्रदान प्राप्त प्रदान प्रपाना प्रदान प्रप्राप्ता

मेदान म करम रुखना मैदान राथ से निरुष जाना

वेत स्था

साबी के शाली कर जाता

मीर वा पामना बार वा दनानां मीर वा तेन। मीत न होना

हो

मोल नेता मोह की पार म बहता होहिनी सननेश पर्याटनी नाता क्षेत्र हाय याता क्षीत्र इसाना योग का शिकार होता भौत का सिर पर करने भीत का हाम होता. **मोन के पा**ठ उनारता मीत के मह में जाना क्षीत के मूल में फरनी भीत वचना **धीन गामन**। बस का केश रणहरी मामा को जारा लावनक क्षम कर फार्गरी बहुनी क्षम के पृह में शुक्तका पुत्र बन्नातः यदा कारी क्स वामा यश य प्रचार भगना वंश नना व्याप्त करना रंग उदया इस इत्रास् रंग करमा रेन धुनतः रेग महना रेग चड्डानर

PRO GARAN इन असन्त देश वद्याला त्रव जानग रत द्वना रंग में होहना रद परावना क्रम पर वाह इस लाजा En egal रम इ.स.स. THEFT BY श्रम करम तर रत वस्थातः क्य विश्वस्थाः रव बिठाएन। रम भरता रण स हाता. रम से भग प्रजनर रम स रम जाना रयं में रचना रव रोचना रम नगन्। रम अस्ति। रवर्गमयः मुनाना रमा ह्यार रमीयो जाता रते हुन्य रकेस उद्गाना रसम्बद्धाः अन्तर



युक्त मुद्दी एक

क्रम दक्ष जानर रकेम दबा महन्द्र रकाम पंचा प्रथमा रकार वारता रवत की नदी बहुना एक्ट की नदी बहाना रमर के और राजा रफ्तम होता इत पर नदक्त अंग्रन्त रत-पर्य पहलानना रगहरूर चवन करना रणांम विज्ञानी दोवना रण में रज रजना रति प्राक्ता शहर चढ़ाना रहा जमाना रक्ता गहना रस भागा रम बरमाना रस मंग होता रस में गीमना रस में पणना रम् म मना रस खुटना रस लेगा रगान्त को भेजना रमोई तपना राई-राई बनाना राक करना राख की विनगारी वसकता 026

Q.P -185

थम रासना राष य मिन जाता रुख मुख्या शब बाह्य राज्य उन्तर जाना बाज्य करना रान अन्तर में काटना राम उत्तरका राम इसवा स्य प्रदेश यत भीवता रात सत्त्रह महक्ष आते. राम शब करके राम राम करता राम-राम होता राय गाउना रार योग नेना गम्या कट जना कला बुक्ता राज्या बोचना शाना होदना साला दिसाई देना राज्य रिवामः शम्ता देवागः गम्बा देवा राम्सा न द्वोदना रास्ता रापना शाना विकासना राय्या प्रवासी

四色 电二环

र प्रमा वनामा सामा बद्दममा सामा बनाना सामा बनाना सामा कृतमा सामा कृतमा सामा क्या सामा मंग्या साम व स्था विस्थाना साम व स्था विस्थाना साम व स्था विस्थाना साम व स्थान क्या

शास में शेषा भ्रहकाना स्मान समना साम स्वटने। शाह सभने साम सुसना

ग्रह नार नार रूप रूप गर्म जाना

राह नामनी

महि देशन देखने आक्र पंक जीने?

राह प्रभावता राह संप्रका राह प्रमान राह प्रमान राह प्रमा राह पेका राह देवा राह देवा रस् रशना इस योगः इस मोहना रशि मेलना रणना देवाना रणना वेशाया रणना वेशाया रणना देवाया रणना देवाया रणना देवाया

रुपया पानी की नगत बहाना

स्यकः कार जनाः स्थापः सारा पङ्गा स्थाये वस्त्रम्मा स्थाये बसानाः

र्गा व नगरी चाम होता रूप को दायहरी चिन्नतर रूप की दोपहरी बद्दना

मेर्च प्रतिन्ता स्ट्री प्रत्या होती विद्याद ट्रेट्ट्या देशाचे लोड्ड्या देशा स्टिच्चा

रक्ष में यद्य मारता रक्षा तीचशा रेखा म होता

रेन पर नाव जनाना

रेक व प्रका समेर क्षेत्र होना स्टेस प्रमाप्त देवा



• क्यों तीव

राया सका होता पोनां फुटना भोजां य सुराना रोबां-रोबां काद होता रोजा कोमधा रोजी जेन। रोते में प्रत्या रोटिया धलता मेटिया लोडना रोहिया कामना शंदियां विजना शोटियों के माने वर्षना शेटी दवाना रोटी बढाना रोड़ा घटकरा रोधा जटकानां रोनेपाला व रह जाना रोग पंडमा रोम कर्व होता रोम-दोप पलता शेम-रोम में रम रहना रोपाय होना रोपानी बालना लगर्श करना लंबोट कशना लंगोटी लवाये धूमना सकीर पोटना लवनी बात कहना सवन सवसा,—होना जक्षम् वस्ति।

सगाप गांचन। स्माम क्यान्तः संग्री किएटो कहना क्षां हुए। सम्ब धराना नप्रका का आवषन करना संक्ष्या र भार मरे बाना नक्ष्मा योग कर वी जावा संस्थाः दृश्याः मञ्दर यो क्षमना संदर्भ क्षेत्र सामा नध्या लुटना सरका स गई जाना बारका से पानी-यानी होता सरहात मार प्राचा मरका स बारी अन्त महते पर साम भएता मट्ट किए पितना मकुकई करता लक्ष्यकृती जीभ सहद् प्रती लंदद् हरना नगर पाना समार देवाला तक हिनाना बचार में निमा होता महत्त्व न होत्। भहनः पाना महरू आना महर सरका



तक मी परन

महुकी धृद योकर रहे अस्ता सहस्रुप्य भगकर रहे अस्त

सह योगना सह गारतर सह का वेना

सह विमानिश कर पामना

मह ने हत्व रनता

सह होने? साथ संपन्न सान घोषी

मध्या वृज्ञता-इपराना

सरका भागा

मार्थ में तम मगमा

मान १४१मा मान १४१मा

हान की कारी चेटिया

बान देना

बात मारकर बन्धे जाता

साम सामा साम सामा साम सहसा साम सहसा साम सहसा साम स्प्रमा साम स्प्रमा सिकाको समामी

शास्त्र की जो होता. मीक की जो होता. मीक गाना

লীভ গৰুকৰ ক্লন্য দীৰু গৰুক্তনা

लीक पोटना

मृतिया हुवस्ता सृ गण्ना मेलकी उरावा मेलको होडाका

कीला दरना

तेला होता नेना पानना रूप प होना

सीव की ग्रीक छन्ता सीव विकासक सोवी केवा

सारा इतः स्टोहा इत्रता स्टोहा यानवा स्टोहा स्टान

लोह का योग बनाता मोहे की कीम पाइना मोहे के कर्न क्यामा मोहे में भाग बरमना

भी माका भी जाना

वस्त्रा धारता वस्त्र न धानः वस्त्र न स्त्रता वस्त्र न भानः वस्त्र न शरा

नपन म क्यना, —क्षापना

बक्त नगमः वर्षा कर देना बाग नगनः। बागी पूरतः।

44 44 E

रेरि का पर करता. मारि पर मोन उद्यानः गहगही पटना विशारी की विश्वेत देना विजया सुसभा निवाद का भाषा व्यवा करना बिगाँस का पहाब हरना वियमि का क्षेत्र बोकः नियमि की गीम देश विपत्ति के बादक चिर बाता विवसि इंटना वियोग में अस्ता.—धारता विश्रीम में अनुना,---मन्त्रामा विरद पत्रका विरह का बाव मेरका भिरह को गुल बिटना किरह में बमना विषद बदना विवेक की मांच कुरमा farmin bant. विश्वास व्यवसा रिश्वास वाना विश्वतम् मे विश्व योगकः विश्ववास दिख उदना नियं अवस्था शिव का चूंट पीता विष की स्वासी बोटा विव की पोट बायन। विष की बेम बीतर विष की बुधाई होना 027

O.P. 85

विक पानका विष नवका বিশা গ্ৰীকা विष सामा चित्र नेश होता विक स्वापा विष वसन करता देश पोरश करना मैधाय का मील देना स्थाप क्षमाना अपूर्व भवन्त ध्यास्थान साइना वेदे हालना शब का यह ये पीठ में देखना बाब्द बाह्या राक्त्री के कोले जनकर तस्त्री के कोई असावा शक्दो में बांचना शर कनुना क्षणां नाकतः ताराच शतका असीर गुलना जारीय विक आश्री दारीय एका आया प्रारीत प्रत्या धरीर होहता धरीर दलका परीय स्थापना वरीय भग पाना इसीर मुख्या नगना

सक् ज

हातीर हा न प्रयासः दार्थर संविद्धनी नीव हाता दास नव कर हो। जानर दास न गहन

शक्ष म गरन रहता सद्य म गानी प्रतिहेता

पह र परह काला

राज्य दाले दगा

शहर महाराज्य नाहना

प्राप्तः वद्यानः स्रद्धाः स्थानः द्याः वे लगानः स्राप्तः व्यान्तः

भाग मारन

क्षेत्र स क्षेत्र सम्बंध

शाक्षणी हरू शाम उपरंता जिस्तान संस्थाना

(कारावृत: ६ देवता नाम इसा

िक्स सन्दर्भ विकास पन्निया विकास सम्बद्ध

!!!!!! होता सं आका प्रदेशे!

विकार होता विकार हाना विकार हानमा विकार हानमा विकार विकार वीन क्षामा वीन क्षामा र स्व व श्री

सुन २८वर युन विश्वर सुन सहैका राज आहे।

कारो (इट्स्किंग होना होती वयारमा दोती प्राप्तमा होती मारो जोना

राक्षा की बाद में प्रका

त्रंग से पड़ा लेका स्तोद वर्णाका इक्ट्रंगल बन्ताका को गंगद दश्या

सराय के बाइम सहराता

सर्व बोक्स्स स्टब्स्स सर्वे क्यो होस्स्य स्टीस बहास

मन्द्र हो हवा बहाती वर्षन महत्त्व यसच्य हुटता स्वस्थ लहना

ताना की हुए। मृतक। मृत्या (दुवत) मुक्ता (द्वीदुव) मुक्ता करेका

वंसार व प्रश्नवंश काना समार व इठ जान। वसार व प्रार न्टना



एक भी सहस

समार में उत्तर होना गराए से पण जाना संभार में भारत शूरना र्मनार ने विद्य करता मनार से विदा होता मध्या बोलना मदाई ग्रामा महक की पूल नवटता संबंधि होता. मन मी दना मन वापनाः मश्रक संयोग होती गुलाहा जीवना गन्ताटे ये आगा सम्बन्धः सेन्। वयना देखना सपना हो जाना शकाई कर देश वकाई कथना संसाई देना समाप्त गर परमण गहना क्षमण यो जंगा समय का पंजना व्याना समय चुक्ता बारम प्रदेश शमा सप्पना समाई रहता ममाज बुडली समाज महन्ती समाचि सूरतः

वया (स्यानाः रीयात देवर समुद्र उमर अला मपुद्र पर बोक दावता एएट्ट कर बोकना गरदन यर पेर रक्षती माकार का महसानी माला भारत गणना सतायो दशका वकारा महत्त्व भवाना ही सजी वर्ग देशा समुराम की राई प्रहाब समना मही घरता काद को आब ने शना राज य इत्या होता. TEXT SOIL सार की लग्हें पुष्टता साप के उपन मोमना साय की दूप विकास माप गाउँका कार क्रम बाना कृष्य दृष्णान्यः माम विजया साय पहेंगा श्वाम कन्द्री। साम खाँगरा मास वृत्ता माप पूर दूर जाना क्षम् वस्ता साम व नेना



सर को चार

० राज शहा

हर व करते हैं। बस्तिर

वस्य विकास

तांक ए वर्ग

भाग अस्तः

ताम रोग गर

याचा विश्वत

ताम अन्त ही जनह न होना

मान संध लेखा

क्षा का चलता

पर्वाच प्रस्तित

माला हेर्ड बार्नेर

4 fee 3/191

क्षण प्रचनित

गरन वदस्ता

काम स रहते

क हर दवना

org quijat

and faran

r 1 1 44

NICH RHS

स ए उस्क

ов пар г

11 9 1 10 10 3 141 1

0.70 * 41

विकृत पाना

Francisco.

forest argum

विकास प्रवेशका

भावका सामग्रह

िया, जा

(बर्गार र अर उत्तर जीता

Immir) Gus et

failed abut da bist

19357 6441

विश्व बदसर

कि वर बोडवर

(कर जाना पर होना

िहर प्राप्तर

जिर जागवान से संस्की।

विश् पुरुष र मलशा

मिर उद्याना

मित उर ने बाँ क्यान से होना

र्वतर प्रकारताः

fir maras

fas verret

for his many -girll

शिर बाद चेता आहेत्या

for even

िर इत्य र स्था

सिर के क्षेत्र, कुल करें।

for passar

T 4.741

for a gar etail

for earer

रेक्ट्यमं इस्ता

far glat

for que rear

विकास आ प्रकास

फिर बचना



एक की नी

विर धर्मना सिर बहुकर बोलक्ट सिर पाना सिर बढ़ाना निर खिएलं का स्थान सिर अधीव पर रचना,—होना पिर अला बिर सुदया बिर सुबल् सिर अक्तकर पान नेत्र विर भूकाना विश् क्षांकरा विष शामना वित्र होस्त। िसर **र**वा बिर परमा मित्र मानना निरं पुरुषर रखतानः शिर मुन-पून कर निर प्रका सिरम उठा सकता मिर त्रवाना शिव गुरुष्ट कर बैठकर निय प्रकार। विश् वयामा निय परक्षा बिर एडवा क्षिर पर का पड़ना निरंपर अर्पहणना बिर पर घायत जाना

028

OP -185

र्वतः वर बाग्र लेशा निर पर प्राम्यान ३ठा मेना बिर पर उठा बेबा सिर पर क्लम बाबना द्विर पर कहा होता विर पर खेलता शिरं वर पुजरता विरं पर पहा ग्रोहरा शिर पर पडकर गायका सिर पर पहला निए को बढ़ाना निरं पर कावा होना बिए पर अन्तु क्षत्मका क्टियर काला निरं पर मृतः वयका तिर वर ट्ट बडना सिर पर डीकरा क्रोक्स बिर पर प्राप्तनः निष्य युक्त दोलको भिरं पर पून चनाना बिर पर न होना तिर पर माधना लिए पूर्व स्थाडी अवना मिर का शहरका बारता विश्व पर पाना लिए वर बहुएक विर पहला सिर वर दांब देशा भिरु पर बांच रक्तकर भागना मिर पर पैर रक्षना तिर पर बचा बागा



रूप हो दव

किर पर विश्वमी विकास बिर पर विक्रमा विव पर बीवना बिर पर बैठा होला विष् यह होने क्या शिक पर गोम होता. विश्वार जुल नवना fine or of street fine. A 3 QF 41 E 2 Tr T. Fig. 47 and 1 48 for trans to aphas to happ for a new men रिता पर प्राचाद के पर समावर (का का के दूरत है बहती For Tr TAZE ANNT अपने पार्वाचिक विभिन्न frag egiffet. by the property of the Figure 1 to 2 Francis For our may fen freiete gie eine for the tot for the for went for Incefar abea. for game

for deal

रंबर वर्ग्य कामा निए कारती। किए पूजाने मोले पाना शिय राजना बिर स्वह का तर माना किर स्वयमा शिष्ट मेना ि संग्री € € 3 438° रिश्वत नग for all gard of the निर्देश के बाद देश for n an agra-श्रिक व कर्त्र येश नक दशना for other विष्य प्रदेश । १ विष्य विषय for against for stat. किंग्यी नातना to a market 1 4 4 4 सर्वे च जुलात भागान कर करेंगा कोल्य कलावर परं शासर what makes had लेका कामना die in un empt वान पर वाच नारता टीवे ए प्रमाप श्रीका र्शक स बक्षा उस्तेष्ट्रा पास्त्र की क्षेत्रका को आधार



शांक को राष्ट्रकट्ट

मध्य का चौत पर कता मुख भरता मुख भागमा ' म्बद्धाः ५ वरत प्रकासा मुननी उपरी बान सुवात र प्रदेश करा मृत बट रका स्र तत्ना सुर संगुर सिक्शनाः धुरसध्य सा पर करना मुदय अधना Man dave मुराग अका मुख्या विद्या भूराय जनना सुप्राण जगरना सूत्राण उत्तरका मुहार यस होता पुत्राच न्यत बुद्द का अग्रन राजा मुखकर कोटा शासर सूत्र की १४३ गोरना सुत्तन वागना सूरत की करह नहता बूर्य की नरह नहर असी बूबल का रोका विशासा मृत्य स्वत बुरज (स्थल) मेर प्रवेशन

मुध्यत्यस्य पन करन

न्राच्याच्या मह्यामा म् ४ च वा स न दुवरना मृग्त विवाश मु । विश्वस्था सुर्व पर पहला BOTH CAL सम्राम्ब संदर्भ र पुरना u + 444(राच्या व्यवस्था व वा जना न् वर्गन र के वे ज़िला हमानून 医多生 () 化油 भीराषः ्रव को । ना दशका 117 38 3 told Spin-# P 159.12 4 E 61591 Fig. 2 4 7181 2911 65.0 \$ 141 28 4 6 4 41 क्षा रूपा इसर बहुना भगाना मञ्जूष गाली ##F #### 141 4 64 कद्या आस्तुर egra erm

स्पृष्टि क्यांना



एक भी बावत

स्वाम भूरती स्व इ. नखता स्वार क्याना स्वाच य वर्ध स्वास्त्रय विश्वता क्षसन्द्रम का गले संगाना हमने हमने पट म बना पडना हमाई होना इमी अग्राजना हती उपवाना द्रमी उद्दाता हुम। कराना हमी का काम करना हुन। का शीध्वारा प्रका हुन्। समन हभी म उस देना हमी कार। हुनी होता हुप्रम करके दकार गरू न लेना हजम करता हजुर म हार्कित होता हरक न स नना हरू पहले ge Rivar इव्हिट्या नमना हो। १वा अह की होना इंदरी पमनी नोहमा हुन्याः गानना हत्या के चार उत्तरका क्ष्म्या ज्याना

ह साहाबा टविकार राजना हकतो पर ज्ञान गणना हथकी पर जान नेता. ह्यकी पर भिर प्रवास हवनी पर मिर निय स्हता (कर्ना में भारा हरायी में होता. हरतान किरे जाता FR 96vel रतकायन दिवासः इषकाएक होता. हमफ उडावा हताल का तुकका बाना हरूना क्षेत्रका हवा उपक्रमा हवा एर देना हवा वस्ता हवा का यह देता हवा के पीड़े इन सवार होता हुन। बाना हुन। चित्राना १४१ पनना हवा होयनः हवा तर व छूना हुवा देख पाल तालता. हवा देल पीठ देना हका दना

हुशा व लगना

हवा न लगते देवा



इक मी तेरह

ह्या फिर प्राना क्ष्मर फैलमा हेवा बहुना ह्या शतना श्रम बनामा हेंसर बंदन जाना

प्रया बाधना ह्रया विगश्ना हवा विगायनर हता मिलना हिंदी में उटा दशा

हेवा म गिरह बांचना

हैया य माना

ह्या म पहल बंशना

हवा सराता हवा स बनना

हवा में बान राजा

हवा व होता हत्रोड्या उदना

हवायत की इसा कामा

हरते विराश हाक पालका हाक स्पाना हाशी अपना हाजनी देन। द्वार मचनर

2 d dist

द्रापं उत्तरभागं सहस्र

हाम उद्यंता हाम कट जाना

029 O P 185

हाथ कड़ा देता हाम करेन्ट

हाय को प्रत्यों न उपाना हार्च के लॉन इंड अपना

हाय वाचना लय क्यूना

हाथ जून में रगा होता

राम पर चड्ना ह्राप नक्ष्मा द्वाच बन्धानाः ≩ाय चगनाः fta Bleer राष गोरना

होम बीच रहना

हरम जोड़

राप अ दका बढ़ा होना राय महदरण यम देना

tin uith क्षेत्र केल्ला हाथ बाबवा pre cerer हाय दिवा ना होष देना माय भी बैहरा

हाय भागा राष न मुचन। हाय न होना

हाय नाम पा होना हरव वक्टनर

इस्य प्रकासक



ng at after

	2 5 C e 4
K 7/	10000
1	****
· · · · · · · · · ·	4
and the same of th	P d t
11	7444 51
r	1 4 5 6 6 6 6 4
	/ .
ar illi	г с
	1 (1 - 2 1
C ES S F	A REPLETED BY
F T 41	3
c x 4	4 4
4.4.1	4 4
THE CORE	* 4
	15.1
	15 1
	4 1
to t	79 4 07
5 4 4	4 1 9 AY
100 V (N)	PK 74 41
and the second s	1 - 1 - 1 - 1 - 1
P T H	F A 1 4 F
12711 1718	* * * * * *
F N T X T 1 N T 2	* 40 * 100
	the day of the
	pro make
fre tr	ration of a
PRP EIGH	NA REPORT OF

bur das.

property care

ten a we have

thank au c

to migh wing.

All to the state of

trice res

fr Fr

fe a se

Ben of disk

Terret Hara

for it is the

fringe of the

Princers.

that a c

FREE GERRE

PRIMAR MON.

हर्त्त के विकास

N. C. C. SEE

Ro. St. J.C. 184

GA KAI

1.91

600 4 50

F - 169 X 1

Z 11 1

7 (1)

7 N 2 E 7 STA

entensamme

द्वाय का स्वर

BUE OR LEAD

fer mengenger

Lan Lane We

Care an un apas

-

--

State No Section

East Asset

for a new fer was

Les a su

San Hall

Lag and

face to de-

finnig bad mit bim

A A BAN.

And described

ALL AL NO ROBER

grant und fem greet

he a greater

F . d grat fagun

RAL SA NA

E. Ma miles

Ern tibe that

A4 840

10 (0

For the green.

they will give

श्रंभ भी राज्य



इक सी मंग्यह

हु र वे अध्य लगना

हुदय है देना हृदय चत्रका ¥्रवाच च उस्त। हृद्य विकास हर राज्या San geniu an. Can dern beite. हिन्द पर पहर समय। 🗸 व पर धनका सवसा विदेश कर ताल भारता हु व पर हुन्य रम कर हुइए प्रमीतन इस रिवलना ह न करना हृद्य का अयो चाहरता हुत्व विश्व fied [dammer gen fanter. gen gent हुद्द कारा शना 📳 १ वीधाला 🛛 य व अध्य भागा Bett if Atti darest हुरव स बाट च करा है ये में बारवाना हृदय म गहन हुद्रद स पर करना हृदय म पुत्र अन्त हुदय म दशा पहला

हुरस में न लान) हुएस म समान्त

🐧 - म कर र पहला ह स वयन L d d farat A.r.a. हु - म मन ह न म गुप्त ३०ल हा व मा गम ना हा व व जरपन जन। ल ए ए । राज्या ह या पारी नगरा grap of the हुरेंद्र य प्रवस hard it would हा । बाग सर शंना Note to the Note of the T T S PRIME faut be pat may feeds F Q (ruto ga carrar गाम का नव 71 TA FEE W. PA her start. चीर पर रा ere er grett CAL GROW! pro familia. इस्त भवतः 8 H + 2-41



शक मी सफर

हार्थी में मस्कृताला हानी कहना हाम कर देनर होम कर गहाय अस्तर हार्थी करमा होग दह होना

हारा दिवस्य नगना होता प्राप्ता होना होता विद्वा होताना सुरुवा होताना बाजना

मंद्रा युक्त मृहाबरे

बंध की संक्षा अधि की माठी श्रद्धाः होताः ध्यक का दश्यत अभाग कर पूर्व वर द्मपण की दोश प्रधार प्रधार भदासन का नीहा बहुरत का राप रोता इक्ती वसी का शर होता अपनी अस्तरण अध्यक्ष मन 🖘 अपने पत्त में जाना क्यत तापा श्चप्रका का जीका धमुक होता. भागि का कारत भाग का नाग 030 OP 185

gra es uta-आगम् की जीत द्याल को वस् भागा में। किस्तिस भ्राक्ष की प्राप्ती WIR T EE ब्राम् स with gran वर्गमान् । स्टब्स auf fie Zulet. stell at freit. print: 4 बाका व मानी हाना will at Edit 474 ATT W बार होना चार होता.



कार और बहररह

शहरा की देख न हाना आसमान तक के घरधान वाय्योत सः गत हुक्कारों को बनाब हुए कर जवाब परभार में इंट बर कोट होना जगहरा की समाई क्राप्त मृत्य क्राया होता क्षारकार द्वार की सभी होता mg चीट म करके होता बह्य होका रायहरी के क्षे याचार्दः क्षण की बात होना काम का सम करम की देख बावक का गीका। क्षम की बात होता ल्लम् ∉। मतरूर क्रम्ब का नाम बालक व प्राप्त होता कदम म जोग होना कन्पमा होन। मलेले का तुवस क्यांबररा होता

क्रमीतर होता.

बाच की जन्द्रा होता ्राहर हरेका कारा का सह करते की सह 東西の東西 बहुत्वत् का दशका-कास असी नाव राजन की काउंगी बार और जोसर बार का उन्तु TX SO IN TIT बहुत की शहर काहु हो देखि काम को बहुत्रस्थन स्तान स्वास काम बाजी होता. काम कर विज्ञानी बाह्य अब गणके बाल का लक्ष्म काम का प्राप्त काम शेम। विकास के साथ क्रिकार का पूरा किश्वास के पेट श्रामक शामा क्षांका होता. बाहरे हाना कृष का मेहक कुछानी होना वृद्धाव



तक भी उन्होंच्

कुल के जीवन कुल का जान कुल को नाक हाता कुत में राजवाचा हाता क्षमण का व्यापी काम की अपन करके मेरे राज क्षांत्र जीव में सील का बंध क्रमा १ कीहिया के लिए श्चम भर म क्षा वर होता. खनर भी घेंटी म ई होना BEEFE. MER AT IT लाख ही का गा सुरा की मार सूत्र की कमाई लय का भीता राजा वास होता मागदी समय की दर्भगा। गय तीना गऊ होनाः गहरी

गति होता

नम्। होनः

एक्ट्रम् यक

ग राष्ट्र समीत भारती व गरमी (रेश सरीय की बीकी शीख गरीच होता. हमा प्राप्तकाना मधी एक। गले का दोल साहि है। हरन सले की कामी होता गमे पर तुथा शक्षाती. मुक्त का गांह च पैसा होता. सांत स सम्बद्धी काम विवयी न होता शिक्ष कर विषय व वर्ष होता मीटह सन्। गण की लाग बल के भाग ge gigt मूटा होना धुनाब का फल होना बुन्तम होना मेचा द्वारत मुखे के गई होता नुष की बहुमी तृहस्यो कर नामा



एक भी बीम

शहरकी की चवका

गीद का

होस्य कर स्थार

क्र

बर का अस्त्रको

Tree and

भूत वर्ष वादली

चा की वर्ग

यह ही बनी होना

बार की पटारी जाना

भाग गर

सह भाग का श्रीका

धूर प्रश्निको क्या संस

चार म

यान हो जिला अस अवासा

क्ष राष्ट्राओं ।

gru pher

काम होता

नी का समागे होता

क्षीला होत्र

Mr 1914 (1 mm

बक्द के पान होता

क्रमी का इस्त हरतर

बुरामां की सुनि रोपा

wie er ener

भारत के रहते

बारी हरता

मारक शंका

बार हो रोको

明3日 中日野り

477 E 75

Acres 41 4 4

या करा थ

May bear

च" (च टाला

श्रीयो इस हो स

man also describe

श्रीमानन

PA P PAL

Care d. dan.

40 6 6 19 21 4

ment.

PT 2531

Maria M.

WHAT 27 1

main alle gigt

TEL TEL

BUL AND

मस्त्राच्या स

JE P

महारोगाः

कराय करात भी

ware of march

अवस्थान के भी र

महान जाना

अवस्थ की वर्ग

बबाब होता

सहरते पर परश

बहाब का पड़ी.

BER BE BERGE

um ni gunin

नगर अस्ट

NE FIN

Abel of the part years

27 125

Alde a State

विद्या स्व

रिक्टारिक ए अस

भी के बाजक

he we have

की का पाल

को की गांद

श्री कर अस्त

वी जल स

अधिक हैं जिला

श्रीकृत को संचार शांता

क्रीन्द्रास १४ । ए

प्रतिया न कारण

अव

fin er fur eine

Madai apti

等平等

8年(平) 4年 年

PS. 9 F 21H1

द्वारी की घड

हरती का भाग होता.

Re ar ern er funtf

श्रीकृत होता.

ोप्राम

हर होना

#2 (T

031

OP-HIS

14 11 11

A.C.S.

SHALL PROPERTY.

RET FA

200

ET 4 977

er e ett g

er a far n

graf fin bie fie

der biet

AN YEAR

grad at the

grad at the

40.04 \$200

THE FEW REST

21 CAS

andle in what

प्रमुक्त र वर्ग हर्ग

unger al wir gift

नवा ना वह होता.

where a manage back

रेक्टबरे होता

िलक्ष्य गर

fetrat of err etal.

f=0.64.E

Esquisit qu

few.law.yt.

fene gray

Alternative States

staggere or plan



एक सी वाईस

कर्क का बैंग होना **食料** हक्षतवा होता. तम के इस बच व टोना दम् होना कर दर की होना दशकाले दशकान इसदान होना इक्षा हात्र प्रति होता. हाना । काम के द व होना नाह होना रिव ११८ रिक्ष का पीत सिमात का भाषी िल का काता दिश्व का मुखान दिन कर पान

िय का पाय | य का पाया होना दिय को पाय दिय को पाय — लिएड दिय को प्रयोधे दिय नोडनसमी कार दिय में नार होना दिय में दिय में

इस की बटा द्विज्ञादाको इस होता हुराई टोना दूष की भक्ता शेद्र हाना दौपटा का कान द्वार शाना पराक म वस्ता वड हरना भये का होना होता. पर्व का मान धाक हाका पुरा का हाकी होता पोल का दुवला बाग ही हड्डी धको का कृता ध्यक्षा होता. म बान बाला नमन की कीत नाम का कृत मरह शन्। नवाम के नानों। वयवम् स नमीव का खेल नाक की मीच में माक के नांक के बान होता

नाक संजयम न होता

बाद होता.



ग्रंक मी नेईस

नोनी का बर नाम ऋी ध्यास नाम क नाम क लिए नाम संहोताः नाम पर पंथा होता नाम भी नहीं। नगरप होना नारशी विका निमानह क नियास होता. विधि होता रील कालेक मुख का तकता पन की भीत चन-पग प्रयन्त्रम् प्रज प्रयः यदः यव परशिकार होता. पविद्या के माऊ होता पन्ता यन्ता पस्पर का कलेजा क्षाचा की सकीर प्रदा होता गलम की ओर पेलक भागी। पहरू होना पसीतं की कमर्ता पमीने की होटी एमोने की बदन्

पराइ वा पहुंच होता पंचन होता ঘার থান पानी का बुलक्षा पार्नी के मोल पानी देनेशामा पानी सं तमक होता पानी होना पाप की वहनी पाउँ का बादमी होना पास्थन का शका विष्टर होता चीड़ की बीक् होता वृत्रका ओदा पुरुको बा भारा रेट का पेट कर उपाय पेट का चक्का पेट का कुला पेर का सकाब रेट का बर पेट का पना पेट का मन पेट की प्राप वेश की कड़िनाई वेर की विना देश की उद्यासन पेट की बान

पर के लिए



एक भी कोबोस

पेट म पेट म कमा होशा

पेटवानी पेट अना पेट की अजीत

र्नेक की जुनी र्नेक की बड़ी

पैर म अनी भर होना

र्गम का राज्य होन

र्वसे की गभी होता

पोषी के बंदन

क्षेत्र क्षेत्र में

ब्राम के प्राप्तक

क्षाम है की

क्राणी की यनकी

बारमाँ की हमी

धरमहा की धरमा

वेस की कार

प्रवास होना

存を構え

इ.को होना

कुल न।

फारत र

बचारी होत्रा

बार्य-वार्य की प्रशास पर

बक्यां हो हक

बाह्या के बाद होना

बराफ़ होता.

क्षेत्रकेल्।

बन का बुझा होता

इम अपना पर होता

इस में

হৰিত বৰণ

बद्दर का निवक शहर

बराइ हंग्या

काल के महार

415, 5191

इन्त र। ४ व्यष्ट हाता

ब व की बात स

इस्त की बात स हीता

बाल की तका

कार-संग व

बारमती म

बार्ड का परीक्ष

হাল বা নাৰ

बायम की बङ्

बीम की नीवान हात

बीन व प्रान्तीं

बहार की तर ही

बडाय को खाडी।

म् शनाः

बाबा की दुख्य

बेद राजा

स्थानका । स्था । स्था

रक्षांत द्वीताः

मेदर की शाम हाता

भवर पर नाव

. **ब**टरी मा हाता.

भारत की लहीर

माहे का ट्रन्ट होता



एक हो प्रशिव

मुंस होता मृतका हेता. भूत की मिडाई भूग का लड्डू भूते की भीत होता भेदिया होना भोर का गए। भीड़ य दल होता **म**गलः पृथ्वे मन का संगर्भकार यन का आहना होता मन का चोर मन का मेल पन का गृज मन की भरव मन की दौर मन की सकाई मन में कीर होता यम मीना होना मगुष्टका की कमाई मयाना होना महिलदश की ल्याक मार्थका लाल बार होना मार्ग मध्ये का दीवक विद्री थिट्टों का पुतना मिट्टी क माभी मिट्टी के लोडा 032

O.P.-185

मिट्टी के मील मिट्टी का होत मिवाबिट्र. मूह का और होना मृह पर मुद्द में भी शक्कर होना मुद्र मध्यक क्षेत्रा होता सुक्तिको द्वार मुद्दी होता। मुख्यविषयम् स मुमाबना का पहरड मुगीबता ही डॉकरी मृत्य होता मृत्यु कर सुद् र्धेक होता मोम का पुत्रका भोभ की गृहिया मोम की नक क्षोप होता. म्बाक का होर वय का प्राप्त पश का डीका रम होता रमी ग्ली रम की बन्त रम प रहर की परिवा राह का श्रदका गसस होना राम की विनवारी होना



रूब भी प्रधीत

राजनीत्रक का कोषा पार को राज काम का नाम

5 p 2 a p.

र इस के रुप्ते केला इ. इ. के रुप्ते केला

end a war had

(C114) *

Fee:

PERSONAL PROPERTY.

4 4 427

3 6 27

3 379 4

erergi er

ms 2 4 55 1

third by

P - P - P'-4

Market Control

Marie Contract

e a c ur o'

are e ber

MIT E VI

mer a seat gree

te u a 1 ms

fifty 4 Por

क्षिणीय वा कालक

faufe all grat.

faufic at and

रिकारिक के कांग्रे

7-54 F 8 H

Fq 61 7 8

PRESENT OF REPORT

\$ 4 9 S

MARRIE GRANDS

fare a lens

by the street

fam of site

fer 4 cm

for ships

time a pro-

F 7 1 A

Special dy No. 6

WALL TO THE REP.

ways 4 that 51.

etrar er phay

का विश्वपत

सार को राजवाओ

संगर्भ को सम्पर्धन

स्टिक से और देश

DOM: N

गायक को नाड़ी

सामान्य का होता

CORP 4" ENT

ग्राह्मप्राप्तां

green ghan

mercial week

स्थापन कर स्थापन

बाग्र की क्षत

for

रिवार की बाराय far et mo Cara de fer fie es far e africe (SA) भूग की वसन होना that he were bear वृत्रमत Bar ar flag मुनुर्गे उपम 47 T O I मेमर का कुथा होता Bin lipti. स्टेन का राजाक पार्थ का अधिक साथ का यही। सहत को विकिया मान हो पूर्व tita it fea-सीत है याज कान से पुणाब होना राधि स गुरुषण हान्। FEMA. रमान थ भी नहीं इक्टबरे का रच **बन्दा होन्द**े ब्यामं पर जनावा होता ब्याचे व क्षात्रक

हरकी दा क्षात्रका ER OF HIRST \$74 a.c. pre es ere green and facebook हाल का पाल हर्ष कर होता. क्षांत्र की संस्कृत pre un analita PIN N PR R prot green Antonia, male Per star an all things हरेर का कर fig an abla: Rad do and हरय का बनी Ead on some ALC AT MA Late ay west कृत्याची सरव September 1985 ELE . Ad East o stone from Applications

तक को सम्बद्ध

Aug Ay part





दक सौ बहुरदन

विशेषक, सेवा एवं किया युक्त मुहायरे

लंग-अस वीला होता अंग-जन कुले न समाना इंग-अंग शिवित होना श्रक्तिय चनियां निमना इंतिक सांग गिमना श्रदर-बंदर कराही में गुड़ पनना अमें कुए की और बीहतर अंके के शाम कटेर सार्ग संबेरे कुता में पहना क्षतंत्रक राज्य करती ब्रमें के वर्त का बाद की दर्ता धन्त्रे वर बमाना देगा अपना उपन् सीधा करना श्रद्धवाद वर्ष होतर अम्माह को माना होता बाब ठंनी व होता श्राम अंची रसगर धांक क भी होता श्रांच हेन्द्री करशर पाम और करना,-सोना श्रांत गुण करना,—होना प्रांत सीवी राजा मान्य कर करके साम बद होता धील बरोबर करता घान भर देखता भाग मेली करना होना श्रोच नाम करना —होता

बाक सीची करना बार्च बनी रणगा बार्ष दीनी होना बावे योग होना मांच चार करना,—होना धाल इकी रकता वाने पटी यह वाना वामें वंद करता,--होता बांके वर करके चनना कानों के सब कुछ यह नेता बालिए दम पर होता आय इसी पहला बार्ट में नमक बराबर होना बाह-बाह बानु क्याना माइ-बाह धोमु गेना नावे तथय काम बाना शारे हावों लेगा भाषी बाद बहुना सामान क्रांचे बहाना परवाद बारी होदा भरमा हरी होता राजार देश क्रमा उत्पाद (भा होता क्रमा पाइ प्रदाशा उन्हों। बाल गर्ने पहला द्वारी राज एकरमा उन्हें धुरे से मुंदता तन्त्रं योष भागमा



एक ली उस्तीम

उन्हें पैर चने जाता पुण्डे येर जोडवा बल्टे मुंह विश्वा उन्ट होयो हेना क्षेत्र मीमा करता क्षेत्रा पर पाना क्षणे-करी उत्तम भरता अभी जगह वाना अपी तान लेना क्षेत्री हमा में होता क्षम आसे पैर प्रकार ऊर्थ सांच चौंटना एक अध्य देखता एक प्राप्त न नातः एक जान से देशना एक-एक कीवी बांद से वकाला एक दक दिन पहाड़ का बनना एक-एक वद हिन। देना एक-एक पन भारी होता एक-एड बाब चून जाना एक जुन होता. एक बाट वर वानी की। एक बार के ओड़े होता एक होरे में बधना एक तिनका भी न सनामा गुक्त पानी में साना मक् हुमरे का हाथ पकडता एक भागे व विशेषा एक पंजन भ बहना एक एक दो का ब होतर 033

O P - 185

एक पशी तक न तोक्रम एक एक करन के समाज समाव एक पुरू में उटा देना एक वृद्द ने कहना गक राम में दरागर एक रोज देख न कर क्याना एक बाठी से कह की हाकना गक तथर में बोकता गक हान के ताली न बक्ता एक ही दान विक्रमा एक ही नाव पर समार होता एही बोटी का पनीना एक करना बोदी तबर वे देवता बोधे वर में धन बाना बोचे मुद्द विस्ता द्रीपट बाट उग्रस्मा कथ्या चिट्ठा करमा क्ष्मा भिट्छा योजना बक्षी गोनी चेनना क्रम्पे वहें की पीता कर्ण्य गृद्ध शा दोव देश। कडवा वृष्ट वीला बहा हाथ ग्याना क्वी आंच वेजना कडी नवर से रेक्स कही बात बढ़ना कड़े मुहरे माना क्रमर बीधी करना,—होना करतद उन्टे होना कक्षम वर्ग होता



एक की जीव

क्षेत्रा कहा करना क्षणेजा श्रीटा करेगी क्रमेजा ठंडर करना कर्तना होता होता. क्रकेका हुना होना क्रकेजा बुढीमा के पत्ता कराकर होना क्षाप्तक काचे कामा कामओं मोडं दौदानां क्षाम तरह करेगरे बान भी व दिना नकता. काम नवाम करेगा काब तमाने होता. काम पूरा होती। काम सिद्ध टीक बाजा यह बारता रिकास संक नदर गाना किस विजनी में होता. तिस प्रध्य वतनाः क्रिय काम य शेका विक्षां र १३ अनुसार इंग्रेस पा चैरता विषय के बाद का राजारा होता. कुल का प्यांग के पास कामा च परिया कानर पहन्त परिण होट हाना कॅटिन प्राप्त करना कोरा जवाब देखा कोरे गागप्त पर जिल्हार कोरो गन्त प्रकार चीव मृह दिखाना कौन मृह लेकर

धवर सम्ब होता. माराजी पंजाबी प्रशास बहरा टाम देना मरी-वर्ग क्षत्र मुन्छ। स्थान का लामा पहना बर्ग दरबाय न गरमाना क्षत एक क्षत्रका स्वत एक्षा रोगा सहर दिस्का प्रस्ताः का दी भाग होता. भारत हुनी करक नमदा गरदन् रही गरना सारत् दोषी कानाः गाटन कीची काला, जाना गरम १४ पर नमी जाना गरम हवा समया एक साम सुंहरूका एकत राह्न प्रवश ग्रमा नर करता विहरत राज वारता गुरुरी पहल समाजा गर राज्य साथ लगना गहर भागों बैहना गहर वानी हातर गाउँ पारत परना धरहा जब बहुना याह काम अस्ता गत प्राप्तन रहता —होना गम सन्द्रहाना गृह कांकर गृगा होता



एवं मी दश्जीय

पुरसी ठडा होना गोटी नास होता गोद गुना हाना माम इस करना,-क्षेत्र भार अभर पहला बार बांक करना षार संसूबद्राना बार के लंबे पर बढ़ना चार गाल बोजना षार गाल हसता चार साह लगना बार कोर लगाना चार देशा बदाता चार वार्ते काना चारों बाने जिल करना यारों काने किस विराता बारों बाने विस्त गारना चारी क्य पाना नारों हाम शंच से बीवे वाना बर्गन पर गणना विश्व मैता करका विशास हरता करना मुल्लु मंद्रशनी में दूव बाना ब्दियों बैंकी होला भृतहा धरम होताः मुन्हा इस काना, – होना चहुरा क्षीला होता. चेहरा वीना प्रका भेहरा फरू होता. चंद्ररा स्याह एइना

बेटम हम होता पेटरे पर आरद्व ब देशा चीर का दिल काचा होता. भोना ना होना भोशा वल होता चौदाने कानो होना बारे काम में पहला **शा**ती क्रमरे बनतः द्वानी वडी करतर श्वानी नम घर की होना क्कानी हंती काला बागी हडी पडना कानी दुनी होना कानी सम्बन्ध होना वानी जीतन होना बन्ध नुषक होता समाय बंद कर देता समीत भागवात एक करता बहुन एक कर देना बान भागी होता. बिन्दमी के दिन पर करना हैं बन्धि भागी होता की राष्ट्र कारता मी का बोज हमका होता क्षेत्रकृत्वरसः,---क्षेत्रः की होटा गाना —होता की रहा होता. मी उड़ा टीना को राजधान होता जी निद्वान होना



तव औ बसंभ

क्री क्षीहर काली क्षी कीमा करना भी भाग पाना औं भर जाना भी भागे होता त्रो स उत्तर पातनी को हरा होना त्री हानका होता. प्रोप्य पत्रको होता क्षंत्रक प्राप्त होता. इतिया सीधी करना जब सामी हाता अब गरम अध्या क्रोड़ हुड़ा पहनी भारी गाम व नंदना टक मीध काना त्रको प्राप्ता स देवता हती भगत बसना हती अहर में इसका স্বী মুকুতি কটেটা उनी अपन में जनगर हरी बंध रहता. दर्श काह मरना हरी गाम स्रोपना करी शाम भागा इयोदी बन्द होता रीका काम करना नकीयन माम्ह होत्। नवीयत हारी होता नर मध्य उद्यासः

किराही ब्रास्था से देखना रिक्ष के समान करना बाबा विश्वव मुफला मूल प्रयान विश्वना तरण समान प्रसानक तेत्र शिलाह स देखना कौन द बोह्य हरेरत। इरका वा बंद शीला इता दिलाओं में गुन्न बहनां द्यान महु करना द्रांत वरण करान्ध इति साफ करना दर्गाली अध्य करण ग दारित बार्च जीना और क्षता। दिन काटा भाना विवर्गदेश संबंधा होता दिन दुना बढ़ना दिन प्रतमा पहना दिन पूरा करता —शेशः दियाय भानी करता रिमाग हुए। होता टिल काचा करता. दिन करका करता दिन का मान्य हमा करता. दिल का बाम्ह हत्त्व। होना दिन द्वारा शरका — होना दिस शहा होता. टिन प्रथम होता दिल बारी करना - होना दिल मजबून करका



एक की नैगीत

दिन साफ करनर,----शोना दिम इस होना दिस हफ्दर करना दूसरा द्वार देसना दूसरा द्वार व होता बूसरा स्थान न होन। दृष्टि के वी करना दृष्टि आपनी होना की प्रांत में केनता दो बांचु बहाता दी कटम देना बी गान बात काला को बाल हीत कर कोयका वी दक बात करना बी-दी पांचे होता यो-को बाती करना गो-दो प्राच दिवाना धी-दो होचे होना दो बूंब आयु बान्यमः ही होटी क्रमाना दो गस्य कहना श्री हाय बढ़ कर क्षीता मन बनाबर करता दोनो मुता प्रदासर दोन हाए कर जाना दोन) हाथ मकरता दोनो हायो से लुटना हादिको प्रसम्पदास न स्ता धारको पर पैस सोघन पहला भूग में बाल सफंद करना 034 OP-185

नगी अंग्रह देखना नमें देशे जन्ता नेवर चार होता नवर में की लोका नेन्द्रा सा पृष्ट विकल जाना नपा रेग स्वित्ता नवा विकास खनना बारी उद्योगि दला मरद र स्वी गरमा नवा निर्मातक होत्रह बागां द्वारा होता. नम दीव कर देना तम नग हो ने होता. नम नम में वर्गरफ होना न। गाउँ को पहला 🕒 होता नाम बाई बोहना fartir ett græt विमाह हेरी शबा निगार मा है का समा नीर घर मोता ती घट का होता. पत्रको अपन कपन्त वसकी बीची हाता. परस्था चीतर पातर प्रमधी चीहा नवना वरायं हाथा जाना रवर जाने होता पमदा भागी होना पंत्रका बडा होता. पन्ना मारी होता



रक की चीनीस

पंथा इतका होता. पत्नश्री बीजी करता वाकों कंपछी भी में होता बार्चों की में होता. पानी की तगढ़ राफ होता पावा सम्बुत होता. पारा गरन होना परेसा भीतर प्राचर द्रमधी राष्ट्र पर असन्। पुरानो सरोप भारता क्षेत्र की अवस्था गांच करता कर बाग होता. देश प्रति हुन चेत्र भागी होती. नीत्र को सी मन काहोगा ग्यामा सम्बंद होता. त्यामाः अवस्यवं होत्राः प्रकार है। होता बसम निक्त होता क्षम् वह रक्षमा हो कावा प्रथम हुआ होना ब्राधन पीना करना बंधन दीला होता. दश दोष व अला बदा ताथ होना सही-बड़ी बात ग्रामा बरी दाश करना बर्ग गर की यदाई होता. बर पर को हमा मान्य

बर पर की श्रेषा कियाना

क्षक्रे पर जिल्लामर बहे बोल बौलना श्रनारती बाग पमना बहरी-बहरी बाते करना बाबार धनम होना कामार देशे पर द्वीना बहबार क्यर हो जाना बान का नहरी होता. केत्र राज्य कर आसा बान प्रवाह करता. बाग मफेट करना बाम बद्दा क्षावा कामी जा मुख्यानक विगयि यह मध्य होना बिरार प्राप्त कर र बद्धि गा गारा सामी होता करी प्रशेषस्ता बरी नजर रचना बूट गाम्ने वर बनास बुद्ध नाने का न पड़ना भार काथ वालका मर मह कालना घरे मुद्र विशवः भाष योषा हान। भागी लाख स क्लाना भाग है या होता भीत होती परता मट में अधा होता मन एक काना भने ज्ञापा होता



एक जी नैपीन

यन कें या होता मन कहा करना मन बहुरा होता पण छोटा करता मन होना होता मन के होता मन क्रीका होता मन बुहा श्रीता मन भागी अपना मन भारी होता मन मीडा होना यत मेपा करना,---होना बन मोटा करना षत राता होता मन दीश करना मन बाक्ष करवर मन साफ रसना मन हरा करना,—होना यत हमका होना मनोरथ बृद्धा वहना घरतक देग्नन करनी वाता का दूव शस्त्रिक होना माधा क्र पा करता मध्या बाली करना बापका वर्षे होता. मामता गीन होता पामन हैना होना भागता कीका होना विश्वास करन होता मिट्टी अच्छी होना

विद्री कराव करना —हाना विद्दी स्वार होता. सिट्टी प्रभीद करना बिटटी पनीद हाता मीटा बचन कोनन। बोही काम पर प्रशासा मादी पुरकी नेवा मीरो-मोडी बान बनाना मृह उपना काना मुट उपायर होता मुद्र बन्दरा होता। मूत्र काला कालाः सह कामा कामा मूह बतारी होता मृह क्षण मा निकल भाषा मूह देश होन्द बृह शैक्षा पहला बह कीवा करना मूह फीका होता मृह कर कर नेता वृद्ध बद न करना मृह प्रश्न के पाना मृह भा के बोनना बृह घररी करना: --होना बुह बीका का ना वृह बीडा होन बुद्ध बढ़ा शासा सूर लाम करना बृह भाग होता बुद्ध कीवा करना —होता



एक माँ सुनीध

बृह स्वाह पहनी मृह दस रोना मध्य कह से कहना भूतरी गरस राज्या होता. मुन्द्री होसी होना म्यान्त्रकी म्यान्य सीमा होता. मुक्ती कर जिल्ला करना मञ्जू का बाल अने प्रोता एवं कीची होता. बेरान गाय होना भाषा होत में गता बाटी रहम परावतः मोटी तह क्रमी र ना क्षा भोग्या करना श्रेती की क्षेत्र करना जोता. क्षा किनी पहला क्रम व्ह्रमी होता. प्रकास पान्न सरना <u>होन</u>ा राष्ट्र भागी होता. श्याक्तिय पानी बश्यना विदेशक कर बर नहरू गांध होना रूपमा वार्ग हरता. रुवक्ष घरेख रूपता शेरिक के सरवात होता रोप्ने गुळकित होता रास राम क्षेत्र क्रोता लबा हाथ हारन। मंत्री ततस्वाह प्रधाः मनी प्रमी हेना सबी नारीक पहला

नजी साम घरता सर्वे । व रचनः लिंब हेरर असेला लाव देर प्रस्ता देश मौता नव 'यह इस भारत। मञ्जाबाधी विविद्य होता. यह दिनं ने रहे जाता. बार अंग पारका। बाय कालो बाजना गर श्रीमा पडना कार शा≔ी क्राना विकार गिविस होता विभिन्न हमित्र र ता इंग्लोर व पत्थ हवा भी त वानना शास्त्र की बाहर ही की प्रदेश। प्रमार जन्म मन्त्रा यसर बुरे साम होता. मालय मात्रान पर होता गणद क्षामा की न्यास प्रमान मफर हापी बजना यरक बाल दिखाता गाई के की लेल होता. मान क्रमी स्ट्रमा मान काड़मी से सिवासक रखना मान पार का पानी पीता कानव पामवान पर मारका मानी द्वार म लोजना मान्ये पृष्टि भूत जाता साफ प्राथमध्य देखना मितारा कीक। होसा



एक ही वेतीक

सिवारा बुनद होना सिर बठाना मुस्सित होता मिर ठ ना करना_र—होना सिर का बोम हलका होता निर के बान मप्रेट होता सिर काली करता सिर होना करना शिर शीना पहना सिर तीना होता निष्टं दर गरी तनदार बटकन निर नफर होता सीधो उपनी मी निकालना गीधी बाद व काना सीवी बात व बोलक सीचे मार्न पर पाना सीचे मृह बात त करता मीना चौना होना मुहार भरी रहता सूत्रा जनाव देता मोट-मंगाटे ने पस्त रहना मी काम झोडकर भी जान से शुरकान होना स्तर के ना करता हंसी में दोहफ होना

ब्बाई टिवा दा देश: ह्यार्थ किया बनाया हाय गणना होतर हत्य भारते जाता हाय मुना होता हाम गरम मस्तर, हाम ग्रांटा होता क्षेत्रमें लग होता. हाक नैयार होता हाय पांच दका होता राम रीन होता क्षाय क्षेत्रा होता हाम बद करना हाथ भगवून करना हाच बाक करना क्ष्मा पत्रने होना हाशन कराव होता हातन संगीत होना हिमाब साम होता द्भवय हेडा हाना हुवम को दूच होता हुन्य ग्रीनन शरन। हुदय हलका होता हीयमा पान होता



र की अग्राय

विश्वपण संज्ञा यस विशेषणपुतः सुद्वासरे

44.14
A . F
打工 と も
Market File
ब्राप्टी ०० €
2 0
a f 12 4 - 7 43
Manda series
aprior at the
Q41 4 27
My was with
A. s. T. W.E.
€14 1 2 21.
gm as a re-
what en
4 13 (37 /
संस्थात स्थाप
Mis a rise
41114-44
1 1 40
लाचा राजास स्थापना । जन्म
भाग का करवा
वक्रा एक स्थापना
Q P C Q P
direction.

the wayth con the

बारपुर की यूरे का

DELTA A PERSON ge tall phot 14 2514 1.4 1.41 4 MATE र राज्य स्टब्स 48, 2541 1 3 TITLE STREET TO 1 174 There areas 5.1 E42 (1) इ.स. घर **341 74** gift file. KAL UING TO foreign र का क्यान हैं ना \$ 47.697 3 W PTO PAR 支护之前 2 Whate to उ.ची उद्यव But for E ह की जान होता.



े एक की प्रमंत्राधिक

३ की नश्य µtas

के की नांकी बाल

र वा पहुंच

प्रचा बहु

उत्तर श्रीच

基外である[

के भी पान करा

& Wilgure gene

क्रम हरा स

महास्त्रामा

महत्रा में उन्हों कहत

एक आह

तक विक

एक जान

एक कलाव

एक मेनी है बध्य द्वार

ein gert fie

त्याः वर्गत्युश

गक यक्क

एक पाना की चारीर होना

एक पट्टा क बन

er ag' ebar

तर रहा ने में दो नवस्थार

tak tita ti

क्षान्त्रम

तिन नाग पर

क्षांपा राजा

धौषी लोगको हाजा

भीषय साथ

कर उसकि होना

ENG1

करवा संब

ENGI FAY

Fat be

Court DR.

GREEN FLAG

d kan gre-

बर्ग स्थ

६६४) जलांग

644 4 42

#44 STE

\$34° 519

4.64 427

#141 E75

Made and A

gradient to

क्षत्र दिल पर राजा

4222 645

Ann Lad hans

WITT 444

EEE CA

with this

AREL MEN

west gen

60.

THE REPORT

Br. fourt

有名字书

वार्य क्षेत्र कालाव होता

समय प्राप्तिक



एक ही बानीन

कतेश क्या होना कोजवाना घाटमी कार्य क्षेट्र रूपा कार्य की कार्य करोग कार्य करोग

काल करवा होता काल राज्यस

कार के करूने बाग्यार गणनी

to the trait

त व वध्य तथ्य तथ्य

बाध्यो को हो।

क वर्ग करणान

BONT OFF

कारका जिल्ला करमा जात

कारमार प्राची

made in hit

ब यो संदर्भ

र की प्रया

काकी दाव

4 2 470

high high

विक् सह स

विषयत व पुत्री

हस्य प्रशेषा

कृद्ध दिलां का बेहकान

क्षेत्रि क्षान्

क्रीरे

सहा जेवा होता सहा होता सहा होता सहा हता स्वाह साह सामी होता सामी होता सामी होता सिमही होता सुमा होता होता सुमा होता होता सुमा होता होता

मुना हाता मुनी कोट

कुले निवयन कुली कान कुले प्राचा कुले दिल के

बुद्ध शेराध बुद्धे हाच

समासदी पहरू सुन का स्थामा

बन मफेट होना कोग कोग मे कोग निक्का

नीनका स्वर गंगा-चमुनी नवा काम



वर्ग सी तकत्राभास

प्रथमात्र होताः

सर र । कांग्रामा हरेश

गरम करता अवा

मरम् तपा क्षान

मध्य द ४

मन्त्र होता

सप्तान । यह विस्तान होता

गमा भारत होना

राका मधुर होता

बार सरका

सहरहे निवास

सहरी पेठ हाता

गदरी क्षात राजा

महर्ग स गटर

माठ कर पूरा

गार का वो होता.

शाह्य यस

माञ्चा भवत

गापा समय

मुद्री नमाई

मध्ये मेरतन

गाव का मंै

गरह विन

वाले विव

शोदी प्राप

बीमी कहाती

स्वाह बनज्यतं होता

में नासी

बोहुआं रग

क्षील दान

036

OP 185

मी गाउँको ।

घर के जर पुर होना

षर हो ए उद्देश त

श्वरबाजी क्षात

মুখী বাব

मन्द्रशी हमान हाता

बार

war the same

चार वारप्रो

चार दिव

भारापेत ना

भाग भी ग्रीम हाना

Q11 017

विकास पदा होता

निक्षा स्वर

(a E p (1)

fair unte pher

विज्ञविस्तातः संस्कृती

विकास । सूप

मुक्का ग्राम होता

चरको अर

नी वाज्या

भौतन पुरस्ता स

वय हवा

Titte (154)

क्ष्मिको बार्गान प्रदेशी

দিটেক্ট মুক্তৰা

सःग चार्मा

क्षांच द्वाच होना

क्षीण होना



एक सो बवामीन

क्षाणे नहिंद स्रोटर बस्क

हांको स्पाकरी

विकास संबंध

प्रवास व क्या

द्रशास के नज

त्रधात बणी शता

क्षाहित्व अस्ट नेवा

क्षी का सुन्दर

सुनी कर गोक कराबर

कुरी के बगावर होता.

की नह

भारत गाँदी

भागेत्र की बार

Project.

र्वा हात है व

उक्त दल का मुरसान

4.3

Art Tar

Sign auf Gigt.

244 6 1931

१६ म∙मना

कृतुम हानिया

करी लीव ताना

प्रशी निवाह

्री वान

रही समस्या

क्रमंग

हत्र स्वभाव

रुक्त प्रवास

इत्रुष्ट होत्र

5f 51

हरू दिलात स

新基 (100)(4) 年

कुर्द काल है। बावको

इंग्ड वधन

नव राग स्थेग मोना

वं न का सहस्र होते।

दर होता.

बलकार कर चंतर

नजबाद बरवा भी नहीं

1 377

freelt fanga.

निवारी बका

DOM: CTI !

धी का अपन

र्तान कीदा ग

the year

gardi etar

RY THE P IL

A274

तक्य प्रभाद न जीता

जेन्द्र से बहुत

नाव य बाहर होता

वांको केल शाम

Clamar.

इंसिंग होन

देवत होता.

दश कोम

टब पाँच



श्या यो नेनाविक

रवं स्वर में दर्वेस होना दरप्रयोश कर दश दिन दत पांच लोग दायां हाव बाहिना हाथ होना दिन कशब होता दिस काला होना दिल के काने हीना दिकदार। **न्**तियहत्तार द्वन शेना कुम देश हा भगन अया होता दो गोती का ही जिला यन होता को भी द्वारामी ही द ज्वासा दो दिल का दा दिव का गाना का भारते तलकार लोजमुद्राः माप दो रती पाल हो कथा होता

हो हमो भाग

नो विर होता

हो मेरिया होता.

हो शंदियों का दिकाना होता

रोनों बाब मीडा होता

दोनों क्षांय सहस् शोनी हादी व राष्ट्ररश बदन पुन स भरा होता धाव मन्द्र होता नगी तलवार का बीच होता. संबंग तथा था। बकटी का मध्याप दवार गया। नमर्थन होता नरव र समान होता नये गिरे व ATR STO बरव िव मरम् होना त-मृत्यायम् वात नर्गदरकाकी हुवस विषयात्रक होताः निराज नक आप होना वंशका होता. चरपी जनाएँ पत्रका काक नमें की सात पत्रवाज शेवर याकीय प्रकृति पहली सोडा पहाड ऐसा दिन यहूचा हुदा होता वाचा का



एक सी जीवर्गवास

वान प्रकट

याभव गवाना में उरेना

ducta ga

कातीर र शंबर

Parista dag.

६ व अस्या

र्मिक है सम्बद्ध

कुन जिल हरन

कुक्तार द्वान

क्रमाच्या भागा क्षेत्र

द्वारी वार्त

· 中国 中国 中国 中国 中国

यूत € त

पुत्र है गत्रवे

the great

में जारत जीता

च्यांत बरावर होता

देश के के प्रकार

जानः च सहस्रो

को । सावर व नः

设计 对应

sd. U. 1,4)

तुष्यम् कर सम्ह

कृता व की अंग

प्राप्ता सामी दशका

ध्व के गाउँ

क्षांद्रि सामाध

भागभी बनाहर

र्गक राज

43461

दीका स्वर

की । वाद

क वी ≱सी

क्षा इस

इंदर गरन हरने

इत्या भाग

बुद्दा दिल

ৱল দিন্

बाहर जाहा सावर

बारा भागत होता

बारा रोजर

बर्ग नाम श्लोबा

बारी बात होता.

ब इ वादयी

केंग्रेस र का होता

fic fid ar fal

इव भगववानी

\$T 10 17 17

शासा होता.

बाल अधारत संस

इक्का आहमी

इरवास वर्षे

कात ६। पनी

कात का पत्रमा होता

कृष्य परपारी होता.

वधा जात को योग होता

बागीक दिशाह होता.

बाररेस कान

बाल की जोक बरावर

दाम दरांद्री



एक भी देशलिक

बाल मह बालिस्त भा का बावन नाल पांच गमा बरवेन श्रांच हाता बाहरी स्वक द्रीम (दुग्का बीम विद्या श्रीम हाना बांड का रेंग होना बृद्धि की मार्गा होता बुद्धि नहीं। होता बुद्धि विद्युती होता बुरे दिन बलाग का क के क्यात शेवा बंदाक होन भाग गाँउ। भरी अवाती भाग्य बोयेग क्रीता भगम ≭ पनी भगव के बनी भारत लोग होना भाग्य बना होता भारी कर भाव के अब भीचकाय होता भूगो अस मात्रम्त काठी मान क्षत्रकी द्वार मन के अधि

037 O P

483

मन क कान्द्र होत्तर मन क सैले सन ६ लटह मन होता हाना यन प्रका होना पेरिनयक मोटा होना सं(१)। यह मीरा उपदेश संक्ष प्राप मीदा दय भारत होता मंत्री सुरह्यार प्राची और माही क्षात् मीडी बोर्चर मीदी हाना मृह का रक्ता मृह का अश्व मार की मीती मह के मीड़ मनदी भार वैते वनस्था योग बाइयो बोट कांब घोटा बाना भोश प्राय पोय माप मोटा एइन सहस सोग बस्य माट होता



एक भी द्विपानिस

मोटी बढ़ि मोनो अध्यक्षी योगी पयरा बोरो भाग बाटी तनस्याह होंगे इस कोडी-कोटी सान कोटी रक्ष रर्गान सिशास के होंगे। र्रतीय होन शामि होता रज करावर रक्षी चर गई भर समाह ज्ञानी नावी कान बाली हुगी। लीका लेगोर के कथ्य लगोर है संबंध मही-लबी कर्य मेंको बांह क्ष बारु बाली होता मन्द्रितर गाने नप्रदेशर भाषा वदादिया नाम शय को दान माम अञ

लाल कोना

लेख बद होना

मान विश्व होता बान माका निकारिका होन। लामका के खर्ट अंगुर होना बाय होना की बन शामी त्रक अवहार वर्षन यश क्षत्रा समय मकरे के माधी होता मकुचित हाम मे सजीवनी बुटा होशा संत्रीच चारास मदर दश्य अ सफद भुड मक्द समाह सफद हाथी होता ममऋ ने ऊर्वीकार सरमा। तीर पर मरमयो नजर है समा बीच होता. मका मोलह आना गरंत्रा नेपन बाटे देर पाठ होता मार्च मानी होता साथ पाव भारत बन होना मोधी राह मोबी राह पर



पक्ष भी भैतालिक

मृती देह
मृत्युष्ट हाला
मृताश्वामी देह
मृत्युष्ट हाला
मृताश्वामी देह
मृतहरा पौका
मृता दिल
मृती परवात
मृती हेली
गृती हेली
गृती हरियमा
गर को गदा मर होवा
मौजह सात
गौ
भी मौ नरह
देवाह सफर
हलार वरह मै

हतार भूह से हराम की काँकी हराम की काँकी हराम की काँकी हराम कर सम्भा हाम की कठपुरानी हाम की कठपुरानी हाम की कर होता हाम माफ होता। हरम माफ होता। हरम माफ होता।

विशेषण एवं किया युक्त मुहाबरे

अचा करना अचा कनना अचा कनाना अंच क पार्ग रोना अवस्तुनी करता अपरम उत्तराना क्रमते को उसना क्रमा काम। क्रमा मृतना क्रमा कर देना क्रमा की बहुएह नक्स्मा क्रमा की बाद अवना



्_र ले प्रश्नाम्य

त्याः इति आस्य स्टब्सी तक्षः तो जीत हत्ताः तक्षः स्टब्स्ताः तक्षः स्टिन्स्याः तक्षः तक्षः क्षेत्रस्य इत्यास्य क्षेत्रस्य

कृष्णाः परेतः कृष्णे। परका कृत्याः

कृतिक घडनर सम्बद्धाः साम्यकः

क्ष्म्य माना कृष्ट परना कृष्ट्री कीतना

कान को काला कहता

भित्रक्षिय सेत

पुष्ट, १२५ म धनना

कुछ न गाउन कछ न गितना

पृद्धित सम्बद्धनः वृद्धितः रहतः

कोरी जोगो मुनाहा

सहा कर देवा सामा साथा

सुरक्ष दुना हुना

स्वयाची करता

बरो नहीं बुबानी

ब्युरेटी हुन्छन्।

बरुष अस्तर

गहरो धुरना गहरो सन्दर्भ वस्य एडला

वात का देवा

रांच पारना

बर्ग्यापुर करना

बग बार बार बुनना

वित्र पट बावता

्वित शहरा का पर वंशिता

भगहीं और दो दो होता.

ब्रवर देश

बूर बूरे हो शहर।

बर-११वर

कर शासा

क्षेत्रम इता रहका

प्रयाजना शिवना

हिंदा नेहनी

क्षण व राज्य

2月1日7月1

महर करता

रहा रह क्यमा

अमे कर बाजा

करक दिस्सा

दद मिन्ना

gen erer

हमा प्रकार

हीय स्वयंत्रा

द्रीका प्रदेश कीया

निरम् देशना

माम हमान

नीन नग्द्र करना —होता

नीव परह हमना



राजा गरी प्रश्नास

ताल काच काच्या

AN GRAL

यकार वर अवा

दर्गक्रम कामा

gfar yrai

योगी भू जातः हरता

तरम प्रका

निकारक देशना

बीया रिसर

भी भा स्थान।

भी ही धारत गंता

धक्का पोदा गणना

प्रशासना ।

श्राम की गान जनाता

गाम की तान मुनाना

यान गान न जाना

बान गान भून जाता

पीला परना — होता

वंग अस्तर

पुरा पुत्रपत्र

पुरा परका

बुरा पटन

PERS TRAP

फीका प्रकार

क्षीता सम्बद्ध

इत्यास कर देखा

बहर के उत्तर

इप्त देला

बाव अंतर

बीस स प्रभाग प्राप्त

038

OP 85

मार्ग स्थानाः स्थान

प्राप्त करना साम्य करना

star surer

वर्षित व्यवधारमधीय पहुनना

म् अतना

ध * वादना

dist dent

मेश गरम

कारा रहना —क्षेत्र

THE REAL PROPERTY.

मर्जी सामग्राम गरेवा

त्रव नानवा

7 ((74)

क्षा गरना

employed a second

Mitte grage

काल पहला

AT 4 ST 17 TEST

RES 67 4131 4341

गर्माय क्रम

2 Telego 1/2 C

दार १ प्राच

दार बोरह १२ दर हराता

क्षान राज्य क्षत्रचा

नाम बाजा करात

माञ्चीम श्रीजन)

वीन्द्रा प्रदेश

याद क्षेत्रत।

प्रस्त व्याप्त स्वत्यः



17 P. 4 P.

हसने आवक होता हर: डरः नमनः हर: ही जानां होराज्य समा



किया युक्त मुहाचरी

वर्ग हर भागपन gt faid. कार्य गर्दे। क्षा है जा अपना Applications Bert Bust हुमा रहा। उल्लाम एका रता र करते. go-date. 10 FR 681 4 444 प्रमुख्या गाउँ चाला वर्षाय प्रकार 70441 पर पर होना

ब्रुड जन्मा सर्वदेश्य

वरका

.21 231 इंद्रा न रत्यन 3 E34.5. ए। देखा - स्थाप प्रदेशक वीकार वीकार राजना । ता चनना रष्ट जाना gwar gar 75 5-11 -174 तक हैया इस सम्बं ,रा नामा रहाइ हाई। टावा एक्ट हर इसर अध्या रुवस्त्राः प्रवासक बहुमह

लंब महे हुव व्यक्त

इन। गर्गा

प्रकार गढना

उपलब्ध

उपद दाना

उमह पहला

बलक प्रदेश

बुलाभहा व स

8/67 3 31

पुष्पत देता.

मीर एक कर रहे केरलेंड

सह क्ष

गर कर बनवा

गद्र ५४ सन्

使用的

क्षप्र आकृत

कार राजर कर गाना

wa miar

प्रतिकाती

मारीक्सरी होता

9.471 119

क्षाता

作符 电射

कथनः

कह तम्बर

कहते न प्राती

कश्य स स्वतः

कहा पर भगना

कहं महोना

कृतिस उपा

(49.4)

बार वाच

बारान श्रीहतर

१ वस इंसा

कृतमा अलग

कुरहरशका

क्र कर कर प्रसा गुजा:

क्टबर

र स्था

महर्ग नर

सद्भाव गर्नेश

सरमञ्ज

मार होता.

मधीतु असा

क्षा अन्तर

न्दानान्योज्ञा होत्।

माम

सान दोहना

रिश्व काना

वित्र वित्र शाम

form a say

शिकारियम् स्टब्स

fairfum er gent

ferenal

HER REAL

हरीय जना

सुन करें।

तान जान।

च स्तर

स्वारा डोन्स

साजा-सन्ता ६१ मारना

शक् सर नार्वन

मायसा कारत स्थाप को जन्म। कारण सर्वेष स लोग हो। इस पहला राध्यक्षण जानकर सहस्र। मे!चना पोजनः स्कृतस्य । सरक प्रधार तह वृत्र बार प्रोप्ट एक तका मुजन्द वया भीता लग्र मुख्या सर्वाता बारसको वरमा पाना वहना भौतना OF STATES. क्रिक्क farar neue fazar विद्या होता होता ferrat एक्ट वस्त्र **प**र्नाप्त नर

विषय त्यस्य

frut fearf

ध टेलंग

पर पंजरण हाला ধুন ধান। पुलन उपना व वाज् कृत्यात कर पुरिस्त की बानी पर राज जाना बरह सन्। बराता. ৰত নাৰা बंद दर चंद्र युगकाः या बंटम पदा जाता 481 TAL बद्धा नामा 9414 कार्यक स्थापन 电转电池 वृत्यम् अभाग व समा भव हेन्द्र क्छ निवासना चल क्यता करना बनना पात्रका हवा। बणकी होता नवन विज्ञा बल्ला व≐नदर



रक भी जिल्लान

पनाये न जनना पने जान।

चहन कर भाना

करिंद्र क्रान्स

चिटक ताना

षिवक प्राप्ता

निपके रहना

प्रभवी हुई कहता

षुत्राः

युक्त लेका

चौकला होता

र्वटः हवा

दक रहना

ध्यकतः

खुलती ।

छ्याना एक्ना

धारमे

ह्याण पहला

क्षांत रामना

श्राम पारमा

क्षावना

हाना

दिवस जीना

क्षिकतः

सूत्र नागाः

छ सना

ह्नवर्ग

ह्मंत्रना

ह्यदे होनेना

ह्योपने जाना

039

OP-165

(डिकन)

2मरा श्रीतर

दगा देवर

जना रहता

अमित्र र

बस वातः

क्रमान्।

क्य प्रदेश

वन बन कर

अले जाता

মাৰ খন বাবা

प्रतया हुए।

TRAIT.

क्रम भागना

तमा भूगा

प्रयोक्ती

प्रची भूगो

वनी मुनी मुनाता

क्रमादा

ज्ञाने को जन्माना

गांग उठमा

भाग पहला

बगाना हुवा

बायका

माना उहना

मासाः

वृशानाः

और बोद कर

जोन देना

सम्बद्धाः



सका सी बॉवन

भूक भी रहा सङ्ग्रहान्द्र

भारत मीत सामा

भाक राजना

भारत कर तर इस बाल देनी

भूक जन्म भूक दशका

स्ता भूम उस्ता

इंद्रमना स्टीनना स्ट्राप्ट देवा

रातनाः

हापरी रहे जाना

हुरका रुट आवा टुट पहला हुरेता स्टी-कृति

रत कृत

दर कर हुसन। यन जेपना

<u> इंड्र</u>ीका

तहरी दुई

ट्रेंच काना उक्तर देना टाक उठाकर

क्षक परि कर द्रावाना प्राचान द्रावाना

देखना न प्राप्ता

इक्श्य अपनी

होबोधान होने

हुव दस्त इच्छान्तः रक्षानाः

एउनः

इवनः उत्रातः

शन्यका राज

हार बनका

इ.स्न१

इंड प्राचा

हरेर एक्टर कर स्थापन

द्वारत (गरतः वनगर

TRUT RP

वर्षन्त्र ।

तमक उपना करम महस्त

मरेर कर देखना जह कर रणना

तार कर

बार कार रूपना

नातान्यः

नाइ-नाइ कर

नुस्त कर

नात वर सोता

व्यवस्थ

रिदर अभि



एक मी पंजपन

निकसिता प्रदेश कृषी होता नाद देता तोद सेता तोत भीत कर तीतश

यक कर गुर होता भग्यरात। यगीत। यभक्षाता युष करता युष कर कारमा

वृक्ष देश। चुन्नातः

भूकत भीत सातः

देव जातर देवले। देवा देखा दुरदुरामा देखा मांचला देखा में महाला देखा मांचला देखा मांचला देखा मांचला

दीप भागः धर दशकाः धरना दनः धानः धृषका धो करंदी भागः

धी कालता

को दता क विकता सद्यासा सहस्रामा वाच उठना सामना सदन।

निकार जाता निकार जाता निकार जाता निकर जाता मींच्या भींचे जाता करवता करवता प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

परना पदना पदना पदना पदना पदना पदन द्वाना पदन द्वाना पिछ्या उठना पिछ्या उठना



गड़ सी स्टब्स

पिटा देवा पिटा दुधा पिटा पड़वा पिटा पड़वा पिटा पड़वा पिटा स्थवा पीटा

कीम कर की जाना संक्रिक जाना मुकार कर कहन

प्याप्ताः पूर्याः प्रयोगसम्बद्धाः पृक्षः कम्बाः

क्ष्म व्यक्ता क्ष्मण्या क्ष्ट तेला क्षमण्डली

फरक पद्मीर कर देखना

ष्ट्रकारम् कृतस्यस्य तः देखाः कृतस्यत्यस्य कृतस्य

फरक उड्डना फरकना हुंबा फलका फलना

काम संगा स्रोद गाना

कार मान्

किए प्रका फिर प्रकार फिल्मिका फुलफ्रास्का क्रिक्ट

स्र वारकर देश देना

क्षण प्रत्या क्षण्या

क्षण्यत्र इत् रोनाः क्षण्य गरमा क्षण्य का बेच्यो

क्रमञ्जूष

क्रमा सम्मा कृता समाना कृता हिल्ला कृता होता कृता समाना कृताको किरमा कृताको किरमा

क्षत्रना इषारने इकता इकता इसकार वह काना

बद-बद्द बद बोमना

बरन। बन प्रामा बन प्रम बन हम बार

इन गहने।

एक मंत्र मानश्चन

बनीने र

यननाः विषयनाः

वसारक

वसर अन्त

बयामा

व्यम प्रत्या

इंग्रह

वृध्यि ज्ञाना

धनिकान करा

🗱 जातर

4841

वज्ञाः देनाः

ब्राया ३ व वर्ग

3 94

Quality HI

বিশ্ব

विकास हुई

fany sint

विभए जाना

विद्या होना

र्या क्या

वृध्यः गाना

धवता.

इ.स.च्याना

बैहकर सावर

48 8 F

बैटनर

बैठा दन)

बैका होता

बंदाना

040

OP 185

बर्ग प्रस्ति

क्षा कर लक्षण क्षात्रकर

Man with

वर्षेत्र प्रश्ना

बावा चाहको ह

वका के जाना

बारकार साम्बार

नर्म रहना

संभव १८८३

av graj

घर वास

MARK.

भूषी बहत

ar grati

चण हता.

armaj

आसे अपने फिरनर

funt funter griet

farer

अंति कर देलतर

भूषेय अजग

वन प्राना

भन्दा नजा

얼룩하다

अञ्चल राजनी

धन देता.

संस्कृत भी नहीं

धून परना

भूकत्र ।

*

मुजना



लक्ष सुरै भट्टावन

क्षेत्रा होता **ध** लगान्। मना बर महत्त्वर औ मार नहाप करें मार अपनी बरायक हर क्षर घर कर दर पितना प्रका

मण्य पर भी नहां स्टब्स्य क्षेत्री मुक्तमान होता मान जाता माग हैया वर की पारना

मार्ग हान

मगल देवे। माने बोपना मोजना ष्ट्रायमा संस्था नामा मध्य किस्त मारा प्राप्ता होन्दर। मारा क्षारा विरस मिर जुला

भिट्टा-मिठा कर गोलना भिक्षा हेता मिने हाना मुख्याना

बाईस(

क्षण्या जाना

मृद्द केला क्षया असर मोक्सा **एमन**् कर्मा होता। रहा लेला

रयहरू र रसक देनक रतका अस्त रवारच कर रम् अस्ति रम रहना का की बार

गंका हुया होवा

Titals.

प्रेंबा कातः सीना रोता रोना न वंदना रोका होका वर प्राप्त स्य रहते। समन् नगर्ना लगी होता मंगे रहन।

बट बादा संगाइन। नवहना

गक मी उनयह

नद्भा हेम्स प्रयक्त कर स्पन्त प्रदेश स्पन्त देश संपन्ना

जिलान महाग्रहना

मीप वेना

चौपा-यांनी करना

ने उद्याः ने वायन। ने पुत्रमः ने-द करवा ने-दे क्षीमा मे दे प्रमुक्ता

नेना देना न होता नेन के देन पतना मन-देने में न होना सोट और करना

लोड-पोट होता लोड-पोट होता लोड होता

बकालन करका बारके जाना महित्रा जाना

मशा करना

मनसन्भने हुए निकल जाना

सना झाना सर्गाना सन्तर्ग सानी हुई

मिर्रापरा दानर

विवट काता

मृतवां सुवादाः मृत्यास्ताः मृत्याः देवः मृत्यः वादाः सो वादाः

सीने को स्थाना

मोतः

हम कर

हम कर दान देता

इसने इयन

हमन अपने क्रियोट हो जाता

हर्यना हरिया नेना हरिना

हर्षका हिल्ला हिला देवर हो एडवर

हा गहनः हो मेना



.

अध्यक्ष मृज स—वरे

A	A
49 5 1	4
4 15	,
4 4 4 5	
2* 1	
-	L E (47
v	
-	
-	
1(d L	c
Control of the Contro	
Kara da ana da	
4 41	•
****	at you to
	/ 4 .
Ç .	\$ 14 1 1 6 6 4 F
	F
н е	Contract of the Contract of th
X N I	4 42.5
Q 2 4 G	The state of
See 1	y (T)
	2 -
A. S. C. C. C. C. C.	k 4
20 4 4 5 4 4 4	
A T T O GO TEN	-
do a cara	T 1 9 T
4 4 5 45	4 T F 4 P F
Mode	1 4 4 4



क्षा भी ग्रेस्ट्राट

THE MESSE

par a die ferteb

Z(1)

गर्म अंदर्भ नाम् नाद् रोता

TRAFF COME

mpliff of their

Rit ein big mbrab

कराम पर र प्रकर्ता

ब मनी व इ.स. १८ विकासना

बद्धारी व क्षाटर देश फेलाबा

联列 多片

कम की बात हीना

कहा का ल रेक्स

CP STREAM

कर की कहा समय

काल इक अंग नेवना

कान तर पहुंचना या पहुंचाना

कियम पानी हम्मा

पिनी क नीय बेंग्ला

fant in griet ebeit

Will be British

eint ge eint

कामा दूर होता.

बहैसे पान मान राजा

श्राहर र

man men

मुत्रहार कान होता

क्षत्र विवत

महराई तक शाना

मोले पित १६४।

041

OP BS

YE 4 4 ZE

BY B. BALL STAT

MERSON STATE

nen eine ein fegen

44 een an bei

477 475

美国工作 中国的 1994

भीतः चन्ना साज्

PAR APE

wife it if ye want

R. R. C. STATE STATE

E STI MA PAI

MI 4 ATE

mie bine Chipager

APP OF STREET

nager trial a give reve to par

awar e utu une femilier

नवत्र च जीव स्वीत्रांत्री

त्रक्ष त्रज्ञ वर्षेत्रका

fre gre

THE RIVE

नामक ।

empe e per

dida e al

TRUSH R

gig gie nicht eines

कृता एक विकास स्थाना

give an frage 74 par

gial an freez curt

grat on from Ant.



लह की बाया

ित श्रीपा नव साता --सामकर हिन्दा है प्रया होना इस के पान्य परी रहता. Zr eva: हुए दो गोती हुए की रोती न भ हर की बाद ताना दुर की लेका दूर को समजा हुए स्थातन्त्रना Re days दूर सांच्याचे करेगा कुर जा ला होर म पंपर रहे जाना नव व शिव नक मान के मोध द्राष्ट्र तक महर य जाये न दक्ष पाना नाय के फीड Greek and बिक्ट होता fan er finete uter भीव विकास नीच गिरानः कोष वाका विश्वे होका रहत। वेन नीच हात्रा पान एक वर मोदिय होता पत्म न घटकने दना क्षीर्व

5 7 741 योल होन्दरा वाह वेर देवा नंतर किएसी 110 2041 कीरत हरना वीक्ष होना भारत पुरिचय र्व के बीच की विकरी केंद्र पण को चारत होना वैश्वपेत्र स्टब्स वैश क्षेप्र स हथात वैष्ट बाहर नियमना या निकासना वैशे है केव की प्रतीन विसकता वेश के बोचे की क्योंन निकस भाग देश के बीचे की विद्दी जिसकता देशें तमे कुपण देश वेशे वर्षे समा बहुत। dri nie aren cunt देशों तमे बाम न अवने देशो वैभी तके बोटी दहना र्नेशें नमें रहे होना वैशे तमे पह होता वेश नमें शैदना देशे वने बोहना वेंगी हुने होता. प्रधारों के साथ क्षत्र व भीत्र याता बला गील पहला बान जागे बढ़ाना



त्रक भी निकास

बाहर की हवा संगता पारव ने जानर बाहर व होना बिना कहा के बुका कुटना निया कम के भूमा फ़टकार विना कार पृथ, हिमान बिना गुठकी का सभा विशा छोत्र के बिना सप के काशी पाना बिना दाम के बारी इनका बिया धाम के मुलाम विना राम के गुलाम बताना बिना बाम के विकाशकर विशासिय के बग में काना बिना साथ का करना बिना एक के प्रवंतर बिना पानी कर करना विशा वानी की वसनी विषा बाह सी शह विमा भीत के जिम बनाना विना मुख्न का बादमी श्रिमा मोल के ग्राम बिका भीत के चेरा विशा मीत पण्या विना मीग पृंध कर पगु होना 書・影響は व-अस्त के प्रद व-आर

क नेक कर इस

बेपर का उट्टाना 🛊 प्राची करताः 4 Tras eta: य की का इयुरी हा नाम 4 RZ 91 क लगाव अस्तिक वैश्व कर इ.स.च. देर का होना 15th PIN 6 ज्ञान्य का हाजब दूर करना आध्य पर संपास राजा भाग्य का मान्य दता ब १५ वस्य इतिए बानर की अञ्च परना प्रम लग्न हर बन म दूर होता REW NE बह के बाद विशे गहता सुर के कुछ करना बहु बाबन करका वक्तवाचार परित्र होता. नारी नेता पीछ प्रदर्भ रामपार ने होना समय के केन्द्र लगा जिले पूपना वयः स्था बाब इयर नाने होता वायन अत्रा सामन द्वीत करता यायन योजना



एक यो घोलड

सामने यह कर बाह न करना मिर के बन्ने नीच आना भिर म पेर नक मिर स पेर नक प्रांग माम अन्य करने काना हत्य पहला इन्य बहाता इर म हो मिलालो इस्य अनग रचना इस्स चीक्य बीक् प्रदेश हुद्दर सोजबर्ग

सप्तस्तित-यद युक्त मृहाधरे

अवसं स होता श्रव-क्रम य शक्ता अंग प्रस्त असर-माना अधिन मानदा काना **अ**धित-संस्कार होत्। अप्रकाशको जात अवायुग होता भूताम सन्दर्भ श्चमान्त्रस्य देशाः आगम्य रोदन प्रय विशास भाग कात जुला रणता प्राप्त दीकी ओकी करता द्वास कामजीकी कामा ब्राम काम-योजी होना म के ध-पोनाल पक करवा व्यक्तिकारान्याच्या का क्षेत्राचे हात्। धन्द्रश्चनाम सुक् अधिकाका पारताम स्थानन द्वाकाय प्रदेश

ब्रायन्त्रको में कदना आका केंद्र करना प्रायम कीयुर देखना बाता-योतुः विवासी भागा देखत सुधाना कारा-वाला मुक्ताः क्षाया चार्य महेन्द्रना क्षाना योग्या होना सारा राज का भाव बनान्ह बारा-शम का याव मान्म होना भारा-दास होता प्राज्यान्यार्थं यद होता द्वाद्या वर मुखारायात होता राजन्त् दिलकामा नुवार-पर्गक उधकान्य इपर-अन में पहना हरराज्यको हाना का राष्ट्र होता तुमार-क्रंग तुनदो सीमी समाप्रता

बंद भी देखतु

उनदो मुमटी पड्या

জ্ব-নীক

क बाजीक

क्रवी-नोषी प्रवास

एक-तार

गर-देट

एक-वंग

एही-बोटी का कोर नवाना

अधिका दिल्लीका होता.

क्यी-मोटी करना

क्षीमुर्ग काला

क्रम्भी तक्ष्मी कहना

करियद्ध होता.

电影中学电性

बठ-एकवी की शरह क्यांना दा सामग

कठ-दुवर्ती होना

कड-अम

কত-স্নলা

सबैन्द्रम होना

क्षत्रकारीय करवा

क्षत्र अस्तियो

बान-गरिया होता

अधाल किया कर देना

क्योश-कव्यव

क्षप्र वद बीमा होता

कर्णभार

कर्ता-बर्ता

कल-पूर्वा बातना

कल-मृहा

कलग-तोव्

042

D.P.--185

कटमनार सरता

परनो-वनपदनी कहमा

कहा-मृती

कहा-मुनी होतह

कार-कपट सन्तर्भ

कार-बाट

कार-वीट

दान-प्रांच सामग्रह

कान-कराई होता.

बानाबान समय न होता

पानाकात हैनता

कॅग्य-कोड कान्।

कामकाम की वक्का में विश्वना

कावाकार करवा

बरया । ला होता

कानकर मुद्द

कामसंघ करना

बाडी-बरवट हेवा

किश-करावा मिट्टी में जिलता

क्षित्र-संगद्ध वर पानी किएन।

बुद्धारायात् करेना

कुम्बद-वरिया होना

र ज⊸योपन

दूस पानश

कुल सोक।

कुल-दिशक

कुल-दीपक

नूम-कोरन

क्ष्मां होना

कृप-योगुक



एक भी दियान

हृद्धाः ज्ञानाक्षा कृषा श्रांटर सरमना कृष्यात्यंग ६१त। काम-प्रमी बोब्द साम से भरी रहता बार मानी समना बटरी औरी समना बरी अधी मुननी बरी बाटी मुहाना सार-परवर सीवनात काना व्यास्त्रात हुन्तरः बीकापादी करता बाकारामी होना **ब**्दे∴शाम লুঙ-ললার संस्थान के विक मर्गः नार्दः हारा ३७ होना गग त्रकी इटाका र्गक भाग हाना गॅठ-प्रचम काना गठनाथन होना प्रमुख्यान करणा **न**प्रतिष् सम्बंही इंत्यम गहने क्यमें को रोजा मीदय-अनुको देता पृष-पीटा होना

गुल-बाहरू होना

सूद्ध देखित राजा क्षेत्रण नागीया जीवर हरिया प्रेनी ष्य व्यवस पर अध्यत् होता घर धमका होना बर दसमा क्षा दुष्ट देखन बर कक चर काओं। घर-क्षेत्र ष्ट्रप्रदेशी : बर-बंदर करता. धूम रेड होता बद्दा उपने बाना बार-बाराच मधनी भवता युग्जा संग्रही। बहा बमी पतित-गृष कारण-वडी एक नेना विना मादर म गरेत संस्ता किननी बुधको बान करेना भिन बना होता विशे बार चित्रपन-काश चलाना विवयन बाग समाना वित्र घरतेकी होता पुग्रा-पश्ची क्षेत्र-कामार योजी-दायन का माध



यक मी जनमङ

द्रकरा न का स्टाक्ष करण व द्वप क्षावा क्षणक सुरी। ह्मान-बीन करना ख्रान-परनाम करती विश्वकृतिकाल करना चित्र काराय होना ह्याताककी वरन क्षेत्र (नक्षक्ष BURNESS OF अंग लंबाड कमाना बढाती अग सम अप्र पार भूष गिवाराम शेवा विश्वाचा होता श्री नाम श्रीन्तुभाक भीभ महोदी होता सोब-गोब का भार कुंक कराना ट्कड-मार र करना वार्ड जुडी-भृती दश। हेडी-बीधी मुनत्ना ठकुर सुहाती बहेगा हर-मृदी माना द्या-विद्या जेलका ठीर डांब हीर-डिकाना

वाग-देश्य हास्य नवर्गदक होना. वर जुरब जास वाया-वातम उपा देशा तावन्यक माना निविधा-महिनार करना नि धइकि देवा मकाचेरा गरमा त्रवादारी होता. तन्तु है है शहना मन् से में ह'ता चारा अस् কার নার বাংলা माना बदक नीर जॉर करना दक्ष-प्रत्याम् करमा इन्द्र-बटाबार दम-भागा रेगा दव भागे य शाना दय-दिलामा दना दमन बह्न बन्नादा रम-बाटन बढ़ा होता रमलम्बरी होता दम्तदात्री करता द्रात-काटी मोटी दावन्यम का बादमी शाय-इस पहला दाना यांनी उठ जाना दान-भाग की तम्ब केव्लेग दान-भाग म मस्बी प्रशा



वह सी प्रदेशक

द्राव्यक्त काया जातमा क दिने बाप क्षेत्र टिक्टिट्र काना दिल पानर रिक-इयई करना दिल अर्थि करना दिल-फक विसोजन है। हीदा-दिलेग हामा दुष्टिनार कायना र्वाट्ट-वयं चलना द्विका होता. द्रभ सहर अध्यक्त मुख-महा होना दूष गांधी की शरह हुचन्य हो की तरह बुव-दीयां बच्चा दो-चार दोष-पंगा व गिनवर रीक्ष भूपः करता धारा-प्रवाह मक जटी। मक-पदी मन-दिश्य से मेक्किक्ट करना नपा-नुसा नयी-नृत्यी बात कहता मधकाबार होता. मसक्याम मधना

नयक मिर्च लगाना

नमक-सिच नपरता नम्बरकाम शोवा समयहरुष्यः गरनग तमक हमानी होता. नवन यह रोजना नेयम-१ ल नवन काल क्यांना नरम-राय है ता जरम् नरमी नदाः शर्मः स्टन्तः मनीबः जल HIT HIT नाम महाई माय नीम ४ रहा। सम्बद्धी जनाः नाम चराई होता. शम निया बिटा देश नाम नियास न होता. मध्य नेवा नाय नेवा पानी देवा व होन। जिल्ला-विकास विष्णानीन पटा देगा निवृद्धा जोतः बाहता मीर अन्य यस जाना नीर-शीर विवेक करना नम-प्रशास करना नेन-परम दूर होना नेन नाम महाना नोच अमेट कावा प्रवन्तुहासर करना



एक सी उन्हरून

पक्की-कश्मी करन पदा-संर पद्द-पत्कर होता पत्र-वानी जाना पत-पानी रह प्रात्मः पर विकास पर अस्था पद-राम सिर गर बढ़ाजा कल-पुरत्रे विकासना पर-लोक विश्ववता वर लोक विकासना परमन्त्रति थानाः गाम यह के व्यक्तिकारी होता परमन्त्रद देना परमन्द्रयानः पलक-पांच ई दिस्ताना पाणि-पहान करता वार्तीम्-प्रहाग होताः पाद योठ जनका एक्टब्स लो पान-पानी बर होना वानी बान को वृधाना विद्य-सम्मृहोता वेष-ताम माना वेट गीठ एक होना वेश-वीक्षश वैमा-जोड कोडी-एकन होना वोकनीमा होना पी-बारह करना वी-बारह होता व्यार नगी

043 OP -- 185

प्रस्ता कर्युनान होता. अगानवास होता शान:-विद्या करता मेच-एक में पती हुई धन रस व सिवश हुई प्रसारमा मानी हुई। पेम मुख स फ्रन हाना 图4 使19 पान सम्ब बेदार-पुदर्श देता बंदर नार वर्ग भवाद सर्वाता बंब ध्याली Briefe Bris Biger बयनाः संधितः बहुब विश्वास बहुर-कांग शावर बह वह पर यान परना 471 171 老年 河市 क्रम-बद्धायः च रत्यः बर-वाना बद्ध भागी बद्ध होत बद्द-बीन्द दरी-वृती कात बय-गोया गिगातः बानपाई गई करना बात बार्ट गई होता. बात वय-बोकी समना



एक सी समय

बाग-दादा की हा व ना बारह-वडी पहाना बाहुन्त्रभ नीनना बिगवर्गदक होना वीय-सत श्रीकत्या सः र क्षेत्रकाचेक करवा बोरिया क्याना छोत्रकर भागता बोर्गिया वधना वाधना ब्रोकिया बाधना सम्दर्भा बोहिया-दयना साहामन) बोरियानकमा नापना बोहरी बरटा होता श्रदीराध प्रयास करेगी। भरमः अस्मी मद-नाप निकास करना प्रवासी कारता मय-वयन कार्टनी चय-स्थान कोलना भव-क्षप्त कृटनाः प्रक्रमानम् नएकाः भव-सागर पात करना भारीनगराः भाग-दोव की जिल्हारी भारम-उपजी भाग्य-ददाः जीवना सारम-शतकी भी जाना भाषा-बद्ध होता मुक्कि होना

भेर-काम प्रमाश ---क्साहर

र्जाहरा अयान होत। प्रदा चार धनाह काम्य वक्छी-वृत्र हाना मस्त्री-इट्टा बनाना सन् ग्रहत्त एउ चला कर बीनी होना यत चंद्रध्यन सन-बोर्नी सम्बद्धानी । सन-बयन नये म भाग भागाः यप-गर्धाः ध्रम योखा **प्रदान्त्रा**ग्यः सहान्यकी । सन्दन्धाः वसम्याः बाई-अध्य होता बारम पुरशी बहता शाय-वनीश उपाना भिवाब-पूरमी करता मिमी-अवन बीन मेच करना योग-वेक निकासना होना प्र-अपने मृह को उत्तर प्रकास मुक्त कार শুর বাস मृह-तोड अषाब देता



एक भी लढहाना

मुद्ध-देला मृह-वेको कहना मृह कट स्व-कोली मृह्-धरमा चित्रका मृद्ग-मागी गुगद विलया मृह्य-संबद्ध मुद्द के कच्ची-पक्की निकासना Mar-disc ब्ट-मरदी मुर्ग-दिन मुहा-मुह मृग-नृष्याः र्ब-मेश करना में-वेशी करता मोदा-सहीत मोन-विश्व मोदलोर ममन्द्रर की भर बनाना ममन्यातना होता र्वन-देग रंग-भूषि में उत्तरना श्म-राचा **भेग-राता** व्यवन्त्रमङ संबंगा राम-बाकुरा रक्त-बक्त होना

रश-बंदरी होता

पाई-जीत उतारमा

राई-बोन करना --पारना

बाई-श्ली वाई-रसी वे परिचय रचना रात-दिन राव-दिव एक करका बात-दिन का अन्तर होना राव-कहानी गान-कहानी करना याम-भारत रान-बास होना माहन्सम्ब करमा क्या-पूचा कवन्वाकृति में समें होका क्य-साथि होता रेकनेक होता रोटी-क्ष्यहा शेही-बाब चंचवा रोटी-दाल वे नवना रोटी-वानी की विन्ता होगा रोटो-वादी वे समग चोटी बेटी करना बोटी हेटी का अवदार रोगायनी नहीं होता भयोश वर अवर्गेटना-पार होना वंदा-भौडो नवी नोही बान सकत्र-मोड होगा कस्यी-साहत होगर सबी-लिपटी कहुगा महरू बृद्धि करना



तक मी बहत्तर

लाम करत करिनी नाम इस्ट पहला के होता

क व चंदर

सान जना बनशा

लाल जुले स इति इतिहास

min ein beet

मान योको एक रियाना

দাৰ কুম্মানত বাঁবা

ल+ दा नगरह। होता

ल-इक्ष इ.स.

वेई प्रवर

क्षेत्राच राजा

धान देव

विष्या वर्ष

ब्रम्भ वे या राज्य ।

वर्ष प्रकारिका

वस्तिकार्य जान कराना

विभाग गरमा सं स्थाना

विधिकाति वाम शेवा

folg ein fonzta etas

fo marfa mager gine

बिय-कल होना

वैज्ञाना-सन्दर्ग होन्।

प्रसिद्धांक्य प्रदेश

द्यापातकार फरमा

क्षेत्र (दस

मक्षेत्रकारा

मपंद गोवी

समय राज पर गर्भना

गरिकात होता

पाप-डाइटर को गति होता

विषया-वर

मङ्ग्रहरू

सिर-भागा है बस रचना

सिर जाना पर बैठाना

विर क्षामा पर राजना

सिर अस्ति पर रहनी -होना

मिर अंगी मे

मिन-चहा

विश्-नहरू

बिग और काशिश

विगन्दर

किर प्राप

विश्नवस्थी करता

बिर युद्ध व होना

सिराभेग व होता

विष्यंत्र समय स्थानः

सिंग-किरा

सिंग माथ बढ़ाला

भिर माया पर

मिर मीर

सीता क्षेत्री करना

नुपा-रम व शारी

मुनकी उद्यो अन

मुर-पाम जाना

मुर-पुर को राह मेना

नुरन्य विभावना

युक्त क बतना

नुशोधक जबकार

बनह भोना



एक भी निहलक

हम कीय का माथ होता हम-धूक होना हंगी-बंग होना ह्यी-तोड़ परिधम त्र्य-कंदा इष-फर श्य-कंत अपने ्षम-सपक होता हम-नेवा होता इम-स्मान्त्रः हाताः हराम-बाट इवास्तर हवा-मारी हुस्तक्षप करणा हरन-रंबा होना हाध-क्षण होना हाब-पांच चलना,---पनाना हाब-पांच बोड़वा हाय-पांच डाल देना होय-मान र जनश

हाय-वाम कून शन्। हाय-वाने बचाना ह्मबन्धंब बारवा हाब-बाब (वैर) हिसाम हाय-पैर इट सागः हान-चैर कांचरा शुक्र-वेट सा नेस हरन-पैर ननभा राय पेर शास देता। na ir reer रावनीर प्राप्ता **हा** व-वेर सम्द्राचना हादन्देश होता द्दश्यान्याही करना —होता हायो-राच हाची-दान तेल इध्य-लोका अन्तर्गा,--होला हुनका पानी बार कारता 💎 हाता.

मुहाबरे की नगह प्रमुख पूरे बाक्य

अवार्ड पायल की सियकी प्रकार अपना काल देखे विका कीए के पीछे दीवना कपना घर खोड़ कर मुख्य मुख्यन। अपना भवाचा अपने मुंह पर पहना

044 O P -- 185 बंदनां हुए होट कर स्वारा पाना दीता। अपना बोदा हाद बाहना हुएती विज्ञाती अनुग देनाना बादी हुकती सूचना होन्,



एक भी बोद्धम

अपनी तीय महाक की भूमन प्रकाना सपनी नाक कराकर हमरों का अतपून बेनानी अपने को दिना स्थय न विकास ग्रपने पृह वियानियदंह बनना अपने हानो पैर घर कुन्हरको भारता प्रवरं को तरह कानी जुनपना वायकियों की शह और कीमनों पर बहुर बारी नाथ स बीख पनहां होना आधा नीयर प्राप्त बहेर होना शाब सान से बाघ होता. पुरुषों निनने से नही इतना बड़ा पूत्र रहे जीना इक्ट क्या उपन बागड़ी होता इस कोठे का बाब उस कांडे में करता श्रमणी में नद्र समासर मारीय समारा इट की बोर्ड कर सीची व होना इक्ट की मांच इक्ट, शीव की नोचं गहन। गय कान ने जुनकर दूशरे से निवास देना राष्ट्र बाजन से सहमोर्ड भर का अंधान नाराना एक की से दी चिटिया बारता एक पान के वी ट्रंबर करके माना गुक्त केर बहुई एक केर बहुई रोमी की रोसी सोजनी में सिर देखर न्यानी को न निननर भागनी में सार देकर मुख्यों से म सरका बोचली व सिर देशर शृतकों से व बचना शीवं कि विश्वाय श्रीर की मोत करिया और शिक्ष बद्धा १९५६ कारों का बदन में सन नहीं कान देख किया कीए के पोछ दौरता

कार पड़ी बाबाय न मुनाई देना काशी उपनी के नाज्य पर स्वीक्षावर होता. कार्वे की काना कहता. कारण में भी गथ होता बराता अल्लार श्रीम करीकर कामी कमनी पर पुगरा रंग न चढ़ना काली दिलाय में नाम दर्ज होया विश्वका गृह है किस कर की मुनी होना किन चिक्या का नाम होना इंडा कोरना और पनो पीन। इसे ही पृष्ठ मोबी न होना कुल का दीपक बुभागा केले के बाग में बैप होता बके के लिए डीक्स नेज होता वर्ताट बचन में बचान कर राना क्षेत्रमें की दनामी व हाच काना होता क्षीभा चीन से बयुवा होना बतरे के बंद में उनमी न डासमा सवानी चोड़े की बाग डीनी करना अरमुने को देश कर संस्कृत का रंग प्रकार नंता-अपूना के जब तक तक होना न हुंदर को दने बाले के निष्ट् कुना तैयार होना करोत की प्रस्कानी का गांव भर की भाषत्र होता. धने में डील शासकर एका बचाना नांठ के पूरे थांथ के अबे होता निर्मात्र की दरह रंग बस्तरा मुक्त बरता मुक्तपुरे से परहेज करना गुष्ट न तीना होना न पीटा वट संध्य तो बहुर संदेश



गक भी पशहसक्त

गेह में साय पुत्र विनना घर की सुवीं राम बरावर होना घर के भीतर कुला होता धर से दिया जनाबर नतनिश में बनाना भर ये भूती यांग व होता पर से मड़ी बच्छी डोवा घाट-बाट का वाणी वीक्ष होना भूग का जवाब धूने के देका परे को पश्चट कर हीश कोत्रक। मोबे का रोग बंदर के मिर बबना जनकी के दी पाटा में पिनमा प्राची वाची पर देश रक्षक। बलने देश को शर्द करना बादर के बाहर देश केनावा बादर देखकर पैर प्रसारका विधिया का पुत्र नहीं विश भी अपना पट भी क्याना भीत के दोसके ने बात दीनमा अपनी और दो-हो बुल्युभर पानी को भी व पुछता वृते की विविधा से बाहर विकल्पना भोटी का पर्योगा एवी नक जाना भीर की शही के शिवका होना मीर के बचने बाद को वंद देना बोर-धोर औमरे बाई होना योर में भौगी करने को और सम्बक्त बागते रहने की बहना बीय के बाद की तरह कोर देगा भौगाओं लाक धोनि में महकता **घटे-बार्ड्स का सम्बन्ध होता** हानीम अंबन का रिस्ता होना

क्षावे पर में बान बनाना बर तक एमा की बारत है मनीन बामबान कर जंतर होना विनया पानी विनावे उतना वीमा जित्ना बड़ा युट उतना बड़ा कीर विवनी चादर उतना देर फैनरना चित्र याच व न नामा उनका प्रमा न पुछला विम बन्तम में सामा उसी में हुँद करना बीव पीएव दा यहा होता कुम्बा-कुम्बा बाठ दिन पुनिका में बहुए होता वैसा बोना हैमा काइन। बेमा पृंह वैशा बन्बद वंता पृत्र वंसा बीक सिन्तर त्रेना कुमा नामन नेमा हवा भागो र्मस भागा वंग ही और जास वी बहा बाद सी दौरा इगर की जोट में पहार खिल्हा ध्य हं है की यहिन्दा अभव करता बाक के तीन पात होता राम के धारत पीन नवेंचे की क्या बंबर के लिए जाना तसवार पर बलमक का विकास बढ़ा होता तमने की भाग गाये तक पहुचता तमयों के तके बादी मा विका होगा हनको से नगकर मिर में बाकर बुधना तानी एक हाथ ने न बनता, की से बजना तिनके की बोट में पहाब जिपाना तीन काना तरह भी मुख बनी रहना तीन बुनाए तेरह याना तीन लोक से न्यारी समुदा बसाना



क्ष मी ब्रिटसर

श्रमके हम से नाम उठानर तीर बाट में र बाट तृष्य कान-दान तो हम पात-गरन त्रा करे बच्च और बच्च को नृहा क्लांग मोते की तरह शांस फेरकर मोते ही तरह अस्य बदनमा दमरी की हाँछना तोकर कुने की बाद वह बानना शतों के बीच भीत्र भी तनक रहता (।स प्राप्त के स्वरंबर रिन की दिन कीर रात की रात न नमकना तिल्ही हुए हैं। होन भी हाम मोटी होना इन्द्र के जादन शिष्ट पर नंबराना कुब का कुब, सम्बो का पानी पुष्ट का पानी पानी का दुध करना बुध की मनको की तरह निकास करना हुत के बन्ने का नद्धा भी फुक क्ल कर पीना हुच के फोन को बच्च ने नोहनः दूब देनेवासी गांव की मान बाना ह्यो नहाजो पूर्ता क्रमी हुए के बोध मुहाबने अनुसा बूमरे की यसम से कीर ब्रोजना हुमरों के बर में बात समाचर हाथ नकता दूसरों के लिए हुआ चोरतेशके का शृद कुछ में पहता हुमशाके निर्माणकमा स्रोपन करते के निर्माण ने अंतर्वाह जीना पैनवी का एक बावन हटोब का यह तान केला बैने के काम जुरशी बनोप्टर होता दी मौकाजो मं बैठकर नहीं पार करना परंभी पर रहनवालां का बाकाच चारच का प्रयस्त कामा अंगे प्राना नंगे बाबर

जनों के देश में श्रीकी का काम न होता स दूषर के म उपर के म पर के न पाट के म दिन येन न राह नीट मक्कार काने में बुती की प्रानाम होना नम दह कर दूप पातना यह बंबको का दुक्तता में मंत्री भागा नाभी समय बाक भी त कमना अहाक के स्वित बाद बादना बाक विद्रही में पिन-पिन कर भर अल्ल नाम एक ही अवह गयी होना नीय समावद जान काना नेकी कर कुई में शासना ने ही इस शरिया में बालना नोन-दन-सकरी की विंसा होता नो दिन में चहाई क्षेत्र चनना नो को महारह होता नी ननद न तेगह स्थार थळी का पर भी न मार सकता वतरी में पान तेप की भूग करना प्रमेण का पर भी न बार नकता वले की देखना बड़ न देखना वर्ते पर पश्चमा माम विकासका वले पर बैठकर पेड काटना पन्यर के क्षेत्रज्ञे का पहली होना परदे भी ओड़ ने शिकार करना परशासे का पाचर चौवारे में नगना प्रशेमी बाजी जायन वे बनी नाना पर्वत को बूध और मृत को पर्वत कराना वसन्बन वृत्त के समझ बील नावा



🕶 सी बनहरार

पनक के समाग बॉल जातर पतना आहे कर असग शाना पवन का भूमा क्षात्र) पान-कुल के भ भार कर रहना पानी म बस कर सगर म बेंग करना पीपण के तथ पर मुसान करना पीएल क दन को इहिना दना पुष्य करना धीर कुछ ये शल देना पुत के गाँव गायने में समूत प्राता पेड की क्षांत मीतर निसंद बाना फूडी गरनर आशीन नहना बदर का आदी का स्वाद व वातका बदर की बना तबके के निर पहना बकरेकी साकार्वेट बनाता बाइ के बार शहर के बार उद्यासका बब्द नगाश्वर क्षाप शहरा बरफी बाने के बाद गृह काना बहती यंगा है हाथ भोता बहती नदी में राख प्रशासना बहुतर बाट का पानी कीवं होता बांग की जड़ में चमोई होता बाट जोहते अन्ति पवराताः बाग-तादा का नाम पुरुषा वा बुबानां बाप-रावा का नाम पिटना या पिटाना बाबा शादम के दक्त की बाबा बादम निरामा होता बाधी पात म जुदा का दिश्या होना बिम्मी के गने व बटी बांबना बिनमी के भाग्य में क्षीका ट्रेनां बढ़े मूह मुंहरमा होना

045 OP-185

बद्धाः मा अपन हावी संबंधनहः व्यक्तिक वाला हार्य सामन नर्यन्त मात्र लीए कर हाच कान्य करता. भीवर की जाना जभी होता मन म चान जनाइट तथाता देवला भर्तक सन पर वांतर वारत्य भ्रेम के प्राप्त क्षेत्र कवाना भ्रम की वर्णनका बहुन्त अस व दिशार में अस्त्रमा बबाय व गाइ का ग्रेक्ट बगाना मनार के पत ने मुद्द प्रमाना यसर में देश बंग पाली से ग्रेसी सकि कर वर पुत्र बाधन। बन म प्रांतर पर मही जिलाना समन्त्र के हमार चीन होता. मान पर भी नहीं। मारक की जूतरे ने मुख्य आसा मार-नारं कर वैद्य बनावा मिया की अुनी मिया के चित्र संस्ता या होतर यियी वी इसी दिवासर विव देता मीठा मीठा गण करना, कश्वा-कहना वृ काला मुह में और पेट में और होता मुह से तुलकी रक्तकर बाल करता मुद्र माराम बंगम में भूगी होता. सुहस चीना कृष्ण व कहना मृत्यू की द्वापर लिए वर बंदराना २०-गण वे चुमक बच्च इतना रम्बी अस जाने पर की क्या क्या रहता राई का पहान और पहान का राई करना रानी रा कठकर अपना एतिवास केना



एक सी बठहरूर

कई के बादम की नगर उस जाना रीज हमा सोरता, राख पारी गोना भीता बन्धते जनस्य यहे प्रदेश मुज्या की जनों से बार कर निवास देना क्टर हाफी भी मो माम कर होना लाभ के लोध में मून भी लंबाना लेता एक व रेता से मो हही लाव रही वाभी वाल होना मोब-लाब की मोई उतार फेक्स र्शवक की बाजुरी का मुख करना विरष्ट का बजान हुए होना रीय के भागे भेद सेमा शोर की भार में हरना जानना तीर बकरी का एक बाट वाली बीना मोला ही नदी उसकता शब बान शहत परेशी होना सहक्त मंह से भी क्वेंग न कर पाना मान के विभ में तुरव शालक मान के मृह की सत्वर होना मांग के यह न वांग्रको जानमा भाष विकल कानेकर नकीर नीरनः वामें की गई का उने पर बदना भाग जनम य भी नहीं मान र बाबा को मात्री देश महत्त बार जी स्पीहार होता सीयन की प्रापेकी काली विज्ञ जाता पिंह को पुस पर हाव केरना मिह के मृह या त क्यी देवा मिह के बुद में जिए देश

निर वाही पेर पहिया करना सिर पर एक बाल भी म बचना बिर वर मुमीबलों का टोकमा पटक देश बिर पर क्षिपी का विदान तानक निरं पर यक्तनता का मुक्ट बहुधा मीप बटाकर बधड़ा में मिलना मुख का हिरोगा भूका: मन की नीद बोना नुपाकर निवते राह निवा काना नुई के नाके ने बाबी निकलना मुख्ये काम से शामी कामा नुष्य के मध्यक्ष सुगत्। बोल्य हुने बाढ़ का बहाबा रक्तना नो कसाई का एक कमाई भी बात की एक बात नी नुनार के बराबर एक ओहार की करना स्थत के प्रथ पर पैर देश। हम का मान और हारा किया काना हुंग बनाते-बनाते कोचा बना बना हरपा का टीकर वाचे पर हीतर हरदी कर मा एक देव ही अपना हर्वे फिर्टक्वी के बिना रह कीना होता. हाँ भगे न फिरकिशे इस्दी हो इसी गांड होना हाड़ी के बावल का बना होना हार म दिया होने क्य में गिरना हाभी के कार्य क्रेंच होता र्रा का रोजगार करने के बाद कांच देवता होनहार पेष से पल हो हाता



कड़ सी उत्पानी

विविध मुदाबर

(प्यन्यात्मक, इंग्रज, अस्थाद शब्द या अर्थ तथा संदिग्ध प्रयोग)

अधंदा कुन 解聚學-改學家 सदशय-४च्यू घटवास-बटवान नेकर पहला धन्तरके तजरके कर्ष माप-वश्य min-min munt श्राय-वाय-वाय प्रदा देश। बाराध गानाम के कुठाबे विज्ञान भाग-बच्ना होना काकत का बंदकाना इले-पिले बक्ता उद्गमार्थ बलाना वा होना उदम थू होता स्थल-पूजले सपरकट्टू बात उसटी-पुलटी बाव अनमी हुन करना अनम्बद्ध बक्ता ग्रक ही वाक क्षेत्र गरे नरण और भीने-पनि करना धीने-मौने बेचना कंपाल-डिरे होना धनपुरक्षियां केना कक आयां कटि का होता

काय-हाथ कामा कानाटरी देवर मुनता बानायुक्ती दश्या कारिया तन करना दिवस्थि पुरुषा अवायव परा होगा क्षाक्ष व्यक्तः कटघट होना कामस्योगः होता कालिर क्या रहना बारी बरता बाना बराट क्रेस्स क्षेत्र कोष कर विवयः भएका सामा मध्ये में शामना बरमर बुनना बद्ध-बद्द करता क्या देगा बनचीर करना विवे-विव मूद-वेटाच होना कुनवरावा होना मुलक्ट उदाना बोजनटोल बाव बरव्यहू बधाना वी करना बी-बच्च कामा



एक मी घरमी

भी दोलना म भारतह कुतक न करना 直布提引 电74丁 हराहर का समृत्य कु जाना द्वसदा दुना femifiger giet होन्सी करना 📰 अनग होना इमीन धानवान के कुमाई विज्ञाना बार क्षा यानू बहाता दिन कम बैटाए बैटना भी होट में हाता mount man ऋषि ऋषि होता फोल की बाव प्रोप में पाना स्टीद होना हती समन्द इस्ते होता. दस में यम न होगा टाव-रांच सवाना रिट-पिर करना टिए निक्रम जाना टीप टाप होना हुकुर हुकुर शासना हृतपु विद्या होना द्वेन्द्र करमह de iger at giet रुका प्रा

होजा दिवसन संग्रहा इट समुकी होबदान वे हो पान दुनो क्षमा करना नार कृतार होता. निही धुन प्राना न्द्री-व-नुबी अधाव देता नुगर्ग यह तृ नुवार करता तु तुवाय होन्द सीवा विकास प्रवास प्रमुखन विकतिन होना थुरी-युक्ते करना या होना होन विभिन्नान पट्टी य निकलना दोना-किलकिस होता हुर-दुर काना इर-दर मारी होता क्षेत्रस्यी बान ध्याकोवशी स्वाना धमायोगनी होता बाद मारका रोता योगा बीगी करना धीन-पापा हानह नसम्बारी केना नवनकी बजवा देवा नकृषा करता বৰু বৰ नाक कीक होता। यह यात्रक द्वीता पिदी बोन करता

ग्रक सौ मध्यायी

फ़फ़क-लक्क कर केन। क्रफंड्ना फिददा पुर फिनिर-फिनिए बसना फिनिर फिसिर होना फुटानी निक्स जान। फान फारन षण कुरमागनाः सवद्द भ पन्त बगनम मधना बयमस् यमध्य बद म बारह-बार करना —होना मुक्ता काई कर ग्रेता क्ष सारगा बेजो करता बोमी-ठामी भक्तभहिष्यः ध्यक्ति क्षत कार प्रमुख करती मलियापेट कर देशा महतामच मनाना मिनमित करना बुह पाट होक पहता रक्ष्यकार होता

रेट्ट प्रावक्त नेवा मगाना सन्पर् जना सरवट होना संबद्ध था था सम्बद्ध रवद-प्रान्ध द्वांना सन्तः शतना दश न पतना मध्यो प्राप्त करता नमस्य सम्बद्ध नुन्तु क्षेत्रका क्षात्र-मध्य बात करना सिंदरी तस होना teeरो विरही बु**ध हो**आ विष्ठी घूमना विषय जिल्ला बी बागा मो यो मरहका हरका-अस्ता रह गरना हरदा-बंदरा हरतार होता. हान्हा करता हा हा हो ही करता हर हो जाना हुएँ क्षीमनर हर्स उद्यान्ध

046 O.P — 185

राह पाता



ध्या या बदासं

क्षायुक्त मुहावर्ग के कुछ इंप्टॉन

क्ष्म ट्रन्स अस नाइना प्रवाहाः तन्त्रः शहरत पर प्रस्ता अकृत्य अस्मत्रः श्रमुडी का समीका होता समूर धरदा बीगर **प्रथम** नहर हमा अवस्य प्रवासीना काना जन समय होत्य **सर्वादयो कतव्**सता इतरव होना श्रामाण काता इदर की अध्य मृतना क्षेत्रकार करता संबंधार का वन द्यभा प्राप्तमा **समा**न्दरणः लगै सरकार सचे की अधा कहता बंधे को बिराम दिवाना धने की दी जांस सर्थ बहुर का गरेश समय-दगरी क्षेत्रक प्रक अपने में इसर फेटना बचेदे में सामा इंटोनमा

ब्रह्मर हा गय व्हान्त्र) इस्तान पहना श्रमम् वर अवार्गतीनाः ध्यम का रीकाना निकासना श्राप्तक का पूरा अक्त के पीछ करते जिए चित्रनी men दिश्वात गणका मगर-मगर-करनर प्राण्टि वर्गाहर श्रीवादी का बंदवां अंग्यामप्रमम् विद्यासः सम्बन्धन ३६ वरता अपना गाँव गाना क्षरका पेमा ओटा होता. प्रपने दहीं को सरका न कहता घरने गरते पर हुए में कार्ट होता. संब-सब नगना मधाकी कदम अध्यत कृत्वाः अञ्चलकार में दुस्पत होता आम गड़ी होना बाम जोनका देवना याम रहाना बाक बीबना 지막 혹 भाभ में जुन उत्तर प्राता पार्व नाम होना



ंड की विरामी

शामी के बाते हैं परश हुट शाना शांको में न ठहरता आकाम-सुमुख होना पाराम बदरा भाकाध रह प्रदेश बाग पर छोटना मरगनात्री वर देर भाग-पून का बैद मान प्रका भाग प्रदेशका बाध-रक होना माबी जवान भी न कहना धाय-धाम की पत्रना भग्यह्या विश्वता आयोज देवतर बाममान वर व्यक्ता इति श्री करना इतिहास के काने पत्ने इयर-वमर की बात करता ईट का चार दैवान विशेषमध र्द्राप्त क्षेत्रका य गर्नी करनर इ क्सी प्रकार इयली रक्तना इन्ही बोल जाना उठमपु का बुल्ही समाक पूरा इल्पेस-बीस का फर्क

इसट-केर की बात करना

हरण बान बरेका से प्रामा र के बादश इन्मी पाय करना रेक्ट्रा समा अला ह सार्चक्र देश उपर बरना त्रवास में की पानवा इसमी लग कृत्व बरना या बराना गढ पन की दो दाना गय गय स्थारह होना रण्ड की दय मुनाबर ern ein fi mit egen. कर राज्य दक्षता एक प्रमान व काले वाले गांद देश हैं: एक हो चराकु पर सीमना क्षेत्र हेना कक्ष हैं। साना इच्छा विदासका काषीकी काटना करणा कारता कक्का विरमा क्रमानी वहरूकी कर पर नवक प्रिक्कना **बन-हरवती** बद्धा-बरवा प् कड़ी कर उवाल **इन्स्की** स्वात्र। क्ष्मन प्रश्न कर रह बडा होता



इक भी चौरायी

इंड मोज्ला कल-पूर्ण होना होना क्त्र म बावरीय समाना ब्रावेचर का तुम श्रीना क्रमोडी पर पूरा उनानां काला दूर होता. कृश्यक रणना काद भीत होता. बाम बंद होता बाम बहुत्ता कार्याः स्टब्स् का सम्बद्ध कावनासरी कामा अस्ती । €शिम कार्ट पे इस्तत कुरुक संग्टेनी केंग्री करमा केंगी बनाना क्षेत्रम् सरेगीः कोठी करमा कोठी बणना सकते व साप बहाई म हानदा **ब**र्ट-मोटे दिन बहा स्वया मही दोपहर ब्याल से उत्तरना वयानी दुनिपा कामा हुत्स

का-पका इस्सन्ध

लाई व निरंति कर सहके में विश्वा मात्र टोन् माना व वचनी क्षांकर दोन घोट दिखान के भीट मान्द्री वसकी द्वारकार सिक्डी करना हरित कर पानी पीना भवती उट्टा মূৰা ভথিবলৰ ख्य प्राप्तार बर बंधी पाप सुनन्धानी एक करना संग प्रान्त लगी मानी जाना मोश करता लोगको काली करता क्षेत्रका समाना ब्याय में भी नहीं। तामा करना वयान्याध होना नहीं की बाद बनाना नव्यसमधी होता करमी उन ह्यानी रत ये उपेळवा क्षा चरकता वना अमना शके ये बाम होना गोधी अनुना बाता में सावर वादर-मुनी समझता



एक जी प्रवासी

विनती के भुक-शोकर होना गृष-गोइका होना गुन्दा साम पर रहता गूर्ग-बहरे का वंदेश गुलक का भूल कृष्ट में धीना देवा. पर का सम्बद्ध नापनी वर-इम्राह गर-फुर सीका विम-पिट योगा के मामा पीट कर की अलग चौद पर पुरुता बाद पर घुल शासना चादी क जूने स मारना वांदी की मार बार के कंधा पर सदने के दिन बार पर के और। प्रिकृत पत्रे पर पंत्री परना विद्रा लहाता. षित्रही भा काना बिहिया फमान। विक्ल-पा मचना बृहियां उदी करना भून हिला देना बक काटना धीका-जनन भरता स्ट जाना

047

P Q-185

द्वास कुर कर दीना। द्वाती तान कर कमना रबार प्रमान्य न होना अवसद होना बहर की पृतिया बहरे तांच मधाय वहां अना सार मुख्याः जिन्हांने पहाज होना विश्वासी क्षेत्रम श्रीवन के साल पहला कुना सहन्। या पर्याना मुश्रास दश्य प्रदेश मार्च करा जाना म्ह के पून वापना दकर या सुद्र लेकर रहा दानर इके सर विश्वता रपंच पदना दुश हायी। न्धारेश्वर वह जाता इंद्रे भाग गाना हरामगानी नैया इब्ले को निजक का नहास इडोको खोट शासना रयोग शब होना तकदीर मो जाना वयोदी पिट हाना केली का यूद्र कीम देना वस्याः दिस होना द्वाध-मध्य दुव का बाद होता



तक भी खिशाओं

मृत का हायी भून फाड कर जनत ही जरना महबर तक के नाकका गोहा गाई को देखका हजामत बहना मादी प्रवस्त नावी पर दना नाम बीना माह पर वानी फिरना नाम नगाना नाय-तुगार्थः निवाह दकराना निधानक है केर में प्राची निरम्भर प्रहराचार्य बीव हिंग जाना मील का डीका लगाना पर्याः उत्त जानाः मन की बहुतर पानी की तमह बनावा पानी की मधीर वानी प्रथमा पामभाग में बाहर होता पाना कमजोर होता बदर के हाथ में बाईवा होता बानार विरवा बाजार बहुन। बाबार बोला होना बाट का रोहर बाद उन्दरना बात प्रकार

बान तीन न गिरत देश कान प्रकार होता. दान ६ रना - यनाना बामी मह बिह्नम प्रशासन बुद्धि पर पन्चर पहला इवस्त हो एह्नाई बजात भरतर करना क्षर सृह की साना भाग्यती हा प्रशास भीच्य प्रतिका करना মৃশ দীরের यन होरना महती में बाटा वीसा होना नामका पराजा बाध्या कार्य मीडो श्रीच बोडी सुरी शील का प्रश्वक भीरताकर होता मुद्र बहुना पुर-पृष्या मृद परना भैदान म बूद पत्रन। वैशान में इंद्रण्या रकम स्वता गह का निवासी तका में विभीषण होता ठेहर चढ्ना माठी बनना, — बताना



रक सो सतामी

त्रिय की पुरिचा विष बोलना मन्त्र बाग नजर प्रात्त समय सद जाता मदी बाना सिहासन होलका सिर के बाल इड़ जाना शिर पर अन चढ्या विर रगवा बिर से कंतन बापना सुबह शास करता सभ्यं का भर मिट्टी होता सीनं का देश स्वर देवा स्वट लगांना हरिया पद्ना हर्शी ट्रा हर्दी तीवना ्षियार उठाना

ह्ले श्व

हु-डा बाबका हवा का उस देखकर पीठ देख हा मीन्हां की करना इप्रतिमें दवान। हार करता. प्रापः व दर प्रदेशः हाम ६ पान हाम के बाहर हाय को हाब न मुक्तन इस्य गर्माना रिय भूडा प्रजन इप्य व विद्यान होना हाम रगना हाम नगे हियाद गमना हुपका जल्ला हे हैं करना होटो पर नाना हरे-ह=ला कंटना



संकत-तालिका

	संवित	पुरा विखन्मा	क्त्रम्य संस्करण वर्ष चित्रभ्य द्वपृथ्य
t	चगरेक -हब्दर्गहरू	समोक के कुल—हामग्रेवकार दिवंदी माला काहित्य बदम, दिव्यी १९४८	चनुर्चे १६५५
3	अत्रय०—देव०	संस्था की सामगी-स्थान देवगान गामगाम गुड संस्था दिस्ती १८६४	त्रमन १८६०
5	धनीतमहादवी	सतीत के पत्त विष-महादयी वर्णा भारती कराद, प्रयोग १८४१	सहर २-१३वि-
Ł	चना ∘—निराना	धनामिशवृद्धान विषाही निरामा वस्त्री भनार, प्रशास १६३७	हिमीय २००५(व०
ч	चपनी सवर—उप	अपनी सकरवारंग केवन गर्मा उक्त राजकमन प्रकासन, विस्ती १८६०	काम ११६०
¢	भुन्त्रवरराठ सेव	सम्बद्धानीपश्चिम वेतीपुरी वेतीपुरी प्रकाशन, पटना-द	मधीर्वित नवीन संस्करण ११५५
٥	tuio (dio	प्रमा, उनका काम्य तथा राजी केलकी की बहाती क्ला का मत्मा का । क्लाकात् एकमाना कार्याभव, काली १८८५विक	प्रथम १८८५ विकः नेतास द्याः । नंपादक-नेत्रासम्बद्धाः
4	ए स्टार-भग वर्गा	इ स्टाअसेट-अमबनीचान्त वर्गा भारती अंतरर, जमान हर ३६	चनुर्वे २००६वि०
Ł	इंग्लं •—मोधा	दश्यमामा—योगा नकसेदी दिवारी, बुक्तान, भाष्टानाद	रथनाकाम गीलवृत
ţo	स्थान -प्रमाद	संकासव्यवस्थार प्रसाद भारती भडार, प्रयति १८२१	बाटम २०११मि०
Ħ	क्रहंड ⊶दें≎ स॰	करुपुतली—देशेन्द्र करणायी एतिया प्रकासन, नघी विस्त्री, १९६४	प्रवत् ११५४
ŧ₹	कत्व—चारती	कर्माध्या	प्रथम १९६६
naa			

048

P O-485

एक ही बान

	संबंध	वृशा विवरण अन	नृत संस्करण एवं विशय द्वण्या
14	सबीरइ० स० दि०	क्कोर-स्त्रानीय गढ दिवेदी	पंत्रम (११५)
, ,		दिशी ग्रंग प्रसाद जिल्, मध्य है १९१८मिन	
110	च≉ ग्रंपा≉—कारेर	इसीर इधावनी — वर्गार	्यतम् २०० वितः मानी सहद
		ाशासी बचारियों समा. कामी १२८० वि	 ०व २वेनी संगटक दय ममृत्देश
			इ.स. र पना र स्टब्स्य प्रतित्रसूर
24	कार -प्रेमकर	वर्तप्रति—यनवर	प्रवस १६६७
		हुव प्रकारत, प्रथम १९३२	
tt	इलाव-पंत	कता और वृक्षा चारमृत्रियान्यन पत	प्रथम १५४६
		राजरमण प्रयासन, दिल्ली १९४६	
10	等可+—	क्या का प्रत्यार-पार्वेग वेचन कर्या हरू	237 FMB
		बारवासम्बद्धाः सम्बद्धाः इतस्य	
10	करवासी जैनेह	कलानीविरेश कृमार	वृतीय १९६९
		friet au rente untfen, utaften.	
13	करिक-नुमनी	वर्षिकामनी १० व्हेट्स	पहत्वारमध्यविक् रचनाः
		नीता प्रेयः बोरवपुर	काल-भारतम्बर
Sin	क र अनेगविद	विविद्य परमाचर—नेनापति	चतुर्व ११४१: च्यानाकाम-
		्हिन्दी परिचर, विश्वविद्यालय, बदाग (६३६	र्राहित्वम
3.6	कारमा	कामना वस्ताकर प्रमाद	पसूर्व २००४ विक
		मारती महत्त्व, प्रमान १९८४ विक	
33	कुम वर्ष कुर स्वयति 💎	दुष-पद्भगान पुत्रामास कथी	व्याप ११४७
		प्रविचन बेन, बनाहाबझ्य १९४७	
Sį	कृष•≔विस्तरतन	कुंचारिया—श व निरमर दास	रचनस्कान—रीतियुन
38	नुषपिनगर	कुकरोगदिनकर	ann teen fie
		चार शिन्हाः २०४६ विक	
24	कुम्मी०	रूप्ती भार-पूचकान विशास निवास	हिनीय २००४ विक
		गंगापुरमंक माला, संसमक १८३६	
54	केशम० (१)—केशम	केशन प्रत्यावकी काम (केशन टाम	प्रमय १८५५, रचनामान-
		जिल्हामानी वंशवयी । वसरप्रदेश,	वरितयुग
		उनहांबाद १६५४	

एक सी दशकाब

	मंदन	पुराविकास प्रस	दुन संस्करण गर्च विशेष हु एक
२७	केशक (३) — हत्रप	कारत बन्धावसी, बात २—केलब टाव	व्यवसः ११५५ - व्यवसः ११५५
		हिन्दुरहाती ऐबदमी, अनर प्रदेश	444 (644
		इसाहाबाद १६७५	
92	रणरब	मेगा का बटा-पांदेव बेंकन सर्मा उस	
			444 5750
9.6	ण्डन द्वसनद	्र स्वक्य बर्स, बायुरी सामार, पृथीर १९४० स्वयवेदका	
7 %			वर्णमा गरी
3.	ntera	तंत्र प्रकारत इत हातार देशक	
30	गोगारन्यूनगर	गीतावणी— तृषकीदाव	रचनाकाम—शक्तिवृतः पर
		नीनामण, बोरवापुर	मध्या सी नई है
2.5	मु० निब—योश सुरु मुरु	स्य निदर्शनम्भी । शशहून र नृष्य	प्रयम - ००३ विकः, सन् १८९०
		गुप्त-स्मारक प्रत्य प्रकृषान समिति	न १९७५ तम की प्रथमान
		्रवंक, हरियन गंड, बनवत्ता २००७ विक	मंप्रदीत
3.5	सुधेरी ०(१)— सुकेरी	्यृत्रेरी यन्त्र सरहवंड्रवह शर्या गुरेशी	प्रथम २०००मि०, जीवक
		्नावसी प्रकारियों सभा अस्ता उनकारिक	नाम-सम्बद्धाः । १९२२
33	गुरुवहार गुलरी	गमित्री को धमर कहानिया-व्याधन गय	िनुनीय १८४४
		वृत्रेरी, तरस्वती शेव, वकारक	
24	योदामप्रेमचद	गीराववेक्पर	नारहर्षा १९६४
		सरावती येन, बनारन १८३६	
äu	गोलीचनुरः	बोबी क्टूर हेन धाम्यी	इयम-सन का उल्लेख नहीं
		राजहंस प्रवासन, दिल्ली, उत्पेस गरी	
15	धन्त कविलधनाः	भगाग व कवित्तवमानंद	ध्यम २००० दि०, मेराइक
**	444 44411	7-11-12	विश्वनायप्रसाद विश्व, त्वनाकान
			रीनियम
ā is	चक⊭ दिनकर	धकतानरामवारी निष्कृ दिनकर	मयम ११५६, स्व-सद्यासत्
1.	444	वृद्या बस्, पटना १८५६	रेणुका, हुकार, रसवली इ.इ.
			यीत नामकती कुरुरोष, कार्
			बुपद्माह, बुर और धुमा, रहिम
			गरी तीम के पतं दिल्ली एवं
			शेकहुतुम रचनाधी से सर्गतत
			21.2.2.2.



गक सी वानव

	संकेत	पूरा विश्वरण	प्रस्तृत संस्कारण एवं विद्याप दुएउप
36	मतरी 🚁 विकास,		हिनीय १९४०
		किसाब महान, इत्याहाबाद १६४५	
48	्षिता∗ (३)—स्वस	विकासीत भाग १—रायवड जुनम	सम्प्रेम ग्रहा
		इ दियब वंब, इलाहाबाद है हो है	
60	- विष≠ बग± वर्ग	विष्येषावनप्रतीयरसः दर्गा	सोमहबा २०१६ विक
		भारती महार, हमाहारार १६३४	
1,4	শিষ্ঠ শীলিক	क्षिपाला विकासनगढ कर्मा सीक्षिक	नुसीय २००१ वि०
		गगलुन्तक शाला, मध्यतक 💢 १९२४	
(k_{λ})	मुधनेत इतियोग	्यू भते-चीपदे —अयोध्यानिक स्वा० हरियोध	प्रथम ११२४
		- दिन्दी वाहित्य कुटीर, क्यारव - १६२४	
AF	चेतन धाक	पेरानव्यंन्डनाच अध्य	प्रथम १९४२
		ामक, ४, बुमरी वाग इमाहाबाद १४५२	
A.c.	कोल - हाँ स्प्रीध	भोल भीतर अवश्या मित्र देवा । हरिग्रीय	नवीन सम्बन्धा २००८ विक
		विश्वी सर्वारम कृतीय, बनारम (१३४)	
43	योगे ३ — निरामा	बांटी की प्रवास- मृद्धकाल विवादी निरामा	र्वहर्माण ११४७
		वितास गहम, समाहाबाच १९४६	
¥£	मगनगर्भाकर	वर्षानीरव्ह्याकर	डिनीन ५०१६ विक, सम्यासकः
		बागी विकास बाह्यसम्ब बायस्वामी १८६५वि	 विकासकायान्य मिथा स्थानातः
			रीतिवृत
N/A	मय = गृप्त	सम्दर्भ नव — में विश्वीतारका मृत्य	उननामिसका २०११ हिरू
		शाहित्य-बरन, विरयाच आसी १९१०	
¥Z	नेपव वैतंष्ट	मयवर्षन-केल्स कुमार	क्रमेण गारि
A\$	चदान०—द० कोसी	नदान का नहींत्रमाणा बोधी	जनम १९५५
		राजक्षण प्रकाशन, विस्त्री । १८४५	
XP.	ब्राम् ० —- प्रशंदरम्	सारकार्य-व्यवस्था	244 TAM
		विष्यव प्रकारमः १९४७	444 1464
33	সালীত বুভ বৰ্মা	भागी की राजीवृ राक्त साम वर्गा	
		नवुर प्रकाशन, भागी १०४६	वसम्बद्धाः

लग और नियानद

		संक्रम	पूर्व विद्यास प्राप्तन	संस्काण गर्व विशेष पूर्ण्य
	44	म्ठा०(१)वधपान	शुध-मन मान हे—स्वतात	भवम १९५८
			विष्णय प्रकामय, कालक ११५८	
	43	भर । व्यक्ताव	मृद्ध-स्य भाष २ -वश्याव	THE TOLK
			नियम कार्यावय, वधनक १८६०	
	3.6	वासुरक कताकुर	टाकुर शतक—हरकुर	६१०४; वरादक-कामीबनाव ,
			नारत जीवन ऐस	रचना पामगीन वृत
	8.8	देहर-इन्सिध	केंद्र हिम्दी का कार	नृतन वर्जीचत प्रथम सस्मरात
			संयोध्यानिङ्ग इसाव ज्ञानिकीय	प्रश्रह विक
			हिन्दी बाहित्व बृटीर, बनारक १८६६ 💎	
	16	जित्रको — प्रसाद	निवर्ग-सम्प्रका प्रवाद	भारता २०३५वि०
			मारती मनाव, प्रवास 🕂 🕡	
	8.5	स्माम ववैनेन्द्र	रवानपत्र—शैनेन्द्र कुमार	वातवा १६५५
			हिन्दी प्रशासर कार मिर, सम्बद्धि हुन्। ५	
		दूषर-देव सः	दूषनाम् रेवेन्द्र वस्वाची	BAR EEKS
			राजनमरू प्रशासन ११५८	
	4.8	रेथकी/रोश रोश	देनकी का बेटारागेड राषय	हितीय ११५६
			निनोब पुरतक परिवर, श्राप्तरा ११५४	
	50	थोहा <i>व</i> नुकसी	शेहावनी नुसर्याक्ष	्रत्यम् <i>रदाश्य</i> विक्रारम्भाकासः
			ची सदयुक शरीर जोमाबार समोधकारी 👚	मान्त्रयुक्तः राज्य संस्था दी गई है
	53	भरती०पिश् ॥०	्यरती तक भी पूर्व रही है—विष्यु प्रभावतः	वयम १६५३
			राजपान एवं नन्, रिन्नी (११६)	
	4.2	भूमक उक्त भद्र	वस्तिकावदवशंकर भट्ट	क्षण १९४६
			नीनम बुक दियो, दिम्मी ११४१	
1	41	ध्यव प्रसाव	भूगवानिनी-अवगवर प्रसाद	क्यह्मा २०१६ वि०
	**		भारती भंडार, इमाहाबाद १९९० विक	
			नश्रदाम व्याचनीनदराम	दुसरा २०१४विक सम्पादक
	4Y	सद्द संबाध नद०	नद्दराव प्रधायना—नदरान नामरी प्रचारिको स्थाः काकी २००६ विक	
			Minist Malitared alone derter Angel rate	
				पुर

049

OP 185

क्षत्र सी चौरतस्य

	मंकेल	कुरा चिवरण	वस्त्रुत संस्थाण एवं विद्याप दृष्ट्यः
14	सरीव—अजं व	नहीं के होच	वृतीय १६६०
- 1		अधिकदानंद होरातंद बालवायन अजे व	
		सरस्याती प्रमः, शास्त्राचमी	
61	नियंगः प्रमेशद	निर्मेशा - धमनद	支担取 (3)(3)
•		हम प्रकाशन, दमाहाबाँदे 💮 १६२८	
t o	নিহিলবিভ মূচ	विविद्याल-विष्यु प्रशासर	प्रचम १८५६
		क्रमकाराम एक गरा. फिली - १६५६	
4	स्ट०भवत	वृत्रपद्याःवृत्रप्रकातिहः अस्त	कारहवा संस्करम्
	,	नुक्शान ग्रंड बढने आजनगढ १९३५	
(v	भवत गल	वन्नवर्ति । स्थित । रागा गाउ	इब स्थित्रका एउन्सान्ति ।
		माहिन्य मुदय, विश्वास, आसी १६२५	
30	गद्रु साम D	प्रदेशका अस्ति सहस्यद्वे स्थानी	प्रथम २०१ विक समाज्य
		कारिय हरता चित्रगातु जामी 🗓 🕆	वित वासुहेब करण चत्रवाल लंड
			एक चौपाई संस्था वी वर्ड है,
			र क्याकाल—अधियकाल
21	वटम् पर व—1तव अवस्र	पद्म प्रशास-पामित् समा	चवम ११८, विज
		भारतीयध्याली जिल्लाहरू १६८६ विक	
92	यदम् । के यह । यहम । तमी	प्रविश्व गयां ६ पत्र प्रदर्शयह ग्रमी	व्यवस्थात् स्थानस्य स्थानस्य
		क्राकारम्य ग्रह्मच । विस्ती ६ । १५५६ ।	दास चनुषदी हरियोक्ट समा
a ?	0वृष्यं सम्मादमान्त्रदे	वर्ताधरकपरमाकर	हितीय २०१५ विशः सम्पादक
		बारणे विकास बाह्यसम्ब बारणी १९६२वि	· विद्युनादयम् इ सिश्चः स्वनादान
			रीतिवृत
30	परसवैतेशः	परमवेरोप्ट कुमार	नगम १६६०
		हिन्दी प्रम रत्या लिक, बार्माक्ट	
		११२१ मा १९३०	
49	पानी । गण्	पंग्ली परिकासः क्षांसक्तर ताथ रेण	क्षम १९५७
		राजसम्बद्धाराजाः १९५५	
25	परिव विशेषा	परिमन - गूबकाल जिलाही जिल्ला	यस्य २००७ दि०
		रामादुस्तक वाका अञ्चलक १२३०	



त्य के अनुवन्न

	संकेत	पूरा विवस्त	प्रम्मृत संस्कात एवं चित्रप द्वपृष्य
9.3	गरीक्षा≉—थी∞ दाव	परोक्षा प र—यो निवास दान	दिलीय
		्यास्थाही रहमें गर्माविषेद्यत् बलकता १८८०	r fin-
	प∾क्ता पत	रंतेक अधिकासहस्यक	গ্ৰম ২০০৭ বিভ
		अस्तो भरार, प्रवास, १९७६	
	वै । रेयदत	पंतरी उपेन्ड्स्य अञ्च	धवन
		नीमाम प्रधासन, प्रधास	
а	ম গৌ /—মন্ধান্দি:	 वताय पीवृष जताय नाराक्ष्य विश्व 	
2.3	विषयः – शोरकीय	विक वर्ष च व्याप र्मन्त्र उत्तर हरियोष	arza - o to la o
		तिनी नातिस्य युटीर, बनारन 🗦 १६०४ 💎	
0	pasts—ms sta	्रेम सावर सम्बु नाम	दिनीय संस्करभ
		भागेय वृत्र रिपी, क्षेत्र, बनारव १८६७ 💎	
	चेमा≠—वेम यद	वेगाचरवगरद	प्रथमस्यामः १९१८-१९
		अस प्रकाशन, इस्तर्भक्तां १३५१	
11	<i>दल ० — नामा</i> ०	वस्त्रकम्।—नाशास्त्र	हिनीय १८५६
		किलाब परम्, बुणाराबाद १६५२	
29	ৰাসৰ স্তুত ঘণ জিল	-बर्गमप्रदेश की अध्यक्षण—हामारी प्रसाद द्विवर्द	t हितीय श्रेष्ट र ।
		िरन्ती वश रालाकर कार्यालय, कम्बई १८४६	
65	# 770 -R40	बाहर भीतर - राज रवराम	काणीवगद्रण हर् + ४
		राजकमन प्रकामन, कामीरपहर १२५४	
13	las vals - lapit	विकारी प्रत्याकर-विकारी मान	द्वितीय १९५५; मध्यादकः अधन्ताय
		युवकार कियाला बनारम ११-५	दास रम्बाहर - रचनाकास रीतिस्ता
			रोहर संस्था दी नई है
"	बद्ध अस्त्रम	इ.स. चीर शास्त्रकार हरमधाराम वश्यन	प्रवयः १९५८
66	diffe. dedail	राजपान एंड मंग, दिल्ली ११६८	
			प्रयम १८५६
1.5	मृतक सावनाव	बुद और समेह -असलसाथ नायर	717 1619
		क्तिया महत्त इसाहायाँ १६६६	forther a sa for
ξ×	बोज= हरिशीप	श्रीमदान अयोध्यश्रीम् उपार हरिश्रीम्	द्विनीय २०१३ विक
		हिन्दी शाहित्व कुटीर, बनारस	

ल्क सी विकास से

	संग्रह	वृत्र विद्युर्थण	क्रम्बुन संस्करण यस विशेष द्रप्रध्य
61	बीनेक प्रान्धाः	दीन और गाउल क्या असी अध्य	V14 (2)
		क्रिकेट कुलाव करिटर, पानका १९५७	
64	सहारदेश्यान	बहाप्यदेवेग्ड सध्याची	श्चमं १९५६
		तिवा प्रकारन नवी हिल्ली ११५६	
ξà	भूतर जिल्लाम बहु	भट्ट निवस्थवम् । बासर्थमः भट्ट	ध्वम् ५ ६ मिर
		तानके प्रवासिकी संधा, काशी २००४ विक	
8.4	भारतीयः सर्वस्य	भ्राप्तम् का मण्ड आराद्यं गावन	द्वित्रीय १६ ५
		विनोध कुम्मक बन्दिर, बातरा १६५४	
£2	West (1)	भागतम् प्रकारको पाण (अन्य १ १ १०३३)	प्रदय १०० विक संबंधित एव
	भागनम्	मधारी प्रवृतिका मधा काली । ०३ वि	मयाहन जनभन गर्छ, भारतः द्
			के १८ मारक वर्ष निर्धेष
25	His 441c(2)	अगरके द्रावस बनी भाग । जाराज द्रार्थी तथर	इ दिनाय २०१० वितः संगतन स्व
	अधनम्	तामरी पूजारियी सजा मार्गा रहा है नि	नक्ष्य देश अभागत द्वारा अध्य-
			तेरपु के ६९ काम्य प्रम्य एवं रुक्ट
			कवितार्ष
69	मान्यमात् (१ 🕳 🛚	अपनित् प्रेयाकली माग १ - भ तनाव हरियकन्द्र	प्रथम ००१० विक ग्रीसमान प्रम
	मीरतंत्रु	अन्यरः श्रेषारिको समी, वाली विकास विक	संपादन अञ्चरभा वास भारतेरवु
			के निवधी का निवह
€€.	থিকাত —ক্ষতিক	धिकारियोः विश्वप्रभागताय् रायो कोशिकः	
		रामा पुरतकारामा कार्याच्या, नाममळ १८२८	
£8	मुलेक अयन वसी	भारं विसरं वित्र । धनवनी बरस्य वर्षाः	प्रथम रहप्रह
		रायवनेन प्रथान, दिली ११५१	
ten	भूषमा प्रयोग भूषमा	अ्वरत पुरुवासारी प्रवृत्तः	यसम् २०१ अति ६, नीयादवः—विवर्ष
		Rieft ferein guttig wirft . + > fa.	नावक्रमाद किछा रजनार । या गिनियम
tet	भीर - मा - भावा	भीर कर नारावयदीय करत साथर	द्विनीय ११५०
	•	नीनाम प्रकारन, बनान १९४०	* 112.112.1
143	भे वा «—कुर		
1-4	m- alo-die	भवर वीत नार-नुरसाय	परपारक
			वाल

एक की सम्मानवे

	संदेत	प्रा विवरण	मन्त्र संस्काण वर्ष दिश्य द्रष्ट्य
- 集の音	मनि≂म्रक शनिराह	मेलिराम मुक्तरस्य स्थित्।स	प्रथम १६ ११, समादन हरदयान
		इंटियन प्रेन, प्रधान १९३९	बिंह, इक्सबाल-शिव्यव
200	মঘুত বছৰৰ	मध्याणा इत्या गाव वस्त्रन	तनीय १८३८
		नुषमा विकृत, इमाश्रमास १६३६	
808	मयं ० — हरि औष	मर्म ग्याः अवध्यतिक उपल्याय हरिकीत्	चयम १९४४
		राज्याम एवं तम, दिल्ली १६५४	
705	मा —कोशिक	मा - विद्यवस्थार काच प्रवर्ग कीरिक	वसम हेर्प र
		एसपुन्तक बाला, कमनक १८२१	
₹ 0.3	म + साक (१)	मामयी बाधव प्राय है - विकास शास बारवाकी	्रिक्षिय १९१ ^९
	कि बोस्यायी	बी मुद्रशंत प्रेस, बृद्धावत ११०१-१११०	
300	मा= मग्ठ (२)	माध्या माध्य धारा - विकास वाम नावारी	क्रिकिस्टर्
	क्रिक गोरस्थाकी	थी मुक्तन प्रम, वृदावन १६०६-१६१०	
tot	मान० (१)प्रथम	श्वमार्था भाग १प्रमुख	भारतको है। १६
		ge peine. reigiete	
110	साम (२)—संसर्वेद	म्यामगावरं मध्य प्रमण्ड	
		क्षरस्थाती प्राप्तः बन्तरमः १६३६	
111	मानः (३) - धेनचड	भावत्तराज्य भाग १ - प्रथमय	पाणमी १८५३
		हिन्दुभ्यानी वीवर्यसम् बा ३४	
tte	यान (८)श्रेमण्ड	वानक्रोबर मार्ग र-प्रमुख्य	मानमा १६५६
		सरस्थती चेन चनारच १९३६	
223	मानक (८) -पेमचर	बादसरोहर मध्य (८)— प्रमण्डे	(इ.मोच
		हम प्रकाशन, इलाहाबाद	
117	मृत्यः मृतकृत्योव	तृबुकनृषटाकृषारी वीहान	प्रकृष १६७०
1.		श्रीचाराम् नामम्, इसाहामाच १०३०	
P 8 to	মূবত ৰূপৰদা	मृतनवनी वृ दावनमाम नर्मा	मातवी १९५६
117	4.0 3	मयूर प्रकाशन, भारती १६५०	
105	23. nava	वेरे निवन्त्र-वीवन चौर भगत- जुमाव राव	प्रथम १९५५
(er	बेरेव गृजान	स्थापमार एक्ट लंब, यानक १९५५	
oso		addates do not as a first	
050			

Q-P -- 185

गर यो प्रश्नव

	संबंध	वृश विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष त्रृष्टका
t e	3 मैला∘ –रणु	र्मना ब्रांबलपानिवर नाय रेजू	प्रथम १८५८
		समना प्रकारणने पण्यो। १३४४	
- 11	′ ধুরা _• —নাকা	क्योकरः ।वैदिसंध्यसम् गुप्त	त्रमण १६८६ मिन
		ार्वाहरू वचन, विरमान, भागी १९८६ विक	
1.86	ये बोटेम व	 वे कोडेवानियां—संवृत्तमास नागर 	प्रथम १६६१
		राजकाम प्रयास १६६१	
110	रंग= (१)—बेमचर	रंगभूनि मार्ग १असमंद	बारहवां १६५५
		रांता पुरुष शासा, समानक १९२४	
156	रमः (२)—वयनंत	रंगपृथि भाग २देवशम्य	**
		रामा प्रथम मामा, मामगढ १६२४	
143	रहीय कविच-रहीर	र रहेम कवित्रकरी-धन्त्रम रहीम कानकाना	प्रथम १६२६ , रचनर— अवितकास:
		नवर किनोर हेन, समयक्क हर्द्द ।	 दोई, सोरठे, वर्ण्याविका चैव, भवनश्य्यक, वयर-गीभा वर्णन, शाम- काना कृत वर्षे, भेट कौनुकल् ब्लूट १६द
\$11	राषाः—व-सः	राजानान्त-नामनेरम सहाम	प्रथम १८१५
		इरियांत एवं वरू २०१, इरियनशेष	
		enent fets	
\$54	रामात्र मुन्।	रायाकृष्ट्य श्रंयायमी—राधाकृष्य दान	अभग १८३०; कविता केंब्र, शीवत-
	रोष्ट्राम	नागरी प्रवर्शनको समा १८३०	चरित एवं याथ शहरू
40%	रायक (अगल)	रामकरित साजम जुलसी हास	नवन २०१४ वि०; टीकाकार
	(मह (घर)	गीनाप्रम य)रसमृह	हत्यान प्रमाद पोट्टार। रचनाकाल
	(fe) (n) (n)		भक्तिमृत
	(३)—वुसमी		
t 95 :	रेशकीत — रामच्यमी	रेवाकी नार्ररामकृत्यस्य वर्षाः	पतुर्वे २००६ विक
		मान्त्री प्रवार, दुशालाबाद १६४१	
140	विकी विराह्मा	निनीमुपेशान्त विपाटी विशास	तृतीय २००६ विव
		गमा प्रेयामार अन्तद्व १२३३	And seed the

गवः जी रजनसङ्

	संकेत	पूरा चित्रस्थ	20-मृत संस्कारक वर्ष विशय द्वरू ख
198	वितयकतमागे	वितय पंत्रिकाः जनस्य क्षाम	मनदका २०१५ विक, रचनाकाल-
		धीना प्रम, भारतपुर	अधित्वत पट-गुरुक्त ही वर्द है
655	বিষ্ণ - এনী	विषयात हरिकृत्स प्रमो	949 1557
		भारमागम एवं संस, किसी १९४४	
140	व ० गठवृत्द	मृ ६-मनमई _{सम्बद्ध}	रयम १८२६ रथनाकाम-सिनिवृत
		दास प्रदर्भ गुम्मानार, सनारकारी १९२१ मार्ग	*
644	वंगेही० —हरिश्रीच	वेदेश बनवान अवस्थानिक त्याव हरिक्षीक	बनुवं २००७ विक
		हिनी वाहित्व कृटीच, बनारव १९३९	
्रहत्र	र्नेशासी०(१ ~ामपुर	॰ वैद्यामी की नवरवष् प्राय ह—बतुरमन जार्य	र नुसीय १९४९
		गारपा प्रकाशन, जाननपुर १९४९	•
2 44	ंदेशायी <i>०(३)—चनु</i> क्ष	त वैद्यानी की नगरवथ भाग बनुर नेम सारव	ति दिलीय १२५५
		पी स्पर द्रांदवा पाँकांतिमहात्रम्, कमनक १९४	rs .
237	मानददेव	यथर रशायनदेक	हितीय २००४ विका वच्यादक
		हिन्दी साहित्य बन्यनाम, प्रयास संबद् २०००	जननी नाच गिह मनोक,
			रचनाकाम — शेशियुव
13%	शंभर•(१)—समंग	रोबरएक मीरनी भाष १	वडा १८५८
		मुक्तिरामर होगानर बाल्यायन 'बजे व'	
		मरम्बती ब्रेस, बनारव - ११४१	
269	शंबर (२)अतंब	हेक्स-एक जीवनी बत्ध ३	
		संश्विदानंद द्वीरामनं नालनायन 'यहेन'	
		मरावती पेस, बनारत ११४४	
ęto.	संतरी ७ — गहुन	गनमी के बच्चगहुन शाक्त्यायन	बार्ड्य ११५५
		वितास बहुन, इसाहासार १६३६	
196	संबद्धमाः मञ्जाभ	सहस्र विश्व प्रत्यावणीगरंग विश्व	वयमे १८६०
		बिहार राष्ट्रवाचा परिचर, पटना १८६०	
\$35°	शकित तृप्त	माकतवेषिनोसस्य गुपा	दिलीय १६६२ विव
		साहित्य करन, चिरनांन, नानी १६३२	
78°	सा≖ सी०महा≉	माहित्य-सीकरमहाबीर प्रयाद दिवदी	न्दारह्य
	दिवेदी	ठक्क भारत बन्धानती, क्वान ११२१	

को की

	संकेत	पूरा विधरण	प्रस्तुत्र संस्करण वर्षे चित्रेल द्रप्रका
\$ 10	দাৰমুক আৰু সংগ	ट साहित्व मुघन बानहप्या मेर्ट	दिनीयत १८५४
		एस के॰ भट्ट, १४, काटन स्ट्रीट, कमकत्ता	
- f +2	िसिट्रा⊶-स∞ मिथ		प्रथम १९३४
1.73	Aura - France	भारती भगरे, स्थारण १६६४ अक्त को डीबी सूर्यणना विपाठी निरामा	प्रथम रवक्ष विव
4.4	शुक्रुलेक -निराणा	माली भंतर, हमाहाबाद ११४१	
tre	मु॰ मु॰ गुर्स्सन	कुरसंग-सुमनसुरमंग	प्रथम १६२६
ţnţ	मृतीतावैतेना	राज्याम एव जंस, विस्ती ११२१ तृतीहा-जैनन्द्र कुमार	का ११५८
		हिन्दी समाचर प्रान्त निक, वस्त्री १६३५	
tut	मुहाराज अवसात	मुहार के नृपुर अवृत्याम नागर राजकमन प्रकारन दिल्ली ११६०	व्यव ११८०
ęra.	मुक्तार -पुर	बुर-सागर मुरदान	विशेष १०३२ वि०, स्थलकाम
		नाहरी प्रवर्गरानी नामा काफी सबत् २००६	सन्तिकामः, सरपादक-सद्दूषारे
			नानपेदी; पर संस्वा दी गई है
\$10	मेवा=त्रेमचंद	वेश शरर-प्रेयपद	
		हम प्रकाशन, बनाहाबाद १६११	
fat.	प्तो≉—कण्यन	सोपान- प्रवास राम क्ष्मन	मेवम २०१०विठ, स्वसकतिन
		भारती भवार, इत्तरहाबाद २०१०	प्रश्रीयक रचनाए प्रधुधाला, यथु- वर्त्वा, नवुकतव, निया निमनन दकाद संगीत, साकुत संतर, सत-
			रविनी, अंधात का कारत, बुळाहरू,
			सूत्र की जाना साथी के जून, सिवन वासिनी है
the.	मी-नव्यक	मीटवीयामकवजनवन पहाय	क्रियोग १६१०
		श्रक्तांव हेन, परशा १११०	
191	स्कंदे	न्वंदगुष्त अयसंकर प्रमात	हिनोय १६६ - चित
		भारती मंबार, बमारत १९८५ विक	



संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग

हिन्दी-मुहावरे

·अ

भक देना,—शरना,—लगरना

अभिनंत करनर । प्रयोग—सक्त यहे सरि चेरिया मन म नाही भीर। को स्वीर ने स्वृतिर्ध बच्चन दीप सरीर (६० इंशाव -कवंत, १६), तम अंकन दे पोश पिला पद**ः--जायसो. ५३**००), नुरशन पर्यु गर विजिह्नरवित कारी अक्रम महिया सुर 810-मुर ३२३५ तेषि प्रतिक्षकराजनम् भागाः ,समे अ'—नुमस्य **५५५) मंद तही मरि अंक लक्ता भरि हीय त** बोली वृ बोल सबीने (केंसक०(१,—क्सर, ४७८ ए. दर्र रमी अञ्च कर स्पीत वृदेश सर्थवन के दून रागे जार्चे निगम हुई भोतन की घरिये निज अस क्यम भ लावे । तामक-पदमानम, १२), - मरि धक निवक हवे भेटन की अभिभाष अनेक करी सुनिया (8-10 कविता)---धनाठ १९६_{८ :} साको मू मन कोमि चक प्रति बन्द नगरहै कुरक्ष--गिरधादास, २४% हात एक केर सी अस्तर अन म लगा जाची (भाव राष्ट्राव १ --मारतेन्द्र, ४५%) मदि जक मदि केहि क्यम सब जाउ हिए करि (राताक ग्रेक्षा०—राधाक दास, ६२६), अवसं त त्व सफारी भागे साथी हो। शृक्यकि को कस दुवस करते साथी हो (कारक--दिनक्ट, २७५

अक भरना दे० शक हेना

शक लगाना दे० अक देना

शक लेगा

- (१) अरंग्यमम् काना (प्रयोगः—द्रियां निरम्नति येथे मिन्दे कम हरि अन नए इहि अन अपि यक्ष नीन्ती मृत्याऽ—सुरं, २६०३
- (२) बीर क नेशा। प्रयोगः । यश्य प्रये मुख्यो वह जनति। प्रति अपाति ।अलि० सक्क-अलिराम, दश्यो

अक्षार अस्ता

- (१) वाश्वित्तन करमा (वयोग—वरनम ही अंक्टारि आत वरि, काहुमी अपनी सम नार्न (सू० सा०—सूर, २०५१ उद्यान २०) व्यान करना काहा कि गति को अकवार अर उद्यान समस्क, हो नकनो ने और नई प्रेस्ट साठ—सठ १९०, २५०
- (२) गोद सं बच्चा नेता

श्रकुर जसेती

प्राप्तम होता । अमीम न्यस भागता सेन हृदय म उपी दिन प्राप्तित हुई जब बहा जाने के चीचे दिन बाद मैंने आंख कोचो (१९०० ११) सोमसंद, १५५

प्रकृति देगा, - रक्तार

(१) नियमल रमना । प्रयोग — मैं महा सन मारि रे, यहही मार्च परि । जबही बालै मीडि दै, अनुम दे र परि (कर प्रकार—कटीर, देश)। बहुत दिनों में मानामाएं ने करवार के सम्बंध वह मुख्यक बन्धा का कि निवरती भाव में बाना बनाया जाये। जिससे माध्यमी के इस छोड़ पर सहस्र ही अनुस्त रमा जा सक अक्कुर--देश सह, रस्य (४) दनान वासना ।



अक्षा शहला या होना

अकुश राज्या देव प्रकृता देवा

क्षकुत्रा रहना या होना

सरा-अंत धिल जाना

संग-भंग में प्रायमता उपकर्ता । प्रयोग —व्ह वनाधाकं भी स्थितन वाहनी थी कि यथा उसे भोदी न नगमं. लेकिन एक-एक अमृजिया ग्रामा वा (पंतन-अंगवट, ६०)

शंस-अंग द्वीला दी जानर

आयम्म वक्ष भारतः , प्रयोग-स्मान् क्ले अवस्य । स्रवीने । इनस्पर्णन एवं अथ धन दीने सुरु सारु-सूर, ३२६४

धंग-अंग प्लो व समावा

बहुत प्रमान होता। प्रधान —शयद तो अन्य-जन भ कृते । भीत के पुत्र कर्यों अभि भूते । विद्यवन (२) —वैदान, धरेन

भ्रांग-भग मुमकुराना

र्वात करना

श्रंग खुना

क्रपीर भूकर कम्म माना । अयोग---कृर हुदय से इन्द्र स गोकुन संग भूकत ही नेची (सूच सा०--सूर, ४९१३)

अग पड़ना

हिरस प्रणा । प्रणास—प्रकृति ज्ञान आहे अन प्रणा सुरुक्तार सुर १९७४

भ्रंग फडकता (दक्षिण या बाम)

प्रशास कार्या अस्त में स्वदन राजा हा स्वयं प्राप्त अस्त मरना अस्ता है। प्रगास—प्रदर्शन मुख्य अस्य सूत्र क्राप्ता सामक कार्य सुनासी २३२

अंग है और न समाना

इवर्गनरेक होना । प्रशंत -कृषि पठर्र विश्व-भागती पिय शाक्षण की बात । कृषी अंगत में फिर्र, माम न आग समान विक्षती स्वार --विक्षती अप्रश

श्रंग मोदशा

- (१) अवकार केवा । प्रदोश -गोवि वर्ष हका, कटि आयुत अब बोरि तब हरि जंबबाते 'सु० सांध-सुर, पर्ध
- (२) विकेशहरा
- (३) लग्या ये देह दियाना ।

अंग लगाना

- (१) महत्त्व देवा । इयोग----रहत्ये समग्री गामा माहण बहुत होन नवार पातंत्र वे समग्रीय---वृक्ष यम् १४७०
- (२) (१वा-विचा चेवर
- (1) मधना र

धंगे सामा

तम से मधाना, निष्ट कृताना । प्रयोग—पीहरि जाई म रह नाम्हे, पुरुषहि तम सः सरकः (स० प्रशाल—समीर) १६६

भंग शिधिक होना

भावारिकत के कारण कृत कर न पाना । प्रयोग---अस कन कृतन को कर जाता । सकुत धनह मिक्सि तह गाना । रामक अ:--कुनहीं भूदे

संगदार्थ सेना

वेन्द्रमा को प्रायम्ब होता । अधीय—भीत व होको प्रिय यंग नारी केनी कार्गुल की अंगवाई (स्वर्णेक—पंत, राज्य

अगामी पर जाउता

भार सन्त । प्रचार — किन्ते दी मिन्स्क ह्यानी नेति है के कि रा । तर बार प्राप्त है प्रधानीय में नहीरहा कि प्रवेश धिनात ३० जान दिन किए मैन प्रचार ६० कि जान बार कार मोनः २) प्रेमिन्द १०५ कार्य स्टब्स

📢 राज प्रतर सरमा

अंगुटी चटाना

लेक्य, समामात्र । प्रचार पाट को नरंगकार वा शिक्ष है। अस्तरण्यास नराम वा कीलार हरियोध १५५



अंगुटा चुमना

(१) मुकायद करना । प्रयान—जो अगुटा है हमें दिश्यतः रहे रच। अगुरा है उन्हरका सुबन चुमले । हरि प्रदेश ५७ (+)

(२) सभीत होना । प्रयोग—देशवा (÷)

भेगुता विका देना, या दिसाना

- (१) किसी चीम की धवना पूर्वक देने हैं। नाईर बचना । मंगाग-भूषत ओट थिने यह बानन्द, पाट बिने अंग्छाह दिकार्थ (समेठ कादेत- समाव, १९०); वस में देव का भवना वेक्ट मरस्वती व अपना काम निकास सुधा धीर फिर उसे अंगुटा दिश्यनाकर अच्या हो जाड़या (Hiorio (१,—बिo गीठ, १६-५४); स्वी दिवारेयं अगृहा रीन को कापको धर्मक आधा दिन यो है हजी कुश्तीo— हरिओध, भ्र) (+), पर मैं तो देखता है कि यह जुक्तवा पर्स्या तरह न कराया क्या हो तहा के कियान फिर आप सामांको अंगुठर दिवा राग रिजारी—प्रसाद, १८३ इन पैसो के बल पर आलिक जर्माचार को हम अभी ले अगुडा दिकाने नव के (क्ल०--नागांव, १९६)
- (२) किसी कार्य के अल्ल से हट जाना, किसी कार्य का करना अम्बोकार करना । प्रयोग— वच रहाया क जन्मा न विलक्त ही अगुठा दिला दिया तो पनुमाह को अवहर। आवा पहा कठ० देंठ सठ, २६३), साप शावा नावव में अपार लेकप तिआदी में स्वतं और मुखं अपुटा दिया क्ते ,गोदाल-प्रश्मय, वश्या, । वेदिक (🚓) भी ।

अंश्रक दाल कर लेता

स्मेह पूर्वक सेना (या के समान) । प्रभाग- एक मुलाप् मोहि मिन्दो तिन शीवा अवश लाइ का प्रवास-कदार, 495

श्रीमार्क्ष प्रमाण कर,---शेष कर

बिनम पूनक, बार्यना करते हुए । बंबोन-पूरनारि सकन प्रमारि संकल विधिति वचन पुनावही (१४२० वास)--सुकती, ३१४), अरम शह सिंद अयानु गोपा, सुनह स्थन विय परिष्ठुरि कोचा (शम० (११०, -चुलसी, ५६६,

श्रीवास अर कर खेला

निध्यों का अंचल पक्षार कर मालीवरट पहल धनना । प्रयोग--मृदित बात् अंगम भरि नेही वंगम --सुलसी, ३५५)

अंकल शेव कर

टेश—म यस प्रसाद शह

अंतर से करता

विवाह होना । अयोग--- मै स्वयं इनके अथन से बयी । 580- 30 BO, 54

भञ्जन लगाने को भी नहीं

तनिक भी नहीं । प्रयास-दूध-दी अजन आगने तक की भिनना गारी पांड शिव गीटान प्रेमचंद्र, इ

प्रदी पर बदना

4" व बाना । प्रयोग—सकावार का पुराना चाव वा । वरी मुस्स्थित बटी पर बहा (निसंसा प्रेमवद, १६५)

भंग काल, जो बेर

मृत्यु के समय । अयोग असन काम अस बाद पहुँचा जिल में कीन्त्र म बंदी किए प्रदाल-कदीर, १२१ - कुन्ट की ममनि करे जिन कोई अंत की वर बहुत बुल होई क्र प्रचान --कबोर, १६७

(यमा । मुहाय-सांस को बेमा, --समय)

अम की देर

१० ---श्रांत कारह

भंत ते पाता

वृत्ती कर से समझ म बामा । इंद्रीय-प्रम्य ग्रह्म वृत्ति मन न पाना राग्नी भागता अथ धर्च नामा (Bo ध्रेशा) = क्योर, १३०५ - आधी बाह्या जल व गरवी । जावी बाल जन भ्यान नवस्यो सुरु साठ,—सुर १६०३ जितम वेजि मिक अस न बाबा अमिठ विक्ति,—सुससी द्वारा, विकरी महिला महि अने न पायो । हम को दप्ता जस करन वरको केंप्रकट २१--केंग्रस २५५

भंग न्हेंगा

थन करना मार कालना। प्रमाग---कायर क्षमत के अन्त हवे के बत केन, ऐस दिन पार्र व निहार्र जिय शांत 🌡 अञ्चल कविरोठ—धनाठ, १०६

अंतर्शियों में बल पहला

बार्क में दरे होता। प्रयान -- दम पढ दूसरे न स्था विवर्ष । कम प्रकारक कथा वानी आने (बोलत-हारीचीय), 224



शंगदी की बात जनता

सूच समझी तरह पहचातना । प्रयोग-पिनर कान्यान कः इत्तर्को सी जान से नममता हूं (पासी०-नेष्, ४%)

अंतर-कपट न ओल्डना

यन के लगह को दूर न करना । प्रयोध —इन वार्णन का कोम पार्थक्षे, अंगर कपट न बांध्ये क्ल साल-न्य १४८७

शंतर खोलना

हुएस की बेंद्र कह देता । प्रशेष---वे वाये बस्य मुं. नियम् भीतर व्यक्ति किन्न प्रशास- क्षेत्र, २६

मॅलम्ब होता

स्वर्गिमित हो साना काने नक ही बात को रेकना । प्रकास =4 • देनी इपास विशेष कप धनवं के ही बण (सको= निरामा 50

संनिम पश्चिमी विकास

भंतिय साँच विजया,---लेबा

- (१) मृन्यु निकट होना । ययोग---नमहारी सहन चयन। सन्तिम गरिनो की निज गही है सिसली श्रासद, ३५५
- (२) समाध्य पर हाता (ध्यांम---तम में सोचन-सम्बद्धनं नामक हुआ हो देश का व्यावसाधिक रंगलंक संतित जाले ने रहा या (पैसी- नाइक, इ.

(ममा पुरार-भिनित्त मास जनताः

ध्रतिम साँग तता

ి —अंतिम सीम रिप्तना

भंदर अध्य संदोहः से गुरु प्राजा गुल संग्या होती । प्रयोग—बाहर कियी को कुछ प्राज्य उत्तर प्राप्त प्रशास प्रदर्श संग्रह प्रतास प्रशास सल — जानक प्रदर्श

अंदर हाना

अन्त में बेन्द हानक प्रशास तक सब तक की रहते हैं। इस महत्या प्रशास जान की अध्य हा जाने दैनने उन्हेंक देवे

अंध-क्रम में दालना

श्रांति काना । प्रयोग - नियान वह कि अन्यवकी के उपन निर्माण होकर बाजन्य अपनी संशानी को चंपकृष व दालना केंग्री कही मुन्तेना है । । साहा स्थान—स्थात देख, ५५७ । (क्यां व्यान—अंधकृष में क्येन्ट्रना)

प्रंच शक होता

दिन्द मांच विचारे भाषित शहता । प्रयोग—सैन कहा विचारों कर्त्र विकास अधिक नहत्त्वायों की दिस्तहरी कर बद्ध अस है अपनी संबर—संग्रे, १०

अधकार का जाना,--नजर भारत

अंधकार दूर होता ।

भवान कुर होना । प्रयोग—क्कटी स्थिति मिह्या अध-पारः। कुरु प्रेथाः क्यीर दश्य । यो मुन्देश इयाल की, कृषा नृष्ठि नसीय । तिसिक मिटे, अगर्द हुवै-यदिर अनुष्ठ कीय अध्देश—देश हैं। हे दिवर में अद्युव भारतभूषि का अध्यार दूर कर ,शंधां प्रेथां —क्रियां दश्य, ब्रह्म

मंधकार नजर भाना

ऽ०—संध्रकार क्षा क्राना

अंधकार में रहना या होनर, न्होना

ध्यान में होना, बजान होना । प्रयोग---नंधना मना यहाँ पर पा उन्हांना योग्य से धाया अमें---हरिश्रीध, १३१ इस नव्ह इनका काबू दक्के पहला है। पुरी जानकारी हालिक होनी । पैसे प्रथेरे में हैं बोटीo--निरामा, १४४)

अंध्रकार होता

रेट- संस्कार में रहना

अंधी करनर

बान मृत्य कर देना । प्रयोध नभीतु न संघ कीन्त्र केहि हेही । १९२० (श)—हुनसी, १०५६), द्वाय जन्मा भी स्वा करें वर १ जीन उस भी पनन्त्र ४१ कंगा क्षेत्र हुए इस १ में 1000 १ साम्लेन्द् १५७



र्थया कुआं

मून्या बुआं। प्रयोग—उसके एक गाँव में, छोड़ा ना देश की नुश्चे जिसकी बादा में एक दूटा ना देश क्यां ,शैलर (१)—अक्रोब, १६), पर प्लाना आवशी धर्म कृष् की तम्फ दौने नो मेरे स्थान में इसका कोई कपर नहीं ।सहन- प्रेसचंद, ३८६

भिया बनना

मान बुध्त कर भी व जानमा। प्रमाय—पान्य होने को भोगा बने । कैसे वह प्रजापुन क्षेत्रण भी क्षण प्रपत्नी जात कर्ने (मर्मार)—हरिक्षीय, १४म

अंधा दनाना

- (१) तान मृश्य करना । प्रशंध---वश्यक में सावायं माध्यस्य में जिलाकी को बायक कोश सभा क्या है वैशालीक (१०-- बतुरक, १६२)
- (०) योला देता, वृत्तं बनाता ।

श्रंथा होना

जंबाधुन्य सरकार होना

मनमानी निगनि होती । प्रचीय - सरापन पना परा पिनरी संप्रभाव सरकार सुरु साल सुर ४५२७

भ्रंभा कर्ष होता

दहन दन् धन्तर होना प्रशास---वार्या हमार हेशी होत्राहना और दूसरे हसनेश्वित्यनों को बाय से बीच कार्या साहै नहीं होती चाहिए दूधा --दैंग से प्रश्ले

अंश्री माप्टी

मन्त । अवन्य-कीन से सभर ध्रमायुर्ध की नार दिलानी है न जयी ओपनी बीम०-सुधिक्षेत्र वह

भंदे का सकड़ी,—लाडा

(गमा । महा । — श्रंधे की श्रांता)

पर्य की स्टाहर

मंत्रे की सकता

अधी कुछ की भीर डीइना

चनरम् प्रयम्न करनः । प्रयाग—पर ध्याना प्रार्शः पर्ये कृत की नरफ रोडे सो गर स्थान के उसका कोई कृत कृते (सन्दर्भक्षाकर्, २६६

अंधे के आगी गोना

न्याना के कामने कुछ कहना । प्रशंत न्तेनी वंशा पे अपना निकल कहना प्रत्यों के आगे गेना वा प्रमात-न्यानक्ष, रहर

अंधे के हाथ बटेर लगता

किसी बनाम व्यक्ति हो कोई उपयोगी और महत्वपृथ्यं वीत किस बाना अनावास कुछ मिल आना । प्रयोग— यह नमक सो कि तुम अपनी मेहनत में नहीं पाम हुए पत्थे के हाथ बटेर नम नदा ज्यानठ १।—एमचंद प्रश्न पदांच रचना केस्त पत्नामी की भी मेरी पृक्त भी नहीं में लेकन स्कूल न प्रतियो की बीमान होने में पृक्त पत्थ के हाथ भी नहर तथ गई भी अपनी संबंध प्रष्टा, वद

अंधेर-काला

यनमानी भाषाचनी । प्रयोग—इस धनर्प और प्रपारतात का कुछ डिकाना है (प्रहम् के प्रत्र—प्रहम् असी ४२ (क्या व मुहार---अधिर-अर्थी)

अंधेरा कृष

भना अञ्चलस्य । प्रयोग — प्रन्य कृष भा पार्व उदल वाय लंकि सार (प्रदेश— साम्यसी ४२)३३



अध्यय ही अंधेरर दिसाई पहला

(नमार प्रार—भंधेरा भुष्य, अधेरा द्रीप) अधेरा ही अधेरा विखनाई पहना

चारों और विराधाननक प्रतिकत्त वरिक्षिति होती । प्रमीत—नजा के पार्टी होट बन्चेरर ही बन्धरा विकार्ड हेना वा व्याना (१४—वेनचंद्र १

विधिरा होना

- (६) सियंतास होता ६ प्रयोगः अगिरश्मी या गया जनान है है। प्रियंके बानं अन्त्रया है उसके निष्ट यन-दीनते किस बाध का अग्रेट (७)—प्रेमण द, ३४७
- ्र) विश्वासा ही विवर्ति । ध्वीम---भ्रष्ट दुवके पृथ्वी और कारका वर २०० (१ - विवर्ध, २९२

श्रीरीचे कुछों हैं पहला

घोर जनिष्ट होता या जन्मा । प्रयोग—संबं न रेमहे परन कहा चूले, परल धन्धरे - कुंबा (बंध प्रयोग-वनीर १९०)

शंधिरं धर का द्रायक

- (१) इक्नोनः जसाः। प्रयोग-स्वाही नवकः सो x x वरे क्रापरे पर का गीपक वा 'भाग प्रथान-भागतन्तु, ४७३/
- (२) कृत-दीपण बंध की संगादित बक्त बंग्ला ।
- (३) भाषान कान्तिमान अल्यान सुन्दर (

अंधेरे हैं स्टॉलना

क्षेत्रेरे में तीर मारहा

समान रियनि में काम का कोई प्रधान की ही करना। प्रयोग— इस प्रतिश्वर्ष के लिए सामाजी में भी क्षा एक मान प्रकार की नद पर मन स भी दशका कि जन्मर प्र एक नोग साम्य स पार्टी हो क्या है प्रशानी सदर दश्र रिवर्ड

(१थाः मृतः — श्रेपेरंसे देशा सारता — तीर बळाना —तार क्षोदना — निशाना समाना)

भंपरे में रसता

ब्रह्मन में रचना, रिवर्ति हो न बनाना । अयोग—उमकी बृगा नदा कि हरियनक अब भी बोनान को मणने बारे ने अन्तरे में रख नक्षण है मुनेता। जैनेन्द्र १५

अकटक राज्यं करेतीं।

विना विभी विशोध का वर्षनद्वन्दितः के राज्य करना । वर्षान—करन्त अकल्क राज्य मुखानी (१०२० (च)--नृतसी, १९४

अक्रेड क्वाइ

वर्षकः। प्रशेष--वश्य नक्ष्य वस्त्र सहस्र सारी थी। कंका०--कंका०, पर

Margar

पयन्त करता, बिद्द करता । प्रयोग--- भिक्ति करी बान भूह थे, किसी ने कभी नहीं अकडे भर्म० - हरिस्रोध किहें बरकार के वे पुराने संघक यो शक्ति हुए वस जार १४० २ प्रेनचंद्र ३३१

(नशाः गृहाः---व्यकतः ज्ञानाः-- दिधानाः)

अवेले को का भाइ कोड सकता

बच्चे कृत भी कर पाना । प्रमाण—हुन्ह पहे निम्न निम कर देव नुपाना पानत है । हहा हहा । एक धने से भाष करवेन (मारा प्रमाण (१) ना। हैन्यू, ४०४); तो बहुती, अवेना पना तो बाद नहीं फोल्पा, सन्द सन भाषे साथ है, तो तैयार हु (कर्म०—प्रमाद, २६५); अवेना पना वार नट परत परताप इतिहा वह तक इस नमह की महा पानवाप का मान गर पर्यक्ष करेगा तह कर एक परित्यन पनन हो स्थास बना कर प्रमाण है

अकल का संधा दुशस्त

महामय प्रताप नाम का रामन का प्रशिष्ट गावित्तन देवेल देव छत् क्षेत्र । इस्ताना अस्त क सम्म मिल् की बावत का जिल्लाका सुरत का मान का मुक्त सबस्य क करान देवे सार प्र

अक्य का जास बाता - करना

कान म कुछ न हरना । ३३१० - तुम्हारा स्वाम, नो दस



समय भागत वास चरते वाले वहाँ है साठ साठ (३)—किठ मोठ, १६): चनिया सुमस्याकर बोलों —सुम्हारी करत शे मान का वर्षा है (मोटान—प्रेमच द, १३३

अक्ट का सम्बद्धाः वैश्व सक्टब्स सामानाः

अक्ल का तुरसन वैव---अक्ल का संध्या।

51

अकल का पुनला बना वृद्धिमान , मृत्ये (क्यप्य में) 1 अस्ति—में स्थित्भी भी बड भारतक है पर असन के प्रस्त है अस्ट्रार—भाग अस्

वृद्धि द्वारा मुलभ्यता । प्रयोग—प्रयो सा-वार वाल वसी मी आप ही आप जी लग प्रत्यवा । वस अवन वी वार्ड मी भोलो स्वयम—प्रेमकद, ३४

न्यकार की मीड़ मुक्ति उपाय । प्रयोग देश भिया तुम्हारा स्थाप और मुम्हारे अक्टल की धोट गोटान-सम्बद, ११६

अवल खुक जाना समक्ष्याची जा जाना । वर्षाय—होगी वैदा नीव ह्या वा ---सक्त की अब न जेग का बच्चे हैं । गोटान-प्रमाद , १५

भाषात स्वाहर में पड़ना इंड में कुस समाध न साता। प्रवोद—स्वल करूर ने पढ़ जाती है यह मंत्रकर कि यहां कतानो और संबो का एक पूरा का पूरा महानगर बमाया वा रहा है मूलेश—स्वाह सर्म २५६)

् (मप्राप्तार अञ्चय सकराना,--- सक्कर में पड़ना

काक्य सर जानर वृद्धिभाग्य कर देना । प्रयोग—स्मोने कहने हैं दिवस्मत बादमी की सक्त कर जानी है पोदान—प्रेमक्ट, १४०)

श्राक्त करने जाना, — केथरी में करना भनम न होना, वृद्धि तक होता । प्रयोग—अपू-महार ४ । विभिन्न व्याग न सहस्थानन यः राजनानि को बार स्थान केथी अमे दिसाई है उस मून कर विस्थान करोन कुछन सम्बद्धि की अवस मी जरने जनी जाती होनी सीवस् ०—३१० मह.के, - चनन पंचरी में चड गई मो वर्ष इन कड् मूजत नर्दया (सासीव—वृध सर्वा, १५०)

भक्त वेपरी में बद्धनी दें अक्ट बरने जाता ।

अक्ट ठिकाने भरता या होता व्यक्ष वित्तता । प्रधान—व्यव पुष्ठ दिन व्यक्त आनं वे व्यक्ती व्यक्त अपन आर डिकान आ प्राप्तती ।प्रतिहारः— भीर दास. १००

अक्ट पर इट पंडमा, —पत्थर पड़ना सक्त का काम म करना । प्रयोग—ई ट पढ़े नुस्तारी बॉक्स कर, इतना औं तही बानते यह गुनास है काश क्षण — राह्माठ दास, वश्च ; नुस्तारी अस्त पर राजर पर क्या है इसम हमारा कोई दोष नहीं (मानेठ (छ)

अक्ट पर प्रधार पत्रमा १०—अक्ट पर हेर प्रथम १

भक्त पर पदा प्रदेश

--- प्रमावद, ३६

बन्द् या विक्षि को ठीक और न समक्ष पाना : प्रयोग---मरी धक्त पर क्यों पड़ा हुआ था । स्वार्क ने मुक्त प्रमाः कर रक्ता का नवल---प्रमाद ३०८

अकर जारी जाती

समान का नव्द होता वृद्धि भव्द होता। प्रयोग—नृष्हारी सम सक्त मानी नवी मृद्धाः ,२ -वशवाल, ५६०, कोई बाई कह जी देना या कि इनकी अक्षम दारी गई है सुठ सुठ—सुदर्शन, २७१

अक्ट हवा हो जार्ना

नारी कर्नार्थ की वर्ष हुँद ही जाना । कारेश---कार कारी बहाबीर स्थानी को जीने तो न ५ सारी भेरत हवा हो आती नुरेककाना की जिल्ली--निरामा, दह

अक्ती गर्द रुपाना

दिमानी विकास पर नके करना । प्रयोग—काप दमा सकती है किसी फिनामफर ने सकती गई उड़ाने क गिया और कुछ किसा है के अमेदान—केमबंद, १४४।

प्रकार अक्षर कृषा-कृषा कर कृष्ण । प्रकोष-नाम के सुनीय को रहाया की





महत्त्रनी भी को अक्षर-महत्त्र कहा मुनाई की । (कठं≎-देश संघ, २७५)

असारा होगा

धगचार्नः सेना

भक्ति प्रगद करता

भाग अमाना । वर्षायः स्थापक वयट करत् गुम्म वर्गः राम्यः सी-स्नुलानोः १९६

भक्ति संस्कार करना या शंजा

भनकं का बार करों काना में होता । प्रयोग—क्रमर हमते बेक्स है कि बंगान में दोगियों की क्ष्मी ने स्प्रतीय ही मानी है और कही-कही जनका व्यक्ति-सरकार विचा सामा है। विकोर—हंब पर दिश्च ११९

अप वृहता

पांच का सब्द होता । प्रयोग — समय अत्रव परिवय स्था बहुदी सामद काल — सुरुवी १७२

श्राच्या यर

बारपन्त । परिवार प्रयोग---पर यह तब तक घर बन्धाः य प्रिते, तब तक भी भी तर वही भगता (मा--वर्गक्रक १३०

अरुद्धे या यथाना देना

इत्यापि स्थानकार्य से स्थापित स्थापन । याचा सक्तमा स्थापन अस्ति कर श्रापन विद्यार्थ (द्यार स्थापनीतिक ३९०

<u> श्रीराक्तर</u>धारम्

विना भोत-निनारे: प्रयोग क्टानिय राजिया (व भारामा टे राहे दीन परशस्त्र कार्य सेव राम् इत् (भारत केर्यम क्षांत्र सहस्ता होती वह स्वभी से कारण प्रमोध संस्थित हों

वयान महातः अटेकल प्रस्तुः।

भटकास बटबास लेकर पहना

(१) कर कर या हताल होकर मुक्ताप आट पर पड रहना । प्रवरंत —कृदा माला तो इतनी इताल हुई कि उनी करन प्रदर्शन नारकाम नेकर पढ़ रही । (सान० (६) —क्रेमसंद, १२४

(२) काम बाम स्टेंच कर करना ।

(तम) करात अस्पार प्रयोशी लेकर प्रशास प्राचनके सम्बाह्य लेका प्रदेश

धर्मगा स्वयत्ता

वाया पहुंचाता । वर्षाय—पिन्टर नंता दाव येव के भारती के मौदा प्रदान समस्भवता समाने में दूस अअकार कर निकल काले में निज्ञासन जोदास—पेमबंद, ५४) हमी बेनरह के अरुपे क्यांत भूमते०—हरिऔध रूपक

(संवार स्टार-कडंगर घरन्ता)

अहिपाट उदह होना

तर बाम की वयने-स्वानं करना विशा शंके-वर्ते किसी बाम को न करना । प्रयोग-स्वतः यन बना उद्धान सबसे अन्य पतन बामा धाँत्यम टट्टू हो गया (शैक्षर १) - भन्नाम वर्ष

भवता जमाना

- (१) कई भारतियों ना भूटकर होती अज्ञास चारता। अरोग—किर कही हुई नो विकास बते वा शासीवरमकी रुपानपर बहरा जमाने नेंद्रे दुधा—देव सव, ८६।
- (२) अधिकार के के लिया ।
- (३) डिक माना ।

अद्दे पर जाना

- (२) अपने निकास स्थान पर शाना ।

अद्भार्ष सम्बद्ध का विस्तरी अस्ता प्रकार अस्तो बल बदम असा स्कार प्रशास अस्त प्रशास बाह्य का बत्र में विस्तरी अस्त प्रशासी है शास इतिहोस, १००

यम पूरा अदाई हे द की मस्मित्रद उठाना



अर्तात की मिट्टी कोदना

भिगत बार राज्याद गरतर । प्रवास दावा प्रदेशक विकास श्रीदारम म अपन गर्मा में बेंद्रगर दूदम स्मिन्याती काह गां तरह अतीन से मिट्टी मादने तमा XX का द्वसन काम कि मिल्का के को हुए कुछ एक वाक्य बार-मार आकार देशके विकासका कियार देते हैं सेंबर २) अञ्चीत २०)

अवालत का कीवा

नहं स्थानित को नशाबर धणहरी जाया आया को, माधनः मुक्तदमा किया करें । प्रश्लीय----शिन प्रयास करानत के कोई से शावन----प्रशाबत है।

अदृश्य का हाथ होता.

कित्मत के मधीन होना । इमोन-समारे प्रत्येक कार्य में सब्द्रम का हाथ है (चित्रक-समात कार्य, १०५)

अधकवरी वात

इधर उधर म स्नी हुई अप्रामाधित वान । प्रदान—कार्- । कारी दल चीर कांग्रेस दोनी का नाम उनके लिए पहले तो कृतृहरू का कारण का कि नृत्ये उनके सरक्रक को अध कुल्दी कान भी नाम तक पहुंचन कर सलक्ष्य गाहुन्छ दक्षे

अधर हैं लडकता

- (१) महायंत्रा से प्रधनां । प्रयोग—लमृश्री जाति को भाग्य अक्टर में लटका हुआ है (सर्वाक्क-क्क प्रवेदिक, ४६.
- (२) पूरान होना।

(समा० मुहा०—सध्यर में अनुसनाः—पद्नाः)

श्रावीमुख शोना

सरमा के कारण कृष्टि सीची रमना। प्रयान जनामुक रहति असत नीत चित्रकति उसी क्या हार्डे मकिन सुवारी (सुरु सारु—सुन, ४९९१

अनमेल बात करना

प्रतिकृतः बान् गारतः प्रयोगः अवस्थितती वाने नर्गतः लाते मुनियस माहि । सु० सा०—सुरं, २१०५)

अनमोड होना

अपनी बान पर दृढ़ रहना प्रयोग दोपालो नो उस हरम की बनमोद है (कड़0--दै0 सं0, 60)

धनस्र्वतं अत्रहा

- (१) पुरार पर ध्यान च देना। प्रयोग—श्रीवन-अधार पनआवद उदार महा चैने धनसुनी करी चातिक-पुरार नै 'दनं कवित्तo—पनाठ, १८)
- (२) मलामानी करनाः।

धनाय-शनग्य

विश्वान, कामनू । प्रयोग--चौर वपनी अध्यक्ती की दर-गह न करता हुए। क्याप-क्षनार अर्थ करतर है (गाम--प्रमुख्य, ११८); - देखना एक बान का ध्याम रक्षता पर नाभी न हो वही बनाप-क्षताय होके (मा---कीशिक, १३८)

धनी पर भड़ना

नमनार का बार सहना, भरना । प्रयोग — फिर काम पढ़ जाने पर अली के इसर कह जाने के निर्दे भेरी देह तो है ही मुख्य—बं⊙ बर्मी ३९६।

भपनपा कंता

अपने अपन् को सोड देना । प्रक्षेण—स्नि स्थितमान लोभ इ. पान क्षण अपन्यों त्याद कर प्रसार कर्मा १९४ प्रिंग नृषों सनेत को पारम है जहां नेतु सम्पन्य शास नहीं दहां साथ अपने नाम जायनपर अपने कपनी में निसास नहीं (पानर करिस—सनोर, ४८)

भयनपर पहचानना

ध्रपनपा छिपाना

अपने बारमधिक कम को प्रियोध रभना । प्रयोग नया रहति धरनपी बुरहर्ष् । अवनिधि कुलल कुरण बनाएँ (शतक काला---मुलसा, १७१)

अचलपर पाना

अपने आप की समजन्त । धर्माम अपुनवी आपुन ही में पानी सुरु सारु—सुर, ४००

अपनवा भूल जाना

शास्त्र-विषय्त हो बाका । प्रयोग-देखि स्थास को नदम दी बाई बोदि प्रयानको भून्यो (सुरु सारु-सूर, ३३९२), देखि सानुकृत भूकाह विषया वरित्य बपान (११६० व्यक्त)— कुलसी, २४१



क्षप्रना-आपनर खर्मा आंद्रभा अपनी ही बास फिल प्रानः । प्रधाय-सम् अपना-अपना क्षमां बीटने सम्बो है मैकाल-वेषु छै।

ध्यमा बहुद सीधा अस्ता

स्थाना मतन्त्रय निकासना । प्रयोग जो नियों के सम् नहीं है से केसस प्रयमा अन्त्र सीचा करना चाहते हैं (विकास हैको व क्षण नवकर में साथ बहाने के लिए ज्याची प्रानक-स्थवसानी अकाग्रक प्रपट पार्शकानी चीट समान्त्र रोजावाची संटनार पोजियों प्रयोगित करने अपना कर्न् गीना करते हैं पद्म प्रायम-प्रपट्ट साथी, ३५०

शक्ता करनाः --सेना

सम्बद्धि स्वीकार कान्य । वर्षाण--अमनवर्ष्ध वर्षी वर्ष स्थाना धानेक बात क्षींत्र महिनो अपना (कः प्रसाठ--क्षीर २४६ भी राचे अपह बचनो क्ष करिही सीठांसांश २। -सारतेन्द्र. पुरुष

, तत्ताः महाः -- भपना कराना)

भाषामा काम वृष्टे विमा कीए के पाछ दीवना पास में भोश मा देन दिना हुए लोग करना, विमी के बहुकाने में भाका ऐसा करना । प्रभोग --- धपना करना देश विमा कोने के भिद्रे वीचना अन्त्या नहीं मैतना---रेल् कृष्टा भाषामा वर खोडका कर बुक्ताना

धारने व्यक्ति का ध्यान होड दुनमें के धाहन को गोकता । प्रधान—अपनी पर परितरी क्वी को पुर क्वाची । कु माठ—सुर ४०१६

भागसा यह सामकता

किसी प्रकार का संकोज न करना । प्रशीय---प्रिट आगर्क चट की के जगना चर समझता है तमन⊙ .g)---द्रेय-चंद्र, प्रो

धपना नमाचा अपने श्रृंट गर गरहा

रिया व रूप र प्रस्ता । र शास परकार से अवस्त हैं। अहिन होती । याचार आसी यह होते प्रक्रम स्थाप । मैंने विश्व विद्या । प्रशासनीय सा अवस्त सम्बद्ध स्थान हो सर पर प्रसास विस्त १ प्रसिद्ध (C-8)

आपना दूध छोड़ कर स्वासी पाना (१४) पाना प्रस्ती के ते ते तो बंग ज्या प्रस्ता प्रस्ती दूध प्राति के पाने को बंग की पाना सूठ साठ सुर १९५३

अवका बीया अन्य कादना

अर्पना गाम अकापना, नाना

सकते हो बात बहे आना । प्रयोग—किर भी बन्ता ही एक वाद बन्ता है (भार पंथाय: १) -भारतेन्द्र, ६२१); अवर नुष बचना ही राज बन्तायोग तो मैं कह देती हूँ मैं बजने यह बनी शहरीं। (कमय—केमबंद, १७-१८)

अपना राग गाना

देव अपना राग सन्दापनः

अपना रास्ट्य हेना

- (1) पानमें काममें नागे —में दा कारना । प्रयोगः —में हा कार्य किरत भटनम कर अब बारत निज गतिय हिंग सीठ क्षा (भाष्य): उनमें भाषा बरवाओं । कार एवं कर भवना राज्या किया करों (कासीठ—वं ठ वर्षा प्रवे . उनमें भेड जनन के भीतर रेचने हैं तो घरे हुए सर्था के कि कारने को पत्ती बराबर कार्या करते वाले हैं के अनके मन्त्रने को पत्ती बराबर कार्या करते होते हैं के अनके मन्त्रने वर बचना-एपना शाना नेने हैं (विशाद (१)— मुक्त, १४५
- (२) कोई मध्यकं न रखना कार देना । एकोग—में देवता नहीं कि शुक्तें जोच समीट कर समना राजना में नवन—क्रेमबंट १८८ ।
- (३) किसी को कोई बरन म देती हो का असका कोई बान न करना हो तो अपेका पूर्वक अधना शानता देती' कह कर हानले हैं।

भएता होता रेक भएता कृतता ।

अंपनी स्टब्स्स्ला

धमनीय सम्मन्ता । अभीम—अवनी कानि संदेश आज इ.र. १व वन मिलन पठायी (सु० सा०—सूर, ५०६९)

अपना भा मेर लेकर भेले जाना, लीट जाना निभिन्न पर नार जाना प्रशास तय एकानी भ भार में ये कर मेनावा पर बेह प्रपत्नों सा मूंदे से उसर अपने हो से पाप आया श्रेमण साल-नेश खाल २०२ रेव को हा बदनायन र सम में चले पर्व अपना पर मूंह सकर जरें। बीलक करियोध में कि मिक्स्ट सुबह काम



हाशिशी देने बाते और ज्ञपना मा यूह लेकर लीट दाते मानव (२)--प्रेमबंद, ५६): जब निनी बुनाई वार्ष तो मधी गायद मान भी जाती, पर देती के जाय दन्यार करने पर ज़िली अपना-मा मृह तेकर चनी वर्ष ध्रमाठ---देठ सठ, ३४३

अपता सा मुंह छेकर रह जाना

मन्त्रित होना । प्रयोग—साम होरो ने ऐसी हर ही जनायी कि मैं समना मा सुद्द लेकर रह जया (गांदान—केमबंद, १३०): यह समना सा मृद्द लेकर गढ़ गया (ब्यूक)— देव सुव, २९.: काजी अगमा सा मृद्द केवर रहे जया (मद्दम क्राम—पद्दमव दानो २३२.

अपना सा मुंह लेकर कीट जाना वे॰ अपना सा मुंह लेकर बले आना

अपना सोना कोडा होना

अपने ही स्वांतन का गम्बू म ऐंग होना । प्रकोश-साई जाम, कहे बपर, जब अपना ही बोनर कोटा हो को परक-बद्दपा का क्या कुमूर (thato tizato-thuic cita, कुर्य

(गमान प्राट--अवना ध्वया भौदा होना)

भपनी आँक से देखना

अपनी और जाना,—ही हांकना

प्राप्ती ही बात कहें जाना । प्रयोग—अगत की प्रानी ही हानते वर्ल भये—हरि भारे तो रखा कीन करना है हानते वर्ल भये—हरि भारे तो रखा कीन करना है हान्य-देव सब, २५३/; बात अगते त बात की कर प्राप्ती ही बांट थानी है (मा—कोश्तक, ५७) किसी का कहना न भानोथी, बस अपनी ही हाके अश्वाणी (धून०—६० सदृह, ९१—९२)

(समाव पुहार-अपनी ओसाना)

अपनी करनी बलानना, अपने मूंद्र मियां मिट्ट, यनना

स्थम अपनी सारीक करना । प्रमोग—अस्मे मृंह शुन भागनि करनी । बार पनेक भाति बहु अरनी (समक (अल्ड तूलसी २८० वजरको स्कृत सहस्य कर र करो, अपने मृंह भियां मिद्दु बनने से कुछ नहीं होता नगर 'र न्यम्बद ३२ ।; जो यहे धनमानियों में मन्त व. नमो न प्रथम मूंह निया मिट्डू अन (बोलक-हिन् क्रीड प्रभू)

भपनी साट के नीबे देखना

भवना जिल्हा अलग वकानर

वपने की सबस कारण सम्भाना । अधाय-सम्भाग सुद्द्रश् को बुन्ने कार्य अपनी जिल्ली असम नवार्य (आर प्रधाठ---भारतेन्द्र, कार्य ह

भएमंत्र यत्नी का शेर होना

मंत्रने लेख में धलका होता। प्रयोग—नुम गोप प्रधान क्यों के शेर हो वहां बादे तो कह मी पान्तु सरामत में पृथ्वारी वीत्रह क्षमची नहीं बच्च नक्ती (परीक्षक—क्षीठ दे से, बर्

भपनी जांच का न्यहाश होना

संपने में श्रीकर होता। अभीय-अब्द कमाई कर कभी हारा नहीं। बोप का अपनी ग्रहारर है किये मृनतिव हां/बीध, १८.)

भएती जेव का

स्वत परंग का प्रयोग—जन मध्य परंग का कार्य हो। इन्हीं मोट-पोर्ट जांगां के शांच म होता है और ये समाप काम अपनी जन में नाम मान की देते हैं (विप०- प्रेमी, वह)

भवर्ता क्यान्टी सवता भाग होता

तन का अपनी-क्यनी बात कहना । प्रमोग---हम दुन्न हिन्दू जाति को एक एवं में रचना अग्रहन हैं अनर आति आनि क अपनी-काली क्षम्मी और अग्रन-अग्रन नामने नहीं ग्रां करनाको कहा बता दिया है सुमतिक मुका- हरिफ्रोध सु

जपनी नाम सहांक की प्रकाना

बरती राम देता. ध्यवं कातृत कमाना । प्रचाय—पथा स्मयं वस्ता है, राजा के पान तो सब बसते ही है । यत जो नमक्षया को प्रचित बंध देवा, फिर तुमको अपनी तीत स्टाक पकाए बिना रथा दुवी आती है ,410 प्रथान १ ~



अपनी नाक करा कर दूसार का असर्क सनाना वातना मुक्ताम करके या पर्याचा नष्ट करके भी दूसरे का नुक्तान करता : प्रयोग—म आने वांगों को कपनी नाक कटाकर कीरा की वदसमुगों करने के स्था पता माना है (पर्याक्षाक—मीठ दिला २१)

अपूर्ण राह सतना

अपने इच्छान्सार करता । प्रयोग---वेने तक है परकेश करत को अवनी-सवनी शह (युद्ध०--वरकत, छ

क्षपनी राह लगना

भवनी ली

भवनी प्रश्लानुसार । प्रयोग---विकित्तन करती में अवती भी करते भी प्रतिवा (सर्मठ---हरिधीस, १३२)

भवती ही सामा

शपनी ही बाल गहे जाजा । प्रयोग—सञ्चय सुनने दीर्थ-एमा या अपनी ही गावे सर्वाभग। गोदान—प्रेमपद, १६४

श्रपही ही खलाका

रभपनी बाहो बात ही मानी आप वेना बल वक्ता । प्रयोग ----गर यह प्रथमी ही बनाती है (फान---जेनिन्ह, ४५

(समा॰ मृहा॰—अपनी की चाम ऊपर श्वानाः,—बाम सन्तानाः)

भएती विकर्त का चौकियाना

धारने ही न्यांकन का नुम्ला दिश्वसाना । प्रयोक-ह्यांके सामने अक्ष्मिती है ह्यांकी किन्सी हमी की श्रीक्रिक्षण श्रुतांक व व्यक्तांक स्थान

भएती ही होशता देव अपनी ओडे जाना

अपने आगे फिली को कुछ व सिनवा

अभिन का ही सबसे बहिश्याक समझता और सबका त्याह समझता । पराण अहेन रोग पाहै किया हैना । दाप सर्वन न कह कना पर्यक्त अधिकी 8012

(गना मरा०—अपने आगे किसी का कुछ व बदना न समस्ता)

धक्ते को उद्देनमा, आंसना

अपने पन को लागे कार्त कह देनर ! प्रयोग-उस संबं स पण में मानो लगे के अपने की उत्था कर एक दिया का (मूनिक--- संगठ वसी, 55% किए भी में आपन्न पूर्वक अपने को कोचना हूं क्योंकि यह आत्यकन नहीं है केवल ब्लोकार है (शीमर .4)--- सन्नाय, 208

अपने को जो बेटना

- (१) बास्य-विस्मृत हो बानर । प्रयान—मेरी कोल धन्य हुई कि मेरा बटर देख के काम में बचने को जो बैठा बोनेठ—राठ राठ, धन
- (२) ज्याना सब हुछ तथा देशा ।

सपने को कोत्पनर रेट अपने को उड़ेशना ।

मपने को दुवा देगा

- (२) विभी कार ने तम जाता (
- (३) जात्म-विस्मृत हो आनाः।

भवने को बहुन समाना

बहुत वर्ष करना । प्रयोग—कान्ह तुम बहुत लगावन अपने को होगो-विनार (माठ पंष्यक २)—आसीन्द्र, ३६२)

भवने को मिटा देशा

कियी काम में अपने को नवाह कर देना । प्रयोग—अपने को निद्या जैन में मैंने कज़्यों नहीं की, अने हाथ के विधा रजेका अ:---अज़ोंस, १८६

अपने को ही ब्याजा

प्यामा हो अनिष्ट करना । प्रयोग—जार पात नव दीम्ह रिकार करिया पापूर्ण कथि भीति लाई पदेश जायसा

अपने प्रा बंदना प्रसना

हरा राज रशना इसरा र हरा न माध्या प्रयोग— एर नाच देखे पन भगई रहीन सदम परे , सूर साठ— सर् ४-४ मध्य रही परि दृष्टि भारत निर्मत सूनि दृष्ट पेया सुरु साठ सुरू ५३१०

अपने वर्गमाना

द अपने चर बंडनर ।



भएने सलते

क्षपनी गरिन्त बार ६ अयोग—अपन समात ना लाकू वर्गन असंभव्य गरहक कोन्यू (शामठ चा)—शुक्रको, ३९१

अपने तक रमना

किमी से संकट्टमा । प्रशंत-न्य अभी वयं दिन वह बात अपने ही तक रक्को (चैंतरी अप्रक, १०१३

अपने पर माना

प्राप्ते उत्पर विश्वति गडता । प्रयोक—सब नापरेजी की है योगते हैं पर बंधन पर जाती है तो काम पर कृतां। एसती (वीवo—संक संक, ३३

अपने पांच में कुन्हाई। मारता

भेपने हो हाओं अपनी हानि करना । प्रशेष—आप धका-रूप भाषमी, अपन कृष्य के साथ । पाय क्यारी देत है मुख्य अपने हाथ (दे 0 शि0—कृष्ट, १०२), हाथ सबी इन हाथम हो अपने पर्य आप कृष्टार में बीनो (भाव ध्यार)(३/— भारतेन्द्र, १७१/; में अपने हाथा अपने पाय में कृत्यादी न माक्या (गोदान--प्रेमचंद्र, २२४/; बहुयम जिल्ल बाक के विपक्ष में हो, उसका समर्थन करक हम अपने पाय में कृत्यादी नमीं आह (परेतीक--नेम्), ५०००

अपने पेंगें कहा होना

(१) मानी प्रीरिश्ता स्वयं प्रतित करता । प्रवाय— में इस्ते तिया दूँनी कि में सपने पैसे पर बड़ी हो नकती है (रंगठ (१)—प्रेयमंद, ५२); अपने पीना गर अगर बड़ हाने का प्रणास करने बाल तुम जैस पुनको से उन्ह बड़ी सहानुभूति है , बेसन—अक्ष्य, २७२ (०), सम अक्षर प्रत्ना वाहिए प्रत्युं वह अपने पाद पर क्यों स बाठि हो , मुठाठ (१)—क्षस्पता, रहे ,

• , (बना किसी आर्थ्य का गडार के जाना क्या बनान में समर्थ होना । प्रयोग—वर्द पत्रों में बहुत कम एस है जो समने पायों से लग्न हो अकते हो गुंठ निठ—वर्ध गुंठ गुंठ, ३१०): क्यों न हो पान पर सह अपन, और का पान किस निम्म पकड़ें (मुसरेठ—हिक्कोड, फा, अब हम अपन पैरों पर सड़ा होना पाहिए हमान उद्धार अपन हरे हामा होगा (१ग०(१)—अम्बद, ४१%, यह दून दन तक सक बनना को है(क्यन के मैं अपने पैटापर करानहीं हा नदा • भवनी सकर—सव २०९) वॉलन प्रधान(१) में (÷) वी

भएने मन का होता

मनमानी करत नाजा । प्रयोग—शायने माना च, जांचा मान पर्य मानते वडी दश कि द्यान मन के हैं (गीमः)— हर्ष और ३०६

अपने मरे चिना स्पर्ग न फ्रिस्टनः

स्थव कोर्ड काम किए किया उसका करू व मिनना : प्रकार—कही को बात हैं, बिना बचने धरे कुरव (स्वत) देवने को नहीं विभाग (मा—कीशिक, देवन)

भएने मुँह मियां सिटहू बनना रम् भएनी करनी बलानना

अपने मृह में आप धण्यह सारता

पना काम करना जिससे बयना ही प्रतिन या बदनायी हो। प्रयोग---वदा कीचे देशा काने भूत य आप ही क्याद यारता (रेग्य) र प्रस्तद १५५

भगने में न होता

भगन इसर नियमण को बंटनर । प्रयोग---मुमं, क्षमा कर रापरर सं इन तमन अपने में नहीं है रिम्मी०--राम० कर्म इस

(नवार सुरार-अधने भागे में व होशा)

अपने गंग के गाला

क्षानी रच्याननार कामं करने बाना । प्रयोग-अपन वर्षे रच के राजा, भानक नहीं कोई कo ग्रंथा-क्षीर १९५

भवने रंग में भूले रहना --रंग में रंगे होता

चयने मुख्य में मुनी हरना । अयोग --अपने र्रात नव कीर राजा समुक्य राम कींह मेंगता कर प्रशास-कवीर २३४ रच जिल्हा कम न अ सम्बद्धी मध्य रंग में गुरा मृत्र) रव नुमति—हारकोर्ग ३७

अपने रंग में रंगे होना है। अपने रंग में भूले गहना

अपने शस्ते काता

बरनं करोब से करना। धयोग—हम गह काप भएन बास्त करने, वर्रधम फिर अल्बार वाको का पर भी तो है बॉनेंo—तोव गठ दंध



भपने रास्ते बलना

(१) अपने तरीय के जान यहना । प्रयोग नेरायर निक्त बाट बादी यह दावरी श्वाची साथ (माठ स्थान्तर)— भारतन्तु, ३६६७, शुनिया यहन रास्ती बादी गई, अशोक वीस सूट गया भारतिका—हर प्रश्वित, १३

(२) फिली ट्रेनरे के शाम में विचय न वालना।

श्रपने सिर अरेदना,—संना

अपने इतर राधिय केना । प्रयोगः यह अग्राय अपने किर इएने, कठिन मदन की पीर सूच साठ- पुर १४६६ बहु भाग न जाना तो नवर करता, सीन महीन का गर्भ यह अपने किर साइकर कराह करता क्कास-प्रकार भागे, और मुख पर के मारूर मंदी सादी आपने तुम अपने किर पर के और उसम गरी द्वार ही नहीं, अपने की पार कर को मुख मैंन किया है, यह नव भी दनना निक्त हो जाना है कि: - शैसर र ---अहों से, १८६

क्ष्मके मिर होता

🖙 अपने सिव आहमा ।

शपने से पादर दोना

(१) मारम-विरुद्धन क्षेत्रा ३ अयोग—ब्राप ! यह तो दाउरे को बाहर होग रही है जात प्रथा अस्ततेन्द्र, ४३१

(न) कात्म वयम मोना ।

भगने हाथा

म्बरं । प्रयोग—ते विद्यात स्वा आपू युवार्याह । उध्यः स्रोत-वित्र होय नगार्थाह (रामक स्र)— तुनसी, १९३४:

भगने हाथा पर पर दुन्हा हो भारता, धन्धार बारता स्थय स्थान अहित या शाम करता । प्रयोग-सायने हाथ मी भारते याथ में धामर वाणि परची प्रशिनाने स्थात... एकाकर -१ एक- १६ म अपन परच म सुन्त न प्रोत मारवर मुक्तान सुरु कारधीय द

(१४)० महा - अपने द्वाची अपना महा बोदना,
 अपने मृद्द से प्रश्याद सामना, अपने लिये गाइदा
 कादना अपने द्वाचरे कुआं सादना)

अपने हाथों पर पर पत्थर आरमा देव अपने हाथां पर पर कुन्हादी आरमा

प्रयमे हाधां में होता

चपने बता के होता । चयरंग---विता सावन पुनि अपन हाजा । वित्र विनिर्क जनन एक मध्या (पद्--क्रायसी, क्षार-

भपने ह्रां सिर पहना

(१) अपन को ही भूगतना । प्रशास-मूनी सभी प्रति नहीं गोजिये मूद पर प्रशास ही (सु०सा० सृत २६६५ (१) प्रयम ही समय दावित्व जानतः।

भषमान का पृटर्पाञ्चाता

भयमस्य कृष्यानं तह जेना, प्रतियाद स करना । प्रयोग— तो वया इस क्षमान का यूट पुरुषाय की छैं है विय0—प्रेमी, व

(नगर पुरार- अपमान में: जाना)

संपेपशे का उप्ता

बम्बक, बरनायी । एकोब—सुनि रे मधुष पूत्र बण जायी में प्रधानस को टोको - सुलसाठ—सुन ४४४६

अपराम उद्योजना

धरिय कहना, संग्ल बात कहना । प्रथीय-बारबार सरक महिरा की अपराव रहत उदारे सुरु माठ-सुर ४१३२।

भपतक रहता

न्तम्ब रह दाना, पूरी तरह मोहिन हो जाता । अनीम— दुम्हारी योचा देख कुषी को असिं, अपलब रह गई क्टार-चत १७

भयन्त्रक सद्दाना

ार्थ दरान । व मान्य हर युद्ध सन गाम अक्राक इच्छे अपनान चहुदा चेना कवता छनाठ, द्वार

भक्तवण्ड उहनाया उद्दाना

अपायातिक नकी पे.स अस्त था फेजाना । प्रमोग सामा कर्म मान प्रयोगात उनी कि पुणित था गति है, इस इंतन मार तथाने हाम उपक्र हो आते हैं ये कोति के इस साम पर द्वारों विद्यालयों ने उस अब भी पढ़ दें या मृत हुए प्रावत द्वार भी तम कर तथानी था से उस प्रावेश क्षान नह यह नगृह कर अन्याह उसके निष्या स इसई होत्तर २ साम स दश

अक्षाह गम होना

कारास्य क्यों शाला । प्रयस्य कृतद्र दिलासे यह स्वयं काह भीतन्य हुई कि सर्वकाणियन संकृत्रण साह्य की किसा



मत जब्द करने ना विशास किया का रहा है (नंगव /2 ---ग्रेमसद, २४०

अफीस साए होता

हास - इंबास में म होता, मनेश न होता । प्रयोग—-गायनवाद, होलकर, मिथिया, यदभ के ननाव नव अकोस ही काए वंडे हैं (झासी०—दुंत वर्मा, ११॥

अब-तब होता

धमय बाह देता

कार्य शक्ति न होगा एमा बादनायन देना । प्रयोग—बरकत मै गायाल बूलाए, सभय किये वे काह (सुर सार —श्वर १भव्या), बरक बाद विक किनती कीन्ही । अध्यस्य अवव पान तेहि वीन्ही (समर कि)—स्ट्रासी, ७०८)

(समा० पुरा०-समय करनाः-दान देनाः-देना सथत देना)

अधिक हुन्य

बहुत पनिष्ठ । प्रधान—परन्तु १६२ को वृतिवसिटी हुए में हम दान स्वीतन्त्र हुएक शानव क्रान्त वस्त्र न ६६

धभिमान इतता

पर्णात नघट करता । प्रयोग—केणि भीत केठी भारी गरम |गराद करे शीतित के सम चित्रकों दरत की माठ प्रयात |२)—मारसैन्दू, ५२४)

(समाव मुहार — अभिमान **सर्थ करना**)

धिसमान में जलता

बहुत धनम करना । प्रयोग—मो भी कहा मु न कियो मुजाबन, सबुध आगन्दे सान करें (किनवण—मुतसा, १३०.

असृत के समान होना, असृत होना

चित्र स्वारायकः । पेर्यायः कार्त्रं वात्र अस्पन्न विकास स्वार्थः व्यवस्थाः । तृति (६० जायोशी २०५ स्वयति विकास विकास स्वार्थः । स्वीरण दिव्य दृति सुना समासः। सः सः स्वारी १६६

असृत से हुवी दुई

प्र-ग्-न मधरे । प्रयोग भार किये विमान प्रश्न विकास (राम् (पाल)—-कुलसी, ३५०) (समान मृहरू—-अ**मृत में सना हुई** /

असृत होना

दे - असृत के समान होना

जयवा को पिटारी देका

अन्यस्य का प्रत्यो जनाता। अधात-अवस्य पेटारी नाहि वरि वर्डे विया सन्ति १६रि (सन्तः (स्म. --तुलसी, ३८३)

भरण्य गोर्ज

स्पष्टं स्टानं, व्यावं, अस्त्रास्तः । प्रयोग—कत व्यावं करण कृत्राको स्टानं है, होण जू वत को रांचरे । सूछ साठ—सूट १९१६%), वर्णानं कोसिस में विक क्लाकं के विकास वक् कोर सवाया पर यह अरक्ष-गोरम सिक्ष वृथा (१४०(२)—प्रेसवेटक, १६), उनम सबने वानं के किए कहना अरब्ध-पोरम ही ही यहा है । अंतिक्ष्य—महादेखी, ६०); हम माने नावधानों से वायक सन्तों का अध्ययम काना है और देखना है कि हवार सम्बन-प्रदेख धरक्य-गोरम सिक्ष म हो (प्रशोक्षण —कु ६० १८३०,१४४), निक्ष्य के बादक इस अरब्ध-गोरम से साम रें (कक्षाण—पीत, ६०)

भरदय में दान्त्रमा

क्ति व्याप का क्कापट की क्षिति में वालना । प्रयोग— नम में सीन निका जा होती को किसी अवदय में वालकर माम को उद्धा कना नगहरू । गोदान—प्रेमबंद, 208.

भरको कारसी व्यक्ता

नपनी विद्वास का बनान करना। प्रयोध-वाने मन कर्ण करों के नगरी भी तोची सरबी-स्वरंगी पृत्रम देवे च प्रया १ जनगरी दु ३३४

धरमान उद्घाटना

उपन तुष्ट करना । अवस्य—वद्यो मणने मल की धह-चिक्त में धनक प्रान्तिक वेशियों को इस्ट्डा कर धणन बाधान उद्यानती की (बृद्ध- ग्रंटनांट, द्वयं ,

ध्रक्राच सिकालको

प्रच्या पूरी करना । प्रकाय—वह तो दिल कोस कर अर वस्त विकालको (भानव त्र)—प्रेमचंद, ९४

अवद्यानो पर पाठी पहेंगी

(क्या • मृहा•—भरमान डेंडे पहनर_ा—सिराना)

वर्ष स्रोतना

वय ज्याद क्रमता । अयोग---श्रीर रह उस निर्मित अय गांन रहा है । (बनुध--सारतो, ३२ ,



अर्थायशाच होता

पैसा कमान के भिग् बहुत को नेन माना । पंचाय--प्रकाशक प्राप्तः अच्च विभाग है (१९६० के प्राप्तः प्रदेशक शर्भा रहे

भारतको नका है। सन

वे-तियाव लगे । प्रश्तेत—कोई बालोन नाम का बोध निरं पर है किए भी नहीं दक नाम है, वहीं बनानंत-नाम के सामें हैं। (मोदान-पोमचंद, नक्ष

क्षार्थी की फटकार पहली

बहुत बड़ी मुश्रीबल गड़ना । वर्षात्—सर्वा को निर्माता पर क्रमी की प्रत्यान गर्वे । शा—कोर्तात ३१३

भ्रतिष्ट को प्यास हो जाना

मृत्यू को प्राप्त होगा : प्रयोग—इसके धन्तिरं का मुणाना बादे भीर मनीन वर्ष यो जगनी हुई सनीन नार्वित्राम अवनो करी जनभी में ही धननात को प्यान्ते हो नई है कोहिक—खट नाठ, १००

शबचि गिनना

क्रमेशा क्रम्मा । प्रयोग - अवस्थि यसन १५ तम या गोपन सब्द इनशी नोह सुन्तो । सुरु सारु न्युर श्रम्भा र

प्रचित्र बदना

विदेव विदेशक करता ६ विदेशक्त जावन चर्चाय वही होते इस भी भीड वई आशोरित पुरु साठ—सूर १३६१ , बीका साति भीचि पण दिय की के कह को विदेशों पुरु स्थाठ - असमोन्द्र ११६

(समान गुजान-अवस्थि देशा)

भवसर खुकरा,—दाय में बाते देता

आग कृत मुक्तानर का नरज क प्रत्यना । प्रकाय-स्वर सर सन् ननसर कृता कात्र म द्वार दोन कृति हुकर १ रामक का-सुक्ती भूकदा । तोको को सक्त मान स्वरूप कोर एक क्षतान का ना ना ना उन कार कार्य के प्रस्ताह के का

(८४% प्रथः अपसर कारा

अच्चार सम्बता

सी द १ व भा तो द रबा हरतसर रूप स्थान स्थान स्थान स्थान है । राज्य के सुरूप्ता स्थान स्थान

रचात यहातः स्थातदास, २५५ (सनाव मृत्यः अधानस देखसर)

भवनर 🐠 भाग

मुप्ति विस्था । पश्चीम—यह तो बहुत क्यां व्यवस्य हार क्यां है, क्या क्यार प्रयास्थ्यं में लगा हो । (१०० १) प्रेमक्ट १२०

अवस्य राध्य सं जाने देना १ अवस्य स्कृतनः ।

अवस्था उत्तरका

बुकामा कानर अवाली न वह बानर । प्रयोग—मैं पृह्मती इ. बन मनी अवस्था उत्तर कामती चौर है श्रीरण हो बार्डनो तब की बचा चाम इतनर ध्वार करते हैं मुगळ-वृक्त समी, इस्क

(मगान मुहान-अवस्था दृत्यमा ।

भवी की तस्त्र साती सुरगता

भीतर हो भारर जलत ल कुछ जाना । प्रयोग—समृद्धिः रहत्रमुख दुन्तित नरभी । स्वर्धा भनश हव सुलगह सातो रामक का सुरुक्षो, रक्षा

अर्थान्या का लट और कायाद्य पर शुक्त लगात्रा मृत्यवात वालू की परवात न क वा और व्यक्त की बस्तु को महत्व का ३ वचान—उनकी विचानत अवविद्यों की बुट कीर कोवलों पर पोश्रर का चौरतार्थ करती की प्रेमाल प्रेमाट १६%

सम्ब संक्रिक

आप की भाग तक करता । प्रधात---आप तो इतिमान्सः गाथ रहे क है । स्पष्टमान के पत्रः नाष्ट्रमान क्षापी, इतक

भौत्यान अनल हाना । युग युग तक शहना

त रेस हिना प्रश्नित वर्ष स्थापन वर्षिक स्थापन वर्ष आहे करा रेस व क्षेत्रत कर स्थापन वर्ष सामान्य कर्षा व स्थापन वर्ष असे पुरुष

(बनाव कृत-अदिवास अटल होता, चिर हातर)

अविद्यान युग युग तक रहता र अवद्यान अचल क्षता

अहियान ज्ञान

विकास राज्य । इ. . वीर पार्ट सम्बंधि प स्था अर्थन्य पार पार स्था स्था तुलामी ६०६

शांक काता

यांक में शाली सूत्रत और पीवा होता । सर्वाध---शांक पानी के बह है वह गई, सांच बाव सांक ही बाली रही , बोलठ---हरिक्षीध, ३४ /

आंग उधारका

समय होना । प्रमान---विन्हाने नही श्रीय यह तय तथारी (कुमरील--व्यक्तिक १८००

भोक्त उदारी शहना

पतीक्षा में प्रमान न नाता। प्रमान—श्रार कर किया क्षणीर क्षण किन्, विसि किन शहरित तकारी (क्षण क्षार)— सुर, श्रांद्रकः)

आंक उटला

- (१) व्यी नजरों से देखा जाता । प्रयोग—अपनी तहन की फिक्र न की पर नार्यास्त की ओर किसी की बाज की स उठनी काहिए (भान० (१) - प्रेमकट, २६०)
- (२) प्राता पूर्वपृष्टि से देखना । प्रधान—कर्म की समना प्राप्त करने के लिए जार-नार कर्मों की बोर जान उठनी है (विताय (१)—क्क्स. १६६), यह उठा जो उठ पर सम दश भरनी पांच उसकी ओर (भोर--वरकत, १४२ मसपुनक समुदान की जाने उत्तर उठ वर्ष (विकास --भारत देखी, ७५)
- (a) क्या दरित होता । यशीय प्रांत । ते न दर्गणका पर रहे, श्रीय गियतो के बढाने को उन्हें (बोलेंक—हर्यः ग्रीप, २०)
- (प) हेर्न की क्षम्य होता। क्योन—यहां कर कि पाइनी भोक के प्रमार कार्याचीरको नोम अंत समार्थ के भावनी तरफ उठने सभी (पुरु एक सुदर्शन, स्था)
- (४) औरताम् युक्तस्य याचीर क्षेत्राक्षेत्राः प्रश्नः देखिल् भागः भागाः।

आँक उठाकर देखना

 हे निर्माद में इसको । प्रयोग - अब स्थापन नाम अपने इस्मि-शिक्शनार १। पहलत हर - अस्य सम्बद्धाः प्रदान

- (२) पुरायमा करता या विरोध करने का समूस होता अग्रम्यत्व का साथ रकता। प्रयान—शाम में जिल सम्बद्ध वस्त्रमुख, समाक सादि के श्रीकरमाली राज्य के और देव ग्रम्थां सूत्र में बचा हुआ वा उस नवय दिवका नाइन का कि इसकी सम्बद्ध मांच उद्यावक केवता जिल—ऐसी यद ।
- (३) बीर वे देवना । प्रयोग—कारो भीर श्रांस उहाकर रावित को विशा बाव बच्चे काशो की ही चारों सोर कहन। है /बाठ प्रेक्षात ३ —आस्तेन्सू, ६३६)

भौक उठाकर देखने बान्स

पुर्विदे में देखने बाना । प्रदास—को प्रमु मंत्र घोति विकासीनहरूम । सम्बद्धाः —सुलगी, ४३५

भौक उदाकर भी न देखना

2 U7 5 E

- (१) तुम्ब नमधना नगरतं करता। धरोत—िंगा रिन्दी की ओर पहले काम जांक प्रकार न देवते भ यह रावकी जांका का तारा ही बची की (सुकतिक— बाठ मुठ गुठ, ११०
- (२) ध्यान व देना । अवाध—दुकान पर श्रमी श्रमह है नोन पान वे वद भी भीरत भी । वदा समाध कि विभी की धीर जांच उठाकर वेखा हो। गंगमं— ऐनय द २३७ /: पॉयर में कुछ जोत नियाने बटार रहे क उनकी भोद उनने कांच ठठाकर देला घर नहीं दीशा
- (१) खंतर करने या इंडरनमा नाहम की त कर शासा प्रतीय—निम दिस गेंचा हो कामया उस दिन कोई थी इच्छा खोच उश्लेकर से देवना (स्कट्फ-प्रसाद, ११०); चीर बंद तथ वह स्वाचीन चा, मगथ कसाट था, कीनम को खोर बांच इसकर भी नहीं वेच जनता या / बैजालीक (१)—बद्धक, १५



- (४) सन्तः आदमी होना, बुद्धिः ते न दशना । प्रयोग ---वद् किसी दूसरी मिहरिया की सोर धाँच स्टब्स् सी नहीं देखता (भानः (१)---प्रेमचंदे, ३०१ /
- (६) कामे में इतमा काशा होता कि नेमने का भी दशम न मिरो ।
- (६) बहुत सक्तानु होना -

भौक्ष उठाना

- (१) कुरी वृद्धि हे केमना । प्रयोग—किश किमो की राज्य जोन की न बढावें (२०१०—मुदरांन, २००)
- (२) हाति पहुंचाने की केटा करना । सर्वाच—हुन्य के सहरे हुन्यत में किस की प्रजान है जो गाही रैनन कर बीच प्रशासना (संधाठ संसाठ—संघाठ देश), छोद
- - लाक्ज देशानां

शाँक उत्पक्षना या उत्पक्षाना

हंग होना मा करना आहय्य होना । प्रयोग—का करी गोड्या अर्थाद सर्वे अभिन्ती (माठ प्रकार, दो—कारतेन्द्र, इस्ट्), कामें । तेरे काम-अश्य में की बलका हूं गरेका कारता—चेत, इठ

भौज देनद जाना था दलट देना

- (१) पूनवी का समर वह बाना (मरते समय) । प्रवेश— यहाँ नक कि कई बार उमकी बाव्य उसर वह राज्येता— प्रेमवाद १५५ : कनाम दो दिनांक्यों के भीर सांख जनर दो पीलीं — बतुरंद, इस्प
- (२) यमन से स्वयहान में अन्तर आता 1 प्रयोश—कट नय कर वि पास उत्तर कर तरेग केम न इच्छ कई कानी बोलाल हरियोध हुए.

षांख अंची व होता

11) रस्य दिसार त सोना जनम तिल्या न देशा प्रमोग तम नरीन को क्षेत्र तसाना बन्दर है पर होनाओं साम प्रोकी जाती ही नहीं भूमतें भूक सुराधीय है. (२) जरुवा के कारण सामना स कर वाला । (समर० भूता+—साम्बा द्वापक म वहना)

भांक ऊषी रसना

- (१) आस्वमस्यान होता । प्रयोग—धांक क्रांकी स रक्ष सक्ष बच तो आंच क्रंची भागा घडू केने (भूमले०— हरिक्रीच, दश्: (→)
- (२) भानरम् क्र.सः स्थानः । देशिषः वर्षाणः (⊕)

यंग्या इस्त्री होता

- (१) मन्यर्गनत होना । अयोग---बांग जिनमे हैछ ही इ.ची हुई क्यों न यांको पर विदाय हम उसे (सुमहै०--हारकोस, छ
- (२) पुरुषो का सामना कर पाना, जनमं कुछ कह पाना । प्रयोग—भागे ही यह रहा के भी को आंख इर्डकी होती कंस ? समें0—हांटफोध, ६९,

भाग मोट काड़ भोट होता

संग्रा कड्याना

- (१) अर्था पर बरेर पढते था तीय के कारता आसी हैं पीड़ा होना। त्रयोग—नश्यना अर्थ न सम सक्ता काशा त्रव मंत्रा बरेल क्यों न कडवानी (बोल्डल—हरिस्सींड, ३०.
- (२) तीर पाना ।

शाक्ष करणा

्राट राम ज्याना स्थला । २ (ग. १८) तमको विकित्ते इतसम्बर्धन कहा सनने की करीब स्थलक सक्क इतिस्थल १००९

अंग्य का अधा गांद का पूरा

सर्व पत्रवात । प्रयोग सर्व तो यह है कि जो कीई तथा ही योकीत अध्यक्ष क्या गांठ का पृश्व पिनेगा को हेगा पत्र पीठ पठ साठ पिठ १४३ - क्या के अधा और मीं के पुग की लक्षण अध्यकों सी उपनी ही है जितनी मेश को गोंटाने प्रेमबेंट २३५ प्राचीनकाल पन दूनननदार प्राप्ते मगश्रात से स्रणन करोड़ की पीनाई की भिला के साथ श्रांच के संघे तीत के पूरे बाहक की भी मांच करता का (सेरंo—गुसाबo, gq)

आंख का कांट्रा

मन का दूपरेक । प्रयोग—आभ भी जीका नहीं कांद्रा करा है परकारत कांक्रक २०० व तक जूमते ० हर्वकोद ६०

आंस का काऊल व्यामा

सामने की बीज पूरा के अगरा । जयान—देशने ही देशके की के गया जांकका काजन पूराना है मही (बोलo— हरिसोध, प्रभू

भांक का तारा

बहुन प्रिष्ट कार्रिता । अपोत्त—सो ती पानप्तानी नांको नगन को तांनी, नांनि क अपन क्याने प्रोध्यमाद प्रश्लिपन इ क्यानेक सन्तापाल प्रश्न त्यानि प्रान्त पन नांकन-मवस्त नुम गम नैनन के तांने (रीधाक पंचाक—नांकाक द्यास, प्रश्न माना की नांको का नांचा, नांच का बहुन बाग कुंचारों (मर्मांध—वृदिश्रीध, १९२); क्या के ध्यन्ती मालाकों की नयन-साराय नहीं की है (बायक—हंक प्रकृति, २०४) (समान मुद्रान—आंका का निल्ह,—जुरा)

भांक का तिल को देता

संधा हो जाना । प्रयोग---नयो व को रेपे शांच का निस में श्रीमका तेल औं निकारक (चंत्रनेo—हाँ।सीध, १४

भारत का नेस्ट विकासना या निकल्यानर शामिक काम करके सांस्रो पर बहुत और पहला वा समाना। प्रापीय — अहंत का निलं है पर इसे प्यारत, शांस या तेल तो विकास कर्म (बोलाय—हास्स्रिय, प्रदे); क्यावले के पंत बहे ही पही है। युक्त पहलावाद आका का तथ थीन क्याव या कामा निकास गया ,प्रदेशके प्रश्न प्रदेश प्रमां १५०

भाषा का पर्का

लक्ता ३ प्रयोग--पूटें, पानी न ही वारी भी जिन सामः में (साकेल--गुप्त, ४४%)

भ्राम्म का पार्तासिंग् ज्ञाना, दले डाता, सर ज्ञाना

करने में स्वसंक नहीं रहता (सी० सू०--सा० मह स्व), दूसरी करती होती दो धूंड न दिवाली । सांस का गानी कर बया है (गोदान-प्रेमक्ट, १५८); तेरी धौम का पानी घर बया है तो तु नाकर मच्च (स्ट्डा०(३)---यजपात, संदर्भ), क्या लगे इया मन खुटो रे विर तथा प्रांम का पानी (नुरंक---मक्ट, ३१), तो गिराये किर न सीतो है नके विर वद ने सांस का पानी तिरो (बालव---स्रीजीध,

(वया - वृहो - - आंख का पानी उनर जाना ; भांच का पानी इन्ह जाना इन्ह जांच का पानी चिर जाना माच का पानी हार जाना देन जांच का पानी सिर जाना

शांच का मागा

प्रमन्तिरित । प्रयोग--क्या अजब यर शर जिये जाता एके पांच का बारा अजर कामा किर बोला--हरियोध, प्रम

भांक का सच्चा

कुर्क्ट व रामनंत्राचा (धर्मात—बाधमी बदा देवता दा, हाच का मुच्या और सांच का भी पुच्या (शुट्टात (१)— वक्षपाल १२६

भाषा का हेमना

भीषा में हमी उपकी मधनी । प्रणीत — उनकी शांस हम नहीं की विज्ञाल-समान वर्षा ३५

भीव कादना

रोप प्रकट करना । प्रयोग---आधा तो प्राप काइते ही थे । जब लगे काइते करेगा क्यों (प्रीसैठ---स्मीप्रीध, प्रठ

भाज-काम मृद्धा रचना

अन्यन्त सामपानी से किसी काम को करना । प्रकेश--तो न मुख सकती कुर्मामत को जो कुमा आंच करन रुकते हम मुनठे--इरिमीड, प्रश्च

। गया - पृशाः -- आस्त्र कान कोल कर कलता)

श्रांध-कात देना



आस्त्र कात होना

- (१) लक्ष्याने बाले होता । प्रयोग-पहले शो हम लेखा के श्रांस कान वहीं वे (मैला०-चेषु, २३१
- (२) वेक मुन कर समसने बाना ।

प्रांक (अंगों) की मोट

- (१) बृष्टि से परे । प्रयोग-न्मो इसि सी हमि युष्ट् यनि सार्व क्रांकि बोट रुडि बैटॉइ वार्ड (राम० (स)-नुस्तरो प्रथ
- (२) क्षरिएक वियोगः धर्मक—हमोचय गत-मानी धन्द् इत बतार न नहे स्माठ प्रेसाठ (२)—मारकेन्द्र, ५०३)

श्रांख (भांसों) की और करना

- (१) मायते ने दूर करना । प्रयोग—केंग करह किन वर्षात्व्य औटा देवता छोट बोट कृष बोटा राम० (बास —सुभग्नी, २५६)
- (३) प्रयत्न पूर्वेच विदा कर रचना ।

क्षांचा की कर्मी

क्षाम की कथी । प्रयोग—किय तरह हमको बन्ता कुछ गुभता क्योंकि हथमें आंग की ही है कभी व्यक्ति— हरिजीधे १४५

प्रांध (आसी) की किरकिरी

मुमने भाषा भाषित या बाग । प्रयोग — नहीं तरह अदा विमा हुआ चाटा यादे भी बाटक के लिए धाम की फिट-फिरी धन मनदा है (मीर०—अग्रेश मासुर, १४२), विचिक्तरे यह बांध की बांधे के अन की हमारी कांग्र का तरण रहा चांस०—हरियोध, १५४

श्रांच (श्रांकों) की पकड़ में माना

दिश्रमाई प्रता । प्रयोग—कृष्ठ क्षय देवले ४ हर्न के हम-रात्स वादी का यह गहना योगों को प्रवाह में का जबा स्थान कुर वर्ष ३१५

भांज (भांखों) की पुनर्ता फिर ज्ञाना

मारागः शन्त कोता १ प्रेयं गा एक अंशो में कोत्या को पूज सिम्यो विकास कोता प्रमीचन प्रेमेचनी ३२५

आंक्स (आंखों) की पुत्रती बनाकर रखना

मान और प्रमाण स्थान को दिशि पुरत सनक स्थानकारी करी पहिल्लाक राज्य भएका सामग्र स्थान सुरक्षणी ३९३

भाष (आंखां) की पुतर्का होना

वस्थत प्रिय होना । प्रयोग---राजकुमारी सभी सिसोटिया की बास्तो की युक्तमी है (किंगक--प्रेमी, ११८, तुम्हारे विशः, कामा, दादी दुम्हें कामों की पुननी बना कर रनवान भिसाक--कोशिक, ९०% भीर कम्माजी नुम्हें सांजो की युननी बनाकर रक्तकी (६९७ (१)--प्रेमचंद, ६६

(मगर+ मृहा+--आंच्य की श्रीशनी होनर)

भरक (भागों) के मंधे

पूर्ण, बजानी । जयंग---- मैं बुद्ध र्युम् 🗴 के आंकों का अबा बोएं ही हूं को रंगर हिमा कर बेर नार्च (आठप्रेक्षाठ के अन्य को हो हैं आ रंगर हिमा कर बेर नार्च (आठप्रेक्षाठ के अन्य को अप को का का को भी) जीतर बाह कुछ न हो, शहरिया रंगीन हों कुछ भिष्म हो, पहार्य-किमार्ग बरक न हों, मकान निवम हों (रंगी हुई धालियों हों) काकों के अब नोम नहडू हो जायने बद्ध के पत्र----पद्मठ हमी १२२०

शांक (जांकरें) के आगे

उपनिवर्तत में, सामुख । यमध्य प्रमानं सुख गम्भ समन दर्ग अधिपति आगे संगो सुन साठ—सुर ३४९१); यह समु मा दन आधिन्द जाते (शामा (अ)—सुलसी,४३८); इरि मम सर्वाचन जाने रोस्तो (भाव प्रधाव (३)—भारतेन्द्र, उपको; स्म वृद्ध कग्न-हित के कार्य है पशु पागे विद्यव—हरिकीध, १९४

(गग॰ मृहा॰--आंच के भामने)

जांच के जाने अंधेश का काना या होना

- (१) अस्थरक आपन जनक स्थित का मा गहरा। प्रयोग — जन से तरि का से सिमारे ठम से हमारी जॉम आमें नचरा हो उदा है (प्रेम्ठ साठ— सठकाठ, २६७), १ कि नचे ठीक हो जाने पर जन सेन देन की बाले होने अवती तक कृष्णावन्द्र की आभी के सामने अधेरा जा जाना वा (संकाठ— प्रेमचंद्र, ७ , (४))
- (-) सराम सुन्। दिस्तवारी पटनाः प्रधानः जिस् वस्त इसका बढ़ नाम के साथ निकान भागा गयान करता है xx बांगा के सम्भव कारण सु जाना है सेधाउ देखाउ राष्ट्राठ देखा ६५७ व्यक्ति प्रजान (+ अ) ।
- (३) राष्ट्रवारी प्रार्थित कारमा सरमार अर्थ शासाः प्रथीम



पेट म सभी हुई लांक से सीत एक बार दुल बर के उह जानी है, जबकी जीको के दाने बकरा दा जाना है जीवर (२) बजाय, १८६१

भाषा (भाषाँ) के तले शाना,—नीवे साना

- (२) अवसा को मुस्तर काला। प्रयोग—वेद र्याल तब बानक क्षेत्र प्रय न अधि तर आवत कोड सामक का — सुलको, २९७), वृष्णान् गृना दिन क्षण प्रतोदर और्ताह होति न भानत है (केस्पर्य)—कस्त्रय, ३८.. क्षण कोड बहा बाते से कीट देन का है वृष्णीन हो से क्षण के न्या के कह न भीक नाही कहें करहें कीर नेवा प्रशंनी (प्रमठ कांबस — घनाठ, २१४

आंख के नारे हिल्ला

प्रमाना । प्रयोग क्यो जनारे जिल के व उनने हिल सके जिल के बोल के अन्ते क्योंक हरियोग, ३५

आंख के तीचे जागा

रे॰ भाषा के नहीं साना

भांक (भांकें) कुछ जाना या भूनका

- (१) और दूरता । प्रयोश—यम कर्न्ड करो, बलामा समुद्र के साथ सोने की गढ़ा चौर अभी उसकी जोग नहीं मूलन की सात प्रताल, १/०-भारतेन्द्र, ६४६ , एक दिन क्य सुकर मरी जोग मूर्वी को सर में कुछ इसका दर्द हो रहा का इसकात-भाग करों, ६)
- (२) हाम होता, वेमना । अथोन—दिकार' का गरी मूझ है कि तब तारी सकती विन्हायत को ने गरी तब मार-तीय मोनो की हुछ आंखे जुली हैं (४० ४० ०० ४० तार मिरा ६३ एडट नया का नामनवासो ने तान का ने हैं आंगा समार हरिक्षीच १७१ जब अपन विच वा ने नज साम जुलबी कार्य समार्थ हैं ने नीम की मान भागा की पायक का आंख अल्या केंग्रेस के नीम की मान

) तरावर धाना । प्रणान नवन गिल्पा धे । पर ज ति दिया । तस्य वियो, काले कृष आवेशी (सालाः) — प्रस्ताद, go

- (र) बारवर्ष चित्रको हो बाना । प्रयोग—बाग-बागिव, अतरक भवक विज्ञको को चराचीय पैदा कर देनदानी रामनी देनकर औद जुन बार्चगी (मुलेक—मगठ वर्मा, ३०७% ऐसा काका हो कि महत्वे बाके देनकर प्रश्रक उठ । यह री बोब जुन बाद (गवन-सोमबंद, स)
- (x.) पुथ म होना, स्वरंग होना ।
- (६) नावशाम होता ।

वाच (शांची) बाह्य कर

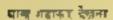
समाध बुंधकर । प्रयोग—बहारश्य साँतक साँध बोल-हर देखा। (शाधाव प्रयाण—शाधाव दास ६७२/; हेनी वृद्धि धष्ट हो गई है, मैं कोल बालकर नहें में गिर रहा। हो १९१० १/--प्रेमबंद १३५), देखी बोलकर बोल मूनो बोलकर कान (बुद्धक-बक्बन, ४४)

भाग संख्या

- (१) विनी को अवस करना ज्ञान देना । प्रयोग—अम्पु पान्यू नाचा अब बोके चय जो अहे नजन दिनि नावे।पद०— जार्थमी १४।१०% नदावि अनुनार अवसा नहीं बना नपापि बोग्य नामां की नाम कोनारी सांच सीठ—महाव दिए. ४३ , बहुत का यूक बांक बोनारे । न्याय यूना पर नम को तीना अनंज—हार्रिकीय, १६८, विशानीका पूर मेरे नामन को आंचे बोनाने ही जीवन पंच का जो वृद्ध पहा यह विशा दीलाको नोपर करनामां दी (अपनी संदर एए), २६
- (२) बस्य पाता : प्रयोग-सोनना इतर सम्भ सोयन पटती तपर मृत्यु सम्भ सन्। १४म४-१४८, ९६
- (1) पशुओं के सम्बंद का सम्बंद में तीन बार दिन प्रध्यान प्राप्त प्राप्तना (
- (४) आण पनपानाः।

अभि गदुना

(१) किसी करनु पर तमर सभी होता (प्रयोग---मार् भने हो कान्ह बान अय-अग नो योगन) हमशे जीवन कप, अर्थिक करकी यदि सामत (सु) साठ---सुर, २०७९ , विक्षित्सको है प्रवत्त कर परिव को नम तुम्हारी अधि तम कर हो गरी वोस्त- हरिओंध, १६



- (२) प्रांत में पीरा होना ३
- (३) भोषा धवना ।
- (४) वृद्धि जनता ।

क्षांक गडाकर देवता.

बहुत ध्यान पूर्वक वेसना । अयोग--- बाहर की दिया में ओक नहाकर वेबने सक /मृगठ-- वृ ठ वर्गा, २६ न महेगा म आंच के कोई हुक अगर दीठ को यहा हैन कोलेठ---मृद्धिकीय १२९

प्रांच गड़ाना पर गाइना

कृष्टि कमाना इक्टबी बॉबना । प्रश्नेन—कृमार्गनिय ने विश्वनेवार वह सानी कांचे नहां ही विश्वनः— भगत समी भूगों, कभी प्रतम की वेच देलती हैं और कटी हुई पत्रम पर यह तक ऑफ्टब न हो साथ, पांच गाने पहली हैं (स्थाना— प्रोनेन्द्र १०., नव लोग बोडा की बाद इक्टकी नगान ने और नै इस बर्गनों के कृष्ण के मादों पर आयों गहाने का प्राह्माराज्य-इंग ग्रांजों, २०६

(२) प्राप्ति की तत्कर इन्हा होती । प्रवाद—यह जाएको मुभवन निमन्त्र बनाकर मधपुर का पत्का क्यतंत्रा स्वत् निभाव का प्रवास पर श्रीक नवारका । विष्ठ प्रेसी, १७.

भोक करम्बीध होता,—बीधिया जाना

- (१) किसी बालू की प्रसरी टीमटान का बहुत बाकुर करता किया करण और इस लेख को बाल प्रधान नार्याच्या ने नाम । धर्म्य चौक्या है। है, साथ च न पन प्रतरता नहीं प्रदेश के पश्च-प्रदूषत मानी, १२३.३ चनकी साधा ने भागों होती बजाबीच (भीक-क्यान, 200)
- (२) विसी वस्तु की चमक दमक के कारण अस्ति का न दहरता ।

आंग खदना

- (१) नदा का नीट संधानका ना चड़ जाना । दवाल कुछ हम भी नया गण थी। चड़ दण्ड इसकी चड़ी कड़ी ब्रोटर कीटर हरिकोठ ३६
- ,) गस्म संप्रतिक प्रकार चलंग तथा नाम समय बगाप्रीय नहें दहि स्थारिक द्वारा साधार दास ५३ ,

मृत्याको **धांक कर वर्ष** (कोटी०ः—निरासा, १३९); इपर लो उनकी धांक भार भी बन्नी रहनी हैं सितशी -दसाद ४४

(३) मृत्यू के पूर्व पुर्तानमांका उत्पर की भीर स्थित होता । प्रयोग नाइ वर्ष अध्य, पलक भित्र हो गई दल पका आमृ हरक पहा गरवन (बोला: -हरिक्कीय, १३६)

आण पहाता

न्त्या करता । प्रशंध—कांस चढ़ गया त कीन अला सांस प्रथमी बहुर चढ़ा करके (भीतिः—हिस्तिधः, १३), इत वर चड़की कुछ बांक चहाकर यह कह कर कीई पर्द पुत कहात —मूतिरा प्रथ

आंचे समकता

भांच चरने ज्ञाना

नामन की भीज पर नजर ज होवार कही और होता । प्रमाय— भाग परने म को गई होती दुस तने जॉब के त क्यों दाना (बोसक--हर्दियोध,४३

आंच चलका

नाम ने बहेम् बहुना । प्रयोग—हा करणास्य भाव हो । बसी [†] इस्त [†] सृरादि [†] काटि हिथ पूर्व सस्ती (बेंद्र० प्रयोग- संदर्भ, १८३

अप्रक सन्दासः

अस्ति स द्वारा करना । प्रयोग—हैमी सार्वे चनाना है। असे को वित्तना फडकानी है (मृगवः—वृ० वसी. १४६

प्राप्त न्याकर देखना

िया कर राजना प्रयोग सूर स्थाप का स्ट्रिकी नापरि विश्वपति तन चरणा है। स्थाठः सुर २००३ अने प्रश्न केन्द्र कर रहा का तन नह बोग प्रशास्त्र कर नासी की प्रोट राजना था। सूछः द्वार प्रशासन कर नासी की प्राट राजना था। सूछः द्वार प्रश्नित है। इसका पाना नेतन के अन्याव। अग्य हार्ड स्थानिय प्रश्नित सुधी नो वह क्षिक इतनः द्वारित में नाल नासना हुआ। इसकी वह स्थानने नूरन राजना है। जैस् जो श्वार जोशी १३५



आंख बृरा लेगा

म।कृष्ट कर लेना। प्रयोग—वृदाती किसकी जार्चे द की भागकती मुख पर नहान उसंद (समंध—ह्वरिक्षीध, ११६)

आंक (आर्था) व्रस्ता,—शिपाना

(१) कतराना, सामने न साना । प्रयोग-सान दियो मन् कीर के, वनर्ट दीनी वीर्ड । कीव चान वह गवनी लाल, मुचायत दीठि दिहारी रस्ता०—(ब्हारी, २५०); क्रीन धनी अंशियानि दिनाइकै हान सनीत मु दीठि लिखे (धनव्यक्ति—धनार, १९): बोमो. है या नहीं ? बाजे स्वी खिराते हो रे (गंबन-पेमचंद, १२६); बांध का साहकार भी पतिपक्षा स्थियों की भारत बाजे चुरावे करा (मान्व (५,--प्रमण्य, ६), स्त्रीमी सी गोने बालों को भुग्या गहा अध्या । भगना दिल्लामा नामाना नही असहा पैतरें - महरू ११६ कारता इस विकास मुख्या न राहर काली वो (प्रेमा०—प्रेमचंद, ३६६) (🐠)

(२) लज्जा स बराबर न ताकता । प्रपोय-वार्तिना शील, मध्यती रानी, निरमक तैन च्याई (सुर भार-सूर, १६७१), नेरी आले देश पुराते हैं पाल का में बाह .नुस्क—भक्त, ३); वेकिए ह्योन (१) में (⊕) भी

आंख वकता

द्धसाप्रधानी होता । प्रयोग---वृक्त अपनी क्रम नमय पर रोज की चरिक श्रंथ दिन भूकतो ही को उही (पुनरी०— त्वियोध, ५५.

आंच चौधियाना रे॰ आंख सकार्याच होता ।

बांक धन से लगना

- (१) प्रतीक्षा करते शत बीक आना । प्रयोग-मीच नं गत बीत बाती है, बाच सत वे नवी पहली है चुभतेः—हरियोध ३१४
- (२) टकटकी समना (
- (१) भाकतम् जाना ।

क्षांच्य द्विपानर देव आंख सुराना

श्रदेश (आंक्षें) जसता या जमाना नवर स्थिर होना या भ्विर नवर से देवना। प्रवेश--- शरक ने इसको देखा परस्य द्वारा स बसा क्षका ·पूर्ण—पूर्ण वर्मी, १४०); उत्तर में मैंने मुम्बरा विद्या और बाक कोम कर पका दी (बाजव०—देवराख, १०५): एकाव वन्यो । सोयो की बासे अप नई (चोटोo—निराशा,3o) (२) तने की नियत होता। प्रधाम--किमपिये पाला विभन्ने तम रहे नाम पर ही जब अभी कालें रही नुभतेक--हर्निद्योधः १२४

धार्च (धार्च) अर्मान से गड़ना

भर्मा भागर वर समांकर बेंग्बे करती की और एकटक रमना। प्रमाम—उनकी बीबर सुकी हुई थी, दान परनी में कड़ों हुई भी ।बाल्फ-ए० ५० ६०, १३७', 2मको आच पुमार्रागरि से हटकर दूरवी पर गढ़ गई वित्र - अग् वर्षा, १४६), उसकी साने जैसे परती प वहीं का गुरी की चैतन-प्राप्तक १७५

(ममान पर) आसी ज़शी से दश ज़ाना, लगा देना है

अरम्ब जलसा

- (१) क्यंत्र होना । अयोग—हाति बाहु दूर शांते ते देवत भारति बरनि हैं। मेरी (सुरु सार्व-सरप्रद , भारत अन जारा रार देख उसे बाल का अस उसे बनाने क्यों बीराए-हर्ग ग्रीस, KS
- ३) वॉम के दुव में बनना या क्रस्ट राता।

बांध (बांसे) ज्ञाना

- (१) जवा होना । प्रयोध---जोत नव केस चली आली नहीं अब कियों की शास ही जानी रहते (श्रीकै०--हर्मियोध ५४
- (२) दिख्यमाई पश्चा । प्रयोग—मामिन ना मिन नानः कह. श्रृति माचितः वेद भुनामित दुवे 'अस्ट०--देव, ९); बारो और बड़ों तक आणे जाती, भीत ही भीद, आदमी ही बरदमी जिन ही सिर गोली—बदुर०, ३४
- (३) व्यान जाहरू होता । प्रयोग-व्योर कृष सामद शह भी था कि रेमा की वर्षों से दिमायत में लोगों की क्षाल उसकी और जन्मनी, कुछ तनाव पैदा होना सीर रेका फिर तमने माहायथ बाहेकी जदी०—अर्केट, ५३



भांस सुइता

रकटकी नहीं होता । प्रयोग—केनुआह अनम सद्य है उन रहे कनक-कन्यों पर अगर दून युक्त रहें अलेस—गुप्त के

आंध्र अंतरना

- () यजर प्रत्यांका प्रत्यां एक संस्थानिका है दिल को भी लोगन और जिल ही 'श्रीय संयय-सूच अप्रत्य अ ओरि ज्यान जिल्लामात कर सुमन्त्रात (स्थित कविय-रहोस. ४३
- (०) प्रम पूर्व कृष्टि में केलन । प्रयोग—कोड वर्षे भाषक प्रमार मीनि मोरि, युह पोरि नीडि नीडि नीनर गाँ नीडि इंग्डि नी जोरि (विहारी स्टब्स्)— विहारी स्ट्रिट, भीडे तथाड प्रेम विश्वन कर्तन कृष्टि मुनुवाड केंट्र स्मारी जोरि (मां) प्रशां २,—मससेन्द्र, इप्रका

शांख क्रयकता

नीय प्राप्ता । अस्य बन्द होना । प्रशेष---श्राप्त वाल के राप्तर असकी भागे शांत सर के लिए असक सहै सानक क --- प्रस्तद, प्रष

(समाव गुराव—भागो भ्रोदना)

भाषा (अग्मे, दंग जन्म

- (१) मृत्यु के पूर्व पुर्शालका का क्यार कर आगा तथ क्रियर हो आया र अधाय-औ क्षणाश वा बहुत दिल के द्यार शांत क्षणा भी क्षणाश दम नई जांसेठ-इतिकीय, क्ष
- (२) नियर दृष्टि सं बसना । प्रयोगः न्याँ वेच अभी तक बसान पर दिने |य में, में संग चिर चर पर एम सर्थ दिक्षीय-नांव (10, %):

भांका (आके) टिकाना, —इहरावर, —धिराना इंदिट का दिवर रह जाता । वर्षाम—कोश निर्माण किवली भाकुट पर, नैन ठहराई (सुरु संश्रम-सूत, ३५३०), नुस्ति गई वकावीथि के, नहीं नैन विकाही (सुरु सार्थ-सूर म क्षेत्र वर्षण कार अध्यय नोका का न वर्षा र वर्षण महिनान र धार्य स्वयती बांका नहीं हिन्ही भाग कहारा १२४

आंक (अन्ते, दहां पहला

वर नोपंदीना। दलांग धर क्या का कुछ ग्रह हत। ४ सुर्गांक देवनार्थ 850

मांच (अरबे) देहां काना का होता

- (१) नाराज होनर । धर्माम---कर सक हम भी घला ही को कर बाम भी देशी कर भी वर्षा करें ।बॉलक--हर्वरजीध, ३०% जब हमारी बाख दही हो गई बनो व देशी बाख में तो इसके (बोलक-हर्वरजीध, ५५)

भांचा रेदा करना या होना,--सिशाना

विसी कोंड को देसकर कुछ होना । प्रयोग-सुप्रदास धरि नर को करनी, इसत मैन शिराह (सुरु साठ- सुर, ६४१२, क्या नवन नम जीतन ताता (११४० - सूट)---सूलसी CDC), इक्की पान विशाद पाय केति हस्य वर्ष नैन विराधः नन्दर्भाषाः नन्दर्भारः व कृतिवारं वनवालेव दरक रज के अब असाही दुष-।बाबा वारियत है (छन्) कारण-मन्द्रक, २२६., वर्षणमा निकामी ताल खाती की कुम्पनी, गाँव राज करमानी तन बन्त प्रथम ते क्य <u>रत</u>— सेनावति, ३४७, प्रभूती पुरति कृति अलियर आज सिरावे मांठ प्रसार(२)—मार्गलेन्द्र, २९१ - मगवान हे निध्य मनानी इ. कि इमारी रामकुमारी को मुन्दर वर मिने, जिसे देव रवायर में स्थानी आव हड़ी कहा माध्यसात(१)—मारतेन्द्र, 101, इस वरते बने और तब बार उनकी देखकर अवली अस्य में कर लेकिन हैं योग देन बड़ा सुन्दर योग रक्षत्र राष्ट्र पर यस अदेश जनसङ्ख्या प्रतिस्थ टा मार १ व चनुर ४७६ वा श्रीत व द्वारम भाके हरी हो जांथ मध्यवादा-- प्रेमचंद, ६१) सुध देख माम क्या कर जीवन मस्थ बनाकवी 'मूर्ट-अस्स, १०.

अर्थेक हेहरजह

 त्रे क्या गुरु के तर । त्रांत्र का अवत्रकीय त जाना । प्रमाम ---प्रकरीकारी (त्रवी हो वर्ता है कि गरम नहीं हत्रकी पीटान- नीवर्णत् वृक्ष्य

करी बार का रेगन क्षेत्र कर को जेसका करीनम् चार कर किया के प्रिक्त में क्षित की मार् किया में द्वित का नहीं है के बीमा की प्रिय मार्थ कर किया है का किया है समस्त्राम् (कहसामा-- प्रोनेन्द्र, १८२), माम निम पर ठहर नहीं पाती वाम में यह ठहर नके केंस - प्रोसेक--स्विप्रोध, ४०) (1) स्थिर दृष्टि से केंग्रना । प्रयोग---विक् "खाब रिक्ता" में

आंज ठहराता वैश आंज टिकासा

आंध्र डोलना

- (१) धम करता, ध्यान में रचना । इयोग-श्रीदावर की नशकी बाज सुरुकुमार पर कोई (मुक्-अस), ६१
- (२) किसी विश्वति पर विश्वाद करना । अयोध—हुए उत्तरित मन के भाष शास्त्र वन अप है उत्पास बाद कर मानवता का संब, शोक नियमय पर अध्ये काम विदेशीय— मुक्तियोदा, २५।
- (३) किसी वस्तु को ब्याद से देखना ।

आंख (आर्थे) तरेक्ता

गोन भरी वृद्धि से बेमधा । प्रमान—मृति मनिमन विक्रम बहुदि नमन तरेरे एतम (राम०—(वा) मुनामी, २०४, अभ्ये जब मोहन रन महे, क्यों की मैन हरारे को (नन्द्र० ध्वा०—नंदर, १८६); जो भरते हैं नारने का दम उत्तरा बाग नारना दया ब्रातिश हो। प्रीध १४६ मनी उनके पास से पूर हुए गई और आसे तरेग्नी हुई बोनी— कर पर्छ द्यारा उपाय मोन्छ १ दमबद १४६ माना बाई न आरा नार नहीं का हान दनका पान गुना नी वर्षन कार कर किसवा देंगे (साली०—वृंब वर्मी, छा)

भांच तृत करना या होना

दसका सुक्रपाना या होता । प्रयोग—तृत वदन देख जिला ये कृष्य होता म लेन (सुरु साठ—सुर, २६१५)

आंग्र थियातः दः आंग्र दिकानां ।

भाग्य (आर्थे) दिवानः

गरमा नवना काण कराना । प्राप्त नाम अपने का ह प्राप्ति विवास काम का मुन्ति देशक अवता प्राप्त अव दिन्ती हराये वादे लाग कान काम अपने किया ने डाक्टण ठाकुर २७ , वास में प्राप्त काट आम मुख विवासी गुंध निक क्षांत्र मुख्य देशक विवास है नव प्राप्त कर आम मुख्य पने की पनना स्वासीन विकेश हों। मंध ३७ हम बहारानं राज्यपो र प्रकारन संवक है पर र्याद कियो ने परण कियाई तो हम उसका प्रकार स्थार मानते हैं (कार्य-क्रांप दिया २५%), मैन तो निरमय कर विकार है (र प्रकार कर्षों आम दिखार्य तो में भी इन्ह्र मता चणा दुवी (मानव्यक)—प्रेमक्ट, ५२)

भाग देकर देखना

रुपटक दशका । प्रयोग—न्द्रप्तह देशि दृष है कहा मुहि न कार कहा कुन । ये बटो कृषणानु की तृ बहीर की पूर उसर —क्ष्माका हुन्न

सांच (बावें) देखता

नम्सा या रहेव नहना । अयोध-देव ने श्ररण नयी कियो १९४म पर नव महर नयों गढ़ कार्य आस्तु नरिप्रीश ३%,

भाग (भागे) देता

- (२) ज्यान दनः । वर्षान—समय मोर अपने पृथी है स दने रेक्सरीय—स्थितीयां १५७,
- (३) बजान दूर करना १

भांक (भरने) दीवामा

- (१) ज्यान वेना १ अधीन—सीड में हम है बहुत पीसे यह रूर किया न अध्य होटाएं करः चुमलेश हॉरबीध्र प्रक
- (२) चारों और देवना ।

भाग्य से उठानी

- (३) बज्जा आदि के सम्बद्ध सामने न देलना ।
- (च) किमी काम में को रहता।

भारत न उद्धाना

(२) न वषसा ३ प्रयोग—जावनिका ने नीगी की साम चौरिया () है नाटी चीच पर अहरती नहीं (पदाव के यह यहत अमी, १२२ (२) कियी कम्नु का शहर समझीता होना वर मृत्या होती जिसको देशमें ही बने र प्रकोश-समझ कम्या ही बाद परिको वर की मान नहीं दहरकी भी (माने० १७)-- प्रैसकेंट, दुरु

(३) द्वध्य न दिकता ।

कांक ने उपलेगा

(१) ध्यान या बहत्त्व न देना । प्रयोग— दिसने नृम्हारी स्याई पर आका व दालों, तमकी देवता समया XX हाम । नुमके अभी देववाना को खोका ठैठ०—हरियोध, धन-धने

(म) तिका भी व देवता ।

ब्रांच (ब्रांचें) न सिलाना

मकान देना। प्रयोग---किस्प्रेन का बनी है। बायरेक्टर हो समा । यस भी जान भी नहीं दिलाता पैसरे---भ्रष्टक, प्रश्

आंचा न जिल्हा भक्ता

(१) अञ्चापत्त नामना न कर याता। प्रदोश—आहे नामना के पत्नी ने भागे न सिना नाम किनी—किस्सा रहा

(२) वताण था तेन के कारण मुकासना म कर पाना। प्रमोग—मीत विधिद कह देखि न अगढ़। नेई देखा तो उन्ना निक पार्ट (पटo—सावसी, १ १६)

आंख नवाता

भवतना नुर्वेक बरेल की पुनर्की की इसर-उपर करता । धरोग----वैश नए जिन क्षेत्रम तेल कु पैनन का दे अर्थेस अर्थ ही । में समूटी हैमि नेन नवरकन केन स्थापन वैन-तेए ही (प्रमुक कवित---प्रभाव, १५७)

भाग (असि) निकलना

भाष निकासना

गुरुष में दर्शनो । प्रयोग जिल्हान न प्रयोग सिन्तान कर करो नया मानव नातो साराम जाये नात्रका ते जी नेत ते प्रेमप्रनद १४० १४म शास्त्र के स्थाननी केट बारत मार्ग काम निकास कर नाथ से देव-मार्ग ने अन्त भी उस्त कर कर्ष ने अपनी प्रांत र नाम प्रश्न पर निकासकः है भूम (बोलय--हर्विजीध, ३६

ब्रांच (बांचें) बीची करना या होता

भांच (भार्चे) नीली पीली करना या होना

कोक करना या होतर (समाग---वी मी है हमन वेधी मध निरामी उसरे साथ मीली दीकी क्षत्र कर्त वोस०--हां(और प्रथ

श्रीका पंडपटा जाना

आम पूर भागा । प्रयोग—वट वटा गर, म वट सवी जिनमें भ्यों वह वटगटा स ने बाले बालेक-हरियोध, ३५ (भगः महार—भाषा पहुस होता)

आंच (आंधी) पहला

(१) देवने में भश्ता, दियानाई पहला । धानेय---नाम नवन वह दृष्टि परे, ही (गोलांक (वा -- सुससी, ७६) भ्याही आंक पृष्ट पर पढ़ी प्याप के ताब बोसी प्रियंक --स्टिकींस, पश्च साथ पर कमको साल पह शही है (प्रस्त---स्वनिष्ट, पश्च

(४) विभी परन् ध्व नवर होता ।

आंख (अग्ये पश्चाताता

() प्रतासा एक । इस बक्त बाता । समाग — आंग्य ग्यास वर्ष न करण क्यों कुम ऐसे अस् कहीर (समाठ ग्रंडा०---समानदृश्य पर वह सा स्वत हा उट्टी प्रभावत करते करते भाग प्रधान होई (अस्ट्रो०) भेषाक १०६

र हानमा का करियोंन हा उपना सरमाध्यस दानी समित किनय न सादकराम १ दन्दा आही का पना न भा, भाग प्रयोग गई औं । स्वाट २)- **सम्बन्द, ६**२१, जो न स्वाम क्षेत्र पुर पश्चर साम नवश सगर नारे जाने। चुमरोठ—शोरजोस, १४३

आंख (आभ्रों) पर सदना

- (१) वृंदा लगना । प्रथमि स्वाँ वदाकर वाच शाना पर वह (वोलक — हरियोध ३८); सांच पर वद नवा न कीन भाग काच समारे वहा चढ़ा कर के (वासे — हरियोध, १३
- (२) बच्हा सप्पर ।
 - भाग में बना पहला ।

भारत आंग्यों पर पर्दा कंश्वनः, परदा पहना वृद्धि भ्रष्ट होना । अयोक—किरवू लोभ तथा दुर्यामना वृद्धि भ्रष्ट होना । अयोक—किरवू लोभ तथा दुर्यामना वृद्धि भ्रष्ट होना पर बची वृद्धि (स्थाठ—तठ सठ, ६२), वृद्धि । वृद्धा का विद्याधिका दिया दुश्यम पृद्धा वर नहीं । वृद्धा भ्रम हमकी भ्रामाँ पर भ्रमे प्रदार पर वदा है मानश्(१)— ग्रेमकन्द्र, १३), दिला विद्ये हैं साम पर परशा प्रशा (मुक्तिठ—कृतिक्रीध, ६१)

श्रांक (श्रांकों) पर पट्टी बाध रचना

(१) सामन होती हुई बास घर भी स्थान व देना। प्रकार को प्रकार जब प्रभाव नज हुआ को आपन बकान की तरफ से आपने घर पट्टी बायकर दिल्ली दरबार किया पुठ तिठल्लाठ पुठ पुठ, २००३: बेंद का बाच कार्यके प्रथा स्थाप पर बाय न उ हम पट्टा चुमतं ० हरिओध हंड (२) मूर्ण होता।

आंध्र (आसों) पर परदा पडना हेट आंध्र पर पट्टा वंधना

श्रांक (अस्वॉ) पर रक्षना

- (१) प्राप्तस्य पादर करना । जयोग—हो पृषे नेस पर (अक्षावर बार प्रचारिय अध्य पर उन्ह रस वे वृथ्ते० हरियोध भ
- (२) आराय में रमना ।

व्यक्ति (अस्ति) एसार कर देवना

सन्धी तरह देखता । अयोध-हिरित्यी रूक केठि प्रधान ही अगुगिन प्रभागन तरव लगे केठवल १ केठवल, ६२ अस अस्य प्रमान नर दक्षी कि तुम्बार अध्ययकान म पर्स निको मृद्धि काम प्रश्न किया धोर आका रहे हैं पर पीठ---पर नार मित १५६।; जब जाति के दुवा पर हम आस भगनी प्रमार हो हैं भूनतेठ---हरिझीए, ६०:

आंच (शांचें) फटता

- (१) बादवर्ष विवस गा बाना । प्रयोग-वाम घट वी गाँ वही घटन, मानो की नई बनी बांचे (मार्कत-पृत्र १६६), मुक्त की पृत्री मुक्ता, कृषमानु की तृत्री राषा, प्रवत की दृदिना विवसका के नेक घट से वे दिवकीय-राज्यात. १६२-१२६ : है रही पुट कूट बाने की किम विवे धाव है वर्ती पहली विविध-स्विकीयोध, ३३
- (२) बाबों ने बहुत पीड़ा होता ।

भोज (भाजें) फरकता

भाष की पान का बार कार हिलता जो जुम या असूभ भूगक पाना नाता है। द्वयोग —कारतिह मुलद दिसावत बाहू (रामक (का —कुससी ५६५): आप सह आहर, राजा केरी वाहिती साथ कुस्तती है (राधाव प्रशाव— राधाक दास, ६०६,; बाहू केरी तो कुद्रकी ही मही है फरवारी पास तो करता करें (बोलक—हरिकाध ३५

मांच (आंचें) फाइकर देखता

- (१) बाब बोलकर देलता । प्रयोग—जागमा मै आता कार्ड, द्वार, मुचियों के बहारे (सीठ-बच्चन ११३ . देवते आम काद काद गई, हम गला काद काद विकास पुमतेठ—हर्गकीय, ७०) को, वे वायत-देशिय लिये वर्ष उच्च व्हित विकास आमी काद, आप के बाने का मार्ग देख रहे हैं (यह बराग—च्छ० हमी, ३६)

(३) कोच से देखता ।

आंक (शांकों) फिर जाना



कीई मिर हिलाकर जून हो यह (क्या क्यांस- क्यांत करों, राज); भोला की आये कृत वहीं किये कि उस कर राज् में सब बुराइयों ती जूराइयों तकर आतो लागक हो-देमचंद, है। इस फिर्टने कवान में क्यांती काम में किर करें सी दिशमें की (भूमतिक-मृतिकार) है।

श्लोक (बरके) कुटवरना

- (१) और मधान होता। समोच-कृष्ट पर में न केंगन पान कुर कर भी त साल कान कान कुली करियों, ३०), जो का ऐसी मार्च कुर गई के सरश-करण कम्नु गई। नेमान में सालीठ-वृष्ट धर्मा, १४०।
- (२) वृश्य सम्माः कुश्म दोनी । अयोग-हाँ हाः मै गराही करने को नेपार हुँ । मेरा नाम कर के गर्म निमा हो । तथे को क्वकर वेटी वो वाले कुल्मी हैं गिक-दे---किंग्स १९०१, देखकर करना करना अर्थन का कुली हैं कुल, कारी १९०१ कुलीक-हांस्कींक, हुए
- (1) सिमाई-समाई साहि कारों को बहुत अधिक गांच करने व सामों में कार होना का स्थानि कम हो सामा । १२)वे -कामे मीले-मीले नेती मानो पूर कारो अभिक १ ---रोभक्ट कर
- (४) किसी रोग का बोट के कारण क्लेपो का लॉर्ग-दीन हो सला।

श्राम (श्रामी) चेरना

पहले की वी हुआ वह स्था कृष्टि के होगा। प्रधान—
मृति दी मधी क्षेत्र नहीं कर्य होग विश्व-मेचन पंत्र
मृत साथ—शृद्ध, इस्टब्स), दूस बीर से कार्य कही की कृष्टि शृद्ध साथ—स्थान, १६ (१८),
शृत क्षेत्र क्षेत्र के मार्थे केंद्र कर यह कृष्ट करने कही।
श्रीकृष्टि — मारत वहीं, १९); हांचा करनी क्षित्र विश्व करने कही।
श्रीकृष्टि — मारत वहीं, १९); हांचा करनी क्षित्र विश्व करने कही।
श्रीकृष्टि — मारत वहीं क्षेत्र (विश्व-— स्थित्र होता (१८) करके
सेर सूद्ध होता । सर्वात्र—सूत्र नय पृत्व, सन्दर्भ नाम
सर्वात्र के प्रवर्भ केंद्र केंद्र की भी भी भी साथने से नेष्ट्र काल
सर्वात्र के प्रवर्भ की भी भी भी साथने से नेष्ट्र काल
सर्वात्र काल कुर की की भी भी साथने से नेष्ट्र काल
सर्वात्र काल कुर की की भी भी साथने से नेष्ट्र काल

भ्राम (आमे केंग्सर देशता

सार्व्य में दलको इर एक दलको। पेटांग उत्पाद बाज् कुलाका वर्गाच्या प्रवत्य प्रधानने उत्पादन प्रीप्त कर उत्पार विकासीत र समुग्र १६

धांचा पंत्यावा

तथेत करवा । क्योग —गुमशीकाय में सिक्की क्यांग्यों की बाम क्रीसर्व है, बासी महायुक्त्यों की सही (कृत्यहाँ) — नगला, १०

शांक (भाने) क्रीवना

कोई ऐसा बाब बरना जिसमें बाब पर बोर पड़े। प्रयोग—बहा गर-दिन बावें कोएनी परती है तब कड़ी विद्या सालों है (सान्त्र) (१)—ब्रेमबंद १९); दिन-दिन भर वृद्ध रीजरी वें बावें बोरणा हूँ (बोरo—ब्रगार साक्ष्र, ६०)

माचा (माच्चें) बंद काफे

विना वय कल तांचे विचारे । वर्षाय—कान मंत्रंगी
नहीं चार्चाक्ष्मी, यह करेरे काम चार्च बंद कर (वीजेक— हरियोध, १४% च्या की वानों की वह प्राचीन मर्मादानमार काम वद काके वान केमा वा नमलकार —वीनचंद, १ १ नमा व्यान—सांचे सुब करके।

धांच (आंचे) बन्द होता

- (१)कम् होता । प्रयोग—मामून नहीं कर माने कर ही जार किर पह बानी क्रिके द्वार नगरी, कीन आने हैं जानक (वे नोक्सर कर
- (२) बहुतन में पने गरूना । प्रमोत—न्य अंप्रकार में इहाना नश्ने में, बंद मानों को परिनंते में मोने की प्रधान में (पुधारेत (क्))—हर्वनीय 2)
- (१) जान न रंगः।

श्रीच (शांचें) क्वामा

प्रके-प्रके, विशा सायकारी के पूत्र काया । अयोग-स्ती पीन है परिके, फिन हैं है हम ब्राह, फिने बोर्डि वृति गीडि भी पर को सीह क्याह विद्वारों स्थान-विद्वारों क्षित्रमा केम विद्याह रहिंग करिंग-पहिंग, १४); पिन क्षित्रमा केम विद्याह रहिंग करिंग-पहिंग, १४); पिन क्षित्रमा केम विद्याह रहिंग करिंग-पहिंग, १४); पिन क्षित्रमा क्ष्म के प्रकार कर्म में निवस्त्रमें अयो मां ज प्रमाद कर स्वारम संग्राह में को प्राप्त क्रिक्ट वर्ग के सम्मान संग्राह में को प्रिक्त क्ष्म का क्ष्म के

भाग्य कदल जाना या बदलना

राज्या वर्णांच व त्यानंता शाना का रजना अवाह हे पुत्री का विकासी बंदाया कार्र के समझ द्वाल गर्ने ह (वा बदल ्युभारिक--हरिजीय क्षा)(÷); क्यों कुछ बोलन हो रे तुम्बारी तो बाज ही बचन वर्ष भी (सुरु मुरु--सुदर्शन, २५४) (🕦

(२) क्या परिशतन बांना का करना । प्रचान—पत्नी तो इनमें बुनाई है कि बार क्षेत्र इसे और बाब बड़नी (शीदान- ग्रेमक्द, १३०), देव देवका एक का उनने से गुली अस्य वर्षण (मुश्क-अस्य १६); बेरियर प्रमीत (+) ¾ (+) √h

आरंक करकाला

गांक नेवानी । अयोग-- उन्हों अरक बण्याची । कान क्ट भार प्रथमक गारना निया करों। स्रोतीक शुक्र कर्या ५२०

क्षांच्य (भारते) सरस्याः

बांको में बाग् रमक्षा । प्रयोग-तो हमती होती रज यह गाँत, निर्मि दिन बरवर्ति काली पूर्व शान-श्वर 354व): बाके गुन क्या फिल वर्षे बारतम नवा प्रवार (कुम्बंक-नीराधादाक, १० , जायं स्वतन के बदली है कि हम तथा न नहीं, नहीं बरगर्न जननी (बर्क्क--प्रसाद, ३५. , शांक कीच कर करने करने वरत गरी आज कर कर

श्रोष्ट (आंग्रे) परावर करना या होना साधना करता । प्रशंत --क्यने बार बार है उनके जात हानी बड़ी बराबर है ।बोल०-हर्सवीय, ४५

श्रांख ब्हरता

शेला । प्रयोग-- धाय नहीं घर, काम गरी, बुरि आहे जिलादक सांख बहारहे (केंग्रव किं0 सत कां0)

स्रांश (भार्षे) विगक्ता

(२) क्य या विचार में परिवतन बोग्या । प्रधान-स्था भना हम विगय स जायते जब हमारी विगय वर्ष वाच 9 24. Prair #4

the trap day after

अगम भाग विद्या

wice griden etablich fin bei er fam fein gen fe प्रवास को जान अस्य कि विकास मा हरियोध प्र

शास्त्र (भारत) विद्यास

I to unthough the day of the

थी पंच में में यह काफ वाली हैए (मूर०-माह), (j)

(१) वेक का क्रम्यक्रमा के जनीका करना । जनोग---बया विधाने बाच नव केंद्रे ग्रे, आचा विद्यालाई मा दश अनवा तक कुमरीय-हर्म क्याँग, ६० आयी वर्षी शीव जटन की मात्र का बना । वैसे में दोनों उनके लिए बाब विद्यार वंदी हो मुग०- बॉक हमी, १७६

भाग वट जाना

and the graph of the graph of the property of the graph o है बांक हो केंद्र बया नहीं चानी - कुमरीय-- हाँ। घोध ६७)।

भाष (प्रांचे) वर भारत का महका

- (१) कामा में बालू भागा | अवश्य-न्या विद्यार कायरी बांधन क्षत्री नेष्ठ ब्राह्म का प्रेक्षाय-करीत, ३०३% नंपन परि औ रोप पीन्हों बोगन आगर दें। क्षेत्र साठ--सूर, ब्रोटव्या, से विर्देश विर्देश अपराच जल बहुई वर्षि कार्य कुण्डक-रिस्प्रायाम ३३., बाह और कार धारो बने धन्याम भरे वंशिया धरि वार् (वसंच--हरिक्रीप, बड़ , अध्यक्तामा की बाम्ने चित्र कर वार्ट ento doce le
- f nin nu birtiffe-bibn a feit tren fc] मुख्ये ही बचना कर बार्क भार बनुरुव भी बोसेन्स्सर 20 साध--१६ साध, अन्य यह सूत्र कर वात्रियार की क्षा कर कार्र कांक्राच- बीव दार्ग १४३

श्रांच धर देखना

(१) वार्व प्रच्यो नरह राजना । प्रयोग-नाव नन हरी नेन भार बाड, धीय ने मिले सी विभक्ति करि रोड GO UEDO-समीत २१२ . पनि व मैन प्रति रेखा चीड विकास किया कवि भी भवि आहे. पद्क-व्यायमी, ४३० अ । ा, प्राप्त कको घर शाह, केंग्र अरि हम रम्बो है सुर कार- वह दरव्या, रेकं नहीं पत्रहें और शानित बाजी। देने को विषु योगे केसरक है। केसर प्रक हेलांव हे और को चरि होतेंद्र, करें दिन तक मन्त्रीहन नेते 20020- देश E2 ६ १६ वय यह कीन है जो नुम्हे आप प्रत्यार वरेर स्व में देख गये (8200-- £200, 109 - गूगर हरी कुलारच किनची । देखा घर नेम परि जिनकी go quo---त्रव स o, १०६० (०३, वे गुन्नो पाणिको ह हि. बची के बहबने बाने पर भी तमें जाल पर न देखा



,मां० प्रसात(१)—मारसेन्द्रे, २०६)(च्री: द्वा व स्थानं नमन मन मू देश के पृत्ति हो को (दियत—क्षियोष, १६), दन बार बाबू करहा ने नमको को पृष्टि घर के दका (मिस्रोठ—क्षित्रक, २)

(२) तृष्य होकर देवना । वयोग-नरम क्षम नित रवा प्रशंग गाहित नेकु तैन प्रश्न नोचे (सुप्र साप-सुर्ग, ६.२१ प्रशंग पिता स्पारिति विचारो अस्ति नोचन गरिन गेह निहासी साम का तुलकी ३४३ तक एक रूप तम नामी परवार प्रशास कीम बांच परि वेतिये की नाम परिवत है (स्तु १०-मिनायरि, ३६); होनार में बांच फरकर स्मामी कोर बेला और आने का नवा (सिंसर ११)-पाइन्स, १९००)

सांबर (अप्बें) आरते आपने

तमिक की देश में, बहुत जीता। अभोक—निविजन गामत बहुश्वीर सब, तरत स्टांस नहिं जारत कुं का⇔— कुंद, ४८७), आले बारते बारते बहुता विश्व वक्ष नवस नवस (गुठ क्यून्य⇔ गुलेती पृष्ठ

मांच (ब्रांचें) सारका

शांक रिकार

मर सामा | प्रयोग—सम्बद्धः, सब वर्षः स्वयंत्रः न करें, काम की उनकी अरले भिन्न गई जो वर्ग क्या दक्ता होगी ? मा-कीशिकः १०

<mark>सांच</mark> (अस्ति) दिल्ला

. t) मन्यस्त प्रिय शस्तु का विजनता । प्रयोग अवते हमार्थे देशीनद को देहागदून जाने का हुत्य हुआ । भूत्र काल मी विज गयी मान्य २ अप्रवेद १७० (२) तो व्यक्तियां का परस्पर एक दूसरे की धार दलता (विज्ञंच-प्रेय बाव थे) । प्रयोग—का हरकी हैंबि के, इसे इन बीगरे कुमवर्ड । येन फिले मन मिलि गये दोक मिलवन शह बिहारी रबा०—विहारी, १२५); आनन्द-सक्ष्म प्रति सावरी तक्षी ता कह, दोडि के मिलत बढ़ि पण्यो विस सावरी (प्रत्य कवित—प्रताद, १६६), उनकी एक मार्थ बीमतादा यहरे होती है कि किसी प्रकार बाल मिल अस्य सुठ सुठ—सुदर्जन, २३१

भांक (भांक) मिलाना

- (१) बान बानने करता बतावर साकता । प्रमेश--क्ष्म किरम एक एनिक श्रकोरी, एनि क्ष्म नगत १८७६ किबि कोरी (१९२० (१४)--चुलमी, ११६६)। राषीयु - वी अनन्दी - लोक्स विनिधे को बीच, कांत्रके को जीगू न, में बाने भी बनाई है (गीताल (बा)--चुलसी, १९१८ - १ , तब बार कार एकड़े, जांद्र जिला के, सम्मूल हो के दृश एवर देखिए (ब-काल-इन्ट्रांट, ६०); हम बाति शांति भी अही (बुनसेट मुठ)--हरियोध, १)(+ २)) में इससे भाषा डीच वे नहीं विना परना बा (जहाजा--इट जोजी, १३६)
- (२) भागते जाना । प्रयोग—कविदासकी युवह युग्धन नाम जिलाव भिना युक्ट गये थे (चेतन—अक्षक, ३३७) (→३) ,देशिय (१) में (→२) भी
- (३) पूँड विकास । अयोध—पिता महियान अपने बच्छी च चैन आव निवासका (ईंद०—क्रु० नाठ, २१५), हेलिए (२) मं(÷३) मी
- (४) मेम पूर्व वृद्धि में देवना । अयोग—सह बाद में य अनियानों केन नव विकार अल्यासाठ व आस्त्रेय्यू ६३), देविस अयोग (१) में (⊕१)(+२) वी

भाव (जांबों) पूंतना

- (१) मृत्यू होता । अयोध-स्वतने धर भी सम्बद्धानार मारव को बाता गुड़न के साथ मान्य भाव के जाता न हनकी संपक्ष में भी मृह की सिवा (कुरकोठ-निराशा, ३०)
- (२) बागन में होनर । प्रयोग न्यहा तन कि एक आधी भारतीय विद्वार ने अ अ तर कोर के मार्च कहा दाला पा कि सम्बन्ध की जिल्हा के मनुष्य की आधा पूर्व कोनी है साथ सील नहांश डिजेटों २२

आंख मद कर

विना कुछ मोचे चिचारे। प्रयोध—वास मृद धर्म सम्दर्भी वातों की मामते रही हती में कम्यान है मह निक—मात मह, १०४); यहां वाभ मृद कर जिल सालों, और पता है (करवाजी—जैनेन्द्र, ३), वंतरणों के सामरिक परने कर पहाब मर्तिक की बान को मानने वो वन्त्री के निष् पत्तनी पीका पर रहे हैं सम्बठ—शठ वैठ, ६४)

वाने मूंद कर सोगा

विना नृष्ट्य किए बेट रहना, दिना नाक विकार बेट रहना । प्रयोग---किसी ने नहीं क्षण करह हाक बोवा कहा सीन को मृंग कर साथ नोया (मुमलेक--हरिसीध, १८५)

भाग (थामें) यह सेता

- (१) किसी की सरफ के उदायोग होना। प्रयोग—देख ऊप समाज का भरत है हमी साम प्रीचन नाम कुम्स० हरिओध, १०७ , आप प्राप्त अपको क्यो इतना महत्त्व य कि उपलब्ध प्राप है तो क्यो काराम जिस कृति पर आप मीन की प्राप मान० ३ प्रस्मद १०६ तकिन इस तरह सम्बद्ध से बस तक मांचे मूनी मा सकती है भगवान ? ,क्यक्—दाठ केठ, ३६); सपने रोपों की भोद प्राप्त मूंद केटे में इसारी उपनि की नित्त प्रमुख हो प्रथमी कुछ—पठ पूठ करवी, छम्। (०)
- (२) अभानी बनना । प्रयोग—शोल कर नार्च में अध्य पूर ने बोलः हरिसीध ३६ दोवर प्रयोग (। में(+ भर (३) मृत्यु होता । प्रयोग—जोलडा इवर कर्ना भीचन पूरती उचर मृत्यु शहा सन्। (परस्थ--क्नो, रूफ,

आंक्ष में दोगती करना

भोशा देता । प्रधोष—जिसकी मह-दशमी का दूसना मुक्त में सह। त जाना वही प्राप्त में सेटी उसकी करने नहीं लजाता (मर्ज0—हॉरचीय, १५०)

साथा (आंखों) में देखू फूलना, सरमी फूलना मानी होता अपने पनवाणी बात ही सब धार दिलाई गवनी। प्रयास किन दिला हु में बगर में भूप की फूल गला मुख्यता वा रहा। जान प हो कुम बगर है उन दिलों सांस में देखू जयर फूला पहा (गुमरी)—हॉस्सीय, भूप है हम कुछ इस नाह के सिर-फिरे आप में सरमें गया फूलों रही जुमरी) हिस्सीय १६ तुम बात दियानन तृत्व पर तृते हुए हो, जैंस मालिक तेंसे चीकर, सभी की बार्यों में परको कृती हुई है (प्रेसा०—पंतबद, ११)। (पदा» प्रश्च—अर्थाओं सीसी कृतना)

भांक (आंकरें) में उहरता

सन में कता शहना, पहल्कपृत्ती सराना। प्रयोश—प्राथ जिन पर उद्गर नहीं पानी सांच में यह अहर तथे केंसे चोसेर-सुरिच्छीट ४०

आंख धालों से घूल को कता, — बालता, देना बाबर देवा। अवाय—कावृत्त होंग हुँर उसी अस्था, बार्कन पृति वर्ष (सुंभांक—सां, १०), तुमने तो उस्की आयों में कृत बात दी (परेडांक—बीठ दास, १५,) हा प्रथम को अस्था व चल आवाल के लिए प्रच्छा स्थांग है वीदान—ग्रेमचंद, ९४,, इतिजीव जी है मोक-बोचन प्रय-वाद अस्थे विचायनों में भूम की अहिना है विमंक— हरिजींक १५८ चूल व गजान विचा बार्य सब ब्या प्रस् धाल में दाले (मुनतेक—हरिकांध, १४३), चूल में घाल में असे ही इस कोन क्यो आधा में किसी हो है (पीलक— हरिजींध, ६८

शांच में भून हालता देन सांच में भून मॉकना शांच में भून देता देन शांच में भूत फोकना

भरंको (आक्रिकों) में पाना भर भरनी कंद्रा शा नामा (प्रकोष----उत्तर पृथ भाषो नहीं, अल नरि सामो नेत्र केशवर (२,---वेशव ३५४

(२) बनाई होता, दुली होता ।

आंख (शांको) में रकता

(१) कलपूर्वक रवाना । प्रयोश—सांसित में स्विक्त संबंध संबंध है कि है कि है को दे कि दे के कि दे के दे



भारत (आरंकों) में गाउँ मान डम्लना नष्ट कर देश । प्रयोग- अद गई वे कुट मार्च भीतके योग करें अस में क्षाने व क्यो वोशo-हरिकोध इड

जांक में सरम्यों फलना रे॰ भांक में टेम् फलना

शांक (जांकी) में खूर दालगा

विनारि के साथ क्याई करता । अधीय—मी निकासे आस का काटर ताल है की न शाम में मूर्ड (बील)—हिंगींध, श्री । (समार श्री : — सांच्य में स्टब्टाई करना)

आंख (श्रांकों) सैनी करना या होना वहीं नवर रजना वह होना । प्रधान—नुम ने पाल वेनो कश्चा हो वहने के नाई कहा को पदा पूर दिलासना । इस्तार १) –स्थापल ४९६

अर्थन रचना

(1) निवस्ति करता समस्य हाता । प्रयोग -व्यक्तियम समया को ये परित्र मानता कास है । इन्हों में उत्पूजनर की श्रीम पत्नना सुक्त विशोग सम रहा का (क्यक-जैसेन्हें, थ्या), से भी इस पर पृष्टि काले समा सम्बोधा देशकीक-रोठ एक रूप

(१) मुहश्चन करना ।

शांध (भांचे) समत

(१) हीर लगना संगनी परना । स्पोध-नै दिनि क्रिंट दिये मण परनी । केर्नि दूस ऐति म लगरिन प्राणी विद्या -- आरोप क्रिंग । केर्नि दूस ऐति म लगरिन प्राणी विद्या -- आरोप क्रिंग । केर्नि विद्या कर्मा विद्या कर्मा निवास कर्मा कर्मा कर्मा निवास कर्मा कर्मा कर्मा निवास कर्मा क्रिंग क्रंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रंग क्रिंग क्रंग क्रं

) नेपनेको भेलास स्थित अस्तः । प्रास्त अ पुलित्तन रम समाद स्थित अ अस्ति अस्ति स्थाप सूः सा०—सूर. ५१५०), उसी क्षेत्र प्रति धाकुन आश्र मध वर्षे .वेदेही०—(संस्कोध, २५०

(प्रम होना । प्रयोग—रिन-योग नामें ऐसी लगी ज़ कह में लाग पन पन्यामें सामे स्थानमा स्थे गई (धनक कांक्स-सामाः १६६:, त्यांते गये कह नह नह नहों सामाम बुद्द से नमें दूष गांद (मतिकाकक—मतिसम.१६६:); अंकिया दूष्णिकामि कुसानि परी, म कह नमें, कीन परी मु-लगी धनकांक्स -धनाठ, ६ो(१), ६नको उनमां जो समी बाँचमा कांग्स कह ती हमें का पनी है (धनक—पद्माना, १४), त्रांत्सन को न कह पनी, जासो लागे नेन (१६)म कांश्व-सहन्म, नद्द: कांग्रन धीति की गीति अहा लागे वृत्र नमने आज वस गर्म किसाक देशक, पन में भाग गुरी वनी है कि यह किसी में नमनी है तह नित्तमा भी विचानों भागे जिस्सी (बार संधाद १) अपनिन्दू ४२२); देखिल प्रमान (म) मी

(४ फिर्स कर्ष्यु क) पाने की नाम में होना (प्रयोग—
तुमें बाध मो नहीं कन वर्ष इस ही रे मो ने कहा । वसी
चन्त्र है यह (देशकीठ-नांठ रोण, छ., मुकरीबाली दरहर कमोन पर बोर्सानस्टा की पांच है (परतीठ—रेषु, इन्छ)
(५) प्रदोश पा अच्छा मान परना (प्रयोग—मोहि मर्थ
बोरह नमें कोड पृष्ठि की बोर्स मार्थ तम की पाह दिस बोन्ह चाह मी होनि (बिहारी रक्षाठ—बिहारी, १०१—
सभी को संबंध चार्य की बोर चोन्ह कियी की बाम मही
बचना मानठ(१)—प्रेमचंद्र, इस , देनिए प्रयोग (५ १) भी
(६) दहान बाना । प्रयोग—निम दिन से मुलंबना की
बाम वाष्ट्र पर मनी, उस दिन से तम की बीचन मून्ह बटन
नगर (मा—कीशिक, १००)

स्रोध (सांसे) स्वाप्ता

(१) बीयन भारत करती : वर्षीय—लेकिन सुनीत किन्दियां कर इस प्रदेश, बेंसे प्रेमें बहुत पर शांक नताने की बाद बहुत फिज्य मानुब हो पही हो (कटक—दैठ यह बहुत क्षेत्रण मानुब हो पह हो पर प्रदेश कर प्र

) प्रस्त कर्षाः प्रतास स्विको (स्ताहः हसी नत संभाव स्थापनार प्रियम द स्थापना स्थापना स्थापना भूति स्थापना स्थापना स्थापना भाव वदाय—(२)—समरोन्द्र, १९४) आज समादन आक वदन दी उसने भाग पुराष्ट्र (नुराय-मक्ष, १०४)

आंख (आंखें) स्त्री बहुना

- (१) तस्तुनसा पृतंत अनिका करना । प्रयोग —यांच भाषि देखि गारम लागी दुनहुँ रहादि । कींच व व्यवमां सायहि तहि व तदम कार्गद्व (पद०—जायसो, ३१/६ , गाजि तेल भूगम क्रम मद की नजर क्याद रही तीद निम पीदि में दुन दुनार सी माड , जग०—पद्माकर, २९,, अभ अंत्रिय हुना है क्यों जमे मेंड जाना । प्रति दिन जिसकी ही बार आसे नगी है प्रियंत— हिंडोड,२३४
- (२) स्थित वृद्धि से देखना। प्रयंश—वन्होन शाम फैलाकर प्रतिवद मयन में अभवनी कर्णानंत भीव को देखा, जिनकी बसनी हुई मान कन्ही पर भयों दी। (वैशामांत ए —समुर्क, १६)
- (१) उपनीय होता, विकीय विकी यात वा काम की भाषा होता | प्रधीन---हमारे एक मटोडो की बाल की साथ पर लगी है (कटा०--देश सक, १६२), देश की भारत कृष्टारा भार लगी हुई है काटी एमका क्या पर सामानीयें (गिंठ (२)--हैमबंद, ३७६

शांक (शांक) लड़ना

प्रेम हो जाना | प्रयोज—तैन मृत नैनन हो प्रथम वस् है भाग अपन करोल नेक दर्ग नहि देते हैं भू रण प्रधाक— मूम्प्र, 25%): उन जानन के बद-एजन की अंतियों में हमरते लहीं हो अपी (भाठ प्रशाक (२)—भारतेन्द्र, १६०): प्राप्त सब अस्य अस्त में व किसी आम का नाम जान को न नम (बोल्डर—हिन्दिक्षीय, ५२): वेक्सि के बिन के, बाजा जुन एक मासूब है आंका सब गई (मानव(४)—फेमबंद, म्पुन, बोर्ड रामगोपास महोदय को सम्बन्धी के, किसी क्याह सामन में इसके पतां आसे के, अस्य पर गई (से कोर्डव— अस्त मान, ५४

र्थाच (अंचें) सहाता

- (१) एकदवा देलता । प्रयोग—बह क्यी इन्द्रेय धीर क्यी बीमा को देलती किर संस्था की बार्कवाली कान्यिमा की प्रतोद्धार कर रे हुई शीन धानाच में धान जनन देवता (लिसली—प्रवाद, २८)
- (प) को प्रतिकारी का भाग के एक दूसरे को देसना। प्रभाग निष्या स्थापन का को नदी का भाग समान है प्र

(३) धाहन ज्ञांना ।

अंग्व (अंग्वे) सास करना था होना, । सास पीर्ता करना वा होना

क्षेत्र करना या द्वांसा । प्रयोग-अवन नवन भृत्ये।
कृतिक विनवत नृपन्न मनोच (शामक (वा)-सुलारी, २०५),
को परभाकर हान कहें सर्ति नाम करी दून स्थान के लगन
जगक-पद्वमानन, १५), इचर जमकी नवीना मुख्यों रूपी
सरके को शृद रहाने के निये विन पर आये काम करनी
है (गृक निक -खाक मृत्र गृद, २२६); काइये म सृद की वर्तरिये न केर करि । कर नाम साम तह बनी का न नारिम
सर्वेठ-स्थिया, १६६), जब हुई नाम नाम सामे सम गाम की न लाग लाग को चांसक-स्थिया, ४६); किस
गाम की न लाग लाग को में साम नाम नामके कुट बोली
बोलना है ? (परक्षीक-न्देन, ३६,; या उसे कोई काम को
बोलना है ? (परक्षीक-न्देन, ३६,; या उसे कोई काम को

भाक (भाषी) लाम पीमी करना १० भाक सम्म करना ।

भांच (शांके) लामने करना या होना

सामना करना, करना का चनुभव न करना । प्रणीत— तमनेका मोहे नहें, अलगेरी सब गान । मोहें हीन न देन ल नद्य मोह कर कान वित्तान क्षान विहाल रहत सम्बद्ध जाक तम करें केंगे सामन आग अब नहीं होती चीनोठ—हर्वाकोध, १९०)

श्रांक स्थितामा

दर आंख उंदी करना ।

आंश्र (आंक्रे) सीधी करना या होना

- (१) जब्दा होर युक्तभाव से भिन पाना या सामना कर पत्ना। असोय—संसद है उपके पान पन भी हो आय, पर बहु असभव है कि यह कमने सामने आओं सीधी कर गठे गठन श्रेमचंद, १३२१
- (a) केल करना या हीला । धर्माम-पर मनली जो नहीं किमीयर सीची पमें न भूश जन वालों में देन भग बोलo-हरियोध, १२



अरंक (आंक्रें) सेंकना क्रिक्षे सुरुद्द बस्तु को श्री कर चेंकना, स्थान का मृत्य प्रकास । प्रयोग—सूरुनों पर विसुदती काले सेंक में सांध सकत्वकृति को संदर्भ - वृद्धियोध, ३४१ असी, अभी आग काल संकर्त का सुद्धावरा इतनेवाल करते हैं . वृ ६०—३२० ती०,९६)

क्षांच से

भाव है। प्रयोग-शोग जिस आन से प्रके देन पृथ इसी भाग से उन्हें देनो (भोने०-हर्दश्रीध, १२)

भारत आंध्ये, से अंगार परमता, आग निकटना --वरसमा,--सी झटना

घोषित हरना । प्रयोग—होगी शब्दों में भगारे वरणाता गौनमा की धीन कावत गौदान—चेन्चंद, १२६ , धरना इता अपने वाली को देखते ही साथ ने भाग वागाई सुग० — बूंव देखी प्रदेते, डाक्ट यात्राम किए दी घाष्य में भाग विकास सभी किसी निराता १३५ , भागान भाग बरमको वी । बिढ पुरुष महान्याओं के देही स्थान है पि प्रदेन सुदर्शन हैने, बुस्हामू की साम ने की पूर पड़ी प्रमृत्य पर में नहीं देखा सामीक—कुंव हमी, ३६२

शांक से आंक जुड़ता

गया द्धिरकोता होना । अयोग--नो बुनो दीर विश्व सम्बन्ध भारती विश्वनिये अध्य नाति में बोली । यो किसी देव-दीर बागे की बीट के दीर जुड़ गई होता कुम्लेट--हरियोग, ४६

भाषा से भाषा जुड़ता या जोड़का,---विश्वतः दसकर एक दूर्गरे म दम होता है। प्रयोग---विह्नि की की बॉपने नहि विद्यादि मैं दान (पदण--अवस्ति), ३३,६२, भारि भारी वृषकास-सभी जब से कॉमयों भरिषदानि की मारी केलाइक इंडाइ हुए

भाग्य में आंख विश्वता द आंख में आस तुरका

भारत साजान्त्र फिल्हर

भग्नात्म । अस्तिक सम्बद्धाः क्रांतिः
 सम्बद्धाः विकासम्बद्धाः क्रिकार्थः विकास ।
 सम्बद्धाः विकासम्बद्धाः क्रिकार्थः विकास ।

(-) रामना हाता ।

अंख से अस्य निकलना देन आंख से अंगार वरसना ! ऑब से आग वरसना देन अरंख से अंगार बग्यना !

ध्यांच्य (आंक्ष्रें) में उत्तर ज्ञाना मान प्रतिष्ठा वे क्यों होना । अथाय —अब कि तुम ही उत्तर गर्व की वे पान में को उत्तर म स्वी कते (बील०—

आण से बोधव होता

हरियोध, ४०

रिकार्य न परना । प्रयोग—गुवारी बाल की बीभल हो भवा त्यार-वृद्ध वर्षा, २६१), मैं तो बाहरी हूं कि इव गरी बालों में बीभल न हो। लिलडी—प्रसाद, ४२१, किस बाग का पत्रक बारने ही शोम के पूर्ण के बादक जा यह समार बाक में बीभल हो। जानगर कलार---चल ४८)

अरंख (आंखरे) से विष जाना या जिला है तर बचन कर ही बाता । प्रयोग—विमास में तैना को भी अपने से विश्व विमा (कर्मफ—क्षेत्रवेद, को; हुमेशा के विसे बह मक्की भारतों से विष नामन किसी को भूह स दिखा करने जान- प्रेमबर, २३६ क्यों को साम से विमा दब बाम वर्ष है जिसे कि विद्यानि बोलक—क्षेत्रविष्ठ, ३३ , है विष्ट जाने व्यवकी अन्य ने वेट विस्थाना विश्वाना है हमें बोलक—हरियोग २२१

भाग से की क्षूटना वेट भ्रांक से भंगार बरमना १

भांच होना

- (१) तेने को नीपत होना । प्रयोग—साप नहीं जानते है कि क्यांटार के पर के नीपों की आप उस गर है जिन्हों एसाद १०३ पर स्वका होग्य भा अग्यद पर है । सुरु सुरु—सुदर्जन, भूद)
- ि ज्ञान होता था विशेष होता। अयोग---इसम श्री सन्द एक श्रम व विश्वत सिना एक भ्रम तेत्र ग्रम और को अपन हा वहें। --हेनेंद्र के पत्न सहस्रदेशकार्य देश एक क्या कार्य नोर्ग कर भी ज्ञाल इसकी हम नहीं होती सुन्नतंत्र हरिग्रोध प्रद

- (३) अध्यक्त प्रिक्ष होमा । प्रयोग—मोर्ट भटन् मामृ हुर आंजी (गम० (६) -तुससी, १०१): केलो वानव उसकी वो बांख की (मान० ४)- ग्रेमबंद, १७०)
- (४) मंगति होना ।
- (५) सांच के शक्त का छेद होता ।
- (९) क्रमान्दृष्टि होता ।
- (७) परमा होना ।

अधिकान्त्र

गमभ्यार, सन्धर्भः । प्रयोग—धास्त्रकारे हम तम्हे केन यह तम न माले साथ तक प्रत पर पत्री (चुमते०— हरिऔध, १६२)

भाषपान्त संधा

यानमें ममध्ये हुए भी भूम करनेवामा । प्रयंक स्रोतम्बन भवान है, शिलिय धीर सम्ब है क्वल्य सामा-वाका बचा है (मिल्टा प्र.- संस्कृत हुट

आंखें उठी होता

दशा भाना । प्रयोग—साबार में मुझे पहचाननेवाने स पहचाननेवानों को मेरी विशेषनर से परिधित करा रहे में ---भारों और से साक्षे उठी को मनुरोठ—निरमत, १३।

श्रांकें किया के उत्पर होता

किसी की ओर वरशार क्याम भना रहता। प्रयोग— और फिर, फिर जब में उस मना में इस मुनाना आरम्भ कबना, तब, तब, तारे उपजीवनी की मार्क मेरे उत्पर होती (भीर०--प्राग्ठ मासूर, १४१)

(गमा० मुहा---आंकें किसी की और लगना)

शोर्की की बना

ध्यान या दृष्टि धाहुस्ट करना । प्रयोग -न गाने, दुनक भोग में कौन सीच नेता करे वृत्र धीन प्रस्व-धत, ३९।

क्षांकें क्ली रमना

सचेत और जागरक बहना । अगरम—स्विधि साम सुनी राजना गदा । दुल शक्ष राजनाथा अग्य दश जुनतेल हरियोग, रुप

आंक्षे गीली होना

आसू भर प्रातः । ११वास स्वयम्पदीत का साम वा अस्या और प्रात्त भीको प्राप्त दे पृथ्य सुरुवसा द्वार (स्था स्मारुव आस्त्री सुरु होता

भांके गोल हो जाना

धारवरं होता । अयोग--विकं हीता दावान है कहा है। उसकी बांके योस हो धई (परसीठ--वेष्ट्र, २९२)

आंखें बार काना या होता

(१) देना देनी करना—भागने प्राणा । प्रयोग —म्हरूने समय उनको और करना की प्राणों पूनः चार हुई शिक्षाण—कीशिक, ६): राजो-दिश्या और मिलजी की मान फिर बार हुई (परहीण—चेनु, ४९१): नयदेन से नामां चार हुई हो। करक के बेहरे पर हुई का गुरुवनिष्ठ ज्ञानर उद्योगी से पनके पूक गर्धी स्टिश्ट (१)—स्वापाल, ४५

 प्रमारक होना । प्रयोग—बह कौन पत्री भी विकास व मान कार हुई की (मूर०—मता, ३७)

भागों श्रेराङका भागा

मानों में आहु घर माना । प्रयोगः इन मानों को तोन न क्य ह्यके नवन (वैदेशंक- हरियोध, १०६), ह्य (इल मान हेरने हो नेचे वृष्य की धार एक-टक (धनक-निस्ता, ६०

(बनाव मुहाव-आंखें इयचका आता)

शांके जाती रहता

आरमी की उद्यानि समाप्त होना । धरोम — बाहरी धाल गई बहले ही रही । औरारी बाफ भी अंच अस्पी हुई अमरोठ—हर्निकेश, १२४

आंखें देवा होता

बारतुरता से प्रनीवा करना । प्रमाण —तुम्हारे लियं मण्य रमी बहुंगी: राज्ञार—अर्थ संद

भाभे दकी रवना

प्रमान में बड़े रहतर । प्रयास—गरिये बांने मृती रसमर स्था दुवा सम्में रूम नहीं प्राप्त रही (मृनरी०— हरियोध, ३९

आर्थे दिरमिरा जाना

कार चकरकीय होता, विशिष्ठण होता । प्रयोग नहीं की सञ्जाबट देसकर सेवी कार्य निर्मयस गयी (संधीए---बर सर, १०-११



आसे धकता

देखकर मृत्याया शृक्षा यह जाना । प्रयोग-स्थानी दिया है पहला किसने यह हार बना मार्थन-पुर के अपनी देख इस पुरू जाना०-स्थाना, १७०

आंग्डें दबाकर देखना

तीची पृष्टि में देखता । अधीरम---सम्म तथा में मां अवार हैं दसं पण उन्हें अपने प्रमाप्तय देखिये (गुभतेक-हर्ग जीवे, १९४

आंके बरवाले से लगी होता

किसी की बहुत इस्सुकता पूजक प्रशंका करना । प्रयोध— सामि सेन्द्र भूपन बनन क्षत्र की नजर बचाड । यही नीय मिस प्रीति के नम दूबरूर जो लाइ (समाठ—पद्मकर ५९

भागे तावका

भूग के कारता काम भिवनी प्रकार । प्रकार ज्यान हुन। तम सून कर कारा भूग ने नाम है रही धान नोतर—हरिमोध ३५

क्षांचे विकास पहना

भूगा आर्थि के कारण कामी वर बड़ी वही सम्मा। प्रयोग---समा हो रम और बड़े। क्षांने विकासी प्रश्नी ही। मोटान---क्षेत्रकट १००)

(२) रोकपूर्व दृष्टि । प्रयोग—स्थम निकसी किसे सकी म बुरी (बोक्क-सुरिकोस, २१४)

श्राचे निकास होगा

महीर दश्च नेमा । प्रयाग—जानने स कि जिल सहको है मी बाग है जनहै भारते को वे बाल जिल्हास अस् (रंग०(१ --प्रेमकट, पर्

भाष्ट्रे यथ पर सर्गा होता

किमी की प्रतीक्षा हीमा । अभीव अलको कालं भी बाज इस प्रयोग नहीं सभी हुई हैं जीवर (१) अला ठ, १५३०

भारते प्रमान्तर

र्वेक्ट राजना देणमा । प्रमाद भारत्यक्ष प्रदेश हु॰ यज कामोदा पर अस्ति प्रमाद संस्कृतिक प्रदेशको १४

आसे फर्टर रह जाना

सारभव की अनिन्दे में भाग क्यों रह होता । अन्य कमना की अनेन भागनमें और नोनस्य न क्यों रह की .बोने०—रां० रा०, ११३)_, इसर की जगरे फटी रह वर्ड जारुठ—डोनेन्द्र, १०३

वांचे किमलग

दृष्टि स्थित न रह पाना । प्रयोग-साथ पानसिंह पर मे फिसकतो हुई निज़ार्जित पर का घटकी (मृग०--पु० पर्मा ३२८

। यस मूल आंखे विकारना)

काम फेरका

- (१) प्यान हटाना । अपोन—मुझे न सामृत्य था कि मेरे कंद होने ही भोग येथी और ये बाब फंट लेगे ,सान० १)— प्रमाद, ५००
- (२) वृष्टियाण करना, येथ से नेकन्त्र । प्रयोग—जान् तो मैं हुई बना क्या रे कीन कुछ है येगी । यो सह जार क्यें में मेरी कोर न आने करी। शुरू अस्ति, १३१)
- (1) नाधना न करना काराना, उपेशों का भाष दिललाता। प्रयोग-नृष्टापे बास्त और धारी के लीय मिलने घर भी भागे का केने हैं (पासीक-रेण ४४०,
- (र) गएक संवा ।

भाने वर बन्ना का होना,~ शिवना

- (+) मृत्यु होता । अध्या अब बापू को बुनावा प्राया में उन्होंने का कर के पोने को देवते बेलने ही आवं करन की वी (#\$0--दे0 स0. N4 , कमानी से में जात-दिन वही रहनो हूं कि तुम्हारे नावने ही सेनी बांध्य किय औन (म्ब--कीकिक, साह), नामून नहीं का मांस्व कर हो बांब, किर यह बानी विसंदे क्षान सामी कीन नाने ? सान्वा (0)--केमचंद, 20.
- (२) कोई प्यास न देनर । धर्मात—उस सम्ध से व इस्तर रिया को सकता था और न इसके प्रति अस्ति बंद की जा सकती थी (मृति)—सर्थ कर्मा, (श्रा); धानाविक ममस्याओं को योग ने साम नद कर जने जह से ही उनकर अधिकान नद्य नदा हा सह रहा दिए। देवी १६

आंख चंद का के मन्द्रका

नहींनावस्था सहोता स्वयं कृष्टि सम्बन्धियो विकादाम् विष्यं नवना । प्रयोगः को कृष्टा प्रवर्धे मोरी तः। श्रास्त्रः का कृष्ट क्ष्टं सम्बन्धः होत्स्त्रोधः १९६५



शांके क्षेत्रका

धार्थ कान्त्र

वृष्टि अथना। प्रथीम—यहमी बार को नेमार तो आने बची की प्रथी रह गयी (कोर०—संगठ सम्बर, छ।/

आर्क्स बदलकार

वन में परिवर्तन होता। प्रयोग—उन्हें क्या जान कि भौचरी भाग धान वक्त में तो वह नारी वंद कृतन हो जाम (मानक (१,--प्रेमचंद, २३, 'हॉनबीच' स्नसंद फ्रोसे सो बदक प्रार्थ अमेंक—हरियोध, १८॥

आंके किन्ता दे॰ भांके वंद करना ।

आके यह में विद्याना

भग्यम्य सादर प्रम्मुनना हे प्रजीक्षा करना । प्रयोग---आंग उनको राष्ट्र स रच विद्या ध्यारकानी पाल है उनको सक्ते ,बोल्----शुरिकोध, ३४।

भांकी समाप बैटना

प्रतीका करता, इस्ट्रा निए वेपना । प्रयोग —तम तो प्रयो पाल लगाव १६ व वृटाठ १) —स्थापला, १९२)

आर्थे समाचे रहता

इम्लजारी करता । प्रयोग—इम्लोन सारीय को भी कनक स्वारत् कले तक बगने के बाटक को बार मीन्टर्गन के लिय साम नवामें गाँ। क्रिताल (१० न्यसंपाल, ३०६)

वार्वे लड़ भी होगा

वृक्ष्म में भर भागा । प्रयोग—देख आवं हुई सह बैगी आको सं है सह उत्तर पाता (जासेर—हरिओव, ४४)

भार्के काच सर्वा फिरना

किसी और दृष्टि का पूरी तरह बाह्यन्ट होना । प्रयोग— बाब की घटक सबै संगति पटक-रण, वासिनी सटक-मन सोचन को किसे एक कविस-धनाय, 148

भारती-अस्ति में बाते होना

काम) के इसमें वर्ष वाले होता । प्रयोग—वंत-वंद बीन्ही यब बाल, गुप्त बीति प्रवटान्यो (सुरुस)0—सुर, १२९२), इत्थल ने प्रश्नों ही बालों में अपनी पत्नी को बताया— में बता विकास बार नहां रामक वहर देशक उपन

मांजों-भांओं में रहना

तिय रहता, प्यान व रहता । अयोग-एस पृगो ने बाब्

त्रमतुष्कार साथों की जाम-जांच पर रहतं, त्रकेनले ह फिरने हैं (लिसी--निराला, ३०६

भाषों का संवा होता

आंको का उताला

धन्तन्त प्रियः। प्रयोग—साप रे । मेरे बाओं के प्रतिपास को कोच ने गया भार प्रयोग (१)—सारतेन्द्र, ३१०); धन यम (अपनार) राजना ए उत्तर्भ रियठ मुरियोध संद

भांकों का कहे देना

वर्षों से मान प्रकट होता । जवाग--शाई कहे वर न कह कर कारते क्य है । तृष्टारी धरणं जनकी आंख होज वीट कर करती है स्पृत्र--छ० वर्मा, ४४

भाषों का कादा होगा_र--कृद होना

भरवास भरिष होता । जगान---वपर ए कवं तो व्यक् वन् भीर तब की बरवों से काटा जन आऊ (मानव (द)— इसकेंद्र, इदा: यब वे उसकी अरव) वर काटा वस गई वी गीती---विद्युर, ३४१,३ वाला का स्वनंत्र राज्य क्षाव की जोकों का पुगानर जुन्द का वैशालीव(२)----वसुरव, ५५ यब दिनों वो धाव न ही पर बसा धान वह दवों धांच का काटर हुना +वीलव---हरिजीस, ५०)

शांकों का कहा जुलता

भवात हर होता । अयोग---वृत्य गत है दिन व दिन दरदा नवर, आंख को परवा नहीं जब भी कृता । वृभक्ते०--हर्तिकीय, ५७

(नमा॰ मृहा॰ आंओंका परदा उदसा, इस्ता)

थांथों का शृष्ट होता देव भांखों का कांटा होता

आंखों की ओर करना, जाना वा होना

कही दूर बाना का होना । प्रयोग---नैनन जोर होन पह एको में मन जारत जनक सुंध सीठ--सूर, १२२६), एनी भी जपने पुत्र से पंत्र हैं, में भी उसे जांच की भार नहीं करना जाहनी (मा--कीशक, १२)

आंख़रें की जोड़ जाना का होना देन आंखी की ओड़ करना



खालों की गड़ी जुलका

आंखों की पही खुलना

मजब होता, ज्ञान होता । प्रयोज—सांस की पट्टी नहीं तक भी सुनी विद्या गई हैं आल सब भी जिन नमें सुभतेण—हरिकीय, १३६,

धांखों के भागे या सामने भूमना---नाचनाः---फिल्मा

(१) अस्ति के सामने हमह कर लगा हो नाना । असंध--भिश्रतेला के स्मर का मंत्रीय उसके कानों में मून रहा था, उसके सीटमें की आभा अमही आंखों के माने नाम रही भी (चित्रक- माठ कर्मी, प्रम); मनुष्य जीवन की साम-प्रमुख्ता, संसार की असारता का किए जीनों के सामने पित्र गढ़ा (यहाठ के यहा- यहाठ समी क्षे), मु हार्यम मेंथी भारती के सामन किर्या रहनी भी (मोदान-प्रेमकद, इस्ट)

(२) ध्यान में बामा । स्योग ---स्था भारतेन् भी भी दो पृतिका बाम कर परिचा ने सामन पूमर्ती हैं गामिकायोक --राह्मक दामा ६६२ : नयो नई क्यान पन भी भी कभी हैं मुझी हां से हमानी मांचती : मानने जो ने म नाम भान के मूल हो हैं बांक वित्तकी नामनी (मोसेक--हरिकोण, १४ , रेकिए प्रदोग (१) में (→) भी

भाकों के भागे सम्बना है। बाकों के भागे सुमना

क्षांभी के भागे किस्सा के भागों के भागे भूमना

भाष्यों के बारे होना

अध्यक्त विश्व होतर । प्रयोग—क्षय रहियारे जान दहारे पर प्रान क्षेत्रे अधिकत के नहीं, स्थारे केंस भी काई उने ,ध्रक करिया—क्षेत्रां रहेंश , तुम यस प्रान्त से प्रयोग हो तुम केरे अधिकत के तारे हो (शावद्यद्यावाह)—क्ष्यतेन्द्र,ध्रद्यः साम ज वर—क्षा वस दहा पर १६ क्षाना हो कस्था । साम जोकः ज नार हो सन ० १ प्रस्तुद्र १३७

आंखी के परिवाह विद्याल

हरत है, प्रतासन संस्था प्रदेश नजना प्रदेश भाषा र प्रतास विद्यागत १६५ की देश प्रतिक, रूसूल से इंग्लंड स्ट्रांग्स १५५

भाषाँ के मोर्ना

वांतु । प्रयोगः नात्वो के घरेनी मेरे न विकसी, बामी सावेत्रः गृहः २२३

बांशों के सप्तने

सम्बुच-उपस्थिति में बोचन काल में । प्रयोग—हम कोमी की अनवनी की 'बाबु इस्तिक' का कर पुरा। इक्तांतर करने हालों की फोच के सामने ही वे सब दृष्य हुया करने हैं (सार पीरिक-स्ट्रांट दिवेदी, ५४)

भारतों के माधने तम्बना देव भारतों के भागे नासता सांबों के सामने फिर शाना देव भारतों के मारी फिरना

आंखों के लागने फिरा करता

भांको के सामने खाँ रहता

रवर्ति नामी हो जाना । प्रयोज—न्योद रहन होरे नैयनि भाग राज नवन थय गीना (गीताः) का—गुलसी, ५६. (भवाक महाक—कांको के स्टासने सुख जानाः)

भाष्यी को क्षीनमा

माइन्ट काता। प्रयोग—मृह बटा धीर मोल बा, बारोल पूर्वे (ग अ अ पर का का उभार और वात का नृश्युकारत मोनो को कीचना का अमेटान —प्रेमसंद, २५

आओं को चीच्चियांका, से बकार्याच शांवा

- (१) तेज प्रकास के कारण सीधे देख स पाना । प्रयोग-मुखको वर्णाए विज्ञानी के जमान वक देखादा का गुजन करने वासी जीनों के वीर्षिक देने वाली तीच और विभिन्न स्थाना (कामना-प्रशाद, 86)
- (२) ब्रास्थ्य पश्चिम रह जाना । धर्माम ११ ११ वर्ष भी इ.स. इ.स. स्वय वे सारे सम्बन्ध करा। इ.स. स्वयापीय पैटा कर देती है आठ सार— महाठ दिवेदी, १०३)

भारती को एक इसा

द्रोग्ड अपनार करना । प्राथम— दिश भी उत्तर प्रायम पनी आप को प्रकारत द्राजी साम नाची देवहरीय काठ पंरक्र इक्ष

भाषां तले

दृष्टि में दिलाई पदना। प्रयोग--- बार ने आप है जैने इस र अस्तर प्राप्त गान किया करूठ हो और की

आंखों - देखी

स्वय देखी हुई । प्रयोग—प्रश्नो दिलती ही प्रांती देखी सिमाने दी नदी (गदन—प्रमुद्ध, २५९)

आंखों पर प्रंधेरर छात्रर

भंगांग का अधिकार होता । इधीय—क्यों सांच एर है हो गया किस किये इस जोग अभे हो गये 'बुनतै०--हा(भ्रोध, १३०)

भागि पर ठीकरी रखना

- (१) देल कर भी समझ है आगा। प्रयोग—हो धाँ हेल भावि को लाते ठीकरी आगा पर समस रच में कुमते०— हरिभीछ, ४४
- (२) निर्णय हो गाना १ प्रमोय—तो कर लो, मैं स्वा मना करती हूँ ? नुसने नो मांशो पर डीकरी रखानी (मा—कोक्सिक, ६१)
- (३) दशाई करणा । प्रयोग—सम्बन्ध का कालामी के महाने सम्बीर लाने के लिए गया तो उन्हाने अपनी प्रयोग पानी मिनाम जीन पृथित्व का अन्य कर पाना पर सेक्स रस्ति (पृष्ट--प्राण साठ, १००)

श्रांकों पर पन्ता बालना

- (१) दस्तुन्यिति को ठीक न समक्ष गाना धनानयं रहना । प्रमोत-सहत्वाकाचा आर्थो पर परदा दान देशी है (मान० (१)--प्रेमचंद, ५२)
- (२) जासमुक्त कर सप। बलना ।
- (३) मुलं बनमाः (

क्षांची पर बैठाना

यहुम आरय करमा । प्रमीम—दिनमें निमने मुझे नगर तो आयो पर बचाऊ मुंग्ठ अस्म ६२ पड़ गाउन हो भारत नहीं है शाकृती । से उमे मांचो पर वेनमान में प्राप्तांगा कमान- प्रमाद ७५ पाल विषय प्रमाद के उन्हें हुई ब्या न भारताय विद्यान तय उसे सुभनेत सही की उसे

आखों में

भिचार में परम के। प्रशंस—गर कुछे ऐसर समा रि शुभकी सांसोमें बच भी में काटा हूँ (स्थापक—जीनेन्द्र, ६३)

श्रांची में अगारे जरुवा

धांको है बहुता

नरावर भ्यान में बका एहवा। प्रयोग—अब मुन्ही साथ में यह सावर नव विचारी प्रमुख यहे कीहे (बील०— ह्य ग्रीय, ५०

भांसी में भांके गडाना,—डासना

- (१) भ्यान पूर्वक एक दूसरे को बेलमा । वर्गान—पापूरी ने उनकी लाको में आले गृहा कर कहा (शांतः (४)— पेश्वद ४६ जीका ने सर्ग अध्या ग्रांचनी आक गहा ही (१८८१०—अगत कर्मा, १०६१), क्रम दो अध्या पांच मन अवना पोध में बाल दान कर देनो (प्रांगी०—हरिग्रोध, १५)(०); वीर की सरगह हो देखा जान म अध्या हाथ व्यवह सुठ नोल रहा है (मा—क्रीशिक, १४५ (७))
- (+) अवपूर्वक देखना । अयोग—सामितन में दंगी हुई मानवंगन वाल क्षत्री गीनागरी म दिया हुआ (नर उपका भागो में क्षत्रि सानकर देखते हुए कहार (शृहणक—शक्ताक, प्रदेश देखिए क्षत्रेत (१) में (+)
- (३) पंडाई हे रेमना ।

(वमः पृष्णः— आंश्रों में आंश्रों समाना)

आंखों में शांचें हालना रे॰ आंखों में भांच वहाता।

भरंकों में भरंतने भर भी व होना

विनकुन ही य होना (प्रयोग—वच्चा सभी प्रव्या-क्या कुछ विभाशो बातर है। वे दिन जा पहे है कि दूध प्रांकी में जीवने को भी न मिलेनर (१९० (१)—प्रेमधंद, ३३

जांको में इतर अस्तर

भोजों के इंपट होना। प्रशेष—लेकिन केरी पनोद्याः भाषद केरी चांची के अवर भाई की (मूले०—सग्० वर्षा 343)

आसो में कारे की तग्ह अरकता,- स्थाना

अन्यस्य अधिय कर्मनाः । प्रयोगः देवशास्त ती सरकार की भाषा य कार्ट की सरद सुभता है ।ब्रह्मठ---देव सव, ११४ , हम स्टेस सुम्हाणी अध्य में कार्ट की त्रवह करणते तें भोगाव---केंसचंड, ३५७



आंखों में कारे की तरह सुभग के बॉसरे में कारे की तरह सरकता

आंको में करकर घुराना या घुराना श्रीको म काउन राजन या नगना । घ्याय—संख्य है पूला निया काउन श्रीक में पून को न ने सन श्रीतरु—स्टिप्रोध, ४९

आंखों में कातार न टिकना

सहुत अधिक रोजर । अधोग---वन वित हुवे व विमर्र भीर मैंन कवक कन् रहे थ भोर (पदण--अध्यम), ३१/१,

भोकों में फैद करता

आंक्षों के सामने सरा एवं बता रज़ना । प्रयोग-न्तु विधि सार्व मुकता किये क्यर कित कोर्ट । यो मुनही सी राज़िये क्षांकतु मोद्र क्यारि ,विहारी रक्षाठ-विहारी, २४०

भारती में बदकता

प्रश्वात बांप्रय नगमा । प्रयोग—अरती तेय जवान के काम्या भारे घर की प्रांगों में बाटकने नगी देव—पाठ माठ, १२., लक्ष्य की इस एकता स नगाम में एक दूसरे की अरेको में बाटकन वाने की शुद्ध हुई जिलालाहाः खुदल कह (तमान मुहाल—आधारी में बार बाना)

भांको में पूर अरहा, पाइ जाना, पुनना

- (१) अस्तान विच नगता ब्याय पर चना ग्रह्मा । भयोग—अनि जानह ही तुन्ह को हुरी । नथनित बांध गती यह पूरी ,पद० जायभी, सुप्रदात शांच के पृथ कर त आंच में पृथे, बांच में नद कर न बांच में नद धांस० हारकोऽ है
- [२] सत्यान अधिय समना (प्रयोग—धुरस्वानी इसकी प्राथम में पृथ्वी है (पृथ्वीय—ग्रंथ मूण गृथ, प्रायम किसी में मिर पर टापी टही रखी और परोक्षियों को बीची में मूण (मिन्य) —प्रेमचंद, प्रश्नी; कभी एक बाच बीच कम् माना हेती हूं तो आंगों में बाने समनी है (प्रयन—धिमचंद, १७५), कभी कभी उसकी प्रश्नी में पहली (पृथ्व)—प्रकार करें, दिल्ल प्रयोग (१) में (﴿) जी

आंखों में कह उत्तरना

क्षरेन प्राणिक राजा का सामा का स्थाप सामा इत्तर जाए की जार - इत्याद्य अर्थ का एक किया सा सुन कर जार का सामान स्वयं प्राप्त का स्टूटर ज ---विक्रपास, ५२९०, मा न मिर की बॉट देवी सेंग धाली में मृत क्रवर आधा (रंगवाहरू प्रेमबंद, यय,

भाषों में गड़ जाना देश भाषों में खुद जाना

वांकों हे विकास

पून प्रतिष्ठित बान-मर्थादा का नष्ट होता । प्रयोग-अब नक सन्यामी अपने मन्यस्थय में रहता है, यह हिन्दू का प्रश्ता है पर परवारी हाकर नह समझी अस्ति म निरंकर प्रपट हो बाना है क्वतर-हुठ प्रवृद्धित हो। प्रश्ती संकृत भी नहीं। बानामी नम्-बह है ह ह पूर्वित की अबि स विर बहना है (बीटीठ-निरासा, हम)

आंचा में घर करता

- (१) धन्य-तः व्याचा होनाः । प्रयोग—किसः सरहः शतन क्याच भोग हकः नाभ ने भिसन हमारी वर किया वील०— हरिमीधः ४६ (⊕)
- (२) हर नवय भ्यान में बना रहना । अयोग—वाहिये न क्यू आफी पाह ताला फल पायी वार्त काही यन के सक्य नेन कीनी पर (धनत कांट्रश्च०—धनाव, १७४/; देखिए प्रयोग (१) म (+) भी

भांको से युग जाना

स्वक्ष क्यान में भाजाना। अधान—उस नाजनी की सक्त कर सांकान कृष जाती है, तो मुलको होता नहीं रहता साधानप्रधान—राधान क्षात, ६१६/; यह समर्थ हम हिन्दुनी क क बीज को । शांक के हैं जून बाता बाज भी (जूमतैन— हर्त सीध, १६

भाषों में बका बीध होता रेट भाषों को बीधियाना

आंध्यों में सरवी छाता

धत्यस्य वार्य हरना । प्रभाग—बहा । नुन्हारी आंसो पर वो महरी चरनो साई है जुल निल्न्यालमूच गूल, ६३१% स्वा मूळ नही पहला है, बोला में बरनी पाई ? (नुरल्— मस्त, ६१% करा का बोतवा बाब का सह । इसनी जानी जाना में चरनी पर वर्ष (प्रमाण—ग्रेमतंद, १६५)

जांखा में बुधना दः आंखां में खुद आता

सांको में अंजन

योग्य मानुस होना । यथान-कोई दुलरा महना समग्री अन्ति में अन्तर ही म का (गठन-प्रेमबंद, 3,

भोकों में उस द्वारा

आंसू भर बाना । अधाय—हर्गय वय् रोत हुटव जनगर गुलक अय अंबक जन साम राम्य (बा) - सूलसी, ३१०); बोम्बो विदेहता पोरे नगनो में जन वा आया (देटेही०— हरिओध, ७६

भोगरी में जाद होता

ऐसी क्षेत्रं जिन्हें रेजने ही सोन ओहर ही बाद (इस्प्रेय— क्या हुआ को बात स बादू नहीं ही किसी की श्रांत में काबू सराह कोस्तर—शृक्षिकीय, ५०)

श्रांकों में मांककर देखना

भाषां से मन के भाष जानने की काशिश करना। प्रयोग---वह सिनी की पांची में भाषने जना संस्थ---देव सव, १२५)

श्रांको में नगपर भागा

(१) बोलों का मृत्य होना । प्रयोध—क्ट पट्ठे की धूनाक गड़ी कोटी में देखते ही जिसे आयों में सभी धाली है :भार ग्रेकारा २)---भारतेन्द्र, १९२०

(२) धावमी प्रामा ।

श्रांकों से लिनलियां उदमा

दर्शनमा के कारण भकावट जाना । प्रयोग—स्वर शृश्किक से ५० करम वर्षे होते कि भदन फटवे नयो, यांव वर-गुराने ज्ञारी और आफो से भिन्नियाँ उपने कार्रा गोदान—प्रेमवंद, १९१

(तमार वृहार-आसी के साथे तारे स्टब्स)

भाष्त्री में नाजना,— फिरना, —पस्ता, —रमना,—

रहना

बरावर ध्यान वर्गा रहता स्वृति वं बन्ध रहता । प्रयोग --भिजई हो रोस रोग पानद के पन साथ, वर्गा मेरी अधिक
में आर्थन नृष्यान को प्रमान के पन साथ, वर्गा मेरी अधिक
में आर्थन नृष्यान को प्रमान के पन साथ, रूप्य अधिक
में मेरे वह पितर रही है बन्धारण—गन्याय, रूप्य, जो निर्माती
कृत्य क्याने लोगमां में स्वा के (प्रियण—हिम्मीध, रूप्य, ,
सभी वा ना सुन्मिक जिसकी सोगानों में स्वी क्यों हो प्रियणहिम्मीच रूप्य); उनकी बोगा में स्वी क्यों जुनवर्ष जुन

उत्तरंगी (नुर०—मता, १००), वो दिन में धीय जाओगी समी, न जाने फिनमी जीयों पर नरवती फिरोणी (बांध0— १० ६०, २%); बान में उन प्रमाने शाद बाती है नो वह रवरेनियों बांबर व फिर जानी है (सान० १)—मेमबंद. ५६), फिर दुःख के ने दूबप उनकी वृद्धि में फिलो अगे जा20—नुम, ३१); बाब दिखनाकन समाने बन्नी उसे जो हवामी बांब में भागा किया (बोल०—हिन्सी७, ६७), वो मेरी बांचों में एकी बही सांब दिखनाने की कम संग हवा बानी वी साम हवा बनकाने (नुग०—सता, ६६)

आंको में पानी भागा,—जर भागा

भीनू वर आता, रोशा भागा । प्रधाय—वपत नहत भीषत वरे वाणे (गम० (बा)— गुलसी, ११४), बाले सित-वपूर्ण के विषय में शोबा और इसकी शांधी में पासी था तथा सुठ सुठ—मृद्योत, १६

अरंको में पानी भर धाना रेट पांसी में पानी भारत

भरको में फिरमा १० भाको में मध्यमा

भारती है बयता के भारती है दावता

भांकों है बैहता या बैहाता

अत्यान विष होता. सदेव भावनं स्थाने की हरूमा होना प्रयोग—पांच की नी कुर्रात भी परिधान में पैठा आप, महा निरमोती यह बाह को हियो उसी (यनक कवित्रक—धनाक, १५८०, श्राम और प्रीति से कुपको नपनो में विद्यमानकी मुक्त—मुक्तक बीठ, १००।

भारतों में महत्त्वं र्भगगा

भेना बारता। प्रयोग -क्सी की घोगों में दिन प्रयूपी तेर वर्ष कृदेश- प्रश्न साल द्वा

अस्त्री में मोती होना

भागू माना । अयोष—कभी करूम - रसं यादे से भा भागी जोनो से मोती है मर्गण हिस्सीचे १६०।

भारती में समना रं॰ कांग्ली में नाचना

क्षांकों में बहुनर हे*ं* आंखों में नासनर



श्रांकरें में रात करना था फारना

निदान आना, राम आपेक्स विना केंग्रा, विनी किया यह ध्यक्षतः में रात काटना । प्रधीय-प्राची में 🦸 रात बारनी निधि धर कीर नहीं आती ज़ार-सांध है. रात कैंसे कटे व सोको में क्यों न किया भरी को कान '**द्योगा**०---(प्रशिक्तः ३३

भारती में समा जाना

शत्यन्त बिच होता हृदय में इसता जिल के स्वरण दना गरना । अयोग -- नैनना भार नी उने नमाना । रेसर्व ततो न देशहे दाना घट०- दावली २०५० .. अहा लानो दह आप नुस्कारो नेजन प्रार्थह समाजो आर पद्मात ने मारतेन्द्र १६४) रुप्टने में नाने बहुती होने नाम स शास गामार्थ आरांकी क्षेत्रिक सुर्वाद्यों है के रेगान ही रह जरी भाषा म समा वधी 'स्रोठ- **व**ध संध्_{र ह}

आंखों से भारत ह करमा, - दर म कश्मर का हरेगर जिल्हा स्थाप का होता । प्रदान का या पानवर्तन पर्या है बाहर को वस जॉन शेह निवारे पुरु सात- सा ६३४। में भागी में समान नुर्श नाम देरे राज्यों पि80--हारिजीध, प्रत

आंचों से साम् बटना, -- छमना -- वामना,---यहाना

क्षीयु ब्रह्ममा शैनर । अयोग--- मो पानी तुल क्षानि दर्द है देखि अलगो दुव और दिल्पील- दिव हरेगा, बुर स्माम मृत्युर प्रमु श्रृति के, तैननि और बजापो पुरु साठ---सुर ५७६६% का होती है त्यांति उन्ने काँको से बान् क्ये है मार्नेत- तृतियोध, १२वन, यह रही है जो यह विजनतिया क्षत्र म भारते तीर बरमानी एहे । यूमनै०—हॉरजीय ३१

बार्ग य मान दक्तर - अपन्ति स्वापन्ति स्व अपनी से संस्थान ना श्राप्ति स्व तक बदता अराजा से जान वर्गना

 वर्ष्ण मा शस्त्र शस्त्रवा अपनी से खेन प्राप्ता के आंखू रूपकता, विनद्ना

91 a 3T में को देखकर दिया गर्मा के दे

: 😘 वर्गनर्राष्ट्र की ज्यानर नहीं वचक उठनी 🔧 फिस की बाम ये सन के बांबू वही रहकते नकते? सम्बद्ध-राज्येण, 85°, बदा निवदना में बोबा से लोह जब नह मौसे बतरहें वाका बोस०--हरियोध, ३४); देश कर जाति का लह होत क्षिम नगर् आंध्र से सह भागा वीस०—हरिकीय, ३४ (नवार पृहार-आंखों से जन के धांन् वरसना, 🕶 यम बरसना)

भाषा से धन के बांस उपकर्ता आंक्षां से खुन आता. यक्ता स पत्र निवास - अपना से मह नाना वाधाः म वृता नवना प्रता बहुद होता । इदांग---अभि से समाज्यसमा बहु अली 4 CO- NO Rto. 108

भाष्त्री से गुजाना

बामन बाना । प्रयोग--- उपन एक दुनिका हेली भी मगर एका पुरुष उसकी योगों से जान तक व पुत्रस वा 9-9-9-76 44

शान्त से विकासी बदधा - छुटमा, कुटमा अन्यर्विष परिवन हरेगा । प्रयास-नामी की आसी से विनगारिको शुर वर्षे "सुगठ—वृ ० दर्गा, अस्त्र, वृद्ध रही है यो वर्ड विनयरिको अब म बाओ और बनसादी रहे वृंधरें 0-- हर्त भी छ. ३१ . जम भीत के सम्बद्ध कामारी की बन्यमा के उमकी बांको में किनगारियों कुट जाना शाहती। को इन्देश- संत्रपाल, १६१

(तमा पूरार-अर्था से विनगारी शिक्तसा, क्ष्मना)

प्रांकों से चितामधी हुन्ता अस्य अस्तित वर्ग कदमा

एक स विकास के जा े अस्ति विकास विकास विकास

असना स्व केली स्वाजा थी स्वाजा

अवदान हरू । व वर्ग-गर यह कि निर्मात व विक ा द्रोप्त व नाम व कि मु साम यू तमन कर स्त्र कटकत के भी द्वित ने सुक्र करन ्र - १८ वर्ष) करा व स्थाप वर्षक अर्थन र कर मात्र र राज्य विकास विकास विकास विकास



शांकों से दूर न करना दे॰ घोष्ट्रों से पत्रय न कश्मा

आंकों से दूर होना

सामने से इद बाना । क्यांन-वर्ष दिनर्पान प्रोक्त्य ६गनि ते दूरि अस ६कि नंद० ग्रहा०—नद०, ३), कमी का ही अभिने हे हर सब गही बना है लेरा काल (²देही)---इतिक्रीधः १७

भांखों से देगकर प्रकर्ण निरुद्धना

मानकारी में कीई बधिय का बुग्र करन करना । प्रदेश---हुंभ की भागी बकानर नीच नु क्षात्र में बॉलिन रंगन नाई हामून०---छ।कृर, १६), श्रीरत जाति का द्वाव वकाले भी सो गही करना, भांगरे एक कर बक्ती जिनसभी परती है भीदानः देशबंद, १३३

भएंगों से देखना

- (१) प्रत्यस धनुभव करना । अयोग---वीन तो भागनि पर्माय मुक्ते ही ये बस्ती में नामांत अर्थवन देखी धनेक केविसक—धनाठ, एड
- (२) अलकारी में । प्रयोग—बाह के बार पैसे बाता है. मी बार की आभी में बंधकर गई में व निरने हैता (रंगवः १)—ग्रेमसद, ३७०

भाषों से न देवना

रंग तक श्रांत में प्रांत रूपो मिलाने तब बीलंध-हर्ग औध, अप

आंभ्यों से न निकलना

मदेव ध्यान क्या रहता भूमस्य व भूगना । प्रयोग---हा शिव है इस प्राध्यत है से धनको यह सामने नेस्पनहारा ज्योक- वदानर १९

(भवात मुहार-कांच्यों से स उत्तरनाः)

धरियों से तींद वर जाना

किन क्षेत्रक के बारमा कला स्थाप करते और भाभी की शांनी से तक गई और बहुत अ देवर बीर देवराती भी बात मुनन बनी श्रीतन-अदक, २०५ (गमान मुहान आंको में फरक व समना)

भारते भे प्रदा हटना रक्षाल हर श्रीवृत्ते । चलाल जन्म र प्राप्त व पर्धा हर नवा वा (चैतन- प्रक्रक, २५३,

भागों से मोती बरसना

गना । इधान—दिक हिले आंत्र से तिने मोनी, दिन रिपति पूजा अन्य पर्व सूचा है। (चोमीठ--हरिक्सोच, इंड

भाको से रस सम्बन

पर्व पूर्व दुष्टियान काना । प्रयोग---है कोई साम विप उपन दर्श है कियो और व बस्तान वस (बोलक-हरिओध,

अर्थ्यों से स्वराजा

- (१) मध्यर स्वीवाद करता । प्रयोग--वत्यवाद की विभूति तकतीय कर ही है। यब ने शिरमारे बहाई आयो म नगाई (पद्दर के पत्र-पद्दर अभी १८६,
- (३) बहुत रेस्ते करवा ।
- (३) बहुत पार वण्ता ।

आंशों से पित उगलता

शयन्त्र रहिटयात शरता । प्रयोग-मी कोई श्रांत विव उक्त हरो है जिसी प्राप्त ने प्रश्नाना एक बोलक हरिजीय, ै

भाषां में यब कुछ पर लेता

नाम देवकर मान नाम नेना। प्रशंत—बयह वी ही नानिया को बानों ओपों से तब पुत्र वह नेवा बाहती ही 410- the tip. To

भाग्रे भागा,—पाता.—हशका

हानि पहुँचना । असंब-चली, बेटाबर, विश्व, हुए, दरी। बस में जान । जहां हाहि बहि तह देने निहने पार्व जान राधांत राहाल- राहाल देग्स ६७ वही तम शोलम कर्च हो अध्यक्षि हो भी प्रदेश आजि स धान दुवा (परोह्नाo मीठ दास ६४ . को योग बीत परे एथा हरी में सुपने । स्वंश्न्यां नार्व बाद तर्व रच बोरह राज राक्षा प्रशान गर्ध व दोस, ४३ , कावर के धन्तर रही और वो बाउ करो नुष पर यांच तक मुन्नामं पात्रेयी ऐनन-प्रेमचंद, प्रष्ट कंटी बातें करते ही अस्तोर ? ईस्वर न करे तुझ का बाय क्षावे रेडनीय--रामध्यमी १४२०, अन्य योग यह अध्यम है कि वह भीर साहब का आती मामला है वस क्षक्र, यह कांच व बाव वाए (मृतिस-मार्क्त देश) ३५६ पहलारे क्रमा थान आन के पहले मरे तन में हुण इन्हुक है हो जापने (१९६०--व ० दर्गा, ३५६

ऑक साना

(१) भरम होना । इयोग---मच धारा रह नया करा सोना पथ हुआ जैन पुर बोच का (मुनते०--कृष्योध, १३ (२) गुम्या होना ।

जांच पानर

र असेन भाना

आँस कमता ४० अन्ति सामी

भौत स्तना

तृभ्य द्वा विकरित सहस्र । वयोग---क्यार्गः प्राप्तो है प्रवदी आदम अर्थि महत्री है (मर्गठ--स्थिकोध स्थ

शांसक की और नेतर

(१) शक्य पूर्वेक राजना । प्रधाय—मोहन है कवि मान्यूर्व पुरित वर्तनों प्रचल बोट सुरु कारू—सूरे, इंपर ॥ (२) शक्ते बाध्यम में देना र प्रचान -स्थित कर भी तो मूचि रू म तकी स्वाया अध्या की है म सनी राज्य ०— दिनकर संग्रंत

आंसल प्रधानका

- (१) अन्यका तीन काम में बीका धामना। प्रयोग---श्रक्त में बह कवा बह कोशक न ना शिमम एक गीर तब हजार घडनको आनेक पंसाद कर भीका बांकनी है सिद्दर—-मात निर्मादक
- (२) मधना दिनामा ।

(पनाव प्राव-कांसन फैलाका,-वीपना)

भौषक है गाँउना

- (1) या लेका, संहम उस्तम्भ होना । प्रयोगः जूम कोई ही भूमव में कामी प्रभागों को बांच जीको, मुक्तको विस्तान है भूमव-मुठ तमा ७५०
- (२) किसी की कही बान की बच्छी तरह कहर रकता ।
 ८४ पहर पार पार पार

भौर पा नदमा

पात पर काला । इत्याप दाला प्रभावक ना सुरक्षण वी सन्तु सीर्वक्षम विस्तृतक पृष्ट्य

आंत उत्दर्भ अपना

दुवनि होता, कर होता, प्रस्कातक नियति होता। प्रमाण-अपि की अपि उन्नटी वेलकर, आ गई सुद्र पं अगर अपि बही वोलण-हरियोध, २२३)

और गरे पहना

मनीवल में प्रस्ता। एकाय---६वर्ष उससे काने दिन की कान कही। इस सीमा से बज़ दे तो उसरी भारत गरी कर जान 'गरन' ऐसर्वट, २२६०

औन समे हैं जाना,—मुंह मैं जाना

बहुन राम्तानी में होता। प्रयोध आणि ही बांक उसरी रेमकर मा वर्ष मूंह में सबर बांच नहीं (बीटक-हरियोध २२३ - है पूर्वी बानी नहीं बाने मणी, बान बांच है गले म मा गरी बोरक-हरियोध ३२३ (बारा व्याप्त-काँन सिकामना)

भारत मृह से भारता के भारत गर्दे में भारता

भाते कुरुब्धाना

भूण के मार्थ कृषी क्षण हाता । प्रयोग-—दीन केंग्रे लाही निकाले हम आंत हे कुलबुका रही केंग्रे (बोल⊙—हॉस्बोध, २०४

भंग्ते सरोहता

मृत्य वर्षात करना । प्रयोग-वेट बरता न देश कर भागा मोन वनि यसर केले हैं (बोलo-हरिसीस, ११२) ।

जांते खुजरा

नामा न विकास । धर्माय-ई यही बाह धूम जिले ज निर्म का सुवादेश मुख्यो धाते चीलठ-हरिश्लोध, इरव,

मांतों से बार्ने निकास देता

पट के भीतर की बात निकलका हैयर । प्रयोग-स्थानम नेकार साहत जैस किन्दुरवाजियों की आंगी तके के बात की निकासने का केंग्रा वासता या स्थामीय-यू o वर्गा, १९४०

भांची अस्तर

- (१) फिली काल या चल्यू का पूरे केन में आला वर्णण रूपों जार्ग वर्णों प्लोज की श्रीकृति के कहा पुरान करण पह
- । এই লোগে বিকার বেনা হগায় হিন্দুটা এই ন কটাম বামৰ বাৰ ভূকী কটা কৰা কোনে কা বিকার সংগ্রাহ



हिल्ली माहित्य में एक मांचे। की वा **मई है (कुछ**— पर पुर करती, का

आंधी उड़ला

भांकी करना

निमास का क्यन करना (प्रकोण—भारतट सेटी आक्या मै माधी, जीवक भागी अलगी गहरी है भागत-समुद में मुद्द, ६०

भांधी से कंतना

भारतृष्टं कर विश्वति में पड़ना । क्योग—आवियो से कारता है, जान करना है—क्शिनया में आनित्रत कारद०—क्साद ३५

आंच बांच

ध्यमं का । प्रयोग-अपनी एकमा कार्य आने । जान-साम माने में आने उन्देश प्रशास-नंदर, १६७

भोय-बांच बक्रना

इगर-इंघर की बंधतलय की बातं करना । प्रशोप - आध-बाय बकता है, बाफ बात नहीं बनाना (मा-क्षेप्रिक, ३३%)

भागनाय मांच उषा देना

प्रश्र-उधर की बात में यतस्य की बात को तमस्य कर देता। प्रयोग--- में नैयाकरात भी निर्दे हुंद अपूची होत है जो इकाहरात जिस कप में किसी कृष की व्यान्या में भा गये हैं क्या नहीं तक इनकी नांत है। को भी पृश्वक प्राप्तने हो तम नहीं तो जाय-क्या--माम, जो है थी. कुमने लगते हैं (प्रष्टा में प्रश्न--मर्माठ सम्बंध, १३२)

आंखुओं का सार वंधका,—बहना,—परनाका यहना,—की आही लगनी

नश्य देश वर रोग प्रशास प्रदेश नक में नोड प्रश्य नश्य समुप्रति के भारे (स्थासाठ-प्रदे, १९००): बहुन विश्वाक वितर कार्यन प्रशास नम् नायने । तार काप नारते आमू का नाय-नाय परमायने (देदेहीं)—हिंदिकीं। १९३३ वर्षी कीता नहिंदिक जनस्म नाय नार कर्ष कारण सूने-मुनाएँ हैं—कालुयां के बरनाके बहावे हैं, एर बेनो क्या कभी नहीं हुई (क्य क्सम्-क्यक सर्मा, क्य); केट बोक का भाग ककर बोर के यो उठे : बांसू की कड़ी बग नई (प्रेमांठ- फेसबंट, ४४४)

(^{4मा वर्ग} प्रत्युधी का तार न हटना की काद भागा)

भाषेत्रों का तार कहना देश संस्पूर्णों का तार बंधता आसूओं का प्रत्मका कहना देश संस्पूर्णों का तार बंधता संस्पूर्णों की तार बंधता देश संस्पूर्णों का तार बंधता

आंखुओं है बृहतर

रात दिन अनुवात होना । प्रयोग—स्वाम निनु अंगुअति वृग्यं, वृत्तद्व पति वह नात (सुठ साठ- सूर, प्रदेवर), रूको है जो, यह के दूव को अन्युक्षों में आप नया है पूनती , कांगठ—हाँ खोड, इस)

भागुओं से मंद्र फोता

राना । प्रभोग---वेश कृष भी कृष नहीं ही का सका बागुमा में सुद्र पने ही भी निया (बोलo- हान्सीम, द्रश

भाग् का कतरा

पान् । प्रधीन-न्यर के नगर क्या उसकी बह की सहसी राजन पहुंचा सकते हैं जिसकी असक दोलन सामू के कहारे उपका कर पहुंचाते हैं हैं (साठ सुठ-न्याठ महू, १०६)

भाग का चंद्र प्राप्तर रहाहाना, प्याप्तर बहारा बीतर ही भागर गैका यह जाना । उद्योग—भीर वह एक बक्ते की किसकी केकर वपने समाह आनु भी की दीरार राष्ट्र के कि के क्षेत्र किनेत्रा व्याप काता हैं गैसर १०—प्रक्रों से, १६६०, पॉने की सब क्या रक्षा है, परनी कानू के पीच नुरक्त क्षेत्र, भी, मूच से मूच बीठ अब काने बाता—नाम्य विश्वाना से क्या पाते ?—पृट बानुकों का पीकर यह जाते परिक—निराली १३३-१३४

आंध् गावता, ---हान्त्रना, ---डावना

(१) नोता । प्रयाम—नर्गर चरित पति प्रारह मामु १९५० क्रिको चुलसी, ३६४ , बिट्टर आवे भेडती, अगा

सर्विती लीम 'ग्हीमा कवित-पृष्टीम, १० र जिल्ला मधर्म में मोन् इरगेर (वैदेही०- हरियोग, १९०५ देखां प्रमंकर पेडियं की बाद क्षान् कानते (स्वयं) नृष्य, कर्

(३) भौतिक महानभृति दिल्लानः । वयोच-नासन बानां न भौनु का विभा, कम न बांकु राजन वाने विन **१वोत्पर=**(धंराष्ट्रीय, इत

(प्रमान महरू-आंस् विकास)

भाग सर्वता, अनंता

शांका व सांगधी की वाश दरनो । प्रयोग-नानु अनुः। tie nich, wie ale nice fo fin- fe bent. कान भाषको चन्ने म का किन हिन्द तथा कर न निर्मात atel freit mit der deffongfente sie on an कृता बंग व चालू के बंग बोसर- हरिओंच ६३

शास एतनः

र आम्ब् चलनाः

भास इच्छ्या

रे - आस्त्र गारमा

भ्रांम दूसका पा दावका

4∞ भाग गर**ं**गा

श्राम क्षेत्रक रह जानी

🎨 अरंक्ष का पर पंप्तर का जाना

धास् गुप्तनः

माहा शहन होना । प्रयोग-नर मरनवान के कुछ १७ती बलकी के अञ्च पुष्रने क्ये .8 सी०--8300. ११३. . योगस बामा न संस् का निमा पृथ बचा संस् किया पाँचे हुए OTHO HE PARET

क्षांस् परेखना

द्यारम बचामा, दियामा केता । घयोग-व्यान व्यास वि इस पर मार्थ नेपाँ कह र वह राज्य नाम चार कर पण करेंग हा किना कि हो भारति कह समय सहावर्धक हरता हाला पुर प्रात्त मार्थ प्रमाप प्रस्तित क्षेत्र काल्य के काल्य के वासुका अपना राम न बाह्य साजन कात्र दिए । द्वांकर करिओंच ६०

आंस सम्मना

लक्ष काम दिवस कह क्षा किये । यहार विकासिकार

सम्बद्धाः । व पनापना जान् स्थान रक्षाः सैदेहीः हरिश्चीयः । ०५ (तथा: नृहा:--- भाग्य धार धोना)

आंख बहाना

ट्रम करना । प्रयोग —वो निजन्त के काटक इस अवस्थ-रोडन में नांच े प्रथमें कर जानू यन बढ़ायरे (कनात -- वृत्तः पत , पहर बंद कर मैने क्षेत्रफ तेल जिले हैं। एक छूप नका है जो चेनना है। दिन बाब कर यह कीजिये और कतार की कृतप्ताना अरे आंत् बहाइए (पद्मार के पत्न पहरू समी २०५), विराधनी की अधीर्णना सीर प्रस्ताप पर आन् बहाक वर पेमाठ-प्रेमण्ड, ११६,

भाग्य बहाने बाला

नमवेदना प्रनट परने राज्य । प्रयोग-नीई समधी साह पर पाणु बहाने बरना भी व क्षीता - गंवल-प्रमण्ड, १३३

urin merene

वर्षे क्रीनना । अयोग-अटन स्ट्रानन्द्रा पूनक वर । धारा र्याप क्षेत्री थी (मुगठ--वं ० वर्गा, १३)

भा तमना

रमहर क्षेत्रा का अङ्गा क्षेत्रात्वा । अयोग-स्टब्ले के अर्थ राज्य सम्बन्धे बरहाल बुन्छ उन बेहरा से मिलने केरे दश भा भवने के **य**पनी **कार -**२:व, ३३

रमधार वृद्धार-**-का स्टबा**)

आ बरना

- (२) नाम बंदाने का जन्मा सम्बद्ध क्षान् आसी। प्रयोग-एक क्या कोचे बाह बनी सिट परि साहित शक्ष पनी 'का उक्षार-कारि, शुद्रा)
- (२) गाना गरना—सौनः गरना । प्रयोग—संव पंत्रक ती गण नवामचन, जान करी यह कान (**४० साल-न्यूर ३६५**); को बरिये परियोग् हरा हम भागि बन्ध न लागम या इन धन्त करिल धना छ।

भारे वरे

जर्म कृति । इस्तान कहता बन में बीचे लगावा दूर स रमाराष्ट्र इसन जारं नार उपलान स्थित प्राप्ताः स्थाप र THE P O

अध्य गाउँ होता

ज्ञार राजा प्राच काला । या हैसे दिक संघ लगा।

नी आई गई हुई नेवल परिवार में बीवकांत की बाद वा साम नाम का के हुदय के कवारों को सीवों में लोफ-गोट कर दिश्या की नदी में बहाता हुआ। परिवा के सवकार की तयह बनावने लगा 'बोने---रोठ राठ, चंड

(२) परिभिन्न होनाः।

आइमें में मुंत देखना

भगनी योग्यता को जानना । प्रयोग है गुण्डामा न तेर कि गम्बामांग कृत अनिक देश जाति में की मुसरीठ— एडिजीय, वर्ष

भाकाश और पानाल है होना

पहुंग केंची चौर नी.पी. जिस्ति में होता। चर्चन—दह इस न्याम प्राथम पर है में पालाल य र स्था का रंग⊙ (ह)— वेससंट, १७७

भाषाश का ताश नीपना

पूर्णम बन्दु सामा, असमय करने करना । प्रमंख—में मनी मानि मानता हूँ कि मैं भाकास के लागे नोपने का यहां हं—यह पन्न भागे जा शहा है, भी मेरे निम प्रतिक हैं (रंगठ ,१) - ग्रेस्कट, १५४)

(मगांव मुंगांव-काकारा का नागा सानाः-कर फुल लानाः)

धाक्षाक की बार्ने करना

प्रमापन काम करमा । प्रकास---सिनारमी करपूरम मिट्टू कोम काम अकामी भाव प्रचार (१)--सारतेन्द्र, ३३६

आकाश संदर्ग

पदी-वर्ग कम्पनाएं करता । अयोज-क्वीर तंत्र वर्षा प्रयाः बहुतक बहुदा सदास (कंक प्रसाठ-कवीर, ३०)

भाकाश वंदाना

सन्याम देशा । प्रयोज-प्रश्नी में आकरन परार्थ, यां अकास विराचे (क0 प्रशाय-क्योर, ३३०)

भाषतेत्रा न्यूमना, कृता, पर मस्नक उउण्ण होनर,—स्थाना

यहुन क्रवा होता । श्रातेश—यन वक्तरक लाग वह पाना । तर्ठ पुत्र हित लाग वक्तवा ।पद०—सम्प्रती, वाव । गहर हित्त परिचान शहरा पहुन्य हो क्रवे क्रव को गहे स्थोम की पूमते । ऐसे बहुक विरच कुन्द श्रातोकते कर स्थान में रमुक्य रुचि के पूमते ,वैटेही०—स्थितीय, वन्ध्र, कर को नुपति-जोध बसन-स्था है, जिल्ला की सम के प्रथम धारकों हैं सामेल -सूत्रे श्लेश, आक्राम पर सम्बक्त प्रकार दुष्ट प्रदेश विधार इसारे सामने क्षत्र में 'विज्ञाल-स्थात क्षत्री, १०४

भाकाश सुना

🕶 बाकाश भूमना

मंग्यत्या प्रकारता, आध्यत

(१) जनभाव काम करमा वा बाग बागा । प्रयोग— तुम कावित जावाध, कान वृती की मेरे सूठ साठ—सूर, २९७९०, बागिय नक्की जवाम मुनग म वार्ष शाय, बारि तो ककृत बारो नालें बीन मार्ग्य सूठ साठ—सूर, २३४२।

(२) बहुत और पूर्व करता (

भाकास का सद्भाग

बर्ग बाद देता । प्रवास-न्दे स्थी देवी ! समाद करी अस्थाय में मुख्याना (कन्न) हो, क्यांन काम काम में अस्थाय में पदा देनी हो पर जब बरवा दे देनी हो तब समाद में कृतमा क्या है मीठ प्रवाद(द —आरसेन्द्र, प्राह्त, में मुख्य में वर्गी हों भी। बाम मोगों में मुख्य बारामा पर बहा दिशा कर्मक न्योगबंद, क्य

भाषात्र पर दिया क्रानामा

गर्व करना, दशा में दशा करना करना का करने की दिएयन रमना । प्रश्ना—कर देवी द्वांगर की तो हम और प्राक्तार पर दिया कमाने के, कर कर बढ़ कनेजा नहर में बान ने प्रमाठ—प्राक्तर, १००

आकाश पर सम्लक्ष उठाण होना १० आकाश स्थाना

अध्याका प्रातान होते करेगी

आगी इस्टीय करना, आरोजन करना, हमाना करना। प्रशास—विक इन सांगी को विज्ञापन होने के ऐसे ऐसे इस बाजूब रहते हैं कि एक कम उपयोगी पुश्तक के निये भी वे आकास पानान एक कर हते हैं (माठ सीठ—महाठ दियेती, प्रश

भाक्तक प्रकान की अंतर

क्षा अनर 1 प्रयास-केटिन में हो बाकाय-परतान का बक्तर देवता है (पोदान-यंक्क्ट, २५४): इनके वेटे सरकारी



मं बाकाम राजाल का बंकर है 'पैतरि—घटक, १४४), वर विकारिको में एक रहेम कर क्ष्यक । अश्वता पाताल का अंतर है निवार—कीरिक, ६,

आकाश पातान के कुनावे जिलाओ

(१) वडी-को को करना । प्रशंत —क्योंकी कुछ महराती-प्रश्राणी करिया ॥ ॥ सामसान्यकारक कुलाव मिराती मानी रोधकरी ग्यांकिन्स, वे वय सीयं नीटचे के मानस-क्रियान ही तो के निरंत- पुलावक ६०

(६) पारी रहांग करता ।

(समार मृत्य - आकारा परमान के कुनावे वक करता)

भाषांक काताल क्षांना

धीत प्रमुख करती । प्रधान—यहाँ केरण आरम्बस वीतान सामा (कुपति)— हरिजीय १९६९

भाक्षणा पानानः अपनाना

हुर-हुर तक तांच विकार करवा १ विघान वह दिव वर सकत्त्व की को आकारतनाताच व्यक्ति रहे विकास— कोशिक, यह

अरकामी वाचना

🗫 आफाश पंकरता

भाषात्र भेती

(१) यहन प्रोप्त की कामध्य (क्यान--शुरदाय के कर क पट्टांस की वाष्ट्राय-वंदी व्यक्ति, भी वकारहै (१४० (१)---प्रेसचंह भूपद

(३) बहुत इत्यान

भाकाम से वेंडला

क्यांन गर्ने करना ५ - प्रदास—की स वर्गनी सक्य के काहि। र राज अर्थन का का कि किया के राज्य

<mark>भागाम में छंद करना</mark>

not the second of the second o

€ के के के विशेष (तथा)

भागमध्य जवना

^प - अप्रकाश सम्बद्धाः

आकाश से जिल्ला, अवनी पर वा विवना

भाष गढ़ बन्ता । प्रकार—माना मान्दे आक्षा है विर पड़ी मानक १ -- देशवद, २११% विश्वक एक भार में आकारमें पृथ्वी पर भर गवा (बकान-प्रसाद, द्वर

मरकाश में भागी पर भर तिस्ता है। सरकाश से विस्ता

भाषाश में पाताल में विकास

- (१) रेमान के बाद पणन होता। शतीय भागी से पण्याम भ्रष्टांदे को अन्तरम विगाव का प्रकार-कडीत न्दर
- (२) तत्र हो माना । प्रयोग—सेटजी पानी शासका से पानान में किए एटे मानठ २ चेंग्रजूट ३६

भाकाश में भी इ.बा होता.

बहुर क्रमा होना । प्रयोग-न्यो यह हेथ गाम ने क्रमा । नर देन कर नांड वृत्या पद० जावसी, १६३

(मगा) मुहार---भाकाश से करों करता)

भाषाता वृश्य

निवस्त की सन्तिम्बल क्या । स्थीप—वर विका, कुत स्थीन की वर विनी किए सानी की कारी स्थिती सहा वक कि अब कव्य सरकाती कृषि की (मान्य २)— प्रस्तिक १३८

भाषिनी दश पर होता

मन्यु या अंच होत के निचट होता । प्रमोग---रिधाना विकिन्दी प्रांचनी नवी पर है (क्टा०--देठ प्रक २६६)

भारतः

पेर प्रकाश विशेष्ट । प्रयोग--- वर्गा विश्वासित होती हुई साम्या में एक प्रश्न और विशा कर क्या प्रवासन विशेषी क्या कर प्रेंचर कर नौट साथा (विस्त (१) अग्रा स. १००), भाषती के क्या में क्यांचरी के ब्रास्त की जात करण कर है पर को कर वा मार प्रसाद कोल करण कर प्रकाश रहा है सिसाबी---प्रसाद, सर्व

अग्य देशन्त्रस्

रेवार के विशेष कृष्ण गर्मण के एवं पात्र जेता. मामान्याचे के उसके निष्य श्रीमाल केला कर है। पूर



शिया कि पाँचका उननी ही आम. उनके किनने में उनक प्रकारन पर भाग ने भाग मुद्दक-सक नक, १९३,

श्राम को हवा देशर

भीय हा उल्लाबना की और बद्दाना । इसीन जाना ने साम को हभा दी-नहीं तम क्षत्र जोग जन्मरें ही से पर बहुने ने सामकाकु।--प्रेयबंद, १५५

धाम देवी पड़ना

- (१) फोम प्राप्त ही जाना (प्रयोत—हुन्छ हो दिन की माम तो ठडो हो नई (११० (१)—प्रेक्स्ट, १५७)
- (२) बलेक्टा का भारतीयन गान्त होता ।
- (३) प्राथ बुक्त वाना ।

भ्याम देशः

- (१) बाह करना । प्रयोग—को बोहि आर्थन हेए स्थित होरी पदेश अध्यक्षी ३५% । से (२० वर) मर राज्य सो आर देने हो जाओपे, तक बहा बच्चोंने हैं (सानश
- (१)—प्रेमधद, वधश
- (२) नव्द कम्भा
- (३) नतम करना

भाग धडमा

- (१) मेम क्षोत्रा, नष्ट होता । प्रयोग---कंसे 🚜 कर्म किसे महि करें। जारीय परी जिस तर चरि केरे (पट०---जासकी, प्रशब्द
- (२) बहुत गर्मी परना ।
- (३) मनगर्प तोना ।

बाग पर (में) तेल क्रिक्कता

कांच को उस्तित्त करता । प्रयोध—अकपर, बात पर तेन शिक्षकता अन्ती जान नहीं (१४०(२)—प्रेथनंद, १७२), हमारे सम्पन तो मिन-मिन करती है, एकास में साम पर नेत सिक्कती है (ए० ए०—सुदर्शन, २१०)

(समार मुहार आसमें भी हालता, न्लेन्द हालता)

भाग पर पानी कालमा

विशेष्ट, प्रांति, फोच आदि को धान्त करने का प्रमान करना । प्रधोग—राज्य शाहन ने उनके नेकर देख कर आज पर गानी हालन हुए गड़ा कड़ाणि नहीं कि धटना साथ मेरे साथ बोर सन्याय कर यहे हैं ,धानक (३)— प्रेमसंद, १मर)

13

भाग पानी में कुदना

नव प्रकार के अवरं का क्या उठाना है। प्रयोग—संबोधिक को जो पहले अने कानी दोनी बाने जो बचान प्राप्त सहते नदी काट बचले हैं। जान चीन नानी में कूट सकते हैं मैशांठ---रंजू 200)

(नमाव वृहाव-- साम पानी को सुप्रकार)

भाग बहुता होता.

अस्थल चौर्यकर हाना । असीम—अप्रवाह कर आप वक्षा यह सम कृतर्गह (ग्रेशां) श्रीवां —ग्राह्मा द्रांस, ७२४८ सेटबी मृतके ही बाम क्ष्मा होकर हड रेडे । और जिस्कते हुए बाक, "तृत जवा जहाजां —क्ष्म धीरती, ५६), क्षित क्षा या कालो वर्गकर बाद बद्दा हो ग्रेसे (कार्य-जानां), ११। (कार मृहद — कार्य क्ष्मार कार्या)

भाग सम्बद्धाः

न्ति वरकी रहता, कृत तु करका । अयोग-सामकः ता पाना व जात होता । ताता पद्म के पश्च नद्मत अर्था अन्ति, वार्ष प्रभाव में की आज करक रही हो (पृष्ठ-प्रशा पद्दे १०

भाग कुमला

- (१) विरक्ष भाष हर होना, युक्त हुन होना । प्रयोश— कीच विरममा कीच की वसकात नरिया कार । गोर्डिट क्रिके व भाष कुछ, गृहि कुछाइ कुछाइ (क्रिक दिवार—कडीर, ३४
- (२) कुम्मा पूर होता । प्रयोग—नाव को-वाद सुन हो
 प्रापंत तको यह भाग कुमरी १५० (२,—प्रश्चंद, १३२)
- (३) एवं यान होना ।
- (४) किमी इस सान्दोन्छन सर छहा पहला (

आग बोना

नवाई क्यांना, सनिष्ट करना । स्थीन - आतियां पृष्ट बोद किनका की नवी इन दिनो है जान के ही थी गई। चुननैक-इनिक्रीय, ३३

- (३) अरडोलन की घृणकान करला, लोगों को प्रशासित करना :
 - द्वार भूगाना

भाग भएक उठना

किमी वर्ष हुए कोच कॉर्लाटमा वा भारतेमन सादि का जोरी व उक्क बाना । अभोन अन्यव पृत्रे देव कर महाराह्य है



कलंकं में मान भरक रहती है (सर्वाण्यक्षाo--राघाव दीने १९४४), इकाके में आए मुलन रही जी, इना पाते ही महरू रही (पेमाo -पेमचंद, २४

भाग में ईधन जालंगा

- िर्) लक्षा में कवाई समाना । जमीन—विसंख संबध माम में ई मून पालती रहती भी,—एक ओर बलाई को उक्तमानी दूसरी और मोधी को नमधानी (गोध (१)— ऐमक्टर, ४०१
- (२) उठने हुए विशेष्ट बादि के प्राप को और वंदरना । (समाक बुदाक—आगं से साथ स्टमाना)

भाग में कर पड़ना

मानकृत कर विवर्तन में पहला । अयोग-तब बागे मृत मोश मनाइ कर इस काय में कृष्टियें (पण्ड के पण्ड-एक), १०५.. ता भेषा, में इस बाल में नहीं कृष्टना भारती (एक) १)-- होसकन्द, १०७)

भाग में वी पश्मा

ऐसा कुछ बहना का काना जिसमें बीच था उत्तराना धीर बढ़ें। अधीर --वर्तन शिम भरेड समय सक् आई। बात अनम कुम सार्वत थाई समय (च --एकसी, ४२५); जान में बी गढ़ नवर मारा नाथ साक्ष्य में कोश को दशाया शिक्षण-मेनकेंट २६४

भाग में भोंक देश

पृथ्य का देवर जिस्ति में इस्म देवा । प्रयोग—क्या हय पामकृष्य कर राजवृत्यारी को आग में बहेब देवा काहिब ? (विप0—केमी, क्षा) अध्यह कहा का न्याद है कि सुवलके के कर में उसे बाज में आहर हैं (सेमा0—केमबन्द, १०३)

असम्बंधियांचे बालता

नाम कुछ कर करावे में पश्ना। प्रयोग—कोन से लोन इन रह है से पान प्राना न असा म राज चुभरी० मुस्सित ४३)

भाग खगना

(1) नेप्त हो। भाग भाव स प्रयंक्त । प्रशीस — धाई है। है भाग है। मिली (1 पित काम गम भागि नेप्स मोर्ग मार्ग में ' 'पेरावर् हैं क्लेंद्रक ऑक्टॉ हैं। पात हो हम पीयन में हार नग जिसे विवादे में यह प्रतर्के सिंग सुमल्य— हरियोध हैं।

- (२) कांच क्रम्फ होना, कुदन होंगा। प्रकोय—-योग की क्षित सुनत घरं जंग प्राणि वहं पु० सा०—सुर, ४३-१२ : मुरम गहाका सोलि एवं निर्माण रही यनकाह । पिय-अंगुहिन् कार्ता मले आरो उसी यांच विहासी स्वा०—विहासी, ३५०. किम बक्त इसका वह नेजी से साथ निरम काता व्याम करता हू XX बाग वक उस्ती है राधाण प्रधा०—संधाण दाना, ६९५ , सुनते ही सकाएक तम यन से बाय त्या वह (मुत्ताण—-अ० ना०, ३५ , समने प्रपत्ती देशानी की निर्माणों की जाति बदन जेंद्र से सामने होंगी और हालके नवाले दवा तो उसके जाग सी बन गई (मेंसम महक, २०५
- (1) महमाई होता । प्रयोग—नहां तुम्हारी हुन्धत आती है वहा माने-पीने को नीजो को एकदम आग लग आती है पूछ लिए—बांध मुठ पूछ, २५१% धोलियों को तो आप्रकल पान नवी हुट है, तीन की विनती भी वो नेगह की पिनती है सुद्धार (१)—दशस्यात ६५)
- (४) किसी साराजन या असतोच का कैसना। प्रयोगः गरनी बस्दुन इस का नाम केसर बहा, वह हाईकार्ट में स्प्ल वर ने धीर विन्यूस्तान घर में यह साम समतो (बीटीय-निराता, १०), सकर, परिचमीत्वर सीमा पर आग यम पूर्वी है। इसी का नगरान तीरवाना भारतको पर पर सामा है भीराए-जगठ साबुर, १४३-१४४)

भाग समा कर पानी को दीइना

नामकृष्य कर बहिनकर काम करना और किर इसमे वयने को उपस्य करना । प्रयोग----वृत्ती रखानाथ की आधीं में उस कृष्य कर कुछ मून्य नहीं । बार्य समा कर पानी तेकर शेरने में कोई निर्दोश नहीं हों जाना (स्वत---प्रेमसंद, १४६) , हभी में चान कमा कर पानी को शेवने आने हैं मूनते० (मूट)---हार्रजीध हो)

, नमार परार अधा स्था कर बुकाने को दीडना।

अंधा लगाना

(२) त्यारं नगाना देवन प्रश्नित स्थान स्थान कर सहस्य देनी। प्रवास सम्मान स्थान स्थान काहि है उनहीं ज्ञास समाने भावप्रधान १ भारतीन्द्र स्थान समानी किश्नी है सम्बद्धी राजी २) काम है XX प्रांत समानी किश्नी है (सुंब्रह्म) सुदर्शन २०६ वर्षी अन्तर प्रींत की प्रांत मनाययी स्मान्ध् (१)--प्रेमचंद, १) (४-१) , कितनी है प्रत्यात-महत्त्वरों, कितनी ही है आब क्यानी असंठ---हरिग्रोध, १५१) (--३)

- (२) चुगली सामा नष्ट करना । देखिए प्रयोग—(१) में
 (÷१) भी
- (३) नोग बदाना अडकाना । प्रयोग—मामा ने वो भाग सवा की है वह की बन्नाल नहीं बन्ना सकती (रंग०(१) --प्रमुखंद, १५०), वेशिक प्रयोग (१) में (+२) वी

अस्य सा स्वरंतर

बहुन अधिय या बुक्तवायी काम्या । प्रयोज—से भी जैन बाही को बदन हुँदे कीरे होता और बात आजी सब स्वापि वदी असीर है (सन्दर्भ कवित—सन्दर्भ)

भाग सुख्यमा या सुल्याना

(२) कोप या जीम कामा । प्रशेष—जिनके हृदय में कथी भाग मुनगी हो नहीं दय समन ही पटकार नहीं खनका कुरुठ—दिनकर, ३०)

आसा में आसा बुक्ताने की कोशिश करना कोम सा बुराई को कोम से सांत करने की कोशिश करना। दयोग - साम स असा कुकान को कोशिश को नुष्ठ हो किया करने हो (दुधमाछ⊷देठ सठ, ३४२)

भाग से बेंग्रना

आग होना

(१) कृढ होना, रीप वें बरना । प्रयोग—हते रहकार आगें (जानेय) मुलनाती । देखि अंकोर यए वस पानी (पद०—आदाती, प्रश्नाक); सुनडे ही वह आयं ही पर्व (स० वसाय-साथ मित्र, १३); हेड़ आस पहले बेटे ने इससे यह प्रस्ताय किया होना भी जान ही जाते (कर्मo—द्रेमचंद, २४२); इनदा नुनन ही कियाजी खाय हो गये (भिसाय— कोशिक, 83)

आगम बध्धना

जानंगाकी बात का निश्चय करना । स्वीत—आगम कांध कृषने यह बात विश्वादी है, व जानिए केंगी होय, मेंग तन्मारी बाद बात को (प्रेमट साठ—सठ साठ, २४

मागा पीता करना

मंचि-विचार के दात्ता, कृषिया के पहला, किसी काम के राज में बाराना प्रधान अपना अपना विद्या किसी काम के राज में बाराना प्रधान अपना अपना विद्या किसी की गाजियान कर है किस ही प्रधा इस बानवी की गाजियान कर है किस ही इसके भी उन बोहें में स्वयद कह दिया है बाजान प्रधान—स्वया दास हर है, ही अपी एक प्रभान में भा केस अपना की कृषि एक प्रभान में भा केस अपना की कृषि है ही, सममी के एक, एक), ऐसे बाबरे में आया-पीसा समझ नहीं होता। विस्ता में साम में से साम में साम में से साम में साम में से साम में साम में से साम में से साम में स

भागा-पंछा देलना,—विचारना - स्टुभाना, -सोचना

भने वृदे परितास पर विचार करता । प्रयोग—कोई रनमं चर धर दे कि इस बरत के करते से पर-तीक मुण्यता है नाध्य प्रशास गेरिश मुण्यता है नाध्य प्रशास गेरिश मुण्यता है नाध्य प्रशास भी न करता कि परनोक और परनार्थ बार में नाथ प्रश्न लीक तो बनानें (अद्देह नि०—बा० अट्ट, १२१); बहु तो महना ही पहन इच्छा न वी नित्य पा नाभी वी तो एमप्र हो बाती की नीर में देन की नहस में बागा-पीदा कुछ विच्या नामा-पीदा विचार कर किया था (अग्र०—केमधंद, १६६); बैने जो कुछ विच्या नामा-पीदा विचार कर किया था (अग्र०—केमधंद, १६६); बैने जो कुछ विच्या नामा-पीदा विचार कर किया था (अग्र०—केमधंद, १६६); बैने जो कुछ विच्या नामा-पीदा विचार कर किया था (अग्र०—केमधंद, १६६); बेने को कुछ विच्या नामा-पीदा विचार पीदी—बिद्या प्रति है, तब वह आगा पीदा नहीं विचार पीदी—बिद्या क्रिका को कियी वच्ह शामी कर किया क्रिका (गीदान—केमधंद, १०६) मुदर ने रानी को नामा-पीदा नुभवा—मरनार इस नामत ने नूर रहिए क्रिको नुभवा—मरनार इस नामत ने नूर रहिए क्रिको नुभवा—मरनार इस नामत ने नूर रहिए

भागा पीछा न होता

मोध-विचार ओह कर काम कर कामना 1 अयोज—सब मुख्ने प्राप्त विसर्जन करने में तनिक जी कामा पीछा नहीं है (बाधा) साठ—रासाः दास, ६३४।

(समा= महा=- माना-पंतक्षा स्वागना)

भागा पीछा सुकाना रे॰ जागा पीछा देवना

भागर-पीछा सोनवा रे॰ भागा-पीछा हेलना

आगा-पांछर विचारना देव भागा-पांछर देखना

भागा-पीछा होतर

- (१) धूर्विया वा सीच-विचान होता। बबोच--दसने अस्ति के सामाजिक महत्त्व को २ ३ व्यक्तिय करने में किसी को सामा कीसा नहीं हो गकता (विचाक्ति)--कृत्वत ३३३
- (२) वार्तिकाधी का किशोशकम्बा जार करने पर प्रशेषः स्था निवासी को सर भागा ।
- (३) स्वयुर-पुन एवं विश्-दृष्य में कियी का देव-नेव साल की होता।

भागा सुक्रवा

माने की पात नयभ में कामी । प्रयोग—का पंतिन स्वति के के पूजा न चन्त्र प्रदेश—जन्महारी, के पूजा का कि अर्थ क्षेत्र न चन्त्र प्रदेश—जन्महारी, पत्ति

भाग

- (१) तस्पृथ । स्योग—स्थली सूत्र जीवृत हरि कार्न निल्ड जिल भेद स्थाने (शुंध साठ—सूर २९७५)
- (२) मनिध्य में । प्रयोग—औं हिम विन्हें पान जिस साम पंचाय गन्य बन्न अब पान गाम् अ जुनहार प्रशा
- मृत्यविषे ॥

अप्ये आना

- े मापने प्राप्त विश्वस्था प्रतीय—क्वीर शुन की बाह था अलो प्राप्त तथा कथा ग्रेकार—क्वीर, १९०
- (च परित्र त्यार प्रस्त मिलना प्रयोग पर प्राणित हो। मूंत हो लाउं प्रयोग करनी आग जाउं पूर्व निर्ण्ण मूर्व मूंद्र सुर्व क्षेत्र प्रयोग करने क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

लिलाफ फैलाइत है बेमा ठाड्न भी कोन्हें में उनके बाग अहहै च्द०—क्षण नीठ, १६०

(३) रामना करना-धिकना ।

आगे करना

- (१) क्यांग्रित कर देना । अवान न्युरक के स्वी वृद्धि वास्त्रिती हमह करि दियों काने 'सुरु सारु सुर, स्प्रश्
- (३) विवर्ति में शंगाना ।
 -) पद्मन रहना
- ५ ८) अयाजा दशास

भागे तासता

रमृति में वर्ताय हो। जाना । प्रधान -मोहनित ने न्ता पुनक और पाक्ष के अतिम दिन की जाना लेखर के लां। नाम गई (जैसर २)-प्राप्त 2, tox

भाने काथ व पाछ पगहर होता

परिचार में कोई न होना । अयोग---शनरंत्र सेवनं बैटनं हो नदरः का देते. वक्तर भी भूभ आते (न प्राणं नाथ न वीती प्रवृद्ध (गननं--देनमाँद, \$2)

भागे निकल जाना

चष्क होना, प्रतिभीविता में अच्छ होता, उन्नति क्षत्र जाता है प्रभग जान के पटन ही बट्टन नाग निकल गया दुधनात —हैठ पठ, प्रह

भागे एंखं

- (१) मीक-विकास में । प्रयोग—दमी एकार सार्व-मिक्के में एके हुए करेगा हो सावका (विका— हेमबंद, १२३)
- (२) कानदान में । प्रकार--न बोई प्राप्ते क् कोई पीछे, न रोनेकाचा न बोर्च इपनेकाना, सगर महता करी हुई है एकन--क्रेमपट, १३६), बीवन के दिन की यह पूरे करते हैं जिनकारक-पीछे बोई क होता (निस्ताठ--कोशिक, ९४)
- (१) हुछ नम्म के बना में । घर्णन-स्मूसरो कही बाहर (समी प्रतिस पर न कि नीम उत्पादन कृत बान नीछे सामा पौर भाई, बोनों का एक नाम देहान्छ हो नपा उद्य प्राण अक्ट दक्तां स्थ्य

र र महायद हाता। प्राप्त न्यकतो बहु धर में कैस रहमी न पार्र आंग न कार लेखा गोदान प्रेसबंद, ३४३

अमो पीछे दोनों और जलता

एक मन पर स्थित ने स्ट्रजा हो। तरह की बात करता । प्रयोग जना विकास मान तक मेरी एक्स, मान साथा ।



तुं भारतं भी भारतो है पीछ मी समानी है जोदान-देमबद २६६

आसे (पांच) पैश स पड़ना

दृश्यिला या भय से यति यक शालाः प्रयोग—योग भाषन मुलि सकुचेत यक भय यम समृद्ध यस्त्र न सक (सम्बद्धाः)—सुन्तसो ३५४

धामे बढ़ना

- (२) किसी कार्य की करने के लिय स्थ्मेड होता ।

भागे लेला

भागे से दूर होना

गामन सं हट बाला । पर्योग—क्रेपी होत कार्य में स्थारे सुरु सार— सुर अ१४६

आगे होकर लेगा

तादर सहस्येना करना स्थानन करना । प्रयोग—आग होद अहि सुरणीर नदं रामण धा मुलसी स्टूट राजन ही मुसलाह उठी भनि—आगं भू साहर के पूनि मीनो साहित सक्तक-महिराम, १२८:

क्षामे होता

सेन्द्र होता । प्रशंस—समार-प्रनिद्ध में भी संवासी देश में प्राप्त ने (प्रोटी०--निस्ता १०)

भागमन में

कारी ही। प्रयोश—साम् कान्य दिर वारहे, वर नवने की बात युक्त साक—सूर, ३६०-दाः ये बेनावे क्यों नदरे हैं पारत तो विका पर आजकत्त्व य दश्य मुनलैक हो प्रदेश १६०)

आज्ञा कंशी पर बस्तता, — साधों पर स्थाना, आधाधर लेना, साधों मानना, — स्मिन्पर मानना भारत पूर्वक बन्द्रा दहता काना। प्रयोग—पित नाम्यु भाषे पुर नेक, । की माथे में ने किस देक पटक आधारी श्लाइस भाषापु मित्र पे मानि के मानुर होर करनी ए० गर्क सुर ३४४०), बोद बोद कहन, कर्यत संद बोद भारतु वाले बानि (सुरू साठ—सुर ३६१६)। निर विर मानवु वर्णित नृष्ट्याचा (१९२० (बाता)—सुकाती, ६८). विन्दित नेति का कार्यमु दावी । इति नृत विन् वन्यासन कार्या (१९३० (दाल)—सुकारो १९०

थाका माथे दोना

मात्रा मात्रा स्थीरात होता । चारेग—पिना व आध्यु याच क्षेत्र (प्रदर्भ क्षांक्स) आदा

सामा आयों पर रखना रे॰ मध्या संध्ये पर रखना आवा अरथों पर सेता रे॰ माता संध्ये पर रखना संक्ष्म संध्ये पातना रे॰ माता संध्ये पा रखना आवा सिरं पर संस्ता

भागा दायों का लेना

देन साम्रा क्यों का रकता

भाका तृपत पूरी करना । प्रयोश---आयम् किहे पहत् तिनि राजा । अस् चर्म् चाद सह याचा (पट०--आयसी, ३२/८

माटा नास का भाव क्या देश

मध्या स्वत हता । अयोग-अपन याण व आ जात ही बाजी योग भी विद्या, वै हमें शाम बाटे का मात्र बाल देती सुरु हिल्ल सुंदर्शन, १९९

माडा-इस्ट का माब मालूब होता

- (१) विनी बाम की पृथ्या बान्च होती। प्रयोग—मेरे इसमें व मानीने नामाज्ञास्त्रतह आहेन्द्रान का मान मानम होता (मानक १ चेमनंद ६३) (~1
- (२) होस दिवाने करना । प्रवीप---बास विया सनीध को आहे राजका भाष पामून हचा कर्मछ---बेसबंद देशस-देशें एहा को बरकार इन लोगों को दबाव है नहीं हो इन्हें आहा राज का भाष पानूब हो जाना स्डाल----व्यापाल ४६४ , दलिए ब्रवान (१) में नो भी

बादा-बान होता

बहुन कावध्यक दैनिया जानीती की प्रस्तु होता । प्रणीत— प्रेम ही उनके जिल काटा दान है और प्रेम ही उनका सर्वस्त है कुछ पर पुर करती ह





आर्ट में नक्ष्य कराका होना

(१) इंक्ति माना में होना । प्रयोश-मुट क्ति फीरी मुगे अधिक भूट दल भीन । जुड लियो हो मेर्पलने प्या भारते में लोज 'ए'० स०--ए'द, १००), जब भी जबकी फिन्म आने में नमक के कराकर भी नहीं रह वर्ष (द्वागांश—देंव

(२) बहुन क्या । प्रयोग----प्रकार स्थान-न्यान कर महायुक्त हो कर रही है, यह यह आहे में क्यक में भी क्य ♠ /ama— do no. 396

भारु-भारु श्रीम् रुवाना

बात वान देश । प्रयोग-न्यो बात घाट-बाट कान् दनाती है वही किसी दिन बड़ा अन्तर उत्तरक कर अवनी 🖟 'गुठ लिए—सार पुर गुल, उद्देश

जार-भार भाम रोगा

बहुन ऑगक मोना। प्रयोग--किमी ने बेहा नी अपन्यत पर नार्क अपना मेर मधेट के आठ-बाठ शांसू कहा रोजा 🖡 #साठ- क्रेसाट प्रश्न: बाजारी त्रपहारी कर्या जाके बाह याठ भागु योगो की रंगवादाः प्रेमचंद, २७३-२०४१ हो करे काठ गांठ का भोतन में भके प्रांत जाठ वामू हम । भूमति। - प्रशिक्षीच शब

भारत भारता

भाषा प्रयोग-इसकी कृतिन कामका पति होती कि राते पाँच कर नानवार के जाउ पाने अपने भएको के नाथ शिला काराने वेसाक-वेसकेट, १४५

आहो पहर,-पहर खीलह पूर्व।

प्रर ममम । प्रयोक-साठ काम चौमडि काँदे वृत्र निरम्बन रहे भीत (कंठ प्रेक्ट) -क्योर, रहार , और यह मुख्यारे मानी नया हो गये भी नुष्ये बाडी पहर की पहने से स्मानक १९३ न्येसहरू अवन

आरही पहर सीमद गई। रें अच्छी पहर

भिष्ट देशा

 क्ष्मणाहरण त्येग । प्रश्ने त्या अस्त्रीयक त्येग मन १ सन्दर्भ के फेन क्षेत्र राज कि जो जोगा भाग भाग गण्डल र और क्षेत्र कार्य किंद्रि की अवस्था का राज्य है उस रमक किनक्ष ३ पार देने यहना ३ वर्षों कर क्षूत्री #MA के भारतार प्रश्

(४) बाह कम्या ।

ब्राप्ट हैं।

(१) बहाने थे। अयोव—लेकिन मेरा कुछ ऐसा बत है कि भएकार की चाह में घरनी अमता और अपने वैश्रय का प्रदर्भन सन्त्य में बहम्बन्तना को जन्म देशा है (मृति०--भग्न वर्मा १६६

(र) जापप में।

बार है बल संदर्ध

विकी के बहाने काना स्थाने मामना । प्रयोग-न इतना नवा कीना ह कि बूरेण मेरी बाह में और अंगे और मै समग्र तक न पाड़ें । व्हीनेक-संव स्व, १४६

माइ हेवा

(१) बाबा बचन बानवा नवांवा मानवा । वयोव- जबके बानो ही के लिए बादबी बाद पंकड़ता है। प्रव नशका ही व गढ़ा तो अभा विशाहरी फिल काम आयेजी ?(मानक (प्र) क्रमहर, १४

(२) महारा नेना ।

भाव दोना

रक्षक के क्य में होता । क्योंय-क्वकी आह त होती तो पुलिय ने यह तक युक्ते कर का कटना दिया होता (40 1)-GAME 312

भारा कर

कुरा नवक । प्रश्लोष ---पर नाक ही दश भी सूत्रा था कि कार क्षेत्र कर इत्सान दिवासक का अनक बार बरम्बा मत्र को ता जिल्ही चतुर्व १४०

अर्थे हाओं सन्त

संध प्रश्रास्त्रो । प्रशास-त्ये दिन पुरान बहुता को भूगद हम्बः निवा योज्यन-प्रसम्बद ३३४ तथ विस्न उसे पर पार हामा यथा का गोली-वतुरव रहाई

अस्य-स्थान वेजना

टाव जान अवसान ।। राष्ट्रा करणे स्वतं माधना प्रका इस नगर स्थित की गर्दन पर सवाब होतार अपना धान्य-सम्बद्ध वन १७ गय तो प्रशासक र सास्त्रात इस्बट २२

भादमी पर अन्दर्भा सिक्त पहला

वरत भार राजी । ४५७० - नाबर हेरान पः, इनने धार्डी।



तगर म कहा से जा गय ? आश्योग कर आरक्षी किया पहला था गोदाल-प्रेमजंद, १५३

आदर्मा लगाना

पृथ्तेचर पीछे लगा देश । इयोग—अहा-बहा बाय शास्त्री सगा रहो_। देखे गहे, भागम कर के सकती कीन है चोटी०—जिस्सा, २५।

बादर की बादर पहला

भावर होना धनिष्ठा बनी रहनी। प्रकोन — नोबनी है कि पवि सनी विभवा होती तो देरे बढाये पर बार के धोदर की बादर तो पदी रहनी, मेरे क्य के अध्यक्षणों कर पृतिमा में धृंगा और स्पेक्ष की विस्ता नो न उदानी (सुप्ताय— प्रकार, 51

भावि अंत न पाना

पूर्ण भागकारी म होना । प्रयोग—सार्गि जन कोड जान भू पादा (राम्स्य (राक्त)—तृससी १३१)

क्षाचा नीतर भग्धा बरेर

- (१) न इधर का न उपर था। प्रयोग—गंग्य के xx बहुत जाता कि भारत फिर बैंगा ही हो अप बेमा वेटिक पर्दावधों के समय में पर किन्तु भारत उस शरह व होकर भाषा शीतर आधा बटेंग या हो क्या (साठ सुठ— बाठ मंद्र ११६ ; या हो दिन्तुम्मानी गंक्सण या अन्तरेको । यह क्या कि आधा शीतर आधा बटेंश क्या—ग्रेमवंट, पन (२) थी-रंगा।
- (३) दोन्दशी पालबामा ।

(ममा० प्रतार-भाषी मुर्गी भाषी बरेर)

अरधी कीडी कर

क्षाची पात कहना

- (१) जरा मा शहना । इयोग-न्यको कोई बाची बस्स मो कहेगा नहीं, ये रमका जिम्मा नेता है ।विभाव--कौशिक, ६१) ; जिमने कभी बाची बात नहीं कहों, कभी सु करके नहीं पुकरना, नह मालिक बन्द उसे शांबे बना मा रहा का (मनन--देमचंद, १९७)
- (३) विकासत करना । प्रयोग—नवारे को न अवस्त बाले को पिले न पहलने को, किर भी कभी मृद से वानी बाल नहीं निकासता (मा—कीविक, १३०)

भावन्यु में प्रधानक

पृत्रं चार्यन्तरः होता (प्रयोग—मनम निज मन सानस्य पान्यो मा० वंदाः (१) —भारतेन्द्र, ६०५)

भानम् स्टना

मोब करना । वर्षाय---इसी बहाने है अस्य यहां कारण दो-नार दिन सारम्य कृष्टन (प्रदेम) है यह --सट्मेश्हानी, ३०)

अपन कंग्यना

दहाई देना 1 वर्षाम—दरमकन्दान दीजे जानमे सुधान धी नामा साथ भाग नाम बोचन विक्षानिये (धन० कदिशः -धना० २२४

भारत जाना

- (१) बन्म-पृथ्य । प्रधान—कहे कबीर में बाप विकार, मिटि गया बायन माना कर प्रदाय—ककीर, ५०)
- (२) वर्गनव संबंध रामना (हिंo नोo साo)

भाना पर्छ शुद्ध होना

भग्य हो आप ना होता

वजीव होना । प्रयोग—सब आनि युवान न अन्त समान कहा कही काम ने पाप सबै पन्न कविश—सनाव, १२५ । समान मुहान —सक्य ही अपना जवाब होना)

भाषा बहेना

- (१) पहेकार त्यायना, नम्न होना । प्रयोग—ऐसी बाली वंग्लियं यन का धापा लोड (क० एंका०—कवीर, ५७)
- (३) अपना गौरव धोडना ।

भाषा सोहका

मन की बारी करते रहे बाममा । प्रयोग —कर उपम महरे प्रमुखन करना करना भी दीवार से कहना मान उपने कर्मी सपना सामा नहीं भीना (स्थाठ—अठ नाठ, १२०

आए। दिस्रक्षाना

यसंग देवर या आस्थ-दर्शन होता । समील—कै विगरिया यूंगीय है, के प्राप्त रिक्षसम्ह । बाठ यहर का सावस्था भोषे महार न बाद का पंथार—कवीर, १०)

भाषा मेरता

यधिमान कातर रहता कर स्ट्रीत देशा । भयोग-स्थापर मैट्यो हरि भिन्नै, हरि बंदयर शव आह (क्य प्रकार-स् करोर, १५)

(समार मृतर-आदा बिडमा, —विमयना वर विकारमा)

आरपर सींपशर

यपती तथा की भूगना, निर्मायकान होना । स्वयंत्र—क्या सम्बद्ध इस श्रम्भ हाथ में समृत्रे प्रस्टु की नरपति उसेर प्रकार सोह देने की नैयार है जिल प्रकार संस्त्र अपना समृत्रा सामा समादंत की भीच बेला है है (क्यार्टन्ट-हरू प्रवृद्धि, इस

(ममा । वृहा ---- भागर । तजना , --- हास्त्रना)

भाषाचाचा होता

अवर्ग स्थान जाग तम्ब्री । प्रधान—प्राय गाण अर तस् रिवासन में वही अवरमाधी रही (रंगक (३)—प्रेमचंद, ६७. (समारू मृहारू—साचाश्वरमी सहना)

आये में न रहना या होता

वेकावृ होता.—वरहवाम होता : ध्योत-—ामस्थि दक एक दिव देमा के दिना सनके दान पहुंचे और देशक ने प्रमा के विवाह का प्रस्तात किया ती वृत्ते परित्त जी अपने आपे में न रह तके (मानक (११—प्रेमनोट, १८९)

आपे से बाहर होना

भीभ ना हुन के आनंस में नुभवृध कीता, अंत्रमा होता । प्रणीय — मेरी चृद्धि ऐसी सहमा रही है कि में अपने जाने में बाहर हुना नाता हू (माण्डोकाण (१)—मानतेन्द्र-४४१ मीकर में निस्तर समाने में बना भी देर की १८ श माइनियर अपने नाह साफ नहीं हुई को वह बाद से बहरा हो नाना समानण १ संगोधित हो नहत जास की हम महर से स्वत्रमा मारामण आयों से बाहर हो नहत हों। इसना सहस्मान अह

(गमा मृहा॰ आपे से विकलना

आफत का प्रकालः

- (१) प्रभव या जयकर जनुष्य । वयोग—हां, है तो आह ऐसी ही जरफर की धरकाला (संग०(३)—प्रेमधं€, इच्छ् (⊕)
- (२) महन जुगकाती। प्रयोग—नेव्यय प्रयोग (१) में (÷) मी
- (३) कुशन चौर उद्योगी (

(नमा॰ मुहा०---आफत का टुकड़ा)

भाषत के बादल उग्रहना

करी मृतीकत परनी । प्रमोव—हम पर पाणी तरक से भाषत के दावन उपये भाग जाते हैं गर दृष्ट्वें कुछ सकर नहीं है परोक्षाo—सीठ दास, १४६

आंच जाना

- (१) प्रनिष्ठा नष्ट हो बानी । प्रयोग -बब गया आब नानिया वस वस नव रहे बया नुनाव ने नुनते (बोसै०— हरिजीय, पर
- (२) चमक मध्य ही बानी ।

(मनाः पृहाः---भारम विराधना)

भाव ब्रोना

रण्यत होता । अयोध—सम्बात की बाह टानी तक है यह तक कि सरवार है (मा कीशाब, ३३३

(३) गैनक होती (

अंग्यूक पर आ बतेना

भावक सभरे में होती। अधोय—अब कियी की आवस पर मा बनी विमन्तिय आनु अमा तक तुम बहे (बोशा०— हर्भक्रीध ६३)

भाषक पर पानी फिरता

इम्बद नथ्द हो जानी । इपोन—येटी हो आवस पर पानी फिल का रहा है (आ—कोडीक, 28%)

(पमा पुराव आवस मिट जाता)

आबद् में चड़हा लगना

पूर्व प्रतिपता म दान अपना १ मधीब –में नहीं बाहता कि मधी बहुत म बापको आस्त्र स बहुत सन सान्छ (२ – इन्हेंद्र २१३

(गम)- मृहाः - आक्य में स्तरक भागा)

भावक स्टना

चक्रपाल होतर । अभीश----चने किर्माट्य कभी शव का. भागक गर्द अनद भूटी सम्रठ----वृशिकोध, १९०

भाभ भाग से फाम होना मुक्त किन्त में नहीं तार से मलनव होना । प्रमान—इस धिन्धन चीर भिक्तुत्व कवि का नाम क्या का इस पर पुराने खितना न ं या । उन्हें आम बाले ने काम था मुक्तिक विकास पहीं मुक्त प्रस्त है। पुरुषे, २१५,

भासन्ती द्रवता

आमदती कम होती । अयाग- वामस्ती एकस्य सूटन सारी (मस्याणी जीनेनद्र, ३३

आयु ष्टाना, तुलाना

याय् कम होती भीत विकट होती। प्रधीय—श्रम अर्थन होड सभीत, बंस की प्रायमुखानी सुरु साठ- सूर ३००० । हिंह मुभाग जिल्होंहें हिंदू आसी। की बानह बन् अर्थ सुटानी साठ (बाल)—तुससी, २०५

(समाक मृहाक**-- आयु निर्दाना**)

अप्यु नुकाना

🖙 आयु सृदासा

आये विम

प्रापः । शताय—स्वायं दिन वर्षा-नृत्यं वं कृते वनते एउते हैं (प्रातः) (२)—प्रेमधद, ११३-, आये दिन वे क्योत मुखन-प्रातः (ते (बोटीक -विदासा, १७)

आपनी उतारमः, —करमा

बालार हरता । प्रातंत्र—मुफलक तुत को कही पानिहं भारति करिते होती (५० सा०—सूर, ३९५), एक की तो है उत्तरती आरंगी दूसरे का है उत्तर जाता मना (धोमी०— हरिडोध, १९९)

भारती करना हे- आस्त्री उत्तरका

भान्हा भाना

अं का क्या मुख्य मुख्य के प्राप्त—कर यो क्या स्थाप पुर काला को अर्थद्वा भी ग्रुबबक को प्राप्त कर कर (प्रस्कृत—प्रमुख्य अर्थ)

15

D. P -- 185

मायाम् उठाना

- (३) चनां करतो । प्रशास-नदायुभ का क्षमहास हो सोगा
 भाष्म ना) वा अ अ अनुसने ही इसके शिए अवसे पहले सामान कहाई वी आस्म०-देव सक, इसक,
- to) दिली बात क विरोध स बोलगा (
- (३) मान उर्याचन करना (
- (र) (गारे २) स्वर ऊषा करना।

भाषाञ् अने बढाना

कार में कोचना । वधान—'मैं उनमें मिल कर पहुंगा, तुम मृत्र कोच नहीं नवते '—जाबाद को कुछ क वा चढ़ाते हुए मेंने बजा (जहाळ०—इ० जोशी, देश)

१णमा व्यास-काषाञ्च ऋषी कामा)

भाषाञ् कलना

स्यस्य साम्या । प्रयोग—मृक्ष मोर्गो से उसे देख कर प्रायाचे करी अभि०—आंश्वासी ५०२), द्वारका नाम से ले बर भाषाय करते हैं (सामी०—वृंध कर्मा ५१%, अब यह पनी शामादी में पहुंची, तो मीहरों से उमें पर इपर-उधर स मायाज कमने शुक्ष विसे ४०० (१)—वेसबंद, ५२)

आपात विकास

र पर पर रहता । प्रथम — 'समझ कर कही, भारिए पा नहेंद्रेरे'' वाहिए'' — आवाज वित पर बोटीक जीताला, ५४०

धाषाज देशा,—स्वासा

बार से प्रशासन । प्रयोग—मुखे यह बच्छा नहीं सामा कि बचा नी बाला के लिये मीकरों की धामाय देना थिक सामक—(२) प्रेमचंड, २११); उत्पर से बाद निमस्त बाधू की पुत्रो नवा काला और भट सवके को धामाय सप्ता कर काला— (कड़क—देव सव, २११) मान्यर भी को पूर्ण विश्वास था कि बड़ी भागी नहीं भा कावनी, इसी में दो-मीक-बाद धामाज ही (पास—संनेन्द्र, १६)

(समान मुहान-आवस्य भागता)

आयाज् भारी होना

लाकान्तिकंक के कारण गमा घर मानर (प्रथीय-महाच कलात), हृदय परचना है वेग्रे भारी झावाझ (मुकूल-- ६० ६० ची०, ७१

अध्याक लगाना

रेट आवाज देना



शाबार की रेक न होता.

ततिक को आभाव होनी। प्रशेव—विकृत त∆ पिरि सहिव बनामां रेख रही नहीं बाना (क्य पंडाठ---क्षीर, १७२

भारत त्टना

निराध होता । प्रयोग—को वे बात न क्षेत्र वास्त्र हुट बाली व आश्रर (बिरण- हरिजीय, २०११

भाशा लोडका

(१) निराम करना (अयोगः विवत वर्गर निक कोन् मो आसा जिन नोर्नम् ।सधा० प्रवाठ---साराठ देसि, चंडर (प) आशान नगरना ।

भारता पर नुपारायान इत्या;—पानी फिरना था फेरवर

बाधा पूरी व होता: प्रयोग—शैव नृष्य की माना पर नुवारायात हुया, जनका प्रकृत्व सूच मुख्या गया (विज्ञाद-स्थाद वर्षी, ११)। बाधा वी, मुख्याव बुदायं स मेरा पानत करोत् । तुमने जल आधा पर दालो केर दिवा (सामव ता -प्रेमकंट ३६०

(मनाव मुहाब—**भाशा पर पानी पद जाना**)

माजा पर पार्क फिरना वा फेरमा 🦥 भारता पर मुजारायान हरेका

त्राहार बंधना था बांधना

हाशा होनी का करणी । प्रयोग-एक भहारका दिल है उनमें बाता वध रही है. चेंटीं०—विस्ता ३५१

भारता वंश्राहर

भगमा रिमाना । प्रयोग—यस प्रकार करते और से (हरू.) की उभाग के लिये जो अपना ही रहा है का बहुत कुछ धामा बभाने बाला है। प्रदेशपरागः -प्रदेशक प्रार्थः, ३१४

भारत हुए होना

पुनः आवा होती । धरोण-द् अब फिर वही निशंद मुद्रकीर साहती अनवना सिंह है, में अविक्रके वृत्र की छोट देन सर नेरी गुरुवाई हुई आधाएं हुये ही बाली है (श्रेष्ट श्रुष्ट-सुदर्शन, केग्रा)

श्रासन जमाना

(१, ६-वियक बस्द्र पर जम कर स्टबर) प्रशास मान्य होता है एविहन पद्माशह सामी सब्भेतन न याप

निषं विरते हैं, क्योंकि 🗵 🗵 वह वर्ष वेहराष्ट्रनी शुश्मेशन के समय यह स्वातापुर में अस कर बेंड ये प्रीर अबके पार्थ मं बासन बमा 🧃 (पर्यंत 🗣 पर्य-पर्यंत्र० क्रमाँ, व , महर बन्दी को एका का जासक बनाया प्राच्या नहीं अगुना गरन--चेमचंद, १५७

(२) स्वादी प्रवट होना (

(नवां= वृहा=—सासन अवेड्ना)

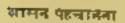
भागत दिशमा,—दोलना,—हिल्ला

- (१) बानाः बाने को उपन होता, बैठने में क्रियर भाव ह रवेनरे । प्रयोग---किस समय कोई कमरकात वरका नामः याने के निए घाट बगुन मूँह फैलाता है और "धा-बा बरके विकास होता है उस समझ बरे-बरे बीटी का पैरा कुर बाला है-दिन दिन घर कुपबान बेंडे एड्सबाफे करे वह बानस्थि का बारतन दिन करता है (जिलाय 🛊 🗝 क्षेत्र २३ : वर्गावर कालावी का बावम हिल्ला देखधर क्यते तसम्बर्ध की साम की औसर (a -**चाहोदा** काल)
- (२) मानव होती । प्रयास-ऐसी रियानिम मनवी वृत्रक का बायन को होन बाबा, रमा हो विकासी वा संस्थ-प्रमावेट, ३६६)
- (१) जानस्ति हरेगा। अयोग-वेदकती शुक्र हुई तो बहुना के जासक बोक्त अध्यमें 'कर्माठ--प्रेमचंद, ६२०,
- (प) निर्वास प्राचारतेल होती । प्रयोग—क्षीर मुना क्या वर्षे, जूना होड बकाव । बह्ना का बाधन जिल्ला बुक्त काम की बाब कर ग्रेसार-कवीर, दृह प्रसरी चपन नहन किनो पर, नारियो पर इतना विश्वास था कि वृत्रक सिंह का बानन होन जाता बार बार (परती०--रेष् P654
- (३) प्रेयका होता ।

भायन ग्रेस्ता 🐫 भागत दिवता

भागत देवर

प्रभाव संबंधितः । प्रपण स्वधन प्रदेश तस्त ক্ৰিল পামত শ্ৰাম সুক্ৰমী টাই আমাৰ পুণি নিজ ৰুত্ क्षात है। अस्पृष्टी जनका प्रायम रोजी केंद्रातक है। जनक



- (१) कियों के क्या को बाद किया । प्रयोग—प्रथम के आमन परनाजा, अपी क्षम की दो-बाद बार्च और की। साध्याद क्षाकुरकीय गयाही देश के इन्कार करने सभा (१९० २)—प्रेमकेट १२१-१४२
- (२) बैंडने के दंग से पुरस्कार की पहचान केना।

भासनं सांडनर,—सारता

सासन मना कर बेहना । जयोग—भिकृट कोट मैं वासन मार्ड सहज समाधि विषे सब बहुई १७० एवर०--कडीर, १४%). यह मध्य बहु पास सवार । अस तम वह जातन मार (४४०--आवसी, २/६); बार्च के बदा बार बाद बादून सन्यामी का भेष बनाय एक अनी की दौर क्य मृगद्धाना विसाद भागन बाद बेंटा (इंस साठ--सठ साठ, ३३%

अस्ममं मारता

रे॰ आसन माहनः

भासन दिलता देव भासन दिवता

भागमान के तारे तोहता

वृष्कर कार्य करने का जवान करना : जवान--है नार गण्डता भगत के दिवि को चण्डा विश्वाना है सर्व०--हर्दिकोध, १३३)

आसमान प्यतना

श्रासमाने बदनी

- (१) उत्तर उठना । प्रयोग—ननने चढ्ड रंग पंचन प्रमतः (शम्छ (बान)—कुल्सी, १२)
- (२) वर्ष होता ।

आसमान तक के अवसान

बहु-सहै अरमात । अयोग—बरमान आस्पान तर के व मतर अयोग का शिक्षण उन्हें निचीय कर धूम में विनाम देशा का (बोनेक—मींठ राठ, १४४)

भाषकात दिका देता

कुरती में प्रशस्त कर देता । प्रयोग--- गृह, दो वितर के अदर ही आसमान दिखा हूं हमें, तन्त्राद कुट्निंड पहन- वान वा किन्त है भूटेंक-भगेन दमी, १८४) वंद्रिका कुली को दश-तम कर जावमा रहा वा कि एक भ्रद्ध होने वर अनुमान दिका प्रकेता वा नहीं कुलीन-निराता, ४५ (स्थाक मुनाक-जानसम्बद्धा हेमा)

भागमान पर (में) उद्देश

- (१) जुन अर्थ नकान् करना ।

भागमार का बदरा

- (१) करर १८ना । प्रणीय-नयो भाग आस्तरात वर स यह यम पर्वे यही यहाते से भूमरीठ-हरिग्रीध, १००)
- (२) यसर करता, बयद दिशासा ।

भागमञ्ज्ञ पर बहाना

- (१) बहुत बढ़ा देना। प्रयोगः अन्तर्वे कृतामधी ने उसकी बहायस्थना की अंग्रामान पर बढ़ा दिया का (साम् ०१३)— प्रमुद्धः इच्छ
- (२) भूकी प्रथम करके गर्व देवा करना । प्रतिन-भदनमध्य की जीनों में सामभाग पर पदा रकता या (परावाध- कींच देखा, १२४-१२५), लोशियों स्वर्गपंथी और मुमामदियों ने तनका यका दवाकर कही प्रयानों की -बानमान पर बदानवानी स्तृति कराई है, कही प्रथा में देव नोपों की निराधार निरा चिनांच (१),—गुक्स १८५
- (३) बहुत शहना करना ।

भागमध्य फाड़े डासना

बहुत कोर काना का होता। प्रयोग—हुत्को की त्यो विक्ता-विरुवा कर बामभाग काइ एहँ। है—मुना करता का कुळोठ—निराला, १३५

शासमध्य मिर पर उठाया

- (१) और पून करना, उपदय भगाना । स्थोप---शीरना ने रो-री कर पासपान को पाने पर पढ़ा लिया (वंदा) नागान, १४२ जुरा देश्यो आतर नदी पिन्छा हो है पासपान वित पर उठा नेत हैं (धूमे० ~30 सह. ६०)
- (२) पुत्र बान्दोत्तन करना ।

भागमान सुभार

पंचराहर होती, होश दुस्त होता । प्रयोग-नवर्गीत्यां को भी क्रम प्राथमान तृथने लगा है। करी हर्ग्य वी परारोगी नगते बार्ड की परतीक-नेषु ध्रम्

भासवात से ऊ'बा होना,--बार्ने करता

महर्ग क्रमा होता । प्रयोग---नेनमन बाद दंसान गर्हणा । मन मो स्विक दक्षन भी क्रमा प्रदेश---व्यासमी १६० । बहा विशास: क्रमायान में माने क्रमने बाना भवन वा अर्माण---देशबंद, २४८

(भगा भहा- - आसमान में रक्षा लेना

भागमान से गिरना, ज़मान पर जा जाना

- (१) मस रह बागा । प्रश्लोग—यह पुनवण राजा नाहर तो तेने भारतमान से बिर पूर्व (मूले०—स्था० वर्षा २३५ महिपाल सामधान के अभीन पर पर विशा (मूले०— ६०) नांद, १९३
- (२) श्रदान अवता का बनुभव करना ।
- (६) मान धर्माचा नव्द होना (

भागभाग से तमंत्र पर वा जाता है। भागमान से गिरना भागभाग में बातें करता है। भागमान में जोना होता

भागनात का मांच

धियां हुआ दुस्तय, यह व्यक्ति हो निश् बीकर सम्बद्धा करें। एकार --क्या से काल धार्मा सहय दिन-शाव, क्या कर धार्मान के हैं बार मियंत-वृदिक्षीय, बंदीर बीन अस्त रे के हैं व विकास का विकास के विकास

भागतीत के तांच हो अब ही सात्क ,यू.- केंगबन्द, यह

आस्तीन में सांच पाछन

विसी स्मि इस कुमन की सामन देना । क्रांत---जना

मार्गिननराम जस्तिनिम मार्थ पोलवा 🦥 🌹 ८०—और नीछ, ५०)

साह की बना

हुण भरी मान केना। प्रयास—ब नरह है जाति का रिक्यतर कहा पर इपन कान भी की वी नहीं "मुभरी०— हरिक्योग देव

बाद पहना

याप पहला, विभी को हुन पहुँचाने का फल सिलमा । पर्योग---काश पृक्ष पर किनने बेकमो की आह पह नहीं हैं (रंगत के प्रेमचंद काक्षी, जार पहली हती किमी पर यब परह केंब न तब यहा पहली जीतिक सुरिजोध, १९७० (सबरू पृत्राह----काह स्थाना)

भग्द सरका, सारका

बनका प्रसंद करता होते साम ब्यांचना । प्रयोग - प्रशं भर-वर कर वह नयां वह दूध-कृति गर भूते (मर्गठ--हरकोश, र . नाम है क्योग नामां यर यह हम नामे हैं नाह तब को जावन चुनते - हांग्योश, देश, वह जन स नव दान है हम हम समे है बाह भागा। निक्ता, १९०,

अग्रह अपन्ता

रें अगह भगता

भाइ खेला

विनी सनाये हुए कानधी पर लाप नेनर हा प्रयोग — बेतरन तो दिया कान देव नारे धाह पूरी जी दियी की हम न से कोलत— हरियोध, ११०

भागद सेना

- (१) क्यो क्यो क्या क्याना । अयोध---क्येन ते सीरकर बादर है अंकर के आहट की । अमनुष्ट प्रमुख क किसी जिसका, १४३-१२४
- (२) विभी के बाने की टांच केने के लिए जान समाप् बेटना ।

र्एन्डच मारता

इ वियो को नहां में एकता | प्रशास—प्रवस्थान अब हुता मोकि इ दिन को अर्थ १२२० ग्रहाट—स्ट्र, १४४

(समाव वृहाव--द्रोद्रिय कमना)

प्रयोग विस्त्रे होतर

पंजनसम्बद्धाः में कृष्य यद ६२ होता । ह्यांस-हमानी पनित्र समात की नीचे को विश्वे को अवस्थि छा। म अब इनकीय विश्वे हैं, उन्नीय नहीं हुई (महुव निक-बात मह १०६

(समार म्हार – इक्काम होना)

इच्छा द्याना मन में हुई इच्छा को शेक्सा । प्रयोग इच्छावी की द्यामा प्रतिन नहीं इच्छावी को तुम उन्तान ही न होने हो (1930: सपठ दमी, २०)

क्षात्रत असारना

सर्गाता तथ्य कार्यः । प्रयोग—धार्यते वेदी प्रस्तात स्थारते के लिए मृते यहां कृषाया वा (श्रीर०—स्थार श्रावूर) १२०)

(समा० मुहाय-इअफ़ल जेना)

इत्यन माक में मिला देनां धूल में मिला देना. भिट्टा में मिला देना, में पहालयाना

प्रतिश्व एक्ट्रम नहरू कर देना काम पर करून जाता । प्रयोग स्वय प्रतिश्व नाविद्य कर देन और स्व इस्तिन भाग संविद्य के प्रशेष पर्यक्षित संविद्य । से जानता ह कि अन्य की अपन करनती किया गावि । र प्रतिश्व संबद्ध जानाची हरनिज संजय न रहते हैं के भीत दोल, प्राः, यह वर्षा चीपको से नकी है वर्षा उनकी क्ष्मत सिट्टी में विका को है (गोदान—प्रेमचंद, ३१), धनव में व्याने विज्ञी नागवार में विजने जाकों की जाफ की प्रान्त में वहां अवला है (मानत (१)—प्रेमचंद, १८६ ; बरव पर कोणों ने की प्रश्नी की द्रव्यत बाक में विकारों की द्रव्यत बाक में विकारों की द्रव्यत बाक में विकारों की प्रश्नी की जान भी हैं है के हुआ कि बारवेद की प्रश्नी की में की प्रश्नी की प्रिक्स की प्रश्नी की प्रश्नी की प्रश्नी की प्रश्नी की प्रश्नी की प

(मना: मृश:--प्रजन दो कींदी की करना,--धर पाना केरना, जिही कर देश:)

१९७० पर में जिला देशा रे॰ इन्डल भाक में मिला नेना

इ.जन पर भएना जाना

प्रतिकृति । प्रतिकृति पर पान वा वा प्रतिकृति । प्रतिकृति । प्रतिकृति पर पान वा प्रतिकृति । प्रति । प्रतिकृति । प

हञ्जल पर हुग्ध होन्डेंतरे

वेहरूबन करना। प्रयोग - भारों से सी पृथिम को सीका विकास है कि अंगलिया की इन्तर पन शर्भ करते करते --देश सह, २७०

इक्कान वेशना

क्ष्मी का परत्युवय से समामध्य करता । प्रमाण---व्यक्ति व मो अवसी प्रकार की संघ देना चाहते वे गोने०----१० ए०. २०६

रण्डल सिर्टर में मिला देवा रेज रण्डल सरक में मिला देवा 89

इन्हरू में वहा काला

१५५स में बहुर तमाना २० वृज्जार बाक में मिन्ना देगा

इंग्रन लुढाना

- (१) ऐना कान करना जिसस धरका नगन हो। प्रधान— प्रमान्ध की क्या. पर की धरका जुरा दो उसने बीनेय —एश्व एवं २७
- (४) जनमान शोना ।

इस्तान खेना

बहुत्रज्ञत करता । प्रयोग--- भजपूरा का विद्वा एवं महीत हो नहीं क्षेट्रा हम लिए वह मेंको इत्यान विद्या करता है विदेशकार----वोठदान, पुर

इतना बड़ा मुंह रहजाना या हो जाना

विकास हो सामा । प्रयागः विकासमा सामा सहस्य । ज व आज तो इनमा सहा यह हो गया विस्तृतः हरियोधः यह

(सी-गिमी जलना

कुड़ आना काश्यित हो जाता । अभीन—मेरियनाथकी के इस मिर्स कुछ पुरे सुरुषाठ⇔ क्षण शांत ३५

इध्यर उधर भागकरण

कनराता, उसर दन का बहरना हेन्सा । स्थान अस्पन है। इ.स. इसर कांकन करें स्मारतीय-नाव राव, ५०

श्विम अंत्री उद्य बावड्रा

हत्य तक दिश्वित होतः । प्रदाण प्रस्ति संस्थाः । शहर इ.स. त. शहर प्रति कार फाइता त. शहर प्राप्ति । १०० वृक्ति प्रमुख

मधः ॥२। । १चा कृषा उत्तर मार्च हातरः। इस्ही पाणी जीटना

भोधनगढ कीर गाना। प्रदान सगर भारती करान स्थान ही भाइनो प्रभावत ने बहुए हा दहा की उपन स्वक यामने प्राप्तक वर्षा प्राप्ता पानी जनस्यायामे आक्त-प्रोपकट २०६

रंक इसर पांच कीडना भंग

(नवा) नता -- (स्टा पावों ज्ञाना)

इक्षरंगे का गुलाम

इच्छानसार असेन बाजा । प्रतीम स्थारत सहत्त्वा उत्पत्त इक्षाना का बुकाव है असेन हैं जो सकत्त्व, २२३ (समाज महाक-नुकारी की दरमार)

हशारी पर समाना

पन्नी प्रश्नान्तार स्था काम करना सेता । प्रयोग कामहार नास्य यह विक्ति हो नवा था कि उनकी कामहार उस स्थी क हाथ न हैं, यो पार्टनियम के बढ़े से सके मामसों की सकेत पर नवा सकती है जिल्ला स्थान दर्मी, इस)

अशरों पर राखना

इसरों के वह अनुवार नव काम करना । प्रमोग—बह कर वर नारा वाम कर से इशारों पर नावती अब पर न प्रात वर्ग वावर और वामी रोजा उसने जनते उहते में स्मानत. १८ वनकन्द २०६

क्षि लडावा

ाम कोडे का चान उस कोडे में काना

ध्यवं का काम करना । प्रयोग-व्याप हिन्तू, हिन्दू हे कुम-रिया, बात नीम से काहाबा, ठाकुर वानिया संभारत क्या करें, इन कोडे का पान उम कोडे करें, इसे कुनित मही रुपकं निए से साथ नक्ष्य से बाहर की बाते हैं क्यांकि इसके विए से साथ नक्ष्य से बाहर की बाते हैं क्यांकि

रस कोटे का भाग उस कोटे जामा या होता. करण स्थातनित होता । असेत जामा या होता.

करण स्थानांतरित होता । अयोग--- अभावतः निर्के कृष काठे का पाण जम कोड गया है । दक्षा आयो ,बोटीय---निरक्ता ११९,

शसी पांच जीटना

नुरन परेन्द्रर प्रदास स्थापित वर्ष नाम का स्थापन का का स्थापन का स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

डें र का अबाब पन्धर से

र्वत्रमध्य या ग्रंगरी या ग्रंडा अवास देशा के १९२१ जन्छ। । क्रम्या में भी गृह सब स्प्रकृत्य सहस्य अस्तिमा सहस्य ग्रंड ह थी जवाब परकरमें बना भीका है मंतर (२) प्रेसकन्द २२५ है है का जवाब इस परकर के देना है, मुखी को क्यों में, एंसे से क्याह का (परिक—निराजा, २३१

ई'ट से ई'ट बजना या बजाना

- (१) किसी नगर या घर को ध्वस करना । प्रयोग--- गानी साहब कुछ निपायत कर शाँग नहीं तो इनकी ची होंद के इंट बजा बुंगर (झांसी०--- ए० वर्षा २५०५), है है इस धीयला प्रतिहिंसर में तेरे धमरव की इंट बजने जाली (देवकी० --री० श०, ७६-७७); उतको सूचना में हुई भी दूरवन किसे की इंट में इंट बजा बगा (सूठ सूठ--- मुदर्शन, २५
- (२) महरत मुकाबका करता । प्रयोग नुम बुवरिक हो सो क्या हम ई.ट. ने हीट बमाकर रूप वंगे इस बरिक हजुमत की असे०—अस० वर्गा, ५०३)
- (4) लक्षाई करवाना ।

रेंच का बांद होना

बहुत क्षम दिलमाई पत्रता अभी कभी दिशाई पर सामा । प्रथम—तारा भी भी देंग का भाव हो तभी है सुठ्य दे ---यशंभक्त क्षम

हेंद्र सदाला

डेमान का खुन करना

बहमानी करना । करांग —बाम इसकी कीने शासा राजन है कि मरे कहने से बहु अपने प्रधान का जून करने पर नेपार हो जाएनं (प्रेसा) प्रोधकर, २६

प्राप्त का पैमा बाजा

हेमानदारी में वीर्धवका बस्ताना । प्रयोग —हम ईमार कर पेमा चान हैं सेमर ह अझेट, 63

रंप्यां से अस्ता,—कुंक्ता

बहुत रियों करना । जयोग --- नियार निष्ठ को जब से देशा करना के इस प्रेमाधिनय की सुबता मिली है, वह उनके नृत का ध्याना हो नया है । किसीनिक ने भूता जर रहा है मीनक का प्रेम्थन्द इस । हो बेटर बोगों को हो हाइत रोती है स्थित न जनते में जैसक को--- प्रक्राया १५३ वैष्यों की फ्रांकना

र देखां से प्रक्रता

ਚ

दंगलियों वर भा अला

बहुत निकट होता । प्रयोज — महिराज के घर आयी के विकाह के निक भी अन्न जिस्सी कर सा गर्थ के (६ ८० — व्यक्तां), प्रश्रह

अंगलियों पर गित गित कर दिन काटना

बहुत सामुरता पूर्वकः अभीवना करना । प्रकोश —कंशरी स्मिष्ट करना क्या भीत से अपली पर सिन मिन कर दिन कार्टने सभी (मोली—स्तुरण, ३१४

अंगलिया पर दिन गिननी

- (१) किसी प्रकार विन काटमा । प्रयोग—दिन पित्रय था फिल्मो क्री मारि । क्रम दिल हैं उप्योद्या पर विन रह (चुलतेक—हरियोध, क्रें)
- (२) प्रतीक्षा करना ।

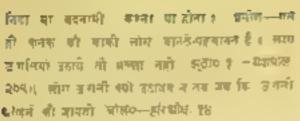
उंगलियों पर मधाना

बार ने कार राजनों अने माह देशा हाता. या राजा । साराय राजनातिक सीव से उसकी बोस्ती है, सबनेय की वीवी में मिलनी बुलती है, यहाँ के राजाओं सीए श्रीमां को उपनिया पर नवाली है (मूले—म्याठ दर्मा, ३५३) है बाहूँ तो समुख्य को अपनी ज गलियों यह सबर सकती हैं (मेहिं—चैंठ संठ, ३५), हाक्टमें नगेंस, क्याप्रकार्त सबका से ज मिल्डों पर नवाला हूँ (रेशमोठ -पानठ दर्मा १६२)

बंगली बरमा

- (१) कोई क्कावट या अहिन होना । प्रयोग—अय न मृना पर दिनकृत नहीं मृत्य । कोई प्रतिबंध *स्तृ*र्ग किया । सम्बद्ध कोर में उनकी सक उहने नहीं ही एई (मन्त्र) अ) -श्रेमसंद, **११-१७**
- (२) निवा होती। श्रवोध—तो वर्षेणी न उ गाँववा होन जोन में को गई बगर इ गारी (बोलंध—हार्रेज़ोड़, १५१), बारे अहर की उ गाँववा उठेगी, बन्द तृम्हें इमन्ते का परवा गावन से बंद ११३)
- (३) इसरम होना । उ'सली स्टानर





(२) भारता (सनिक भी) +

उपली बनकाना

हाथ बटवानर (प्रथीय-जो न नववार को नके बनका सो तम द्वाराष्ट्रका ना बयवाने बुभसेट - वर्षायोध, प्रया

(तमान नहार । उ गली संचानी)

क्रमानी दिवाला, अस्तरतर

निया करना क्षेत्र करमाना । अभाग - करि स्ती तंत्र दीरि एसराम ही अवशीन प्रसादन मोगा मते करावक केवल ६२ अगर इस उनत कर के समयन के निराधन के पान रोजा राजिस ही कि कीर्य करावी सारित्य प्रनाद कर के पीजाने— सार्वेद वस्तु समावत की बाद कर करावी है उनती दिवस विस्तानी है नुष्ठ सहस्त कर करावी है उनती दिवस

जगमी न इकता

श्रीगानी पकडने पहुंचा पच हता.

शोधी करण पहिल्ला पूर्ण स्वित्र र करण प्राप्त स्थाप स्

इ सली पर मिनने गांत कराना

प्रतिकार करते हो गांच बांध्य काशी । प्रशास— करा प्रशास्त्र प्रशासन आहे अगरी मिनलो देखि किहावी करु संस्था—कटीर १६९

उगसा प्रधारना रेर-≪डॉगसी दिलाना

उभानंत में मह समाचन शरंभ्द बनना

विस्तृत्व नहीं या भागा स्थाय करना करा प्रश्न निर्मात प्रमाय कृषे, प्रश्नित स्था हुआ निर्माण साध्येषता का द्रथ भारता है ज नहीं से तह त्याचार शहीदों से नाथ निर्माण बाहता है जरीय दें जैसे समुद्ध

उ गर्म्ड स्कटा

दण्य दिकाना । प्रयोग — » ५ दिवेशी की ४ अ अपनी भागा न। भाग गरिन सनस्था है । अस पर विशोधी द सनी रुपने की बुंगाइस नहीं देवते पुँठ निठ जालपुरुपुर, भुरुद्र,

उपद जानर

- (१) मृद्यास्त्र करने म असमर्थ हो असा । प्रयोग-ते नामन्त उत्तर नंग नामाग्र वह गए और प्रश्तिपन की प्रम पास नाम जी पिट नई स्थानिक-हा 30 हिं0, १३ (२) इस रम ने रह जाना प्रथम तम्द हो जाता । प्रयोग-- उस नम्भ ने पून्ती जान कर पामा की प्रमान तो प्रमान तो प्रमान करने नाम नामाग्री प्रमान तो प्रमान तो प्रमान नामाग्री करने वह भी प्रमानि मही नमी, यस उत्तर हो वह जहांज-- क्लांट सोशी १४१८ विवर्त वह नमाग्री नाम नामाग्री वहने की कोठिक अंग नाम नाम नहीं नकती की कोठिक अंग नाम नाम नहीं नकती की कोठिक अंग नामाग्री १४१८
- (3) WE SE ST ITTO MIRE (

उस दशा

- (१) पनवना हो जाना। एथान- नस्त्रम बहुत हमशा रखा का खूँदे अंध नांक क्षणपा: वयो मही सम कावता वर्ष उत्तर बात इस उत्तरों हुई जब बहुत (मुम्सेक -हर्ष्यों), इक्ष
- (२) विश्वतित तथा । घटन वस्ता सामा स्थान (राज्य पर सामा स्थान वस्ता स्थान दूसर परिचर स्थान स्थान

रक्षता दसरा वाने क्रम्स

च नर्कडम संग्रहापार कर । देशसा तस र च च च

विश्वानहरूत के दिन वह पान का अपनाओं पाम गरा ही। उसकी बान उसकी उपनी ही क्षी भी ।(सिल्को-प्रसाद, १४९% में वानता पा। बांगकी उक्षती-उनकों सी बान नाम देने से दुन्कार करना। बर्गगह, बर्गगह रेशकी०---राम० वस्तै, १९१,

(२) विदायीनमा या किर्राक्त के बात करता । प्रयोध— क्यो तही तक वायता काई उक्कड बात हम प्रकृती हुई यह नक्ष्मी (चुमते०—हरिओध, 38

उचाद देता,— केकता

- (१) परान्त कर देना—ियांन व्यवस्थ करा देना। प्रयोग—नव मून भी एक नकतीर कर दानो करा, वर्ता मेहना मुम्हें उचाक कराया (गोदान—प्रेमेवद, १६५ , दूसरे विन दफ्ति अभी की किरहों ने उन्ह विन्दुन उचान दिया। प्रमाठ प्रेमेबंद, ३९३
- (२) विस्तृत नम्द करमा । अभाग भूगतन्त्र की लोक में भी भूषे की तयह कुछ निकाल कम से भागे हैं उसर उसाइने में देव जगती है गुलार प्रधान- गुलार, १४९,

बकाइ केकना वे०---बकाइ देना

उगर्ता तार्विका

अगस्त्रता

कष्ट रामना बरना। प्रयोज-फिर क्या का, यह मुनने ही साभु-साहब प्युत स्वर में हा व कडकर असे जमरची तुनकरें (प्रदूष प्रशा-प्रदूषण क्यां, ११९

उराजवा लेका

शबरंक्ती कहसवा केमा । प्रयोगः - शब की दिम नीज क्याम बाबू आए इसी दिन जनवे सब उपकवा सुदा मा-कोशिक २५२।

उथह पहना

(१) प्राध्वितित्रमा प्राप्त हो तस्त्रो । प्रयक्षण— रहाँच प्राप्त कान्त्र क्षपट की क्षानि । सुरु साथ—सुर, श्रुप्तक्षः उपर्यक्त अत न होति निगह । कासनेपि जिल्लि राजन शहू (राम० (शहा) तुनभी, १२)

(२) नाक का तम बात कह देना । प्रशंक—हम जातांत्र वह वर्षार परेनी कुर दूध, यानी भी पानी (सूट साठ—हु), २३४१/

उचर कर माखना

लोब-बाब छोट कर बनमाना काम करना। प्रयोग—उपाँच नेच हैं कोध-बाज के बच्चे हैं, पूगी थोधनि एके हैं, सुदरस बोधी रावर (बाबों के निष्) (धन० कविस—समाठ, ६४)

उछाउ-धृत् कारमा

- (१) का-वर कर वार्त करती । प्रयोग-स्तो उद्युक कृद क्या रहे करते भी किया रहेर सूल न देस अवा (चुमते०---हर्त-अध्य अ्
- (३) बहुत सुग्न होता ।

अग्रम-कृष् दिष्यनामा

अभियान की बाद करता । प्रयोश--किनी जुध वरिज्ञाम पर कृष्ट स्वकर निया-पूर्ण जान-अपमान साथि की कृष परवा न करके अवस्तित प्रधानी का उल्लाधन करतेचाने बीर ना उत्थाती कालांग है, यह देखकर बहुतने तरेग केवल रम क्रिक के कीम में जी अपन क्ष दिवामा करते हैं किता है। - सुरक्त द

उक्त पश्या या उद्यन्त्या

तकायन वाचय में भा जाना । प्रयोग-पहानी नतकरी १६१२ के "वायोगिकर" में नक-वर्ष की उपाधिया पांतवानी की मुखी व अपना नाम दक्षवाद नवसीयह उस्तन पढ़ें भूनै०--भारत वर्षों, ३३०); विवस्त वाचु तो मुखीन से मिनकद उस्तन वर्षे (क्टाप-टेंट शट, ४६); धने मुख कर जाय स्था होग अ अ आप जनस वर्षे "सुट सुट, सुटहोन, ३.

उजदा कोना

निम्मनान, बच्चा (अयोग-प्रांत न इमकी नकी जही कोई कोण उनकी जनार देती है कोलफ हाँ भीध, २२५

उज्जली प्रकृति

मता क्वक्ति । अभीय—र्राहमन दलनी धकृति की नहीं भीच की सन । करिया वासन कर यह, करिया कायत प्रय रहीम कवि0—रहीम, २५

बजाका होना

- (१) उल्लिक होती, जानद होता। प्रयोग—का कुदर इंदोमार किससे तुम्हार घर का उत्थाना है कर दिनों में हुआ इसके कुदे तेवर और बंदोल बार्च दिनाई कैसे हैं ।≰शां⊶ईशां० 484, तुम से ही इस घर में स्वाच्या होया सुद्वाराक का नांक, क्ष
- (२) प्रियं होता । अयोध---वृत्त वनी कोर वसुमति की प्रश्यासी मान जिल की करत की केर्नाट मुनाई के का 10---संमापति १६
- (३) गमना होना ।

वह कहा होता

- (१) विरोध में अप्रे होता । प्रयोग-अस्कारो की उठने हो गेरो में में कुमलेस (नुर०-अस ९४
- (२) वमस्या प्रमृत होती
- [६] बीधारी के बाद ब्लाम्य मध्य करना
- (८) सामने धारा ।
- (६) जनमें की नेपान होता ।

प्रत प्रस्ता उहना

- (1) विशे नवस्य भारत व वा समूच क्या हो साथा। प्रयोग-- सूचन भारत दिंदि सभी है पान भी वर्ग जरियो विश्वाद वर्ग गांगा सब सामें हो भूगत प्रेशक-- भूगद २३६ एक विश्वात कृपते हैं जान पर न बढ़ को बाद मान्य बंध करे प्रेम को नवाद के यह प्रवा (गोदान-प्रेमक्ट, २६ में भी है नोधना अपन के बंधे ३८ किंपिया कृषक--दिनकर ३३
- न राष्ट्री जाता प्रयोग कारण अध ना देशास वित स्व प्राप्ट्रेन्सी ने दी स्थव कर गण क्षेत्रत के प्रश्चिद ए ता नार स्थाद समाप्त कारण कारण सा सन उर गण मेरिक-सृक्षादय ३०

- (४) आहे पर तक काना । अपीय—माना घोकारनाय बहुत पालने हैं कि वे बंग उठ बाय, तेर्पक्ष गाव के स्रोय कर कर बंगों का नाम नेते हरते हैं (मानव (य)—प्रेमबंद, उन्न
- (५) बंग में मुनाई हीता (प्रयोग अर्थम अपी पोत्ती नी तो तर कई के भूग०—यू ० वर्षा (४३)
- (६) उन्नर्स करता बागरिन होता । प्रशेश—सह दिस् यह देश इठ वयो नहीं चाला है (कुँद: च= ना०, १९६), निगृतिनक का विचार किसी काश्यक केंद्र के बाव हुमा, यो अहमून से उठकर यह बना या बाला—हापाठ दिए,प, (२) चोरी चला जाना । अवोश—नहीं बाब साहब से यहा बच्या नहीं चलप हुमा अ अ कहीं साब बठ साम तो में बंगनाह बारा आहे । सुभीते का नासा भी न) नहीं है ए म है है है।
- (८) करवीय व छाता । धर्मम्—तस ते कम् ५०) क मिट्टी के बनन पठ यमें होता (प्रैनाठ-प्रेमधंद, २००)

उठमा उस

दुशकरना का भारत्र । प्रयोग---वर्तन वयस, वर्त्य सीजांत, तथाक बुटि, सीभा देवाचेया विमु विश्व ही विश्वेह (पोताठ स -- सुलसी 36

(मारः वृहाः - इटर्मर कोपाठः - अधानी)

इंटर्ने देशने

हेर विकास में, इस समय । जेमोन-उटत वेटत सुराव माने पुत्रक परे स्थोई कार्यवाल-कवीर ३६६), पाय भी स्थाप परित्र एक में न तो दिन समय कर देन उहने बैटने पायि--हां और १२३

उद्धता

देश हुद कामा

उठल्ल

विश्वका कोई द्वीर-रिकाला वा हुए व हो । अधीत--द्वार वर्गीचार दक्षकाय वे इत सब की उठलकु और बाग की न्यवारिक मर्गावत किया (जिसी -िमाला प्रा

उठा देना

 (१) सम्बद्धान रहा चारत नहीं के लेखन नाम
 प्रस्ति क्षेत्रणीय को सहीत कहा रहा है। इस्स् रिका रहा के प्रस्ति के स्वति के प्रस्ति है।

पन कर इस: अगस्त नम् एक _व लक्षक

हिन्दरकाता पाठक स विदात गांक और स पहारे में जान मंगी रोक्स इंटर दी है (६० धी०---१० लोठ विच, १५०)

- (व) स्पर्गित कर वेना ।
- (४) समाप्त कर केता ।

उठा न स्थानर

कार्य मृतिम काकी न क्षेत्रकी । प्रयोग—नुमने की बार्क गाध्य भर कोर्ड बात कहा नहीं रको है (शतांठ क्षेत्राठ— शक्षांठ दीको, १९६६); तुम्हें स्थाद भिने इसके क्षित्र कीने कृत्र प्रता नहीं रुखा संगाठ—एक्ष, द्वठ

उठा रखना

- (१) बाकी रवाना, कमर बोहता । प्रयोग-केंग तृत्वार हित स्थय ही नवा इंडा रक्षा कही है (खठ०-गुंध, ह्यू)
- (२) स्थागित करनार : प्रयोग---वाल कर के फिके उद्धा रखी वृत्री (कर्माठ-- प्रेमचट, ८४

प्रका सेना

- (१) मृत्यु होतर मृत्यु की कामना करना । प्रशान—उनमें कितारी बार देवकर के कितती की बी, मृत्ये क्याची के सामने बंधा केना बगर बसने वह कितती क्यांकार मुक्ते (मानव (१)—प्रभावत, २४६); जमराज दूरनम को केरे ही साम दूरमभी है। उठा नहीं के प्राता (परतीय हैन्, २४५); मैं तो देशाधिकेय इन्ड के वती बनाया है कि मृत्ये अब उठा सं ,देवकीo—रांध १३०, ६६)
- (२) इटर नेता ।
- (३) किसी काई का शाय के लेता।

प्रकार प्रकार बैठाए बैठना

पूरी तरह पद्म से होता। एकोग-धारे में तो देश कर मू कि वो तेरे बडाए एउं तेरे बंडाए वंड (बुट०-190 ता०. 324)

उठाना

उपनत करना १ प्रमोत—स्मे उठाने की कोश्विय में भूद भेटे गिर जाने का मतरा है (भूने० नग० ठड़ो, ४६०), दर मीन तम किसी को उठाने में सलमने भूदे०—बचन, १८५ किस बहुत दौरुगा भी सारण का किसे मानि के कि को ए दर भूमते० हर्सभीधा प्र

उच्च मानना

(1) तेत्र दीदना भागनाः । यात्राम विश्व हो हारी

्रभीय को स्थान का होता दल भाग छ। ४०० छ। का चेटाच ६

- (२) कुमानं स्वीकार करना ।
- (१) इतराना, पमर करना ।
- (१) मना मधना अस्ता समहा ।

उद्दे जानर

- (१) क्य ही बातः । अयोग--या नहीं माम्यते कि इतकं रो इतार क्य के उस कृष्टे (मानश्रः १) - प्रेमकंट, १५८); कर, यह कम्पनी तो देश गई जीन क्यांग जैसे धाया का देश उस कथा चैती--क्यांक, ६४)
- (+) समाप्त हो जाना । अमोन—म जाने स्थी, यह भी यह स्थित बेटला तभी उनके तक विचार कही जह साले कितर (२)— कहा थे, ११७
- (३) भाषक होना । वयंश्य---वक बाहदा है किया पूर्व हर गया है क्टांश (३) - सत्तराम, ६५%; एक बार मी उन्होत यहां यक बोच बादा कि सम्बर्धन की तरह यह की जन्मी को सकर कही वह बाद (भिन्ना)---कीवाड, १०७

उदया उदया

क्ति। पूर्वे विश्वाम के, क्यूब । अयोग---कतक में तहता उपना बदुमान प्रवर किया---हो नकता है, विजय आहर ये ही कोश्रिय कर रहे हो दिलाव तो जालसात, २५६-५७

वसर्गा-वदनी

रबर-प्रवर से । प्रयोग--रमश्री बात वहती-नहती सथ. तक बहुंबती रहती है (बहुठ--देंठ सठ, ३७५)

इंटर्नी-इंडरी खबर, उट्टर्ना सबर

वरवाक नवरं, अक्तवाहं । वर्षाय—उद्गती इस्ती नवरं तो हवतं की भूती हैं (एक्टल प्रकार—समात दास ६०० , उद्गती क्वत नुनी मकी की कि अध्यारे आप को कियी स्वत्र से अवको का पानी जानों भी दभी से पंजाबी सरक्तर इस कर वाराम हुई पुरु निश्—माठ मुंग पुरु, २००), इस्ती क्वत्रों की नुन कर क्षता न्यान हो जाना मेरी पृष्टि में बारका महन्यत्र नहीं बहरका जिनाश—होनमंद, १४); इसी नवस जीवर के कान में इस्ती क्षता मर्स कि अ अ विज्ञी ने क्षानाम न अ में नीकरी दिन्हारे की बाद क्षतीं की है

50



(शिक्सीत—शहर, १६-१६), सबार उकती विकी गैसे भी भिक्षी है विकिस मैंने प्यान नहीं दिया (मुलेक—मार्थ वर्गी, १७२

अवसी विकिया के पंच गिनना,—पहनानना वोड़ा ना भाषाम गिनने ही मध्यु-रियांत को सबस नेना गोड़ा—में सपन की वह चन्य है बार्डावयों के कुमने में— गोड़िया भारती। चने हैं कि शानी मिटिया पर्यान के मुझेठ—सत्तव वर्षा इन्द्री, वहाँ गंचा भाषादे नहीं हैं, उपनी विकिया पहिचानों, उसे चोटी की क्या दक्ती हैं जुन्ने विकिया पहिचानों, उसे चोटी की क्या दक्ती हैं जुन्ने भाषा, प्रदा, प्रदाने चीनी के पर निन नवने हैं बहा किस्सी मैं (पैतरे—पहान, प्रश

(मगर वृश्यक्ता किविया आंपतः) सम्मी किविया प्रकार

पोलाक होना । प्रमोग—उनकी करन वृद्धि वेस उहनी हुई फिड़िया नवज की (मोदान—प्रेमकट, पुर

वंदरी विदिया प्रशासना रेज-वंदरी विदिया के पंज विश्वना

उद्यमी नजर दानका

में ही मरामा देश नेता । प्रयोग—एक उड़ती हुई सक्षा गुजरूर की ओर बालते हुए ज्यान ने किए पर्योग हु इस से क्षण दिया आन्य-स्थापना, इक्ष

उन्नती करंग से, --- नतर में, -- निराद में गरमरी तीर पर । प्रयोग--- गर्भ अपे क्लि हुए ताल पीने, मोमें और गरेश भूगरे को प्रयोग जिलाह से देखतर पर प्रयोग के पार्ट पर पहुंचा कि नदर बहा में अप की उस्ती सभी (तैया एर नहां से २४), पुनदा में पप की उस्ती धानों में देख कर नहां में (कर्मक-- प्रेसक्ट, 230); तारा ने उपनी में वर्ष से देख तिया --- स्टाप्ट प्राप्ट, 240

उद्गी सबर दे॰ उद्गी उद्गी सबर उद्गा बजर से दे॰ उद्गी भाष से द्वारी निमान से दे॰ उद्गी भाष से

उष्टते बुलबुक्त के पर बांधना

दूर के किसी को कालता, बहुद होशियगर होता। अयोग —हड़ उस्तृ का पहड़ा कार कभी जम्मई में आहा की रणता कि कार्या की किसी जिल्ली में काबुकदक्त कीम किस तरहा पत-पूत्र के पुष्तकृत के—वंदे बुद्धकृत के नही उस्ते बुद्धकृत के पर बादने हैं (पैतर्ड-इक्षक, 63)

अक्ष्मपाई कराना, बहनकाई करना

त्यर तथर की बात करके बहुकाना । यथीन—और मीम भी इसी नगर की उद्याधारण बनाते के । किसी को किसी पर विश्वपत्य न का भादान सेमबंद १६६ भरतवात रेनकी इस क्याई को उद्याखाई की बातों में कहात्वर बंकी— \$200- \$200, १२४

(गमा: मुडा: - उद्दनधाई करना)

उरम छ होता

नाव भागा, नायब हो जाना । अनोय—वहं नाट होकर नायके नायन में पटार्थम करने के अपने एस तेश के नाम योगान के जो भी भागाएँ काने भीए मुख्यानक क्यान में, यह कर उपनय हो यह (पूठ निक—काठ मूठ गुठ, १९६

उपनक्षाई करना १ प्रदेशको बनाना

SEC.

- (१) नरक बाक न बताना । अधोध-तु मुश्रते दतना १वो तहती है हैं (माठ प्रकाट (१)--आस्ट्रिन्टू, ४२०) बाह बार शार्थमा १६ १३ हैं नावा वह की ज़िल्पन की बात हैं गोदान-प्रेमश्रद, १४०
- (२) बहुत सुध होना ।

उडा देना

(१) अय कर देना। प्रयोग—सद-एक हिन्से में प्रेच-पाण हजार आते है। पाण हजार दहेंग में है है, और पाण हजार नेन-स्थाद्यकर आते-सामें में उसा है तो किर हमाने सीववा ही वैश्व भाषती (मानव ११)—प्रेमलेट देन जार कर तक किलोग पहुंचा तब तब पुण गरा-पाय दर में ना करत ही जुड़े में भारती सहर—स्वर, प्रमू, वर जा करत है में उन्हें आत सवती हैं (कर्मक- प्रेमलेट, रह

- (२) मध्य कार देना । धगरेन---छश झ ने उसकाम समावने । ॥ ॥ १ - १ मुठ माठ सुर ५,३५ दान ५ प्रयोग (१) में (२) मी
- (१) मुगरेके किसी भी बस्तू को नायब कर देना। प्रयोग—पंतित जी नीचे देखें तो वे नुगन्त क्रमा भी पुलाक दिया दंस धीर यह वे अलग नाते तो बहाने से नीचे बादर, यहाँ यदि कोई पुस्तक पदी हो तो, उने बहा देने । पेसन— अवक, देहां, बहात्मा भी ने उन्हें बाम बाग दियान । प्रमान पत्ती अगृदियां, क्षमं सम देश दिव गादान । प्रमान , ६३/६ यह दूष समा की क्रियांचे नहीं उदा नवना (रेवामोठ—स्मान ग्रंम), ३१८)
- (र) इडम लेना। अयोग-- वन में शोध विद्याचा होते की विभी सरस्थ में बाब कर गाय की उदा केना सर्वार सोदान- प्रेमणद, १०४.
- (५) अपन्यात कैन्याना । प्रयोग—कियो ने क्या दिवर है कि कुछ मोगो को कडका पसन्द नहीं है (कुठाव के ---बक्तपाल, १४६
- (६) मुख्य सम्बद्धकर ध्याम व देनः । प्रयोग—वर्ध पहिलो में द्वस बाल को कराधाती निष्यप्रजी यह चर करा दिया है क्षित्रोग—हरु प्रश्र दिए, ११८, सूच्योचका में दश नवाय को श्रद्ध देना बाहा (सम्बर (४)—प्रेमबंद, ३५
- (७) हटा देगा, व रक्षना । प्रयोग—स्वर्ग निदान है क्षम में क्षम कर्न बीट स्थाना से स्थादन क्षम । मैंने एक बीटी दमानी नहीं हैं, विशापना की यह कहा ही (१०० १) ऐसम्बद, पत्ना अस स्थापन का नानक है, वृत्तीराज के अनक्षर वाधुनिककरण वस दिशा है, पर्वे जना विदे हैं क्षीट मेंहिंग प्रकृति कर दिसे हैं चैठतें - सनक, 36

रुद्धा स्थाना

अपनात पैताने रकता । धयोग—क्यमं वर सह बहुत्य हुए में कि में भौकिया मिपाती का काम नदी कर गरे (चांटोठ जिल्लो पर्

उड़ी स्ताना

() बहारा श्राहरण प्राप्ता विश्वाप्त ता स्थाप १०१० प्राप्त स्थाप १९ हाला प्राप्त चार्यस्थ स्थापन स्थापन जिल्लामा स्थापन स्

- (२) विकी सम्बों को भूगा नाता का अपहरता करता। प्रयोग—सम्बद्ध को वरि साथकी समक्ष में यह वानें नहीं बानों को बादक काथा को किसी पृथ्यि के बहुर साध्ये किसा—बोर्शनक, 1881, दिवाह की प्रयो क्ष्म श्रमध केन्न यह वी कि वर एक अपने पूर वाकलों को सेवर कड़ाम्य काथा या और कन्या को उन्हों के बाला या (सानव (३)— ऐसक्ट १५
- (१) मोर्गी करके महना । समीध-नीपत बदकरे क्या देर बम्पी है । अग्रह मीरत देना उदा के गर्प (मानव १५, -इंग्लूट, ६५

उरमें हुर्न

रिक्षे के नाम मधानी नहें नहीं। प्रधीय—यह इसाई नई है, इस्टिंग्य समझे समना कुना बन से की आधनी सुनायन — १६० मध्य २८

उहाका

बहराया । वर्णयः—भव स्थाने गेंग निकाले ही बल्ला में मुक्त इहानी है। मुक्त—मन्त्रः ४३

- (=) कानर । प्रयोग --यर मध्यमय एक ही बार से कीर बार कार्य का मरम प्रशा गर्ने (निर्माणा-प्रेमश्रंद ५३
- (१) मुध्ये कर्षा करनी (अयोग-स्मृतीह सीव उदावन घरन्द्रा इस भारती यह नी ही स्मृत साल-सूर २४७६
- (४) बर्चाः करना ।
- (०) ओराजाच्य है प्राप करता (

प्रयोश्वर्धी काले करना क्या में बात करना । प्रयोग---इस ती अब ते के प्रया प्रशे बातें करने तम कि क्या कहें (में)---सीतिक १८६

रता कर

- (१) निका बाली का, घटकर । घडान-वह बात वे सब्द के कार कर है (ठेडा-विकीध, घ)
- (२) कारी वा स्थान का चीका पर जाना ।
- (3) अह प्रशास का एक न कर कर होना ।

उत्तर आंगर

(१) पहुंचे के दुवंच हो जाना । मगरेम-- मैं तो 'मरेरी

माओं कभी न वो ("इस वक्त मो पहले से बी उत्तर) हुई हो" (क्ष्मंक--प्रेमचंद, २५३

(२) श्रीह होता । प्रयोग भवनन कह कि बाई भी उम्र से उत्तर कुरी भी सानक--व्यवपात, ४४)

हमरती उच्च

रलती उसा। प्रक्रीय— पत्रनेश का शक्य पूरा नहीं हो पादा चा--कि दुवरनी स्थाना भी एक स्थी प्रविध काड़ किये बरकार्थ पर आर्थ सीसी०--यु a वसी श्रुष्ट

उत्तरका

- (१) कहीं उहारका देश करना । प्रयोग -- कर्नाट नाम कहा होगानिकता । उनके वहां पुनिवृत्य गर्मता अभिन्न (बाका--- सुनकी, २२४), मुख्याचे ही बाको भी जो पर वाकाय पहा समर्थ है (भाव प्रेक्षाय १३ -- भारति है, १२४)
- (२) पार करना । प्रयोध—सम्बद्धा नोड घान सन रोडो । विभाग न मुरन्य प्रतरन केड. ११४० % — पुलसी, ४४०), नवी इसर फिर आप सहाँ केंठे नोजना वी देशकी प्रकृष्ट प्रेमठ साठ—सठ साठ, १९/
- (१) जीति व क्षेत्र थाना । अयोष—एडोटर साहब एक एडी-साम्रम अगकं का में अतर दहा है, आप उसे महर तो म क्षानमें (गुंव निव—वाव मुंवगुंव, देशका; क्यों) कमकतं साम्र हुआ तो अल्डो के बास अनुनंदा (एडमव के प्रक पहुँचव सुनो ११म
- (४) बाय में ९मी ९२९(४) प्रयोग—अस्य मनभाते हैं
 यह कुछ और ब्रहरेगर ³ विमन-- हम्पर्यद १३

दुलको कर बहुना

विज्ञा संभी करते पूर्वक विज्ञान किए कियी वाल के समाय में जात बारता । प्रयोग—कान्यकृत्य विश्वित केल हैं, काल-रमन् ! कासी में सोग धर्म के बाम पर दम हन्द्र उनहां का बाही बाहते (बाह्य)—हुए प्रश्निक, १९३)

उत्तर शब्दा

- (४) दबरे आरंक्यक । प्रयोग चर्चद्रका झरस्यक्रम स् यह स्था - एक्स सम्बद्ध क्षां — सं आरंक्षित कर्मक्रम - इन्नेब्रिक चर्चक १९७
- 🕞 नोन अन्य स्था बनुसारका

(भयात महाव । पुलबा सञ्जय

उतरा खेहरा

र्मानच बेहरा, उद्यान बेहरा, सममानित बेहरा है। प्रयोध —-उसका इतरा हुआ बेहरा देशकर सामा ग्रीट सोटी दोनों की वह क्रमण हुआ बुद्ध -स्ट नाम सेट हुए,

(समा॰ स्टा॰—उत्तवा मृह)

उनाम कराव

भनो-जुरी स्थिति, हर ध्य । प्रशेष-स्थयहार की हुनिया में रह पृथ्ते के कारण उसके उभार-स्थाय की गुम्हारी अपेक्षा कुछ स्थारा समक्ष्मी हूं (बाहरण-देश), रिका

उत्पादना

उत्पादन करना

मृतःवत्र वेतारत के निए टीना-टोटका करता। प्रयोग —कर बनाय हम बनारने उसे भूत विश पर की किसी के यह बयर बोताय-हरिसीय, १५

उत्तर भारत

इन्हरं स्ते बनना । प्रयोग--- उत्तव न बाब विस्ता वैदेही सम्बद्धाः सुरु सुरुसी, ४३२

उत्पनाइ की सहर दीइशी

उत्पाह होना । अयोग—पाट पर इत्साह की बहर और वर्ष सूर्या०—घ० नाव, ११

उन्त्याह हु.सा, टंडरपत्रमा वर होता, डीटर हांना

जल्लाह उंडा पहनर था होना देव जलहाह हुटना

उत्साह होता पहना वे॰ उत्साह टूटना

उथल-पुथल होना

- (१) स्थिति में परिवर्तन होता । प्रयोग—रका शन्दराम के परिवर्ग में समा उपल-मूक्त हो तथा विस्ताल—कोक्षित, २२२
- (२) हमक्त होना—गहबद्द होना ।

उद्द भएना

- (१) वीर्वयका अनना । प्रयोग—बान् विता काक्स्टर्सः योजाबीत प्रथम भरे भाइ असे निकार्योहः ,सम् छः— सुलग्नी, ११२८)
- (२) भोजन करना । यथोत-स्थाननि के प्रमाने कृति कृति तका अधिनै गौरेकनि (छ० स्थान-छूर, ११०८

(समाव मुहाव---वदर पूर्ति करना)

उधार काय वैदना

- (१) किसी सम्बो पर दिन काटना । प्रयोग—उनकी तो नैसे बृद्धि धारद हो गई है < ४ मृत्तरीमान के नाम पर श्वधार धाल वंडी हैं (माम० (१)—प्रेमचंड, इ.स.
- (२) हर समय तैयार १८मा । यथोग---साश्याचे करत के लिये वह प्रधार हरे अस्ते वंडा रहता का (मृष्ट--वृध क्यां, १८१), मेरिक प्राप और भपना कृत्य बोशक दिनाने पर १पार सामे हुए हैं 'ऐमाठ---वेलचंड ११०

ভউভব্ন

क्रीय क्षित्राण । प्रयोग—तो जापने इसने दिनों में पर अमेद-बुग की है (परण—जीनेन्द्र प्रशः), इस अमेद-बुग में ही मेरा सारा प्रीकृत बीत गया (मध्0—बज्बन, पर ११९

उधेइवृत में पहना या ध्हता

माच चिवार माराजा । प्रवस्य—स्वानि कृषार विर तथी अमेरनमा सा पड़ समें (कार का नद रेडन केंच माद ना कई बार कि पाल कर नोबानी और जी वास माराज्य हैं हमक के यहां दिस्स असी अपके न के नि सह रूकी उभाद कर में पाल रूस कि सा अभिन्न क्यार

मधान करा । उधीरुयुत करना)

दर्जास-बाम होना

रूम कम जेथ होता, कोहा ही बंतर होता। प्रयोग— घोटा ने बेसे बुटा का, कैसी ही है। दूसरी और उपलेख-कीस ही बेंटरी सूमर—व्ंटक्सी, १९६

दलीय होता

कृतना में एक वा नुझ पट कर होना । वसीय---द्रमारी परित समान को नीच को मिनने की भूगावट छागे है अब इनकीय किन्ये हैं इन्होंस नहीं हुई (मट्डिंग निण---वार्य सहट, १०९

उन्हों पैधी और जाना

नुरंत और बातर । अधोत—'कभी तो गणकार' धाँचत पास उन्ही पैन्डे लोट बया (सन्ह०— दे० स०, वषश), सन्ही जायो पारपूर बने । वेचा तो शृशकात एक शीव के शीव पास क कर के पास बैठा हुन्य है (वैगणक)—बेमचंद्र, १४२)

उपवेश की कराई हानी

रपरेय का कृश मानूम परना, धनकृत न होना । प्रयोग —मीठी कवा कदक भी सार्गत क्षप्रजन है उपदेश कराई 190 सार- सुर ४२१७

उपस्फर्डू बात

इंडर उपानी दिनावटी काले । प्रधान—मेरी बाप्त मादि दे राध्य करन उपान्तर वाले सुरु साठ—सुर १२९९)

उपराचदी होतर

व्यक्षाँ होती । अनीम न्यान दिन्दी स वसका उपया नहीं जीव पर बहुना सन्। हो स नहीं वीनिक हिस्सिन, द्वर

उपाध काला

वृष्णि कारतर हाना । अशेष —कडित पार्षि कर्यु वर्षे व इराई क0 प्रकार—कवार, २४१

उपाय रशना

त्रस्य करना, युन्ति करना । अधीय — आर्थ उपाप रण्यु जुर एकु रामक क्षाल म्—जुलसी, १९६

उचल पदमा

(१) मृत्म के बक्ष्यक करना । अयोग—धुवेनी, सदका भारत है, जून के सम्मी है, जहां सी बात पर उनम पक्रता है, को प्राकी कात का जुरा न मर्गनवना भूनैन —भारत वर्ता, १६ , पाक्ष ने मृत्र दिनकुछ निर्मन्त्र, शास्त्र,



मध्यान होन, विज्ञानभोत्तर समाप्त प्रकार है, दावी को घरा की बाल कर जबल पड़े 'स्मं> त≻ केलबद १०४

(२) का का भेर मोजना। इन्हेग-मी एसी कर्णकी मही कि कोडे में बहुल उत्तम एक संख्यात है — सारतेन्द्र अध्य

द्यास्त्रा

- (१) चीक् कामा १ चंदीक---मियान बहुन उपन्तः
 त प्राप्तः प्राप्तः
- (२) वर्षे भीता स्व झाना , नीव अंगरोच हाना । प्रयोग— मैं भी कुछ निकारो है, बहुन उत्तन कर जिल्ला है के पीछ मुक्ते कवना है कि यह बच्चा नहीं है जीना स धारोब होन

आहे आता या प्रध्या

भाव का बाधनक हाता। प्रयोग-न्यन्तरण्यः कृत्यत्या से पत्तवा सम्बद्धाः शास्त्रः शास्त्रः १ - चक्रः १९८० अस्य-मृक् के प्रति समागम की चढाः प्रस्त पत्तीः विकास-सम्बद्धाः हमा १८.

उद्य बन्दना,---लदना

प्रोत्तरकार की आंच बहुना । प्रयोक — क्या बायप्रदे की यह भागि भुगान को के जी बेस तो वर्गत हरी प्रमेठ के किस — प्रमाठ, ६२), के किस बाद इसकी उसा उनने आगी की 'भूतिक—मंगठ देखी १६३०, बात कुछ इसा अकाद कभी की कि मुख किसो क्षेत्रल-व्येचना हो से हैं जो प्राप्त दूस आने पर मुखा नहीं बरानी जीवने के दिन अस, अस

उच्च दक्तना

प्रदोनी माना । प्रयोग—अब इयनोधों की प्रशा करने मार्ग है, प्रतिदास (बृट—प्राय मार), ४१४

रम्भ लक्ष्मा

🖙 इस इलगा

इव सरसर

रम्बारम्पनं होती, शस्त्र ने कोई दिस्य जान जाना। प्राप्त—- सन गार गा साम प्रकार अन्यस्य क अन्द्रकम् गम्य साम सुभगे अ

👺 तरहेमा करता

साथे। जना । अधीम के नाक्ता करीत विशेष जाना गामक क्षा सुमारी स्थात

उर दाह होना

- (१) ईम्प्य होती । प्रधान—नाम निलक मृति जा उर शहु चन० (जा—तुनसी, ३८३
- (२) दुन्त होता । प्रयोग—तम प्रभु पृतिह प्रहेत घर आहु । सुनत तून पृत्तु था उर यह (राम० आ)— तुलसी, ४६९ . सुरत समय कियो यह पातमाह उर स्थाही आर वय पातमाहो सुन असको मुक्य प्रसाठ -भूतंत, १६३/

उर में भएना

हृदयं ने स्थान के केना । अयोध---वहें भूपस्थानि, महे सद् बत्तरानि, बहे नहरहेती वार्ति वार्ति क्रंट में भरति है ।धनाः क्रिया-- सनाः, है.

दर में भागा,—दपज्ञता

व्यास के बारता । प्रधान—बहुद शांत करि में मन्धारणी तक न उन के बावन सुरु सार—सूर, सक्दका, नती सी दका नम् के देखरे कर जपका मंदेषु किन्ती (रामठ बात)—सुन्ती, दक्षता गरी बांद्र खाद, राजा जान की अनम करि, भूमि हु न नेनागींत और उस बाधी है कर रठ—मैनावति, दक्ष

पर में उपजना १० वर में भागा

वर में सहना

- (१) हरद में रूप वय शामा (अयोग--तर में प्राथन योग नहें 'हैं। सिंध-- सुर श्रवप्रदे
- (२) क्षाच्या ।

तर में खाई महना

इदम पर पूर्व प्रचान होता । अधोय—सही म मान भीति उर काई (१)६० (बासर)—मुख्यी, अक्ष

वर में धरना,—रक्षता

- (१) विश्वास करना । प्रधोगः—अब उर धरहु इश्च वर बानी (रामक (क्षक्त)—युक्तको, प्रद), भी दृष्टिनात विश्व उर द वर्षेत्री (सुक साक—सुर, स्था)
- 🙀) स्वयम् व्यवस्य ।

उन है न सहाला

अवर्थ तर राज्य र प्रकास करी साथ स्वयंशास ०७ आसर इस व कमान **प्≎ स**ाठ सूर ४७४७



हराय सं प्यान या समृति एका कर । प्राप्ति —संकृ कपूर मृत्यति देर मानी । धई सनह मिविक सद गानी (सन्द धील, - कुलसी, १४६,

दर में इल्ला

पर गहाना

हाम से समाना, स्थार करना । अयोग — करने न्यपने पृत्र से योगी में पानी जर मार्ट मुन साक-सुर, अरव्ह., महरिकाह जर मोनिह पृत्राची (रामक (बाल, — सुक्रमी १९५), योगि भूगनि मारिकार, सर्थन से से जर नार्ट (नदक प्रशास-संदक, १५

वर भागतना

हुदम स कमक होती। अयोग --वेच्यो और विरह के भाले, राति दिवस मेरे हर बाते (का प्रवास---कतीर, १८५): समन् भागु स्पृत्यन् मृति भा कृत्ये उर हालु (शाम्य (का---कुलसी, ३८४)

उप से बालना

मेश से श्रूष करता । प्रयोग—वह मुन्यस्य अपाहर चित्रकृति केमें दर से टापी (सुरु सोठ—सुर, धरेड९

द्वतिण करशा या होता

किसी उपकार के बस्के में स्थम भी कुछ कर के मुक्त होता। प्रयोग-कंसे हु कर उद्यान कोसे, आहेरकांत की बोहि (सुठ साठ-सुर ४०४२), प्रवृह्ण उपन डोटन कर बोरे (रामठ (बार)-सुरासी, २८१)

यलग होना

विना देख-देख के घाषाया सा हो जानत । प्रधाय----भाषा-रिस है, बाल-माँ मार्च बन्द कोई नहीं है, तभी एवा उत्तर हो सवा है (केसर (२)----अस य. ६६)

उत्सक्त पहला

भरतदास्य ग्रेडन्। माह्नकोनाः जनसः असा सा भूप सामग्रेतास्य । सायश्रेत्रस्य द्वा सामग्रेत्रस्य देशस्य २५३ वस्तुत्रस्य द्वास्य स्टब्स्य इनने क्लाअले की हिम्मत व पत्तनी भी (मान० (३)— इंभाक्ट, ६३

इन्द्रभगना ।

रोक रकता, तम करता । धर्मत---सूत ध्याम मासत रोप नोजे, मुर्वातित कड जनगढ़का (पूर्व साठ---सुर, २१%।

इल्ट आना

- (१) भर बाना । प्रयोग—कवारी न दिनी न दूनी, थ योगी न पिल्लाई, दम एक्टम उनट गई (इंस्टा०— मगढ दमो ६३
- (२) चरमधी और पर पद जाना ।
- (६) बान यह कर फिर देवट जाना ।

वसद देना

िवनि को विकाद देशा । प्रयोग-स्वत् वहि सम्पर्धत कोन पाप से विकास को उल्हादी पुरु साठ -सा श्राप्त

उनद-केंग

रियमि-परियलंग । प्रधान—निर्मार्थवर्ग के आग्रा ने बहुन उत्पर-कंट देखे हैं विपठ--प्रेमी, ९१७

(समान पृशान-उत्तर-पुलर)

उत्सर नेपा

बहुत कारण । प्रमान—के बुध्हारण खन्दा सबा, उसकी बीको अनक कर काले पित कर का गये असे, बरसा करने बजा आर्थिक होता सहिदाल बुद्धि स्थापनार, ३५)

उन्दर्भ पाई पदाना

बरमा देशा विरोधी बात क्लाबा । अधीत—मै आस्त्रा बा नुमने समाह केने—गांचा बा कोई उपास बलाओं सो नुम उन्हा बाठ वहा रहे हुँर (मिस्राः—कीक्षक, १६३)

उन्हों भार गरे पहला

भूमोजन बह्या । प्रयोक -सोमा था, यो-मार साल जीर जिल्हामी का मना उटा मूं, यर जल्ही आते यहे यही क्षित्रका चुँचलट ४५०

उलदी श्रान

किरनीत आसरण । प्रयोग —इन्द्री धर्मित, वृद्धि विषयास्त सम् की दिलनीतन असटी बाल पुर सिंग्-न्युर, १२७)



इक्टी-धवरी बन्त

दलदी-कृष्ट्टी कान

न्तवं की बात, अनुवित बात । इसोस प्रायक्तवं परं---रोतान, तुम किर भी नहीं कोचीने उसरी-पूनते वसी दोसर ,३)-- बहुत स. १९१

बाह्य विकास विकास

भाग व र । १ पूर्ण स्थान व्यक्ति मार्थि है पूर्ण व्यक्ति व्यक्ति मार्थि है पूर्ण व्यक्ति व्यक्ति मार्थि मार्थि व्यक्ति व्यक्ति मार्थि है पूर्ण व्यक्ति व्यक्ति मार्थि मार्थि व्यक्ति व्यक्ति मार्थि व्यक्ति व्

मानो जाती हुई बरावश से विमन शिवि । प्रयोग— प्रमाने रौति तिरामी प्रयो, सून को वेगी को है सूठ साठ --मून, भ्राहरू।

इसरी सीधी समभावा

इसर उत्तर की गांग सक्ष्मानों । प्रयोग—दान्तु इस समय के अपेन शांकियों को भ याने क्या क्यी गीओं सम्भावत सक्ष्मों ने उन्हें की क्रिक्श्मानी माना है, नवस। दिया सामा प्रशास-गांगा दोस मह

इलडी मुलदी पहना

कुल् जला-बना होना । अधीय-कम भी, अहे क्या जलही-जुलही पर्वेभी जी तुम्हें ही मुजनती अवसी 'स'— क्रिकिश, २१४

दलटे सुरे से मृंदना,—हस्रास्त करना

- (१) वेशकृष वर्षामा । यसमान-जन सब की पूर्णमण के नितृ आपको सबस बन्धेया या उस्ताय बनना पता है बीद बननो सब ही उसट उस्तदे में मृदना पदा है (गुठ निठ-बाठ मृठ गुठ, ४३३ , प्रत्या कामणी इसी है और स्थल बामा भूगी-ज्युती उसते उस्तदे से जुद बाना है (मैरेक-मुलाइठ, ६७)
- (२) वषण गरुमा । प्रयोग—सामानी नीति से पर वास्ते को ही प्रयोश धुरे में हमान करना वाहिता ? पोटान— पेम्बट १७६ आफ एक नाम म कान्या है स्वरूप अस है भीर पर को पर दुर से सर्थ है ने स्थान प्रसार (में) प्रमुख्य हुई।

वेलरे छुने से हलाल करना वालर छुन सं भवना

उन्हें पाय भागमा

पुरुष विकास प्रमुख्य । उत्पाप अन्य कार कार्य क्षेत्र

ने प्राप्ता कोर्डिक एक रचन पेरे जी या भी सामा कि में रकतिया है वृं (मुलेश अग्राष्ट्रकरी, प्रयप्ता

इज्जरे प्रेर क्ले जामाः — स्वीटना — परपम होता कोरत परका शोगा । प्रयोग — उपटि बाहु अपने पूर कार्य कार्य शोगा । प्रयोग — उपटि बाहु अपने पूर्

१ ११ पर मो साथ और का कुछ करने- १ ११ । इक्ट के द्वार तक नमें के उन्हें भी उन्हें पांच नीट आता एका (गु० नि०—का० मु० गु०, बर्ध : पहला कि बार हो) हमा कि उनहें पांच बापत बाढ़ें (११० (१९ मेमचंद ३३५) को नहीं उनके पांचे कुम फोरन बापस आयो (मूर०— स्मश्र ६६), बा अन्दे के बार के बीट पर्च (मुनै०— स्मश्र ६६), बा अन्दे के बार के बीट पर्च (मुनै०— स्मश्र ६६), बार अन्दे के बार के बीट पर्च (मुनै०—

(भवा । महा :---- शहरे हे पर फिरमा)

उत्तर के लेक्स

· उत्तर पर नाम जाना

उट, पंर बापम हाता है। उसरे पर संदे जाना

उन्हरे मूंट गिएका

दुरुग को नीना विभाग के बदने स्वयं बीचा देवला । प्रदोग—अन नवन नवना के लड़े। द्वारियर की दुलन बह पर गुठ निक—बाठ मुठ गुठ, छ। दं,

अलंदे हाथों लेना

वृत परकारता । प्रयोग—वैते उन्हें उत्तरे हाथीं फिया स्टार १)—व्हायास, ३६३

3~ ~ ~ ~ ~

करकुक । प्रकोश---तुम वैत तसकु वृत्ते सम्राध ही सही। सकते, हम क्या करेंचे (वैक्स प्रो-सद, १०५

(समाव मृहा०---दस्त्यु का पंदरी)

उन्दर् की शक्तरी फेरमा

बरुष्य क्यामा । प्रधान—अमीकार महोदयं ने मेरे किय पर प्रणी इन्त्रु की प्रकारी अभी कि मैं या प्रश्लेत के लिए उटा १ के १ के नियं अवस्थ अभी औं सद्या (मेरें) । मुक्तार क

इन्द् कसमा

o freigna i ny jih



ही, नाहे अपने समार के दुलने सादको रोती कान् क्ये हैं भारतीय हैं। सारतीय अहर,

उन्हें फनता वा प्रताना

मूलं बरता पर बनाता । धर्माय—वै वहता हुं तृत पांच पिनट में उत्तर बन जाधीये (देशा (१)—अक्ष दे, २१४ गय सो यह है कि वन उत्तर बन आता है, किर क्ष्य मही सफरा (वै कोठे०— अ० ता०, २१४), तब यक्ष क्षेत्र क उत्तर्भाव पहें उत्तर्भों में बैठ पांच उत्तर्भ करें (बुमते०— हरिफोध, १२६), यह चंदा है इस तथ आवतेपालों क्षणी गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने को कि देखों, में संवर्भ गाम के बार्च पोधित करने के पाहिलाम गाम के किस करने वार्च करने की पाहिलाम गाम के बार्च कराते ही यह सम्बन्ध कराते ही पिताल— क्षितिका, १८५

उत्तर पोलना

युगान होता । प्रयोग — विवेदिया दोना न तो उच दिन दिनमें ही परस्यू बीमतगह मैताक—रेम्यू, रहत जिन बहताओं में मनवर्क नवान अरच-शरच सनाये केंद्रते किरते में, बहर कम्मू बील रह में (सानक ,8)—प्रेसबंद, १४७)

उल्लु समभना

बेबकुक समध्यता । अयोग---हरियन वट्रुँडेड बैटा और संख्या कर में बोन्हा---नया जुन सोगा में कृते क्ष्म्य सम्बद्ध किया है ? (मानक (१)---देसबद, १३४)

श्रक्तर सीधा करना

उसाम लेगा

दुष्ट वरी साम नेजी । वयोग—यन निहाकै कामनी कोचन भरी केंद्र उनामाः करू प्रचारक कंदीर के 3 जनर देव न यह उनाम् समरू राम — सुनकी ४८४

उस्लाद होता

 ५) हशास्त्रकाता । प्रमुख्य दिवस अक कर यन क्षास्त्रका स्टूबर भेग नी हो अपना मनविक प्राप्तान क क्षारम शास्त्र निम्मा १९६०

(२) धर्मे मापूर्व होता।

क यने को अनुना

तन करता । प्रधान---वन इन्हें बाल्स है कि इनके पूर्वक रेदन के करी निका हो रही है, तो यह जान बूध कर क्यों वरा उपमान करा रहे हैं। यह नो उपने को डेनने का प्रधान हो क्या रेवठ को --प्रेनक्ट, ३५५

उन्न जीव

- (१) जना कृता। प्रयंत-नै से रिमो म आग के प वह जीव समये कृष्ट गिरिमर दास, ह, क्रिया मी दुख के प-नीच समयती ही मही ज्या-सीशिक, हता, मानाइहन की देर सब साम के ब-नीच समयाया गया स्रामाण- प्रशं माठ, १६६ , यही पृथला हु कि हम सिया बाद तो के प-नीड कर हरह की हो नकती है (स्रयंत-जनिक ११४
- (०) ज्ञानितन मेटलाव । प्रयोग तद लग ऊ का नी नकदि जाना, ते पनुषा भूने अस नामर का प्रमाठ---कारेर, १०५,, एक के लिए मगाज की ऊल-नीव—--भावना कालाई और आवस्ता का क्यांच — मानते के लिए मगांचा और स्पूर्ति का क्यांच — हुठ ६० दिठ, १५५

ऋंबा

अ-मा-- वा दर्व का। एथाग-- नीधी सब तरकारी भा बेबन तक इन्य (घटंठ-- जायसी, श्रुप प्र), इन्ये वर्ष इन्य बंग नृष्टा। इन्ये पान इन्यी तृष्टि बृध्यः घटंठ-- जायसी, १८१४), पान बेबना कोई इन्या काम वही है (१४० (१ - चेबचंद, २९); हा, हां इन्ये घनवानी है नहनों य रहने नायक प्रि-- यूठ वर्षा, १४४ , इन्हा के रहन विभाग ने काम करनेवानी नवस्थित नी इन्ये को के बोच्च की। इन्यो प्रति- भारक स्था, गृज्यान में अपने इर्व निया जिस समान को देवा वा इसका कोई इन्या मारकान का (हिन्दी साठ---हुठ पठ दिठ, १८४.

इ.सा उउसा

(१) केंग्ड होना । प्रशंध—संघर को लगा कि नह हुए कोटा हो नया है का असके नामने बाना व्यक्ति कुछ इन्या कर गया है जैना (२)—प्रकृष, ६३



क्रांचर हड़ाला

(२) इलकी होती र

क्र'वा रहाना

शन्मति कराना । धरोग — वानि को कथा उठाने के निध धरम बदमी कथा है के भीचे करें (नुस्तीय—हों) बीध १८२, इस स्टब्स अपनी हरक से से जिनमा लॉकों को के वा इसमें की कोशिया करता कथा, जोन उपना मुक्ती अगरने यह नुसे रहें बनुशीय—निवास: ३८.

द्वांचा करना

क्ष का कुल,—सर

यनिष्टित बोर यनी परिकार । यमाय-क में कुन कर। क्षमिया में करणी काय में होई की प्रशास न मेंबोर, हुया, इपटा के रहम विभाग में काय करतशानी नक्षिया नो क्रम पत्रों की 1 5 औं पैक्षी काम देश

क्रमा पर

है। ऋंबा कुछ

क्र का क्षाब

महर्गा होता । १९४४—समर क्र.चं शतके का हुआ था। गंपारा नेतर बहुर में ? १९७७—प्रेमकंट, ६४

क या लेखा

र राज्य से गा कर ज क्या प्रतिक के विश्व में कर के हैं प्रश्न के स्थान प्रतिक के हैं प्रश्न के स्थान प्रतिक के हैं भारत के स्थान के स्थान

) उन्हें के देश से देश ने शत

के भी पह पासर

र स्थान करा यन शाहर का उठ र हा विकास करा यन करा का शाहर का उठ र हा

इ.सा.साम

बहुत अधिक साथ । प्रशंत-- नांगनन साने नांत व देश अपना माण साम निकन्दरिया में बचा अंगा आंच उठा व्यक्त की आंजानुवार न्यदंश सीट पदा सुद्रागठ-- ५० माठ, १९७

अचा साहम

बद्ध केंग्ठ बोटि का माहम । १०१म पुरुषप्ति बाहिज इ.च.हिकाक । रिन-दिन के चे गाने पाद पर्दक साधसी, १६४

क्र बा निकासन

मायक, उन्त अधिकारी वन । प्रधोन-परम्त् मुक्ते यह भी बानुम है कि उन्ते विद्वासनी तक दश माहितिसका की बाको नहीं पहुंची हैं (अक्षोक०-ह० प्रवादितक, १५५)

इ.सा सुनता

कम पूनना कर रह होता। अयोग -- सेरियो का क्यर औ काको के या स्थल व साथद वह के लोग बहुन क्रवर सूनन के खुटाठ , रू. - रुद्धवात, इयह

3. का स्थान होता

भारत पाना जाना । अशेष- चीज माजित्य में बहनपीय भागवह अपदा नार्वश्वर का बड़ा के वा स्वाम है (गुलेशी एवं र —पूर्वश्री १०२)

क्ष'बर स्वर

भोर से, तम स्वर्थ में । प्रयोग---संक साति की क्षीपर गर्ग (पद०---कार्यकी, १९१४); तोनी स्वास मृत्यभूत के वे पुरो के क्यार कोने में प्रम साठ----सठ साठ, ४४)

क का दाध होना

- (१) यदा मोनवान होना । प्रणंत-सान अस्य सदा यस किनका हित सकस थुण सहस सहसे व सांसे० -प्रशिक्षीत, व.
- (२) क्यार सीना । प्रधीय--- कथा मन, कथी कर, कथी-प्रचा प्रदान कथार भिष्य स्थार समाज सन्दारक जनसङ्ख्या

उन्हासक



(२) वह कर होता. घेट्ड होशा। धरोन - विश्वविद्य इ.स.होद भी तरि इ.से पर बाद (पटक झाठती, १८६) शामपा किए नामें पर बैठ कर घर बसी, हो उसे बानम हो रहा बा में कुछ इ.सी हो गई है। (प्रत- केनबंट, १४२) उसके जन में पर विविध प्रकार को अबोट दही मेंसे नीलकार बहुत इ.स.ह इसके जामने खोटी है, बहुत खोटी धीने - - - (10 श्रम्)

(३) अध्या होना ।

क्ष'बार्ष पर जहांगा

क्रमें ब्रहाशा, बन्तन बनाया । प्रयोग— एक्ट क्यों क्रमाई पर भवानर बाहरी हो। नहां गहबते की क्रमिन वृध में नहीं है ? (१४०न—प्रेमचंद्र, ३५४

क्र'की मापाल

क्र'की उड़ान

वहीं-वरी कलावायं पर शृक्ष । प्रयोध---वीरपीय कला-गर्मीक्षा की पह बड़ी के बी उरल का बड़ी हुए की कीई महाकी गर्द है जिलांक (१)—-शृक्ष्म, १६४., जॉन संबंध की के भी के कोबी जवान भी बाई तक न पहुंची की (१२० १ ---ग्रेमधंद, ६२.)

अना अन्ता उत्तरन भरना

बरी बरी कम्पना करना । प्रयोग—क्निन की क्र की कीची जनलें कर कर पहिलान किर अपनी परेसानिया की सन्ता पर उनर बादा कुट0 —क्रमांक शर्र

(नमार मृहार--- अंबी उदान होना)

क्र'वी करती

भव्यत कामा । प्रयोग---क ने कुछ का सम्भिया, से करती क्रोन म होई (क0 धंशा0--क्रमेंग, ४६

क की जगह पाना

चरं पोरं (रामा । प्रापेक प्रग्रंथम ता शेशतक स्थापने प्रश्नं काम पर भी म अची परश्च ४० स्थापना स्थापनित्ते पार्टे देशक उत्तर राष्ट्र

क वी: जान होतर

कर्म अवस्था के समसार बाधाय केंद्र का समित, जानि का व्यक्ति । प्रयोग—केंद्री समझी कानवाली व्यक्ति स नुर्गाक्षत स्वास में पहुन कर प्रपत्नी विशेषना क्या एमने कर उद्योग स्वक कृषा और इस प्रकार देश-विदेश क नाम न वादना वरिका हैने की प्रयो चल पड़ी हिस्दी काल—हैंद्र पुरु हिंद्द्र, 2007

इ.सी नाम होना

के व स्थर में काया । अयोग-व्यवन सुप्ताई कारी है वार्थात के के नाल बॉल जिस मोटी सुरुसाए-सूट ३४२६०

3. की बाक होना

वानं अंपीटा का बहुन क्यान होता । प्रधान-सार्थ पर्णा के वी बाक रचने वे पर कारको नेता सं हरने भीव (देशलोह १)--कनुन्द १५२)

इ. बी. रीवी प्रवास

अर्थी-कृषी जानों की गड़ना । प्रयोध—संत कांग ती गनों के बचन गड़न ही है, दूनियादार जोन भी व अर्थ विकास के वी नोची पचाने रहते हैं जिलाव (१) — प्रवस १३३

3 वी-नीनी बात

मनी-मूनी बान । प्रयोग-स्व दिन्दी हे चूना करने हो बहुत करने उसकी राह क्यायने प्रयम बीनने नहीं, यर किनी वर बांध करने को दूर कर उपय दिनमें और उसे और नहीं हो दमनाम के बी-नीची मुनापमें 'विताद ह सुक्त, बद्द, भून्दी क्यावारी मुद्द क्यानी की बहुत मी के बी-नीची बान करने ही जानीव--रेण, उन्दे

क्र जी पहुंच

पुरर्शतका पूर की कुन-वृद्ध । प्रयोग—मापा सीर वैशाम को एक ही वड में हाकता प्रभारे दिनेशी भी ही ऊनी पहुंच का काम है युक्त विक⊷नाक मुख्युक, स्रोड़े

द्ध की बढ़ि

बच्दे करि । प्रयोग के वे वदे के बच्च सुन्दे । के प्र शत कोचि कृषि कृषा । पद०—प्रत्येक्षी १६४

इ.सां र्हाच

क्षेत्र क्षेत्र । प्रश्नाय-स्थापि स्थापि सीम अस्य प्रीप कार्यो समय बाज -- प्रस्ती १४



क्र ची हवा में होता

बहुत बहा क्षमकता यहं करता । प्रयोत- जब मोन्यामी को बार्को पोची के लिएं तेवी अभी हका में है तो हम बारता कुम रहते का दशका छोत कर उन्हें कुम शीर्क इसार करा काशिंग हुं लिए-शिंठ मुंट गुट १६२

अंबे वहना

सम्मान प्राप्त करना उत्तरि होनी। प्रयोग—सर्गत विनये हात से के ये उठी लोग इतको नयो से उपयो हात में मुक्तरेठ--हर्भग्रीक्ष ह

क्क बाले पैर पहला,-राखे पैर पहला

- (१) तमनी होता । प्रयोग—बादुर्श क्र-कार्य नेर सब का यह जाता है जा⊢कीक्रिक, १९०१ (⊕)
- (4) क्रास्ट होता । प्रयोक्ष--शि कार्यो करो की विकास विभी काह में पैर गरेका-इ.का यह जाने के इस प्रश्न क भा तर्ष है, के श्वासानी कहनाती है के कोठए-- का नाठ, १६५ केलिये प्रशास (४) में (क्ष्म) भी

क्ष चं बदशा

रामिति करनर । प्रधान—नया हुआ को धव वह कर गर इस्ति पर वह गर्ग (है ग्रां०—वे ग्रांठ, वद्य देश इन्हें गरा र को बढ़ते हैं हुनी आल भी को वाले 'बुमतेठ—हरिडांध १८७

(५) अधिकाम करना

क के देखा

भोर ने पुकारना । अमेन-जारि जॉन विषय स्टॉर सुरत बंद, असे टीन पुकारमी , सुरुसाट-सूर्व ३३६ पुजिती बंदी न देव कोफ विश्व बेट-युगानह अस्त पुजारी आरुसराट २ अस्ति दू पुरुष्ट

🗝 पर 🕒 🛪 में प्रकारण

अभिदेश का

মানকা কাঠ জনান জিলা এই ককু এব বজ এই মাৰ্কতন নামৰ হ'বা কাক বা এক কাকন, জনত ই মুনিত বাংশীত মুখ্য সময় কাম্প্ৰাৰঃ গাল আ অনুধাৰকা সং ক্ষমত ভিছিলা ২০

इ. में मीमें पैर पहला इ. इ. में भारत पैर पहला

अ. खे प्कारना इ.८. अ. खे टेंग्ना

उ.चे कोलना

जोनमें बोलनर । प्रयोग — तय विकासी वेजी पर में हिनी में विकासकर पृथ्यीतरक से कुछ अ में बोलमें की कहा तो मझे पृथ्यीताल के बरावे दन दर्शन में सहानमृति हर्षे (मैतरे बदाक ३२

क्र वे मन कर

महान चंदर, उदार । अयोग—दान समै मने धन पूर यो रुपरह को लगक युपेर महादानि उत्तर कर की स्मितिक मक्क-मिताम, १५५

अ वे विकार होता

थेष्ठ विनार होता : अयोग -- और विद्वास्त्रका ने किसा वा कि आपने विचार इ.वे.हें. सीर आप म नामना सीर नमन है (संसर ३) सामेश, २००)

इ.वे व्या में

भीर में भारत्मभक्त में । प्रकाश—बावन दिन मानक ऊप पूर कीय मनी पूराई सूठ साठ -सूर इवस्टा, स्वतिवत न रच कहें में कुवरि स बोर्ट ।संदेश प्रकार—संदर्भ, १७१)

कर की कोई कल सीकी व होता

बन्धे आदर्थी के किमी काम का असीमा म होता है प्रवाद—आदर्थी बनके ही नमीम क्षेत्र हो तो कपरा गोर कोठरी में भी मुख्या किया का सकता है। यह स्माद क्या किया बाव कि कर की बोर्ड कम मोजी है। नहीं प्रदेश करक क्ष

कद के संग्र में जीवा होना

प्रतिक के जानकार को एक प्रश्नित का प्रियम। व का हजान है है पहुन का भी है, जिने हमारेश्वरकान्द्रेन्टर भी वट के मृत के भीरे से भी कम बसाने हैं मेरेंश मुख्याया। वस्न

उल होर पर अग विकास

साराध्य कान कर शहर जिस्सार मासार दा । १ प्रश्न करना । दशका मुख्या देस क्रिया है । १ प्रश्न स्थापन करना । १ प्रश्न

क्रन की दून करता

्रामा बात का बहा बनाना र प्रथम मूलाक्ष्म बोबान दूर पान बाका ह प्रथम स्मृत्यक

अगर उटना

दल्यति होता, विश्ववित्त होता, चैन्छ होता। प्रमाय---भागका तको यह बान वेद्या है कि मन्द्य प्रमुख क्रांक उठ गणता है और यह कि वेस उटना महत्त्व की बान है अक्षयण-देवस्सा अप

,समा० मृहाः--- क्रपर खड्ना)

ऊपर उटामर,—खदाना

- (र) उरस्ति करना । प्रयोग—नाहकारम काकार व्यवहार के विकास-संकार को सुर्वो जानि को जिल्हामा और अब पनिश देश को उस्तर कराना करने के (पद्मकान— पद्मत अमी २३
- (२) महत्व का प्रशास देना। प्रयोग—विनी को उसर यक्षणे या नीची किराने के अधिप्रशास से से मैंने कर्मी किनी की प्रशास की के कॉनटा च्या के पत्र न्यक कर्मा 939

उतार खदाना

🕏 इ.पर उठानर

अपर अपर का

दिव्यानहीं । प्रयोग—अवस्थी उसे साथे घः महीने ही गर्थ से मगर उनका स्नेह अभी तक अगर ही कार का कर्मo—प्रेमसद, १३

क्षपुर का करा

६थर-तथर का पहलक कर्य । संधान-व्यक्तिक स्मार की कामस्त्री की को तसकार वर्ष भी का अवन-वेतवद दन

क्षपर की आसदनी

मुश्वर-त्रधर की तमाई, घुम आदि । प्रदोम — हमारे स्थान पर कोई भी हो असर की जामरकी के विमा की गुकार। कर ही महीं सकता (क्ष्म्,सक-देव सक ३५७ । गुनी मौकरी किद न पापोगे। चार पेते अपर वर्ष आमरकी है। माहक गोकते ही (आनवाड - प्रोमचंद, ३३३)

क्षपर की बात

सह बाल जो हरिक न हो । प्रशेष —उत्पर की कोटि बाग न भाव देख लहा की युक्त वर्ष 50 गेहार —कतोर १६२

अपर को स्थान अध्यक्तीचे की तीने रह अपन्य वर्षा कर स्थान स्वस्थारत राज्या विशेष वर्षा वार् मी क्रथर का बाम उत्तर और मीचे ना श्रीचे (विक्रिक— विक्र प्रक. २९३

अपूर श्वास्ता

- (१) जपने वे ज्ञारवाका अधिकारी । प्रयोग व्यवस्थ कार-साव यह विना मी क्यों स्वृती है कि क्रमरवाके बुक्त यह प्रेम-७ खेमसट, ३२
- (२) अगवात ।

उपर से बीचे विरन्त

भरपन्त सम्प्राधित पटना के पात्रस्थाप अचा आधान पहुंचना । प्रयोग-विषय का मृत सूना यह साता है, आम कट को भागी है, होनका मृत वानी है—बह कही बहुन करन के जिस्ता है जातर १९ —श्राधीय, १७४

उपन होना

- (१) बेस्व होता । जनोग वे क्यमपूक मनान्ध मृत्याने नहीं मानत के कि अरमध इन कुक् और धनम के फनमां से बहुत अरम है (प्रदूष प्रशा—पद्मक शानी, २६४. (२) बहा होना — बोहरे का क्या में । प्रयोग — वे मो बाहु सो शांव केंगे अरम और स क्या पृत्त निक—शांव पृत्त (१०६)
- (1) मान्य होगा ।

उत्पन

- (१) करती जी गारण व हो ऐसा जान । प्रयोग-स्वर मैं हु कि स्थम परने विश्वय का उत्तरी जान रखना है। नद २--मान संस्थ
- (०) वैधानिक नगैको वे भिन्न ।
- (३) भृतन्त्रत सम्प्रो ।

इ.च्य सांस्य खोरना

वास साधना व माम केंकनर, कुमका प्रयोग निहि सम्ब कोट यहे क्यों की है पृटत करण स्वाय सुरु सार - सुर 8853

इन्छ जन्द्रन्य अकता

बंकार बास करने: । अघोय--- नवसर ऐसी अभ-जमून कार्ते कह आने हैं जिसका सिर पैर बड़ी होना (पेड्सव के बच्च- पड़ने: असी १३४



60

असर की लेटी होता

क्रसर की बेती होगा

जनभव हरेना । प्रयोग-- परन्तु इस विकास की वेपन-मृद्धि उत्पर की क्षेत्री है (मान० ६,--प्रेमबद, छ€।

अञ्चल कार्यका

कर्ज निवर : प्रयोज-- रिनि वाह्न कर नीन्हम कारी (

मन नह बए होड़ विल् बादी (940-जायसी छार:: पर ऋषिक कालो अमें नहीं कि किसी के माने हाथ क्यारे किर काल कार्य हैं 'मिंश से सेश (t) — मास्तेन्द्र, 353

एक अंग भी करूकी न होता

अभिभृतिक होता। प्रयोग-भूग एकडू गांच वा काची में देशी स्वदारी शुंध माठ— सा अध्यद

एक भंग होता

मकनिष्ठ घम होना बाद भाग होगा । प्रयोज—कवीर दक्षित्र दृष्टि करेंद्र एक प्रयो है सामि अबैक प्रसाव-क्योर. 93

राक्ष आफ

ध्युव बात परकी बांग । अंगोर्ग—शाह राज परि बायम् रेडू एकड़ि बाक मीर क्रिन गुरु (शमंद छ – कुनमी ५५०

(समात महा०- यक शंक)

गयः प्रांच त्रेशमा

(१) एक कलक नेजना। प्रयोग—श्रामिण में अप हिमान वपने भोग तुमारने नीम नाम समानता वर्तर से कारने मनने के सभय नृत्यों गुरू थान्य देख में अन्य प्रांचीत 🐮 नारतेन्द्र, क्राप्तीः, तथ जाना केम कर कोई हिसी र प्रायम्बद्धाः । १ ज्ञाः १ दशकः १ १ क्षत्रं वर्ष हरू विकास गरे एक स्थाप अगरे के व किञ्चा राज्य अस्त स्पोधक का अस्त रूप के अस्ति अस्ति। 🕒 येवं 🕏 मध्ये एप्राप्त अन्य रक्त

एक आप न भाना

विभिन्न पर अनुष्टी ने लोक्सी । अञ्चलका का स्थापिक पूर्ण करना गर सामग्रह पूर्ण कर करा _{स्थ}न हु।सम्बद्ध देव सेंव देदन बर्गनायनिको प्राप्त क्रान्य

निच्हा एक बच्छा मा जानी भी अगन्य 📳 फेनबंद, १३५% बरमी क्षेत्र इत मोको का शामा-भागा हम एक अस्म नहीं। भरता (सा - कीश्तक ३०४

वक भारत से देखना

नव को बराबर देखना वर समधना । प्रयोग-नामध शासित के करे के निर्माशीय करते के अवसे केंद्रवार में मैन बढ़ा का कि दिन्दू संस्थापनों को मैं एक ही बाब में रक्षण हु । पुरु लिए। बार्क पुरु पुरु, २५३

एक आध

कोई विज्ञा । प्रयोग—कहें कवीर गुर आन थे, एक वाच उपरान (६० वदाठ-कटोर ३.

एक एक की दी दोन में पकड़ना

बहुत कर्नन होना । प्रयास----अक्ष बन हाथ मान्यी ही जाता है तब बारतवी एक-एक कोड़ी जाने में अवज्ञा है (सन्दर) H) - केमरोट स्प्रह

ण्यत्यक दिन प्रहाद का लग्ना,—क्ट कारी हाता, चल यूथ का लगना

🗸 राज परिवासिक क्याना स्था सम्बद्ध 🚓 भक्षका ज्ञान जनेता. प्रवेशना—ात्र हमें पण प्रश्न सञ्जीत को विकास को प्रकारत मुख्याल मुख्याल मुख्यालक हो हाल्याक राम होते में बच्चे तर है पर भारती जान से हैंगा व्यक्तिक क्षपद तरे रंगल पेन्टें "बालवा निनंग भाग उद्देशता है उद्देशका यहर इस्रे प्रेसे निम्न कृत गत्र *शास स*हर रही । पूर्व एक-एक पाम पहार हो सामा **गान**— पेनचंद २०५

(मनाव मुक्ताव---एक एक दिन भारी होना)

एक-एक मस किला देता

णक यक यन्त्र भारा होनाः

देव एक एक पाठ पहा ह सा उत्पाना

ग्रक-ग्रक पन्न (सिनदः) युग भा लगता १० प्रक-ग्रक पन्न पहण्ड भा लगना

एक-एक बास्ट चन जाता

बहुत भार पहली । ध्रमान-नांगी ने समाना इच्छार कर दिया होता, तो तम्हारा करनाव बाक वृत्र आतः वोदास-प्रेमकट १४९

एक कर देता

- (प) विश्वासमा।

गक करतम

- (१) तक बार के हुकुन्द थं। प्रयोग—मासी राज्य की सुध्यूनों सेता तक कलम बरम्बास्त कर की नई अवसीर⊶ युodRi, १६६
- (२) समातार--एक मार्च । प्रयोग---महमण्डे जी सं समाह वर्ष एक भी कलम से लिया देशालक २)---प्रतुर्त, ३१०)
- (३) घोषी सिमायट । प्रयोग—भेगा [†] सिमाये एक कलम मान में बालम के बीग (सक्तक-दिशकर, 18
- (४) नहीं बाद का एक रासिमा ।

एक कान से स्नून कर दूसरे पान से निकास तया मनी कारणगढ़ा भाग न देखा है है । पा दुसर का गांध पड़ा दों से सून । पा में मण्य देवी के हीत-नाम काम से मुख्यों भी दूसरे काम के नियान देती की दूधगत्त-देश छठ, २५०)

एक का अहारह स्थानक, **कार होदना,**— कोस स्थापना

मृत वहा-वहा का बान बनाना, क्यों की कुशई आहता। प्रकार प्रतिवद क्या को बनाई कहत एक वी नाम वनाई मांठ प्रवाद , द्रान्-आसीन्द्र, १९०), प्रजी को बाकर

र पेड्रान्ट रुक्षको गाउँ व देशको तथा । दास ५०७ भार्ट मुख समा को बहुत आका दक्ष की बार सह आसंबा प्रमाण-प्रमाद, १३/

(मना - मृहार — एक्स की सीन सरहाना, हम उद्देश :

एक की बाद हरता

एक की अहरका अगरना

एक की स्टब्स संगणना

देश एक की अध्यक्ष समामा

एक लग होगा

ाच ही मां-बाध भी कलाज होता । प्रयोग—असम है तो नया हजा है तो एक जुन (गीदान-प्रेमबंद, ३०.

एक बाद एर पानी शंना

कारक में अब न डोना । प्रशंप—कश्य निष्य एसीट्र एक बाटा । दुध्य पानि चित्रहि एक बाटर (पदण— आयसी, इन्द्रध

तक बाजान से बरानोई घर का शास आजना प्रश्न में है पूरी का अस्तात कर केता। प्रशास करता बाज्य से ही विश्वकेत पाठकों को बरावोई का हाण अस्तता होता । गुरु निक्क बाठ पुरु हुए, प्रश्न

वक विन होना

- (१) क्याम सन के करना । प्रयोग—मोशी अभी शक किन हुं के, निश्चि मोय-पूज करनि सूर्व सीध-स्थारकार
- (२) तक वत होता। धर्यय-पृहमद स्रोपत मीत विक्रिकत हो तक विक्र (पदण-आधारी, १८३३

21



na श्राष्ट्र के जीवे सह होता

एक मंद्रे के र्राच कहे होता

(समान मृतान- एक अंद्रे के बीमे लावा)

एक टक देखना

विमा नमक अवाद वेलना । प्रयोग—सटक्रि केनिय अनिम की इक्टक सम्ब साथै पुंच साठ—सूट ६९० , एकटक रही क्या सन्तराजी साम्य (बास)—दुल्कों, ३४७ , यन सान्त्य भीत क्ञान क्या अध्ययन को मुख्य एक दनने यन। कटिस: यनाठ, यद

यक द्वार के तादी होता

तक होर में बंधना

- ()) येन होता। प्रधाय-वध नक्ष्में स तक बोर प तोड़ करके रहा वहा बाधन मुम्मीक-हिंडिंग, ६३
- (२) दिवाह होना ।

यक हेन्द्रे से दो चिक्रिया जानना

सेमाकाम काना जिसने रोहरा साम हो ही दश्य हता मनोग— मैं भी एक ही सिवध में इन दोनों विचयों का समावेश कर दूरा एक ही देने से वो विदियों कार सुना कुक्र-चंद्र पुठ करती, क्षे

गक लाग

- (१) समाप्तर सम जान से । समोग—सनीर हरि के माध मूं, त्रीति रहे इकतर १४०० प्रश्नात प्रश्नात १४०% वह इस काली काली कहा और पूर्णकेंग के प्रश्नेत सभा काली क एक तार कामके से तो कोई भी न अजना अत्र प्रश्नात १ आस्ट्रेट्ट ४५४%
- 🌓 सकती अधारत का

गह जिल्हा भी व लगाना

न रिप्तान सम्मधना । प्रतिष्य प्रमाणकान्य को नामका इहाले जिल्हें को सेक्षा क्षित्रका क्ष्य करूप्यकी । पूर्णिक के**ल्**का

एक धारती में भारता

विश्वना होना, प्रतिष्ठ सम्बन्ध होना । प्रसीत नग्द भासी सेन बाधो, क्या वर में की पही दलना सम्बन्ध और बनाव करता प्रसार प्रसाद भार

गढ धेला के नहीं वहीं

- (१) एक ही वक के, एक ही समान । प्रभीप—सून शंजी एक ही बेची के करते-बटटे हो भानक (8)— देनकट क्षत्र एक्सिक शालक मन एक ही बेची के बट्टे बट्टे हैं (हामी) कु क्सी १३६।
- (२) समे आई-दाम ।

(समा पृहार -- एक धार्म के बरनम, जाहा के नेहें. -- बपर्डा के नहसंख्ये होना, -- टाट के हानाः)

एक इसरे का

भारतर । प्रधास - अब नक बराबर सभाजों में आकर na कुमरे का निय पंजीतिम् कोडन है जिसम मर्च की इन्मिन हो संधार प्रकार-संधार दोस, दुइस

(नवा । मृहा । — एक कुमरे वर, — में । — से)

वक कुमरे का द्वाध पकरना

नाम-याम मनका नहरमा देता । प्रमाय-न्यरन्तु महा-रश्य कमा कर्तव्य की सहय किया रहे, भाषमा भित्रक को तम्मन क्षि को मनावल और भारत्या एक दूसरे का शाब प्रकृष हो। (मृगठ-न्यु ० दर्भी, श्वरू

व्य-हो-नीन होना

यम देशा । प्रशास—माप्रदेशी काम में दाम अभीत पर पटक कर कमरे में एकाम एक-डो-आन हो गई ।कुद्र०— अंत ना ५९७

- (२) मीलाम होता ।
- (३) जंग की प्रारम्भ होना ६

एक आगे में प्रिकेट

তক লাভ কিলাৰা। সমীল-পুৰবাৰ কৰৰ মৰ ওলেছি অংকি কাল কিটাৰ মুখ্য মাজ মুখ্য প্ৰঞ্

क न सरमा

करा भाक्षा दे , त्या कर्ष देखन वर्णमार में १४४ । यहार असर राजन भागत व नायन यमारकारन वह एक, स नामी (कर्मण- प्रेमचट, दर); आन्द्रनाप कामन करना बाहते पर करनी के आवे अन्त्री करा न क्यारी अपनी सक्ष -एए. ७८.

रमधाल पुढ़ाल—एक न न्याना)

पक्ष पत्ति में बेउना

(१) धरावर का दशों मिनना, एक साम । श्रवेश—ते-मेंहि रास केलिरम जनगी, बैठि एक ही शांत **५०** सा० → सुर ४७७१

(२) समान स्तर के व्यक्ति ।

एक पथ दो काज होना

एक काम करते से करब होता । प्रभाग-आल कुछाई लग्नर है सामह एक पन है काम (सुण साठ-सून, प्रणाठ

एक पत्ती तक न तोइतः

पुछ न करना, बहुन सामान्य काम भी व कर नाना। प्रयोग---कोड मिन कुछ नहीं कर सकता। एक पभी नक महीं नोड सनता (रंगठ :३)--फ्रेंनचर, १४२।

एक एनियन

एक पल करूप के भवान लगता

रामय का बहुत भवा प्रतीत होना । अयोक---भक्त कार सुविरत मोदि निभिष कला सम आह समय त्रां -- सुतारी, १००५

गक दटक

यम मात्र में । प्रमीत----करी कंचीर करना की बाओ, तब पातक में साम विराजी (का पंखांत--करीर, १००)

एक पान का दो दुकड़ा अरके चाना

सर्व पनिष्ठ ताता । प्रयोग आरमीलकार हरतीसारपीर सहसीमदार विकासाय प्रमाद ध्रम एक पान को सी हुन करके नाते हैं (मैठा०—रेजु २३४)

एक वेद क्षेत्र

एक से होना , मूल अंचला करके एक साकाम करने परने । प्रयोग—स् सम इस्ट हुते हरि जेने, आग एक ही पेट सूक साठ—सुर 38550

एक देश यहां एक देश वहां

काम की भीव के काराज कही जिसर डोकर नहीं टिक

पानि । प्रयोज—बार दिन नक झानसक्य को बेटने का जनकाश न विश्वा एक देन दीवाजमध्ये में रहता दा X स दुसरा वेन जानिकाने में रहता दा (प्रेमाठ-स्ट्रेमचंट, ३३५)

(समाक सुराव-एक पेर ऑस्ट्रा एक पेर बन्हर)

एक प्राच दो हारी। होता

क्ष्यक्त प्रतिष्ठ होना । प्रयोग—मूर दक्षाम भागर, १५ नामरि, एक पान तह हो है 'सुठ साठ—सूर, २५२१)

एक कक में अबा देना

न्यत्वर्तान या नगमा कता हैता। प्रयोग —होशिन्दी हे इन प्रमानके को एक कृत में उद्या हिया (गोदान-प्रेप्तांट, १९४

यक मी न होता

पुष्प की न होता । प्रधान-कांचन विकेश एक नहि मोरे रहामक काल)--सुलसी, हर

एक मी रोम देश दोला

एक मुंह ने कहना

(१) नवका नहमत्र होता। श्यान दण समय नार। विकास एक पूर्व होतार नुष्टारी प्रधाना कर रहा है स्थार प्रकार-नाधार दश्य ६२३

(२) पार बार गहना ।

एक मुद्दी अन्त

बायन्त पोक्स धन्त । अपरेग--हे तरमते एक मृद्धी वश्र को सापको मृठी नहीं अब भी मृत्री स्कुल्डि०- हरिजीश, स

एक सुद्दी होता

तक होता । प्रयोग —श्रव दिमायमध्यको । एक पहुँ। होका रह सर्थक 'ब्रामण—देवसंव, २२०

वक स्वान में दो जनवार

नतां एक की नगर हो कहा हो का होना । प्रतीय — कही नवय, केन समर्गतमें एक स्वान हो वर्गते सू० साठ— सूच ४२२२% यह क्यों एक स्थान जॉन दोप (साठ ईकाठ २) -आरोन्ट् ४५२२



एक रंग हैं श्राता

एक का प्रसाद का दिकार कर देनों या होता । प्रयोग — एक सिन्द रुपये टिक्षण-दार्थ है इसे एक रेस में स्वतर समसेक—हार्रियोश, 164

एक प्रस

- (२) तथा समान होनाः, पून स्थल आना । प्रशेत-- सम्ब सुमान्त बुसीतवनार्वः, जदा प्रकरतः क्यनित मार्दः । सम्ब साम् -- सुक्षमी ५६
- (4) ऐसी रिक्षि कियम बची परिवर्तन न हो, भीउम । प्रतीत—अपने केन्द्र, में बीट बुद्ध नहीं कर सम्मी, पर मुम्हारे इस एक स्था भीउन में बुद्ध नमापन सा नवली हैं केंगर .१) अन्य ये. १०७-१७८

पक साठी से सब को हाकता

प्रयोद-वृद्दे सकती एवं ना नयभगा । प्रयोद-विद्दे करि इत्था एक ही भागी में सबसी हरके भी उसकी पर दीएका का कहा हाम हो है। ये बील-ये की फिल देवें पर में कृतीन औरने मुनद विशेष गरने में भगमां भी इसकिए कि मेरे प्रयोग गर्द गरना एक हैं। स्पेती के दीनों ही को हामने में बोर्च स्थानि का हरित सही समाने में प्रयोगी सकत क्षेत्र देशी हमानि का हरित हमने देवन नीति का स्थादार निका । सकते एक नाओं ह होना विकाद से स्थाद स्था

यह मांग में

तक बारमी । बदीय सास का सका गंद नाम में कहा कहा रुखेल देव संत. २०१

एक स्थर से पालना

(१) समाधार शांतते यानाः । प्रयोग—क्या सुर संशोधने ना स्थानने सुर प्रत्येषा सन्यत्ना राज्यः १ सिंध् १५०

एक सन्दर्भ गर्भ का ना २६ व सह चुन्न इस्ति साम्बद्ध एक सुर्वे का ना २६ व सह चुन्न इक्तिस्तिष्ठ ५२०

एक होश से ताला व बजना

पर च १ व ६० द श्रेका प्रवास⊸ ६ स्ट मनक ११ को वेदलाह किरमण्ड अस्टरको स्वाबहात । साम ६ अ.स. दूं ६६० दुन्द १०१

| विकास अपरेक या करारा प्रशासन

एक ही ताक

तक ही बंग के । प्रशास—सद में स्थास कृतवी शंक्ष का एक ही ताक सूर्व साथ—सुर ४५०५

एक ही दाय विकता

एक से हरेगा । प्रयोग---तेस सूच तेनह वै शक्त एकहि। योज विश्वाने सूठ साठ---सूर ४४४६

एक ही बाब पर सचार होता.

एक की नियति होती । प्रयोगः हम-पुत्र की एक हो नाव पर सवार है, पानक कठ०—देंग् स०, २५०

व्हियां थियतः,-व्यक्ता

- (१) बार परिषय करना । प्रयोग-निवस पुने जिल्ला कि विश्व सक्ते रहे काल क्या प्रश्न एटियर अपनी निव भूमते--हरियोध क्षत्र (+)
- (२) बन्द गरना (देशेत है अनी मनतो हम विन विक नहीं भाग लहीं विन कर है भी भिन्न विलय— हरियोध २३३ , इसको दाम। के नक्तर शहरा कार-स्वाह कर दाल दम नी उसे भी नवमी दुरिशना और निर्माल पर राजा आही (१४० (१)— प्रेनचंद ३०६-३०६, जब से दयकाल का विन नक्ती कीनारी में एतिया १४४-११४ कर पन नमा मां, जो ने अपने हुआ के परिश्रम के ही पर पनामा मां सब्देश देंग स्थ, १६६, देंगिए प्रयोध २) में (+) भी

एड्रियो श्राङ्गा ६० एड्रियो फिसमा

पती बादर को जार संमानन,—प्रसीता एक करता पोर उद्योग करना । मधाय—पृत्तित ने एडी-पोटी का जीर प्रमाण कि पृत्तिकां ये जोर्ड पृत्तित क्य बाच धर उपका उद्योग महत्त के हुआ गाम-पेनचंद्र, ३१३), भीग बोटी बीट एडी का बाग एक करते हैं प्रमोण नो कर बोल--स्थिति। २३३:

ण्डी बाटी का प्रसान एक काना १८ एडा बाटा का डोप स्थाना एडी से बंध्य नक

किन्न में प्रस्त है। त्या क्ष्मी क्षित्र के क्षिण के क्ष्मी क्षमी क्ष्मी क्षमी क्ष्मी क्ष्मी

एडी से बोटी तक जल जाना

(१) धहेत नायाज होता । प्रयोग—देशने ही बरम्हेर महायाज गरी से घोटी तक जब रहे (मोली—समुख, १९६)

(२) बहुत डेंच्या होती।

(यमाव मुहाव---वर्षा से बोदी तक आग छवना)

एड्सॉमें का नमदा कसना

किसी के निए कुछ करक उपकृत करनर । अयोग—वृष्ट स्थान में देख यस पीन बुद्धनी पर एक्ट्यान का नगर। कता यो सक तो नगर नग है (पोदान—प्रेमचंद, देव

पालान का डोकम ठावना,—कोपड़ी पर लादनर

स्वयंत्रे नियं हुए इपकार की बाद दिशाला । प्रयोग— अप्पं तलटा हमारी आंपनी यह राज्यान लहन्ते हैं विस्ताद—कोशिक, १३३), अपनी नथ्य में गहलान कर टोक्य काद ही देनी थे। अर अधितक, १४९.

(समार महार- पहचान अतासा,- स्वित पर स्टाचना)

महस्यास कोयकी पर आदता दे० महस्याद का डोकरा आदता

ਜ਼ੇ'ਰ

में ठ में इंकर रह जाना

दिस मुसीन कर रह जाना । प्रयोग—विस्तारभर दिस में एंट कर रह गुना (पनन- प्रभवद, २३०)

में ह कर

अभिनास से । प्रयोग---बोलभी गंड-गठ कर कद की कीम तब एंड क्यों न की जाती (कोसे०--इरिकॉस. ६३

धे के कर बलगा

गण से सलता। प्रयोग -किन सोगों को नेसे की वर्षों हो गई है, कीन राह बलते एँड कर बसले हैं निराण-रेण, १७४

पेंड निकल जाना

मनंदूर संसा । प्रयोग । तद निवास १६ ८) ऐई सर्वे

नव भना वृद्ध रेडमन्तित मुंहे (बुभक्ते० हरिस्रोध, ४१). वेंड में रहना

भगद में चून रहता । अयोग—तदिप इत नवीं में ऐंड दर्भी नदी ही मच दूसिन वर्भी की ए नहीं बनान हीने प्रियम—स्टब्सेस, २२॥) ऐंड में जान बेंडे ही रहे इपर महाराम ६ दर्भन कर में पूता कवान हो गया (मंगठ— उग्न. ११-१२

पे द लेगा

- (१) होणियारी के के लेगा । वर्धान—कही अभ्या से १०) प्रेया सरवे, कही सम्बद्धान में विनाद के बहाने से पाय-एन लॉट जिले कार्य०—प्रेयबंद, ६५९
- (२) परा केश ।

(नवाक वृहाक-चे ह वक्तना)

चे हमा

विभाग करना । प्रयोग क्या तो नगीन तर्रात ए होन है केरी किन बनाइ स्वासाय-सूर, इस्ट्राह, सेंड ए इ. बाल करना है। भीड़े हैं घटकाना समेंक हरियोध, ११८) जिन बाजारों में बनावल जवान अस्व-स्था सजावे ए हों किन्तु के, बहा प्रत्यु बोल रहे ने (सानक (है)—प्रेमबंद, १४४

ये है जाना

बाह्य बाह्य वा वा करना, प्रश्ना करना । प्रयोग—किन्तरं वृक्षतिया करनाव पार्थमस्य तक अपने हात्र के अनमता की मैनोमं पंढे आते हैं तो देगते ही बनता है (भट्ट निठ --बाठ मट्ट इं-१९

(a) इंड के बारे डिव्हरे वाना ।

शेंड्र निकट जाना

मर्च दूर ही जाना। जनोप—नाज कर्ष जिन कार साथी क्लिही सो पनी जिन रंग-रए हो। मुँह सर्थ निवसंती अब पन कार्यद वानि कहा उनक ही (धनश कविश्व—धनां), १९६. सम्बद्धाः

में हन्दर

श्रमकि । प्रयोग—जेते हीवदार दरबार—जिल्हार प्रत, इसक प्रतान किन्नोपति को अनम भी व्यक्तित सक⇔-वर्दा-राम १५५

प्रे'बा-पे'बा बोसना

समझ में कृष रहना । प्रमोम—कै विकाशीनाथ वाहत हैं काहै न ए के बोर्ड (सुरु साठ---सुर, ४२६३) । ए हि रु कि सनगाति भानके सरम्भ सूचनु कुरस्क---गिरास दासं ३३.. है सामरों भी नगर कीटा में बोर्ड होने (माठ एडाक ,३.... भारतेन्द्र, ५७)

(समा । महार - वे दा-वे हा फिल्का)

येत ताक पर

भहून परम । जमोग---दम बचार र्वभागी की एन नश्य पर बहु वाटमियाम मरगयो का मैनिश स्थवरवार दनशा मा रहा है वेसकोट (२)---वस्तुरंट, १११

रेंट गेंटे करणू और

(समात सुरातक पेरे गेरे वंश्वकत्यार्था)

केर्या की समा

्रम कोर्र परवाद नहीं '—हस यस वे प्रमुख्य होता है। प्रकार--वेडका कोलते ही उत्थाने पृद्धा--विस्टी आहर है मैंने कहा-- प्रकार ऐसी को तेसी में बाँच एक् रकुक्तां कर 'माला: ११८/

ओ—ऑ

श्रीत बदाता

बोध या तम प्रगत काला। प्रथम पितारी व तर बंबाबा बहा हमें प्रेमा प्रश्न है का कुल्लीत सिराता 80 मूरदान का देखना की आहे बंबाका यह जाना विग्रा दे प्रमाद, १९०

भौतें पर खंलना, नावना

हभी और हत्यों रखाई बहर पा प्रकार रेगी। प्रमाण बह समय राहर की उस समय की उसर कार पर सभ पता भी बह जान्यरिक्षात का इस समय की उसर कार में राफ हरा मार असर संस्थान के हुग्द साह का किस्सन शे पंत्रका का सान्त १ प्रसंबंद ३६ एक सहसे के बिग एक भीमो हमी भी नेका उनके सूख अवस्था पर एक गई देख्या हुए पर दिवस १३८ व्यास्थाना प्रामा प बगर्ने होनी अपन पर काली क्षत देवस्तृति प्रस्थान

^{राम्या} महार आंद्रो पर हेसी द्वीडू जाना

ओटो पर हंमी बाचना दः आटो पर हंमी खेलना

भाडां में हेंसी फुरना

हरू प्रत्या । प्रदास जमकी प्रान्ता चौर कोठा सहसी कर प्रत्यो ५ अपनेक-चक्रमाल १३४.

भौक्या में किर देखर मृक्ता को व विन्ता, न दुरना

शिशी कामनी गुरू कर केने पर किर कडिशहरों या करती की भीर क्यान न देश । अधार्य तक बचा वह पृथ्या को नया विने जब किसी ने भोजनी से लिए किया (कुमलें) —हिंशींथ, १०), यह नी सरासर क्यारनों है केने साथ परन्तु जब शोजल में सिर दिश्त तो मुसम कर का कर मूठ सूठ — सुदर्शन, ६८), वैने भी सोका — यक आकरों म गार दिया नो बंग्डों से क्या दरना ?

भोजनी में स्वित देकर प्राचानों से वसना चाहना काई काम एक करके उसके परिस्ताल स समना चाहना । धारोग—अस कोवानों में बिर शानकर नृष्य पुनस व नहीं कुष सकते (कारक-प्रेममंद, शह)

ओकर्ता में मिर देना

- (१) अन्तरे हुए विपत्ति में पदतर । प्रधान---पराई धानोचना करते को निकमना ओकनी व तिर देना है गुठ नि≎--वाध मुठ गुठ, प्रथप्त
- (२) कथ्द महते पर उताक होता।

शोड़ा होना

धोश होना । वयोग---वे इन वरेदारों की दृष्टि ने बोली वी (वे कोठंक- १६० गठ, ११२) (+)

- (२) शिक होता । देखिए प्रयोग (१) में (÷)
- (३) कम होता ।

शोद्धी मजर से देखता

ब्रा समाजना। प्रधान-निकित कोई समाजना इत्मान भाग भी हिनी कारित जहारी जहके का रवायक की बीमाद होनकी कवह में सोसी तजर से नहीं दश्या कोठें०--अब नाव, पर

क्रोड़े पर में धन भागा

ते क्षेत्रक को धन विकास को न जपने न हुमरो के लिए उसे कर्ष कर तके । प्रयोग—दास्त बात देव सींह कर् सोसी कर निष्क्र आई (सू० साल—सूरं, २८६०)

भोट में

- (१) शाम, रक्षाः प्रयोग-स्वीर केश्य राम की हू जिनि साई बोट (क्योर प्रयोग-क्योर, २६)
- (य) बहाने से-हीने से 1

भौद हैना

महामा केश । प्रयोग—किंद्र धनीर प्रवसायक सरन की मैं मिल गृण बोट अयो (क्वोर प्रकार—क्वीर, २९५), साहि मक्त वह निवस की, कवहुं स शक्ति बोट ! वेसे दृशी हार की अंगे विसमी बोट (4 o 80—42 द, ६४,

आंदना विछाना होता

हर सक्ष्य काण होता। पृथा प्रजाब होता। प्रयोग— कोमक बोदन वोचद सम्बद सिम्बोदर एक अम्पूर पातन रामा द —जुनातो, 10६६

ऑद कि विद्यावें

नका का कर. विश्वधानी सम्तु । प्रधान-नुमह कान अभि इपहिन्द गाँचे कोत क्या ओई कि दलाई सू० साव - सुर ४०१२

भोस पश्चा

मीची कांपडी होना

मुखं होता, बात का इसटा बचे बचाने बाना । प्रयोग---अकित से बचार बाने कुछ, ऐसी सीधी सांपदी के लोग हैं कि सो समका बदार करने बाना है उसी के दूध्यन हो बाते हैं (मानक २)--- प्रेमचंद, ३%), मिट बच्चर एंठ है अब भी बनों है अजब घोष हमारों सायटा सुमक्षेत हरिसाध, १००

आँधे मृंह सियना

- (१) कृषी तरह योगा माना । अमेग-इम अमा कैसे त जीवे पूर किये है असब घोषी हुमादी सोपनी (शेल०-हरिकोस, ३३)
- (२) बूंह के बस विरम्छ । (समार मुहारू-अभिने मिरनर)

जीवर घाट

दुसम्ब प्रया । प्रयोग गर्दको न दी भानना गर्त, न मौपट बाटो ने दरना भगेन—हर्तिभोध, १४३)



भौधर भग्द उतारमा

मुनीबत में हालना । अयोग—सोग सूक से ही बहा करने में कि यह सेठ की करने वहां बहुत क्याला है। विभी भगम इन्हें औषट बाद हि जा उतारंगा (ये कोर्टे०—संव नाठ, १८)

ऑसे पीने करना

- (१) जितना बाग निने बनन ही पर बेग राज्या । अपोम —कर्ष की अदायनों के जिल ही « × वे अपनी समाय नाय-बाद साई-जाइ जानं नीने काने अने .बुद्ध—का ना≎, तुरूद.
- (२) इयर-उपर कृत कर नेना । प्रधान-क्नवै सी जन सबको गारी मनजता हैं। जो जोने-वीन करके, इथर का

सीटा उत्तर केवकर, अपना पेट पालते हैं (गा० ,१)— प्रमाद, ३३

मसार पराव ऑने पाने देना

और पंजे विकादना

हानि उटावर की कब देना । वयोग—कीने भी वही कीका कि कोई बाहक नव नाम की इसके की भीने पीने निकास हूं (मानट (१) —केंकबंट ३०६।

(ननाः स्ताः—ऑने पीने बेसना)

भीर की और

दूसरी का जनवर्षक जात । जनीय-अपुकर तुम ही चतुर कवाने । कहन और की चौर ,सुन्साव--सूर, ४५७७:

Ť

कारत जिल्ले होता

मरीय । प्रथमा—भीड़ बहुत ही है, वंजा शीश भीर वेन कोगों का पहुं के नोग वर्ष ही प्रथम दिर्द है (मांश्राध्यात (६): आसीन्द्र, १६१)

कंकी जोटी करता,- -पट्टी करता

बनाव विकास करना । प्रशंत इन श्रीरको की देशकी भी XX मनमान देखाज का गड़ा हो तो य क्यो प्रहूत व जुड़ कावधी दीती शहक ६० तब म माना करदातास्त्र भेगा जबने गोला कथी चीटी करना दोत्र ही ही से 180

बाबी पर्स्टा करना

🗫 कवी चोटा करता

कंचन करमञ्जा

भगान भाग हाता समृद्धि भीत शीक्षा में स्था होता

प्रयोग —में गुरुरारी मगर होती ती दिन्छ हैती कि इती भीवरों में केंस सबन सरकता है (एंगठ (२) प्रेमधंद, सरर्)

कंद्रक होता

बार १८७ हेला - द्रशीय हरणबीर श्वश्वीस करण भ्रम् कर्णव विद्या भ्रमी द्वार - सु० सा० - सुर ४३५%

कंड करना

(१) बनानी दाद करना का रावना । प्रधाय -- अर प्राप्त इस पन के एना धूर्मिक्स को कि एक बेर जो मुनतर का जो बना देखना कह कर दिना और जान जाता आठ एकाठ के आयतिन्दू कर क्या ने लेना द्वार दूनिया में स्थाप का पाड़ के उसी हाता जीतिक हो। स्टीस क्ष

(मनार महार-सप्द रखना, कप्टक्ष्य करना)

केंद्र भूजना

प्रशान साम्य होनी आवरण विजयना (प्रकार -- भाग मृत्य पाम कृते अत्र अच्छ जी 'बोस० -- हुरिश्रीध, १६८), इसवार मेरर इंड्ड व्यूक्ट (संधा० -- २० स०, १९)

कंड फड़नर

- (१) येटी फुटना—स्थाधन्या बारच होन पर वानाव नर परतना । भारत—नरकंबर कट कुट जाया रेशक्षण बनवा सहि है (कुणीय-निराद्या, १४), कृद्य करें की जना कहें की कट भा पात नक नहीं कुटा चीसय-स्टिटिंग १४६)
- (२) मृह में सब्द निकमना । प्रयोग कुछ करे कठ तब प्रका की कंड ही फुट जब नाई पाया (बीसक—श्रीकींध, 134
- (१) शीले पादि के शमे में अधिन वारी निकलका । (मसार मुसारक-केंद्र फूट निकलका)

कंड मिलाका

न्या मिनाकर । प्रथम—बार बार होती रार्थणी नहार मे किस कर मिनाकर देवि ! शुद्ध वय शवा वका ह सूत्र में सोतु बुक्याकर (बारू—दिनकर, १५)

बंद में कफ भटफना

भत समय दिवट माना । अयोग-- शृत्यान वट तय होते. मृथिएको जब कक कट यह वी ,सुर साल--सुर ३२७)

र्षंड रामीला होगा

हत्तर मं सामग्रे होना । प्रयोग-धी को बंड है समाप। का रम बरमते हुए रमीले कड (बोलट-हुर्गसीध, १३६)

(समार्थ महारू—कंड सध्यूर क्रीनर)

क्षेंद्र स्ट्रगमा

- (१) सिपटनाः । जमोय---कड काणि सी हीसुर योहं (१२०--आधरी), १९१
- (२) प्रेम के मिलता । प्रयोष—में अना कर व वर संग्राहरू पर तो कुठार हैं अनवे (बोलफ—हीं मोध, १३९)

कंड लगाना, जाना

बारप स्थार करना अभी द्यार करने प्रमाण पर्यास स्थाने सान्त कर्म नहीं पद्या जा सहारे प्रश्लेष्ट स्थानित स्थानिक क्षेत्र कर्णा स्थान कर्मिन निव्हानिक क्षेत्र स्थापन स्थानिक स्थापन स्थापन स्थापन स्थानिक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप भीतो (मतिक सकत---प्रतिराम, १११ ; ध्यारे जु है बता की यह रोजि विदा को एवं तब बंद नगरहें (माठ प्रदाक (२)---मारतेन्द्र, १५६

बंद स्टामा

रें। कंड समाना

चंद्र श्रीयना

कंद होना

मुशीना स्थार होता । प्रयोग्य—सील पदी कठ के विका नाम बीक्य-हरियोक्ष १३६,

क्षेत्रा कुटका

शान के तमे में कह का विभावसमा (या के कारण) । दयोग—डीशामन ही नहीं क बरेगा । कहा कृट करते तेहि मना पट०—सामानी, पन

वंचा उदाया

योगी बनाना । प्रयोग---वे केने मिन परिया गाउँ, संचा काहि स्टाइट (क्य माठ---वृद, श्रम्पत

कथा पहनवा

योगी बनना । अयोग--- प्राप्ता कर परितरीत क्षेत्रा । लोगे पर्ता बाह्न दश एका (व्ह०---क्रायसी, १९१६)

क्षंत्रा काइना

सत्रम तर्भ प्रस्तृत होता । प्रयोग--क्या भाइ कर एक बार बचन केली जो स्वर मयस करने के भाद उसने कहा ----बृतिए ्यम्पा--क्य दिए, २१४०

क्षपा जात देगा

- (१) वर्षायता स्वांकार कर देना । प्रयोग---भाव एक इक वर्ष व कमा क्षत कीन कहता है किर गमा है पूर्व ? अमेर---क्षित्रीय, ५७% क्षत्रम से अभा मत जानो पहले कोश्चित्र हो क्षत्रों अमा---कीशिक, ३०३
- (२) बढ वर परत हो अना।



क्षेत्रा हेना

(१) प्रस्की उठाया । अधीत—तम तो वह भी माने हैं भी कोई इभार वह अध्वानें नहीं बाला क्या देना तो कारे बात है (माने० (१)—प्रेमकन्द, १३०), पाव के जिनको दुख-लते ही रहें बाज क्या क्या क्या देने क्ये औत्राठ—हर्श कोंग्र. १४६), दिवा है उन्हें नृते क्यी काका है इड०—क्थन, एक (२) अपनाता । असीम—तम विचार अस बाके नेन्द्रि

होत्र न कांच (पदय-जायसी, ४६%

(३) बोम दकाने में सहायक होता ।

क्या पकड़ कर करका

हमरे के बहारे काम कामा। हमोम—नो क्या एक है भीनो का बालो को कर कह कहे (मर्म0—हर्म-चौध, १७%

क्रांचा स्थाना

क्षेत्रः समाहा

- (१) बोच प्रवान में बोच देना । प्रयोग—प्रवन्त प्रजा मा समाना माहना अरह है इपने शाम तक बचा दिशा मुमरीo—हरिप्रदेश, दक्षा
- (२) विक्री के सम्मान में उसका मिहारक उडाना। प्रयोग—पहले तो भित्रवादस्थी के दिन यहां के बढ़-कड़ महाजन गाँव को जब विकास उठना का आका कारी प्रशिप कर कवा समाहे के शोधीठ प्रसाद—राधाठ टाम, केरका

क्या से क्या विजना

बहुत भीड़ होती । अयोग—हबसोग ठाकुर इस्ते से पहुंच तो दर्शको की भीड़ आगे हुई की, कथे हैं। वचर दिल्ला सा (मानक (१)—प्रेमकट, १५६), समस्रो भीनव नो सब्दा समय हो उपने हैं। कथ से कथा किसना है। सुठक दिल्ला सहयात, १६৪

(गमा) मराव -कंधे से कंधा स्महर ज्ञाना)

को से की प्रांचित भित्राक्त, मिन्सक्त, न्द्रशाक्तर (१) प्राप्ति संदेशिय के स्त्राप्त प्रमुख हम यह उन क्या स क्या भित्र को नव नह भ सब प्रशादनर को नव दन सीम की मुनक्तन की सामन तो पर प्राप्त करन जिल कित कर मार्ने जाते. (भूग०—चूँ० वर्षां, श्रष्टां, जाति. श्री रेस की नेना सरर लोग कर्ष से मिका कथा करें (चूभरी०— हरिस्त्रीय, ३५ जीना वर्षे गिस्त का काम कीजिये कांग से कथा समा का (परसी०—रेजु, ७०:

(२) नमान स्वरं पर । अवश्य---वह नहें का जाअप नहीं बाहती, उससे कथा मिना कर अस्तर आहती है गोक्षन---ग्रेमबद, ७५% वह होड़ क्य कर अपने पति से वह है क्या पिशा कर बहुँ होती थी, किन्तु क्या सथ-मूच इसकी उ शाई पर बहुँ की वो ,बोनैठ-----संठ (१०, ४१)

कंधे से कंधर मिला कर रेट कंधे से कंधा मिहाकर कंधे से कंधा स्माकर रेट कंधे से कंधा मिहा कर

क्यों पर आता

िनी कान का जनगराधित्व काना। प्रयोग—स्व जनमा कान भैवां इटीक्टब्लू के कथी पर क्षा पड़ा बहार--देवेंंं, के

क्षेत्रों वर उठाना

विकी कार्य की जिम्मवारी नेता । प्रयोग—पर नम यह जनक्य कहती है कि दू था किनी का अवस्य है प्रथम यह है कि कीन वह कर उने अपने क्यों पर के हैं। शीधर (२, —प्रश्न य, ७५): जानन कार्य का कृतना और अर्थों पर उठायें भी अरथ नाहित्य कर कृतना जक्यन कर सकते हैं? सुठांव (२, —यहाबाल, २१४)

(नना। नुहार-कांची पर केंबा)

कथों पर पहना

वायित्व उत्पर परना (प्रयोग—संसार की नहीं उपोत्ति दने को विस्पेदारी ज्याब दकारे तथक आहित्यकारों के कथ पर का पड़ी है (अक्षोक)—हम प्रवृद्धि हुए

र्कधों पर बोक्त होना

दर्गः व क्रावण्याताः । श्रामः इत स्व का साव अभी व क्षणां पर या सुरु सुरु सुदर्शन, १४४

(अवस्थ महरू कंप्रों पर होता,

केलां पर होता. ९० कथीं पर उठाता. संपर्कणी भाना, पैदा होना, संपती हुटना पत्पन्त भवभीत होता। प्रपोन—कोड वपने दिव पतन पदौ पत्रई वोदि हो सुद्रति पति कपती (सु० सा०—सूर २७१०); धाना में सवस्त शावकीय प्रधना के बूक्त ऐस ही स्ट्रप्ट है जिनका क्याल भी पन में माने हे स्ववस्ती पैदा होती है (भट्ट नि०—का० भट्ट, ९); सब मना १०० सह हुए द्या सं है बनद कपत्री हुने प्रानी बोल०— गरिमोध, १७९०

(समा । मृहा । कोपनी शहना)

क्षेपक्षपी पैता होता ६० क्षेपकरी प्राता

क्षेपर्मा छटना

रे॰ कंप्यांची आसा

कंपल तान कर स्रोता

विश्वित राज्या । याच्या जाना के सामन दिन राज्या इ.स. ११८१ है । श्रीप स्थानी सामनिका और जीवानिका साम कामियां साम का मांचे रहते हैं (परसीठ-- हेनू ९६

कई कदम वीखे छोत्रमा

िशी काम में किशी के काने बढ़ जाना। प्रकास--- व्यवस्थीय में कर्म की महात्मा नाभी की भी वर्ष करन पील क्षीप क्षेत्र (पहल प्रशास-- पहलक प्रामी, वह)

कनर-कचर कर जानर

मृत पर पेट भोजम करना । वर्गाय—हा जी नह नव मिन्ना गर्ना प्रपंत्र है भूद कते में बाम क्ष्या-नचर के कामा और बैज करना (भाठ ग्रंबाक—भारतेन्द्र, कर

(समार महार अस्तर कृत करता, कत्तर कृत भाना)

मानाहरी के कुले

क्षभन्नरी आने बालों की बीर नाक लगाए बेंड कोने । प्रयोग—अडेके न जानर, नहीं तो कनदरी के कुले उपन बहुत दिक करेंने। में मुख्यारे साथ कर्नुवा (श्रीक क्षेत्र) प्रेमचंद, १६४

कवार्व

द्व तमा सरिवरन। प्रयोग नवः वचारं स धराणे पत कची तब कचार्य है कमेजेमें कची (चीलेक-सरिवीध, १००,

कच्चार निकलना

बहुत परिश्रक परमा । प्रयोग—दीस्ते वीहते अधूमर निकल गया ।कर्मक- प्रेमक्ट, ३२०); कलकले के पंस बादे ही पही हैं । शुक्त बढ़ते-परने अध्यो का तेल और कार का कथू-६२ निकल गया (एट्रमक के पत्र--यहम्य समी १५०,

क्यांट काता

दुवी होता । प्रयोग-स्था अनका वस भीतर ही क्योट का नगर व्योगेल-साव होत, १०३

क्षांच्या

(१) यह यस्तु वा काम जो जभी पूरा न हुता हो। प्रयोग—बहा नाम्यका में सेक से विकासकार राज्यवाहा-प्रयोग की पीवनों देखी। उसमें को अभी कृष्या समान्ता नवहान है अस में देने सावक मही (प्रदूष्ण के प्रश्र—प्रदूष्ण असी, प्रश

(२) अवधिवस्य (

बच्चा का जाता

पत्थन कुट होना, कुल देना। अधीय--क्षिमंत्र टंचन पोने से दोली--तुम्ह कच्चा ही का बाधनी (मान० (१)--प्रस्केट, २००), अर्थ अकीन कच्चा कामें काले हे (झांसी०--पू ० दमी, १४३

करवा सेन्द्र

यामृती शाकारण केल । प्रयोग---पष्ट् काणा केल न होई अन करनर सेले कोई (क्लीर प्रयोग---कवीर , १४६

कच्चा चित्रा, –कर्च्या पोस

सारत भेर । प्रधाय—भाई बहित रोगों एक दूसरे को कच्चो पान बच्नों के समय जवान पर नहीं ना सकते थ (बृद्ध—स्म्य नाव, १६५०; में इन सब्दों के बच्चों निर्दू सरमता हु (मानव श)—पेमबंद, श्राप्त कवक्तियोग मेरा कच्चा बिद्दा बच्चा है सिहाठ—कोशिक १५८)

श्रद्धना चिट्ठा करना, जोलका

धना करो सब बाने स्रोत कर कहना । प्रयोध—पैन इसमें साथा कच्या चिट्टा कह दिया (मिस्स०— कोश्लिक ११ . कार उन्होंने क्यमा क्यान स कदना, तो मैं अशास्त्र में सरकर साथा कच्या पिट्टा श्रीन हूंगी (पहन—पेमक्ट, २५६)



करवा विद्वा सोमया

कस्या विद्वा योगना दे॰ कस्या थिट्टा काना

क्रम्बर धारा

- (१) बहु मचय भी सहस दूर बाब ध्यास हिन्तुंबर्ग एक करूना भागा, सई नुई का गीदा था बच्ची का काला बसा हुमा का कि करा किसी ने कुमा, उससी उठाई भूक मारी नहीं कि बाद दूर नका बोद कुम्मा नका (पहेंद्र मारा। पहेंचर सभी १५
- (प) श्रीमा शहारा । प्रयोग आमा का कच्चा शामा प्रभो एक भी शोपन ने साथ (ए.वे. मेलार — (क) क्रेमबंद १५

क्रमया पंतरता

- (१) विक्रियांमा, सम्प्रिय होता । क्योप उनी दिस्तत हुई । एथाक गुमलमाल है, इससे वहच निक्रम नकता है । किह हक्के एक गोटीक निवास क्ष्य
- (५) अक्टमर्थणक वा मटा डंडरमा ।

क्रक्तां पंच

वासन शास्ता । वयोद--शा देव की धरवंतीन योग बाजनीति में वह बंदे करने क्या कर करना है गुरु मिरु आर सुरु हुए, ३८१

कच्चा सन होता

कस्था साम्

ा मान जिनमें और दूवती चीजे तैयार की शाह । प्रयोग—मुद्धे तो मंत्र है कि महा बच्चा काम जिनमें के करितार्ग (केकी देंगा है)—डोमकंड, इह

करूवरे हाता

अ) पर्या स्वति काल संक्षा काल काल काल स्वति । अ से साथ में अपनि काल काल काल प्रति । अपनि साथ से स्वति । — प्रति साथ से साथ स

इत है होच—सीच का राज्या कारी में कार्या (शिली— दिवस्त 61

- (२) अभगुभवी होता, मनत होता, संपरिपक्त होता । प्रशेष---वय उसके दिन में मनन म वी जो किसी अच्चे कवि के हृदय में पृथ्ठे कवि को देश कर होती है (पुरु सुरु---पुदर्शन १९८०); क्षत्रमात्र क्या कच्चा मालूम होता है सान्छ (३) - देनबंद, १९६०, सान्द्रप भी की प्रेष के नाम वा अनुवाद कथा नहीं वा परन्तु ६०ने कच्चे भी नहीं वे कि गृह्य के बमाद थाने (इंडिंड (६)---व्यापाल, ३४३ (३) वनम दिन । प्रयोग-----दिन्नी वे जो दानतीत
- म्हाबतुर में बार्ड है उत्तरमा मेरे लाख आगने अपनि नहीं विद्या रे बाद अभी कृष्ये हैं (विदेठ--प्रेमी, १४
- (४) कन्नो सिलाई ३
- (६) क्षांत्रवाह होना ।

कण्यो उद्य,-जवार्यः

कम हम, मनभवतीन । अधीम—कश्मी उस नी नहीं करों कि व्यक्षं चौस सह दुधगात—देव सव, २५४., कह बी धन्मी हम की क्ष्मी है ।बुंदव—सव नाव, २१९ , कुब भी मेरी वसकी अचानी चुंदव—कस्मन, मद।

कर्ण्या गगरी होता

माप्र अपूर । प्रथम—अवर जर्रन कवी वृद्धि कावा दह नियम काची स्थापि क्योर प्रथा—कवीर,534;

कर्मी गोठी बेडना

वन्त्रवर्ष होता । वधान—कार वीधरी कव्यी गोलियां व बंदा का (विद्यान-प्रेमक्ट, ३३८ यदि वे तीव कारभते है कि अवन दक्की गोलियां कंप कर बहर हुआ है ती वह जबकी भूग है (कारमक--देव सव, ३१७), विभागत व क क वर्ष २० वर्ष कर्ष सं कीवास इस्त

(एम) पर । क्यां गाउं सेट्या)

करून। हवाओ

ं क्यार स्थ

करमार नंश्य

बार्टी का उसे करों कर पर कर अग्रदा दिनकादण्य भिन्ने मूच्य क्लाब्रह

मञ्जा एक्की कारण

भागी-वृति वाले काला । छठोन—हम पत्र व्यून दिवसे । यालवी नवकी भूत में निकानले अमे र गांक (२)---प्रमाधद, २३०.

करूपी पोड़ देश करूपा चिहा

कर्च्या वर्ता

२५ वहीं । प्रकार देशसान में दक्षिण आहर संदर्भों की क्षणभी वहीं एक नाम देश करना सुक विज्ञा प्रातीत केमू २४४

कर्म्या वाम

गंभनं बात । प्रयोग---कर्दे वर्त कारी अनुगई कर आं गह पत्नी सूठ साठ---सूत २४६६), बीजनत सिह बहाररज मान नियाबात, बात यह नांची कर्द् बाची ना काल ही उसाठ--- पद्मशाकर, हो, वर्षो धना बात हम तून करवी है म मध्ये न कान के बच्चे (मुमरीठ---हरिजीध, १३)

(२) भवलील बरल ।

क्रकर्मा स्थाई

उन्ताल कर वनाया हुआ सम्ब । अयोज—कानुमी, श्लोई इंगी बनवाई जाय—कान्सी यह वन्त्री है (शिक्स**ः—की**क्स १२६

कर्जा होता

(१) भोणी, असम्भवी होता । प्रयोग- तृष एकहु अंच स काली अस्थ-अस्थ बाज बामा (सुरुक्तार-सुर, १६४८) (०); बामित ही उदि वाह्य और स्थी, त्यी बाही हम कालो सुरुक्तार-सुर ४३०४) (०)। संख्या, तो सको ने बह समाह दी है, यह मन प्रयास है, तो बहुई ऐसे स्थ्यों वर्ग स ते १ इसबेद के में त्यों संख्यों स्थान कि व र में तहर प्रयास भाष्यकार कालोह प्रकृत । उत्तर का प्रस्थान होता । प्राप्त कोला करा । स्थ्य होता प्रस्थान होता । प्राप्त कोला करा । स्थ्य होता प्रस्थान होता । प्राप्त कोला करा

कव्ये घड़ की दीना

श्री मात्रक्त्वा अस्तव पीता । प्रयान विशेष व गीता

(१४४) ईवर्ग करनी र

भावनमा नी करने चड की पूज मानती होती (प्रेमारू प्रमान प्रमुख)

(२) नमा वं धनारंका क्रमा (

क्रक्टे दिन का दोना

- (१) देवन भन वाचा होता (प्रशेष—वैद्या की है अपन कर्ण दिश्व का बादमी नहीं समस्त्रमा दा नवन-प्रस्तवक, २००
- (०) वृश्येषयं पायसम्बंधायाः संदाः।

कर्म्य स्तासा तोष् हेता

अभिन्ती में नक्ष नाए रहा । प्रचान-सानी मृत तीरि या पारवी । प्रथम कंपनी किंग न निवासकी (सुर सरक-पुर २८३४

कट अपना

- (हो करियक होता । त्रयोग जैसे ने व्यवह वा त्रायक नेट्य दिल में कर बारण अवन नेत्र मंदर हुवा साही भूग एक व्यवह को कर बारण में काना मा (हंगक (१)—ग्रेसक्ट १८६, व्याप कॉब की कुवना की क्ट्रांकाचा मृतकर सभागी गारिका कर नई होगी । यहाँ प्रधान-यहाँ कार्य हाती होते । १८६ वा ना कर महा वह पर कार्य होता ना कर कार्य हरूर नाहि होते दिया नार ०— यह में हों
- (२) महर्ग ने पर पाना । प्रनाय---यह सही विसीत है जिसके निय हजाने पानपूर्व कट वह परस्तृ स्था-पीनता कभी न कारी पिछाठ प्रदाय---वाधाठ दास, प्रदेश
- 1) नवध कोनता माना गमा होना । प्रयोग-अन्या पह तो बचाओ, यहा बेचे बटतो है कवाल -प्रसाद, २५,
- (५) राज्यः जारा, व्योगा जारा ।
- (६) ब्हेंक्स सम्बद्धाः
- (a) महीन पुर ग्रांगा ।
- (८) विश्री चारदार भीत में कर आता।
- (१) क्षेत्रक रेकर नाव और देशा ।

24



(११) किमी लिएट से नाथ हर जाना, नारिय होना । फटमी साम्य बच्च जरना

एक्शन आते-आते बनी रह जन्म । प्रयस्म—नेप में रेस. तार कपेड़ी कन्द्रशी रिमानर सार्यों की क्टनी हुई तरक क्या की (माठ ए साठ ३, —मारतेन्द्र, ५३॥

करवाना

पैरार शमृत्यका आर्थ अवस्था । प्रयोग---प्राधिक को तगर सरह के कटवानी ही जाती है में कोडेंग--सब मांव, २०६१

करा-करा होना

रदार्थात होता (प्रणाद—के तो हम कोनो से पुष्ठ वटी-पटी भी जाम परनी है शासाठ- युव्यमी २६०

कटाश करना

म्पन करनः । यदोन—नोचन ने बटास किया—कः शार्यमधी की हो य हो नियत के कुछ-उ-युद्ध आवट तो भित्रता ही है मोदाल—प्रेमचंद्र, २०

श्रदिषश होना

पुरी तरह तैया। होता । अयोगः -यर क्षित्रको तो जान करिकड होकर भागे को भूतिक-भाग्यक्तो १५५७, वह उम गमंग अहित्रक होती को बोर करिकड (बहराको -कोन-इ. ४२

कडी इंगली पर न भूतना

करी मा औस

विकास एवं कारण दर्शन । प्राप्ता आहे एकनेक करों हैं। आ तो में स्थित कर अपना की कार देखका रह एका की मार अ अक्षास देख

कटे पेड़ भी बैठ जाना

बद्ध-करेजा होता

कडोर हुरप का होनर () प्रयोग —पण कह तुम । सम् गठ-ककोजी हो (मास्ट्र) १०—प्रेमण्ड, १०७

कडपुतर्मा की सरह नवानी या नावना

इसरे के कहे अनुसार काम कराना या करना । प्रधान— इनकाम के रईस भी कड्युवर्नी कर हुए उसी गत नायने रहे साज्यकाठ (३ - धारतेन्द्र, शास्त्र, ग्राहिकोग उन क्यारी को कड्युवर्नी की तरह नया गहे हैं गोतान—प्रमाद, २५०.

कडपूनकी होना

विवर्धक वस में होना । प्रयोग —ियस प्रथा भी इत्यान कर स्थान है यह पुलिस के होथा की कडपुतनो बनना पसद स सरका वसने प्रमाद ३६०

कड प्रेम

क्य-नरका एवं (प्रयोग---वेह सच्चे सठ सीर वर्षे हठ से बढरेंच् को नेच निवाहे (सनाठ कवित--धनाठ, ११९)

कठमुख्या हरेगा

वह मुखं होता । प्रवाद—कृतना नहीं कटमुख्या है । नियान को प्रवसी सावती से म (मृगक—द्वार वर्मी, २६५)

करिन पहना

क्ष्यांन काना । प्रयोग जब जब डीनमि कटिन परी सुरुकार—सुर १६

कठोर क्यन

- (१) गविष कर्ता । अवस्य—एस्ट अवस कटोर सुनि जी। य इंटर किसमान (११९० अः—कुशसो, ४३५ः
- (२) दुवयर ।

कडोर-इटय होना

क्ठार स्वमान कामा होता, दवान्यमता क्षेत्र होता । प्रकार—कोर्नाद सकृर स्वत विभि भोगा, काद यहा पहि हरण स्थाप (फर (सु)—सुससी, १०६५

फरवा कोल कोलका

इक्तम केल्या कहार द्वार कहती । प्रयोग कराया परिचनायको य कहत काल कोल्यो यान्य साध्य पर काल हती का सुहारक अस्तान १५

(समार महार कहवा बालना)

कड़चा धवन

नुवयन । प्रयोश—कच्ची वक्ष्म वक्ष्म भूनि वेसी, अति विस् गही भूवाल (सु० सा०—सुर, १४०), जिन स्थारय कीम सहै, काळ कच्ची बीन (पूंच संच—दुन्द, उट

कडवर होना

वृत्रो बतना, अधिय होना । प्रयोध-नह कर कर पुरस्ता तो अपने अस नेताको की गृह बन्ने तो कटाई में क्यी पहें कीर कर मा कर्मना क्यों हो है (ईशांठ-इ आठ, ६७) हमारे शीरते कुम करने होने, मतर ने हिताका के महुने हैं (शुभतेंठ भूगों -हरियोध, ७), वर्ष करा करना तीथा त हुआ तो मदे क्या हुआ (बुटाठ (१)--धतायात, २००)

समाव मुहाव- कड़बा मुंद होना)

कड्रमी कराना

धामिय लगना । यथोग—या नामी श्रम मीम नहीं सब, गट्य लगति है बानी , पुंच माठ—सुर शावष्ट), और से गमाय थम आनग्द विचार कीम, विरह-विचाद-मूक जीको गम्भी भर्ग (प्रमुक्त किसी है । दास देते क्यो करना गम्भी है (गिठ १,—प्रेमचंद, १७२); जामका देव व नग गम्भा करना तम भन्म भागा गम करवानी (बील०— हरिसीध, १७

कदमी शांख

मकोश दृष्टि । अमीय---क्षर समझ्य ने असकी घोष कुछ, एसी भारती घाणा से वेशा कि यह पूछ सा वका (मान० (१) --प्रेमचंद, अप्तर्श

कदवी खंड पीना

प्रमुख्य प्रश्नेत प्रस्त प्रस्त प्रश्नेत प्रश्नेत प्रस्तेत प्रस्तेत प्रस्तेत प्रस्तेत प्रस्तेत प्रस्तेत प्रस्न

फड़वी जवान

भी प्रमा है है बात । प्रयोध—-इस प्रकार बढाद वर्ष भी प्रमा है इ महीने की पढाई और नीम के नी कर्षा भवान बानी भा—-इन तीन नाधनों के बाव पुढारी मुह्मकी संभानने के काम में छनाये गये (स्टामी०—-राहुत, 24)

कडवी पान

पाप दश्न । प्रयोग मृष हो नहीं करण सब साना, इयस हमारे नाही (सुरु माठ-सुर, स्व३०), सून कर भावित नहीं करना बाद कावी, कही, बूरी दीकी बानेश— हार्किश, २४% इस कड़ हा बात करना है न, बहु काहे को सम्बा अनना (१४०,२ —प्रेमबंद, १६०), ब्या मदा हो बह दीकी और कहवी बात मुख्या के साबने बहु देना है (ज्ञान०—संख्याल ५१ ; तसने बाने काकी करवो कही ही (ज्ञान०—संख्याल ५१ ; तसने बाने काकी

3.1

- (१) अजन्त । प्रयोग- दिनावरी तो वन देलता कि विशे कर परस्की ने हाथ किलाते । इन बानव की चीर निया, हो कौर-मी बारद्वी दिलाई (१०० (१)--प्रेस्संट, पर
- (२) करार । प्रयोद-पूपर बानों को येन ८-१० दिन इण एक बड़ा पत्र निमा जा कि लेखकी को प्रवेश्ट पुर-व्यार वो जिनके लेख सर पूर्व है (पद्मत के क्या--पद्मत कर्मा १८३

क्षत्र कलेका

दृढ और वहनमीन । प्रयोग — सम क्यान वीजिये मी नौत सामग्री गाम के आपनी कही आओ कराए मह रहे हैं और कभी उक्त नहीं वार्ति, होतिये यह किस कई क्लेमें के लोग है (गुंठनि o—बाठ मृंठ गुंठ, शतकः) पर करें विस का यह बाह्मी आहमी पहले तो अन्दी प्रयाग नहीं और वरता भी है तो अभाद कर अपने बनाव के उद्योग में ताम माना है (विसाठ(१)— गुंठता, १२५

कटा प्रदेश

करूर ही जाना । प्रयोग—न जाने क्यो एकाएक हारे परकर उसने कहा—वर्षा, तुम्हारे दुःव से बेटा कुछ बने नो निकारर है उस कनने को असर (२)— बखोब, २२१ पंत्रे कैस ही कहे परकर तुमस बात कह ही ,मुनाठ—पूर्व वर्षा, ३३६ एक बार कह पह बाते, तो जानान थी कि पी होने-इसके करना अदन—प्रेसबंद, प्रथः)

करा क्रजात

कहा हाथ रक्तर

कडा होता

क्षीर हरम होना निश्म-कालन के प्रतिकायन के कृत हुद्ध । प्रशेष---कृतिक जिला काला कहा है कि प्रया भी रिजायन नहीं करना भीना को---देसबंद, द्वेष

कड़ाका का जन्म

हुपकास क्षण कामा । प्रयोग-प्यार स्टेश हो शेव वयाण्य कृतक है वैज्ञास अवश्रिक्षात १ -- अवस्तिन्द्र ३३२

मार्गा आंख्य से देशाना;— नक्षर से देखाना गर्थांच देखाता । प्रयोग तीवन करणा को मैं बोरता था, उन्हें साम करी मानों है भी नहीं केन सबता भागत १ प्रमाद १५ किया को कही दृष्टि से स्व कृत्या को यह साम्बद्ध १५ किया को कही दृष्टि संस्क कृत्या को यह साम्बद्ध है है उन्हें हैं। सामा है सामा २ — केनबंद 3-25

मामा प्रशा कहा सहर की हर

क्षणी तहर में हेमला वे अपने राज स्टेसला

कर्ना बात करता.

भाषित बात बहुना । क्यांग्—मां भी कड़ी-कड़ी बान कुनाव सोज मंकोन ख़ार हरि का स्म पंत्रक कायम में बहुने मुनी **** प्रेमेंठ साय--मृठ झाठ, १०६ , मृ निक्रमें कड़ी बान मृह से किसी से कबी मारी चवाचे मर्सठ— सुरिश्रीध, ६०). में अगवान की बीच के बानकर बहुना है, चब में कभी छुने बीई कही बान नक मृ कुड़ेश (सेमठ (ब)— प्रेमबंद, १५६ १५६): 'सोनी क्यों हो प्रश्नी' मीजिया में कहा—मेने बाई कही बान कह दी हो हो बाक बुक्शा' (बीनेठ—संत्राठ, १५६,

कर्जा कामना

चटन वरिक्तास निर्माग स्थितिक सञ्ज्ञास्तः प्रदाशः इत्यास क्रोप्टीयाचा क्षी क्षीची ठटेट- इस्टिंड ३७

पद उस ताना

मजबन होता. प्रयाग अह बेरा या भी कह दम कुछनी

नहरूत का जंगक (१)- प्रेमचंद १६२

कड़े मुद्दरे करना

रहा व्यवसार करना । अयोध —हमसे की मान सभी है बाम मो बड़ने कहें (साए—संसाध, १२५)

कड़े हाथों

बज़ोनना पुत्रक () प्रयोग---रियामत का प्रवण तस्त्रोने कह इसको य जिला वह (गोम्नी) चतुरक, १२६

कतर ब्यांत करना, काट ब्यांन विकास

- (०) वर्ष स इंदर रेपर की कसी प्रकार । प्रयोग— कभी पर की प्रस्थन के दिला प व कभी बीमाओं की स्वा दल्ल के जिल नरमें की जनरन पहली रहनों भी और कब बहुत कनरे स्थीन करने पर भी कस्मान समानत तो प्रथमी करने क्रोर्ट बीच जिल्लाम देशी (मानक हु - -प्रमुख्य १९९
- (३) कम करना । प्रयोग—पर कुछ नवव हुआ सरकार में एक नगम । अधवासित करके इन अधिकार में बहुत कुछ करक-ब्यान कर दिवा साठ सीठ—महाठ देवंदी रक्षा

बनगाकर निकास आजा

इस नरह जाता कि बोर्ड देखाना थाये । प्रक्षीया बाह भागे में सुवाधी को देश जेना तो कतराकर निकल बान। उत्तर प्रकार के देश के स्टूप्त के स्टूप्त के स्टूप्त के स्टूप्त

कर्मी उपन

(अन्य वक्ष कर निकार अस्ता प्रवास नहमें निका अन्यत कार कनवार स्था प्रशास अस्ति वृक्ष्य वारत कर व्यक्षण कर कनवा करते हैं प्रवास बहुक्य कर नते सक्ष्यण स्थानक ए प्रमुख्य प्रश्न कर देखन हैं स्थितन की गढ़ से प्रवास करते वस कार न प्रतिस मेनी को देना सिया हो ,हुँद०:- अवनाव, २१३

(४ किया पाम ने होने बनाना। प्रथम जब कि करन्य ने सम प्रथम नाव केंग्रेस केंग्रेस केंग्रेस कर स्टब्स करण करण ——हरिक्रीध, सह

कदम उलहुन

- (२) नगर्द क वंदान म प्रायना, हार होनी ।

फ्ल्म उदना या उटाका

किसी काम को कपना । प्रयोग—अस में प्रकृतवान ने प्रतितिसा के भरा अपना करण ठठा ही मिया (मृतेठ--भग्नेठ वैमी, श्रद्ध), मुझ जिस रिजीत में यह क्षम उड़ाना पर रहा है में उस ही महत्व दे रहा हूं, सपने को नहीं क्ष्रं क — अठ ने।०, भ्रम्बद्ध), लेकिन क्रमपन के विकल्फ की करम न ठठें, दमका स्थान रक्षना होगा (पातीठ रेणु, ४००)

फन्म खुमना

- (१) सुशायद करना । प्रश्तक—ह्यानी क्यांचा को पूल में मिलाना चाहती है । चाहती है कि में उनके करन सुन्न (१ गठ (१) - प्रेसचंद, ३६६
- (२) अध्यन्त आरम् कम्या ।

कदम पीछे पहना

(यवर व यहा - कदम पीछे हराजर)

कदमां यर भुकारा

पदान बनाना पहला स्थापना कराना प्रकार नगरार आश्मी ने मुझे गुरहारे करमो पर जुकाया (१४० १३)— प्रेमचंद, ५०

कटमों में बैठ कर

विका के बाल जान । प्रधान आप उसे नदशास्त्र शामनेक्टर के करमी में काम करने का मौता मिल जान का क्षम दण्डदे की दिल्ली मकल हा जान चीलते आहे.

कनमा देवा

माण की कोर से देवना । अमोत—एकत की सकि पूजर में मुजयारि कोजिस से पर्छ है को (समाठ— पद्रभावन १५

(मधाः मुहाः—कत्रको से देवाना)

कतर्वातयाः

करवाक्ती, त्र-कृष बात । यथात—संध्य करी उत्स्वता के फेलवा मुगत के लिये और सिशट वर्ष 🗶 अ और कार-वर्तिका भी बन्द हो नहीं एकन—प्रेसकेट, ३२१

कनप्रमाकिया स्त्रज्ञ

लिक कर कियों की काल मुलना धेर नेका। ध्रमीय— मी काइना है पहिलामी की सम्बद्धांकमा मुननी (सान० ए - प्रेमकट, २७३

वनात पृत्य-कतस्याय यह कतस्यायां लेला)

कतर सिया

नवील प्रेमी । अयोध—संभानक एक सुनीची आने की प्राचान ने भीका दिया । कमर्थानमा शिवशमम् कटिया पर इह वेहें ।गुरु निर्म्मनार धुरु गुरु, २०४

कतार्टमा देकर सुनना

भाग म मुन्ता र अवाय-स्थाप कांश कथा वान देति र गुरुव नामो, यह प्रमुख्यो वाम केंग्रि के रमन है अव 10- मैनायति श्रुष्ट

कर्ताचा करता

- (२) प्रमी का अनुकत बनाना । क्याम—अवकात किमी
 को किमी की कर्नाही न करें, देखी मुध्यतो इसकी कैमी
 वातं नहनी करती हैं। भार प्रसार १)—अवस्थि प्रहृद
- (३) नीजा दिशाना (

कर्नाइत करना

दबना, परवाद करना। प्रयोध—मादिक एक रक्षीत कृतान को पान किये सिनको न स्वर्त को, भून को होति तके मुख्य मृषि, कोई की कालि क्रमोदन के का सन्दर्भकारम्

कर्जा करना या फाउना

(१) क्वला। प्रथम-नानृत मी भी बंधन है, इसे

36



क्यों नहीं तोपते हैं उससे स्यों करनी बंटाने हो है पीटान-प्रमुखंद , ७५७ जैन जब यह मुक्तून कुनो की तो समझाया का मुख्यों को साफ कुकर को पर उसी दिन से कानी काटने नमें पदाना के पदा-एट्टान क्यों 169

(२) किसी बाथ वे शहला कर निकल जाना ।

बादद की साथ होता.

क्क्स कपटी होना । प्रयोग --सर्पार जान कमा करत की लागि (सुर मार्थ सुर ४४७५

क्रपट में बोग दुई

सप्त पूर्ण । इयोग—पगर बोरि बानो बद्ध बोन्छ जुन्ति सपस सम्बद्धाराहरू सुलसी १७१

(तारा = पृशा = —क्यद में डबी हुई

कादियों की बटमार होता

यहा क्यारी होता । प्रयोग -- अवद कृत्य कार्य अव कोबिल, स्पतिन की घटनाएं सुंध साथ- सुर ४३६३

कपरे छ।रना

4 17 6 4 M 4 C C C C 6 6 7 7

कपर से शंना

- (१)- प्राणिक धर्म संहोता, रामध्यक्ता होता। प्रधान ---एक दिन कपडो से सर्द तो पनि की आका में मधी बहेती को साम का राव में यह बद व सम्मन को नई (ऐम० साठ माठ ताठ, क
- (च) पहच्छा गंधाना ।

क्षमाय भारता

- (२) प्रश्नात करण प्रवास प्रश्नात प्रत्य प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्न प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात प्रश्नात

कराज किया कर देना

महर द्वापाला । प्रयोग ज्ञापन करना का हैन्स प्रशिक्त इ.स. १, ७२० अन्तरस्य की क्यान किया हर हो। इ.स. सुनीरी प्रश्चे

क्योज करियत होना

कारणिक होना । प्रयोग- इस स्थेक विश्वासी की केवण बचोल श्रमना कह वस बहा दवा ठीक नहीं निर्देश गुलावद १२६

कफन क्षेत्र भीर की बदाना

कृष्यु के जिल्हा होता । प्रथाय—प्रार्थियमें पट की अगह इस महा रचन कृष्य भागे तम जान की अग्रेपि के प्रकार को बोर के बहा (दय सम्बद्ध-सुरु 80, 86

कराहा करना

र्वाचनार कर जेना । प्रत्योक जाहे आधिक धोर राज-र्वाचन शॉक्नवर पर वस्त्रम करेगी - स्टारोकक हु० प्रत द०. ३६

(वर्षाः वृह्यः---क्रम्भा अमाना)

ब्रह्म में पाब का के लटकाना

रुव्या केलामें करना

इत्यापूर्वक । इस्रोत--विनय वर्धवीद दलिया काले इत्याप्त क्या विच अति पर नाम स्टू हैं (वृष्णी०--विस्ता ३०

काम करता

वस्तर का ननातानी करना। प्रयोग--नी कमा सन्द क्या हुंचा दीना है चन्तर सनद समद सम्हें (बीस०--र्न जें । २२९)

(-) भोड़ा का इस प्रकार कांग्रे ह्यालता कि सवार आ का न स्कर जात ।

क्षम्य कस्पतः वर्गधनः

। ता क विद्यालय नीमा प्रयोग—प्रति क्रिक्सीध हेर बहुमार जान क्षेत्र द्वाद र विश्व माने क्षेत्रण साल कुल्म व्याप क्ष्म है। जिल्लाम वस सामी हमार



(न) दृद्दना पूर्वक विशी काल को बानी को बन्नुन मोना । अवस्थ- मंग कील अवने को देस दिनी समाने हो अस काक को अस काक को काल कर काक असमें हो अस काक अपने यन और मान का विश्वक्ष काक अस काक उन्ने अस काक विश्वक्ष काक अस काक उन्ने अस का अस का विश्वक्ष का मान की मान का निव्यक्ष का मान की मान का मान की मान

कार जोस्तर

- (१) अपने दृष्ट निक्रमध की बदमना । स्थान—कर असर देश हिना रहें करते । यर भिट वर कमरे न हम आन भूमसेठ—शुरुप्रोध, ३७। (↑)
- (२) हिन्यत हारेना । देनिय समान १ के (^)
- (३) विकास करने को प्रश्नुत होना र
- (४) कमर-वद बॉलना ।

कमर भुकता

- (१) यक आमा, हार भागा । अयोग—नसमें सहस र्यात है असकार मही जैस बोचन का बोच्हा डोले हुए किसकी कबर तहीं स्वादी (बोनेक—नोक्रांक, २००)
- ६व) वृक्ष होता ।

कार हटना

- ()) नदा मृद्र होता ६ प्रयोग- होत तरेग इन उन्हें व घ १) मृद्धित है जल भन्न भट्टन स्थार तर नहसे हैं चैतने—अधन, १४०)
- () निश्वस्त होना, जासाहं का व होना । अभीन हुट म तर्रा पर नहां कोई हुट कर भी कमर स हुट करे न भूग o हारभीच 20)(:), यहर उसे दिन उसके

कार हुट नदी विक दिन के भी भदानत ने औं अं अ कही सन्दोर्ण पुनाही (कारा०---सह, प्या) (चं हो; सीर मेतके सहत ही स्थानन को नानी प्रतिकायक ही नष्ट प्राप्ट हो करों। संग्रेस की कमर हुट नहीं (मानक (क्)---प्रैनस्ट्रेस, १९९ (१)

- की नीर में कभी बाता । देखिए प्रयोग (२) में (क)
- (४) वेक्यूरण हो बानर। प्रयोग पूनवारी वर्षा क्यार में बावन केटी, तो उसे बालून हुआ रेनकी क्यार ट्रावधी है सामठ १ — देमकंद ब्रुड, विशे कर युग है इट क्या, कटि हुट मुकी, मुख ब्रुट मुके (मार्कत — युग, रेटर ट्रिक क्यांग (२) में (—१) भी

(समाक सुप्ताक-समाप बेटमा)

कमर दर्श होता.

इवेल पहला । क्योग-यी कार करी क्यो हती जही हैव के दव कुछ हती हुई (बील०-हरीक्षीय, 230)

केमरे हा करण

- (१) जनमा करना पीठ डॉबआ । प्रयोग---अवर्ध के ३६ पर्व में जनकी कथा टीक शिक्षित (पद्मक के एड---वद्मक जन्मी, १०१
- (२) दिगरत संघरतः

प्राप्त माहना

- (१) नियम्ब का रनः । अपाय-समिद्ध की चित्रा है। कापर क्या केरो है, जून या कार हमारों कवर बोड हेना है। गोदंध केमबद २०३०
- (र) बहुत वर्ग विगरित सनमा ।
- (३) नहारा बीन नेना (

कामन परिश्वना

काम के स्थला

कामर रहे जीनी

क्यर एक बाना । अधीय-पूकार पर दिन भर बैठे-बैठे क्या पह जाती है (मा क्यिक, १६५)

कबर मध्या करना

(१) बीहा विश्वास करता । प्रयोग—मोग बार-योक्ट कते अर्थ, तो ध्यानी दिल अर की क्यो-आदी सामन से एक शह का दुवहा विद्यावन कथा नीभी कम्म सभी अमान्य ३ अप्रैन्सद ११६ (२) मुकाबिन्स करने की प्रस्तुत होना । प्रमोश—बंदेश म काकर प्रेया में ३६कर वेंड सना । जबर बंग्यी कर की अवदर—नामार, ५४

कमर संदर्भ होना

विश्वास या राष्ट्रस विश्वती । प्रयोग---साथ पूरी हुई न राभ समा हो न संस्थी सम्बंद समर मेरी संस्थ--हर्ग ब्रोड. २३०

कार क्य दोला होता.

साहर सुरता । प्रशास-तो स्वर बन्द क्यो हुना दीचा है कब्नर साहर कारते बोलक- हरस्सीय २३९

कारता के बाहर पैर किकालता, फैलरना इको सामग्रे संजिपक कार वा क्या करता । इकार — उत्तर तथ क्या आकी कारतों ने बाहर चार कंसानों ' गैंडन पैसर्वेद क्षित्रेर, उसकी कहा करता हथाया क्या है । स्थित क्षानों के बाहर क्या निकासना भी भी उर्देशर मुद्दी मानक श्र —पैसर्वेद क्या

कारकी के बाहर पैर फैलाना के कारको के बाहर पैर निकालना

कामाई करना

महत्वपूर्ण वहम करता । प्रत्या---वहमं व गयी वया बसाई करके प्राप्ततुः है, यबके बारवा दह तो । बोनेक--टाठ राठ, ३३

कस्तामा

- (१) शरीन की सुरील बनाना । अयास-- समानका (कर्ण रस्यादि व शरीन का पूज क्याओं सामान-४० वर्णा, ५६
- () क्षर स्वर्धः को योग बोक्टर धुरोव काना । करतव उत्तरे होना

विषयीत मीत होता (प्रयोग —विष्यं करहर अन्ये सक बहु रामक च तुक्ता हुए .

प्रतासकात हाता

पा क्षेत्र क्षेत्र भन प्रकार मुख्य स्थित हैं इस्ति क्षेत्र कर के अस्ति क्षेत्र स्थित हैं चुनेकी भिन्न कर स्थापनका स्यापनका स्थापनका स्थाप

करना

- (१) विवास करना । अमान —तना मुम्क सी तुम्के देख-कर निशास होता है । यह इसकी वर्ग नहीं करता है (देवकीण —स० ११० ।)
- (+) अवंध समय रकता । प्रयोगः नेदी प्रश्नी पटने में एक-दो-नोन पार एक-दो-नोन-पार कर रही है॰॰॰॰ ॰ रम क्षणते आवा देश जार है कुल्लोo-निमाला, ४३

करम का देखा, को रेख

आरंग में जो हो। धर्माय सुर करच की रेख धिर्ट नहिं वहें कह को पर्वाई एक माठ सुर प्रवादको, सब क्या का मेंगा दोष की सा मान रकती क्यांकि कमें का विका कोई मेंट नहीं सकता हैमठ साठ---सठलाठ, दृष्ट

करण और देख

र काम का संख

करम की रेक वर मेल मारशा

बारत क किया का बरुवता। प्रधान—बनार में प्रश्यन बारा पर पना कींगे भूकित के बात में अध्यय होतेब की को आराज कहा, करना की क्या पर मेज बाद सका की बाद क्या करों—हरु प्रश्नित्ता, १४५

करम चक्काकर रोजा

भाग्य को रोप वंशा । प्रयोग (५० के लिए अपने क्षण प्रमुख्य हो ग्री है । सुद्धागर-१८० साठ, १६)

(नगान मुहान-करम की रोनर)

करम कुटका

भारत मंद होना । प्रयोग -- वस बात की बात में सभ ६ दरम पूर पर ,पैठ पोठ-पोठ माठ मिठ, १४६/, पहुरा ६ रम । परम भी मुटा, और हिला पीते सब परि तन करण मान्य ह

कायद बहरते भान कानक

बरण क्षांचा इत । २०० कीम राष्ट्र स्थानम् साही प्रश्तिक विकास के १०० विकास स्थित किसार, १०१

करच्य स्टब्स्स

ो। बेलानर हरता । प्राप्त हरती प्राप्त शहराताच् ही करवले कराव रहा था। स्थान, जैसल्लेट १९०



ter

(२) एक पश्च कोक्टर दूसरे का होता । प्रयोग-प्रदासी ने नियं करवट अदली बोनेध-संश्वास, ३१), पूरिका ने भगवट बदली अब गमन नक नीच नामा पूरण-भक्त, ६३, दुनिया में मो कई बार करवर बदली कहा- देश संश्व, घटने

(ममा= मुगा=-करपट संना)

करेला और बाम खदा होना

बहुत करू पा बुरा होतर। अपोक--रम प्रवार में करना कौर तीम पदा ही नहीं दरन् विधाय अपिता प्रश्वान प्रमें को सनपार्थी हुं भेरेल-चुकाक, 32,

कर्णपाल करना

मुनना । प्रभाव---युवनी के उत्तर वर करायान न कर. तम मोग माडी वर आ केंद्रे राधाल-- वर्ग सर हर

कर्णधार होता

मार्गेश्वरंक, मजालक होना । प्रयोग—प्रयोग कास्तर इकॉन सली इस मध्य के मुकलाय में, पर जूला हुआ भेद था कि प्रेमकका ही उसके कर्णवरद है औमारु प्रमुख्य 834

क्षशाधनरं शाना

मह म्यस्ति जिनके दुवस ने ही काम होता हो । प्रणान — दादी का नाम नेती हैं, कर्णा-कर्ण से यू हो है।' उन्ह तो धारतों में नहीं मुख्या जिलाए—कोशिक, ३१०)

कहं कारमा

कार्य पत्न से पूर्वित बना । प्रयोग —कामरनके करक हमारे कार्ट जानि औं कवार प्रशाल—क्वोर, १९१

करनंक कर दीका

श्चवदा । प्रयाम---दश्यत के विना देव कलत का शेवर बन जाता है (१४० (३)--प्रेमचदे,९३.

कर्लक का टाका लगाना, कर्लक बढ़ाना देना, संगाना

बारनाम करता प्रधास स्थल की गोहकार्गन मार्थन विक हमाज करण पर पर सूच मांच और हरेक्क्ष की न भागप दास्त्र कार्यका राज्य अं यूचकी भूषण ताल भाग जल्म मील अधान या कार्यकार अवस्थित सम्बद्धी क सिरमायहर प्रदेश करण किंगण मुंबिक्स प्रदेश भानं , इने० कश्चर - क्रमाव, भ्राः, पारिनी पुष्य में समा कर्मक कहर नया धार्ट हुए भ्रमान (वैदेही०—हर्दिशीध, १६); के नयाका कमक का टीका मोल टीका बहुत क्रमाते हैं भूभतेक—हर्द्धिध, १६४

कर्मक की कीटरी बनना यह होना

चीर बनक कर मानी होता । प्रधीम—सम विवर्गन द्वर बाहदू कोटू । श्रीक कलक दोठि वर्गन होतू (सम० ज्ञा, —सुन्तरी ४१६

कलक बढ्ना

बस्याम हातर । प्रशास-जन्न कमारः तुमती की श्रविष्टे केते एम मनाक्षेत्र सुरु साठ सूर, ४११०

(नगर वृहार - कर्मक का टीका समना) कर्मक

पृतवाः --स्यानाः।

कारंक कहाना

दर करके का टीका स्वताना

कर्मक द्वा

देव कर्णक कर टीका समाजा

कार्रक भौना

परकार को हुए बन्दा । यहांस- तेनी वो की एक प्राथा। वो कि पुण x x शान्त्रमूचि का उद्याद करके देश बनव का संस्थार स्कट्ट- स्थाद, सह

फलंक संगाना

रें- करके का डीका लगाना

सत्य अप्ता

कुछ प्राथम मिलना । प्रधान—गान भर कछ हमें नहीं कार्य से कमार्ट मुक्क पूर्व नेती (बोल०- ह्यांकोद, १४५)

कर का

कम पुराना कल्याम् वर्षायसम् । प्रयोग-व्यक्षी कल का नक्का यह क्या वाने कि पापपुर के असती वाकिकार कीन हैं (किससी प्रसाद, प्रश्); कल के सीक्ष्में ही. माहित्य का परिचास बाद की समग्रीने (सुकुलंध--निसास, क्या,

कल की बान होना

(१) बांद दिना पहने की ही बाब क्षेता । प्रशेव-

कारित की बात कालि की सूचि करि समृद्धि दिगा-दिग कोणि आगेके (गोसाठ हिंदु ---सूसकी, १३)

📵) बीली बात दीना ह

करते पुरासर किसी के यह को तब तनक है। फोर कर तपने का है कर तेना किसी के किस की किसी और केपना। असीत —-बाइ गूप्त कर से तो सामा बहुन्तकृषण निर्दे की कल धूमाने पहले में, यह बक्द कम से मिन्टर बनाई के सारव संस्थार में कोई बान इस्त न रचने भे साम हो—-प्रेमचंद्र

Bot

(भगत न्हात—काह ये ठका)

कल न पदनी

वैस स मिन्नतर । प्रयोग---जो क नामा यान करने दर भी सुख बच्चे की कल नहीं प्रश्नी मी (कडंठ---दैठ छठ, १७)

कल-पूजी जानना

पूरी विवर्तत था समोवृत्ति जानना । प्रयोग का उनके सजन्युरचे जुब सामते ये धीनाच-प्रेमकर, १००.

कर-मेहा होना

श्चान प्रता कार्यका होता । प्रयोग पर कर या प्रतान प्राप्त हमा मोह साह प्रदेश- जायसी क्षण

कर्ला उधाना —कुरुना

ता निका अग प्रवर्ग होना प्रयाद प्राई उपरि प्रीरंग करण का प्रेमी लोगों नाभी सुरु सर्व सुन प्रदेशक कर्म भूगों में पूरा प्रकेशी परमारमा है, यस ठीक परीका पर विभक्षी कर्मा स भूग जाय जभी के क्या आप (20 पीठ —प्रश्न मिठ, धरे), सभी भाषणी भी कर्मा क्यों कानी रेगाम व पंथाक नाजा है से इंपर पही नो में से हर्मा भी कि इनमी उस हो गई वह क्याणी की कर्मा है के अप क्याई स नो साम्छ १)—प्रेमचंद्र, २०४ क्यां स्वान नदा द्वार

कल्ड फ्रस्ता

देव करते उधरना

कर्ल्ड जारुवा

ম' ঘনত কৰে। এলাগ জীৰ কাম বুলী কুনীপাত ন বনী মটে কাই লাকত কৈ কামৰ পুলা ফাইচত ছঠিত তাম, মুহ্ন বুলিম মালকা এই জাহকী কৰাই আকুলিঃ কাইচৰ অম্ভাৱ ৭৪

कल्ला उठाना

निक्को का प्रयास करना, निक्का । ध्रमीय— ४ ४ इन्होंने वृद्धं स्वाकीय भाव से पायकीय निक्का पर कराय । स्वाकीय स्वाकीय भाव से पायकीय निक्का पर कराय । स्वाकीय स्वाकीय कराय । स्वाकीय स्वाकीय कराय स्वाकीय स्वाकीय से लिए जाई कोई कोई करायें विकायन दिया करे ४ ४ कीई उनके लिए जाई कार्य व उद्यावना (साठ सीठ—महाठ दिवेदी, १००), पैन नी साम्यान कीई वसट नम्बन्धी सेन सम्योधान पढ़ा तक वहि, उस पर कराय करों कर उद्यावन है मेरा कराय प्रमान है । सेन कराय से कर उद्याव है मेरा कराय प्रमान है । सेन कराय से कराय कराय है से कराय स्वाकीय से साम कराय स्वाकीय से सेन कराय स्वाकीय से साम कराय से साम कर

(नगः-पृताः--संचनी धराना)

करम का धर्मा

भग्छ नेजक । प्रयाम—यह तो कथम का धती था (कठ० -१०२०, १६६

कलम का सत्रदृष् 🕜

निवर्ते का पश्चा करतेवाना । प्रयोग---वे हु कारण का क्षत्रहुर ।बुद्धाः--वरचन,६७:

कलक की नांक

निवान्त्रही के कारण । अधीन-परात्रपूर कर्दर के इत हो वर्षपरियों ने विश्वतर कृतम की तरेक और मंडी क जोर ने वर्षासारी की रजा की (परतीय-रेण, १४

भनम गम प्रमा

इस्ते बना पूर्ण वार्ने जिल्ही जाती । यदोप—कलम जरा भी यजे पद जाय, तो भदन नापी आर्थ (मानंद्र (२)— प्रेमचंद्र, २३८)

कल्पा चिमना

(१) क्रांचन वाकारश किनने का काम । अयोग—यर यव नरनुम हो नय कि कल्य विसना और बात है, सनुष्य की नाही पहचानना और बात (शास्त्र (४)—प्रेमचंद, ५५)

(२) बरसार निगत चहुना ।

कारण जनगण

नियतः । प्रयोग--- भाग हमन सम्य म भ्रो साम् ती पर इतम बना दो - छार हुर- -बोध महह,१४९) तक किसारे सर्व हुँग मियां सहित कागज पर अपनी पांसल पता रहे ए (इंस्टा०--भग० दर्भा, २३), पर बद्धा पर कियो की भेजने का समयंद करने के लिए बलाब बसाना नहीं बाहना (पहन० ई पत्र--यहम० सर्मा ४)

कल्य चधना

कल्या जोड

संबोध भी-ज्यांच । प्रयोग---दम बटना पर कोई कविना भाग जबक्य निन्हें । कविना कन्नव ओड होनी काहिए ।भद्रमंत्र के प्रमुक्त पट्टमंत्र हामों, 25%

कारम सोप्रसर

जिसने की इंद कर देना, अनुधी उनित कहना । अयोग---भाषने कमम तोंच दी है, कमान किया है (स्ट्म० के फ्रा--पट्म० क्रमां, यद

करूम बन्द होता.

- (१) सिका जानर । प्रयोग—मेने गुण्या उठ कर उम मृत्य का वर्णन निका किसका संघोषन अप इम उपस्थान में कामम बारत है (वैशाले ० २) — मनुरण, ३१म)
- (२) पूरे पूरे निमकर । प्रयोग—करूक वर की कृते समग्रे (विकास पान)

कलम में जातू होता

प्रभावताओं नेवान होता | प्रयोग—मं गरे विष नतीश है, इसे प्रच्ये कवि है। वसे में दश है और कनम मं कासू (वैतरे—प्रदश्न, इश्वन, जिसकी कनम म पह चाडू है, अमकी बाजी में वया नगरकार न होगा (गाठ (२)— प्रमादि २४४)

भारत में जीर होता

स्थास्त रचना होता । प्रयोग---तुम्हरर कनव कें, तुम्हारं सब सार्थियों से प्रधिक बोर थाः (वेंसरे---क्षत्रके, द०

कतह पर पानी चित्रकता

कलह को सांत करना । प्रयोग-नृष वाहिए नरो को जो मनके उनकी नाकानी । रहे खीटया प्रमानक पारम्परिक कल्या पर परनी कृष्ण-दिनकर, ११६०

कलाई उत्तरका

क्साई की हरती जिसक हाती। अयोज नह उत्तर कथ क्या अनाह में ही क्याई उत्तर मई जिसकी बोलo— हरियोध १४०

करोजा उद्धारका

- (१) वर्षण्यस्य होतो । प्रयास---तो धारी वयो त हाव नक देवी हम प्रधानने हुए कांग्रजे पर (व्यवदेश---द्विकीध, १४४
- (२) नम्ब होता. इधिन होता। यमोग—जिम दशे में क्लक रहा है ग्या वधी कलशा न कुन उसे छन्छे (पोफी० —हिंजीके ६

कलेका उदा जाना

होग उस आना । प्रयोग—क्षणम् अस्तिकी उद्गा देशे को क्षणमा उदा नहीं मेरा जुमतिक—हरिजीय, १०५

कर्त्यका उग्रहा पहला

कर्तजा कंपाना

अवधीत करण्या । ययोग---(मदार देता शिर था यहार ते । क्या कनेवा दूव क्षेत्र शानमा (प्रियण-हरिझीध, १६३:

करेजा कवोरता

यह में करक होती । अयोग---वॉट पर चीट देखका जान है करूजा क्योटना मेरा बोल०--मृत्योध १८४०

कलेजा करना

- (१) बहुद दुःस वाला । प्रयोग —देशकर संदशा करेता वार्तर का फूटनी है साम सानी दूदनी (मृगसे० हारश्रीध ७६
- (२) अञ्चल प्रिय स्वनित से विद्योत होना ।

कलंबा करा करता

हिम्बत करना । प्रयोग—तुष अपने वक्षेत्र की कहा करो यह आधार १४इ सरना हो पहुंचा सी०—३० स०,१३७/

कलेजा कपाय होता

जी क्षत्र प्राप्ता बहुत हुन्हीहो काना । प्रथान—बहुत हुन्ही । कान प्रथाना, बलेका कराड हो बका - राधान प्रदार— राधान क्षत्र ६३६

करेता कांपना

भी दश्यामा, पर माना । प्रशेष—माने हो नव नवे बादन कापने वैदेशिक हरियोध १६६०, तथी ने शाय कर नाव मुनते ही मेरा करूमा बाद शहरता है (माना दे — प्रमुद्ध १८४०, तब हाई की प्रमुख्य साने की बादमा। साप से विजयमा कांग्रा काप उद्या स्टिसी निमाता, वर्ष

(पमान महान-क्रिक्स ब्रह्मानः)

कलेका काठ होता.

विश्वय हो आगा । प्रयोग---वाट वना स्था है औं की भी म वाट पत्ती - मर्सठ- हरिमीध इंडर

करता कदना

- (१) बहुत वृत्त देता । प्रमाध—पूर्ण पटा प्रमुखा विर्धि थे, गांतु ११६ कराते कमार्थित कृषः प्रमण्डाविक—स्त्राण देश्य १२) संबंध प्रित्त करत् में मेता । प्रपाय—अस्थ तो धार राष्ट्रम ही थे यह नार्थ प्राप्त करेता करते पासेक इरिम्लीच, ५७
- (३) नव रूपा ने तन्त्र ।

करेका कुरना

बहुत कृष्ण करना । प्रयोग-- जवनक क्रीयमी इसी भूतिन करनेना गुरुनी रहनी डॉडरु--स्थितीध ३०

क्षकेता काता

बहुत होंद करना । वर्णय—बाब है का रहा बनेशा का है करेका निना जिस काला बोनेश-हरिस्टेंड १६४

करेडा भिकामा

कल्या अवस्था

(र प्रस्तान प्रतासक्तर प्रस्तान क्षेत्रक प्रस्तान क्षेत्रक स्थापन क्षेत्रक स्थापन क्षेत्रक स्थापन क्षेत्रक स्थापन क्षेत्रक स्थापन क्षेत्रक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स

ি মালে মূল লগাই

फलका साहना

(२) क्य कारों ने, ब्राटिनना में । समान-पितन नाम कारक कामकर उठाका मधाते हैं भारतेक रीम् ५०°

(३) वन की बात करनी ।

करेता कमर्श या क्रम्मी बना देना

, नवा - मृहा ----करोज्ञा श्रामनी या ग्रामनी करना)

करेडा बनना हो होता

विनी के हाको कप्ट पानं-पानं प्रापतः हुन्ती ही जाना । प्रमाण-पृत्रांत नाम कहता हुं विनादणी के अन्याय में कार्यमा क्यांत हो नाम है । मानक हुं। -प्रेमचाद, १५५

वालेका विकास

ती को कहत कर होता। इसोध---वाक दिल ती है करूत किर रहे कुमलैठ- हाव्योध, यक

कमोजा विक्रमा

इस्य को वर्गकारक समाग्रा प्रयोग-विश्वका गरी समाग्रा प्रको कृत हिला वेदैहरू दुविश्वीय, १६७ १ वका वृत्तीक-करेडला सेंद्रका,-विश्वका)

करेका क्रांदा करना

क्लोन्यार होना था अपन को पुष्पद निर्वात में पासर दुखी होना । उपाय-न्याद बमा है मातारी किस बात में कम है, कमदे । क्लोका जत छोड़ा कमी कोई (पातीक- रेणू, २८६

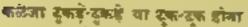
कराजा जलना

्ष ता । प्रशास क्ष्मण प्रशास करता करता है इसर है सार है का सीमण होंगीय १८% प्राप्त पंजा न स्था सामण के राजा हमन होता ।

Red the stat trat grat

कलेका तरावा

दम इसार कात क्या अन्त रोक जन्मनुष्टा राहे टेक्टबा जन्म कर दशा सहस्ट हा स्टेट, ६



कलेजा द्रश्ना

- (१) दिष्मस पास हार्ना । प्रवाग—हाब की पूजी क्या पड़ दूर में है कलवा दूरता किसका वही ।पोलै०— हरिक्रीय, १८, (⊕)
- (२) हुन्य के कूप-कूर हो जाना । प्रशंत—कोई प्राणी कब नक भवा थि-न होना रहमा उन्तिम अन् क्य क क्यों भाग दूरा कलका (प्रिमण—हरिऔध, २६२), देखिल प्रयोग (१) कें (→) भी
- (३) कथानीय ही जरना । प्रधीप—धानी कह बीम करन करने नायक है । इसी उधिर में समूची करने नगना, तो क्षेत्रा हुट प्रथमना (१०० (३)—प्रेमघट, १०६)

कलेजा देश करना

रोतीय देता.—तुर्द कामा धा होता । अधीय—काम ! पुक्त में ताकत होती कि मैं उस क्वत तुम से मीन सकता और मुम्हारे वास आकर तुम्हे तोर में सकर बसेवा रूखा कारता ,युठ निय—कोठ सुठगुठ, २५०

्मयाः मृहः - कर्णाला देवा पदना, होना)

कलेला बोलना

मन म नुख अन्य जिलार इंडला पन अस्तिर हाला प्रधान —जाति-असा को शताई मृत्या का कलेका होना प्रोही०—निक्ता, १२३)

करिजा तोड़ तोड़ कर कमाका

अधी महत्रत स अभवतः। अधित ७२-४०। प्रयोगः रहणान स कलाभा सरहकार पिहत्यत्र को सामान ३ प्रसावद १६०

करें जा भाग कर रह जाता

योक के वंग को स्वायर रह दाना, सब समील का उह बारा। प्रकार---वंश वह वादि की बड़ी जुबुकी रह वर्षे बाम कर कलवाहर म्युक्ति---कृत्योध, ७३

(नमः) पुरान-कन्तेज्ञा साम्र कर बैठना)

करंद्रजा यास का होता

वहन दू व करके रोजा । प्रवाग—देखकर के सिरवरी का विर विरा है करका बाब कर हम हो रहे (बूभते०— (विराधि, ११६)

वतंत्रा धार लेवा

- (१) दिन कहा कामा । प्रयोग—बाम कलमा बार-बार कंग मन को सम्भाक मी विदेशीय—हर्ग प्रीच, ५६७ (÷)
- (२) विभी प्रकार विश्वति को प्रज्ञाता । प्रज्ञात-देखित प्रवोध-(१) के १०३
- (३) कानम होता । प्रवास--प्रमान क्लेजा बाम सिया---मनक का रहे है जाति । दिन प्रमोन नहां कार्य---प्रेमकंट ९३० कीन कारमा नारी कलका कार्नों को कर नार्वे । तम्मी हरियोध १२७

कतांत्रा द्वकतः

बनको बहुन कर्य होना। प्रधोग-वर्णाब ३५३ बृति हुक्य कहोण (११२० 'मा-स्तारी, ३९०

कत्रज्ञा दहकता

हरम कोश ने भर बातर । प्रयोग—हिल् कृतक्यान स्थितो के भी कवाने सहय हुई सांसीठ-वृष्ठ गंभी, २७२,

कमेजा हुना होना

भीर क्रमान पाना । प्रयोग-व्यक्तिया का क्रमण दूरा ही स्था (गीरान-पंतपद, १५

कतंत्राधक्षधक् काना "

वी में प्रवस्तहर होनी। प्रयोध न्दर्श में वशा करीया शक्य-वरण कर रहा है ठंठ०ल-हरिऔध छ≱., रहा का कर्मा ध्रम-वर्ष करने नमा गयने—प्रेमचंद, २११

कतेजा धक् से हो जागा

हर से सहय राजा । हजाग—बाबू रामनाय का कलजा कह में हुआ निमाण—कीरेंडक, 16.

करीता घटकता, धमकता

- (२) प्रथमीय ही इस्ता । इसीम —हा के बारे धनाना भारकने जना है। मुग्रठ—्या तको ३५१ कना का करेता भारता भोटी निगाला का
- (२) विका का बतका होता। करोत--वार्क की देश वैद्याक आने हैं करोता बरुव राग केंग्र कुमते०--वृद्धि और 192

(गमा० गमा० - कलिया वहत्य उटना, - धकुर-पृष्ट्रने करमर)

करोजा धमका

कार्यक्रियम्बर्गाः

कलेजा निकलना

- (१) बक्त धूम जीनर । प्रतीय —काणिका देश देशनेकालर क्रिक्तिमा विकास क्या पेशा अभव्यक्ति—हारियाचा का
- (२) बहुत दिय भी ह बर फर्नी जातर ।
- (३) वहुछ परिचल का बच्ट होना ।

कर्तन्त्रा निकास कर राजना

धारमान्य विश्व प्रस्तु का समावेशा कामा । प्रयोग-- निय करिता निकास देशे भी के क्लेका ककी कामा ग्रहा 'प्रसारिक- मुस्सिक्षित ११८६

क्षतंत्रज्ञा स्थला

मन की पीड़ा होनी। वयोग-है कमेशा नव रहत वेचेन हाही के हैं पोगर जिए जिए नके पुनर्तक हरियोध देवत. सार का बेचा मी कमेशा स्वा कामा है सा -वर्षिक, पठ

करिजा पक जाता

दूध गोर्स नवने नन या माना । छत्रोम—वर कव कवा पुर साम देखी हो उनका प्रकेश पुर बना पुर जिल-बोध मुंट गुंठ प्रभूष

करेता यकत्ता

(हे दोन करना ३ ए कस्तर घरण कार न प्रस्तु है सर क्या कर राज्य पत्र जिस्ता कर क्या प्रस्ति है। होरक्षीय १८६

fut fanfin eine, fat ein mar

फैलका प्रधा का क्राका

भार्य तुम्ब सङ्कला पैनाम प्रमाण को प्रश्चान गर प्रकार क्षेत्रक सम्बद्धान स्थाप एक का का स्वस्ता है। स्व हे राधार प्रशास-राधार दात. ५६६६, यह, सुमने अन परचर का क्रिया करेता असली भरता के पास आगर ने मेना सहस्य नंदेशकर, २०२

कतंत्रत प्रत्या का होना

बहुन कडोर-हृदय होया । प्रयोध —रानी मैं जानी अवानी प्रशः परि पारनह न बडोर वियो है (कविष्--सुक्षमी) हैके । पारनाम की जीवनी का कनवा जममून गम्बद का होता है हैंग0 १) -फेमचंट हैंदेश

श्रन्तका चन्ताकर्ता

बारका होती । अयोग-किस शरह तब पत्रीजना कोई इक बावेशर नहीं वर्गाना हो 'सोमेश-सुरियोध, धुक

नकः नटाः--कनेजा कवी होना)

करोजा पूर्वांका के पत्ता बरावर होता

वयकोर दिन होता। प्रयोग-स्थानको के बाप की तो शक्ती ही हो र अवलेका दो पृदीक्ष के पता के बरावर है अक्तीर-संपूर्णक्ष

करेका करना या करा अन्त

- (१) यन भी बहुद राष्ट्र होना । प्रयोग—म अपने क्यों राजा शेनपर नेपर करारा फ्या कामा है भारत प्रयोग (१)— मतन्त्र ३१०१. उस्ती बरायों के बीम बामी में क्रमेश पटा गाना है अध्यादक्षांत—सद्याद देशा, भूपदा, विवास मान् राज्य बांगय पार्थ-पार्थ फिराने हैं, बेलबार क्षमार कर माना है फिलाव - फेसबट, २३६, जूट बाग कर मान की है जूट रहें यूट देश है बांगा घट रहा (ब्रम्हेल—हरियोध, १०६)
- (२) विकी से दुर्ध्वतराय में यन का अवकी और में सिम्ब रोजनता ।
- (३) ईप्पी शती ।

क्लेजा कारना

हार देन प्रतिक प्रकार कर में पहलते और या प्रतिक में को को कोलाव स्थितीय १२२ हमी तथा के क्या पनवसाला का स्थान पात स्ट्री की स्मार्कताला अस्त

करीका फ्रेंक्स

रशे राज्यात दाव भारति को शिक्त है जिससे इ.स. व.स. वीट सावस्था रहक



कलेका फूल बढना

भरधमा धनान होना । धरोग - फूट मृज्यो फाई कियी कवि के है करूजा न कुमना किसका ,बोस०-इनक्षीध, ब.

कतेला बड़ा होता

वदार मुख्ये । प्रयाग—बहुन बहा कचना चाहिए किसी का करने का सम्यान - दुद्द०—बस्बन, १०५

शलेजा वढ़ जाना

बन्साह तीर्मा । प्रयोग—न्दर गर्द बाब भिन्न दबा चन्न बह । बद्र गर्द बह नदा कलेका है (बॉम०—हर्रिकींड, इय

कलंतर बॉल्यपो उछलना, बामी उछल्ला, हाछो

भारत्य से जिल प्रकृत्य होता, मय या भारत्य है जी भक्-धन् करमा। प्रयोग---नो यात अवात्य, अध्यत्यत साभात् व्यवस्थात है जी मुधने दान मार्ग और उन मंदिर से मंदिर की मार्थ है नाम उनके नेत्रंग जो नाम जिल्ली समी से मार्थ के नाम जो नाम जिल्ली समी से मार्थ में पर्मा से मार्थ में पर्मा के मार्थ से मार्थ में पर्मा के मार्थ में पर्मा मार्थ में मार्थ मार्थ में मार्थ में मार्थ मार्थ में मार्थ मार्थ में मार्थ मार्थ में मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ में मार्थ मार्

कलेका बांग्रा उछलना

रे॰ कलेजा बन्तिस्याँ उस्तरना

कानेजा विद्धा देगा

सहभाता करना वा स्थान करना । अवस्थ--विन नगर कारा विका विकास हुआ निव न गरा व किया का नहा (समके०--सुनिकीओ, १४४)

कलेला बेठा जाना

- (१) बहुत धवशहर होती । प्रयोग—नैठ वृत्र से दिन समझ कोई शके जब कलेको वा एहा हो बैठता ,बोलo—हर्मकोध, १५४)
- (२) बोक का कम होना।

कलेजर मलना

, क्या । *प्रमान विशेष* । कलेला **प्रमा**ना ।

कलज्ञा भगकना

मन में सत्यन क्ष्य होता | प्रयोत—सं-हरह घर गये पनामा में है कलावर मनक पत्रक धाना (बोल०---वर्धकोड़ १८%)

कर्मका असीम का रह जाना

मन के दूस को बन में ही दवाकर गह जाना । अयोग---रनानाव कर कमेजा जनोब सहा (गबन-केंग्संट, ३३)

कलेजा मुँद को यह मेह सक आजा

- (१) की चवराना, अनाय होना । प्रयोग—वधनी स्थया राम अस, अस राम प्रमान असर राम विदेशक नुस्त औध, करें? या करों, या और कुछ न कहें यह कस्या क्या नहीं मुनी जाती । याच्या मू ह की खाना है (१४० (३)—देनचंद, रूप), नाम बैटे हैं भी राविय की पेर भी बाहद बाबी कर्माम मूद की जाना न्यूक क्या —गूरीहि, १०); मेर देसले-वस्त नादीय किया बहन नवा, यह बोच कर करेंगा मू ह की धारा है करक- दैठ सत ३३
- (२) जुनो होती । अधीय-श्य तम काती की मृतकर क्या कारणा जुँह की वाने नवा (मैली-स्वयुर्क, ३२१

कलेशा सुन्यवरा

(२) योग होता । यनोम-न्यारी इस बात के रात दिन ग्रहा कलता कुलता रहता है जिल्ला असैताक, ॥३, (+) (२) यस में कर्ट हिंगा । प्रयोग-न्यां विश्व कीन क्य बसा प्रके । है कलता मुख्य रहा विश्वका , बोले०--हरियोध, १) हथिए प्रयोग (३) न (+) मी

कलंका मुख्याना

बहुत बनामा, क्यर देना । प्रयोग---बृहत हो गई गुभवते ही अब क्लेजा म आप गुलमावा चुभते०--हरिसीध, १११

करोजा हाथी उदालना

रेन कलेला बॉन्सबॉ उखलमा

कलेका हिल्ला

- (+) अध्यस्त वय होना । अयोग--शव विधे जो अध-(यहान हो कुम्स कमेता हिमता (वर्षण--हरिजीय,0)
- (२) वहत दुःच होना । वर्षाय —वहीं आपकी मृत्यु दुई । इस अवन ने कलेश दिना दिना 'गूठ, निठ--बाठ मृठ पूठ ३५ वंतरह रानि की यह जिल रही है कहा हैरा

क्षणेका दिल पहा (क्षोश)- हरिकोध १५%), क्यान का साम मृत कर सुन्येयना का क्षेत्रण किया गया ^{स्था}ा कोशिक ९०

कार्रेजर होना

हिन्दत होती । प्रशंत—प्रव सेवी हरियर वी ती हम वी शाकास पर दिया जमाने वे पर शव वह करेनेर वहा के लाहे ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, १००): शास्त्रे वहवू बहन्द की समस्ता का। है ? इस शास्त्रे का घाटमी इस जिसे वे नारे सिद्दा नार निर्मा १४

- (६) बदा करना दादि का भाग डीमा, महत्त्व डीमा । धरोग---पास जिनके बतो क्षमता है बांटवर क्षेत्र को ब्रह्मत है चुनलेट तुरिजीय, १६%
- (३) अध्यक्त प्रिय होना ।

करंती का अपना जिल्ला

भीत कालमा होती । प्रयोग नवेरों तो करोब के काले विसे हुए हैं व्यूट०—अब सार कर

कलेते का एकड़ा

(सरा) मुहार —कलंदी की कार)

कर्तिने का देवतान्द्रकता करना

कहुत हुन्त देना । प्रयोग--कर न दे ट्रकड़े कर्मके के बही है जिसे दुन्दार करेंगे का बाहा परेसंक--हरिक्षीध, १९४. कर । ११ - ज कराज र रहार पद्द-ता देव वह अपना परिक्र निरम्भ १६६

कलते पर शाम होता

क्षत को प्रोत्तर प्रज्ञाननी विकास विकास का का प्रत्य प्रश् क्षस प्रदर्भ कार्य कार्य है है प्रश्चिक कीठ काल १३५

कता है पर भार कमना

स सर था प्रश्वना र उपना तर्गन व प्राचयं सद्दारो स सीर उत्तय जिन्हें केट चरनार देख कर चीट द्वनरह चलको नोट है जगाप्टी कलतागर चुक्तीय व्हरिकीस ७३ (नवर० महा० — कहोजे धर चोद सामर)

कलेजे पा सामा

पुरा क्षमर होना । प्रयोक---तथा व नीव परीति की, उड़ी चनेके साह कवीर एकार--कवीर, प्र

करोड़े पर सूर्ग जलना

रेन वा बार्नाको का महता बसर होना। प्रधीय —है कोहिनी रेजने ही करेने पर खरी पन बानी है सान० ३:--केमचेट ५४

करेडे एर छूरी कमाना

बन्द देना। प्रणीत—बाब नी तुन पहा से न भान पालोबी सूनी पानी रोक क्षेत्र करेने पर खुरी बमा कर भान प्रानी की, शांक नेर तक के न बनावी गोदान -फंक्सीट, श्रद

(समा+ महा--कतंत्रजे पर खुरी फेरमा)

कता हो पर धन्धार को विस्त समाना प्रश्वेष समाना इस बहुन कठोर बनना । स्थान—में नी बाहे करेने पर पत्थर को सिम सम कर बैठा भी रहता, पर सुमारी पाणी को क्षेत्र समझात है (येमाठ ग्रेमचंद, प्रश् अनको केने मित्रता बहुन पूरानी है और यह मुख्य भाइपी को तरह स्वह करने हे पर मैं उन्हें छोड़ हूंगा । हा कोई द्वा, बाहे अनक पर प्रावर ही स्थान धन पहन प्रशान पहनव सनी श्राप्ता, मो न स्वान काल पर क्रम्य बान प्रयोग कार नहीं नानी मुख्ये —हिंग्योध.

करंत्री पर प्रश्वार रखना देश करोत्री पर प्रश्वार की मिल रखना

कराजे का विज्ञानी किरवा

नहरी बोट पहुचना। प्रशेष—किविषय विश्वेष पर विदे इन नरह भीड़ कोई क्यों बल 'बोलक—हरिजीक्ष, ३०)

कते हैं पर भाव जोरता

विभिन्ने कियो बाल का स्थारण को बात से पर, हारण) अर्थ को साम क्षा काला क्षाया है। है। इस हुँदेव को साम क्षा कोशता है। ब्रियेश है कियोध प्रक किन के सामप्रकान शरक तम ने प्रस्त है के स्पाद सोक और लोफ ने सक तो तमार कोल का साम सोक्स सरका है (मान० (४--प्रेंगपेट, २००)

करित्रे पर सित्र रख कर, दाश रख कर

अत्यन्तः कडीर वनकर । प्रधीय—सबोः कर्नातं कर निव रशं कर अव रोतितास्य की विका करी (साठ द्वांशाः)— भारतेन्द्र ३१६): वर्षय अपने बनेयरम संवाप दुल्ला शही दय मार्थ कर बलावे पर हाक विकाद सेता है (की०- सठ साठ, १४२

कतेत्रे पर हाथ रख कर

- (१) चरने दिन कें। प्रयोग—मध्य यस १व गयी यह को । हाथ रता कर कहें कलके यह चुनरी०—हरिजीव, ९८)
- (१) है। कलेजे पर मित्र रख कर

फलेजे पर हाथ रहानः

- (१) माने दिल से पूपना । बनीय—बात वह पृथ्या भगर होने पूरियं हाथ रक क्लेजे वर केला—हरिकोड, १८६।
- (२) होंदे दिश के मीचना ।

कलेते में भाग लगना या लगाना

- (१) कप्ट हीना या देशा। इक्षान-भाग क्या ३८ने कनेशे में लगे साल में विजयारिका बढ़ती गहा। देश उसका भी प्रशास अनदा की तो तथी को बादनी की वह ,योगेक क्यारिकोध १२०।
- (२) ईप्टॉ होन्टि । प्रयोग—बेनरह तम भून लगाई नान से नयों करेजे में लगाने जात हम (मोस०—हर्रिजीय, १८८,
- (६) प्रेय जागरित होना या करना । ४०१०--- वर्ड स्राणि कर शर्व आणि केन साई मुन्ति । रहीन कविक---रहीम, ४२१

कलेते हैं उत्तरमा

मन को प्रशासित करना । प्रकोश---कण्ड-स्वर भी इतका मधुर है कि उनके दश काता को तरह भी के करने में उत्तर भाते हैं (भानव (8)---क्रेनवद, ध)

करेजे में करक होगा,—कांज बाउकना

ह्रदय में पीड़ा होती । प्रयोग—हरिश्य में कर बेर्धिया, मत्त्रपुष्ट भी गत्ति नाहि वापी बीट सरीर में बटक करेने म^{्दि} ककीर प्रेयाठ नकती। ६३ मिरे कारबे में पही सोटा सहसा करता है (सिमाठ—कोश्विक, हुठ)

करोजे में काटा साकता रे॰ करोजे में करक होता

करोड़े में करकता

हुरव को क्या देशा। जनाग-कंपन मेटा पर जराज परवक तक कुजन की वेजें ने करने वारक्षित है ,क्या to ---सेट पति, प्रका

्ममा भूगाः कतिते में फारकता, कीचना)

करेते में गांह एडना

मन्द्रिमानित्व होना । प्रयोग-स्वत नके सांड हम कहा वत-रुव, पर गई गांड का समेजे में (बोसे०-हरिसी४, इ. ९

करोते में याच करता।—शुक्त कृतिः

धन्यस्य दु व हरेना । घषीय-विरह सुववस देति करि रिया करूने पाप अवार संधाठ-क्योर, वृद्ध स्ववह भारता वेशि करि, तम वै यहि शांता । मानी घोट सराम की यहि करूना क्योग् ,क्योर संधाठ-क्योर, यः), विरू विश् गृज्य करेणका, सब्दि मूच कृत (रहीस कदिठ-रहीस १०) किर को स्वरू की बाल उसके करेने में पाय कर्य गर्दे क्रियानक की बाल उसके करेने में पाय कर्य गर्दे

(तमार प्रार—कलेके में काटे का ज्याना, - तीर सा क्याना, - कला सा जुलना)

करेजे में जा है पहला

यवित्र की ता होती । प्रयोग---देविये बाव या वर्णने में वर्ष वर्ष कुछ सबीय द्वाले हैं (वृधदेव--हिंगोध, है,

कलेके में छेक पहना

जनकरण पर नहार जमान जानना । प्रयोध—सलपुर बादा मूर्विको, सबद में बाह्या एक जानति ही में में निर्देश करा, परवा बलावे होक (करोर संद्रांठ—कवीर, 42)

कलेजे में छेद करना

बहुन की दुष्पाना । पक्षेत्र--कशो कमल नवन की वॉत्रण हिहिन हिहिन कानि करें हैं (हिन्दीक--सूर, ४४६४), बान के केंद्र होट कर के क्यों केंद्र करदे कियी कले हैं में (क्येंसें) --हिंद सीध क्षेत्र



करेडे में उंडक परना

करेड़े में हेम लग ग

मन की पीका पर्वचनी। मधीन—जो कनेका है पनप जाना नहीं देस नक्की के कनेजे में नके चुनतेठ-हाँ और १५६

फलेजी में पेटना

- (१) विद्रशास स्थाना अभाग काम ग । स्थोप---विश् वासेने से विश्वासी पैठला (वासी - स्थिती वास
- (२ किमी का घेट नेकके कि उपन मेल-केण नवाना ।
 (सपा॰ नृहा॰—कालिके में चुन्तना)

करिके में बिटाना

द्राप्त करभग हर समय सम से रजनगर। प्रतीत—नगर देश कारती पट्टी जी शाहता है कि कंदद में किया जो नगरन - क्षेत्रभट ५०

करेशी है स्वाम

विम होतर हं प्रयोग—क्या हुआ प्रशासने से पण औ - ही है जिसान भेजें में के रक्ष आप कार्रिकों में जी जो नमें हैं क्लंबलों में संभ0—हिंगीध उद्य

कलिते में शुख कारण

रे॰ वसेले में पाय करना

करोते है भूरे बुभना या बुभारत

ममानव नीवा होती या देशा । प्रयोग—वेटियो की बच बेनो की मन। बचा कथार में नहीं बुभनो हुई। बुभना— हाँ भीधा १६३ : वो बुधा करके जुआत है नहीं करों बुआत है कमने में सुई डोल-- हाँ भीधा, १८५

करितेषाचा अन्दर्भाः

िष्यतः वाला बाजी। प्रणा स्थितस्यत्वस्य स्व भाष्य और वस्त्रत्व वाल्यः, स्व स्था स्वयः स्था तस्त्री वस्त्रका अध्योद्धः स्थाना सनुष्ट स्वतः

करेजें से समाना

र सम्बन्ध दिया स्थापन सद्य पाण स्थापन । द्वारा स्वापनिक पालक सन्तान अप्य का कोट वृद्धि अपने मृजाई का सका । सोक-हिन-चजरा सकत-कूमां बना है रखा किम ने कवेजे के नमा (कोसे०--हाँ और, घः

(३) बार्रनगर करका । अयोग---दुश कलेश गया शिन्हें देखे कारे सगरवं उन्हें कलेशेश (च.स०--स्थिओध ५०)

व त्याभर भाग

कुट ही अला । अधीय-साधिक विवासीने मुक्त होतर बावक करने घर नये हैं ,पेटारे-परक, १४३

ककानकरा में होता

- (१) द्वित में होना 1 व शेव—हुछ देर कंपमका में गई (बंटोक—निरक्षा, १८)
- (२) और होनी ।

कम है।इन्ह

नम में रजना प्रचीन रजना। प्रचीन —मन हमारा रहा नहीं गत में कीर कम में प्रचीनहां कारा है रहें → [र्गिचंद, थर

(नगर- नृप्रान-कलमें करना,--रखता या होता,

इस हेना

कमी करना । वधीय-अन्य नरकार क्षीत्र-कात, वनत-प्रथ के किय कुर दें है है और कुछ तील में भी कछ किया वासर है मेरेंट गुरु रहा पर

क पना

- (१) मीन भी कर्यादी पर रमद कर आप करना । प्रशीस — के बन औ कमिने के माना । सब क्यांनस दहूं पीत की राजा परंक- कार्यासी १९५।
- (२) मुन भाग प्राच करके शाम क्षेत्र करना ।

क्यम द्याना

भाग लग धाला करते प्रधान असार सामाही ना समसीई मन नाना भीई होत म तैम ए तुम मीई कत नात (किएनो धाना— किएनो २५००३ अकावन मोहत हुटी नीति पर रिवारित हम धा ते के वा दिस गरी कि ज कुण्डल में धारास ६ के दस नात क विकास सामाह कि जा का ते ना तत्तर असार का जाना करता का का जाना करता सामाह कर प्रधान हो दस भूग ह

(वसर कृतक - इत्यस हेता



धानव कान्द्रजा

(१) बदला ले १। प्रयोग—बान में बेनगह विवह काके रिया नगम की कमर गई काई। (भासंक मृतिक्रीय, १५०) (२) करियृति करना।

फरूर सं'ता

गुनमान उठाना । प्रयोग---दम्ब निकट झीन चीर गियना कोई ऐसी चीन है भी दन पाय की की कमर कार्य से बाला में हाम बार सकी है (प्रशिक्ष0 --ब्रीट दास, रूप-प्र

(तमा० मुधा०- करपर सहना)

कारर न उठा रखना

भोर्व भारत बाकी न खोडना । जनोग---वर्ष वेजनाथ ने इत्योद दिस्मत बंधाने में कमर नहीं स्थ्यी (प्रोक्का)---भीज्यास, ११६

कसर विकासना

बरमा सेना, नामी पुरी करना । अभोग---हम बाहत है भारत की कर्तक निकासना मगर हमारे औ की कबर निकान भी नहीं निकामिड , मुसरीक (मृ.---हाँ और भ

करतर रहता

िती साथ से कुछ कभी रहतर। प्रयोग-स्था करणे कुटी प्रकार न तक अब रहेती करार भरी कार्त कराय-हरिक्रीय, पर.

(समार्थ मृहर-कर्यन होनी)

कदर हम तर

क्ष्म्यालय पहली

कष्ट होता, भन्नी होती । अमोन-मी न कल मिन पड़ी कमाने ग्रह । भिन्न गर्ने गांव कोल काले पन (गुनरीय---शृदिशोध, 88)

कर्मोदी पर कसना, --सीनगर

मृत स्थानकीन करना, भनी प्रकार जीन करना । प्रयोग—— सर आवश्य बदाय प्रेम कमोटी कति किन्नि । स्वयुक्त धन विश्ववाद मिन्नी प्रिया प्रति व्याप भी सूच माठ—सूर, उक्षप्रका, प्रार्थित पुरस्ति कार्य किन्नि भी नह बसीको किन्नि के क्ये जाने के उपरास्त ही भाटक प्रकाशित किये जाने हैं। मी 'क- खारक सम्बद्ध १५९)

कर्माक्षे पा जीवना के कमीडा पर कमना

कमीटी होता

नोच को माप क्ष्य होना । प्रयोग—कीन प्राकृत वहने की भीर कीर वीक्ष की यह बात जरभने की समझी कभी है क्य क्षेत्रों की तुलना ही है साठ सीठ—महाठ दिवंदी, २०)

कह आवर

वहते वनका । क्योम---नृष वन्तीन सबै जानत ही जाते. यह कहि वार्ड स्मृत् धार-सुर, प्रश्नप्त

करकहा उसती.—पहना,—आपना,—स्यामा ११३ मान व इंपना । प्रवास—वाणे तरक कारहे एउने सम (मानव !) और घट २०६ , मेहनाने कहनहा प्राण्य-नहीं, वे दुश्य-वार्यकर भी बाग ही वे बीजू मा (मीदाम---प्रेनवंद, १६०), इस पर शोकाववाने में जुण कहनहे जरते सामव (१ --प्रेनवंद १०६), इस पर बीजत ने कहनही

करकरा पहना १० कहना, इंडिंग

शहकता बार कर डेमना

बुब ओरों से हमना। घरीय —नव कैया कहनहै नार मार हवा काने में भीर विना काग्छ हुनी आती भी काठ हुठ—बाठ सड़ ४०)

क्ट्रकहा सारता देश कहकटा देहता

कदकहा समाना

देश कहकहा उड़ना

(अवात वृहात-कहरूदा समापत हमना)

बहुते व आता, — व एड्का, — व बनना बहुदे दोना, बनवनीय होना । अयोग — कहै कवार कार् बहुत व बार्ड परचे निना धरम की पार्ड (कवोर प्र धा० — बचीर, १६३ , बहि व बाइ कार्ड कार्य विमृती चनु एतीनश बिरुटि करन्तर (पाय० प्रदी) — कुलसी, ३७२८ व्युक्त सरस सोनी शनित एंगोरी मृत्त, सोवन फनन करी हैं कही न परति है (सन कवित-धनाय, १८४) कहते सं एक्ना केट कहने न धारना

कश्तिन बनना देश कश्तिन भागर

कार्ज असकाजी कहता

ऐसी बार्स भी बहुना जिल्ला कहना उत्तित नहीं। प्रयोग-आज पहां अरचे तो प्रथमों और क्लोज्यन की मैक्ट्रों कहनी न कहनी बुना गए प्लोब ० - सं.ब्हास, ११८

कारते पर सराजा

वहा मानना । प्रयोग-न्यो अहि स्थित् वर्ष इमारे । अहि लागिहि कम् हाव कुन्हते (समय अयो - पुनती,

(अक्षत्र मुहार-कामे पर बक्तनाः)

कहर गिरमा,-वहमा

बहा पर कर का जाता । ६ ति - जुल का करा संत्राही ही यह गिरता है जिये हैं - क्षेत्रबंद, ११९); हो से की का, बागावर ही यह दहा कहर (सीध - क्षेत्रबंद २६९) [समाद मुदाय-- कहर दें, जां, - यह ना)

सत्त्व दृष्ट्या वेश सहय शिक्षा

कहर धरमना या संस्थाना

यहा-मुती होता

€सुरती महता

मृत्री बहानी कराया । धरोग । धनन कार यह है कि अपनी ने दक्षिण स सामार बापनी कीन जमाई कोर इसे दीन करने के लिए सामन जीए पटडावित की कटानी एक नहें सुधारम-नेदेश संग्राहरू देश के विशा पर करना है। विश्व समला थी. इसी ने जब यह उसे यमुण के अम्बीर क्षण में विश्वित करके सीटा तब उसके जान्य मीन में सिती अर्थ-व्यक्त का सनुमान कर रिवस ने एक अपने की कथा कि श्रामीं (क्षणीतक-न्यहादेवी, १०८)। यह वच्या सैसी मुनी देशी किया की है। यानूम नहीं कि यह मही थी या नक्सा भी ने बादसाह की हिंदु में के वर्ष की तरफ क्षण हुता देश कर रहा युवांक हाने के बारते नह भी भी पुलेशी प्रसार (१)--मुनेशी, २५३

कहाती बादवा

वर्षा होती, बराबर मारण विकासमा । अयोग -- वर्ष है पूर्व अक्ट कि कानी । आ की बन में कने कहानी मूठ साठ-- सुर ३३६ हेन-चेच कृति जुरबूर हाँ नि हे थे, तब बच्ची क पती चनकारम्य तिहारे की (ध्यासमान प्रश्ला) इनठ करिया सन्तर, ३१

कहानी रहे हाना

मृत्य के बाद केवन कर्षा रह जानी । प्रयोग —गह नृत्य पहुंचावति कानी । कोच म पदा मन पहि कहानी (१९६० —साधारी, १९५१) कल दिस मुख्या अहनिय हमली। मनुष्य करते के यह माथ कहानी था कर्या गया (राधाण स्र साल—राधान दन्ध करते

कहीं का 4 स्थला था रहना

(१) हम तम्ह के धांत करनी या होनी। वयोग— जापने सानी जामधात भीरद कर की, हमलोगों की कही का ज रक्ता (प्रेमाण—प्रेमांद, १०)

(२) दिनी नग्यक न ग्रहना ।

कहीं की कही जगाना

(१) विकी बात की दूसरे वर्ष में केता। प्रयोग— कहा करो तुम बात, कहें की कहें क्यांवर्ति । स्वर्शनित यो सुर्वार संबंदि केंस वह सार्वान मुठ साठल मूर, ३१०प

(२) एक की दूसरे वे जिलायत करना ।

को अनुसार बादना

बनकाय नरीय में काम काता। प्रोप्ता की ना सकता हम का कुछारि कर्मण इस सुकसी १७६

कहें में होना

की क्षान मानन चारा हाना अधाग नहि माधनी कहें में होती को बहु केटिन चारमण पटन पर पापना को



हाय धीव भी सकती थी (सूधा० या० या० ११०) जडायभाइ, वह एक कृतमूरत स्वामा स्टेड के बहुत कहते में है सूग०--यू ० वर्मा, ७६।

कांच देना

किसी काम को करने में पन्त हो जाना। प्रयोग-और पति नहीं दुसा के दिन, कर्य तत्तक दुख सहै कुढ़ काल 'मृशति -हरिग्रोध, १७)

कांक में क्याये रकता

- (१) तर समय नाम रणना । प्रयोग—नामे कान फिरल निरम्त मृत, इहां न नाहण नाई स्मृत सात— सुर प्रशुद्
- (२) बदा म रावता ।

कांस की भट्टी होता

बहुत दुःश्व पाना । प्रयोग—स्यो क्षेत्रे तत्त्व द काण की भट्ठी, कोण की साम है कृती होती बोलक—हरिजीध २२५

कांटर जटकता

- (१) दुरा लगना । प्रयोग—मृत्ये अस्यत्त वर है कि प्राप के भ्रादाबाद काने की सभे कुपना के मिनी कर्य में उस मार बहा गहुमना_व यह बाता नदा कटकमा स्ट्रांगां पद्मक के रखा पदमक सभी १७७
- (२) सनेह होना।

क्षांद्रा गवना — स्थना

- (१) हृत्य को वीदा होती । अयोग-- कपला के काटा हड़ा बीनेक--र(०२१०, ३३)
- (२) यस में गाना होशी । प्रधाय---कलगी के युवी यन वे एक कांटर कुछ ही गया (सुहमीठ---अठ नाठ, ११०)

कांटा भूभना र- फांटा गडना

कांटा काना

रायाओं की दूर करना। प्रशंत--आविष्ट करोडा ने 'प्रानस' का कांट्रा प्राफर ही सोहा-कर्यकोटार करके स्थायमार्ग को शिष्कंटक बनाकर ही दम किया। पहुस पराग ---पद्मा सर्मा, १६०;

काटा निकटना

वाचा वा क्याद दूर होगा, बटका विटवा । प्रयोत---धोरय वेव का यह काटा भी विश्वन गया (पड्न प्रयाग---पड़मण क्रमाँ, २३७

करटा पहला

मनोमानित्य होता । वर्षाय—तब ते भाई बहन में ग्रह प्रजीव काटा पर सवा वह (वृद्धा—त्व) मां०, १६५)

कांडा विलेखा

नाथः डामना । प्रधान—काइये न मृत्र की कथन्ये त वेर कर्ष्ट । कर काम आम सह सनी का न गारिये (सर्पठ---हर्भक्रीय, १८४

(नमा- मृहा- -कांडा विखाना)

कांटा दोना

- (१) अश्यम रामना उपहर समाना । प्रधान—आणिर पुमन ग्या गम्झ कर में काट मोत् (११० (१)--प्रेमसद, ३४१), पुन सर्वे तो पाटिय पुन से उन्हें आप तक काट म कम है से तमें पुनरोठ--हारसीक्ष, एप)
-) कराइ कम्मा--- असिय्ह करमर । प्रशोध----वर्षा अपमे रह कर र र मही हो (निमला---प्रीमचंद्र, छए.

कांद्रा होता

- (१) बहुत द्वमा होना या भूग भागा । प्रयोग---सम हचा मुख कुछ कर कोटा भूग में नाम है यही प्रान्त कोस० - हरिजीध, ३४
- (>) दु बदावी या वर्षिय होता । प्रयोग—पर मुधी वेता त्या कि उनकी बरेबों में खद भी मैं काटा हूं (स्थागक जैनेन्द्र, ६३): इनकी यह दशर मेरे ही कायण हो है, में ही को इनके बीचन का काटा हो गई (मानक प्र) प्रेमचंद्र प्रको ()
- (३) बापा होना । प्रशंत—काणमान नुम्हारे सृत्य में में कारत हुई (राखा० प्रसाव—साधाय दीस, ४९४); बहु तमे अपने सुध्य में कारत मनभरते सम बान्ता है (साथ प्रोध— महा० प्रप्रदेश देश अब उनने गामा र क निष्यार में अबन्दाका परंद प्रधाद हो, एवं कारा थे। वैशामी० चनुरंथ ३९३), हेनिय प्रयोग (२) में (→) मी



कांटे उटना

महित समन्त । प्रयोग—समकी और आह की हेंचते ही मेरे तो काटे उठ अति है (मग०—वृ'० वस्ती अर्थ

कांटे का डोना

कंड का होना—हिस्मतकाका होना । प्रयोग— उमने बान है दी गढ़ सान म कोशी) ऐसे काट का वा शुक्रण पनि मोसी: चतुर०, ३५३

कांटे जनतर

अहित के करनारों को दूर करना र प्रयोग -- यून नक से बाहित पून की परहें भाग नक कार्टन कम है वो नय पुमरी0--हरिफोध क्य

कार्य की राह्य संज

(१) जन्यान कुमराधी । प्रशोस क्षेत्र वह वह वहना की सभ की रहा का महत्व १ वेसवद कह करना की रहा भी आह भर पार की पाँक निरास्त ३३३

(३) कडिन वर्षा ।

(ममा) मृहा: —कोटी को श्रीव्या:

कांद्री की संज

रें। मरोडी की राष्ट्र

कोटों का बनमा

(नवार पृक्षर - कांटी पर पांच रचना)

काको पर स्ट्रस्टाता

हमाराजी क्रियान का दालाना । प्रथम प्रश्न व जा जा भारतिया गुरुष्ट । यह दश क्रिया पर नाम प्रा प्रश्नित स्टब्स गुप्त बहुद है सक्ष स्टब्स दश जा क्रिया पर नाम के गाउँच क्रिया का श्रीमा के श्रीमा

करते भग

टोडमार्ग । प्रधान सम्बन्ध स्थित सम्बन्ध कर्म कर्म भीर राज और ब्राड का सहरा भा कार्य असारा कर्म है बुँदेक सेव साव १९९

कार्ये अस राम्ना

कड़िन का, प्रतीवनी घरह रास्ता । प्रजीप—मालि हिन की सह है काटो वरी (बोल्ड०—हर्शकोध, ५)

कांटरे में चन्दोटना

(१) वृशीयता में कामनर । प्रयोग—मृतं कन काटों में सन प्रशित्त प्रस्थित—शिव देश, शहाः साम नो मुक्त काटो म प्रयोशनो है विश्व —हेमी, १८६६ सामध्यानी हो न गुम, विष के असे, क्यों न काटी में प्रभीनोंगे मुझे (सामित— गुम्स, १४), नेप्रकोर को डीकानी पर नृत्या पर रहा की स्थान-भ-न्याह मुख काटी में प्रमीट गही है (कड़0—देव सठ ३५३

(नवा+ नृवा+-कांडी में जीवना,-लक्षारमा)

कांटी में पहला

बन्द नहतर । अयोग---काटन से कट न दूस के दिन समेर यो पर कम पक पहुं काटों में हम जूमरीय---स्थितीय हुछ।

करपना

बहुत हरता । प्रयोगः विता ! दिना ! जम हरते तृष्ये बर स्व १ कहा १ कामना—प्रसाद २५ , बूबी तम्ह बोटला है, भोग प्रमक्त सामने वाने हुए कापने हैं तक्त- प्रेमबंद,६७°, बद राजना जिसमा भूतन पर बाधना वेदसान नहां चौध १००

कांच-काक

नदाई । प्रयोग---वृष्यी पुरवानीकी सन्तर होतेशाकी साथ-वृत्ती काव-कावन कान एक गए। वृद्धव---पाठ साठ, श्र

कांच कांच काना

र र करका जस्मानक। करका १३ ए एक पा सन्द ने दें। सहस्र राज्य स्वतः । रत क्याप्तः रोग्यंत क बद्ध १९७ धन सर्वे श्रमः १४० व्यवस्थ पर्वे गोलके सनुरक्ष १९३

व्याक्ष पत्रक कांच कांच करना या होना .

कारा अङ्गानर

राभ गण्म के निए कीए उदाया । प्रयोग—करूप उदा-या भरो करिया पिरानी, कहै क्यीर येरी शवा विकास (क्यीर प्रदा0—क्यीर, २०६); भूजदान चम् नृष्ट्ररे दरव को काम उदायति वैत न्यु० सा०—सूर, १६७७ जनमी उदायन मोको, सब दिन काम (एसेस करिक-क्शीम, ४५)

काराज का पुरुषा

करमाधी नरत् । अयोग---सरका तम क्रिके भूक् पृत्रस कारक को भी (सक्षाठ इंड'०--सच्चाठ दास, ५०)

(मधाः गराः कतगात्रका घर होनाः, सहस्र होनाः, —नाम होनीः)

कागर का भवन बनाना

हथाई विश्वा स्वताना । प्रयोग—गोदि दिसे यह रीटि वर्षे विश्ववै अस ईटिनि कीत सकेते । दीनि वर्ष्ये जिल ही विश्ववै तिनहीं विश्वयों न कह दिन हरें । काक्य-बोन के आगर भीन है बात करों में सुवानदि होते । वैनदि कार्यक सी ही गई। यह आनद सीर्यन सी सुन्य केते स्वत्य करिता —स्वतात, इंट्रें।

(सम्हार मुहार — काराज का घर चनानां, - सहस्र यनानाः)

काराज काले करना

व्यर्थ विकास । प्रयोग—स्वयं कागृत काने करने की पर्क प्रारत नहीं, धनकाम भी नहीं पहमक के प्रथ पड़ार आयों, 50); हुवना शतकामी कामकरियों में लिखानाओं होती रही । यही कामक स्थाद कर दिय नम गर्मन—-

(भगाव देहां --- कामज र्यमन)

कागज़ की जाय

(१) क्षमकात्र प्रदास । यथाय-माग् कानव-नाव उपाय सर्वे यम-यासक सेहानकी गशरे कान्य-किय-धानाय, ३१

(२) म दिकते वाली वस्तु ।

कायज्ञ भूटर होना

इक्रवारमामा मुदा होना । प्रयोग- बहुत दिना हूँ बाय कहै नो कामद मुदा कुण्यक नीरधरदास छ।

कागजी योडा दीहना

- (१) विसा-पदी करनो । प्रयोत—काक कम प्री कामजी भोडे दौराने कीर बानापुरी करने की प्रकृति अधिक है। (मेरे०--मुलाबल, १९७)
- (२) दूधी पूर्वे के अन पर स्थापार करना। प्रयोग— नव तक कामन के पोड़ बीदने है को की क्या कमी है परीकार—बीट दास, ह,

काञ्च निवाहका

वार्ष पृथा हाता । प्रयोश--श्री विकि कुमल निवासे कानु (कारक क्षि)--सुलसी, ३६०

करक सरका

कार्य बनना, कार्य पुरा होता । अयोग न्याय काल गुर ने न बरेगरे, कार्या बचनी भोष सुरू साठ-नदुर, अरदम

काजम की कार्टर

र करा में भरा हुआ। अधोग---वरताय केरी कोटरी साम के कमें कपाट कभीर स्थाप--कभार, शहा, यह मधुमा का राम की कोमारी, में आपे से मारे (मू० माठ---सूर, १९६०) इस का मान की कोटरी में बेपाओं कोन रहें सकता है ? कसाठ---उठ, २९

का और होना

- (१) मनवानी करनवाका, स्वयं निर्णयं कान्त्रवादा। प्रयोग— इस भी तुव परिनर्शन बद्धावत, वे हैं यपन काजी सुरु सार- क्षा २५७॥
- (२) बरदानो दाय अक्षाने बामग्रहोतां (

कार-कपट करनः

काट की

क्रम और नीकी । प्रमोध नहां काफी पही-शिकी जान पहनी है । अगरनी बढ़ दाट की मिलनी है जिली (निक्ता, १४५

क्षार काना

(१) ब्रा स्वमा अभिय संग्या । प्रधान—मही धनमी सावा मानी येन वी कार्र साता है अमन्य—हरिसीए,



१९०): यह सबन हमारा है, हम काट श्राता रिविट---हरिकोध अर

(३) हाति गहवाना

कार काने दीवना

- (२) हर बात पर विगयना ३
- (६) मध्यम में समाव देगा

काट छांड

बाज बतार (अयोग के बतार ने घर) हना वचरों है गरी बाह बाह धेले में जोलंक एटिजीस १६९

कार-पंद

कुराई सुन-सम्बद्धः वयान-स्ति मधी कार गीर स्था कर में क्यों न कपटी सपट समा होगाः मुमलिए (ई० मीए) ११२

क्षाट स्थात दिलाला

क्षणर स्थान कानाः

वारदलर

- (१) हर करमा अका हाता | प्रयोग---वर करण आग पैसे का राज हरे तब उसके प्राप्तक की बार सकता करित है विशिधिक---हरू प्रवाहित, इंड
- (२) विशास (प्रथम शत तो देवनी ने घर के दारी 'सानक श्री - बेमचड, १७५
- (क) प्रतिवाद करना का रोकना । अर्थन--- समोजक और को कहेंगे जो काली दोनी बाले भी काल प्राप्त काल काले नहीं। कार मनते हैं मैंना रेणु 200 व का काल काले नहीं। कार मनते हैं मैंना रेणु 200 व का का किए का प्रतिवाद के काम नहीं की पूर्णिए भाग दोनों का रेड्ड के उटन की मोज पूर्णिए भाग दोनों के उट्ट के उटन की मोज प्रतिवाद के निकार देवतां के का प्राप्त का मोज मोज का का मान का भूकिए भाग दानों का प्राप्त हो। वा का दानों देन है। एक है। प्राप्त है वा वा दानों का प्राप्त हो।

कारने भाना, डीइना

() विद्यानिकान नामना प्रमान रणस्य और राष्ट्र

का उत्तर रोगी है, अभी-कटी बात भीन क्षेत्र के रूप से। कारने को टीहती है जान०—वहायाल, १०७

- (२) कुड होकर महसने काले की मना कुछ रहका । प्रशंत—कुछ कहता है सी काटने डीक्टी है मीदान— देसकंट, २९६
- (३) बुध देश, बहिर नगना । अयोग-- फिर से स्मृतियां तृत्वें मुची बनाने के स्थान में तृत्वें काटन दीड़गी केन्द्रां? -- सगठ देशी, इंदे , बाली बन्त भारी हो भागा है । काम य बाटों तो कट अस्त, भी बाटने को भागा है (सुनीता: -जैनेन्द्र, ६६), नथीय में में मुख बकाते हैं और दिशोग में काटने दोवने हैं फिलाठ (१ -- सुनत, १४७)

(मयाक वृहात -कार्य काना)

काराने दाइना

र करदने मना

बताओं को बदन में जन नहीं।

अन्यन्त हर स एक बारमी तन्त्र हो भारत या सम्यन्त हर अन्य । प्रदोत — समूम श्वरते धाकन नगा । काटी मी नृत नहीं सुगठ- यू प्रदात (66); वृत्तियाके बेहनं काटी ती तह नहिं सानठ हा---क्षेत्रकट शहर

कार-कड़ोर

काठ का उल्ल

वर-कृष । क्रमान क्षेत्र ही प्रेय को के प्राप्त है भी हम नो कृष के नर ह, काठ के प्रम्यू, निज हे से समागान ही रहे तो हमारी कावकर कारकारी हिए कावक ही है त्माठ क्षेत्रीठ के:—मारते-दू, फरके, पानू जानाम हो का ती काठ का करनु वा (मानठ—प्रेमचंद्र, २५९)- विश्वतम्त्र वर्ष व के तथा लिये काठ के प्रम्यू (प्राप्त- दूर) कर्म, १६॥ कम नहीं प्रम्यू करामा ही दशा काठ के प्रस्यू करामे वाब नवे विभवित--हरिशीध, १५९

कार का फलेका

क्ष्मार प्रकार केन्द्रका गाउँ साम का गाउँ इन्ह्रे केन्द्रका राज्य है कुद्रका प्रदास प्रसाद उन्ह्



काट की मांडी

पृक्षी विभागत करन् जिनका घरना का उपयोग एक बार से अधिक न चले। प्रयोग—काया हारी काट की ना ओह पहें बहारि (कथीर ग्रंथा०- क्वीर, सह), यह अचेर, पाड रमी, काठ की हारका दुवाना नहीं बढ़ा करती, पटुस्क के दश--वद्मक जार्मा १६वत इ इस्ल--कार की हाली बार बार नहीं चनुनी (रंग० ३) - धे- ४५, ६६

काट भवना

गेल हो बरनर, स्तरध हो जाना। प्रयोग भाषाच वे ध्रमेनन्द्री का कथा नहस्राधा । उसे ही अन्य बर्ध धरर मार का वर्गक-देव सेव शहर वाजन का कार स धरन करत ही माना गाउ महर मधा न्द्र-अवनाठ Hop . मुनल ही अरिटली का जैस काठ पाप क्या काण्य । १० ५० % ५५०, ५४

काठ में पाय देता. - पहला

- (१) विपाल से फतना । प्रधाय-विषय प्रतके वारीन ने पुष्ट होन धीतिए, विशा कुछ पह तन दीजिए, जोन, नेन सकती भी पित्र काम की बाँड भीका करें दीकिए तक उनका पेर कार से वाधिता आठ देश हैं।—आसीट् बेश्रा भई छ। इस लोगो में बड़ों हैं को सान्दर्श के बाद वा पाप द्रुत है। शिक्ष के कीजिल, २०५ । अटायान में मा माठ में पेर पहर चोटीक निरास १३९)
- (२) दापराची सो काठ की बेटो पहनाना ।

कार में पांच पहना २० काउ में पाच देना

कार मी बात

महीर बाम । प्रवास-सायन मी पेटे मोहर की यन बाह ही तेनी कहती व त र बेंडर०- केंसर, हर

काठ होना

चंत्रका स्त्रीत होता, स्थ्यम होता। ध्रमा व स्थार्गा परि की मूरत देखते ही काठ हो वर्ड ह्रंड० - 150 नाव नव हो चके चाठ बाट का लोकर में मुद्र शाह आह जान हम भूमते - हरियोध् ७६

(२) मुल्बर बंबा होता।

30

O P.—185

कार्दा अच्छी होता.

यरीर व्हर-पृष्ट एवं बन्धा जोहा सेना । अवाह-वह ना करो मुधानों की बाठी **बच्छे हैं, वहीं बात अ**क्वे हुए हाने को पोपू से बैठे हाले 'रंगठः २।—श्रेम**बट, २७८**,

कान भांच्य स्रोत्ट कर

नेचत होकर । प्रकान—गानी—गड़ी कि काम धीर काम कालकर समय की प्रशेष्टमा करें (हांसी०- वृ ० दमी, ११७)

करन उस्तरश्चा

कीन इयद कर रोड देना । प्रधाय-स्थाप प्रकट न जन भक्त पर संज्ञान केंग्रं समाह तब भेगे (बालo—हरिओध)

प्रोत देशीया

पुरुष के विकारिकार होता। आहर नेना, चीवनमा होता य - व श्रोपत । प्रयश्य---वार्ति की साम माम मुक्ती की बाल यह है पटा हो। स्टब्स अनुनेक--कृतिकोध, क्षेत्र (५- 🗝 - न्यान क्र मा फाना)

च[∗]न ले हता

- की है। ऐंड का काम गेंड देशा है (श्रूमतैं) - ही मीच १०६
- (०) वावपान करवा । प्रयोग-कान कथ एँड नाने मही पर बान बहा हो बढ़ महै (सर्घ०) हारे प्रोध, पढ़
- (..) (करी एडम को न करने की प्रतिश्रा करना ।

कार करना हाता, क करने होता, के पत-त होता, के इनके होता

यभी बाल कर कर विश्वास कर लेने बाला (अपोम---क्यों कारचे कार की कीय बराज वर्गन । बाक करी स रची को बनी बनी बिम बानि बिहारी स्ट्नाए-विहास १४% बी करे बहुत के क्रियम क्षेत्र कर पन क्याचे न काम के पुनर्श अभ्योक - हर्वतक्रीय, १३०: क्यों अन्य कान तस सूर्वे कवती हात बच्चे वा बाव के क्वां मुख्ये हिंसीय हैं। हुन्दर काल के क्ये क्ये है क्ये गुले बात काल की हो। होत्रक-हाँ कींध एक इतिनके काम कम्मे है उन्हें इनके को जना केनी नार्जन करकाणों स्विनेन्द्र, ५६ नमें प्रेरवार का बाज बकरा शेना है मैजित रेगू ३०७

कान-बटाई होना

करण कराने होता.

मूर्ज करना, उपहास होना या करनामी होनी । प्रयोप---मूरदास के प्रभू को करिये होड न कान बटाई .सु० सा० ---मुर क्षम्

कार करता

(१) सुननर । प्रयोग-नवा क्या वर्षाय येको है जरा इसर भी काम करो गुव्लिक- बांब्युवाक, ६२२ । अन-कम किल्को रह रहे शहर कियो जाम बीध काम अंध्व प्रव ६)--मानसेन्द्र, ११२

(२) व्यान देशा, महत्व देशा । घ्रमाय—स्व गोमी संग्रभाद इति मृत तक में कृति व काम है । ए० साठ— सूर २६६ । मनदू नाथ नूम मान्य मृताला । सामक संग्रम किया किया गाँग कामा राम्छ (बाम — मृत्ससा २०६ । कामित काम गाँग की काम में वाल के वाल देशा कामा की काम में वाल है विवाद की मरगमार्थ कैयाद — केवाद, इन्द्र , सिताब देशिय के वाल काम काम मान्य है के देश—सैनाव्यत, १३३ , ध्रम घानक मान्य मं काम कर्म कर्म क्रिया काम में काम कर्म क्रिया क्रिया काम में काम कर्म क्रिया काम में काम कर्म क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय

कान का एड्ट फरना

(१) बहुन शीर होता । प्रयोग---सन्त्र में कान दे तुन्हें पहें पात से (सामक (का--प्रेम्बंट, प्रका मून हमें बान हें: पूर्व करने बान पन को दिया नहीं काल कुम-ेक-हरिजीय, पूर्व), अब होना के पान बैटे दून बोलों के बाज म परद परन रहन है जब दर दिया बहा है प पर राज्या समय दिया दूसर में साम से बारें अपन स्थानक मा पनार कर देन हैं क्या अ पूर्व संस्ता ह

दे को प्रेस्त करने कविष्य स्थलने वे या व्यानको अनुकी सुनन सनन काशी के दि कर कर पुर्देश are सुरु पुर ४५%

कान का दहरा या कान का बहराएश

क्रायमा पा स्थान न दर्भा । प्रयोग - वर प्रशेषन संबर

य केहरे पर प्रेर क्या कात का न बहरायेन (सुमिते००० हरियोस ५९ - कृत सके बात हित जरी के ही हैं से जो मॉल कात के बहरे कुमरोठ—हरियोध ५५

कात का सैन निकलना

हानसुरी कुर होता, घ्यान देना, सुनना १ प्रयोश—अक तथे बाद कारने वाने कान का मैल कह नहीं पाला (सुमरी) हाँ सीध, १०१

कार्य कार्यना

साल काका बहुकर होना। श्रमीय—यहाँ भोर्नेहने प्रतियां के भी काल कारती है (भाठ प्रय—भारतेन्द्र ९४७); मंगला देखें बाल करने में घरों के भी काल कारती है मैला०— रेखें, बाल करने में घरों के भी काल कारती है मैला०— रेखें, बाल करने मंग कहा है में बाद क्या, हिक्सन रिकामी है। हम जब के काल कार विशे गतन —प्रैसमंद २२६ - मंगीका ना लगे के बाद क्योर गाले हैं भी अवती-लगा में अर्थनियों के भी काल कारने माने होते हैं (क्षमीय — ह० ४० दिंठ ३९

1नगर नगर**--काम कर्मगरना**)

करन की बैन्से कारना

बहुन शोरवस करना गोरम्म करके त्रंग करना। क्योग—दनन वस मी हठ स्रोत सीभी साह पर आस्पे वस वस दुवार साम की वैश्विया कर साहिये सह निव -वार नह - व

। वनाः नृहाः — कान की नीसी काना)

कान की किलिंग फटना, कान फटना

तर्व बाताय के रिमन का जाना । पंथीय-स्थात के बॉल्स-हर न कामरे की विक्लिकों कहती भी त्याधाल-दान सक, श्री छन । काम जिसके पट्टे न पर पुत्र कुल के कथी है ज कनकट कोवी जुमलेल-हरिक्कीय, १२२

कान को कई निकासना

पुरस्य प्राथम। अपीर पर स्थान राम प्रथम मुन्ति। प्रयम राम प्रीत धर्म समझ रामण नाम में अभी प्रथि उपस्थि ३६.10

कान के प्रकार होता दः कान कचा होना कान के पनले होना देः कान कचा होना

काम के इन्डके होना देव काम कथा होना

कान कड़े काना या होना

- (१) मनेत होता । प्रणंग—बाहर ने मोटर का हार्न गुनाई दिया । मुनदर के करन जब हो नवं कार्य-प्रेमचंट, २०२): दरवाले हे सटा हुवा पीरचली बाम कर्ने करके गुनने समा कासी०—पू ० वर्षा २०३ , जने शने मुस्बद के मन्त्रों की सीव बदने नवी सारा गहर दमका प्रणाम हो गया कट्टर मुख्याक्षा के बान कर्ने हुए ,प्रमुख प्राम्म-पद्मव सार्ग, २२९
- (२) लव्जित होता।
- (३) गावधान करन्छ।

काम प्रत्यंता

भविष्य के लिए सार्थान होता । प्रयोज-कव क्या कात भाग भी न सभी कृत विषाद सके न शानी के खोलo-हरिसोध, १५३)

काम कोलका भुतवा

प्यान पूर्वक मुननर । अयोग-सुरव है कथर के होनर पूर्व यह सब कान जोनके धून को माठ ग्रेटांठ हैं -भारतेन्द्र, यहंभ , तो ज्वेगा व अस्य कोने भी नाम कर कान कान कर कर के के पुनरोठ-इति प्रीध १०३ केले कानकर आने मुनी जोनकर कान (बृह्छ-बर्कन, ४४) और देनो योक्टिन्स, एक बान सुन्द को कान जोन कर दूधगांध-देश मठ, ७३

कात मोलना

- (१) मचेत करना । प्रधान—सानद के पन ही मुधान कान मोनि नहीं पारस जायों है केन भोई है इपर दरक (पन० कविष्ठ—धना०, १८६ , सम्बार प्रमुखान की बात जम कल भारटर गाटम ने कहक है उनके भी करन बाल दम मांठ मांठ (१ —किठ गीठ, १६१ , बाजने को कान की सामति एक कृत है बोजने ही जब नहीं मुख्येठ- हरियांथा. •१००।
- (२) विसी बात को किसी तक पहुना देना, वह देना। प्रणात — कई दिएं नहीते कहा भी बहुन्तकों को, उनह नी मंदिय पुकार काम सोस्टिई (धन० केविस अन्यः) १९ । प्रभुतन्त्रम भी स्था किसी को भी विसा पुरस्कार सिए

एक पंक्ति भी न श्रीकिए । यह कारहार का परश अभे बना नोकिए । यह शन मैंने उनमें कह भी ही भी छीर बान नोक हूं वा (पदमक के पत्र—पदमक दार्मा, १९८)

कान करब बरना

- (१) सको देना, मानन करना । प्रयोग—और नमाश्र में १। बार गर्मो दिवशा बनो उह ता अल्या पृथ्या र नाम नो गर्भ करती रहें ।गोदान-सेमचंद, १९६
- (३) काम इंपरता ।
- (३) दशम् कालना ।

कान विवकाये होता

बहुन क्यान में सिरकर मुक्ता (प्रयोग—द्विमा स्वथाने के एक विकार के बाब काल विकास करी मी (शुटा०— २ -अज्ञात 30)

कान संक्रिया

4हुत तेज मुनाई रहता । प्रयोग्य---द्रमकी धूलिस्कृति र ४ जाती है कार चीर च्⊈०--बण्डक, ४५५७:

भाग मारकर निकल आना

उपेक्षा करता, परवाह न करता । प्रयोग—याच की कृप भारतनवादा किन तरह दाप करता आह विकल सीसी०---होरक्षीय, १८०

काम उनकता

भाकी विश्रांत की काराका होती। प्रयोग—कपानी के बात उन्ह सुर मुहंगा०— घ० ता० २३५

कान इंटकाना

इयक पहना। प्रयोग---कम यह होता भा कि असी पापी को केवर मुगलमान बहने हिन्दूओं की बहते हैं और दिन्दू करके दान क्वका कर मुश्के हो आने के स्टूट निर्ट बाट मुंट टूट ३०४

कान नक जन उठना

बहुत कुद बाना । प्रयोग—पहले — बौर बस्य काली नहीं सोच पनी अ अ कान तक जल उड़ी पुगक कुछ वर्ग १००

कात तक प्रकृतना या पर्वचाना

किया शाम र ज्या प्रत्या कानकार साचाना हा । । बाना । प्रयोग---- क्या पह पहाही समाचे और भी मीनृत्य बारहा करते के भी र भी देशका शब्द साहनजाह सम्बद्ध के कानों तक सूचि (साठ प्रंचा०—(३)—सप्ततेन्द्र, ६३); बार शका के कुनारे की पाना के बानते जक पट्ट बाला गाउ-हित अवभन्ने में शहार ग्रेमार-महारू दान, 345-00 देशिन माने के करीय के जमाने की कोई फिकामन मेरे

कार तक नहीं चार्र सामील- वृत्र हमी १६५ कार हेकर स्थल अर कर स्थला

तद हर्न से संस्थ मृति हु यह दे कार सूर शिक-मृत अवस , सूनी बेंदर कुछ गर्क है हान गीतांक का मुख्या वर्ष परमान्यान कारको भाषत पुर ले में है काल नदान प्रथात नाउन काम है सुमार कविवाई है नक एक सेना-ति ३ वत-बारंद ध्याची सुत्रात देशांत बता सुनिवे जिल्लान ग्रस्क करिया धाराक १५१ - प्राप्तन की प्राप्त मुजान मुनी कान धाँर बाल, अहा घरी और भारिय प्रमुक्त करियाल-प्रमाण करेश पर वहन अस्पति नामा इमे काम दे मुनी अन प्राप्त-सन सिर्व, क दान क प्रान के समय भीचानी अप हे मुख्य, अप पितः, अप पर अस्ति। चाव, बना काल देकर मुनी ्नदीत- कन्न व. १०६

भाग देखे बिका भीष के पाछ दी हुना कि ही कि ब्राम्पादे में अपना-कान की नवय जान याप क्षिमा क्रिसी के क्षेत्र में आभागा 5 प्रयोग--- धीर भी द गय ज कींचे के बान अपना स फिनानियें। डोच (चूंम्से)— हरियोध, 200

काम देना

(१) ध्याम वैका । अमेरा----वेक्स बाब नार्ड दे रहे । अने भीत काम कथा कथा क्या नहें नेदंव प्रशांक- नक्ष्य ३०६ भावनी निहासी वह कासिह ही हैं 'केंगोगड' काम की कथानि क्रम् काम केन नागीहे , बैदायक है, बेहरा, छहू। जो 41° दर प्रथम भगा है वस्ति दर सब हा वर्ग रंग पर नाम नर ६४३ पद्म दर्ग दन् रूप न भाग मही दर विश्व पार and र तर 🗼 🦠 हैत में पूर्व या या या व व व पर राजनेता कि विकास स्वयं के के के कि 454

⇒ व युवनर , त +

न है तरे भीने का यहर नेता ही श्रांतन और प्रमृष्ट हैं। वैसा रोजन का भाव ग्रेहाव (१)—संग्रतेन्द्र, ६५६) जिल्लार मिल मारिका कुछ पढ़े विका साल्य-मी दिवे शक्या है उही। इगर में हुई फ़ान मी. सम्बत्तः गुप्त, २६१ ् यह कान देवतः मुक्तं नता (क्षेत्रर ३ अज्ञ य. ६६ देखित प्रयोग (१) ५ । भे में

(३) विनयी सकता । इतिया प्रथम (१) में ।

कात धर कर भुतना रें) करन इस्त स्ताता

काले ध्वया

- (१) मनना साननर १ व-१४---गमा गुर के असन प्रदानर बुको काल व भागी कामर क्योग प्रकार अधीर होता. रात में पुरांत के वे नहत्त्व भीड़ बात ने के से बालने बाद र्राच्या कर्राक्ष उद्गी पुरु सरव- पूर्व ३५०५ , अपनी सब इ.स. नह नहें ही पर हमारे कहार धहन पर मुस्तिक कार नहीं पाने पान काले—पान समी, श्रा , जब बहादक य बाह भारत है. वो बहादियों भी पार्वना पर काल जही. बरमा । इह्नु०- देव ८० ३३६
- (३) समा तेना ।
- (३) स्वीरार काना (

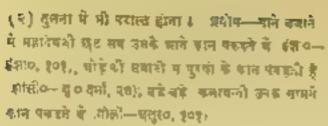
काम में दिया जानर

- (१) मोर के नाराम कृत न मुनाई देश (प्रयोग प्रीर भावे कोनाहम के बाद नहीं दिया बाला - साठ छठ - कुर, मार्तेन्द्र रूपक , युन उसे काम के नार्ने दाई काम अब ती दिया गाँउ जाना व्यन्ते० असिवाय ४९
- (२) सं पूर सरना—सह न प्राता । प्रातेत —शोशताच के बारे कान नहीं हिंगा। जाना का लिक्सकी० २ -वसुरण

बास प नना

(१) किनी बायाचे न काने की प्रतिज्ञा प्रत्या । प्रतिन ---2 3000 (4) 1997 4 4 7 2

- 750 54



- (१) शिक्षी का कान पश्च कर बंद देना ।
- (है) फिनी बड़े कर नाम सने का रोच प्रापंत करना ।

कान एकड्ने का काम करना

प्ता काम करना प्रियक्ते निष्ट् इंड विके-स्वादान करना । प्रयोग-स्वाम कर कान प्रकार का, सन्त नदाः सप्ताद्वी सोते हैं (सर्म०-सुरक्षीध, इक)

कान एकता

किसी बाद की कार-बाद मूनन-मूनते एकता करना। प्रभीग—भगत की की तीर्थ-याचा की बचाएं मूनते-पूरते सी समारे कान एक मचे (बक्क-देवस्त, १८४ : पूर्वी पुष्तानी की सह वर होने बार्ची माम-बहु बी कार-काद में काम पक गये हुँदैक- अब नाव, स

कात धहना

पुगारी पहला : प्रयोग---रावन के बह बान परनी जब । ग्रोडि स्थापंतर बात मधी शब (बैराट० (२१--केंग्स, २४६), जब ते कृषण कारह, रावरी कामा-निधान, बान परी बरकं कह सुनम कार्य) भी सक्द० --देव, ३२), एम गमय बह व. नक की कृषि कान वरी कारी बह दशकी (प्रयण-दशका, ४); विकित कानेन समिक्षा, पिन की गीन रहाम कविल--नहीं म प्रयो

कान पड़ी भाषाज न सुनमं देना

बहुत कीर होता । प्रयोग-स्वान परी चुनिय गाही, बहु बाजर अन्त मृद्या सुव साठ-सुर, ३५२५

ं काल पर जें न रेगना

नृत्य भी परवाह म होती, कृष्य भी स्थान न होता।
प्रधीय-इस प्रका कान स्था हिनाये कान पर रॅनशी नही

मू शक (शुभरोध-हरियोध, ११२), सम्बा और बांचुनी
से एक दान तहा थाए। उस्त न ११, ह र देवर बर्ग कि

श-मूर पीठें नी बनमा ही डी दिस पर निभी के बान पर
मू त न रहें (१४१न-व्यक्तियंद, ३१, वया कर बाकक की
पन्य स मी न्रहरूर सरना पर न कर वह र । देवन व

दे सक १६६ सब गायों ती को जस बोराने हैं पर अपन पर का है नो कात पर हूं की जीवारी रोपेट औठ गाठ, यह

कान पर विज्ञास व होना

युनी हुई बातः वर विध्वास व होना । प्रयोग--- भूगी विश्वव व २३ घरते व २१ वर विध्य य न ने हुआ भूगेक स्थान वर्षा, प्रत

कान पर होथ स्वका

- (२) बनकाम बनना—शास कावाद करमा । प्रतीत— इसरे को बाग मन कोन कोजने हैं और काम करनी पहें तो काम पर हाथ क्या मेरे हैं (तितली—प्राह्म, इसह), हमने बाहर के बचाही को माजवादों, पर सब बानो पर हाय स्माने हैं गंडन—पेमबंद, 2981

कान पंचना

ध्यान के बुनना । प्रधीय-स्थाननि पारि मा सुनन पाहि है नेको बैन ब्रमाची ।उँड००-१८क्षीध, १३

कान फाना

रे॰ काम की भिली फ जा

काम प्राप्ता

कान कुं प्रवासा

वृत्त क्षत्र केना-कोला केनी । प्रयोग-तो हूं भी किसी बिद्ध से कार कुनवाकर तुनती सीहना के (मांठ प्रंट रहे) -सर्टोन्ड ४४४

कान करकतर

- (१) बहराना,—सान भगना । प्रधीय—तव रहे पांच कृष कृष के समयों और के कान कृषने वाले चुमले व —हाश्वीक, ११९ : स्वयंत्र में अकर पीन शुरान कृष पा क्या नुम्हरो राज पहरू-४७, ७२,
- (२) बाम देशर--शिया नेती । वैद्योग--कृष्यो राज र । बार प्रकार केर के राज र ने बारी जुनतीक हारे प्रीता राज्य



कान फुरका

बहुव कीर होना । अधीय—सरवाति सरवाति कीर् अनुभारतो । एत वध्य अद्यादाः स्थापना स्थापना । संद्रुष्ट, हहस्य)

कान फोडनर

यहार स्रोप करता । प्रशीन—सद्दर स्टीप्ट करनन करेरे उनंद ग्रेशराठ—मेदठ, ११६), नेहें पर्छ नानी से कमानी जिन स्रोप नवी ही, जानक । जानक नदी ही तुह बाल कारि से एक्टनठ करिसाठ—स्माठ, ५० अन्यन—अने काल न की व स्राम, इचर हा /माठ दक्षाठ-१०—स्मारतीन्द्र ६५३ भी भी करि से काल कोरि जिल कृषिन काले ,राधान प्रकाठ— साधाठ ताले, ५००

काम क्या कर

इसके मानुसारक क्या का । क्यांक—विकरिया के को की आभी है काम क्या की सबत के पाना दूसने का क्या क काम प्रभव की शांकी है अपने बुद्धक क्यांक, यद

धारत बहुता.

कान में पंस् निकलना ता प्रधीय— उस नियाना रख नामन बड़ा मही काम मूजी जोचा नम जू समा बड़ा बीनक— धरिमीध क्षेत्र

कान भर जाता

सरमित्र गांध होना विश्वी काम को मृत्या-मृत्यो हुन्छ आता । विशेष अवकार कोच कावित्रक सामक, स्रांत कावि सामक अर्थ हुन्द साल- सूर्व शहरत । बहुन हुन्सा काव सर गांध निधार संस्थान कावित्र हुन्स

काम सरमा — में शरभ सम्बन्धा सरमा

 बाते भी वे क्ठा० ३)—व्ह्यपात, ४४६ (मगान मृतान—ब्रान में कृ कता)

कान मारी करता

बात पहुंचाना, जिल्लामन करनी । आहेग्—दश्यार ही जो कर दू लाहों के बाज करती गुंठ निय—कीठ मूंठ गुंठ, १९२२

करम अल्लार

कान गरें ठ कर कर देना । अधोय—तक इसारी कात ही किंद क्या रही क्ष न कोई कान नित्त वत्तता रहे स्थासिक हर्य क्षीत: १९००

काम भूद बैटमा

नती कर जनपुरी नजना । प्रयोक—हम सभी भूष सह जना नैने काम तो काम भूप जेट हैं चीचेंक हुई छीत.

काम में भागा

भवर विकास नृजाई पहला । अयोग—िश्सर्थ सृज्ये हैं उसम भरी बाद कार में जाती है शिक्षक प्रेडा०—शक्त दास क्या, ताबर यह उनकी पहली विकासत है, जो यर बान में आई है ,रंग० १1—प्रेनमद, ३३६

कार से वंगन्त्रं हामनर,-देना

वृद्धे न इत्याद करता । अजाह-तृते सीके वाल कार्त्त, व अवकी कार्तो से दे में (सर्द०-हारक्षीय छठ अर्थात हिन की बान तम कीने कृते काल में अभ कार्त्त कार्ती की गई कुमतेल-हारिजीय, १०४) ।

काम में ४ गर्मा देशा

👯 काम में अंगमा कालगा

कान में उद्योग क्षान पहला

परे ही मानुबा पड़ आना १, बयोश---बान को ने बहा स यह यह का पड़ गई बात कानम इनकी (बालक -हरिश्रीध, १ व

कान में कान संग्रहता

नर संग्रहण कर्मक द्वारत स्थल सङ्घ अत्राह्म प्रताह । इति को कर्म जन्म सङ्घ अस्ता । तेर व्यक्त क्र काम संग्रहण गण्ड संग्रहण क्रिक्ट १५३

रमन र वटा । चान में कड़ना कार में सम्म मन्द्राता अस्ता

८८ कान अस्ता

फान में टीटे डोकना,—टेंटड कोव्यता

म मुत्रमा, स्पान म देना । अधीय-अन की बार्की पर पट्टी बाम कर, करनी में ठीते छोक कर, बाद में अकेश राम कर भादमी नयो जिथर तियर वलेटे रिस्ता है [गुंव निव—कोठ मुठ गुंव, २०१), इसी इसी क्वायर क्यो, की बहुमा नहीं कराव देशो-उठाव देशो-सोर काम व हेरह मोग के पहुंचा चली वर्ष क्टूंट--घ० लाव, यूव,

(समाव मुहाव-कान में देखी छताना)

पान में ठेटह कोयना 👣 काम ही क्षेत्रे सम्बन्धा

कान में हाल देता

गमा देता मुश्वित कर देता। प्रधीय-न्या पर्वन ने बदा--देशम्य काबू मेने नाहारी भीव अही थी, दर्गार्ट-ए बह दूसका सन्न इसके काम में बाल वह हो। इधगात- दें। संव, uo), उसन परमानमा के कान में शाम ही बान (परती)— रेजु भ्राप्तः विविध माध्यट के काम के यह कात. वाच की भी कि बाबा साहब की ओर से पूरा कर हवार नर्तन प्रवास वेटा हुआ है (एंग्फ (१)—प्रेमचंद, क्ष्यक,

कात में पहना

हरवी मान कोई । सुर सार- सुर, ३३३८१, कठ व्यवन वट पुरत कहानी (११म० (॥ए०)—११वसी, १७५३) निकास विका के बाल में जा वहीं संवर्धनाव-सविस है। (-) वातों में भी व जब सुम्बी की मृताते प्रश्री स्थिए--हाँ भीध, 48% हम वर्षे हैं हुमरों के कान में पतने ही रमका अर्थ अवट जाता है जिलाव(१)- शुक्त श्रद); बेशा सामान है अक्षराहन के पहने ही देश कान के केवा ना

प्रवर्श प्रकर वह जुका | दर (प्रापनी संबर—एप्र. 28 (२) गुनिक बोना। प्रयोक-भाई बोई ऐसी अनुक विकालों कि राजा माहक के करती में यह बात यह जाब · do व अक्षेद्र ११४ १९३ रहता ह अन्य व अन्य य इतायों के की भड़ता मेंटी दिख्या कुरूत

इतिल ध्रदाम (१) म 💮 औ

कान में फ़ कता

 मध्यमग्रह्मा । प्रयोगः । प्रयोगः गान्यः । वर्षः इति । वर्षः । वरः बह इसे आठा पहले बसाय बनाय रणका और इस बनायी म बह निरम्पर सहर प्रार छ। राम प्रवास स्थाप साथ साथ सा भावस्थक कालाम प्रकार से स्थापन स्थापन होत

(प्रमात्र प्रश्यक काल में फू क मारता) काम में भनक दाल देता

विकी वो किसी बान की सुषया है देनी। प्रधोत--इन भागों के कानों में भी भनक शासनी भी हो हान ही (मा — ব^{শ্ব}াক ভুল

कात में भवक गुण्या

क्कि बार की आनक्तरों हो। बाकी-उहनी उसकी अबर विकरी । प्रशेष-महोती के कानों में भी इस बात ही। भनक वही गोदान-वेमबंद १००. वृती ही पन्हीत वर्ता मानता वा परन्तु कुछ घनक प्रमाह भी कान वे पति थी कुछा १) -- वसकास, १५२ , नेर्वहन हा, यह जी मेरे बासी में मनक पड़ी है वह तो गमन है न और०--ग्रा० मासूर, ११५ - नवनीत भी के काम में भी बसकी अनक पड़ी। (पर्म पराम -दर्मक शर्मा, १३३

बाज स्टब्स

न्वने का जानने को उन्तृह शहना । प्रयोग-अब प्राप कान एक के बाज किया है, जन्मुस ही के दूस हथार र्रावाह (हंजा०—हजा०, ९०.

कान सम्बे होना

नोजन्यान कर करू मुख्या । प्रयोग-मा वह द्वियां के काम क्षेत्र माने होते हैं निहार -दिए प्रव. १३५

पाल स्टाना

(१) क्लो में पहला। प्रथान—पनन अपन नाता के लाया । काहि पूजी परमावति नामा (घट०--अप्यस हर्दाष्ट्रक काल लावि कच्ची मननि मनोडा, मा घर से बयराव पुरु सार- सु वास दादः, साँग साँग वान बहुद्दि प्रति बहुद्देश अब जुर करण जरते के हाथों (हासo क्षाः सुलसी ६३३ . नानां म उनके बम कर कुछ नमक बिरव को नवा सना। धारतारे और मेहर के उन्न कृष्त प्रेम का हाल कहा कृष्य-भक्त, प्रश्न

(२) कारों के बात बाना । अथोत—बोटर्डि मंबर महनी कान मानि नहि बाब १६० झायमी ५७१५ और एर बहु दिक्ति में बहु बहु, कानम नावि-मानि गार्व ,शुप साव <u>∼ 평</u>7, 월0명합)

कान लगरका सुनना

च्याम प्रथ मृथमा। प्रमाण—कम समिया प्रिमामम् मार्गिया पर के केर । काल संगाका सुनने बन गुठ लिए

• 410 मुंठ गुंठ, 208); पुता , पुता , प्राप्त क्या क्या मुना, प्रतार त र्रा धन कार प्रदर्भ । प्रियं क्षां का गुंठी । प्रति कार के प्राप्त के प्रति कात कात निर्माण । सामीठ--पु.ठ वर्षी, ११६ प्राप्त की प्रति कात कात निर्मण करें की एक्टर -- प्राप्त कात , 208) मारे नवर्ष के में में मुना का गी. में मिल कान दार की भीर नमें के प्रदर-प्रेमचंद, १४६

कान हे छन्ता

ए न न्य म ५, १ स न ६) जनसम् । ८०० वट स सन्न स्टिए कान्य (रामतः हों -- सुकसी, फार्टरः सूनने कान्य मैं नारी अब्द है क्यों सूने कान्य कार्य के सनके (व.स्टर-मृश्यिक्ष), ७०

कान हिन्दाना

कतिक भी विष्टा करना या ध्याम देना । धवाय-सम भवा काम वदा दिनाव कान पर परको नहीं वृजक (मुख्योक-सरिकोध राष्ट्र

श्राम होना

- (१) संघेत होता । प्रकाश---क्षर वर्गा का वार परकार हो आर्थे की बदमारों की भी बाग हो बावे सुरु सुरु--सुदर्शन 2001
- (२) क्यान होता । प्रधोण—भाषा तो नहीं है कि क्या दर भवान होते दिन भी दशकित है दशर कान हो कार भ्रष्टार मिन कान पर्मात के प्रश्न-पर्मात समी हुए

काराकामी होता, --काराफुमी होता

मृष्णुय नवी हाली. दीका दिण्यती होती । अयोग- अव ह न १ व म चार चालावानी हो गही है पद अव मद म चारा अरोगा की विकासित विका की कि नियं के अरोगा की विकासित विका की कि नियं के संस्था की विकासित विका की कि नियं के संस्था की वालाक्तिया कुन्ते की संस्था कर जाना नहीं सामान होगा विकान कैसबंद, १३१ (दिनके मुन्ते के उनको संस्था विकास नदेश हुआ। १९० के हुई (द्वार—बुंध दर्भ के

कारत भीनकी करना करनाफुटी करना, करना साम्राकरता

र एक क्याने भागे सार्थातः अयुक्तः नाम <u>स्थ्यानः)</u> कालावानां है काल घानी अस्य गुन्ह का स्थाउत् अस्तिमा है कुण का सन्दर्शतः इद्व पित्रपुरयो**क्ष कारण में माना**कृती करने समें (परीक्षाo⊷प्रो० इ.स. १

(२) बहुन बीरे धीरे जान करना । प्रयोग --हान अ अ सास्टर बाहब की अनेक लरह का मुलावा और जून हे ब अवस्त में भीने भीने की सार्थ होका अवस्त होने से साथ मुळ टी० म्हें अब अपने कर सहके बानायु हो कार्य का एक सहस सभी उसकी अन्यविक्ति का कार्य मुनाने की आनुर होने कर्न कारोल०---महादेवी, ७५.

कामापूर्णा करमा रे॰ कानाक्रमा काना कानाकुमी होगा रे॰ कानाकर्णा होगा

कानावाला करता रे॰ कानाकुरूका करता

कारीने करूना वर्षात्र का प्यान प्रयन्ति । वर्षात—शक्त हाथं के बसत क्या तो को तक की काली (सुरु सारू-सूर्व सुरुष्

कार्यि तोशमा, वहामा

संख्य मर्थात का ध्यान म् वजना र प्रधीत-स्वत्ति हो म कही पर्व कृषे बात वोक्ति कहि प्रपति (मृत्र साठ-सूत १९७७ : कहा वह मुख्य-कानि वहाई सूत्र म स्था लोक्ते भारतस्था २)—मारहोन्दु, १६०

कान्ति बहामा वेट कानि नोहमा

कार्या जीवन्द्री के नामन पर न्यीद्धायर होता पूर्व अपूरत होता। प्रधान—एक और उपका इतना बहा यक्तार और दर कार भी मेरे पत्रम की इस कार्ना बहुनी के मासून पर न्योद्धायर वा (गोसी—अनुदंध, १०)

वर्षक प्रतान काली उसलीयर स्क्रीद्वाचर सोता ।

कार्ज बंगली भी न हिला पाना

- (१) कोई प्रतिकाद न कर काला । वदीम—प्रत्येक जिलाक पुर्व करनी काली काली की न हिला अकने हैं (दश्र० — नागरण, हुद्
- (२) कुछ न कर प्राता ।

कार्गा कीई।

(१) बहुत भारत पता । वयान मेने बहुत कानी कोरते भी कभी नहीं देता भीनक (१) क्योमक्ट, २६६% वर कृष से जिनकी जाले नत्त्व रही है उनकों ने कानी कीरी भी देन के उनारार नहीं सुधतेत भूत हरियोज ३ व ३ नहीं पा जीवत का कानी की वा नर नवर्णपृष्टि यत ३५ (२) बहु कीरी की दूरी हो । (भवान बृहा कि मोधी करेंगी)

कानुन क्यारवर

तर्क वितर्क करणः । प्रयोग—त्रक्तं तो वत् वर ये कान्त्र वधारना धाना है अवन—प्रेमबंद, ५३० (समारु मृहारु—काञ्चन छांटमाः)

कारी को काना कहना

अभिन संस्था कहना । प्रयोग—बात सन्त है, कहा बरेगा यह संगर कोण करना की दागर कना कहे जैसे०— हरियोध, देव

कामों कान जबर न होता

न्द्रस्य का प्रगट त होना । प्रयोग---मभूगो की कानी कान सवद व भी (गोदान--प्रेमकंद, २६॥). किनी को काना कान अवद न होने कामे कि हमादा कीन ना वर्षा बाउट हाने वाना है पूद०- अंग् नाठ, १५२

(समाठ महोर---फरती कान पना स होना)

कानों काम फैलना

किसी मृत्य बात का फॅनना । प्रयोग--वावा की बीमारी की सबर कानाकान केन गई की फेसरे (६)--१४ में ९६ (समारू मुद्राह---कानी काल सबर फॅन्टना)

कारों तक पहुंचना

मुनने में आना, विदिश होता । प्रकान—में बात दर्शना जी के कामों तक या पह भी नो किने के देने वह आयर्थ geno—देo सo, १९७

कानों में अमृत उपकरा

मुनने में अध्येत विस् नगना । प्रयोग---नप्तना था कानी में भूपर, कभी वस जुननी कोली बोल नर्मध-हिंग्डीध. ११६५, तालते में वास्त स्वृतियों में मूचा, न्याप भिन वाना नहीं रसवा समा (सम्बेल--पृप्त, क्षं

कानों में गहना

विकी मुनी पूर्व असामधासी बान का करावर अक्षान काना। यामा (ज्यान) राज्या वाला औ ध्यांन स्था काली में पृत्री असत—हरिजीश, १४०)

कानी में डाल्टन

पूर्विष्ठ करना । अयोग-साथ ही एक बात और तुम्हारे राजों य राज देना काहता है जह छ० ६० जोशी २५०) (कमा व्यक्ति-काओं में क्यूकता)

काना में तेल हाले बेंद्रना । बई हाले बैंद्रना

बात मून कर भी उस योग कुछ व्यान न देना । प्रधान— वर्ष विशे वहीन यहा की बहुवायने की, कबहु तो मेरिये इसार बान, जॉक्टि (क्या करिया—स्माठ, प्रथा), हम नहीं जानने कि बन्धार इस बानों को जानती है वा नहीं जान-कर कान ने तेल बाने केटी है (माठ प्रंठ (क)—महासेन्दू, प्रथा, जानि को येश कर बनानक में कान में तेम दाल कर नोये (कुमतेठ—हिंबरीध, प्रथ), श्रव मुन्नों कहीं किसी की बयो कान में यह भागे नहीं कई (कुमतेठ—हिंदरीध, प्रथा, तेस्त्र नदुं वा कैसा है वो कान में तेल बाने बैठा है गोदान—प्रमाद, १८०); और से मरा क्योपन का योग बान में तल बाने हैंटा है बूटठ—उठ साठ, प्रथा, विश्वादन को भी पहा सिना, तक होन्याद मादगी भगे है, बरम्यू सब ने कान में तेल बात निया है हास्सीठ—व ० वर्षा ११५

काम में कई हाले बेरना १० काम में तेल हाले वेटना

काफिया तम करना

बहुत हैरान करना । अपरेग-तुम क्षोर्यो का काफिया तक कर दिशा उसने नगेदान-प्रेमबंद, १९७)

काफिया तंग यहता या होता

हेक्स्त हो काना । प्रमोग—इपन भी गर्मी इस साम बेहर एक गरी है, काफिया तम है, पद्मार के पत्र, न्यूयार क्षमी, स्ट्र

कारत में भी गया होता

सनी जनह जन्मी-वर्षे काष्ट्रिको या अन्तुओ का होता । प्रशंस किन्द्रिको स्थान प्रशंस वाले सभी सीम माध्या चिने भाते हैं दिन्यु ठंडराव यह भूम चाला है दि काम्य में भी क्षेत्र होते हैं (मेरेक-मुकल, ३३)

काम भारा

प्रश्न में मृत्यू गाना । प्रयोग—स्थाने बार और बीर बाद आस विश्वात प्रशास—स्थात द्वारा, इप्पर्ते नाम जो को सब दानने देती होते आहे अर बाद । दवन विश्व दन बचारों में द्वारों तर पावत अस्तर (मृत्य-स्वय १६८ वरण वेशों दालों मुख्यारे वस से नामी कृतेनी सब वृध जा और बोरणां में मूळ यह करने दा सम्बद्धात काम सामा नोसी— स्वर्गत

(१) शहारा वेपा--व्यापन होता । कराव का व राष्ट्र पाक व नाया अन्तर मा पुरुषी वहह , अने इस सरह मान योग परे हो वि तथ दिन नाम वै नायार साम देख केना भी करूर भर यानी है भी पन उठा है देखक, देह

(1) marrie it aner granet geer .

भाग प्रतास

(१) मान को पानक करना । क्यांच- इसने वर्ग वर्ग वरी कोरिको से पान-क्यांच्य करने का नाम इस विका कार्य- कियाद १६ जुना पहें के प्रम क्यांच्य को है। योग की काम प्रकारत जा पानका किया किया करने करने— वर्ग करने पत्र

(4) MORTE DE GORT L

कास करते करते ।

(१) माना निवाह आरि वासाजित स्थितिकाम कास । प्रधान— गामसाव की बहु के निया पुत्र और तो स गामस ना तो ही ताम दिलाना या केंग्रेस ?' स्वराम कार 200 हो यह ती तुमने कीच बढ़ा चयवा तो वृत्तं व्यास हो नहां भी है मुझे व्यास केंग्रे यह चुने कभी अपने हत्य के बोर्ड भाग काम किया हो ना बदान वह विकास केंग्रेड

(, and maste nach with und

बराम की बर्का में विभवा

त्रा निक्रम समाप्त रहता । प्रयोग उत्तर तसका व विक्रम समाप्त समाप्त । व्यव विक्रमण स्थाप वर्ण वर्ण स्थाप कृत साथ स्थित सहा स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन काम की कारणि जिल्ला करना मा संस्थीत-नाहुन, ५४

काम निर जानर

काक बनाना

- (१) काम को जान क्षाना—करना । क्योन—कर्ता रहे, बोहर कर कर रहे बीर को बाव उठाना वस वना कर रिकार दिशा प्रदेश काम- ब्रह्मक कर्ता, वस
- (३) किन्द्रे क्यान आवश्यकता पूरी होती ।

काम इसम्पान्ता

न्द्राचार का क्षत्र वया कान्तर र क्योग न्यष्ट दिन गए अस् बाला अपने जोड़न कर करण रिगामिना पट्टा है पर्टाडिक-बीज टांस कुप्प

। बनार वृहर--काम दाना दोना)

कार कार काना का होता

- (१) बार प्राचना का बारा जाना । वयीय इन जेंग में धनार का हो बाब नवाब हो चुका वा (राज्या प्रेमान-राधात का काज , उनने बना हुखा के नीचे कई गीड़रे नवा गर्क है कि के जो बार्ग वार्थ उनका बाल नवाब कर है अपन्य के प्रेमांड हार
- (-) बाम पूरा करना वा होना ।

। वनाः नृशः ---काम सर्गकर करनाः)

काम देखना

रक्षणार की केमाधान करता । प्रश्लोम-अस्ट्रस वर्ष में कर के काम काम केमाद गई देखान प्रमान-नाधान देखा, अपन

करक विकासमा

(१) उन्नेश पूरा होगा। प्रयोग-विने शेर की स्पृती कीन कारण जरे को भर भागानी काम हार्ग मुख्यान एट. ग्रंगात कर जनके मानिक ही गई तींच केटी शाम कार्या गुड़े भी किए की विनयी में केटर कार काम जिल्ला प्राचित-विकास कार्या के किया के पुरुष प्रदेश कार है। ये के मिलाफ कार्या के किया के पुरुष प्रदेश कार है। प्रियम हुने कि से समस्मान के रहत काम विकास कर्या के बीटिक जनमें देश के क्या प्रदेश में गाह रशम हो जान नो कुछ नहीं है, वई वहें नाम जिस्सान है (गतम न्योगभाद, ६०) -- १)

- (+) वस्तव बातवा । शंका वर्शन (१) में (+१)
- (a) and Gulg gine i blug guin (c) @ (+)

काम निकासका

वनार्थ निक्ष करना । अयोग-कान वर्गद जुध भी केरि । १२ वर्गट पाहात कुण्डक स्थित्वर सा २२ दम वर्ष च असमाय हो, वर्गत क्याकर काथ निकासमा बाहरे हो (सालक हा) -क्षेप्रवट, इस्ट्रा

काम पहला

अभाग धाना---आवस्थ्यका होती । प्रयोग---वानग बहुन प्रमानहीं नहींत न कोने कृष । काम प्रदर्श ही कालिये निमान मूल पति कृष कवीर धंबाठ-- कवीर हर, काम गुनानी को दर्दी भूठ काम-- सून, अन्दर्भ , तुम तो निम्तान, गुनाम हुनै बनधान र काम की काम वर्दी भन्द करिया---धनार, घठ।

ष्ट्राम पूरा होगा

मृत्यु समय बाना ६ प्रयान—कर्माहरू नो दिन शास्त्रक को काम बाद पुरा होन काना है (राघाठ डंडाठ –राधाठ दोस छोत.

काम यनगा

स्थाने विक्र होना । अधीय-तृह, स्थाना पारत सम्ह प्रयास त्या की इस जानवानी के स्थान भी प्रयोक्त की जान तक काम को सभी में तक अध्यक्त (मुक्ति)-स्थान कार्य १५७

काम में हुवा होता

सहन स्थान होता र प्रयोग ज्यान क्यरे य काई या नारी कामम संग्या ही क्षी हुई थी सूत्रिक के स्वाप्यक क्रांच

काम में देर शामना,— हाय सामना

काम गृह प्राता (प्रशान—इतन्त्र का इतित है कि प्रथ यो काम करे निसमें पाके सपना भना धूम विचार के, गोड़े तब काम में पांच के फेम साठ—सक साठ, १९६ , मूच जोतों के चरोज हम वर्ष को कामों में हाथ साज के हैं (साधान प्रकाठ—साधान साम, अन्त्र

बाम में शाब पालगा दे- काम में पैर शासना

काम संसारमा

ित्र है। यन नाम कर द्वार करता । यात्रश्र — मजह ने वर्षि बंदम अवादे, वाक्तिहारों वाली (क्वीर ग्रेसाठ— सर्च १६१) सर्च विभिन्नार समारक का हर राम्छ बंधा, — मुल्हा, १९६६

काम विश्व शंका

सन्ते वर्गिक्षन हरता । क्षेत्रण स्थानम् च ॥ आ सिद्धं च्यानासः १९७० (वर्षाः सन्तुष्णसी, कृत्यः

काम से समाना

दाव करने में जनाता : प्रयोग---थी कल्हानित् वृती विकासकाश्व और विजी दाव है नज़हरू (मुन्नैक--क्राक वर्ज 138

काका क्रम्य करता का होता

वाकृष परिवर्ग काना या हाना । क्योल-वह विकृति परवर केटी काराव्यम हो उदल्ही (संस्त्र) क,--क्रेसकट्, यू. अप्राथमध्यक का वाच का द्वाराज किन्द्रा है। प्रदेशत के प्रथ -व्यक्ति क्यों, रुक्त

काचा पनद जाना

क्यानर ही जाना, धीर ने बीर ही वान्त : प्रयोग---पूर्व बायर परा हुआ नियान अप्तीत्यां का यस जरना है, अर्थि की नेवा करना : एक क्यान्यान ने काया प्रयूप कर ही (1700 दें प्रभाव अपने , बनाते से ने दें? बनादें तक तो बाद नहीं काया सुमृत- सुंच कुछ धीए, धर्व

काके का कताना

व्यून व्यवस्थ यम । वदाय-व्यक्तांत्रको के खान्यांत्रे व वार्ड यह व्यवस्थ नहीं यह यो गही विश्वादी की जिलाई हो-डो वार-बाद नोई देते को बाई 'साठ वीक-महाठ द्विति या वह को प्रसाद काम प्रथम वाहमा है दिस्स वहन्द्र काई का बाबाना किये काम (कानठ(५)--केनब्रेट, प्रश

काल काना

कृष्यु निवाद होती । वयोग---वीमा वेद विषयु न त अर्था कृष्यु मृद्याद (१७०० सु --सुरुष), स्थार

करत्व का कंद्र गवनी

बाद के बने में शासा । प्रमान-मारि वर्ष भी जुटियों

राम नाम प्रकार । काल बंध में गाँचा क' में जा। दुवार कड़ी। प्रकार कड़ीर छ

कारः का करेवा होता,—के कीर होता,—के गाल में समाता,—जा जातः

मृत्यू की प्राप्त होता । कार्य--- निस वासून वे वर्ष नाही सा सिंद करण न कार्य कार्य प्रयास--- क्वांस १६० का स कर प्रवास प्रवास कार्य कार्य कार्य कार्य १९८० क -- सुसकी ५१६८ करण कार्य होर्सी सुन वारी १९८० (वा/--- सुकसी ५६० , कार्य किया कार्य कार्य-वास स रामाय आया, कर्य कार्य क्या वर्षा क्यांस कार्य की में रामांक -शुरुकोछ, १५९ जो क्यांस क्या कार्य के तम राग बह क्या कियारी क्यां का भीग क्यां क्यांस--- हिन्दीस १६०

(गमा- नशः-—काल के मृत में कानाः- काल-कक रिक हानाः)

काल का बेटा प्रकारना, - बोटी प्रकारना, जायने सामग्रा,-- स्वितं प्रवासीना -- स्वितं प्राचनित् -- व्यितं प्राचित्रना

माम निकट होनी । धर्मात—सब अस जुना और आहि गय न साथै गीट । काम जहां किए हमते अनु नोपालि शोमा बीए (क्षेत्री) ह्यहाऽ—कथीर १० फ्योग वहां सर्वत है काम गृहें का देश (क्योर ह्यहाऽ—क्योर क्ष्म स्वतृ केति भाग करि हरिको काम किया निश्च हमार हमार्थ सुरु कार

मूर ६० , भव तक बाल मीम् पर जान्य) राम् क मूरामी १६६ वधा नेता करण हो के कि पर जान राग है रे पामा प्रमाण—गामा दाल. (२०१, जब लगां पाल और जून जार्च कर कि की काल में कर वाली औत्तर—हरिशीय, ६) तके है जूर बीर करी बाहब दाल है नामा भागी जिस पर जिला—हरिजीय, बी, बाल इसके मिर पर जान गां। है राग्य , प्रमाद १६६ हैन का मधान जाना नव प्रशित्तरहरूं हूं , मून ,

करम का गान, प्राप्त

म के प्रथम अन्यस्य अस्य तावति वृद्धिताम् ॥ १ ह १ कालका १ वर्षाः करी १० सही १ क्षेत्रं प्रकार प्रथम र अस्य स्थापनि विकास १ वर्षाः १ प्रकार होस्स्ट्रिप् सेन्द्रका मुख्य क्षेत्र स्थापन निवासका बह स्वती येथी का ज्वलन सब्ध प्रत्यक्ष प्रमाण देवा शामाल- संवस्ति । १६२८ वास के दास संज कीत तथा (सुमतेल--हां(सोस, प्राप्त

कान का वर्षना होता

काल का काडी प्रकारना १४ काल का केश प्रकारना

काल का पाश रे॰ काल का साम

काय का मर माधना

काट का सामने नावना है। काट का केट पकड़ना काम का सिर पर नहें होना है। काम का केट पकड़ना

काल का मिर पर बदबा

मन्यू निकट शीना ६ अथाग---क्य क्यारे पूरा काम वा परिवा निक वर्शिकायः क्योर प्रताठ--कर्तार, ३९६)

काल का लिए पर बाधना देश काल का केल पेकरना काल का लिए पर पितना पेश काल का केंद्र। पेकटना

कालकृद्ध मुंध शोना

सन्यतं कर्भावी होता । प्रयोग—नीरमपीर स्थानं यतं साही । कानकृत्वसं प्रयोग साही संस्थतं (बाल)—नुलक्षी, ३०३)

काल के कीर होता

🐪 चंगल का कलवा होना

कार के गाल में समाना

र काल का कल्या हाता

काल के मूंत में दालना

ार करना होता. पानि को राज अलग सैट्स श्वास स्टेट करो तोर राज अन्ति होत्सीच् उपू (पमा॰ मुहा॰--काल के बास में बहलवा)

काल के बहा होता

मृहयू के जिसार होजाँ। प्रयोग—नाम सस्य संकार प्रयु समा बाल वस लेकि (रामवर्श्यू)— दुलसी, ६३५.

काल का जाना

वै॰ काल का कलेगा द्वीना

कील खढ़ सामा

काल ला लगना

अन्यन्त परिषय नगना प्रशास-नगरी जल नगन ना काय सी लगत सामी सहद रहती जानी वह विषय कानी जान को भूपन ग्रेडा०-न्यूपण, २४१

काल स्वित्यर फिरना

कास का केश प्रकाला

काल मिर पर बड़ा होता

दें। काम का केश वश्तका

काल मिर पर राजत।

देश काल का केश पकड़ना

काल होक लाता

प्रमण्डाती मन्य को बुलाना । प्रशत च्यूप्त को डाक् हारि यम् सावा (शम० वा —तुलसी ३५०

काम्य होना

भारत के समान पानक होता। प्रजान—गर्द किल आहे सब बृधि हती। भी भा काम हत्य के नती घटण—आदिसी पूर्ता; प्रोहि बिलीकु तोर वा करकू (११म० ज --शुलसी, —१५६), कीन है यह दससे से सोच नत दे या कि सतपन के काल (सुमरोठ--हरिसीध, १२२

कालक्षेप करना

(१) समय विताला । प्रकाद—अर्थ आपके शक से नगर हुआ यह गरीर यून में कानक्षण करे और बाप कर नग की शकती चुन (गाउल ग्रंथा)—गायल दान, ७००

(२) देर करना :

बारका अक्षर क्षेत्र बराबर

अनम्ब होता । प्रथाम -- उन्हीं के माने अपने यह हमारे प्रश

O P 185

काला कानत

श्रीकरण २० दियात । प्रवास-दन काल कानुना के वृत म यह बीर कर ही क्या सकते हैं (ग्रीदान-प्रेमबंद,१७५)

कारत कारत

मध्य कारन । प्रयोग न्द्रवह महीर सुन। अपनी ही कहें प्री कार्र कार्ड (सुर माठ-सुर, १३६१,

(नवा॰ नृहा॰—कामा कारमा)

कारता स्रोप

पथना कोर । प्रयोग—में क्याने आवशे का बाबा अकर कर्कामा, वाहे बाहर में, वाह करकार में, वाहे काला और में पूछ को पपने क्या में काथ है (रंग० (२)—प्रेथबंद, उपक); बना कर बाढ़ तो को काले बोद की सुखा वह बनी (सुठ सुठ—सुदर्जन, १६८)

काला दिल

कृतिक स्थाभाव । अयोग-कासांगिक अर्थ में औ कार्य राज्य के भारती का अब डोगा है यही कार्य कार्यात का अब होता है। मेरेंठ - गुसाबठ क्या

कान्ता नाग दोना

अल्बन कृष्ट होना । प्रयोग--कृत्या काला नाव है जिसके कार का बंतर नहीं मोदान--प्रेमनट ११६ , उत्तर के जना मतनत कहर से काला नाम कंटल--दैठ सठ, ३१४

काना पार्गर

वाश्चेषत्र कारावस्य । प्रयोग--कार्क पाती भी भेजता है इंग्रज, तो स्वाय की बातिए अध्या-दैव सव, २४७), महत्त्व भी बात को के निए यह और होती बेटों को कार्क-पाती बा रच्य मिना स्टिश्च--ग्रेमचंट, १७

कान्त्रा बाजग

कार बाजार, कोरी में किया हुआ ब्याधार । प्रयोग महत्त्विक वर्ष में की कार्य दिन के बादमी का असे होता है कही कहेंचे बाजारका असे हाना है मेरें०---पुलाबक, सह



12.5

का भी करना

(१) जनगरित होकर बाधा । जनेन —बाके जिनमें बान नेन कार्म, करिया भार करि वाक्षि संपत्ते (एक्टर ग्री)—सुनती, ६१४०, हम दिनी तरह नरवर्षी वर्ष ही बाह्य नक्ष्में प्रश्ने नेक पूर्वा की उस नजानक रिनि को बाना सूज वर्ष विद्या ने कार्य (महूळ निक—कार भ्या 180 (४) हुए होगा।

का विकास समा ।।

महत्वाकी में बारका कुट रिवान नारक व रहना । स्वीक---में बर्गन नावी कर्न महत्वी क्षेत्र वर्गद विकि वट्ट क्या एक्ष्मी क्योर प्रकार कर्माद रहता मो भाग कर महिद में मांच कुछ वर्गी प्रशास क्षित्र स्वामित्र प्रकार करने क्षांच्या प्रशास काम क्षेत्र वर्गी वर्ग नेतीन स्वीचीय हुए

बर्ताच्या भूत्रमा

कारक विश्वति । कार्यक असी व रेटकर अस्तात्तात्त्व भाषा के प्रश्न भाषी आणि आर्थक (विश्वति १५६

काली कालरेर कर कुलरार रोग म बाहनर अविवर्तनोत्र केमार्च । प्रश्नाक कुलरान करने कार्यात है वर्ष काल्या करने कुलरान करने कार्यात है

कार्मा कात्म

कृष्याचे । अवीतः वा चैदः वात्राः को प्रत्येतः करतृतः है कृष्टियः चित्राता अपूर्वः विकासतः क्षण कृष्याच्यः (यह वात्रः बाजने अपूर्वः कार्यो करतृतः चय तक्ष्याच हान्यः अपूर्वः के एष्ट न्यद्रमध्यासी कृष्यः

कार्टी विज्ञाद है वास दर्श दाना

कृते कोचा की कृती भी भी चाला । चक्का—ताले व सरीक हुता, चलका माधान बाती गण नेता अल्का हूँ । काली विस्तक में साम को हो समा नोटान—बेम्बर, क्या-

कारणे शहर

कृतिहरू प्रधान प्रतिवृक्ष क्षेत्र एक स्टब्स स्थान कृतिहरू है पर गांद्य कृत कार का कर है है है है प्रसाद पुत्र

कारते छाता

बराजे बरोखी

बहुत हुन है करोब-स्थान है से वस सभी से, अब डॉर गाएँ बोलॉब सूठ से ब-सू अप्टब्स, से बाद पड़ा पड़े बार बामें भोगों बचा गार्ज मेरिय पूर्ण मेरे मेरे हैं में ही दिश करों का सम्बो । दिन बन्न भी मेरे मेरे हैं बार बार बार करों में बार मार्ग मेरे मेरे में ने ना मी बार बार कोती हुन बाब स्थान से किनारे माहर हैंड है पद्स्त से पंच पद्स्त सम्बो, हुन

कामे हाना

वृष्टे और वृष्ट होता : वर्गत-नृष्टार नृष्ट परं तक तिवारी, वर्श्व मुझ सह साह कुठ क्षाठ क्षा प्रशास

बाधी-बारवह जेता

 (०) काओं से एका करकाता लाग्यक्तपुर काला । संधीत —
 व पात पात काल काल को । रजन मंत्री काली सुरु सांक यूप अग्रह

र रेश बहुत दुख महत्ता ।

किनमें पार्टर होता.

क्यों निवर्त होती । प्रयोक-व्यापन है, देखरी में समझ रिका ही कि यह कियमें पानी में हैं में लब (१/-मेंम बंद, १८४) में के रिकार की पि के मस्तरन में जो बात कही भी यह रेक्ट पर १८४४ को कि महोद कियमें बहुई दानी में है से की कहा बारी हरूद

विकास के बार्ड

(१) रण मनव पाने वाचा ध्यांतन । ध्यांत — वेरे-प्रेस रियाय के ठोरों ठो घोष वीरण प्रमुद्ध करती हैती दी नग्दम्म--वैस्थिद १७० , बहु वाचा में कहना प्राह्मा बाह वीरद तीमें योग की पुरुषों के दोने बन कर ती रहा माने हैं हमक दे से पूछत में रियान कर र प्रदूष प्राहम न्यूमक हम्मी नगद

। भवा न्या - जिलाको करिये

किताब का हाला । कार हाला

प विश्व को स्थान परश प्रमुख्या था छ। इसार का का का के का छा का स्थान को साम क्षा के रेड विश्व के का का का का स्थान के का का किया के का प्रमुख्या के कि जा का की की का का का किया



भीप निर्माण होत्तर काली गाएंच पुरतक बाटना कुछ दिया कींच १ अमृद्य _{निर्म}

किनाव काट अस्ता के किनाव का जाना

विज्ञान प्रश्ना, कारमा, किमान कार कार करना रिसी वाम से पूर ही रहना, विकृत होना । अनेक--वीप अब गृश्मि के बारे की बनाइ में के भी विज्ञानकारी कर राष्ट्र की कीरोल- का नोठ, १३१), इन दिन के गुन्हारे जुना पृथ्त किमान करने को नई सामठ--कोनेन्द्र ६३ , जिल भाग क्यांत के पीथ न हाथ जोड़े नहीं किने, उनने कांत्र में सा विज्ञार। कमा (गृत्ति) प्रशाद कु - गृत्ति। २००); क्यां से सी किमार। कमा (गृत्ति) प्रशाद कु - गृत्ति। २००); क्यां

भित्रामा कलका

ा किनामा करना

फिनाराक्ष्मी करना

४ किलाम करता

विज्ञारा जिल्ला

मृतिक नियमा । प्रमान-स्थाप पृथा में पृथ्व करी निर्वत क थिये दिलागर धारण कहा बार्च वर्ग यह रखकात दन सामा (कृतक दिनको १३१

किसारा काफ नजर भरना

धावसम्बद्धाः हानी निर्देशकः वास वद्यनाः । वधीय-स्मृत्याः मै बह्य-किसारा सामः सवत् का रहाः है विद्योकः निरम्यः, रेभरे

कियारे का गुफ

किसी प्रमार में देशकों को स्थाप पर नाम बन्या स्थाप साही होंसे प्रशाह में कभी भी नहरंग । अंग साम भी देश ही, क्या में प्रमारणी साथ । कृत में तृत्व अप नदेश संसाध— नदेश, एका

कितारे का पेर

हैतनास व रिवर श्रीमा सम्प्राप होता था का स्वता । सद्ग्रम पृथ्य है जा दिल्ला का स्वया का है है । यह वस पुरुष हो रहे । जात दिल को ता दिल के एक्ट देवना सर्था, पृथ्व । यहा हम बचार के सम्ब है पृथ्य भूता मुख्य का हुआत रहत कोई काम हो कर का नह अ

पीर्क पूर्व १४८ होता क्षेत्री--निवल, यय) -विकास प्रांत्री का होता

- (१) व गरंग, बन्न होता । अरोक--वित्त को विभनों तो विनाध नकी बुक देवन ही दृष्टि भागत ही जात के १:--मार्ग्येन्ट्र, प्रश्रेष
- (२) द्वर रहना । अलेल—पण सो हम मुख्य में मिलूर मन्दर हनारी में तमें । यह रहे हम खार हुए वस में दिनार ही असे परिश्वन-व्यक्ति श्रम, पर

विकास स्थान

वनार्व व पर वर्ष्ट्रवना समान्त होता । प्रयोज-वीते कीत्र वर्ष व हात्रा वह तव ती वित्राय वसने वना अंतर्तित -र्गाट देश, १२७ , काली तो कृत्य हुई करणहा के वित्राय ही वर्ष, वक वर्ष है किसाल-विशिष्ठ, ३६,

किया कारण बिहा में विकास का विकास, विमें करावे का करती किरमा का केरना

नव परिचया का क्यान नाट डीना का कर देवा । बतीन ---हर रे वाटा दिया करावा विद्वी में किया क्या नानक है -- के-वट क्या, कह किया करावा पर बाली किया रहा है परिदेश- वेसू १७३

(नगा- महा--विश्वा कार्या काव्य कार्या,

चित्रे काचे का पानी फिल्मा का फैला के किया करावा सिद्दों में जिल्ला

क्रिक्टिक्ट होना

सर्वारका होना । इस्तेष न्द्र कोक्टर साहब में वैश्वित म किस्तान-दिविक्ति तहुव अवाद है। विशेषक वारक की किर्याको हो (साम्य हान-वेशक्ट, कृ., कहर हरक स निक्रम गर्द हो बड़ी किर्याकों होती मा—वीप्रक, इस्त

चित्रचित्र क्यातः

क्य सम्बद्ध के कुका होता । प्रमाय -वर्ष क्योर जान करती की, किकिकिय की कुकाई क्योर प्रमाण-करीन, यह

विकास देशा

विकास करा बारता । अयोग ही भिन्नक मार्न नगरे ह वी सामन निन्दा विकास संबंधि केंद्रम प्रमाण-केंद्रम इत , बारता कराने द्वार नग, यु दे गई। विकास सामेश-गूप क्या (सथाः पुडाः---कियाड् सृष्का ---सगाना)

किसका मुंद है।

किसका माहन है। प्रशास-किसी का मूँग की यह जना है हमारे यू ह पर कार्य इसाठ-इसाठ. २६

किस केलकी हमी होगा

धारपुन मुख्य । प्रयोग--्यूनरे किस सेनडी मुखी हैं, जुगावर पत चीन है कि पाचर ो सोम बनावी है की को इस क पुष विद्यालती हैं कर पीठ--एट लांठ किए, घंड, वह कर तो पन की उपेशा कर ही नहें सकते. तुम विभ संख्य की मूखी ही है कर्रठ--प्रमाधदाक्ष नाहरी और अपनो की प्रमाह नहीं की तो स विश्व संख्य की मुखी है क्रिक्ट-चीठ क्रिंडियरो, को इसम की साहशी की हर्ष्य तब सिन्ट आती है लोगा विम सोच की सबी है क्रिक्ट --सीक्षक क्रिक्ट

(गमा) महरू-किस गर्था के, किस गर्या के अपूर्य. विश्व बाग का बच्छा किस बाग की मना।

क्रिय विवर्तर में होता - बरन में दश्तर

मुख्य होता अनेर मृत्य म होता । प्रयोग—करन्ते के बार मौकी करी भारते अधि है कहा, गोप विक्रि काची स्टब्स् पैपाठ—सन्दे १६% , जब गांस सोह प्रपत्ने की नैधार है जिनके निवे समार में सुख ही मुख्य है या पित हम जिल शिक्ती मही नगठ हरू फेलबंद ३३%

किस पाट लगना

म जान नवा गरि होता । प्रयास-व्यवस्य ही जान वाच ०० मनी वया गरित हुई होती किस वाच गरा। होता। यहन इनवेद १६६

किम निर्देशक का नाम

विश्व न स्विधिम म होता । प्रयोग—अस मा एक होता वि ताई हम का शतन है। जहां कि उत्योग और प्रधारना वस विश्वा का नाम है। अंश्वा छा व से क्ष्यू ६०० को समय बहा न हिन्दुस्ताओं समा छ। स्वाबाय विभाव गए। का नाम है यह नहीं बासन व विश्वा छुट ० विद्या का नाम नुरुष्ठ आहे या से अस्त स्वाबा विद्या समयना है सर्वात विश्व विद्या है। त्या है। विज्ञ द नमीमान है सर्वात विभ विद्या है। त्या है। विज्ञ द नमीमान है सर्वात विभ विद्या है। त्या है। विज्ञ द

किस बात में होता देव किस मिनती में दोना

किम मूंड मे

वश्या जनक स्थान होती । प्रथास—वे कल किल मृह् में ब बहुरी आद्धारा ? सिद्दर्य-लड़ मिय, १६०)

किशी की प्रांची देखना

किसी दूसरे के दुर्श्टन्स्स में विकास करना । प्रयोग-- घर वेगी श्रावों में देस नेगी बात जूल श्रावणी कुरियन हूं प जी-कंड्र हो आवशा (कविता--प्रशाद १९ , राजा भीव अपने दूजी और कवितों की साजों से देखा राजने हैं (विदेश -- पुरादक क्ष

कियां को भीर देखना

विको का अध्यक्ष भाइता । प्रयोग न्यामी विकास गाँउ इन्म्यो नहर नदा, कृषा दिल्लवेदा काहू तिन देखें काह् वो स्टब्स करिस्ट-सन्तरम् १७३

किसी को बात पर बहता

किनों के बद्ध प्रत्मात काम करना। प्रयोग—अधिन की जान पर चन्नों के गया ही होता है (क्षान्य—यशपाल, १०६

कियां के कहे अनुमार उहना-बंहना

ियी के पूरी तरह बान में होना । हमोगः—बहु की बात उठन-बैटने बाने क्षेट्र की कृती निरुप्त में नहीं वेचा मकती बहु (पातीक रेणु अप्रद

कियों के मान्ये बेरमा

विकी के काठ कर कर केता । प्रयोग—नृष्टे क्यां, बहुं भर नायका, किसी और के भीते बैठ बाता मिलेश्रंट --प्रसबंद, १४३

कियाँ के बाव का इक्राया होता.

भिन्नी की परभाद होती। प्रयोग-स्थानि ही एक गणार्थाट का गोट कोट का कार का एक्स हमानी साद प्रेट ट सारमञ्जू ४९४

किया के शाले वाला अ गंग्ला

कोई सन्काप न राजना । प्राप्तिः में द्वार प्राप्ति सन सह इसके मुक्तने प्रदान परिशे पानी स्मृत साठ भूग ३४५६



किसी पर जाना

िसी की तरह होना । प्रयोग—विभक्षण अपने निकास मध्या पर गई है (धरती)—वि० प्र०, ३४

किमी पर रक्तकर

फिली से दूर व होना

गय के कपनत्य होना । अयोग—बह कानक के जिल प्रसिद्ध की फिर भी बह कियो ने दूर प्रशिकी अस्तीय— विकास प्रमुख

किस्वात के धर्मा

फिल्म्यत प्यतना, -चमकता, जागना

अन्ये दिन आनाः । प्रयोग—हन भी भानि आति यो स्तुराई रिमाना नाहते हैं कि बाइक नई वर उन प्रय (किन्द्र) प्रदोध की कर्रा विश्वत तर्ग माननो ना पर्यो है साजसूछ बाठ सदद० २० जाहारी विश्वत यन गर (बोद्रीठ—निश्चला, १९०); आप हते कान प्रकृतिय थीर कृतिय कि मात निज के अन्यर जन्मर बापकी किन्यत समकती है या नहीं है (बैंटरे ऑस्क, १४७

किस्मान बकर में शोना —सो आना

कृते किन होता. दुर्जाक होता । यथोक—मेरी किन्यत है सरक्ष्य में विगदे जान्य-विनारे हैं (जुर-अक. ४). नार कीत कहा प्राप्त है, किन्यत हो जब कोई है दूरक अक.

ä

(मवार पत्राः — सिम्मत कनदमा, — विवद्गा)

किन्यत समकता

दे॰ कि*स्*मत खुलना

किम्मन जायना

द_{्र किम्मल} खुरना

किम्बद सहना

भाग सनगर लेना प्रतीय- और मनर कर विस्पत

सन् गई तो किए भी तथार का दिन की कुछ ज्यादा नहीं चैतरें --- जाक, १३३०, सकर की चानुस हो कथा कि दा को क्षेत्र इनका कारणन दर अवन नड गई, आह चय पित चित्रका संबद्ध करी कियन का आहा पह जाने हैं सिसी — निसासा १२४

किन्यम भी जाना ३० किन्यस संबक्त में होना

कांच या काचाई उद्यालका,-केंकना

सरनामी गरना । सराय-नाम लो यह भीर भी भिन्नर होका को वह कंकेंग्री (मानकाई) - ग्रेमकंट, २६५); तुम को वर्ग कक्कालो यह क्यांक औनक-नांक एक २७) दिकाको मन कर मेकापन, तीच यन कीच वर्गो क्यांके मर्मक-सांकोध कड़

कीच उदागा

काम क्रमा

१० क्षांच उत्पादना

क्रीचड

दुरं लाइस्म दिवाने । गंदी विचलि । प्राप्तीय—मैं नगरें सीनव में ब्रोड़ कर नहीं का सकता (वाले>—हें> हें> हैंदिन, देश (२) बहुत नदा ।

काबड़ केकमा दे॰ काब उछासमा

क्षांबद में समीरमा

क्षीबङ में स्थपप होना

कृते कर्क में का होता । वसीय—बहां सभी थुने सीयद में सन्दर्भ रेमवा बाहरे हैं ,पेटे किनासायस्य रहते में ही दर्शका स्वार्ष है जान्य हो—ग्रेमबद, १६।

क्रीका होना

किसी रिचनित काम या बात में पूरी तपत नियम होगा । प्रमोक —यो कि मुख में बने गई की दे ने पर देख हुक उटान भी (कोनंक- सुरिचीय, प्रमा

33

O P-185

कांदर निकासना

यात का काकोश पूर होना । बयोन--विक संबद्ध नव विकल नके कीता जब कथद ही निकल न पानी है (बोसे) --हरिक्रोध १२७)

कीमत पूतना

ध पारत करता । सपीय-न्दर्भ जनमें राज मेंसे असते हरण यसे जिसकी सीमत अभी जीहरियों के बाजरय में हुनी ज बहुँ दी (प्रदेश प्रसान-प्रदेशक करते, २०४

(समा । मृत :--कामल आंकना,--प्रमाना)

कोल घुमाना

प्रेरित करना यस फेरना । प्रयोग-न्या पृत ना भीर प्रश्नना या कि जनगर की कीम क्यों कर भूपाई ना सकती है। स्थन (8)--प्रमुख्य, १५१

कृता ताथ में होना

किसी के बदा में होता । प्रयोग—कृता को हुकाने के जिल राजांत आया हो की कि किसी तिवादी या प्रशासको कता ही बाद कृती दनके हाथ में रहे (वाटी०- निवासा, १००) कृती बहुबल के हाथों में रहेती गोदान—प्रेमकट, १७२)

भूंजी होना

शास्त्र होना, प्राचार या नावन होना । प्रयोग—उनको उपन्यित विभी जनसे की नफनता की कं.बी है (क्यंच —प्रेमक्ट, २१६)

स्दो करना

बहुन गीटमा । प्रयोग---स्थट जिंह बोच एई व कि अगसान को भारपोर हो प्रयम नो इन अग्या की जूब कुन्दा क। आय संसोठ - प्रमानंद, पत्र

कुआ कोतमा

नसमान पह काला। प्रचीत हो को बाद कप सबना।
 पर पह सो गठ किति लीह कप पर्व दिन्छक कुलमी
 शुद्ध - उत्तम्मन शासना दिन क बानी और का गह म हुन्छ।
 स संस्कृति क्षित्रहेश, हुन

- () क्रीविदार के लिए प्रमुख करना
 - ३ प्रियन्तं करता ।

कुत्रा सोदना और पार्त पंतर

स्वयं प्रयास्त हरकः काम बन्ताना । धर्मागः वशः पर देखकः भन्ने फरी । सब कोई केमान कामा नहीं बटा है । बाद हा क्जा ओटना और पानी पीना है (सम्बद्ध (१)—पेसपदः २५५)

कुशरं भाकता

हैरान हता। प्रधान—नुम प्रयद् आकी दिना वेते हम किस तुरुह में को कुछा हम कापते बोलक— हरियाँथ, १४१

कुश्रां बताना

भगा बताना । प्रयोग—धपनी काज नवारी श्रुप सुनि हमें बनावन बुक सुरु सारु—सा, ४३८६) (नमा» मृतार—कु**जां विस्ताना**}

कुए का म्वासे के वास जाना

जिस बालू की चार हो. इस बस्तू का चाह करने बालों के पास काना । प्रयोग--कायत के नेनाकों में यह से किया कि कृषा प्याम के पास चले, वाली अन्य विश्वित महत्वा चले के स्टाठ--भगठ वर्ग कृष

कृष' का बेंग,--मेरक, कृष संदूक

सक्ति विचार वाचर । अयोग—मोकि विसायम गमन क्षण्यक करायों (सार तर --मारतिन्द्र, श्रुप्त), केंगे ही सब में में मो तम कुए के बेहक, बाद के रुप्पू, रियक के बंगा राम ही रहें तो तमारी कमकात कामकारी किए कमकाती है भार तय है रहें तो तमारी कमकात कामकारी किए कमकाती है भार तय तो गहोंगे ? (तए मारा-देश मारा तक परिवार के क्षण को गहोंगे ? (तए मारा-देश मारा के क्षण को क्षण के कमकों से बहुत अपर है (प्रद्य पराय---ध्रद्य अपर), देश्य), हम कुप के बेंग है हा अपर है (प्रद्य पराय---ध्रद्य अपर), देश्य), हम कुप के बेंग है हा अपर है (प्रद्य पराय---ध्रद्य अपर), देश्य), हम कुप के बेंग है हा अपर हमा कम्पूर बाह कर को (प्रताय--देणू, १२)

कृप का मेरक रेशकृप का बैग

क्षं से विस्ता पडना

(१) बिनार का प्रत्य होना दिलार हाना गर भी स्थान क्ला लग निरम अध्यक्ष हिन्दा इत्य कृत परन वृद्धी प्रदेश करीर ३ ही बाद प्राहित क्ष्य समाने पर्ने संबुधीत सार्टा सुध साठ सूर्व ४३०५ औड़ गेर्ड कर समान प्रकार का यह क्षित और कृत पर क्रिया होता है उस प्रकार का सह स्थान क्ष्य कर सारी उस परि स्थान क्ष्मी १३७ प्रकार कृत नह क्ष्य नह स्थान स्थान से देश रहे हैं कि हिन्द मानि की रूपी कुछ में गिरी हुई है (सेवाध-प्रेमचंद, ६२)

(२) वहां से बबा करट राजा ।

कृष' में कालना

- (१) वर्षेक्षर बाद में छोड़ देश । वर्षाम—वेने तो पृथ्यक कृष् में दाक देरे—धीर मृदेश पर पड़े हुए बाह व्यक्त उठा निर्म (शैयर (२) —अक्र य,२००
- (६) बच्ट कर बना या फेंब्र देना ।

कृष' में बकेलना

बहुन अहित करना । कप्ट देना । प्रयोग-न्हों के नेह् अगरि कृव मेली । सीचे काद क्रांग्ली बेली (१९६५--जायमी ३५१० क तृष्टा प्रश्यक्ष (नन्दी बानी गण नद्य प्रेंशांश नंद्रक १६५ नधन क्षत्र कण व दक्ष्म दिया और क्या कहाँ कर्मक-प्रसंद्ध, २०)

कृष' में पड़ना ३० कृष' में विकास

भूष' में पड़ा व्यक्ति

अज्ञान में प्रशा व्यक्ति । प्रशेव—इसको तो वे मन्त्र लाग कृष् में पिदा बतनाते हैं (truto deto—truto दास. €36

कुषल देवा

तर में नाम कर देना । प्रथम स्थिम प्रधानकानी जनका को में जिलीकार, शास्त्रकेदार ही कृतन दिया करने (शासीक-मूंब दर्मा १३०)

(समाव मुहाव-क्षास हासना)

क्षलं जाना

दुर्मात होती । प्रणीत - जन को कच कुछ कचक वह र सिर सभी तुम बेतरह कुँचे सबै (वीसै०—हरिऔध, ७२)

कुछ काती न आना

(१) अवर्णनीय होना । भयोग—कहा रही रुम् रहत न भागे जनती जो दुल यावी (१० सा०—११८, ४०९१) (२) उत्तर न दे पाता । अशोग—गयत महस्य गाँह स्था गाँह आबा (गम० (म)—तुससी, ३९९)

(समाव मुहर०-कुछ कहते व कतना)

कुछ दिनोंका बेहमान

धरवाची प्रवीय मुक्ती समाही रहा है कि वह आहर

प्यार, बानन्त के दिन कुछ ही दिनों के बेहसान है (सु० मु०—सुदर्शन २६०)

कुछ न गांडना,—सिमना,—समस्ता

काई महत्त्व था बान व दना । प्रयोग—रहिषण सी न क्ष्यु वर्ग नामों आप देन (१होम कवि०—रहोम, ३६); किमी को कुछ न नगभता था (६ श्री०—कं शां०, ६१); मुस्पूर में रहना था और बपने कपन्य के दार्ग गर्म में किसी को व निममा था (देम सा०—ह० हां०, यय); देवनागी बचरी के प्रवत्त्र राजा शिक्यभा को साथ कुछ गर्दन ही नहीं है गुंठ निक—साठ मुठ गुंठ, ६२.

कुछ व गिनवा

🕫 कुछ न गांउना

कुछ न समधना

🦥 कुछ न गांडना

कुछ होता

कृत्य महत्त्वपूर्ण होता । प्रवीम-कोई दिन वा कि हम पूर्व के, नहीं, बहुत कुछ के (बुमतें) (मृत)-हर्रियोध, १)

कुटुंब जिलामा,—पासमा

कुरुंब दुवाना

कुटब को नाम करना । प्रशंत— मदा वदा किरहि वरिः मानी समान कर व प्रकार्यह कदोर ग्रेहा० कदीर ३८३

कृदुंब पामना र॰ कुरुंब जिलामा

कुढांच सारकां

- (१) बहुत प्रहित करना । प्रयोग—निर पृति लीन्ह उमास अनि प्रदेशि भोडि कुठाय (११२० (अ)—चुलस).
- (२) लें में क्यान पर बारना बहा बहुन करन ही।

कुठाराधान करना

(१) कारव करना—श्राचान करना । प्रपश्य—मेरे गया

कुडारी होना

क्रमतो के प्रेम पर सूच क्ष्ट्रेय कृतायामाल करते गाँ हो। 'भिन्नाठ-कोश्तिक, २०७)

(०) बहुए सहित करनर ।

कुढारी होना

श्रीनक्ट करके बाला होना । प्रजीत---नीइ पर विनय गीनः बैसारी जॉन दिशकर कुल होति कुठावी (१००० (४)--सुसकी, १०४०

कुछ की पूंछ सीधी न होना

स्वामान में परिवर्णन माहीका । प्रयोग — उनके तुम कियाना हो देवी पर १० गरमारा द्यापन । दिला परेचा असे की मूच कभी बीधी नहीं दोनी अंगठ हरू —संस्थित, १४वर

कुरो की मीन मरना

बहुत बुरी शरह से बरना । प्रयोग—है अनर जीना निव सोबए दिया का कि संग्रहम जीन कुछ की परं कुल्लैक— हरिप्रीय, २५

कुछे को यी न प्रकार

त्रित कभी कोई प्रश्री कीय न सिनी हो उने उनका इन हो उपसीय कानां न भागा । प्रश्री—नया करने है कुन्ति यह बैठने ही विभाग विभव नये । कुने को की बादे ही प्रकार है सुदार (२/—यहायान, २५-२)

कृदांध

हर। चनसर । प्रथम करता तथाय भाग विस्ताती इस्म्हण्या, समरी बसाय ही बसाय में बजारिक (प्रया) कविताल-प्रमाण, ३०)

कृषध का के रक्षना

कुम्हलाना

उद्यास या दू जो होता मुंग्रीतो । प्रणीय — गण्य गणिका यात करवी है स्थास या मृश्याद मृश्या सुर ३०४३ है गहा म जा नाहता गय जो अर्थत का सह देख मुग्रीयायो हुआ मुंग्रीक मुश्योध है जाल स्वारी कुल्ला गई है स्थान प्रसाद ३

कुम्हद प्रतिया होता

सञ्चार होता प्रकार राजा प्रवास प्रशाह र वीरका

कोड़ काहीं । से नवजनी देखि करि आही (गमे) (वास) गुरुक्तो २७९

कुरमा शोउना

कुरमा पर बंदना,—सिनदा

- (१) व्यक्तिकार विकता । प्रयोग—नया काले हैं, कुली यर बंडले ही जियान विवह तथ सूडाठ (२) —वहायाल. २६.३
- (व) क्षत्राम होना—स्थाम होना । प्रमाग—वह-क्षे क्षत्रेय हारिया उनके यहां कालं के, बाट साहब के पहां उन्ने कुरनी किसमी की पूर्वण—अंग संक, प्रप्तः
- (३) वर सिवता । प्रयोग---वक दिन तुम सुक्त बोडयुसर
 की कुमी पर कंड देवांगी (वैतरे---प्रश्न, १५)

कुरमी जिस्ता १८ कुरमा पर बैटनर

कुछ का दोधक

बाब का स्टॉक्ट । प्रयोग---राह के किए कुल्ली-नंध के कई रीपक बुक्तए वर है कुलीव--निराह्म, 226-

कुल का देशक बुध्यना का बुध्यान। निर्वम होना वा बरमा । प्रयोग —हाव जन्माने किस बड़े बुध का वीवक काम इसने बुध्यना है (मान्यूबाट (१) — मार्थन्यु, १२१)

कृत्य का नाम ईमाना, कृत्य करेगा कृत की वर्धश की क्ष्य करता। प्रयोग—वानु भूत होड एक कृत कीम (स्थित के —तुनती क्ष्यो), इसता कर हुक्य करते क्ष्य नी कर ही कार्य कुन को बोरना पह सरा क्ष्म नर्ग है राध - एग'व सकार क्षम, ब्रद्धिश को नुष्णा क्षम क्ष्य कारत (तिन कृत नहन क्ष्माहकी सिक्सन प्रथा) । ध न दान क्ष्य

कृत का साल

मृत्यसम्बद्धाः नः प्रतिसद्धाः स्कृतः अस्त्यः । प्रवाणः । ने स स्रतः स्वरूप्तानः कर्णनावः स्वरूपः स्वरूपः स्वरूपः स्वरूपः प्राप्ताः स्वरूप्तानः । स्वरूपः स्वरूपः स्वरूपः स्वरूपः

कुछ की बाक होना

हुन में मान प्रतिरहा रनाय स्थानकाया ध्वस्ति । प्रयास = य सुन यो कि साम्र कुल की है रह यकी नाम्य नाम्य रचने से ,शीसक -सुरियोध, कह

कुल को रजशा

हुन की बान वर्गादा बनाए रकता । घटोस—जीवन चयन रोट हे गर निकार रकात , सन इत्यान आ पूर धरे करि शोवन मह साम परण—जायतीः १६००)

कुल क्षोधन होना, चाना दोना,⇔उपलक होना, —बोरन होना

कुल की मर्थादा की क्या करने आका । क्योग—कोकिस मृत्यु संद पह बामचु । कृष्टिम कासदम निव दुन पानक (बाम० (बाम, —तुन्सी, ६७९ ; सक वर कार्ट निवक कुन पानी (बाम० (ले) —तुनस्ती, ६९६); मृता वद वृष्टवान की गृल मावनशारी सुव साठ गुर २३२४ हम वर्णन वद कहत गांव में सीर नाम का चरिहै (गांधा० प्रेटा०—रोधा० गास, ४४

(धमान मुहान अक्रुट कर्लक होना नाम्या होना)

कुल-घानी होता २० कुछ खोचन द्वीता

कुल बालक होना to कुल खोधन धीना

कुल-बीका, — लिलके, — दीपक देश की प्रतित्ता रहाने वानर । प्रयोग—ममाधार करि सो सबही पर गन्द नहा कि वह सुन राजा (190 % — मुलली, १८९१) साहज सगार विद्वान की अधार चीर सन पर र ने ना गान कुल की रूपा अपनश्काय अपने १६०): भी मुख दीएक कुलता है तो बाल भंनी बालों की दानी (मर्ग०—हरिकोध, १०६): वह तो बच लबी वर अपने यह सुन देन के बार भाव पर मुझ कुल मुद्द सुके और दारा मोर सम्भा को कुल का कुल म

पूज निरुक १० कु.स-४१का 34 ८ २ - ३५ कुल-दीपक दः कुल टीका कुट बारत होता दः कुर सावत होता कुट बारता दः कुट का साम हैसाला

कृत में करक रुगाना, कारित्य स्वामा,--राग स्थाना

वर्ष कृत करन करना जिसम कृष की बदनाती हो। प्रमाण — हरिय कर धाँत स्थार सहत्या । कृत करण मोह पार्वर काना (रामक करा, —शुंकसी, इंदर), बाहुमन होकर कृत में कानिक करा की (सैनेक—रोठ हाठ, २०), बानमी की मु एक दिन कृष में राम बसावर रहनी (निश्चर—हिठ प्रम, १०८

कृत में कारित माराना १८ कृत में कलक लगाना

कर में बता भारा

यस परम्परा होना । प्रयोग---मार्थ कुल जैनी चीन धाई, समी देशित मकार्थ (धु० सा०---मुर ४४॥९

कुछ है दास छमाना रे॰ कुछ है कर्लक छमाना कुछ है गीने बाम्स होगा

बराब होता । वर्षाय—गाव विमृत्य अम हात तृश्हारा रहा व बुल कोड रोधनहारा (राम० औ —सूलसी, ९५६)

कुछ बोलगा

सम्बान करना । अधीय-में तो बाब रात हो चहाई दे जिल कृत बोज देताहरूपेरिक राज्येन देनीहमाय की बहर ह

कुष्ट-कुट कर भग होता



बान क्यों कार-कृत की ज नहीं है जरा बृट-कृट पाओ धन (सुभते०--हरिक्षोध, १३८

कृषा का देवा

तब्द वा वर्षाद कर दंगा। प्रयोग—सम वत दरिष्ठ है इसकी नारी जायदाद की इसके कोवो ने कृषा कर दिया (मान् (१)—केमबद, १३५

कृष्ट्र संग्रह श्रीना

महा भूने होता। अयोग—क्या करते और ककर पर पत्तर कृत है सिर बारते क्या शक रहे (क्षेत्रः)—हर्रिऔध, ग्रंद

क्रमा

- (१) बद्ध वद्य कर पास करना और दाय करना । प्रशंत— बहता हम सोगीके बम पर ही कुश्ते के (मेलांक—रेष्ट्र, २०६) मग सहाव के प्रयोग कुर रहे ही न_्तिसती- प्रसंद्ध प्रयः
- (२) प्रमण होता ।

कृप संहक देश कुछ के बेंग

कृषा-कटाक्ष

कुथापूर्व कम । यसाग- जाम् क्या कटाच्यू सुर चारत वित्रच म सोद । राम पदारांश्य रुक्त सर्था मृजास्त्रि बोद स्राम् (स)—शुक्रसी, १०४५): राजियो मे केयर सर्था चारी तम उथके कृया-स्टाम वी मृहत्त्व रहती वी (योसी-चतुर्य, १३६

कृपा-दुग्दि बरमना

अन्तर लगा होती। प्रचान क्या गृहिस्ति केशीय तथा करि सरहाय आधा पदेश हासभी शुरु के क्या का क क्या किल हा साथ ता कर्य ही गाना का दूर क्या क प्रभाव प्रभावद हुआ

शुरुषाच्याच करता

धर्मारम् कर इता । धर्मामः नाहरारे त्रिश्वान कर नह और अन्दर्ग है कि मोर्टन कायदाद हरणारिक्य कर द्र । अस् धर्मचर्ष ।

फेट का जना बनना

सामी क्रियानि होनी क्रिम्भ गया के भीतर का गड हिन्दर जान कर प्रदेशिक दिन्द्रका कर प्रतिकार क≐ के कना इस गर्ग जीनक का गए प्रभु

केले के बगर में वेर

शक्के के पास में बया । प्रयोज—कहियों काय सूर के अभु भी केश पास अं। करि सुरु सारु—सूर १४८

केटी के लिए डीकरा नेज होता

नत्य या निर्वत्र के क्रपर सक का जन्माय करना । प्रयोग --धनाइ दादा भी विनद पते हैं । क्रेन्ट के निए द्यास क्रीकरा भी नेता हो तका । ये बना घटन करना है उसी का एन्ट है (गोदान- नेक्स्बद १३६

बेत्पर की क्यारी शीना

इसके को बुल पहुंचाने बाकी अंदर और सुक्तर कम्म् प्रक्षेत्र — को न कतुर को कियादी मी बना दी न कमा के निवक कुछ कर बके अनुसरित हरिक्षोध १३९

बेमरिया बाला यहनता

यह ६ लिए प्रस्तृत होता । प्रयोग—विनयो अपने प्राप्त ध्यारे हीं का कोच विनयो कोचर, प्रशेषिको और मुजर सम्बद्धान्य हो देवस्थित काने पहिला में (स्प- प्रविद्या

र्देश से

रोमियारी या देन है । प्रयोग—कथी-कथी धनल है उसमें युटमर हो जानी परन्तु संयक ऐसे केंद्रे ने बान करतार कि यह नान कथा (क काल-प्रसाद, 30

केंद्र काटना

कंद मृज्यामा । प्रयोश— सैने धन ही पन धननी आदि सी परंच कर रेक्ट्रा कि कंट करण्या प्रशासी पद्ध ता च्यार दिस प्रयोग के प्रयोग प्रयोग पान सिक्तारा प्रकारीमा करूर अध्याद देख

(समा० मृहर०—सेंस् अस्मार)

कांचनः

कम्द नेता । प्रभाश--नृथ नतो मृत्य नतेत्र-कीथ कर आरे बापने हो ? (मा--कीश्रक, १४४)

करेबा की आंब

सनाय के विभाग र प्रधान—क्या कर नव से कानक काणी काम को मान है करी होता कीलक—क्रिक्सीफ बंदर

कास सहसा

प्रतर मात्रम का हारा र प्रयोग । बद्धा विचा पुन को सपून

नहीं क्या कृती कोचा औ व भाव जुमा (क्षांसेo— हरिजीध ३२)

कोक-तर्ला

कोषः वंद होता

बभ्या होता । वयाम —को सह के-बहु क्लूनो को क्यों न तो यद कोल अर महे बोल०—हरियोध, २२५

कोन जांग से भरी रहता

पुण तथा पति का सुल गरेब बना गरना । प्रशःश—है बारे भाषनाय नह, यो हो कोल जो मध्य के नदी पूर्व । (वेरेल) —धुरिक्षोध, २२॥।

(यमा० मुहा०-कोच्च झांस से दंदा बोना)

कांश बारी जाना

समान स होता:) प्रयोग-स्वर गया यह व वयो जनसमे हो। वर्गी कई कोल यह नहीं याणी (मुनलेश-हर्गजीय, ५०)

शोदि उपाय करना

सहन प्रथाल करमा । प्रशंत—कोटिक जान कही जो उत्पी हम स वर्शन्हें वाहें (सुरु सार—सुर ४२३०) कहा कर्ड़ किस कोटि उपाया हहा व नागिह शंत्रि बाद्य रागक (सा)—सुनसी ५०३)

कोटि कल्प

रीर्थं काल सका : प्रामेश - असभाव्य के बरित शुहाए क्यप कोटि करित जाहि व बात (११२० वाल) - सुत्रसी, १५३

कोटि बदन से बखान न कर पाना

अनर्जनीय होता । प्रयोग---मृत्यस्या परकार अवानी बाद म कार्यिष्ट्र ययम प्रकारी (११६० वस्त) - सुलसी, ११३८

कोटे पर वैठना

वेज्या करना । प्रयोग—धरि ऐया ही करना होगा को धे भिन्नी कोठे पर भा बैट्रांगी कंताला प्रसाद ४७) (नमार पुहार- कोठे पर खडना)

कोड की साज

दुन पर हुन प्रधान नाम मा १६ ६ तस्त्र र र राज मारन काम के बाद निवादे (केसक) ३) — केसव, ३५५ क्त पर भी जो कहाँ भाषिक करें मिकाओं का हुआ ही। भीर में राष्ट्रमें भाष है प्रथमित—प्रव तक शिक्ष, १३२ , बांच की हो नाम हम है कर रहें किस सिय सिर जान सुभनाने। सने (बोलक—सुरिजीध, १४)

कोता कोता छःवतः

हर भ्यान देख सेना । प्रशेष—यन का कॉना-कीना श्वान रामा गया वैज्ञालीय (३)--चतुरः, १५ (नवार मुख्य--कोना कोना कोना कोका)

कोला विक जाता

निकेरन होता । प्रमोग—अपूर्वाण और वर्षश्रिका के आरे बांने विक पूर्व के । उन्हें नक्ष्मा ही नहीं गहीं भी देशकीय ---नाव राव, इस

कांने काने मे

इन रेश मा स्थान से । यथाग—सब पूर्ण के वर्षकों ने इन महान नगरी के भूगें उड़ा दिये होने, तब भी दमकी मिहदी के दक्षतों के निर्दे सम्बद्धोंन के धोने काने में जीग भाषां अस्टर्—नाम हैंदर, 88)

कोयन्द्र की दन्तानी करना

कोचले की श्रमानी में दाथ काला होना इसे बनत का दमान क्या है होता है। प्रयोग--कायमी की दमानी में हान काले करते रहना मुझे एक जान नहीं जाना दुश्यात-देश 80, 860)

क्रोबको पर छाप और मुत्तों की लुट होना उद्देश्देशकों को र गोकन और कोई कथी प कर्गी इस्ता । प्रयोग-सोक्ष्मों पर इस नगाने हैं पृहर । पर बहुत कुट वा की है हुए पड़ी भूगतेल हरिकोध, १००:

करेयाओं पर मुहर सर्गना पर लगानी सञ्जूषा करी दे कहा पर एक करना दे हैं। की तर्ग पर हम संगति है बहुए पर बृहर तृट वा गही है हर पत्ती कुर के की की हैं।

(क्या व्यवन कोचनों पर छाप पहना —शुत्र पहना)

कोश दयना

किसी प्रकार के दबाव द बात में होना । प्रयोग पर भवारे वयमी बेगम साहब से संबद्ध है व ४ उनमें स्थि। मोरे दबती है (गयन- ऐंशवद, २५%), बोर की कोग हो पही दबनों, आंख नेने कभी न कोर दशी कोलें - सर्द्धीय, एउ

फोरा जवाब देना

भाष्य हरकार करताः—शब्दर जनर देना । प्रयोध—एं वा भाष्य तक कारी नहीं हुमा था कि इतना डीराक्य किसी न कोरा समाव दे दिया हो (१०० १)—प्रेमक्ट, ३२ (एमाक मृहाक—कोरा दास देना)

कीया शतना

विका कुछ लिए जाओ हान जीरना । अभीन-वेदना ही अन इर्ल्य अभी फला किए समय अन्ध्य, यह अस्तुनी यह कोश कोमा रहना नो कही जी नकीन न हुया गंधात यह नाक्ष्य देश अध्य

क्षमा मार्च क्रांचा स्टीहरू

कारा होता

दृष्ण भी व काना । स्वीय---भूबन इस सरमका से विस्तृत्व कोरा हरेने की कृत्य देशा तो वह कहती "और इस भी तो कोरे है..." (नदी०--धक्क स. ६६% मू कोरी है तू कृष्ण भुग्र के प्यार का देश तो है (विस्त्र--हरियोस, २१%); सं- न का नवा चन् गा पंथर इस विस्त्र से से स्वार के कोरा हूं गुक्रन प्रेमचंद, हुए।

कोरी कोरी सुनाना

प्रतिक

केवल माण । प्रयोग जनशब यह हि बोर अस्य हमा कथार हा नहीं है यहमें के यह यहमा वहमा

कार्वि कामज़ पर जिल्लाकर

रायम् प्राप्तः । असीर स्थानि वित्त वित्तेत्रः एक अस्ति भागः । सन्द राजाः अस्ति । समान्यः स्थान् । सामाः । सुन्यः । सू कांत्रह का बेल बीर परिकास करनेवाला । प्रयोग----वह सून्ये कोस्ट्र का बैस कराना बाहुने हैं (रंगक १)---प्रेमचंद्र, २०६

कामा

बहुत हुए। प्रयोग—समयों में तुष का भी ता हा लिखा है उसमें कापका तृष कीमो इषद उधर भाग पहा है से प स्टेड- म्हाउ दिवेदी, का जिस्का करना और भानियों के हार्ग की भी हो कभी न की, पर भागपा अपने सादे भाग-स्था स उनक कोमों काने की नेमन—में मंत्रदे, कह

कांम्रो हुर शागमा,-- ध्वता या द्वीता

कोई मध्येत्व न होना । प्रकार क्यार के कठीर व्यक्तर में इन्ह विरक्त कर दिया जा उपके प्रकोचन ने कोया आतमे के सम्बद (३)—प्रेमबद १६३०, ह अवीर अब तो जब कि वह प्रत्यक समय उनके कर ही में उपनियम गहरी भी उनके भूगते का प्रदेश कोयों हुई का किसार—कीशिक, व्य

कामते दूर शतमा का क्षीता १० कामते दूर आगंतर

कींका धाने से बगुन्ता व होता

पूरे का कुश ही रहता । अधीय-जन कहा है, की बा धाने ने क्यूना नहीं होता (१४० ३)-- हेसचंद, ३१४/

कीमा बोलना

- (१) वर्षण हो आन्त्र । प्रयोग—व्यक्तिमी सहस्र समाप्त हुई को कोबे बोज रहे के गोदान—वेश्वद, ३२२
- (२) युण प्रतृत्व होना । प्रयोग—सन्त संदेशी ही सुर्छी, वर्ष क्यान क्षण क्षण के एक स्था नुष्ट क्षण
- (1) उनाद होन्छ ।

काँय का कांध्यत दी ज्ञाना

भयोग्य कांक्त का शीध का कांगा । श्रमीय—सम्बन का वेक्ति वेतकामा । कांक हैंग्रि विक श्रम सराया १२७ (सम्ब)—सुसारी, ६)

की दियों के भीत विकास

केल क्याराधार जिल्लामा अस्या ६०० सिम्मान्य को नर्मान्य न का विश्व रहा र विल्लाहरू मेर्नुकृत्य (२) निरस्कत एव शुच्छ ही आसा। प्रयोग—का तता कृ गाहक मिन्ने जब समा साम विकास । उस एक की गाहक नहीं तब कीती बदले जाह क्योर प्रकार—कडीर, धद

कर्राष्ट्रयों के सिन

भार से भार के निर्णः प्रयोग-कोशे नानि कोल सम करदि विग्न गृह भाग (१४म० (२)--नुससी, ११२८)

कीड़ियों पर जन्म देना

पिस-पेस के लिए बसाकुल होता । वर्षाय — हम प्राणी की पुष्पं समाधी, भी स्थान कीर निवृत्ति का शास अमायता हो पर अपने अहेरिया पर काल बना हो (बंगठ १९)— पैनवद १४६०

भीडी का कर बालवा

बरबाद कर देना, इस्पतः विशापः देना । अधीय-धीक देशः कीरिया का ही बना यह पुरस्तरः कीरियानसम्ब पुन्हे (चोसेंठ-हरियोध, १८४

कांशी का भी ही

(तक्षणा-विकृष्ट । अयोग—अब इत जीव रनन तक कृता । जो भा जिन निया कोर्ट म सहा पद्य-जीयमी, १८११ ।

(शमः» स्टा॰—क्टब्री काम कर नहीं)

स्तिशी का तान बनना या होता. तीन-तीन होना (१) तथ्य शाना । प्रयोग नग नहीं नश्मी करती प्रव कि कीना के तीन बन मर्थक -हरियोध १६ नीती क भव कीन कुछ बन आको सोन्या एकाव ग्रेडीक १६७० हास. ५३ - इ.स.स. की खान तभी तक है. जब तक कि आवक है—सानक यह और इ.स.स. कोडो का तीन-तीन हमा -मा-कीतिक. ६३६

(२) बहुस सरना होना ।

कीड़ी का तीन तीन होना दे० कीड़ी का तान दतमा

कीडी-कीडी

(१) एक स्टूक वर्ष । यदीय - नागाने नाराने के प्रविकारी सहस्रोत्तराज अधिकृत यस के शकान नियत समय पर की से की हो दशाह कर असराज क्षणका के पास के बने है

नष्ट्र जिल्ला सात्र सङ्ग

(२) अन्तरंत नामाध्य एवं नुष्या चनगरीत । प्रमोत—कीडी भोकी पर कोच देईकामी करने मन नदे हैं (बंब्टर०-मार्क दर्भ कर

कीदा कीता को मुख्यात करना या होना

पान म मन पत दम न होता । प्रशीप--श्रीहीकोदी की कक, में नको मूहनाथ अस्त प्रशांत (है। -अस्तीन्द्र स्ट्रांट

कांड्रो करना जोन्छा

वीटान्द्रीया परश्च नया करना । प्रयोग-कीही कीही अहि के बोर्ट बरब करोटि कदीर प्रेशाए-क्वीर प्रथा।

श्रीड़ी कीड़ा दांत से वकड़ता

बहुत कंड्न होता । अयोग—नानी में निरी हुई भी ही को वाल से उसने बहते मनको मुना की हिमी किया काहें तो भी निमान कियते बाब बहत (80 पीठ—50 मांठ तिठ् 00); हजारों स्वय बहोने की बाधदनी है जिस साहक, सन्द तक-कम की ही दान से पकड़ती है नीनंठ (१)— टनबंद, 201

कींद्री यक्त पहला

बान का प्रश्वित का प्रतिकास असर र ता । प्रश्ना अधिकाश एक केले की जेल कोही गामन पत्नी बीचेंक अधिका. ११३

कांडी पाम न होना

बास में विभक्त बन व होता । प्रयोग-पान जिसके न रही कोही कम बना यह देन बाना मार्गक--हरियोध, ५९)

काँची भी व समना

इत्यत तृष्ण जनमा । इत्येम—नृत्यान स्वामी वित गीर्नुत कोडी ह म नहे (सूल साठ—सूर, ३७९८)

क्षीत्र मेंह दिखाना

सहसर है बारे नायने म जानर । प्रयोग—वर्डर कलकिता हुई कोलि को यह हैंसे दिलकाङ वी टेटेही०—हरियीए,६०)

कीय गृह तेपार

विस मारन पर, (इस कानि । धरोध--योजन जरत साहि को कार्य परवन भरत करण मानलाई पद०- आधसी, ३५७); देश्ड अनद कोल यह कार्य सामठ कुराम पुत्रक पहुंचाई सहस्य छ) जुलकी अ१०), विक मुद्राग्य स्वपीर मार हरियमत अस्ति है हम उदाहरमा देशों का मृद नेवार गुठ निक-बाव मुंबगुट, ५६१०: है यहा पर बात बातरी ही नहीं और युद्ध नेकर पहां कोई धने (बोसेक--हरियोध, १३२), अब यह बीत मृद्ध नेकर उनके पास बाय 'मान्व (पो-पोमक्ट १७३

कील शासन

वयन-वक्ष द्वीता । प्रयोग—हमारे बूज्नी वे वयं यह यहा गया तव जन्मोंने कृत भरता यूनांतर र संवध्य वर्षांक भारताह साहबहां घरता कीम हार यूने हैं हाटाक- मग्त कर्म क्ष

याया सा कर

का मुंद क्षेत्रर

०सी हिम्बत वा निर्मात नहीं है। प्रधीय—सबर करें बना मध्यपूरी है, बना मूह लेकर साथ (thilotieno—सर्वाठ दास, ७२०); इसके बांधियत जिसके लिये कर सोता X X इसकी कोकर यह नाम में बसा मूह लेकर बाह्य (निस्तठ -कोंधिक, 86)

रंगण (१८१० - क्या मुंह है)

मिग्रा करता

भाग या अनिस हार समाध्य करता प्रमाद जनग किया तरि माध्यमंत्रीया समाध्य कि दुस्ती श्रद्ध

नमः अलाकः वित्याः कार्यः करकाः।

क्रोध धृकता

प्राप्त हर करना । यार्गामः स्थान कम प्राप्त कर प्रयान हुए कहा - मुक्ते कृत्वा का बचा बाज्यस्यक -- देव सव, २९२

क्रोध पाता होगा

चीव तकरच नामव ही जाता । प्रयोग—नर क्याही सूर्तिया संदे का वानो साक्ष्य रच दंती हैं, और प्रसंके भाव दवाने समती, उसका कोच पानी हो बरहा औदान—प्रेमचंद, १२६'

कांच यो जाना,—प्रारमा

कोच दवा कामा । विदेश-स्थित को दिश मार्ट सन नहर पदंश-काशसी, केप्पश्च कोच वीची कर रह जानी की । व्यक्त बोलने समतर का कि दुष्ट के काम उनाव सूर्व (BIन? (१)-- प्रेमक्ट, ३१२)

क्रोध मण्डना

क्षांध पा जाना

कांध भी जलना

बहुत कोबित होगा । प्रयोग—मृत्यांत सृति सूर्व निरास्य गर्मा । दिन तम बरह होइ कम हानी (११म० (बाल)— इन्ह्यी, २८४७, भी क्रम्स के सूत स्थम सर्वु म कोम से भनने नमें (अक्ट-नुष्ट, ३६)

(वका: पुरा:-क्रोच से साल होना)

स्था सा मे

बहुत कर समय है। अग्रेष—सह सहूं सबको पर्यात है चतुर मुक्तार विजीत (सम० (बार)—सुस्तमी, ३३%)

शार करना या होतर

क्य करना का होगा। क्योग—नुमनी जानको दिए, न्यामी मों सनेह किये कुमन, मनक तम हर्नेहैं मार छन में (गौतार (सुं)—नुसमी ३३१ केरे किये की नेवता—मो कियो मान कम छार (संसालाखार—समार दाम २५)

प्रमाधव तरा होता

बहुत भरा होता । प्रधोग—उस दिन पहुंचा दशको थे सम्बद्धम भर गया (वैतरे--चडक, १८

জনামৰ মনসা

मारकाट होती । प्रयोग---वै अध्यक्षण वणी वृष्टें ती क्या कीयमें पांच हम न साम्य किये (मुमते०--हर्वकोध, १२०

- (१) विय व्यवता । प्रयोग—अरे हा बडे विश्व की बात धराई तुमने काई बाटक गई है क्या सन वे अध्याप्ति— संस्कृति (१८)
- (६) अधिय जगना, भारतका होती ।

सदका मिला

नोई अंदेशा हुर होता । प्रयोग---सन्द तान तव नेवरं गोई। भी वर साव गन्द के आहे पद० जायसी छनाछ, और प्रजा कब भावि वसाऊ। सपने निय की सुरक विटाउं (सुरु सारु---सुर, ३४४०)

श्रदका लगा रहना

अदेशा बन्धः रहना । प्रयोग—बनीकत में मदनमोहन का आर्थ दिन पर दिन बदता बाता है इस्से मिस्टर बाइट में अपनी रक्षमं का स्टब्स होता है (परेक्षाक—बीठ दास, भू-इ : उन्हें बात शहर में स्टब्स होना है कि उनका मैठना साने कैसा मान्य होता हो—बिताशाह)—चुस्स. ६६०, बोर्ड सटकर मान्य हो तो मेरे सड़च ही बोट अपना गनने— प्रेमचद, १६६/

प्रस्कट होता, खटपट होना

भगवा होता। प्रयोग---कम् विव वी मटनट भई टपटन टपक्त तैत (राहाण संसाठ---साधार दास, १०६), वो गोज थे पर में पनि कानी की मार्टनाट पात शही है। (पूँद०— मांच नाव, १०२)

धरपट होता

रे॰ बाटलाट होता

लटपारी तथना या लेता भटवार लगना था लेना

करकर भारत पीना गया काम-वंशा क्षोड़कर केठ रहमा। इंकोप---वै तोहि मानि केन करकार्यु (पर्द०---जायसी. ३४७०), सोटि सोटि परम करोड करपाटी में के पूर्व जान मकरी न्यों मेन वै जनकार्यन (१७४०----देव, ९८)

अदबाद समना या होना देव अटपादी समना या लेना

स्यट शाम

भगट । प्रयोग — अपने धिनने बानों में में एक कोई वहें नियोशस्त्र पाद वह बटराय नाए (व शाक—हें शाव, एव), तम राज अवापने हैं वेश भोन का मपद न जाने बाही का सटरान पेट में भरा पड़ा है , भूभतेक—हरियोध, भू)

लदराम फ्रेंडाना

- (१) बरहरी आरंबर फैसना १ प्रधीम कुस् सः सूचापुतः हे बबकर तथा किय निवे बटराय फैसारे वडे (भूमरे०— हरिजींड, १२२
- (२) अधर का काम शुरू करता ।

(पराव पृहार---कटरामे करनर, --मजाना)

कटाई में पहला,—में संभावा

दुविया में पेड़ता। प्रयोग---यह काल का प्ताला की अपने सम केलावी की सुध एके तो सदाई में वर्धा पड़े ? इ.सांश---इ.साथ, पड़ां, पड़ पता दिन्न लिये सहाई में मारी भनी जब रंग की बार्च (कुमतीक हरिश्रीय, रहेश) हो रुपया नहाने का बार्ची हैं तो बटाई में बीम्ब एड़ा है और बायक मेत्र केग्रेट, याच महीने बाद सब की तफ भीता देगी (बक्तक-न्यागाव २१ , मेश्रा नेब-सबह सिमा का बा भी सभी बटाई में पहा है प्रदेशक के यत्र -प्रदेशक शामी देह

क्ष⊒ाई म संभागा 'अवारी में पाना

कर्क यह ओहता

निविकान होकार आराम करना । प्रयोग—कहुत दिनी सम आर्थिता लेखिन हिंदुन की काह समाय नाही केखी (आठ होठ (३) आर्थन्यु, पर्देश =

(२) वेशार होता । प्रयोग—देनिए प्रयोग (१) में (+)

ब्बर्टा श्रेग्र होना

(२) बह मन्यू भी महत्र ही प्रप्त न हो ।

श्रद्धाः कर देना था बना देशा

खरही चाता

नामक रहता प्रयोग पान्य क सबय देखि और विदर्शन साम है, जनाई कहें उम्मीलय कि प्रयोग नाम्य करते के महायुक्त सामक कहा बाग मेरें । गुरुष्यक १२४ नाम प्रयोग कार्युटी रहता —हाना

मद्रप्त का होना

(१) तत जाना प्रशास भीन स्थार सन न कहा है। त हे स्थार तम मान्य भी गण का भी प्रशास के प्रशास प्रकार ना भी गी, स्थार प्रशास नामें हताब तो प्रशास स्थान के मुख्याद कुट्ट

> प्राप्त स्थान विकास हाता. विकास सम्बद्धाः

भाउँचा स्थान

मार्थ स्व होन्। । प्रांगः । उत्तरिक स्वाहर हात्रा प्रशा

कर्दी स दी करना

अस्त का बूना कहना। प्रयोग सूध निरुक्ति महरमिन भागत मह कहनि त मीटी माटी प्र0 साठः प्र प्रकर्भ, रहि कम कहन न माटी मीटी (राम्य वाकः — नूसमी २०५५ कई तरह की कहटी मीटी कहानियों उस भागूट के बाद में क्ष्यंत्र में ही बुनतर माना का प्रकर — नामाय, १३०

(नगर- मुहार--- कर्द्-मीठी बार्ते कहना)

खदा करना

(१) बनाना, तैयार करना । प्रधान—पर कोची नवीनतर देशक गरे हुए कारोचन का रिन्डास छोड़ जाय की धीड़ अरह, बचिना नहीं खड़ी कर मचली चितान हों)—गुरुका, २५०), ज्वाला का को रवेदा है इसमें नी यह उपनीद नहीं को जा सकती कि स्थाना कभी जमीन-जायदाद कड़ी का पर्वता था कुछन्नता कर सकेनर (मूनेंग) अगृत देशो, १४५) (२) धीनकिश्वि क्याब करना ।

क्षत्री जवामी

पूर्व क्षेत्रम । प्रयोग--क्षांत्रम महाराज्य की क्षया में खडी जवामी हाक सभी है (विवाठ--प्रशः, स्थ

महें मरे

पुरन, महस्य । प्रशीन-कानकी संस्थानी के निया ही xell सबनी नेपाल आवंदाद महत्त्वस प्रोत्न-वीने करने नमें (कृट्य डे म्हेंच प्रश्न कार नार प्रशान दिन न प्रोत प्रापंत कार्य के प्रशास कान्य नो प्रापंत आह तक न स्थानि । के प्रापंत्र में प्रशासन का का तक न स्थानि । के प्रशासन है निर्मा के प्रशासन का का कहा है क्या के निरम किया प्रापंत के प्रशासन प्रापंत्र करते

अंद्रे पाच

तर नर्ग असाम अने पनी बानाक ग्रीमत स्वय पेराचार हो किये जात है हिना १ सक्का स्वय कोग जासका षाड़े स्मिर हुवाना

बहुत प्रभाव के रकता। अमोन—किता हवें सब जिन इवा रही की (वै कोठेठ—अध लय, ३६)

खड़े होता

(१, मृताव में उस्मीतकार होता । प्रयोग जामतिहोता, याम पंचायत की पृथिकामित्रों के लिए नहा हुआ है ,बस्ती० —रेषु ५४१।

- (२) शहामता के लिए प्रस्तुत होता ।
- (१) बीमारी के बार स्वास्थ्य साथ बरना ।

णार्ग उठामा_।—सम्हालमा

सबने को प्रस्तुत होना । प्रयोग—प्रयो हवें कॉर सबस सभाम्, जोग कृति दश्य साप् क्ष्योग प्रयाण कहीर २१७ : पापविकता सहस जब तेना उठा बारमदेव हा तक सम समन्तर मही (कुरु)—दिनकर, २०)

खर्ग सम्हालमा दे∘ खद्ग उठामा

सहरा सहकता

लंडरई हरती । अधार---दश्याक्ष्य संसी मृतक प्रयान के सरका के शुरत के साथ सरकत है भूवन प्रशाल---भूवन, २०६)

व्यतरे की घंडी

विषय की मूनता । प्रयोग -आज जो तक हुआ वह हमारे लिए सतरे की घंटी है (सम्बद्ध-राठ केंद्र क्य) (समाव मुझाक---कार्य कर जिल्हान,---चंदर)

भानरे के मुंह में उपली कालना

आम बुधकर निगरित में परमा । प्रकोश---वतरे से नहीं इरका कवित कारों के मुद्र मा ने क्यों बरसना हिम्सनत है (गोदाम---प्रेमचंद, ९४)

(मयाव मृशाय - सम्बे के मृति में हाथ जानवा)

सदर उड़का,--वसना

मन्ति पैन्नी पहंचार होनी । १९१४ सवा करण्या नेपा मैं उड़ गरी पह अवर (इस ०—इ सा. १९), वरवार में बंकार की अवर क्या करती हैं (पैका—फैसचट, ५९); बांब मैं सबर उड़ी—अरोब्ड बावू ने आवरश्ये पर क्यार कर भी भारती०—सिस्सा, ६४)

श्रवर शरह होता

बारों बोर वर्षा होती । प्रदोगः उसकी वर्षा राप्तनीता धरारी शता में में) कथ गरम नहीं हही (प्रदनी सबर---राप्त, इहा

वयर यतमा

देश खबर उद्गा

कवर न पाना का दोना

(१ न्य पना न हाना । प्रवास कारण सा कीट समृद मी नाई । निहि रायन यर अवदि न नाई (समीर प्रवास— करोर, ३२१,

(२) ज्ञान न होना ।

कदर न होता

हान म देना । प्रयोग पाम नाहित्य-सभी नाम प्रयोग स्थान भीर मोहर सवा-पर्म की दीन मार्ग्य है। पर चर में कोई बायार पर कार्य को उसकी सभार नम नहीं छने पहुमा सै पक-पहुमा प्रमान, १५३)

अवर छेता

(१) बादमा-मंद्रकारमा । प्रयोग-- मार्गतायाँ मामका एक मेल बच्च पन में स्था का पार लोगों में होते लाह सा विभिन्न स्थापको स्थानाया कि यह साप ही की सबर ली गई है मूठ लिए बाठ मूट गुठ हाई , यह कोन ग्रेमान है, नही मानता, हहर थी, में मानत हैरी अबर लेला है (भागा) मानव १ प्रेमवंद १४३., में साम हो मुगता बाद मार्जना और उस कोने की वस बुरी तरह बचर लु मा कि बहु भी बच्च करेगा (फटकारमा) (मानव (३) प्रमान के बार करेगे की बच्च साम्मी हो बच्च यदि जन पर अपनी सीमला मह नीवरीका प्रभाव वालकर दवाने की कोगाल करता तो बेनारह उगकी मानव लेले के (पद्मक्ताम--- महम्मव क्षमी, ४६)

- (२) पता समाना। प्रयोग---सर्वाट केन हम पराग भाषा समय (अ)---चुनसी, ६३०:
- (१) बोब वृष्ट करना ।

सम्ब सवाद होता

(1) सनक होना । जनरंग--वापको साथव अभी बरानुम

37

य हो चैने वहां एक सेवा-समिति कोल पत्रमी है । बुध, विकी से पही काल सबका है (गॅग००१)---वेमकंट, घर)

(२) जिह यह जाना १

🚃 ठोकना

सहते की प्रस्तुत होता, दूबशा दिलानी । प्रयोग—कानी शान क सुन्दन ही प्रणुपनश्ची ने प्रति परिष्ठ कर जरा कि से बानक हूँ पैटी देगा, सब जू सहकर वैथ का पैटा, वी मुताए पाच पाट सनमान हथा पैनव साठ— सक्ताव हर्द मा शो पटे का बाकी साथ होस्स में नेवान से वै ।माठ संसाठ (क)—माठतेष्ट, ५६%)

(असर मृहा०--कम अंजरनां---प्रारना)

व्यक्त जानगर

होतील करता । प्रयोज-न्युय पोडी में करन अलाटी, निय प्रति कार्या न्याल (सूठ साठ-सूर, ३२६%.

व्यक्तात हो इसर

भागाम पाना । प्रयोग-सोपते भोगने गमान दीवा-महो भूति बच्चे भीता और जिल्ला वर्ष है यह अवर्ष नहीं है (म्यू-भि0-बाट मुट्ट पूर्)

श्रवण्य दीवृत्ता

इराश काला । प्रयोग-स्वार क्षम समाने के शुनरों की सकत करने भी तरफ बयान नहीं श्रीकरे स्थावि का देश भीत है (गुंठ निक-बाठ मूठ गुंठ, श्राप)

सपाल पश्चा

दिक् करते पर उत्ताक होता । जयोग---निपट हवारे क्यान परे हुरि, वत में निपष्टि विकासन (पुरु सार--पुर ४१५६

क्याओं धरेड़े की बाध डीली करना

पूर पूर की कम्बनाए करना : प्रयोग—नार्यों के रह ने अकराती सहस्ती बूढी सालकर प्रियमम् धर्मा व्यक्तिपर पड़, मौमो का अलब्द के रहें थे । स्वामी थोड़ की बान हीनी कर दी की (पूर्व निय—बाद पुरु पूर्व, २०३) (मगार मुहार —कमाठी मोड़े दीक्षामा)

सवाकी पुलाब क्याना वा होना

ध्यमक क्षान भीजना पर होता नहीं नहीं गलानाय गरनी ह प्राप्त अर्थान करें दूर और स्थिनप्रज्ञ की ज्ञानित का करण नवाको भीजान क्षाप है सहक्षति— तार शह दूर गर्भा अर्थानाह स्थानी प्राप्त है सम्बद्ध प्रेस्टर्स १०% अपना के यन में बाता कहे—जब से बापको संघानी पुजाब बढाने का बोट हुआ (सुकृत्तo—निराला, प2,

करा दास देना

नत्तर दाव देना, डीक शाम देना, अधिक दाम देना। प्रयोग—सहर के करे दान नगते हैं, यहां भी में आपा दिवा न दिवा प्रेमा०—प्रेमचंद, ४४

करा होता

(२) सप्टनक्ता होता ।

शराब करता

(१) कुथमें करता । प्रधोन—ने कॉन भन्ने नरीं की बहु बेटिया सराव करनेकी डोलिय करत (मा: कीजिक, ३९३)

(२) वर्दार करना ।

वर्ग वरा वाने सुनाना वर्ग सर्ग पुनाना, वर्ग कोर्टा कहना, कर्ग कोटी सुनाना

मनी कृती बहना नगर बे-माम बाते कहना । धरीम-रोग करि वकरि परोच है जिसमें करें भी को शान-पानी भूजनमीन करें करें । नहें पदमाकर न येंगी दीव कोम्पो फिरि मध्यन मधीप दो मुनावर्ति करें भरें (अध्य-पदमाकर, १०): इसी वन्हें पर के गुन बादमी भ्रमने अपने पहनार पर प्यासी का ही चार न्यासी सामें मुना जान प मान्य १ प्रस्तेवर १४० स्टब्स हो में है, उसे । अस्य माने पासे मुनावर इस्टब्स्टार न स्टब्स से स्टब्स नहीं प्रतिमा किनली- प्रस्ति ४०-४१ रहिन एक बार पनि म भिन्न फर उनमें करो-धरी बान करन के प्रमापन को ४५ में रोक सकी (मानक (१)--प्रैमलेड, २३९); किनाब बाके में अब बाएनी प्राचिका पनद की और बारी-बारी बाने क्ष्म सूना दोना नव प्राची उम मने। हुई हाजन में मी मने मन में पहली प्रतिक्रिया पर हुई 16 उनके मूह पर एवं नवाल। यह बूं (जहांजिक-इठ जोशी, १९)

सरी स्वरी सुताना वेट स्वरी सरी वाले सुताना धर्मा खोटी कहना वेट वर्गा सरी वाले सुनाला

वरी कोटी सुनवा

भन्ना ब्रा मृत्र नेन। स्पान बेनाम बान ग्नमा । प्रयोग — इमेनिया गाउँग इस्थारि संगापर पात्र की करी-कोटी जी गुन नेन में अभि युक्त बर्ग, १०५ चर विभी को इन्सी भीज देगान ही जिनक मृद्ध में पान्त का अन्य है के बर्गन में स्वरोग संगी स्ना गाउने हैं जिलाल के अनुसन्दर्भ

मारी सोटी सुनाना रे॰ सरी सरी दाते सुनाना

बाराइ लेगा

पुत मां प्रकोशन देकर नपनी और कर केना। अयोग---पृत्र प्रश्नीमधा और नपाली संश्वाक। भी सरवहर न साहिद किया को (सम्रोध---देक सक, ३००)

करंदि गुलास होना

पाजाकारी, पूरे बजा में होता। प्रयोग —आन के कर जभाव के नेत्रवि कवि करी प्रधानी को हो धनत करता —सन्तर, १४१

कार्क उठाना

श्यय-भार बहुन करना । प्रधोन—नाम कन्द्र कार कर इंग्लैंस बाने धहा बाने हैं भीर में जाने किनमा परिश्रम भीर मार्च उठातर यहां की मानाएं नीमने हैं साठ सीठ -महावद्विदा, ३६

कर्च संहता

भाषा कमा करता । यक्षाकः विद्या कः पान नोहाहुण। १०) मो सिकस धररंगे (सेवाण-प्रेमपंद, ११६)

क्षशंदा लेता

बेलबर सीना । प्रयोग-कश्री किसी सतानमा के कंपी हने

वर अभ्ये सुन्धे भी तो उसके हरत ही फिर सरकि लेने सम (पद्धम परत्य—पद्धमः कर्मा, ११) (तमा० वृहा»—कर्माम अस्ता का मारता)

बस्यकी पहला,-चेदा होता

- () अध्यक्ता होती । प्रणामः समयती उनमें कभी पहली वर्ती प्रश्न क्या जिनको बनाता है बनी भूभते— हरिश्रीध वैभिन्ने का तम बातों की सामान कर दिन के बड़ी लक्ष-वर्ती वैवा हो नई (भट्ट० विक—काठ सह, व)
- (२) इंतजन होती ।

कलबर्ता पृदा होना के कलबर्ता प्रका

मस्याद बाद

िस सिरपा बहुत कम बाज हो । प्रयोग न्यह शांध देखा स्या है कि करणाट चार वा लंगी चारताचा x x निर्धत होता सांव सुव—बाव मह १७/

का जाना

- (१) कुछ केकर व कोटाका । धर्माय—पर कीस के कितन करने का गया होगा अर्थावर (सहाठ—देठ सठ, क्य); कोई गीकर एक पैशा भी जा जाए तो उसे निकास के हैं (१९० (१),—प्रेमकट, १४२)
- (२) कर्ष कर शासना । अयोग—भी क्षये आपने विये वे तो इस का बैंड है (क्लठ—देव सव, ३५६)
- (३) बरबाद कर देना । प्रयोग—हमारी)कुंट में सुष बर जिया सीमी०—है ० वर्गी, १५२)। ये नुम्मारी बरटा नवा उमकी बीबी इसके समाय बरवाने विश्वकर कर पर उसे, बरबा बहोठ बहुर बर्गटक्ट होना करियान (बृटि०— ३० २५, ३५); श्रीठी बीटी क्षाया तभी न जाएँ, बन्यानी पुरुष की बीकि बीकि बाई (क्यीर ग्रंबा०—क्यीर, १६६) (इ) जिन्तको । बर्माय—नहीं बाबू माहब । पूरे की साल कर कुंचा हूँ । (माना काने के अर्थ में ?) सुठ सुठ— मुन्दीन, १)
- (५) हुरव तर करता ।
- (६) बार राजना (प्रारोप के अप में प्रवृक्त)।

आई सुवता या अरदना

(१) द्री होती या करती । प्रयोग— हा केवल कीवीय

पन्दों के वहपात केरे और अक्ष्मों के कीय में एक ऐसी गहरी आई जुद जादेगी कि नेरा घीर उत्तका निवाह सम्बन्ध सदेव के लिए असम्भव हो बादवा (किसा)— कोहेक २०५

(४) अदिश करना या होना ।

कार्य पाटना

पतानंद मिटाना | प्रयोग—इस मेदकान की चाई को नहीं परटा जा सकता (मुलेक—सरक क्यी. ५७७)

आई होना

हुरी होती, सेवभाव होता, बंतर होता । प्रशेष--न्भ तो बतीत बीर बतंबात के बीध बहुत बड़ी बाई तकर भागों है (बड़0-देंश त0, 62): वे राजकीय सत्त के अधि-कार के तामन कर जिसमें प्राणित को बामन का बाद न नमरे और दनके बीच की बाई कम हो स्मेरे — मुलाव०, १६१

स्ताम् जन्ता

(१) वृज्यामी होना । अयोग---यह वर तो अब हमं बाए अता है (श्री०--बा० वर्ग, २१२), यह पुत-बनाव उन्हें बाए आधा वा (१० ६०--मुटर्गन, २३०)

(२) तंग करता ।

-

नगस्य या कृष्ठ नहीं । प्रयोग—यह मानस कृष्टे बाक यो जाने न पून्तरी प्रयम्पा (कृष्टि—यक्न, ७६) पूर्णक के (और संस्थानों के यो) भीतर भाते कृष्य या ही राष्ट्रांत्रस रंगान ही कृष्य सित्र हो। पहारे निकार गाम न हो, प्रयस विद्या हो (श्री हुई बार्निया हो) बानों के बाब नाम नरह हो ज पर पद्धमा के पत्र न्यद्भमा क्रमी १२६

बाक उप्तर

मूनो पेशे पहली। प्रयोग वहां बारा गहर कापहरी थी। लगो गहनी भी बहर सब बार दशरी है जिसेना - प्रेमबंद १६

स्राप्त काना

सन्द करका । प्रयोग कियन अस्माना को करके स्ट्रुक सन्द काक व्यास निर्मुक क्षमा यद १३३)

भाक छालना

(१) परंध्यानं होतर । प्रयादः हमारे बाबु माटद के

हरनो स्कृत की बाज सानी है, बीनियों प्रास्टरों का रियान बाट प्राप्त है (प्रि. प्रीय-प्रिट मार सिठ, १५७); वेशों तर्गरा प्राप्त हकराय के बयनों की साफ सानते रह (रंगठ (३)--केरबाट ३३०)

- (२) कारा नारा फिरना । अयोध---जब आंगकी मानी है कि गांव गांव की नार गांजना दिया का धर्म मानी स्थादक (१)--धेमकंट, ५०), हिंद चोडका जाता हूं यन सानुगाः अपन केंग की बाद मुंदक---मान, १९१); हकंदेव विकित्ता-नारा मादेश विकास की साथ हातता हुया कीनीमय नगरी
- (३) बहुत तामाय करना । इसीय—बीकरी की समास में बन्दें की साम सान नामी, एतर आधा ने क्ष मक मार्ग नाम नहीं दिया या ये कोलेक ताक नाक २३ . सरमाद अपना नम मार्थाया जनाका प्रधानमध्य की द्या में पृहत नक बाक सानने किरे (पहुन प्राय—पहुनक हान्नी, १२%)

में जा बहुना ,वेशासी० (१)---बतुर०, १६७)

जाक हापना

- (2) किमी दोष का बात को क्रियामा ।

कांक-धून समस्ता

नचं नहीं सम्भाता । प्रयोग---तां हमां। सनी ताप नेव-गान्त्र-पुरात्वादि वर राष्ट्रेंत्रं में स्वतंत्र हैं, शस्तृत का कामा क्रमा नहीं सामते, दिन्दी के भी साहित्य को शास पूर्व नहीं समस्तरे (प्रेण--क्षण नांव दित, १६५)

(नगे । मृहा - नाव्य समयमा)

बाक क्यर

(समा- महा» -आक धून्ह)

बाक में फिटना या फिटाना

नष्य होनेत हेकांट हाता । प्रयोग अप्तप्तार हेनान होत बाद ब्रियम परव पे साद सिनाह करीर प्रेक्षाल करीर, २०९ अपूर वह अपनी अन्तर्द बात जो पड़माननी मुसं दे है नहीं नो इसकी साम मुस्तिना हुआ एक्षाल प्रकार - राधाय दास, भग्नाः, दोत्ते तरक के दस कारह हजार कार्य काश में मिल गए और उनके नाम मेरी अमिलावायं आक में मिल गर्यो (मानव (७)—प्रेमचंद, नरेः: मनव जिनकी वह हरकार है, उन्हें में साथ में मिला दूना गोदान ग्रमचंद, २९४), गार्य मनगृव लाग में मिला दिव पहुम्पगण -पहुमव दार्मा, १९२)

काका त्रश्ना

पनाक उद्दाना । वयोग---राय नाह्य में दन प्रहणन में एक मृत्यसंगान देहाती नगीशार का आका उद्यापा या गोदान--प्रमुख्य ७५ , उद्दान क परिचर्ट में जावनीय पत्रा के अपूर्णनापूर्णन मनाहर निद्धान क पास वर्गीरतन मानव समान की महमस्यता का यो नाका मानवी भी में प्रशास है यह विभागतीय योगा भी आक योगन के निम् मिद्धानन का काम दना है पदमप्रसम पदमन इसी १५

सामा जीवना

(१) समान बेहाना । प्रयोग—भी नोम बान नान में नुक-बन्धी करते हैं और कवि होने का बारमधीरण बहुत करते हैं चन्न कोगी का बस्तपूर्णांनंद ने "बहुतकवि चन्न।" में बहुत बन्दार काथा कीचा है (मेरे०—गुरुपान, १४१)(४) (२) वर्णन करना । देशिए प्रयोग (१) में (४)

भाद तोइना

निष्य पश्च रहना । प्रधान—आयके वक्षा निष्य दी कार निरुप्ते नानदार पद बाद तोदा विस्तप्रभाग आयन गर्भा द्वारों में भी उनकी अवहत्तना महा की प्रैमाठ प्रेमचंद, सही

कार पर पहनर

बीमार होना । प्रयोग--वेशक की कमाई वे वपने पैटों करे होले की माला निष्यक हुई और चटिया पर पढ़ का । (मुक्षे() प्रधान (१)--मुसेरो, २७०)

(मधाः पृहाः न सादः पर गिरमा)

भारत पर पड़े साना

- (१) विसा कथाए सर्च करना । प्रयोग -मान्य बीचन बाट पर पद-पड़े पूर्व की की कमार्च आने में बाट दिया (प्रेमाठ --प्रेनचंद, १०)
- (२) बीधारी की क्षानय में सर्व करना।

38

O P -185

साट पर पड़े पड़े दिन विनाना

बकार पर रहना प्रयंत दिन पड़े खाट पर विजाने हैं काहि के बाट में बड़ी बेरे (कुमते०--हरिक्कोध, इंद्रहा

बाद से रूप जाना

बहुन इबंच हो बाना क्षेप्राप्ते के कारण प्रयोग चीचू ही में पार न मय गई गोली— चतुरत, ३४४ , पर किलाउ की भी की बाद असकता है। बाद से बाद वई है (धालीय—— वित प्रत, ३१

बाट मेता

बोबररी के कारण काट पर ही नहें रहना । प्रयोग—हां वैर भी हूं ही, वैर व होता तो, राजो भी के दशारे हर यहां की दौरा आका, बेटल स अकर की द्वाहर दिवाल नाता, भीर भाग वर तक बाट की बेता (रंग०(६)—हैम-चंद, ६५

बाका क्षेत्रर होता

नापांच्या कर है अधिका अभिन करने वाला । प्रयोग— शै-रीय पर्य को खोरकर बची शाहारो जाने दीने नाम करने सबर—सा १९), अब विशासनुष्य के कार्त-रीन नोनों में इसकी मिननी वी (अस्म—देव सव, ५०:

धारिए जमा रखना

निर्मायक रहमर, विश्वास करना । प्रयोग—नीम नात जो मध्यम वह इस क्य के क्ये, हू ब्रानिस बमा एक (गोदान— देवसंद, १२॥

बाती काता

कारा बोच देशा का करना । दशय—काम्यु के कर मोमो करी जानो (बद्दा प्रशास—नंदर, १६६)

श्राप्त होना

अस्वशिक होना । प्रयोग—मंदिर यह यब नामित् नामी । योगा मीम नेव की बाजी (रामें) मानी —कुस्ती, १९९७, बंदनी को सामित है युपाय ही १९६न अपनी मानिका नयनि साकी बाजिन में व्यापित (घनें) कवित—धनांं), १५०) नामर विश्वस म विनाद कई दीन बाजी नामित के द्वित में हुन यदि की बाजि की सिंगा मक0—महिलान,१२०), यस पत्रे हैं बीयमों की बाज ने विभागें (महिलान),१२०), यस पत्रे हैं राज की नहीं हुई पुनिन के नगरन कोरब को सान को (जेसाओ०(१)—चतुर०,६६)

हरका

- (१) पून केना। प्रयोग—मृत्ये व रक्त साने हा। तावरवा है, म स्मित्रने हा (क्षमें 0—प्रेमसंद,२५१, वो सार तो पान भी वर्गने के फेर में बहु। भुई नहीं समा अवणी बहा सामग्रा क्या रहे हैं (कृद०—अ० ना०, घण)
- (२) रकम हरपना । प्रयोग—साहाशो ने काने का नह भी शक दन मिकाना है (राधाः प्रदाः —सकार दासः ५४॥ अरं एक दो भी स्थाः, ने म जाने सिनने दो जो सारामी मा—कोशिक, ३००;
- (1) क्याना शाभ करना । प्रयोग—जाएंके भार पेसे लाता हु ती अपको करनो ने देश कर यह में मा निश्ते यूना (१४० (१ —ग्रेस्संद, ३७०)

क्षांता सराव करना

भाग दाना कलता

- (१) कामा-विका जाता। प्रयोग—का ने यह तुम्हारे वहा ते आई तब से इनका नहीं हाल होता जाता का रहा है। व कामी अरह बानां जो न शानां (निका•—कीशिक, १२०)
- (२) श्रीविका क्लगी ।

बाते के मासे प्रता

साने का समाय होगा। श्योक—दो दिन में शाने के साथे पहले ही गय सही दा दूप पाट ले हा। अपाना उन्हें कोन्छ नक्ष्म 100 वक्त नाई कर नगढ़ कर पाई उस स्वय हारवाताल के पश्चे यान के साथे पर हुए पा कृदिक अब ना रह

काने दंगदना

- (१ रमदर्ग्यो समना प्रयोग किर सारकार स्। याम स भाग को कीरका है। ७७०--दे० स० ३१६
- विविधियामा एक दाना ।

जार करना

इवेदरभागः, क्टले की भरवना रसना । प्रयोग—उस पात को जो भरवत हुना का, उभी विन से वह सार नार्य केठा का (गोटान—प्रेमक्ट, ११२), बापू के वह समीचे सार पाता है बहुमठ—दैठ सठ, छप

बाल उदावा

क्ट्रन कारता । प्रयोग—अध्यक्त आओ वं स्पन्न खोकं देहत हैं यांग कबर तथा गढ़लम किंग्डों का गाल प्रदास दीन बार्ट (मिस्स)—कीर्यक्र, १३६)

भारत जिल्ला

र्देश्य किया अला । अयोग---श्रदाचारी की विकर्त साम् कराचारी कर कहते कुछ वेदेहो०---हरिग्रीध, ३४)

बाला जी का घर

- (१) महत्व वात । प्रयोग----प्रयोधार के प्रत्ये क्रमता वाताओं का वर नहि है (प्रेमाठ---प्रेमचंद्र १६)

बार्का जेब, अहाध

विका कुछ अर्थन विद्या या शास से ऐसे विका । अपरेग— पर रूप राय में एर ए । कीन उत्पर देवल कि जब एड पट्ट —आयस्टि, छार : पार जो कही कहा नाभी हाची कुए ती बहु में भाग की पश्ची कि सिट में एक बाम और न रहने पानेगा (श्रियात प्रेयात—समान द्वास. १९॥—१९६६), घर बामी में समस्या मां कि जब बहु प्रमु कर तैयार होंने सारा कुछ दारिक, बहुर हो जायना पर जब आप अपनी पहलेद पर कीरकर आए, किमान्यि अमे बेचारों पर बया गृज्दी होती आयान प्रेमान गांधात दास, ७०), आदमी आएडी होती आयान प्रेमान (सान्य (१) प्रेमानंद, ६१)

साजी होन

ाप का जरी न रे दोन करते शाला प्रतीत वालाव इत भी केल्पों तोत सावकारों भी अगत उन्दरशासना कर केंग्ने प इपस्तित सेल उन्हास के बोल सम्बद्ध से सीदान प्रमाणित क्ष

काली हाथ देव सामी जेश

सिच जाना

- (१) प्रतिकृत होना । प्रयोग— लोग को कंद किया आने, या नहीं लोग लान होना समेठ—हरिफोध पर कृत प्रश्ने सिकी क्यों रहती हो (स्वन—प्रेमकंट, १८५)
- (४) किसं दृशक्ष का अवस्य अध्यक्षि के सम्बद्ध या महन्ता
- (३) प्राकृषित होना ।

विश्वे विश्वे अना या सिश्वे रहना

विशेषां रहता, पूर-पूर रहता । अयोग-वह मुख्ये हुस भणीय सरह है सिथी-मिथी रहत सभी ,मूले०-आग सभी ३२१ यह बनवारण कि इसर सार मसय भिम नि क पूर्वा रहत है सजदार देशरज २४ - वह रमा म करव विश्वा र रहता की वह कभी राज यह व यो तो वार दलो कभी मुख्य दकी गदन प्रमाद -७ सभा विज्ञा कि वो रहती है जैस मेने इसकी कोई हानि पहुंचावी हो सुरु सु०-मु:श्रीन, ६२%।

चित्रक्षी प्रकता

गुप्तकप में गमाह होती । प्रयोक--बह क्या भावता का एकर बीच म न्या निवदों एक गही है। गौदान प्रेमबंद, १५४), इसका माने हुआ निवदी बहुत दिनों से कह रही है। (परतीठ--वेजू, १४४)

सिम्बदी बाल

माने-मफद बाम । प्रयोग—इनक दिएमा स्मृण सारीर निर के सिक्दी बाला - छोटी छोटी छोच उनके स्थान की सजरता और तेजी पर परदा सा हाने रहती की मिन्न (१)--प्रेमचंद, २६७), क्या क्या ?' निवसी बानों वाली दोनी को विज्ञाकर XX गराम्कृति न पृता स्मृण पृण्यम्म, 50.

विवदी माना

विभिन्न आला । अभीम—यही करारए है कि पालकन की धारी बोली सिवडी कर गई है पट्टम प्रशास पट्टम० इसरे a(4)

क्रिचड़ी होता

(१) बाओं का मधेद शेम शुर होता प्रताम-गरे के

नाम प्रमाण पाने जिल्ली हो गई ठाडी को चट कर ठाडी बर बामें अ अ सदीर भी ने सदना हिम्म्सी सोवा का निमास होठों के हटामा (इस्टा) (१)—यश्चपाल, ३००)

(२) मिश जाता ।

विकरी रकता

पर्यायक्तिया रखना । प्रयोग—शिवा सी निवारी वयों जू राजन (माठ प्रयाठ (३)—मारतेन्यू, ४४९)

खिल उटना

(१) जोशान्त्रित होना । धर्मान—यहसावर वर्धेकी या, जो धन पर जुन किनना वा (१४० (१)—देशबंद, ११) (५, प्रधन्त ताना । प्रथम - इति सायक हो नहीं नायक हो, सम्प्रदेश्व हो पूर्वि पाप तिन्दों छन्ठ क्रिक-- छन्ठ, ६९ यो तो जुन्ने देखते ही सिन प्रदर्ते में, बीक कर सानी है सन्द नेते में, बाल सुम्हानित ही नहीं होते (१४१० (२)--प्रेमबंद १७५ जन्म कर नित्त कर करा मैन यहन ही यही बोचा या (शेसन (२)—चन्नों स, १०५)

रिक्त किया उद्दरा, सिर्का स्वत्य कर हैस्त्रा ऐसा इनना विभव क्षेत्र दिये और आशास हो । प्रयोग— या उप्तर कर नार गुन हे रही हिला क्षित्र कर हम पत्ती (तेस्सर (२)—स्वास , १४% ; सारी क्ष्मास सिर्मात्वाचा इसे दीएर १ स्वास्त्र पर्याप्त कर अनुन को पाध में मान दीना देसकर मर्गानरी विक्रिक्त कर हुन दवा स्वत्य—देव सिर, ६६ , सून यह दिल सिर्मामा कर हैंस पत्ती (वेस्सर अली और), और तुम, मिलांसनाकर भीता हंस रहे हरे ,क्सांक—यंत, ४५)

विक्रिक्ता का हेमना है। सिन्धिका उठना

व्याना

भूम देना । प्रयोज-सुन्धे न रक्तम कोने का तनरमा है, में क्रियान का कमा- क्षेत्रकट २४१ - वस्हाने यहां घाना नी कृष किमा विका बातर (सिद्धांश—संo मित्र, १७)

(बवार बृहार--क्षित्राना पिताना)

किलीमा बनाना

पूरी शरह बच में बरना । प्रयोग--- मून्नीनाम और धिभू-वसास आदि की कटती कहने में कथर न रावते परंतु अकल पोटी वी इन्होंनेए उन्होंने इन्हें किसोना बना रक्सा था (परिकार-प्रीय दास,६६); प्रतिर ही की मैं भावनीति का विस्तानर नहीं करने द्वारा (बागर-हर कर दिवर, २५७)

किल्ली उदाना

बगहान करना । प्रधान—नमोध सारी शस्तुनियति की सिल्मी बदाना है क्य ही सक (दुरानास—दैव सव, २६६), होना क्या है ? सामा बाधार किल्मी खबाना है पुरु पुरु —सुंदर्शन, २१०)

व्यक्तिस-तात करना

(१) कम-नेवी करके कियी तगढ़ काम कमना । वरोक— एनका कहना वा—यब रोजधार में हुछ कियश नहीं. वैशिक कार्यों में बॉच-नाम करनी पहती है x ≈ तो किर तीने में क्यों इतनी दहाबता की बाद (मानक (१)—डेमबंद,

१४४/ १७३ सार्व वि

(२) सार्व विचाय करना । प्रयोग-वाही नोधी, तीची वाली को विचार ही विचार में बंद तानकर देवी नेपीयर बना लेते हैं कि प्रयक्त गुणकाना पुरिचल यह जाता है परीक्षां --सींठ दोश, ६)

क्रीय-शाम होना

वैषयाम्य होताः । प्रयोग-स्थितः सथर साम वटि सँ वीते । शो कटे बील-साम सँ राजे (कुलीक--हरिजीधः ६९)

क्षांच काला

() अप्यूष्टर करना । प्रयास—असरकात का कर अरू क काम काम की और बीजने का बधास करनी की कर्मक— प्रेमनद, 12)

(२) अपनी घोर कर नेना । यधोय—शोध में को अध्ययं के निम प्रमने कर ही कर मोच निया (विश्वती—प्रसाद, क्षर

र्माच तता

क है योग न देना, विश्वन हो ताता । प्रशेष स्मामकान की ना बात स्था है पर वृष्टन जिल तरह आपन को सहसा की असरा मोज निया है इस तरह भारती बहुत हो जब बाब को रतेगर हुनमें सुन्ने सनेह है जैसर ने असास रहत

मंचित्र ताती कान या हाता

एक ही बरन् को लेम है जिए सीना आएडी करना का होनी। एकंक - रहे बढ़ीर अबि कारणदानी नहां कर हुने हैं केवर तानी कवीर संसाध कवीर शेक लाह दे प्रथमन की कारण तीय की सीथ-तान कर है कम (गुभतेय-हि(औध, २७/, तो दिनो तक बीचा-गानी क्यानी रही (क्रफ्ती संबर--एड, ७५)

र्वास काइना, -- निपोरना

- (१) रोजता विकासनी । प्रयोग-किए सीसे काइकर (बोले)---वर बाव अध्यते हैं असानी परिविचनि ...केवल वर्ष कृत्यतः... बेकर २)---आक्रोब, १५८.
- (२) काम निकास कर हमको (अयोज—सामीकोर में देन) नेथा नकरकार करका हू यह काम निमोधनह है (कृष्टेलीक जिस्सा १८६ मृद्र वे हे कादन को स्टीस है द्वीलय न हरेग्रोफ २०३

ो वर काना ।

सांस निर्पेत्ता १० साम साहना

वासह क्रमा

दर्भ निकालमा । प्रयोग -- किइनिकायन साग्र वर्धद नहीं ती समुद्र जान काम में स् ६वें (बोल०--हरिकीस १९२)

च्दा की बार

हुआंख । धर्मात—पर्या, एवं काफिसे पर कुटा की बार है (राक्षात देखात—समृद्ध दास, ६००,

शहर पर

विता स्थापन वे क्ष्मी गाह । प्रधान --भाष्त्रवाहन का हाथ धारा है । सम्बद्ध प्रधान देश तहा का क्ष्मा प्रद्रापन क्षा कार्यया और क्या घोषमा ?(वशक--नामक, ३०); मही, भारत की वचाई की बात अंदा बंध कृतकर दीक श्वा हूं -स्थक---क्षेत्रह, फल

बस्य कर कहता

विका विका हिनव के येथे वृद्ध करते हेला. इतना वृद्ध । इतार इत्तका द्वान्य करने को उन्होंने देशम करा दा तो हम माप नाज पर नहीं बहना बारने हैं, केविन प्रद पृष समझते ही नहीं तर नमसे मानका पर करता रह रहा है मूनेंठ अयद कर्म क्ष्म मूने मीना नहीं मिना पर तद कार में उनसे मानका कान क्ष्मेंगा उत्तक प्रदेश अहक, १०५ साम कर और कार का कर बान बाजिय गरा कहीं कान मुसनेंठ हर्गकींट भा

स्ताप्तर संतना, भूत संदना

- (१) सम्मानी करती । प्रयोग—रुक्ता और क्षम्या कृत कर रही है पात कृद्धः वस्त्रत १७४ स्वर्गतना होते न भूग केनती (सुमते०—हरिक्तोध, १)
- (॰) उपन्न कर होना । प्रयोध—तब ठीक है । अब बेदा सुख देखना । जुल जेलु वह (सुनाग० - यन तर० १३९

जुल कर वाले होना

स्पन्त काले होता । अमीय-नहीं अपनाम करते की बात कहा में उत्तर सम्भावत है कि कात इतना स्वत्त्र हुई (४ सामध्यक्ष मा अपना का अपना क्षित्र सम्भाव क्षात्रक हात नहीं है (चित्रक-नामक क्षा) क्ष

खुळ खेळवर

🕩 मूल कर बेलका

खुल काना या चुलना

- (१) मन की बात कहती । प्रवाम—और नुष्कारे नावन को दनना जुनी है, दनका नामन काल नहीं, यक्षा ही मुख्य नमन करने किया है जिल्लों जिल्ला उद्य दन नावन कालने यह जात हम न्यानने कालन कर्म कहा जिल्ला हिस्सीध श्रद्ध प्रशास, जीवन क्षाद्ध भग है कि जाता समूख बामानी से न जुनमें (१९०० (२)—शैनक्द, १३६)
- (२) शोधारमान होन्छ । प्रयोग -बुटि बृदय अश्य में भीड़ीन दीन गलाम की देशी लगा जिल्ला हिन्द करिय --धमाठ, १९०) हो मलाई के लिये ही तम बने तम जिलक मुस बनो बृगई पर गुड़े । मेर समियो के सुने गुम हो म जब शास पर तम तम मने तो समा सुने (भीकें) --हारसीध, छ।
- (३) सकाच दूर हाता ।

म्बुन्दर सेव

किसी बान का प्रगर गया थातमा प्रगणि शहरण एकति बजी इस बदल के सुख पान से गर जुन्मा हुआ जेद ना कि सीमसंकर ही जनके कर्मचार है (प्रेमक प्रेमधंद, ५३॥

क्लार द्वाच होना सब अर्थ करना र प्रशंत जान अर्थापट का स्ट्रांट स्थ कोन नहीं बानना (भारतीय---विक रोध देव

धुला दाना

- (१) बहन विक नाने वाचा । प्रवोध-में राजनेना अही हैं जोर क्या जुना है । कभी गोई चुनने विश्व संस्ता है सानक १)-प्राचित, १४): और विद्या सभी वन्तेने जोगी वे जिए जुनी हुई है (मेरेक शुकारक, २०२)
- (२) लाख साथ बरह दश्ये हाका ।
- (३) व्यक्ति साविश्य का विभाग-विश्वमें के विशा सिता-पर रोजा ।

वर्मा बंग्ट

नपट सोसप । अभीय-समित्रे तमा बजीयन कर दीजिए, विस्ता भार भार कर किसी पर त रह आप पहुंचन के पत्र पहुंचन कर्म १४

कर्मा त्रविका

विद्यादिक वस्त । प्रयोग—वर्ष विश्व कर से ६ नाम वस्त्रे इंद्र कीर वे कृष्ट कृषी व्यवस्थ के शीम होत्र × वहीं कीत्र। की अ अ अद्यार देवर हो जाना कीई बसाधारण कान वहीं वैतरे—कडक, हम

जुर्खा बात

रक्य बात । प्रयोग---वृत्र शक्त का र जुल कहाँ कार्य । क्या जुन्दी बात को कता जोगे जुभनैक--हरिजीस, हक्ष्र

ब्की भाषा

क्ते जात.--अजाते,--र्मदाव

प्रयेट क्य में १ प्रशेष—वया कहें बात नेहपाई की है क्य आप नेतिया निकती (मैमतिय—हरिजीध), १४९), बद-वर्ड ट्रकाय अन्दे-क्याने क्योजन निया करते हैं (मानव ७) —डेसबट ५०), क्यने कृत समाने याद बाते हैं केंद्र—अव सात, १३९१, स्वाद, विकास, और यन की मिल का जो क्रमत हो यह क्ये बैदान होने हैं (बुद्ध-अध्यान, ९२

सुन्दे सजाने देश सुन्दे अस्म

्ध्ये दरवाने न गरनाना

क्षले इंद्याजे न शरमाना

कोड अजबर म होनी । पदोग "क्रामी नो" निन्दिंग ने कहा - 'मुके दरवाचे नहीं तरमानी। बाओ भदरा बढ़ दो **एड औ** (बोने०—रां० शंक, १९६३

भले दिन से

विना किसी दुरान सा घेट के-विना किसी पुर्वाणा है । प्रयोग-सीर महाराला प्रताप मित्र में भी अन्हें मूले दिल में नों भगाया (विषठ-प्रेमी, 10), सारी बात पर नाप लोग जुने फिर से विचार वर सकते हैं कर्डठ--देठ सठ. 521

णुते नेदान वेत सुन्दे भाग

सन दाध

दिना किसी रोक या दुराव के । प्रधाय-वे वृत्ते तिल ज मान क्यों केने को जुने हरक दान देने हैं (बॅम्ड०—हर्वकोध, १६७% रामी बाहब ती इलाव बुरे हाथ रेनी है जाताव... बुं 🗝 वर्ती, क्ष्म्प्री; क्षपने की विदा केने व वैने कानूनी। नहीं की-मुले हाव से दिया जैसर (२)- प्रश्न व १६६ - मिनाने विकार में कृति हाथ अर्थ बर्गा था गान-अंशबंद, ६२६,

ज्ञाभदी देवद

मुताबद करने काला । प्रधोन-स्थाबदी टट्टू दड्डी का, भाग न विभिन्न को अल्यू काला चारचा वा ४००-१ — प्रेमचय, अप्रद

कुशा से असीन पर यांच न पश्चार_ाः नाच श्रद्धना द्यार्गिक्यामा प्रकार । प्राप्त अस्ताना ने प्राप्त कर्मा प्रकारको । अस्य देखे को सुर स्थित स्थानको हरः *वेस*म् देव झव ६५ - विकासी कर स्वाक कर तर सेता तर है ज भारत पर विवत । त व नहां हैं का एक

∢ममार महार सक्ती का हिकासा स महार के प्राप्त तानाने जुसना 300

खुरी में मान उठना " जुर्जी में उद्योत के पांच न पहला

मांद्र सहर्गना

र संप्रतासका के का वा बाद वर्णन के सामा प्रतिवृद्धिक । प्रतिव हरावति सु० सा०—सूर, १०५५,

ष्ट में बांध रकता

यपने हो अधिकार में दलना। द्वशीन—सोट होते न संद भ बनती पन नमा है जुडाहमा में छन (जुमते०—हारिजीध,

खुटी सामकर सोना

निक्तत हो कर नोना । प्रयोग-अरहरी वृ ती परवी मंदिर, वृत्तो क् ही लागि अबीर प्रसाय-क्योर १९४५

न्त उपलेता,—कोलता,— मैं भाग ल्याना

पुरुषा परना। प्रशास-स्पर्श देन और सूपमला हा रका उपनन मन्। वंशमिकारो-कम्to.१४६८ सापने अपने नडकों के रोने की धावाज नुती, और बापका चून उबनके कहा (रंग० (१)-वेमबंद, २०६/३ रक्त क्रीकर नवता वा कि कुछ के कान स्वास्त मूं बनार इन महासब को उन कभी कुछ कहते. मही देला (सामाः (१)--प्रेसचंद अन्या को नवा है केंद्र कोड़ कोब से मैं हूं बर आता वरेहोo—हर्रश्लोध, ३६ , अपने गांच के इन वीशं पर व नावार होता देखान शिकारी ग्राथक था वर सन स्थीतन लगा अवस्था -देवसव १६४ । एक किनाबके ही गाउ पहले

ही उसके सून से बाद नम गई है दठ—ए० भारत पुरुष

जुन एक करना

बरना और नारना । अधीय-अस बाय सा सी बाताधीन को बमार बनाके छोटने या उनका चौर चपना भन एक का हो। (मीदान-देमचंट, २५३)

न्त्र का सुद्ध पीना, पृद्या

र १८ चर अपन्यत् कर क्यांकार सह लगाः प्रेयान-प्रत्यस्था स्त का प्राप्त गत्र पहुन्ती स्ति । १ प्रसुद् ६० इस कार का कर का का यु ह शोकर रह अल्ल झाली०-वृङ्क्षा ३१० व्यवस्थित वास्त्रम् ४७ वर्षः स्थ प्रकृत सर्वत एक ६,9

व्यव कर पाना करना

रंग बरन परियम राज्या प्रदेश प्रदर्शन प्रदर्शन संपूर्ण दिव अभाज्ञाता पर करती माताम के किए अपना अन पन्तर करण दरशे हैं नागनाको अस्मा वना ० रहे १५७०

関ラスラス 支払品 付いる

the an entire

मृत का प्यासा

(१) जानी बुक्सन । वर्षाय — वाणे कोर सीह के प्यान गील हो भीन दिवाई परने थ राधावर्षणक राधावदास १९६७ , विकासीसह की जब ने स्थान्यन के दल केमाजितक की मुखना विकी है, यह उनके कृत का प्याना के नवा है सानक (श्रा प्रेमकट, ४४

सहस्र की काराई

बहुत परिश्वम से अभित चन । प्रयोग --- औरो की क्याई प्रशीन की हांचा हाती नदश्या प्रया वा का की र राज (१)---प्रेमचंद ३३

सान की नदी बहुना या बहुएता

बहुन अधिक रक्तपात होता । प्रयोग---न्यानि छाच का देति यमें मिलि नदी रक्त की बहिन्ने 'राधाठ इंक्सक-राधाठ दास इन्ट

मान की होली केन्द्रश

रबेलवरत करना । प्रयोग—मैं बच्चे हुए शक्तावनों की एक-जिस कर एक बार किए वयदंग्य जून की डॉनी नेजू ना दिव0—प्रेमी क्या

खन के आंस् बहरना_।—रोना

प्रमान्त्रक वीका होती । प्रवश्य कर्मा तम क्या कि उत्ता भव भून के आमू बहाबोगी (देगक:३)—इंग्संद.२१४) किनती ही बेक बोर्थिया उनकी बदोजत मून के कानू के बही है (सेवाक-प्रेममंद, १६२)

महर के आंभू दोगा के अस के शांस् प्रधाना

सन संबद होना, बन बरावी बन्या होना

एका साथनीत जिसक्ष त्रका बत या ज्ञाचा हो । उत्तेष से कहता है कि समय बात दिल्कुन्तान की क्ष्यदस्य जिस बाव तो यह सामकाट संच बादगी, वह बुत बाधना समय जीगा कि प्रवाह खुदा की सुलैक नम्मेकदमी, प्रवृद्ध तृमने बहुत स्वस्त किया भैया जो तमक साच वे हुए नही सून-व्यव्या ही जाता । सन्त्र प्रविदे २९९ (समा व्यव्या स्वाह करावा होता)

स्त्र सरावा कावा होता वेश स्त्र सक्षर होता स्त्र कीसता वंश क्ष्म अवस्ता

ŧχ

लून गरन पर होना,--मिर पर अहूना

जून करने का शाय जरना । प्रयोग—गर्क अवस्य के दश्य ने वचने के शिए जुनाही का जून ही सिए पर ना चढ़ेगा पहन प्रेसनद उद्देश दिए जननाता का लग्न विसरी, नदेश पर होता (प्रका—ग्रेमचंद, २३८)

(बना) नृगा --- जून स्तिर पर होनह)

ब्त पू उता वेश्व्यून का पू'ट पीता

त्रम स्थाना

ख्ने असाना

दुव या कर्ट देना या पाना । अवीक-अध्यते अथना जून कन्मकर कीन ना तीर जार जिला (मान० (१)--देशबंद, यह

सन उंदा होना

- (१) बांच करा होतर । अमोश—दिल हुआ ठंडा, कह दरा हुंचा देल ठट आग वो टइन बड़ी चूमले०—हर्दश्लीध, ६३
- (२) बहुल देर काला । प्रयोग—६० ठठाते में गयी आयुन्क उद्देश्यता ४ च देक्वली थी कि शह को मुसका बोमों का सुन इता हो जाना वा यांन्य (६)—देमबद, २०), मोना का लोड़ हुई हो गया (गोदान -प्रेमबंद, १५६)

(४) बदला मला ।

ब्त प्रवास एक करना

धोर परिचय करना । अमाग-सै नुत्रे करना सगर है यो कुछ, होया मदाना और एकी और चोटी का बदाबर और करना एक बोह में पश्चीमा पृद्ध-अस्त्रन, १३०),



जिनके लिए तुम अथना मृत भीर प्रकोता एक कर या ही. में तुम्हारी बात भी भ पूछने (गेंग्य (१)—फेनकट, ३०८०, मान दिल जून-मानिक एक करके भी-जान के प्रवर्त में जूना सहस्र (मा—कोशिक, १३०)

जन पानी हो जाना

भोग का न सहमा। जयोज—ही नया नामी अथ विभी का कह पेट केंने तब सभा कामी व ही (बोसार)—हिंदियोध ३२०)

खन बहुना या बहुन्त

- (१) रक्तपात होना । प्रयोग—दमम-वक मन्दि कनतः तो बहुना लोह (वेटेही०—हर्तिकीध ११६
- (२) बुद्ध में परस्य मा नामा जाना । जयोग----वनन सरल पर भी किन्सी के मुलाश ने क्ष्मण भून कार दिया (मृगठ---वृ'o कर्मा, ३०)
- (क)°पूत्र कशमा ।

भाग मुंह लगाना

किमी बेस्तु कर समका भग जाना । वजीन-वद्यानाथ-कमी बंग एक प्रमार में पट्टा किस ही बागते हैं वर्गनेक्स्टी ----भूत मृह सम बचा बचा समन-प्रेमबंद, क

स्तुत से धारा लगना के सम उपलग्ड

म्बन सफ्त होना

कृत करना, देशा धनना न हरेती । इसोम—जिनका कृत समेद है, पनके बीच में पहला काव है (बहनक (ब्र)— देशजंद १५

बान सम्राट होता

মানে মানে প্ৰ টুলাভ সাকা। প্ৰয়োগ সাক হ'ব এপ জন জন কৰাৰ লগ লগা ইন্টোও আলোগ হুমা পুঞ্

शमा तटा असत स्थित पत्र संघार हरता

मन क्सि क बदुता

देश स्थान सहस्र पर हाला

व्यव में हाथ रंगना

। र आरित करमा — प्रतीय ⇔रीग रमान्ती के जिल उस सब हुना व यक में रोग्य प्रशत ^{है} पैमेश्य प्रमान ३०५ ३०६

(२) हस्या करता ।

(वन) पुरान-ज्ञ से तसकार रंगवा)

ज्य होना

- (र) नष्ट होना न्यवं भाना । प्रयोग—संवाद भी एन विचि में क्थार बॉमनम और उसके सभाव कर जून हो बातर का सफ्ती क्यर—उस. ३०% बहां कहीं न्याम का जून होते देवते. त्यत समाका स्थान उसकी सोट सम्बद्धित करते 'संसात—समर्थट 85%
- (३) इचा होती (

शत करना

- (१) नमनक करना । प्रयोग-मोधि के जेन के बाधि नम् वर्षः, उनस्कि रहित न बोरिश परिको सीताः सु - मुकसी १४
- (२) उर्द के क्यंच काचा का पहले पहल प्रकास सैनाता (
- (३) मार शास्त्रा ।

नेन का फोना होना

निष्याच होता—मृद होना । अयोन—सर्वे चावा है कि इतन विष्यत्वे चाप धोलेका तथ्य—यदि निर्मे लेन के धोला न हो. करूम हो नो—सम्बद्ध तथे होने (30 पी०—प्रव मात मिठ, इद्यों) , कुंबर व्याद्धी मोदी अब की विक्रोकी भोड़ी यह नई अ सकत, लेन के ने बाके हैं (गीतां) (वा)—मुझसी व्य

लेन के दाने किस्ता

अन्ययं रीचं होता। अयोग--ही जरोमा कृत्यं व कृत्यं यक्ष्मों यहा क्ष्मों ने कोई लेजके हाने दिने (जीहरू--हरिग्नीध, ७२)

मंत्र छाट्ना

रक्षभीम संभागना प्रश्नित स्टान्स्ट नाम्बन्ध नाहे राजे के रूप प्रश्नित प्रश्नित हो गई। अक्रास द्वाहे स्टान केंद्रोर प्रदाष कर्तोत हुए स्टान्स्ट रूप स्टान स्टाहर सन्दर्भ रहेला हुए प्रोही स्टुल्स्ट प्रश्नित स्टुल्स्ट

स्रेत पर आजे पहला

दर्भ कार्य क्षान क्षिपण जानी सुरक्ष जाया रोजा । प्रयोग संभाग कर क्षण कारण क्षाण क्षेत्र (क्षण जान पर ही) दर्भ कारण संस्कृति सुद्र कु

बेत माइन

यक कानमा । प्रयोग---कबीर करें भना को नहीं हार रंग नागा हेत । काम फोप संस्थाना विके साववा सेन कबीर प्रशाव-कबीर हमः

लेत में पछाइना

युद्ध में हराता) स्थाप—केमीड भगवीह सेन मनेना । सामृत निवरि नियानड बता (शम० अ)—कुममी, ५९०)

र्वेदन रक्तना

- (१) क्ष्मण की विजय प्राप्त करना—क्यास्त करना। प्रकार प्रश्या हास देवी लगे पन की बड़ा भाग। गणांक सन्दर्भाग नार नार-प्रशासन् क्षमा विज्ञानिकाट विज्ञानि इक्ष्म (-)
- (4) $m_{\rm H}$ all reserves where t and t and t and t (4) t (+)

सेत रहना या होना

स्वाहि से बाधा जाना । प्रधान—समुद्रों के कई हमार प्रभाव लग रह स्थान प्रधान र प्रभा देखा प्रधान विश्वक प्रमेश तो जेन यहें वे या क्याह यहें के पुन कहान—मुहेरी, प्रधा); बार सवार नमें के, प्रधान ने की बढ़ी जेन रहें न्यान —मृंव वसी १६५७, मेरे की की बीर देवपुत्र का नाम से देखर जेत रहें (बागन—हन प्रमादिन, १६०)

बोत सुहाना

विजय होती । प्रयोग-स्थास काल बीक भर दाए । करेड समस्तित्रम् केत मुहाए सम्बद्ध स्थान-पुलसी, ५४२

लेती सुले पर पानी परमना

कास जिल्हा जाने पर जानग्यकता-पृति होनी । जनाम---का जरवर अन क्ष्मी मुकाने (१००० (वप्रत)---युससरे १६८

बेल बिगड़ जाना

पूर्वित संच्या ताली, शोध श्रीत नाम विवाह काले । प्रशीस--- हरि-इच्छा भी अवश्य कोई प्रवश्य करन् है नहीं तो च्या मिरे योगे भीन भी विवाह जाने ऐसाठ---ऐसबंद, ३७९

भेस दौना

(४) तुम्ब, ६४१वरोत, नामाध्य होना । ४६१०—इन कामु को नेम रहेरी न कश्, उन जेस की हुनै का बात इस्ट्रेस्ट्राट क्रिक्ट—धनाठ, १५७

(२) वहचारक बाज होता ।

बेटना बोटना

संस्थानक प्रथमित स्थान स्टब्स आई पर दिन्द्र यहाँ इति भी स्टब्स कालताही सुरुक्षार सुर २०७२ (श्राह्म) के सिन्द प्रयस्त

लेलने बाते के दिव

वर्षाची वा क्षण्यमं के दिन । प्रयोश—धानी समने साते के दिन है देशी समय जोता दोगी तो कलेगा सूच जायना यलः — मागान, हो, इसकी नो वयस खेलते साते शीर होवन वा मुख कृटने की है सिसात—कीशिक, ह

लेका केता कर प्रशंका

विको को जान सँच करके जारता यह पूरी। तरह प्रयास करना । अपोन —इनी, में जेत जेलाइ केलाई । शांद्र अक्ट्रिक्ड करी कराई (शमेश किं)—सूलसी, ६(०) क अवर दाव का मेलीना है तो जा उनको लेला जेला मार कृत्सै०—हिंद्यीय, १४७)

संस्था

बहुत तंत्र करना । प्रशास—स्विधान वन क्षम संभ वृद्धावा एडि: पापिटी में बहुत संस्थाता (राम (स्त्री)— कुलमी, १५७

बेर्जा-सार्द

- (२) कुष्य समस्यम सं अविशितः। प्रयोगः—देखिए प्रयोगः (१) में (')

को जाना

विसी निवार के इतना दृष्ट माना कि कुछ तुम न गहै। एकोल—कोडी देर बाद किया किए कोले—'तुम भी पर्यान हो बाजोपं—और किर बो-ने यम (भेंसर (२)---महोद, १५०

क्षांव-सांच से, क्षांचे हुए से

अनमन, अपने में ही हुन हुए । मधीय---राजा माहर और बाउन, दोनो बोए हुए से सह वे (रंग० २)--प्रेमचंद, 33%); यह बोधा हुआ सा उम बोनने की सोर अस देश १ जिल्ह्य उसकी सहारी अध्यक्ताण मोली है झेखर १)- अहाँ व १६११

क्षोसका स्थर

यार्गहोन, श्रीकी वारही । अशोन—कृष भीरे-वीरे कात ही काली किर चतुन् व वे हठात एक जोनका ता स्वर का जाता (श्रेसर 12) — अके ठ, २०६

फोज सारना

- (१) यस के पहिन्दी का निधान विद्यान । प्रयोग---धान भागि एक संबद्ध नागर । जान उपन्यं मनिद्धि निर्देशना पानंत (स्रो -सुनसी, ४४२
- (२) सब जनह कात कर नेना ।

लोज लेका

क्षान-माम पृक्षमा । चयोग---नुर हमति स्टूबार मनुन्धे सहित म बोबी सीन्ही (सुरु सार--सुर, ४०९१), आयह म बोलो केर्र मेन-बाम मारिके आवश्रकाराः।--मारतेन्द्र २०३

(समार गुरार-कांक कवर संगी)

सोटा निका बनना

भोता में सकता : प्रशोग---नवध नमें किल्लाहन कारण व सब बोटे सिक्त में क्यान 'प्रेसाए--प्रेमश्रह, 180-

सोदा सिका दौना

भूठा होता । सभीत—स्वर्की दृष्याद् कोट सिक्के सिक् हुई /दूर्यगास—देव सव, २५१/

सादी उत्तरमा

भूती प्रवर्गणातः होनाः । समीय---वासः प्रेन वरीकाः के मध्य तर्ग कह सब सान भाग इनकी साम् । प्रस्थतः सम

सांद-लांद कर पूछना

भागिता कर एक ही बात की पश्च बाना पार पासन भागा नहीं ही बेटीनों कोई पूरी करनकारी करना । प्राणि निकर हमन कहुन भागनाइका पृक्ष ना प्रश्न पास मान्द्रम हुन्द्रा कि इसी मन संपन्न भने निकाल है सीच प्रशान च निकाल, पश्च

स्रोपईंग

क्षरेपडी माना

बहुत बंदबाद कर परीक्षान करना । प्रयोग—कुछ बंबब है बंदबर उनकी बंदी को कि बा बाते हैं। सबकी बोपवी डोसo—हरिओंड २२

कोपदी स्वत्रागा

- (१) बार बाने की इच्छा होती । अयोग—क्यो बिजाने लाकक्षकका है। हा जागरा का है तह काला रही थीटें - हरियोध, देरे
- (२) गामन भानी ।
- (१) गोर्द श्याम मीनमा (

आंपर्डा बादमा

बहुत कंक-बोल कर तथ कर पानता, एक ही बात की बार-बार पृथ्ते कर की न तक्या बाना : अगोग-वन बार-के ने के बोलवी बाट बाती मिलव(४)--प्रेमबंद, २६१; है अपन बाट बन नई उनको बोलवी को कि बाट बात है बोलव---वृद्धिकी, २२

कापटी जगामा

नाविक नायना करती । प्रयोगः हो बनाते सोपदी स्य। कर्मकरी, छोड कीनी बागनी निज सोपदी बोलए---हर्मक्रीत, दह

बोपरी क चरा होगा

- (१) विस्कृत पात होता। प्रभोप—हरहारी दी बाबू साहब की कोपडी पर ही कहा का (मिसा०—कोशिक, ७)
- (२) जून बुस्तेही करता ।

(नगाः पृहाः-आंपड़ी पर संबाद होना)

लोपटी जाज होता

िया प्रोग हता या कम्या । प्रयोग — विन्नु विश्वती ही क्षण क्षण आग की कुछ सोप्योदया ज्याल होग विना मही रहको की सत्त्रमी०— वाहुल, चंड बढ़ कि होने ही तथक कर काल कुछ साल ही ज्ञाला के तब क्या लोपनी बोल्य— हरिक्षीध २०

रममान्यसम् । **कांपदी बळाना, रंग ब्रे**ना)

क्ष रेत्रकर

स्पष्ट रूप में । प्रयोगः यह बान कई बार लोजकर किया में हो गरे की पहुंचल के यह प्रदेश अंगी, 36

मोलकर क्षमा

स्पन्त बहुना । समोन-नृष्ट किनती करें, सूनहे संदर्भ तुम, नहें। कही लोकि के अनरतामी सुठ सरठ सूर २१% सब इक विकास बालि कोलि किन बात कही सब (नंदर श्रामान-नंद, १००), गुके बद तक भारी बात नहीं आंबकर न गुनाक भी तथ तक नेरी समाध में केरी बात नहीं आंबती ,मा-कोशिक, १०); सून कहें भी जोनकर बात कहें। सफ नह पर है किमीका कोन हर जोता-हरिश्रीध, १९६)

जीलना

- (१) नन की बात कहनी । ±योग—आपने मुझे नी सी धंप से जोला और बहुत नर टटोभा क्यां≎—हशा≎, क्र
- (२) पत्न बात करनी । प्रयोग प्रतापात न पुन बलाकर पुत्रा ते। मदनवान न सब - दान म्यालिया (द्वा० – इसा० पुरेते,

भीड बांडदर भिड़ता

पूरे बाहर है। अधान-यह सार रक्तों और बहा दूस स्वान से बाम नहीं बोरमा। "सीक बोदकर" विद्रमा परेंगा पट्स० के एक-पट्स० असी अर्)

नोल्या या कीलावा

कार या आक्ष्म ने भीतर ही भीतर बहुत वर्षन होता हा कर देना । अर्थन—आध्य भी दीवार से पीठ समासे वह इसी दकार मीठना रहा या भीर विकार में जोते जीता के निवे चटिन से करिनतर होती वह भी भीतन—धाइक, अर्थि, मॉनवा की संबद्धनि सीए संप्रमान-दोनों सी ही तरुप सीमा गृही की (बृद्ध-अर्थ-अर्थ, २०)

भ्याच की दुनिया

गञ्जाना नाम । प्रयोग -क्षणिन एख ग्यामी दूरिया से रहता बाग परता है (भीर०--खन० मोदूर, १५)



रोगा उठावर, गंगावली वहाना

हाथ में अंशरण नेवार सामा बेगा। प्रयोग-नामर यह हम गुप्तार आग गंगायका उताय हा गए गए ने है कि उन् सील और सामानी गुप्ताय, कृतकाम-जुन्तायता गुप्त में है यह न गरिनचंद में है और नामार्ग्याच्या सी में कृदि— यां० सां०, १९६१); सरामता में सामार नवारी देना क्या गुप्त गंगी नामार नी है। जंगायनी उदानी पत्नी है × • वेंटे के निम पर शांच रामारा पहला है (एंग० (४)—डेमचट, १९५); बांचा में लंगा प्रशासर कहे बचना है कि गुप्ता मुख्ती क्या माने नवा नहीं (किंग०—क्षेत्रिक, १०६०

मंगा कमूना से जब तक जल रहे

भिन काल नक । प्रशंस—सव विश्विती अभीनद् श्रीर मोनि के हाम । गांच नदन की महि कम तो महि अध्यक्त मान्य पदण-आदासी, ११%

पेका जमुनी

र्मगण्डल होता

प्रियम क्या जिल्ला होना । प्रयोग जुल को कहरू हो मेरी करनेया गया कर पार्श सु १४० सूर ए... सपार से कीम है भी कड़े कि के नगामण हूं संगठ (२ ---प्रेमण्ड १५७)

मगणकारी उद्यानक देव सीमा उद्यानक

गंगा वहाना

अहंग कार के यें इ. नराम है। का का कह

क्लाओं कि सुरदश्य कर कर, ली जंगा शहाने चलाने कि नहीं (रंगक .व)—देसकद, ५०१)

(२) किसी करित कार्य का कृषा होता। प्रधीन—तू यह काम करा है तो समा नहत्त्वु (स्टुटा०—श्रेशपाल,४६६), यह काम हो नामें तो समार्थ धवा महा सिया (सु० सु० —श्रुटारेन, १२३

गंह-कोड़ा होना

- (१) नमन होनी—सम्बाध स्थापित सरता । प्रथम— कहे कहार तक बन का सोपा, आब बनता हार श्रू गठ-योग क्योर प्रवाठ-क्योर, १६०,
- (२) विकास होता । प्रयोग---सायम में भी गुड़नीय हो नाम गर्डे कृत अनोमी स्वयन्त्र और स्वयमें की जास गर्हे इंशान---इंशान, व्यान्ध को विकास कार जिसस गांड यह जुल वह-भोड़ा कभी ऐसा मुजी (कुमरीय---स्टिमीय, १६८)

गंड-कथन करना वर होना

विवाह करना वा होता, उस निधिन गाठ वांचना | प्रयोग--पित्र हम शहरतमध्य करते हैं तृप अपूर्ण भंजरी का प्राय करते (माठ संभाठ (१/--भारतेन्द्र ४००); में हूं वही विश्वका हजा का स्थि-संभव नाम में (स्वय०--गुन, २५

र्गेष्टर बोधनर

िएयं करात्रा (द्वारत) । युद्ध वया एए स्वर्ता व राज्य व राज्य के स्वर्ता व राज्य के स्वर्ता करा करा । बाधने कर राज्य के स्वरोध-सर्व्य देवी, १६५)

गंदा काम

क रेक्ट के अस्मानी का काम । प्रयोग जना न असीन प्रकार कार्य तम का काम है। में संस्था अस्मा कारका कार्य । जिसे प्रकार सह

र्मध आता, चित्रता सहता

(समा∻ मृहा∻—गोध पाई जानी, जिल्ली) गोध सिल्ला

रें गांध आसर

गंध रहना देश गंध्र आता

गंध होता

केरामाण होना; तनिक भी अध्यान विनना। प्रयोक---यन आनद जीवन रूप सुधान ह्यै प्रवेत क्यों वृत प्याम गही। अब कृति रहे कृतुवाकर से सु कह पहचान की बाह नहीं (धनक कवित--धनाक, ६६)

गऊ होना

शहून मीधा होता । प्रयोग—सान भाग वन्याना के नन्धे गक्क औरत या गर्ने हो (गोदान—सेमचंद, रम्भ्रो) भी कर कर ही उसने स्पोल्य गंबादा (क्टबानी—सीनेन्स, र्थ्र

गगन-सेदा

(१) बहुन उपय स्वर्थ में । प्रकोग—किन्तु पहली बार ही जब बहु स्टेंज पर जाया तो बक्तको ने × > बयन केरी इहाके है उनका स्वत्यत किया (पैतरे—स्वरूक, १७)

(२) वहन अःचा

रांद्रा सप्ता

धीरण क्षाना । प्रयोग जोधरी उस घारा दश्य नारी प्राप्ति प्रदासक का द्रम्योग क्रम्से---स्वया मा क्या का गोदान प्रसन्द ३०

(मया: पश: शक्का साना)

गच्छे से कालना

हेरानं के राजना। प्रमास दूसर त्य क्षर न द्वारा रहे

6 P 185

वरके में हाम दिया (वीटान-प्रेरफंट, १५) गाडफनान कारतर

दुवति करती । अयोग-व्योग तम पत्र को औ द्विवेदीओं ने नकरवान करा दिया है (गुण लिए--बार्ट मुट हुए, ४७३

गरेक ज्ञाना

रको माना । अयोग—में बैना का इन गोरन की काननी नहना ? कानी की नृदशन चारत (क्षांमी०- प्'c दर्मा, १५२

गट-गर मुनना

विना प्रतिकार क्ष्याम मुक्ता । अयोग---त्क बार भी तो उनके युद्ध से न निकता, काना तुम क्षी प्रतका स्थानन कर गा। हो ? वंदी नट-वट मुक्ती रही (मानव (१)---प्रस्कर, १६४

गरदा क्या हेना

कियी काम के करने बादे को बीच में ही शेक्ष केमा। प्रयोग----नव करने क्यों न ठटठा लोग जब बाद गट्टे के निवे गट्टा पंचव (बोबोo--हारिबीध, ११२)

गर्द्या

अवसी रक्षा । प्रयोग—जानपा—कितने बाकी होते, कुछ दिसाव-कियाब किन्छ हो ? यसर०—हो तिसाध क्या मही । बाद जी के कुछ कथ ही होने। आन्या—तब नो पृत्री वहरी है सबन- मेमबद, दश

गहरी बदाना

रक्य क्यांचा । प्रयोग---प्रदेशारी नेपाई-द्वारा की १६०० वोदे ही उरावर है प्रेमाए---प्रेमचंद ६०

गडरी काटना

मान करना (जन्मित नरीके से)। प्रयोग—रीश गठरी काद-काट कर पानते हो उन पर कहते हो स्पर्क नदीं ई। गठन प्रमाद १०७

गुर्दा धनाना

क्षेत्रबद, १६८*)* गुरुकी बौधना

(१) दे॰ गर्स्स क्तनर



गडरी माण्या

(२) जामे को नेवार होता—कपना ग्रेटा मोटा सामरन सांघ केता।

गढरी सारशा

(२) कुरुली में विश्वकी की एक प्रकार धीतरा कर वेतर जितमें उपकी बार्काण एउटों की हो आए ।

गठरी होच सानी

रकार जिल्ला। प्रयोग-नात अग्री नडरी आप जाग्यो राजाः व्याप-राधाः दास राज्य (मश्रक मुस्तक-नाडरी जिल्लामः)

गर जाना

सरामाः—किंग्सन होता । प्रयोग—मूडी बीबी देर पहले विभी की परान्तु बह तो कुछ केंद्री गए वर्ड कि कुछ कर ही महीदसकी हास्सोठ—बूठ कर्ण, २२६), नवस्थ पर्य करें किंद्र तूम जो कुछ करते रहें हो यह बीवती है तो बह बाती ह—किंग्स अभाग की तुमन धपनी क्रमण है है बटीठ- अर्थाय, पर

तहे मुद्दे उन्नाहना

राष्ट्र महत्र करता

सिन्धाना अविधि नहीं है है भान पना समाने का अन्ता को सदद महद रहक कविता के हैं पूर्णित उठ हुई सुर १९६

गरुष्टा स्वीदना

प्रतिभाग सम्बद्धा प्राप्त करका कुराई करकी जिलान व दूसरों के संदर्भ को उसे दिस्स किए कुछा जाति है प्रमुख प्रसिद्ध कुछ

गढ़ गढ़ फर बाते करना या बनाना

काने दन में जुड़ो-कृति वाले बनानी । बनोम—कानी बेरि गहेरिंद शुध क्या निव वर्षी करन बनाई (सूध साठ—सुध-१४४व्याः, तर्षि निव कोने भागी भागि कोले कादर भी नवित दरन हिट वर्षा निवगान हैं (कठ र०—सेनामित २९)। वर्षा वह नद्द काल-बहुक की बना करें में बहा अर्थाण रुविक्रीध २५

गढ़ खान कर

एका आहर्त का ह के लिया बुआ नियाय होता जो बोक्स बहित कर हमका बहा अहित होना । अयोग — हार बुगई तो बुगे यह बोको हिस्साय । बाद बहेगी और को. ताको कुम तैयाचे पुठ सठ--पुन्द ३०:, को किनी के निय बढ़ा बोदया उनके सिथे पुष्पा नैयार है हिनी के निय बढ़ा बोदया उनके सिथे पुष्पा नैयार है

गर्द में गिरमा,--पैर पहना

वन्त्र होना । प्रधोत—वृष्ट वितु वातु स्वासि सिका पासँ वर्णदू दूवव पत्र पादि न आण (रामव (अ)—सुलसी, ६७२ , मेरी वृद्धि अप्ट हो वर्ष है, वै साम् सोमधर गईं स वित रहा हूँ (१९० (१) --प्रेमबंद, १६९।

(नगर-सर्दे में पहना)

गर्द में पैर पहना दे÷ कहे में गिरका

गत बनानः

- (१) दर्शनः करनाः -वीदमा । प्रयोग---वनः ह्रमाशीः ननः रह् हो वर्षो (कुमरीकः ह्यांचीस:३) (÷)
- (२) इनी सहे में वरिश्व करना । प्रधोप—देनिए प्रयोग (१) में (~)

र्गन पाना

यक्ति राज्ये । इत्यान ज्यान शक्षाः इतिवर्दे यक्ति । स्टब्से यार गहारा सून संस्था क्रमीर ग्रंथा०-- क्रमीर १०१

र्पात हाता

इंग्डिंग्स होन्स्पेड होन्स । इधारा अस चारत में हमारी

विशंव गाँत न पी साव सीठ-प्रकार दिवेदी. छश्रा मही पर बैटना का बैटाना

भिन्नेमनामद होता. उत्तराधिकारी होता वा क्याया कामा । प्रधोग—पात्रिक भाषा और विषयमदित्य अपने काद की गही पर वेटर अस्त ग्रंड (३)—भारतेन्द्र १९

मधा होना

महा मूर्ण होना । प्रमोश—हिन्द्रश्यान के व्यक्तिया बाने स्थित वह तथे होन है इसको भी त्य बच्छी तयह आतरे होंगे ,भूलेक -भगव वर्मा, ५२५०, उनकी वही हज्ला है कि में × × शब कुछ जानकर भी तथा दश को (गोदान— प्रमुखंद, १४

गप्पं उकाना,—कश्मा, आरमा,—शक्माना,—

हरिकता

स्मयं की सान करना । प्रयोग — यहां उननी देन बोजवरन हतार वीचना वा गया करेगा (माठ छंठ (३) — सम्प्रेन्द्र, प्रदूष्ण), इस्त्रप्रमानदर माठवको वर्षक नरहवा भूनावा धीर भून है कानाफ्रकी में भांति- भांति की नर्दे हाक हाक प्रसान होते थे (साठ सूठ—बाठ मट्ट ४५); वस बीच विनय नहतो की बहका विशे अप बानामें धीर वहां पर्याप्त ने से माण नदानी बाग हो गांग बहुमठ के पत्र पद्मार श्राप्त , १२२); भीग नहां नहीं कृषी की खाना से बैठकर गांप हाकम नय वैद्यातों है भाग करा बेडामा बे बैठकर माण हाकम नय वैद्यातों है भाग करा बेडामा बेडिक में भूमा से बिन्द की स्थाप की विश्व की स्थाप से से माण नामें विश्व (बीटीठ—निराला, ६६), मुम्ही से माण नामने माने से अपना क्षारा हात्रा होता होता (वीवाठ—निराला, ६६), मुम्ही से माण नामने माने विश्व (वीवाठ—निराला, ६६)

(महार हरू । सुरक् सदाका आवना, मध्य राज्य श्रोकनाः)

शप्य भगना है॰ सम्य उड़ाना

शस्य मध्या देव शस्य उड़ामा

मध्यः लङ्गाना १० मध्य उद्गानम क्य हांपता

^ह॰ गप्प उहाना

स्या देवा

जबसादनः । प्रथान—हम्दर्भने भी अच्छा गण्या दिया भीरे मुद्रा जानता है में तथ समस्य चा (स)—सीक्षिक, २८५

गार करण्या

ना नानर । प्रयास-स्वारि वृक्ष स्व काका वाके प्रश नवास्त्र नर्स । स्तिक सै देवर एक कीम्ब्रों देवर व्यक्ति रस्टार्ट अवास-हिल्लास

गय भागा

- (१) जब करना । प्रयोग—नारी का धर्म है कि क्षण जाय गोर्टरने—पेनलंद, ५३०, इजाने वाले तो बच्चा गुरू को बादाय अन्य नय जाकर रह तार केविन एक कोई वृत्तिता योगा की या जिसने प्रयास वाले के लिए केंग जाना अन्न बुद्ध की वर प्रकार की जाइनी सहर,—सुद्ध, द्वार
- (२) प्रतीशा वरकी (
- (३) समा करता ।

गम-कोर डोका

तक बार जानवाका सक्ष व वर्णवाका । प्रधान—पी तो पर-पर काप रही थी कि कही तुन्हारे उत्तर हाल व कला के । असर है वहा तककोर स्वयन ओसबंद, २००

गद्म गरम करना

क्ष को भूगा देशा । प्रयोग--यो नामा, नोग नाम प्रपता सम समय कर रहे हैं। सुरेश- सगठ वर्गा, १८५०

सथा करना

नया में शासन विश्वदान करना । प्रयोग--- गुमकी इसलिये बुनाया है कि बद बढ़ाई की बेगा (धनिया-करम करना है भ और हो नके तो ग्रया कर माना (धंग्र० (३)---प्रसंद, ३८६

सवा स्तरा

श्रास्त्र (समा का नियमि) प्रयोग—यह मीनिक रमस्यो रसभा तम सात का प्रमाश है कि गर्ने मुजरे स्थाने में की अच्छी करिया हो सकती है (पर्म प्रामा— प्रमुख सभी ३०९) यशा शीता

गया बीता

(१) बुरी दक्षर को पहुंचा हुआ। प्रशेष—संबद की यो का दूव विषयान का कि उनकी संनाम संनाद के वर्गा बीकी है विस्तर (१)—शक्त दे, ११७), बाइना कीन सरनां की है विट गये कब मारी नये बोने (कुमतें)—हॉरकों). १४)

(२) कुरा, तृष्ण । प्रयोग---में स्थयर गंधा बीता है कि गुरेश केरी बाह में लंग लंग और में समय तक से पाऊं है बीचेठ---वाठ राठ-१५६०

श्राप्त का यावना होता ने भंधा बरवन्त होता भएने स्थार्थ के निये पर हुए, करने को तथार । प्रयोग—सहा कोई किमी का भाई नहीं, काई किमी का दोस्त नहीं । यह अपनी गर्ज में भर्भ , बावने 🗴 अ (पेंसरे—बद्धक, ६५) , इस जनमो पुत्र में कोई सम्बद्धा प्राथका ही पर में निकास सकता है (एगें० (६) प्रमथद,

,मगार मृहार-नारश और का बाबना होना)

गरक में कायला होना दे≉ शरह का संधा कायला होता

गुर जनग

गुम्से में बीर से बीममा । प्रयोक ना कर बड़ी सरवित है, मनु भाई निव भी है सुर्भाग मूर, १९३४, एक तो सब्दे का तमाओं से मा माम कर विद्या, उस पर और गणत हा गण १ प्रसाद ६३ वर्ग इक दिल् गणत हुए गण १ प्रसाद ६३ वर्ग इक दिल् गणत हुए गण १ प्रसाद ६३ वर्ग का देश सिम्ना भगत समी ६७ द्वादा गर्भ देश वाद्या है।

प्रकृतः यस्नना

कांच मा तीर कार या धनाय प्रमाण अस्ता । प्रशास— िहन भर मा तुम का तेहा वहीं ती अवस्थित स्वीतहीं बुँदर प्रायमा २ ११३

प्रदत्त अञ्चल

भाग दना । प्रयोग अस न गरदन मह प्रशान हम् पालका ५८ नवर यहाँ गरदन कीलक हमियोद १३७

गरदन उठाना

(१) वर्ग करना । भयोश--- वस्त नादमी कृष्णी को सोई नहीं किया, दिने सिक समझ कर गर्दन उठाते (कृतनिक--निराला, १३०, वेरी यह दुर्गत इसनिय न है कि सका है, भीना प्रांगना हूं । मसरकत की कमाई नाता होगा तो में भी नरदन उठाकर न चनता सेटा भी आदर साम न होता हैस्त (१)--- देशनाई, ५८

(२) पिरोध करता (

गरदर्भ उद्या, -- उत्तरमा

भार प्रांता जाता । प्रयोग-क्यों स ग्रायन पाँसे, तथे, उत्तरे हैं तहस्त धवार ग्रायन पर विलय-हरियांध. १३५ व्या हुआ उत्तरी अगर भरतन स्वी प्रीप्त की ग्रायन उत्तरे को रहे बॉलर-हरियांध. १३५ व

गायने उदाना

नार कामना या पार काना जाना । क्योग—पवनो का पक्ष नेने कार्य हिन्द्रयों को तो गरका खड़ा देने को जी करता है (मैका०—रेमू १४१ क्या हुमा उनकी अगर नरदन उनी और की गरन उदाने जो रहे (बीस०— हर्मकीछ, १३४)

। यदा ० मृहा०—नावद्ग प्रजारमा ।

गरद्व इतरता रे॰ गरद्व उच्चा

गरदम के बीर करके बन्छना

ननमं, सकामान, मनना। प्रयोग—यदि श्रीमाँ की जना तृत र टा काम, मा भाग का पान को धर्मद्राज्य कर. हैं। पुलिस धारोबा मस्यन क्रीबी करके में पुत्र सकें क्रमाठ देव सब २१७०

शिवन क्षेत्रकाता या काउना

(१) हानि पहुँचना सा पहुँचाना प्रतान पारा-- ना कानी अस्य सेर) गटन १४३/वा नार्य र देखर २ उत्तह से १९९ (- अपध्येतन राजा सा १९ना ।

ग्रदेत छुट्ना

विसी स्थान क्षेत्र दुई। पाली अध्यास इसके निय कर्ष



इन पर अपराध नहीं लगा सकता, धनर नोजनाय की गर्दन इननी आमानी से न खूट सकती भी (गोदान----धमर्थद १७%)

गरदन भुकता

मान का अभीन होता। अपान व्यान के निकास जीवी एक्स की सार्थि होति साहि के विकास कर घन कम ध्यान हो कार दंश कीनापति, १५) (को), बहानाथ पिकास धवन सुरत पर योगा हाल में कार्य बनीम खनियम की (मुख्य सुरत पर योगा हाल में कार्य बनीम खनियम की (मुख्य सुरी भूषण १६३

- (२) व्यक्तिया श्रोता । देक वर्षाण (१) में ()
- (६) बेहीम होना ।
- (४) भरना ।

त्रवहत भुकासा

- (१) शर्माना । प्रयोग---लव के बाम स्थल की बांच, बचन नवाद रहे (सू.० सा०--सूर, ४४०५)
- (२) विजीत होता—गणा नेता । प्रयोग—विका द नारे शारि नायर पन नोश र्थशीट प्रस्तारट नी करि वरन न मोरोड अरब-कल ,दोहा० -सुलसी, रूआ।

शाहन दुदना

बहुन बाम के नगरण चगरन इदे तरमा । प्रधान-समा कोफ तो उत्पादी, गर्दन दूर नदी (गवन-प्रेमवट, १०६)

शरद्व देवी करना

विमुख होता मा उरेशा करना। प्रयोग---आब टेश भीर टेकी है अमें क्यो मना टरी न में नरदन करें बोलव-न्हरियोध १३०)

शरपृत इलकना

मरता : पृत्यु के समय परवन का निशाल हो जाता। प्रणीय—पर गर्व प्रांचे पत्रक पिर हो गर्व। यस पड़ा कांगू क्लक गण्यन पड़ी (बोक्षक-स्थिकी), १३६) (स्था व स्थाव--गरस्स इल्लंग)

श्रद्धस द्वीली करना

कार नवतन हमानि कबता गर्वकार गरदना प्रशास भी बारा चारमी हमान्न दिक सद कको । मैन इसी अन्य में बाद बारों की गरदन दीजी कहती हैं १००३ सम्बद्ध १९

गण्दन द्वना

कर्म होता , कार्या निर्मात कमजीर होती : प्रमोग— क्षमण्डाला की नसस्त्री तो हुई पर अनुशत के बोक्स में उनकी भरदय क्षम नवी (कर्मक—प्रोमबंद, ४) ; बतवह नवदन हमार्थी है देवी (बोकक—हीं(बीच, १३०)

गरदन देना

बन्द् के लिये बमरित होता : प्रयोग—बहुतनह दीन्त नगर के गोवा : दलव ह देर बस्त पे श्रीवां (पद०— जायमी ३८ : १०)

गरदेश में इंद्रा सकता

- (२) मन्त्रित होता । अयोग अन्तर मोने—भगवती की यो वर्षत नहीं प्रदर्श । गोदान—प्रेमणट, १६४)
- (२) फिनी कमाचार को चुपकाप सह जाता।
- (३) बहुत स्वम्थ होता ।
- (४) बहुन बारकर होना ।

गुरंद्रम संपन्ध

द्रोंचत होता—सर्व द्राया काना । प्रयोग—गता वीटने बाके की स्टेंट सरदम नगी दिन्यती (मर्ग०—हरिजीध ह), कनम भ्रम भी गर्ने यह बान की गर्दन नागी नाम (सान् (2)—ऐनवंट 250 /

शक्ष्य नापना

- (१) अवसानके बाध निकास देना । प्रभोत-भी गान उसकी नापु मो जो कन्नरकोल दिसानायेगा नुरठ-भारत, ५३) ; को कोई है, इसे ककी मारकर बगाओं मही से, मारो करके । नदेन जांची गर्दन (वैशास्त्रीय (३)--वसूरण,
- (२) बहित करना । प्रधोन—यहरी भरितक की ग्रंडन नत्नी (बोटीक—निस्ता, १७); क्षेत्रित कम की स्वृतिविदेशियों करी वर्ष नापे हो में विसे युकाकमा क्ष्म- समबद, ११९

भद्य मंत्री करता या होता

प्रतिन्दा होता । प्रयोग---कत ही धड़ी नारि नीची करि देखनि जोचन कृते कुठ साठ--सुर, देश्वश्व) ; इस पुस्तक के पहले के धारकी कर्दन नीची होती है या ऊँची ? (कुठ निठ---बाठ पुठ गुठ, ४४६) : विस तरह गर्दन प्रस्ता गरदम प्रशेषती

मोशी न हो अवकि परश्तियां कियों को दी वर्ष कील**ः** हरिजोध, १३५

शरद्व पकडना

- (१) दंग देश । अभीय-अनवर ने भू तक न की। अभिते हैं ने कि बचा भी नरम हुए कि सकरमी ने करन गंकरी (वंग्रु (१)---प्रेमचंद, ६३)
- (२) नकड़ कर बान करना या काम करनामा । प्रमोत— यो प्रमानी की किसी के यके काम शा दु लेकिन गीस इन्होंने कही हान अनकाता जो का ही मेने यहन पहंचा गोटान—पंत्रकटा २१४।
- (2) चेत्व में भरता

कार्यन पुर

ितामे (चयोग---जामाम नी नेपी गर्दन पर पहेंगा न) भी जनमा बोग्द वटा संपन्ता हैं , (१०० १)---प्रमण्डद ११९)

शरक्त पर कृत क्षेत्रर या डोना

हत्या का प्रपराध अधन इस्ता नेता वा होता। प्रयोग---इत्त्वी की गर्दन पर वन बगुनावं। का बहुन है (हैमा०---प्रसमस्य, ३००)

गरदन पर बढ़ता,—सवार होना

- (२) जनग्रास्ती करना । प्रयोग—इस ठरह दिनी की गर्दन पंच कमार जीतर, अपना साम्ययश्यान केंग्यूस क्य या न्यंत्र गण मारु । ए प्रेमबन्द २३ डांग्यन प्रभाव २२ मा () भी

१ भाग करा करना । प्रयक्षित हरणस्य चाह काम विकास माम तो प्रदर्भ पर समाय हो आते हो स्मीदान— प्रश्चन्द ३३ देशिक प्रयोग (१) में (२) भी १ स्मा करा सरहस पुर सम्बद्ध बहुता)

मरदन पर खुरा खलाजा किलमा करणा पर कामान स्टब्स पटन पट पटनाचा प्रदेशाः मंते ती हेवा है दी टेकनेनियमन पिन कर बैठ नायेंगे पर ही अनाकार हमेमा एक कुमरे की वर्षन पर धूमी यनति की भोजने (दूधमान—देण स्थ, उस्त): अर यभाने युवक तृत्त सकर नहीं, तू सपने मनिष्य की नरवन पर किननी बदर्श में सुरी कर दहा है हैं (मानव (द)— प्रेमध्य कु क्यों किरामें आंश किरती ही नहीं क्या सुरी अब की न मन्दन पर किनों । मुमतिण—हर्विग्रीध, पर)

(समान महान-नारत पर सुरी चलता)

गरहर का हुई। फिल्म का फेरना दर गरहन का छुई। कलाना

शरदस पर हुआ रचा जाना

रर्शकन कर बंग्स परना । प्रयोग—स्मा न मिर पर बंग्स भारी है बटा क्या न गरदम पर गया मुना रता। कोमठ--हरिजीध, १३४

(ममा: मृक्ष: --वादन पर तुआ पहना)

ताब्द्रस पर कार्य जानी

रोज का यांचाती, कानी । यमोष- में क्यों ने बेला हं यह किए करी नहत्त्व यह जाए जावेगा में (भारतीठ--राजराज, ६३

शरहत पर सपाय होता रे॰ गरहत पर बद्धा

गण्दन पर हाथ डान्सना

कर्मिका देवर निकासः जानः। प्रधीय--तो सर्वेगी हाव नक्ते आवस् हाद करदन पर धगर दाला गया । प्रोके--हरिकीश, १८ /

गरदन फंपनर

विसी के पासे ही बा लाना , भूगीवत में पानना । प्रयास—स्थान करहन पान, सभे, उत्तरे हैं नहसत संधार करहन कर (वीसाठ-नहरिक्यीय, १३४)

गरदन फिरना

स्था परिचयन होता । पैकास नाम गर्यन चुनसह है उप रही पर हमारो पिर सब गर्यन गर्श सुभक्षेण हरिकीश देव

MAZE MERENE

गरदन मरोहना

गरदर्ग एंड्सर भार हालता , माध करता । ध्रयोग---या भरोही त एंड की नरदम मुख्य तय इस करेंड्डे भ्या है (चूनलेंड--हरिक्रोध, २००३)

(२) ध्वाम शामना ।

धेरदेश सार्यना

अहित करना । प्रयाग---वेहि राजहि रह घर रक्तकारी मी जानह अनु गरदनि जारी (संस्था/जा)---तृत्वसा, ५८६ ो ; वेश्यह संस्ट्य हमापी है दवी जार से गरदय असर है मर्ग्स (बोल्ड-- स्टिप्सीस, १३०

गरदन में हाथ डालनां,⇔ देना

- (१) गरधनिया वेला । प्रथमा—कहार के मृष्टला पूर्ण कपवहार से यस यह अब हुआ कि अधिक बानशीन करन ने महीं यह मरदम में हुन्य न दें देंते. मा कीशाक, इस्ट
- (२) ब्लेह दिल्लाना । पर्योग—नाइ यण्डम में गई तब किस तरह बन वर्षे जब आस की इस किरकिये (बोल्य-हरिडरीध.इक्टर
- (१) अवसाय करना ।

गरकृत में शुरध देना देन गरकृत में शुरध कालना

शरदत में उतार देगा

हूर करना शांगिरन है भूक्त होगा। प्रयोग—हानियो का ऐसा बनका बनांच देशका मिलीक हरिक्चल ने बाजरेरी मंत्रिक्ट्र रीका भार उसी दश वर्षनी करदन कर ने इनार कर केंक्र दिया। गुंठ निक—काठ सूठ गुंठ, ३१०

सरदन हिलाना

मा कारणा । प्रयोग----जानकर भी बाज तक जानी नहीं हो तस्त्री वस्त्रन दिवाला अस्त्रन जीवक हरिश्रीय १३६

गरदनिया देना

गरम जबर होता

ल्यो नमें। सन्तर विरोधी मती अविषे हो। प्रमान सन्तर

पिम मान्यमी से जो सत्यको छाटो होने वाणी थी, बदी एवं सदर को (पोटान-पैनक्ट, 55%)

गम्म स्या होता

- (!) बहुत काथ पूर्ण क्षेत्रा । प्रमाय-बहुत रोक्ट्रे पर बोर बहु बरस्कतो के कर पूर्व्हों में जैस बई है और प्रका पुष्ट एक अप क्या कथा क्या क्ष्म है मूठ निक-बाठ पूर्ण सूठ क्ष्मक
- (२) बहुन धरण होता । असंस्थ-अस न तस्त तामा की सभी क्यून्यस्य (वैदेहीक-इत्स्थित), ३१७)

गरम नवे पर तती आना

योग करद पान्छ । प्रभाव--- मी अभी कृष्ण भी न किस याई गड़ी क्यो नई तसे तमें पर बहु क्षणी (बॉलक---हर्व(जीव, स्वरू

ध्यम दाल

- (२) अधिय अविकास काल । अयोग---इस तामु का बना क्याता है जो कि शामी मुद्रीयमें सह में । वेपदक आय मृद्र दसम लो सीभ वार्ते नगत-वरस कह के बोले---हरियोध अध

शम्ब समना

द्वदानी प्रतीत होता । प्रमाय—सीमकता तर कहु न दीसनि तक कर स्त्रयत ताली (सूं) सां>—सूर, ४५४२

त्रम्म ह्या स्थाना

तिक भी कप्ट होता। यथाय-नोज्या करते तन्त्र तन्त्रत के कबड़े वयार न नाती वार्ता (सुण सा०-सुर, प्रदेश), ज्ञा काम करना भाहिए दिसस उन दोवाको तरत हवा भी व तम वार्ष (कठ०-दे० सण, ३०३.

तका होना

(१) कोच काना । प्रयोग—शकी-माति पहिचाने-काने साहित नदीं सौ क्य जुड़े होत भोर-घोरें ही परम (किंद्राठ—कुत्तरी, २४९) , कामतानाक भी नमें प्रया— कारको कार भी अर्थ करने का सांप्रदाट नहीं है , सानव (१)—देमचट, ७१) ; बन्हा-सन्दा भरव मन हरेको नेरं होस्त (नदी०—धक्तेय, २५) , रजनम नमें ही रहा या । राजकवारी ने अपने पति व विकासन की बोटो०—मिसला, ६)

(२) तेजी पर होना । प्रयोगः -बाज्यम हिन्दु-वृत्रसम्बद्धः का अवका नरम है (सुद्धाः (३)—-वस्त्रपत्न, ५५)

त्रद्र प्राप्तावस्

(१) उल्लेखनापूर्ण । प्रयोग—बान बढ्नं-बाते नस्थानन्त्र शहस में परिचत हो नई (जेल्डॉ०—क्सा० खेंग्सो, १२), हजारो नावों लोग दम प्रक्तंत्र को पद में, को नार परेन गर्मानमें चर्चा भी होगी, पर उनके बाद ? ब्द०—च० ना०, १५०) ; बही बेगार का त्रान दिसा हुचा वर ज्या गर्मानमें बहुत हुई (प्रेम० — प्रेमकन्द, १५०

(२) सबसे लागाः (सबर) ।

ग्रेम्बर-ग्रेम्

उनंत्रमा, समझ ६ प्रयोग—अभीरका ने इस गरमध्यरणी को देलाः स्मृतेक—अगव्यक्तं ५६१

गरमा जाना

गुस्ता याता । प्रणाम—कृतिया का उसकी धनुभव है बहु कभी नहीं गरवाडे हैं जुरू—संख्न १००

गरमंत्र सच्या

(१) जम्मान और रम पाना। इयोन—हमीना और फानपुर पानी की आमनाट हो नई और वस माध-बाह हो आही है तब महापन में नहीं परनी पर जाती है (में कोटेफ-नाट माट, १९५)

() लीवना धाला

गर्मा लिक्स्स्ट्रा

में हर करना । प्रयान वह नियंत्रण को बांग नाया इंग्रेंकि उसको सब नोर्से नियानक यो प्रशेष धारणार पर काकाल प्रासाद भूट

यमक गराव —मन्स्री उत्तरका - सुरता

गरमी बरधना

बसन करती आप प्रयोग सम्बोग रेसकी जास हर है कि कार्यन्त्रभवेत की स्थापी मुख्यक अधन स्थानी है बहुम्बर के वस बहुम्बर झार्य १०५

गर्मार से

कत्माह---नोम ने । प्रयोग- जिस गर्मी से इसते अपना परिचय कार्य-जाप दे दिया था, यह दाय क गर्म प्रयोग के सामने करो हो चली थी (लितली प्रभाद, 20.

शरमी होना

- (१) वर्षक होना । अयोग —व माने केंसे इतने करत बना हो एए । क्या को बुन्तो क्यां की क्ष्मी की बन्छ ।) — केंसक्ट, १९६
- (२) वीक्ष अन्तरह होना । प्रधीन—बद्ध हमी ये म उह यह करमी क्या करमी गम्ब गम्ब आहे (चूमले०---हारचीय, इक्ष

गराय की घरपराटा का गाँध भग को भाषण होता वर्गमी का नेता पानशा प्रधान । वर्गम—सरकार गरीब को पर वानो गांव पर की भाषण बोनी है (१४७ (१)— केरबट १२६

गरीय की वीवी हरेगा

निर्मेह नीय-दीन होता। प्रयोग—में नगीम की बीबी था, युव ही यबकी साभी क्यारा थड़ा (मान्छ 8)— देवबंद, का

गरीव होता

वटा ही बीचा-मारा और मना होता । प्रयोग-अपूर्ण हो वह बढ़र मुर्गेच और बहुत ही निचारशील सालुग होना है कमा प्रेमबंद २०

गर्द भी न पाना

त्वनः भ न रहा गरना विवक्त पना न स्था ग्राह्मा । प्रयोग पनाय ना यह है हि तक अपनी रचना अ, वी। यह को भी नहीं पहुंचते (गंगरु (२)—ऐसम्बद, १६५)

गद में मिनाना

नाय करना । प्रचान स्थिति ग्रह विश्वपति देशशीय। राभक मु जुलमो दशुः

गम राम पर विस्तर होता

दुर्ज्यादन यह समान्य के विवृत्ति होता । प्रयोग हम बार आपन्यापनी विरम्पर गर्म गर्म एवं कथा है और मीहरू इप्लिखार। एवं तह पर पालाबी कुंद की अर्थन सम्बद्धा है पूर्व क्षिप्र केव सूठ पूठ ३३३

गर्ब साम छोडता

सनी निरामा भगी साह जेना । अयोग—कुम्पी आवस्य ही यए , फिर एक नर्न नांच कोडी, बता—अवका असी । कुल्ली©—तिशाला ५१)

गर्द के हिंदोरे में मत्क्रा

यहत प्रमंत करना । प्रशंत—मृग्दान र्गत पाद प्रशंति, हती को गरम हिद्दोरी प्रजी (सु० सा०- सुर ३३४६)

गर्ष गालना,—शिक्सा,— वर हरेना

गर्व दूर ही जाना । प्रथमि—जबन होन पनि भग अध्यक्त माम गर्व भ्रम कृषि हिल सिल्य स्व. १६० । देवपी मृत्यी अभाव ज प्रक को । विकि वर्षी पर्व कु जोक तिहें को (मेदलप्रशाल नेटल २६६), परायान वारी को बरुव पहित्स कानी सोभा देनि प्रभान्ति गर्वहों करत को (भाक्ष साल (यू.—मारतिन्दू ६३४)

गर्ध गरवसी, नर सर करसी, आह तेनी नवासी सर्व विश्वात । वर्षेष--- एके सूनी सरक करवायी, मुख्यित गर्व नवासी (सूठ साठ---सूर, १५%) । तर दिव्यान भी विव्रह नरवारी राज्य केयो वार दिव्यो के मुसान आर्थ होते हैं (भूपण एंशरठ------भूपण, २०%), भीनी वार्ष केपि वारि केपि गर्वा के प्रात्त आर्थ की गर्वा केपि वार्ष केपि केपि वार्ष केपि व

(सप्तार मुहार-नार्व मोहसा)

गर्च विश्वना के वर्ष गरुवा

ग्रह्म स्वर करता देव ग्रह्म गारता

गर्च जुर होता. ४० गर्च महता

गयं भार देना दर्भाव गारनी

43 O P 195

गर्व त्रवाता

वैश् गार्च सावसा

गन्दर्जीर करता

स्व क्य काना- क्य हंस-इस कर बान काना । प्रधीय— सब गांव बहा केंद्रे अभवीर कर रहे हैं. कुछ काका की भी सबर है (प्रमाठ- प्रेशवट, ५०), में क्या देखा में बेटकर क्याचीर करने बनते में तब कभी-कभीजनका प्रधान-पन मुनने के गांध में, में परवार्थ से नड और स्थित कर बारों हो जाती हैं (कसाठ-स्था, क्ष

(नवा । नहा । — सहस्रीय सामग्रा)

गलक बाह सकता

कर्मानत का तकत काम में समें शहना । प्रयोग—मेरे देवने तुम केराष्ट्र न कमने पामाने (मान० (१)— प्रमाद क

गलना शत

बोनना राज । प्रयोगः घटो दिवादिक काले एकनाक मेरियर धाने वदी आ गाँउ की मलती गान की भीत गोली—चनुर०, धा

Torsell.

(१) योजन बस पाना । प्रयोग—प्रमान १३ वर्ष ही हो भवस्या में प्रवार कार्य ताप सम्भान विद्या और फिर दिनी भी कृष्य म स्थाने पाई राधान प्रधान—संधान दान, ३३६) (२) द्वांन दोना—इंच पाना । समाग—हाव कीन बहनि दिनीय मेरे बांट बीजो, निपटि परी में क्यी हैं, लबी क्षित हो हरी समन कविता—संसान, २०

(क) कर्व हरेगा । प्रकोश---वाकृ मोगों के शावत संस्थार वे इके बहुक कुछ कुछना पहला का स्थान-प्रेमकंट, ४६

गलकाहीं डॉलका

देव में बचे में शाय देता। प्रमाण—वीधी चात, दियं गरवाड़ी। रोजन चुनन कृतन माही (संदर्ध संधार— बद्दर, २००), काम हूँ मी भी पंत समय में • प्रशीनम के भग र चनकी में पहाली चौर मेंशनी में महत्वाड़ी। काम विकास है (मार संसर्ध के —मारकेन्द्रे, १९४)

गन्धः उन्दर्भाः

तरदव कट्या—शार शामा भागा। प्रयोग—सक् की



तो है इतरतो आरतो इतरे का है जनर काना ननर (जोने०—श्रुरिओध, १९९)

गला दे उता

- (१) हानि पहुं बाता। स्रयोग-कर बुरी बेंबार सेटा ऐंड क्यों आसि का इस ऐंड देते हैं तथा कुमतेय---हरिजीय, १९॥
- (२) तथा दश कर मार राजना ।

शाना काहना

हानि पहुं बातर । प्रयोग-शास एक और तरकों की प्रांत भुतने से घाई है दूसरी और पहुंचे ने कही स्थाना धुनीयों के हाथी से नहीं को बने कहे को हैं (जहांजा-ईए छोजी, १४५

शहरी फेटबहरा

जाम देना, वृहीयम में परना १ प्रयोग—हेरा रहेडी कारन गणा कटाने कीन (क्वीर प्रयाध—कवीर, २४१)

गुरुष कत्वरूप

वृद्धित करमा । प्रयोध---कर कमरम्थात केम्प्य उसमें क्या प्रशा जाति का यथा करने (वृभते०--वृद्धितेव, १०९

गाहा कारता,- रेतना

गरण लखना

मान साम्बाद विकासनाः दश्याणी श्रीमातः की बन्द्र तथ्या । १९६मा नद्गार प्रतासन्त स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

कटा घोटना

(१) र मना एक नर । प्रणाण सभागा अंगाना सन्तर

लाना बर्गकारोर की तरफ का है, यह हर बात में बेरा मना कोरते हैं (परीक्षण—भी व दान १०%) ; गर्ने किन कर नेन तन्ना कुट का गमा बाँड है हम (समेव— हरियोध, ७६); ऐसे वपकवरें जानवाटा वनुष्य निस्मरेत सनमान सास्कृतिक मुधारों के बाम पर स्वरूप भारतीय परावरायों का कवा पोट देशा (दे देव—भाव नाव-प्रथ0) ; वे मारे टीमटाम शस्त्र-तमाने, जिनकी अभ्यता का यहा उन्होंने चींट दिया था, कृदद एवं धाराम करके सामने मा नवे (शाम करना) (पकन—प्रेमचंद,६-७) ; उसके मध्य भाग में उनके अवकी की पाठसानाएं भीर वनके मुक्दमे-साम के अभावे होते हैं, जहां स्वरूप के बहाने गरीकी का सना पोटा माना है (गदन—प्रेमचंद, ९) (महित भारता) (३) वना स्वरूप हुन्या करना ।

गन्दा खोरते बाला

त्यात्र राजने वाला (इयोग----वन धार्मी का धर्म प्रव के समान क्या चोटने वाला व था (सा० सू०--वा० सदर्ट, ३.

गर्थत सन्दर्भा

तने से यानाय निकलती का सकता । प्रयोग --आ व जन यह बहुत रहर चलता तब भना क्यों गला व पढ़ जाता १ चासेठ---हर्ग खोध, १०१)

गन्दा संग्यता

- (१) धारित करणा । प्रजीय--ओ समा चाव-भाव वेते है पाव हम बाव रहे हैं फ़बका (भूमतेक स्टिओध १००)
- (२) किनी से उसको इथ्या के विकास काम लेगा ।

गना खुदाना

कुरकारा काना । अयोग----वह समजले है कि मै अवना क्ला कुलावा चाहता है (मानक २)---प्रेमबंद, ६); घरफर्नाव कह कुल्डें जुटाते है क्या स्टोन क्या (सर्वक--हरिग्रीध, ३)

मना छश्ना

रिनो बरम का मन्त् व च्हारामा मिलना प्रदेश स्व द द सवा को सुर । कामने के लिए कार्ट दूसरा एत्र भाग मान्य । इसवेद १४६ मगर इसव राजा सुर व। को रे क्यानी सदा ३६ १६ वद राजा सर्व पान स्वत्या प्राप्त वक वी गया गरी पुरा चमते हरिकीय ६६)



स्टकारा क्या । प्रयोग—गोशिया कातर में भी नाइव का गला न साहती (रंगक (१)—प्रेमबंद, ३३९) ; बहर संग कि ब्दरिया भी आपका नाम छोड़ देगा (गंगाक— एए, २०)

गला तर करना

सरम पेप पीना, कराब पीनो । जयश्य—ऐसे बुदो के मोके पर समा भी न तर किया अच्च (पैनरे—कारक, घर्)

भरता नवाकर बोरहना

पीरे-भीरे कोलना । प्रयोग—बाबू नाहेब, प्रशा सन्ता बाब कर बॉलिए (परतो०—रेजू, ३९४

गला द्याना

- (१) अस्पाय करता, ओर-अन्य करता। प्रयोग— महत्त्रम समा बनाय या तो तता करने वंजारे (गोदान— प्रेमचंद, १९१) ; किसी का पेट काट कर हम, किती का गला बनाते हैं ,सर्गठ—हरियोध, ५४।
- (२) अनुनित दश्य वालना । प्रयोग—किसी ने कोर्ट देश हिनेची करन में आद कमा दश्यम को लागाय हो भाग भी सिकारने उसमें भी कुछ निल देश पदा (अड्ड० निण्—काण महु. १४४) , यह सभी होना कि अय स्वापे से हम दश्यमें में नमपी ना क्या (विल्— हिंदीस, ३०) , भपना धन्य यह नही है कि मिनो का सक्त दश्यों (गोदान—प्रेमकन्द, ५) ; कोसियों, स्वापियों भी व्यवस्थित ने उनका तथा दश्यम न के नमिने को सं अ क्यान की हिंदाकर निया है , कही हम्य में देने नामों को नियाहर निका (विलाण है)—ह्न्यों स्थ
 - (२) र कना दक्षाना । प्रयोग । बना भीर बीरण (ग्याका) कायरमा का समा दक्षाको (मर्गाठ-न्मृतिकोध, १६)

बन्दा है देना

त्यांछावर होता । प्रयोग—जिनके कोवन कर पर पना मे देना माधारण बात भी जन्दोने तीमरी सन्दर्भ का चित्रनी एपंत्रेदी तार्व कराई , किन्तु के स्वंपत्ती बाकास के मोरवले में विभोग होती गई (कामना—प्रसाद, १६)

गक्षा प्रशास था एकहा अपना

(१) बलकान में बालना या फंगाना । प्रयोग न्ये कृति। ने बुदी प्रकृत प्रश्नी । है नमा बेलस्ट प्रणा प्रश्ना **'क्**मते०—हरी घोष, ६९)

- (२) केप्रियम मागवा, जिल्लेकार शहरामा ।
- (३) किमी माइँहुई चीन् का मछे में नियमना मा नगतः।
- (१) गरे में गाफ प्राचान न निरम्बनी ।

गरत पदना,--वैदना

गरे हे बाद आवास स निकाममें । प्रयोग—जोग किर भेगा में भी भाग अन्यस मही है, मना मैठा हुआ है भाग अधाव, १)—मारतेन्द्र, ४६०), साठ-अस महीने भी भारी-भी बच्चो का रोते-रोते बच्चा बढ़ गया था (बुद्द०— मण नी०, ३२०), बाद प्रव बहु बहुन पहा बचता गर्म भना नया बच्चा भ यह जाता (बोलंग—हरिक्सेक्ष, १०१)

एका फंसका

- (१) मृत्यावत में पदना । क्योग—सम प्रमाण गला प्रमेशा ही वब कि दालि का यहा क्यवद (भूमते)— हरिक्रोध, २८
- (२) कियों में सी वस्तु या कार्य का जिस्से पर जाता। जिसमें होति हो ।
- (३) कक्ष ने स्थान नेने में क्या होता ।

गदा फोमाना या फामना । यंश्राना या बांधना

- (१) क्रांक्ट में हानना । प्रमोग-स्पॉ मने संधकर सना वर्षे नयों नियम्बर गन, मने वह वें मोल०-वरिक्रोध, १३२
- (२) बार-कृषकर क्षत्रह में पहना। प्रयोग जान कृषकर प्रश्न पानते करान में कोई नहीं क्षताना है अपना क्षता वेदेशीर--हरियोध, ११३
- (१) श्रदन में सन्तर्भा ।

करा फटवर

धाराज का विकृत होना । प्रयोग—तब अन्य किय नगर स प्रद जातर ५ ४ तक अना क्यो वना ना प्रकृताना (बोलंक-हर्कियोध, १०१)

गला फाइकर

बीह से किल्यात्व । प्रयोग—मां को बातर आहे वैद्या तो पना कारकर सी पदी खुटाए (२)—सञ्चास, ४१७) ; किर भी की कार-पार अपने गरे—में नीतर तथ पन्यु बार कर नह से सार्वतः गुप्त, १३४



गला फाइ-काइ कर कहना

मन्त्रा कारना

गाला वंधना

क्यतं में बहता । दयात--धेनगरं है तमा बना अब भी मैं व क्यों क्यर हभी सुरी (व्यक्ति--(एंटव्रीस का

राम्या वांध्या

वेश गला कंशाना

राजा वेदवा

के गासा प्रका

गरहा भर भागा

माधानिनेय के काराम जानाम का धारी हो जाना।
प्रयोग--विश्वामी हमकोड़े जनम निय पणि गरून वराष्ट्र।
नियं गरूनी कार्य गर्म रामी वर्ष नाराद्र मिलार स्वार-विकासी १६६१ । अपनि नगायो दिसे भी दियो अपि जायो गर्म नहि भागो कहा ना (जयक- यहमानन भूमी मुस्तिनन गर्म प्रारी कहा ना भाग (माठ एंसाकर) -मारतिन्द्र, तथह - स्वप्यूरोन का नमा का भागा और आस गीमी हो नई । मुस्ति--वृं क्यो हम्) , बाह भूमे
भाग गीमी हो नई । मुस्ति--वृं क्यो हम्) , बाह भूमे
भाग गायो गरी बस्ताम और सीमया गरी आहे आहे (मार्गक-हरिकोस, नम्मे, पायमिक्सी कर गमा भर साथा है सामीक--

गहर भरा अपना

शहर पेनरेंद्र में कारणा भीत के रूपना प्राप्तिक स्थाननी राज्या के एका आहे. यह से के के रूपना रणान से आसु पीक्ष पीतान के स्वत्य के बाद कर के रूप र केमर कृदि भेटर भाषा देने रसन के उद्योग नक्ष हैं इकाम संद कर दिया और फिर अपनी अगह आकर कैंट वर्षी (नटी०—कार्षे द, ह€)

गला महिला

- (१) याने में यमे की कारमाओं दिवासाने का प्रथल करना । प्रशेष—नवित्यु सौदियों में कह की बेकाए सन्तर क मार्च 'अस्तीर- नेषु, ३६३
- (२) सार वे कोनना । प्रयोग—मानिकपृर का प्रश्तानव राट में नवा जोन कर सुना रहा चाःधरती०—रेगु, ४५२)

गनर आर्थ होता

- (१) अध्यारा भारी होना (अयोग--तब चआही न आ लको बोजी जब कभी हो गया गमा मरागै (बोले०--हरिजीक, १०२)
- (२) बाक्यविषेत्र के कारण स्वर कारी होता । ह्योग— "कार तंत्री कृप है कि बोच भी नही सबने बाद की बाता। जिस दिन आई बी—किस दिन त्य साथे के हटाकर—" महत्ता उपका नवा बाकी है कार्या (मटी० – कहाँ राहर)

गमा सपुर होना

नपर स्वर होता। प्रयोग--वर्त सभी हिन्दी बोधनी तो। पर को नप्रता उनके ग्रंथ में की बह्र दूसरे में न ती जिल्ही निरक्षा १३९)

(समार मुहार--शन्दा क्षांद्रा होता)

गमा अरोहना

वित्य करना । प्रयोग—निर्मास्य की शता कार धरनात हो जानी तो पत्था होता । वीच वर का नाम प्रदेशना है, वर नमकी नाम है (प्रेमाठ--वैनवन्दश्रम) ; तोहकर की परोड सर बाने करना का क्यों नामा क्यों है। जनक क्यां , 20

गना दंधना,—हरूता

(१) वार्वान्तरेक के कारता शोध न पांसा | प्रशीप— बान प्रारं में तो अगरायान या परतारो करा १३) मध्य राज प्राप्त करी प्रता प्रता की संख्यात हुउ देव का दूस समानकी देवा | किस तबह के में सहा प्रती स्थार सुस्केत हमिस्रोत, हुद

स्तार प्रदेश स्वाप्त विकास

६३ - २१ - सका **भिन्नन**ः)

गत्म दकता वै॰ गला द्वेधना गत्म दैनमा वै॰ गत्मा कादना

वर्ता वर्ता

प्रथर-प्रचर, हर जयह । प्रयोग—हम कुम वेपून कन विशि बुलहा बगर्य बगर कहावो (भावपंथ (३)—भारतेन्द्र, २०६) , सही और प्रकान जाम जनस प्रतिने चे, धन वेदों की प्रशास आन्द्री की तरह पत्ती-पत्ती वचने किरते । सोसी०—वृष्यां, ५३) , शांशा बाह्य ने अपनी श्राचीन पादां की दे थी है वेचारी साजकक समी-अपी दुलई देना किरता है (रंगव (१)—धेमचन्द्र, ३७६. ; मेर्न जी बनी-ग्राची मुन है के स्वस् (कनूक—भारतो, ६६)

गर्लर गर्ला की ठोकरें बाना

- (१) जागानित होता, क्यांतन होता। प्रयोग—क्यी बारह बजे रात को कोला नसंख होता है क्यी रणवया करता वहता है। बारे दिन गयो-गयो टोकरे वानी दक्षी है (साम्हरू)—क्षेमकन्द,१६२) ; इनकी तो दक्षन क्षेत्रन बाले और पीचन का पुन मृदने की है—न कि बची-बची टोकर काने की (धितार—क्षेतिक, ह
- (२) शिक्षिका के भिये दशर उपने मंदकता ।
- (4) सब जगह विकार्दश्या ।
- (४) श्वर-उधर व्यर्थ पूसनाः :

(गमाः नशः —गर्न्सनार्ता स्थाननाः, फिरमाः, — भारे-भारे फिरमाः)

गती-गती में भिन्ना

आवामी है जर अगह मिलना । प्रयोग---ऐनी जारिया सम्पन्नी गर्मी---पने से मिलपी और मै को उन अवने नपी भीती हुं (गोदान---प्रेससद, २००)

गुले उतरमा या उतारमा

स्वीतार होना या कराना । पर मा पर यह नामान की सोक्सी ना कर में नहीं उनामी देशभीय समय वर्ग १९७६, बहुन ही संबी काम की बात मानी स्वयनो नहीं है तमें मा नेवारों सुधनेंग्रस्तिकों हैं किया

गमे का दोन

कार्य की सम्रोत - वर्गाय - रामणा रंगान में वर्गाय भारत

44 • 2 185 में पहोंने । नने का दीन कर जायशा (क्लक्-नागा), ४२) (भगाः मृह्य-----गाने कर दीलमा)

गरंद का द्वार

- (१) नगान विस् । प्रयोग—अब बावबी बाता है और भी बचना आब र्जनाउनी बीर सीटे वह मबके गर्छ का रार कर बाउनी (मार देखार ११)—सारतेन्द्र, भूद ३); अब राह अब्दे के नव तक की तूब उनके परे का हार बर्गा हुई भी (मानर (१)—सेंबबंद, २५३))यन व्याद वरि सीच में वने भने का हार (धर्मर—हरिक्षीय, १५३), तालर की अनादि बान ने की गई बम्पता में के बानद की अहिन बना दिया बादकता भने का हार ही गई (बामना—प्रसाद, ५५० (~)
- (२) नवा याच रहेन वामा । प्रशंत—महा मरस्रीत से तो पृच्च विच नई किन्तू बानो मौत्रवी भी इमिन्नर वाट वपट, नानमहर्ते बाडों पहर अनके गले का द्वार स्त्रे (बेलन— भर्दक क्वा/ विक्षों तथह न बरने दू गो, च्या सामांग में भी चन् वी सुम्हारे योग चा हार बनी रह वी (१ग० ३) — प्रस्थाद, २५९), वेनिस प्रशंग (१) में (४-) भी

गमें की फोम्सा खुटाना

किमी अंधर ने मृश्यि पाना पा दिपाना । प्रयोग-स्थन नो नृप नोनो के करे की कामी कुछा ही (सान० (य)-फेरबंद, यह

गर्क की परंश्ती होना

नकर का कामस होना । प्रयोग-मी मै घेरी जिलि करें। देरी मूल विनाम बेरी पन का मैं पडा, मेरी एक की वास क्लीर प्रदाल-क्लोर, २०); वो स्वाधियान अपने देख के सबे की प्राणी बनना हो, उसे मुद्रा ही देना परिता विपल -प्रेणी, १०

एके-एके से फिरना

बहुत विश्व क्षेत्रा । प्रयोग---ऐस गृग्यो ने बाबू में बहुमार क्षाची की काल-बाल पर रहते, गठ-गडे हैं किस्ते हैं 'लिटी जिसेता १०९'

गले पहला

(१) इच्या के विषय जिल्ले पाना 1 महोत- जी की समें किये जानक क्यों में फिर गर्राह परयो क्यों ए प्रोठ---



करीर क्ष्मा; बुरबास साम्य गीर बाढ केंग्निक कर पर्या पुरु क्षात-न्यूर. क्ष्मिक्ष्म, या वे व बीट सो तीय क्ष्मू बांग्य कृत क्षमकी कृताने नहीं (तारु क्षम व ---वारतिन्द्र, क्ष्मूक्ष), यह बाढ़ की विम में क्ष्म कृत का नीत की म कामा, सामानकार सने प्रस्ता कि किए का नाम कर कर कर कर

भारतामार भने रहता हाथ होता है। क्षेत्र हाय सहस्र में अहार में रही मुजायम होती है। क्षेत्र हाय हार एक कहा (क्षान्ती स्वर-एट प्रो. हो जम कर्त मुजार हरता में क्षी हाय की राज कर कर एक हार कर का प्राह्म हरता में की हम कहा का कहा कर एक स्वर मा कर का

(त) तो वास्ता— गीत वय जाना । ज्योगः- वीलं की सामक तो व जानकी एकंड विश्वा के र निर्माण करी जातिको को पान है । जान में कम पात को वार कर एकं ती की मानित हैं । जान में कम पात को वार कर एकं नरिता कुछ में की मैं पुरदार कम पहुँ को की मानत-क्रेसिंग कुछ में की में पुरदार कम पहुँ को के मानि पूर्ण कुछ माना को यह पुरुष्य प्रमान महा सन्तक के बात दुवन

(३) वर्षानी विश्वी पर वार्तवा क्षेत्र । प्रश्य-न्तृत्त्र वर्णा प्रश्ने हुए वर्णा अस्य दिन विश्वा करा, विश्वी के यस प्रश्ने के बच्चा है। विश्वात-व्यवह ३६ वर्ण क्षेत्र वर्णा नृज्यों कर्ण क्षा है (विश्व (१ - क्षेत्रक, ३५ १गमीन मृहान-नार्थी क्षा प्रस्ता ।

गमें पता होन बाराना

विकास होत्रण कारणा (क्योंक --क्यू कर्त का होत्य कारणा हो प्रकृत (प्रहुष्ट) के प्रश्न-प्रदृष्ट (क्यों का (समार्थ प्रश्न- कार्य प्रशी कारणा)

सबै का का जुना

कोई प्रांत्रिक को बाज । अनेक-न्य कुछा हो कुछ नो क्यों, क्रम कर का कुछा इसी ने कर्मक अस्त्रिक क्य

गरी पर कुछार दशा

संबद्धात्म सम्बद्धात्म प्रदेश स्थापन व स. ११ हे में परस्थात्म प्रदेश स्थापन व सुरक्ष प्रदेश

सार पर महेदा काराजा । युग बजाबा वृंबा ... मामा

पार हर्गन करना आयाकार करना कर हास हरू

(नवार नहार-नामे का सुरी रेतना)

तके पर दुर्गा करना

वर्ष केया कन्याव होत्यों । । प्रयोग—विश्त एक दश्या वरा पत्रचे हो गां। का कि बाद की वह है की वह कृती कर नहीं की वो करा पूर्व केंग्र बोक्से (गोटक्स—वेशवंद अर

तने का पूरी कमाना है। यमें का काहर कमाना

सार्थ प्राप्त देशर ' सार्थ प्राप्त स्टब्स

गाल पर पूरा करता. १ साथ पर भागमा सामाजा

राज बाध्या सहस्र

शर्थे कार्जा

मते को कृतकता । प्रचान—नाथ के बाद क्रमते क्रमते । की संभेग की का कृतक दाक के कानी थी, एकाला मीतका माना का। कृतकील-निवाम, क्रम

सार क्षत्रमा

ारायं वाध्यक्त

शाहे हैं अध्यक्त कारकार

न र प्रशास करने का ता कि का ता । प्रशास करने भी कुक्तानाम को तुर मि किनाई दिय नेव साम के प्रशास का का के के का का को, पर नार कावता का की कुक्त के बनायों का किया केले का का न पर ता

गरें में बजा का बाद होता.

बहुद प्राणी को दूसराजी सबना । सर्वाय - वहाँ वृत्यान सालों करको का पाद सनकर मण में का सर्वा है चीतों -आपक, १९० ।

गर्व में जुला परना

(२) विवाह के बारब शांकिक और बीचा का रकता। प्रतीत-त्यार तथ गाने में कृता नहीं वका है, वानी तक वह तुमलें हैं। 1984 -केंबबर, क

(+) दिनी काम में समया र

(नशान्त्रान-नामे में शुजा शासना)

गुरु में दोल दालकर एकर बजाता

स्त्र अस्त्र अस्त का वा का विकास का प्रवाद का वाले की कोची का वा का वा की वी वाल मिल-बाल मिल मिल, मिंग्डें,

एके में कारत जानना

करी पा प्रशास केवन विभिन्न होता । प्रशंस — इस कर्म भी करें प्रोप्त प्रशास कर के प्रशास कि अ प्रशास कर्म क्षेत्रपत प्राप्त कर है करून के प्राप्त करन

क्षेत्र है और गरमा

पात म त्रवता । भूतात केट लागीर केंग्र ता को व मा बार प्रतिक सेंग्री स्थापित स्थाप-नामीर, क्षेत्रको

शते में मूक भरकता

प्रत्यास्ता क्यांत स्थान स्थान त्यां च्याचन द

and the space of

वर्ष में कारी शाकतः

विश्री से स्पेट ही काड़ी श्रेष्ट्या क्रिक्श का संस्थान वर्गन : प्रथम -- विश्वते क्रेन्ट क्रिक्ट शाह शाह । से यह दूर क्रेड क्रिक्ट स्थान (प्रथम स्थानकी क्रेड्स्ट्र

ent it acted for

s to e gen it pleasing a

गारि एक तर कावी के क्रेफ वॉर श्रांक

सर्वे में बाळ पड़ना —काला बरजा

कारशान्त्रे देशके का करकार क्षत्रोक- क्रिकेटलांक्त कार्यकर के कारशांत का बाद की क्षत्र में पह ही करा हारक के का अध्यक्त करते, शहर

(+) केंग क्षांत्रक शास्त्र । प्रशास -- अब साथ कार्य केंग्र स्था के साथ क्ष्म कार्य कार्य क्षित्रक --इस के कार कोंग्र से यह के कार्य कार्य क्षित्रक --

(बसार मुश्य-संसे में बंधन परमा)

तमे है पाओं क्यार १- यह है क्या क्या

तारे हैं बाज केवा

(१) कारर करणान्तरण करणां । करणा कारणा करो बहुन न्याची है तो उन्ने नमें साम्यान रॉक्स साम्य

2 9-46, 442

(०) रिक्टे कर्न स राज की मिल्यानी में नेता र

तथे हैं बाद प्राथमा

विकास कर देवर । प्रयोग - यह राजा ने एक दूसर में एज शोकर विकास को पूर्वत की जाता दिया, पान्ने में देवन बाजा कार्या कार्या, विकास ज्ञान द्वांचा प्रथा ने बाजों के दूरते अवती कार्य की पीत प्रथा की में कार्या जान देवाल है - जारतिन्द्र, हों।

तमे हैं अस् होना

सरम् कारा राजा । परीय- में तरे विष परीय है, यह पर्न्त परि है। यसे से उस है और प्रथम में बाह देनों अपन प्रथम

न्ते हैं कृष्य प्राप्तका

केरी करना । अनेन - वह को को वे क्या करने नहीं

नव गते में हाथ क्या पहते रहे (चोकेट—हर्वजीय, ११॥) गर्दे स्वाना

- (१) जहनर । प्रयोग-स्ति निर्मे नेहर में कोई । गरे स्रोति प्रवृक्षावित गोई (पद०-जायसी, ४९%
- (२) जनगरम्ती जिम्मे पाना ।

शले लगाना

- (१) अस्ता १, देना अर्थनपत राज द मा दि र प्रश्नोद्धे चलने निष् लीना, गर्थमु पराप १ दि र महर्गात आएँ तर राजी नदी जगाद (विद्वारी स्वाध—विद्वार), १६६१ , लाइये पोहि गरे हीन क देन पोपने प्यारे दिवना प्रमापने (माठ पंत (३)—मात्तिन्दू, प्रश्ना) ; बाद - बार कच्चे को गरे साम्तरि पोप प्रमान होती (मानव ११ — पैनवट, इप्त) , रसके निकट गया में भाग कमादा नने गर्ने से हाथ।परित—निर्दास, १२४)
- (२) पूमने की एक्या के जिस्क हमें देगा। उसाम-यमा में वेजर कि जिना माने एक चीज विश्व नहीं है यजरवाली गर्फ शराबी जा गरी है जी वह वो कर और महां-नहीं करके मुनीमजी के बाब अदर चना गरा राक्षन-प्रेमबंद, १४६
- (३) स्वीकार करता । अमीत-न्यम् ३७ वे होबर बहा नया-नया और आकर्षक संगता वर, वक तो किन्य एक्टर मे नेकर दुकानदार तक इस नाम को अने बहाये हुए हैं मीरफ--आगं प्राप्त १६६) ; वब-वर्ष प्राप्त में के क्यम शिक्ति और यह मुची के बसे बहायमें (तक्य--प्रेपकन्य ३९) , यह नृष्य निर्माण क्या किमने दुक्त को यो तमे समाया (तेटहीठ —हरिकीध, १३६) ; त अ दुर्वाध्यवरा अने से प्रमुख परिताम को स्वयमा श्रेष जानकर कार हरूने से प्रमुख कर गर्ने ने जनगमा श्रृष्ट किया है, तभी के विश्व मारी खरीर में क्यान्य हो गर्मा है ,क्यानी स्वयं - सहस्त हो।

गरे से गरा विकास

(१) जो आदिनियों का एक भाग काना । प्रयोग— बाहित रंग में क्के पर्धों को भी कब वजे से कका सिन्धा गाया भूमतेत हरिअं । १९०

** bad a dame I dame sexual el al III

गान-कपड़े की गाना

गहर गमह के हुन्छ। काता था उसके आधार च इसी

हाना । प्रयोग-मही श्री शेटियाँ चलती मृश्यिक है, बहने-बन्दे से बीन गेथे (मान०'छ)- प्रेमकन्द,दक्ष)

गहर्ने घरना

रेहन रसना (प्रयोग—न्द्र हमें एक क्यं के लिए यहने पर और इक्का बनारक दृशा कर्स (प्रेम्थ सा०—श्रव्हाव,२९२)

गहरा वेट

भुनकर कियो जान को थी जाना—प्रनट न करना । प्रयोग—धाक्त्या ! चक्र यहस्य येट है नुप्रहास (निम्ह्या—प्रेयक्टर, १३६)

गहरा हाथ सारता,---स्ताता

- (१) भारी रेकन हाच बनना । प्रयोग—कही नहरा राम नाम है (मेल्ट (१)—क्रेमबंद १३७) ; साथ महरा दिन करह तो हो अने ताब बन पाम नगर गहरा नही कुम्तेर—हरियोध, १९२)
- (२) विवाद का जनपुर कर किसमें जुड़ औह क्षेत्रे ।
 (भवा+ मृत्य-अहरा हाथ पहना)

गहरा हाथ सम्बर

देश एउटा हत्य सारमा

क्टराई तक जाना

वर्भीरमा पूर्वक सोचमा या आचमा : त्रधीय—महरे जाकर देले दो वं क्या है—दीन वने निषेध (शिक्षर (२)— यज र, २०६)

गहरी घटना,—सनना

- (१) न्य पेण हाना । प्रयाम—मनाम और रागी में गहरो करती ही (सम्ब०(३)- देसकट,३०४)
- (२) जुन मांग दीनी । प्रयोग—रोज जामको अकाशक पृथ्वी भीर मुंधी अकरी स्वती कि पीने के पहले ही शिक्षा जुनते, पीकर महत हो चाने (मासीo—rio tio, ३५)

गमर्रा बार्क बारमा

कर सक करना । स्रयोध—तो वस वाम किमलिये गृहरी वान देव नगराक सो वसके (वृत्रलेठ—हरिजीत ४३

गहरी छनना

ं गहर पृद्धाः

सहसं निवाह

त सं राजित्यका द्वरिष्ठ । क्रिकाम आहे सहस्रोई स्वाहित • एकं काम अब संदर्भ विकास न क्रिका क्रिकेट हरिलोघ, १३२

गहरी येंड शोना

शब्दा बान एवं अधिकाय क्षेत्रा । इत्योग—मैने साहित्य सवा अश्य की, किनु मुक्त में पहरी वैट का अश्राव रहा (मेरेठ⊶गुलावठ, ३०)

शहरी बात होनर

महत्यपूर्ण होता । प्रयोग—पर यह बात गहरी थीं, ज्याना प्रमाद को बाव यह सन्भय हुन्ना भूलेय—स्माठ वर्गा, प्रदे), जमाचार बहुत गहरी बात है मोटीठ निस्तात १५१), सो विक्षी एक की संग्रहणाई गहीं को त गहरी बात बह गहरे बने (बोसेठ—हर्गसोध, दुई)

गहरी रकम हाथ लगना

काफी नाम होना । प्रयोग—सूर्यातम, नद्दरी रकन दाव आहे (चोटी०—निस्ता,११०)

शहरे पानी पेडना

यवंद्ध प्रवास करता । प्रयोग—शब्दे विज्ञावनो के लिय स्रोग बहुरे वाली वैठकर दूर की कोची काने हैं ²⁰0— गुलाबक, 890

शहरे पानी होना

महर्व से महरे

गहरे होना

 (क) स्विद्धा र ट्रांना मधीर ट्रांना प्रशंत—में बारना है कि स्वता दम परीका गरने दम भी बार विस्त नगर मुख्य गर्माकार हो बारण के पाता समार्थ करा दस है, किननी नहरी है (देशमीं)—समा वसी, श्रंत

45

O P.--185

गरंड उत्पक्ता

विकति धीर पंजीसा दीती । अयोग-परिमाम यह हुआ वि बाद बुनवर्ति की बरेसा और वर्षिक अनम गर्द विकर-कीशिक, करा

गांड करना

- (१) मध्यो तरह बाद क्याना । धरीत--वेरी कान रहे कर बाद कावर के धहारी थे, कभी काई सही बाना (बृद्धा-- वाक्स, दम
- (२) पर्व शहर ।
- (३) इषद्वा काना ।
- (४) गाउँ वं वापना ।
- (५) मनपुराय करना ह

गांद का, गिरद का

बंदन पान का । प्रयोग नहेंही नहीं काई बाद दीरन तर्गठ वस्त्र क रायः वनीर प्रेत्रीय -कडीर, १६८) ्र अवदी। भीत्व केनात्रका भी पर कीन्द्र बजोर । याभन तहा लेड का वर्गंड बाहि वहि बोर पर०--खायती, करः: ही ती पक्री मनामहि भेरत और बारव नवत गाँडी की सुर साठ-- सा, प्रयोशका, क्रीज कराई हुनी यह बैन की गाडित के गव-कोट मनार मुरार एका०-भूगण, १६६ , गई कमाई दूर तर्व क्षत्र हो वाह की चावन (माठ डंक-मामसेन्यू, ४४२) , क्क आपने हैं कि वर्गपान नांद की पृत्री नहीं है प्रोहात- बीठ दान पर - वय क्यों मूमर्न रूपने द्वपनी विरम् का क्योका क्या जाताचा है है पश्चित-सीठ दास इ.सी.के हवापी इच्छा को कि सं अ धंपनी नामध्य के क्षीपर क्षा गांठ के भी निकल नाम तो भी हमें निकास बीर बोड वर स्वय स्वता निर्णय करने की सांवत होती बर्गान्त देशेंठ गूलताक, भूद

लांड का पूरा

बानवार नेववरना । प्रयोग---बार्ड कीवन कोई न कोई परिवास, पांठ का पूरा उनके इस्क क्यावर करता ही रहा बाठको अवर---उग्र प्रश्ना गांठ के पूर्व के ही बन्ती जवानी को बोरी बनगरन नहेंड हो बुटिंग---प्रश्न नाथ, पर



गाँठ काटना

भौती है पैता हक्यना, पाकेट के निकान जेना। प्रयंश— दैसे किसी गांद काटने वाले की अधिन और पानाकी पर हमें तसकपूर पीर कभी-कभी तक प्रकार का दिश-नवाप भी उससे है पर प्रसक्ती बहु पानाकी कन्याई और परिवय समार के उपकार के लिए है, कोई एवं न मार्नमा भट्टक निक-नाक मह हुई:

गांड के पूरे बांध के मध्ये दोना

वनी पर मुर्ल होना । प्रयोध-धनार इस नृत मनावत रहत तो बहुतरे बाठ के कुरे साथ के कप फनने ही राधान संबाद-नामांत दास करन

गांड बच्ही होता.

पान ने कुछ व होता । अपोय-वर्षि उनकी नांद कामी हो, तो क्या प्रिकार है इनहन रे ब्राइ०—देव सक दक

गांड कांग्डेसा

भाग या दुर्भावना को दूर करना। वर्षाय—एं ही के अगरी या भीव कें, कुटिय नार्ड तब बोले क्योंग एका०— क्योर २१२); कब कुलसमर देखें नहीं धाना नव विष्ण् कोल किस नवह सुलग्ने (बोलेंंo—हरियांच, ४०

पांड जोवना

विवाह के समय वर-वधु के वृण्डों को एक से बोधने की प्रथम । प्रयाद-स्थान गये भावति केरी मार्ड जोति बार्ष पति गाउँ किशीप श्रीवाठ-क्यीर १६५ , श्री को नई मह प्रथम भोगी नहना तुन गाऊ नहि भोगी-५६०— फीयसी २४१६) , कॉम होन विधिन्न मार्ड जोशे होन मार्ग वाम्बी समयवा : सुलगी १६०

गोह परना

(१) भागन्त विश्व हो जाना, यनोवर्शनन्त होता। प्रयोग----मूल पके सांह को नहीं भी को नहें बाह कहा किसी की यें (मर्माठ---हर्सिकींध, ६६) ; बीनों ने बमा नाम हों कि बीन कान का के निवास का प्रकार का नाम के मार्क मन्द्रक प्रमुक्त एह

हम्मे प्रश्निक रिना १८००म च्यानी हो। द्वासन स् करो पह देका है कि वह धार्म्य हीना झाना है देश उस क्रिके में नहीं प्राप्त सुनीता हैनेन्द्र क्षेत्र रहा ह भीवन में कहा गांठ पड़ी है, यही भीच रहा हूँ आशोकः --कृष्ण प्राथ दिए, १४४

(३) उसमान होता, व्यावट होती । प्रयोग-शंका की बांड वें मानो श्रुट पह महें सेला २ - अझे 2 द०:

गांड कांधवा

(१) यल प्रमंक राजना । प्रयोग—नांपी पाँठि कृति परिहे वह किरि पाछै पछिलाह ,सुरु सारु—सुर,हप्टरक

(२) दृढ भारत्या बनाता, बान देवन भेना । प्रयोग— सेन नदी के सहकाली तृत्यामी बात गाड बांध मी गाडान- केमबन्द.१४१० हमा कवित्र, वे सब बाती हैं, परेला एक बान गाठ बाबता डेलालीं १)—बात्र०,२९३०, पर न वाब गिरह दिसी दिस में में गिरु बांध दिस विरह बांके वोलें — हुई औद्य,२९

राष्ट्र में पैस्त होना होना विकास में दाम होता हात ने पैस होना है एका नाम पान प्रमानित में बहा । नाह नाहि ने प्राप्त ने प्राप्त नामित हो हिए। नाह नाहि ने प्राप्त ने प्राप्त नामित है हिए। नाह नाहि निवास नाहि ने प्राप्त नामित है निवास नाहि ह

(बबर) मुहार-नांड में दान होता)

गांड में बांचना

- (१) मान नेता। प्रयोग इसरे मुनिह शांक किन गोपी इस पद किया विवाद एक्त साठ- सूर, अग्रेटर "म नोट म न ना ता नाट म पूर्ण बटा दीते आता है ? (बेसर ११)- काइन्स, १५४), नेती बान निर्देश गांव को करीठ- है-काद १५४); अपनी मुरानी नागरी पुढ परिपादी को नो पांक ही ने बाध भी (सोसीठ--द्राय सभी एक्स)
- हिं। जीम्बर्ग प्रदेश वर्गशनी की होण धरा को भागास केच कर को स्व ३ व व े मुस्क वृक्षिणी स्थल



गांड में होता देव गांड में पैसा होता

गांड स्थनत

अपने अन्यान करना या वटा लेता। प्रयास सन पादियां की पहले ही में माठ रक्षण है (स्तर (२)— पुरस्कत्द, ५४)

(मना० मुझा०--- नांठ खेना)

गांड मुलकाना

निर्मात नेपार होती, बनीमानिष्य या पुनिषा हुन होती। भाषाण—परिस्थान यह तथा कि यात मुक्तन की प्राप्ता भीर अधिक उनाम गई (बिलं कोशिक,80)

गाउसे

पास से । प्रयोग—क्यप् करम हो कुके वे । कह वयनी गाठ से नहीं मगा सकता वा कुल्लों>—निराला,६८)

गांदभा

- (१) वदा में करना-समानः। प्रधान—दैनाइन है न । विभी समरेज को वार्टनी (रंग०/२)—प्रेमकट,१५५)
- (२) परबाह काना, कुछ समभना ।
- (३) किसी से कुछ क्लूल कर लेगा।

गांस की फांस

बैर-मात्र । प्रयोग-नात में है निवश्य मिनरी ती, गांस की फ़ांग है करेज़ से (बॉलेट-मृत्योध, १८९)

गा-वज्रक्तिर

हैशी बुकी के पाय। अधीग—वर्ड नह का कोनी कें मही है और शा-श्रमकर काढ में पाय देने हैं (मिन्स०— कोशिक २०५

भाज शिरता —पड्ना

शायत शामा, व्यंस होतर, बन्तपान होना । अयोग-योधपूरो मह ६१न परं के अब राव अराज करे केवावव ३ केवा २०५ मानारो मन नगन है बर घर हार को नार्च । वेरे मुख बोचेह बन्त, परठ गाम बन ठाउँ (मतिक्यक-मतिसम्,२५६), मरी मधी माधा परी ऐसी बोब्द-बास पै, मदन मोहम यंग जाद न पाई (आठ ग्रंक (१)—असर्तन्द्र, ५७); रसेनी की तरह रख से ही गांव के थय कुछ नहीं कहेगे स्वाह हो नाय हो मेरतो छन पर साल निष्ट प्रदेशी (सूरक--वृंध वर्षा, यह) , उसी हरियाची के कुनवे दें बाब पिरिहे (बृंदक--थ्रव नाव, २२)

गरत पहला

रे॰ गाज निरुक्त

गाज सराज्ञ

- (१) बायल बाना । क्योग—देव वहा सुनु वीरे दावर । दंबाँड धनुसन बारा गावा (घटळ—प्रायसी, २१४)
- (२) विक्ती विकास

गर्रदी देख है जाना

काम पूरा कर के काना । यहांग : आंतालाव केंसे सामी विनादों क विना ही कानी साही देश के आता है ? दूध गात---देव वव, अप्र

गाडा पकडना

ममक पर रेम के सवार हो कामा । प्रयोग-वहीं सीक कर मेंन मुख्य की गाड़ी प्रकटा प्रेसरे-- प्रश्क, १२३

वादा धारत धरना

बहुन भेषे रखना । प्रयोग---कह बीना करि बीक्स काहा समेश अप)-- गुलसी १२६६

रारद्वा एक्स

मनीनमं मा पहना । प्रयोग—मै नम मोर म मु द भा नहा । याह नरे तो नै परनता (पट० -आश्राती, ३४/१०); सम प्रम गांच परनि है हमनौ तक गरि केल गरेवा सूठ साठ— सूर, २०११,, क्यू कांद्रव गांड परे शृनि सम्बद्ध सुमाई । कर्मह मनभन्द की भागों, समग्री भागां विनय्नठ— सुलाति, 34

गादा प्रेम

इन प्रेम । प्रयोग --वेची प्रीर्थ गारी, पंच तमसम्ब हाडी सहर जोतन की बादी जिम जिम की गहींत है कि रठ---मेमलाति प्रव

शाक्षा भेग खड़ना

नहर्म प्रवाद होता । प्रयोग-न्गामधी पर इस प्रेप अस्ति का रुग चीर की मात्रा यह गया था प्रेसा०-प्रेमधी, २०९

वादा मंदेह

बहुत मदेह होता । प्रचाय-वहूरि नकी बुक्त्यनुत सामी

पहली बरिह जिल्ल नाती (सुरु सार--सूर, ४०९९,

सादा समय

हुदिन । प्रयोग—पश्चीन करने का कानव निया तो मुक्तिसमें सबा करने हान वाने थे पगर इन गारे नकारों और पक्षा किया नाम (गोदान—प्रेमेक्ट, १०४): नेवार के पाने नमय में कान आने नामें बॉर योजा करने ही थीन के विवार होंगे (विप0—पेगी, ३१

गार्दा करावे

बहुत बेहतत से कवावा हुआ वस । त्रधीय---राश की भाषी कवार्ष कार्य क्यों बरबाद काले ही के (बान) के :--प्रेमचंद, कर्, अधिकास गरीयों की बाबी कथाई में क मौता जाना है (क्यक-प्रेमी, ३१% में बरना है नार्थ) क्यार्थ कुद्रक-नार्थन, इक (गराव मृत्रक-नार्थ की कार्यार्थ)

पादी छनना

(१) यहरी रोस्ती होती । अयोज----वीशवर्षत् और करनश्य समस् की तान एक ही जनम् दवर्ष गई होती क्वी मी समस् दलनी सारी समनो है (सहस्ट--देव्सव),१९

(२) जुद नहारी जान सनती । प्रयोग---नाम भाग पडने महते में किसी समय शाबी न युनवी (सम्बद्ध--(र्वाजीय, ४)

सादी संहतत

क्षतिस परिश्वम । प्रयोग— विकादत वे वहत से एंसे लोग हो गमें बीच वच भी बीजूद है जिलाने सूच में सीची भगार की मौकरी तथा पंता दमनियाद वच गांधी बेहनत के हांगा विकास का में कुछ जान उन्हें हुआ उनी में मराबर उसम करते हुए तम में कुष्ण में ऊर्ज ने ऊर्ज पर पर पहुंचे अंडद्रक निय—बीज अंद्रहें हिए-श्री

गाडे काम भागा

समीकत के समय महायक होता । प्रयोग-वार सा केन घटत नहि कबहु, शायत याई काम धून साम-सूर, पर

गादे का संगी का साम्बं

प्रणान ते सर्वता दन वस्ता प्रणाम के में द्वार का पर बाद के साथ मीन प्राप्ता गई है है पहिल हासका इक्षाप्रक नानिक्त मन्द्र दिन के मीन सुक्त मीट सुर्ग है। केंग्र प्रकृति मा कन नहां साथ नियं को मिन असीस कृतिक रहीन, १८) जाडे रिजकी मित्त थि**स में क्वो** मईत् दालह राधान संशोध—साधान दास, १७०

गाडे दिन

चित्रति के दिन । प्रयोग —गोविन्द गाउँ दिन के पीन मूठ साम-पूरे, दर भागत के दिन, नाम भागम के राष्ट्र पहाय महोर्ट (क्या-सुलसरे १६६); काई दिन के मान हो माउदिन प्रयूक्त (क्या-सुलसरे १६६); काई दिन के मान हो माउदिन प्रयूक्त (क्या-सुलसरे १६६), काई दिन को मिन विनाध क्यों महि साम्यू (क्या-प्रयाद-स्थान) राधीय दास. १६०, क्यों कर भागमा नाहना है कि अभोधों में काई दिनके निम कृत क्या गया है या नहीं (असोसर-महादेशी कर

मादे पहना —में पहनर

विपत्ति में पहला । वर्षाम—क्या परे बाडे एक प्रश्न हो कार्य एक देवल है ठाड़ें वह बावक महामनी (कविक— कुमधी प्रश्न में कही मीजी यह बादे में पहला मान्य में कार्य देव भीता की मान्य लेते (बुमतेक— (सिंडीक प्रश्न)

गादे सिव

गार्थ में पहला है बाद पहला

गान शीतल काना

पूर्ण कर से शासि पहुंचाना । प्रयोग—कहि कहि कहा प्रयोग स्टब्स की संस्था की सब गांव सुर साठ, सूर ४५०र

गात शीलक होना

धानन्य होता । अपीय—देशि भीषाद हि पु विक शासा । बुनि असम् अवे भीतम सामा (सम्रकात)—शुलसी, अ१४)

गानी उन्बई जाना

राज का कमानदील हा द्वाना । प्रथम भूत किया प्रथ ज्ञान स रणक करा २४ कर उसके गर्ग भाना द्वाला । व्यक्तिक क्षत्र

गाना जयना

पाने का प्रभावपूर्व होना जिसके सोन मुख हो जाय। भेगोप:--नाम भाता नास पर होने मतर, अर्थ भना सब भी असे परता जना (बोल०—हर्रकोस, १४२

गाल काना

मृह जोरी करना, मृह ने अंद बढ़ क्याना । प्रयोग-अर्थ हैंगति कहति हति येई बहुत काटत है जास (सुरु सार---सुर, ३५१६): कन निवा रेड हमति कोट बाई नाम अपन कदि कर बस् गर्द (रामकाळ) ज्युलसी,कप्रश

सार्क खलता

आः म धरामा करनी । वरी वयो वात करनी । प्रधान । अब कि क्लिति श्रम गांच तृश्हरण समय में नुष्पारे ६५०

भारत सांबतर

क्षेत्रज्ञ न देता। प्रयोग -पाजियो को गाम क्यों वे बारने सामने दल किरकिया किरली करें किम चरहे से बीर दते वाम हम बिर वहीं तो बंगनियां किरती रहें कुमले -शिर्धांध ७

शास्त्र तमतमा उठनी

चुक्क होना । प्रयोग-ही न बार्क तमान हम क्रेमे आपका गाल तमनवा सामा (वीनेक-श्रविकीध, धुठ

वास्त्र फुलाना

(१) कठ धर न बोलना । इयोग-नुष्ट की होड एक समय भूकाला । तथन १९१३ क्षत्रास्त्र त रा रामक का जुलकी १८%); किल में बलन की भी ही, जरा का भी भीका विमते लाग भवत उठनी, बोन्याम् वानी नवीव ईली भीर किर शीन बार भाग के लिए रोनों ओर के नाम पून भान मेरामीय- राहुल ३६ या जिल्ह यज फूल बज उनमें नगीरक्ष कर गाने कथा। नेता वॉल्टर = विद्योध हुद (>) बढ़ बढ़ कर वाले करना । प्रमोत-मो पन् वन्य साथ हम आई बचन कहित सब वाल चुनाई (संभ0 (हो. --- स्वसी, ५६९)

शास्त्र बजाना या सारमा

 श्री कारता प्राप्त स्थ्य मण्डे वृति गण्य बताई मन प्रत्यक्ति कि मुण कराई अभव काल लुक्की

46

२५६ .सुद्र २५१ अनि सार्गाः गता रामक ले जुलकी ६२० कतर ३ ८ ३) चार और इ.से की बात है जिल्हें सुदी र्भरकारी दिवास वा अध्या बीटा पात बंबोनी जाता है 🔭 (माठ छैठ (१) -मारतेन्यु, स्थर है। बेर पढ़ कर औ उनके अभिकार को न आवने बाना पुरुष कीरा नाम दराने काना कताना 🛊 वंशालीय (३)—बहुर०, एक) , वरेरे बहुत बाक बकाता है तो भी धनते हैं-व्यथा कही का हम जाया पुत्रती ईका० (१)--युकेस, २१८);पारिक्षी की नाम क्या हे बारने जुनते०—हरियोध छ। 🕁)

(२) मना बुरा कहता । प्रशेष--- प्रथमी घेद नमश्चे नहि वेदे राजा बाद परित तुम बांच केंग्र गाल मात्रहे अपूर साथ —शुर २३४२) द० (±); देविक प्रयोग १ में (±) थी। (३) प्रोप नृष्य कामा । प्रयोग—की बाबा विषयाधिक. मान । क्षेत्र दिनि नवे कशावन नाम नदेव प्रेथात-मदेव,

गाम सारगा

है। बहार्स बालाना

गाम काम होता.

- (३) वेहरा समनना आना—(कोब मे)। प्रधीम वंदे र्श नाम प्राप्त शव बाब हैते म जाननाम वर्त पोलें०--ਾਂ ਬੀਰ,∀ਤ
- (३) कामा में कामो पर मर्गनया अपनी ।

गार्टर साना

इबंबत, निदा सा बाजी बुननी । प्रयोग--इस नई मीर नकार निषद्ध क्षाने कहने के निष्ये प्राप्ते करी। यही पार्तनप्र मध्ये नहीं राधाः प्रशान-राधाः दास, ३५४

मान्द्री देखा

इत्रथन करना, चनाव्या करना । प्रयोग -महि विदि विनयों पर नर नारीं देति हुआलिद्धि केटिक गारी राहरः (चा - सुसमी ५२०), तक नोगो का कुछ बनेता है तो उसको प्रश्नवाद तो योषं कोम को है पर को इन्छ काम कितरता है तो सानी मंत्री दत हैं भाव एंड .इ ---माग्लेन्द्र, पक्षय

तिक जिल कर पेर रकता

क्ट्रच समाम बाम कर मान्य करना । प्रयोग -भोभा परि



विमानि चोरै चरनि बहु याति वतुर है मृत्य वति वति यग बारी है (बठरठ-सैनायटि, प)

गिनले गिनता.

महत्व मानभर, परवाई करती । स्वांत—नव ने नर्नाड
नहीं वह कर्गुदि वब ते उन मूँड काई पुरु मार्ठ—पुर १६६६६); स्त्री में अब भए बरनीने, जब काई इब केसन (श्रृण मार्ठ—पुर, रूपाइ), कर्माड को निन्ती नव काको हमति क्याह दिए कान में वार्षितो, नात्रव नहीं निवाह पुरु मार्ठ—पुर २००५); बाब देव वारोष्ट्र को नव, प्रवण सकत अब, यह न्याह बाह न एन केसके थे/— क्याह, २६३:, बाहि वर्गाह सहिम पियो गर्न न निर्मि भग पाद । कन्य विकासी मनन मो रहार्ग नवस को नाम स्मित्र प्रमुक्त मार्नाइस, २०४, वर्ष्य प्रामी में पड़ी को विकास सम्बद्ध करो—महार्थित नायक वर्ग है पटन — अंतरहा, १०

विनर्तः व होना

विक्ती में होता

स्का गण - किल्पु वे आता गिला जाना

गितना

िकेसिन

ात् से प्रमाण — साम्यसिष्य द्यान्या पण द्या श्रीक पत्र प्रस्ता दिल्ली क्ष्मण भाग विशासिक द युक्त विश्व द साम्युक्त, हुकुष

(स्थान पराच किने-स्ते, किने विकास)

विक्रियाद की तब्द की पदलना

बहुत ब्राल्डा सम्प्रिति या स्थितिका बरावका । प्रतास 👍 🗷

के निरमिद्यनके एमं-एने बात-मत उदाहरण महत्र ही ऐस किये जा सकते हैं क्यानी मनए --अप्र, ४१% वरतेगा भी नाम पन पन बाद विश्वीयत के सम्बाद रूप क्यो बहन रहे के आस्मत--देश सब वर्ष

(यथा = भूहा = — विवर्गिन उपल)

गिरता अकारा

कराव प्रयोशक स्थिति वास्ता क्याता , प्रधान—इस विश्वीके क्याने थ कारी बहुत कियाब नीव अकर ही कारीदनि है बु १०—३७ नोव, ३३०

गिक्ता प्रकार

विकी दश्रात । प्रयोग --शह विक्रिक्तो और देविटल विक्ती परकी पारव भी कही है। सुनोला---क्षेत्रेन्छ, भ्र

विस्त्री होत्त्व, विक्ते दिव

वर विष । अव्यक्त कह वश्य की दशा अ प्रश्नम भी हैंसे भीरक के नाम कृषणाप अपने निष्ट किया की कुर्गात भीय का है भटट निर्म्मकार अस्ट्रे, २६), अपने विष्टों हुए में म अस्टिंग पट दिग्यान के अस्ट सामों की स्वत्रकृष्टिंग वह शाली है विपर्ट-प्रेमी, २१), विस्ती हाजन के हीने पर भी में भी मानिक के मानिक ही ना (बनार---भागार, ६१)

गिश्ते विक

🐓 सिरमंत्र हासम

गिरमा

(१) पत्रव होना । प्रयोग—स्क बार इसके धाहक भी को का हवार के नगभन हो गय ग्रंथ प्रश्न पर भी पह पत्र दिश गु० ति०—मी० गु० गु०, इठा : गया विक्ता हती तथ्य दिश गु० ति०—मी० गु० गु०, इठा : गया विक्ता हती तथ्य दिश ग्रंथ का किया न हमारे भवा (गुम्ही० तथ्य प्रश्न का व तम म नम इन पर पह तिहास का अगद भी प्रश्न का नियास मा नगर भवा वा कि स्म विक्रव का समय गुलेश देखे हैं गुलेश श्रुप्त का का का देश स्थाप स्थापन वार देश कि जा स्थापन को नगर में ग्रंथ हैं प्रश्न का प्रश्न वार देश कि जा स्थापन का नगर महा गर का प्राप्त प्रश्निक हैं वह का बार स्थापन में बनोब नहीं गर स्थाप प्रस्तित हैं वह का बार स्थापन में बनोब नहीं गर के साथ पत्र क्यहार में सार्व क्याय के पत्र को अधिनकी में पिरने न दिया (पट्टम प्रसाम-पत्रक स नां, पत्र) (१) भागावित होतर । वर्षाय-देखिए प्रधाम(१)व(=)

गियह का देशगोठ का

गिरह में दस होता देश गांठ में वैन्सा होता

फिरा हुआ होना

परित्न होतर, भारतों में स्थल होता । प्रणान—साथ अस साम प्राप्तते हैं कि परभेरपाल स्थिता तिया हुआ सावती है (शृक्ष्य—माग्य धर्म हुद्ध , सायद कृषण विने हुए सावती पर तीकर प्रप्ता मुनातिय न समस्य (१६%—देनवर, २५०); तित बहुत दीर कृप ती ने कर वो विरी अधि को उठा देवें पुमरीय—हरिजीध, ६

रियानर

भ्रष्ट करने। (24)य -घर मीत भूम किसी को उदाने म अभवद गिरान में ही कवाची नाम हुँद**ा व**च्चन १०४

भिन्नी बन्ना होना

ईश्यादाया होती । प्रयोग—स्थल सीर्गिय सभी स्थिति वर्गायक वृध्दि से बहुत किसी होती जहाज≎ -६० व्यक्ति. ३७४

शिस्तहरी कर रंग साना

प्रभावत कियाँन को प्राप्त होता । प्रयोग अब रण नाई विलहरों — पर भाद बन तो भाहा गए हो, तब देख तथा स्रोट समझ लेगा (भो: न्सेविल्ड, इन्द्र्य)

शांत हाना

प्रस्का करणी । प्रयोग - गानिया हे आज इनका मिन रही सील जिलका वेक्ते के यह रहे , मुन्दोण-हरिक्कांस, करा

शांदड का शेर पनता

कार्यण का बहादका क्षित्राता । प्रमान क्षेत्र पर केंग्स का भवना केंग्रेस हमने नार गए हम डीलंक कृष्टियोग्स.

तांदद भनकी देना

सात अव दिस्तापान । उद्योग तहा जात ही वह ली इटाल में नाहारी गांदर वजनी नहीं जल सकती परीक्षां - ब्रोक्टाम २१ - बनना इन्सी सम्बद्धार से १ नहीं कि इस रक्षक को समझे । सीवह भवकी में और जानती मानक के -चेमचंट, २९४)

र्गावक होना

वरवर होना । प्रयोग — जैरो — 'क्ट्रानी बाके सम्प्रको है, वृष्टे नवाइ ही वृष्टिको । एक-- 'लब लीवह है बीइट' वैरेट २)-- प्रेमचंट, १३१), कन जाने हैं बना खबके बीदा की वर्ष वात है तब देख और नीटह का कनता, हुंपले हमने नाट वर्ष हम (देशक) हरिस्तीय, १०६

गोर्का बाध

ध्यपूर्ण नेच । प्रयोग-चा वाधिका एक दिन है, दाम र बंध्व के निए मानारित हो गौकी भारति रिसान धानन। कर चुनी भी धान डीवन के एने नवर्ष में दा पत्री भी धिनकी करावित हो कोई बुनती समानना कर सकती है ठेकामोठ (१)—चनुरत, ३९

गोर्स्टी कराजी

करमारपर्यं जोवन-साथा । क्रथाय-सामी भी तक दिन भीनो महो करा है। वक्रय-दिसका, . ;

गुजर जाना

मार्य् हो वाली । प्रयोग-अब की बात है,तम पंज्यामान होत कुळा कुछ के कुल्लीक-निरातमा, इह

गुड जाकर मृतार होतर

अनुवास सारमा पर कर सा पाता । अगानः --नैकाहः वर्गाः स्रोति सी सीका । अस सूर बाग्धः ग्रहा होता सू गो (प्रदेश---उत्त्याको, १९१७-

गृष्ट बाजा गृमगुने से परवज करना

तथ ही प्रशास का तथ काम नो करना पर दूसरे शावधाना । प्रशास-प्रशास को बहा है कि आप गृह वाले हैं। ग्रेमाने य कराज करते हैं (कमीठ- ग्रेमवंद, १०४

🐵 🖙 । एड सामा राज्य में में धिनानी

श क्र शांबर करना

बना १ व क लगार का प्रधान पर सामान कर बना को है ने, सब नृद बोबर करने बाबा निकला (परती) --- रेणु क्षेत्रका, कथने जो के बीसे तुन सब नेव पावर विक साम बही हो पर की तीम, देव

(नवार परार-प्यू इन्योर्डा करना)

शुक्र गरेवर होता

करन का बात विश्व कानरे । प्रयोग---प्रोट कार, ऐना स करना नहीं सब नुद्र वीनर हो बाधना (सा--क्रीक्रिक, ३०५)

गुड्-श्रीटा होना

हिसी काम पर चीच है एकरण निपटें रहता । वयोतं--पारताच अवसा हम और गार चीतो स्थी पाता है। साथ--- सूर १५७६ और सम बाह बचाय को देना राज क्लाव्य है। चीची कीते एक का चिक्र दो बनकर विपटा है ,देशालांव (१)-- चतुरंब, १४४

शृङ्क्ष से नहाना

भूव पूज का गठाना। ऐक्वर्य में बहुता। प्रयोत—यश्री तक याने को गई। मृदता बा, क्व पूढ़ कुब के बहावणी मृगठ⊶व् ० वर्णा, २०२

ग इ.स.संग्ना होना न संख्य

कोई जमर व होता, व्यव दीता । प्रयोग —तक सीती गोली का काकी । व गुढ़ तीता त बाँठा—तक कादिक देम साहब | जानकी क्या केरे-वेल करवाने के किए मही सिसली –प्रसाद, 22128)

गुत्र से भरे तो जहर न देना

मिटास ने काम बन नो कहाई न करना । प्रयोग-न्यो सप् वर्ष व वास्त्रि बाहुन देइ मी काछ । जन विक्ति द्वारे गुरुवृत्तर, हार्षि विके स्पृत्तक (दौहाठ-- गुलसी, प्रवेठ-

गृश्दी की दोर तोड़ देना

कोई सम्बद्ध म रखना । प्रयोग-सन्दरशस वर्ग कार भाषानी गुरी कोर २०ी तरेगी छु० साथ-सुर, ३९०९) (समा सहारत-स्मृद्द्धी की कोर कार देंगा)

गइ की जान,-- के धान

पतिक कृत्यं। कामा १ प्रयोगः— पत्यविका थयः कृतः चानी रुप्यं वामः नृष्यं २५४ भाग गाण प्रान्त करः व स (शमेश (बाम)—शृक्षती, १३०) विश्वविद्या पारका स्वित-कृतः का स्वित्राम है तिन पर हसारी कृत्या कर धरेर कृष को सन्त है (विषय—धनी, १४)

गण के भास द∞ गृण का मात

मुख पहला

प्रशासन करती । प्रणीत विशेष सन् नक्ष कर्म हत्

शोबितको बाह बनीर प्रश्नां —क्योर, ६) (क्रिश्तांति रहमा नाम रहि-स्टिक्ट करि बन मान (सुरु मारु-स्ट्रा, १९६६ नित केनि कहि जामू वन करिंद्र निर्वर मान (समरु (बाह --कुम्सो, २०) । यह भी तो प्रमो का मूमा गाते है

(भारत ए ० १)-- भारतेन्द्र, बहर

(२) बहबुको का स्वरुक करना । प्रयोग—देखिए: प्रयोग-

(a) ft (a)

मुख बाहक होना

पान की बह करन बाना होना । प्रतांग - वह मण कूं बाहर विके तब मृत्य नाम विकाद (कवीर प्रशांक-कवत, क्षत्र, नमाम शरनागत हिनकारी । यूम पाहन् कवाग्य वस हारी पामक (ब्राह्म-कृतसी, ६४६); विनु पून बहै न कोई नहम नह गाहर पून के नुग्यक-गिरधरदास, ६०, ईस्ट्री के कृत्य पाहर का नहीं होती स्थाव १ - प्रेमकद,

गृत्यी सुलकांबर

) यरम्या १ण करनी । प्रवास-स्वितीले अध्युष्ठाशा का स्टार इन सम्बद्धा और वि.मी न सामनीति को गुन्दी को समाध्यक (पहले प्रतास-ध्यम् अमी); युव्यम् किम स्टार नुमक सम्बद्धी कर यो इसे समाध समझ सात नुमके (वि.सी.) ११०)

(३) हुगच या वतोवानित्य को दूर करना ।

गृहमं दी श्रोताः

आनर ने मिटरन जीनी । प्रयोग-न्युव महसू के सन में भी बुदवरी होने नवी जिसली-प्रसाद, १३०

गुनाइ बेन्डकरा होता

यक्त में करनाम होना । प्रयोग—सगर अस्य होस्मियर है नो उसे नेकर कारना उठायमं, नही १ घर-उत्तर के सक्त महस्ते । बारके असर भूनाइ-सभागत की समझ मादिक अस्त स्थान प्रस्ते - ८३

गुबार निकासना

बन की लोक दगर करना । प्रभाग में गाम स अअक उत्तर होते चन्द्रा सह का गवार किकन हाता है कश्च की ज़ैननद्र १२१

(पर्याट जडाव-<mark>--गुश्राम उत्तारना</mark>



गुढ करना

गुरु बनानाः । प्रयोग—सूर बडी यूप्त कीन करे अस्ति कीन मुने भरा कीको (सूर्व सार्व—सूर, ४१४८)

शुक्र बंदाल होना

अन्यस्त वासाय होता। प्रयान—ह्यांभीन राष्ट्रतीत के पूर्व बटाल विस्त प्रस्य अपनी किसी पहले काल से किसी देश की निरंपराय जनता का सर्वेनात करने हैं एक अपन में दंगा दादि दुवेलताओं से निलिय केना कृष्टि के प्रस्तृतने विभादे पहले हैं (बिसीक्ष) जुल्ला १४७०

गुरु होता

यह कर होता । प्रयोग—तुम्हारे पाना मात्रव के नृष है (मृ० सु०—सुरर्जन, १४३

गुर्दा होसा

हिम्मत होती । प्रमेश—यह तृब्दी नोतो का तृब्दी है कि सक्ती भर वपये नक्तीर के भगने पित देने हो पीटान —प्रेमचंद, प्रं,

गुल भिल्ला

युक्त विकास

सनोन्त काम करना । प्रयोग—अब सेवी वृत्ती कोनकी, एका विकार्ककी कृत सूरक—अस्त, ६२), भूत पत, पत्रन, एक विकार सोड़ (वोसक—हर्यश्रीध, ६४)

शुरु शपत्हा होना

१) बार्य की बातें। प्रयोग -- सापकी सम्बी-वी है पू पा बोर हूं हुन्मर देशका मां पहीं प्रमीन होते करण है कि स जाने केंग्रे आरी बात बाप करेंगे पर पास बाते ही सान्यम है प्राप्ता है कि दहारी गण्याच्या से बदवा है। मही है (गुंठ निक--बाठ सुठ पुरुक्षार)

(२) मोर जागा र

47

O P 185

कुरुक्षरें बहाना

मीन करना । प्रयोग--इम्र मृत हो जांच और मंत्रे की अप्तर हो परमें के मृत्रश्रदे उन्ने (प्रविच--प्रव नाव विक, प्रक्ते ; यह तो नहीं होता कि पुन्न ती मृत्रहाँ उन्नावे और नवीं अपने नाम को रोती यह कर्मठ--द्रेमचंद, २००); क्ष्म्बन्न किनों चीर पहली में बैठ-बंठ गृतस्तर करते हैं काशीठ--पू क तमी, १२६) ; क्रमको भीचों में देश करके गृत्रहाँ कृत कराइ ती (मुक्क-भक्त-१००)

मुलाब का कुछ होता

बहुत मुन्दर और सुबुन्धर होता । प्रथम — यहते वे क्षारे का दुवना, मृत्यक का कृत है जिली— निगला, ११ (तमार मुहार---गृत्यक होता)

गुन्दाका

म अधिक मान्युन, प्रभाग । प्रयोग—मृत्यादी मधेय विभागों का मार बचा (गुणीनक—माण्युनगुन, २३४), एक मोदी सार्यक्या असे प्राप्ता में बाने मगी जहाजक—इन जोती १९७, गर्मी समल्य हो चुची भी मोद मुमाबी मान्य भवने क्या पा (श्वीस्टाफ-अमान वर्गा अप), कामून के मुमाबी नामें की यह मृत्यादी सच्या बना मुमाई जा सकती है (प्रतीति— समन्देती, इन)

गुलाम होता

द्रण पा र ता पाण नेना भए नवाइ गुलाव सुरुसार-पूर्व, द्रम्पर), वरो पर्द मति भेरी निहारि के सील-सव्य कृषा-स्कृताति (धनेर केवित-सनार, १०३), इसने जोने के निये समाद का नजी कहा धर्मान्या सेवा जीवन भर का पुलाम का दान क्टार-अग्रेट वर्गा, १९)

शुक्तका बहुनक

नुस्ता दूर होना । प्रयोध-स्वाहत के सामन बाते ही रिच्टी साहत का मारा मुख्या उद गया (रंग० १)-प्रसाद, ३४४

गुष्यमा उपलगी,—यह मानी

कोष का कावन होता (प्रयोग---सत्यवन का गुनना इतन रहा का कोर बन का रहा या (प्राप्त--धीनेन्द्र, क)

(बबार वृहार--गुस्सा बद्दा)

शुक्तमा डेटा होता

प्राथ काथ होता व क्षेत्र कर के प्राप्त ने कुछ क्ष्मक पर्व कांसी—कुष्ट कर्मा, प्राप्त

(नथाः मृतः--नृस्तरा दतरना --निकलना)

गान्या धश हेना

काम दूर करतो । यन्थ्य यह अपने तथ तरसे । साकी सामला हूं (सुक्षेठ प्रकार समी, सुक्षक

गुम्मा पी जानाः-नावना

पाने को जीनक ही बीनक दशा वाला । व्यवेश—विश्व विशेष किमिति में होई दिकि वर्ष ने दिह बाद न को । (पद्ध-प्राथमी, दाद); शुक्र बर इन व्यव को बोट पर वह पर के बाने को बीने को अपनी प्राथमी, दन बाने का साम की बाकर के कुलो को की अपने हैं पूर्ण-साम १०६

मुक्तमा यम कारा हे॰ शुक्तमा नवनमा

मुस्ममा बुन्ह जाता, समा हो जाता एसा गायत हो जाता । उयोग--शन तम चित्रे वेदर्शन हरि बीवरो, रिम गम वर्ष बुनाइ सुर मारू--सूर, २९४० इसा क्ष्मपर बर्श में साम से और यहां जाकर बीच में जा गरी है जाता कृता हुआ हो तथा (1985---इसस्ट, ३१०)

धुम्मा सारता रेश सुम्मा पी जाना

गुम्मा इवा हो जाना देश गुम्मता कुछ जाना

मुक्ते में प्राचा बहुत प्रीकित होता जाता ता तर पर पर प्राची तात्रप पह दिन पाने भी सूच बाक पुर १९०७। (भगरू पता प्राची में सुधार होन्सर)

मुन्ति व्यक्तिसम्बद्धाः । १ तः व व्यव व अस्तरम् अस्तरम् । १ तः व व्यव व अस्तरम् अस्तरम् । प्रति व व

(१ व सुम्बर क कार क्षेत्र राजा, साम धारा युहार अगना

वकार पर क्यान देना । सर्वाय—आग प्यापे सामी न महार ती करार धरेर, मृद्धि है निकांच देश महे करपारे की धन्तक सर्वता धनाव ३१

समा दोना

वरिकार स करने काना होता। धमान-नह घापको मुनी क्या का एक मधीन है जिसके विश्वित होकर सूत बोलने तक धार कुछ करना नहीं चाहते पुंच निव-न्यास

गर्मेका गृह होता

स्वयाति भी कही व या स्वतं । अभोक-अस्य कहामी प्रस् की कहा कही व सर्हे व में सेरी अन्वया, वैठे पुमकाई कवीर प्रसार -क्योर, १३० : यू के की गुण कियों स्वयंति विकि स्वकृति की यू मुखानी 'सूठ साठ-सूर, ४१००६ एक कारनी का कीय यह सम्बद्ध कियानी उन्हानत का अविकारी है कि स्वयंत्र महत्त्व में का गुष्ट हो सहर है का कीठ-सुठ स्वठ सिठ, ४६

गरी को बार्चा

व्यवस्थातिक विक् वर्षि अर्थात्त साथ ग्रीना । यथाग--कृष क्षम्य सन् विद्या क्षित्रहे, भा जन् वृ गाँउ विद्या प्रसाह सम्बद्ध का सुकर्मा. ६६४

युवर का कन कांत्रमा

कुल राज्य को सबट करना । क्याय--नुर सु अहन कहेन को का, भूकर की पत्न कारे सुरु साठ-सुर ४.१%

(नगाः न्दाः ----श्यः का पेर कावनाः

गृद्ध दृष्टि होना

र के काल्याहरू साथक कार्य कार्य कार्यका प्रकार कार्यका कार्यका स्थापन कार्यकार कार्यकार कार्यका स्थापन कार्यका स्थापन कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यका कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्य

शृहरूको का कावत । का नहीं

मत्त्रको र सम्मार श्रेष्ट्रोग नार की क चरणा स प्रकार पर पुरा की जीतर का स्थानन हा प्रारा र केस्य— दसकार पुरु जा भारता हुकि राष्ट्रारा सिवास क्या दे



162

धीर पुण गण्डवा की अवशास पुर करा शासा ह समग्रह, ३३०

गुहरूकी की बकी ४० गुहरूकी का बनका गुहरूको बन्तानः

- (१) पृष्टकी की ध्यवस्था करती । प्रवास—धरने धरक मनं तक तो जतन से एक जाँद करती चली है कृदकी चलान (मानक (१)—प्रेमकस्थ, ६०)
- (~) गृहमधी हा वर्ष कराता ।

गुप्तस्थी कोचना

कथाकर गृहस्थी को करा पूरा करना । प्रदाय-वंश ही बंद और तम काट कर यह शृहस्थी आहो है मिल्क (१) - ग्रेमचंद, ११), में यह चारशी है कि मुख्यी करो क्याई, वेरी क्षीर मुख्यारी योगो हुई मुख्यी होन-वंगह स हो (मा-क्यीशिक, १९)

बुहम्भा बाधना

मृहरकी नेकर गुल्या —सर्थ वर्तगढ़ की कावस्था करती। प्रयोग—में प्रथमा अलग कमाले-मती है, बचकी मृहस्थी बाध रहे हैं, उन्हें कृत बानम से सलकत है। शी-कोडिक, 20)

रेक्ट्रभा रंग

न बहुन तोश न पावना, तथा हुमर ना रेन । प्रधान— भटक की दृष्टि सामी के सुकर नेहीए चेंडरे पर नां प्रमान-वृद्ध वर्मा, फो : जिल्ला जेहना यह भारी देंड गोरामा मृद्ध, बंटा हुया गटा और रोबीमा म्यांनान्त प्रकारी विशेषना में में कोटिंक—कि नांगाना

गेहं के साध पुत्र पिसता

सर के मान साराजा नाम राग प्रदेश सिंग बिकार में गांची सेना औं गांवन पर सार्थन प प्रदेश के समी २३१४ के सन पन के सहस्र के हाइन सन कर कार प्रसाद स्थापन होता है से पन प्रश्निक सह के नाम पन भी किस राग में से प्रमुख्य स्था

गोदी जिल परना

परित कल हुन्। जान नद्राय के रूपे स्वल महाद्वीत्रेय के राज १४६

गोर्ट। बेटमा,--स्टास दोसा

- (०) वृष्यि वस्ता हातो । अयोग—बान एक सरक्ष के सरव म कर हो गए, सगर गरेटी काम हो साथी तो काम मान कर गाम के स्थानो होते । व्यादान—संस्कृत, २३६ । १ व गरे । व्यादान के नाम प न परिवार विका है निकाल—केनु ३६३, ; वृष्यिए समाग (१) में (+) जी।

गांदी जान दोना दे- गांदी बेट्ना

गोंचे गिवनी

- (१) समृत्या विशव करणाः अयोग---वयः सै करीय पापा के बोड निर्मे यह यह क्लाजानः हो वया है, इस हिन्दी क्लाज का जागजाक--देव जोजी, १४००
- (=) अमान प्रान्ता ।

(नवान वहान-योद चन्ता,-पदनर)

गाना सामा

- (२) योवा वाना ।

शोका साम्बर

- (१) एक्टबर सम्मारतं कीच केना । अभाग-वृध्यमा, विवर्षस्थाः अवस्थानाः तो यह वृष्यस्य एकटम योगा सार सम्र .कृदक- क्षण्यस्थः, १६००
- (a) apr fest & are feart toil !
- (1) क्योजनर करना ।
- (८ वस्त का चलवात्त्र क्या त्याची वस के अता ।

शांत की

(- ma frer gue) sam im ere et fo



गोद प्रसार कर

विक्त प्रमन्त ही जाय (यह आन ही भ पड़ कि पोट का है कि पेट का (मा—कोशिक, वंध

(२) क्षेत्रा बालका

मोद पमार कर

विनय पूर्वक । प्रयोग—पृष्टि कच्छा में स्थाम की, मार्ग्य मोद बगावि (संदर्भशार)—संदर्भ १९०)

गोद फलना

सताल प्राप्ति होती । प्रधीय—पूची, तू पति-पराधिती हो। मेरी तील कुने (रंग० ११) —प्रेमेन्ट, १४प

गोव अस्त

(१) संतान प्रोती। प्रयोग---कुछ एक के कर सम्मान की कुशा से गोद प्रश् कृती है ज्ञांत≎---स्कानाक १३५/ (२) गोप्तान्यकती क्यों के आवाब में नारियक इत्यादि देन की राजा।

गोष् में बालगा

भावित होरता । प्रयोग-स्वानी के साथ शेषि परकी । ययज्ञ नृहरावेति काल चाली (रामठ (रा)-स्वासी, १०४२

गोव लेवा

बत्तक नेता । प्रयोग—नग्हाने बे-बोने ही नानी मुध-गोर के लिया (अपने समर—खा, १०८३; बह एक सहका गोद सेता कार्य हैं , सी—नीपीक, १६ , मी सार्य पार के हैं , पार राध कर कर कर कर कर की

गर्द समा होना

 ा न न नो पाय ताली या च ताल हरू प्रतापत करी पृथी है परोहर बहुत बड़ा कोनी बीलक – श्रृदिक्किय दृष्ट () मनाव मानाव

भोगर गणेश हासर

मन्त्र प्रशास प्रवास स्वयंत्र स्थापन । य राष्ट्र कर प्रवास त.र. १८८० प्रसन्द्र ५०)

अमा भटा सावा हाला

धावर पाधवा

नेव दर काम करना । मूलाग का आम १७२०)

प्रमोत—ये पत्रमा ए धर्मप्रदर होते की घर से कास्तुत बोबर ही पावते रहें वहुठ तिठ—बोध्यह,१०५)

नोरक पंचा होना

उनकी हुई वर जनका नेनं बानों। इमोस—न्तुस्तारी व्यक्तका का डानिको प्रापायाम तो वोगम पत्पर हो गया है (पटुम० के एक—पटुम० कमी, १३१)

गोल कर देना

- (1) जिस न करमा । प्रयोग—न्दरित दीपाली की चिट्ठी प्रशक्ते पाल पहुँ जले का प्रमाण किया जा सका पा पा नहीं इस सम्बन्ध से बाल की पोल विसे जा रही वी करक—रेव संत. २९४
- (२) वागी-बोची हुए देश ।

गोल पार्श्या

- (॰) अर्थेन्द्र कावना । वधाय-स्थाप् हरि कृषकात बार्य तृष्य वक-वर पार को तीन सुरु सार्य-सुर,४४८८.
- (२) निरक्ष बनामः ।

(पदार पृश्यः न्योसं हालवा)

गांत्र बान,--मदोल बान

(मधार पुतार-नोप्यमोस्य पानः)

गोस प्रशेव कत

है। भोल बान

गोन्द भाग काना

- (१) सिनावर करता (प्रयोग—तुम करो योगमान यर तेला 'चुनते० इतिक्रीष्ठ १३३'
- 🌎 राजन करका (
- (१) द्वार ५५२ इरामा ।

गोनी का रूपा

एक वर्षण कर बंगर किन्तनों प्रश्निकों । ध्रमीए अस्कृतिः जनस्य कर्षणक काली करणों पर बंग्या का एक ब्रास कर सहस्य १ - प्रसिद्ध १४४०

योकी मारना

वतृतं तुन्त्व समधना, तुन्त्व समध्य कर स्हेद देशा। प्रयोग---वेदी तो समाह है, आप एत्त्रव्यत की मोनो नार्वे और अपन सम्बों पर मुक्तमा दायर कर हैं (गोदान---प्रेमचंद, 230), तुम भी मारो बोमी, हमको स्थाप हैं मतस्त्व (किलो---विदासा, 50)

धोशाय सगना

पुकार की मृतवाई होती | अधोग—ना कोइ करक न साय गोहारों | यम एर्टि नगर होइ क्टकारी (पद०---कायसी,क्ष्याद)

ग⁹ के देकी

मतलकी , स्थार्थी । अयोग—एनी बन्ति अनही के सकी, अपनी यो के देकी (सुर सार्थ—सूर स्थारहा {समार्थ महार्थ—की के सार्थ)

र्गी सामग

अवसर की क्षेत्र में होता। प्रयोग—देखि लागि सब् कुरिल किराती। जिमि क्यें तबक केन केहि आती (रामo (था)—सुशसी, ३८३)

(नमान मुद्राच-नार्ड हेसामा)

श्रंथ रंगना

पन निकता । प्रधोश—विद्य काली के सन्धन्त का वर्णन किया नाइ तो बड़े-बड़े देंद एंग डालें और पुरत न पड़े [प्रव पीठ—प्रव नात निठ, ११६]

(समाव म्हाव—**अस्य काना**)

ब्राहक एटावा

वाहक को राजी कर नेना (प्रयोग—दुकानदार का बटा भी दुवान पर बँछने ही शहक पटाना नीम जाना दे (मेरे०—मुनाबक, प्रय.

शक्क ट्रमा

प्राप्तको का कम हो जाना । वर्षामन-व्यक्तिकी कारमाना दूर क्यां । जमीन हूर गई, बाहक टूट बए और यह भी दूर गुका करका ५ प्राप्त ६५ , पंता पीर वारक दूरने बने (प्रकृतक—४० प्रोजी-३५)

क्यांचि से गरहरा

धन्तन्त स्थानि का अनुभव करना । प्रयोग—सथ नेवक दव वर्षाह बनानी (रामक (अ)—गुलकी, अहत

द्यद घट है समाना

हर तृदय में लिएत होता, तर्व व्यापण होता । प्रयोग---मास पिता न शारा आई, जल वन पट पट एको अवार्ड मूल साठ--सुर, ४७१२)

घडी गिमना

(१) मरने के निकट होना । अयोग---वक्त नगीय दोशि केर्की मानह मीचु वरी ननि को (राम० 'बा---एकसी,

👣 ३५० व वावस दण्या

वर्षे का दाकता

परधान परीक्षा काला । प्रधान —वेदनाले पढे को होता — मृद्ध नदह है कि हमाने गलावित की स्टब बाय-वाल की गकता में विकास नहीं सबते हैं औदान—डेसकट, ६६)

धड़ी मदा खदना

गहरा प्रभाव होना जानू सा अवर होता । प्रयोग---कण-करत केंगी प्रभावी बात करती भी कि मृद्ध पर पही तमा नह जाना मानव च प्रसाद प्रश

घड़ों धाना पड़ जाना

क्रम्भन रहिज्ञन हरेगा । इस्ता न स्टब्स पर प्रश्न रहा भारते प्रश्न रहा । (यूटेंंंंं — क्षित्र सी में क्षेत्र हरेगा स्टब्स् भारतक्ष्म प्रश्न प्रश्न प्रश्न मुख्य मुख्य क्ष्म भारतक्ष्म भारतक्ष्म रहिल्ला मुख्य क्ष्म

प्रमथक्त होना

बाराफ हानः । यद हरू (१) राज म् अंटिन चनकानर

हो जानी है (रंग० (६)—ग्रेमपंद, ५३.

चर

- (२) घर के व्यक्ति । प्रयोग--काटक के पास आहे ही माण्य तथा गारा पर माम माथ हुए है कुळी०--निराला, ध्रीर वेक्सा, एक बान का काम रक्ता वर लोबी न ही (मा--विक्रक, १३६)
- (२) का का सामान : प्रवास—नो वारा कर प्रदाहर है अभित्रम् सुरु सुरु-सुदर्शन, २६)

वर भोगत होता

घर के समाम परिचित होता (प्रशेष---मै तो प्रशीस बार पण हूं । बच कहान को किए घर आंगन ही गया है बक्त- नागात, श्रद

या उज्जाना

- (२) पूर्व की मृत्यू होता । प्रक्षेत्र—नेदा को घर उन्ना गया घटती, कार एक लोगा पाना इन कामा भी नहीं गोदन घटनादें । यह पर उन्नार कम पर का दोवर बान गया प्रमाण धन्नात छन्न

। गीरवार की हासभ विरुद्ध द्वाना ।

यर उज्ञाहना

६र रा विविधित स्तर । अयाग व की पर पेटिसस

न हो नकेगर जो सहायात्र जगतः परकासः और महाराजी कामसता का हम जानवृत्तः कर घर अवाई (इंडा०— इंगांग २०९

खरे करना

- (१) प्रिय होता, प्रभाव कालना । हवाय —हनवय ने सोवा—जसकी बात वर कर वही है (क्षासीक—वृं o दर्भा, २४०); एक अभीव उपस्कारत वेरे वर में वर किये हुई है (सम्ब—राठ बेठ, ४५) (+)
- (१) स्थाह करनाः । अधान—भर कीम् चर नात है, वन् धोष भर आहः । तृतनी वर-वन बीन ही, याच प्रेम पूर धादः (टोहा० -- मूलसी, देशह); स्या वह कोई पूसरा वर नहीं कर सकती (मानक (७) -- प्रेमचंदे, दे,

(v)धूमक के लिए स्थान शिव (शतर)

घर का भारमी

कुट्ट्रजी या सहस्र निकट का आदमी । धवान—नुम घर के आदमी हो। सुध है। क्या धोन भाव करना (गोदीन— पुमर्वद, २८)

धर का अवस काटना

भट के ज्ञान पात वने घटना । प्रयोग—क्य में यह नाई है, तांव के कृष्ये पर का परकर काटने असे हैं (बीन०— एक एक, २०४)

घर का दीपक मुक्त काना

निवश ही जाना । प्रयोग --बह चर उत्रह नवा, उस कर का दीगक वृद्ध नवा अस्तर---प्रेमकद, वर

धर का भाग था पहना

परिवार के जरम्नु-पोक्स का दाधित्व का बहना। वर्षाय-चर असकी मां मर मई और पुरर भर का भार वर परा दुष्टगाछ-दे० स०,०॥

वर का भेदा

रहम्य जानने पश्चा । प्रयोग—यह वर के श्रीदेश ने संका कह दिया है (प्रस्तीक रेमू, ४९४)

भर का होना न बाट का होता

गारिका भी न गहना, हर बोग से माना । प्रयोग— मारे तें सहेनान, विहारे से वृत्तिका के बहादुण्याम हुनै है पाट को व चंग को भूपन धंबात—मूचन,३३४), तथ। गहुँ वेग यही समस्त्र में) कि इसके कारण में 9 पर की यह नयी, न भार की (मानक दे/—प्रेमकट, ३६%

धन कार्य काना, नाये ज्ञाना, कार्य काना गणानुनापर विनयं रहतर वृधिकतहाँ प्रयक्त अग्निम लगना। प्रयान—किंव तरह तन कर मुख्य में दिन पर कार कार कार है जाना (बोल०—हिक्सीम.२४४) " सुम अले नाथान नेंगा, नव नो पर और कार जाना। (बान० (२ —सेंग्यंद, ६४% जयों सो पर कार काना है, तू रहेगों नो किंवारी क्ष्म्या का भी जो बहलेगा (बीनेंंं)—रांठ राठ, छहा , पर कम तथा ठश मुखा तो मुझे यह पर कारमें भगा सेंबांंं —प्रेमकंद १४३% हम पूना होता भागा है तुना पर थर-पर काना है वैदेहींंं —हिरोतींंं, १०४

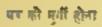
घर की बांदरी

भर के बुध-आक्रम्य का बरवार । प्रयोग—भर वेटी अब तो एक वहीं करको है। जो यह यही रहगेरे ती हमारा कर क्रमंत्र दहा रहेगा। इसारे पर की बादनी तो अब वहीं करको है (मिसा०—कीतिक.एकः

भए की पूर्वा

नाम का प्यथा। प्रयोग--का मैं कोवा जरम अहि भूजो। बोड करेड मरहें के देंत्री (पद--जन्मसी

प्रस्त कुर्ति दात्र बगावर होता. भुर्ती होता वरती कीय की काई क्या म होती। प्रणण-संद



घर की मुनीं होना के घर की मुनीं दल्क कराकर होना

या की लक्ष्मी होता

भारतवान होता ; भुराम भाष्यवती मृतियो । प्रयोग— कोई इस तरम् कर की नवनी पर शब करता है ? (गोदान—सैमकन्द, १९४)

घर के भरे पूरे होता.

प्रसम्भव म संस्थान होता । प्रथमि—तुनने नना है..... शर के भरे पूरे हैं (बीने≎—रा¤रा¤.३५

घर के भीतर कर कुशां

ऐसी कानु जिसका उपयोग कोई न कर तक। याचेय---सुरवास जानु नूस जिस बोबन कर भीचर को कृत रक्षा---हिंद शाद साद.

घर के दी को होता

घर ही में यह-यह कर शार्थ काली । प्रधाय-अवशिर्णत है धरही की बाबी सुरु साठ-स्थार है र दिय देवता धर्मत के बाबे (समठ, बाब)-- एकसी, इस्तर,

धर काचे जाना

रे॰ घर कारे काना

धर सोद कालगा

धर काशा

(१) पर का मान मधी। को जाह जरना । पूर्णक पुर प्राप्त गारी कर दोते पर कि है पर स्थान सूर्णकार मुद्दे ≼्ष्मच क्यूड़ जानान टा पर गरवनि क्यूड़ प्रदेश दे गारिनि मुख्यान—सूर्णां लग

) परंकी सन्ने संदर्भन नव्य इत्र इता ।

शा धर्माती होता

बहुत क्यारी होता । प्रयोग—संबंधक तिस आया के हेक्टार साथ संशं कर अधारी हो उस समानी का विकास ही होता है यु० नि≎ बाठ मुं≎ पु०, हदध

ন্ত্ৰৰ ব্যক

हर बगह हर पर । प्रयोग---वान्तिम् पर-पर होस्ते, माने हरो पुराई पुर सात-- सुर, २०४९), तुम पर-पर धारान प्रति वर्षि-- मृक्ष में मन्द्रमान कैस्स्य रेउन-केस्स्य २२१

पा-पर का और। होता

नांथी व्यक्ति । ध्योग-- हरोबद वर-धर के भीरत दुध बदनव के मोत भाव देव २)—शरकोन्द्र,७३,

घर-घर तक कैन्स्रत

वनको प्रशासी जाना । असीय—सर्वेश होने ही यह बात बर-कर केन कावको (यहन-सेमकन्द, १२३.

(स्थार प्रारम्भार**-धर-धर तक प्रहंचना**)

पर-वर मिई। का करता होता

तथं की एक की ही दया होती। अधीय—सबके पर विद्वी के पाने हैं। साजकम विजये पर गोना वृत्रसम् है हैं (स्वतीक--किंग्स-क्ष

(यगार- गृहार-कान्यर मृत्या हांची होगा)

पर पाड न पाना

गोई योग कोश म समक राजा। प्रयोग-किसी की हुम न नमध्या था पर किसी शास के सीम का मन-पाट न पांचा पर बंडाल-बंडाल, पर्)

क्र बाट बारवा

विभाग होता । प्रयोग समय यह बनाओं कि नाईस्तर यह पार क्षेत्र वर्षणा द्वाणक-देश संस्कृत

या यालना

पर विकारना हुन व कनक नकामा । प्रयोग-- इति परकार पण पर पान नानन कुश्च प्रमणि जाक केवोग्ड्राटा कवी १७० वर मवा निरमाद के दार न पान क्षि माद प्रदेश उत्पादी ४४१२ , मूत्र स्वाध सम रिम्म राजन औरनि के पर पालन भूव साठ-- सूत्र, विषये। , विषयेतु कर वर इस शामा शिमा विमय विश्व सुराकी ५०% काको घर गामिने की वस बहु बनायाम, पूजू वर्षी पृथम पान वेरे तृह धाए हो (वैद्यवंत-नेदान), ४२), बीग रच वस बहीयने कैसा अब काहीन कि वानि यह पान , मुनतेल-हरियोध, १९५), वे कोम जन्मे बनवर सत्तर पर मानती है बादने (कुट०-फ०ना०,43

घर घुसना होना, घर घुन्छ, होना

यह सर्व और कुर में ही बैठा रहे। प्रयोग—सेंकर ने विनोददंबंक कहा— यह वदा नहीं पृथा कि यह कृतता आदमी किया करों में शामा है? जैसर रेश —यक्र द, १२३) है तीक्षण घर कृत्यू है और विस्तृत निकट्टू पहल प्रसद्ध ११०

(समाव नृहात-धर-पुन्द होना)

घर-पुम्स् होना वे= भ्रष-पुसना होना

घर चलना

- (१) प्रीयम निर्मात होता । प्रथाय जब भनाई विन्ती मही जनमं किम तरह पर मणी तरह धनना त्युमतिक — हरिजीध, १६६), तो पर विरम्ती केमे चनेती (कर्मक — ग्रेसचंद,8२,(⊕),ग्रम करनार पर केमे चने आसीक — यु । यमा, ५७) (⊕)
- (२) भार का काल कानतर 1 प्रयोग—देशिय(१)म (२)

ध्रुप करणना

गृहरूनी का मार्थ जनामा । प्रयोग—का से देवकान्त का पित्रपृ श्राची बीमारी में एकियां रतप्र-रगत कर कम बना मा मां में स्थाने हायों के परिश्रम ने ही यह जनायां या सह मुद्र-देव संब, रूपक

घर छोडना

- (१) समार से विरस्त होना वैदास केना । अयोध---स्पटन ही सालम शाना है कि यह धर मांडन की सारा बड़ी प्रथम है और समार का विरमा ही इसका जिकार श्रीम से क्या सकता है । बासोका---सुरमाहित्यर हैं
- (२) परिचार से मध्यन्य तीवना ।

49

O P 185

धर जोडना

मनारी बनना । प्रयोग-न्यर बोर्सने की प्रतिनाका ही इस पर्यात का मृत्र कारणाहै (प्रशिक्त-न्त्र) एक द्वित्रकः हर।

भा बालमा – में बालमा

रकेन रकता था बनाता । प्रयोग—एत निश्द हो यहां कि सरवान में उसे कर काम मिद्रा ((ग० ३)—ऐमक्ट २०६); मी मेहरकत, मेरी करे था है कि उसे क्षत्रे कर म हाम मीजिए (मृष्ठि०—अग० वर्मा, श्रुष्ट), राजा काह जिस जावि वा नरको व याच जात कर काह जिसका रिचया का म सम में का ने, यह कर करता है (मृग०—यू ० वर्मा, २१६)

घर-द्याव देखता

चर के बाद करने की देखभाग करना । अधाग-स्वर उन्हें बनाचर कर के रक्ता । अपना करदक्त देखे ।मिनी० --विभाग, ६५

यह पहला

- (१) विश्वी तथी का किसी पृथ्य के साथ उसकी ही कर रजना । प्रशास-काशिय वया देखकर मुजाबी ने जैंदी की बाद दिया और मुद्दे के बाद यह नई विश्व (१)-प्रेमनद, १८९
- (२) किसी कर्न की सामत मन्त्र ।

क्ष करहे सामा रेज्या का काटे भाग

धर कुंक तमांबा ईप्पना

यर की क्षम कैया जैया कर, यर वस्ताद करके भीत्र करना । प्रयोग—काची भीत और भंताका, देन सम यर कृत तमामा (मुठ निरु—क्षठ मुठ पुठ, ६९६३); मैं भी घर पान नदास्त दमन व द्वरशासीय सम प्रतान करने समा मेरेठ-- मुलाका, २६

घर-कृ के होगा

सब कुंच वर्ष कर शासनवाता। यथोर—क्या ऐंना बच्चेंग्रा पर-कृक व्यक्ति, जिनका संस्थान रेपनाको है जाहर करा । यह सारस्य सारणे जा नगत है यकना है अगुलोठ---११० राष्ट्र, ६)

धर फूंकमा

(१) के का यह कुछ वर्ष कर बावना । वरोग-नह

नो कर कृत्व कर ही चैन केवा (भारतीo—र्शः छ०, ९०) (२) घर की प्रतिष्ठा तथ्ड करनो ।

धर फोडना

धृष्टिकार म आग्रहा नगाना । प्रयोग पार पार ना रह पर फोइने देशकर मा अपनिया फोड़ा करें वृभनीयमा इतिसोध, पर)

श्रद-फोडी होना

स्वारं स्वानेवानी । वयोग-पृति क्य वन्तृ कृडवि धरफारी तव वरि जीव क्यावरं तोथे (रामा (स)— सुक्रती, इध्या)

श्रद वस्तर्भा

चर में क्यी या यह बाया, विवाह होगा। अश्रम-सारव कर उपरेम् मृति कहत्वलय कियु वेह (राम० (बारा --शुक्रकी क्या): वैसे सोचा, इतनी पढी विको स्थी की मैतर क्या चर बसवा गुंठ निठ—बांठमुठ गुंठ, घट, गर्य चनवा तब ह्या? बस्ती बसो मेरा को पर वर्छ (राज (द) --देनधट, प्या), इतके तो भवनी हुए होने यो कच्छा का, किसी संस्थानन का चर बमवा (शिक्षाठ---की/सक, ३६)

धर-बस्ता होता

क्षणीत होता । प्रयोग---भोर भए बाए मान्त मानि सरे इस आए, ए हो वरको अध्य कीम भर को हो ? (सनक क्षित---रामाण, रक्षा

वर बसामा, बसामा

विवाह करके पृह्म्य बनना (प्रयोग—नगरे नेता है...परके प्रति पूरे हैं। पर न बकाते वाजू उहने बीन०—गर गर, २४), बच्चा यदि तू पर न बमावेदा तो नै मृतन्ते में किस संद्र शृह विवा तकू हो (मेसन—अक्स, २२);वाजित कर बनाने वह स्थान तुम कर करोने (कसार—सप्त. २३

धर बसाना

देव घर प्रवासा

प्रश्निकारण

छ्य नध्य करना धानसर्थाता नध्य करनी प्रयोग सम्बन्धिन कारणा क्षण बहेश संधानस्थानः संधानस्थान ७६०

ध्रव साहब

हर प्रशह । प्रमाण-कृति गर्भ घर नाहिर नाम पूनाव

महं इस काब कनोही (धन० कवित्त-धना०,१४)

धर विगइता

- (१) वर के कोणों का कुमाने पर जनना । प्रधीय---विसी का वर विश्वते, इन्हें क्या---इन्हें की उड़ी विजती है---अने वर की, जवान और वृष्ट (शैसर---अहोय, १७८)
- (२) पर को स्थित बराव होती ।

धर बैटना

- (१) विना किसी जवन के होना । प्रमोप-नक्षर हो-नीन वर्तान में कर बेंडे के वसक-नीयांत, कहे।
- (२) पमेल होता।
- (३) मकान पंत नाना।

घर बैठा करना

विवस का विजी के साथ काने समान । प्रयोग-साम है उनने बर-बैठा कर विका है (मिली-निराला,७६)

घर बैंट

विना कुछ किए पर कही यह । वक्षेत—बहुत विन वे में मीनन गाँव, भाग वर्ष परि वेंड आये (कमीर प्रेशांठ— क्वीर, पर्छा, पम कहि सहहात वह कीम्हा, गृह वेंड अहार विवि दीरहर (रामठ (की)—सुलसी, ५०६), फेरिये वयी दूर्व हाथ मफेरिये भी विधिना पर वेंडे दथी विह (धनठ क्रीता—सन्ति,१९९)

घर बैंडे की क्षार्का होता

बहुत कामान होतर । अभोम—मधी के हजार काम । घर वंड को मीरतो नही है जो ,बोनंठ—संघ राठ, १६४)

पर भगता

नाम करना पा करामा. यन देना पा नेना । प्रयोग— कोई बेस्सा सो की नहीं कि तुम्हें मोच-समाह कर कपना पर अच्छा नेदा काम होता (मवत—प्रेमेक्ट, ११५) । रिकास क्षेत्र हान का दाया है ते प्रथम का पर मरकर जन्म पर कर कह है चुसते⊩ मूठ हरिफींस ३)

वर मनवर

पर का साथान जारता । प्रयोग—गापित होए यसते शिंत वर्षे जार वर्षे पर अर्थ कवीर प्रदेश कंपीर पर , इस नक्ट परा पर क्रम का यह जाईन अपने वर्षाई का पर सरनी है इसके नी प्रेमकन्द्र, ३९६ जिनका मीर होंने का दावा है के x x दूसरों का चर मूलकर क्यमा चर पर रहे हैं (कुमते० /मृ)—हासिक्ष, 5)

धर हैं.—बार्ला

स्त्री, परनी । क्रमीय अपनिन्दी की करकामी भी धरमंदर निष्पार गई की (बहुठ-देठ सठ,३९-४०); वेरे घर वे वाक-द्य, महीन स कीवार है पद्माठ के यह पदमठ शर्म १६३ और स्था ममाकार है—आपके कर के बच द्वांबदद केंग्री है (भिजाठ—कीदाक, २२९)

(समाव मृहाव-स्थार बैठा सेवा)

घर में आप लगाता

(१) परिकार में स्थार समाना । प्रयोग—साम के समाहण न अप धर ही में आन धन अप ही म पत्र अपनी दानिए (सर्म0—हर्पकोध,१६४)(—); ताहिर जनी इन वानी पर हर्गी से धड जाते । उसे बर में आन नगान पानी, निष की गांड करकर प्रमाने (१ग० १)—प्रेमवंद, १२१)

(२) गृहस्थी नष्ट करना । जयोक--देखिए जयोक (१) में (÷)

घर में खांदना होता

संसाम से घर में कृषी होती। अयोध—बहन तृप्तारी करीचन हमारे धर में भी पांदना हो नाता, तो करण्ड क सा—कीशिक, हर।

घर हैं चूल्हा न जलना

- (२) फिसी कारता से बाला में बनना ।

श्वर में चुड़े लोटना

ष्ट्रं संजित पायकी कर विस्तृत सभाव होता , चोर दरितमा । प्रयोग—जिसके घर में पृष्टे कोट यह भी पुरुषतकाता है (गोदान—प्रेमक्ट, ११६)

घर में शासना

देव घर हालगा

पर में दिया जलाका तह मुस्लिद में जलाना

नपना दिव करके तब दूसरों का हित बारता । प्रयोग— यहच कर के दिवर जमाकर तब महिजद में अशाने । * मानंक को—केमबंद, १५३)

धर में दिया जनाने शासा

वश्यम । अयोज—इक्ष लग पूत यहा सब सामी, सा गयन परि दीवा न कामी (कवीर प्रकार—कवोर, ११९), संस में बोर्ट विस्मृ पर पानी इन कामा पर य दिया बन्तावनामा मी नहीं दक्षमा (गोटान—प्रेमचंद, ३३॥)

धर में बैदा लेका

रश्रेम रश्या । प्रयोग—संदिश्याम कर मेम जन्मारक्ती नाम की एक केम्स के हो तथा का जिसे उन्होंने अपन कर य किटा निया का व्यक्ति—स्माठ वर्मा, ३६४), उनने अपनी यामी को कर के वैटा नियर का , श्रुतात (३)—यक्तपाल, ४३४

घर में मंत्री भाग व होता

सत्यक्त चीन्द्र होता । प्रधीय—वर में मू मी भाग नहीं है तो भी म दिश्यन करत (भाग प्रधालाय:—भारतेन्द्र, ३६९): वर में भूनी जान नहीं, वले ने आह करने (मानवःह)—डेमबंद, १७०); जिसके वर में भू भी भाग नहीं अ अ जो में बचना मध्यी बनार्ड (भिसाव— क्षेत्रिक, ४३)

धुर रखनी

(१) पर की शता करती। प्रयोग--भर जामी गर उसी पर राजी घर बाद (केबीर प्रेडांक--क्कीर, ६४) (१०) (२) सांवारिकता में सिन्द शहरा। देलिए प्रयोग (१) में (+)

क्ष लुदाना

यर कार्टी इन्हें पर में

घर बार्ला बात

कार दराव का अधिन।स्थिता न हिनी । प्रमाण देशिय



231

मुनीसजी, आपके अध्य तो तक घरवाली बळा हो वर्ष हैं (कट0—दें0 स0, 2१९)

घर से बादर पेर रचना

- (१) बाहर जाना । अभोन—वर के बाहर पांच नहीं रजना (६ जाः)—व जाः, ५६।
- (२) संपन्ते शक्ति में बरहर कान कंग्ला ।
- (1) मर्याद्य तोहना ।

(मग्रा प्रान्त पर से पैर विकासता जार पैर विकासना)

वद से महा अच्छा होना

गृहस्थाश्रम से सध्यास केमा ही सम्बद्ध होगा । प्रयोग— शृष्टास अस् हॉर न मिले तो, यर ते समी वर्ग (सुरु सार्क—भूर, १८००

भरमारा होना

विवास अपने धर बनाना । प्रयोग—यह क्षत्र विदारणे अपनित का दक नमान में बाहर रहकर वहां और विद्यार में भावपारित जीवन कामीन करने को तब तक ने कानान पाने रहे, यह स्थोधी ने चरवारी हुए कि प्रथाने नामार्गनक मर्माका सामान्य होने हो नहें संशोकण—हरू एट्टॉइंटन, २०

धर्मारहर

(१) में भागा—जनगरमा है नामा । प्रयोग—विद्या को भी प्रतिष्ठ शांधे भी का कामा ! (प्रीमाठ—प्रेमकर, १५९) ; यो दाहो तो कुथ वजीत कर नहां कहे से प्राच्छे । पर में वामहर नहीं, तमें सती (ज्ञानठ—स्वयंत्र), ३६ (२) अस्ती-जन्दी में निजया । प्रयोग—असी-कर्दी में मसीत रहा है कि एक महाराज के हाल, जो बादक्र मा रहे हैं, इस उपन में केड हूं पद्माठ के पश्च—पद्माठ वामी, ३६)

मण्ड होना

पुत होता) पेक्षेस अभिकार सार दुस्ता धार व इस मुस्टिस्य म प्रश्नीत र सहा जिसका समस्य १६६

धाट उमारना

र कोई ससेन गाम यह जनभग नगरना । प्रधान सनार हो सागन का यह सोका सनगर महा की दर वाई अंद्रम स्थार पर क्यार समा क्षा समाने सनगे जुल हुद

- (२) नवल के बाँड स्कर को मीचा शस्त्रा क
- (३) नाव के पार तक पहुंचाता ।

शाह का पत्था सम्भंती

कृत बार त्यसंत्र की बस्तु समझतर। प्रमाण---वीकिया की अरब न और की परन्तु तसनी की बांके बोधी के काई। की बरह उस बाट का परनर समझ कर नस पर पहार का रहती की बोनेत --चेत सल, बर

गार-मार का पानी पीए होना

(१) इर वरह का मना-न्या अनुभव किये होता।
प्रयोग—सर्गा दिनो एक मनदेश कृमता-पायता दिल्ली
मार्था। पूर्विमा देखे हुए मार-मार का मानी दीवे हुए,
क्या कामार और मन्नार (इ स्टाठ—स्माठ दोनों,क्ष्यः)(+)
लो वर कीएए मार्थ कि मार्थने एक छोटी-मी सम में ही
गाट-मार वा पानो भी समा है कठठ-देवस्त,दंध (+)
(२) प्रथम के अनुभव साम्य पिए होना। स्थान:—
वर्ष महोने दौरा किया। मार-मार का मानी रिप्धा
पुव्यिक—बाव्युव मुठ, छहद। दोनए प्रधान(१)में(+)भी
(१) एकर-स्थर मारे-मारे ,करने बाना। प्रधान—हरू
पाट का पानी वीनर ही सम्र समस्य वह बस्तव देवस्व,

रापट शेक्ता

पार के कियी को सान-मान क देशा। क्योग—होह वंशास्त्र रोपट्ट पारा (स्मेक स्मा सुलसी ४५०)

कटा बंदना

न्यापार म क्यामा शेवा। प्रयोग-नाह गिरवर वरियाय वेडिडे नुकर शाहा कुम्बर-मिसस्टास, क

१मसार वृहार--- प्राप्ता भागता)

घात शकता,—हमाना

भोबा रेमने रहमा । प्रधान—आपू अपनी भात निरमत, जन बाजो बताइ (मु० सा०—सूर, फाउ); केलि की एतत बचादे बही, दिन में ही जना पृति बात नकाई (हातिक सक्क-मतिराम, क्या.

धान में जाना

শ্লিষ্ট লিৱি ই প্ৰুক্ত কলা। বছল বসুক



विवत में कार्र भागी, वेशे भाग वं जानी (सुवसाठ—श्वा ९०६)

(२) यांच पर भवता, इस्ये करता । (मना० मृहा०--धास पर सङ्का)

घात स्याजा

[‡]े यात तकता

गाय पर नक्षण दिस्कमा

(१) इस के समय और दूस देखा। प्रयोग—मी-दर-सपार जान मुनिये पुकार नेतु, धनावानी हेवो बेचा धाय केमी खोन है (धनाव्यक्ति——धनावश्व) : उच्यू से रुपी गांम मोशकर कहा—मुनिया, चाय गर मोल क स्मिन्न (धानव ११)—प्रेमकंद, १४), दुर्वेच को प्रगते घर भी गानीम में हुआ कि एक और चर्चा कमर दिया, चाय पर गुमक सिहक दिया—वंक दिवनी प्रभाव की दायों को बी हानों सीन निया (बहुन प्रधान—यहनव अपी, 52%

(२) मलनाए हुए की और विदास 1

धारम पर समक्ष पहला

दुश्री को और इस मिलता । अयोश--- कुमानी के बाव पर जैसे मानी मयक पर गया (मानत (१)--- वेसक्ट का

शास पंजना,—पूरा होना.—भग्ना

- १) प्रच अरुक्त राजा। घार नाम की समित-नाई (क मिलता) सुदय के साथ में भी घर कई है जिनमें उपका सह नहीं मिलता और का नाहि यूपता (जिलाश) के मुक्ता ३६९
- (२) भी संभित्ति का नेव कम होता ६ प्रधीय-स्वयस्त्रत्व भाग हुइया नहीं भरता है मिनका चरव (प्रतेस्य स्वय भा दृश्या कार प्रयोग तमार्थ विस्त वटा वेडमार का बाहर
- याच पूरा नहीं हो जबना (ठेठ०—हरिजोध, ३०) (३) मनोभागित्य होना उनके विचार में ६७ पाव का भरमा दूस्तर का (प्रेमां०—प्रेमकंद १८६)

धाब पूरा होना १० प्राव पूजना

धाष जनता

र भाग्य पृत्तका

याच में जार देना

भीत अधिक प्रश्ति । १३१४ - भागत प्रति गर्द संग्रह । वर्ष 50

O P. 188

रामक (च्या-न्यूसमी प्रकार)

चाच मधना

स्वया का भीत कीरे हुए होता । ज्ञतीय-स्वाह शासर युक्त एक और विक की बाद भी तक्या पत्नी है। तुर्वेदता प्रमान के पान के प्राप्त के प्रमान के पान के प्राप्त के प्राप्त के प्रमान के प्राप्त के प्रमान के प्राप्त के प्रमान के प्रमान के प्राप्त के प्रमान के प्रमान

भाष इस बरना

विकी कुमकी सतका स्थानम कराता । प्रक्रीय—बीतसीर की बाद विकासन मुखे बाद्य की क्षत्र म कीबिए (सीरक्रक साम्ब्रह्म, प्रदर्भ

धाय हमा श्रीजाना

- (१) मृत्ये बाल वा एक फिर ने तीय होता । स्पोगेल्ल हो इस ै मेरे सरवालिश जीवन के बाव फिर ने हमे हुए है (पातील- ग्रें १७३), नुन्ने हम बच्च हरे होते हैं । पुरानी बोर्ट साथा होकर दुवानों हें घटमान के मन-पदमान सरा 63), बम्बो के आने में जूदन कर बाब को मृत्य जामा पा फिर हम हो बना है जिसाल-कोशिक, १९९,
- (२) किती दुल या गीत के बारत को हरे चोवा ही दिन गाना (

(बनार मृहार-स्थाच नहता होना)

बास कारना, --बंगरना

पुण्यः वार्षे काम करना । जरोम-नुमनी देश कता की कारती वारी कारियों वारा स्वाताल-सुर, अभ्यातः यह भी व्यापक र भी काम के स्वापक सामक । सामक

4241

(सवा० वृहा०-साम बादना)

प्राम् खानां

पूर्व होता । प्रशेष—विशोद विहासी ने बहा—आप सी पान मा राज रे मार (४ प्रेस्वट अ

पास झंजना

रे॰ वाम काटना

धास होना

विक्वी बंधना

- (१) चीतं रीठे विकासी माने मननाः । अपशा—उनः नीमाः को किन्दी संघ नई (म्४०—४०६मा,३९९), दुउँकी किन्दा। बंध गई ।वैशासीय (१,— कतुरः, ९)
- (२) अस के बाधना न बील पत्ना । प्रयोग----विनानी के शासने बोजने तो चित्रयी कंपनी है (विज्ञाल--जीवार २०६

चिमा होना

सामुक्षकी र अभीत-नामुके दिन असे देशने ही में समाध्य गया का कि नाम विकादका विकास है अस्तिक-विक कोशी कर

विद्यो विद्यार

बुलती, बनेब बार क्योगये नर्स हुई । घणेम—करवला की दर्जावनी विकाद कवाओं के बचाओं (द्रेधवाठ— देश संघ, १५

(शहा: मृहा:--फिर्म: पिटेर)

थी का बड़ा लुडकरों या लुडकाना

बहुत मुक्तान होना या करना। प्रमाय—मैने हो सबसा वाक्टर महत्व बीर बीसो बावमी है येरे न राजेने हेंना क्या भी का पढ़ा लुक्का भागा है (कर्म=प्रेमचंद, फा; फूट है चनमें हमारे पढ़ रही हैं नुदेश्ते ना रहे की केसड़े (कुमतेत —संस्थित रहते, यहां में देंदु को कभी कड़ी निवाह से भी मही देवाने, यह की का कहा नुसहा है (स्मेठ है, — प्रसद्ध १९२

यो को सक्ता होता

(१) नरत मर भाव करता । उपाय अपनी किराना मुक्ती है केटबो के दिन, बाबिय करी हो से बो है है केटबे भारती प्रोध की विनद्धक हैनकी 252

🕶) पाला हाना (

धा के चिराम कराता, जाग कराना

धारनका सनाना प्रशेषस्य स्टब्स हाना प्रान्का हान्। प्रयोग गर्न की संसदेत देवर चारत दावस्य पी के पूर स । प्रति भी भूत दिन आपि की पी ति हमार सनार पाई वा भी रिकासनको को का भी के उद्योग है है × × बह की बुक्त करते हैं भीर घर बाऊं तो भी के विशास कमाएं (शेदान—प्रेमचंद, १३-१६), में जानसा हूं, बाजू में मांब-बड़ा का पर खंड दिया तो सामन मेरपी के पर को के दीचें जाती अस्त०—दै० संठ, १२०),क्या उपयंथा आपका जाना मुने किस निम घा के दिने तो बालना बोठठ—हरियोध, १९)

(नवा० भूहा०—श्री के जलाना)

र्धी के दीए जनरता देन की के कियान जनाना

यी कुथ की नहीं बहाना

नहत सम्बन्ध होना । वयोष---बह रहा है सोह हुन का नव नहां भी बहा थी। हुंच की बहती नहीं , बुमहै०---हर्मक्रीय, दव

घुटना गना

पुरमा

- (१) यम पीनी शानो । प्रयोग-श्रीत गाम को चकाचक कृत्वी (भारतीय--राठ शठ, ३५
- (+) बेमपूर्वक बात होती । प्रयोग—असको आहा थी कि विदे ही केंचू का ध्यान इस घोर क्या कि उसने प्रीतन कुमाया भीर चूल पुरुषी वो कमायारों के बीच में (मृग्ठ —बृंठ कर्मा, ४२७)
- (३) पंग होगा ।

पुरमा रेक देना

अधीनका स्वीकार करती । प्रयोग—वह तक हैरे पास वह रियानका है, तूम पदा क्या कर तकते ही । तुम्हारे अभिने तो पृत्ता न टेंक्'ना (सामक (१)—प्रेमकंट, ४२९ वे मामल का जयन नकाय को अनता के विकट रस्याप्र वीवित रहता पाइन दे, व भी प्रयोगों के मामन पृश्त तक तथा प सारतीक सकरात है न पूरत हकत दोसक हिस्सीध रहते तहा दम पर भी है न पूरत हकत दोसक हिस्सीध रहते

पुरने ताइना

महिन काना । प्रयोग—बहा तहता है नही धरन जा घटनो य नगकर वैठा दीलट हरिस्सीध २३२

भुटने से लगकर विठाना वा बैंडना

सामने से दूर न करना का होना जातन्य जात से वजना या रहना । प्रयोग जाते नाटडा है ।या पृथ्य वा प्रश्ता न स्वाकर केंद्रा (बोलक—हिस्सीय,२३४ , क्या नहीं सम्बद्धन है पह पर में था जिस लगावर प्रश्ता में बच्चना क्षेत्रक हिस्सीय, ३३२

सुदनो सळना

- (१) प्रारम्भिक बदम्या म होका । प्रधान ५० सक हम लोग पुरतो मुहती धव तमे पुरती व नकता पाहिल । (बोलंक—हर्षकोध, २३२) (--
- (२) बच्चो का चारों हाथ पेट से चलना। वर्णन—दे∻ सर्वेश (१) में (÷)

(तमा । मुक्षा - चुरजों के धल करना)

घुटनों में सिर देशा

अध्यक्त तथाम होकर बैठना । प्रयोग—भीट बीट कर नेना प्राप्ति को पृत्ता में सिर दना होता (क्षेत्रिक— हरिप्रोध २,६२); बिल्ला तारा किन बृहमों में सिर विवे विकास प्रियत पार्ट मनन की दूराई दनी रही । सानक विशेषात. १०६)

(तथा व मुहार-पुडतों में मिर देशर बंडता)

घुटे चुटावे होता वा घूदे हुए दोना

पनका बानाक होता। प्रधान— वार पंचार, तुम भी वर्ष पूर हुए सारपी हा भूति अगत, २६४ वह भी पूरी हुई है, कैंशा दी वह (सिस्स्टी—प्रसाद, ५६); यनर गराव भी एक ही चूटा हुना भारपी का (वस्त— प्रमान-द, १४)

यूरदी में बड़ना, घड़ी में बड़ना

भन्म म स्वभाव में होना । प्रयोग नोर पट्टी म विभी की जो पड़ी बहु बँडाने से कभी बँडनी नहीं (कोसी)— सरिओध प्रशः) दवन भीर दवाने को विद्यान हमारों भूरती म पटता है ददा— प्रशानात, एवं, प्रभावत वा दन कोगों की पूट्टी में पढ़ा हमा है (विश्व (१) - प्रमान के.

(सगः म्हा॰ --- (घृंडो में पीकर जाना)

गुड्कियां जमाना

युक्तान्य सम्पत्तः -शाम्य-वास्य तो कही नही सम्पत्तः प्रक्रियो जनाया काते हैं (यसन-प्रेमकट, ७०,

वृत्र समजा

- (१) विता आदि के कारण गरीर का कुल होता। प्रयोग—संदित को बील पूर्व कुर्व गीम, यस ही में जने साथ भारी, बुर्व नहि अूर्व लोक है (प्रतः) कदिल— धनांव, १९३)
- (२) जन्दर कन्दर किसी करतु का शीला होता । प्रयोग— बंस में एन जना दिया उसने भी नई पीच की कमर नीजी । जाति को वे तबाह कर देती एक बंबोड काल की बंग्डी (जुधति0—हर्पओंध, १४८)
- (3) पून का बनाव वा नकरी शाम: (

पूर्वा शाम

विस्तार, बोजनी बात । प्रयोग—सार करें भी प्यार मही करते को न कमनी उन्हें कृती कार्ने (भूमते०—हरभीध, ४५)

चूल कृत कर बातें करता

कृष विज-कृष कर कार्ते करना । प्रयोग-साम की निया, की नामरिक कड़े दोस्त हैं, जापल में यून यून कर कर कर रहे हैं (अस्त-सार्विक, इर)

धुन जाना

प्रत्यतः दर्शम ही भागा । अयोगः शुध परि यून प्रया वस्त सारा (कृमरी०—हरिक्रीध,ह०)

पुलते बाना

दुवन बीर जीता होते नागर । प्रयोग-व्यक्ति के यह रेश इन देशकर समुधा थम ही यम कुरनी बीर भूगनी जानी की (मानठ-वि: प्रेमकन्द्र, १६६

বুলৰা

बुध काना । प्रयोग---धेन ६व दूर्णिया में भाराम न वेसा नकतीक मोर वर्ड घेरी किम्मत में का कुलमा, दुकड़े हो नाना भरे ममोच में का (प्रदेशपराग प्रदेशक प्रार्था, ३८३

मूल पेठ होना



बहोपूछ संद होने के बालो पड़नी वी: स्पृष्टेसे प्रवा≎ स्थे~ मुलेसे, १५६

चू भढ का इतः

(मण्डमण्ड-धृष्**द करना इ**ल्डस निकासना —झरना)

धृ'ड पीना

यात प्राचीन शहर हो अल किए शता । प्राधेन —में यात्रों पूर्व दीवर यक्ष हुया चा (१३४१० —जेकेट ५२)

ष्ट्री में पहला है। घृटी ने पण्या

श्रमे का क्यान मूले से देना

क्रीत है तैया व्यवसार करना । प्रतीय परि देवत ने बन भूगोन किया नी विश्वमाने भी पूर्व का जनाव पूरी ने ऐसे व्यक्त-माठ नीठ, १४१

ध्ये के दिन फिरना

बुरे या शुक्त स्थवित या कर्नू की शावन में भी परिवर्तत सामा । प्रयोग—सुनने हैं पूर्व के भी कभी न कभी दिन कितने हैं (मूगठ—दूं) दमी, ६०%), बुडे में भी आम पहुंचा अपना अनुवर विरत-निरते दिन बारज ननी में पूरे के भी सूत्रे गर्ने हैं (करन सिकेन—मुस्त, ३११

धरें को पलढ कर होगा जोजना

बुत्ती और नदी भीत्र में कार बस्तु हुई निकासनी। प्रयोग---यो इंसान पीए मुद्दें की तक बादता पुरानी है कि १ १६ - र प्रस्तरहरू हो। या शास्त्र अपने के देवे १९७ राज १५

वर धार कर

किसी प्रकार और बाज राज करा। प्रकार अर्थकः वृक्षण करणस्य कर देवस्थः करा हो क्रिकः जाः क्षांत्रक प्रकार

भूक्षा लागा

स्य बन्दोला युक्त निस्तद्दर सा प्रयासकार होत

स्यानं होते वे ही इन्ह करने बाकी सब मीग घामा बन रहने (सहा नि०-बासा महा३०); परान्तु परवा के पहे किसे बीकर पुराने बहान्याओं को बेना पोधा सगमत के राजा को उनम बनकर सामा (सनु(१०-निशास), ७०)

पोडा उड़ाना

धोड़ को ने ब धौडाका । असेम--- कह कांग्रेसाका कीबीकी की भाग--- "जिस जिस की दिया चाह हो हुइसका हुआ कांग्रेस कमाना कोबेंगी देश के चना किशाल--- अस्ति, केर

(समाव वृहार—मोद्रा धटाना)

धारा केरता

मृत केत से भोता श्रीशता : प्रयोद—जत हिस्ती के प्रीक्ष सहकर होत हात कर बोदा कंता (इंसा०—ईग्राफ, प्रा . श्रीत कंत्र ही समय कर प्रथम एक निरम के भीते उत्पास सम्बंध प्रोदा कंत्र क्यार प्राप्त प्राप्त (म)—प्रेसबट, प्रष्ट . रोगों ने प्रचले अपने अपने क्या एक विश्वासंग्रह — प्रमुख्य,

योज्य वेश्वयत्र स्रोता

(बिटरम्म गोना । प्रयोग---धीर मीरे तो पीटा वेगकर यही में सब काफर (मानव (१)--प्रेमणद, १५६), विटने ही में तैन पार कवकर मी बन्धा (सहस्याव---क्रजोड़ी, १४२.

बाँडे का यान से मृत जाना

स्वतः या वर्षाताहीत हो भागा । वर्षात—संवा हुआ भागा वात संस्था पत कीत रोक सकता है (गरन --कंपर्यंट, क

शोड़े का रोग बंदर के मिर पहना

किसी का क्षेत्र किसी दूसरे पर पश्चा । प्रधान—सन् गाँड कार होड़ निर्मत कार्ड । पुरे रोग । हरि साच जार्ड (क्षर)—साधसी, स्था

विष्टकर पा जाता.

प्रदार के करना जन्म प्रसिन्ती । प्रयान — ॥१ नम् १ व सन्तिना को भी महिला के सात महिला को नमें १९ कोन्ना--प्रयोद ५३ भने भारमा का साम नहिल् भारपात का से यह स्थान महिलाई १९६०

च

र्थंय पर बढ़ाना

कोग पैदा करता । प्रथान-मैंने क्यों को चंद पर चनावा (मानव (२)--धमबद, १२१)

(समा॰ पुहा०-संग एर साना)

चंगुल में फंसना

कार्यु या पकड़ में घाना । यांगेग तक दिन सभी हसारे भगून में कार्यों संधाल घटाल—संधाल दास, यहर अब भाग आदमी को न नामें क्या तूमी कि घषार भेगव और भगदेश भट्ट के बेंगून में भा कार्या है वामल कुल बल चिल, २१०

(समा+ पुहा+-**चंगुन्द में माना;--पह**ना)

यंगुल से वयना

प्रमाय से अवना । प्रमाय—इसमें अ अवन्य पानस्य ओर घोषाबाज मोगों के चपुन से इस यन जन्म मेरें० गुलाइ०, ४७)

(बमार मुहार-चंतुम से निकलगर)

शंडु-माने की गण्य

स्थय की बार्ज एकी भूती बार्ज जिस पर विश्वास न किया भा सके। प्रयोग—जनवारी दृतिया की बेंट, कनती महाकी, बंद्रवाने की गए सभी पत्ता है प्रयोश के पर्त —पद्म अभी, १८३)

र्यद्द सङ्ग्रामा

पिसा तुआ कदन समाता । प्रयोग-वंदन नदाइ नाड 51 पंडर गरीर तक राजां सुध्य मोधा सुनि काल स्लाई गी क्लाव-केशव, १९०

चंदर दूरना

बकताबूर करता वा होता

नष्ट करना या होना। प्रयोग—नोट का बह हाट क्याप्त्र हो। बाट ने जिसकी कि बोटी बाट गई कुमतेश-वृक्तियोध, ११०)

चक्रमा हैना

योषा देना, बहकाना । प्रयोग—मै बकमा नही है रहा हूं, बन्काह (पोदान—प्रेमचंद, १००), पुरुष केकर दरकार का बकसा दिया भवा (बोटी०—निराजा, १९)

चकाचक पुरना

कोत्र वे भाग पुरती और पीकी जाती। अयोग---योज आब को पकायक पुरती (मारती०--रांठ राठ, १५)

कराबू का जान होता

वरित, पंता नेते वाली क्यित होती । प्रयोग—काला वर्जारकोर की वर्ले क्या है पकाबू का जात है (परीदा०— क्री० दास. प्र

नक्ष आना

क्षिर बक्ताना का कृत जाना । अभोग-अभर वैसरे मेर

O P -- 185



रोपें कुट तमें हैं जैसे सिर में चननर जा न्हा है सिट्दर⊶लाण मिश्र ३५

नक्तर काटना

परिकास करना, सक्ष्याना जूपना । प्रयास-न्यक्ष म वही कामजों का पुलिन्दा दक्षाए हुए एक्ष्मा चाटिन दिन शह पृष्टिया कमहरी में चनकर काटना किरना मा (मैलां)—पेषु, प

शक्तर से हासना

परेगानी या दुनिया में हरसता। प्रचान—होट बण्न कारी कभी भगवर में बाल देने बाले मकल कर बेनते हैं क्रिकोड़--हा 20 दिया १९१/- तुम की मूले भगवर में बाले देती हो बहुन गमन—होमबंद 203/

सक्का में पड़तः,—होना

- (१) फेर ये परना १ प्रयोग-न्यस्य मी आवस्य छन्। के बक्तर म है (दूधताछ--ये० ५०, १९४
- (२) प्रोसट या काल में पहला । प्रयोग—हमा पटना कर इसर अब पूर्व गणाहरणकी को नमा तो उन्होंने नवकीतकी की धमकाया कि सावण्डार, इस चनकर में धभी से नम पर्शा एक्ट्रम प्रशास-प्राप्तक जानों, 138

(गारत गृह(४—चक्द में भाना,—फेलना)

बर्धाका देश बरागा

बार्श में श्रेसंकर इस्तार्त्तार काम करवाना । प्रयोग— तुमने मुद्रे कभी समय पर को पर म सबसने विका सुध मान नकार रा पन का ना समय का कन प्रस्ति । १५६

वाहर के भी पहले में दिसना

दार बार में पर वय भाग का का कार है भा उस में महोब बोम ही पीते कायते (बैठाठ वेंबू. १६४); ऐस मीके पर नर्मन की बक्की के पाटी के बीच में का पर्य (गुठ सहा :- एकेटो ४७

चक्का विकास

च । जाता वा स्थाप मान्यस्था अन्तर अस्त । व्यक्तिया वा सामा प्रमानस्था स्थाप स्थापना वा त्रका च रिमानुष्य स्थापना का जिल्हा कर्मा विस्तर क्षेत्र स्थापना स्थापना स्थापना

वक्षें पीमता

- (१) बहा परिचय करना । प्रचीम—न्यंतरे मोजन करी। धीर नक्यों कीनी -जी नृष्हारे भाष्य में विश्वा है। (गोदान —प्रेमक्ट, १८१

यक्का में जुतना

बन्धन परिश्वास करना, नाम ये नपना । प्रयोग—ना के साने हैं। पक्की में जुलना पहा गीदान -प्रेमधंद, है,

खक्को मैं पिसमा

- (१) शर्श दिन काम म सने रहना । प्रयोग-वस बनवला पहानगरे के ममानाद पण हुछ दिन गोड़ और परने के कि बाय नह नाट प्रमुख यांत्र पर नहा बदले एक परोग बाके बादमी से बाने कर रहे ने, परनो जन्द बादिन में बाकर काम की अनहीं में पिमले हुए कामी की दक्ष देख रहे में पुठ निठ-वांव मुठ हुठ, १८८)
- (२) दानो जोन के दबाब में हैराम होना ।

सब बब बदशा या होता

नेमवान होतर का भलाइ होतर । प्रयोग—वद्यपि नये सुट के वंशोडों नेकर करने काली का कम हुई वो और अअल्ल काल—वाक्क, १२२): काली में वेग्याएं अहे कहन मामती यो, एक माम के उसकी काम बात की काम करती की (दें के उस— अन्य के उसकी काम बात की काम करती की (दें के उस— अन्य के उसकी काम की काम काम काम नम के उसके पाद की किलोकान की कामकाओं में काम नम को जानों की क्लिक र स्वाधान प्रश्नित विश्व नीत बार मान करने काम काम काम हुई आनंति विश्वित्ता,

चंद्र कर जाता

- । जनगणकर दक्षा प्रचार अस्त्र तम हेच्छ उसी राजणबर हाका सम्बद्धानाक, जनक सुमतेल ही होच १६४
- , । रामा जना ।



-02

(व) का भागा।

घरक जाना

चरना यनाता

- मीर करनी प्राप्त में इसकी बटनी बना हु हैं। वीनेक—राठ राठ, द०१
- (२) बहुत महीत पोस शासना ।
- (३) बहुत मारमर १

(समार मुहार-खडर्मा करना,-कर इस्छना)

चरएका पष्टना

वर्षनी होती : वयंत्रम—नव नै नन बन वरी बटपटी और न बुहन दर्व में (मृष् सार्व्यक्षिण १)—स्त. १९), बनी बट-पर्या कवश किए में सव्यक्ष प्रवाहित साक्ष्य राज्य प्रश्चात राधार दास, २३

चराता

मून देना—काम निकासने के जिए कृप्त अप के हुछ दना। प्रयोग—रही असूचों को तो गेटको बटाने ही के मगर उसका घना कमान काने एक निकट सम्बद्धी ही। पश्मी से का (ये कोडो०—काठ नाठ, ५३)

षटोरी जवात होता

पटपटा बाने का बालकी होता । प्रयोग—बाय पिटापया आप युद्ध पटमा कांच पुर्तिस्य निगळको अप ८ - रागन बटोरी हो आयसी (मान० (१)—प्रेमबंद, ३१

षद्दी गठना

काम बन जाना । अयोग--हुनूर का काम हो वया, अय चनकी मह नर्ष ,चोदी०- निराता, १५)

चढ आना

(१) बहाई करता, इसला बीन देना । धर्मोन-वातमाहि कर श्रेम न बीलू । वहीं ती पेर समय वह बोल्, पद0-- आयसी. श्रेम), बेमि न मिली बानको से के रावचन्द्र की बार्या स्टूत सार सुर ५६२ दलई उत्तर मा रिप्यु पहि माना सामा को पुलसी ५५५ बद्ध कर बाबू भरूष नहीं कि गलीम भी दलहें किया है। केस्स्टूबर र --केश द रूप दल कम साम भागा का राज ने बना पूर्व भागा कि ति त्रारु, १०१: तक दोशाशार्व में कीश्वरें पांत्रकों की जहां से काकर तककी कृष्ये अवशा की वी (परीक्षां)—ग्री० देखा, ९२७, है बानर ! ४ अ बानन करते वासर शास्त्रा, बाहरता वर्ष बनकर में का कर बर लागा है पृतिशे देखें १ — गूलेरी, २६६ - हमार कर महर्षार नारम ता आवनवर्ष पर बढ़ प्राप्ता है (भोरत—ग्राप्त शाक्ष्र, १४६०), बच रह पं भारतित की उनगर भी बेना केकर बढ़ दीवें (विश्व--प्रेमी, २२.

(२) करावा करता । प्रयोग—सोडम्ब के कई अबके मेरे सबको को बाद रह वे। वेने आका उम नवो की गोल-वार्ती कर दी। बन, इतनी शास गी बाल पर जोग गव आवे (१०० (१)) प्रेसवेट, ३०८

नद बर

पृथ्या में बध्द या अधिक । प्रधीय-धरम क्षण क्षण भीव पेत्र पत्थ क्य वकुष अस्ति सहचेद हैं हूं दिन्हें भूगत प्रसार-सुराव, १४३

(यमा व मेहर - बद्ध बद्धकर)

धर् बनना

- (१) तुर्वोत सिमना । प्रयोगः नायकसम्प की वह करी ।
 इसामी कामे वह काठ (२)--प्रेमवंद, ३१०
- (२) एक लक्ष्य सीना । प्रयास-अब हो प्रविद्य भी की सब बढ़ क्यी (प्रतिकात-प्रतिद्यात, ३६)
- (३) पाना भग्ना ।
- (e) बहुत दे बोना का दल नाम कर किसी काम के मिरा आना ।

क्य बेठना

- (१) काक्सरम करना । प्रयोज—बहायनाह यह बेटने सा कही क्षेत्रा है। मुगठ--व'० क्यां,४३५
 - <) बहुत कोद बनता ।

सहका यीषक, बदनी जवानी

हकारका। को बारका। प्रधान —जब न्दोग व यह उदाः है तो चडते जोगन में न जाने परा चड़ी होती (सिठ ४० (१) -अस्टलेन्द्र २४), तन देगकी चडती जगानी भी नित्तक (१) -पोलबर्ट, १०१६ जिनकी चानी हुई जगानी सोज नहीं घटमी कुरवानी (चड़क-टिनकर, पुष्प)

सहसी जायु

प्रवासम्बद्धाः । उन्होमः —बदली बामु म ही जिमका रस स्थित



हो बाब उस पुरुष की स्तम कीय कहना (सुर्गार किं गांव, फ); कहती सामू की सर्गाक्या चरूर असवार क कमील पहले वी (ब्रुटाट (१)---टलपल, ६१

बदनी जवानी ६० सहना यीवन

मता कपरी करता

(शयाः वृहाः--वदा अपरी सगाना)

बदा हाना

- (१) या बाना वी जाना । अयोग--कृदी तैयार हुई, कथ भोना करके सम्योगीने एक नौटा अर कहाई गुअनिक--बाक मूठ गु०,३३३); बीट इन अधना ने करना नाने के निए मू भी स्विकतान ने पूजरे जूट में ही निकरिया जानी संस्था बहा भी (मूनेक-अगठ दर्भा, १५७०), बाध का सन्तर सक्त साम में बढ़ा क्या (क्टक--दैक सक्त, २०१०)
- (२) प्रशास पीनी । प्रयोग—रिक्सी विश करी से स्थिक बहुत साला ती कर दिन मुफरन सबा देल (धारती०— दिक प्रक.१४६)

खड़ा देगा

विनवान बहता, उसार्ग नवता । त्रयोत—वेद की इतका वचान के नित्र को नदर । रतने दिए नवन है कुछ०-दिनका ३

साहा शाला

[बाकी दर आवकाण करने के थिए कार्योदन इरका । चुदाय—बोह बार्स नहीं कहती कि यू टेरे रेस स्कृतक नार्ष है क्या है - चुदर्जेट ३५॥

श्रद्धाचा सहसा या चढाना

्) विश्वाह में द्रम् की गहन करण हैना। प्रयोग हरू क कुछ किला चीत्र स्थानाय व गाय देनकाना का ज्यार चीह हा तथा। नदाना भी पन नदा लडेंट क्रिक्टिंग क्र्

बन्रर्स कोलना,─नोलना

पालाको करना । त्रधोन—बहुनायकी सामु में नामी, हरा बहुर नरनन रा सूच साठ सुद इर्डा , अहं गोरे नृत प्रयट तुरन्तम्, कहा चतुर्द सोशत ही (सूठ साठ--सुद, इर्डा

वन्धं भारता

बतुराई तुर कर देवा । वयोग---ऐसे वयन कडीवी दन वी बनुराई दक्की में घररति (सु० सा०-- सूर , २३८६,

बनुस्र् तोक्त्या रे॰ बनुर्ख् स्रोतमा

कपत कराना

किन्सल काना। प्रयोग—भी कभी हमसे नहीं जिन्ही कर्म प्रकृति देश क्षणताहै काल दुमती⊙ हरिफ्रीय,

बपन भारतः

बाट) बारका । वशोन—वेकडो नाइ काइ सब दिन कर है कात काइका हुवें सान्त्र (बोस०—हर्सकोध, १६५ । १२४ - अर्थक अपन समाना अरुना)

चपने पंडनी

- (२) कृष्णमान होता । अयोध—व्यवस्था ही धना चोड़ी चित्रत या थि कित हो एक जन्मक चयत गड़ती हहतो है (१९० (१)—वेमबंद, २०२;

(वनाः मृहाः — वदम समाना)

वपरसङ्ख् बनावा

नरपुष कराना अवश्य — मैंने बढ़ कई काइएं और प्रट हुए जोकरों और पुलिस अक्तनरों को चनश्महरू बनाया है तम्बन--वेबक्ट, ३०६)

(गंगान पारक न्यापस्याह् संग्वार)

बबाद्यवा का बात करना

त्य तथ प्रकार परिते पीर शेलामा महार महार कर अस्त करतो प्रचान किर रखनी त्रुम मनि तम पार्ट किसी नदी म केने जबते बड़ा कर बात करता हो द्वासा दैठ संग् केन्द्री बच्च प्रस्त स्वकार, बना करा — पुतास



क्षात और माना नवा तथा कर ग्रांकिश देन नगर। इन्हें ० (१)—महापास, १३७)

बवार कीर स्वामा

किए हुए काम की बार कार करना, फिन्ट वेकार करना । प्रभाग - प्रनार पटा भाषा कर्मनाथ के जिल्ला के पटा अप नहीं, बोधना पटा भी कोई तोग में फिनेना के जिल क्षण का नाम नहीं मौतिकगर का नियान नहीं, क्षण क्षण हुए कीर बनाने हैं विचारोत्कर्ष का पता नहीं होता (रीप) (२ --प्रेमघद, १७०)

लयम्बर्ग

(१) क्यांती तरह विमाद करके तमकता (तर्थ का विकार करतः) । प्रयोग—यह दाज के लिए काफी है । इके (तर्थ) वशानु किर वाले नहीं (त्रेकर , २)— कंको से, वंध

(३) कृष्टित करमा । ध्याम-क्यायकृषाणी का माध्ये के प्रति अकारण प्रधानन और दरहदेव पर मन्देह उनके वर्त-व्यक्तान की बढ़ा रहा था शितकों - प्रसाद, १२६०

ग्रामेना करना

प्रजन्तरों आदि का समा-सर्वमा से महस्ता करना । प्रयोग —अब तो इत्था मही काला । योगा भी कृत क्या होता. बर्वमा कर कें (मानक (क्-भोमचंद २५९)

ब्द्रांक उड़ना

- (१) मूच उपनि होती । प्रयोग—नव तो समझम चनक प्रदेशा (एडा० वि) - इक्काल व्यक्ती त्रास्त्री पावटरी तेत्री कार्यत्री कि तुप्तारे वस्य का वैशा विट कामगा किल्ली---प्रसाद १४९।
- (५) सारवर्षे होता । प्रयोग-वाची चनक उठी (कंकाल -प्रसार, १४७)

श्चिक्ता

- (२) यस कैनमा । अभीत-पार्गविद्यक के कैदान के उनते मो कोटी के बीटरी की कोटी वर वा बकड़ पहम करण -यहमत समी क्षा
- (/) नितः इ. जानर । प्रदान मान्यस्ति सापन करता उप सन्द सामान अपना था। श्रीता कालस्य पारक्य स्थान सामान्य कृति रामान सामानिक सामान्य (प्रदर्शन व पार्थ सामान्या) जाने कर कालेका है (गुलेशी संबंध १) च्यासीति, येतेक

(३) येव शब होता (

(४) तम चयकवा—स्थानांकरित होता ।

श्वमणादह कुल्ला

युना बीर काली । अहोश—बहें मानिकों के बनाराँसे सी नक्ताएक अलेने मिनेट—हेनू, ३३१

नरका भागा

भाषा होता । प्रयोगः - पंता भरता प्रस्ते सभी म स्थापः या (मानत (१)--पंतपाट, २०६)

वरका देश

वंत्रमुख बनामा विक्षी को बूमरी बानों में बस्थाकर बरकाना चौचा रेगर । प्रयोग:---इनने में बादी ने संदी बी रवा अवीर हो इन्हार समग्र कथा, जमादाद में बरका दिया मेनन---प्रेमनंद १३३

गर्य मेग **वरकर लेगाना एडालां, बनाना**

वरण जपना,- यामना

- (१) बार्यन कारर काला । स्वीत-शास साधूनका करियको का त्रम विवय का सम्मानगणना (सर्म०— होकोध, १२)
- (२) नहर उपनश्न होना । प्रशेष-धनी सम्परा को उनी सामग्र धनन के कराह कुंग्रेसी (वैशामी) १)—बनुरव, ३५२)

न्द्ररण छत्रः अन्याना, रज्ञानिक पर बद्धाना, न्द्राना,—हेना,—बदन करना

जनक-जोहररी करता

हेर बुधन प्रसाद करना । प्रमोध --संध जुनन नमन इस्लाइनि, क्षेत्री वान-नहारी (सुरु वी०--सुर, १६१)

52

O P 185



नरण धो-घोकर पीता

धारवन्त बारर करना । प्रशेष—में मी करनी हूं, उपेडा भी दूर रही —पाप उस भारी के चरल की संकर कीय व (मीटान—प्रेमकर, १७२)

खरण परसना रे॰ करण क्मना

बरण मनाना

दः सरण द्वरा

चरण रज्ञ स्थिर पर चंद्राला

द० चरण सुनी

ख्याचा रहेगांनी

बरण छुना

चरण हेता

रत नाम छन्।

मारण पंदत करना

९० सम्बद्धाः छुला

बार्को का देग्भ होता का मुख्यमा क्राज्य पण तथा तथा पण ०--२०० रण पण उन क पण की दक्षणी भाष देखा०--भारतेन्द्र, २७०६, पण्च औ करते अनुष्ठ विषय, पने तेने परशों के दाश मृक्षण--पृत कुठ ग्रीठ, १।

बरणों की मुकाबी करता है। बरणों का गुरस होता

परयाँ की धूल होना

(१) पूर्ण सम्पन होता । यसोम-स्थिति वरि शक्त छ। नरग^{ीर} ताकी वै परनन की भूपि (वयोर प्रकार-समेर १८६

(३) अध्यक्त नभ्य आगर ।

काणों के शीर्व प्रांचा विख्याता में प्रांचा विद्याना

वर्षन आदेश करना। वृष्ण प्रत्यत् त्रीना प्रदान ध्यार वर्ष्ट्र वर्षे । सामका ज्ञाना राज्य स्मास सावक कान्य कार्नीन भाग जिल्लाम अं अं वर्षे संज्ञान कह सकती । आग उपका प्रत्या ने क्षत्र गोहान वेगस्ट १७३ उक्क की सम्बोधित कह सकता एक प्र क्षेट्रे नरणो में आंके निवातों है अ अ सब क्या में जापनार मुद्द अ चित्र तक रूप सर ११ जेकालीय १ अनुसर ११७०

(तकः पुराक-वरको पर स्योग्रावर होना)

बरको तक पर्दशा

कोमका है बहुन परकार होता—गुनना क बहुत नीचा स्वाम होता। प्रचार —मैं वो स्तके सम्मो तक ही सहस्रता है कुमांक-निमाण, 18.

नाजों क किर काना

(१) कायन्त पादर करना, अनुनत होना । प्रयोग— मैं नो धर पराहो पर किर रचन को नेवार हूं ,मानक (१) - केमबंद, 300

(२) अन्यन्त विश्वचर रिवकानी ।

करणों में भारत विद्याला रें) काणों के तांचे भाषा विद्याला

बरणों में बदाता

नना में उत्तर्न करता । अधाय-अनुदय चरणों में भो में चड़ा ही जुरी हूं ,वेंदेहीय-हरिधीय, श्रुर,

बरको में यह रहना

संया या बाजाय में पड़े गड़ना (अयोग---मन जी भाग यह को बरनम में नाठ ग्रंथ (३)---भारतेन्द्र, ५३०)

बाधों में मोरता

नम्बन दोना, नपीन होना । प्रयोग-समस्त भारता हम्मो के परभो में मोट रहा है (स्कन्द०-प्रसाद, १४३)

(नगर न्गर-काभ्ये का लोडमा)

चरते जामा

वस्य व कियाना-नामधाना । अधीत-मृत्य म चाम्य है विकारी क्या करें। आर्थि की है आर्थ ही वसने गर्द कुम्तेक-इस्क्रीय ४७

देशको उठारना

परमध्य बारमा प्रदेशि राष्ट्रगा परका विनास वधा नहीं का गई है सम्बाध चन्द्रों जन्म केलिक मुस्सीके पूर्व

भरमा उदा देशा

तान इध्यन्त्री द्याति इपनी प्रधान नम्हाकः क्ष्री मा करत ने एक काटी प्रथम कृत्य क्षात् ४४ विस्ताकः क्षेत्रिक कृत्य



उनकृत बनाता । अमीन—नाहि सह कैने हाशांतिक, सकत तृद भराइ हे (सुकसाठ-स्वर १६ , मै असकी सभी पक्षक ही यह कृत्रको कभी कराते है (मुरक-भक्त, प्रदेश में कार्तो का बमाना सक्ष्य दस मान्य से स्था करा है । तु मुझे कराती है ? (सिस्ती -निराल), १४

धर्मा चलना या चलाभा

यथी होती दा करती । प्रयोग—आ दिन हे चरित्र की यजी यथाई तुम, ता दिन वे चरके तन खाई विमर्गा है (मलिक सकक—मतिसम, १२३)

(समा= मृहा=—कको बहुमी,—होनी)

वर्षी बहुता

गर्भ होना । प्रयोग-नक्त दिन म तुम्हारी नवी का नदे (ब्रोहो०—निधका, रह.

वार्ती वृत्राला

जननी आह कहती। प्रधान—सुनुष्टे की जानगान सुनकर हमारे बनारन के प्रधा नोनों से क्या रहा अन्ता है, यह भी अपनी करीं कृतने नने (माठ एंट (३) — सारतेन्द्र, चंदप

सुन्ध करमाय समाना

पत्यु के निकट होना । अधोग—सामध्या को समय है. उनके देवने पाणीय के उत्तर पहुंच वाने पर आश्यो का नन-पतान नम बातर है (मा—कोश्यक १०)

चल देशा

गर शाना । प्रधीत-सुन भोगमा किया होता, हो प्रमान केटे जन देने ? (११४न-चेममार, १४५

धान निकलमा

- (१) वृद्धि पर होना । प्रयोग—पुना है जिला अगार का कार्य अच्छा चन निक्रमा है (स्कु०—देव्सव-१०२)
- (२) यांच बदनी ।
- (३) प्रमिद्धि प्रतन करनी ।

श्राह्म चरत्राहे

मृष्यु होनी । प्रयोग-स्थम्य ताः १२ वनवरी को

वध्या के बात बावे करेमती अ अ इस समस्य की ममता कीड़ क्या करी (सारोध प्रशास-नाधान दास, १०३): जाति रिशास कर बार हे नारन बाद मी हुई इस्तार व करों पुस्तीय-विद्याल, १४१, जैस बिट्टी के बर्गन कुछ सुमाने, हुई भवाने और कुछ दक्षने क्याने में दूरते वहते थे, नमी प्रवाद क्यां की हुई अपना मेंने की कुछ प्रदेशों के बाग कराने हुए और हुई देई-येई देंगे। यह सम्मानकर बागा-निता के बाव में सहाधमा देते हुए क्या कराने में की में कि अनके विभा करा करें (दुस्माक-देवसार,१०१)

बसता भावमा,-पुरक्ता,-हुआ

वहुण इंग्रियार और वालाय । वर्षाय—वगर नृम नीगी की शृरस्ता करूकते में उस वर्ष की अलाने के ही सम्मन्त क्रियान सम्मन्त सम्मन्त की मान्य क्रियान क

बननी काम

तेवा काम जो बहुन ध्यान या कृत्यनता ये न किया गया हो । प्रयोग-जान वर्षिक परिचन न कीशिये । चलना काम कर दोजिये (पद्रम्थ के प्रश्न-पद्मण असी, १६४,

बद्धता पुरका रेश्वनस्य भारमी

चळता धरेता

बके जातर । प्रयोग---करान की रजधानी के लिये को लोकर बा, वह भी नजना कना पद्मप्रसम्-पद्मठ इस्सी पत

(अस्तर प्राः - बस्तर होता)



बसता शब्द

पास बोत-बास के प्रस्त । इंगोन-हॅमी-बनाक के निर्मे कुछ घरवी-कारनी के अतते शक्त कमी-कभी किनना कुछा काम देते हैं यह हमशोग बरावर देवते हैं जिताल (ए)--कुश्त, १८९)

कलना सिका होना

मास्य होना । प्रयोग—मोजिन्दन का मनीन कमना जिस्सा है (युधानि—देव संग, ३००)

बादता हुआ

दे॰ सहस्र भारमं

बाहती साडी का कर रखे होता

बहुत सन्दी में होता विश्वकृत कुमेन न होती। प्रयोग—में विश्वते दशा थे होने विश्वा विशे चलकी कारो क्षर पांच क्षत्र हुए हो (वैतरे –चनक ६४)

बार्क्स अच्छा

नीतवाल की भाषा । प्रयाग—ननः माना बोलवाल की, मृहाकरेशर बजली माना हो भेरेव--गृहालठ, ५८)

बाहती रकम होता.

वाल् होना हीवियाय होना । अयोग-स्वद नो बडो धनती नकम है । दुवशक - देत सत. १९५

चलनी होता

- (१) वृद्धि परं होता । प्रयोग—नहभव समानक की वक्त बचनी को तम की दुरावा जी गोदान—प्रयक्षक ६३
- () प्रभाव राजा ।
- (२) वरो भाग वस्त्र नाटी। बास्ता नाम निकास १५ वार्यः

खलते-फिर्गने

- (1) इर सामारका व्यक्ति । स्रोक्-किर सी भागरमक क्या से को जाने कात पृथ्वी तथा क्यारी पर विभागत तथा अधिक नामकायक आगा क्यार्थि क्रमण नावन पिरक को सहस्त सा देविर कर कालों है सेंसे — गुरुखा ६८
- शिक्षा, पर गाम का क्षार नावन प्राचन मुख्या ना के किया का पालना

कलते-किश्ते नजर भागा

वने काना जिसक वाता । प्रयोग—प्रेन मेरे शिक्षे नगा है और वृद्धे बारवाता है कि नोप ४ ४ पीय उठाओं अपने बहुरे और वक्तरे-चिरते दिवालाई दो भिए हो। (१)— भारतेन्द्र, प्रशाः नहीं ना यह हुवा कि नोरिया नंपना नभास बहुर विजी अने बचन चनते कियों नजर बाए अपने क्या असी १४ १ कहना है, नीपे से बचने नारिय-वस्त्ये नादी और चनने प्रिते निया प्राप्ते रोगा (३)—प्राप्त-द, ३३०)

बारते बेल को जारे काना,—शीमी देगा

- (१) किसी के काम करते माने पर भी उसे साकीय करके संख्याता (प्राचीय—का तो यही हैं, लेखिन असत इस क्षेत्र की जीती न देना चाहित (मीदान-प्रेमेशन्य, २०६
- (२) बाय करने वाले को शाबीट करना का जलेकित करना । प्रयोग---पृथ प्रकृत्वस कानि पड़वी जलत वेसट्टिकार (शुवसाव-- धूर, १९६)

बलने बेन को धीनी देना ४० करने बेलको अर्थ करना

बलवा

- (१) क्रेन्टिन पर होना । प्रयोग—नह शासकाती और वकावत के अमन्त बांब-पथों से काम में तो इससे कही वर्षक यस निवाध—क्रीडिक, ५४०
- (२) बात बानी जानी। प्रयोध-मूनकर हर है से दुरे प्रस्टि क्षेत्रका प्रस्ता प्रदेश को नहीं बनी है (३ सैन इति ६० स्मार्ट) शत में नृद्धे प्रस्ता प्रित्तक के स्थान है मूस्स दु आर्टी १३० मान्तकारी बन्धे नहीं कहा कहा कि कहा को हा हरून है सोबी सुपति हरिस्तित ३६ तम को जानते ही हो हि स्टार प्रस्ता प्रीर कम मोर की मानती है भूतिक भागत वर्ष ३६०
- (नो, को डोना प्रयोग जिल्हास फोर विरायन है उनकी एक साथ पश्चित (सह निक दोर सह देश रोग सामन साथ प्रश्चित हम



विगति को घर के व आने दूं का समय होनहार के सावत्र उसको एक क चली (मानक (१) -चेमतन्द, ६) , विन्वियों से चली न घृड़ों की विश्वकर्मी में सके न की है एक (मुमतेक- हरिश्रीध ५४)

(४) प्रयोग में निया कारता। प्रयोग—मक्तिण में तक निक्का 'हुन' जामक का को कारी-अभी सक बनाया गुरू गुरुरी प्रस्त १) — गुरुरी, २१८.

(५) गुजर होना---र्जवाह होना ।

यता-सर्वः

भत समय । प्रयोग--वहं साहव की बसावको है, वर्क को समामने के लिए छ।वको बुकाया है (ककाक--प्रसाद, २५०)

(ममा» मुना»— **चलाचर्ला का** बेला)

खळोडी

रिक्सी के बारे में कुछ कहना। जयान—निक्षित एक मध्रा की बाकी, जनकी तठर न बावे। में बच भागी पहें निरंतर, तिनकी कीन बसावें स्वामान—स्व.2018, , लंद बगोरा हूँ की विनय्यों, इमरी कीन बसावें स्वामान—स्र. ५०२६); वह की न बचरि बुगह को बनावें कीन, गाम न मोतात न नंगहार्थ परिचारिका भूषण संशोल—स्पान, वेन्स

सनाये सं कारता

प्रभाव स प्रानना, विभावत स होता । प्रयोग—सावह वर बहु भारत लोभाए । परम धीय नहि क्लांड बलांड राठ० बाल) -युलसी.१४६/

खलित-वृत्त

दुवंश मन, अवाधवान व्यक्ति । प्रयोग—वहां ननार ने रहकर ओ एक बात में भी निवत दृत्त है वे धपनी वासी याम जनम को भी नहीं सुगरी हुई एव संबत्त (मह निव —बार मह, 38)

चलिसर उछल्या

गसत का समावटी क्यमहार होता । प्रधीय-ज्यारे घर व ही नवा कर पनिसर उद्धलने हें दे देश--अंध नंदर, ६,

बसे जाना

र्मेर सम्बद्धे का बानस्य भी उठा की, मही जो एक दिन मी ही इस्त अनने की जायने (सल्ता (क)—देवचंद्र,३८); उनके बारे मुख-स्थाने वही यह बार और उनके यहां के बसे बाना पता विक0—देवी,२२)

कमका सम्बद्ध

वारम्कार विश्वी कीय की इच्छा होती, स्थाद पदना ।
प्रशंत—शीविनके रस की वसकी प्रव की न नामी तब की
पन पूजन (धनम कविस—शताम,२३३) ; कीर कवीरनाम मान्यकाली थे, उन्हें रामगत का वरका सम पना और के दिन-एस इस पहारम में बुद बने एकं
कवीर—हरू प्रम देश भारती की रामगीका में
नाम की व नाम की परे दोनों को भाइनों की रामगीका में
पार्ट करने का वरका सप बना वा अपनी सकर—छुप २७),
मण्डे नामिन्य के पार्न का वसका समाहम् (पद्मानकिप%—
पद्मान समाहम् १५०)

(समाव म्हा०--- वासका पदमा)

यहत्र कर सामा

बहुत मध्यी तरह बाधा । अयोग---क्यदंशह शेह श्री भई . यादे बहुन क्षण्ट हो जेई (आयसी-- हिन्द श्रान सान,

करल-कत्मी करना

भीरे-धीर टंडलमा । प्रयोग—सिन्टर जोशी में गारे विचार म मास पर पद्मय-बदधी करते हुए पुकारा—सुजला आमध -राज्यसः प्रत

बांद का इकटा

प्रस्थान सुन्दर । प्रयोग—में सबदा नोजा करती थी कि यही बंदी को दूसरा बाद का टुक्का सिमें तो में मुन्ती होऊं (माठप्रेडावार)—मारतेन्द्र,११), मृत्या हूँ बढ़ी अपनती हनी हैं, बाद का टुक्का है अपनदा है (रंगव(२)—प्रेमधन्द्र, २०३/६ सभी बाद का टुक्का को । सहको की क्या कमी है (मा—कोंशक, ३४

वाद लगामा

इकान पा मौन्दर्व बहाता । प्रयोग-स्था नाम, कार्य म की तुम बहे बार कताओंचे (म्हाठाव)--यश्रपासः ३७४

क्षंत्री कटना या कारता

साराय में दिन बोजना आंटा काम होता । प्रयोग-होंगा कामा देवानी संस्थर हमसे कर में यहा करना कि साजनस मान कोतों की बांदी करती होती (वे कोठेंठ—घर नार्थ, 20—8प), शांतिय महानाज को क्या से बाड़ी दवानी क्षाय मती है, जब ठाट है जब करो, करी कारो कारो (गंगाय— क्षांत्र, २५)

बांदी के टकड़े

क्ष्य । प्राप्त में साजना है कि एक नाम गर्भ का जीवतों को इस बमाने में को अन्य कांद्रों के दुकरों के मित किसी भी सर्द के बाब अपनी बस्थन क्षेत्रों को एक सब्दा से बजबूद किया बात्य का, वह बात इन्सामियन के एकदम सिमाफ भी (जहाजक-नाक्ष्योंकी क्षेत्र)

बांची के बटकरों से नीमना

व्यक्ति बनाना या होता

लुक बन आगर लाम ही जाम होना | प्रयोग --- बेट वें हमहारा को गनापूर्ण भी अपने हैं '90 पीठ--- 90 साठ सिठ --- १०%) , तम को जाती है इन मर्थालयाई जूब हाम निमन विमठ ~ प्रेमी, शुरु); एक वा नामगी हो दानी किर का भाषती, शॉल्क वर्ष नवेजी युग्हाणी जाती ही जाते हैं। कर्मक ---देम श्राह, १८६०}, अब नीची शस्कार के बेचने के जाती बननी है जब सर्थत मुख्यों और सिडलामी कोंग जनाम में (संदेठ --- मुलाबठ, दिन

सापत होना

सवा वे क्यम्पन रहतवाना अनुवन्ते, बरासवाती । प्रतिक—भी न विते कर दिन कमा पाकर रहते । कम वित्रकर के मही विस्त कर पने (भीने 3—हरिकोध,१४)

बार जाता

- (२) समाप्त कर देशा। प्रयोग—वीरियो को संबाद कर एका त्रवारर पार भाग त्रवानका कर्ने हरियोक (४) (२)
- () नरर कर दका प्रकार देशना प्रयास (१ म () अ) पात अन्द्री करें। इसरे प्रयोग वाल र। स्वयास

साब्द बाट संग् के सान्त केंबारे पेस्न हो गये (सानं०(१) —प्रेम-बन्द, महारे, साहित्क के जम महानू कोच को बाद बानं पर भी के दीयक की हो भांति कोरे के कोचे थे ,पेसन— बहक, शर्थ /, जू भी दलना बढ़ा हो गया अंगरेजी, कार्नी हिन्दी न माने क्या कार बाटे बैठा है—न्यूफ किताब रखने का बढ़ा सहर है (शिसां०—कीफ्रिक,३९)

(४) वा बाना, नध्ट हर देना ।

कार पहला

सादत पहली करवा पहला। प्रधान—शिकारो का कुमान्त कुनने को बनुधा की बाद सी पह नहीं (मानक (१)— प्रस्कनद २५% , यो बनरम है उन्हें तो चाद पह रही है। सारतीर—साठ गठ पन

बाद स्मना

नारम परनी चनका नमना सादन वासनी । प्रयोग—सह तो जुना मुना है चीर विहारी बाद आपको चाट अगाने के निय प्रथम यह सबस वास दिलाते हैं ।परीक्षां—सी०द्वास, १३४): यचारि यहनको चाट चवरतो (यद्म०के प्रय—पद्म० अनीतेश्वर, है दुनो चाट नम यह नी हो बेनपह है कथर व वट वरना चुमरी०—हरियोच, वस

बादर के बातर पैर फैलाना

- (२) मधीरा का उत्सवन करना ।

नापर जुड़ी रक हैना

विषयी होते में बचा मेना । प्रयोग-व्ययन्तर तुर्गकरित, रेटका द्वित हमील सर्गाट पश्चित् रुगीय बाहर भूगी ने राजी, जबमादि (विहासी का०- विहासी ७१२

बादर तात कर लोगा

निर्देशक को जाना । प्रणीन-रचनहार कूँ चौरित् से,सेबे

बु कहा रोड । दिस मंदिरमें वेशि करि नामि पहारता छार कवार प्रशाव कार प्रदा,

बादर देन कर पेर पसारता

अपनी सामध्ये के मनुभार कार्य करना । प्रयोग—हम क्ष्य हरि जिले अपनी पट देखि प्यारहि लात मुठ छाठ—सुर ४५११), प्रपत्नी पहुँच विचार के करनम करिये होर । नते पांच एमारिज जेती साम्बी मीर (प्रं० सठ—कृत्य, प्र मारमी अपनी आदस से सामार है । पिर मी चारर केश मार ही पांच पसारने चाहिये पद्धमठ केम्द्रा---व्यक्त एम), प्रान्तमा से बनावटी मापने हुए सन्ता के बहा—----व्यक्त सापर देखकर ही पांच पंचाने चाहिए (पदन----व्यक्तर, ६९)

वायुक्त जनाता

प्रभावपूर्व वास करना । प्रयोग—चीचरी ने होरीका आयन पाकर पावुक अभाषा—हमारा नुस्हारा पुराना भाई पारा है बहुनी, ऐसी बात है पना (गोदान केन्स्बन्द, २९

वाभी पुतानः

वृत्तिस्थितिको स्था देना या प्रभावित करना । वर्षान—देन् । गुला सामान्य के भाग्य को कृषी नद्द किथर वृत्याली है , सकट0—प्रभाव, २७,

बार्मर हरच में होना

किसी के काम करकाने की कामना का प्रतिकार होता। प्रतिकार हमारी संप्रवनाको जाका पर दिस्टीस्पृटा के टाव में रहती है (कुमनाक देव सक, २५५

नाम के दाम बलावा

अपनी बलती में क्यांव करना—अधर करना । प्रवीय— काम के दाम बलावत तुम तो, कुविना के मिनदानी । सूठ साठ—सूर प्रदेशक चाम का नाम भ महान उत्तरा बाम के दरन क्यों कलाती है (बीसठ—हर्ग(चीस, प्रठ)

साथ पर माता

時で

(१) कुछ, काला (प्रयोग-- वार कई इसकी मह लॉटिय ।

गणित हैन विद्रा कर दीविय वेदावर २३ केशव,३१० , बार-बार प्रयान दिनाने चीर प्रार्थता करने पर भी उन्हें पदम-पराव पर बार पंक्तियों जिलवार विश्वी पत्र में भेजने की कुरवत ग्राम तक न मिनी (पदमर के पत्र-पदमश्यामी,१४३); आपके भार पेस बाला हुँ, तो आपको बालों से देवकर नदमें भ विश्वे दुवा (१४० (१) — प्रेमकंद ३५०); बार बादमी को गाव ने विक् हुए काम का नक्श्न होता है भीजाम पुर्वे - दरवन,७६

(२) वय । प्रयास—सामह ताही य होत सब्दे) हो न भारत है देवी कार वर्तकी (स्थान-क्याकर, ३३); शास के उप्तय में बार व्यवह के सामने क्या पहल कर शहर मी है कारता—प्रसाद, राष्ट्र

श्रीर प्रकृत पेटना

पांस पहला । प्रयोग—कार बक्कर नथा पक्ष गया उभका का दिशान ही किए क्या क्वाल (१)—वशयात, ४५६), इनके का में पा अधिकाचा होती है कि नेया क्वा चार प्रभर पह प्रस्क (मानेक (४)—प्रेमक्ट, ६)

कार श्रोक करना या होता

(१) बमक प्राप्ता, बाल-वृद्धि होती । प्रयोग---में तो फिर भी प्रयासी की प्रशासन करोगा । इसके पहन से चारवी के बार आने ही बाती है मा-कीशिक, 20)

(२) नवर व नवर विश्वासः।

बार श्रीम् व्हाना

शोक करना । प्रयोग—पुरुन्देकी विषया श्रद्धाके पासश्चाकर पार जानू क्या अभी (प्रयाज—प्रेमकन्द, ३६४

(नवा॰ वृहा॰—बार श्रीस् मिरानी /

चार कर्म वामे होना

नदकर होना । प्रयोग-नदी चरेलू सक्त्यार्थे हेरी कल्पना हे भी बार करम बारे रहती है ,मरे०-नुसायक, भी

चार के क्षेत्रे का बदना

शवसरका दें के बहुचा जाना , मर जाना । प्रयोग---



बार गाम हंगना-बोलना

साम पर किननी पर्द नव किसलिए जस को का भार कंथों पर नहीं (बीलo—हर्ग सोध, १९४)

(शसाव मुसाव-कारके कांचे पर कारना,-काना)

साप-माह इंत्यदा चलिया

हारी-मजाबा करना जन्नम नेना। प्रयोग---वस पृष रही में गरहें कृत नमभती हैं। तृत भी बाकर चनर भाग हीन-बोल चाके हरे न, क्या बननरे कारी में न निभावाने नंबक दें केमबंद ११६

खार खाँद लगना या लगाना

बार-भार भाट सुतना

यो कहा जान जर्म कानका । अधीक-विशे की कार वे भी तृष्हारी बाल कार-बार बाट मुनते, बोबो (वीने०-मी० कार, १०२)

सार दित

• (६ वि चान्त के प्रदान क्यार क्यार कर रहिंदी रण आवस पंचार क्यार क्यार क्यार क्यार कर आध्य क्योग्रीहाठ क्यार क्यार क्यार कर देख चितार र दिन्द्रित रहता दिन भाग प्रदेश क्यादित धेन्द्रे कर्मा नार्ट क्यार क्या क् को जन्नको क्रमान किय वादि ही थे, श्रीनी प्रभादि क्रम रेकी दीति नामि के (मितिय मन्दर - मितियमे, १३०); रोजन काद न की नाम सकते के स्थियमे । जनसे जन दिन कादि की ताल न कहत निदान (क्रमान - मैरिक्स नन दिन कादि की ताल न के कहत निदान (क्रमान - मैरिक्स नो कादि जान की नहीं कहता राधान्त्रस्थि काही वह और स्टेट मूझ व बड़ी-बड़ी वान निकलने तम, जार दिन के सेंद्रमान नाह-राज की क्रमादको करने वस प्रभादिन के सेंद्रमान का सम्बद्ध (संस्थान क्रिक्स का वस बड़ा पर जार दिन का सम्बद्ध (संस्थान क्रिक्स का वस बड़ा पर जार दिन

चार दिन कर बेहमान होतर

- (२) योग दिनो जीनं बामा । अधाय-स्वारि दिवस क पार्न वर-वह क्यांद्र सात्र , क्वीर प्रसाय-कवार, २१०), का न बोलू , तुम को धो-धार दिन के पहमान, हो, जो कुछ कहती वह नी हवाने ही निर पहनी ,प्रेसाय-प्रसन्द, ४०
- ्र) पार दिना पहलवाना । प्रयोग—नहीं सो में बार दिन की बेहवान, किसी को कुछ कहन का मौका ही क्यों हैन नकों है (बॉनेक--रोक संब, क्यों

कार दिन की विनंत

बार वैमा कवाता

वस रे राज्य । १५० पान वार को वार प्राप्त साम तार वार वे दुल्या देवक हैं है पानान भी प्राप्त को को में को बार का बावत प्राप्त सेवर सुद्ध प्रमुख के को का का नकार हो नहें दी। यहन की स्वाप्त हैं

चार पंचा होता

क्या पन बाला । अन्य - इसी एमाई से मुनात पृथ्व



एसी धरकत की कि १८ ज कार वैस हात के हुए इकमें≎—प्रेमकन्द, 89

खार वाने कहना

भाग बुरा कहना | प्रयोग —उन्हें चार वाने नुम कह से भा अपने ही नियं का उन चा वान अध्यक्ष, १८६ (समार मुद्राह—कार वासे सुनावर)

सार भी दीस होता

बहुन भूमें होता । प्रयोग—मूझे कीई जानकी श्रेष हो समझे × × स्वार्थी और कार भी धीम भी है किभी मौजा सन्त, पर में इसडाड़ी जिन्दुल नहीं हैं (बन्हo—25 सत. ४०४)

बार मी बीसी

पाका सन । प्रयोग-जारपुर वाबी के बाई भी कृत गमभाने भाने, वहा कि अप जानर तृत उने कृत करक पदा कोगी तो तृत्कारे साथ निकाह भी हो पारवा । वे इस बार भी बीसी में भर गई में कोउंक अब साठ १६६) ; प्रापके अपर भार भी बीसी का राका ठोक्सा है सूद्द क्या कार, १५१ ,

बारपाई पकड सेना

चारा व होता

कोई युक्ति न रह आसी । अयोग—को अब कृत देखिने मुलिबे, कहा करन की बारी सुवसाठ—सुर, अरेडेंट , सभक्र विरोधि, किरीच मसक सब, अरेड् प्रमांत सुन्हारे । यह सामाच अस्तर मोहि स्थानह, साथ तहां कयू वारो । विनयक—जुलसी वश्च यह करें साथ बोद वेचारा गार्थ दिसके रहा न बारा है जुमतेठ—होंगोध, द

बाधा केकना

पासने व नियं यक्ति सर्वतः । यहाँक - १८६ राम्पीय जिल्ला १८ थ, यह देवर इसन काल न पास्ता रा स्टूट पास्ता योदान - मुख्यदे १६६

वारों और

हरे भगह. कर बोर । अमोन—अमय अंशरह भारिह पाडा (१९२०)कला—भूकसी, ३९३०, कंते करि अस्ति, ६९ कीर्य कहा, वहा सोच, वास्त्री बीट चमक चटान अप्-मूर से (सन्दर्भ कहा, बनार, १८६,

वारों काने विक निवास

कृषतः शारता (प्रवास-वार्त) सामे विस्त विशा है जितेतः, राजनीतिक वेदी साधव (प्रासीठ-नेषु,४०९)

🕩 👓 अपर्यक्षाचे प्रदेश, आने प्रदेश

वारी करी विश्व विरामा -- अराशा

पूर्वी नगर परास्त करना (कुल्सी में हा किसी दूसरी विक्त म) । प्रधान---विक्त पेनरे देखना क्षांसम् पार्ट के । केस चारी काने चित्र विकास है दूस समग्री (येंसी----प्रोरंक पक्त, कहा उस्तार, मारा कारों कार्ने विका मी----क्षेत्रिक १२५

वारों काने दिल प्राप्ता २० वारों वाने जिल गिराना

नारों कह पाना

नर्ग, प्रचं, काम, योश कारी ही प्राप्ति होती। प्रशेष ्यूगानिष् यनि ध्रम्यय तीरी। यापि वदास्य स्थलन्यारे सामक क्षम —शुक्रकी, १८॥

बारी हाब-पांच से दीड़े भागा

वहें तथ्याह जो नापरता से जाया 1 प्रधान-विशी र फिटर इंडल की नापर के बुनाओं अब स्वार करो, जारा हाज-नाम से दोंसे असे हैं या नहीं कमठ--प्रेमकन्द, इस्ता

वर्गर करना

- (१) जन करना। प्रधेय---एन मोग्री के युक्त घोग-रिकास में प्रमान के निष्ट कथ बाई नहीं चली शोदाय---प्रेमकन्द्र, १४ . बाम बमनी हो पढ़नी है, करे क्या समन्त्र के प्याने सर्मठ---हांश्योध, प्रमा
- (२) बुक्ति बक्ति होती । प्रयोग---वहा भूदा को गही वर्ति दल्के, वश्य बढ की क्या अल्ली भाष (पृद्धक---बल्का, १०३
- (३) वाबराह्य करता । अधाय-वंदी युग है नीकरो

नेसी बाले बाल (क्वोरांबाo—क्वोर.३६), वर्क न एडा बाल क्वात वय बास चड्ड बेद्धि संधार प्रवाठ—संघाठ दास ४३

बाल पर पहना

(१) पुरित र नगरी । प्रयोग मग र पापक रूथीम्ब म वह बाल पट पढ़ वयी (गोदान—प्रेमचंद, २३%

(२) अपदे दियों का व रहता।

खाशनी देगा

बाद का रंग

पेश का काम । प्रतोग—काम के रत में अधियों हियाँ। विद्युरेशिकों प्रीत्रक माति व मार्थ, (प्रतः काँका — प्रमाठः १९

मात्रनेवास्तः

चेम करते बाला । प्रयोग—धारे वेरं पीचे बर्स्ट वेसा वसके बाला व विकेशा (माठ प्रशांठ (१)—मारतेन्द्र, १३७६

बिका का दांगे रकता

बनावर जिला बनी रहती । प्रमोध—नित न टानं प्ये हो बिला जी विकासी टांगे उमा म पहें (धारीक हैंसे घोष. इस्पर

चित्रा काये जाना

विक्तित होना । प्रयोग—सम्बद्ध गार्कित है कि उने वस है। विक्ता साथ और रही है। स्वत्य-देण सथ, देश (यमा = मुहां =-- सिन्तर सेरमा :

चिता सारे शकता

बहुत सिनित होना । अयोग - बहुन जी हो पदा था । यह विना और भी मारे समनी वी प्यानक होना - उसना (समाद पुराज - जिला माध्ये समाव होना - उसना

चिता से इवना-धनराका

विश्वी द्विष्। क कारण कितित रहता । वाद्या इपर क्यों का भाग समध्य शाना प्रत्या का विश्व विश्वी कृतान संस्कृत को दिनाय समस्य न पार स्कार का बह रूपी जिला में दूब-कहारा पहा था कि विलायती इत्यों का एक बहरूप जिल्ह गया की एक-मुक्त एवं इसमें का बाब केना जातना था (मानक १)-- प्रेसबंद, २५५)

चित्रा सायर में गोने बाता

सस्यतः विका-सम्ब हिना । प्रयोग---नगरः हारकारास के बाब वेटी स्थिता सम्बद्ध स्थातं का ग्रेटी भी (६० स०---म् १०-२ १०५ हः कहकर बजमोहन वृत्तम् किर विका-सान्। में बोहे काने सबे (मा-कोशिक, २०) (महारू कृत्य--किसा सागर से बोने स्वमाना)

क्षित्रेरियां सगतः

(१) किसी अधिय बात के निवसिकाहर होती । प्रयोग गाम के चिडोटी नती वरत्यु उपने चपेश्य की सुग०---पूर्व क्यों, ३०९

(२) क्यों से जरीय में चूनक्ती होती।

क्रिकता घटा होगा

ऐसा बाइबी जिस पर बड़ने-मूनने का कोई प्रधान न ही। इसोग---क्यो सनका है सन व प्रधानम पानी जिसला पड़ा [समेठ---(र्स-प्रोध, २॥ /

व्यक्तिक स्थार

भाषपुरम् स्वयः। प्रशेष—जन्मादकः ने सास्यः और विकर्णः स्वयः से कहां—वर्णहरम् तो वदी नावनः चाहनाः है। जन्मर-२१—जन्मयः, १४८०

चिक्रनिया होना

वनं-तमें होना । प्रयोगः न्यष्ट या क्षत्र के बोन विकासको, यर बागे बागः सुरु सर्थ-न्यून, २३०३०

विकास-चुपटी बाने बरका



चिर स्थाना

चिडक जन्मा

भेगवा हो थाना, मनीमालिया होता । प्रयोग —ही सकता काम की कोई नहीं बात दिन की सूब विश्व बावा करें (सुमलें)—हारकोंध, पर्छ) ; बाजकम साथवी के विश्व वर्ष है तो करनवी की दवाकने बादें हो ? (सुनक्क — तक नाठ, २००)

चिद्वा चंटना

भूगताम होतर । प्रमोग---मनदुरी का विन्दा एक काँडने हैं महाभूश दर्शातय नद वरी द्वापत दिया बाहत है। परीक्षार ---मीरुदास-६६

चिटडा भरता

धमति की पक्तम विभाग । प्रयोग---नव वहाजन नरेन रमधं विन्ह्या भारते के (शक्तक श्रेत(०--शक्तक दार्थ,३२०)

चित्रिया उद्ग सामा, —हाथ में निकल जाना फंगा प्राटमी करते से हट बाना । प्रयोग—नव क्या करना होगा, को साहब । चित्रिया हाथ में निकल नई । मुक्त--प्रेमचंद २३१): कुछ करी परन्यु कर कोई नाम न हागा अब नो फिल्का पर गई मा कोविक ३३०

विकिया हाथ से विकल जाना के विकिया उद्द जाना

चित्रिया का पून नहीं

भोई भी वहाता। प्रयोग देशा तो वहा विदेशा ना धन भी तथा, घर में काड किसी हुई वी (बंदराइ)—प्रमण्ड, 343

व्यक्तिमा से कृथ जिसालमा

असम्ब काप करना । प्रयोग—यहां के न्यायानयों से स्थान की भाशा रणता निविद्या से पूर्व निकानना है (१४० १)— ग्रेमलंड, ३०९)

जिल पड करना

 (१) हैरात करना । प्रयोगः --वस्मो को प्रयम् चित्र पण कर पालमा पेट मुद्र पिटाना है चीसेक -हरिजीध २३ (२) थिक्का उद्यासकर कान का निर्मेश नायका ।

चित्र प्रदेश का पर प्रदेश

कोई बाग धन्कम का चाँतकृत होती । इसोग-नी इस धार य इस नहीं का तकना बहुती । हाकिस का काता । में जाने कित को का कह (एकन-कारबंट, ३१९)

বিশ্বন কাননো

रेक्ना । प्रयंक्त---विक्वनिक्त विजयन साथ, नाम वृषया थांग्र (जनाव--विक्ता,यद

नितयब काम करना

विश्वत बाज स्थानः

निर्माति नेजानि से वेश्वनार पोर्गात करना । प्रयोज-नियमक बान जनभाग सञ्चल दह जिल्लाम नाम क्षार पु. साल-सुर. अन्तर

नगर-पत्त- शिनवत का बार करना -वाण जन्मना)

विका पर बदना

- (१) बरमा । ज्योग-ने चेशमे स्था नही है चेतरे, मी विना पर अन्त्रकार में पहेंचे (कुन80-हर्दस्मीध, १६०)
- (३) बहुत सत्तरनाक कात करना ।
- (३) यती होना (

(नवा । नृहा -- चिना में बेहनर)

विशास 'चित्र' स्व जिल इस्तो स्थी को परम्पर एक कुमरे के कन्मग्रेस मंग्ने ।

चित्र धटकरा

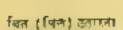
भग का नहीं और सम जाना । प्रधीन-को वे हरि विशय को बीचे प्रस्कार बीचु (कवार प्रमाठ-कवीर, २६१)

चित्र में) भाग

- () स्थान्य होता । प्रधान—पुरव बनव कवा चित आर्थ । सम्बद्ध (बाल) -युलसो १२०/
- (२) व्यान में बातर (

चित्र उचार होता

वन का अध्वर होतर, कियी काम में मन का म समाना। वनोश—विनद्धि चकाटि देनि वए सक्त मन इदि हरि



ह का सठ साट सुर रक्ष

चित अनारमा

शन वित्रकृष्ण का विकृत होता । प्रधान वर्षण उस पिर पानी अध्यक्ष उत्तरण विक्त विशिष्ट बाद्या पद्ध अध्यक्षी 2040/

चित्र कठोर होना'

विषय होता । प्रयोग---क्रमी वय जिल अस् वटांग पुल्लीक ---पुर,श्च्यप

विश्व कर देना

क्षणान कर दता अपाय उस अना केंग निकास निकास सम्राह्म क्षित की पुलिस्सा जिस कर ज्यूननेठ नहीं कींग्र, १४७

चित्र करना

माच करता । प्रयोग---- नवारि सम्म मनाव वर्षि स्वारको नवरिः भाग इतः भिनः कृषिः परिन्यो , सुध साध---सुर १९००

विश कोकस

- (१) बल की क्षोतिन कान्यः। प्रथम—कार्ड घण्डी कृत्य ओ केंद्र को नृहादकी बाज्य हुई तो कहते हैं इसकी क्या आपणी विका को लीच केती हैं। कांठ सुठ—बाठ बट्ट बड
- (२) अह इस बेहा ।

चित्र बढना

- () अस को क्षेत्र नग आगा । प्रयोग-न्यव वित वह उ से प्रवाद प्रोज (१)मान-वालाी-न्युलकी,वर्द
- (५) महाम बन काना ।
- (१)फिर्मी काम प्रा बाक को करने की मृत सवार होती।

चित नाक पा नदा होता

एन क्षेत्रक हो या प्रमाण कारण उत्था प्रकार मात्र क्षानं को नीक्ष्य कालो कहा किया काल करेंग्री को केश्चर प्रशाद-केश्वर ५०), काल-कर्यो क्षित्रकाल-कर मी भी क्षिते निकारी इस नेकृत की विकार करेंग्री-सन्तर, २०७

चित्र चिह्नता

िरागत संग्रह समय सम्बद्धाः चारणः अक्र वर्षता स्थान प्रतान स्वीत पापने भाषानानीति वृत्तिक संग्रह विकास स्थानिक सम्बद्धाः १५७० वित चुगता

सन संगत कर्णण गरना प्रयोग गराम गौर मर् साम विजास नीयम नृमद विस्त चित चीरा गीमा (दाले -- मुससी तरेश गणि-दिश्यि माने मीह-वर्धन से बादित दिसा नाम क्ष्म पुष्ट कि नी नृम्योग ने गिर है निका सहत गणि निका की वित्त भागि नेता है किंगावत है -- केंद्रमाण्य ते तीरे चेता गणि-दृति भीगे चेता गरि-मित स्रोग नेता नोप-नाम, चेगरे चेता गणि-दृति भीगे चेता गरि-मित स्रोग नो वित्त चीर्यात, विगीन में चिन्तारि करि,वाह मीर प्रभाव हाथ भीति के सूनी निक्त है विन्तारि करि,वाह मीर प्रभाव हाथ भीति के सूनी निक्त है विन्तारि करि,वाह मीर प्रभाव हाथ भीति के सूनी निक्त है विन्तारि करि,वाह मीर प्रभाव हाथ भीति के सूनी निक्त है विन्तारि करि,वाह मीर प्रभाव हाथ भीति के सूनी निक्त है विन्तारि करि,वाह मीर स्रोग क्षाल है;—स्रात्त्र की, जीतन स्थाप विकास क विन्न, चूना च्या विकाहम गही जी विदेशीय—हिस्सीक्ष कामा, चूना च्या विकाहम गही जी विदेशीय—हिस्सीक्ष

विक्त बुर होना

नम का बहुन दुओ होना । प्रधान---बूद असी विन पूरि १९७६ पटा कहार ^१ अभी दुस पीतम (धने० कवित---धनात हरू

(भगाव मुहरकार जिल जुर-जूर होला)

किन सनगा

सर्व म विकास करना । प्रधान-नाको भूग गई यह करन वर्ग वर्ग नाम हिल्ला सुर ४४७०

बित बेता होतर

बनावाक पूर्वा होती । यशाय- बनक नियासन स्थानमध्य कर्मह राम् होड विन वेना सम्बद्धार्थाः-- तुलको,हुम्पर

जिल-बोर होगा

विक्त खंगरमा

सन को कट देश। प्रयोग अवत आतार आस १० १२% सिन २१० ज्यानीत १९११ में १६० सिस स्टार १६६

चिश ट्रश

मनामाधिक होता । ज्योग--मनोम मानू में कृष्टास विस्त दृष्ट वथा है क्या रे (सिट्ट--सठ मिस ४९)

चित्र इलाना

मनको तूसरी और समाना । प्रधीत - तूँक कुर क्यान-नोचन न, जिल नांट प्रथम रचार्च (हो) सूर्व मार्च-सुर 343)

विक धिरामा

भन क्यिप होता । प्रयोग---शृति दादृर क्रेंश वर्गहण की सुति के भृति जिल विदानो नहीं (क्षण्य---वोधा, ६)

चिल देवा

चिस धरमा

पम में शिक्षित क्यान, ध्यान करना । अपोन - बन कही धून बर दन:बनार । राजां सनी नाहि जिन पार सुरु सारु सुरु १०३ जिननी रिविसात की जिल करी नहीं भेगन के पन प्रसाह करी वैद्यातक, व केस्टों नेपड

निक पर (में) खंडना

प्रत्यक्त होता किसी का प्राप्त प्रत्य क्या होता। प्रताम— के गुमान कुत क्य की लेन दान गुरुधान धनपाहन पित पदि रही तो भी किसी न धान जगार अहमाधन धन सुरति करी हो कियाँ की होतेंड जस्य प्यारं, से हो बिस्त बढ़ें, रम कुरति अहा रहे किस्त कांक्क—हमाठ, ६०.३ बहाब है क्टरिन, काच बड़ों, यम अस्त्रेड काथ यह विश बो स । यसक कवियन यसकार हो। (क)

(२) वद में साला । प्रयोग—शब्द अपन से अर्थ विश्व को सामूहे थिला। से शोह बायक बाय्य हैं, व्योगभावृत्ति निवित्त (अस्ट०—देश, व्): बाके तृत्व क्या थित वर्ष वर्षा स्थान देवन व्याद (कुण्ड०—नीरधार दास, १०८ वर्ष केला को यहाँ विशी थित वर हम किली की विशाद दर स कही (चोर्थाठ—हरियोध, २९) वेषिण प्रयोग (१) में (-) भी

(३) वन में दह पारणा होना ।

বিল করেন

द्रश्यंक्षाण में कुली मा करानीन ही आना । वर्षाय-स्वापन प्रमण दिन-प्रमान की क्ष्मण की क्षद्र कराइत स्वृत कृषी नहीं और इसने क्षमण किस कुल गना पढ़ा कि उन्हें स्वाचे में कुलक कर विशा 'यहम्प्याय-अवहम् कर्मा, १९४१), पढ़ा की और से भी उनका किस कराया जाना का प्रमाठ-- वेशक्य १८४

निक बंदना

- (२) कई कामरे में यम मयना । समाम---ने दिन अम दुक अही तथ भी कर यम और-और मिय यम सी नद्द कुकाठ---नद्द , १८०
- (२) फिल एकाव न होता |

चिन कारता

सब मता होया। अन्यक्ति होतरे । वर्णन-वाह अरयो वक्त क्याने वित नीत्त्रवृतेरी वाल वचन वितीनो में क्या है जाए-पहुमानन, इन अंसे यूने कृतर जिनव वित हो जा करा है। पिरंट-इर्टन्सीय,१९७१

वित गांधना

प्रम करवा । प्रयोग---वस मुहाय कि पाइन भाषा । वार्य कोड़ जो जोर्डर विक काचा (प्रदेश---खांसमी, प्रदेश)

न्त्रित विकता

बन का वारी कृत होना । प्रशेश—क्क बायक, इक बारा क्ष्मल बनि विगवन किया विकास (सुत साठ—सुर, १९३०



चित्र (चित्र) भी अपना पट्ट भी घरना होना

जिल औं अपना पह की सपना होना

हर तरह ने बचना लाज होता । जयोग—बाद ! बाद ! बिल भी वेशा और पह की देश :स्थाः—यू ० वर्गाः ४१०।

चिस में चुभना

(१) यन यर वहरा अनर होना । अजीन—विन पृति राही अवन-मोहन की, विन्तिन मृदु वृत्तवार्तन (शु० साठ- सूर, अह.ह), चंचन विनोती, विन्न पृथी विस्तियोर वारी मोनवारी बेमरि, मुक्सरि की बंध वह शाहर—देव 28/) मुन्दर वजन पर मोरिस महन वारी, विभा पृथि विनयनि सोयम विशास की धीने कविस —धनाठ, १६०/), वंस यह बोचने की बात विन्न में पृथ वर्ष (संगोक्षाठ—सांठ र स, १९॥

[२] सन की दीवा शांना ।

सिन में धरना

 (१) क्य वे १वान रक्षता । प्रयोध -यन-मन-वय शासमा निवेदक, भी प्रण विवर्षत भरी पुर साठ---मुर ५२७२

(२)मेच करना (प्रयोगः नामु दिन को निक्त जिल स नवो लोड् एरवर्डु (दोधीय देशाय-वाधाय दोस, ५क

विक में त समाना

सन पर असर न होता । प्रभाय-सपूर प्रथम से नुस कही, वे हम किए न समर्गह भूँ सीक-श्वर प्ररक्षक

चित्र में वैदया, --वोर्ड होता, कमना, -- ममाना मा में क्याबर श्वाम क्या रहता। प्रवेश--- मानित होद और भिन्न प्राठी। बीट पृष्ट्य कोट साम क दोनी (१९६० - कामसी क्ष्मारक, क्यास कृतिक समूद कुरुक्त पृथि रहा ता जिस से यात सुक्र से द्वाप्त स्थाप प्राप्त प्रयोग परस्था किया से प्रश्नी क्षात (मृत्याक मृत्यास स्थाप स्थाप के प्रश्नी क्षात स्थाप क्ष्मा हो प्रियक हिन्द्रील, १९७

निल में पोर्ड होना देव जिल में पेटना

निस में बसना विस्त में पेंडना

चित्र में रचना

(१) ब्रुग अस्तरा । इयोग-सुत वपराय करें दिन केते बननी के वित्त रहें न तेते (क्योर पंडा०-क्योर, १२३) (२) प्यान में रचना ।

जिलमें कुछ होता

ईच्यां होनी । प्रयोग—मीठ एदित, हिन अदिन हैं, नित वेरिक के चित्र सुन (गीता० (वा)—नृतासी, २२

चित्र में समाना ३० वित्र में पैठना

चित्र मैन्द्र काना

मन में पूर्वोचना भाषा । प्रयोग-कवीर पूर्णि विवादिया, पूर्वे वा करि थेवा चिल (कवीर मधा०-कवार, प्रश्ना

विक्तं रकता

इन करना, बंद नयाना । अधीन-रूपी विश्व दार्लाह पर रुप पंचारपार सीत कसीर देखां⇔ कशीर ३६० . इति चरनार विन दांगी बोद सुठ साठ—सुर, इष्ट

विकास स्थान

(१) वैस होता । वर्षाय—ह्यारा भने वदा त्रव भागा । वर राम काम विद् जाना (क्वीर राष्ट्राठ—क्वीर, २०६३) १४); देशि जर गेर वानर त्रांने रहा चित्र क्षेत्र ६६०—कामनी ३५६२); दुर भ ग ज क्वल क दिश्ली १९० व्हार नामन (पन हों सुठ साठ—सुर ५५७०० १९०६ पर स्थार विद् गांचा स्थार वाल सुल्हा) १६६ पर स्थार पर सनन में दहन लगाग (बत १६ स व्हार का का सनन में दहन लगाग (बत १६ स व्हार का का सम सनन में सहन लगाग (बत

() सन् कार्यकर होता। असाम द्वाराण प्रशास (४) संरक्षा

चित्र लगाना

ध्यान देना । प्रमाण—कह मणकी, नहीं भार है, जिन कहा नमानों मुं- सार पुर १३३६ नगई किमी स्वार्थ को पुरुष से उसकी मुस्टर देखका जिला नमाना ग्रीक इससे दिन्द के उतक धरन कमना देशीयों असे कहते हैं (अंदर प्रसाण है अधितेन्द्र स्वरूप कक उद्योग प्रभाव अतिहि दृद नित समार राधाः प्रहार-राधाः दशः ३१

चिरा ळाना

भनं समाना । सथीय--- चरता संचय चित बहाने राम नाम तृष माइ (कवीर पंडा०--कवीर, प्रद); तृष कच्छी गप्त दिवस बम आइ । कही हान्यचा, मृत्री वित कार स्० सार--- मूर, ३४४); बीनेड्रि अर्थ तम कहत वृष्यर्थ भृतह ताल बति भन चित जाइ (गम्ब एक्ट)--- सुकार, १९०५), नव दाश की प्राप्त श्री जम्मा कृत्य करी ताले परी वर्ग चित कवी नेद० प्रधा०--- नंद०, २५३.

सिक देश

- (१) भागमित करना । प्रयोग—नेने नही करह चरि प्राणिति पानृहि केले क्षेत्र विन्तु बीच (क्षेत्रक ,१)— क्षेत्रव, ५७
- (३) मण की बाह देखा (

श्विच (में) समा कता

प्रमान सुना होना । प्रयोग-नारन कमल विन पहले समाई (कडीर प्रथा-नवीर,२६९)

श्विल से उत्तरमा या उतारमा

- (१) भूक जाता । प्रयोग—सभी भव दन वालो से बीर भी पुछ बहुता, इससे जिला से यह बाले उनाए से साठग्रहाठ १ मारके दू ३५ किन् १० सथार को रोजि १ मि तम ११९ असी बारो धान को भी जिला म उतार देशा है भी १४६ हिन्संबंध का उत्तित होता है कि सावधान कर हैं (प्रठ पीठ—प्रठनाठ मिठ, ५०)। बाल यह जिल से मानी जाने नहीं हैं उत्तरते कृत कहते के लिये (कुमतेठ— हरिअरोहा, ५.
- (३) श्रीवार्जवना प्रियम शतनाः।

चिक्त से व उज्जा

हर समय भ्यान बना गहना । अयोष-सूर चित्र से टरत माही राधिका की बीति (सुरु सार-सूर, ४०॥१

विका होना

मेंग होतर । श्योग—वे बहु-सामक रस के मोजी उनको

विश वर्तक निवन में (माठ ग्रंबाठ (३)--ममसेन्द्र, ६३०) विषय अवरेष्टी होता

धकरम धिकर हो जाता. कोई बलि क होती : प्रयोग---नाड नवाद काम स्वति हेती, बाँह जम् हुंबरि विश्व स्वतेती: (१४४० (बाल)---सुनासी २७१)

वित्र सीच हेगा

िश्वि का-ह्यह वर्षन करणा । प्रयोग—वर्तमान समय की परमाहिनी मध्यता की खीलानेवर का वी तृंदर विश्व उन्होंने 'महारक्ट-वर्धवेक्सनम्'' नामक नेवा में बोचा है, वह देखने ही दोल्प है ('एड्सप्राम- पड्डम्ठ श्रमी, इ.च.); वरन्त क्या के बहाने कवि ने इस दलोक में माना विशा का बंगान के प्रति जो बनेट होना है, प्रवीक्य किए बीचा है निश्चिठ--विठ प्रठ, छन्।

विष जिल्हा है।

रार्थ विति न होती, स्वस्थ हो आहा । प्रयोग—किसी विश्व की पूर वृद्ध गीर इकटक यस विस्ताप (मृ० साठ - सूर 1234), यस विश्व के सोग यस विश्व वित्त में देखि (साठ काल)—तुलसी, 250) चित्र विश्वी ही गीर दर्द कर करा वर्ष तब (संद० प्रकार—संद०, १७५) ; योशन विश्व को विश्व नक अर्थ विश्व ही तो तो विवित्त वृद्ध है (साठ—प्रदानाकर ५० , एकतन के सच नंत वर्ध नहि गीर वर्ष मनद्व विश्व नित्ति काही (भाग स्थान ,३)— भारतेन्द्र ५० ; भूकि तम दबा नही विश्व पृत्त है। नी क्षत्र भारतान संदान—(स्थान दास है)

विनगरों करना

उत्तरकाषूर्व बार्डे कहती। प्रयोग घरी नेकसी से किन्नवर्गान्यं करते देख दिनगर भी अभीन्द्रतामणी साम्बास ने क्रमण कर वेशा संबद्ध विद्या था अपनी सवा—

49, 112

चिपक जाना

काम न सरेरना। प्रयोग — गीर मुर्फे दर कि काधिर माहब का का तो पट हवरन ऐसे मिपक आग्रेग कि केरा बसर तक करता मुज्जिल का देंगे (पैसरें — सरक, दक्ष)

विषटे रहना था विषटना

निष्य रहता, डाप समें रहता । प्रयोग-विन्होंने

विशय नृत्र हो वादा

शायमण के सबसे गांची के बीज क्रियांकर एक दियां वा के और क्षाने का जेनी पर विचट वस स्मृतक जी व्हर्सी, श्र

व्यवस्य स्टब्हे हो हाना

विकास करे

प्राप्त का नामान प्रतीय को र उनकार प्र अस्तिकार का नामान प्रतास की का जिल्ला है है.

विकास हैदा करना

भिराम कुथाला । प्रयोग—धूनो की केन पर वर वर वर व विराम प्रशासिकार—विकास धुर

(तापान मुहार---- विकास क्यानी)

विक्रिक्तामा कंप्सरी, - भूप

सम्बद्धाः व्यापः -विनर्शयमानी दीवारी भी गीर मगर साथ दो असाधः निष्ठं यात्रा का सम्बद्धः १ क्रिक्ट, ६३), को पद्धने पिन्नियमानी कृत स व नहत किन्नु सम्बद्धः अस्त्रे वही अस्ति हरियोधः दक्षः विक विनर्शति वृत्र यह वस्त्रे । बस्ति कोमण वृत्रपता कृतः सम्बद्धः दिन्नदः दक्षः

विकासिकाराती श्रूप

१० विक्रांबिकांनी होपहरी

जिल्हा प्रसार

नीत के निर्मे विश्वम नैयार वारता । प्रतिन न्यून विश्वम प्रमती गड़ी तथ बार को बीच स्थानी क्या व प्रतन्ते क्या रहे मुनसेश — ब्रिकेश १३%

की कशका

पूर्वाणी करना का विशेष करना । वर्गामुक्तानिवाली के मानने की करने की मित्रका नहीं की ज़िक्त व्यावकर्तनुमित

77

बी-बचट करता

प्रतिकार कान्य कृत्य कहता। प्रत्येक रूप र होते पोत्तन समा कीन प्रमाण कवम प्रीटा है, किस काल क्ष्म य हुँ, की पील्यक व बने एक उ. युक्त दुर्ज व क्स बद्याव ! अनर वदा भी ची चरत कर्ने, हो , x x बुध हो जाव चा—कोकिन, इपन।

की बोलमां

हार बाव केंद्रा : वर्षण्य—हिंग्रीको में पाले ही इसने में स्टेंशक्ट को का प्रकार करूरा है कि तथ हिन्दी बाले की जो कोच प्रकार (पुरु किरू जाद पुरु पुरु, हर्स) ; रोगों बाने दिन के करेने, जहीं बना करी विभाने नमें ब रजाब करन के भी जोता नमें मोदान—केंग्रान्ट, ५९।

कोड़ी की कार्य

मद बाम । इसम —दाको हुए स्थाने स्वर में 'बादा मो' दशकर कुन्छ कोट होर पंजित से, यह बीटी की को बाद के नीचे क्या (बीटम—संदक, ३६)

वीटी को पर जिम्हारता

एका काम करना जिसमें मृत्यू हो जा मरने के निकट रोशा (प्रकार—क्यों काम कोएक, विशेषक्षि एक नायों, पर्य पर बोजिंग के प्रश्न विश्व-वहीं है गीलाव्यम् । -कुट्यों 200

बंक के प्रोसने के बाल खानवा

रुकर बच्चे करना । उद्योग—देश बाध श्रद्ध तो पूजित विकास में यह चील के चीलके के भी सांस हुई बाले में रूप सांसर वाला वह ज्यान—देश संस्कृत्य(ह)

नकर्मा भाषा

रेन केंद्र प्राथमिक करते । प्रथमिक एक श्रीत कीत व्यक्तिको तो चार्का कर्म आस्त्रीका । आस्त्रीव्य ५५०

(वया+ वृहा+- कुनारी कारावा) जुनका बाब होसा

इक्का क्या क्यान्य पारको । प्रयोज-वस्कारी की देह करी क्षेत्र क्यारि, अपट ब्रांस सर्व कृत है देखाउ प्राचन ह

वर्शकर्या दला

े हसी करना । जाता चर्णादा चाम ताल अर साम विद्यानी हदी हुई दावी सर्वेट हरिसीक्ष्य हुन रिंग करण वाली स्थल वहसी ह

भूगीकरा सा हि उदा देशा

() कार्यन नक्षा समस्या अभागान्यम नाम हो।



+ + 8

बान तो अब वर्ष भूतकियों में इस बेला है 'मूर्ग'ठ--स्ताठ वर्गा, १४९७ तरकहा की कर, जी की चेट की क्या वर्षाना पर्राचनों वर काहिक (कुनतेठ--कृष्णीय, ३०)

(१) रिकार न देशा । अयोग---गंगे र्वकतो स्वप्ट्सं कृतकं पूर्ण प्रताप में श्रूटांकतो में ज्या स्वच्या है । वर्गेकार--स्रोठ दाण, प्रशः मेंगे बोक्य-का संस्थान विचा होता हो रियानाय की कृतकियों यह दक्षा देशा प्रेसाठ--क्रेस्क्ट ३१०

बुटकियों क शृष्टिय नर होता

भागरती में बीम बीती । जयांच —या क्रियाने है समर रहता नहीं प्रदेखिए पर वी महिता हानी के सर कुमतेल-हरिश्रोध ३६१

व्यक्तियों में

धामानी ते, महपद । प्रशंक-वंगे किस वे वृह्यंत्रों वे जाम नवता है गोदान-पिमकन्द, १६६), देवता है पृत्की का बाम है और विशानन समान्य दीवर्ष कर धाम है, क्यी होता हो ? (सर्वक-वीनेन्द्र, १०६ , वो ब न उस प्रशंध मान्य हो अन कावता न करावदा प्र कृत कर दिवासा (स्थान-क्रिकन्द्र, १६३

चटको देशा

हि निकारनी । प्रयोग सेन्यावर आ बाह्यक नार् कथीम और वाकीय की पुरुषी रिकार रम बादणी यो जिल्लाकर नावा है , सुद्धान ३:—स्वायक अध्य

(१) चुंडकी बकाना ।

चरका पत्रकी

(०) न पर द्यान गान का का वा व द्यात का सुरमें हैं न नी कर नवाके क्या का को है पुरमी बावादे मुंभरीक हिंदियोध (१५६), 1, वर्ष का के में मही बात बीत हो सकती को मैं उसे पुरसी समाले पाने कार कि है (१९)—भौतिक, ६४) (१)

(ন লাফল শতন টা,বিন, গ্রাল আমাল আমাল লা কামে চিন্তা হলা ভলকী শুকুলী বালাই সংগ্ৰাহ কৰি বলৈ ই নীয়েন হৈছু ইয়াই বালে মুম্যান (চি.ম.) নী

व्यवस्था अर

बहुत बारा करा ना । अनाम विश्वन का तक गाउन 56 (1. P. - ६६ मन्पर वर्ग सिक्ता है। प्रश्न मी घूर**डी ही मिने**नो सीदान **-क्रेस्स्ट** प्रश

महमार भगना

(१) पूननी वा सकती वाच करनी । प्रयोग—हम करन वर्षा वर्ण तो दूध क्यों तब घरन वय, दूपती बृदकी घरों उपन्य-करियोध १९५

1 4 4 5 7

ब्रह्मा सामग्र

न्त्र सरमा ३५० ए० व व वर शास वरत हो। विकास क्षा क्षा क्षा वर्ग वर्ग विकास समित- हरिजीय, १९६

बुरको देशा

(२) मेराव प्रश्नित । प्रयोग क्या तो प्रश्नितात एर १व रह में यह में पूर्णी औ-न्या एन भी करी रिकारी के प्रश्न पर पात केन स्थल ही रे (हुपराफ़ - देव केन कर्ड विकित रहेश पर प्रश्नित क्यापत ही रिकार प्राप्त को क्योंने इन कानगा, याचा क्याप्त तथा जनगा की प्रश्नित केना प्रश्ना काना वा प्राप्ति संवर -ट्य हर

(२) पुनरों मा सबनी बाग नहतों । प्रश्नेश—हतुवा के विचार और संग्यमक के बैक्स एक प्रश्ने की है पहत्रक के प्रश्न-प्रकृत कर्ण हता रकारों व कृत्यों की— को प्रश्न के रूपये कृत प्रश्ना क्य किय संपन्न है सानक श्रा-प्रश्नेत हैं?

मृद्धिया हाथ में देशा

कार को का अवरेश कर दश । क्याय-व्यानीशार्थि ने हमारी करिया अवने हरके में है नहीं की मानक हैं प्रस्ताद्व नक

वृत्रिया शाम में शोगा

क्या में शांका । प्रयोग - कारफ शांच क वची की ज़रिया है। किया विद्यार

वर्ताती देश

प्रविश्वासी को सम्बद्धाना । प्रकार-नालं कर राज्य का क्षती वक्षीची वीर्षेत्र समस्य अपार-स्कूलनी क्षत्र, ज्यही और बी-वी होता

भरपूर काम होना। अयोग—नकामी इतिहास केनको मे १८ ४ पन्छर बीस दिनों में एक पृत्य इतिहास केन नैयार करके नेनारे प्रकासक के बन्य वह विया। हुछ इके पिन बमें और वे इतिहास केनक की चेएते में मा बैठे। मुपदी सीर वो-दो (पट्टमार्क पत्र—पट्टमार्थमा), 285)

कुरती हुई अरक से देवना

सर्वभेदी दृष्टि के देवता । अयोग—विशा के उने पूजती हुई आक्षा के देवता कहा — में नमने पहल काना है कि सामृति कहा है ? (मानव(क्ष) —प्रेमक्ट, क्ष्ट)

बाभागी हुई सहग्रा

भीजी बात कहती । प्रयोग—समें बाद प्रमध्यार बहाय की व्यक्तियोग बंदी ने प्रमें कुमनी हुई दोन्याय कार्य कुमार्ट वृ देश- घठ माठ, प्रमे

क्रका

गहरा सबर करना। बयाय-मिश्न्ती की बहाती भोजी कृत्यतीके तम में कुछ गई शुहागठ-अल्गाठ,११७

कुल्बुओं रोगा

सपुत्र स्रविक नेना । स्वांत—हाय है धोना पहा बरशाट में साल हमको पत्त्वकों शेना पदा (बील०--हरियोध). १६९

कुल्ह्यों सह पीना

बहुत सतामा । पर्योग—है यहि काइना क्लेड का है वहर कन्तुजी वह पीना बोलय—हिंदतीय, १६०:

बुद्ध्य अर पानी को भी व पुरस्ता

विनकून काम न भागा । प्रशेष---भागी इस तरह पान-पोम रहे ही कि एक दिन काम साध्या, स्वा देख नना, यो पस्कु घर वानी को भी वहें (राज्यह --प्रमुख्य : १६

सानद भर पाली देता

जमातिक देता प्रधार इस से काई क्ष्म्य अने कार्य इतिहासा छा से किया। जमान कार्य भी भेती केटना पीटीन- प्रेमकेन्द्र,≼२५ भीत्र में का कार्य कार्य छ मते। देशक तथ सा त चार धर अगर दोस्क हर्मिश,१६०,

बलद्रभर कर्ता में हुब मरना

करून सरिकन होता। प्रशेष—मृद्ध में काशिया सभी कि नहीं ? यह अभी कुछ कमर काशी है ? इस मधी नाके वह बहकर पुन्तक घर पानी में (मानंश(१))—प्रेमचंद ६३) शिक्तकर वाले नहीं केंद्र। के बाव्य दिये हैं नहीं नो कुछ बचे होने चेन्नक प्रश्नामें में तुभ नीड प्रदेश के सब बाह्याय मृग0—मु थ दमी, ३६

ननार न्हार---कृत्यु भर काली में हुवना)

क्लह में उन्हू होना

भंदरं ही में उपन पहना , बोड़े ही नहीं में मनवासर हो बाना । अमोन-स्वयं न सपने पाप अल्लूबन अपने साप बंग्यू में हुए उपन सामा बोल्ल-श्रीयोध १६०

न्दं करना

कृष काना, जीवरात करना । समात—स्था महास्त है वी करे नामने कोई जू की सम सके (ग्राधावद्वसाठ—राधाठ दास अन्छात करने कानी कुक्षमत में किसी की जू करन या रम नामने की महाच क की पढ़न परमा—सहमठ क्षत्रो अन्छ , यह की कुछ करता का कहना का नहीं नामन का किसी को उसम जू करने की नाकत जहीं की (मानठ (क्)) क्षेत्रक द एक्प

(गर्मा महरू **-व्यु-सकार करना**)

न्तक (भी) नकाना

नुक्ष भी न बनना, जरा भी प्रतिबाद न करना । प्रमीत— वर्ष में बदर में इक्का औरना दिल्ला हूँ । कीई नामों मू नहीं कर नकता (मानंव (४)---नेमफ्ट,३१) : जिन महान्या ने देवनाओं के इसाद प्राचेना करने पर औ पूर्व परना ने करके, जरा में अपनाम पर 'महन' की प्रत्यानकीय 'मनमं नना दिला, बही इस कुंट पूर्व के महाराग्य पर मूं तक म करें धट्म प्रशा—प्रदेशव समें १६ जब करो कोरे परी दिल हिम्म गया गया न करने म नी कर्ना पाना नहीं ।परिक निरक्षा १००

चुक पहना

बन हो जाती । अयोग--- है इत्यान में मुक्त पत्री के कहा



मारि स्वत्यमे हरि कथीर प्रशांक कबोर १३५ , बहुन बण पूर्वी अन्द्राक्त कहा सब के रोग्नस्य पूर्व शांक सुर १८९०

चहियाँ पहन क्षेत्रा

- (१) पुरुष का करवर होना । प्रयोग—जब कहं, हे पद्माह तथ की भी से पहन होच म न दम चूडी चुमरी०— हरिजीक्ष, ५७:
- (२) ननी का किसी के बर बैठ जाता।

मृहियां सैनी होना

मांत्र श्वानी , देर ज्याना । प्रयोग—म्यू क्याद्रशे आवशी ? प्रमृती—म्या कर्णनी वस मन्यां की बहा नाते पूषिया मेंची होती है, तो चौरत ही जावर्णा (गंगठ (२)—प्रमुक्तद, १९६:

बातर पोंखना

स्वतापन करती, हर तरह की वेशा करती। प्रयोध---प दर्भा मिनिक्टर के बनद राम्य यस कर प्रसादना सिया सब भ्रोत कियाता है। PS(0:12) समयक, 848

ৰদা

रणक प्रकार, अवट होता । अधोग----वन पर जनता की धळा च परी स्मार--वं व क्यो.२९५

धुना स्थापना

वेशकक बमाना, बोला देना । प्रयोग---वै चूना दुर्भ लगाईंगी तु कम्मी का कल गावती नुग्क--मक्त ४४। उद्योग और जुनवाले से विकास अवस्थ चूना नवामा मेरेक गुलावक, २२

बारे की दिविया से बाहर निकल्पना

अनुभव पाप्त करना, जानकारी करनी । जानन-पहले जुन की विकिश्य से बाहर तो निकल जाते, तभी वस कर कर बालने द्यागाम-देश संग्रहण ।

च्या कर देवा

(१) श्राप्त कर देना । इयोग—जीवन की पूरि वर्गत साम्प्री नित कृष्ट करों असी दिएसीनि हो होते हो गई हैं हमन प्रमण्डावित प्रभाव २५३ वाद हाती प्रणात सरम बन्द गई राम कृष करें। तार सुन्द विकास का क्षेत्रां कर का क्ष्य १९), जावस की फूट से बची कृषी मी कृष सम्बद का मी गई की उसे विद्यास विकास में जावर कृष क्र कर दाया (सष्ट मिक बाठ सह. ६१), विकार आज नुमने मेरी मापना बुद कुर कर दी (क्लिक संतठ कार्र), २६)

च्य कृष्टी जाना या कृष्टीता

(१) करपांचक वक बाबा । प्रयोग--किय विश्वन करने करने अपनार की क्या से वे चूर भी देते होने वे कि कृत्वन होने पर किए पड़े रहते के अनिधित कुछ न करने (तैना (२,—क्यांय, ३६); हम काले स की को बाद क हो उस गांव ना और भी चूर बुर हो गय (वस्त --नागात, १४३ (४४); तसकी वह रतवारी बाचा से चूर-चूर हो गती की सुर सुर नुदर्शन, २०)

(२) तथ्य होता. प्रचान । बाहत हम जिस रह उसकी ही। यह जुर बाहत जारी : कुमते0-हरिजीच, ३४६

ब्र खना या होना

(१) बायल भ्यान होना । प्रयोग—कुरशत मिली भी शी दिन मत हम फिकिन में भूत कुर रहत है कि अपी कर बिलिया की माह पाने अह मिठ-अपन अह. १४६०

(२) बन्पन प्रजारित होता ।

यम न बॅडना

बान होक व होती, पर न प्रता, पूरा न होता । प्रयोग —क्यानिया की बहुती में अभी इस नभी में पर आमें कि क्या बगरेनी के कुछ न केंद्रगी (बोटीए—नियला, १६), नवकर की क्यों की नित्य किया रहती की । परिकार बंदा होने के बारण कियी तथा कुछ न बंद्रनी की, घर म गद-न-गक कीन घरी ही रहती की (रंगठ (१)—प्रेमवंद. १६८

बस मिलाना – से बहा मिलाना

ठीक ठोक दियाब बैटाना । अधान---मै एसी चून मिसा-इंगी कि आप न कोई पायेगा (मूर०---भक्त, ४६); कुछ के चून है थिना देने रंगर्ने बंग में नवनते हैं मुनसिक--हर्वजीय, १२६

क्ष्म से क्ष्म मिलाना दे॰ क्ट मिलाना

कुल्हा जगोरमा

विकान के लिए प्रतिकार करनी । प्रयोग—यह की कीई निराम है कि यह नक एक न कर काम जगह ने न उसी । कम नक कीई चून्हर बंधोरना रहे (गोदान—अमबंद, १७५

कत्वा परस्र होता

भारता बन्द्रशः । प्रयोगः —हो सर्वे नव १८८ नरर पार्टः भारतः, प्रवः नि सही हो नाम रानी वरः वीलेक हारप्रोधः १६४

ब्रह्मा संस्की

यहान्त्री का काम। यदोन—योग्य वंचारी गल-दिन युक्त-चक्की में जूती यो फिर भी यह निवस्त्री ही समाध्ये यानी है। स्टाराठ—प्रेमचंद्र, ५३२

चंद्रहा बतना

कारत करने के निया पुन्ते में नाग जनायी जानी । वर्षात —सब कुछ देश जिससे श्रव तथाने पर पुन्ता पेनना, सूर जिसाल अपने (पापनी संबर-स्टार, ३०

ब्ला उड़ा करता या होना

वृत्ये की आग वृत्याना की कुमला । प्रयोग—सहता की बहु ने होटी कहा क्यी कोची जगर देना नो यहा कुछ। ठशा वहा कुछा का (सान० (१)—हेनकट, ६); कुछे, क्या बहुत कुछा नहीं ठशा किया का है (प्रीप्त १)—हेमकट, १९४

बान्दर सोहका

मुहरूकी विभावनः। वयाय-पर स्वा तम पुल्ले तोदन है 7 किनेक-स्व सक, ३०।

मला पंकार

रा प्राचन भाग प्रक्रोण के पुष्ट्रा र विकास स्वयुक्त स्थान स्थानन सीच का द्वार संदर्भण प्रदर्भ साम कहा का नक्षणीय न प्रकृत रहती से स्थान किस्सील प्रमुख

खन्या प्रजा

प्रत्याक्ष हाला एक गर्म साम मान

किनने नार्त विश्वेदाय और वेचवाल के बर्गे में जुनहे कुटने से बचावर है। कुँदे0—अठ नाठ, २५६) (वयर जुरुक—बहुदर सक्तम होनर)

ब्ल्हे में जाना -पहना

नम्द होता बहस्तुम वे बहना । प्रशास जून्यू और भाइ प नाम वह चाहन हशाल-बझाल, १०९., चल तू भी वृत्ते वे वा बोर आयो को भाणप्रशाला, आरसेन्द्रु वश्चन, तम सरह की सूक्ष जुना में वर्षे (जूनसेश्च-श्नरि-चोध, ११० जिस पूज्य अति व अति वंगी रंगी की यह ना। (१गा वह पह जुन्ह च (रोसर (२)— महा दे, छल) -

कर्न में डाडना

नष्ट करना कार दना । प्रयास-- क्षत्रीं दी, टिकट मनाजी, राजायना को मुन्दें में साथी (ब्रासीठ--वृंठ देशी,

यन्ते में प्रदेश १८ करते में कारा

बन्हे ने जाग अस्ताना

नर में जाना न बनना । प्रधोन- जिल्ल पर में क्लेश हो पृष्ट के अन्तरी है साथ, यह वे बीवका है पानी (ब्रुधगा). --देत सत. ३००

चम सेतः

नार जीच नेता पैस्त कीच नेता। प्रयोत—यह आदको न र^{ु प्}रान्त क करणार प्राप्त कर पट्या प्रशास विक्र प्राप्त क

बरा का उंद पेळना

न तन का प्रचान तोना व्यास प्रदेश में अनुसार पर रहा चाररत वा या कतमान से आया सिन भानी की, वा संदेश काई किसी की कहारी पर कर पीसकर पानी की (स्वयंत्र) स्वयं प्रदेश

नेवना को सना

करन्त्र । यस्तिक करना अवात कर बात आक्र हमारी जन्म कर्मक है। दुध्याक देवस्य सुद्धः

बेरंग होता

हरामध्या हाता. प्रथम कथा हा कहे थाड दिन केटी ।

पार्वार होते जनम भार नेती (पट०—साकस्य ११०). भूरवास-क्वामी कस क्वट्वी बन्दी बनम बनम की केरी सूठ साठ सूर नवर प्राप्त हो मरो ने चरो बद बाल फरी किर्द न बुशान की चरी (स्वत्र कांग्रा—स्वत्र), २०१), टाट केस नहीं उसट जाना जब बूग्रे बाट क कर बर (चुमतेक--हरियोध, १२६

चेका मृहता

- (१) वंबकुक बनाना । प्रयोग—काकादी को भेना मूहन बाले गोमादयों के दिन फिरते हैं। प्रभू पीठ संस्थानीय, १०४
- (२) केना बनाना : प्रयोग—स्थापन निवासहीत नृपी-सम्प्रभाग र तकर सर्वा-क्य र गंगर यह समाध समाध था को मृतना दनका क्षांकिक व्यवसाय का (सदम स्थाप --पदम समी, १९१)

चेहरा उत्तरमह

लगमा, जिला रोग शोक के काच्या जारे का निस्तित होता, सदाम होता। प्रयोग—नोमती का बंदरा उत्तर ग्राग—हो जिल जुके हैं (गोदान—संगक्षद, १५०); रेजा उसे देखती रही। समका बेहरा उत्तर नवा (नदी। —ग्राक्षीय, १२६) मेंने बक यह नुमा, तो सब बर के जिल ग्राम् कारा जनर भगा (बानव—हेंव प्रवृद्धि। ह

बेहर खिखा होना

कार, विता आदि में स्थापनर सियान साना। प्रयोग— रोमर की नेमने ही में सिये हुए नेहरे हुए डीन पड़, मां की आंभी म शायू या पर्व योर शिना एकदम ने सीट कर कार करे मने शेखर शा—भागे से १००

बेहरा जिल उठना या जिला होना

बेहरे पर प्रसम्भता का साथ जाना । जवागः —साथ उनका चेहरा कुछ खिला हुआ वा (मानव (फ) - प्रमयन्द, २०) ; नव तो सरा सं योगुना पूच सीध्य जनका किन यस। जयक—गृष्टे प्रथ

बेहरा बीला होना

चहुर क काम कादि भाग का दूर हाला । प्रकार का कर को नेकते ही में जिस्से हुए बेटचे कुछ बीले पत्र, जो की मानो सं पानु या गण और निमा ग्रमदम लीएकम स्राप्त पन्न नव (अम्रस्ट (१ —अम्र ठ,१००)

बेह्ना पीत्रा प्रदेश

नरना, सम जारि के कारण नेहरं का रंस वीका वह नामा । जनान-स्टारत्यक कर नेहरा क्ष्ये कह भया गोदान-प्रेमकन्द्र, १६) , जोती का नेहरा वीका वह नदा शासार कृष तम् ३८१

वेहरा कक हो जाता

नय सादि है कारण मूच का कार्र-कर्तन होना। प्रधाय--निम्मी का बेहरा बात हो गया और काबी का पत मुण्य- यू ० वर्षा २०४ : स्तना सुनते ही रामनाय का बहुए पत्न हो तथा कियाल- करेंडिक ४०

बेहरा स्वत्ह पहना

हुनः विस्ताः, अप्रत्यातितः ज्ञानानः, भेव कामने आवि के कारने पृष्ट कर चार ही जाना । प्रयोग — उस स्थाप पर हटाण् कमनः को स्थानर भीतियां का गृष्ट गर्थस्य स्थाह वा यह प्रशा कोनेरु— कि शार १७१ , वनक्या का करण क्यार पर नदा (बुदरु- ज्ञार सार, २०६

बेहरा हरा होता

(१)स्वासम्य कामसे चहर पर नावची जानी। प्रयोध-न्ययो सहरक्षण जब में मैं प्रथ्या हूँ धवर चहुवर कुछ। क्षणा हुआ। १-२ सहज देवचन्द्र १८३

()) अपना होता ।

बेहरे का कहना

बहरे ने शाक प्रगट होना । प्रधान-जन्म किए जूड कान रहे हो चेहरा कहे देता है (मान० छ) अप्रेमणन्द एक

बेहरे कर विशास बुक आशाः—रंग वह जाना

भय के कारणा कार्तिहीन होता। प्रयोग- केवान के बहरे का रंग कर नका (मानव (१)- प्रेमकाट,१३), मृश्यिका जिल्लीच्या, जनकरिया नवके बेहरों के विश्वा कुछ यमें (ब्रॉट०- प्रक्ष नाव, १६०); यह सुनते ही दीनों वार्तियों के बहरे का रंग उस नवर भिकार---वीर्तिक, १३६

बेहरे का रंग इंड जाना रंग केहरे का चिराम थुक जानर



खेली का रंग फक हो जाना

अवस्थाधित बहना के कारण जनप्रसाही गाना । प्रताम— सामृत्र नामित्री की रेका तो उसके पेटरे का रन कर हो दया , सुक्तुं — सुदर्शन २१४

संहरे का जनानायन बन्मना

पत्र ने क्षेत्र नगना । प्रयोग—किनी के केंद्रें की रेमकर कोई कहना है कि इसके बेहरे पर अनावायन वर्ग रहा है (साठ सुठ—दीठ महुः १४)

श्रीहरी पर सम्बाधि उत्तरमा

बेहरे से भाग प्रकट होना। प्रयोग—हमी नगई जन वैक्स कोट भाष्ट्र मोमी, करवे के मन में गूरे-गूर भाग प्रथम होने हैं जिसकी सम्बोर क्रथम के बहरे कर देनरे शानी है साठ पुठ —शाठ मेट्ट रेश

बोबरे पर पान नवना

मून मनीत होता । अयोज---मैं आया होत-होत मंत्रीत क्यों पहले---पून उत्ती बेहरे पर (प्रथनो सक्त--राष्ट्र सम

(अवार महार-बंहरे पर भूक प्रविधाना)

सेहरे पर बारत पत्रना

भारत धनराम हथा होता। प्रयोग---नीमा स्थानक जन ही मन बम्बरानी है --वेहरे पर बारह धन नमें है त्यानीत --रेगु, २००१

बेहरे क राम पुत जानी

र्षातकुक कात के कारण कहरा स्पाद हो माना। प्रधीय—वार्कर के चेहरे पर सन्तानक राज पूर नई मालोठ नेतृ ३४८.

खेहरे पर शिक्षत व भागा

कीई भी दुन सक्ता प्रसादि के निम्मु पेहरे पर न आहे इसा । प्रमान दूसर प्रतिप्रतरन दुन्ह स्थानका दूस। है स्थान पर सकत्व है कि देशा चुटर के दिस्स के आ नाम भूगेक समस्त्रमां २५४

बहरे पर स्थादी पिन्नत

AR BOY MUNICIPAL CONTRACTOR TO THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF

का आधार निया गया था. उनमें राजा का हत्य न थ। कन्त जेहरे पर मियाही न वि.से (कोटो०—नियासा.४९.

(नवान वटान-बोहरें पर स्वाही पुनना)

चेहरे का हवाई बहना

बहरे पर प्रधारत के जिला पाला । प्रयोग—पत्नों के पृष्ट पर हवाइया कर रही है 'मैलाठ-रेषु, ११७) सभी के बेहरी पर हवाइया करने लगी 'मानठ (२)' प्रेसकट, २३०

नेहरे से उपक्रमा

नहरं ने धन्य होना । वर्षान—नह मान्सिमान हो उन नमन भी उनके नम ने द्रपक रहा जा, नमा क्याता के हरप ने कभी विश्वत हो सकता या शाना (१)—प्रेमचन्द, इप

र्यत की बेमी बजाता

न्व नीय वे दिन दिनाना | प्रधोत-- पार-पान ह्यार वहन होते हैं । अपने पर नेड की नरह बंडर हुआ जैन को बनी जनाजना पगठ (१ --प्रेमचंद,९५), हरहे के बीर जैन की कमी बना सुरु सुत--सुदशीन, प्रद

(समाक मृत्राक-व्यंत्र का समस्ता)

यंत्र में कटना

नम से नमय भोतना । प्रयोग—तम भी तुम्हारी को भेग म बदनी है कामना— प्रशाद, प्रश

वांच बोस्टबा

बॉनको । प्रयोग—मंबद्ध पहले पाना धाहब उठे धीर बन्दवी इन्हें हो जीव जानी (माठ घंठ (५ —मारहेन्दू, ५६१)

बाद होता

पहा बुद्ध होता । प्रयोग—वादिकसोर—शुर बोह्य ही रह । ए तीहर १९८६ ५४औं । अध्यान जिल्ला आह इस देर । भिन्दार कोहिना ४०

मानमा व्यापना

रनारातः । प्रयोग सम् ३० जन्न नोपने अ इपारा व अर्थिक १४४

वार करता, जलाना,—विस्ताता

घोट घलना

आपम में कहा-मुनी वा मनोपाणित्य होता। प्रधान— ताति के पापन सवारों में घोड उसमें जिल्हें कहें बरतर स्वकर बोट बेनरह असती बोट है तन गरी क्लेट्रे पर कुमलेठ--हरियोध,53

चोट बलाना

वर्ग स्त्रीट करना

कोट पर बदाना

यहाबा देता । प्रयोग---कलो ने गरी बीच करवल बाव को बोट पर बदाव: 'परलीक- रेणु, ३२%

स्रोट विवास

रे**ः मो**द्ध करना

बोदियों होसी जानी

धरमान, दुर्शने होनी | प्रधीप—नीच को तो विठा किया सिर पर क्रीच की चोटियां गई ओबी (धृमसे≎—ह.र.शीऽ. 62 ।

सोटी कर जाना या करवाना

इकास नध्य होती | प्रयोग—कोट का बह ठाट करनाकृत हो बाट में जिसकी कि बोटी कर गई (कुमदेश—हरियोध, १९७); जब कटोरे का कटा बोटी सके किस नग्द हव बाज बोटी की रखें (बोल)—हरियोध, ६)

बोटी का वर्माता एड़ा तक शामा

विति परिचय प्रकाः । धर्माय-जन्म स्रोम राजे-राजे को मुक्ताव हैं - ४ वॉटी कर पनीना प्रश्नी संस्काला है तब भी मुद्दर सही होता (गोदान-प्रेमचन्द्र, १९)

,^{नम्ह} स्वांटा का क्याना एडी के आहा_र बोटी का होना

सर्वोत्तम होता । प्रकार - हिन्दी के भुत् प्रसिष्ट दश्व काटो के शास्त्रोतको का सन है कि हिन्दी का रीनिकासीय साहित्य ज × पूर्व-सम्प्रकारीय रखा-हृद्या प्रधान प्रकार की भहर का स्वामाधिक परिचाम है (कवीर-- हु० ६० दि०, ६७, और (क्वाच के बीमन में यम प्रकार मनसर मा कि इन्हें काटी के प्रार्थनियों में इतना सामान मिले गोदान- प्रेमकन्द, ६५०, प्राविद्यम के मैदान में अपने तो बोटी के संदर्भ की बोटी पर भा समके (प्रमुप्तान प्रमुठ इस्ते कह

बोटों की कान

बंदर क्षा । प्रयोग--भावनी में नाव रीक्षणा म तब है वह यह बान चोटी की कही बोलक--हारणोध दे।

मोदी की लाज क्यान

बाह्यसम्बद्धाः केट्ड वर्षः या पर्वे बनाये रजना । प्रयोगः—जन्न करोरे कन करतः योशे सके किम नयाः तव स्थान योगे की शर्वे (शोस) —हरियोधः वर्षः

कोटी कही होता

नारम या परेच का आदेल होता। प्रयोग—कोशका जिनकी रही का है यह है दिलेगी बाद में जिनके पारी। इस्ट मुनवर मुख्यापन के करी कवान उसकी हो गई बोटी करी (बोलक—हरिजीध ६)

कोटा पैरों के नासे दक्षता

नत्थार होता, बेबन होना । प्रयोग---विसे बुक्मना के बंध के बावे रहन को जीव न आभी हो अ अ जिसकी करती दूसरों के पैरी के दीने बंदी हो अ अ उसे में सुसं बड़ी करता जोटान- प्रसर्वद १४

(यहार यहार-सोटी द्वना)

खोटी हाथ में होता

दबाब में होना । प्रयोग—अगर नवसे न दिये तो एमी सबर भूगा कि वाद करने । इनकी कोडी पर हाय न है गोटान—प्रेमकन्द्र, १६९/३ अपनी कोडी हाथ या जान में नंदी क्षतिया के बार से प्रोक्त सुनीम बनने नकी (है देव----या नांव १६५

स्रोर का दिल जन्मा होना

बोर के बन में घर होना। अयोग—अवट दशा नेते , बनर बोर का विज जाका होना है जान०(श्र≠—क्षेत्रकन्द्र, वश

बोर की वर्ष्टी में तिनका डोमा

कोई श्वाम करने बाले कर अपनी और वे ही गर्थक होता । प्रयोग-- क्षत्रिकार ईमकर बॉले---बॉर की गाड़ी वे लिएका (विमाठ--कोडिक्ट इंग्यू , वर बंध्दे दोस्त बुध सामकर क्ष्यते विभ-बंध की दावी के निजका म वृह (कसाठ---स्प्र,१६१)

चोर के घर धिकार पैठमा

भूत स भूगता काली । अयोग-वेगी वेली निम नई । भीत के पर में विकार देश (१९०० १०-वेगफन्ट, ३५९)

(गरा० पृहा०—कोर के कर सोर केंद्रमा,~कर सोर प्रकार)

बोर के बहारे माथ को दंद देशा

होती के बरम निरोध की देर देना । प्रयोध-चोर्गन साहि क्षारि के राष्ट्री उन्हों भन को स्टाबो मध्यप्रेष्ट २ -आन्तेन्द्र,५६८.

भीर-कोर मेरेमेरे भार्त होता

पत्र एक म हीता । प्रशंक⇔ बाल को व बचाई हुँवे बार-बोर बीतेने पाई वो होते हैं गोदाल-बेमकर, १६९)

न्द्रोरं बरजार

भौती में विकेतियार सीवर होता । प्राप्तिक-भारते प्रमान विकास प्रमुख्य की अध्यक्त आहे कर करा आहे जानार कर माज कर अपने के मेरेट-स्मातिक अस्

मोर में नारा करने की और भारत में उत्पाद रहते. का का स

भारत का कि क्षेत्र कारत प्रताप =

आ व दिया नाग्यी, विकरत देव न नाम, देन कोर सुनि स्वरत को कड़न क्षेत्री हो बाब (प्रांच्या क्ष्मण स्वरूद, १०३

चारंग उपारनी

कोती वा अंद को प्रयत कर देना । अयोग---कोरि ह देरि इकारि के कोतन व कहिते कानि 'स्' सा०--सूर (इस्प्रह)

शाला भर होना, अस्त होता

्रवान मृद्ध हो जाती । प्रधान—सिमानन के ठीक य वन संगा पोलार बनाया है कि उत्तम से गुलाक पन यी पुरार नियमतो हैं। जेरा तो भीना अस्त हो ध्या स्मानक १)—प्रशानक १५६ , चंक ही बाम्या तथ हो जाता है, भागों सम कानी है सीदान—प्रमानन, २६०,

नोमा बदलका

- (१) विकास के एकप्रव परिवास होना । प्रयोग-सार। गाँव गही करना का कि होती कर बण्याद कर देगा जर्मन निर पर काम पहल ही मेन ऐसा कोना बदाना कि बाद देवने रह यह जीदान-प्रेमकन्द, २७
- (२) तक राध का त्यान कर दूसरा नेथ भरत्या काला ।
- (1) पृत्यु को पाल्य हाना (

वाटा अन्त होता

र॰ बाह्य मा हाना

नार्का शामन का भाष

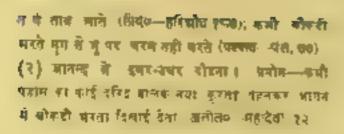
बहुत श्रीश्व नाम या शनिकाता । अभीत-जब हुमारा उनका वाली शामन का नाम है (राष्ट्राठ प्रशात-राधाठ राष्ट्र, काला अवस्ति स्था की और एक बीट गर्म वे काली-राजन का नामा है स्थानठ स्थान-प्रेमकात, है,

बीध कृता

सभ कार्य के बक्कर पर जाटा संबंध अर्थि के हारा समीत पर बरन का रणन समाना प्रणास नोपक की की अन्य सम कोड नक प्रणास समय देखा तुल्या ३००) से नोम साम कुला कृतिकार करणा १९४

चीकरा धरना

राधिनारण को से नहीं से प्राणका प्रदर्शन यह को अरत व नोडक्षणण को ही। सन्तानन समन की तो



बॉकड़ी भुला देना

मारी हरको भूकः दना । प्रयोधः इनको सारी बोक्शे भूका वेनी (मानव(१)-प्रेमकट, ६०;

स्रीकड़ी भूल जाना

असल बाज न करना, निर्देशिदा जाना। प्रयोच—मेरे शहर न याहा हो। यह नान-भाद और राज-माज और यह भाद मगट-असट दिनाई, जो देवले ही आपके व्याद्ध जा है विद्या के स्था में अपनी भीकड़ी घूल जाय दशांक हैंआंक दिशा के स्था में अपनी भीकड़ी घूल जाय दशांक हैंआंक दिशा मुख्य अ स्थायक दन क्या की देखकर चौकती घूलन क्या मुख्य दुव देशी रहद क्या हना भीकड़ी अगर भूले तक उद्यान-कूद और एक करना कीलंक— हरियीध हद यह की उन अज्ञान गंभा की बहार्य हुई कि प्रहा पर भी गर्म क्यान संभी उनके हाम में भीच पता ग्राहर पह ही एक प्रयान संभी उनके हाम में भीच पता शाकर पहड़ का (मुलेरी ग्रंथक (क्री--क्रूसेरी, देश).

वीकना होता

सतर्क होना । प्रयाग वह देखन ही बायवर बोबन्स हो बया 'भार होत हैं) —भारतेन्द्र, १६७) : बृश्क बीबन्स हम् बोटीठ—निराक्षा १०७)

र्बोकले कानी सुनना

साववानी में, ध्यान से सुनना । प्रमोध—शोकने कानी गुना और योग कार कार देशा ज्ञानक वेशवाल १००

सांकम रहता

भागमान रहना । प्रमोग-सो अपने बहुत प्रोक्त नहना नाहित् (भार ६० (१)-मापतेन्द्र २६): बदाराम भागो बोर के ऑफस यहते वे (तिस्ती-निधना, ६३

58 0 **2 —**185

कीवार अन्या करना

- (१) दुनाव करना । जयोग—साम की कहती थी, जब सीन्या ने कहा था कि दक्ष में क्यबों का स्थास सिकेगा, कि साना सार्थने मी दन की नाम सकत हरिहार जाऊगी, और सब भी चीका अलग कर नहीं ही जिनिक—शंकराव, १६१/
- (२) बडबारः करवा (

न्त्रीका देवा

क्स स क्षेत्रक परित्र करना । प्रयोग-नाव गील का चौक रीचे, बरक अमर्थत की लेखा कीची कवीर प्रयाध-कवीर 289

र्वोका समामा

बीकी देशा

- (१) म्ब्रांनी करता, पहला देशा । प्रयोग—शहरागत ! इक्षांने भी बहि करत है कि स्थानाम में आब चौकी है क्रम माठ—सब सरव,2९२
- 📳 शसूर मन्तार करता ।

व्यक्ति पदना

- (२) यहरे बंदनी (

वीका वैद्याना

वहरे के जिसे निवाही जिस्सा करना । प्रयोग---वारी जोर देखों की चोको होता ही छैम माठ--क्रम सा०,१६

जीवद पर प्राचा नवाना,---नगरूना

विजी का बादर करना—सेवर-मा होना । प्रयोग— क्ये वर्ड सरावति जनकी चौकट वर साचा रगकृते कर्ग 电影中

तमत बर्जन के बंद कि माई (एस०/म्)—सुनसो,८३४)

क्रियापर

इहाना । अयोग-होड न निषय किराम मचन नगत मा बीबयन (शामकावास)—दुकसी, देशप्र/

चाँदह पुत्रमी मे

तको सन्ते में , कभी भी । प्रयोग-मेरे चौरह पुनती में कारी कोई बाने नहीं तथा बान में बाऊ ? , जहांतर--व जोशी १०

जीताचा जान योगि में भटकता

अस्य-पुरुष के बंबन में पी २८मा। प्रयोग—सिरु सुन कार्यन दल अने नेक, चीरावी सब नीया केंच्र (क्बोर एखाल-क्योग दश्य

चौगुका होतर

(मानंत (फ)--फ्रेंगधन्द, पुरुत, ऐना विरामत ही कोई आवामी या किसने उनकी जीवट पर करनक व तवाया हो वैभाव देमचन्द पुष

चीलर पर साथा साहता 💤 खीलट पर माधा नवाना

चीतुता होता

(१) प्रधिक बतना । अनोध---वर्ग तमने काम रक्त कृती न हो बाद केंसे बिता त बीमूना करे । बुसरी०—हारंबीध. 127

(२) हिम्मत बहरी ।

बाँच के बाद को तरह छोड़ना

कभी न रेकना । वयोग--वो वर नारि सिवार कोशाई।

छंगा बना फिरना

भगर बनवा । अयोग—सामर कि चौपरी अनवाध दीन को काम अना या जेकिन उनके मामने करने नरः वह नक बहानिए, इन्हों सडका की , अय-किशय का उच्चक कर कहा) थो थी कर पीन हो। यह भग उन को किश्न ही कुम्मीक--निर्मात 83)

छंटनी करना था कांटना

काम करने कामों में हे कुछ को निकास केश । क्योग — प्रथम स्थान में उसी करन काशे हा गई हा तर पहल हिल आओने या क्योगे हैं , मोटोo—निकासा, क्ल

छंडा हुआ

च्या हुआ धूर्त । जयोग---वहां तो वितने हैं, एक वे एक छटे हैं (मानः (१)--प्रेमधम्द, १३३), खंटे वर्षान ने उताते हुए कहा × × (परश्र--जेनेन्द्र, ९)

छंडे मुर्ग

बहुन मन्त्र पून । प्रयोग जाता किसी सानहर्ग र अवरण मे स्थाबा जिल्लास और जुगामद की मैं समक्ष अस्ता है कि यह श्रेटा हुआ वृग्ति है सर्वे प्रेमन्यद, ३१६।

रङ्का शामा

भी बन्द्रव सीय वर्गीय सामें न । स्थित योगी स्थित बीप ही, ए एडि इस्त मेंन द्वारों रज्ञ ए दिलारे के निश्च में बिनायों होंगे, में मु एडे स्वर्थि, मैंसन की स्थित सी स्थित स्वर्थ—देश, 85: मामने जॉन बंदर सामन बीद स्वरं कृष राज्ञत कामनि स्वरं (240 कदिल—यनाठ,2); पर देख सर्जुंग को निकट सम्बाह में यह का श्वर (3120— पुन्ते, 80

छका एकाना

हिस्मत पस्त कर बेना । प्रणीय—जान नीमरो के शुक्ते कृत दूमा (मुग्न-वृज्यको, २०१३) वारे आई. तुमने सी भाग यह पापरा दिया कि वड़-वर्ष पढ़-निवर्ष के खुक्त देश दिए जहाजन-वृज्जातो, २३४); काशार-महत्त में मेरे प्रस्ताव को स्थीकार करके वचनंग्रेट के खुक्ते खुक्त दिए (गान हो —ग्रेमकार, ४२०

छका छुरमा

- (१) वृद्धि काम न करना । वर्षाय --किमानों में यह योक्तमा भूनी, तो व्यक्त शुद्ध यह (कर्मठ--मंभजद,३६६) स्वकर प्रेमकृतार के सबके ब्रुट वह किसो--निराला, १२०.
- (२) दिस्पत दहरमा । प्रयोग—धानमगीरी शर्मादद है बन्तवानी मीरियों को सवाई बदने-काने मेरे तो दहरें पूर कर माठ याठ—किठ गीठ, १४६० दूसरे दिन जैमा बढ़ हुआ देवने केंद्र की बना के सुनदे पूर नण इससीठ- यू ठ कर्मा, ३९६



पृतंता । इयोग—यह विनक्त है वीचा-सारा मू व वना है स्थान पंता (वीटक—हरिजीय, १६२), जीको सभी सनामती तम है कर का सक्ता-क्या नुरक-भक्ता दशो, गीमा-सारा वर्णक सारमी मा × अ स्वरूप-मना न प्राचना का मानक (४)- द्रीनकन्द १८८

रहक्का-वेजा भृत्यमा

- (१) होवियाची न सर्वाते । वर्षात—सभी होती हेती स्वरूपी कि अ द तीन सरकान्या वर्ष भूग नाद (स्टाठ देवार—संधार, दासं १४-१५)(—)
- (२) वृति का कान न करना । प्रयोज---वेलिए प्रयोज (१, वें (+)

' खुकको होन्छ मारमा

कोई बड़ा काम कर नेता , नकतना वानी । प्रयोज— बीरअपूर्य कार्यू ! यह नकता नोतिस दुन कार्य वे भी सकता हाथ मार दिवर विस्तीठ—रेथु, ३३१

野技術状況

कत्रणामा तूर-पूर रहता । अयोज---वार ! क्यो खटब रहे हो रे (रामां०--वेट प्रक.१०७)

धर्डी का पूज बाद भागर

बहुत हैरानी होती है प्रयोग-न्दी दिन में बाने है आहे पहते ही सही का पूर्व बाद न का बाव को कहना बीनेक-राक श्रक, क्यो; बीबी राजी मानूनी की बरेर-अनी भोक देनकर ही कही का पूर्व पाद बाता है (तिलही---प्रसाद, प्रकृत कह होने को ऐसी बरकार मुनाने कि सही का पूर्व बाद की बहता (गर्वन-प्रेमक्ट 200

सर्वी का दूध याद कराता

(१) बहुत परिधान करना । अशोध-सद्यास कर नीती इसदा न मेंन उसना पड़ी का दूध पान कराया परलीठ रेगु, स्वभूतका

िन र परित काम नव

वक व मुझाव । साहा का कुध निकालना,

छठा है व पहला

- (१) भाग्य में व होना। जयोग—यहियो पर्यो न स्थी स नत, रिमृजजूर श्रवंश साथ को (विशवo—सूलसी, १४६
- (२) स्वयस्य ए न होता ।

हारे आउमें का मान्यम्य होता

भगवा होता : प्रयास-न्याठ-वाठी मोदि काम्ह कृतर जी. निजयी कार्यन ग्रीति तोशी है सुन्सान-न्या २३८५)

छडें काब में पहना

नीयरे व्यक्ति का मुक्ता । प्रयोग—श्रद्ध क्षत्र यह परत कहानी वाल सुक्तार नाथ वल वाली (रामव (कार्ड)— तुम्पत्तो, इक्क

धन-कार उहाका

एक्संस्था प्रकार निकार होता. का मान्स्रभ्रहोता पृथ्यती होती, विरोध बाद होता है प्रयोग-लड़ से एक में सुनीय का प्रकेश रिश्ता है बोनेक-संक्षात, हुन्य इसंस्थित प्रदेश में प्रश्नेय का मध्याप प्रहा (कुन्नोक क निकास एक में किन्सी इतिया में निम्म बाहता है और नेती तीने को फिल्मी मुनियर में स्थीम का सी नाना नहीं (पेंस्ट्रें न्वाइक इक्क्नाइक

क्ष्मीम का सम्बन्ध होता देन क्ष्मीम का अँकेन विक्ता होता

उर्गाम होना

विषय होता. विष्य होता । प्रयोग न्यवर दोलों वैस प्रकार वर्ष प्रवास है व तावत व संद्र्शत प्रकार २३५ ह ४ वर दो होड स वरोब-वर्गव एक्सेस इटको अवस्ति पर स पत्र वीना प्रशास तिकोता प्रधान देवा स्वास स नया प्रावस्त्र भाषा हुई० क्ष० ना० १६६

छर्मासी होता

उप-सरया

गण्यम्य । अयोगं —यात्माः, चेन्यमाः, सादि अयमं आ योग गुण्यमी की सण-सायाः (उते) भाष्य की स्मृत्यक—का सक, १७४)

छनना

- (१) भारत्मीत होती । प्रयोग—बह बाहर निवने, ती नायकराम में गुस्तः—केमी सुती हैं (१४० (३) —प्रमाधन्द २०४)
- (२) जुब बेज-क्षेत्र होना ।

छप्यन-छुरी होना

- (१) सन-वपट वानी । प्रयोग-सामने केंगी मीटी योजी बोसती है है और, सन में बल्पन खुरी (परसीठ-रेपु, प्रपश्
- (२) अव-भौति और साय-पुनार ने नीय प्रहार करते.
 वाली ।

छव्दर पर रख देना

सीय देन? । प्रयोग—रिमानदार पहतर को ती-आपटनी साहत दिनी नरह बड़ी करिना में से अपना कि बादन हो । यह प्रमान सम्बद्ध है कि हम देशनदारी को साहर पर राज बईमान ही बहुत काया नटीर गुम्बार बनाव मह नि0—सीव महा है है

राज्या काह कर देशा

अप्रधानित बंग से देना । प्रयोग—नव वह देना है वी स्त्रयर फाइकर देना है (कठ०—दे० स०, २२०); बुदा देना है तो प्रध्यर फाइकर देना है (र्थक (१) विशवन्द १७२)

59 O P--185

छगोता करन

एका जरीर की न मीटा हो धीम न रूक्यां र प्रधीत---वृक्षीत बाउन्द भरी, वह वृद्धि से सरी, वह खरहरी वृद्धि बेत पोरी शु० सरु--सूर, ३३६९) खाबु १५ के पृथ्ध अपर भरीर धररा (धालीठ--४० दर्धा, ६३), किन्दी सुपरिटेवंट भन्दा खरहरा अवस्य था, बहुव ही विचारतधील भीर बाम आवी (गटन --प्रेयचंद्र ३१४)

उन-धंद **काना**

लंब-कपर करना । प्रयोग---'हरिशीय' समादंद छोड़ी नी बदन बांचे (मर्ब०--हरिशीध, १६४

अल-संद् का **ए**सदर ह् लेगा,—स्ना

सस-क्यार का भाष मन में जाता। अयोग-वार-वार रिकाश इन क्या-वा दावर हु को शत्मव द्वित्रोध ने पर्या गार में कर्मा ते उपका क्या में धुना है छुनाहर (समेठ-वृत्ति प्रीष्ठ, १४

सन्त-संत् सूना देव सलसंद का ससंदर शता

उने व कू जावा

सन का नेमयाच भी व हाता । प्रयोग—सरस कुमार कुवत सन नाही ,रामक कात)—कुलसी, २४४।

उठ से सार्ग हुई

धायमा कपटपुर्व । प्रयोग—नोने मधुर ४४० सन मानी रामकावास)—मुससी १०१.

हालको एइका

प्रमह होता । प्रमान—सपराधि में वाषिय दात परे नहवारि की अपने परे छत्तके धनेठ कविश—धनाठ, १२०:, सब-विश्व कार-द-उसम की तरम वहि सन जन आसी साथ सब्दरी कारत है , धनेठ केविश—धनाठ, १५%)

कुलके हुए से साम उदाना

बर्बाट होती हुई बस्तु वा काम में भी कायदा करामा । प्रवीम बाबू बालियराम ने छलके हुए दूप वे मुनाका रकता है (दुर्द⊶क0 नाट, १३०/

- हा हमा (१) बान क्यारवा-किनी कात वे एकी वयाना र
- प्रयोग अंगवरेटर सारची यर वर्षण याने सार वे निही विकित्त विकास स्थाप विकास स्थाप स्थाप स्थाप
- (1) word uft treeft at afer ein an an ein TOTAL SE
- (१) काम करते गानो में के तथा नी विश्वत वैचा ।

क्षांद्र करना, वेता

errer er eines bei e. webe. Gif ebem ablente with which may make the same the faretal water हाँक बार्च वर्रान्ते कराते हैं पुरानेतान कार्यन कर वह शिक्षक स - कुन्मी १३ । बोधवान व सह व दि त्वती, की बीच की सामनी उन्देश के विकास कर

क्षाप्त को मध्य भाग गरमा

हुए कारत बाल रहता । प्रशंत कृत राज्य न्यान कर ती औं बर बार हुनने के फेल की संबंध कर को दिलों हा देवल को बोर खात वर्ष देवले बाद व लेके

\$8000 - EU 191

क्षांक में गाला,--क्लमा,-- कंपना

कारित क्षेत्र, की व मिता । प्रतार उन्हें करोर करने वर्ष

इ.स. .पुरु ना नपी कराय से पार्च पति प्रदेश कर

. .

बार्ग स्थानी या, जान अन्यो पाट यही, नेवान, नुवा, इत

ますれ 管理す

TREE WHAT

स्टब्स् न सुन्ताना

14 44 4 F = 4 (4) (24) (25) P 1 2 1 72

बाह्र व हाते देशा

mental a contract of a second

य कारण ही, वर्णन अलेश न्यानन ही बार्न हु वे बाल क्

तांत्र से क्यान

र । सामा श्रामाना

ਭਾਵ ਜੋ ਵੋਲਵਾ

रे प्राप्त गरमा

कुष्य स्टूबर

। १, ६० रहता , रहता । इत्रोव-वरी वसूत हते वर करती. यू ती पता के बात भी बूत बात न्यून were to the other more from all famets the

करत न कर कर कही किन क्षण ही कांगा कैतायीं।

(v) sere (%)

a b a स्वर्थ से अवन्य प्रशास्त्र रहता ।

वानी श्वयम

magaza Day I managa and an area

A AN ARRAS

4 4 4

4 mg 4 p 42 mg 1 F 100 100

then street you

F ST THEFT

व्यापा द्वार

STATE OF THE

DESTRUCT OF PARTY AND ADDRESS. ches cs s s -

the high of the

Back Ritt der A. Late.



या पानी नहीं नीकंत-स्तिक्षीय ह

खानी करोर होना

wille gen eine mibe i mite. giem wille fage. परित्र कानी । राज्य (बाल – कुल्बी १४६)

क्षरणी अर्था कावर

gen al erte ment : Beit and ere ufer ufe क्यानी गांगंड (बच्च अपूनवी प्रवत्

रहाओं काकार

the state of the s

MR RESIDENT SERVICE BEGE AND MADE PLY पीना महिपानांव की बन्धांत है कहती बंधी बन्धांत वर्ततन देश भारकति दाम है अतिक सक्क-व्यक्तिल, ३००

छानी का करेता होना

age gweiß ein ; wie-beig gefage if भारते का धरता का अपन- इ व कार्य, प्रजा

स्त्राही का वाक

- (३) वहन हमारा । नगरन—बान हम क्रिके बहुत ही है। क्षत्र केल काली का बाहे । काला पूजा (काला) (वेटकीक) ton (n)
- (६) एक्ट रास्थित । प्रथम---र्शयत प्रयान(१) में (२) र्जनसम्बद्धाः --श्रामी का कथा

क्षानं का शाह नोहफर

क्षांत्रात परिभाग है। प्रधान-बंग इसी क्रांधे का हरत लोग हर कोगा जो ग है जिल्ली -प्रवाद ३५०

मा । इतन्द्र मूहरूक ह

क्षाना कृतिका राजा

P1 P1 - 1

स्थाना चारता

* * ** * *4 * 76 16 17 ---

TANK A LANG A WEST

An An And was a total of

- प्राप्ता क्षत्रका कर हैना

and the second

gret grat eine bieter & dare gner 44 4 400 Ed hower 414 A war ar tar of tar a square

C - C - + 1 4 44 4 4 4 4 4 4 1 to 41 to 4 The same

(3) for always got group, gate-untoly gate are and on it force while it the b their strate to

- (I) WAS SERVE
- (B) OC O WHEN SCORES :

Apply to he was the beat. process that and great a processorial all more

TT AT A POST OF THE PARTY OF THE PARTY. दिन दिस्त बान प्रोप काले हो है क्या यह थी। बीचन

Fiele 154 aft att gigelt mitte an ber ?

er aft geft en ur et ju meit ber gan am. Mr. JAS

क्षानं का का राजा

बहुत हैया होत्या । अंबाल - बारव अंग्यून और बोरवार that are an of many other things the

कुर्मारे कुरुपुराका

मी से केशा होती है कराय-देववर बाय प्रांत की topole approved more and mich spieler gelieble

का निर्मा सामा पर हरा

275



किरी श्रीतरा अपूर्णाविन्त्रारी (वस्त कांस्त कांस्त the graduates made कारती नहीं 'बुमरीक- हरिजीव, ११था, विस्तु वर्ष वहीं । द्यांनी में प्रदेशिया वर्ष वर्ष है । लियाई - उपास, ३५० (समार मुहार-प्यानी सन्तर्भ क्षेत्रह,- में अंधरा धश्या ।

श्वानंत विद्या रे॰ कार्ना क्षत्रमा दोगा

क्षण्या विक्रमण बात को काट होता । प्रयोग---वर्ग मिर्ट कुल्हाल के at a california for a second second 116

्रामी अध्या —क्वा - सुकाला

(1) बोच में हुपय संस्ता होता. बनार होता । क्योर 🕳 बाल बार्क मार्गेंग आयो मीन बाजी स्थार (Qu mo-Br blintt, the tin of ale of) भागते । साहित्य सर्वाहि स्वयंत्र प्रति प्रार्थन नेतान (त)—युमधी, प्रण्य , तेष्ट परी वर्तन्तर कांटक रेक्च बीलिय की जीवको रहियों करें अनक विकृतकर हुन, farginers span for and about of meting and to be the more to sort or at श्रमने संकर्ता है। इकुछ -दिश्वम, प्रश्

(a) for your contract over my many With the time that have the winds SEED FO AT MAIN THE TAX WAR. कामों की काती करवाई है बालिए-नेपूर्वका शिक्त प्रयोग (१) में () मो [र भोगं की वर्षकरता हु^का करण कर करण I provide the transfer of

खाना इन्हरता

देश देश प्रसार लगा देश । ज ला ला प रमण की जात । स्थार कार _वर्ग संस्था M2 2 errifente fenie egere m un 1 MYSHER'S ATE MAN THE TOTAL

Girat मुकाना होती परना या होता, शांतान शाना व्यागानी

कार्ति विकास । प्रयोग-अनोर करी भरी किर्ट हुई की राह्न, ef po aben Gento- Bi untb. biffe fier बीचम कह अपने (राजा मु नीमनी, पन्ते , पुर बरदान भूप वान बाती । बायह बाद मुदापट्ट करो (राम० १४)-नुनती, ३५३) , मु रे विसुरे fain, feit fein meint femant mot felt urby wego... be pog. , fred af ferrift wiet नगढ़ के बचरर तानी, तेरे बाद बादी है। बाह्यार्रात पर mitret iber aben dette get ; mit, men fein हेरीको स्वाने देती अर्थ हैरे अध्याताल ह - महरतेन्द्र, ३३० . की हमारा को अन्तर है। जो या किये बानी अहा बानी रती वालेक हरियांचा १६३ , अब जरवर के दिले म प्रयक्त करना फरणाये च ३१ तभी मेरी बाजी - बुदाराती, वरी काला भी कृष्ठ--वृत्र क्यों, १०१५ : ३५ क्को रेक्टर केरी कानी हमी रहेती (विका-क्रीतिक, ६९) . वे वार्व १९०ो ही परिष्य प्रविद्या और विके F W. 27

छाचा रकत् रकत् राजा एक इस होता यो CR C.A.

et to the period of the period 1 401 -1 51 4 7 7 7

green all bie green ं स्थान रकात एक हे ब्राहर

क्षाना दरका

gradule you bread a subay abo The Person of the Person of

Green Ber memr

Complete to the Action of the Complete nd w Frequence da me de de 25 254



भी बर कर भारत मानवार सामा गरित करने द्वारात प्रश्न (क्षेत्रिक द्वारा --रामांक देखा, इंप्यूक), कुल अवेरक क्रम के दर्शकों ही नहीं कर कर्ष काली करने करों है हैंक संस्था अर्थकार अर्थक

(२) पन गी प्रतिसामा गुरी करती ।

खानी हेवी प्रका देव खानी जुदाना छानी हेवी होना देव खानी जुदाना

काती कुमना

- (१) हिम्मस होती । स्वरोध—द्वास्त्र सन् कार्याः हे इन्से इन्सी धार्ती अब तक नहीं कुल्पी (स्पेशाः) —सीव दास, १९६)(=)
- (२) पिना में पृष्टना बागीः। अयोग---देखिए इसीम (१) में (+)

छानी डांककर करना

वेती देनगण पर रहता । प्रणाण करा देवती हाली हाद भीर हाय प्रशा उदाकर बोगो की विश्वास विद्या गांध प्रशान र भारतेन्द्र प्रश्च विद्याल को साची त्या र व नानों कर्मण कर्मण पर न रस्त रंग रंग पर देग पर दे गांच का दिक्रण है दह भीर जो तक परत देश कर है क्ष्मण क्यांनी साम में बहुद सम्माने हैं पिठ पीठ- गांठ मांठ मिठ, देशकी, दूसरा चाहे बते का सब वहें हुई वर्ष गांद क्यों स क्यांनी कोच कर विभिन्न-क्षितींस हुद्ध-भार ने प्रश्नी बोच कर कहा—क्या पान्ने कुम का परे हो नह हुई स्वताल पर स्थान है कर प्रस्त हुई

खानी डोकना

(१) शृहरमाना (बरना) समीन-सान की की छोडते तो रम रह मात्र पाणे क जी कि है जिली हरिमोणास्य

- 4 - 4 | 77

क्षामा मना गतन

antices and a series of the se

उंती तात कर सहा हाता

रः राज्यस्य राज्यः पानरः तर एतर सामन मैं कानी बार कर करा हो सम्बद्धः हैं (क्ट्रेंब प्रत्योः — पट्टन्क प्रत्यों क्षण्यः , यूर कर्ष कर्षः हैं बानी नाम सीम मान को कृतक-मेंद्रसार हुन

कारी रूपमा,—स्टमा -- विद्यमा

- (1) for it ger miles eter a unte---en विकारिक विद्वारक अस्ति आली / काफ र ही ५-- सुनारी दश्य । बरवान करवान थन वन भरते । कृते कान मय पार्ट दल्दी अहत प्रमाण अहत, १६%) ; जिल परवर्ष, विभाव व बनन् वर्षित परीक वो बाब्द (- क्यांनी कारी a ra to man take car togeth ere . gu for fun fur da ud i enn utr मारे क्री की विश्व काठ-अंक साथ, है ३ हम पुण्यक्रीनि प्रदेश समान्य की प्रशासना कीर सम्बद्धनान मीर नंपरीय बच्च थी। यह दृष्टेशर स्थापन नेदी हाती कर वर्ष (साञ प्रकार) १३ -समामान्द्र शहर १३ वृद्धि सर त्रक पारे का नांग जानका नांग नां वित्रक है। व्यक्त वर्षित क्षांनी (मध्य प्रवास ३, ल्यापरिन्दू, क्षाव्य ; आप्र इस इस कुन्त वृश्वित स्थापि है सुनी गीठ गीठ-पठ नीठ मिठ, १६६० । वहरे के परम्पू विक, कुशीवरता धटका केरी क्षानी प्राची है। वेकादिय है -- प्रतुत्व, हेउद बार्श करे दिन हुने बार्ट हर्द की जनकी रजा निकार क्षाने क्षानी की । सारत हो नैक्यर, देशे, बानो विक्रम कृतराज्ञ की बाधार्म कानी यह वर्ष कर्य-नृष, एक , केन दरन्या हीन कर विचये तमें बन, नहीं वहती एक अली वर्षे । बायक- हर्ष बीच १५००
- (४) वर तथवा । अथाय—वेनियर प्रशेष (४) में (॰)



छाती दहना के छाती अधना

छाती दहलती

एर अथना । प्रयोग—मगर नहा तृष स नाओंने प्रयोग यहां कार्ते तृष्ट्रारी सहतीर यहमती है (सनक(१)—क्रेमंबर, 300)

खानी कृती दोना

गर्च या प्रमानका होनी | धर्याय-नाम ही ऐसी हुई है कि स्पृती बुधनी और मान गोदान -प्रेमक्टर, रस्त : जिसे देख क्षांची चुनी होती देशक में भाग (संस्त--हरिसीध, १४०, , धर्म नेगा बहते हैं की उपत्यी काओ मुनी ही जाती है पोटींठ जिसाका ११२

सार्ता देवा

(१) मरोतर करना, प्रथम देना । क्रोम---वन सी इस क्यो पर खाली हो, नहीं नुम्हारी नाम को पार नात्राच्या (क्षोनेक---राज्याक,क्षर)

(२) म्लन निर्माता ।

द्याती हो दूस होना है: साती दूसहे दूसहे होना

श्चाती थक् धन् करना

महभीत होनाः अयोग---नमा को वानी वर् धव करने नगी (सामत (१)--प्रीमचन्द, १३१)

स्राती धइकनाः--धुकुर-पुकुर करना

हर मनना । हयोग-दा हा कान्द्र अदेशान, हमहेर होतेगी नाम चृक्त-पृक्ष सामी गुम्मन कर ने (सुंव साव (प्रिटेट १)-प्रेर, सर्): नर्जनीर नोले (रिकामो नरत पृक्षि इतियोग दमहे प्रित्रण सम्बद्धा सन्ते नही प्रदर्शी सानी (नमव न्वांक्षीध ३०) , कृतर आहड कांत्र ने पर बमुना गो सरको पहन करी का मानव १ फेन्सना दम्ब

साती धुकुर प्रकृत करना देव साती घटकता

हाती विकास कर बसना

क्षक कर बजरा । अधीय-पान जिनके कमाथ कोई है वे क मृतनी निकान हैं बजने और-म्हारेऔध, १७०

छातंत्र निकास कर रक्ष देना

- (१) किमी के जिस बड़ा में बड़ा स्वाम का काम करना । प्रयोज-शाकी हमाने हाथ म मन नहीं है नियोकों अधाह हम प्रदर्भ दानी नियाम के एक दें , बूदेंंं - क्रिंग नांद,
- (>) मनवा तक्ष्म सी। दश्का प्रवट कर देशी ।
- (a) दिश की बात शह देती ।

कार्यर परधर का करना

रण सहन के लिये जुदर करोर करना । प्रयोग—तो कर क्या न भाव व्यवस्त्रम कर न दाती मुके सबर व्यवस् कोस्ट-हरियोध, १००

छानो कथर-मी होना

निरंध और कठोप होता । प्रयोध-- किस किए बास-पूज वो म अभी के ज परवर समान माली है (क्रांसेo---श्रिकोध १२७)

छानी पर कुनिव्हा रक्षमा

हुँदव बडार करना। प्रधान—स्पृत्त तिमस समे तृति भागी। देवते छड कृतिन परि कानी (शस्त (च)— नुकरी ४१६

छान पर काश इन्टना, नमक अन्टना, भूग इन्टना

इस पहुँचान बाला काम करना | प्रयोग—नार्च मीर कृताहल की में । इस्त की खाली लीन भी बीते (लेटक प्रकार—नंदर, १६६); सबसे पर म जाने क्या कर-बाला है स सब पाना पर पूर्व रचन पायी है भागत २ प्रमाद १३३८ किम कम्मची की भागी पर प्रवन पूर्व इस है यह बस प्रमादी क्यानी कामी पर म मूंग कम पायेगी प्रमाद—स्थार नार्व (चिद्र) , यह दमाने है सभी दिन बाव ना सीव मीदर बड़ों म सामा पर दक्त खुमलंग्- हर्दश्रीध १५ कम न १६मा मान्य गुम्म पर दक्त खुमलंग- हर्दश्रीध १५ कम न १६मा मान्य गुम्म पर हर्द्



काती पर धूंसा मार कर कह देना

असमय में नवको जिलकता और घर जाना । जानेन⊶ ऐसे ही ने बळ गए थे । ऐस ही यह भी आसी में चंना मार कर बला गया है (बीनेठ---गं)० राठ, ३३

खानी पर यह बैठना

नवरदस्थी करना । प्रधान— कहा हार्ड वह परन प्रधान वंगकर पहले ही जाग घरी काती पर शहर गर्द भवा (जहाज़ 6—50 जोशों, १०) : नहीं तो तूम जानते हो यात्र में अब मन्ष्य की सामी पर बढ़ बेठे हैं (श्वरती 6—1 विश्व २०, ३६.

छानी पर बदना

- (१) कम्ट देने के जिसे हैयार रहना । प्रकीय-नैन नैन तेरे के म होरे में जनेरे कहूं, पाली कह काती निए साती दे रहे बने (सन्दर्भ कविस-सन्दर्भ)
- (२) कोई काद करवाने के निए कर-कर पाना ।
 खोनी पर खरी कनना

यन को बहुत राट होता । प्रयोग — उस दिन की नमनि से द्वानी तक भी असने जगती है। भीतर कहीं खुरी कोई तर पर वसने जगती है (कुक्-दिनकर, ५१)

क्रांकी पर बसक सलता

देव छात्री पर कोट्रों दलना

द्वाती पर पत्थर रकता

कृष सहते के लिए हुन्य करोर वश्ना । प्रयोग-- में तो नियो होती पवि सयो कव्यकाल होते, मांगति नहते, प्रयम हो व नहेतो (विनयक-- सुक्तां २५६) ; द्यानन्द हिरचंद अम्बदारी केवा कर । इस भूको अमें त्यो महि, हाली भूकि पादर (५० पीठ--- ५० नाठ निव, १७६) । हाप वस्त्राय कर व रह दाना पदा क्य नया पत्यर व स्वारी पर रचा (बोल्क--- हरिसीध, १५०) ; जानी पर पत्थर स्थान दानी सम चना ही बाला हो (नुरठ---महर, १५)

छाती वर पाप पड़ना

पाप नगना । प्रशंस—औ स्वा रिस-पंग अपने अप को मृत गिरु पर नाथ सानी पर चड़ा (बोस्ट-हर्स औछ, पृथ्म)

काती पर वें करा

छानी पर मूंग दक्षमा

🕫 छाना पर कोट्रो इलमा

उपतोचा किया होता

वन पर जीवर सवाब होता । यदोन---वे सीतवा अतिया विको राजी स वस्टबान बडी (सुर सार--भूर ४०१३

कर्मा का अवार नहता का होना

विसी काम को सन्ते के भिए करों साकीय करना । प्रयोग—पानिक इस तरह रहें तो काम काम में जी नवना है। यह नहीं कि हरतम छाती पर नवार मानक १ - प्रेम बन्द, ३०४।

क्षामां वर साथ कोश्ना

- (१) देव्या होती, जनम शामी । धरोग—मेरी भीर परम मोहन की मिनता केलकर उसकी शामी पर गांध मोहनह है परीक्षाo—गील्डास, १४९-१६०) ; जब से बाव मिनिस्टर हुए हैं, उनकी खानी पर सांप मोहता है पोदान—प्रेमचंद्र, ३२४)
- (२) कुन से क्षेत्रम दहन जाना, नाममिक स्वया हीनी। प्रयोग—जिन करत उपका कर नेत्रों के सम्ब नियम जाना स्वयस्त करता हूं भानी पर नांच नोट नांदा है स्थात प्रजात—स्थातदास, दृश्य (४) उसी विश्व से प्रमुखे स्थानी पर सांच सोटना वर्षा वर्षा (यानव है) -देसबंद,
- (१) क्याकुलमा होतो । प्रयोग-नाभी धाँव में का साती है के रस प्रशं काचा में देखन नगत है कर सबसी जाती यह शांच कोशने समात है साम्य (१)-- ग्रेमचन्द्र, १६१) है सिंग्ड प्रयोग (२) में (->) भी

शाली वर से बोक उत्तरना

चिता में चुनत होता । प्रयोग-नद बढ़ा प्राप्तद हुआ, पानों प्राप्त केरी साली पर वे एक बीमत उत्तर अपा (माठ एडा० (१)--भारतेन्द्र, २५)

(तमा । मुरान-कार्ता पर से पहाड़ उत्तरमा)



रहाती पर प्राम स्लाना

हानी पर द्वाथ रक्षना

तिहाना , क्षाय-ब्राय करना , स्वात्तृत होता । प्रयोग---रोनों पनिया को देलकर इहती पर हाच रस नेने पे पौरान- डेमबंद, ३००)

द्वाती पीटना

कृत्म का आवेश प्रकट करमा । अयोग--नगरि कृत्य कर पीरम् सातो (राम० (सं)—मुससी, ५१०); वर्षामा ने ब्हाती भीट सी । यह केमा देसमक नदका 🛊 कि दो पहर शुभा, कृत भाषा न दीया । जावा क्या विकटा , मानक (g)-- प्रमानंद, 80 , शाकी मुदी वो चौर पर्यो पढ़ अवर मुनकार शाली पीराने कती होती (मदन-प्रेमकर, ३०४); वेट करता देखा अब की पीटनाच कोच वीदा ही कावत स्थानमा (चुम्सां --स्थानी अपि. ३१)

क्षाना परना

दन सुरात्री क्रफारा

छाती काइकर काम करना

वृद्दे वृद्धियम के काम करना वा कमाना । प्रवृत्त-मेरा शोहर संसी कारकर काम कर बीर चन्ना राजी वर्गा केडी बहे (मानक (१)--फेनवट, ६); तक नारी माद् पानी कारका काथ करने का क्या दूर देका ने निया है , स्० स०—स्टर्गन,४६)

खाती काडकर रोगा

बड़ी करुया के रोधा। प्रधीय—माली बार बड़ इस्ती कारकर रोई-मुझ यशकित की धारों वे तथा बर (गोलो-बतुर०, १३५)

(मका । मृहा । — खाली प्राप्त कर जिल्लाका)

क्कार्ती काडुना

(१) अस्यन्त कप्ट पाना । प्रयोग--- सन्यम की दारी अ अपना घर मुख्या देन दिन-रात अपनी आजी

बरण विश्वय करनाः

स्थानी पुत्राना

गर्वकरना प्रवण⊸द स्तिबद और हुद्रा सिंध

और किसामिता के दाल होकर मन से खानी फुलामें बुमल है .क्सना—प्रसाद, ८४), की नहीं कुना समाना फ्लंपन 🕻 बारी खुली फुलाना अपना। (बोलय--सुरिओध, १५५)

छाती फुल दहना

- (१) क्रमम्बना होती । अयोग—वशदानी सरकार तो कर रहे के पर बाली कृती बाली की (मानक (१)--प्रेमणद १८%. (÷्र और अपने बेटे की बीर-वटना मुसकर तो कुरहारी द्वाली हर्व वे जून बडी होगी। क्या 7 न म् न्दर्भ ४६३
- (२) वर्ष होना । चयोय---देशिय प्रयोग (१) में ()

छात्रा बिह्यमा

द॰ छाती सम्बन्ध

छानंद भर भाना

- (१) भागातिरेक् होना। प्रयोग-नुस्क गांत धार्द वर्षेत्र स्टानी (राम० (राज्य —तुलक्षी,२५४)(😁 👔 वेसकर लान को विकास हैयते 🧎 🥞 भीन साथी अन्य न घर वार्तः (पोस०-हर्वः जीधः ४) (🚓 १)
- (२) हुदय का भागानिरेक से गदगद शीला । प्रणीन---दक्षिए प्रयोग (१) में ()
- (६) साला में दूप आता । प्रयाम--वेनिय प्रयोग (१) में (+1)

छ।भी सञ्जूत होता

हिस्मत होनो । प्रवान-मेरी छानी दशनी वश्रवन नहीं 🛊 (गरन—प्रेनचंद, २५१)

छानी में कोटा विछना

प्रमुख प्राप्त हरना करून होती। ध्रमा—⊸स्य द्राहर ही बाद गा। जिल्लाम मह अब कि दोनों से पह जाह (च्यातः हरेग्रीधः ७३

छानो में छाले पहना

क्षेत्र इसी सोना ्यपोगः स्टिब्स्य अस्य विस्तरका *सहै*। है रिष्य गया कीन स्थानी य उट्टी ह्याल ग्रह कील**ः** हर्वक्रीय, १८३

छाती में सुरी श्लेकमा

भति महित करना । प्रयोग—ने प्रतिन है पेट गाउँ। के नियं छानियों हे मोक वें जो खुरियां (बालेo—हारिश्रीए, १७)

छाता में छद करना

मन को बहुत करट पहुँचाना । बगोन—बेट आने घेट केंसी खेद की कार्ता किए सूर भार-सूर, ४४८३), जगती बन्ते कह करता है वह न किसी कार्ता में छेट मर्मठ--हरियोध, १५

छाती में छेद पहना या होना

क्ष्यत् या व्यवसाय हे सब दुष्ती हो आना : प्रयोग---उभी के संवेमित सामी होत बहुत है वह स्मृत साठ-- सुर. प्रदेशका नहीं (चुमतेठ--हारिकीछ, ११६

द्धानी में अंअरी बनना

रे॰ छात्री छवर्तर होता

छानी में नलवार उतर बाना

सानी में नक्षवर भोड़ दी जानी। प्रयोग—वह बतर भिन्न में क वार्यों तभी जान कर नक्षार सानी में क्यार (कोल⊙--स्थिकोध, इपह.

छात्री से लिख रचनर

तमेशा माद रचना । प्रयोग—वै वनियां श्रतियां निम्न पानी वे नंदशान कडी (शुक्ताः — सुर. १०१३

खाती भाना

स्त्राती से समाना । अयोग—निरमण अंध दशय स्ट्टर के बार-बार मानति मानी (स्थ्या०—सुर.धाला

ध्वामी शीमाउ होना

रे॰ छाली जुड़ाता

छात्री सिरामा रे॰ छात्री अङ्गामा

खाली सुन्हाना के जाती जलना

6) O. P. 185

कार्नास्य जाना

न्तनी के दूध न पड जीना । प्रयोग—कह जडकी वेट-पोस्ती थी । धरती जिलहुण मूल गर्या थी, केदिन मनवार को नीमा है और क्या (पोडान—ग्रेमबंट, २५३)

कार्ता से समास्त्र रखना,—से क्रमानर

बहुत कार करता, जरूत बाहुता । प्रयोग-नयाँ वित वित करि स्वित्त कार्य । इस देखि स्वित बंधम पार्ड न्द्रित प्रशात-नंद्रित, ११०), सार्ती से लगा भी वीत सूत दनव है कमी सम्बद्ध-हरिशीय १६४), वस सी भी तुम पहुच बाओ तो कुम्हें सार्ती से नवा में (विस्ताय-कीशिक, ६१) , यो तो बुध्द इसने ही बित बढते से, वीरकार सार्ती में नवा केने से, आम बुनानिक भी मही होते (गाठ ते, -प्रभवद, १०५), पूच में कितनी ही बुनियाँ चर्या में ही माना उसे स्वती सानी से नवा सिनी है ब्यांकि मानुवनह सभी क्षियों को सर हता है क्योंक हुठ प्रवृद्धि १७६

ख़ाता से संचाना

रे॰ छानी से समाका रक्ता

हान कालंगा, —प्रापना

- (१) यून पाना । प्रयोग-साथकरने वाला हो नो ऐसा हो । बोच हो दिनों से उनने द्वारा मृत्यः सान दाल। राज (२)--प्रेमचर, २७०)

कान-परमास करना,—बीन करना शोध करना । प्रयोग---नकतथी इतिहास सेमकी



म इन्हें। के शामान पर दिना अधिक सालकान किय मस्यों। पर सक्ती। संगता श्रम कर दिया प्रदेशक के पंत्र पर्यम्पश्चान एक , कर्णावन इक्तिया साम मुकामा है, सून सहन-परवाल करके तम राथ देन रहेमांक-प्रेमचंद,७३), में जिस काम को करवा है, पहन समयी शामवीन कर केना हैं (मा नवेशिक, दर

स्कानकंति करना

देश खास-परनास करता

कानतं

प्रतास गीती, भंग पातती । अपरेग—दो तुम भी निरं धोद्युक के नाऊ जाभ जगाया पहन गणे के हैं गणन— धंमचंद्र,१९९, अञ्चल ने गहरी कानी नह, मूलर द्वानी दोनों (स्कों — गुप्त, १४)

खान सारता

देव **छान हा**सना

রোকা

खांचे वासिना

प्रभाव शासना । अधाय-वान श्रक बहुर वे कोई ऐसा पायू. शास्त्रिक पृथ्य के बार को उनवर अपनी नाम काल कर बेमार-अंगवन्द, (400)

खापी पहला

मबानक शास्त्रक होना । प्रयोग—आम वर छाना वशः चाहे सिनी सब मुना पर दे विधा दृन्द-पुट नगाः विक्र≎— हरिसीय,२०२।

खाया सामना

स्वतान्त्रं हमला करताः प्रयागः अस्ति व्यवः वतः को पोत्रं के अध्यय निरंग्येषे अन्तर्वेदे सन्तः का सुन्तः सरम्या का सिकित् कुंब्दमां हस्य क्लान्त्रं का तिन् स्वाम सारम्य नकार का पन्तिन्त्रं सर्वेद्रं स्वानंत्रं के ति निर्माणकाः वर्षे देनकं स्वीममा को स्वाह्मम् विश्वतान्त्रं कर्षे विस्ता अध्यासिकः वर्षे स्वाम स्व

ञ्चावा की नरह साथ रहना

हर समय परव रहना । धनान---भरनाद विकासी का काम अपनवर वा प्रच्यु पुनिस व्ययप की लख्तु उसके पीछ वर्णा रहनी की अञ्चलक र --यश्चाल हर्ष

खाया भी न सु पाना

र्जातक भी व निकट पहुन पाना। प्रकोश—भी मानि होरि भरत बहिया ही कहें काह स्तांन सुर्वाद न काही 'राम० 'या न्तरकी ६६६

द्वाचा विस्ता

प्रभाव हर होता । प्रशेत-स्थातहै न स्थान विटिन तुम्हारो, नामु परित कृत श्रम कर्य हाती (रामध शका) - सुलसी, १४३

उन्ने पर में भाग लगाना

करे बनाये बाक को किनाइना, सनिष्ट करना । प्रयोग— एडि पाणिनिहि कृष्टि का परेश्च । साथ सबस पर पाणकु धरुड (सम्मन्त्र)—मुख्यी, स्राप्त)

उप समाना

नामान केना । प्रयोग-वह दुश मधी मूरके प्रभू शी कहत वर्तका कार (कुला)-सुर ४१६१

विक्या भाषमा

पूर या कुरे विकास । प्रयोग—कृषि विस्तापित के प्रति भागप्रकार अपनी दिल्ला भावता भावता के अने अवध कार्या नदारका भारे रोध के स्वयंदेश कोशी कीलिक क्य उन्ने (प्राप्ती कार्य—उप्रकार.

छिद जाना

स्वतित होता । प्रयोग-न्यहं बचन बान में कही नीजा यनना है विना दिए में हो हिए रहे हो उस रहे। मुनकर बान में बेट ही नहीं है हो (भूमते०-मुहत्त्वीध,१०२)

जिङ्गम्बेषण करणा

नीत नोड कर के भी तिका नहीं हमांग जात सक्त भी सदस् उनका सिद्धा क्षम किया के ना देशी अपनेतृत् १४४ हमा गया और दलका दी मुझार सरका दी नामी प १ इ.स. नहीं कि करवा कर नाया हमा ने साम कर नहीं या प्रदान पार्व के ना है दहा अधिक सी ना मुखास सम्



शासकों के प्रति 'राजा करें की न्याय' की जनता कृति बदनी जाती है (देरेक-मूलाउक,१९६)

छिनाक्ष का श्रेग होता

एकी बार्क विसे बेलकर करना हो। प्रदीय --विश्वास ती मानी सिनाय का अन हो रहा था, देखने मुनने नक्तर सानी बी कि हाम में कैसे अपने हैं कियसे उत्पन्न हैं।सीठप्रशाव--(दें)----सारोन्ट्र, 436

रिउपे कारम होना

पेका मनत्य विभय वया प्रतार नत्य हो। उत्तत —यव पहले में मानुष होना ना नगर इस पर स प्रवत न हती तुम तो विशे कस्तम निकले (मानवःक)— प्रेसबदःश्रपः) : यह भी विशेष कस्तम है हती में नेवा विभाग विश्वास है (निशिक—विवयंव,१७६)

खिया-छिया होना

निस्ता होती । यसगर—पिया तिया बासी दिवा दिवा विका जब होतु (मित्राज्यक०—मित्रास, २०१०

हर्ड किनर

सम्मानुत करना या मनाता । अयोग—सीक्तमाने करे तो नया कर । दीकते हैं सीक ही प्राणी नहीं (चुमते०— हरिक्रोध,३२

र्खींदा साना

स्तिक भी अधिक श्रीमा या साम्यायना श्रीमे । प्रयोग नके सम्बद्धान असी कावगुरको भागव कर द्वारी । प्रायम क्री भी सः साने गामना प्रेमी⇔—क्षेत्रस्य व्यक्त

होंटा बडायां -- कशी करणा, --कमना --जमाना, फेकना

निवा या बुगाई करती, श्रांनिया कमती । प्रयोग—प्रांगका श्रोत महान भारता पर प्रीट उत्तरता छोट तुर वही बात है कथा। प्रेमस्ट, २५१ उत्तरण विनय कर एक करण पर िवनाने छन। भया। १६ और ५० एक दूसरा पर गौर पहुले के उनके स्वच व संगित्रपत्ति का क्या पना देना या ? (बहुमठ—दैठसठ, ५०) भार से क्या हो के पाई की शारी में उनके और महिपाल के संबंध की नेकर छीटाकली है । एक सम्भाव कोट निजीवता उत्तरी की करण की विरेश मुख्यत २०६ हाइ स्थान प्रस्तृत्व प्रमाह सीर स्वर्ग हाम्मेष्ट-कट पत्नी सर्वशी पर स्तिटे काले में जामा को सजा के रहा है दृष्ठमाछ देवस्व २६६ , एक कल में प्रमान को सजा के रहा है दृष्ठमाछ देवस्व २६६ , एक कल में प्रमान कोगी, सुक्त बोहती वी बारमा कोगी होंग सीटे की कमा कोगी स्वर्ग स्वर्ग पर ४ ४ कामेगी बीद बीमों नेता को की बहा कुन्ति के बमान के प्रति कुन्न भीटे के कि दियं व मुख्यत्व, हो — समान के प्रति कुन्न भीटे के कि दियं व मुख्यत्व, हो — समान के प्रति कुन्न भीटे के कि दियं व मुख्यत्व, हो — समान के प्रति कुन्न भीटे के कि दियं व मुख्यत्व, हो हो (बोटोंं के — किशाबा, क्ष्में)

(गमर- प्रार-सीटा शासना)

छीड़ा कर्ता करना देश छीडा। उदाना

डीटा कारना व्यक्तीया उद्यास

होटा जमाना रे॰ छीटा उद्याना

जीदा देना

कियो बात की और पूर्वट करती । प्रधोत—"कापकी इस उदारता है आपका नाम विकास और हानम की वश्त पूर पूर तक की तथा है और बहुत जोग आपके वर्षनी की अभिनाया उपके हैं" कृत्वी कृतीलाल ने खींदा दिया परीक्षर—प्रीष्टास शा

द्यादा पष्टमा

- (१) हमको वर्षा होती । प्रधाय—मोड्र दिन पहले एक भोता हो गया था इसने भारो ठरफ हरियाली सा गर्द या इस स्वरूपा १०६
- (२) बोहा सनद होता। प्रपाद---यो न भी में हीट. इस्टेंडन हो पहा ना रूपा बया होर माद यो दना स्थति०---सरिअंग्रेस.१२१

द्वीटा फेंकना दे॰ छीटा कलना

ही ही काना

पूजा करनी । प्रयोग-- तनके कर्ष प्रापः इतते कुरे, इतने



प्रमाण हवा करते हैं कि दूसर उन्हें बार समय कर है। नहीं रह जाते.बि: वि: करके ही संतोच नहीं कर वेते, वरम्भत करने के जिल भी तेगार हो बाते हैं (विताल (१)---शुक्ल,६१

छोडालेक्ट करना

- (१) हंती बहानी इनंति कानी । बढोच-लेकिन में शाना नीचे अही विश सक्या कि पैने के लिए। क्रीपानिक्टर करना षित्रके (मारसी०—राज्याव, १४)
- (१) भीन बोलना (
- (॥) द्वाम विमानला ।

(गर्मात प्रात —सम्बद्धानेद्द बजाना)

श्रीक्षालेश्य होता

काम का विचयना, इसी जहाई जानी, पूर्वति होती। प्रधीय-ऐसी श्रीकालेक्ट उनके पर में कभी न हुई की ,मान० (१)--प्रेमचंद, ६१), क्लंबान अवव की नाकोहिनी राध्यक्त की हीतालकर का जो सुन्दर चित्र उन्होन महारच्य पर्यवक्तमम्' नामक नेवा ने जीवा है वह वेजने ही नीम्ब है ,पद्म प्राप्त--पद्मक कर्मा, ३८)

सूर्य-सूर्व शोशा

- प्रशासी काल व विश्वम परिस्थिति में अवदार प्रश्त-बाली ज्यान होता नामी प्रथम किंग्यम एक मञ्चा बागा, प्रदे-मूर्व दा पाँवा वा बकारी का बाला करा हुआ वर कि अपा किसी में बचा, बंग्की, बडाई और कुंब भागी अपूर कि बाह हुए गया और मराबद गया। पदम प्राप्त ---पद्माध्यामा, १४)
- (२) सबा कामा । प्रमोग—मीनाकी धुई-मुई-मी हो गर्द ,क्टल देवसव, ३५)

हुश बलाना

ब्हिन-फिरो हिसी का अस्ति करवा । प्रकोष (१७० वान ही पड़ पर पतार्थ ज्या कभी तत्त्व मनंद हरियों एक वालों ने वालियान के मार बेग इति हो पर कहा बोजर पैस रह हो य करियों बना रहें ह*ै (१९०५* पेनवट 395

सुरी फीना

- (*) बहुन हानि पहुनानी । प्रधीय-किसनिये हुम फंग् इंजन पर खरी की कि मृह में बोम भी सकती नहीं (बुमलें)--श्री और १८४० , दोनों उस गरीब हरूपी के उसर हरी केरना बाहते ही निर्मेता.—प्रेमबंद.२९)
- (२) शास्ता (

ड़ न जाना

- (१) किनकुत्त न होना । प्रयोग-सथ ली यम चुतक वटी बदा वा (सतमोठ--राह्म १०१) : देवनायम जिन्ह नहीं चुना है। पन्हें चर्च देवना करता (कृपसंक-हरियोध, १८९० में अने इन वर्धी की कोई बहा तह सम्प्रताये करत मु तक शही बजी (निसंहा- फ्रेमकर,२३)
- (२) कोई समय न होना । अयोग---चनने कुछ नामा-िया पर और इसर जिल साविया सुनेत हो। उसे हा मही वर्ष (जैसन १)--सक्रेय १७४)

छ मन्तर हो जाना

भार दाना, सदुरम हो। नाना । प्रयोग---प्रमका सप्तः। क्रियान आपी इदालीनना मध्यो हु मंतर हो भूई बी एक-देवक्ट, द

छ सेमा

कोई बनर होना। प्रयोग-वेरे नित की अंचलमति त् व नहीं। वेदेशिक—हारिजीय १५९ । सालाजी की रचना रमजो को स्थानि कर बाली (स्थानी संबर-१३६ १०६); बुष्प को शायर यह बान सु यह (ब्याग०-क्रेनेन्द्र, १७)

<u> अक्त स्थाना</u>

सार्गति प्रतीत होता । प्रयोग दिवन तरह के प्रतिमान है उनमें कुछ का बीधमान हमें बढ़ा पूछा मानम लाग है सह किया आठ महत्र १६

उटा मांड होता

नमा दर्शका जिस पर विकी प्रकार हो। समान न हो। प्रधाय---- इसर राज्या की रखी सर गई xx और भी छन्। माह जो गता सन्दर्भ छ। प्रेमकाद १५५ अन्दर्भ स्वाद स भी है। मनद इनमें बुछ जिलाब है। बुछ पदन है। बुन्द कर है। ये सब ना इन्तर है गोदान प्रेप्तकन्द्रह्०)



छुने सोना होना

काथ करते छाम ही काभ होगा। प्रकार--विगयी कैन ए विमा हुआ यह कोना (क्षक--दिश्यन, ४४

要打

प्रधान के लाना १ वधीय—तब पन जान वची जिल्हानानी बम्हर्स नाम में भात में अब कीन बंदेनी के भागे हिन्दुस्थानी की भूगा है (राधा० उंकात—राधात दास, ४५६)

खेंड् करना

निकास । प्रयोग—होरायसम्बद्धाः ईरस्को सस्पर हमस् धरु में बहा करना कि सम्बद्धाः अस्य मोधो की वाक्षी करती बोगी से कोठें॰—स० नाठ, ३७,३८१

रहे इसा

- (१) पर-स्थी में अक्षतीन कुरुविताओं क्षत्रहरूर करना । प्रयोग —वहीं जब गाउँ । ११४को वयो प्रश्ते ही पुरक— यु वर्षी १५७)
- (२) कोई बाजा बजाना ।
- (१) प्रारम्भ करना-करना ।

हिंद डामला

यहुन तम करना ; दुन देना । प्रयोग---भाषी औन संबंधी । क्षेत्र-संश्र कर साथ कालेगी । मैवाठ---वैसर्वद:५३

र्शस्य विकासियाः

वंत-हनकर पहतेवान्यः । प्रयोग----सङ्को प्रवास योग वर वृंत-विकसिमा ये ये कोटें०-- ५० स०, ४३

शोटा मार्गा

भीन नानि यो मामूली काम करने वाला बाउमी।

4, म—२ म लाग तरन व गाव वरन र उन्म मान ने दमामी जानु वयी, किंद मूल के बाम (विहासी कारू—विहासी, १३१) इ मूल ही सोगों को महारा पांचन के भीन कभी खंडि सारमी मुझानी के मूह सम आने में (मान्य मा प्रमाद प्रमा

62

O.P.--185

उपद्रा चित्रता

वृष्य भवमता । प्रयोग—नीयी क्ष्युर सकी मृतु कारी । वेश्यव सब् गाँवक न स्त्री (स्त्रात्सक) तुलकी, २६६) (स्थान मृहान—स्त्रीटर कारता ,— सामना ,— सामकता)

क्षेटा बनाना

तुन्य गमभना । असेन—स्टब्स्ट आप इसके लिए इतम यत होरल, साथ इस तरह अपने की सीटा यत बनाउन केमर १ कालस ३२३

छोदा भाग्य होता

प्रमाण होता, कम गोलाम्बनाता होता १ प्रमोण—मान वेरेट मांगवाचु कर कालं तक विक्यान (राम० बास)— कुमते १४०

छोटा होता

- (१) गुष्य होता । सयोग -सन् विकासि सच् कार्याह १४९म विवय-सन-सात् गीतात (३१) -सूलसी, ४७) ; सन्तर को समा कि कह सोटा ही गया है या प्रमाने सामन बाका कारित कुछ उर्देश उन्न गया है (सेमर (२) -अक्ष व ६३
- (२) सङ्घित हाना । अयोग--मृत्र शंसका देख फिर भारे एकं कुरुक्षांक- निर्माण १३८ चीर तृथ भूका ही इसने छोटे इंडय और इतनी छोटी जाजा के बच पर सिद्धक सार मिळ ११६।

आंद्रशपत

सदना । प्रयोग--- कोटणन यह बाद है केंग मोटी सान । यूनी के बृष्ट मंदियों भयों देखा न यमान (प्रयक्त -यन्द, दश

छोटी अपि

तृह जानि । प्रयोग—एक दिन उसे घर ने भारता सिली कि बह उर्देद प्रशेष्ठ वाले घर में जला भी जाप भी बहा कुछ जाव-पाँचे नहीं । अ वयाकि के खोटी जात के हैं। असार (को--- अर्थ या ६०)

त्रश्टो बान

वामुली शातः । ययोगः—अति नवृ वान न्यांन दृश्यु पादाः 'रामक अभ्युक्तमीः अग्रहः)

खोटी हाज़िरी

मादता | प्रयोग—प्राप्तःकाम था | मौन अन्याल करके या घोटी हाजियी सावट केंद्र पर ने उटे के (१४० (१)— ऐमधन्द, 80)

छोटे मुंह बड़ी बात

शाममर्थं या कम हैनियस वाने व्यक्ति का की विकास पान परना : ह्यांस—हमकी स्थानका की सहभवा मेरे विक खोटा मुंह बहुरे बाम भी (भान० (१)—क्रिक्ट, स्ट.)

छोटे मुंह बड़ी बान कहता

भगनी योगयन। या किश्रांत से आंध्या कान करता, विश्वं। यदे को अध्यानित करना । अयोग—सीटं की वर्ग वान कही किन सामु बहुतारे (सुरु सार्थ-सूर १००५), हाटे करन कहुत कि साला । ध्यांत काल कान विधाना ध्यांत (स)—सूक्तरी, (४०); असु आनन करार देश करे सरिहै एरिहै करिहै कहा साथों (कविक-चूलसी, १६), वरि मक्की पहल एकबारकी कुछ जाय नो एक और छोटे मूँह से बढ़ी-बढ़ी बाते निकमने जये चार दिन के मेहमान तरह-तरह की फलबारचा करन सबै चिताकर —श्वता, ६५-६६); बामने हैं स्वराज हम, लेकिन है बढ़ी धार और मूंड छोटा बोलक—हरिकीय ११०)

छोडने जाना

<u> उंक्लिया</u>

भवती बात बात्या । प्रयोग—दुम बहुन संतपना योगले हो कियी दिन मुक्ते तुम्हारा यह सनपना देखना है हमा—अर्थनक,२९९.

जंग करना

वेकान होता जाना । सदोय—मैं बहुनून करता हूं कि गरी जिन्दारी पर योज-ब-रोज अंग समका मा रहत है (कर्म0—प्रेमचंट, पर्

जंगल में रोका

स्थित विकास रहता। प्रकास = अनम्बादी को कई सर्वे साल जाक में हमें रोजा पड़े (बोलo =हरिफोध, क्र)

श्रीगर्जी होता

असभ्य होता । प्रयोग—सब व बाने कहा के जंगनी है कि और सब बीतें तो नाये, चलहार न नाये की सब गहनों का राजा है (सबल- ग्रेंसबंद, हुई

जकदर होना

भंसा क्षेत्रतः । प्रयोग---वो रहे ताकते वराया पृत् को युव्यों ने व विस्तविधे तकड़ (चुनतै०--हरिक्योध, म)

क्षम-जाल मिदना

प्रसार मार से मुक्ति पाना । प्रयोग—करत परित परि प्रयोग नन मुक्त पिरांड तथ भाग रामें: डॉ—नुअसी. ४४९)

जग में लीक होता

प्रकित्ति अनगरणीय होता - प्रयोग - शोनि निपन क्रिक्ट कह जम सीका । पर सुन्हार विन्हु कर चनु नीका (राम≎ (फ्र)--- सुक्रती, धर्थ)

जयशंसाई कराना

गमा कता परना जिल्ली यमात्र में उपहास का विकार बनी

वय-संमार्च होता

नवाक के उपहास का विषय होता । प्रधीय—प्रवत हमार्ड होए पर्शत पन के क्यान्त्रों (क्वाइ०—शिरधरदास), १९६६ का हाथ नवी देरे यह बीच इंसार्ड (माठ होशाठ (२) —सारहिल्ड, १९६); कवी-कभी ऐसी दुर्घटका ही ही जाती है, यह इनके केवी का-हमार्ड और केवी सक-कहार्ड मानठ (१)- वेसकट ६३

जगह छरेडना

रियमा । प्रयोग — इस गर्मे कोरना जगह नयो है नयां नहीं गर पहार नौ पायर । दूसको के उत्साद देने से गांव करो है उत्सव उत्सद करना (भूमने० — हरियोध, क)

जगह जगह

- (१) इर स्थान पर । यथोग---चर्चा नी मेरी कार-जान वृद्धo--वेध्यन, प्रष्ठ
- (२) भोड़ी बोडी दूर पर ।

जगह लोहमा

कोई यह वा नौकरी की वयह ही इटा देना। मधोग--वंग जब की हमने पृत्तिक दिशाम में ५ लाभ काट विया। समय यह कभी नहें नहें हर्गकरों के चले या तम्भ में रही किया गया। विचारा भौकीदार कास्टबल, मानेदार का सल्य बटावेगा, जगह तो हंगा (रंगठ (२)--प्रेमसंद १४८)



क्रमह दिलाका

काम या नौकार देनो । श्रमीन—कोई एमा सनसानम व दोयानर या यो सब गुस विना कह ही नगर बाय भीर देने काई सम्बद्धी ही जबत दिका दे समन—क्रोबंट २८), बाप बहुर असीही यह दी और दिनावन, बहु आपको गोई समन अमसी भगत दे देना (नंबन- यमबंट २८)

क्रमह देना ४० जगह दिन्हामा

(सप्ताक पश्चाक—**त्रमह** फिल्डकर)

जग्द होना

क्रमा बेसर

(१) अवान में पहें नोतों को मंगन भीर उर्शानन करना । प्रभाग- बहुद नीता जा कदियां तीदिन दिद्य कर गाई समाप्त नारी केती (माठ प्रंशांठ के जातिन्द, प्रवेड प्रमारे देस नायन लोगों को भी तेरद कुछ स्थिक आभी है। अब तक अगामें सा जान, के भी क्यां इंचर देशने नाये के राधांठ संवाठ—राधांठ दीस, प्रदे , भीती जानि के निर्धान प्रकार भी अगने देशनामियां को जगाने का प्रयत्न कर राज है स्माठ साठ—महाठ दिवेदी, इस्तान के वि दम नगीन पर पहुंच कि मुख्य कार्य पही हो सकता है कि मीजवान। वी जनावा आय (विलंद हो)—स्वाह से देशपा

(२) इंब्बा देश कर देले ।

RITE TENT

बना रहना । प्रयोग —जिंग नोवर्गन में जीवर्ग पह बाह यह प्रश्रात १ अनुकार जान कर्या स्थान १४०

इटर में धरना

च पंचायक्त ते । अस्ति — आर्थितस्य इस र केटद्राला वरण पारे न र कश्चित क्यान्ता राष्ट्र हिन् स्टब्स् रेयुन

केंद्र राजारता, -मान्त्रता, याराजा

(१) ऐसे क्यूट का कि कि के कार्य करें के कार्य

वित नुम्हारि यह भवति हतानी (रामा (ज) — सुनसी इप्याप वर्षी वैने तसे आया की जह न कोड दानी नो मरा नाम नहीं (माद प्रदात १) — मार्गनेन्द्र, १७३), इन्हिंचे मंग्रापसार को हो तेना गंभवा गंगा को न्यनपुर में रक्ष प्रवास के स्थापी वन्धेवस्य की जह सहस्ते के निये पह नाम यूनी वृद्दी बोटों के नियो पह

(२) प्रतिन करना । प्रयोग—न्योग के बोक निविज्ञता।
म रेशानों व बेटकर मनतव की शह उमाइने के सब प्रवेश करने पहुंच बेटकोठ १ - प्रतुष्ठ, २६% में तो करों या व रहा और तब नृथं भी मेरी बढ़ जोड रहे में गादान दोवबद १६६ क्षेत्र कर-कृष बक्ता को बह प्रश्नी प्राप्त बन मन्नेठ हारेखों थे, १६८०

(नवार युहार -जह ब्रॉस्टो करना)

जर करना

कोई स्किति म यह जानी । प्रयोग-नगर भागा भी पहा यह ही कह नई जिनों निमला, 4%

उर काटना

त्या चरित्र करता नाकि दिन पत्तर न सके । अवसा — प्रान्तु का भारतम वर कि कृत में कृतिल और अपक अद के क्रान्तु असा उत्तर ने सितं हुए श्रीत्र ही भीतर उसकी करें काटने में तने हुए से (देवकीo---वांव राव, उपन, करता चांका, नर्दन मेरी यह काटने पर आधार। रहता का गीली —चतुरंव, १९०), सभी से इस आस्त्रीतन की या काट देनी जगहरा पैमाव---मैमचंद, ४३६

तम सारशा

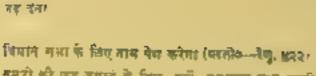
देश कह उस्राहरा

ब्रह्म हमना

व्ह पारवाधी होता । प्रयोग-व्यव जारतवर्ष में स्थलमानों को यह में भी अब नहें है कि हमें निर्मूच करना कटिन ही नहीं बरक अन्यव है संधान प्रधान-संधान दाता, कतन (नमान क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-क्षान-

बंद हमाना

(१) स्थिति दृष्ठ करनी । अधीन---शिकांनित कर कात से र प न पर श्रेण नका कर गुम्म १० ग्राम प्रभाव स्थापन करण संप्रकारण प्रणासिक नाम र सन्तर



नुमरी की पर बयाने के लिए क्यों बहरकर प्रश्न बचनी मह वर्षः (मुभते०--हरिम्रोधः, १३५)

(२) गहरा चरार होना । वधीन-नुष्त्र डीका देने में समे इस्रांबल सराज हाता है कि तुपम ददान के विकृत सिद्धान में नड़ जना रक्ति है (चित्र०—सग० क्षमरे, ५१)

जड़ देना

इषर की बान उधर करनी--धिकायत कानी। जनेत--मनर वेलो सार कही मुनी भी व तह नत देना नहीं लेन के बेन पश्च भावने (मान० (म)—प्रमाद, यह), करो बाब्दी का सराबी ता दुख् अक्टन द - यहां पय है (भिस्रा०--कोशिक, १६

जब पक्षत्र क्षेत्रा

- (१) स्थापी रूप से बोर पकरना । प्रयोग--क्शावित मुक्तमान महीके कोई तमें इसीय या तेश वैदा हो। इसकी दवा निकासंत्री ही इसने ऐसा जब पढड़ निया है कि फीपी ही असन नृष्य प्रोत्पर दो जाय कथा दूर (सनदानी सही है (भट्ट नि०—बां० भट्ट, १७७८, प्रत्हे एक-दूबरे बे भिवाते रहन में ही फिरंबी का राज्य जब प्रकार नवा 480--- 20 He, 42
- (४) स्थान दला खना, वृक्ष का बर्धान सं अञ्चा नार पा भागा ।

जद पर कुल्हाकी बलाबा

मधानम् वे इस सम्बन्धान्ति हा पर प्रथम बुरारायान रित्या है ,वेबालीक (११--मन्दर, १६३-१६४

अब-पेड़ थे, जह से

समुख पेती तरह प्रयोग विश्व संस्था को हंद जर से कु रसा पहले हैं। उसी में विषट रहना की पापका अध्या मही दल। कमल-पंभवद रक्ष हमारे श्रा व वर्णन काः इतना तौर है कि × × बहुत ने वन बतानार ऐसे फेट तिमने इसे बढ़पेट के उचाहना थाड़ा 🛪 🗷 पर वह । जाति विकास असा तक जमी की देशी बनी हुई है भट्ट निक ---베이 이불, 성당)

(धना॰ मृहा॰ ─जङ् झूट से)

D P -- 185

ज्ञह भार देना

मृष कारत नथ्ट कर देना । प्रयोग - दवा है, दोनों की उन्हें मार ही बाच पर मन् नहब-माध्य बही (बहुरी०--निरासा) 77

जद् भारता

देश **जब उधारका**

जर मे

र जह पहले

उद किल जाना

वस्तारी वस्तो । प्रयोग—जिल कात के आप भरता प्रयापन विद्व करता भारत है उसकी दर हिन्द रही है सार सीव-- महाठ दिवेदी, श्रा

अहं हिला देवा

रवता को कम कर देता, स्थिति कमबोर कर देता। प्रयोग-वृद्धि वापने बेटा अनुनीय में बेटना ही खाप रिवार-नतं में ऐना विष्यम मनः हेरे की विदासम की बढ़ हिला रता (रंग० (२)- येमबंद, १९६

तद दोना

- (१) ब्ल कारण होता । अपीत-वितास, जानले ही यह एक बढ़ा त्यान है भीर इन नक्ती जह मैं 🛒 (चित्र०---भगव दसी १६३ ६व पर दीना सहसद हुए व कि सीरत इतिया हो वह प्रशिवन। वो बह है नदीय सहस्र २२३): में ही तो इब सारे नुस्तम की यह हूं (रंगक (१)-प्रवर्षेद्र, २२०)
- (३) करनालाय होता —स्टब्स रह जाना । प्रयोग फिरा मी इचर बेरा विश्व कर होना का रहा है (बाव०-ह० प्रव हिं0, १६४), क्रिमेनिए आन हो गर्वे जर है पुनरी०-हरिबोध, घट
- /३) पूर्व होना ।

जनवासी देता

क्षाराज्ञ स अणा स्वस्तिया के देतरने के स्थान की स्पर्धन्या करनी । प्रयोग-अति धारर नान से अयोगी कर जल-बामा दिया (पेन साठ-लठ साठ, ११



जनाता होना

योदच्हीन होना । प्रयोग—धानी नव सनत्ये हो पत्र है 'क्षासी०—५ ० वर्ग १५२)

जन्म गंवरना

जीवन कार्य नव्य करना (क्योग-विसे तु और को दान कहायी, कार्र वह केन्द्र जनन नेपायी (क्योर प्रधाय---कदीर, इपाद) : भाग देव हरि तथि कर्न, की मनन नेपाये कुन सान-वह उपाद

अस्य अस्य की

सर्वतः है। प्रयोग-न्ही बच्च करण क्ष्म की कंगे सुरु साव-न्द्र ४७६०।

जनम जाना

शास विशवना वा किरायना

जीवन में दुस भी बच्छा न कर शना, यह कर होना। प्रमोश—बेटा, तालू सी वेचा धनम ही कियान दन सिमार—कोडीक ६२.

ज्ञान्स भरता

श्रीयम विवास । प्रयोग-नीतर जनम् जन्म वर वर्श साम्रुक्त (मा) सुमानी, ३९३)

MAN SCHOOL

शन्तिक में आना १ जनाय--- दलके बीच हो, "नेप्रयूप कांग्रस" का जन्म हुया (संधाव देवान---नेप्राठ दान, ३८६)

प्रत्य होते का कन जिल्ला

देश्वेद ग्रहेश्व होते । प्राप्त ग्रह की । - ५ प्राप्त होत्र समित बाल जुलेको स्थाह

जन्म मध्य हाना

अंतर संबंध प्रत्य पिक्स माहासू मा १ - ६४ क्षा अ सर्वार्थ अनुमार अभिकास को स्वार्थ क्षा अपन्य सुमार स्थापित स्थापन कि सुम्बर्ध कर ।

जन्म हारमा

- (१) किनी के जिनिस जीवन का सकता कर वेचा । प्रयोग—जंक में कायू लंजू किंद हारर । को यून द्रवन करें विचार। (राज्यः,क्लो—जुलसी, वर्
- (२) व्ययं सम्ब बीया | स्वीय-पूर्व हॉर के बाब बिन, वर्ष क्यम वस हार्रि (क्योर प्रवाण-क्योर, २०

जब तक गेरत की धरना है

वंश क्ष्म तक । वदाय-व्यक्त होत्र व्यक्तिक्त तुम्हारा वद्य वर्षि क्ष्म वक्ष्म क्ष्म वाश्व (संघ० (व्य)-मुलसी, ४३७), वद तक क्ष्मा क्ष्मा में पानी है, अध्यक्त सीहात वक्ष रहे (व्यं० वृंबा० (१)-मानसन्द, ३६०,

जबहें में फंसबर

वन्त के काला । अवीक--- करका वही होता की कुम्ही के काही के की कालों बारगीकों का हो रहा है बीनैठ---राठ सठ, इस

अवात कोटा होता

भ्यान वे सृंद कुणना । जनाय—कारा हुई अधान स्थान व नाव भूगता है जाना (नुरंत—संबंद १३)

उपात काउना

- (१) पानो के जीन दशकर बारवर्ष प्रवट काला। जार पर्याप १ मा वास नवा है १ रवा व समान दोना वे बाद औं। नाब मी पृश्व ही बही (उसन-जेनकर, १३३)
- (२) बीमनी क्या कर देश: ।

ज़वाब की कालनी का केवा कलता

बहुद बाक्या । प्रधाय—बीच-डीच में प्रश्न सार्थित की व्यान की कैंची की बच्चा अवती उत्तरी है हिंदू। देव प्रण, श्री , बचा तुने कैंच कैंची की अब्दू अवान चय रही की निर्देशक—बैंक एक, क्या)

अवास की शकाह

ण री क्षा को प्रकारण देलेल भी प्रकार स्वत्ये प्रकार का प्रकार के क्ष्मी स्वयोगद्ध न

अवस्त के कार्य

र्वत प्रवच प्राथम का अनुस्ता हुन अनुस्ता है है है है



वश्राप्ति पुर (इस काल नहीं है झूडी० व सहस्यत्स पुत्रक्षेत्र

ज़बान के नेज होता

याद् बोलने बाला, मृहस्ट । चयोग —कान कह है कि उसकी वरवाणी प्रमान की वर्षी कृत वी (सीटाल---प्रमानन, 20)

तकाम के शेर

मीनने में बहुन नेता। प्रधाय-स्थार्थ तो यह है कि मून समनी प्रथमाओं की नई को की मही पहुँचते । यन, यक्षान के तौर हो (गिरु (३)--वेसकन्द, १६४

ज्ञपाथ स्कृतका

- (१) गोमना । प्रयोग--- उसके मामने बह-वर्ष मनायांचयः, पंथियों और वार्यवाहीं की प्रयान में कुमनो की (भानक १ प्रमाद १९ --- महत्त्र की विकास का का के मेरा कमन सुनती है जेती राजान वृद्धक--- बन्धन-अक पहुर वाल बनाय कहना है कि लग्न बार मुख्यान कि असमी की प्रवास जहां सकता। काल के प्रमानन्द १०

ज़बाब कोळवा

- (१) स्वयं काताः । प्रयोग—विस्न सामगी वे क्यो जनानं शती कोली ३६ अ वह साम एकाएक दलना अभिमानी १६ तथा यह स्वतः भीता दन र लिए वयधा या मानक १ प्रेमतन्द्र १५० जनान देवकर सम्बद्धः प्राथश्य सोलाना (सोठ—वश्यम, १९६
- (व) विरोध करना । वयोग---वीडी का व्यापे ही भगवान तर पुनर पर अपार मिल पुनरे पर कि जनान श्रीतिन पर बहु। हालकर कर पुटरकर नमें पर कामकर निकाल है। जनानी बोटीक निकाल करने व प्याप्त कोड़ जनाम भी करें हो भी दब अवान न कोलक (गिक है)---प्रेमकन्द, करते
- (३) मागना ।

जवान भारती या चलाना

(१) कुटला पृथेक जनर देना । वर्षाय —सर्वार्थः

पति कार ने प्रशास पानची है (बर्गठ-प्रमाणाद, १२५)

अवात ज्ञातर

भूग में क्षा का क्षा क्षा जाता । अयंत्र---वह वह मीग में मंत्रिया हुता, क्षाच एक शाने में कह पता ... पैसरे --काक, २६

प्रचान क्रोमाना

- (१) विशेष बण्या । अवीय-स्या वया दयकाथ कि अप इस रीमी में किवित हेरफर करने में अशा सवाग सोगा तक स्कृतिक-बीठ संदृष्ट १३०
- (२) मूंह के क्या नियासना ३

जवास देगा

बचन देश । प्रयोग—नेर्गान में बधरी अवान देश है कि असे तथ्य के बचनपान पर दोई बचा दवाब नहीं प्रयोग मुक्ति—स्माठ सभी, १९९८ : में निरायद कर पृथ्व है, बचार और दे पृथ्व है, जब नुष्यारी खादी कर पृथ्व है किसी— निराला, १६० : यह बच में नीटकर मु बादे, किसी को बचान में सैजियनर (१९०० २)—प्रेमचन्द, हर

(बार कार - ज्ञान हार्या)

ज़्बामे ध्रमाः—पकड्ना

(१) बोचने च देश---क्या वे रोकना। अपीत---प्रत्याप क प्रत्य है। अप्या प्रदेश स्थान प्रवास प्रश्नी बुद्दक--अन्सन् साल, ३६

(कर्ता करी पर सामयों की द्वार वा धन, की जार राजन करना। प्रधान करा नम् पा दक्षण पर एक हो राजा ! साम करी, दबकी सोग्री में नहीं तुम वपनी प्रभार में उपन में साम कर की (मुख्य-मार्स) हुन। हैनी में कह ही का क्षान पर की (मुख्य-मार्स) हुन।

(वरा+ गुप्त--क्यान रोधना)

ज्ञान प्रका

देश अचान भरता

ज़बान पत्थर की होना कुछ न कह पाना। प्रयोध—दिन की कुछ और भी कहन की भी ब्रह्मका रहा वा परम्य सबस्य क्यार की हो नही

ची (हान्०---वज्रपास ११३)

क्षरम पर बद्धमा --नामना,--ग्रेडराका

हर समय कहा वा नवराय कियर जाना । जंबान-सान एक अवदंग्य परिवर्तन तरे में यह पानी है कि इस प्राथित साल की क्वान पर यह बात कई पई है कि इस प्राथित साल कर वह है कि इस प्राथित साल करने के लिए काम्युनिक्य काएना है देव-स्थान नात कर की बहु बहुन दिनों एक लोगों की जिल्ला पर सामती रहती है (विताव (१)—जुक्त, १०५, केविन भाग का पुराना नाम कामार स्थान ही चय भी लोगों की अवाय पर बढ़ा हुआ है कठ०-देवसव, १४५ , पता नहीं क्यां साम वेंस सामत अवान पर मेंबा पहें हैं (बीएक-उनक साधा छह, केवा में ऐस कटाध में कि उनके कि नाम ही साम की मोनी जाना पर बढ़ नमें हैंनाव -प्रेमकन्द, १९१

प्रवास पर (मे) सरले प्रवस

(१) कुछ बीलते का साहत थ होना । प्रधान—काचनर क्यों नहीं, कथीने १ × × प्रधान में नाना क्यों का गया (अहाअव—40 क्योंकी १७०२

(२) म मोल पाना । प्रयोग—धापके बहा काने ही इनको स्थान ने ताना गढ़ गया चन्तीक- निराशा, ३०

सकान पर (वें) साले समाना, ज्युहर स्थाना कोनने से पोकना। प्रयोग-नोई सभागे क्यान पर नाता म नवा पके, इसके निष्, क्षय दिन-पात कृत्या प्रयोग तक्कव देव सव ३६३ चयर पर अपन (र इस प्रयोग का यह कम होगों तो यह जवान पर शृहर कमा नेता प्रयोग-वेंगकन्द २७)

त्रपान गरंव अपना या न होता

न गणनाः । पर्योगः न्यान (शः) । सर्वे अभियान स पान म गण्डे जनान म नात्री जागः – शक्षानाः ६

त्रदास पर नामाना

देश विद्याल पुर स्टुलर

ज्ञात एर संहराता रे-ज़्बात पर बहना

क्रवात पर मुहर संगाना देन क्रवान पर ताने संगाना

जकान पर स्टाना

(२) पथरा ।

ज्याद केरना

बार म बाननी । वर्षाय---दव पाच करते की बात-होती वो बायकी बंधान म फेरला (गंधन--प्रेमबन्ट, ६७)

ज़बाब बल्द कर देवा

(२) कभो में हम देता ।

ज्यान वह होता

बंगने नायस न रहता। प्रसंद—प्रश्नी वेसते ही इन्दर्भाव की जवान वंद हो वई (प्रतिकाठ—हीं)द्वास २०। नृगनुं का वृद्धं कम कार्यिका में विश्वकृत जदा सर विश्वक भाषा, जवान वंद हो नदी भागा।()—होमश्रद्धं, २७९

जनान बुधी होता

बट्ट बोलर्न बाना, अपसम्ब कहते बामा । प्रयोज—इमही क्यान सुरी है, दिल नहीं कृष्ट-अठ लाठ, २०५)

त्रवाच स्ट्रांका

ववाद संबंधन वयना । प्रयोग हम अभाग्य रचन्या स्वाम वद गर्गभूतिक संगठतम्य १०११ । साराजी वही



ज़बाब सम्हाल कर बोलका

भयोदा के जन्दुल बातभीत करते । प्रयोग—प्रतरक जवान सम्बद्ध कर बोलिए (परोक्षाo—प्राठदास, १०/; पर्यो व श्रदान सचाल के तही बालना । सन्भोठ शहरू १००:

ज़बरन हिलता वा हिलामा

(१) पहेनर, निरोध करना या होता। प्रधान—यम बृधन इसी ये है कि कर्मणारी जिन कम बैडात उसी कन बैडित विकासन न की जिन जवान न दिनाकत कात है। प्रसद २९५ , जन स इसकी हो के के से पह रहा जाता है पर जवान नहीं हिनाती प्रेमांक सेमबद, ३५

(२) मृह से बाद निकलता वा निकासता ।

अधान होता

मान नाया । प्रयोग— का प्रभाषा या अवधा का परनी प्रकार भी मानी बोली पा ३ वरण साजि जाते. कुलारोट जिस्सा १९७९

त्रवानी त्रमा वर्ष

र्मुह से दुनियों अर की बात कियं भारत । अपोग-न्यर अवानी अयालकों करने बीट कमान के पोड़े बीताने ने यह बड़ा भूपनर था (पांकाल-न्यील दास.सल-६१)

जगकर

(१) ब्रह्मापूर्वकः। प्रवाद-स्थानकः, वे प्रधाद वयको भी, ले प्रश्न हाच वे व हम जूडी (कुम्स्ट्रेश-हिंचीध, ६० (२)अध्वती सरहः। प्रवोत-स्वर क्यों ही कि परित की उठते, सब सोत पित प्रमाद केठ जाने और प्रकी सक मुनते रहते। प्रवासारा-प्रवाठ वासी, ४२

जम जाना

(१) टिक काला । प्रयोग—कडी के लोग वहां सथ नग ना नगरकी यथाल विधान अवस्य हो प्रकर हो जायला रंगः

ਹ ਉਸਦੂਰ ਹ

(२) द्व होता : अयोग---अण गय काल कर रिकायक व्यक्ति--हरिऑफ, इड्-

64 O. P --- 181

अस्पर बना बहुता

बहुत ने कीतों का बुटना (प्रकाय-मृतारी के दरवाने पर मध्य १८२ और धाम पान नक शहरण का असमह जना गर्ना का (मोनक (प्र-मृतारोद, ११),

(वशाः वृहाः—जमघर भुटना,—सगना)

डमर सार

धन रवाने कावा । प्रधोत—बस्तार वे तो सब उनकी रकी भर भी नाम न रही थी, अभागार अभिक्र हो गए वे स्मात २ - प्रेमसद २१६०

जमा मारका

धन दशायना । प्रधान---शृध्य वर---अपन साय पर----तोत्रयन समस्य है कि में श्रीमा का पैसा जाता हूं सैने सपरदान की बचा पार मी है 'पूँद०---चथ ताल, १५४), बारते हैं जना पराई पत्र (मुभदे०---हरिसीध, ४६,

नमाना

नरका । प्रशास-जार वार कृद्ध व कृषा, एक तो बोट नर्गा, पूनरे प्रान्थावा में प्रशासी नर्ग वापाने (सधार प्रशास-वापास दास, स्था

हमाना बात ज्ञाना,—सद् ज्ञाना

स्य बीरन की क्यिंत न् गह जानी । प्रवास--प्रिश्म द्वारकानाच ठाकुर का जनाना कीन वृक्षा का (बोटी---निरामा, १०), विभी का नद वृक्षा वा नगरना (बुद्ध---नक्ष्मन, ६०), नगर वह नगाने तो गर कर वह की किसी तरह गुजर करनड है (मा--कीशक, 324

क्रमाना सद् ताना

🖙 जमाना बीत जाना

तमाने का थुक बारना

नीय में नीय बाम करने की मैदार रहना। अयोग— विमको बांग में इसाम हमक में च गमी काश कर के करता है, और जिसके सभाव में यह अपनी बांग्या को भागों को नवह कराक्कर दिला-दिलाकर अधाने के यूक बाहता है—बहु देसा (बीनेंद्र---नांठ राठ, छन्।

क्रमाने की आंके देखे हुए

यमाने का श्रीका वेसते हुए। मधीन-जबाने की मान इंग्ले हुए कर्मजारी, बेठ क्यास्त्रण के समावकार और स्थान की भूती जाति समाने से (युट०-३० त्राठ, १९३

अमाने की मार

द्ग का कुत्रभाव । अवान---वजाने की मार है बनादे के शाब भारत पहला है (दूधगाछ--देव सव, २९६,

प्रमाने की इसा समामा

पन की विकारकारण का प्रभाव पानर । प्रयोग—कच की रेग्यू बीट रह, होत व क्यांच महाद । नृपट्टे कारी शमत-बृद, कप-नादय, वन-शद (विहासे स्टनांक—विहास), 0)

प्रमीत भागमान एक करना

- (१) कीर उद्योग करना । स्रयोग—मी लोग अने प्रक बारों की तरफरारी में स्थीन बंध्यशान एक किय शालने है धौर क्षिमी का नाम नुनते ही मुस्कृती को कंप्याद होने है, यह एक बाद अपने समयारों की इस्पत कर निवास शाले (पूंठ निठ—बाठ कुठ युठ, २७६) , इस बोटी भी विस्पेरसरी की संस्था के लिय संसमस्त समीन एक कारत रहा (मैलाठ—रेन्. का
- (२) अब गोप-गृष: धगरा आहि करनर (

अमीन भागमान का फुरक होता

बहुत चलार होता । अभोग—शोनो बाहर) हे स्वकार वं बयोन भानमान का भलार चा मृतिक—शात क्यां. शहर 'क्यों ने क्या कर्क एक स्वा हैं" 'चानी बाकास का'' (सोशीक--वे o, वेमी, १५३

हर्मान भारतकात के कुलावे जिलाका

- (१) हर-दूर की कल्पना करनी १ क्यांत—वर्ष-वर्ष सालियों की एक वे सिर पैर की बात की आईए में जबी भीर शासनाम के कुलाबे मिनाते देखता हूं (सेवा०— प्रेस्तंद १४५
- (क) प्रोप क्यांच करता के द्वारण वर्षा कर है। द्वार मधी की तमक्षेत्री की बार प्रथम प्रथमित सका सका कुम्पाच इस्ताक के सम्बंधित क्यांच के स्थित द्वार के स्थान

तस्त् का प्रच विभागर अपना संपीत समाते हूँ (फ्रोहा० ⊷फ्रो०दास, १०८'

अर्हात चादना, जुमना

- (१) नीचे विश्वा । प्रधीय —बाटनी की दोकर से रेबनस्टन पृथ्वी चुमने समा, तब बढ़ बाम पीने बमा पया रिललो--प्रसाद, ४९०, ४वे, में कहना हु, यूद्र में लगाम कमा नहीं को दरा-बी देर में बमोन बाटना दिखाई देगा (दिवय- एक बट्ट, ४४)
- (२) पूर्णक चराजिक होना

ब्रमान बंधना

देव अभाग बाटना

क्रवाद संकार करता

वरक्ष्मा नंबार करना । प्रयोग-निरुमा हेवे-एटमी के रेनए को नवीन नेवार कर रहा हूं ।वरदान-प्रेमचंद्र, १९९९

जर्मान देखना

- (१) सर्व ने निवादें नीवी कर नेती। प्रयोग—होत अदार नवन वर्ष गीर्व, गरनी कहा निहास्त (सुर साठ---सुर केरहरू
- (३) हाध्या (३)

उद्योग कापना

नहां के बहा जाना । वशोध-वे नक्षिक्टेंग्ट की बिर शाही पैर पॉटवंग किये सेट के वेयत्स्वर कम की अभीन आचा करते हैं × अन्तरे वेयत विश्वता विश्वता है (दूधगाछ-देव सव, ३१४

क्रमान पर गिरा देना

परावित कर देना । प्रवाच कुरुलया मानूर प्रस्थित. देश धर्मन निराह (कुण सीठ-सुर, शुरुष्ठ)

अमीन पर पेर न पड़ना

(१) बदा क्य होना । वयोच-सम्महीन कुल बन्ने मत्त्व प्रमुख पाई तो (कू वं परे न पांच कुलि गए जापू रहे की गाउन प्रमाण-पाठक दास, 20): कोई उसे रस-मगी अंग्या म देश लेला है या उपका सन (र पना प्रमन्त हो राजा है क्योन पर पांच नहीं पहले मानेट हैं जानेद १६० परनो पर पांच नहीं पे सर पांच पुटल प्रमान

- (२) बहुत प्रमम्न होता । प्रयोग—मेन पृत्य भी कि का है जो माज अमीन पर कदम नहीं पह यह है (बसुरिट— निराक्षा १६
- (१) दुविचता के भारे वस न परना । प्रयोग-नोच विकास मग परद न पाक (राम० (च)-नुससी ४०८)

ज़र्मान पर सिर धरना,—लागा

- (१) मानर बंदमा करती । प्रयोग केटि लंक करन नव हरें (मुर नर देन्ति बाच पूर्व चंद्र भटक--कारामी ३६), जाता बहुत भूग निष्य नाच नाच प्रदे बाच (बंद्र--कारामी १०१६), ही राधन भूड चरा निमाद् । तुम्ह राजी कृत-जून मूल बाद (बंद्रा--कार्यसी, २४११६); बनवर्ड वक्ति कार्यन प्रशिक्त (सम्बद्ध कार्य)--कुलसी, ३६)
- (२) विनयनापुर्वक कृष्य करना । प्रधान-आस्मृतिह रततृतिति हाचा । नेवा करेतृ नाद्र भृष्टे वाका (पद०-जायमी) ३०%)

(समा० प्रतान-प्रमान पर क्रिय रक्ता)

ज़र्मान पर स्थित लाना देव ज़र्मान पर स्थित धरना

ज़र्मात में पड़ जानर

भरपन लिजास होता । अधीय---वृत्त्रम् जनीत में तर मा गया (सासीय--वृत्यमा, श्रद्

(मराव युश - ज़र्मान में नमा जाना)

जय सीनारक होता

कुछ न होना, बहुन आपूर्णी होना । अधीन—हम नोयो की अध्यक्तात वृत्ती कर मीताराम यो अपनी सबर उप, २०)

अन्त उउचा

- (१) कुट जाना । अयोग—चन्नश्यी जनकर कोमा— भननी केंट केंगी मुक्त रही है (रंगठ (२)—अमबंद, १३५
- (२) कॉपित होता । प्रयोग—तब वह इस'दवा'का ध्यान करके अस उठता, और सोपता, मैं नरक में बरक दो एनका क्या (शैक्स (१)—क्सकेंग्र, २०१); वेशे जुनते हो यस उठता कभी असी-नटी बातों ने और कभी दंद के क्यी की शबद सेना (१०० (१)—प्रमंबद, १८१

क्लकर सम्म होता

- (॰ जरण हुन। हाना । धन्यम्—प्रत्य वन किसका है ध्रस्य ९ प्रत्या निक्रण निक्रण आहे क्या किस वयता है स्थित—क्षिक्कीक, हुन्।
- (२) बहुत हुई बाना (

इसः तन्त्रकार

व्यक्त । प्रधाय-नद् सारे कट्टूबनन और उसने सम-प्रक कर बन्तें कह थे, इस समय नेक्सो विक्याओं के समान देव बार रहे से (प्रकार-प्रमुख्य, १९६

तन जाना

(१) नष्ट हो जाना । ध्याय-वाँर जाव ऐसा श्रीवरी, राजा राम मूं बीर्ड व होई (कवीर ध्रेष्ठा०-कवीरू, १३८.) नित्र नायत वायवना काँग शाह, वो बार्डा अंग अशामित रे कवि०-श्रीवरी, १२२), कर बाद्यों से बाज, बेटी ऐसी रोग कांच आयत कवय-नेंग नी से रमन म बीमें (मंद० प्रवाश-मंद०, ३०४); सब तरह की मुख्य चून्यों में यह बाब यम जनकी कवाई के ट्ये (चूमरिक-हिस्सीध, ११७) (२) बुख बाना । ध्रमंत्र--वृज्ञा भीतर से प्रमाण्ड

जल-बर कर घेगाडी होता.

डल भून जाना

- (२) कुद आता । अयोग-सभ्यत सम-ही-सम जल-भून रहा का (बृद०-सभ्यत), ३९८); कियोगी में यह हम रत्या । वह अय-पृत वह (अकारा प्रसाद, १६९)

(समा । भृहा - जन-वर जाना, - भारता)

जलता धर छरेष्ट्रका धूरा बुधाना कृतना का कर्ज करना, आवस्त्रक सोहकर अनकस्त्रक



काब करना । त्रवान-सम नर जरन न माने मुस्ब, बर नवि कुर बुकाबे (सुरु सार-सूर, १५६)

अध्यक्त हुआ

कोन से पाए बनला व्यक्ति । ज्योग-चिन राजा जान्य निह भारी । जनत बुद्धाई हुनी नारी पद०-आवसा ३३०३

जल्ली वर्ष

आधर अनक रिवानि । प्रयोग—भीभ ने उन्हें भेरिया व भी प्रदानक बना रक्षा है। वे बकती-वननी बाद वे दौकने के लिए उन्धुक हैं कामना—प्रशब्द, ३०

क्रमनी भाग में कृद पत्रका

यान कृतकर निगति का करन करना । प्रधाय-पृथोपन प्रीम क्यापीन्य कपट-कृताल और वीने जुदारों के दश्यार में ऐसे भवतर पर दून धनकर ताना, बान से प्राय वीना, यह-यानी हुई बान में सुदना था (बहुमसाध-पहन्तः सर्मा, ॥)

अस्तती हुई दृष्टि

कोश्रय्तं रिष्टः। यथोव—किन्तु यन्त्रं कार्यं उत्तर न विश्वा, यो ही जनती हुई दृष्टि से भाषी की विकास वेजने रहे बाहरo—देवर, ४३

जातते हुथ घर मैं हाथ सेंकतर

विस्ती का अधिन होता हो तो उसने अपना भाग बना देशा—किमी की स्थित का नामस्यम प्रध्यको उठाना । प्रधीय—होरी किमान या और किमी के दनने हुए पर ने इस्म मेकना उसने बीजा ही न या शोदान—प्रमाणन्द. ११

जलते इत्य पर पानी के अंदि देना

दुली को नामकमा केना । प्रयोग-स्था ना करके भाव-करे आना-भावन तपे-हुडम पर वी गर-होटे डालनी वेटेही। हरियोध १६३

ज्ञलका

(+) राह क्यमा । प्रतास स्थापन ह व पनि नया दिवयो तरा हरियार संयक्ति राह १४० प्र. तृत्यमे १०६८ दश्य साता संयक्ति का हुद्देष पाने तहस्य व गया होत्यक कि इश्लीर सामाणा जा का संयक्तिहाल क्यांकि दृश्य 360), समस्वन्य में एक प्राणी की ऐसा नहीं की सबस अवता हो ,मान० (१)—ईनचंद्र, १९२), यहर एक दूसरे को दक्ष कर जनते में कुल्पीo—निसासा, १२०.

(२) बहुद कोष होना । प्रमाण-मुनन समन रामन पर प्रमा बनन सहरक्षम सन् पृत गरा (रामश्राही)-सुलसी, पर्वा तम प्रसा क्या मुक्त संस्त हुथ वर्ष कि सुनने सुधार नाम बन्ने प्रमेश-हिष्योध, प्रद्या, यमू जल बढ़ी । दीनी स्वत्य सुनीनो सन कहा करों सामीश-मुंध वर्षा, २४

()) भारत हुन्यों होता । प्रयोग — एक हम जरित किस्तावन आए, यानो रिनयों १६ए (सुरु साठ—सुर १४११) , नदा यन बामन्द सीन मुजान । कहा प्रतिवाद सरिजाई करेती । (धन० कमित्त -धनार, ११९. , नहनी अअमुकट्ट कोई नहुं क शमे कान्य जनन अर जना करें (ठेठ० - हरिओध, ९.

प्रस्तुता श्रहता

दुक-युक्त भीतना । प्रयोग---पृथ्वे किनानों के साथ जनना-बरना है । युक्त के बद्दकर दुनरा उनका हितक्छु नति हो नकता गोदान---प्रेमकन्द्र, १७००

जलांजिक देना

- (१) एकरण स्थात देशा। प्रयोग-न्यामी अ अ काश्र भीर सम्बद्धी सर्वानशिक्ष देवर इत्यारी चंद्याई इससे विकते की क्षाता है। सारु सुरु-वारुख १४
- (२) तथम बन्ता ।

जनाकर भस्म कर देशा

जन्म इदय

(१) कुना हुआ हृदय । प्रयोग—स्थाया मिह समक्ष गर्थ वि यह उन हुए दिन के प्रशोध के प्रमान प्रेमकृद्द १९५ (-) दुन्धे हुश्य - प्रशोध—कृष्टि करण्यक्त र दिनाका है दाल कर यह यह क्षेत्रहें में चित्रक हुए ग्रीक व

जन्दानाः

ब्लादमा । प्रयोग - इस्से स्ट्रांट क्यांब आ कर

वारी (सूर्व सार्व- सूर, ध्रम्यक्ष) , विनु समूर्त निय द्या परिवाक्ष । प्रार्थित जाने प्रतिन नहि कान्य (सम्बद (या)——— पुराक्षी, ६२०) ; वेच्यर दूसरों को चलाने के निर्म करण सारी है । आग जलने के निर्म नहीं यह बाद रच (सुनावक उपन नाक, करू) , उपन क्या नृष्य पर किनान क्षम्य विसे, केंग केंग्ने निरम्य द्याय, सैमा भनावा सुनावन (पहमवस्ता— पहमवस्त्री,३९५) ; रोटी बाने का जब समय हुवा है न ! वृष्य विस्ता प्रसात हो है (सिसलो प्रसाद ४५)

(२) पुरानाः । प्रभोगः श्रीय धोको सामकाहै कि स्तर चिन उस प्रणाती रहत्वे हैं (योदान—फेरक्ट्य, २४-व५ वैक्सिट्र वर्षमा (१) में (३) मी

जन्हाने आयक

वृद्धः, स्थान्यः । प्रयोग-न्यारं जोन सुमान (सारा) यनभण तथि न प्राप्त तुम्हारा सम्बन्धः य जुनक्षः ३००.

जनापे के बोस काइना

विष्यापूर्य सम्भाव कहारा । अभीग—कोई कोई संवास करक रिकास मुजामाल कारी-दिश इंग्लिस हु और किर दालस म भित्रकार (उर्ज न) कहारा के लिया जनाय न क्रांस हुने हैं (सुहाराठ—180 साठ, ३४)

ज्ञानी करो प्रधानमा स्वाना, ज्ञानी भूना स्वाना (१) नवती हुई वात कहना। प्रधोन—काव नारर भगवान ऐसी अनीकरी वयो बोनसे हैं (अश्व अवाव (१) —आर्सेन्स, २६६), अब मैं भी जनी मूनी मुना हालकी हूं (दूधगाम—दैवसव, ५४), यह वाए तब वाती करी पुनाई पुना स्वेव आग्व क्या तक वात करो करी वह नोड़ रहा है जाना (सर्वव—हरिक्षीध, १५०); यन केलो में 'विद्योवस'' के सम्मादक को भी कृत कलो करी मुनाई गई है (यह प्रपास —पट्ट का ज्ञानी, ६५), यह प्रमा से क्या क्या करी मून केलो हुं प्रमा से क्या क्या करी हुं प्रमा से क्या क्या करी हुं प्रमा केरी श्री करी करी हुं प्रमा से क्या करी हुं से उत्तर देती है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है जनी करी अन्य भी सान के क्या है क्या है (क्या वाल वाल करी है करी करी अन्य भी सान के क्या है करी करी अन्य भी सान के क्या है (क्या वाल वाल करी है करी करी अन्य भी सान करी है करी करी अन्य भी सान करी है करी करी अन्य भी सान करी है करी करी करी अन्य भी सान करी है करी करी करी करी करी करी सान करी है करी करी करी करी करी करी सान करी है करी करी करी करी करी करी सान करी है करी करी करी करी करी है करी करी करी करी करी है करी करी करी है करी करी है करी करी करी करी है करी करी है करी करी करी है करी है करी है करी करी है करी करी है करी है है करी करी है करी करी है करी है करी है करी है करी करी है कर

(२) स्थ्यपृष्टं बात कहना ।

(नगः मृहःः—ज्ञलीकटी कहना, -पर भाना,— यान मुनाना)

65

O P -- 185

असी-कटा सुनरनर

रें अयो करी केलना

वना भुनी सुनाना

दे॰ जलो कटी बोलता

तले की जलाना

(२) इंडर्न हुए मास्ति को और दुशना ।

जले दिल के कफोले

कृषे हुए व्यक्ति के उद्यक्षत । प्रयोग—उद्यालागित गमभः पर्व कि यह अने हुए दिल के क्ष्योंने हैं (प्रेमांo—प्रेसकाय, १९ /

जले दिल के कफोले कोडना

यम का कार्यास निकासना । प्रयोग-नोध में घरे हुए बर बावे और विद्या पर समें दिल के क्यों है की है प्रियान --वेमवन्द, १७०-१७।

अले पर नमक (लोन) क्रिडकता,—देना

विसी दुनी या व्यक्ति सन्य को और दुन दना । प्रयोग प्रश्नी में दिन कर्नन के दन कर या नाम मूठ साठ नेतृत प्रश्नी अति कर क्यन कर्नात करायी बानह नोन करें पर देते (प्रमाधानी) क्या हमाने हैं या दानों के या नाम मान्यापाद जल पर समझ विकासी हो (सालठ (१)—प्रेमकान, ६३), सरमानिह अथक क्या × अ "बीमात क्षेत्र पर नमक मिदकाने के समान है" (मूमठ—पुठ बर्मी, ३६६)

(नमा । पृहार-- तने पर बहक तथाना)

जले पर नमक देना रे॰ जले पर नमक छिडकमा

तर्दे भूने

र पर प्रभाव मांज्या मेंगारीही प्रस्त ससी प्राची



की (मान० (१)—प्रेमकन्द, ६) ; किसी बले-भूने कवि ने बाह मारा हो तो पह कोई नहीं कह सकता कि करिना में भी भाग की भूछ है (६० मो०—६० ना० मि०,५६). क्या अवद, कवि जना-मृता कोई है क्लेशा शना-जना क्या (बोसे०—हर्ति प्रोध ६)

ज्ञयांनी उत्तम

वनामी आला । प्रयोग-एक दुनिया से उठा है बादत। बीच है उठती बयानी एक की चुमतेक--एर्स्फोट, १६१

(तमान मुतान-जनामी उभरमा,--सडमा)

अचाच मन्द्रव करना

गकार्य मानना । अयोश—यह यस भी कहती, उन्हें बुक्तकर उनमें बदाब दलव करती वी गोली—क्युरंट, १४२,

ज्ञयाच देशा

- (१) नशनप हो जाना । प्रयोग—नाता चौर पन्नी गर पूर्ण वी (मुस्ति) प्रेशा (१)—मुस्ति, २००) , अन काई राम भवत पूच-काम, अ।ई-वंधु का माम क्रोटने, कर्य गम के मूद भीतन चौर जयत से नाता तोत्रने का उपरेश देता है शम मेरी समाप्त जवाब देने सनती है (चिता० (१ —ज्ञाल. ९१) , राम जोव दी जानी है मेरित शिवाही को ज्या ही साम किया जाना है, राम जवाब दे देती है मान० १। —प्रेमणद, ३६)
- (२) नीनको से प्रस्कारत करना । प्रयोग---शहनानं भूगाने के नियं एक शरीदा यह उसे भी ज्ञान दे दिया सम्ह (मानक (१)---प्रेमधंद, २०३) , हुन्द असर मुद्ध पर प्रयोग करते ही भी पत्र जनाव दे हैं सिद्धाक---सक शिद्ध ह
- (३) शोनी की अच्छा करते में सममयना प्रवाह करती । प्रमान नह नां समझ्य की दानहरों में समाद दे दिया र इन्ताव भंगव समी ३४-३१) , द्वार ! द्वार ! बंदा म ४४६२ दिया, हारोमों से बनाव दिया प्रमाठ- ग्रेसपट, २०५

अधाय ध्राप्तना

नीकरी स करमनाम्स किया अन्तर । अयोग-निर अव

तो मुखे बनाव जिल रहा है। वेजिए, भगभान नहां के काते हैं (मानक-प्रेमचंद, ३२९) : मुझे बेस की नौकरी में बनाव जिल नवर है (मोटo-जिम मायुर, ९४)

उकाच होता

बराबर का होना है। प्रकाम—पहां में माठक कुछ हम भारत बंदर नेता अ अ है कि उपकार प्रकास नहीं (पेतरे -उपक, २० , धीर गाने में भी भागपाल के वर्ष महस्त्रा म जनका बचाय न था। (रंगठ (१) -प्रेमचंद्र, २०

प्रसन्त्य में जाना या पहना

- (१) अप्य होता । प्रचानः —स्यो प्रस्ती आसी ठीक XX लोगो को विष्यान विकार आप ही भव परने पाछ पहस्मुख में पहले (माठ प्रधान (१)—साहतेन्द्र,अध्यः.
- (२) काई सम्बन्ध न होता ।

त्रहर उपलबा

क्ष्मेरी क्ष्ट्र समय कामा । प्रयोग—वर्षी में हमार्ग धना जार दिन-राम, क्या करें आस्तीम के हैं साप (सर्में) —हर्षत्योध, द्यः : इसने सरवन की मई धीजनाओं के विका एक खोटी-मी पुल्लिका विभागर जुन बहुत उगमा .१ ६०- या मार, प्रथात : पर वो मुख कही, गरमी कीर हमदारों के बाब बहु गई। कि बहुद स्मानने सम्हें, करेंगे को गुजरी बना कामां (सार १)—क्रियंट, २०६

जहर का भूद पीना

िनी अन्यत्त कोप रिनाने वाली बात को शुनकर कृप रह बाता, यह नेना । प्रयोग—सावकुषाची बने अहर के पट की तकह पी वर्ष (तितली अस्ताद, १८६)

(नमान नुहान- इन्हर का घूँढ उतारता)

ब्रह्म का बुकाया

- ् हरास रका रक्षाः ३ वा स्थेर राष्ट्रवास नास्तरम् प्रस्तरा स्वयः वास्त्रसम्बद्धाः सारगीः प्रारम्भाविकं अञ्चलका ३ सारहरू २५५
- () यूपि क्रिंग्य

अहर का बुनाया छूरा

बतन दुष्यनाचा । प्रभागः प्रमान भूग तथान प्रमानका स

विष के बुने छुने (मा० प्रदाय(द)—मास्तेन्द् श्रदः (समार प्राय—जहरं का बुक्ताया दाखा)

ज़ेहर खदना

- (१) कोथ जाना । प्रयोग—हेगी विस्तवन मृतकर उसे और भी बहर रह गया ।सुरुष्ठ्य-मृदर्शन अर
- (२) जहर का प्रभाव होता ।

ज़हर देना

जरर निमा देश । प्रवाय—में संध निम परवक्त गर की मूँ । योग महीपति माहर दोस्ह (र)म० ,कः न्यूनसी ५२९/

ज़हर बोना

- (१) मनिष्ट करमा । अयोग—नी कहती हूँ, तुम उसके सर्वनका का सम्मान किए अल्ब है। उनके विद्या करत कार माते हो (मानव (३)-- प्रेमधंद, ४१
- (६) संपर्ध जनवाता ।
- (१) मुध्ये बादा या कान करना ३

त्रहर सरावा

नहत प्रियं ज्ञान पश्चा । श्रमीम्-ने क्या ज्ञानका वा कि संदाहनमा कहना जहर होता (राष्ठाः वशाः --राधाः शक्ष, १९५) ; वै ज्ञानता हैं, तृष्ट्रे गरी बात जहर का मही हैं (ज्ञानत (प्)--प्रेमवट, प्रक)

असर्ग-महर्ग

- (१) हर कपह । प्रयाग—युक् बहरक अब मोनि यह तह साथ म कहि जुप (रीमकाबात)— कुल्सी,१७४)
- (२) पोर्शन्योरी दूर पर, इवर-अपर ।

अहाज का काम होता,-- यही होता

गमा अविका शिम वृष्य शिक कर एक ही आध्य देता रहे।
प्रयोग-जैता भए बीहिनके कात सुरु सार-सुर, २९३०).
प्रकृति कियुपी को एक के सम जो पूर्ण हरि साथ जा ही सुरु
सार-सुर, ४३६२), बाहिन मोहि धीन करहे कर्म, जैस गण तहा जो मीतान सु -तुनस्थ २९ पान के स. ज. प्रवृति-स्था पदी सही मन हीई (मारु ग्रेगाल हो-आरतेन्द्र,

शताज कर पश्चा होगा द॰ जहरज का काम होगा

ब्रांप का भगेका

र्यास्त का बरोशा । प्रयोग—मान की उसने कड़ी कीमा नहीं बाब का कपना अरोगा है जिसे (वॉलट हॉस्कोध, <३)

जरंघ की कमाई

पदनत की कमार्च । प्रयोग—नाम कर नाम का नता देना काम है जान की कमार्च का (मुन्नदेठ--कृत्वीध दुष्क)

जांच में क्षेत्र

वर्षान का परिवय से प्राप्त होता (वयान—है जवाहिर न नोहरों के पर प्राप्त स है अरे जवाहिए वस (मृभरीत— हारकोश, क्ष्य,

ज्ञाम उद्यम

यन में भाना, उत्तरन होना । प्रयोग—भानन्त के बन दी नुवान कान जानि कही, जाएन जानी है देसे सोई है इस्से दरक (पन0 कदिव—पन10, १७९); उसकी सब विकासाए पुन: बहम इसी (केसर० ,१)—प्रक्रों से, ७२); इस चानु ने महिलाओं की बान-स्मृतियों भी जाने उसती है (पनन—मेंसबंद, १)

क्राम पहनर

- (१) चीर वर्शन के बाने पर रात में चर के लोगों का बाद पहला। प्रधान—माने नाच में तरन पढ़ गर्मा गोरान—प्रेमबंद, ४३.
- (२) बतनता प्रत्य करती ।

जागता हुआ

- (१) बाधात् । प्रयोध-अनार में नफनता का सबस भागता हुवा अब अफता अयोग, बस्यवसाम और द्वता है (प्रेमाठ-प्रेमचंद्र, १३६
- (२) वयवता हमा ।

ज्ञागना

गरंद वा सावधान होता । अधीय—सृति को बात राजा सब जाका पदण—खायेकी, ११९७): बगावे पर की नहीं। असे (सर्व)—हर्वकोध, १५७); उपर बाह्नी अध उठी है इसर हम भी कब सो रहे हैं (हड़्व)—देव संव, २९९)

जात दिकाना

ज्ञाना रहता

(१) पृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग-नावनी संस्ट महीने की होत्वर मानी रही द्वादै०---मान नान, इस

(२) बुर होना रोग में मुद्रकारर पाना ।

ज्ञाति गंधाना

व्यक्ति-व्युव होता । प्रयोध—अहत वर्षोध नुनद् येदः पर्या, इत वृश्विक वेदी अहत नक्ष्ये (क्योर प्रयोज— क्योर, ३१०)

ज्ञाति से बाहर करना

वाकि से जिलाक देशर । जयोश—बालो इस ऐसा कर तो जानि बाहर कर दिये आध-भाई विशासकी में हुस्का वाली बंद हो जाय (विशाल—कोशिक, १२०)

(भवा+ नृहा+--जाति से बारिज करना)

आर्थ्य ततस्या

प्रभाव हुए होना । प्रयोग--यह स्थाय और थय, हानि साथ बहिसा और स्थाप सब कृश सकता कर सी बात्यातम्य के कृते हुए शाबू को उतार न नवा कर्म०--प्रेमधर, २९५)

जाद् चढ्रता,—चलवा

सागर भटना प्रयोग भएक करते आई प्रसंस कर करा भाग के अबद देशायाक देश में रेशक कि उपलब्ध हामारके जिसे से बदना भर कर होतू देशी के कि प्रसंद करा । कीदान प्रमादे ग्रहम्यों का कि प्रसंस्क के प्रसंद करा भा होता-निकास देश

ज्ञाद चनता

¹ काट चहता

जावू शालना

बात में करना। अयोग—'सबल फिल्मज के बात (Boss) पर जनते ही बेना आडू काल दला है उनने ? , पेंतरे—प्रज्ञक, ११०)

(समाव पृहाक-काद् बलना)

जातू सिर पर बहकर केन्द्रता

नहरा नमर होना। बचायः नामू नहे बभाम मीना पाँउ के बाल्यामें शक्षण एंडोक-एक्टाक्टाम, १९), न जामन होने नो क्या इंडलन नाहब को बंडो नियन नृप्त के बंडे नीरद के बिकाइ करतो है जादू बहु मो सिंह चहकर बार्क (अग्राक-देवसार, ३६०), बन्दों ही बहते हैं कहन पण्य सन् बहु का विस्थार बहुन र जान बोलक हरिस्तीय १९

जादू दोना

- (१) प्रमाण होता। श्रमोय—क्या हुवा भी बाद में मादू नहीं हो किसी की बाक में बादू बतद (बीहाo— हरियोध 40)(⊕)
- २) तहर ही बाक्ट कर केना । वधोव—देखिन प्रयोगः
 (१) में (⊕)

ज्ञान एक कर देना

बच्चा-माध्या । प्रयोग—मुझे यो १४ घर हे निक्यते को करेबा, बच्ची और सम्बंधियान एक कर दूर्वा (विक्रक—कोशांक, कर

जान का गारक होता

(सकः मध्यः जान को लागू दोना

ठात की वाता स्थापन

रिस्टेश्स को प्रश्न करते के प्रिय प्राप्त कर के प्रश्न के कर करते हैं। व करते | प्रश्निक प्रश्निक को प्रश्न के प्रश्न की स्थानिक के प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न की प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न की प्रश्न के प्रश्न की प्रश्न के प्रश्न की प्रिक की प्रश्न की प्रि



जात के छाठे पहना

प्रभग बचना वस्ति दिलाई गड़ना ; जी पर धर बचना। प्रयोग—परम्यु देखो, शेलमा मतः। नहीं तो बोनो की जान के लाले पढ़ बायगे (मान० (प)—प्रेमचंट दशः)

जान को भर पहला

मनं दुर्गत होता, स्थिति भारती । प्रधाय-अजन की भारत की भा गयी (चतुरी०--निसासा, १३)

ज्ञान को आना

बहुत कठार दर देनर । प्रयोग---वरद्वी, वार्णका सारव हमारी भाग को जा आगंदे (जैसर (३)--धक्क ब, ६३)

রান আদা

परेशान करना । प्रमोन—मैं ऐसी मेहरिका केकर नमा कर्षमा, की नहनों के भिन्ने मेरी जान काती शां ,मानव (१)—प्रेमकन्य १३९)

शाम गाड में बादना, जोटी वर धाना

स्थीवय में होना। स्योग—कवादार की काव कोटी पर पा। गई 'कोटोक—निराला,क्ष्य गरूनक गहन के जिय तो पाप महीती कटती है, उन्हें नेकर कीन करती शाम गांध है शांचे हैं (प्रेमाक—प्रेमचंद, इन्ह्यू)

(समा: मुहा:--जान गाड़े में पहना)

जान कोई। पर भाना एँ० जान गाडे में पहला

जान खुडाना

प्रतान क्यानम, किमी अध्यद से सुदकारा पाना, संकर दलमा । प्रयोग—द्रकुरसोहानी सोद भूडी प्रयोग। कर किसी तरह सपनी यांग चुवाते हैं (सट्ट नि9—क्षा) सहद, १३९)

(समाव पहार-जान बसाता)

ज्ञान शिलंगी

(१) किसी इवसी या मानी हुई संस्था, व्यस्तिया परिस्थिति की किर के उल्लेखना से धर देना । असेन-उसने पुर्व साहित्य में एक क्यी जान करवाने की कंप्टा की वा 'पुरु निर्म्णाण मृत्युर, वर्षः) । शासते वे शास मी वेशान में बाज में हैं भारतर आने निर्मे (कुमरीर---सरिओंक्ष, २९

(-) विसी निय पाटि को सांबक सर्वत्व बना देता ! प्रयोग -मृत्यदा फेकर केटले हैं तो रंगों में जान काम देते ! है (कठ०--देश सर, १६); बन्धा की दृष्ट से भारत वैसा सरम न का पर कटराज के साधनय और विदेशन में रमम जान साम दी की (पैसरे--अडक, २६) : नहमारता में साधारत विषय भी जेने ती देशमें जान जान देते सुरु सुरु--मृदशन, ११६

ज्ञान तरेक्कर केत्रतन करना

कृत परिचान करना । प्रयोग—द्या सन्द जान मोड का बेहनत करने की शांतन में बादने में ने पांता पा (मान् (१)—सेमबाद, ६०)

जान नोरता

शरमा । प्रयोग-सारतम सदक पर भाग गोठ रहा था ,क्टा-देव सव, १६६,

जान विष हेना

बन्द कार्यावय होता (अयाग—प्रवस पर बाने भी या बभारिको बीट कहारिको वर बाव देते किस्ते हैं (माने० १)—वेबदंद, ३०१/

जान देना

- (२) किसी बस्तू के निर्ध बायसा ब्यासूछ होता।
 प्रशेष—वदि ऐसे विद्यालयों से पैसे पर जान देनेवाले
 × × क्षांच निकारते हैं तो बायवर्ष क्या है ? (कर्मंच—
 देवबद, १% हा, वे जोग शिकार के बड़े बीचीन होते हैं
 धीर मुखर पर नी जान देते हैं (निकाय—क्येंजिक, १२२)
- (३) क्षाकार व्यार काना : धरीय—वेनामा पेरिस-नावची से वरने कोन्द्र कोलनो भी पर माधनी पर जान हकी भी मुहाराठ-काठ साठ, १४ : बहु रुजी भी इनके विष् वान देलों भी (धै कोठक—अठ नाठ, ५१); नापा

- 1



करत गरसून में पंपानी

नेहरात चाहभारे वर बान देला वा (क्ला),३)--क्लेस्बंट. १५७

(४) कियो कार्य के कार्य में सपनी मान नवाना ।

ज्ञात बाबन में शमाना

बहुत दर जनमा । प्रयोग-इमारे विको के लिए व दरा-ता वर्ष होता का हो हमारी बाक माध्य में संबंध बाकी की (वंग०(१)-वेंगचंद,१६७)

(लगाव प्राप्त - ज्ञान नहीं में समादा)

अपन पहला

भवीन जलाह बामा । अभीय—इसके बादे से मुहत्ये हे भारी भीवन में जानानी पढ़ नदी , गटर—प्रेमचंद, ७००

ज्ञान पर भा पनता

(शया । मृहा । — ज्ञान पर भी पश्चमा । — नीयता जाता)

जान कर केल जाता

पान की परवाह किए दिना काम करना । प्रयोध— किर वह क्यों दवे और क्यों ने जान पर सेमकर नैसूर के प्रति तसके बन के बरे पूजा है, उसे प्रकट कर दे (सान० (१)—प्रेमचंद, १८६) : प्रत्यंक सन्ध्य क्याने ज्ञानि, क्याने क्षामें और वेस के किय जान पर नक्य सकता है किया— दुनी, ४८), जना ज्याकर क्षाम अभ पर संख्या (वेदेशीठ —संस्थित, २३६), हो बीर क्या—पत्नी भोजकर के जनन पर संख्या गया (बिसाठ—कीशिक, १६२)

ज्ञान पर यह भाना

प्रमाणसभी विश्वविक हाओं। अपन्यं निर्माणसभी क्षेत्र के स्थाप विश्वविक होगी होते प्रमाण महिल्ला है के स्थाप के स

ज्ञान पुरुषका

सन् प्रत्यक्षेत्र में इत्या है यह का उत्याह के स्थान बाह करवा में दुश्के में इन यह बोटी की जा कर

आन करहाती

क्तनस्य देश । प्रधीय—केयरे हिन्दीस्ता प्रव भाग इनकी बच्छा हो । देश सी श्रीवद्यं से सब इतका बंदम वीता हुआ (२०० ६७६० ,३)-- भारतेन्द्र, ५६७)

जान बवास में हासना

प्रकार स प्रदेश | प्रयोग ---स्यो प्रदेशी प्रान स्वाहत से सामनी हो । प्रवेश हम स्वधान को बानती हो व्यवस्था है --दुशबंट प्रवे

अपन वसरा

जान इसकर आग में फुदना, अक्सी निगयना

अवस्य वर्षत्त वरत-कृत्रकर करना । प्रयोग-स्मा के इस निरंग प्रश्न पर श्वासकर कोती-सम् कोल भारी है तो प्रारमी भर वानर है । बान कृत्रकर काम में नहीं कृष्य साना स्कार-प्रेत्वद सार है नहीं, जान-कृत्र कर सकती नहीं सिनसी भारी अ अ स्वाचे के बाव में होकर में अपने पित्र की माना के बाव यह सरकार नहीं कर सकता निर्माता-चीरपंद, रह

(नगरः वृशः--जान कुमकर कुर्य में पहला)

जान कुमकर जक्की नियमना के जान कुमकर जाग में कुदना

कान भागी होता

नोबन में बोह न होता। प्रयोग—मैने कहा दान चीही ही नारी रही है (मा० प्रया०(१)—मारतेन्द्र,५२५), किसी को नाब इनती भारी नहीं होती (कर्म=-प्रेमचंद, १७०)

कार्य सुम्हायन में जालना

परेशानकारी स्थिति में सामना : अमीव---आप ही मुक्त पर प्रशासन्दर्भ का कामा मारकर मेरी बान मुगीयन प राष्ट्र रहे हैं हैंग्स का सामक १५३

ज्ञान में ज्ञान भारत

सामय सिक्ता अये बार्चन या । बारमानेनसप्रशा



करने के नाम तो आपकी भाग में जान का बानी की 'पदाराजा पदारक्षामां ३५

जाने सहात्र

किसी काम की बन्ने परिश्वाम से बचना । स्वीत—वह ती इस अनते हैं कि आप अमारे काम के लिए काम सका देखे हैं (हा—कोशिक, ३७६), में तो कुम्हारों मन बहनाने क किमें आम कहान के रही हैं, सुम सुम नहीं होते (क्षान»— ग्रामाल, ४७

(गमाव मृहाव- जाम शिक्षामा)

जन्म लेकर भागता

धरमन्त भगभीत होकर बेंगहरम भाग करे होना। प्रमाण—बालक सब के भीन पराने (गम०(वंगन)—तुन्नसी १०६): तब जितने उसके वाची और रहनमें के सबके पर पोरं-मोर्ट लावियां कोड कंपना जीक के नाने (प्रेम साठ—कंपन शांत होता हो है जावियां कोड कंपना जीक के नाने (प्रेम साठ—कंपन शांत होता है जावियां कोड कंपना जीक के नाने (प्रेम साठ—कंपन शांत के कंपना कोड (भागनी अवदे—स्वी, २५); विज के वंपन जान केवल वोरंभी के कीय की नावक आने (रंगठ ,२)—चेंमकट, उद्देशः

जान शुर्द की नीक पर होना

शंकरायाम होता । प्रयोग—क्ष्मकी आद इस वस्त नुई की तोक पर वी, एक आप भी युका सीर वान्त नवे (भानव (3)—क्षेमधद यहाँ

जान सूनी पर चतुरे होना

महत मुनीबत में होता : प्रयोग—मानमुदारी द्रालिन करक प्रदेश पर चले आन है । नहीं नो टरटम राज सूची पर चरी रहती पी (प्रेमा०—प्रेमसन्द, ७४६)

ज्ञान से हाथ धोना

प्राण एंगाना, नाम जाना । प्रयोग—कराणित् उनके नक में भी नहीं भारता। ऐही हो कि इसी जनावारिकी के बारण उनके पुत्र की जीवन से हाम पोना पड़ा है 'प्रतीतक महादेवी यह दुर्गाचन तेम स्वापीत्य कपर इतान सीर जीन जनायी के दरवरित में एवं प्राप्त पर दूर्व दन कर आवा, जान से हाथ पोना का (पहास्पराम—पहास्क अमी, श्रेर ज्ञान त्याकी पर किए बहुना, हाथ प्रक्रिय रहना रिशी काम के निए बहुनी जान की प्रकाद म करना । प्रयास—देवनाल को तो सफतो मां से मिलने के निए तो भगने भान इक्सी पर रम कर साना वर्गहए-अस्मिक— कै माने भान इक्सी बान की इक्सी पर मासकर में मीम वया बहुन है है मुनोसा जीनेन्द्र, १४८), भिमके नियं मान इक्सी पर निम किराय है, बही क्र समझा है विक (२५—देमभट हुद्दा विकी विश्व यह पहाविस्कार कोई क्रना है, मनुष्ट के मान हाथी में स्मृत पर सुराय है कृषक दिनकर, इव

जान होचा पर लिख रहनर देश जान हुथेली पर लिख रहनर

जान होना

मन्य कर्तापत्ती का बाधाय : अयोग---शीट नमामा, वह तो जीउकी की जान है पैसी--धाक,(३)

जानकर होना

यह वृत्रं होता । अयोग—दाशते वे जान जो वेजान वे साज के हैं जानका आते तिथे ('कुमते०—हरिफीध, देव

जानर

- (१) क्वमान होता, नष्ट होता, धर वाला । वर्षाय-त्रहरो वा के बाद के बाद में तो और भी कमनीर हो तथा, जैसे हस्व-वैर इंट एवं (दिल्ली०-रामण्डमां, ६०)
- (२) बुरे कार्य पर कार्या । प्रभोग--- मात् पिता मूर विभ क कार्यह । बाजु कर यह कार्याह कार्याह रामकास्त्र --करसी, १०६६
- (3) किसी के अनुक्य समया । अयोग—यह उसी पर आवना, कैस के हैं कैया हो यह भी शहेगा (मा—कोशिक, चय:)
- (v) विकास करना (किमी की बाद पर नाना)

आमे से बाहर होना

श्रम कृम्मा होना। प्रदोष—मयर राष्ट्र की कृष नवना अल्ल महा तक कि एक विन वह जाने हैं सहर हो नवा (मान० (१)—हैमसद, २५१) ; नामे सन्दे बल्मी के बारे आमे के बाहर हुण्याने के (भावप्रसाठ 5)—महत्वेन्द्र, ९६९)

कार कार जीवु बहाबा

हार जार सीत् बहाना

पृष्ट-पृष्ट कर रोगा । प्रयोग—कदार श्री कृषे दिश्के वं गामिन द्वीकर दल तृकी के जिनाकों के जिए जार-आर सासू बहाने काले हैं (पृष्ठेठ—क्या) दर्मा, अपूर्व)

(समार मुझार-ज़ार हार शैना, वेज़ार होना)

ज्ञास केमाना —विद्याना

ज्ञाल विद्याना

🗫 इंग्ल फैलाना

जार से मुक्त दोना

धभाव था धरिकार में मुक्त दोना । अधीय—आस्त्रवय पराधीयता के पत्त के बदन हो बदा है (अधीकः—हरू प्रश्रित: १४१

ज्ञास्य संग

वर नेता. भूगवाप यहां मगाना । प्रयोग—बीर नेत कर्या पहि देखी श्रुरि बाहुनी आयो (सुरु सारु—सुर, ४४९१)

शाहिल लहु होना

वे अनवार होता । प्रणेष—काहित पट्ट वेट वर केवन। यः ।- द्वाराष्ट्रः देशस्य ३६६

जिद्दरी कटना या काटना

बोबन के दिन किसाना का बोजना । यस या पान कुछ भौतिका अन्द्री की जगह पर पहुंच अध्यक्त । अध्यक्त किस्टनी तानी केसन चैनकट ३७०

जिन्दर्गा के दिल पूर करना

िम कारणा जीवन दिनासः मण्य का हीन्तुः व्याप उट सदस्य अङ्ग ने नेपादाः प्रतिस्थान वाल्य सम्बद्ध हरिक्रीत, १३८), अब जो जिल्लाहर के दिन पूरे कर रहा हूँ (अमेंस)—देशकार, १४९

(नवाक महार---जिन्हमा के दिन अपना)

जिम्हर्गा देखना

कियानी में धनुष्ठम प्राप्त करना । प्रयोग—मैंने भी देखां है जिलानी (कुट०- बध्यन १६

जिल्ह्यों भारी होता

भीवत करट पूर्व होता । प्रयोग—निरुद्ध हम भीवन हमारा आम मारो हो तथा (जय०—गृष्ठ, २७

ज़िल्हमी होना

जिल्हा-दिलां के पुत्रके

र्वनोक, श्वराद का वनश्यक होना । प्रयोग—समानी हान्ध्रण की वृति चीर विकारिकी के पुत्रले थे (पट्टम भाग-पट्टमा कर्मा, ३३४०

(नवार शहरर--- जिम्हा-दिस होता)

क्रियर पर जारा अफना

सम को बहुत कव्य होता। अयोग-स्थायन में सैने पह कवर पूर्वी है, केर जियह में कैने बादा का अब पहा है कारत प्रेमक्ट २३

जिल्ला पासी पिलावे, उत्तरा पंजा

वैना कहे वैद्या करना (अधीय-व्यक्त बाहत) है कि नुम इसकी नुक्ती में रही, जिलना कानी विभाव, उसना ही विको विजय-कॉलिक १४

जिनना बड़ा मुर उनता बड़ा कीर होना

विनर्भः बार्यप्रका ही ६५वा होना (क्रेडोय-स्कृत् भीनरी द्वेदार पुरुष से परन्तु कितना बढ़ा मुँह सा, सनना बढ़ा सान व सर (मान० (म)-प्रेमकंट, ३१

जिनमा सादर उनना पर फैलाना

सामाध्य र अनुमार काम करते । प्रदाम (त्रिपा) जास्त रीती है उत्तन ही पात पेटान बात है। पाई कही लुक है जा-क्टिंगिक १५०

जिस कर वंडाए' देशका

यो कहे बेबा ही करना । प्रयोग—यस कुमाब इसी में है कि कमंचारी जिस कम बैठाए , उसी कम बेटिए (संगठ ,१)—प्रेमधंद, २९९)

जिस थाथ में न जाना, इसका गास्ता न पृछना
जो काम न करना हो उसमें कीच न गमना। प्रयोग—
दिना प्रयोगन भूति हो, इटिये ताहि काट वेंगी निह यो
योग को, तानी पूछ न बाट (येंग मरू—वृन्द,९६);
जिन गाम नही जाना उसका रक्तना पृछना गया जकर
पश्चपार श्रीय दास २२ सभी दवना पात्र कर दिन्नो
में ही बमते हैं क्या है जिस बाद नहीं अस्ता, उसका
प्रया क्या क्यान है (द्रशास—देशस्य, उसका

जिस पत्तन में बच्चा उनी में छेद करना

अपने हिलकारी का जातन करना । प्रधान—नीके मय-अनी है कि मैं जिस पत्तल में बाला हूं, उसी में केंद्र कर्मता (माठ माठ (१, —किठ बीठ, ६५); यह पहलान करायंका का सम्प्रकाप है, निम पत्तन म साना है उसी म च्या १,२०१ है मानठ २ प्रेमक्ट २६ व राज्य करन मृजानात ला कर प्रशास म को छेद अलाठ निराक्षा १२६.

(सप्तर प्रा०—किम होडी में साजा उनीमें छंद करता)

जिह्बाम होना

ंशाय होता, हर समय पाद रहना । प्रयोग-स्था दिनो रामायण के विविध संग मेरे संशय, जिल्लाय यहा करने वे भावनी संबंध सम २९

जी आमर

त्री अवाद होता

कार में भी त जनना । प्रयोग—यह हमारी उपाट का कुल भी अगर है उपट-उपट बाला (बोल०—हरिसीध-२००)

67 O P ≠185

त्री उठना

- (१) उत्पाद होना । चनान —गाने हे लिए प्रमाहर का मी नद नदी यहा था । फिर की रहम पूरी करनी की (बाटोo—जिलान, एक)
- (२) विम्लि होते ।

जी बहुना

- (१) वी वय सं न होता। प्रधोष -- शिवश उन् वी सी इस्ते विकास प्रकोई करें, रिक्शई काई नम, निक्सई की इसी क्लान कर्कत -- हमान, इस्तो । तो उनके पुक्त से पुक्र र नहीं वो इसाम है जहां सहता अगर (मुभवेन-- हरिसीध, इस्ते।
- (२) मध या आर्थका ये चित्र व्यापुत्त होता । प्रयोग— भूषत करत बहार्यन्य कलका करायी श्रारी पातमाही के स्थाप गर्ध विवये (भूषण प्रशाक—भूषण, २१४), दक्त भूट्टी वरे तम्ब वरस्य करो हथ्य कर तोता देखां भी उद्द श्रमा बोलक—हर्षस्थीय, २०६

जी दशराना

हृदयका हरिकत हा जाना । प्रधान - अवहि सुर्गात आवति का सुन्न को जिस प्रधान अनु काली । सुन्न साल-सुर, ४७३५

जी कारकता

- (२) बहुत सम्बद्धा होती । सबीय—मुसदम्ब, देन कर के सम्बद्धा की बानने के निया जी स्पन्ना खाता है (धार्या) ए सारा-सम्बद्धार दास, ७६८
- (२) ऑक्ट-मीनर बहुत दुम होना ।

की उत्तद जाना

- (१) होल-इशस क्रीफ न गहना । अमान---नाम तर यह सभए मध्य है तर वी इपाधा उत्तर गवा सेने (मुम्ले०--इतिहोस, १३५ (२)
- (२) वज काल जाना । प्रयोग—देशिए प्रयोग (१) मं (२)

जी कपर कले होगा

- (२) उद्विप्ततः होती । प्रमोग—विका और प्रीम नायः ये उनका इत्व तीनं उत्तर हो रहा था (बकार) प्रसद १६)
- (२) विचली जाता ।

जी कबरना या क्योटना

भी कर कुल पाना । प्रयोग—है बूरी कर सन गई कें को बेनरह है कपट-कनट मातर (प्रमादेश—हिर्माध ०५ पोट जा बाप प्र-पूर हुया क्यों गही की क्योंटना नेरा बीक्श-हिर्शिध २००:

जी कर जाना

भीतर ही मीतर भूष्य होकर रह जाना। प्रशेष— इस बात पर कि सस्या नयभ्यती नहीं, उसका भी करे कर यह सक्षा (सुनीसा- फॉक्ट्रें, १६३.

और कहा करना

हुनम बजबूत काला, माहल करना । प्रमोग-नेर श्रम की कहा करके आती हूं (राखाः प्रधाः—गाधाः दास. १६॥): इसे कम जी करके सुन् ने भावित तक एक कार एक नाम्ये ती भूषी बात है पदमः के पत्र—पदमः तमी एक्प), अन्त में सुदय कहा करके माने बनी मीर हार पर पहुंचकर जाने एक माध्यों से पूचा ''मान्यों है ?'' शिमाः --कीशिंक १३ नामराम-नहीं, भी को कमा बनाई मा निमार --कीशिंक.क्ष

जी कांपना

भवनीय होना ३ वर्गम — यहने कान मृत्य वर्ग कीया, ता भ वर्ष मेरा भीवा त्ववीर ध्वीठ—क्वीर, २००); कावना बात बात में है जी बान को है इतिर्श्वा बचते (कुतरेठ— ृदिशीध, १,

औं का कारा करता

(वणः गृहाः--को का कांट्रा निकटना)

हो का गुवार निकासना - फारोजा कोहना

मेंत है अग्र-भोग पर अर्थ्य कर कहे रहनेगा। प्रयोग है पढ़ को सब गर काम जारन प्रयोग को गो लहार निकारन नहीं भी कोहरू है। तह पड़े हिम प्रयोग जायन को द भोग हो गो ने ना प्रतिक्षित रहाराना निवार जायन को द भारती है है के ना के प्रयोग हो को ना गांच है। निवार प्राप्त नहीं है के ना के प्रयोग हो को ना गांच है।

आंका प्राहक

्रे) परेयान करने वाला । वयोन--कारे लखे नाते सेह फोक्ट फीके । वेह के दाहक, साहक भी के [विनद्य0--हिलको १०६

(२) प्राप्त केन पर उत्तरक (

जा का जवाल होता

भारी वृक्षीयन होती। प्रयोग—स्वारम् वसम् परमारम् भी कहा चन्हे, पेट की कॉडन अपूजीय की जनाव है (व्यक्षिक—सुक्षमी, १४३

औं का फकाना कोड्ना रे॰ जी का भुवार निकासना

जी का बुकार उत्तरका

को का बोक इन्टका होता

कियी चिन्ता से मुच्लि पानी (प्रयोग—साप हुन हो वसे बहुत हुमके बोक्त की का हुना नहीं हुमका (बोलo— हरियोग, २००

(शर्माः नुहरः —जी का भार हरूका होना)

बी का कुन मिटना

नन की कनक, करर दूर होता। प्रयोग—मोहि द्वारि तुम और उपारे, सिर्ट सूम को जी की (शुo साठ—सूर, १३६

जी की भाग

हेम्बर्ग । प्रयोग—यो कि भी की शाव में समना हतू। विन नका है क्या उस उसके बहुत वीमठ हरिक्रोध,३९

हों का करक हिटाना

नम का कम्ट दूर होना । अधोक---मेरि अंक मरि सिह कमक सब आट दिल कोट सम्राठ प्रदान सम्राठ द्वास. देश

जी की कमर जिस्तरता

, १, यत हे आकाम का अवस्थानका । प्रतीय हम कमर है निकालन भा से के कमर है निकालन औं का कोमण हमें जोड़, १८० (२) मन के दुधाव को दूर करना । प्रयोग प्रतिकार (१) संदर्भ

जी की कहता

मन का प्रेय या शंका कह देती । प्रयोक—तेना कोई यो मिले, जामू कडू निगक । बाबू दिग्ये वी कह, सरे फिरि मारे बंक ,कक्षेर प्रेशा०—कवीर, इ.ट.)

जी की गांड

दुर्भावनतः । प्रयोग—बाट बना देशी है की को बी कं गाठ पड़ी (सर्मत—हरिफ्रोध, १३६)

जी की अलग

मन का क्लेक । अयोग—नेके जिनु रचुनाय पर विश के प्रारंति न पार्ड (राम० (क्स)—तुलसी, ५४३.

जी की जलन बुकाना या बुकना

- (१) भी का द्वा दूर करना या होना। अयोग---नेन-सेन संभाषन कीन्हों, ध्यापी की उप-तपनि निराई हैं। साठ--सुर, १३१९)
- (२) भी की कृषण मिटमा या पिटाना ।

जी की बामना पुत्रना

इन्छ, पृथ्व होनी । प्रयोग—पृत्री सरक सामता जी ही। (शामक (बाल)—सुशामी, ३५८)

और की अज्ञास निकासना

यम भा दशा रोच निकासना । प्रयोग—कावा से जिल कर लौटने के बाद में सकान में किया की अनेक संगोकों से प्रशास किया, या अपन जो की अश्रम निवासों पूर प्रश माठ, ३७२

अर्थ के धर्मा होना

उदार और शहरम होता । जमोन--हम क्ली भी के रह सम दिन की हाथ में आहे हमारे हो न कल (बोलेट--हरिकांध, १२६

जी को भरोसा जाना

भी को बांचस बंधमा १ प्रयोग-समय भई भरोस विस अच्छा (रामत (बास)—मूलसो, १९७)

जी सहाकामा पाराना

भन किर आना, जिल्ल होता । अयोय - विद्यानये को ह्य

िया देवे न मी । भी हुए बहुर म बहुत भी करें (बीक्षंठ — हरियोध, १९६ , महरें भिर्माण में कहुती न कहुती सुमाई स्थलें जी कहा हुया (बुद्धा— ताठ नाठ, ६६६); जम दूस में बिसे, तो भेरा की बहुत ही गया (शास्त्र (द)— प्रेमकन्द, १२०); धारक्त 'मूनमानर' धमाप्य हो रहा है। पहले मूडिस जो दी एक करकरक कही-कही पांच भी आते हैं या उत्तम स्वष्टमा को प्रेम प्राप्त हो दरमी जरमाप विकास है कि अप में बहुत और बना किर-किश हो स्थलों है कि अप में बहुत और बना किर-किश हो स्थला है पद्म प्रशान नाटमठ सार्थ, इस्ता है पद्म प्रशान नाटमठ सार्थ, इस्ता

जा क्यांका

(कसी काम में ही जान के अब जाना । प्रयोग—अब नहीं नकसी कराए वर्ष्टकी किए संसामा क्षेत्र करायंगे हु ही। (बीसार)—सुरिक्षीय, २०६

ली विकल्पन

प्रमान राजा । प्राप्ता की हवादा बहुत वया कुल्हमा का राजा ने रिजा हुका राज कुमतेठ--हरिफ्रीध, ६२

जी जोतकर

- (१) वह उत्पाद से शक्तांग—जी सिलंडी कानकर, दशके वहां चाहरा है जा कि सिर इ दय क्ल मासक होरंडीच १२) (-)
- (२) विना किसी सकोच के, बेधवक , जितना वी शाहे । पंचीन—की बोनकर इस धनवे के विवह सारोजन करने को जी बाहता है (पंचा के पंज-पंचा करने धर देखिए प्रवाद (१) में (२) भी

जी गिएना

इत्तेत्वाह का दुली होता। प्रयोग----वसी समय पूजाम गोम जा को राजी में अपनी ठील घर चाडी का सीका पुरस्कार में दिया। यह सामता में मुना उपनत का विश् क्या (सामीक--यूच वर्मा ३६%)

ती बलना या सन्ताना

- (२) जो परस्पा, इच्छा होती था करती।



जी चुररना

काम करने में यन न नगमा है होना-हवानी करनी। प्रयोग-न्यें पहले से भी नहीं मुराता नेकिन इस रक्षा के मेरा पहला नहीं हो सकता (कर्मठ-चेंगबंद १४), नियं रता है, बही उनके करने में पड़ बाना है और किर परिश्रम में करना और भी पुराता है जिस्स- जेनेन्द्र १८१०

(समार प्हार---जी सुवासा)

जा दिक्सान

मन को करत होता । अनोश—सेंद काली में अकृती के हुए को असुता की नया कितवा नहीं 'कृतते०—हर्त बीध ११६।

हो दिलागा

यन को करह होता । अयोग---वी हिनाने हे हिन (बसके नहीं शोजने ने जी नहीं कियके विशे बॉला०--हरिकीश २०५१

श्री छोटा करना या श्रीतर

(१) मन उद्दाश करना वा होना । प्रयोग—महरमान न सामा की कि तुम की स्रोटा न कमी (११६१० संस्तर— इत्यान दास, ३२६); नर्याप सरदार लोग नगाई में हारने इत्यान दूद गए ने और उनका भी होटा हो नगा ना परन्यु महत्ता, स्थान प्रयोग—संस्थान दास,६४६), यन क्यों भी स्रोटा करना है (म.कि.--स्रोग्योध, ३४

(२) पन मनुर्वित करता वा होना ।

र्जा छोड्कर आगमाः---हेकर शासना

क्षतहरूषः भागभा । प्रयोग—को और हेए कि स्पृष्टि स्वरणः भवदः हर्नात भीव स भाग। बद्धः— उद्यक्तः अध्यक्षः स्वरणः म भागः स्वर्णाते हे स्वर्णाभागः प्रयोग प्रोहतन्त्र स्वरणः स्वर्णाः हिन्द्रीय हर्न

जी अस्ता या क्रमातः

दिना काम १६ करन को राम्या होनी सन र कियर जोके र १६ करन्य १ अध्यय - और जमक र म पर नहीं भिष्यका काम सहि कर कथी कर प्रांति थेएक अधि और १९९ - महर्ग तेर काद यह नशासक न प्रमास के देही भिनी । येने जी अधारण किए नियाना सुद्रा किया त्येथ प्रतान-प्रदर्भक प्राणी, १९९०

जो अत्स्वर

रिकों या हुन से यन को क्ष्ट होना 1 प्रमांग नाम नित बढ़ में संकर बहुड । यम् अपसान् समृद्धि पर दहुड (रामव (क्ष्म)— मुस्ति वह, भारे ईथोन्त व क प्रविद्यन्त्री पर उनका में कल रहा है युव निव नक्षण मुठ युव श्वर , अब पुन सामों कम आसो सुनत मिन भीरह बर्धी राष्ट्रालक्ष्माल—गधाल द्वाम, १६.. कुनदा के पुष्ठ म गरित्य, की सी बाद मुनकर किसका भी म मलेगा (गीदान— प्रमाद,१६६ है पर हुएय म माने बन्ध बया ही रहा है यस बन्ध हमें है गृज्य होना दिखाता (गियंव—हरिश्मीध

उर्व क्रमाना

ह्रव्य को काट इनर । धरोक—बीटे-मंटे कोश होति स्था पहिल तो नय, यब जिस आरत कही थी कीन स्थाप है (धन्नक कावत —धन्नक, श्र); याच ध्यादे तुम हमते क बोन्से निय व जन्मको नदाई (भाव्यक्राक(१)—आरतेन्द्र, भरी): कहन्य कट्ट बाहे जी न मूले जनाया ियक हरकी 57

जी जीने सराना

कोई मयरन बाकी में कोइना । अयोग—कर कर आस कियाना न भी नान नयाकर बीए वे (राधाक्यशाण—राधाक दास, ५०

(नमा पुराव-का आम सहाना)

जी जान से

वहां तमय है। अयोग---मी मृद्ध बाधने आठा वर, उसके वी जान ने तम जाते व (गीटान-- फ़ैमबन्ट, २४); इस बद्ध और कड़ते रहेंच क्यों व वे भी भागते हमने कड़ें भूगतेक--हर्र(फीस, ११)

की जान होम करता

बर्ग प्रस्ता करना। प्रयोग सहग्रहक का पहला यूग्) वह होना पहिलाबि । विक विषय ११ वह अपने कर की केन होसे कर का स्टिश्ली । सह प्रदिष्ण १०७

ता बुदाना,--ठंडा होना

ा) पर कार राजा । यसाय -- इत्तर ठाँ। सून श्री दशा परा (दारेज हारमीच -०४ वर्ग प्रशासीर बहुर जुड़ान प्राण । हरें भये पुनि क्रिय के भूमें बाद मूठ निरु —बाठ मूठ पूर, ६७%)(↔)

(२, इच्छापुरी होती। प्रथम देखिण प्रयोग (०) में (÷)

जी देगा रहना या होना

विस में विता था भ्यान रहना, किस व्याक्त गहना। प्रयोग भी हमारा था बहुत दिन व दया भाग यांचे भी हमारी टक नई (वोसै०---इरिफोध.३३.

क्षं दरोलमा

मन के साम का जवाद समाना । अवीत- किर केस जी टर्टायमके लिए करवट के माध बाव करक व्यव का। समय करूट करते हो (Hie do (१)--- मार्केन्द्र, ५५६

जी द्रमा

हतीरमाह होता । प्रथोग—वेदा भी इतनर हुट नया है कि अब त्यारम उत्तरन का यामध्ये नहीं रखना भीठ द्रव १ — भारतेन्द्र ५९० , यरन्यु अवन देश के लोग उन्हीं साम्ह भाग उत्तरण भी नहीं देखने इन्हों भी हुना भागा है (परीक्षा)—हीं देखने, ९६)

औ रेक्षा होना

क्ष्य पर श्रस्तुष्ट होता। प्रयोग—मो विक्री का बी सरा प्राटुसा काम प्रोतिक प्रस्तानों हो सर्व बोटक हरिसीक ४४

जी रेंद्रा होना दे॰ जी जुड़ाना

जी दांबाडोल करमा

विवासित करना, उद्दिग्त करना । अयोग-शान है विर पर म मारी उत्पान भी इवाश कर न दांगारोन है चुमते0-शरिकोध, ११

जी इचना

(१) वरातासम्बद्धानाः । अयोग—सभी एक व्यय पहले सहस्रोत् पानी प्रथा चा पर अव पत बह पानी कार्य प्रशासा भी तृब गया और दश्य-पाय । ता गय अस्तर (१)—ग्रेमचंद, २४३)

守) वित स्वाकृत होता (

की तीषु यह की तरेड़बर

परवन्त परिचान है। प्रयोग—साथ में कुनमती कर पही निषय हो बया कि जी तोडकर चर का काम करना और उनका नंकि य असन कहता मानव हो। देमचन्द, ६४) , उसके पान में देश पूर्व जिन्ना बन्ता वा और उसके दिस नीव परिधान करना पहा जा (प्रतिक्षण—कुंच वार्य, १२६); महिनान भी तोडकर में निष्य करने जात (पूर्व)—अव नाव, १९१)

र्जा तोडवर

केरमाह कम करना दुखी करना । धर्माम —होती जाति के कोनों को विरम्भाद करके जनका जी मह नोडिय (साठ पंज (३)—मारतेन्द्र, ५०३)

जी रेच ज्ञाना

निकरमाई होता । प्रयोग--वेशिके दक्ष म आद जी वेश मून दक्षी बोध भी दक्षी कामें (चोसं०--हर्राजींस, ५५)

जी बहुत्स्या

हर के कापना । प्रयोग--- जाज शक दुल-सवाल हम न हुआ जी रहन ने अनर रहनता है:बोल--हरिकीध,२००)

की देता

- (१) वर्षि देना । प्रधीय-माटी के करि देनो देशा निम् वर्षि मीत देही (क्योर दंवा०-क्योर, ३६१
- (२)अल्बन्स क्षेत्र करना । प्रयोग—कन रहे नेते हमादा नी म तुम इम कृष्टे कम जी नहीं देते रहे (मासे०—हरिस्टीध, ४३
- (३) मन्ता ।
- (४) वन नवाना, ध्यान देना ।

जी दौड़ना या दीड़ाना

मन करना या कमाना। प्रयोग---देल सेवें जोत दोशकर तमे दौदने पर भी बहुत है दौदना (कुमतं)---

जी श्रेसा कारत, - देहा जाना

बहुत हुनी होना पद या हुन के पारण न्याकुल होता।

भी प्रकल्पक् करता

प्रभीग- अवस्तर देर कराना ठीक नहीं । जन दमना देः बहा है (परस-पीनेन्द्र,३९), हांच मी पूर वयो नहीं जानी किय लिए केंद्र की तहरे जाता (कुमलo-हरिक्कोध, प्या मान जी में आएके दसती नहीं दर हमारा जी पना है ता रहा (बीस०--हर्षिकीय, २०३:

क्षी श्रेष्युधक करना

भव होता, बागावा होती । अधीत-शाय तारी पून स है मिन रही वी हुधारा नवी करे चक्र वस तही (वोस० --- प्रांतचीय, २०१

श्री धहकता

भग मा साराका में जिल नियर ने रहता, वर्तना धक जन् सरका १ - सबरेग--शिथमा दक्तों भी गोर्न दिवस अपनोर्ट की विधानी मार्च तर, विधान है है है। पानक करिया-शताब हुई . है जिल्हा भाग बेचप्रक होने भी हमारा बहुत स्वकृत्य है । बोलय-स्ट्रिस्टीध,२०५

त्री न भारत

लीक म होती । प्रयोग-भी यक्कर की वर्रकरा के निये द्रमाच पहुने क्रवा, स्त्रीर तथ विश्वरत भी प्रमुख विक जाना हो क्षेत्र तर कर नेतर, बाद बार बहुता और भी न करना (घटम प्राम-पट्टिं कामी २६६), जानवर जानर ६ वरे में भ्रम्बहुतर की सोभा रेसका मन ही यन नोकने मनी--गहरों में इनका भी बच नव न भरा अपन-धेमक्ट ५३

[समार महार-जी द भयाना।

औं न स्रवास

क्रमता अर्थम होती । प्रयोग-करून सगत निय पाट मार मा फिर्जिस्ट केन प्रमाण की से लिए ध्याने जिल भीत प्रशः । स (तन्त्रे ४) १

सी निकास जेला

मन प्रोचनन गरन देश । अथवा करावरित सहसी पत्तनी साथ भटनार कि निर्देशीर प्रत्यु असास प्रा छन्छ। ६८

जा निदास सना

विन का हिंदर के हरना विन रहराव न हरना । क्षरण । एक रूप तहते वह अन्य सम् होना हम (क्षेत्रज-हरियोध, ३०१

र्जी पकती

मनातार कृता, दुर्वादहार से यन का बहुत दुली हो बाना । प्रयोग—रेक धनवानी सहत को एक गाम कुमतंत्र- हरियोध, १४

क्री प्रधा बरहा या होना

की बना करना वा होना । प्रयोग—बहुत दिनन्ह अर्थ की वीक । पति न विने पवि वाहम जीड (यदे०-जायसी),

र्जी पर आ बनता

बाल नवट में होना। प्रधान-नव सके काब या न बाध कर पर कभी था को गही भी पर 'बोलo-हार्राबीध, 300

जी पर खेलता

काम को आपका में शायना । प्रयाम---वहुमना और जीउ पर केमा । सं कोवी केहि वाह अकेमर (पदक-आधारी, २३३१७): नग्नार ही बाग्ते की बी पर अनकर यहाँ देतरे. हे (माठ ४० १)—मारहन्द्र, ५२५), रोमा व होने, जो बेब बरामा भवने जी वर धन्ते (हेंद्र०—हरियोध, १५

जी पोढ़ा करना

वी करा करना बाहर स्थला । प्रयोग-लीक हरि चीर नहि बोदा । चन व हेर कीन्द्र जिब बोदा (पदक--आयसी ५३%।

जो फरकमा

क्रमाह पाना । अयान-सुन फड़र नी बात वर्धी फरके म जो - बीस० - हारियोध, २०६

ओ फिरना

चित्र इवट जाना---विरस्त हो बाना । प्रयोग---नेगा कियो स जो कियोका फिर हवा (बाहरू हॉरफीय,२०५

क्षे फियलत

पन चलका प्रदेशक प्राप्त कर्म विशेष विद्यालया है असक र विजय रेर कम काना वीमक प्रविक्रीय ए ए

जी फीका करना

प्राणा व कर पंचित्र स्था अन बर केल्ट हैं। और १६६

जी बढ़ना चा बढाला

- (१) वर्ष होत्यार प्रयोग—ये सभी कत स्वरते नाव है, प्राप्त इत्या किया तरह ही बद वया कोल्क हतिओं उ १५
- (१) इन्छा या प्रेरामा होनी वर करनी। प्रयोग--भी रहा ईनप्रयो का जब बदर तक प्रभा पंजा क्याने क्या म वे (भूमतेल--हरिकोध, १३७)

जी विकरता

- (१) जिल्लाकीक में रहता । बधामः —पुर होती तथाय कोर कलय सर हुए जो त जी विकार अक्षा (शेलक--हर्मस्क्रीयः, २०१)
- (२) पृथ्यो आशी ।

जी बुकाक

हमीन्साहित काने वानी। प्रयोग—ऐमी ही कुमाक बात सोवते हुए आप देश महाभिषयाओं को भूत ही नये (मंसाठ--एस. १३)

र्भा बेठना

रः और धीका क्षाना

भी भर भाना

दु श होना । प्रयोग—शकी हम सकत को श्रीय अरथे प्रामे हैं (भार ग्रेशांठ १) — भारतन्तु, १५०); विही क्दकर श्री अर आया गुठ निक—शठ मृठ मुठ, तका ; मां की मृत्यू के बाद प्रतमी बाद तम या विशीन काकूर-पर के आकर सकतन कर श्री भर काया (बृदक—सक नाठ, १७१), मध्यकारपाणी का काटी देखकर भी भर थाया पहलठ के प्रम— प्रदूष्ण कार्या, १९६३ जानि भी देखकर भरी पांच भी रहा कीन साज भर आया (चुंभ हैक—हरिप्रोध, इक,

जी भगका

- (१) मनेव्द । प्रयोग —धनि न नैन पनि रेका चीत । पिय स विशा पनि भी भरि जीक (पद०—सायसी, धन्ध); भर सका भी पनर नहीं यह भी चीन ने क्यों ने आप औ भर सक् ,बोस०—शुन्योंचे, २०३
- (२) मनमध्या ।

तो भर जाना

- (१) यी सन्तृष्ट होना, तृष्यि होनी ! प्रशेष-भर सकत की नगर नहीं धव की कीय के क्यों न जान की भरकर (दोस्त--हरिडीय, २०३.
- (*) जन का कांग्रेनपूर्व होता—करताई होता। प्रयोग—जी क्षत नवा, वह भर काले, बक से गुरे देर र जी कर नुरठ—अक्त, १४)
- (१) देशन वा भागा—बरदाश्त न कर दातर । प्रयान—कम उसकी दान ही ने हो कहा वा—केश थी दुवस वद नदा (मान० (१)—दीवसन्द, १३५
- (४) दूसरे का नंदेह दूर कान्तर-करका मिटाना । जी भारता
- (१ तमाओं शन। प्रपण जर्ग ग्रहनकार कानू भी उसके साथ क्षानी तो अमारक औं भारतर (ईशाक-अंशाव, १३१) पर बहु कर तक घर अध्यक्ष स् मिन, तम अस भी भी तो नहीं करता (मी-कोशिक, १३६) (मू-)

जी भाग होना

- (१) विस्तित होता। प्रयोग—पुत्र विके यन हमा दुनो येगाउन हुवा नार भी हल भारी ,वोल०—हिस्सीध, २०१ (÷)
- (२) नकोयत श्रास्त्र होता । प्रयोग—देशिक प्रयोग (१) य (÷)

त्री संबंध जाना

इंडरह बन आ जाना। धरीय--ती मनम्मी म हम उसे देवें जी घरर है मदल मदम काता वोलo--हरिजीध, १९९)

जी मरोडना

वत में इन्हें होता, मनोनना । प्रश्नीम--- महाशकर का ची नमोद्र माकर रह पद्मा (बोटी०--निराक्ता.६३)



जी मालिश होता

मिन्नमाना । प्रयोग-नंग ही में उनका भी वानियां करने साह (मानक (१)-प्रेमकन्द, ३९): अब वरी हुक्का की विश्वता दी, नाजना करने के बाद एक विश्ववादी उहीं थीं । जी वालियां कर रहा है (मा-कोशिक, ३८९)

ं जी फिलना

- (१) विश्वता होती ३ प्रयोग—नह बेगारे मेरा सहर बादर करते हैं, वर अथना की उनके नहीं मिनना (१९० (१)—केंग्संद, ४०६
- (२) जनुकुत प्रकृति 🕸 होना ।

जी में क्रमा भागमा

भी होटा करना | प्रथोग—र्जन जननी नाश्यु किए सन्। (स्थल ,सु) -- तुलसी, ६०९ |

जी में कथर होना

कुर्माच होता : प्रयोग-साथ की में पर करें तक किन तरह जब करा भी से हमारे ही भरी (बोल०--वृधिप्रोध, २०३)

जी में गहना,—पॅटना,—बंडना

- १) हरम में प्रशा । प्रयोग—मोरे-मोरे गोव्यति की हंगि-हंगि कोणन की कोयस क्योडन की, जी के मही गांच का (शब्द०—देव,२६ (+)(+१), वह नश्य को भी में यह गई है (क्यो०—बंशा०,१००:(+१)
- (२) पिय होना । अयोग—अब कि प्यारे नहें तुम्ही औ म । नव मना पुसरा नहें केंग अंग्रेश—हारेकोछ, प्रक भी हुमारा किस निये रकते नहीं बाहते भी में अगर है संस्था केंन्य हरियोध रूप वान के हैं न हिए रस्पर। नहीं बाहते भी में अगर है देहना बीता—हिसकोध, 20%.
- को प्रभाग प्रथम । प्रयोग दुख्यि प्रयोग । ५ ६ -
- (४ १६२) के लियाबार रहता। बन्ह्या इन्तर हास हास्त्र (१ म. १)
- १४ वन म निद्यान होता । इसान वर हम रसह

याने का इस समय बताया चया उसमें संनीत न ह्या बात श्री में बेटी नहीं (पद्मप्राम-अवध्यन), १०५,

(लग» पृहाः—जी मे म्याना)

जी में गांद पहना

वेयनस्य होता । एकोन---किस निए वास्ते रहे प्रश्नव बाह पत्र बाद क्या किसी जी में (बॉल०--हर्पिओं)),२०४)

जी में घर करना — जगह करना

- (१) नदंग प्यान व रहता। जयोग-स्था धहें दुध है बढ़ा बातं चर्या कर थारी, भी आपके भी ने त पर (बात्स्य—हर्शकींड, २७) (⊕) , वर्षत्मा चाहे छोटी हो एक ही परित हो, पर अध्यो हो भी में जगह पर ने पद्धक के पत्र—पद्धमक कथी, २२०)(⊕)
- (२) क्यां तरह कल या अन जानर । प्रयोग—नेकिए प्रयोग (१) कें (→)
- (३) विय होता । अयोग—हीरायस्य के विभिन्न तेली ने सोगो के जी में एंगी प्रयद्ग कर भी भी कि वर्षण वचन नृथा के हर नम्बर के विश्व कोगो को हरहरी सगाग् रहमा प्रयम् था पुर्शनिक-बार मूर्व गुरु, ३१६)) जाप जी भ कर कर तब किन तगह वच कसर भी में हमाने हो गया (बीलक-हरिड़ीश, २०३); सतम्ब स्थित विभा में हैं गाओं ने कर किय पर केह के न्यापार नारे हैं तृष्ट्रारे ही निये (जयक-गुन्दा, ६८)

ती में जगह करना देश की में का करना

जो में जमना

जी मैं जी भाना

समस्तर हुन होती, सामस्त हुई होते पर शहत मिलती । २०१७ तमे तद जमारा अ अत्वर्ध कर सहत सा दान पुण किया स्वीर सम्बद्ध करतामिया है जो में जो नामा ऐसे साथ हरू हुन्छ । शहर स्टब्स पर आ पदी में कोई अस्य-गड़न नहीं मुनाबी वहीं तब औं वंजी बाबा (मृग०—यू ० दर्मा, १६०), कुछ ही बेर से बांदनी की निकारी। अब उस जानवाले के जी में जी शावा, कुद बीरज हुआ (बॉट०—)[दिखीश, इस)

ती में धरना

यम से व्यवाल करना । ययोग—मन्द अधियान हर्गक रहि राजी ने जिस में कछ और वर्ग विश्व साठ—सुर १४२४ ।

जी में पैठना पा बैटना

रें की हैं गहना

जी में फफोले पहला

सन को भीता होती। सर्वाय--धाप की में कम यह है का अने क्यों क्योंके और के की में एक (धीलेंक-हरिजीड़, धर्म)

औं मैं वन भागा

मत में इच्छा होनी। प्रयोग—अब तौ मिय ऐसी वनि साई, कही कोइ किई मानो (सुरु सारु—सुर, ४३९०)

जो में बात धंसता

किसी बात पर विश्वास करना वा स्वीतार करना । प्रमोत---वात औं में मानके प्रमनी नहीं पर हमारा भी चमा है जा रहा (बोल---हर्गणोध, २०३)

जी में भेद बढ़ाना

हुराक करता । प्रदोग--काली ताझि मादि गृह बाचा नेति बोहि जिसे बेच बढावा शामक (कि)--चुलसी, ७६३ /

जी में मान लेग

जी में लेना

वृश मान केला । १९वेच---वारक कहे उल्लाह क्या । १९वेच---वारक कहे उल्लाह क्या । १९वेच--

जी में शुल होना

त्री में किसी बात का कोर्ट की तरह चूबना । प्रयोग---

69 O. P.—185 नारक काइयी विभि मात्री । की अर्थ वन व्यक्ति आहरी, मूल रहे जिय मात्री (सुक्र सात-सुर ३५५०

जी में सूर्व कमाना

वर्ष भेदी वस्त करनी । प्रयोग--कहा सीमिनिन--या नृप हुई स्वो है भूमाती किन में ही की युई नवी है साव हु--युम प्रश्न

जी रणना था रहता

रण्या पूरी करनी —श्रमन्त कश्या या होतर ५ प्रयोग—स्व भाष पद नीर्मनए जिनम् बंटे कर और रह आप सी कोश्रिय ,व शाल—ब साल,क्या ; जी तथाया विक्यित्वे रक्षते नहीं। बाहने भी में भाषा है बैड्डा (बोलल- हरी सोध, २०३)

ही अपना

वनायम् होना अभ्दा भवना । प्रयोक—होनीन दिन यह कर कृत्यों की पाठनाश। और कली की विश्वकर में क्ष्मतक क्षमा नामा। केविम भी नहीं क्षमा (कृतकोऽ— निराह्मा, क्षम

की लगाना

- (१) पूरा भ्यान समानः । समोग--नी समा पर पाठ तम पर्यो १हे पट गये हैं साल सदने के निस्स सन्दर्भ कृतिकोष्ट
- (२) प्रेष काला।
- (३) प्रशीक्षा काली ।

र्ता लडामा

- (१) प्राप्ती की बाजी समा देशा। धरोग---अब गही माइ प्यार के दिन हैं जो सदावें भगा सके जो मी (जुनकेo--- (प्राक्षीध, ३६) (~)

जी सरकता

नामाधित होता । अयोग—कीन ऐंद्या कन्प्य है जिसे बपनी प्रशंसा हुनने को भी न सबक उठता हो (भट्ट निफ—काठ भट्ट १३८

जी सहराता

- (२) भागम्य होना ।

जी कामा

प्रम करतर । प्रयोग-भी मुन्हारी विक नामा है मैनपर प्रमुखान (बद०-आवसी, ३१/१४)

औं खुटना

यन मोतिन ही शाना ह प्रयोग---वर जुटेर है नवस साव नहीं बहुद में जी नक हवारी पूर बचा बीटिंट हॉर्स्डोध, २ १२

जी लेकर आगर्ग

रः जो छारका भागना

ती लेवा

- (१) पाला तेन के मारान क्षाप्त देनर । प्रमाद—जिन्हाः

 1. नेहुने, विदन्न तमाह-तपाद (क्ष्मीर प्रथाठ—कर्वाद,
 (८)(८); ती वानी समाद मनि विदन्न कंपन दीग्द्र ।

 पार्हार का दमाइके पनि गहन जिन्न लोग्द्र प्रदाठ—खान्मी)

 1983, बार की नेते हमाया की म तुम तम नगह दन की
 नहीं देते रहे (क्षोसीय—हरिसीय, प्रकृ
- (२) आता तेला । प्रधान—देखित प्रदोष (१) वे (४)
- (३) रहस्य पर जानाः)

जी सोटपोट होना

- (१) महुत बुक्ती होती । प्रयोग—प्रमानी आसे सून गुर्वी, जी सीट पोट हो नया स्वरत—प्रेसकन्द, ५७°
- 1 र) सन् म कर्य भीति गाम्य १८५ १ १ र व जो पण हिन्सी इसके सामने धाउँ की उसका भी बॉस्ट गीट हा सवा ६ व : (कांट)

जी कुटी पर रामा लोगा

अन्य बहुन हो बन्नाला प्रणास प्रयोज संबंध भारतात की सन्ताप्त जस है भाष्ट्र ह भारतील ६०%,

जी सन काना

मन का पूरी तरह किया होता । प्रयोग—कर यके सैंकडो यतक, पर जो जाति हित में कभी नहीं सनता (सुधतिय— हरिक्रोध, इठ)

जी संख आया

- (१) कन्यन्त निराधा होती। वयाय--वृद्धि पूर्ण गरे प्रोपि-वाह पंत्रवानन्त यो जीव सुपन्ने बाद ध्यो ज्यो भोजन का वृद्धी (उन्तर कवित न्यानात २१०
- (२) अध्यस अयभीत होत्रद र

की में उसर जाना

इंग्टि से बिर जाना, असा न बचना। द्वांत—केवह रिक्मन के बाद प्योक के भी से दल जिल्लुक उत्तर गई ये कोठेंं — आठ नांक ३३ , बच कि नुध हो उत्तर नये भी से आंख से तो उत्तर न पयो जाने बोलठ —हरियोध, 80)

का से जाता

पर जाना । प्रशास-को रहा है बीन भी है जानता वस। इसे बी में इस जाना पक्षा बीनत-हरियोध २०२

त्री इस होता

बार्क-तम् होना । प्रयोग —बारहरशी में बेटनार कहर और फुणारी की बीका देखने में जी बीचा हवा ही आता है ? (परोक्याo—बीठ सका, १९०)

की हनका दोना

- (१) मन का बोक दून होना। प्रयोग--- बस्तो 🗴 🗴 वर्षम् बहाकर बोदो देर के लिए जपना जी कुछ हराका कर करो की स्थित्व --- कोठिक, १९०)
- (२) शारोजिक विकार दूर होते से नविवत में हल्कापन प्राना ।

जी हाथ में रचना या रहता

(१) सन की बात में स्थाना । प्रमोग—निस्ता भी हुआ। मान तो ना त्या शास त्या ११ विशिक—में शाक, ११०। वह कर को बार कर को उत्ता से १९ व र का मानी। को रक्त में के दक्षियों र १०३ (र) किमो के विकारों की अपने प्रति अपना स्थाना । (मधा∘ पुरा०---जी दाश में लेका)

जी हारना

- (१) प्रेय करना, इट्य न्योद्धानर कर देना । प्रयोग---प्रीय विन्ययो परणी पनि संस्थित हारि राजी मू करा रिटर हार्ड 'धन्य कवित--धनार १४४)
- (व) हिम्पत प्रश्त होनी ।
- (क) दिल क्ष्म माना ।

ती हिल्ला या हिलाता

मन का करवण या अध ने दिश्य होना था करना। प्रयोग—नो व देशे किया रिस्टी जी को मोग दाती हिना दिला करने (बोला---हरियोध १२६

की होना

पैसं होता. अच्छा अवसा । प्रयोग—दिन्दि न बार्व सहस्य पीऊ । पुरुष पराएं अपर बीऊ विदेश-स्थायसी अक्षर्

র্মাত বড়ানা

र्जाने जी नाम न लेगा

भीतम् भर कोर्षे सम्बन्धः सः रक्षना । प्रयोग-नृश्यामः सम्बन्धः से सम्बन्धः जनमः सः नेही बाउं (सुरु सा०-सिः, २०४०

जीने जी घर जाना

- (१) अनभति गृत्या मृतक-भद्दा हो नाना । दयीन— जीवत मृतक हाँ रहें, तमे जगत की बाध । तस हॉर नेवा आनमा कर मनि दस्त्रपात समा कभीर प्रदारः ककीर ६४
- (५) जीवन में ही सुध्य से बद्धकर कथ्ट भीयमा ।

त्री देश जादा

(१) बोलने की ग्राविक न पहली। प्रधोन—विका नहीं और किसी को भी यह गालवाना वे सकता है या नहीं, पर निका से ऐसी बात करने तो उसकी दीस (ऐंड अप्ती है क्षेत्रस्य (२) —आक्रीय, १८६) , को नहीं जीभ सुँठ जानी भी एक के बीम, गेर्ट्स क्यों हुं (बोलय—क्रिकॉस, ९७)

(२) प्यास कोट से कारल वृंह यसना ,

आम कांटा होतर

सीम क्य कानी । प्रयोग—वय कि बोला पतन्त है कीटा हो यह बीम कु बच्ची बाटर शिसक-स्विधीय, पद)

जान कारना, कानु हिना – व्यवसा हिना – तिकास हेना

लगा वर्थ देश कि कीननी बना हो आए। प्रयोग—
्रिंड बन पर्यो करिन चरफोरी। तक परि नीम
भगावत तोने रामक म —नुलही इस्थ) जानि की नाम
कर वर्द जिससे बाट एक जीभ को स वर्ग हम से
बुनतेठ—हरियोध, दक्ष), वह वर्द माति गाद में जिससे
बाद उस कीन को म वर्ग केने बुनतिठ—हरियोध, दथ, तोन की आप कीम वर्ग प्रमानिया हो कि मी भने
हरि व्यक्ति—हरियोध, १४०: वेट की बावम्थियो में यथ
कर्णनदी हो कि बार्ग को देने बाहिस हो किना करें हिनके
वीच वनकी विकास ही नेनं (कुनतिठ—हरियोध, दक्ष)

(समाव महाय-जीतन निकास देशक)

त्रीभ काद होना रेश जीव कारती

श्रीम जिन्हा हेना रेक्जीय काउना

औम सूलता या सोखता

- (१) बोबना । प्रयोग—शहुर योर कोविना बोने । हुने अलोग भी म तब बोने (घट०—आयसी, ३५%) या दे कोने बीह् जीन को पूरण कुर संवार (माठ ग्रेस (३) मारतेल्ड्र, १३४); निया मानव की भ्र कोमने हुए अन असहा है (सुठ मठ—मुद्दान, १४२)
- (२) मांगमा । प्रशीम-अवदार मांग्रूड पर मांगमा है तह बीच करना है, वा अवत मेंग हमेंग्रूड नहीं का है (सूठ सूठ-सूटर्सन, १४)

जाओं सहकार ने

भूम्बार मोबन के बाद यह बाब बना रहना कि और

अभि चटोरी होता

विके । प्रयोग—जाम क्लोंकी तरे—मेरी चानका—थीथ सरकारती है (कला०—यंत <०)

क्रिक खरोरी हाना

बासार की, द्रवर उपर की बटरटी चौने सान बाका । प्रयोग---कर बटोरफर स्थान पढ़ बाट में को बटोरी सीम कर मीपट की बोसक--हरिओध, थर।

ज़ीभ बसना या सरामा

बुध्दलामु र्वेक सीतना । प्रयोग—स्वय वर्ष आप नृत क्यान वयो भीत्र तो कम नहीं रही कमनीः कोसेश—हरियोधः अध (२) वटोरंपन की क्यां होती ।

जीभ ताम् से न स्मना

- (१) एकस्य पूर्व शहरा होते आला। अशोप—गणना साम ही नहि नावत, नोचे नीय पुनारत एक सा०—सुर ३६७०
- (२) बच्चे का एक्टम रोष्, जाता ।

आंध्र बचा लेगा

मुष्टी सायता । प्रयोग—तय सून नाम ही कृषायी का स्रोग क्यों बीच है दवा की त्युपतिक-तृतिसीध ५७५

श्रीक विकलता

(१) सालच करती (प्रयोग—कीम निकासी भारी आहे। स्वाती पेट विकास पनंद का आधा (बोलंक- हरिकांध, २१॥ (२) क्या काट पाना ।

संध्य तिकास लेगा रेट जीस काष्ट्रमा

र्जाभ प्रकारत

नोजनमंद्रकार प्रयोग महिन्द्र रणहा कंग्रहणे भागिताहरू जनसम्भाष्ट्र सुक्ता

शोधन प्रतादी होता

धनार प्राचनकाल । प्रत्य— हरणारा शत् । जन्मी तर्गार्थ करा परतीय नेषु हर्म्य

क्रांस पनिया जन्म

गालको जाता । प्रथम अनुत मार्ग हर्ग काम कहा और परिस्था व की है। प्रथमी 5 केंग कुछ

त्रीय पर सरस्थती बसना

- (१) यदा बन्द बोनना । घरान—सवय समिक्क का कि उनकी जोज का सरस्वती विराजनी ह ,मस्व०(६)—द्रैसधद १६
- (२) बागवाँव या बढ़ा विश्वास करि श्रीता ।

जीम पीपन का पत्तर होता

श्रीत्वर जवान वाना । प्रयोग - तव वनी क्षम श्रास क रागे नहीं योग पत्ना जब कि योगल का बनी (बोलेंग -(में क्षोध, बद

प्राप्त में नाता पहला

हुम न कोण पाना । प्रयोध-नुष क्षाना काम करी कहने के निए पूर्विया है किभी की जीभग गामा, पहा है ? (अस्त्री जीवरानर, दुउ

(नवार पृशंक जाम में सान्ता लगता)

साम सङ्ग्रा

- (१) तमं वितर्भ करना । प्रयोश—दश दोनों में न तो हाम्य-नार्था हो है बरेर न निय फ्टम्बन केवल बीध को नरहत एकं मृग०—न व्यक्ता क्ष्म
- (२) वष्ट्रक करना ।

ज्ञाम स्रथलकाका

वर्धने की क्षिप्त करवी । प्रयोग—वसी न निर जाय है अनव विरुग्ध किया निर्मे कीम जयस्थानी है (बोल०---हरिओंस, ९७

जीम संसामका बोलना

नावन्त्रपूर्वक वास्त्र कर्ती, जनाव-समाप्त वयसा । वापीय— र स व्याप र नावन र सर कारत क्षी धव राष्ट्री व्याप छेन के ती कारत क्षी अर्थित के हैं र स रना पास का नावस साम वास्त्र समीच समीचा नहीं आहि

ज्ञात क्रियाना

हार बानका। प्रदेश - विकास वा नामा व कोश सब को ए रेक्न को बाब प्रदेशन को दशके (संस्थाः कोशिक १९७५

जीवद के होना

पेसंपूर्ण वर्षास्य शताः, दिस्मतः व हारते आवाः । अयोग---प्रमानारं साहसः और भीवट क आएमी के प्रेमा**ः--पेनवट.** १२५

जायन का बीकर जीवर

प्रीयम की मुनीयनों को सहना। प्रयोग—क्सर्व बहुज-गति है, अहकार नहीं, वैसे जीवन का बोनड डीले हुए किसकी क्षमद नहीं सुकती (बोनेफ—संक सक, 200)

आंचन का स्थवन उन्न जाना

क्रीयन कारन

वैशानीस जीवन के दिश विभागा । प्रयोग---क्या समार में काई ऐसी करत हही है 🔀 अ जाई कह मंगार के संस्थान्यस्था सबसे सुद्र मोजकर अपना क्षीमन कार करें गवन-- प्रेमकट १७२।

जीवन का कार्य समन्त्र होना

(सवात मृहार---जायन का दीपक कुमना)

जीवन की संख्या होना

बीबन का बन्त विकट होना । धर्मम—देखा, बेहरा एक रिवास मानवार है सकिन देह प्रत्ये में देखी जैसे हुम्मी समग्र नम् है, जीवन की सम्मा (इस्सी)— निराला, १२३)

जायन बनना

भीवत के दिन कोनना । अयोध---दही स्वयाय करा रहां ती केने क्लेगा जीवत ? (दुधगाग्र--देश सब, २५४)

जीवन भार होता

बीयन में प्रदानीन होता, शीवन दूबसर होता । अपोय---शीर असरकान्त ऐसा विश्वत हो द्या जा, कानी जीवन सहै भार हो रहा हो (कस०--प्रेमचट, १२)

(समाव पृहाक—जीवन आर्थी द्वीमा)

70 O. P -- 185

इंग्विका सकता या सन्दानः

मानक्यकता की पृति होती था करती, भीवनशापन करता। धर्मन —व कोन करकः विकृत हिन्दूस्य की कोर सुके का रई है और प्रीर्थिका कराने के निष्ट् तस्त्रीते करतः बुकता, चुना करता, और बन्नास्थ श्वतकाय कारम किया है (केवीर -हत देल दिए, य

तुत्रा इपना

बणना रहेव बरेटा । प्रयोग---वृत्ता होरि सङ्की पन रहेती । युवा सेन्द्र राजा को बाती (पद्द---आयमी, सहर

जुल को क्षेत्र से असारमा

स्वतान्य ही जाता । प्रयोग-न्या क्षेत्रम के प्रमृत्य की अंधा जनार करना करना है (वैज्ञानीक (१)--वितृतक, अंध

हुसमा

- (१) बात पहनर, कोच बाप होना । अधीय—राष बनन नृति कक्क कृपनि नामध्यस्ता,—सुलसी, २५३
- (२) कुल पूर होता, बातव्य जिनना । प्रयोग-स्नामीत देशि करता पूरानी (सम्र० (बात) स्नुक्तारी, इंग्डेर, दसने में प्रदूर में बाबी-महेली क्षा का बाद होती हुई बाई , समा-न र मृत्य बाल कराएं सक प्रमाध-साथ विचा १५ जिनमें में क्ष्मियी साला बाला पाने हैं। भी भए बन जनको दल महा माने हैं सामेश-पृत्त नव्य

तुम्मा तुम्मा आह दिन दुनिया में भाष होना करमुमरी । प्रथम—करी पापको मानुस ही स्था है है जन्मा-कृत्या बाह रहेन को भाषको दुनिया में जाए हुए मा—कोश्वर, १४९

(नवा+ न्द्रा+—हुम्मा हुम्मा जाट दिन की प्रतारम

जुनाहे का गुल्ला कादी पर उतारमा

हिनी का क्षेत्र किनी बन्ध पर इशास्त्र। प्रयोग-व्यामा जनावे का सम्मा क्ष्मी पर ज उत्तरी (गोदान-प्रेमकद, १३९



अं ह स्थाना

कोई असर व होना। अयोग —काम योग तेर की निकी में भी कही मूँ नहरे रेगली सिलाओ—क्साद. ७/

जुईं। भाना

- (१) कर काला । प्रयोग—न्दी घर वृत्र ताल सुन कर कर है हमें भा गई अगर वृत्री जुमरीठ—हर्मकोस, परः
- (२) कोभ होता।
- (६) बलेविया बुभार पाना ।

क्टो काउना

जुले से पैर में सामा नवना । वयंग---दे पर पाव के तम तो वयं-नया तमें काटते जुले नदी मुम्बेठ--हरिजीध. ११६)

ज्ञान व्याना

- (१) श्रेतो की बार बाना । अयोग--नैन कोई बन्धिन कर्म किया होना तो कारकी जुनिया काकर भी नियन उज्ञात समय जैने कोई अल्लाक कर्म नहीं किया (मान्ध्र्य (१)--जैमनेद २११ (-)
- (=) बुना माना सुनना नियम्बन दोना । प्रयोग-न्यम में बार पान के प्रथम्य के दिन नए जुनी नाने के दिन बात्र (मांठ ग्रंदात (१)-नारतेन्द्र सम्), योग कर्त ते कमारे बार्च । माने बहु विकि वहकी पानै नाठ एंठ ,१) — सारतेन्द्र ६००) देनिए प्रयोग (१) म(+) मी

जूता यसना

- (१) अवादै-कारक होता । जयोद—बाए दिन स्वी-युक्त म कृतं चलते रहते हैं (शालः (३)—क्षेमबंद, ११३); बोजून संवा व्यास साथ के भी जुला चलः चल्यमा (सः—क्षेत्रकः, ३४८)
- (२) वृत्ते के बार-गेट होगी।

ञ्चा धलवाता

নজাৰ কৰবলা। ওলাগ ইলকা কৰি। এ কলা সুৰঃ স্কৰ্মনা 🛊 না কীজিক ৪৬৬

जना जन्मे पर भी यद्वा बना सहना

तके विश्वति का बद्ध न क्ष्यू धर्मण बना पहला । प्रयोगः

नोन बजी उक्त पही सम्भने से कि होरी के पास अबे हुए भवर्ष है अ अ जुले बाने पर भी उसके कही बने पहते हैं (शोदान- प्रेमवंट, १०३,

जुना दिलाना

जनमान करना । प्रधान—कम मेरे हाम में अपने वेसांचे, तो वे हो जो आज मुख्य जूना दिवाते हैं, मेरी भूती की तेल कुरवंदे जैनेश—धंशता , 19(8)

जुतियां बढाना,-संप्रधा करना

क्रियां सीधां कामा ८ जुनिया उडामा

त्रियों के सारण,—तुर्फेट से

कृपा के । अनेथ-विन राष्ट्रा की कृपियों के कारम प्रायमण प्रायम में बना है बनी एक्स वेस देश है। महानाओं हो (सामान प्रयाय-स्थाय-दासानदास, क्लब्रें हुन्दूर, मो कि हुन्द सर्वक र स्वया प्रयोगी कृपिया के वर्षात्रम हुन्द्रस्था की कृपियों की बन्नेवत की करते हैं (सा-कीशिक, इवक-क्रव्य)

वृतियों के मुकंश ने दे॰ वृत्तियों के कारण वर्ता की गोक बराबर

क्त्यत्त नृष्ट । प्रकार-में बाना की मृतियों की सोक के बनावर की नहीं समझती (गोटास-सेमजंद, १०१)

अनी की बोक पर मारना

नुष्या समाधना, परवाहेच करनो । अलोग -अगर तुरह हमारो करर नटा ना १६६ इन सब गानो को अपनी पड़ी चरणक । सोच पर सारते हैं मूँदैंश अप्रेशनाथ ४०४



(मयाव मुझाव-अनुतो पर रखना)

जुनी के बरायर व होना

प्रत्यत तुम्ह होना । प्रयोग—में जो जनकी सूनियों के सरकार भी नहीं कर्मठ—संगर्भद, १७४

जुनी को तेल चुपहना

खुराधर करती । प्रयोग---क्ष्य मेरे हुइव के काया देखने भी व ही जो बाज महा जना दिवस्य है मही हती को तल खुरहुने ,बीनैक---रॉक राक १५१,

ज्र्वं बटकारना

- (१) भाषा-सारः किरनः । इयोग—कथन्य कन तक वृतियां चटलाने ये, बान मिनिस्टर हो यस (१ देन- १० २१०, ५० पुन चटलाना अध्याचा वहां महाना हमारे भाग फुटलाओं पर सोता रहा (वैदरे—सरक, ५६)
- (२) मुकापद करते फिरमा । स्थान-नया नहाँक्यां वह लोगों की पतन्द करती है यो उनके पीचे दूत बटकारते फिरमे हैं ? (क्षेत्ररं (१)-क्षक्रें व, २१९)

(समा॰ मृहा॰---कृते फरफटामा)

जुनी वैज्ञाद होना

लशाई-अग्रका, पारपीट होती । प्रयोग---इसने स्था प्रापक्ष कि लाग वी वीकर बदमल हो जाव और प्रापस सं सूती देवार होने सते ? (रंग० (२)--प्रेमबद, प्रशः

ज्हे बरसामा

जुती से जून पिटाई करती। प्रधीन—क्या यह कि रामाकियन बाधू आल्पे, तो धह समय पूम्क पर बृगा बरशानने (शा-कीशिक, ३५२)

जुलों से कवर केना,--पूजा करना

भूते भारता । अयोग--विसी वदनाय है वह दूना इनमास पर बचा भी भूतों हे संबर के संलय(३)--प्रेसचंद १९७ % पालिक की पता नगता तो के अ अ भूती से पीठ की पूजा करते (बस्त--मागाव्द३४

(यम) व्हार-जुनों से बान करना, जुने लगाना)

जूतों से पूजा करना दे॰ जुतों से सबर केना

টাৰ

पान का पैथा। अधोय—समयी जेव मेरे लिए हैं कठ०—देवसव, ४८)

जेब कट जाना

- (१) ऐसी जर्म हो बाना । प्रयोग—हराका बाल सबस या जनार पान हा बहु अ है मातब का पुन कृपा-क्यांकी बबात में कृप करता, जिससे भीमा कहते परा भी देर म लगी (अपनी संक्य-एड. ६१), नाई भी दूशाम पर आने म क्ष्मती साम पहलो है और प्रश्ते गाई को पर पर कृताने में नेम फहनी है औरए...गुरुष्क, ३४)
- (२) वह है कारानीया चूरा विद्या नाता ।

जेब चाली होना

भाग में स्वया-वेशा न होता । प्रयोग-व्या समीर माई, न भाग कुछ यंत्र मानी है पैलो-अंतर-१०४)

जेन गरम होता

- (१) जुब काच होया। प्रशेष—सन्द देश में स्वदंशी 6) अपनर दिया की घरपड़ी दुकान पर "मेड इन इंग्लंड" दे उन्दे कामा जान क्षेत्र शिक्षणाः और कापकी सेम नीप वरम होती: "स्टं—दे० स० २२-२३
- (२) पून मिनना ।

जेब में पड़े बहुता

क्स में होता । प्रयोग-नुस्तारे जैस एक इमार वृद्ध प्रयक्त नेक के हैं (गोदान-प्रमक्त-१९५

क्षेत्र कारता, की गेरियां जीता, -को द्वा सामा

उस व नजा म्रान्स प्रवाद स्वा मुदाये म जंडन कर गोरिया गीरोने हैं (श्वन प्रेमसन्द, १६०) ; वही नहीं, अने बंक की हवा जानी नहीं (सांश्लीक महाशिद्धदीं, १२५) , बाबी नाम की बंग काट कर जाया है, मने पर य नाई पृत्न नहां द शकाव र प्रशास १७६ , मीरा की की मैं नहीं कहता, तेकिन मेश तक चले, सी उसके हाक-बैर बीड हूँ, चाहें बेडक ही क्यों न काटना करें राक (१)—प्रमान्द, २१६), जूब नातिर करना को बेल की गोटिया गोदना

ज्व वर्त और स्टिर साराथ से अस कार्ट (ज्ञान**ः - वशरक**

जेल का गोदियां ताहरा ए० जेल **का**दना

जेल की हवर अपना

देश केंद्र प्राटना

जिकास करता

गलातान करना । बयोज-विन श्रीट करके देखार, मध्यम कोति बारे जैकार असीर प्रधान-सम्रोत ३०३

प्रीप्ता बीजा दिया कारकर

त्रीको करणी वैका कल पाना । धपोन-कनो धान तुरवाम है, दश करी जिले कोए। अनवामै मीहर व शिली जोने जु. जानपर होद (बन्धीर श्रदार--क्वीर, प्रद ('बेलोड बोडवे र्रमोड लांगी, रूपेंग मोच समाने बुo बाo - मा बर , करि कुम्ब निष्टि परवस कीना क्या नी मुनिय, महित्रा को बीम्हा (रामणाक्ष)--सुलसी, कुद्ध-

जैन्दर मूंह बेंबर थप्पड हरेना

श्रीमा स्पन्ति हो प्रमुक्ते बाच बेना स्ववहार करना । प्रशीय-जैता मूह देशा बच्चह जीव तीह हटीब केने हैं **(新)**() 学 700、49

जैमा मुंह वैसा बीवा सिलता

बैसा करना बेमा पांचा । प्रयोग-वैते जह होना है वैसे मी बीबे मिसते हैं (मानक (१) -चेमचंद, १८५)

बेमा मुका सामन बेचा, हरा आसी

हर विश्वास एक की होंगी । अयोग-अर्थ क्या करना है र वेसा सूचा मादम बेगा हरा भागे (प्रेमाञ्चकेमण्ड, ३१५)

(गयाः ५७) तस्य सापन वस्य सादी

बंधे से बंधा काना या होता

at प्रथा को क्यार गांग प्रथम स्वत्रहरूर सकता » प्रथान संबद्धात ^क अनि गीलाम गानिम की मनने। **सम क**ोन् इ.भी वि.म. तीर वा विचा अस्त हो इ.स. यन आयन्त बाद परी শিক ওঁব বিক্লা মুক্ত কবিল্লা দুক্ত কুম্ব

(बबाव महाव---क्रीसे को तैमा देवा)

इसे जाना वेंगे हो और माना

तुरत्व और भाना । प्रयोग---वे भी चर पर नहीं मिले वेसा नवा बेसर ही और जावा रिक्रमीय-रामव वर्गा ३५)

होक की हरह निपक जाना

हर बग्रह बाब क्ये रहता,चित्र न होरता । प्रधान-ध्यने यन का बान होता है उस भी। जाक की तरह विपट काता हें के भए। २)--- प्रक्राय, ध्रय

(नगर पृताक कोक की सबह पीछे खगना, -बोकर स्टिप्टना)

डो कहा जाय भी चोदर

क्यानीत होता । वयोग-- शतक वृत्र हास बृत प्रात् । मो बच्च बहिज चीप नव सर्गु (स्मिश्राक्ष)—एससी, ३७३,

जोरा अध्यक्त

योग को अनुभूति होती । असीव--त्याव वेस दकानिया, atter abe man Gelt buto-refeit. 13.

तोष-जाद कर

बांबा-माद्या करके । अयोध-स्त्रु वासी संपू श्रवि करि, मार मारि पन बीनो (बनीर ग्रेशाव-क्योर, १७०)

जोच नोच का होना

मुकारने में बरावशी का होता। अधीय-जैसा सूह वेता बुप्पक बोह बोद रहोच वेते हैं (हंशा०-हजा०, वर्ष)

बोद मोद स्थाना

- (१) टीवा टिप्पची करनाः । प्रयोग—वानुरेव महाराज्ञः बरा फामते से बीधी पर बंदे तमके स्तीनों पर अपने और शोद नवस्ते वाते व भोजी-न्यसार, 2017
- (२) दान वन करता,असद काना। प्रधीय---तम बेनारी ने तुन्ने रमने के निए क्षेत्र मोह जी बहुत : मगावे (मिमा०---क्रीजिक, १००)

जोड़ा सनना

संबोध करना । प्रयोग—ने मुकासक याम आग छोड कार्व कील बाजा करते पुलेशी चंत्र 🕴 पुलेश २६



ओड़ा फुटना

निधमा या निष्युत्र होता १ प्रश्लेष—कुट कोहा वसा सतस्य धर का । वर्षों २ सह कुट-कुट कर रोली (बोस०---एरिडोंक, ६व

जोड़ी से दाव फेरना

मृगदर की ओही से कतरत करती । अयोग —दोसो इस भोडी है गांचनाच भी हाच फेरते से 'सबन—प्रेमचन्द १७८

जांन देना

काम में सवा देश: । अयोग---कभी लेभने काने के दिन हैं, इसी सवम कोल दोनी भी कनेना मूख वावका क्षत--नामान, प्र

जोत से जोन क्रिकामा

प्रदा में भिन्न जाना (बारमा का)। प्रयोग-निम नोभिन्नि नोति मिलाइंगा, ती में बहुरि के जी बनि माईगा (कदोर प्रदाठ-कदार, ६६)

जोर जालना

जोर चकद्रमा

प्रतानि से नीपना भागी । आगे बहुना । अगोल—'कार्ड दे सुमक प्रदिश जोद पक्षण रहा है'' (मृहित—स्थ० क्यों, १६४)

(सपाव मुहाव---क्रोर बांधमा)

ज्ञोग क्षारना

(१) प्रमावपूर्ण होना । असीय—कमी-कभी वर्षः उसम प्रामीय प्रकार आर भार माने हैं तो वह विक्तेयवर्षः पांच पंताबरें का स्मरण करते हुए x x बचनी बाजा को प्रतममञ्ज्ञाता है (बेरेंठ—मूनातठ, ११८)

(२) बहुन प्रथम करना । (अमा = मुक्षा =—जोर लगामा)

जोश ठण्डा पटना

जी अर

वंदा-ता (प्रयोद---पर उसका च्ह्रन-सहत्र फेसल के अंध यक्तों से भी जर घटकर ज बा (मान० (१)--ग्रेमबंट. वंदी) अब जयायन के दिव की, भ (दवता क्रम होंगी) जो वर वेदेशेल---वरिकोस ३७:

जीहर जुलका

यान प्रकट होता । प्रयोग —सभी कभी नहीं, अवसर संकट परने पर ही बरदमी के कोहर कुमते हैं (मैनिव (२, — प्रभव-८, ५६ - १११ भार के प्रोत्तर तो हायनग में लगते हैं पैनरें —संक्ष्म, १००)

तरहर दिकानर

परायम करना । प्रयोग---वर्षे भीते सीक्षा प्रातीन दिलाचे सुमतेक--(विद्योध, १६६)

ान प्रदिना

अवस्थानी प्रकार विद्वान दिलागाः अवस्थि—स्थार गहर नक्ष्य वहां भी नवीं प्राटम ही साम आरू पैछार (२)—भारतेन्द्र, १३६), प्राटमा सरवानाची की घड़ है एक कीक—एक आर्थ है।

(नवार न्टार--बान आदानी)

ल्योनार बेडना

क्रिक्ति का प्रवत में माने की बैठना । अपीन— विविध पार्टि बैंडी चैवनप्टा रामक (कास)—सुंससी, १९१)

त्या कड़नी

- (१) पूरवा शस्त्रा । धरोय—सत्त्राई की टीका विकी १मे देखकर तो सुद्धे भी ज्यार वक्ता है (पद्धें) के पत्र— एक्ट प्रजी, २०४
- (२) बोध काना ।
- (व) बुजार माना ।

71 185 - بن



यनिक का धन । प्रयोग----रीने हराये में इपने वरण निकल नचे, नची के हाम काकी कीडी यो न नची क्टन--घट नाठ, १५

फ्रीकोइनर, फलओरना

- (२) मानशिक उपलब्धन कर देवा। प्रयोग स्वताहक प्रमाणगर के उस अतिहास प्रशंस न सेर द्वारा का क्या दिस्य, भारतीस कर राम दिवस प्रध्योतस्थल उस्त स्थ

केंद्रा इट।का

भारतीयन पारस्य करता । प्रयोग नया प्रतिवासूर्व में तमना क्षाप निवार है या किसी नय प्रान्दीयन का करा उद्यक्तिया है मा १५% का उत्तर देश पानहा करता ५०० के पन्न पद्मार स्था, ११०

क्रिक्टा बाह्य क्राज्य

अभियोगन करता । प्रधान व्हेन हो छ नावह का अप। सक्ष विद्या स्थान ३ प्रथमन्द्र ३४६

भोड़ा गाइना

, () प्रभार करते । प्रशास अन्त से अन्, प्रमुक्त कर

रिवेदी में बारकारी की दक्षा बंदमा में "मावा और भागपत किया कर बदनों किन्दी दानों के संबद गात दिये गाउँ कि बाठ मुठ पुठ ४३३ जो तुम जियमदानी के नाम वह मानी तथाय बास्त्राकों से दक्षा बारपोर्ने और एक वालीनक का मन्या की बारते में द०—खठनाठ,४१३); बारे बारे निवाय के नाई (बीलठ—स्वितीय ४५)

- (२) पूर्व क्य में काना अविकार अभागा ।
- (१) अधिकार के विकासकष सक्त गाईना ।

(बंगार पुंगर-क्षेत्र फहराना)

कोंट्रे के बीचे

सकारोग्ना रेट व्हें को हमा

भावा (भावः सारकार

हैरान नाता, शासार राज्य प्रयोग जीर पिनानन बार किरे, मध्यर पर पर वर्ग वर्ग जी विचानन हाइमा न पंजाल जन वर्ग वर्षा प्रयोग करता इन निवाह में प्रयोग पर ना बंध्यनान न रहां कर कारका मुख्यो पेनाना पर प्रयोग के प्रयोग क्षेत्र के प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग के प्रयोग करता है।

भक्त (भव्द, जारना

- (१) स्वयं का समय श्रद्ध सामा । अयोग—स्वयी हैक कभीर मंगति को काओ रहे सम मारी कभीर पंचाय कभीर, 100 समयक दिन करमंत्र करि धर ते हम है असा भारत वहें (बंदेव प्रेसांठ—संद्यंत, देशका(क्रि); क्याया हि दुव्याय को पीठ दिश्याभ्य और अपनी विचारण म अस्य मारी आसीव- यू व्यामां ३५१ वाद पद्धार नहीं में सीप प्राप्त क्या भाग कारने को हैं ! (धा—कोत्सिक १६६१) (क्रि)
- (२) व्ययं का काम करना । प्रयोग—मूर सबनी अस पार्व, वाहि वर कम मारि छु० सःव—सुर, २१७३ । वर्त हमारे वाहि वर प्रतिहान कम भार के हमारे प्रतिकृत हो गया (भट्ट निव—ना० भट्ट, ११); देखिन प्रयोग (१) में (-) भी

भूतापारी करना

बेकार का बाम करना । प्रयोग—में क्यारी वृद्धने की मारी दिन घर भारकारी करू और बाप बीने बार समाठ—संघे प्रथ

भगवा भावः

सदाई लगहा । प्रधोग-अब तो बाध वयने वीचे जनक भारत तम क्या (व शाठ-व भारत ११३

(समाज्युशाल असमहत्र असेस्ट. टेटर)

फर जंगा

हुए हो जाता । जनोम--क्यमी कुछ से छह करी है, कह भार विस्कृत कार ही कहा पर नदें ०-- छहाँ ये २६४ ६६

मर्द्धा लगना

- (१) पानी का निरतर बरमते याना । इकोन-नंत्र शिन रहे बाद नन मार्थ । मानह बना नेत्र मार्ग नार्थ रामा स मुनसी १४२ मार्गन को मार्ग नर्थ (* पी (सानवर्ष) --प्रेमचंद, ६६); ह बने के मार्ग करी है भीर पन । २ पनन को ने बहुमा के पन पदम नाम्में १५०
- (३) विशंतर अवाहित होना । वयोग— वर्ग मुभाइ वियो

क्य जानी सक्य भाग जोट कर जाती क्योंने ग्रह्मा०.... क्योर, ३३५,

मापट होता. धाइप होता

करापूनी होती अगदा होता। प्रयोग बहिका कृत्वी को देख-देख कर बादका नहा वा कि तक अगद दोने पर बातकार दिया बदेखा वा नहीं (कृत्वीय—निराता, ४६), बहातीय के दिय अनकी बाबी द्वादीका से कोती समय हा गदी प्रयोग प्रशेष्ट इंटल कहीं व भी देखी में अदय ही बहाती की (योकी—कर्तुक, १६३)

क्षपद होना

रंश करूप होना

कार्व भागर

बर से वच्चर कारा । अयोग—अश्वति देखि मानू स्वि पाट बर्गाहर वचीन परी हाद कार्यु एम० छ। मुस्सी, प्रमु

आंक्ज़े भी स सागर

- (१) थोरी देन के किए भी व याना । तथान—हो, देवें विस्टर नाम के दक्त बान की क्षण जिकायन है कि नहोग से रहन है बीट कभी समार वहां याकत की नहीं देवें संस्तार, एक
- (कोई सकर न रेजी प्रवाय को इनस्य पर गरी कहा, को नहीं काकने तक जाने मुख्य करने, हो (क), वर्षीय मोग इन्हों को यानि दरवारी अध्यम वर्ष्ट्र भ कम तक म बाहता (गाठ ११)--प्रेमचंड, ६६) (क)
- (६) कोई सम्बन्ध न रकता । प्रयोग—देखिल त्रवीय (२) वे(+)

काब कांच होता

बारा श्री रोतो प्रधान प्रधान प्रशास के समयन भीर पर प्रका के सम्बद्ध में जनमें सूच नांच आरंच होती की (सानव हो), हेक्सद, २०७१

भरंगा देवा

(१) बोखें के शासना । प्रयोग—करे पारिया बस्तर-बोचन दे देखें तथ कामी भाग एक—(१) भारतेन्यू,३६३)। दिश्व बहुन कोनों को कार्ये. अकना नहीं कोई मी फांसे ____

(गुठ निर्ण्यात युर गुर, १९६); होरी वे आना दिया— प्रश्नी हो कुम ठीक नही है नाई (गोदान—शेमबंद, १८६) (तमाल्यहाल—स्तांक्त पूर्वी देशा,—पहा पहाणा,— पहाना,—क्ताना,—बुका देशा)

भाव दालगा

भना बुरा बहुना, श्रांटना । प्रयोग-न्योगानी तनन वृत्र यह साह अस्तो (क्टा॰-दे॰ स०, ३०६

(समा:: मृहा:«—-ऋरहमरः,—प्रटकारवनाः)

ब्लाइ-फ़रकार कर कल देना

गांव कुल और बंद बल देना । प्रयोग---वस्ती फाक्स्या स्थाना और सब कुछ की मंत्रकश्चादकार कर बल देन बाचे तेल ले बचीर की हिन्दी गार्गिश्य का व्यक्तिय स्थान्त बना दिया (कडीर---गुठ प्रश्नेष्ट, २१०)

अराष्ट्र कुक करकी

बाको हारा बुक कर के प्रधान की इंटाना । प्रधान — काम कुछ प्रधान कुछ के न क्या जोन गई उनस्य स्थान कुछ (बीकार-मृतिकोड, ६४

भाव, भावना

भाष्, ते पारमा । प्रयोग-न्दर सार तो घनक सहर फर्डांने मुस पर साह भी काले के घपना समा-एड. इस

भार, फिरना

संश शब्द ही भागा कुछ न बंधनर । धन्य — बंधने, तहे यहां चिक्तिया का पूर्व भी न नह, चन म नायु कियी हुई की. राक्त हुटी हांची भी न मिली (१९० (२,—स्मनंद, ३२३

काह केंग्या

(१) मध्य भ्रम्य करना । प्रयोग-नाक नपन कर होता र कि वर की समाद बढ़ाता है, में त्या करन हो आह क मेर्पक्षक को कमाद पर आह कर दू लोदान -ग्रम्सद २६०

(१) सब अग वे जाना

कांच्यारको

निसंदर दण्या । प्रयोग -आर् । सारादी इ.स.२.पर फार्युमारा हैकाल- पितु चार्द

भागु लेकर पीछे परमा

यहन तीन करवा । वयोग-सामी एक पार्ट पहले जिससी प्रसाना करते नहीं पकता था यह यह भरत् नेकर उसके वीचे पह नका है (भूम०-साठ मह. 83)

भीकता आंकता

आनो दुःस-राका पानी। प्रयोग—रानी केतकी ने अपनी डीनो गढ कही और पदन बात वही समय। कोवना मीका को किसाठ—ईशाठ, १९२

भुक्त जाना

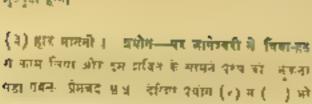
- (१) हार मानना । अयोग---वार-वार हारने पर भी वह भूके नहीं कालोक्क-हरु पर हिरु, क
- (२) विनम्न होता । प्रयोग--वेषा की भक्तवा वहें, बह समय अध्येता, अपने कार्य आयंत्रा, सकर आयेगा (नटी०--प्रकृष १९०
- (३) पर कामा ६

भूक पंड्ना

- (२) पण्डमा को व्यक्तिया कर तत होता ।

-५कन

- तम्म गा टान टाना पराय अली भई पर न प्राप्त हरणे संग्रापित प्रमुख सहस्त नातः नुपन हम्म अपन प्राप्त हेन् (रहीम व्यक्तिक-नहींथ, रही किस नार सं आप सर्व बाद प्रमाणित संवक्त भी नहीं नहन सबी चुमति। सर्वेद्योश १३५



भूरपुरा होना

पोड़ा-पोड़ा भन्तेश होना । वयोग--धोडी देर में नुश्त भूषा, कुछ सुटपुटा मा हो नया (860--हरिकोट, १)

क्षी गंगा में तैयन

भूम बढना वा क्यना

मन्त्र हो उठना । प्रशंग अ्ट्रिन बाई स्ट्रिक मार्थन मोडी बारी (मुरु साठ (परिठ (१)—सुर, १२६)

भोंक में

शानेग में। प्रयोत--शाय वरतेयकार की औद में जीवर

का उभ्यान कर बात है पहुमा के पत्र -पहुमा शर्मा, छप्। भेरोल की बाल

प्रस्पाट, बहुबड़ बात । प्रयाम---दूसरों के लिए विके जो दें वे करण न प्रदेश की बातें (चुनतें)---श्रुपियोध, १५४)

भोक में प्रकार

बदनक का आबाद में परमा । क्योग--वेदी हो पाय है कि दुम बनस जाकर दोश-दाक कर तो । इस आरेस में न पड़ी (मा-कोशिक, ४९,

भोकी कैलाना

भिक्य मांगरी । प्रयोग—जनम-जनम कनते नहि आशे। फिर नहि गाको महेनी जू (नेदे० प्रेसा०—नंद०, २९१)

(नवा» वृहाः—ऋोर्ता उठामाः—वासमा)

कींच दोना

बहरमुकी होती । प्रयोग एक दिन दोना को देगी बात इर भीड़ हो वर्ष (कर्म0--प्रेमकंद, १६)





(१) पृष्टि का किसी मोर क्षिप्त हो अन्ता । प्रयोग— प्राप्त केल करन तक जाना । करून न काम टक्टका काना (क्ष्ठ)—सावसी, इन्हांद्र); कर्नडूं टकी कन जान कर्न्ड् शावत कृत्याई (क्ष्म्यक ग्रंबाक—क्ष्यक, १६६) (...), वह कृत हुई बांको के स्वामी की चीर टक्टकी वाचे वही दी (मानक (१)—होमकन्द, ३५), और की चीट टेकनो बेला टक्टकी बांच देते हैं (बोमेक—इरिप्रोध, १२); कर सोन कोहो की बीट टक्टकी समाद के (स्वाम्यक—इरु प्रोशी, २०५)

(२) अनुकक्षापूर्णक प्रतीका करती । प्रयोग—वृद्धिकाइ के क्रांक्त केवा ने नीगों के भी में गंभी अगद्द कर नी ची कि कविक्यम मुधा के इंद नम्बर के लिए कांगों को उद-दशी नगात रहता वहता वा (गु० नि०--का० मु० गु०,३१६ , देलिए स्थान (१) में (२) भी

इकटकी बांधशा ९० टकटका वंधना

रकटकी लगना १० रकटकी वंधना

द्वसम्बद्धाः

शासामिक प्रवृतित । प्रमान-क्रिन्टी-व्यक्ति। पर का उनका अन्तर अधिकार है उनका सन्तर तका के प्रदेशपक्षण पद्म शास्त्र 373

इक्त सर जवाब देनां

कांधा बंबाक वेतर (मकारात्मक) र प्रयोग—सभी ती प्रमाने लाग समरोट को उके ना समान के विदा (स्टाठ (१)—ठश्रपाठ, १०२०: बहा उक कि मै भी प्रमाने कांस प्रावण रूप प्रपान कर ना रका मा प्रवाद देने हैं कदार देठ संद, ५०), जोनों को पुढ़ पर काए हिए जाते हैं, जेवर रमक्त भाग है विदान था के बने को कभी कुछ मांगों नो दका-बा बचाव मिकता है, मेरे पास कहा है (रंगठ (१) -- क्रेमबंद, ३०%): क्यों दका बा बचाय उसकी में |

द्यक्तिहाई होना

रके की होती, तुम्ब होती। प्रयोग--कीई टॉकहाई ती नहीं तसीप्रकार रही है मि--कीफ़िक, १२२

दके का होगा

बहुत बायानी या तृत्या होता । प्रधीय—बहु हहरर टकें का सक्त्या, मैं एक बहा अनुसर (ब्लिट १ - प्रेसचेट, १६४); तृत्र मोन प्रय टकें बाबी कीरतों के बोह में अपना नेवा और सबक कर करते हो कांग्रें - यू टक्सी,३४०)

उद्धे की व पृछ्जा

कोई प्रतिष्ठा न हानो । प्रयोग अन्तर प्रका यह किया। का कार्र तव कर नहीं यूक्त्या साल कोडिक कहा



रके रके की मृंह तरकवा

बहुत एपीब होता । धयोग--हते-न्दं का मंह नतन है किरने मारे-मारे हैं (तुर०--मतक, ह)

रके सीधे करना

व्यया कमाना या बनुकना । प्रयोज—सेठो का क्या रे मुकी को कुछ दे लेकर बहेर के बही यह रहते । दलन बेचेंने बीर हके सीचे करेंने (भूगठ—द्वंच क्यां, २४३)

दक्त

उक्कर कामा

- (१) मारे-सारे पि.स्ता । प्रयोज-पद्धां अवह-जनह टक्कर साना पहला है (परस-प्रीनेन्द्र, घर
- (२) धनका लगनाः।
- (६) क्रोसिश करती ।
- (४) मुकाबिमा करता ।

दक्कर लेगा

टकर होता

सकायका होता, इस पुर होता । ध्योत-सम्बद्ध है कि प्रस्कृत स्व प्रस्के उत्तर हुन हो पुलेशे देख । पुलेशे २१४)

हमी लगगा

रण्डकी सम्बर्धा, वस्तरक दलकं हम प्रचीशा करता । धर्मार्ग क्यी ज्योगे विद्वासियी, सु आप त्यो विद्यारिये असीम ह्यूं क्रिक्ट्रिया - सम्बर्धक स्थितिये धनक करिते धनक ५४

स्टोक्स

- (१) वन का बाद परकता । प्रयोग---वाको मूर्ण शी-मी कप ने कोका और बहुद का स्टोका (इ शाय--इ शाय, २०); अपने यना र जिल्हा-समयकान सिवाजियों का भी स्टोन्-कुना (स्टानिय--- कुक क्षरी, १४१)
- (२) उन्दर-पनर कर देवना बांत्रमा । एकोग—सम्पत्ता-पानामें पंतित परश्चारी की जीवनी के लिए जैसा कि मैन कर्ड जिला है। पाननाँचन अर्थंद वर्षा की प्रश्नी परदल नम्भनी पत्रमा पद्रमा के यह सद्रमा जारी पत्र

दई। की बाह

निकंश को मानक : समोग—उने अपन हो यहा कि किना किनी शाद के में इन मोजो म नहीं क्या सकती। मृत्यान की नाद केनन दही की साह की (रंग० (६)— प्रमान, ३०६

उहीं की भाड़ शिकार केनना

विमी क विरुद्ध (स्टावर कार्ड कान कन्ना स्थितर करा काल करवा। वर्गान--वेगी ही हुई। रिन खेलत निन रिस्तार भगवान भाठ १० ११ भारतेम्द्र ४७६, १ट्टी इ बाह के विकार करने कानी वृत्ती की बाद के पिकार निज्ञां की संग्र के गोंद्रान प्रेमबंद २७० , शुद्ध मध्या रिक श्वार को भी प्रस्माय प्रेम कन्नाकर हुई। ती शाव के निकार खेलना सुविधी के बाप हान का खेल हैं (प्रस्मप्रशा—पहस्त असी, २०४.

दही की जोड होता

बोर्ड आध्य वा बाधार होता । अभोत-रही की धोर बनी रहे बरवारका नाव रहता है (बीनैठ-राठ राठ, १५७) दर्स होता

नवाका होता देश बोनजवाना । प्रयोग—इस वाड प्यार के बहुरा करा दर्श हो दवा का (मान० ३)—प्रेमचंद, घर)

इस से मन व होता

निष्कं भी न कियाना, जपनी भारका से न कियाना । प्रयोग—पान्यक्य करका के कहने पर भी वे उसनी-संध न इस (ब्राह्मत)—देश स्था, १९३,



दिलाने में जिल होता । प्रयोग— यह तहली कि सम में दिसमें महानी है (मुंध निक—संध मूंध तुथ, रहन): उस केवन हो यह भी सेया-सेयर करती में १८ १८ उसकी विश्वति क्या मुनकर देसमें बहली भी (सानक (४)—केवकट, १४) हो किए यह कियाँ की मानि उमुख कहती खेड़ा किसाक—कोशीक, २०४

इन्हरू देना

विश्वी को बहाने के दरका देगर । प्रयोक उन्ने टहनर वर्षो सङ्गी देली (मानक (४)—प्रेमचंद्र, १०४); क्षेत्रण को बहर कोलो ने कही दहना दिवर मान्त्रकादीक, ३०८;

दरेकता

जिल केमा : प्रयोग—मनर होते में करने दिए है तो कही य कही होके पर्य होता (गोदान-प्रेमकंट, ३३६): नदमकी इतिहास नभको ने उनते के भागार कर जिला एकिक एउन-कोम किसे घनकी नारमा गुरू कर दिया : सकते आम-प्रकाम के में इन्द्रे--विम या मनन विषय किसे उनकी मी होक दिया (पट्टम० के प्रम-पट्टम० कर्मा, ३८६) होता, वरा नाम का नकों तो हाक हो (प्रमा- प्रमाद, १८६)

क्षीय अकरता

(१) विना अधिकार के बोन देता। अधीन—कांच भी में और हर विकार में रांग मनाने में (गोली—कानून), २००) मेर वह मार्ड अ अ नेमक भीन कोलिय में भी रांग मनाने की मोम्पता रकते में (मपनो सबर—असे, १० (१) फिज़्ल दक्त रेता, विका कांचना। प्रमोन—अपनी अवेतना बताने के निमें आने विना कान हर कांच में वांच महारी में (पिक्षा०—कींठ दाय, ६४), तू जो भाग नहीं मामली, समये रांग को बहाती है (मोदान—मेमजंद, ४); ताकान प्रस्मेक कांच में रांग अवोक्य निम्न की बाब्द कर देता कि वह हारकर छोड़ है (शेवर (१)—अहो थे, २१३)

(समाव मुहा---द्वांग प्रारक्तः)

टांग के रास्ते निकलता

 शक की बाह किवल आक्रो (रंगव ,१)—प्रेमचंट, ३२ (बबाव वृहाव—टांग के तर्रे से निकारमा) टांग कोचना,—वक्षत्र कर कीखना

बरनाय करना, भिराने की कोशिया करना । अयोग— अरे, दुनिया का कावचा है कि बहुने बाले की टांच पक्ष कर पीछे बसीटती है (बाद०—स्तानक, १९६): इस कोगी का तरे काम ही यही है कि बाद जाने बाले की टांग भीनी बाद (कठ०—२० स०, ९६

दांग धर्मादना

- (१) टाव मीवना । प्रशेष—क्या नाव प्र*'पेयर हती-निय है कि समारी संग चर्तारी आवे ? (क्टा० (२)— संस्थात ४५०
- (२) विना काम इवर-एवर गारे-मारे किरना । टांग सोक्ना
- (१) दुवित करनी । प्रयोग—समृक्तिरत की लोही होग । बोट वीन के सानी जान (गु० नि०—सं० मु० गु०, स्२२)
- (२) चोर परिचय करना ।

टांगं यकदकर सांभना

ः दागं सीवना

टांच प्रकड्ना

परास्त करने को प्रयत्न करना । प्रशोध—साई ने नडक कर किर टांन पक्षी, बोली—यरे या जिले बालूम सही उनक बाने कहियो चुटिक—अठ सठ, छ)

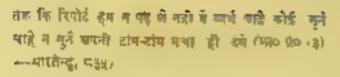
रांग कॅलाकर सोना

- (१) तुम हे दिन विकास १ वर्षाय—मै सापकी गरीसक। सुरत नहीं आहे है यह संगिता अवना पर सुब अब देखा कर बीड़त (रिश्व (२) प्रस्तंत ४२४
- (२) निव्यत होकर स्रोता ।

(समार पृहार--दांस क्यार कर खोला)

टांफ-दार्थ सनाजा

शंग करता प्रश्वास करती । अवाय उसकी समी भी पुरत बाला भी कि सकीरशे की आध्यक्षण को सुद्धारी दिसी भारतकाई का समाचार उस तक त सिके उस



टार उत्तर देवा

वीनाका निकास वंतर, सेम-दम का स्पान्तर बंद कर देना । इसी प्रकार निवास कोगरे की भी अब पृथी करनी है आत वर्ष प्रीम दस का जो सप्तर हाट क्यरनी है (गु० निठ—वा० मूठ गु०, ६२६), याँ प्रगम हाट क्यर देने को होई मान से भी (प्रान्त का-प्रेमक्द, ५० व क्यरा विवास कियी भी दिन कान्नाम का नकत पाने की केमाओं के नम मंद्रियों के हाट असरकाने का है वैज्ञातीक को—कत्रत, १९०, दाद की नहीं इसर प्रान्त का करों कार के नमें वर्ष वृत्ति —हिंग्जों है हमर प्रान्त का करों कार के नमें वर्ष वृत्ति —हिंग्जों है हमर प्रान्त का करों कार के नमें व्यवस्थान

टाट कर देशम को मिन्हां

कार्यस्य मध्यः । अयोग---वृश्वत्यी इत्या मृत्यः संदर्भ कीरे । सिभनि सुप्रायि एक वटोगे (सम्बद्धः वास्तः -- तुलसी ३३

हार बारव करना या होना

शांति बाहर कर तेना या कर विषय नानाः। प्रयोध---हाहती की समार्थ न हो काथकी, टाड बाहर कर दिया भारतमा (भानत (ह)--प्रेमबद, १९५

द्वापने यह जाना

टिकट कटाना

- (१) दिसद्ध सरीवमा । प्रभाव -दिस्ट करा निष् थं, सनीयस हुई (कुक्कोध-निर्माला, ६१), एक राष पनन सारकी से 'कुश्च्या'-कका प्रवादन स्टेशन पहुँचे और निष्ठत संद्यक्षण दिस्ती की राष्ट्र की (पट्टमप्राम पट्टम० शक्षी, प्रथ)
- (२) घर साला।

73

O P -- 185

रिस्कारी देवा

व्यान करनर, द्वयहान करना (अयोग—अत्मोचना में रूनल दनको नजरीको हो के दोन नहीं बारके वसे हैं, वरम रूनकी मृत्य रिकार्ट हें x x दनको टिटकारियां दी हैं (पुरु निर—बार मुरु पुरु, ४२६)

टिट्टी के रोके वांधी स स्कता

वसमय का अभिन्याको है उक्तर लेखर कीश न सकता। प्रशेष---विम कात को मान्य गांव कड़ेगा, उसे एक तुम न कहाने, तो क्या विश्व कायता। जिही के शेके साबी नहीं कर कारती जैंगा के --वेमनट १९८)

रिर्मारमाता दिया

नमान्त का बच्ट हाने के निकट । प्रयोग—निनेमा का पूर्णन प्रकल केत के बढ़ा जा रहा था। रंगलंब के प्रश टिकटियांते रोगों को दब बढ़ अपने बाब दहा के जाए, रमका कोई दिकामा न वह (वैनेरे—अप्रक, द)

टिंग-पिर करना

गोलमाल करना । अयोग---विसी ने यथा श्री हिंदर्गत्तर की और देश प्रदासल में दश्या दश्यार किया (मानक (ह) ---प्रमुखद, १३०)

अवार मात्र दिव फिर करना दिव फिल करना)

दिव निष्यत जाना

चमत दूर हो घरता । प्रयोग--- क्ष्म के मनोत्मानों का कुम क्षमर निवल बाने के x x ततक कुनीतता की इंटर्र विमक्त द्वार के मिल नई (सह निक-कार में), १३

र्दम्का कदाना

- () क्लाराविकार कामा । अभीग—सुम्दु सब मन्द्र दक्षण टीका (क्षमञ्ज्ञ) नुससी, अध्यः
- (६) ऋरदायिक नेना ।

शंकार करना

- (१) क्लम्या करनी । क्योय—पडते समय है भी टीका एउट्टे के, उत्तम और करित्या में एक समुख्या आ आगी की कुछ—पठ पुत्र करती, १०,
- (२) ज्ञानोधना बरनी । धर्मम-यह आध्य एक कुछ



के नवास है, उन्हों के प्रत्येच व्यक्ति की दूसरे के उपन जीन अनुस्तित कामी में, टीका करने का ही गारि उपन हम्मक्रेंप तथा करना का अधिकार है (विश्वक—पनित का (80), देने विश्वय में आपको टीका करने का कोई परि-कार नहीं है कर्मेठ—प्रेमचंद, 200)

- (३) राजगरी वर बैठने के पूर्व जिनक बचना । प्रयास---चार हर्गाव दिव रामदि क्षेत्रा (गम०(छ)--सुननी ३०६
- (४) विकास की एक रस्त । अयोग-नृत्य क्या करि करो, साल केरे की रोको (बद्दा संसाठ-न्यट०,१९०

श्रीका बहुना

विकास की पहली रस्त । वयाध-वर्ग तक वरा वन् सहत है, कि सामप्रविधी वह टीका वह सावदा वीट ग्रॉमनी वे विकास ही कावता वीतसाठ-कीतिक, १५%

हाका-टिप्यकी करता

भागीयमा करती । इयोग—हम करता है शायान व मोग टीकार्नेस्थ्यमी कर गहु में ज्ञानण हुए। पैनावन्द, पूर्व पुत्रती कर टीकार्नेटण्यमी करता अहत है अकिए-देश कर, इयो

द्याका देगा

- (१) राजन्त्री देमा । बनोच—स्ट्राइटक वर अन्तर्धाः टोका रामन् (छ)—सुस्तरी, ३५५); टीका रीम्यु वृत्र कर बाचू मीम्यु सिच साम्र (५६०—जायसी, १६.२.
- (२) किनी बार्य को करने का मनिकार वा कृती कुट है वैती है प्रमोन—हरीचंड आमानित्यने को दिसे कृति विकित्ताना सक्ताप्त २ - विकित्त नव्य
- (३) निचक सर्व सर्व ।

टीका पामा

कुलकार्तिकार पानः । यदासः वृक्ति निर्मातः हे को । एतः हेक्का समित्र सः स्कुलको भृतुष्

शंका भेतन

शका खगाना

र्कतने क्षणे रोडो की गोक-काम के लिए हवा की गुई देता वर रूपा । प्रयोग - हो न मन के योग का डीका बना तो हवा किर लाम क्या रोका नगा। भूमतेल -(प्रिजीध, १९४)

र्राका होना

प्रकार होता । वयंत्र—नवास चेतृ प्रस्तात का ते, वाल्य कर्यात को दोनो सुंक साव-सूर, आर्थप्त), हमारे मान वृत्रभ विशावन वास्त्रमण कुम दोनो स्थाप्त स्थाप्त—नामान दाम स्व

टांच का कव बगाना

विको साथ को पृष्टि करको । प्रयोग—छोटो न आई स बर्णावन करक कोइकर कुछ कार और साम में दीय का कर बनाया पालीक केमू प

रुप शाप हाना

पुन्न होनी । अन्यन्तन्त्रचार इत्यान की क मंदिर के दीव-दल होचा इत्यान की पर प्रमाद पहले समूह (मृह्यक-न्यव दल्ट १६२

दांच समानः

- (१) नवधन व दृश्च करना । प्रयोग—और उसी समय काहुर वरमार निह ने तकत बहनाई की बान पर एक हीप नवस्र मुनेठ—सम्बद्धां, ३%)
- (२) करर का स्वर बनाना ।

टाबंदाम

क्रमणे विकास : वर्षम — एक इकार तो डीक्टाम के निए कारिए, बोव्ह बोर बहुने के किए अनव (प्रका—देशकाट,

रुकर-जोर होसा

हंगरों के दिए कम्प पर जनने वाला । प्रभोत— इनकी व्यक्तिको धारण्य स्मृत और धारणां की रचेनियों, शुन् प्रभाव और जोच शांतिको की और शहके दृश्य-मोर्ट इनाव श्रम गोसी—कमुण्ड, १६-१६)

टुकड नदाई

्रदेश कर्या कार्या के तम अर्थ के तम श्राम को विश्वविद्या । प्रतिकृतिक क्षेत्रक क्षेत्रक

दुकड़ा जाना,—तोहला

(१) किसी के बाधिन होसर रहता । बसीन—स्थान विक-प्रियोग भागत वर के तुमने वर-भागर सके हुए से वर पित मूल गत (प्रीक्षा०—सीठ दोख, १०५-६) ; में तो बहरके पिही दुनके सीवनी है 'साठ माठ (१) -किठ गोठ, पर्व , वे बसीनिया की बाय-बाय साता-पर्वाच टक्क सीटमें का नाना क्यांते (बुद्दि०—साथ नाठ, प्रवह); प्रक कुछ क्यांता प्रमाशी पर्व भी ही गई दुनके नोको प्रदेश रे 'स्थ-क्योदिक,

(२) काना । धरोत—में कर कर दिना बाद वाब वी के टुकड़ा न नोडनर का (भिमान—कीफाब, ४६)

पुनाड़ा सिनमा

रोजी विकास । अयोग-स्टेम दृष्या आणि का विकास समय गैन की दृषकों हुई साली नहीं भूमतेल- हरिजीक, घटन

दक्षाः तुरपाना

शर्धभार कराना । प्रयोग — पणा को हूं वर देश केना कि चनमें ट्रूबरर में कुरकाई को वै नश्मीनधार नहीं (तितारी — प्रशास, १७०)

इकड़ा नोटना

4+ बुकड़ी बाना

दकड़ा अस्था

भीशः बांगला । प्रयोग---मामते पत्रने हैं ट्रेकड, नेट बुदा ना भागते हैं (मर्मठ--हर्स औछ, यूप)

इकड़ के जिए तरमना - जानायित होगा

माने नीने के हामान का अभाव होना । वयेन—वय पेतान पर एक नते की नो शीड़ होवा दुवड़ा का भा तो नहीं सरमा (मही0—सहोत, शह); उसे नताने देख उस है के लिय पात्र व लेका दुवस रका हा गठा वोस्त

रकते के लिए जालायित होता है॰ दुकते के लिए तरसना

इकड़े दुकड़े होना

अध्य होना, बहत-नवन होना । बारेन-एक्ट दृष्णं

राध्यः तर प्रणेष्यः यात्र र देशः जनकरणस् हो गयः। विलयम्बद्धाःचीतः, इसकः,

र्वहाँ का करा

विजी पर कालिक होगर पान हुआ । १ हमीन-जह भी १९ महत्र है कि यह दबर से पत्र प्रश्न प्रश्न छात्र स्थाप्तर । जास्त्र है दन गढ़ा निन्नो प्रशाद १७२।

ट्यारी पर पूर्वा होता, व्यवस

इया के वर्षाय होना इसरे की गंदी पर पत्नी काया। स्थान-जोग वर्ष क्य नवी हुम्हारी हम तो तो है पवाई । पदी दुवर्ष पर आई (माठ प्रकाठ-मायतिष्यू, अस्प) , तो इस पर वे में नुप्तारे दुवरी पर पत्नी हुई है है (मानठ ए --वेमसन्द कर , सारक दुवरी पर पत्नी वास आपने मृद्र पर लाग्या करवान कर गई है, और आप हैंप रहे हैं मूलेठ-जग्य क्यों 36)

(क्या वर्श - स्कूति कर जीता)

ट्याडी पर करता १० ट्याडी पर पर्शा शीना

रकृत रुकुर सामजा

निरीह-का मृद्द तावमा । प्रधाय- यो धन दीनत हमने तथ-एव पंचा करने अ अ १पट्टी पी है ८ अपनी तुम्हारे पीछे बरात की कुमशारी के नवाब सूट वास बीर में बैठी टक्ट ट्यूट डेक्ट कक, यह अब क्या मुख्य में केंग्रे देना भावता रे (मा---कोरिया, १९)

ट्ट-पूर्जिया श्रीना

- (१) बाल्मी कांचक नियमिकामा होता । वर्षाय— बाहक अ अ वह नहीं काहता कि बा दुटपूर्विको समाध्य आब मिरेट- कुरुबंट पृश्वः
- (२) मामान बाह्यो । प्रयोग-न्ये पृथ्वी है, भारित बार रहत् जिले वी दृष्टम पर भारे दी न्यो है हैं (मान्त १)--प्रेमकन्द्र इत्ता विभी दृष्ट्रांचर वीतकार के दश-दश, बील-प्रिक के निकासकर करन साम के भार दिने होंग देनों -प्रशंक दें।

रूक ठूक करना

नगर कर देवा, तरें वाजना । प्रयोग-तुम्हे देव भूवक के सपने १६-द्श करने से वाजना विसा मोर०-जनाव्याद्धा. २४

ट्रका

भागत का त्रेस से । जबोच-विश्वित करेवा बाव जन साह परह किया की अद्युक्त अपको ३००३ कर विश्वत भी स पूजारने कावा भड़ कि वार्ताओं एक बाल कोई हुए हार कर बा कर्ष और जातन हुएकर बसे कियो (गठ (२)— केमबंद, १५७): भोगा जनकर कावन में बा नई की करे कियो से कुटकर को नहीं किसी वोदान—संस्थाद, ३०४

(२) बरवनिक परिचाल दें ।

त्र जानः

- (र) विष्णंद हो भागा । प्रभाव---वर्गार हरि वर्गना कादा साथा मोद वे दृदि ,कदीर प्रधा० --वर्गर, छ। (... हुदे गुजन ननावर् औं दृष्टे वी बाद (रहोम कदिश--वहीन: ११): दूर में जाय वह नहीं कोई दुरूबर भी कमर व दृद सके (बुभते०--हरिग्नोंस, १०) (--१)
- (२) महारण ही मध्या, अब्द हो मध्या । प्रदीय जान होद पाने मी जिसकि लोहि काची जाहि ती पेरि मान होद पाने (१६६०—सम्पन्धी, १८७६): जायन की पृष्ट हो से बारे जिद्र-मान हुई दूर्यों कुल रायन धानेशित धान करने (मुक्त प्रसाठ—मुक्ता, १२२): विद्यानी कृष्ट एक घटनाको से मोधन का पान विन्यान कर दिया पर पान । यार १ मार १। मार विद्यास में, इसकी मो निक्ताई की ने दूर की मुई की सेमार (१)—संस्था से, ६०): नेनिया बकांच (१) में (4-१) मी
- (१)किसी नराह्या करावे न वाकी यहता। जवात—वर दुवरे सक्ते के ≈ ≈ कार वह जितन्ती के दूर वजा का (नदी०—प्राप्त के अक्ताक): वेषिक व्यवेग (१) में (→)
- (त) क् निक्षण हारिति हुईकेना उसे प्रतिक क्षत्रात करत ज्यादे से द्वारत हारह र तक द विक्रा कार रेक्स हमदे अत्य के साथ देवस राज्य द्वारा द्वारत हमन्द्र इ.स. व.स. १ स.स. ११ स.स. ११ क्षत्र के स.स. १८ स.स. १९ स.स.

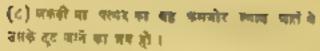
अस्तित उसे प्रमुचन हो रहा का कि कही से नह रूट गया है मृतिक—संगठ दली, ध्रयद

- (५) वर्षे होता ।
- (६) मृनाहा वासः।

ट्ट पहना

- (१) अस्ती असी या जाना । ध्योत---नतं नरं नाम पर वैद्यों तो पर्शास्त्री देवते ही दूर न वहीं तो सहतर कमरू---वनवंद १४०
- (२) वृत्ते तथ्य वाग्या वा विगयना । प्रयोग-न्था नुभने यह सम्प्रत वर में दक्षण्य व जीटकर बाक्षणा ही वर्श म का नक्षे वर्ष्ट्र वृत्ति मान्छ १/--वैमवेद,२१३
- (३) म्यानक विभी पर हमना दर देना । वर्षाय-- मो वन्दरण उनके निकट गया नो दोनो और समयाद के एमे दूर कि पैसे लावियों के पून पर निम्न दूरे (प्रेम साठ--स्रव तक बन्त लगी ५ × ४ इन पर दूरा (दोधाव प्रवात--दाखाव दान १ वर्ष १, तो निष्याम है तो एक ही संगान न जाने कम दिवस में, विजये भारतियों के साथ शूर पहे नगव २ - संग्यंद, ६८ ६ हुनी वर्णश्यों पर दूर वह (म्लोठ--मांव क्सी, ३८४
- (c) गृम्या होता । प्रयोग—माता कभी सूध, कुछ गाती वो दिताओं उन यह दूह पहले (मानक (ह)—प्रेमबंद, १६); ये मध्यते हुद्धा, गृज यह रूट यहनी है ज्यापक—क्रेनेन्द्र, १६, (५) एक दन समुख्यत हो काना । प्रयोग—ऐसे टुटि परी का क्यार सुमारी कीसी वीरी (सुरु सार—सुर, नक्स्प्र)
- (६) दकी होती । अमस्य-मानी की दूर पनी 1 के अं परे कोची जो स्थाना शाका पना हमसीय-वृ ० वर्गा, ३०६) (३) बहुब चीद होती । प्रयोग-वर मेलो में हमारों कोम के बादबी दूर पहले हैं (सह निक-बाठ संदूर, १२४); सभी पर पाय करून पर बाहक दूरते में (बृद्दठ-संठ मीठ, - वर्ग का परिया में पत्नी और हमारे पर उस्ता का प्रयास का पत्नी भी पहले परिवाद प्रथम पा प्रयोग प्रयास का कि स्था के साथ देश हमारे पर

र पर परत कुमाव निरास पर



दूट में पहला

माने वर नुक्ताल में पहला । जयोग-स्टे बीमांत दोशा जो माल फिर्ट विज के मयपान में दृष्ट हुई इंडक्ट बीधा प्रोत दृष्ट में जाय पढ़ नहीं कोई दृष्ट कर जो सजद न दृष्ट एके (पुमतीय-स्टिकोध, इंट)

जूट होना

भंगका होत्या र प्रधोग---शकर सट्ट बस होता हुट होती नहीं पढ़-रह पट्ट में मा नाम यस बूटगा (वर्ष०---श्रीकोस, १४८)

ट्रदना

एक देख से हटकर दूसरे दक्ष में विक आका । विदेश— सभा मामनी सुद कर रखी है कि आई शुरूत हो नहीं सभा — प्रेमसद, २१४)

द्दा दिल

- (१) परस्पर प्रमानकस्था का नग्दार आराज करिया हुइया प्रयोग—पद गर्द गाठ सब जूना तब एका हुइ चारके जूना म पिल हुटर (चोले०—हरिप्रीध, १२०)
- (२) विराम या दुनी हुदन ।

र्टी फूटी

ट्टी दशा,--फ्टी झा

- (१) विकास हालते । अयोग---द्वर्षे अति जनित है कि इसी परिकास धवनी रूपे कूड़ी इक्त सुपारने व कृत कार (पठ पीठ---पठ नाठ मिठ, पद
- (२) वरीबी । प्रयोग—दम हुटी दशा में भी इमकायों का जिनना वर्ष पर्ण जानाची कामों में होना है जनना भीष-और शांतों से नहीं (सह निठ—बाठ सह, १२१)

हुटी फूडी दशा रे॰ हुटी पुसा

74

Q. P - 188

देहे हुँहे, हुई फुड़े राष्ट्रों में, हुई-हुई स्वर में

निरुप्त का निरुद्ध स्वर्ध, करकते हुए स्वर में । ज्ञानेनान में स्वा का रामका के प्रकृत हुए । अंग्रिते की बच्छा की । टूटें हुटें बोले (कामी0—वृंध क्यों, १३२); जमका स्वर वहन बीमा और दुवंध वां, वर टूटा नहीं, स्वय्द्ध (मदी0—वृंध का का का का निरुद्ध मां। स्वर्ध मां। से प्रकृत मां। संवर्ध मां। से प्रकृत मां। से प्रक

टरं कुटं शब्दी हैं।

रे॰ इटेन्ट्रं

हुदे स्वर है

के हर हरे

रें हें काना

दक्षांच करना, हुन्यत करना । प्रयोध---देसमे आत्या राम उनेका कर्यकार करके साथ की टें-टे तथाध्य करना है (गुरु निर⊶वार मुरु गुरु, प्रयद

टेट में होता

पान सं त्राना । प्रतान चटक साद हर्राह् वन की सान क्य है कंट (पद्र-कार्यसी, श्राप्त) , कीर्टियो केंस्स हमाये क्या कर करत कर्ताकर को तर सं सुमनीय हार्रियोध क्य

. टेड मे

पान ने । अयोष--ई दणकी गीहियों की दात के हैंट से पैस क्यी बढ़ते नहीं (बीलव--हार्दियींग्र) १६७)

टक गहना,-चनाना,-क्रहना



रंक बलाना के रेक गहना

टेक छोड़ना

पण होत्य देश: जिल्लाहरूका । प्रयास-स्टार मानि केर काची तील हाँ साहित अपनी तक स्टूट वांच-स्ट्री, श्रेकता

टेक टेकना

प्रतिकार करती ॥ अयोग—सकद की टर्गर टेक को टेकी (सक्त (अ:--शुभारी, ६१५

टक पकड़तर के देक गहरा

देखा कम्बर

बुरर बनाता १ प्रयोग---भी घड बन म बीव्ह केंद्रि बचना बांबर म करोत (रामध १६१-- सुक्तरी, १०५६

देश पहला वा होता

- (१) एका वर पर्मा । प्रयोग—प्रमिक्ति हेवी पान होत वी तनिक नवाही (राजक्ययाय—गच्यक दाम, ११,
- (२) अर क्य बावना गरना, मध्यना ।

हेका मरमस्त

कितालक में पेनीया भाग । प्रयोग---इनका अन्तर यह है कि प्राथमा बहुत हैंबा है क्यित -प्रयोग प्र-1, प्रयव राजी भी के भाग गाँग, यह द्या है, बीटोन- नियाना, हनस

र्देश होशा

(१) पृथ्य एक विकास होता । प्रथम—गहण देव समुहरा म नोही(रासक, माल)—मुस्तानी, स्पन्न, हो न देवें के लिए नेंं पर्ने बान करनी हो सगर करने का बीसक—एरियोड, ६०० मू भी बीन-स्थाप दस आवित्यों में के के, को बीकों के माम सीचे होते हैं पर देवों के नाम देवें ही नहीं, प्रीनहर हो प्राप्त ने स्थाप का किल्हिस्टन नहामका कर के करनाथ और तम स्थाप का किल्हिस्टन नहामका परने हो। दस सन रायत के दियांक नेम अल्ब

(वे करह हम्ला) अवस्था होता रह अको च हम्भ आ उन्हें देखने हैं जोग रही छोटा व "मूनलेक हमिय्रीक १७५

देश श्रीकों से देखना,-जबर से देखना

कीर से देवनर, बच्ची मरमनर व रोनी अनुकार ने होना ।
प्रशंस—श्रम दृष्टी की यह विदेश करा दिया कि राजपूर्ती की कोर रही मुक्ति के देवनर केंग्रर होता है (स्थाठ
प्रशंक—संधाठ दास १८८२), जुई के ठरफदार हिन्दी शाली की घोर हिन्दी के प्रस्ताने अहं वाली को कुछ-दुर्भ देवी दृष्ट से देवते हैं, यर बालाव के अनु-हिन्दी का बहार वल है पुठ निठ—माठ मूठ गुठ, २४४) एक ठरफ साजपूर्व के सम्बद्ध विकास की विवास मंग्रम से देवते हैं रोजातीठ (१)—महाद्ध, २४-२६, मेर जीत जी मुख्य कोई रही आप से दक्ष भी न प्रशास (मानठ (१)—प्रेमनद, १९३), देव देव क्यों के होने मी उन्ह देवते हैं लोग हती जीत है

यमा मार्ग हुद्धा श्रीक करना ।

टढ़ी बीर होता

कड़िन काम होता । अथान—अ अ और मान पहा कि विमान केना वेची हेंद्री मीच है (गामा प्रमां —गामा हाल, ६००., वक्ट उस अवार्त के हुनतों की मकत बादने में हुनतों की मकत बादने में कुनतों की मकत बादने में कुनतों की मकत बादने में कुनते की किए है कि विमान के कि मान है जान की किए पाइन के बहुत है। बाद की किए मान के कहा है। बाद भी किए मान कि वार्त के कि बाद की किए मान कि वार्त के कि बाद की किए मान कि वार्त की किए मान कि वार्त की की कि वार्त की की कि वार्त की की कि वार्त की की कि वार्त की कि वार्त की कि वार्त की कि वार्त की की कि वार्त की

टेडर बाल करना

नक्त काम करना, ब्याई करना । अयोग—किम्पिए के कर्त न रही पान क्यों न ब्युपकार क्रेडे दिन क्षांच (मर्सठ— सीक्रोध, क्य.)

रंडी नजर से दुसता '- रंडी ऑफ से देखना

र्देकी निगार

राया में द्विष्ट्र । प्रकार — इसे किसी के उन्हीं विश्व र भी सहस्र नहीं है मैद्रांश - प्रेसक्ट्र अपन

रेडी पात

भीवन, कट् बान । प्रयोग—कात बीखी किन सरह में देश कहें । बांट में जब बात देही ही बड़ी 'क्सरेंक— हरिओंच, प्रदर्भ

टेढ़ी भृकृति करना

बनमा होता, नामान होता । प्रयोग—धम्म नपय जन्दी पुरित्न भित्रवत न्यन्त् सकोध (सम्छ (बन्स)—पुलसी, १८६८) जिल्ली देवी भृष्टी कवि भागत अवके यस (र. ६१० संसाठ—सामाठ दास, ६७६,

टेंबा समस्या

तिही समान्धा जिलका अभाषाम करण नश्च नही। ध्रमण — याण भी अपनी अहरत म नाजार है गया ने सक गित हो जान है कर राजस्य। देशी है पद्य के पत्र पद्धर सारी, इन्हें

देशी सीधी सुवाता

भाषा कर करना । प्रधान हमारा पहांगी को दिना न वि व अस्का हम हो तो रहे होता मुना जान है जिलाक (१)— गुवका, १३वे.

रेहें-रेहे कलता,-जाना,-फिरना

गर्वे करता इत्याना । प्रयोग-न्यस्य क्ल टेडो-टेडो रे क्लरीर प्रयोग-कवीर १९३० क्यहाँ क्रमना वरण पाइ है, रव-रहे जात स्० सा०—सुर. ३६६), विधी मृ, शिवुक इडाई थे, वॉच्ड कर करवार । देवीये देवी किरति देवी विकास सिकार /विहासे संस्थाऽ—विहासे ५१८)

रेडे-टेड्रे ज्ञाना

रे- टेरे-टेरे करना

टेंबे-टेंड फिरमा

•• रेदे रेदं बनमा

देवी सारका

यती नारना नील में शालानी है कम शीयना (प्रयोग---में हो जीन (इन प्रश्न कर किया करना हूं --- देण रोज्यदाय करिंग्यों के निष् देनी भारता हूँ (रंग० (१)---प्रेमक्ट, १९९)

देश करता या होता

नाक मृत्यार करना । समोध---वि हुन अभीर है ती यह , । प्रधा करन सपना दिशाय समान व स्था हमें स्था रूप कर रहत हमसे ना यह दगया निम्सा देश हिंग्सारी करम में समाने ती सम्बद्धा वा (प्रणाधीठ----प्रणाधीठ) स्था

दोता करना या लगभर

- (१) वय के प्रधाय के क्या के कर केना का होता है प्रधान अध्यक्त कर रंगत गाँउ नाजा कर अधीर मुझे गाँउ हाना (पटेक-जायकों, अध्यक्त)
- (} नाव-साथ में दिनी व धर का प्राप्त काना या होना ।



मुच्या समझना । प्रयोज---जान पढ़े, सहस्यक्ति की करते, ही इंट नियोगी न नंद क्या को (क्यूट०---देव, ६०)

हं हक

सानि । अयोग--- मो कि जी की शान से अलगा रहा मिल सभी है कर जो ठडक कही । बीलंश--(व्याध, ३९)

श्रंदा-दंदा

हु हा करना

- () प्रतिक्षण्या प्रयोग कृष्टि स्वभावत छुद्र करण कृष्टिक बहुत स द्वारण प्रथमा । र किस्स समय पर पास्तु को नामी को क्या रोग सक्षण है लेखा यह का साक्षण दुनुष्ट.

परवरी जनसम्बद्धी और सरायत में पेरा मुख्या संबद्ध अर दिया (१ंग० (१)—पेशबंद, २६६)

- (३) मार शायना । अयोग—दोन्यार कारमियों की हो। में सरव ही उपल का चरना हूं बह्यo—देठ सठ, २६४
- (४) मोटर इत्यादि को जाय में जलाकर भागी निकास नेवा ।

ठंडा पडना

- (१) क्ष्मणना साल होती, आवेग कम हो जाना । क्षोक— भगों वी का वादा उत्साह, बहरर बनुशान इसा पढ़ गमा (मानक ,१)—प्रमध्द, क्ष्मक); वभ के साथ नेच सी इनना इंदर कर गमा वा (क्षोकोक—पुरु वामाँ, १९९); वृद्धि गम यह होना है कि दिखाद सीन के पूछ वाभात् प्रम कारों के हृदयों की प्रस्थात इसी वह गानी है, भी प्रस्थर नदार क्षम होन प्रमु द प्रोग अभाव तक जीवन पहुँच वाही है (मिसाक—कीदाक, क्ष्म)
- (२) क्षेत्र कन होना । जयोग-साहत कुछ ईंद्र पहें। (इ.स.० प्रस्केट ६७) वे तान गरी पर रण संस्कालको स्कृत्य द्वार क्षेत्र

र दा रसमा

काराय केनामा कामः दशकार रोगा रहता ३ वराय पश्चिम का शहर रका और निभव अल्लावना केशालक १ किनुस्कर्



टेष्टा स्वभाष

महत्र ही उलंदित क होन बागा स्थमान) अगोब---चन्देरी का स्वेदार ठव्डी प्रकृति का बादमी का (मृ००---पु o दर्भ, २६३)

टेंडा स्वर

उत्तर्भना रहित स्थर । प्रमोग---रेका ने भीव, विन्तृ साफ और ठंवे स्थर में पृश्चा---यह नव काप मुक्ते तथो बत-भाते हैं हैं (मदोध---चक्त स. 80.

टक्स होगा

- (१) मर जाना > वयाव—तनर अजी, नही नो एक। यन्त्र कीच कर शास ना कि बही ठचे हो। जाकाने (मिन्स्ट (१)—प्रेमचद, १४३
- (२) उसे अना रहित होता, भार दोना। प्रयोग—समा विस्त म होई अस राता। सुनि होई मृद न वरि कटू बरता पद्द०--द्वायसी हुआरा, भनी भारत परिचान-माने साहित वहा जी सम, सुप्त मुदेर और, योरे ही चरम विनय०— सुमसी, २४९०, मों तुन बनार का निरम्ब बनाय मी मुख ठहा ही बोला —हमारा बन हो तुम बन नवनी हो परि माही त्नुर०--शास, इशा, कहत्य बहु हती, चिन बानी— नह देते हैं और मृद् (प्रयात - प्रोनेन्स, १५६); योही बेर के राज कर पंजीय परिचा जा राज राज का सम्बद्ध द्वार के

(३) मपुमक होना ।

र्रही आग में जलगः

विरत्नाणिय से व्यक्तिस होता । प्रयोग-—विवस उन्ती सी कार्य दिवस प्रत्योग कर्न विवस्त दिवस दिवस दिवस के दही (धनार कवित-प्रनाद दुधर कर

र्देश भाष्ट कड़ना,--आहे अरना

कुन करता । प्रयोग--ही बने हम नेवरह स्ते मधर पता डंडी तो नहीं पता भी कनी (सुभतेण-- हिन्द्रोध. १३); विश्वात जह भी तो जनगढ बनिन भी मस्त्री हम्मे भार (प्रथान-पंत. १९.

(वमा: पहा: --वंदी सांस केना)

र्श्वतं आहे अरना दे॰ ठेडी भार कदना

75

O. P - 185

उंटी मास वर्षकता,--अस्ता,--छेना

टंबी साम भरता

रे॰ टेर्टा सांस बोक्ता

डर्ण्डी स्टांस लेता

🛂 डेटा सांस्य बांभता

दंद संदे

- (१) मुंबह-मुंबह—सूर्व की धर्मी बहने के पहले । प्रमोत— कार्य मर्ग पुत्र वैचारी इन्हें इने बनने की मुख्य-म्या, १२ टाकुर, क्रम नवारी विकासी का इंत्यास क्ष्मी, जिसके हुम नोग क्रम सुनने इन्हें-इन्हें निवास नाथ उपर (३)—प्रेमकंट. ९५)

उंदे दिमाग भे,--दिल से



करने कर आत हो गई। है कि हमें प्रानी निशंपता थे। रमन न करना चाहिए था (रॅम० (२)—क्रेमकन्द, र९५

र्देश दिल से रे॰ इंदे विमाग से

रक रहता या होता

ज्ञादनकं व्यक्ति रह जाना । प्रयोग- हो नमुनी ने जंभी मृद्ध के कहा । में तो धुनते ही ठक यह नदा (१४० १) ---प्रेमचंद, २१८

हकुर-सोद्दानी बदना

धानमूनी करनी | प्रयोग-व्यास्तु कर्मात जब उतुर नीतृती (प्रमण (ठा)- सुलगी, ३८६ वर्षांक इस कर शाहारा नहीं है कि देवन दरिशाम के भिन्ने ही दुवर मुक्षाची सामें क्षेत्र (प्रभ प्रीक्त प्रभ नाम मिन्न के भी मिना है कि क्षात नहीं प्रभा जो नाम सुदना न बाह्य में, पर ऐस मौतों के भी भी दुवर मुद्रामी मुनाने पर भी देते के नाम सुवनी समोतर में पुरारी प्रधा १९०-व्युक्ती, २०६.

क्षत का बॉरा देगा

मही कार्नो द्वारा कारका केनर । वयोव--- यस भूतिकृ कय के बोरानो वामक (मान)-- नुकासी, क्यो

ह्या के लड्ड् बाता

प्रतान होता भागमधी अण्या होता हचात में य ग्रह्मा । प्रतान-स्वष्ट शहर का मानू मह मन पनि भोड़ । या पोशहर बनवण्ड मा होता साथ मा रोड़ (म्द०— सायसी, २७२), धूल के निवान पाये हिय के पियान नाथे साम की साथू आये, प्रेयमण् साथे हैं , गिलाठ (वाल)— सुलसी, ६४)

रुग दुरी आहा

मनवादा होता। प्रशेष न सूर कहूँ उस पूरी पाई. प्रहम प्रश्न सुप्रकार सुद्धान रहा उद प्रवर्णको स्थापन प्रशास द्वार हा रहा

का-विदा

चन । र ामग नालारशास्त्र रह छूर सन्दर्भ शक्षाः द्वार दर्भ

दगर सर

भारतार्थ में क्यांस्य, भोषतका । घरोस—यह सम् सोति वर्ष कडका व्यूं, गारी रुगों को वैस 'कवीर प्रसाध-क्योर, १३१ : बागी रहाँ दुगों की ठाशो, कहा उम्मोनों काए (सू० सा०—सुर, १४९०): विकित सम्याभ नवासू अनित विचारित बुर कर भूति ठवे (रामण क्यांस) सुरुशी, ३१६); कह ''यान-भन्य' कृतार कर सम रह सम गुरु पर ठते (भायव--गुरु, ००

उत्तरित चालना,-- व्यवस

बादू करना । प्रयोग-हिर स्व वय को उन्होरी सार्थ क्योर द्वारा-क्योर, रक्ष , तहज गुआई उन्होरी हारो सोत, क्यान प्रशास उन्होरी हारो सोत, क्यान प्रशास उन्होरी हारो हारो साई पुर साठ- हा, रक्षण, गोपी यही हार्थ से क्यान क्यान क्योरी सी बारो (फिलाठ क्यो- द्वासी १००), वृधि वृधि यह सूरणो हारो बेय-उन्होरी काई (व्यव- क्यान क्यान

उगारा पहना,—समना

नार् हो जाना । प्रयोग—हिर हम जग की हनोरी कार करार प्रकार- करीर, १९६), जानहुँ आई शाह हमोरी विन पुनार दिन नाम नोगो(१९६०-साधारी, इसाम्ह, इसन मनक नगरीन प्रकार, देनत वरी हमारि (सुर्व साव- सुर, १३६६), नव न क्य हमोरी वानी, जुद समान दल विन्नुन सुरु साव- सुर १३४६

डगीरा खनश रेश्डगीरी प्रश्ता

टर्नाची द्वाता वैश्व दर्मची द्वाटना

वह तमना

वका होना । क्यांग—पनपटी पर पनहारियों के उड़ू के उड़ू को हुए हैं प्रेम साठ—करु साठ, ३६३) (गमान वर्ष उट स्ट्रगना)

रहा ह्याता

मार्ग रहाको । ए भा अनुबंद कर हा भूत हुन

बहाते हैं तो मेरे निया कहाँ पहें हैं (परीका0—क्री0 दास. ११४), पराये की विपत्ति पर ठट्ठा बहाता बढ़े आगो का काम नहीं है (सी0- द0 ६०,१३) (समाव प्राय—उद्यो सामना)

ठहुर फरना

मजाक वहाता । प्रयोग—तब करेंगे क्यो न उट्टा जॉक उब जाम गट्टे के जिये गड़ा एकड़ (चोलें)—हरिजीय, 174)

देड्डी मारना, उठाकर ईसना, दहाका मारका इंसना

ण्य जोग से संगता । अयोध—दृष्ट कि होड एक छमक भूजाना । मूनव टठाइ फुना त्य गाना (गमें) (च स्थान), ४०६); यनहर उने देवते ही और से ठट्टा शार कर हमा (मान०(६ —प्रेमचंद्र, १२६); देवोडीन से ठट्टा मारकर करा—भेषा, इस्ता महाम होर कार्य काम नहीं पेकन— प्रमुख्य, १६६६ , हमा दहाका बाद बनांतर, 'युव भी' कहुर एकी ? मानल, (स्वर्षकृष्टि- चंद्र, ६)

(नमार दृशः---रहा स्वयानाः)

दहुँ में बदा देना

भारी पहल्य न देना १ - प्रयोग---पुन्तरेय ने देशे - धाना का स्टुट में उटा विकासिक--विकास-१९१)

रुठाकर हंसना

दः हड्डा मार कर हेमना

इहाका सार कर हंगता

र० उद्गर आर कर हंमना

इन जम्मा

सहाई पुरु हो बानी । अयोग—ठोरू हो नकेंगे सह केंग वदि कम जो अनंग न हमेगी। मध्य—हरिप्रोध, धा, हो फिर परवामी से इन गई होशी गयन—पेमबंद, १६३/

३मका कर्य

न बहुत मध्दी व बाटी (यों नाटी की और ही यांकर)। प्रयोग—साम् जीन-इंक्सीमा। इंग पट्टांका। कर ठमका (के कोलेय--कार्य नाट, १३३)

दहगदा

- (२) दिश्यमा ।
- (३) करण मानना (

टमका होक

भयद क्षेत्रा । प्रयोग---बरलती की क्ष्म बहुआ देवन धर्म बद को मुमार लेता है । पूर करवा ठसक ठसक की है एंड का काम एंड देता है जुमति---क्षिडीध, १७६,

उत्तरी दुई

नात-स्थित स्थापन को । प्रयोग-वीत-वादस की सहकी मी भवती है पर फिननी कही बंदाबर है, कैसी राष्ट्रीर, इंदरी हुई है, इस केंद्र दाना कोबी बंदे, बड़ी, कृदियों जैसे हैं (19510 व)--कार्यक क्षत्र,

टार दारमा

तैयारी करती। प्रयोग—होडु सओडल रोबहु पाटा करहु सबच भर्र के हाटा (राम० (अ)—शृक्तको, प्रथ्न), विका प्रकारन क्रांकर क्रांकर क्रांट क्रांट विकासके आ गाव को ताकी प्रश्न स बाट (गुण सक—बुद, एड).

डिकाने सरामा

- (१) बार बानना, नष्ट करना । अयोग--नुष्हारा भागना है बरना उप हराजवारी वो भैने कर का ठिकाने अगा दिया होतर ,मुळे०--आ० वर्गा, ३४९-
- (२) ठीक जगह पर पहुंचाना ।
- (३) श्रांत्रिय सम्कार ठीक-ठीक करना ।
- (y) इस्त्र सरवा (

(समा० वृहा०---डिकाने पर्वचाना)

र्डाक उतरना

क्सी काम का डीक-डीक प्रा ही जाना । प्रयोग— हवारे प्रशेव पृत्रवाचे क्य तरह डीक को उत्तरते पे (क्सते0—हरिक्रोध, १६

डाका लेगा

(१) डाविन्य नेना । प्रयोग-मी तुम्हारी जिल्लामी भर का डीका किए चेडी हूँ क्या है (मान० (१)-प्रेमचंद, १३४). भीषप्रभ संगापन निर्मापन का है जिन्हाने कि में निया ठीका (जुमसे०--हरिज़ोर्च, (६४)

(२) फिली काम को क्लूए नेकर करने का जिल्ला नेता।

डॉक्ट्राय होना

उत्तरकारी होता किमायती होता । प्रयोग—सपमृत जिस भाषा के ठेकेतार बाद जैने वर वसकी हो उस समाधी का विमास ही होता है (सुत नि0—8)0 मुच पुंत, क्षेत्र); बेद विभिन्न कह करने न होनो बनो के टीकेटारो मिधुक—बच्चन, यह, श्रुपे; नुमसीस को समास के ठेकेटार हो । अ ऐसी मुद्री ह अ बानत्यां का मान केनाय के हो हो जहस्वीय— इ0 जीकी, क्ष्र

श्रीया दिकाने लगाना

हीता व्यवस्था नाम्मी । प्रयोग---श्राप कथी यहा हव वामान) की जीवा-दिशाने नगरसम् भागी---श्रमुख्य, ३१३

हुँद्र शासकोः

(सथा) । मृश्य- ईंड होना)

दुक्त जाना

(ए) मुकसाम उद्यामा, वर्ष ही माना । प्रयोज—६० व्याप प्रमानी क्षम बार्व क्याची माहे कही एक भी जुड़ा को क्षम हजार की मुकी (साधीक प्रशाक—संधीक दाया, उन्हें (१) पिट माना ।

कुकरा देवा

(क्ष्मार प्रति । क्ष्मार प्रस्ति व ता क्ष्मार व क्ष्मार व क्षमार व क्षमार व क्षमार व क्षमार व क्षमार व क्षमार विकास विकास व विकास व क्षमार विकास व क्षमार व क्षम

। अधिकार करन

हेगा दिखाना

रहे) हेन्छ समझना क्षेत्र जन'ना प्राप्त ह तर भगवी भागता प्रोधार कि हेन्सर स्वा तर पर सप्त किंग के सिं है। सम्बद्ध

(*) 49 T TF ()

दे वर स्थित पर लेवा

दशकर कुछ करता। प्रयोग — जब विश्वयो में कौन सा शब है कि विशो को देशा शिर पर ग्रु ग्रेमश्— ग्रेनचंद १९३

हैं में के बीचे हाना

का के रहना । क्यान-का दिश रियानत की जनता सामन्त्रों के देश के तीन पहुंची (कार/0---चंद्र), पह

हेरी पर गांचना, - आरहा

- (१) पूछान सम्बन्धाः इसाय च्यतिको सना दसे गर समान्ते है पुदेश अञ्चल, ४३६० (००), ४म तो सना सन्ते समन्ते देते वर सारके रहे सा—कोशिक, ३९४०
- (२) धनमरको करवस्या । प्रयोग-विक्यु प्रयोध (१) वे (२)

्य है है पर लोकर

त्र से पर मारजा

रेशे पर बनाजा

शहर त्याचा

इन होना ना भाषात पहुँचना । प्रशीत—सन्द्य अध पनुष्प क्याक वाषया, अम जिन वृत-तृत के स्वित सन्धारी को नहीं देन प्रवर्ग, भवनक प्रतिभिन्ना होती स्वशोकत— १० पर दिए, ३०

रोंक ठठा कर -- योद कर

- (१) किनी तरह राजो काते, वदारान्ती । ध्योश— पृथ्य कोई हो, केंग्री हो, बक्छे केंग्य यह था कि यह एगे हो कि पहने में दिव न हो, बन को ठोक धीड कर पढ़ी जा पढ़े तैयर (१)—जहाँ के १५६३, जार नीड कर मांगों ने कुछ नेम्बय-मात्र क्या ही दिवा विदेश—मुखांबठ,
- (२) बच्ची तरह बायकर । प्रयोग---प्रिया का यह प्रयं है महाराज ! जये प्रकार कामधी का मोजकर ठोक उद्यक्त यस बंधनी बेटी का यह जुनै (पंगार---स्त्रा, श्रुड)

राक पार कर

राज उटा का

डोंक पीटकर वैच बनाता

किमी नरम् धपरत करके किसी नाधक बनामा । प्रयोग— पार ओग ठोक पीटकर बैच बना रहे हैं (पट्टमत के दल पद्मत सामे, २३

(तमाः म्हाः—शोंक पीटकर हकाम बनाना)

टांक बजाकर

प्रश्ती तरह संभवतः । प्रवेश-हरेर विन भवता को नहीं देश होकि बनाइ (कडीर प्रशात-कबीर, ६१% होकि भगाई क्षण गनगान कहा सी कड़ी केहि को रहाँ कार्ड भारत के हित, नामु जनामु के रामु वहाय छही दिन कल (कबिठ-सुकसी, १६५): डोकि बजाइ नगानी है के ही विग भगाई और डीक बनाकर अ अ कार्य करना माहना है (प्रांथ-कीर्य क्ष): डोक बनाकर अपनी कार्यों के स्थान

उंकिना

- (१) सारका । प्रमीय-मारे पाषा ! उने नो पंते ही ठांक दिवा (तिसकी-पासद, २०३); पामाराम ने प्रस्कर प्रमा--उठ, नहीं तो ठोकता हुं अभी (पोटोच--नियास, १४
- (२) कामा बनामा । प्रयोग—भेषा, सब बान-बच्चों को सन्दर्भ कर कर अस्म ठाउन उत्तर गोदान प्रेमवन्द २०६ , कभी क्षिमन मृद्यु धानी स्था कर्ना प्रकेट अस्म स्थाने में (मृकुलo—निरामा, २५)

ष्ट्रीकता बजाना

ज्ञांचना प्रस्ताः । वयोष-कोई काह् को नहीं सब देखी तीस बनाइ (सजीर प्रत्याण-कवीर, २६०)ः नव्य वज्ञा की दे तीक बनाइ (सुरु साठ-सुर, ३०%६

क्षेकर काकर जानना

तुरविकास भोग देश पर समक्ष प्र ि । प्रयोग -- पर राज्य क्षेत्रे वरसी डोकर्डे बाने के बाद बाना है (वेटरे---पाइक ८०)

(गमाः प्राः हाकर स्थाकर स्थिता, सम्हलता)

76

or Property

डोफर बाहे फिल्हा

- (1) पार-कारे किरवा । प्रधोप---नुमने इनके सिर हाथ न स्था होना तो 🗴 🗴 व जाने कियके द्वार पर ठीकरे बाने होन बान्ठ (१)---हेमसन्द, ११
- (२) कल करने पर भी काम का कीई बीक म बेठना । ठोष्टर स्थानर
- (१) विकी भूनक कारण दुस सहसा। प्रयोग—ऐसी सिद्धि संग्रेड कर कुरक काई केकर साता (माठ प्रत्याठ (१)— भारतेन्द्र, स्वयाह, प्रयोग—हमो सरझ किसी की बीमानी में पहरुष कुं व कानत्वालों को बही केवर भानी प्रश्ती हैं पूर्वि—बाल्मुल्गुल,१४००(क);स्वयं नुस प्रियो की पुकार पूर्वि को साराम के दुवसों बीच बीजो के स्वरों पर मोजिन होने को बुदी तरझ कोवर साथोगे (भोरत— स्वयं संप्रदे को बुदी तरझ कोवर साथोगे (भोरत— स्वयं संप्रदे को बुदी तरझ कोवर साथोगे (भोरत—
- (२)कार सहना, परेकान होना । प्रयोग—होप में देख मानि को आप श्रीकार आस पर समय क्या ने (चूनलैठ—हिन्मीध, १८३): हो में हो, पर इसके चान्य में डोकार काना जिला का (मानठ (१)—प्रमचन्द, ६६), पृथ्ध में मेने इस सदय हानरे खाई को कि में पहा के आगा (पद्मप्रशास—महामठ शर्मा १८०४), जो मैन बनायन में निरामार होकरे माने में बेहनर क्यमें पर की जानों को समक्षा (भ्रम्मी स्वरं— उस, दन
- (1) प्री व (१४) । प्रयोग—मार्गो के लामन-गलन पर करको अरक्श्यकलाएँ हो कर बालो शहतरे थी (१४० (१)— धन्नद १२०
- (४) चोले में नानाः।
- (५) ताल काता । प्रधान—देशिए प्रधीय (१) में ()

ठोकर सारता

धनकानित करके निकास देना, अपमान करना । प्रशेम— हात बाजार में था सहक पर ओमी को ठीसर मार्गत नाममण बरोमा की नॉनक मी धकोच मही होता (ब्रह्मा) दे० संघ, रहेश

(नुवार वृहार---डोकर बार कर विकास देना)



ठीर, ठीर-ठांच, टीर-ठिकाना

बावय, स्वान । प्रमोध—एनेच दुन में पुन्ति वर्ग, नहीं पास विन् ठाउं (क्योर ग्रन्थाः)—क्योर, द); कामी पारं श्रीर नाही है, के राजों यह बैन (मृत् नात—हार श्रीर के)। कहा पारत, कामी कहीं और ठीर व मेरे विनयः)—हालसी १४९)- व्यति सीरि वर्णों, न नहें दिन सीर, बमोही के बोह मिठाल हुनी (धन्त्र कविस—धनाव, द), नो सेंगे विनर बन्नाच विना काई डीप निवान वहां

श्रीय दिकाता स्ट्रिंग



कर्द केता । प्रयोग—यह काचे कट्चमत भी असने समान अस कर उन्हें को ये इन सभद केवल विकासों के समान यस मार रहे के (मनन—प्रेमकन्द, १९६)।

पंकर पिटना,--बजना

- (१) कवाँ होती, प्रचार होता । प्रयास-स्टब्स सरक सामद दश्याचा कीरणियाँ समृदश्च पाचा घट०-सामानी, शहरू
- (२) टीव पाव होना । यसोय---नमस्म वृतिका से करांक। एका पिटना है (कुसीठ⊢ निराक्त १२४)
- (न) राज्य होना ह

र्षका पीउना, --वजाना

- (१) प्रचार करना । प्रयोग—नाहमे हैं चपनी वर्षण्या का कका बजाना (गृंव निक—नाव मृत गृंव, सर्था; बाव सोगः पर्यागार का रंग कर न किस्से हें । मृत्य के प्रकार द क्रिकी; कोई गेंक्सा सहज करेंटे अर्थ का क्या पीटना रिमाई दस्त हैं वाई इस हिन्दिना का अपना मांगा पहने देशीकार की पुकार करना प्रथा जाना है (जिलांव ,१)— सन्त, क्या
- (०) अमारा बजाकर विजय की योगाया करती । (स्थाक बृहरक—इंक्स देगा)

इंका बजना १० इंका विदया

हेका चलाती वह इका पीरश

इंके की शहर

(२) योजना करके । वरोय-आरात में हर एक स्टम ही। की बोट बहा होनो है 'गान-बोमबंट ब्)

इंड केरका

चिना काम पढ़े गहना : क्योग—निकर देखिए कार मोगा ने बनाई क्या रक्षे हैं कि उनमें मागमणी स्वार्थी सीर परकार पढ़े हंड देख्ते हैं (पदमा) क्यक—पदमा क्यों करो

इंदर दिव्याका

भारते की प्रकार देनी । प्रजीत—नेकिन जनगरी एक त नुबन्ध का भ अश्रीक्यां देना का दंग दिन्यातः पर 'पैशाव—प्रेमलंद, १५८, हम बाह्यच है हमते साम्यार्थ कर जी । बंदा न दिनाजी (स्कद्द०—प्रसाद, १५)

इंदी सीउना

वनिवागीकी काकी। प्रयोग--हम की मृतिया पर हान रखने बाके दिवान समयहर की मृतिया प्रकान के लिए धनवृत हो पह थे, वंदी तीलने वाले आने दीनते के (भान0 (5)--पेशंबद, १४४

चेंद्रा सारमा, डांडी झरवसर

कम शीमना । प्रक्रीय—दानी भगत किया की, विश्व-देशना पति जात (एएम कवि०— प्रक्रीय, १६०), ऐसी वारे सामते हैं कि कोई नक्या ही मही संस्था (प्रेमाट देसवड़

436

डॉर के जोर से_।—सिर में

इंडे के जिए हैं रूप क्षेत्र के और में

इकार जाना

भीत या नकत हरण कर जाना । प्रयोग—मेरी नारी की बारो प्रजदूरी साफ दकार नमें ,गोदान—फेनबंद, इन्द्र । बत्यारे के बाद अपने हिन्से के अ व दाये जान कित मुताहित के यर दिये, जो दकार नमां (भारतीय—राजान, ११८

इस अंबन्ध

श्रा मारना

क्षण्य नेद्राच्या त्यस्य पंजारसभा । ध्योत—सारि रसे प्रश्न पुर्वत करी गाँव असी राते सुधन मुख्यान सुर अपरेड

किस्ति पुत्र विभागम्बद्धियाः स्थापिक प्रशासि क्षत्व
 प्रशासि ।

इर स्ताना

रस्ता, वर मान्ता । प्रयोग—्नी ती फिरे उत्तर अस पावा । विनया कुळे हिसे एवं जावा (पद० - सामसी अप.

इस्ट चिक्रामा

राटना । प्रशेष—नुनोध ने जॉर्थरे ही आंध्रो में दाट रिकार (क्ट०—दे० सन १४८)

(नग॰ धृहा॰-- डांड बताना,-- सगन्ता)

हाइ पहना

नुबनान हुई करन् का दान भुकाने की काध्य होता। इक्षाय—मेनो में नाई सायह का पूरोपूर माह पर गय। सिक्षो -निराला ६४

(समाव मृहा-- सर्गष्ट समझा)

हाइ अस्ता

राणि कृति कराति । अयोग----जन्मा सत्त्वा होन हे नया, हो नो स्पन्ना होत समय अरमा पहा (गोटान--प्रेमचंद, १४६

डांडी संस्ता

र॰ होई। मारता

दांबा होन्द्र होता

वियम्मि होना । प्रयोग—मुद्दी नही सुगक उग्नि नेह-नगमनि, सुर्गात, भगीत, निय विश्व द्वांवाशंक है (धन० कविड--धना०, दर); सभी हे संस्था शामानाम हो यही है, जान क्यमी है शासानी है (श्व० (२) -धेमचंड, २०१); वै वही हूँ अ अ विश्वकी एक सीमी कीर से मृज्य-नासाल्य बादारोम हो रहा है (स्कट०—प्रसाद, ११४); परम्या की नियमि परमाद्रश की चार्यो से पहने ही बाया-रोम हो सुन्नी की (सुरूप०—200 ना०, ११८)

दरक सादी बनना वा होना

क्ष्म सन्देश सन्देश कोमका या कोई काम सरका या होता। क्षमेय—स्वतंत्र का होन की दिन में बदाई कोम की स्मीट मे कन पर। या और उसान साम मानी सर्वेश को बा ब ८० —20 मोठ, ११४)

। वया प्रशान हाक गाडी छोट देशा)



अनुकृत क्षेत्रा । अयोग—सिना की सामा में केंद्रो, कभी तो बाक भुक्तियी (यूधगांश्र—देव सठ, ५५)

স্থান স্থান থান-থান

डार्लर देना

बड़े करसर को एक आहे की घंट देती । प्रयोग—हरका क को क्रांकिया न दं तो बाबी समस्य काऊं (गोटान— पेनक्षदं, १०६), एक बार वह विनो में मेने कन्तरहर बाहद को कामी की (रेशांगीय—नामक वर्गा, पश् (गमान मुद्दान—जामकी स्वयाना)

र्द्वीय उदासा,--शास्त्रा,--शास्त्रा

(समा० पृदा∗—र्दास की लेगा)

श्रीम का नार न दूरना बहुत रीन भारता । प्रयोग प्यता वात तक नहीं कोई पर नहीं तार होन का टूडा (बृनते**ः प्**रिक्रीय, १४)

77 O P.—185 डीम सारता १ डीम उद्याना डीम शंकना १ डोम उद्याना

ह्या देशा या ह्याना

(१) कही का वी व रकता बातिय करता । प्रयोग—सव रा सक ट्वाएमा, इस में की नाम हो छ दवती सुरुमा०— का नाठ, ध्रद्द); तो किस क्यों दिया काम-मृख दिकाए करें। बाम है अपने बाच मुझे भी दक्षाया (१म०-(२)— दुस्सोट, ६९)

(२) बचनाव करना, प्रसिच्छा की क्वसि प्रमुखानी । प्रयोग—प्रविद्यार न रहाची तो क्वस करती है सपनी भान जो देनी है कुरचों को एक देती है (मुग्न चुँ ० दमी, १६०)

प्रवर की जोट में पहाड़ क्रियमा

इंच्छर

परंप तरह जिल्लामा व ज्यान होता. यहाँगा त्याप अरमा मुख्य में दून दूस का कहा है (सनुक-आसी क्षेत्र)

एव जाना

(१) दिसम्ब ही काना । प्रशेष---वासनामा है प्रेरित त्रका मनव्य दिस्तीय निवस र । य रचन वस्ता है थी। उसम दक कर मनव्य काने को और वपने रचिता बहा को सुन बाता है विडल--भारतमी, २०): भाभी, कच्छा रहेडा है और किर जाने बना हो बाना है दसे ! कुछ ऐसा दूस काता है कि बता ही सुने बनना (देवकी०-- रांत राज् केश) बना देता है बुने सुनेह, सूर-सामर बहु स्तेह वस्ता वन वन

(२) क्ट हो जाना। प्रयोग-स्थापी ही उसमें बहुन सहायना की सीचड दवार का कर्ज दिलका दिया, नहीं ही राजम के कृत जाते क्लांठ (२)—बसपाल, ४२०)

इब असी की बात

क्ष्यमा बज्जा की शत । प्रशेष-विष कृष्णा का विषय



शासम्बद्धा की प्रतिष्ठा के अन्यक्त ने हुआ को असारे लिए यह इब अस्त की बाम कोई। विष्ठ असी है।

ह्यती किल्ही पार लगाना

विश्वकृष्ण विश्वकृष्ण को क्या केशा । स्थोव—किया प्रमाद व कहा। की इक्ष्मी काम क्या क्या है का मद— देश की एक्ष्मी किया को पार नामका है या है। अस्माना के क्या की एक्ष्मी केया को पार नामका है या है। अस्माना के प्रमाद केष्ट्राक को प्रस्त है है वह असू अस्मान्य कुरूब प्रमाद केष्ट्राक कारी कहा

एसमा

(१) शिष्ट होता स्वांत हो ताना । यदाव ह्या होता होता है। इसकी है जमा जिल हो रहा नाम असलेट नांच होता है। (२) शिष्ट होता और होता । यदाव वा उस उस है। इसकारी में इसकार में बतान में को उस उस है। इसकारी में इसकार में बतान में होता है।

द्यमा कपामा

भिल्ला में प्रश्न शाला । इस्तेष--- क्यांने इस वृक्षाधात ही सभी प्राप्तर वाली जाती, असे साम समा रहा पराजा के इस चुन समाह पुर

चेंद्र हें ठ की प्रस्तीतद् अलग बनानर अंद्र नायल की कियारी करण प्रकारत

सबसे भिन्न बार होना प्रवर्ध बाग्य के बाग्य हाता. अगरोहम को ही मी व्यवसी देव दें ही बाँग्राह कर हा मेला है (बद्धाः न्द्रेण स्व अवत) वह निरम्पयमक सन्द्र सर्गाभग कि यदि एक बायम की निरम्पी क्रम मान प्रवाद रहें मी हमारे साम्य रह गीगी भी संस्थित नहीं रह नाम म

हेंद्र नायल की जिल्हां अलग वकाला १० वेट हें द की मस्ततिक जलन बनाल

देख पमार्था का

नीम पर मारा इनका स्वाम सहस्रक कोनी का ही इस मारे इह प्रस्ती के कार्यमी के मार्ग स्वाम इस्ति का स्मानी पर क्याम विकास के मेरिक सुलाबक का समान कर के हुन्द हुन्दी हरते।

प्रेंग उद्यास

इक्टबर्गी विकास को छोण्डर सामी नह डाना । प्रश्ना स्थानकार क्रांत सह रह जार क्रबर रास्त छ। तुम्बर्ग सुद्

हेरा काना, हालना

र रा न्यानी महाता । प्रवास प्राप्त सन भी राज्य कारण रहा द्वार, प्रशासीती समय दाना राज्य राज्य देवाल—संचाठ दास, तुक्दे,

द्वा प्राप्त हाना

क्षा व्यक्ति स्वयं कृष्यं गाँउ विकास हर समग्र हे क्षा देशा तरं वृत्या यो राष्ट्र वृत्यं क्षा सम्बद्ध हुन्। हे क्षित्र वृद्धां प्रमुख

(यता - वृश्य-क्षेत्र कृष्य सुरक्ता)

देश जगाना

- (१) धरवारी क्य में स्ट्रामा । प्रतीम—बन्त में शह रेस्टम दुश कि किसी देश में नीचे हैंसा मनाना माहिए (मनिक (फ)—देसकेंद्र, फक)
- (२) का माना।

हैंगे राज्या

" पर सम्बद्ध

हेरा परना

वर्गराः करना, ठारना । प्रयोद-नाम केरे इत्रर जनर जान है पुन्नी का पदा हुना क्या (कुमते० -तुरिश्रीध, इ

हेरर होता

निवास होता, शाला । प्रयोग—अन बहुन ही क्षेत्र वनने से है नहीं केंद्र पूट का चेदा (मुमलेठ -हर्ग्यक्रीय, का

डोंगा द्याना

वर्षानी करती । प्रयोग-साथ ती वरा होता हो हुनाह वर्ष है जिस्टर करता गोदान-सेमचंद, ३३०

दोरा बालकः

प्रेम मूच में बढ़ काशा, जानना । वर्गम—नांव की कीन अपनि की बहु विदेशी पर करेश गामा करता था (गोदान— प्रेमचंद्र, ठेनेकी में देखना ही रहा, बंचवरण लेकिन ऐस्पारा ने बोचे हाल, जनित भाषता में बहुका, वर्श्व के भीगा, उन्होंका मामाओं के दशन करन के बहुका अन्तर में मा मर-१ की में उसका गामा कार दिया बाउनी सका प्रिकृत गामा के उस मामा की एक मुश्लित पिक्ष करा में समीने जनाम चान-नोंके केटवी कर बोचे बाल रखे हैं (ये कोडीक-प्राठ नाठ,कृष्ट

शोरी दिलाना

दशारा कान्यः दशारे दव ६ व कराना । प्रयोग—दण देश के हाकिम प्रशाकी नहत्व वर नामने के, प्रांचा बहरगाना भीती हिन न म नामन हाथ राध्य राज्ञित गर्य च पू किए बीठ मुठ गूँथ, दश्का

होल-हाल से हो भागा

पाणाला ही परला । प्रयोग—धोडी देर वह के बीजक बांबी, हम डील-दान के ही पार्च (वेतस्ट- रेणू. ३५

धोलना

(१) विश्वित होना । प्रयोग—चरन करण आई रिवे करे भी जब क्यों कोने देव (क्योर प्रसाठ—क्योर, २५४), फिटि फिटि गोर्ड न कोई बीना । आची रामि विश्वक बोला (यद०—आयसी, ३११६); नव इक नियक, जीति नहि बोलिह । यहच करण करहे नहि बोलिह (१३६० (छ)— मुखसी १०६४) (२) पृष्या । प्रयोग-काम्ब्रीत पर-पर शोभते काते रहें। समाद प्रवास-सुर, 2004,

डामा से कारते ही

विवाह के पूरण बाद । प्रयोग---वोजी में दगरते ही जारर काम निर वर प्रशासिका (गोदान--प्रेमवद, ५०.

डीई। फिरवामा या फेम्मा

मनारो बन्ती, बबके बाले किरमा । ब्रह्मेय—यह बुन बन में 🗴 🛪 नमन में भी दोती केर दी कि कोई तह, बात, धर्म तप बीट बाद का माम म करने तथे (प्रेम कार--कार नार, बीट बीटो बंटन के समय निश्न बच प्रय क्यरंग । मेटो इस के बीच की दीनो मूचन हराब (भार प्रमार (प्रोम--सम्पर्तन्द्र, १६८)

(बबाव पूरावन बीबी बेबा)

रीपी पत्रमा

- (१) घोषाना होती । प्रयोग— हास यहं रे त विकासी तूर्व पर्म, है जब बार्चान जब मी होती प्रज्ञा कविश सन्तरः, १४
- -) प्रवास्त्रकार हाली (क्रकोग लोटीकी टीनी जन का है। बहबी स्थास कपूराव (पुण्डारा - सुर, ४२६०) (क्र) सामन्द होता ।

हर्गम होना

त्रीय क्षेत्रमः व्यवस्था क्ष्मी । प्रयोगः शृहदाम ने प्रश्तन जिलाका कहा-व्यक्ति है दीन ? (१९० (१)--वैमवंद, १०) (नका वृहद्य--व्यक्ति वैद्यमा)

वर्षीकी के होता

पुत्र में तेर स राममं हैया । प्रपोध-त्य पुष्टे वाले त्य राज्य करत हमार अन्य गान सामध्य ह राज्ये कर राज हेत्र राष्ट्र अस्य गाम हास पुत्र नुस्र क्ष्मण स्वोती कर्म स सामे ,मरासी०-राज्यात, प्रश्ने

ento मूरा - हारोदी पर पैर व रायने देना)

इप्रीक्षा स्माना

दशकाने पर भीशोदार वेटमा । प्रधाय-अब तो भागके वर्ता व वोर्द्धां समये वर्धा-स्वा दीव है (मा-कीर्दिक १७८



इंग करना

(१) अध्ययनाम काम करमा । प्रयोग्---पुर न्याम दन श्रीत्रव मुखानिक, में दम करते मुखानि (मुठ सरव---वृद, २१४८)

(२) काम करने का बनाम निकासना । (समारू पृशाः —होग विकासना)

द्वपक्षा वजाकर

वीयमा करते, सरे जाम । बरोज---वीरयमाह को गाहि को नंतु सम्बो विश्वनादि बंबाद के बंबका (जुला वेबार---भूतमा,१४३)

ह्यस्थ

प्रवास्त्य वा एनक्य होनां। प्रयोग वेश हैं। विकास नवार्त संभार्तः व की मूठ साठः सूर ३०३३ जाते को दल्ला सबारी में बहुआब सामी कार नवार्त्त का बोर्ति की नवस ही केठ रार- सेनापति हुए। ये गाँउ रुस पर बहुत का । सानै या बन के इस सरे नदेश ग्रेशांः नदेश ३३६

हुई पर भागा

किसी विकास काम का दीय हो समना स्वयन। प्रकट दीन संस्थान कुछ उन्हें कर सानग्रहणा नाम प्रवया था कर्म, प्रमुख क्षेत्र

(समा वटा करें पर कर जिस्तरात)

र्श्व क युक्ता

विकी नरीके की बीच विशेष भाषत हीना । मधीय-स्व अर ह अवस नाट किस दर्वे पर तथे रोते है तथ पांड में नाटा का उनके विश्व प्रदायमा करता XX अपन जीयन की करक सब करता है (देंठ पीठ-पठ मोठ मिठ, देवर

इते बलवा

पीडापरका बाली अन्यस म रहता । प्रधान-प्रम में दल पता है क्यों कि सब कह नगर है 'बीनैठ--वीटाठ, २०६)

वलमा उधर--- जवामी

प्रीयम्भाषा । प्रयोग-स्थान गायेगी संजयनिया असे र प्राचन प्रश्नान कर गया गण ग पायमी र परलीठ रेणु, स्थान) । यदि सभी में मेरी मान पूरी नहीं कर असे हैं अ अ ली अ अ इस्पेश्चिम कि उनकी शामदली गीमिन रै मोर रसकी हुई जनक्या में गत गान बनावर क्यान की सी जिला है आहांठ देवंठ १९२

इन्टर्ना उदानी के इन्टर्भा उदार

र ने स्टि

(१ रकार पर होता प्रयास देशहर रचने को स्थाबिहरूर इस्क्यू करूर प्राप्त हिला सदा कृष्टीय निरोलां १६ राज्य इन्यास है पारसाधारी बहा क्या पुंचल सम्मान २०३



(-) त्रकी अन्या का भागा प्रधान निष्या ग्रीर भी वर कार यही जिति भी तम आभिन होग्य है (धन० कविछ— समा०, ५१) : अदि कुदम में नमे ही भया काम स तमका समा (सर्म०—हरिक्षीध, ३%)

दह जग्ना

मध्य ही प्रश्ना । ध्योग—ने नायन्त समय नयं नायन्त वर गर्ने भीर पश्नीत्मय की मृजनाय की मिट नई स्थलेक्ट— हर प्रश्नीत्मक की मृजनाय की मिट नई स्थलेक्ट—

द्वांक संचार कर रक्षता

यश्य पूर्वक रक्षमः । प्रयोग---मह स्वरेष्ठ अस्पनी हको राजाः द्रापि समारी (सुरु साय-- सुर, प्रशापः

दर्गी साडी का बादमी

बहुत कृषशानातमा व्यक्ति । प्रयोग-नानी केंग्र एक उपने कृतके कोई काई मार्ग के यावधी में जोसी-चतुरक, २००)

हाक के यहां तान पान होना

(१)मधा एक मा । प्रवास -बह बुनिया है एक समामाताना पूरा तो-ति है। हो - बटको सका भी का है भ - बटो राज के तीमों पान (गुठ निठ—बात मुठ गुठ, ६९९) : हमके करत करते शास होने और अर्थ, यह सम्बन्ध को नहीं ताब के तीन पास (मूर्यक्र--पूर्व कर्मा, ४५%,

(२) बोटर परिवार होता ।

हाड मार कर रोना

विक्या कर रोमा । प्रयोग—नाघी न मिला, यह देनकर देवनो आह म नव नाने जाने माने य प्रमान १० का माना काम में म दावृत्त से क्यो नमें दाई माद कर रोन स्पूप्तिक—हरिजीत, ११८: रोई विक्या कर किन दाई बार मार का जैसे मान्याय मरे ही पर (अवश्रेक-निराहत). १७७)

द्वास दोना

रक्षक होना । प्रयोग—सन्न भग में बचनेके नित योगन की गारण ही एक राज है (वैद्यार्टीक (१)—क्यूरक, देश

78

O. P. 185

दरन्द्रमा

क्ष्मण बनाता। वर्षाम - बीच नहीं चाती कि कैसे हमें वर्षा कुष क मन्दर में के बाद वाडोती (मूहमीठ----खठ माठ,१६४) बीनव बहुन मनवदार है। इस चीरिकारिय में बचने की बास सकती है (बंदठ---देश सार, इस्ट्र

विद्योश देना चाटना

(२) घोषाया काली (प्रताय-वर्ता का प्राप्त के नाम से इसेंगा के राजने जरुना चाना बेटाया थेम संश्रा-स्था ताथ, राज्य

(तया: मृग:---दियोग बजामा)

विद्योग पिट अस्त

कारी क्षेत्र प्रकार होता । प्रधीय-प्रभवे नागेह नहीं बह-कर का दिहोस कुर-पुर तक विट जाना है (भट्ट नि०-का० भट्ट पर

दिदोगा पंपरता

र- दियोग देना

र्डाप्ट करना

नाम में देशे करना, सुरती करती : धरोत—वेद मेरी करी डीम कीन्दी, सुर मनिवासी (सुर सार—सुर. १७६), सुरती करी है मांची देश बार-बाद खानी डीम विस् नाम-महिमा की नाम बोरिडी (विनयक—सुमसी, ३५%); सुस सई डीक जीन केने को सुन्द तय थे। करोल पर त हसी (भूमते—हरिकोध, ४६)

हील हालना,—देना

मोती पूट हेती, निवासात में क्यी होती । अभीय—स्पर्ध मों सीथ पहल तिर कार, अपरे स्पर्ध बीक वय दीन दर्श है (वित्यक—सुलको, १३६); इयर कुछ दिनों से वार्थ र के अपने कार्या काफी दील देती बारम्य की की लेकर ३)— आहों या बड़ी; बाव खुद ही बीक बावे हुए हैं (तबन— प्रेमक्ट, यय); तुम बाहो तो बता ही जिर वर के कर धार जाय । तुमने दीन है की (यरतीक—नेषु, ५७)

(गगः भूष - दानी छोड्ना)

क्षाल देना

होले हालका

होन्द्रा काम भरती

मुन्ती न काम करता । प्रकीय-स्वतः १६ मन्तरण स्टाः सीवा काम करता है व्यक्ति-सीव १७, १३१,

द्यामर पहला या होना

- (१) देवाय तथा शांता । प्रयास तथा अशा १ विक प्रथ भीर काम विषया (स्थम-भोगस्य १५)
- (न) क्षेत्र मानि का कब होना । प्रशेष-अहिने नी अन्त भी दिगई पीछे हीने हुए, बोने बच्चा नो सारके दश्य वं सादे दे दीरमण् (कारक संसात (क्)-अस्तिन्द्र, बहुद्
- (३) पहली की भी दिस्ति व रह काली। क्योन—स्वतः को सम्मृत विकास गहते चीर पाद कमका माना का, वा सब इस शरह का स्थान कुछ हीमा वह नया (सि० सी०— महां० दिसेटी, १८४), वीको के यह होमा वह नया। कमा को बन्द करना वहां (मृ० नि०—सां० मृ० वृ०, ३३४,
- (४) काम भी मुस्ती अस्ती । मनोन—मानुत म मुं के असि सहत्र विभाग परि और एक बीट इपा हो र एक मानुते। स्थल कवित स्थान १७०० हिन्दू गरि हो को गरी एड वर्ष पद्मक स्थल पद्म शर्मा स्थल कर का का मान्द्री महत्र वाले समृद्रा कर दीने के पर का का क सामी । युव वर्ष १७००.

(४) कवाई या चौकती में कवी होती। प्रयोग—जन शाक ही डीमा है तब सामान क्या कर चक्रणे 7 (सूर्य)— यु ० वसी, ३५४°

दांते बनन

उद्यामीयतस्यूको बाबी । प्रयोध----कलार वडीचे मुख दीच वेन बीची सूच्यर चुनान तक शाननि बारे जाती (प्रन० क्रिक एक स्थार

दयक्ता

धाकुष्ट का कनुष्ट्रम होता। प्रयोग---देला व. मां जी की केवा कानी और इसका निका तिल्ली---प्रसाद, हुद्दा

देव ही जाना

- (१) पर बाला । प्रयोग—सीट स्पर शहेगा हाई हेर हो बायमा (गोटान—पेमचंट, २३), कीमारी में पीमोती काई नो हर हो नरकोवी सुगठ—में दस्त ३०५
- (२) एक वन मूर्या ना यह माना--गहरी होट में तो माना। वयान---वर्ण से मान्य नकान का थी पूक्त के साथ भैया बाव मकने-क्यने किसारे वर केंद्र हो आहे से (बस्ट---नामाठ वद

क्षेत्र की पोन्ट

कीलमी परंग । जयोक—अब नहीं दीक-दीक बोल सकी संज की रोज प्रयास पर समसी जोते,:—हर्सद्वीध, १०४)

डांस के अन्तर वांत

पहराया अवस्था हातो सम्बंध । प्रताम—या देवा की नुस् नहीं । यम, बीम के सम्बंद चीम (पुंठ निठ—बाठ पुठ गुठ, १३२ पर म करत । जो वह वह पिद्यान चीर हैंथे। सेने विषाद कर बायने, पर दोम के सम्बंद चीम ही रहेगी चित्रक अभिन्द देव

दोल देना --पाउना,--वजाना

भारा आर कहने चित्रका । उसायः जब गांत दे द बर्गनाम दिया गए कीन की त्राज जजावणी की लाकुरः - खाकुर एक प्रत्यक उम्मदिया क्यानी लागी होल पीट केंद्रा पा देलक देनेनंद्र १३४ इस प्रतिकृत विस्ति में भी क्याने



बहुत हुन का हाला। वर्तहुन्य-नेवा भी कुम क्य नहीं की, पर होल नहीं पीटा (पद्मार के क्य-पद्मार क्यां, श्रमी, एक तो हुने भपनी करण से व्या और नहीं पीटना कि तथायक है (से कोटेंo-अल मार्क, प्रया) किर हमका काम तीर पर दोन क्यान की क्या बकरत ही? देशगात-देंo सर, 263)

होल पीटकर -बजाकर

मबकी जानकारी में, कुछ आरंग । बर्यान—जन् हीया हार नियो हाथ में बोल बजाइ ठकी (स्० सा0—सुर. इन्द्र-३ रहिशन कराइ विद्यापि है, नकड़ भी जाड़ बचाइ । यांचन गरी परत है, बोल जवाइ बजाइ (रहोन कर्या०— रहोन, 46, ; लोगों ने सलाइ दी एक हम नोइ हो और मता की उठा तो पर प्यारी का वर्ष में होन बजाकर अपनी नररबन क्ली-बार न कर सकता वा (मान० १)— प्रेमचंद, १२५० ; कोई कहे जा न कहे पर बानने कह है । नुस्कारी बोल, उनकी बोल बोल बीटकर कहनी है । सुरकारी बोल, उनकी बोल बोल बीटकर कहनी है । सुरकार-यू ए बेमो, ४५० द्रोत पीटना दै॰ द्रोत देवा

दोल बजना

प्रयाना होती, यस होती । प्रयोग---अही शीरितस्त्र कैथे बहुर्राच्य हम विका यथा तस्त्रे हैं, बहुरे एक सच्चे, धरे कमायत्व का दील क्यी बहुरे बढ़ स्वकार। (दुश्माह---देव्यक, बुद्ध)

द्वीत बहाकर

६- इंगर पाटकर

द्रोत बजाबा

- (१) तथार करना । प्रयंत्र---नर्रापत का नेवा "वथ बारियर वर्षे रक्ते" कारकर प्रश्वाने अपनी र्यापत का रोज क्या रिवा (द्यागळ--देठ छठ, ३०५)
- (२) बृधी क्लाना ।
- (%) देश हाल देशा ।



संवदम्स होता.--हाच होता

संदर्भित होता

नेग-हाथ होना २० नेगद्दरन होना

र्मग होता

- (१ क भटनी रमे होमी) प्रयोग सहस्रहरू नीयक हो कभी सरम्ब नहीं की उन्हों भाजनक तय हो सदा ह को साथ कह को सीटान प्रेसबंद १६७३
- (४) गम हान्।
- (६) देखन अस्तर <mark>।</mark>

नर्गा उठामा;—में पत्रमा या शोना

नाथ के राध्य की जर नाय पानी । प्रशास पानी इतना इत गामा को भी तमी उसने की कुछ अवदात न जी (परीक्षा०— त्रीय दाल, रक्ष्य) ; क्या कहें इस त्यादिक की से नहीं, लंग जयो हाथ की है कर रही चालंठ—हरिक्षीध, रूप०); प्रवर्क दूसने लोग तभी न पहें तो नुम्हामा केल चीनामन जिया बोक्फ-व्हरिकींध, दह)

तंशा में पहला या क्षेत्रा देन संगी प्रकार

नवदीर का क्टटा काना

काम्य किन्ता । प्रयोध—शाम की तकटीर में बनता भाग वा (वधम वेमक्ट २६६)

नक्दोर जुलता

नफदंग सार्टी होता

का दिन हाला हुआरिय हाता. प्रयोग को छाती हुआहीर हा मार्ग हो आन्तर बंधा रहता गांव के प्रेसपेट वह

नकर्दार श्रीकार

भाष्य को राजा । यभीग प्रक्रित प्रशा गर्ना प्रतित हु। है। सकरीर टॉक कार्बंडे रही और नमा ? (बान्क १४)— भेमबंद, इप्र

मन्ता उत्हरना

- (t) बना पनायर काम दिनार जाना । प्रयोग-व्यव निवन ही वने सवल सेनी नव पनटले व किया तबहा अक्टे पुधरोठ- सुरस्मेश, प्रश्न
- (२) परान्त करनर । प्रकार —विदेशी जा कार का करना उत्तरन के जिए नो प्रता के करना राजा है देश मेर---रेड सिंठ, २६४७

मनो पंत्री करना

सगई गान्त करना । द्रयोग—क्य अन् क्ष्मं बहुत नृत्ती पभी क्षिया तो लाग छ, वर्ताने और काव पश्चा (मान्य (१)-- प्रेमपंद, ६) ; बन्ताने दोनों को मनोक्ष्मों करने की बहुत केया नी किन्तु कर्ता नाम न हुवा मा---कीश्तक, ९५

有可能证

गर्व के साथ, धन इकर । प्रभाव—बाह्यल में चेसा रव गमाज गर बांच प्रका था। भीना मेना वा नवकर इम्रेक्ती संदर—स्वय, इस , बक्कर, भूककर, नवकर, बा एडकर भेने जी हो अगना मनसभ पूरा करने में ओन्डार भी (बल०— नागाल, ११२), बिन क्या के संप्रकार पर इनना असियान। नवकर बीनी.......(रंग० (१)— देमचंद, 530

सन करना

म्युनार अपना, बारसा करना । प्रयोग---अपन, अभरन, चीक नाम यह तकु प्राप्त वन की दें सुरु संप्त स्था अउट्ट

त्रव कम्पनी

साधना हारा संशिर की बाद में करने का समाज करना । प्रयोज—कर्माह भीष क्या तक धन कमही (समाज का)— मुक्तभी, प्रथल

तत का ताप वृक्षाना

मभीकांसा पूरी कानी ; कव्य दूर होना । प्रदोध---पूरा प्रित्या गर्ने मून वधस्ती, तम की अपनि सुधानी (क्लोर प्रशाल-कहार, १९१४) स्टराम स्वामी के मिनिने पन की

O. P.—U85

नवनि बनाई (सुरु साठ—सुर प्रत्यप्त) विक्ति भी विजीतम रेडपरं र ता रोर्टान बरस्ट से वो भिन्ने कर नवति कुन्ते के सामि मुख्युकाइ स्पट्ठ—साम्बर्गी, ब्रह्मक्ते)

तन की इसा भूस अपना, — भूषि व होता,
तन ने पहना, — भूस आजा — अन भूम आजा

दह तान नून काना, अस्थानिक्ष्य होता । प्रधान— नर्गत

नुर्गत वापति वा नून हो, विव उपनय तन वाती (ए०
साठ—एर. १०००), करन निधार विवस पर्द त्यार,
वार वर्षन कात सन पन वस विवस्थ (ए० साठ—एर.
१३३०); वर्षन अर्थ (च्या क्या व्या विवस्थ एर्ड मान्या कृति
नात वर्षन कात सन पन वस विवस्थ (ए० साठ—एर.
१३३०); वर्षन अर्थ (च्या क्या क्या व्या विवस्थ मान्या),
अव दना मृत्यामा ए० साठ—एर. १२३३); वर्षन वेश तम
नृषि वहि तेरी (रामठ ए — पुनती प्रदेश); वर्षन वेश तम
नृषि वहि तेरी (रामठ ए — पुनती प्रदेश); वर्षन वेश तम

तम की सुधि व बीता

रे॰ लग की बतार मृत्र ज्ञाना

तत सदरमा,-नामना

हरीर दुवंस बनाया, कर्ट बहरा । प्रयोग--- प्रवश पावस बार बीयम, किसी तर तम् वार्ग एक स्थान-शुर, १८७८), या वसे का कार तथा जिनको गाम उनका मन्त्र मध्ये केर बोसेठ--- हरिजीय, १०)

तुल गुप्तकां

ं अने संस्थाना

तन डोडना

र्वन होना । प्रयोग-स्नि-रिन तम बीनै जना ननायै, चेन नहें काल निरदम बनायें बजीर ग्रहाठ-कवीर, १८४) बादम-ग्रमा नक्द की विजयनि, वाही दुन नन कीने (सुठ काठ-सूर, १४३०)

तम खुटमा.--क्रीमा

कृत्यू होन्यो । प्रयोग---ता यत की मोजबू दे काई, सन सूटे सन कहां समाई (क्योर प्रथा०--क्योर, २९); कहीर यह तन बात है, बढ़े तो सहद लाइ (क्योर प्रथाठ--क्यीर, २४): पन प्रमृ कूटन वह दूस होत । ता तै कोच रहे गाँह कोइ (सुत साठ-सूत, ३४२): पुनि म सोच कनू रहउ वि आठ (राम्ट (अ)-सूनसी ३०४): वैसा है सेरो दियो तरि पेरेति कोणे नहीं समृ बुटन नेसे (बैटनक-चेटन

तमे जाना

1051

(१) सिकास दिवाना, कर होना । प्रयोग--पुत वल सारे तो मैने भोषा, तुसने ठीड ही क्या । मैं बाहक तुमन तम बंडा (गोदान- ग्रेमलद, १४१), तक में घरी बाला अपनी वही बीती गांवरकरिनाई कुमले एक बार किना आत-बी-बात वर इननी तम नहीं, इननी तम नहीं कि बेरा जीना दूसर ही बना (ये कोठंड--क्षण गांव, १८०), अपने अपनी बोलती है, बहुत तमकर मी नहीं रहतों (भाग--क्षेत्रज्ञ, १३६.

(२) यर जानर । चयोग---देन **तन छ्टना**

तन र्ज्ञानना

शानित पर अधिकार करनर । प्रयोग—दिना न्याय सुदर के समारी बदन पून तम जोते (सुरु साठ—सुर, ४६१)

तत ताना

तारीत को क्ष्य देशा १ प्रयोग-न्याथ वियोग नाथ तथ नाम (दामंo(था)-न्युक्सी अप्यात

तम सरेकना

- (१) बहुत परिश्रम करता । प्रयोग—हमारे की आराज पट्ट न के लिए बहु तम जोड़कर मेहनत कर स्वर्ग है वृंदo—सेट नोट, १०४
- (२) संशर्ध सहया ।
- (१) करका केता ।

सन् स्वागना

स्तर राष्ट्रपाल काल प्रवास का अवस्य सार्वा व्या परिकारी सम्बद्धाल सुन्ति ए

सन देना

्र) पारण देन। । प्रयोग नगर राजि तन तन दन दन उत्र सन्द्रित पामत सहीम कविक रहीम १४

- (२) परिथम करता ।
- (३) ध्यान हेना, यन मगाना ।

नव धरना

वनकार का वनतार केता। प्रयोग—मोद अस गाड प्रयान प्रव तरही, क्रणांतपु जब हिंत तनु प्रयही (शम० (बास)— तुलसी, १३४), परम निमानि हाति जबही जब तद तब तुब तनु पाएस राधा० प्रथा०—राधा० दास, हर।

तन व गहना

दे॰ तत की बुशा भून्द ज्ञाना

तन भून जाना

🖙 तन की दशा भूख जाना

तन सन भूल जाना

🐫 तम की दशा भृत्व आमा

तन जन मरियना

आग्मसमराम् करनाः । प्रयोग—सन्दरेशम भन् सीविदाः यो कर्म् प्राप्ति व चादः (कर्नोर प्रशारु—कवीर, ६८,

तन में भाग रहा जाना

नतृत रोम होना । प्रयोग-न्तर मुने पूरवा की निन्दा आग अन में है कर जानी (वैदेहीक-हरिक्कोध, इस)

नेते रचना

मीनिय रहना । मधीय-स्थाप पर समृद्धि माणि कहा और में मू भारती ३९८० जा युन् र जिल्हा में प्राप्त के प्राप्त के म प्रेम पर मोग निवास (शम्य सान्-सुलसी, प्रश्य सन माधीना

ं राज का सामा प्राप्त को समाजित कार्यका पुरिवृत्ति सामाग्रमी सुन्हार

Q HILLS

। व्यं वयः —नवश्यानाः)

नवानमा होना

वेशनाम होता । प्रयोग—नवीर ने दीन भाग है गहा की ये कार कार्य कार्य के बोर्ग क्षणना

114

तने शहनः

ंगर मार्था (च्यार १८५०) प्रथमित स्थान के की वृ क्या कर प्रथमित हैं कि कि क्यों स्थाद प्रथम की ना लगे, अब वेबला हूँ सारह कैंस कभी रहती है 7 रस्० मृत⇒ सुद्रशन, १८३

तपस बुकाना

कार सा विरह बादि की शांत करना । प्रयोग—नवनि युक्तदर्व की दिश नियशकों की रंजा से सरम तरे तक की परस है (कंदरo—सेनायसि, छ)

नपना

(१) प्रताप होता, पर या पैथे मादि का बहर पहन होता। प्रयोग—तब तुम मिनिस्टर नही---वश्रद एमक्पक एक में, मेकिन तब भी क्षत्या तुमने प्रायः विनिस्टरो की तथ्द ही सुक कम विद्या था (अपनी सबर---स्ता, १२६)

(२) परिध करना । वर्षीय—कनंत तथ उठा, पंत्या—तुम भाग तो मूर्ज हो। मूर्ज (युद्धः—संध नाथ, इस.

क्षपत्ना इनकता

गाना-समाना होना । प्रयोश—सभई कन्द्रो हम भी पन्ते राह के आकृत रहे नो तसका समझत रहा (भाव ६० (१) — सारतेन्द्र ३५६ मा नगीनम भी है पानवान का नका का बोलवाला है ०५ % % पन को स्नकेमा (भोटो०— निराता ६०)

(समा मुहा---तबागः सतकतः)

स्थागम का बाह न देवा

शन को धक्या न कामा, विभी अप को करने की हच्या न हीती। प्रयोग—मूझे इन नमम कुछ नहीं कुछ उड़ा। स्थीपता पाई न देनी कि क्या लिन् ? (पड़ान के प्रस-पड़ान क्यों, के)

शवायन का साफ होना

रहन रापण कृतीत कीय काहित । घारण पारणी नवीयत के साल जीव जैन्दिलकेन बाजून हुए (पट्नर के पड़---पट्टम्क साल, पक्

नर्पायतं गिरना

प्रत्यत और जशब होतो, पूर्वजता यानी । प्रयोग — यत में कुश की नवीयत विद्योगित ही पही वी (स्थापक— क्षेत्रेण्ड, २२

महीयत दिक होता

बीबार होता । अयोग---जोकरे सर्वायत सरकार, कन्ति हे कुछ दिक है (देशमी०--राम० वर्मा, १७०)

नवायम् त्यहराज्यः

प्रमान होता । अवश्य-सामग्री पुनरिक्त ही वर्षी हा अ उपको वक्षावत सहयति वर्गी (ऐसाव-मीमग्री), (४३)

नर्वाधन साफ होना

स्वान्ध्यं होन होना । प्रयोग—नैस तनीयत् पाले की निवदन तो क्ष्यो है। पर शाक नहीं (पहलः के पक्ष— पट्टिंगः क्षर्यो, १४१/; वोजीय नेस यात और हरहरत रही अ अ को तनीयत् अवसे तन्द्र पाक नहीं हुई मां कीश्रंत अपटा

नर्पायन इट झाला

वर्षाच होती, विर्माल होती । वर्षाम-पदाह साम पहले क्य उनका करकोना लच्चा चरा था, पतारी तर्यायत दुनिया है हर नहें थीं (मृतक-भगव सनी, प्रश्)

तदायन हवा होता

प्रमान होता । प्रयोग---न देख हो तो देख आना घेटा वर्डाचन हरी ही भावती (बस०--- नागां०, ७०)

तवेल की बन्ध बंदर के लिए जाना

विश्री की क्या विश्री के अपर जाना । अधीय—ऐसी वसा में मुक्तमा क्या की के सिका और क्या किया थे। अकरी मा। तबसे की क्या बंदर के निर्द भयी (स्थन—प्रेमकाद, ३१४) : क्या तब्द बंदर विधास जानता । है तबसे की दम। कादर के लिए (शिक्ष)—हरियोध,१४

तम हरने पास्त

प्रशास को दूर करते काला । प्रयोग-नव दुति प्रगत इस्ट तक दुरुवा (११२० (का)-सुससी १२०)

तमक उउना

शोधित हो यामा । प्रयोग—को मृति तमकि प्रती कंकेई रामक आ}—शुक्तरी, श्रेश्वर : एक सम्प्रती तमक कर प्रते कि साभी जनमें ही किया सम्बंध (प्रदेश प्रशाह— प्रदेश करों, प्रयो

तप्रतहाचा बंहरा

कोच वा कार से नाम हुना चेहरा । अयोग---स्नामी नी का चेहरा समस्या ३८) वा (जहांजर--वार वोली, ५३४)

नभाचा जाना

बरमानित होना या शांति उडानी । प्रतीय---वद कि बेदय क्ष रहा चलना (तब नवाचे न क्षित्र निये जाता बीलेक---हरिजीस, पर)

तमस्वर चलावर —जडमा

पारता, साटा नाका । प्रयोध-नान प्रयोग ने कथी भूके नहीं चाह है तो की तमाचे भी सना (बोसेट---हरिक्कोंध, १९६); किताब बाले ने सब अपनी मामका अकट की और सरी-नारी कार्ने कुओ तुना कार्नी तम अपनी उस मारी हुई ताला में भी भेरे कहा में पहली प्रतिक्रिया वह मुई कि उसके पूंड पर एक नपाया यह हूं (अहाउठ---हरू शोशी १९६); किस निये बास हो दसे यह है क्या दवाने नवें गर्म है कम (मुमरीक-हरिशोध पर्

(समार मृहाय-तमाचा समाना)

समाचा उद्या

वं । तमाचा चनाना

तर प्राप्त उद्देश्या

मुखार् भौधिक बोधन करना । प्रकाम—बार्य-वर्गाणा समक्षर समे ने तर बात उपायो मोदाय-प्रोमण्ड, १३१

हर होना

- (१) नश्य होतः । प्रयोग—न्तर कवी वान सर वजी न पर्ड हो सके किम तरह कवेजा तर पंति० - ह्विजोध, हप्)(±)
- (२) तुम्ब होता । प्रयोग--देखिस प्रयोग (२) में (÷)
- (६) हमा होना ।
- (४) परन्यार होता ।

संग्रह कारा

क्षातं होता, क्या करती । प्रयोग-काम उनका है उरस्य मामा करी क्षति का तो जुने में सरकार (बोस०-इतिकोध, १९३३)

मरह देशा

सनमुनी करना नमास न करना । यह आगर । यहीय-दन नगर की नगर दिये किन भारी कहीं (कुन्मक- निलंधा देखा, इ. त्या पा इ.भ. से वर्षि हैं नगर दिए हो बन बा व भाव प्रदेश्व २ आगरोज्यू ३६२ में दिनमा . दरत देखी हैं उनका ही यह सिर बरना बार है तीना र इससेंद्र एक वरण पर बार करना रहा के तम सह

किम दरह तरह दन जुम्हीक हरियोध द_न

(समाक पहार समाह स्रोता

तरी द्वीना

- (१) प्रयत्नाता । प्रयोग—समी-ग्रमी सित्ननी से उसके हृदय की करते हो चुको थीं। उसको नगी क्षानी में प्रयो को सिमलो—प्रकाद, ३६
- (२) बास में कापर होना ३
- (३) डरफ होना ।
- (४) रीक्टल (त्यादि में उस का दिस कर माना)

तरेर कर देखना

वर्ड मुक्ते ने देखता । प्रयोध—दस पर बहादुर योगेस नाम ने जिन कृता करी दृष्टि ने केरी तरफ दरेर कर साका था, यह नरम भी कृते भूकी नहरे हैं (अपनी संबर---वर्ष, ११३--

सन्दर्भ अस्त्रा

- (१) बुनाना । प्रवाय-धार्य नवयः वर्धम सै बार्ल, बहुति स कीरो केरा कवार प्रवाध-कवीर, ११७)
- (२) पर्तवसारिक रूप में मानगर । (मनारू बुद्रारू—तस्त्र**क करमर**)

तटब मर ज्ञाना

रणका या सरकायनता न या नानी । प्रयोग-स्वरे साधी । एमे ही ननेता । कार्ट में बनाकर साबोती है में और नमन ही तन तक कर प्राप्तते (पैतरें-सडक, ५३

नः अन्यः पहना_।—स्माना

क्षेत्री होती । क्योन-र्नकार किया श्रीकारीह अवसही क्ष्मिश्री साथी स्थानीत-सूर प्रश्मिष्ठा, वृत्ती सम्बंबी सह ता कार्याच्या । प्रश्मित हमा वास पाट म सा साथ प्रश्मित हमा

म्येदेनी नेपासा

नारकारी प्रस्ता

नवया भारता

ा पट करती । पूजन प्रभावित्य गर पट ना भा ह्याक नजर जात्त है त्यार ने प्रसाद १९०० प्रधाता स्थापन ते नजर प्रभावित्य है के स्थापन त्या त्या स्थापन कर्य रह जाना प्रभावता है से स्थापन कर्य रह जुन्नेप हरिक्षीय प्र

बतवा क्षांत्रा होता

करते प्रचल किस पास्तर मध्या। ब्राह्मक व्यक्त

पाले पण सिंद-सिंद भये यम वर्ष समये जनर समयी नहीं बोलक—हरियोध, २४७)

मनवा धो-धो का पाना

- (१) अध्यत गता मुख्या करती—सादर करता । दशीत → मेल रहा है परण मन कुछ यहर है । वर्गी कमा की वी न हम समये विवे (कुम्सैठ—हरिक्सैड, ६)
- (२) सुगामद फरती ।

राज्या सहस्रका

(१) मृगायद करनी । प्रयोग—नृम तो मेन में गर न मेंगे भाग पर जेठानी के तमृत्, महन्त-भारता कर, अन्तरी सम्बद्धी करके यह दिस्सा करकाया सुद्धाठ (१)—स्वत्नपहर, १४८) । अ अ में भी तुम्हारी हिन्दुस्तानी क्यी की तमह अ अ मृद्धार नजर सह यह ती मानठ ३ पः वह १५५ (२); समय अपनी जन्मत जा पहें तो दूसरों के तथ्य सहस्त्राम्य विकास प्रमाद, ११८ जान पर है जान जनन। रहा क्षित्र तक व कर सरकाता ग्राम मृत्योठ हरियोध ६१ (२) बहुत येवा करनी । अर्थाय—नो कि महनाने स्वा सल्या गहें हाथ वर्षों तनकार में कर पर तुने (योगेठ— हरियोध, १७६), वेशिए प्रयोग (१) में (२) भी।

मलपार उठाने बाला

युक्त करने नामर । प्रयोग---हो पुता विकासनगर उठाने यामा (कृष---दिनकर, ७२)

भक्ष्याद का धनी

समबार बकावे से भियान । प्रयोग—मून नह नमा न ना कि तुम तलकार के क्षती हो (सूठ सूठ—मुदर्शन, ३८ सरकार का पानी पीना

- (२) तमहार द्वारा पाल काना ।

महत्त्वार को धार पर खड़ना,—पर कहना, -पर तन्त्रेष टिकना

ज्ञानं कठिन कार्यं करना या होता । प्रकोश-एहि कर गाम शुमिति संमारा । विच विद्वाहि प्रतिकत कथियाय । रात्य मान जुन्सी तथ वह यम की पाय करान यक निकार की मान में पायको है (इस्क्ल-सोधा ह); बर न है सलवैशियों बेकार तो बाग वह समसार की तनके दिसे 80 चृमरोप--हरिजीस, क्ष्य)

नयवार का धार का करना क नरवार की धार पर बद्दा नवदार की धार का नरवे दिकाना क नरवार की धार का बदना नरवार की धार होना

पेटिन को दूरभरावी होता । अतीय--कह विशिष्ट कति-राज क्यन काड़ की कारत कुण्ड०--विशिष्टदासी, इ

मन्त्र्यार के बाद उनश्रम या उनारमा

तर र र र पर के मण्डा या भार समार माना र प राग - न मर र सिवाही में किए कई मोरों को सम्बाध के बाट क्ष्मारा (सामील- इं० समी, श्रष्टाः, क्ष्मार पानी पान न बाद बाट क्ष्मार सम्बादी के (मुख्य-मक्क, १६)

मत्त्राय निनी ग्रहता

बराई विनी रहतो । अयोष-व्यव कोई नहीं विश्वता की अथव के ही तकवार विश्वती हैं (विश्व-केनी, १६.

मन्द्रवाच संग्रहताना

करन को प्रस्तुत होगा। उपोय-स्थी न समयार को सक प्रस्ता तो सबे र जनियों न प्रश्वाने (मुम्बी० हॉस्बीध, सन्द

सहरवंगा बारता

नमकार होता बार होया । प्रयोग—मार करने की हुई तो हरन क्को जिन्द नहे पर क्को कर्ष तमकार मी (बोलेक— हर्स्डोस, १६२

जनवार बोन्स्मा

तात्र करते के जिल जनकार की ताथना । अगीय-नीत तुमने क्यों न करत की विकादान तुम जनकार क्या हो तोनले (कामी--हरिशीर्ध १४%)

जारदाप का पाना बढाना

जरून को नेवार होता । क्योग-वर्गतर हुने कि सहसीर जोर समकार पर शानी बदावें कुव (वर्गत-निराज्य, २३०)

गजनार पर सम्बाद का गिलाफ बढ़ा होना

इतर वे बना एवं कीतर में बुध तीता । प्रयोग—सगर वृद्धिया के विनते तो बहुत बल्कार का भाव दिलाते । तनकार पर बन्धित का विनाक कहा हुआ का (सुठ सुठ-- सुदर्शन, धन्द्र,

महाचार स्वाम से बाहर रहना या होना

भरते वा सरकते की सन्तृत रहना। प्रयोग-इरस्य समझी समझार स्थान से बाहर धानी है (कर्म)--पेमधद, १२५)

बन्दवार सिर पर नायना

मृत्यु निकट होती तत्त्वार ये पार कालगा। प्रध्यस्य साञ्च यह तत्त्वार अगके भिर पर नावगी (सम्बध्—राठ वेठ, ८६

महत्त्रे को भाग माथे नक पहुंचना

बहुत क्षांच या देश्यां होती । प्रयोग-न्यष्ट जब यह बाग शर्मक प्रदोर्गतको से मुनी तब उनके तकको की घण्य बस्तक सक्त का महंबी (साठ कीक-महाठ दिवेदी, क्षण)

भारकों के नांचे आंच विद्याना

बहुत कोह, बादव वर बेंग करना । अयोध- उस गाम के तेरी होत को मूद थे, भी उसके समयों के तीचे जांचे विद्याने हैं (माम्) (१)--पेमचंद, २९६

मलबी के बीबी एका बरेनर .-- शरी पड़ी बरेना

- (१) बहुनायन से उपलब्ध होती । प्रयोध-सबस विजय में शासन प्रया विकास्ति स्टनस्ति की तस्त्रों के नीच वहीं (तैरेही0-हारिसीध, १६०)
- (४) प्रीत हीत, तृष्ण होकर शहना । प्रयोग—संस्थापर को पाल की सी जन्म न नद हैं वा नाव का का सुभवेत हरियों सुध्यक्ष

मलकों के बराबर और मही

भागंत गुण्ड । अयोग---हुश्य में तो यह दश्कारी हीकी के तमकों के बराबर भी नहीं (केम०- प्रेमकट प्रथ

नश्जी नने बाँदना ना क्या रहना

पूरी नरहे बच है हीना, भूजाबर में होना । प्रयोग—नवर के महाविध्य का इसमीना लाइका बेरी भारती के नवर्ष संने बॉडनी का बिग्ह दहना है (सूहाम0 कांट्र नाट, 30

नलघों तने पड़ी क्षाना

वेश सरको के संग्ल पहीं होता

नजवाँ से भाग जाता

अन्यन कोधन हानः प्रयोग विक्रिका कर व । य जिल्लो आगा यम नाक्ष्यम न नवका स् तक्ष्य हरिकोश २५६

तलवों से लग कर सिर में जाकर वुकता

मृत्ये से घरा हुआ, मृत्ये की बाय से मलना । प्रयोग— भाग है वह क्यो सवाई था नहीं यो कि क्लकों से भने सिर में मुद्धे :बोस्टर---हारबीध, २४%)

मपः। यदः - तलवासे लगकर मिर से निकलता) नलवो से लगना

- (१) बहुन क्री सक्या । प्रधीन—स्वी न सक्यों से हम वर भी नवी दिन रहे छानु क्टाने के नहीं (कुमते०— ह चीध वट
- (२) कुरमा ।

नवा सा मुंह होना

- (१) पोधिय या प्रस्तृष्ट रहना । प्रधाय-- दूगरी की रेच प्रनते कृतते मूंह करा नितका रहा सम दिन तथा बाह्यः--हारक्षीच, १४
- (२) बहुत काला होतर ।

नये की बुंद मा छनक जाना, - बुंद होना

- (१) देर तद व टिक्ट बाना, बुक्त तथ्ट हो भाता । प्रणेत—पद वहि वर्ष योध वृप कीत्ती, वेहे स्विक्त तथा ग्यों वाली (ए० सांक—सुर ३४४०); प्रथर तो सेथाति प्रपार रच विसे कीच कर-का मुसकाधार जन बारसाचा या ह्या परंत में किर सुनाह तने की बुद हो जाता था पंत नाक-तक लाठ. इप
- (२) मिन्छ पूर्ण को तुष्टि न हो ।

तमें की बुंद होता

° तथे का बंद सा छतक जाता

अवका रखना

नाने भी श्रीतिष् व्यवं बात सन श्रीतिष्—इस भाग में गहरा । स्योग—श्रीतिषे वहकर । वहर दिन में सून गांद्रयमा । किर पूर्व मूह केर क्योजियेतर जैसे कभी भी परनान न रहा ता सुद्रमाठ कि।।शा गुउर दु

तह तक प्रद्वास

पराको बान सम्भान जान। कातः आसा जानेन है सून इसर सामन जासः भोग प्रसन्ति ततः वकः सहुन वकः भोन-१(५) प्रेस नद्दं र

🗀 ः 🤭 नद सा पहनना)

तहसाम का बपराक्षी होता

पमुधी की तारोज है 🗴 🛪 हरेड़ बास्टर नहसीय का षपरानी बना वंदा हुआ है (कर्मo—प्रेमक्ट,२

तांता रखा

क्य ट्रेना । प्रयोग – बानं वाने वालो का ताता दिन कर म दूरका था। (रंग० (२)--प्रेमकंद, ३४६

मांना र्थधनाः—स्मता

लन्या कम होता । अयोग---वहर में कवतरी नक आहे. मियो का राजा लगा हुआ था (सीन्४ (६)—क्रेमघट ४३) माना मेवा बना रहता या बर में बिन मेटमानों का (नुरक्र-मक्त, ॥) : सर्व पर मोटग्डना ताला वथा हुद्धा बर ,गहन--प्रेमचद, ३७८)

तांना कमना

दै:--नांना वंधनर

तांबरी भारत

मुलार प्रांतर । प्रांशां पन ते हरि गदन तुल्लारी पुतत मांक्रो दावी (सु० सा०—सुर, ५७५९)

-15 TE 11

तियान। शाय कर । प्रधान-- चेंट गुनान कराई है (सै बारन नेति नाहि (सुरु सार्व-सुर, बेटपर), तकि तक तीर भहेम कणका (रामo क्ला)—सुलमी, १६७); तीर तदबीर हाय में लेका क्यों कतुन्ती न ताक कर कार्र चुमले०—हरियोध, ११

ताक कांक करना

िल्प लिये देखना का छिप छिप बुग नजारे में देखना। प्रक्षोग---गायद यह भी ताब-आक वाली वाली वो भाषनीलका अध ६४ गर्नी म केर्नमह भीर संवत्ताय क बुद्ध भार माकता करनो भी पर तब नरनी घी मुठा० (4)-- पञ्चपाल, ३४१) , मैंने x x कोई बाव नहीं किया, मोर्ड भोगी नहीं ही, और सः चान के पुत्र की नगद ताक-भाकतर कावरता विकासी है (मोश्य-ज्ञात मासूर, १६१) . वर्गीत ही मोंक ही जवानी की है कभी ताक-धांकडीक नहीं (योसे०- इतिसीय, दर,

लाक पर वेंद्रना

कार्थ तालक प्रयोग सुरदास ऊपा की करिया पर करि वेडी तक (बुठ साठ पुर, प्रथम)

साथः पर रखना

 शाब देता । प्रमांत-मृहत्ते के इटेक घर में एक-व-लक्त लक्षा ज्यान पेटर हो जुका या भी प्राची सर्पोदरशी

भीर धर्म को ताब पर रना कर अन्यु नम् आपरता में रत रहा करता वा (ऋपनी सबर अस्त, २०); सराजु परन्तु भी सब उटा कर साथ पर रख दीजिए (सिसाठ-कोशिक, ^{१८५}% लाइ वर रच सभी भटमांगया कह किया को लाक रेजना है वंशा (बीहर-हरिजीय, इय)

(२) बरेला करनी । प्रयोग-समय ती कहते हैं कि प्रय हम पृथ्यों की बात करें की इसे कार्य कारण के सवाकी को ताब पर रक्ष देना बाहिए (बाउस्य०-देशराज, ५३); मान्तारात तेथे संबोध और त्रम्य स्तर के बादोपटर में भी नैना कमाने के जिल दवनों कमा को ताक पर रख दिया । (दूधगांध--दे० स०, वहद

(३) पदा रहते देता काम के न माना ।

(नगरः गृहाः—नामः परं भेरता)

नाक से बेडना

सांत पहुँचाने का बीका बुक्ते रहना। प्रयोग----वी रन् लावन हमारा मूट हम उन्हों की त नाव म बेट - बोसंव हरियोध, ३२१

नाक में रहना

बौदा वृष्टते रहता । प्रयोग---तृष तौ वाही ताक रहत ही बरत फिरड वन फेरर (माठ इंट (२)⊶मारतैन्दू, ५७), बहुनुसा फ्रीटमोट रूम भी प्रकाम काश्विपनो मन भी नवा ध्दे पीर कुछ आव भी हो। (नदी०-छछ छ.६१) ; िन द्रास्थित को नजन दूसन महमन न मननी थी। के लाक पर भी कि मीका मिने क्टला चुका में (शिक्ष)-निराला, हैक्षा हम भन्न हर बाब में उसकी रह नह किसी की लाब में की रहें (बोस०—हरिजीध, ६९)

नाक प्रवेता —त्याना

बाल में रहुना, भीका देखते रहना । प्रयोग-मोधी नपट स्रोहर चारा । वे तहरुहि पर वन पर करा (सम० म्यूलसी, १३०); स्थेय तरक नगाउँ वह वे कि भूगी अब स्थी (मान्क (३)—ग्रेमबद, २०२) , ताक पर रच गमी अलगेरियां कर किसी की लाक रजना है जला वीस०-- ह्यरं औद, 🚓)

त्राक स्वतानी

t= लाक रसना

ना करा

कृत्यि के देशना । प्रयोग—वो दुष्ट किसी बेहरिया

की भीर ताके इसे नोली बार देना पाहिए (पीटान-पेमफट, प), ताक दे बैठ शह ताकते हैं अपना पाविसा नहीं कुटा (वोक्ट-हरियोध, रूप,

- (२) कुछ भावता करने आया । प्रयोद—दाङ केरी गाउ में कुछ नहीं है । परीय हूं । किसी नदें घर की नरव नो भूग0—यू o दमी, ३०३१
- (३) पान में रहना ।
- (v) देश लाक रकताः

नाइ चा तिल करना

बनी बात को छोटो नामना । अक्तेन---वरी वैने हो नहर कर निम बनाया है (मृगठ---दे o वर्मा, ४५)

शाव-काई सहना

हाह-सहस्रार या अध्यान भाषाः। वयाय-विकासे साध-प्राप्त सहस्रो है 🗴 🗴 भिन्न भी जिन्द पर सन्तरः पहले हे बोल्ड-हरिक्सोस, ११)

माह-साह कर

बाब उद्दाता,—तोदवा,—सदावा

नीत नातर । प्रयोग—स्यो कि गाँव ऐसा होता तो यह भी प्रे कटेक्टर में वे उसकी नायोग्र की तात न कवाते (यूक्टिक्टर) में उसकी नायोग्र की तात न कवाते (यूक्टिक्टर) में पर हिलाबी नभा-जान म के तोइसी नान गैंवरी कती (मसंक—हरियोध, प्रदे) , वातर निकलो तो नाम मोलकर देशों कि लोग केम सहस्रहा वह है अ अ मनगाई नात सहा यो है (किताव १ - यूक्स क्षेप्र.

सामग्रह

बानपूर्वत कोर में, बीच कर । प्रधीन—भीत की कयात नात पूर-अभन सादि में । काम बहुर की बुधाई वादेशी मोरिट परि १८ माठ प्र ३ मान्सेट् बद्ध

मानकर सोका

भाराय से होता, किल्पिक गहरा । उसेक की हैं हा पुरर्व का कीना । विद्यु पनि बात को सकि होने कोना अदिक के आग्रासी २०१० स्वानी वित्य कर कर करण सम्बो कोर सन क्षत्र कर संबंधि बस्तक कार्य व्युट् कर पर को नि कर का देन करता अपना ना ना कर पन बोसेव--गरिकोध, क्र

साम लोडका

- (१) अपनी बात कहनी। अयोध-- बतुस असथ शान भारता है--बाटमो केथरन नहीं भी पहते हैं, उस माटी के स्वचाय को तो जान हों सेत हैं .बहु०--दे० स०, २०)
- (र) दीन कना ।
- (1) विमी पर पालेश दरना ।
- (४) देश लाम उद्यानाः

तान प्रापना

नाने में नानो का प्रधान करना, माना ३ प्रधोग---वस बाना अ अ संभा, बात वसला, नाम करना और महत्त रहता (भार एक (१ -मारतेन्द्र, ४५१)

(समान मुहा --- सम्ब सारका,--- सेना)

तान लडाका

∙िलान उड़ासा

नाना कसका,-- का इना,---देना,---बारना

१९७७ प्रशत **सानः** छान्तर

तासा क्षापुना

तीतां समजा

ताना हेता

ं नातां कवता

नामा याचा उन्नेष देता

वरत र तथ कर देना । प्रधान गर धरा वस वस्त्रापुर कान र हररण और देवतना रा घाएला गान रत रित्त देवति सनी ने दंग ही जिन्द में दनकर सारा शाना कामा प्रभेद रह रक दिला (क्रेमांक ग्रेमसम्बद्ध ३५४)

शोना भारता

दे॰ दोना कमना

तरना मेहना सुनना

कटुबभन, ताने मक्षमा । प्रयोग—बना से बीन हंगेंगे, भाषार तो हो पाऊ थी । किसी के लाने नेहने व सुनने गणने (१४०,१)—देशकेट, ५२।

तानों से छेदना

बहुत तानों में श्वीपत कर देना । क्योम—कभी एक-आप चीच बन्तु दनवा केती हूँ तो वह प्रदेशों में बहने समर्ता है। मानों में मेंदने स्टब्स है (गयन-प्रेमबंद, १७८)

नाप आरा

- (१) कीय आमा । प्रयोग---क्यो बाब फिरन कीम पर, बानत आर्थ ताप - सुर सार--सुर, ४१००
- (२) ब्लार पाना।

नाप वदाना

विरह भाग दहाना । प्रयोग—भीरदि शोलि कोर्डानका बहुबलि साथ (एडिम स्थित-एडेम, ३६)

नार उत्तरना

श्यार में शीचे के स्थार में अध्यात । अभीय-स्टूर्ड वसक मुक्तां म कार उत्तर विकास के हैं। समठ-स्टूर्डिंग एव

नार कुनार होना

- (१) नाम किन्त्रनाः यक्षेण १६ सन्ति स इसको बाव इसी का स्वर-कृत्रार हो गया है युद्धः अपन्यान १०३
- (२) बरकासम दोना ।

तार-तार करना या होना

(१) वयह का मृत-यून चन्नग-मन्तर करना था हो होना । फर जाता । प्रधास —तार-तार करनन फरी हुई नियं (हो अ इतने अक्षों के मरम्ब माने का नीव में सहस त मां (गीदान- प्रैसकन्द १२१), वीमरी ही कृताई में नमें सपने को कारकर सार-तार कर नेता है (जहाता — 20 ओशी, २४६) .

 ग्रांथ। नव्ह कर देता वा होना । प्रचीत अर प्राप्त विश्वित कोष म वे इन दिएश के होवत का वनी अनी मध्या भी की सार-ताद करके होके बिना नहीं पहुंच अतिताल-महादेवी, धर

नार नार रोता

बहुत शता प्रयोग – ३थ बार-बार भदने मार्थे न उत्थान 81 हर्ष वे उसी करहे बार-नार श्रांष्ट्र रोती रहा (कश्याणी---जैनेन्द्र, ५७)

नार में जानता

भोई वानकारी महोती। वसीय—उने स्थमंत्र कर में काम नेने का कभी मनकर व विकास है है जैसी का सहर भी न बानका का (सहस्ट (१)—प्रेमकट, १३१)

तार व इंटना

नवाओं न डोना, क्या भंग होता । प्रयोग —गुमना बात नक नहीं कोई पर नहीं तार दिन का दूटा (क्यातेक— हर्मकोध, ६४

ন্যৰ ৰ্থখনা

भ्या चा वर्षी वच वाना । प्रयोग—गुनाची नधे में विचार को तार वन्या (गृ० नि०—बा०मृ० गृ०, ३३४); तार वचना व आनु को का है जान भी दिवस्ता नहीं संगती (कुमरी०—क्षित्रीध, ६३)

तार लग जन्म या लगना

- (१) स्थान बेटना। प्रयोग—स्थि वह बर भी बाता नी कर तक बीना पहना दक तक ती नृत होना, कर हरे ! यह बाहे वो हाने धाना था, बाह्ययों का बहा य नार लगने; राधात प्रेकार—संभाव दास ४६२
- (२) किमी बस्तृ की बत्यत इच्छा होती।

नागना

नभार में धुक्त करना । अयोग—कोड किंच वचकी तार हेडू बोडि मही तो धन बात (बाल्यंकार (२)—मारतेन्द्र, ५७२): हम कोको ने नमार को तार तोदिया (राष्ट्रीय प्रयाप —स्मार दास, ६३४

नारीफ के पुल बांधवा

बहद प्रज्ञका करानी । जयाम—फिराबी बाग आई अलिशः वी कारीफ के पुन बाधते हैं भी मेरे बगीर में आय सम चाती हैं (साम्छ १)—सेम्बन्द, ३१७)

(अवार नहार-नाराप्त करने मुंह स्वना)

लारे जिससे राश विनामा

इंनेनी के रान भारती। प्रयोग-श्रूरवास प्रभू वृष्ट्रे रस्त दिनु, रीत बनत पर तारे (सुरु सार्ध्या, इप्रक्रेट); शोधन साथ मनेहर्नदेशस लिनि, नृष्टि वस्त एये तारे (गोसाo(बा)—नुस्करो ६), लारे निनते रास बीनती, नीच न बाली भये सगम (मर्म०—हर्ग्स्त्रीय, १८४) (समस्य भुद्राक—नारे किसनार)

लावें न खलना

दृष्टि एक्टम स्विष हो जानी । अयोग—देखि शोध वक अस् मुकारे । एकटक जोजन चनत न तारे (१८०० (बाल) नुसर्ग २५१)

तरल कटना

प्रमिक्त स्थिति होती । धयोग—गाना धाइव को नाम कटती हुई सी जान पड़ी (बाटी०--निरास्त ९४)

काल क्षेत्र कर नहा होना

- (२) प्रान्तय को सहने को प्रस्तृत होतर (प्रतोष—देशित प्रभोग (१) में (+)
- (३) वद सर सदम की प्रस्तुत होता ।

नाम शेकना

- (१) यूनीकी दशा। प्रयोग—मून्मेशर की ऐसे से कि राज्य डॉक कर माधने घर जाते से (गोदान—ग्रेमकंट,९४), बाल बाल किन ताल नजना, विकोध होंग करे ताल डॉक बंधे पूर्वेया अहै धीर के (सर्वे —हरिक्कीया, १४६)
- (२) पुरुष्तिमा करना । प्रशास—कोमिस का भोड़ वय वर्त्त नं कि कि इस मुनीती के सामने ताल डीकने के विका और कोई बाहु ही न की (गोदान—ग्रेमकट २३४) नास्त वर नासभा

इमारों पर भनवा । प्रयोग--दम देश के हर्गकण जायरी गाम पर भाकरे थें (गुरु निप--वाक मुत तुरु, २१३)

शास मिनाकर बलता

नाप नाम माने प्रदेश । प्रतीम - नीमा मन जार अप रक्षानि पीर शाम के साम जानना नाहता है कि साहित्यक केट नाम जार काम जिल्लाह काम है विद्या का गुण्य रिनाम मोर क्षार बनामा है विद्यान को इस दल्या हो धनिन के नाम कार गान मिकाका नक प्रकृत को हो सहित्य हैं। प्रविद्या कुछ कुछ

(ययः पृत्यः —ताल से तग्ल विकाकर सलगा) ताला जहना - डॉफना

ताना बंद करता । प्रयोग --अपने क्या और विस्तरे मिनेट-विनिधित निकास कर बाहर रक्ता । मकान में ठॉक दिया ताता । चना कामा मोहन बादू के अध्य (क्ट०--बस्मा०, ६०), पर पूजा वो काम कमनता है मानन नह दे उस पर नाने (क्ट० -दिनक्द, १६५)

(मनाव मृहाव⊶शास्त्रा **चढानाः—जक**ङ्गरः— जोडनाः,—भेडनर∤

नास्त्र डोकता

देव लाजा अध्वा

ताली एक राध से त दक्षण जो हाथ से दक्षण एक के दरने से ही अगदा न होता । इसीए—मानती रहित्न हरेकर बोली -लाकी हमेशा की श्वेषिकों ने बजती है, यह बाप कृत आते हैं (गोदान—प्रैमबंद, १७०); हुदिए वाप नाम पीने कर दक्ष बजी एक हम्ब है ताजी वीमार -हरियोश, १६६

नाकी हो हाथ में बडता रे॰ ताकी एक हाथ से न बडना नाकी पिट जाना,—बड डाना,—लग डाना

- (१) क्रम्हाम होता । प्रयोग—नगर्क महामान को है एक पूर्वा, क्रम्बन को तुम क्या केशा । बचा को पानी भी हा विके । जिस्की में विकास तथा हानियों नहें (कर्म0— प्रस्ति : ६३ किसी की पन जिसम उनते न बात पाने पूर्वी गानी (मर्म0—हर्वि और, 6%); बाने क्या, क्ष्यने असर गरिनमां अनगर्वे । प्रेमा0—प्रेमसंद, १%), पीट हें हो क्यों किसी को रीट हैं विट वर्ष सामी बना से विट गई
- . ॰) ब्रांगा शना प्रयास नमान हती कल सामानी प्रसारी बन कडी भूमवान है सामी (भूमतेत नहरिजीय, १३६)

नाली पीटना,—स्जाता

.क्षेत्रक--वृद्धियोधः, १६४ ≥

तक वहुँच सके (१४० (२)—देसबंन्द ४२२) (२) प्रमन्तवर प्रवट करते। ताली बज सामा देव साली पिट जाना साल: बजाना वेव साली पीटना नामा लग जाना वेव साली पिट जाना नाम्य उठाने के दिन

श्वयंत्र के दिसं । प्रयोग—हम रहमें बेम्पे क्या तक बने पोम से भी प्यास शानी है कती, वहां न नमका से हमें सब भी तभी दिस रहे तालू उठाने के सही (कुभड़ेंo— हरी चौध, एड)

मास चरकमा

प्यास के कारान मुद्द सुन्धा जाता । प्रयोग—स्यास कथ की केंतरह चटकी हुई किया अन्द्र नामू न तथ आता चटक बीलत—हरिकीध, १८००)

नाल् में वृति जमका

वृरे दिन आगर । अयोग---जो चने हो जाति वर वृद्ध गृदने योग सामू में सुमहारे तो समा (चुमते०--तृष्क्रीध, वर्ष)

नायु से जीस कगना

कृप रहता । प्रयोग—नीमते वद बीवतं वाके यहे किस तयह तब जीभ नत्त्व है कम (बील०—हर्याच्येच, १०१)

मार्थ खाना

- (२) मनकारे जाने गर जोश में भाना । प्रयोग—मुक्त भा नाम साने पर बहुत सम्बद्ध साते हैं (सासी०—यु० सन्नो, ७२)

शाम पर आनंत

- (१) जोस में शाना । प्रधोत--उन्होंने मुक्षर की कराने का प्रयस्त किया, परस्तु में देन पढ़ा । निस्ती नाव पर का मार्टि (मृगठ---युक दर्मा, ६०)
- (२) स्थिमान निने कोच में प्राना ।
- (३) बोली की फॉक होनी।

तरव देव काना

कोध करता । प्रयोग—जमी प्रकार ताव-वेंच माते हुए कोटकर मुखदेई से बाले------(चित्र०—कोटिक, ७९)

निकड्य भिद्रामा

कार्ष चानाकी की वृक्ति करती । प्रयोग-मृदा कमय, दावरेक्टर देखाई क वहा तिकारम विश्वाया है (वैतरे-अपने १००

(दमार मध्य - निकडम स्वनः)

निकारम सहसा

वृत्ति वक्षण होती । जनाय-जूदा कल्प, देलाई के वहा तिकहम भिनावा है, अस यहां ती जहर बहा देने स्ताब की पैसर्ट -पाइक, १००)

निगर्ना का नाम अवाना

क्ष पुर्वति करवी, हैरान करना (प्रयोग—मै भी वह निवनी का नाम नवाफ़ कि उम्म भर दाद करें (मा— कोशाक, 194 , भार क्षवाय दावनी प्राह्म । कीमा निवासी का नश्य नमानी है (मानक (१)—सेमबंद, २००)

निज्ञोगें में होगा

वित्रकृतः सपने अविकार यो यस में होता । प्रयोज--विश्वारी म रक्षी हुई है किन्ता की मृत्यिकारिकी (उपलोक

रेण्. ५५२१

निई। भूत जाना

होन इंबाय न रहता। प्रयोग-सामने हमारा रहाक हमारा राजा बढ़ा है चीर तृत सब निही भूट वर्ड पुन0-दांव वर्षा, १०५)

जिल्ली होना

तरक-महक बाद सरवा में रहते बाली रही । प्रयोग---र्गातन्त्र में इतका वरकव्य काल हो बदा और देशिया किर्माणया का वर्षे (गोदान--प्रेमसंद, १६%)

तित्क जाना

- (१) क्यह आना । घनोच—मामती ने तिनक कर कहा— कृतिका को नूसमी को क्यनाम करने में भवा आना है (गोदान—प्रेमनंद, १०१) (☆)
- (э) श्रमत्तः वानाः। प्रयोग—नीमए प्रयोगः (१) में (±)

जिनका शहकना

लॉक्क वी आयाज होनी । प्रयोग---वार्णह बार जिलोकत

तितका तोष्ठ करना

नाता तोहना । अयोष---ऐर्स वॉनि वरी जन-प्रोपन, यम मूं तिलका तोरी है (सबीर इंडा०--क्योप, १९४) : निजवा-तोर करह यकि १४ औ, एक वात की मान निक-हिथी (सुरु साठ---सुर ४६८४

निवका तोइसः

- (१) तकर उत्तरने स भिन् तिनका तोष कर दोटका करना । प्रयोग—का वर नैन कलावित आकृति, आणि न तिनका तोर (मृतमाठ—का. १३६३); कावानंत व्याची जुनान तमे वरि वीठि तिनु निम नोतिति है (प्रमण कवित— प्रमाठ, १६३
- (२) बाबुली काम भी काना । प्रयोग—मां-बार के नाक प्रश्रुप में पनी प्रयोगी नवती है । इसम ने निवका उसस कभी लोड़ा नहीं - पैराने- अपन-३०

शिक्षका भी न उद्योगी

तिलका भी न दिलका पाना

गोई की काम स काना गाना । प्रचान—कार्य तीन तीन माहै में कुछ कर के प्रश्त तारा को कोई का नाम का सामन दे कर भी तिनका नहीं दिना सकता । कुछाठ (म)—स्वापान (१२०), केकिन धाप मानने ही है कि देखिए सामन की हम्मा के विश्व हम एक निक्का तक नहीं हिला सन्ते (१९० (१)—र्यमच्छ, ५१६

लिनका सा

बारा मा : प्रयोग—नैन मिलं उन के पुत्र पंछने भाग कृति म सुदी जिल्हा मी (धन० कविश—शनाः), १२३)

निमका भा तरेहना

एकदम मरता तोड़ देना जिना गाँउभव लोड्बेमा । प्रयोह— मुत पति नेड मंगत यह मोर्गी । कम स्थानिक लिन्छा सी संस्कृती । सु ० साठ —सुर, २८३४)

(मगरः नृहाः -- सिनका सा नाता शोहना)

निनके की जोट में पहाड़ छिपरना

दिसाने का धमकन प्रयान करना, बोर्ड में नहीं जात विवाना । प्रधीन—कर्म कुमर प्रमाट देखियत, तुम दून भी औट दुशकत (सुरु साय—सुर, श्वार); मैं तुम सो बच्चो लीवह भोगनि मू तृम घोट पहार चपाने (मितिय सकत मितियम १९४

तिनके का भाग भी न सहना

तिक की बार भी न सहना। अवाय—दुसरी तिनके की बार भी नहीं सह नक्ष्में (१४० (१)--वेमचंद,९३)

निनके बनवाना

- (१) भोड़ लेला, परास्त्र कर देखा। प्रयोग-स्था कुट प्रेम वर्द-वर्ष की में की मिलके चलका देखा है। (भिस्तक-को शक, २०४०
- (२) पायम बना देना ।

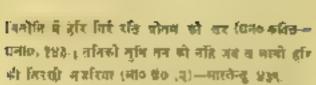
नितके से घरकर

क्ष्यन तृत्व । क्यान—विकित्यरमाद शोद्ध की सकता. तनहीं है पटि बान (सुर साठ- सुर, १६५०)

निराईंड श्रीक

कोषपूर्ण । प्रयोग---वी न निर्म्मी आम से निर्म्भ रहे पर न प्राप्ता विजय विजये दिया भूगतिक अपियोध प्रयुक्त निरम्भी कोंग्ली से देखना, निरम्भे देखना

- (१), बाद स इसना प्रयोग बोबी न बोद कार सत्माय में भीड़े महाय हकी निवधोड़ी (मतित मक्क-मितामा, का); इस बाद में भी एमअले की श्रांकत बादी में कि दोनों पर। में मनगटान होन पर कैसे मिसी मांचों से परवाले उसकी घोट देखते हैं (सतमीठ—राहुस, १०४
- (२) प्रशिष्ट करना । प्रयोग--केविज जब तक बीती हूं, गुण्डारी धोर कोई तिरुक्त प्रथ्यों के देख नहीं सकता (पानक (१)--केम्बन्द, १९)
- (वे) बहा व करना । क्योन—जुदाको कसन र मेरी तर म निरुद्धी नजर से वे देखों (परीक्षां)—ग्रीठ देवस, १५४) निरुद्धी खिनवन वर अज्ञर
- (१) जिनसंभित कियाने हुए बगलकी ब्रोट कृष्टि । प्रयोग ---रुपना करि २० पर पर बगल अभानक दिस्ति परी दिए (प्रोट क्षाक्रिय-स्क्रमी, ३४
- कटाख, वेनपुर्ख इंटि । प्रयोग—र्नन सन्यादे तिराह्ये



(२) रोपपूर्ण दृष्टि । प्रयोज—वद इसे लिस्सी नियाती का मही दिवस सब बण प नेकर पर पहें (वोसेंक—हर्गकीस ५२)

तिरछे देखना

रे॰ तिराठी शांकों देखना

निग्छे होना

- (१) अनुकृत होता । प्रयोग—विपत्ति काम नृतिरह, तिर्देश भौगर अभी तिर्पेशी होई (मुर्व सार्व—स्र, १०)
- (२) प्रतिकृष्य होता । प्रयोग—यो न तिरखी भाग न किरम्भ रहे कृष्य न पाया तो निषय विगम दिया सुमते०— हरिजीक्ष, १२१

निरिया चरिकर करना,—जेलना

किन्नभी का नाम पाननाः । प्राणमा—दोन करत कर बहु विधि शामी । जुनि कुमरी निम भाषा आगी (राम० (भ)— तुलकी, ३९१); अस वैठ नदाई करने भाषा है। मुख्ये जिल्ह्या वरित्तर पत केस (रंग० (१)—प्रेमकट,३९६)

(समाव मृहाव-चिया चरित्र करना)

तिरिया सरिका संसमा देः तिरिया सरिका कामा

निन्द को साथ बनाना या धनाना पराय धनाना किसी सोही असे भी बहुत वहा देना । अभन-नृष्टारी साओ ही पीटनी रोग वो निक का साइ बना देनी है (मृत्य-पू'o बनी, ५५) : गूम नदी जानते मार्च पूनी बानों में निज कर तार्च बनने देव नहीं अगनी (करवाणी— सीनेनह, ५०) : जी आत्मक्यना के सायक विश्व देवना के पहाज की निज की ओट कर, अपने जुट निल से दुल का पहाड़ बनाकर विश्व हुन्य पर स्वका बाहते ही (कला)----पंता, करें)

(वता» युहा»—-तिल का काढ़ करनाः, चटानाः,— पहाड करना)

82

O P - 185

निस का पहाड़ कराना है। तिस का नाड बराना

तिम की सोट पहाड़ कामर

नामान्य धोटी करन् का व्यक्ति में बढ़ी बात क्रियी होती। प्रयोग—नृत निक के वैक्टिन सिए औट में में दहाब (सोट— बक्कन 234)

तिल के समान करता

र्कर-ट्रुक्ट कर केल । प्रयोध--- निन्द के सार्व तिल सम क्रिक्ट क्यूबीर (रामत (स)--स्वसी, शहर,

निस तिल

प्रान्त्या तथ, अच्छी तरह । अधीन---हनकी तून-सीमृत तरि आमे दिश्व-तिम सेट करावे 'सु० सा०--सुर, २८७४) ; राकाम करका को यह कहावी तिम-तिम बाद की (त्रह्य----टेठ सठ, दय)

निस-निम कर

बोदा-बोदा कर । प्रयोग—कल्प सनाव देति हठि वादी । भिन्न निम्न प्रांत प्रयासन कर गाडी पद्धा-- उत्यासनी, १६८१ - नव निम्न क्षार प्रांत राम प्रवासित के गांच बना-१८० - भोताव हर नुसको ३१ , होति है करक पति वती न भिन्नोत गर्नन जिल्ल-निम्न काई पोर पत्री विरोधि की (क्षार १०—मैनापति, १६); ब्राह्म निम्न-निम्न कर देवना चाहने हो—मी वह नो हो रहा है (क्षारकोची—क्षेत्रेन्द्र, १६),

तिन तिम पर

बरा-बरा देर वर । अयोग---रानी बी, तिल-तिल वर यहानी हाओ रणव , प्रेमश्रद भ्रम

नितः भा

बरा बा, बोहा बा । प्रधीय—नर्व स्थादमा वै किया, हरि वा घोर व कोई । किन इक घट में संबर्ग, तो धव तन बच्च होड़ (कबोर ग्रामा>—कबोर, १७) ; रहेड बहानव गोरह बाई । किन् बरि वृष्टि व सके धेहाई (रामा> बाहा)—हलाते, २४९) , हाल वे किन बर की ध्याह म बी (मान्स (प्र)-जेमकन्द, ११५) ; वर उनमें मेरे मा होरे हो सेंग नि मध्यान, बीयन संबंध में बके-हारे, प्रा-मृत है बटकते हुए परिको के भिए कही तिनवर भी स्वान नहीं का (खहरज़ं≎—10 कीशी, ‡०)

निन्द धरने की जगह न होगा

- (१) जरा भी भी जयह भागी न होती। वर्षाय— सदालत के कमरे इसाउस वर नमें थे। तिल रभने की जगह न भी (भागत (६)—प्रेमकन्द, १३); जलह के दिन हाल में तिल परने की अगह न भी (मूट सुट—सुदर्शन १०६)
- (२) कुछ कहते या करने की स्वाहक न होती । वर्णन— ''नूम हंगने क्यों हो ?''—अस्ताच होकर प्रेमकमान ने पूछा । ''दशस्त्रित कि तृत को कुछ कह गृहे हो दसमें करो जिल स्काने की भी अध्य नहीं ।'' (शिली- निराता, ११६

तिल माच

स्थित भी । प्रयोग—साम्र काषायी में सी लिख-बाध पश्चिमंत्र भी नहीं सहस किया जाता । वास्त्र- हर प्रव दिसंद, १८५-१८॥

तिसक करना या होना

श्रक्षमही वर वेंक्स्मर वा केंक्स । ज्ञाने—अस कवि राम निजय तेंकि सारा (रामक (द्वा)—कुमसी मध्य अस्त सर्वोह कीसमयुरी होक्सि तिमक सुम्हार (११०० (स)— सुमही, २००४)

क्रिक्ट धटना या बढाना

भिवात की एक एटम । प्रयोग-क्या विशे कोई में पत्र प्राथर नव्यक्तियाँ नीम है उठा नत्ते । भी को ही क्यू क्यारों ने हैं सिल्फ केंप्रक बढ़ा माते (क्येरीक-हर्स और) रहात

निर्लासमा ३७मा

किमी कटबात के श्वा सहारा उठका । प्रशंक — तो दिन पहले नीता के केंद्र होने पर भीता के बेदरे पर भी कुछ गैमा ही भाग उम दिना पा और उनके पर विश्वित मा गढ़ा पा नदीन— सक्त से १६६ पा आपन सहका को प्रोम समाने देखना विश्वविद्यालय है देलों। प्रदेश को

नियांजीत देगा

१५ शाह एम् प्राण दस्या नाव्यस्थ नहेंग देवत १ तत्.

इस में बारणा अ अ बीर वर्ष की तिमालिंत देकर उनहें बार कही नामलों में बहायमा ने बिहाराम पर जाप बैठ यह (ग्राप्टाठ ग्रंथक: -राष्टाठ दास, १६६) ; जब तो हमन प्रयास अ अपना मुद्द परणा है और इस मुख्य दिन के भारत्य में बात हमें अ अ अपने देक्य को तिसालिंग के देना चर्रात्म (गोटान--देक्यन्द, ६०) । इसमें बही पर सकता है की यां, बाप, घर हार, जान ग्राप्ट सब को निमालिंग है है सिलाठ--कोशिक १६३

(२) हिन्दु वर्ष के प्रमतार जनक को तिम-जन से अध्ये दमा । प्रधान—वहि विचि दाह विचा मध कीम्ही । विचि-का नगर निमार्जन रोन्हीं रामण प्राः—वृक्षसो, ४३२)

ताचा प्रदन

वट् वचन । प्रयोग—समस्कान्त नीयं प्रवर्गी में बोले---चिन न रत्या नान्य नो मीच सार्थानं" (कर्मक मेमसद १४ - मून का चाहित नहीं कहना बेरन क्यूकी कही, कृष्टे नीओं: मोसेक--हरियोध २५.

नामं देवना

कटाओं कंपना । प्रयोग---नीओं हेरि चीत्र गति स्रोत्ता । कर म हेर कीन्द्र विश्व चीटर विद्युक्त--साध्यसी, स्वाप्ता

नीम की दी के

बस्तम्ह दृष्णा, विश्वका कोई मृत्य स हो, क्षेत्रितः । प्रयोग-शामिक के प्रदर्भ में तो तील बहे-वहं सहके हैं, विश्वका तील कोडी के (सांग्रह (१)-प्रसम्बन्द, पृष्ण) : बह बनेवा तील कोडी का न क्षेत्र किस किसी के हाथ में दैसा न हो (बोसेक-हरिसीस १३४)

नीन काना नेरह का शुख बनी रहता

कभी बताब्द व होना । प्रयोग—अब तो नह समय सगर है कि ठीन कायंद्र तेरह की भूग सभी की बनी रहती है कि पीठ—केठ लात मिठ, १५४:

नीन नेम्ह क्यमः

() एपर धर काला । प्रयोगः भ्रम्भ गोस्हा सुन् रति साजव राजि प्रस्ते । शिक्ष शांत नरह सुन् भीतः रोज साव अंग्योगः भ्रमाने हु भूपेश्व (२) वर्षोग्यास्त

र्मान शेरह बकता

इमर उधर की बार्ड करनी) प्रकोत-चीने रोयहर की पृथ्य को बीच तरह करने जमा वा (चित्रक-कीशक, १०४)

नंग्न नेयह होता

तिवर-विवर होता, घलग-भनव होता, नष्ट होता।
प्रयोग-— अ अ पनी के विवर्गत हम देवल है कि कार-मैशिक बन्धत में होने से बहुत नस्य हमारी जाति तीन सेरह हो गई (मह नि०—हा० भट्ट, ६०-६१); विधिन्न रिवरों में यदि इनकी मनान न होगी के क्या उक्का कर को तीन तेरह होता ? (६६० —का० नीठ, २१६); अविध्य की कार्द में पक्का परियों की तरह विकर कर तीन नेरह हो गई (तितल)—प्रसाद, २१६), में यह बाहती है कि वाइन्यों गई (तितल)—प्रसाद, २१६), में यह बाहती है कि वाइन्यों गई कार्द, मरी दोर वहनाये उन्हें हुई बहन्यों शीक नेरह न हो (म)—कोशिक, १६)

सीत पांच करना

वालाकी अपना, गरबह करना । प्रयोग—वेने भी कर दिया है कि अगर को बुरवा तीन पाथ करेगा, उनकी और देशनों पान कालान करके व तेगा कि गरुन देखान लग्छ। भगाई की, यह कीड़ अमका गर्न है से कोठक—भाव माठ, १४६८; बीन पास भी करें उने को से गाउड़ कर-वाळ (१९०—भाग ६२)

नीत बुलाय तेरह भागा

भाग व्यक्तिको को निमाणित करना पर शहरो का उत्तर पहनर । प्रयोग---नीश बुनाए तेयह वर्ष निम-निम दिननः रोम् सुनावै (Mo do (२) - आस्ट्रेस्ट्र, ५१०;

मीन स्रोक से भ्यारी मधुग बसाना

सबने अलग होना । प्रयोग—एंदे शोग कीन-पुनिया ने बेलकर रहकर तीनों मोको से स्वारी वस्त्री सबूश बनाया कारते हैं (मेरें:>- गृहाबा:, १)

मानों त्रिभुषन स्कार

गर्जा शाम शास्त होना । प्रयोग-क्ट क्कीर मा वर की सक्ते ताल जीव्य विभाग गूरी कवीर ग्रंशांक केटीर ५३

शीर का सग्ह

(१) क्ष्रुल लीच वर्ति है है प्रयोग -उन्हरून यह कपन

समाप्त जी त ही तावा वा कि कार्टी के भीतर से एक वंदकी जुबर कोर दी अबद्ध विकला (निकाध--कीशिक, १३५

(२) सम्बन्ध कर दा आंक्य । अयोग—समी देस विक योग् कराही । क्यम कान क्षम आवर्धर काही (शाव० वा) शुल्लामें ११९८)

नाव सामा

तीर का भाषात भरतर । अधीय-जूर वर्ष करते हैं भारी वान तीर भार्त को (कुक्क-दिनकर, धूर)

नार बाद मीर बाह

बहुत पूर होना । प्रयोग — सम्बद्धी और विश्व के सनुप्रष्ट से तब दक नवी पुरुष शोर्षे एक शीर चाट एक भीर चाट रहे × × वह देवदव इन लोगों से शही शहे शबे (भाव इंक (३)—भारतेन्द्र, ६३८

र्तार छोडमा

- (१) वृक्ति विदासा, रंग देव समाना । प्रधीत-वृद्धिता भी ने यह वर्षन्तम शोर छोवा वा (मा-क्रीफ़क भूद
- (२) काथ करना । अयोग---वजी राजी ने एक तीप और खाड़ा ''ऐसी मोथा कारगी हो महने बराबर स्वीमय ' मुगठ---व क्यों, ३६८

(यमाः मृदाः — नीत बलाना या फेकना) नोत दिकाने पर वेटना जिल्लाने पर तमना, बेटना

बात का ठीक एवं वाधित अनर होता । प्रधान—सिन्दी ने पूर्वी विश्वनत्त्व के काम ताह नियं, उसे मालूम हो प्रधा कि तीर डिकाने पर केंद्रा है भूतिय—स्वादक्षी, प्रधा, काको पुर रही । बाई कम । पिस्की ने सोचा तीर वा केंद्रा (सुगठ—पूँच देगी, २४६), प्रामीकाम ने देखा, तीर निस्ताने पर कक्षा जा -कोलिक, प्रव

संहर निशाने पर समना देन सीर टिकाने पर बेटना

नार बैठका

रे॰ हीर डिकामे पर बेडना

नीव-मार को होता

काने को बहारहा या भारती गमधना । प्रयोग-सही

नीत्रमारकां हो । समार्थे तता ही अर देतो पशीना ना

र्तीर आवना

सफसता प्राप्त करनी मा बना भड़तनपूर्व करन करना । धापने प्रथमा कृत प्रशासन कोन ना नरेर कार नियह ? (मानक(१)—प्रेमधन्द, ६१)

तार हाथ से निकस जाना

आह् (स० स०—स्टर्शन, १९०)

विवर्ति क्या के बाहर होती, कुछ हो वाली । वर्षात --- वारं, प्रश्न तो तीर हवारे हाथ वे विकल गया (केमर--- वंधवद, १६ (यमर-- बुहां ---- नोंद हाथ से छूट जुकता)

मीपमार को बनना या होता

भवने आप को बहुन बहादुर नमभना । प्रयोग — रहती को साथ बनाकर पीटो और जीनमार वा दनो गोदान— पैमवंद, घंद) ; बाजी यह वो बाज वह जीनमार वा बजने हैं पांचेस दभन पार्मा उस दरभशक शेंग है शक वी (अपने समर नचेंग, धंर

मुंबा-कोरी करना यह होना

बंतर-पूनर कर देता, हमर-उचर कर देता । प्रयोग---वश् श्या-केरी किस लिए ही भूति है, यह न दूध जानते हो व हम (बीटो०--- निराला, ९६)

नुम हाल-हान हम पान-पान

भरेरपाइत स्थित पहुन होती या होर्राचार हेन्द्र । प्रयोग—बह राज-राज, में पाल-पाल, वह सुकते पार न पारेवी (मुख्—भरा ४३.

मुकीं-ब-मुकी जबाब देजा

मह लोग प्रयास केवा । प्रमोग-उन पर इसके म रहा गया ती किन इसमें भी तुरकी-अ-तुरकी समाय दिया (पृतेक-भगव समी, १९६), मेकिन यह डाट भी परवाह न को चीर तुर्की-य नकी प्रयास के तो भी पास तमार लीज मा तम्बन है जिसमें में पर नाइना द मना भानव ३ - अस्बाद २०६

नुगरं पह

प्रसार भी इतन कीर संबंध क्रिक्ट दुन्ना है। क्योंस = क्षेत्रमा । पर समार स्वास्त्र क्षा । । स्वास्त्र स्वास्त्र

वृशं होना

राट होना । प्रयोग —राम ने सुध पूर्व होस्ट सहा—रस राम को रहम दोविता, टावेश वी (परन—प्रेमचंद, १९१)

नशंक होना

(१) नाराज होना । क्योग—यहां तक कि हो मौन स्वय इस मैदान में करण बदाते हैं क्याने मानोजना होते देलकर वहीं नृतंक हो माने हैं (गु० निठ—मा०मृ०गु०, ४२७)

(२) नीले मिक्क बाला होना ।

क्लो होना

रहे होता, उत्तर होता । प्रयोग---नवीं दिखाने में अमृद्धा रीय की प्राप्त की विश्व पाट दिन की है तुनी (कुमते०---हरिक्रीय, हां

तृ कुकार अस्ता था होता। तृन्दु में में होता

विवाद करना वा होना । प्रयोग— पानिया तो क्या (वे) कियी में मू तृकार भी क करने मानव (व.—प्रेसचंद, वद , इस पर हमारी मून्यू वे-वे और नहीं कराव देवनव, इसका ; मुखे तो यह इस अवह को मून्यू अन्ये बरण करी परका दक्षी है । प्रदूषक के एक्ष्म प्रमत्यामां दक्ष किया म यून्यू के वे होती की किन्यू माहको पर इसका अवह न परका का (ब्रेमाक—प्रेमचंद, ९)

(नमान पृह्मक-स्नाहाक)

दु-दू में में बोना

हें। त्-तुकार कामा या होता

तृता बोलवा

नुक करती होती, जून शभाव होता (प्रयोग—जब मेरी तृती वोत्रको, तथा विकाउँनी पुत्र (मुख्य— शक्त, ६२); बहुर-राज के बाद या बहुना काहिए कि कहते यदिक विद्यासन य उन्हेंको बनो कोचनी नी गोनी—सनुष्ठ १३४ १मा नाव की तृती कोचने जनते (१६४०—देमधंद, १४)

नुष्ठान जाना

) कोई कर्यत के प्रवाह को केने में प्रांता प्रयोग विकेषा का नगरन प्रवास केन में पहा आ एक बा जैनने -अफ्टक क

f. Antan mari

तुफान वंद्रामा,—लहा करना वा होना

भगका समद करना हमचक ना भारतिस्म कहा करना । भगोग—अगर की इसक इनाके में यह नृत्यन म इदाना भाहिए चा (कर्मक-प्रेमचंद ३१४) । जनर यह क्यानी भागानी से दयन सने तो अदा बदा की बात पर नृत्यान सह हो आयों (कर्मक--दोमचंद, ३६०)

सूफान कहा करना वा होता देव मुफान उठाला

वफानी शौना

- (१) वेज हरेगा, तीमा म्यांश्व दोना । प्रयोग--शृहता कभी गुकामी ही रहा दोजा (जैसर० (२)--ज्ञान्चे व, ०६)
- (२) असेजनापुर्ण, अवसर। प्रयोग-सन् ११२०-२२ के नुसानी दिल में (निशिक-सिक्टक, ३८)

तृतं वर्षिमाः पशर्मा

विभी बाध का बहुन वह जाना । चगोब—न खेटी खेटी बात करन कहा गम पकर महत्ता है भूनें अधिकारी क्षण प , एक बार बद्दादाया स गारी कतोती है ही जान कृत पकड़ने बाधी की ,मैलां —रेमू, ६) ; पर यह व मनाने ये कि नामना बसना मुल कोचना (मानक (२)—देम-चंद, १००)

क्ल देवा

मानाम्य ती काल को बहुत बद्दाना-बद्दाना । प्रयोग—किसी बास को तसने तृत्व भी शही दियाः (गुंवनिय—बावमृत्युव, १६३०) ; अपर से बहुत को तृत्व देना उपित न नवका कर्मव—ग्रेनचंद, २८३) ; मेकिन उसे तृत्व न हैं। अपनी ही बसनामी है बौनेव—नाव्याव, २०३।

(गराव मृताः —तृत तथाल करना)

मुळ प्रश्तहता

२० तृत्र स्थीयना

मृण को दब भीर एक को मृण बनाना

निर्मल को बनकान प्रोट बनकान की निर्मण बना देना। धनोद-नृश्य है कुलिस कृतिय दूस्त करई (शस्प (स)---सुलसी, ९००)

तृषा निजना,—सम्रात निजनी —सम्रात न निजना मन्दन कुम्छ गयभना । प्रयोग कल गयान केलोकी 83

O P. 185

ननहीं (रामक सू) सुननी, प्रश्नि : दान नके वर्ग सन पुन मारे पुनर हूं को, सनक मुरेस सहादर्गन के में मन को (शिक्त प्रश्न-सिक्सा, १५५) : यह न पिन्स विनद में का दिन परन यह बज सान (शांक सू । अध्येष्ट्र भ्रम्भ : शांक्याय के दूस को सन्यस्त्रिय को नृत्य विनना है भागम निज मुख के पिन्ने (वैदेहिक-शृह्यक्षीय, ४५) (सन्ता मुहान-सुन्य स्वापन म नामसना, स्वापन

सम्बद्धाः) वृषः प्रदर

नाना-पीनर, वॉक्स्स । प्रयोग—वको कही तेनी और बाद वहां नुस्तव का मुख पावें 'प्रेम साठ--सठ काक, इद नुष्य मोटना

- (१) विसी मुन्दर कानू को लगर से बचाई के किए नियके का ट्रेनका करना। एकंच-न्याम गौर सुन्दर दीठ जीवी। निरमदि स्वित करनी तुम लोगी (रामक (बान)— दुसनी, 200): भूनव में मोट-बोट होन चोड रंग और, विस्थि स्वित बंदराय क्षि विसे तून होटे (बंदर ग्रेशक— नेदर, 24%) , हरीकर यह स्वित मध्य समृद्धित तूम तोरम स्व वाम (सीठ एक:३)—सारतेन्द्र, ४२) , वह विशोधन वो सम बाजिका स्वर्थनया स्व वी त्यंच लोगते (प्रियेठ— हर्गयोध, इ
- (२) क्यम कोतना । प्रशास—(कभी) शत की जीवाल बोमी वर्ष कुछ उसी नीर (सुध शाध—सूर ४६३७) ; राम विक्षोंक वर्ष कर जोरे देह नेंड सब कम तृत्त लोरें ,रामठ का -- मुलसी, ४५०

নজ-পাস

तिनक भी । क्योच—यो तुन-भाष्ट्र न्याच करी प्रमृ करि तामकन वै मेह (भार प्रश् (२)—भारतेन्द्र, ४४१)

SMEL

- () अध्यान तस्त्रः प्रथम सन् शिव तनव प्रथम प्रत प्रश्नी । नत्वन व कड् शृन सम प्रयमी ,राम० (स) — तृत्वो, ४०%
- (१) शुप्त भी नहीं।

तुषधत् तजनाः—समे तजना

(१) सर्ववा तय देवा । प्रयोग—कोई परवार्ग की ही भाग पृथ्वार्ग वाल कर घर बार तृष्ट सा कोण देवा है (माठ संक (१)—भारतेन्द्र, १९६) (⊕) ; विज के दुल तृष्ट भाग समित कीच कोच प्रया धनीन (१९६१० स्वा)0—स्टाउ दास, ७) (⊕)

(२) तृष्ण समझ कर के श्रोड़ देगा। वर्णय—विकृतत दीन वर्णन प्रिचं तम् तृष इक्ष वरिकृते (१४२० (८४)— मुलसी २६) , देश प्रयोग (१) मं (२) भी

तुष्य स्तम तजना वेश तृष्यदम् सजना कृष्य समाज गिनना देश तृष्य गिनना कृष समाज व विवना वेश तृष्य गिनना

सृष्टा शुक्तमा

(१) कृष्णि होती । प्रशेष—तम मुख वैस्त्रे वीर प्राप्ति वै सक्तम तुवा वृ बुधावी (५० मा०—सुर ४०६९)

(२) रच्या पूरी होती

सुध्या स्ट्रास

रक्षाको का नंग होना । प्रयोग—जी नर्गय कार न परई । तब निय नाहि को निस्ता वरई (पट०—आधारी, ५७७)

(मगा० गुड़ा०---तृरका जाका,---वांत होना)

नेज गला होना

नाबान तेज या मृत्ते में होती। प्रयोग—इसने इस साम भाग भी नहीं भिन्, इसके शास एक क्या जी न का—तेज नके से वंकित ने कहा (किसी—निराला, ६४)

वेज निगाद से देखना

कर्ट दाना काम पूर्व देन्द्र में देखना। प्रयोग — अट देशका दिन्य गंबाद है कि साम तक मेने इसे कभी अप निगन्द संभी नहीं देखा हैंगेठ के प्रसन्दे स्थाप

तेज पदना या होता

नार प्रकार प्रमाण-अल् बना रहा अने है से कह

कुए का सरकदार नहीं हूँ (क्दोबार-मी० दास, १०६/; कालो तरह तेज वहा (मुगठ--दुं o ठमो, ४०)

तेजा जाना था रहता

शास में का वार्यासन से वीवना लागे। प्रयोग-सन्द दस दिन सही तेजी पही. तो एतन से पृष्ट पुराये की सौबत स अन्त्रेगी (गान-प्रेमकन्द, प्रथ्न.

तेल की धार में होकर देखना

तथना, रष्ट होता। प्रयोग---तमने बन्तदाता में भी शिकायत की, दर जन्ताने भी काम नहीं दिया। दगी से वह तथा कुछ तम की बाद में देखना मा (गोसी---वह(थ, १९०)

নাম নিকামনা

(१) वहण संत्यतः करानी । प्रयोग—स्यो न को गंगे शाक्ष का क्षित्र के । आंक्ष का नेण को निकासको (कोसे०— हारकोश, १४)

(२) सार-नार ने नेता ।

नेजी का बंद होगा

हर समय काम में सका रहते जाना व्यक्ति । प्रध्यः— प्राप्त प्रमानक नका नहीं तम तक, वा बना श्रीम केन तेली का मोमिल—हरियोगं, १६२)

नेपर अच्छे न होना

पुन्ते में होता । अयोग---क्यों कुरे तेकर किसी के हैं कुरे पाएक तकर अगर अभद्रे तहर बोल्य--हरिखीध ६७।

तेषा सदता - पा वह पहना,--वदलता

भाषित होता । दश्रीय—इनक बाय-दाद , - दुक तो नेगरी पनी दलन म बहुन हान च इंगाम—इंगाम पदः) मर रेम निर्देश किंगाता का नहीं दिख्ये सम बल म नेकर पर पर करेंमें । व्हरिक्षीध पर काम को नेवर विका बदल पार भी बना नेवर म नेवर पना बीहरू— हरिक्षीध ६३ अने दर मान्य बद पद पर ने हम नेवर बदले कमा प्रस्तुत हरिक्षीध ६१ में भीध-शिक्ष कहना ह तो नेवर बदलते हो प्रमान न्यामनंद द), बेदम पराव देसर का बद मानी और नीम्ब हर पान है इस अकारों के बबर पर गरें हो, मनी कावी भोड़े इधर-विद्युष कर और भी कावी हो नवी हो (नदी०—अक्षोय, १९६) (यमा (महा०—सेयर विकटना)

तैयर पर कत गहता दे॰ तैयर खडना

तेयर बहुन्द्रता दः तेयर बहुना

नेपर सहसा

कोष सहना । प्रथान--भी पड़े किर पर, रहें कहते उसे पर म और) के बूरे केपर सहें (शुभवेक--हरिश्रोध, १५)

नेहा बढना

गुल्मा काना । प्रयोग—फिल भरे मा तुमका नेहा नदी ती गरजै-मरले जनिही (बृदि०— क्रथ मा०, ११२)

मोइ करना

सै करना । प्रमान—सम्बद्धा बीम पर नोड करिए । बहुत बारा मान है । कीमा गरेश रंग है वैज्ञालीय (१)—बसूर्य, ३४८)

सीद्र-क्षोद्र करता

मोल-भाष करना । प्रयोग लगै याना है अपने बण पडने भार क्षेत्र में कमार बड़ा स्वभूष - उत्ते⊞ा≎ आं≎ द'स, १४

शोह देशर

- (१) काम में न जामा-—हटा देना। प्रयोग —जोवी में समाह ही एक हम तोई की मीट चनों को देखां हो (मानत ,१) —प्रेमकट, १२४
- (२) जानसिक कर में दुशंग कर देना । प्रयोद-स्था वेज का जीवन भूने नोड़ रहा है ,सेसर (२) - अंक्रय, ६०)
- (१) जन्यना दुर्वन कर वेना ।

भोड़ खेंगा

बहुका कर अपनी छोर कर लेना। प्रकोश—कोई अमासिओं को कोडना है कोई को नोस्सा है (प्रेमाठ—प्रेमचंद, ६६)

संख्यार्का बान

भेट-माब पैटा करने नाभी शास । प्रमीय-अनरेशी सामन के प्राप्तम में मेंनी नोइशाली बातरे का महत्व है (बॉटोक-निशक्त, १७) नोनाच्या होतर

वसराज्य होना । इहीकः स्थान इतको बहुत अवहा साम हुना होया परन्तु झन्डबढ़ के सब "तोशाच्छम" हो गए दरकार और दास ५०

नाने की तरह अब्रि केरना,—बदलमा

🕩 बर्धात हाला ।

ताने का तरद आंख बदल्या ८ ताने का तरह भीने केरना

ताते की तरह पट्टाना

(नगा: नृहा:--तोने की नरह रदाना)

नोका किल्डा करना

त्ते विक्ताते या दोनता दिशाने तोवा करना । प्रयोग — विश्वेचा गुजारी मुन्तर त्यी वाने का लोग किए प्रतीक्षा में बंदा रहा कि तब तक पर्काल की हांक पृहार पढ़ गर्ग, मोबा किन्यर एक वया ये कोई — संग्लात ताल, प्रक

(मयाः पृहाः —सोबातिहा संबाता)

नार-मार करना

बादल में कहा-यूनी करनी, बरना नराया करनर १ प्रयोग — इनरे तोट मोर क्यों न करें, क्यों नहीं क्षाचे सुम मलग रहते कुमतिल—हर्तकोध, १६८)

शोर्ष छोंचना

बीच में कूद कर कुन गोलना, बाल की बीट रंग देया । प्रयोग—नग्ध काला बोचा—वैसे ही तोरई घोकना है. मुक्तको बात कर नेने दें (मृग०—दें 0 दर्मी, १६०)

तोल में जोचा दहरमा था होता

जान करने पर जिल्ला कोटि का ठहरतर । पर्यास-आनत



हो वाको पहिचान्यो, निपटहि औद्यो ठोस (पु० सा०— मूर ४४६८)

सीव-मीत कर

बहुत समाम-संभाग कर । प्रमोप---वेशक सही कर्या रहे है ४ ४ एक-एक बनव, तील कर भिष्या होता है सुद्धाठ (१)----क्रमाल, १३); बहुत तील-तील कर यूह से सब्द विकासी में (सेवाठ--वेशकन्द, १०१)

तीलक

परीक्षा केना, संस्था नवानर । प्रयोद-नयो न वस की तील में, होगा कुरा, बात भी में बे-टिकाने की कर (मृत्यीक-नृतिकोध, दश्); उत्त रक्ष्या की देन एक दिन यक्षवर का यन दोना किर बहाब दर उर्जू की वानन की उनने तोला (बह्मठ-दिनकर, २३७)

र्त्यारी श्रदना,—पर (में) कर पहना

(१) क्रेम सामा । प्रयोग—पर किसी ने संनीम को समास नहीं क्रिया गढ़ की पोर्टिंग्सो पहाँ हुई वा कर्मक दमलद हुए। ; बाई की के नज़र पर बक्फ की हो सक्टों का नां सामाजी की पोरियों नड़ गई ये केंद्र — घठ नांक १५३ , राज्य सिनावी क्रमी चीते गहीं, बाजी कर बाजी हुएकों है अ अ वर नैवान में हुटे एहते हैं, इनकी श्रीरियों वर बान मही पश्च (राठ (१)—प्रेमकंड, २०३) न्वारी बदाना,—कानना,—पर (में) धल भाना

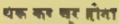
कोबिक होना । प्रयोग-नाम धुनत ही हुँ वसी तम् भीरे मन् और रवे नहीं वित श्री रहाते अब बवाण त्योर विहारो स्टार-निर्मात, प्रयम स्थान स्थानका एस कृद्ध त्योर हाने बानो अवस्था के प्रयान की जवा है भूपण प्रवाण-स्थान, १४२) , हो अभिनानी भनिको की दुसकार मुनकर स्थीरी पर बन नहीं बाने देते × × मो अपन पार प्रमा । ६५२ चन्द्रस शुनकर भी क्यो धिनन हा सम पार प्रमा । ६५२ चन्द्रस शुनकर भी क्यो धिनन हा सम पार है ने बनमर होकर और है (विहास (१)-- शुक्त प्रमा , स्थिता ने स्थोरिया पश्यक्त बना-नीते भर में नहीं है (मानव (१)--सेसक्ट, ६)

(समाक मुहाक-स्थीरो **बर्ग्सना,--पर** (से) धनः इत्तरमा)

त्यारी हातमा

क्योरी बहामा
व्योगी पर भेर पर भाना
क्योरी पर भेर पर भाना
क्योरी पर (में) पर पहना
क्योरी पर (में) पर पहना
क्योरी स्थारी सहमा

सब दण्टी को इसने बरमा ! प्रधीय—अरमु नाम पद्म ताप नमाचन (राम० रच्च)—सुस्तरी, ६३४



बहुत पक कामा । प्रयोग—सारी वेड बक कर जूर-कुर हो रही भी अ अ पर बह संकल्प में कामी बाजाबी की दवाने भागे नहनी जानी भी (मान० १/—गेमबट, ३५५

थपेड़े जाना

सभाद में पहला नियक्ति सहती। यशाय-अध्य पहे हम गहीं बारत में, कब बगेबें रहे नहीं खान भीतक -हरिसीध. १६५

धरपङ् नाना,-अधना,-असानः

- (१) शब्दा सम्बद्ध मिलना या देना (ध्याय) । प्रयोग— मैं जो समध्य कर कहता हूँ, दूनिया में नहीं बच्चड आकर सीखेना (परस्र—जैनेन्द्र, ६१)
- (२) अपमान होता या करना । प्रयोग---उमे पना संस किसी ने उसे भव्यक मन्दा है (केंदर (२)-- सक्तेय, १०५) अस मध्यन को जन भव्यक नवा बिन्नभ' प्रसन्द १६७)

थप्यक् भारता वै॰ **धप्पड़ का**ता

धप्पड़ लगना वे॰ धुरुष्ट जाना

ध्यं भार कांच्या । ध्यंधरण्या सन्यन्त क्ष्याते स्टिट में कंपम होना । प्रयोग—चर धर १८६ १) P = 185 कार्यात पुर कर साथी (रामक (का)—सुलसी, उपकार मार्थ यह धम वं के हो भगवते केसरी सर कार्यर संगतन तो मान नार्गय भी का (बोल्ड०—हरिखीध १०००) : बोली गया वे बार-वर कार्यो के (नवन—डेमकन्द, २०)(मृत्वका का नाम मुनने ही यह लोग बरदरा रहे हैं (प्रेसाक—देमकद, १००)

धरधराता रेश्चार धर कापना

धरोनर

वय में बातकित हो उठता । प्रयोक—किमके पर में भूगी भाग नहीं, यो केरा व्यक्तिहर है, को मने साथने पात करत हम पर्गता है—की में स्पत्ता समग्री बनाक (भिसाश— कोशिक ४३ वर वह प्रतामी नूर्यात प्रशासी जीका के भागने साथ में मिन बयु, जिनके सिहतार से दिक्यमा बर्गते से (रंगक ३)—केमबेद, ३४३

धल-धल फिल-पिल होना

धाना बैठाना पुलिस का पहरा बैठानर । ज्ञयोग—बहु का राज के नवर में इंग्रोग के बचने अपना बाना बैठाया (प्रेम साठ—सठ साठ, १४५)

चार्ली बजाना

- (२) बाली स्वाक्तर मंत्र में बल ते विध मीचना ।

धाह न होना

धराज न होना । प्रयोग—मृत्यं गीमती की की विका की बाह्य नहीं भी (वीटो०—निवास), ६९)

धाह धना

- (१) क्यित का बीक-डोक अवस्य समागः। प्रयोग— प्रथा स्थान बाह शहि पासा (क्यीर प्रकार—क्यीर, ३११), बाको बहु बाह सहि येथे, अवस सभार समाजे (कुल्लाक— मुर. ४५१३)
- (२) ब्रष्टाचा नामा । प्रयोग---वनक नाहेव मुख्य नोष् विद्यार्थ, वैदल बके बाह तत्व वार्थ (१)40 (६)---एकसी, २००,

थाह लेगा

- (१) जानकारी प्राप्त करती । संयोध—वर्षों के अध्यक्षक भीर मनुभव के शाव भी पूर्व जान की बाह नहीं के लका ₫ (चित्र⇔मा० वर्षों, १९,
- (२) विष्ठ की बात माधून करवी।
- (व) किनो गुप्त बात का पता नगाना ।

श्क्याना

भगमानित करवाना । प्रयोग—तिमारे राजा को भी पुक्रवामी, शारी प्रजा कहे कि राजा का साथा कदमी है भूग०—देव देशों २१३ हम भने ही किया विकास कर को प्रकास, मोर के सामुक्तकों बोला—हरियोग १२०

थुड़ी थुड़ी करना वा होता

निदा करती चिक्कारना । प्रयास नुमये सम कहती ह बेटा नामपाई से उठती तक नहीं, सब क्षोरन पड़ी-पड़ी करती है 'मानक २ -प्रेमवर २७२' दलकी प्रिथा धारका को तुक्यं को कम्पंकित किया । महर में चुड़ी पूर्ण हो वही है 'मानक (१)—पेमचंद, ६२/: माण सक जी जाने न बोड़ ने हैं इसी से वृद्दी वृद्दी होती (चुमतेक—हरिग्रीध, ५७) (ममाक मृद्दाक—चुद्दी चुद्दी सम्बन्ध)

धू धू करना

निरश्करनी, शायकर करना। प्रयोग—पृक्ष मृह से सू निकल काता न की मोथ पृथ् तो कभी करते नहीं बीजा - हरियोध क्षेत्र

धुक्र कर बादना

- (१) पूरी तरह दिस्त हो कर अपनी असनी आननी। प्रणाम----वह तो इस लोगों को बेहद प्रजय रहे में केविन इस नोशों ने प्राच पात अहरे, यूक कर आशा तब जाने उन्होंने बोला (गोटान---प्रमाद्य, १८५)
- (२) विषय होतार यह काम कम्या विमे पहले प्रस्थीकार किया हो ।

धृक बादमा

इर नदा को वहा काम या कृते में कृदा काम करने को रंगार रहना—सपमानित बीना। प्रयोग—मटोरी की पाट है कृते, पुत्र पाटा ही काते हैं (मर्ग0—हर्तश्रीध, यह), विस्तवे नहीं गया निरमाह नहीं हुआ, उसके नहां सागर यू रहती है की पत्नी पूज पाट कर ही रहती है (बल0— नामा0, ११२); जोन कैसे पूजने मृह पर न तब जब पराधा एक हक है बाटने (बोलक—हर्मश्रीध, १२०)

पुक देना वा धूकता

- (२) नामन्द करता ।

धूक सूच जाना

बहुत वर बन्ता । प्रयासः जनात्त्वत का एक सूच सूच । (बोटोल—जिसामा ६४



थून से वृहिया जिलावा

अनुप्रधुक्त सामन में हुन्ह करना । अयोग-ज्यान के सब रुपण तमीन पर पटक दिए और बोलर —प्राप्त पर के महिया जिनान है। में प्राप्त उपार नहीं प्रधान केशन नहीं मानंता, सपने चपए बोयता हूं (रंग० (३)—प्रेमचंट. २३६

धूकने भी न भागा

गर्वमा निरस्कृत करके और देता। प्रयोग—को वै स्पाने कार का बेटा हूं, तो घर व कभी साकर च्यता सी नहीं (चित्र०—कोशिय, ७२)

घेठी

क्षण । सथाग-नो चानंबार बाहब के लिए बेली कहा से कला (प्रेमाण-प्रेमचंट, २०)

र्थली बोलका

- (१) वंगी में हैं निकास कर क्यम देना। प्रशेत— में भी देखता है कि कीन तुम्हें पैकिया काले देता है (हुंच सु⇔—सुदर्शन, ५०) (÷)
- (२) वे-रीक वार्ध करना । प्रयोग—बाब क्रानिक व्यव-इतियो वंश्वी । तुनन देन वे वैती व्याती (सम्रव (शक्त)— तुनसी, रूप१) ; वेश प्रयोग(१) से (२-) भी

थोपी बात होना

- (१) वेश्वर वाल होती। अयोज—वय बोची वालों में वेटल मा श्वरण वर्च हो अपना है का बकारी कामों के निय वेख म जबर नवालीक उहाती वजती है (प्रशिक्षाः) ब्रीव दास, २)
- (२) भूडी बात होना ।

दंगल पारमा

वैयल में जीतना | प्रयोग-नुमने यह रमण मारे के तब मारे में १ अस पून यह नहीं हो । सामकल में रहे को बहाई है (बोक(१)-वेसबाद, ३८)

इंश्वन्त्रणास करना

सारत या सारतंत्र प्रत्याम करता । प्रयोध-प्यान् समित कहि-कहि किस बामा । नमे करत तक वद प्रतामा (रामः (श्रमः) — तुलसी, २७४

देत-कटाकट

म्हारा-विरोध । एवंश—हमारा दान जिम घरेश चना है वह असा गहेगा, भीचे दी दनकराकर में हमकी क्या है (हुo पीठ—हठ मांठ मिठ, हठ.

र्श का कोया

सन्तामा । प्रयोग--- पूर इते पै वयनका नग्हो, निपट वर्ड को कोचो (भू० मा०--- पूर, ४१५८)

वक्षियानुर्धाः

संबंधित समीवर्गनामाला पुरस्कार्था । प्रयाप प्रश्ना श मन्द्रे चरत शता है तमर द्विसानमी क्याचा पर (भारतक प्रताप प्रश्ना कुछ तुम प्रतास ह रहा स रण में हर्गनिकारमी भारत स्वर्णाणि प्रताह

श्रद्धिण होता

प्रभक्त होता। प्रवास-पीद का लेक्का प्राप्ति व दशक बोदना बाद बहे क्ली का बाद के व अस्टेस्ट्र हरू.

द्गार जन्मा

भाषा में वहता। प्रशास-स्तीयत गता चेत है रायम सम्बद्धाः वहत स्था स्थानाः सर्वे प्रश्न

दपना वेजना

विशास केमना । प्रयोग जोरी गरि विश्वहै नहीं सहते है ज हम्पास । जब देवतर देवेंगा दर्द तथ ह्रीया कीगा इयात ,कवार प्रदात-कर्तार, भ्रम

व्यंग होता

भेग-साथ-वर्ग्या । अगरम--हीयने और नवस्त्रे बाला क्या नहीं है दश्य कर पाना (भूभनेद--हारश्रोध,३१)

द्व आता

- (१) पहुन एहतान मानना । प्रयोग— नयदेव और भी दब समा अनुस्थ (१)—चल्लाक, ४१०
- (२) गम का बाना । वसीय-स्मृति सब कार्न है इस ार तीर का कर सकर मुठा (३)—सञ्चयक्त, प्रदूष (३ निजय राजा प्रदूषा सी। यहा १४ अति दास अ अत राज का स्मृति प्रश्नात सम्राट दास प्रश्न
 - र अध्य राज्य वर्ष अध्यक्त

दयद्वा हाना

बर्मासम्ब स्थापनाः । प्रयोगः क्या इंग्लाहः (समा । इत्योगः किया क्रिया स्थापनाः है अस्था जैनेन्द्रः १२३ वय कहा स्वदंश हमाण है जान है आत बात में वयते (चुमलें--हॉ(औछ, १९)

देवना

- (१) हारमा, नेष्य होकर काम करना : वयोग- वहन मुल्यि दश्य रच द्रिति सर्वे नाम, चिन हो विभाग और यानिक किराने वनि (धन० कवित-सन्ताठ, १९२), मान नेठानिन हों स्थमी रहे मोने रहे क्या क्यों नवरी हो माठ पंठ २ आरहेन्द्र १६२ हम काई पनित्र बन्दाह है विमें समसे दबते फिरे, तो इन्लाध कीम को (एंग० (१) प्रेमस्ट १७० वि च विभावत हो जान पर इस सदका दक्ता पम रहा है विपठ पन्न २७ अनिन दबन नहीं में महादेव होठ (धपनी सवर-स्था, १४)
- (२) उपकृत होता । अयोग-इस उस्के नीचे नहीं दव मही कुछ हमारे गीन उस रहा है परीक्षां सीच दास १०%)
- (३) सान होता, तक्क हाता प्रवाद जुड बापूरी जिन्हा हो देवन थ, उन्हा ही पहिन्दी बिग्ल्से वे स्मान्द र ग्रेमधेद, ३३०)

दया कोध

भीत्तरी कोच जो प्रमट स हो । प्रयोग---मां एकशार रव भाग में उमकी ओर दलकी है बीसर १ -- प्रकृष १६०

व्या देतर

कोई क्यों स करती, कुंग रहता, किसी बात को प्रयट न होने देना । प्रमोग---क्यादार, किस्ते इस कोडे का बात इस कोडे गया है दवर आसा कोडोक---किस्सा ११५

व्याना

(१) प्रवृत्तित प्रभाव रामना । प्रयोग—माप मध्य अप्यत्य द्यात है द्राराचिए प्रव द्रायक अम्बीकार करना निर्माणना है भार प्रशाद १ भारतेन्द्र दृद्ध नुम जिनना कहां प्रतना देने को लेकार हूँ । तुम्हें द्याना नहीं शहती (गवन—पेमचंद्र, १४६)। कभी-कभी प्रव स्वाह वदसने समना है या कर्ला पालने पर प्रयास ही बाना है प्रतिस-वाल समझ प्रशासों को स्थान है ।पदन—प्रमुद्ध, २००

× पारक प्रश्नन सम्भाकि द्वानदान बदयान है वा

85 O.P.—185 मान परिचान से दवाना मध्यता है (मेरै०—गुलाव०,५६) (२) नपने बस में रभशा, विभी की उपता की समाना 1 प्रमोन—सध्वन को बदर तुम नहीं दवाते, हो तुम्हारी तहकीनवारी हो कुकी (तिससी--9साद,१४५)

दवा जांकों से देखना

मी री-भोरी करवी है देखता । यथाय-मोती एव-दूतरे की घोट हवी धामान देखतते है (गिठाकु-प्रेसचंद, १५७)

दवा जवान में कहता,—जीभ से कहता, दवे बंद से कहता

(नगः मुहार- दुवी आकास से कहना)

द्वी डीम से कहना

रे॰ दका जनाम से कहना

दवी विहा का जुहै से कान कराना

विशिव्यति की विश्वकृतिका के कारण वासका या दुर्वन व्यक्ति का भी द्वाको होता । अयोग—यह में समस्ति। ह , केटी केकिन दवी विल्ली पूर्वी से काल कटाती है 'विश्वक—योगी, १८)

द्वे कंद से दे- द्वा जवान से

हवे पाय का पेर

(१) ऐसे क्यशय धाना कि पाणाव न हो । प्रधीन-वह बेकते ही बिन बोने पाने दवे धानों फिर पण ही नम प्रमाण ही अलेग रंगी तूट मारे पर बच्चे पर चर्मी पर (प्रेंस साथ--संव लाव, २५४), नंबी रखें वाच कृप के बनत पुष्ट नहीं (मान्छ (३) -पीसमद, १३३); रेको यह । इंडिनारी पाम रका में नाम रंगी अकर प्रधानक हो उठी है नहा का पत्रन भारतभात होकर हवेनाच चनने कता है 'कामगा-- प्रसाद, ३६' , क्वा अन्ये समयेरणा के राज्यों में रिता का हरने विश्व बना और वे जाना के जनकाता बहुने मने शेकर वर्षे पांच प्रदेशर कारण पत्ना वया शैलर (६)--- जन्न सं १४३1, अब नशा तब देश दूबरे देती का जुरवार रहे रांव क्या हरता करने की शाक में जना प्राप्ता है। मिलाठ (१)- श्रुपतः स्थ

(६) चोगी-वोगी पुरवार ।

नवे स्था में

मीथी अन्यास से । अयोगः निवार एके स्वर्धः से अन्योगं मध्यमें ही हो (मुलेठ—मण्ड वर्ग ३४२), प्रथम और मुनती में बातबीन सुन्ध हों। बड़के बरल बीसे और दवे स्तर में कामक--एशक्त 13as

दवेल होना

वय में होता, पंत्रमा। प्रयोग-व्यव कर की प्रमा Mirr नो दरि कीड़ और बता वृद्धा हुआ, और प्रवेश दब्त म हमा तो तो योच हे चिट्टी का क्लिएक चाटने सक् की स्थानकार अर्था (६० की०---क्र आठ दिए, १६०)

दमं अरकता

शांत करता, निमयतः वस्ते के शतक वस्त् करता । प्रमान-प्रोड़ नम् पीथक समय जाने उड़ शुक्रान्य हंग मावेतर । बांच दंग मावंती विना रांगे दन करने कर मारक न पानका क्षेत्रक क्षित्रीय ११७

(समार महार द्म जिल्ह्या)

दम उभाइता

प्रयोग-धना १६ इन्ह नवा पह इतनी प्रशासिक होत्र

है अनाम के पाए संस्कार के बकाछ में मैं भा मेक पाया ur grafic-farin, opisa

(२) प्रतियम पहले के आस्त्य मत्य न में पाना । प्रमाण---कुरे का दश उच्चर जाता है, अवका एवं नहीं समस्ता १८० (१)—ऐन्संद, ३६), बांधली 🚦 मामते-मामने प्रम उनक जाना है। इस०—छ० सह, 11

(३) नाम क्याना विशय कर मनने वे गनय (

दम का जनमा होना

न्यक्ष्यं का भागेता होता । क्ष्मेव---वर्ष्ट्र सुरशास, बाह् । बाब नुष्टाचे ही अधका जन्मक है। (रंग० (१)--प्रेमबंद, २%)

दय के दम

वारी देश में हो । अयोग----व्यक्ति में कांग्रित काम की भी रच के रम में हम कर रंगे। (रोलo--व्रतिकीय, १५४)

रम कीवना

(१) किमी के यह हुए बाद की मुनवर अहरिया जाना । करोच-मूत व शार्च, क्यो पर्वे, बन्धी कहें क्यों किशी के दम दिये दम बोच वे जोतक-हरियोध १३६

(TO 1884)

देस चाँदना

तका क्षणमान कारका प्रतित तर म बैरदेर व बोट कर दम किमी हा द चीट देखें उस बीअठ Marke 119

(३) वर्षेया स्टब्ट कर देश । उत्तेत-नात्तिकतः हा बाजा बाबरण हरा द पता हा ग्या तीर नदा है। कुरा मान्य के जिल रेंचकर का बाल सकता मागाव की जा का है 1930-मा० हमां. इस); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी () gra yez har

(बबा॰ वहाक--ब्रम घोटकर झारमा)

नेथे स्वातः

ही चरारा । प्रतिकारण विभागम में दिया देव सम इस बराजा हव वर्ष ना बचा बोलाठ- हारिसीस ११६

रम कामा रेना

पांच इता वरणाता । इससा न्हें मक्ता हम महर देव र कर बारकार दस अपना कीमठ करियोच १९४

दम कोले में जाता

विक्यों पं जलाय व आजा । उपान = कियी कान्य उत्तरक के रम-आदि में न या जाया करी (पट्टमठ के प्रा—पट्टमठ शर्मा, प्रद)

वृष्टं दूरना

- (१) मनित जाती रहती । प्रमोण—करण जंबत स्थाना स इ वटा १८वा है इस रह को रहता जनते - हरिक्केड ११/()
- (२) वर वाना : प्रयोग—देनिक प्रयोग (१) में (+)

दम लोडना

- (१) वरमा—भंतिय नाम नेना। प्रयोग—भोड नाम श्रमम भृतिया में दम किसी गोज नोचना होता के का-हरियांच १९७ किनने ही मैंनिक दम नोबचे हाम और इस उनकारत से निर्मा हुई मैं श्रभमीनमी माम ने उसी ह (स्वा-प्रमाद, भूगभूर)
- ५ (श्रामण श्रामण) । प्रयोग ब्राम्मणीय मेर की किकी
 म भी करी जानशी, नाम अपने भीने पीर दस गाँउ
 मों है (शिसली प्रसाद, क)
- (१) समस्य हो शना ।

दम दिन्हामा देना

- (१) पट्टी पदाना । सपीय-न्यस भवा वर्षी व दव रिभागा हैं, जब कि विश्व में नहीं दिवेगी है (बीतः)---हरिग्रीश, १९३१
- (२) बाजा वंधाना ।

दस दिखाले में बाना

नियों के फमपाने के आ आया । प्रयोग — इस जिला तक पित्र क्रियाओं है सका कर्य भेला दिल दस हिलाला न मिला (बोला) — हरिजीये, ११५)

दम देशा

- (१) गोला देना -- भंधी साराग देनी । प्रयोग जान नामें कशीनशपन न कर देगा देन समय न दब देश डॉकी-१ हरिकारेस २७
- (२) अरुना, उकसाना । प्रयोग-- झालकल दीनी महिनाए

उन्हें एक के गरी है कि सक्तवपुर का बाधा जिस्सा क्यूने नाम कहा को प्रमाठ-चैमक्ट, १५२)

(वे) नामी काना (

त्रम न होता

- (१) किन्तुन शांका न होती । प्रयोग—सम् मुनाने में नट ि र टटा रेज जारते सुनी हातो हती सुनति। हरियोग, ११०)
- (२) बार व होती।

दम निकसमा

- (२) प्राचाल होता । प्रयोध-शक रीच विमा को कुछ बन्धर माना को-दीन दिन काछ जनका दल निक्रम गुरा निक्षे - जिल्ला, क्ष्य-क्ष्य
- (२) भरी हुई हवा का निकल बाना ।
- (१) भेर कर होता ।
- (४) गाँक का दान रोता।

दम पुसारा देता

बहबर देशा । अयोश-वैन इसे एमे स्थानुवारे रिए कि इसने वस बान बना हो (मा-वीतिक, २५६)

दारे कुलना

विषय परिश्वम के बरारण बाज करती करती नेता, इप्लार, इसा के संग्रं का रोग्य होता। क्योन—क्यों में तो पीछ जाता का। जुलते पूक—क्या को क्य कुल बना कारकोठ—कोठ राव, वह, कुलते का तम व वस पूर्ण का रिश्वम काथ दर न दस केलें औरत्य—हर्षिकोध, ११६)

इस भर करना

शांत व ने पाना बक बाना। प्रवाय-तर भना तुम इब बढ़ाने का करे ने तरह का दम नृष्ट्राय भर गया कोत-तर्मकीय ११४

इस भर मे

तृतक, बार देश में । प्रयोग-भी कि नमशार में मह रवतने चल मान करते की राम मान्यतिक हो। मीध

26

इस अवना

(१) 44 करना, रामा करना । प्रमोय-कोई मनाबी

(२) हा में हा मिलानी । स्पोत—जो राजा वानिकणंड अपरेकों के जून के प्याम ने वे केवल नर्पायंद के उद्योग के अपरेजों का इस करने लगे (राधाठ प्रेडाठ—राधाठ दोस, 2१०); सब केवल महाबाज रहे गये। उन्हें विशापुमाय ने प्रेश विज्ञा-तिका कर एका विभावत कि यह प्राप्ती का हम भारते लगे (प्रथम-प्रेमचंद, २००

(६) परिवास के कारता नक बाना ।

दुसं सारका

कोहा विश्वास करना—गोरा उग्रामा । प्रयोग—उनकी समग्री हृतुमत में किसी को चू करने, यह क्या भारते की समग्राम न ची अहम प्रामी—पद्रमण क्यां, प्रदेश है स्थारी सालि का दब पूर रहा हम भाग दम किस नगड़ के मार के रथुमार को सीध, दश

(२) गांवा क्षेत्र (

कुम में दूस रहता या होता.

शरीय में प्राप्ता होता । प्रयोग—कास वर्षा वत वृटे काय में लोगों जब तब यम में दम है योगा—स्थितीय, ११६)

€स लगाना

चित्रम दीला । प्रथम जन्म सावस ग्रम नवे हमका स रहा जह जिल्हा हमा पर इस सम्पर्त वस रहा खुमते । हानऔर १२६

इस्र होतर

भागि विकासी सामाप होता । भागेण -- प्राण्यिक सामीका न फारण को काटो दिवस ही द्वीता क्ष्यर होता । काले स्थायमाण गा नियमटक बनावार ही देव किया पहुंच दुराव -प्रदूषक दार्म १६०। (२) विभाग सेना—जया ठहरवा । प्रमोग—माँत का यह नह न वेदमयन होते शाहिए हम स्रोग तह मह नम न ले अंगल—हिंसी है, ११४% ८ महीने वाद अभी परसा परवार केंद्र है। बभी दम नहीं निया हम पर भी पृथ्वे हो वा पर का तह होने (पट्टम० के पत्र---पट्टम० समी, १२२

रम साधना

(१) किसी काथ की जुन कर कृत्वी साथ आगर, योग ११ना । अवश्य - साथि का काम साधनी क्षेत्र। यस निकार जाए कर सुनाम नाम कृति---हुिंडीमा युद्ध

(४) स्थाप गोपना (

इम मूचना

वहंत हर के कारण बात तक न के पाना। प्रयोग—तक न दणकार चाहिए बनना पम बचा मुख देखते कुछ उछ होत्रक -कृतिहोस, ११॥

दम होना

वास्ति होनी नामध्ये होता । ध्योग—दश्ने इत्राग्धा नगर बोना पोल पाम ध्यए यानते ॥ । अपने धाम इनना स्थ न चा । यान ग्रोम दिए किली—निराला, ६४-६४ , देन नी चौर वर्गन नी हमःदिया है अपन कुल, स्थ कर तो सम-बद्धम (धाराक न्यन्त्रीक्षा), ११%

दसरा को हरिया स्थाकत कुलेका जान पहचानना वीडे में ही स्थानन की जीवत वर्ष स्तर आम दिना। व्योव---द्यही की मुहिया जोकर कुले की जात ती पह-बान की मध्यती ,गरन---धमकद, २०६-२०६)

दसन-सक चलना

बन्दरकार करना या होना । अयोग—वनन क्या परि क्या तो करता स्कृ (ठेदेही०—इरिक्रोध, ११६)

इसामा देता

बुन्धकारेना, नसाइंकी घंट कर कानेकी सूचना देखी। प्रयोज-सनुवज्ञान न स्टेंबर्ड जमा दिया समामा अस्ट कट्याग्राज कट्यो। २४५

दमामा पंप्रता

प्रवास करता । प्रयोग बहु हमार प्रतिभा की प्रवास

धून में भिनाने की धमकी है वहां का, अपने अपकारी है दमामें पीट रहा का (ये कोठं०—अठ साठ, ३७)

दमाभा वजना

पूर्व की कोक्समा होती । अयोक-अवन स्थाना साधिका पर्ती निमाने बात क्योर प्रसाठ-क्योर, ३६३।

दश्हर को डोकर लाजा, की धूस कोक्सा, की होसा,—फिरमा

(नवार वृहार--- इर-वर मारा-मररा फिरना)

म्र-प्र का धूल फोफ्सा रव स्र-प्र की ठाफर माना

ब्र-ध्र की होना देव द्व-ब्र की ठोफर काना

हर-हर तिलके बुनना

दश्यक्त की होतार काथी, कीन-होन रक्षा को आपत होना । प्रयोग - मध्य जीन सब गहात्र प्रान्तिक गाए आक्त्रवाधिन के । यहि कार बीठी खाद्य सदस वे बर दर जुनते जिनक सञ्जाठ प्रधाठ---गाधाठ दास, का

द्य-द्य फिरना २० हर-द्य की ठीकर साना

द्य पर भाना

यासमा करती या करते जाता । प्रयोग—जापके दर वर पहुँच नरक यभी है बड़ा ही दाव तथा जा रहा ,बोल्य---हारकीय, १३७

86

Q P 85

दरबार में बढ़े होता.

सभा में डाटिट रहता । अवंग---मायू के ठाड़ी दरवर्गर । सर्रात देशे लोडी जिस्तार्गर (कदीर प्रशः)----कवीर, २५४;

दृश्याचा सर्घराना

- (१) कुछ नागरे के लिए कही जाता। अयोग—हां, यहके में शुश्हार त्याम की ही परीक्षा कम थी, किर दूसरा के कियाद सटसट। हंगी (जिल्ली—प्रसाद, २११)
- (२) विकास करने काना । अयोग—पात्रा के लहनी-दाबादने किर ए॰ भी । बी - का द्वार शटबटाया गोशी— बहुर०, २०५

दरबाजा भहस्रका

- (१) कुथ मानने जाना । प्रयोग—नव घरकाणों में 🗙 🗴 उन्हें नीकरी काक्ष्मी करने के किए कीवना शुक्र किया तब कह प्रध्यना पत्र तब म संस्थार दक्तना के हार आहत जब (विच0—कोशिक, ५३) (±)
- (२) किमी के बहा जाना । भयोग—हृदि अभीच्या नव फिरिट सन्य दुवारी आदि (पेटॅ०—सायमी भूवाप) नूर-ाम प्रमु के बिसुट हैं, को इस मा काकत आवत हार ए० माठ--- सुर, इक्स हो, हम हो कर भी जाते हैं तो कोई दुवार पर आवने नहीं बाता, संघा देना हो नहीं बात है (मानक (१)--- देमबंद, १३०) : देखिल प्रयोग (१) में (२) भी

द्रकाञ्चा चंद झाशा

- (१) वाले वाले का सम्बन्ध म श्रीतर ६ प्रधात---उसले कहा---नो किन वह समध्य मुक्ति येरे लिए जापका हार बंद है (विज्ञ---अगव कर्मी, ११)
- (२) कोई बामा व होती ।

दशकात्री समाना

टम्बाका वट करवा । अयोग-स्वाती, दरवाया समा दे ,वैसरे-सदक, ७६०

दरवाज़े का मुंद न देखना

दरवार्वे तक मुक्ताना । प्रयोग-एक बार मुक्ते ज्वर





इरहाजे हाना

क्षाने लगा भर १ इस संबंध में जीन महीने तक हार का मुद्र नहीं वेचा (रंग० (१) —प्रेयचंद, १४३)

शरकारी जाना

- (१) किसी के एवा जाना। धरोन-नए नृपधान् की वीरी लाग रम होती सुरु सीठ-सा. ३४८४)
- (२) किनी के यहां कुछ नाशने जाना । अयंत्र—युप किन्न और कोन पै बार्क रे कार्क द्वार जाद जिस् नाक परन्त्र कहा विचाक (सू० स्थ०—सूर, १६४), कोड ग्रीम अभि कार्य के द्वार कर्म विस्ताद (श्लोम कवि०—स्ट्रीम, श्र)

हरका जे दरका है

म्रत्यार । स्वीम-न्योरियं रहेशी निर्दार नाम देनियं सी, वीरि वीरि प्रति रोटि सभी कमनुद में । क्षेम करि प्रीत्रं विश्व कीर्य क्षार महामोग, कार्यो कीर मनत स्वाम नमनार में (पंत्र) कवियो-न्यानार, रूपक्ष,

हरका है कर व्याख गढ़ाय बोना

किसी के साले की प्रतिशा करती | संधोत-सार क्या सरकार्य तर माल गढांग केटी यहती है (शासी०-विक प्रक. २१४

दरबाहे दर भाना

- (१) पास आवा, किसी के यहां काला । अयोक-उनॉट सहा गया कर किसी ! सेनक साथ व आवे जाती वद्य ल सामग्री, प्रश्
- (२) प्रवर्ते याप पानाः | प्रयोग--विश्वकः कर है, दशके सी स्थ्याने पर पाला है काम (दुध्याक--२० स०, २५७)

हरमाते पर खड़ा रहता

हर समय प्रणास्त्रक राज्याः प्रयोग्य —मृश्यान्य धारतान्य संभव नित्र तम राष्ट्रशास्त्र होताः स्टूट साथ सुर ३५६

इरवाते पर ततर देना

दरभाज की यार अकता , प्रयोग जिन्हान होति। सर्वतक्षा र दिश द्वार क्षिम कविक स्थिम प्रश

दग्या है पर राज्य रशहरा

स्व मार्थिद करना । प्रयोग-नाह दस बान स क्या हाना है सि जार दिन में नीन बार देखते दुग्र पर जाह रणक प्रसाठ-प्रसिद्ध हरू,

दग्दाओं पर गहा रहता

धर्मनत होना । प्रयोश—हरि श्रीकृषि विश्वती यहै तुम सी बार हजार । जिदि निद्धि वादि कर्यो रहाौ पर्यो रही रश्वार जिल्ला स्था०—विहारी, यहशे: तुम हो समार रोज होन अति पर्यो द्वार युनिये पुश्च यादि को छो तरमायही (धने० कविस—धना०, छ) ; मेरा ठीर कहाँ दिकामा बहा; हो बचनो से कमनायदि हो के द्वार पर पहा रहता (अपनी संबर—स्त, पर

व्रवाके पर दार्था भूमना

बहुत चनकान होना । प्रयोश-योगोप में होते तो आंश्र इतर द्वार पर राजा अन्य का शरता सान्छ ॥ ऐमलेंद १० . विश्वके दर पर अन्य यो वे हाची और स विश्व संकता थी विश्वके प्रश्व का/बोला-हरिजीध, २८)

क्राव पहला

दरार भर जाना

- (१) पृष्टिका दुवलना पूर होती। वदोय-असरी कणवंशियों की दशारें मनिष्य में तर मायती ऐसा विचार रणना वा व्यतुरोठ-निराला, ११
- (२) समीमानित्य दूर होता ।

द्शारकाता घर

रदं चाना

त्या करती, रदं सहय करता । अमीम-असमी के जिए इस कहां से ददं बावंग (दुस्ताक्ष -दै० स०, ४०८)

दर्प-अञ्चल स्टब्स

चयर पूरं करना । वयोग-स्थाय पता का अब उते नेपाय प्रधान न पानीबन इन्दुं का दम-सर्देश करना कारणा यी १९० व -फ्रेसबेट ३३००



वस जोडमा

सपन वश गांवो को प्राक्त ; सदम-नम । प्रकेश— आवद के दन प्राप्त शीवन कुप्राप्त विदा, काफि के बादेसी यह केदी दल भोदि के (धनंद क देश—सनाद, १८); सन के कर्मणा को जया निक क्ष्य से मी निक बोद रहा क्स का कुक्ट- दिनकर, १८०

बलकुल में गर्दन तक दूवा होता, वैर रक्तना

- (१) मृश्वित या दिक्क में पड़ना । प्रशेष—सीमा— गुम भी तो जालकृष्ट कर समस्य में पोष रक्ष रही हो भागत (१)—प्रेमबंद, २७३)
- (२) ऐने फीन होना कि सहज कुटनाया न किने। प्राण नगर किस्साकी दलदल में में गदन नक दून गया है (वैसरे—कदक, ६५)
- (३) जल्दी सतस या तय न होता, सदाई में प्रांता । (शमा = मूश्रा = - दलदल में फंग्यनर)

दलक्ल में पेर रखना रे॰ इत्त्वल में मर्चन तक दुवा होना

वाह्यस्य से निकलना

विवास संप्रत होता । प्रथम — वासि दिन गारी न दलरल से कड़ी चाहिये था जी न करना यह विधा चुपरीठ—हरियोध, दंध

(शहर म्हर -- क्यव्य से उक्ता)

इलव्ल होना

म्योत्त की नियमि होती । चयोग—श्व देश नहीं रही मेरी मानि कार्यकीएन स्टट किस्मा की दलदन म लग्म हुई भा रही है (वैतरे— महक, ५४)

इल-बाइल बहा दोना

विधान तय के गावटा पड़ना । प्रक्षेत ज्यो क्रमहरणावा चिमान काकियान की कोठो स इक नकी के हेनु एक दरा दम बादन कहा किया गया पर ,भाठ प्रशास ३ - आस्तेन्द्र ९३८)

इलाली बाना

दलाली के स्पार् लेना । प्रयास-नी उप नमीद वा मारिक

 नेपकं गामन केटा हुआ है भी कुआ करना है, जाते के क्या नहीं करने हैं सुन्ने कीच के दलाकी मही भानी है (माठ (१) हैक्चर, ३६)

क्ष्या होना

उपाय होता । अयोग । श्रा है दीनों की जाहें भार ही अस पर यह नहार साध्य नहीं (अतुरोठ जीनराला, ११)

दस दित

वोड़ दिन । प्रधान---चबीर तीयत आएगी, दिन दस केट्ट बबाइ क्वीर इंडा०--क्वीर, २०); वे दिना गए भूमि तीकी, दिवब इस वी बात (सुरु साठ---भूर, ३७६०)

दल नेवरी हाना

पूर्व-चीर होना । प्रयोग—में इस मानता हूं। कान में कभी पार्व में कभी फुटपाब पर केटा पहना है। प्रश्ता कम नवर्ग है (जहाज्ञ⇔-30 जोशी, हुई)

दस-पाच लोग

इन्हों दिशाओं में

बरमी ओर हर बोर । वयात-नयाम अजन विन् सुन नहीं भी दल दिवि वार्ड (सुरु सार्क सुर, ३४२)

बुध्यस्याको करना

बहरदस्ती राग घराना । प्रयोग—माना वृज्ञीवासीर XX प्रयमं प्रमिकार से बहरूर कियी काम में इक्तम्यामी नहीं करते (परीकार—कीर दास, १७३); ब्रास्क के बहु बहुने शहबद चलतमं ये गम की भी दस्तम्बर्गी नहीं चाहते वे अपनी संबर—स्त्री, ११०

दहाइ सार कर रोगा

श्वित्वा विच्या कर रोता । प्रमोग—अस्ती सामी पूर भी क्यू वर्षी और शैरांगह न बापी सी कर्नारी और पीतो स्ट्राह सार कर बोन जाती सुठांग (१)—स्टापाल, ३४६,

बहा बही होक लगाना

क्षाना बान बनने हैं निए प्रस्वत प्रांतुर हीना । प्रयोग---

लाक्षा बचको तक दानि दही होने छाताते. पहे, यद नेही येत भी स पृष्ट्या था। देखाल-पोनबंद, ४०)

(ममाक मृहाक--वृहा-दृही करना)

ब्रांत-कादी रोटी होता. ब्रांत करदी होता

(मगा» मृहा०--दोन कार्टी रोटी खाना)

बात-कारी होगा देश होत काटी रोटी होगा

भूगत काद्रता, निकारता निकारता, तियागता (१) किया करता, संस नियोर कर दीनता करद करता। अधोत---दार हार दिनता कही कर्नद्र स्ट परि याह (किया स्टुल्सी, स्थ्य , दान निकास पर दिवसाकर भूरम प्रवर्गी करें, तब होती है स्वानि हमें पास के आंस् वृत्ते ,मान्य -हिम्बीच १२३), शकुर माहद दान निकास कर होते --हमार्च गृह भाग्य कहां जो पास कोनों की संबा करते को निका सिवाल- कीवास १३०। दिस्स करोनों की

पश्च बाक्ट दात विभोरती विक्रियतानी क्लांक - एवं 🖰 🖯

- (२) यस विभवता ३
- (१) काचे हसका र

श्रीत किटकिटाचा

क्षांत सहै करना

साव सुकारा का मां उदकाश कि तम झालाव हा हाय कि विभाग काम पटा व परास्त करका प्रस्त करका । झिलोग सन्तर्भ त देशका दिलोदन बनाकर अध्यत है देशका सुद्द करकका केलें कोई गण की सर दुक्का है दे सुरु ३२६ ा वही वृतिया अच्छी अच्छी के बात सही कर रहा हे क्या के सम्बद्ध, ३५१% ह्वारचे व्यापनी के सामन स्थापको का कोई को वी नहीं प्रता, नहीं तो दांत मह कर देना (कासी०-वृंध वर्षा, ३६९

दांत सहै कराना वा होना

वनान्त होता । अयोग—सन्ना तो तब हो है कि नानू अपनी कर्ड़ान्त का की ऐसा जलर चुन कि दान कहूं कराक भाग (गुन निय—सान सुरु गुरु, अपने, हे अपने को बोत हो गम कहूं नारकर की से (नुरु)—अपने, १६) हे के कर मुख्या कराई में एक मार्क क्यों बांच महूं हो तब (चोति—— हर्गाक्षेत्र, १८%

दान किम्पियान पट्टी में निकादना

विश्वित कर दान विद्यान देवा । प्रदान-कार्य-सा के दात विश्वित पट्टी से विद्यान चाए (योने०--रां० रा०,७)

दात चवाना

नाथ से हान पीमना, काथ प्रयट करना । प्रयोग-साम बबात कर कवपूर है, याच हमारे की स्टूट साठ-सुर, १४१)

शंत ट्रमा

वृहाका महका । अयोज-स्टोट हुट पर व पर्योकी गई । बाल को रुपने प्याने ही गई (बोल्ड-हरिक्रीय, ४४)

वांत नाइना

पराध्य करना, हिमान करना । प्रयोग—में तब देवत तर्भाग्ये भागक बाठमू मंग्रीह व टीम्ह रचुनायक (रामठ तर्मा —सुद्धती, प्रदेश), घनारोन के बांत तोहि तिश्र वर्म बनायो (राधात प्रदेश)—राधांत देखा ६०%); हुए किसी के बात देवे तरेन नया है दवाने दूब तानों के नके (योलव— हरियोगी, प्रदे

दांस देना,--लगरनर

(१) केने की सहरी बाह रवानी । प्रयोग — तब प्रकार के बंग रम में भी मानवाना से साम की वेन्स अपने दू जियों के देन्स सकता सम्बोति की बाद पर बांध समा बहता है (६० पोंठ- अब नाव निरु, ७६) : तूम जी एक मित्र की स्त्री पर शांच कमाने तुम ही अ अ तुम्हारे हाथी



भगर पान स्पां भी जिन्हा हो ही अहे हुक्या हूं (शास्त्र (२) प्रेसचंद ५१) वृष्यों की अहे सम्पन पर बांत क्या केनाव समाते हो भोने क-हरिओध, १८६); सम्बूर। के कोर दिले हैं जिन्ह पर उनका समा दसन है प्रकार- दिनकर, ६४); कीरियों पर किस किए हम बांत है , मुसरीक-हरिकोध, ६४)

(२) बंबका लेने का विकास म्लन्त ।

(समार महारू-नाम ग्रंबन्ता,-श्यमा)

दांत लिकालका के दांत कादना

हात सिकोम्पना रे० हात काढ्ना

दांत नियोग्ना १० इति कादना

दांत पीस कर रह जाना

व्याचारी से कीच की सह जाना । प्रयोग — उम राम विकार में बह किया की जेम के अस्य केंद्रियों की करते मूनकर बहे अभ्यानहरू में क्षेत्र कीय कर यह जाता था। (जेसर (२)— अहाँ ये, ६१) : गणनम जात कीस कर यह नया (मृद्य-— अठ ता० २४०

श्रीत पीमनी

- (१) का पर सन राज्य कियाना— दान विद्रशिदाना प्रयोग—दिशा में भी दांत पीते अस्ते हैं (१० पीठ—६० नाठ मिठ, ७४)
- (०) प्रीप्त प्रकात । प्रश्नित विकास में हिंदना मुख्यान ही भाग पर कुलि की मान पर ने प्राप्त कर प्रश्नित पर ने प्राप्त कर प्राप्त से प्राप्त कर प्राप्त कर

87

O P -185

बॉस फार्ट्स्ना

भावनाम पृत्त कालकार देखता रह जाता । प्रयोग--- 'हरना !' श्रुमारच न प्राव्यार्थ से दान फाइ प्रिये और फिर कहा ---'हरना । सू !!'' (देवकी० -रा० रा०, १०१)

दात बडना

- (१) बहुत कर भगता । अक्षोप बंसरह भी में प्रमा कर गयो भगा कम तथ्य तथा बांक करते तत वर्षे । बीस० — हरिजीय, २१।
- (२) मर्दी के कारण बात किटकिटाना ।

दांत वेंड जाना,—लग जाना

वरणातमा होता । अवंश्व—मृह श्रुता जिसका न औरो है किए परंत उसका बंड को जाता नहीं (चोसेक—हिंद्योध, १८४ के वर्षी को एक के बेह्मक हैं मृत रहा है संत उनके जन वर्षे कोंग्रेट —हिंद्योध, युक्त

(३) शंत एका सम जाना कि मृद्र अपदी क सूति ।

दांत स्था जाना १० दांत बॅंड जाना

वांत खगाना दे॰ वांत देना

दांत साफ करना

का आजा । प्रत्येय--- इन अधम के बाद किनानियां पर राम नाक करने ही वे आवः ऐसा होता या कि अ अ अध्या- देव सव, ४४/

हांत से दांत पतना

कृतिक सीत पहला । अनोय-विवृद्ध होर भी अ अवीत श्रीकृति कालये जात क्षत्रातंत्राणी (सासीठ-वृ ० दम्मी, १३७)

दांग होगा

- (१) सेने वा दक्तनं की इच्छा होनी । प्रयोग—अनून, उस शक्तर का हो जल इन्स ! जिस पर केनवी के वंत शक्तरेत-नुष्ठा, १५४०, घेरे पाश एक घोटे से कमरे को भी सही देख सकते । बना इस पर मो दांत है 'प्रेसा-मेमचट ३४
- (२) आणेय होना ।



द्याता किलकित होना

(१) कहा-मुनी होगी । प्रयोग—हनसे मुख हो स्या है, और पात-दिन की दाला-रिमांश हा हमी रहती है (मा-की(प्रक, 80), एक दिन की हो हो भूनती जान, यह दो पीन-पोत्र की दाला-किस्तरित है (धार्ति०—वि० ५०, ३९, (२) वर्ष की क्रवार | प्रयोग—मोर्ड हसारे सेस्म देख हालों तसे दाली स्वाके सूम-मुख की नारोफ करे हैं प्र या अस्तिकतालया यह कह दे कि कहा की दाला-क्रिय-रिक्त कार्याई है तो इन बातों की हमें परवा नहीं है (६० वो०—५० तां० निर, १६, १०६)

(समार मृहाक-दांता-किटकिट होना)

कृतिक या कृतिक समाना इति बैठ काला । प्रयोग —क्ष्मेना सहस्य की पानी लग वर्ष मेलाः—वर्षु, ३५७

(अमाव मुद्रा ----वांस बैंट जाना)

व्यंत्रों के बंब्द जीभ का सपा घटना

कृति नते उपलो क्यांगा, --अस्म क्यांगा

(त) आध्ययं करना, यह रह साना । प्रयोग—उस यून कर दानो तसे उपनी रवानो यहनी है विस्तत—स्माठ कर्मी, १०%। कार अन्ये नेक नेस आनो नके उपनी दवा के मूक्तन्य की सारी के करे साथ का कर्मक स्मावय यह कहा है कि कहा की दाना-क्रिक्टिक स्वार्ड है तो धन साती की हमें परवर नहीं है (प्रवर्गीठ—प्रवन्नीविषठ, कर का सुनना हूँ ऐसी बुदमकार है कि यूनक करोड़ों नके उनकी दवाते हैं (सोसीठ—वींठ वर्मी, १७६) इ ऐसी बदमानी की कि सीम युनकार दानों नके बीक दवाते हैं (परहोठ—रेष्ट्र, १६६ प्राप्त पर यूननी को किसी बुवक के साथ क्कान्स माम विवरण दाना नार उनना दक्षते हैं (परहोठ—रेष्ट्र, १६६ प्राप्त पर यूननी को किसी बुवक के साथ क्कान्स

- (-) सदह करना । प्रयोग—दे॰ प्रयोग (१) से (०)
- (६) बेंद्र प्रषट करनर ।

हांतो नहे जीभ द्वाना के हातों तहे उनहीं द्वाना

दांना तले निनका दशका,—निनका पकड़ना. निनका रखना, - निनका सना, - दुष द्याना

(१) अबीनवा स्थो गर करनी । अयोग—मुनु सिक करेंत्,, दत तृत गरि के, स्थी परिकार निधारी (सु० सा०-सुर, ध्राव) । दसन वहडू तृत कर्ड कुटारी (शम० (स))— एक्सी, कर्या) , बेर सी नहायों कहाँ काह की न मान्धी अब, बार्तान किनका में कुपान पही कर में (मिस० मक०-मिसाम, १८६) , हाब और बिर नाह है, बांस करें कृत गरिताम, १८६) , हाब और बिर नाह है, बांस करें कृत गरिताम अपने कर्ता है कि साम मांठ सेंठ (३)—मांगतेन्द्र, ६३३ ; जतः इस दल-क्या को केंगल इतन उपन्य पर समस्त्र करते हैं कि साम स्थार देश के दिन विरे हुए हैं अतः अतः अतः विभक्त स्थार देश के दिन विरे हुए हैं अतः अतः देश में तिमका दवान में कारा के सिए विभी के साम दानों में तिमका दवान में कारा के सिए सि के साम दानों में तिमका दवान में कारा के सिए सि के साम दानों में तिमका दवान में कारा के सिए सि के साम दानों में तिमका दवान में कारा के सिए सि के साम दानों में तिमका क्यान के दान में केंग्रे भागा वाम के में हम बातों में तिम्ह , कुपाले-स्थितीयों हम केंग्रे भागा वाम के में हम बातों में तिम्ह , कुपाले-स्थितीयों हम हमें

(२) समा के लिए कहन विनती करती । प्रयोग—हाहा-करि दशनि शृत वरि वरि सोजन और महार्क्ष (१ । सुरु १३१० –सुर, २७२१)

दांनी तसे निनका प्रकाश देश दांनी नसे तिनका द्याना दानी तसे तिनका द्याना देश दाना तसे तिनका द्याना दानी नसे निनका देश व दांनी नसे निनका द्याना दानी नसे दूब द्याना दश्ती नसे दूब द्याना दश्ती नसे दूब द्याना

दानों पर्धाना आना

भार परिश्वम करता । प्रश्नात वस्मानमा करे कि हर हिन्दु मुमलमान का देशहित के लिए के वो माद दहती



पत्नी स गाता रहे (प्रव प्रोठ —प्रव संग्व मिठ, स्ट) । पर सूनी र माने गया को पर नक गोई के बाने में रांनी कतीना जो गया (भानव (२)—प्रेमचंद, १५०) : एक मून्ती भी नहीं गुलकी क्षणी किमनियं राजी पत्नीका भा नवा (बीलठ— हरिक्रोग्न, ५३)

क्षांनों में उभाकी देता.

(१) नाम्भर्य करना । इमीय—देश द्वन पर सात हम को पीमते कीन सानों में न प्रश्नती है क्या (कुमते०— हरिग्रोध, १०४) (—)

(२) मोद पगट करना । प्रताम--देशिए प्रवरेन (१) में ,÷)

दांनों में पानी लघना

रांत कराव होने पर मानी पीने है बांत में पीशा होती। प्रयोग-स्था सका और बांत में न कभी दिस नवे बांत स लगा गुणी (बीसव-स्वाध्योध, ध्य)

न्ति से क्षितियां प्रकाता,—पस्ता प्रकारणा सहस्र संभूत होता। प्रयोग—मृद्धे एक-एक देशा बातो ये प्रकार वर्षहण् दा (गयन—प्रेमधद, १०६)। कींद्रयो की हो प्रकार वर्षत है धाहिये ऐसा न बाना वन मृत्ये 'क्षोति—हरिजीध, १५॥

दांतों से जाम दवाना

भगजीत होतर । प्रयोग---तम पसेत करणी जिल्लि कार्या कृषणी दलन जीत क्ष्य वर्णी अल**ा म -- तृत्रसी, ३९०**)

(समार पृष्टार-कार्तो से जीम कादमा)

हांनों से पंका पशहना वे॰ होतों से कॉडियो पकदना

दांच के पासे पहना

मक्ति कर अञ्जूष हाता । प्रयोग—नाम पोटी ही कानी है, होन के यह धारे परने (सर्वेश—हरिजींध, घप)

दाव संतनर

वाज क्लती होशियाचे करती । प्रयोग—एक देख ईस्कर न और सन्ता (शेकर ११ - अंड'य, ९० , यही वर्च कान्ती दोश-पेंच केल कर अधीन पर करता कर सेंगे अ अ तो सीमें हो जावरेगे (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९९)

दांव धात देखना, दांच नाकता

साम चलने का मोसन देखना । अमीम करांस हकी, एन कर लुई, विश्वई क्षांन में स्थान सोधीन साथै (एन) क्षांनल— सन्तर, १९०) : इपर मेरे बढ़े लाडू में अपनी शांस साम रेक्कर कुछ एसा रंग जकायां कि मेर। सब परिचम निम्न हो बना सीठ-संग्यत, १२२)

(समाव गुहान—हांच देवस्ता)

दांच चलता

प्रकार काम ने बहुनी । प्रयोग—सीमी पर तपदेल का भी शब कर बाता है, मोटों को कोई अपदान नहीं करता रंगठ (१, --प्रेमचंद, यह

वांच नाफना रे॰ दांच-धान देखना

वांच पहला

भोरः मिलना । प्रशास अञ्चार् सावा अञ्चार होत्र कर ने कारि (सुर्व सार्व (वरिवर)—सर, रहरू

वाब पर बदमा

नशन या परिच में बाजाया । प्रयोग— वे बोर्ड कि मधी तक दाव पर नहीं नहीं (मैं कोटेंठ—मों० साठ, १५६

नांच पाना

यात में पाना : अवस्य--- पूजिन अधार करन बहुत दिनां से दश्य नवाच वी, कोई डायन पानी वी (१८०.२ --प्रमुदंद, १८४

दाच लगना

दांब लेगा

- (१) बदबा केना । प्रयोग—बार्ड हम नोंह सेय गायी, बयन बेनी जाल भुरु भार-सूत, ३४५४)
- (२) स्थाप के केना, पॉन होनी । प्रयोग—कीर संशत नामित को दासी दांड नियो (६० साव—स्र प्रदेश
- (३) करी वानी ।



हर्ग्य स्थानमा

(समाव मृहाव---दोष सारना)

दांच-वेंस का आदर्श

पानवास । इसोम—जिस्टर तंथा दांव-वेष के आश्मी वे (वोदल-वेमचंद, पत्र)

श्रंब वह धाना

माभ की स्थित होती। प्रयोग-न्योकि परवंश पर वस म जनम कहु, ऐसे ही में होती को स्थीनो क्यों सम से (धन्ठ करिस—धनाव, १५७)

वार्ष से देश छिपाना

भिनमें क्षित्रये स विते प्रयक्षे कियाने का प्रयत्न करना । प्रभोग-नाई जाने पेड कृषायति बासी वृद्धि मानू ये बानो 'कु० सा०--मूर, २६४१) : 'येरी कुरको, वाई से पेट विश्वानी हो" नमीं × × हंग दी खुटा० (२)--प्रभावता, ३८३६ : सरहन, वाई से पेट कुमने की कोशिय काना बेकार है (कुट०--धण्नां०, ४५१) , वर्ते व स्थान मूंह कियाने हम फिटे क्य कियाने पेट शाई से किया बोला०--हरियोण, २१६)

दाग देगा

- (१) बंग्यंध्य-दिया करती । प्रयोग-अवस्थार को धाव विया-काके हैं कोई मही बावती कुबोठ-निराला, १३९)
- (२) गरम सन है बावता ।
 - नियम् नहम्म।
- িও মুক্তবিক কাল।
- (४) गानी भक्षती ।

दाग धोता

कारक विश्वनः। अयोगः अयम अनीन २० मिनान क हिर्देश आपने विद्देशे द्वारा को यो सामन के लिए असके वास दूसक विका और स्था कावन या तकन द्वेसचेट उद्देश

क्षाम-बेल पहना

धारंत्र करना या क्षोता । अधीतः—गुच्यी घील्टर्ज की दार कल लगी एक मधी की उस में काई है या (पैलरे - अफ़रू, क्षांत्र क्षांत्र स्वांत्र स्वांत्र स्वांत्र करने वारी ?" काईहरू— "जी हो, कम दारा कम भट्डों (गिंग रह)— प्रेन्डेंट अक्ष

(समार्थम्मार-दान बेल नेवमा,--समना-समाना)

दाच अगतर

क्यक सम्मा । प्रयोग---वरिष व रागै पर किसी तपत का ताम व बनने पादे इस बाव की वीरामी का नाम परिष पानन है (साठ सुठ--वाठ मद्द ६६) ; नाम पर भी बात काता है कड़ी कृतना नहीं बुढ्ड---वर्णन, पराध ववनामा किस बात की है जनके कुछ में कोई बान तो है नहीं, भरे ताकुर है मिलाठ--कोशिक धरें

दाव संग्रामा

(१) कनक नगाना । प्रयोग — उन्हार्त आजवात के बमाना-साज बंग्हरों की समझ अविधियानों या हम्प्रिक अजीवी में दस कर अपने कर्तारवनको साझ नहीं जनहरू ,पद्माप्ताम— पद्मान करों, ६), जानकान से साच नगा दिया । वृत्र्गी की आवक आक से मिनद की स्था को - प्रेमधद बहर

(२) विधान समाना ।

दादी क्यमा

कृत्यं होता—वृद्ध होता । श्योप—वरे न वामे विवार ही वच तो क्या करेगी वची हुई बाही (भोसे०—वृश्यि)।, १२२)

दाइ देना

- (१) हेमाच करना १ अयोग---रीने शति देखि, ना ती. वनि वही बार-यंगल रिनई है दिनग०--सुनसी, १३९,
- (६) महमनि प्रतर बान्सी ।

दाना

दाना पानी उठ जाना

पाध्यम त्रद जाना । इयोग---व्यव इस बुहम्ये में कृष नेम असे अपर्यहण जादको का निवाह नहीं हो बकता अ अ अब यहामें दाना गांगी उठना है (गांव (१)-- प्रेमकट, ३९८

दाला विभेरता

कृतमाने के लिए एक एक पूक्ति करनी। प्रयोग—और में समाप्त रही थी, अभी वह दाने विकेट रहा है (सानक ,दा--देशसंद, ३१४,

(समार मुहार- दाना केवला)

क्रकेशचे को तरसवा,—मुहताब होना

भी जन का अभाव होता, सन्यव दरिहा होता । अमोन — जनाव दने, ये ती दाने दाने को मृहताओं ही रहर हैं होनेता साल राज २०४ , यही पत्ना है के बुक्ट दान-दाने की तस्मानी की (मानव (१)—प्रेमचंद्र, ६) ; बीर पर में अधनाम और नक्ष्में दान दाने को मोहनाज हो गए अपनी संबंद —उप्र, २६)

क्षाने दाने को मुस्ताज होता है० दाने-दाने को हरसना

दाव में आना

यश में होता । प्रयोज—किस लियं नरू तब दबले हैं । धाद में वह जब नहीं भारती (बोलाः)—स्वितीय, ध्वाः

(समाः पृहाः-दाव से रहनाः-होना)

हाद में रखना

धग में रजना । प्रयोग—रज सकते दश्य ने की भना । इस्कार जो दून वानों के तन जुमते—हरिक्कीय दशे

88 Օր -- 185

(ममार प्रारू जान में छाता)

दग्म उटना

दान मिनना। अयोग—यहां वैशामी में ऐसी मुख्यर नर्वास्था रूपस्थान अपन्ते वैशामीय र स्वतु १.

दाम बदना या बहाना

मृत्य में वृद्धि होती। अधीत—हिन्दू साम असीको है तो ममनमान राम नदा दन ह सुदार १ - यशमाल ६४ , नाई सम्बद्ध का काम भी तो यह नमा है (देशार—प्रेमचंद ४१,

(बयान बुहान-साम ऊ'बा होना)

दाम लगाता

मृत्य निर्माणन करना । जयोग---पाप)८५वोले में कुत नर्वोतरी नही र अभ्यापर रह साम्ब साम र) नाहर हाग नर्वाच्ये (माठ प्रकार (३)---मारहेन्द्र, ५४६)

वामन न क्षेत्रका

मान म सोरमा । जयोग---अब तक वह दूरकार म देगा उपका वामन म क्रोडमें (कर्म०--प्रेमचंद्र, ५५

दामन प्रवाहना

बारत के जाना साथ या को रहा । प्रयोग—हरीकंद अब को तेनो दायन प्रवर्धी साई हाल आठ देंठ (२)—मारतेन्द्र अवदेश काम विवयत ने बनारण स्वृतिधिविधिनी का बायन कवत (प्रयोग केमबद, ४३४

इरसम से दाग कानर

क्लिक्त होना । प्रयोग---शुम्हारे गोरे बक्तमर एक हिरे हाकिक की बुजायद की सुमले बकीय सम्माहर एक कल्ल्डबल पर तृष्ट निगार करते हैं और मुख्हारे मेजेंडरी इस्टी अपनी क्लावारी के दायश पर बाग नहीं सगते देना बाहते (गुंठ निठ--वीठ मुंठ पूठ, २४४)

दासन से लगना

सम्बद्ध में जातर । प्रयोग-स्वयः में भी तो अस्य ही के दामन से साम्र हुचा हूँ (गतक (१)-प्रेमचंद, ११९)



हायों हाक

(१) प्रश्नुस कर्ता-स्ती। प्रयोग--पुनिय **६॥ काम में** न्यंत्र का शाया हाच है। स्थान---देव संब, २४७,

(२) सक्या शहायक ।

हाख गलना

प्रकार काली प्रयोजन सिक्ष प्रीता । अवीय—विर दल पर भी कर न नाले तो न्यस्ट है कि सम्ला के अले अभे की दास नहीं जानी (भाव प्रव १)—आरक्षेन्द्र, ६३१). इस प्रमारकाओं ने करने मूल नह, वर में विश्वाकर उत्तको प्रयुक्त तक ऐसा रक्षा कि किसी की बाल नालने न वार्ड (राधाव प्रीताव—राधाव दास १८८९), केलावे किसने ही आल ! जाने नहीं पर नेगी वाल पुट निव—वांव सुव गूव, १८११ मी मानती के काल कर भी ता अभी क्या रिवडा है, जनर बहा बाल को (गोदान—देसकद, १९॥), समाद निया मूल यह, दाल है भनी नहीं, अक्षाक जा के हाला (परिव—निराता देन।

दास भात की तग्द्र कर्नुलगर

बहुत अक्षानी सं स्थानना | प्रयोग---राज बात की तरह बाहुत कर किया जिलत ने (शारीक--रेणू, २१६)

बाल अस्त में कुछ कात्वा होता

नुस बटके वा सर्वा की वान होनी । धयान—पूजा राम में बाता है (६ शां० --शांगांव, ६६) : समनाव के आने की बात सुनक्ष्य कीनी बीकी, अवस्थ दानके काना है मिस्सं० --करिसंग १५०) : २ × अमके वानवानों ने उसे रोका वर्णीक ने समझ वर्ष में कि दान में बुझ काना है सम्भ०— देव १६० १०८४: नवान ने कहा—पुष्प दान ने काना है। काना श्वितीय— मुँच १६मी, २००) : असे दान ने काना है। काना विवाद पहले समा (शांकी समय—स्म, ६१)

दाल में संश्र्या पहना

पम में प्रश्नेको होनी, समयुन होता, विश्वर पहना। प्रथम समय केरी दाल में बनवी वह सबी (मानक--पेशवन्द -६३

बाठ भाग में मूमर बद

ा प्राटमिया के बीच में जबनदरना जाना । प्रयोग नुम

क्षण प्राप्त में मृतरभर गमकर कीन भा यह ,क्षिक— हंगी, २२); तसके पर पर मीला ने आकर दाफ भात में मृतश चंद बनना इसको प्रथम नहीं लगा (मृग०—वृं० क्यां, ४२६)

(बगा॰ मुदा॰--बाल भात में क्रॉब का दांग)

दाम ६ दास होता

बन्दानी हो सत्ता, प्रथमक हो काला । वयोग-सनीर देश तंत का दार्मान का प्रश्नम ,क्बोर ध्रक्षा०-समीर, ६५,

(तवार वृहार-काम हो जानर)

दामता भी बेड़ी फटनमा

शह होना

रंजां, विष्यु वा कोच होना । धरोन—केवयमुका हुक्य अनि दक्त (सन्दर्भ (स) – कुलसी, इब्ह

शहिना-बायां जानना

अन्य जरा गमभनः । प्रधान । बाह र गो गांल मूध गुभाऊ शाहित शाम न भारत हाड सामंग्र मा)—गुलसी ३९०)

दाहिना हाथ होना

का भारी बहायक होना । अयोग — अपना अवसास भूत कर के मारारामा के दाहिने हाथ मने (विशेष्ट--प्रेसी, १०); शारित वार और पारकारन उसकी दाहिनो सीर भारी भूताए में कर्मण--प्रेमकन्द, १६) , यह तो वह रिपासत के दाहिने हाथ मने हुए में (९०० (३)—-प्रेमकन्द, ६६)

दाहिनी साँग पराक्रमा

दर्शनमें प्राप्त व दिशाय स्थानन होता। यो पुरुषों के लिये शृंध और विश्वों के लिए अगुम सूचक होता है। येथोग---दाहिनी अधिर जिन पात्रक संसी ,रामठ अ सुससी ३६०

दादिने वार्षे छोडा होता

क्यकान्त्र होना । प्रकीत-स्त्री संगत् वा शास अगगत् से पहे शांत्र हो या कि बाद भीक हो। दूपतें (सिंडीस, ३३)

दाहिने बार्वे दोनों धोर बलना

न्तिर राज्य होनी। प्रयोग-नामकिन, सुम याहर्ने-



वाय रोजो ओर भगती हो। (मान० (१)—प्रैमकट, १२६) साहिने बार्ये होना

अनुकृत या धरिकृत होना । अयोग—नहरि वंदि सत गण गरिभाए । वं वितृ कान दाशिनह वाग" (राम० (वाक) — सुलसी, ≒)

वर्गाहने होना

सनकृत होना सम्भवत होना । यध्यम - नाह नेत दाहिनो होत सन्, बाम विधाना बाम कर विनयक तुलनी, १५६ मानो मानो सन लाको मो निटि आने दोद । साम मान विष मृक्ष सिम तीह सिमा गहाम (एक सक- कुन्द, ३३)

दिखाने का दांत होना

बाह्य दिलाया । प्रयास स्थापाय को केयल दिलाने के बाह्य हैं (गीदान-पेमचन्द, २४३)

दिग्दिक्य करना

दिन कटना या काटना, शुक्रमना,—धकेनना,— पुरे करना,—अपना

किसी तथा जिल्लामी के दिन गीनना का विकास । प्रमोग---जम मृं वेषि होई दिन भरके (पर०--जायसी, ३११८): बतवी पैनि तनक से विना। क्यो अहित विच व्यापे दिना बद्धपन्ति। सद ११६ विकत व पूर्व जिल मिली बार्लवं अति, मेनापति लेमे हेमे दिन प्रशिवनहैं का to सेनापति ४३ , राज न कान मृत्यी क्याह कह काह को कीन दयी है सभी किन । टारिक है युव क्रालंद शांटव कारत क्यों नहीं दीवसा सी विक (धन् किस-धनाठ, १९८); रहिये नटपट कारि दिन बरु वामें मा भीव कुण्ड०- विस्थरदास, १४ कंसी कहा की में कहा दापानों करी ने होट जाते. जैसे दिन वाहि, तैसेई भाग देव तिकृतक ठाकुर १३ . प्रव अंसूना से बार-बार हारता है, नव भाग के कही का रिहाकर जपने दिन कारता है (प्रेम साo ल¤ साo, ६३ दिन दीलय पर लगे कीन विषि जीवत के दिने भागे भागपताल शास्त्रातिन्दू, 802 , प्रठ से दूनों भयो दिन करत काफ विशेष नहीं राधीं ग्रेस कृद में दिन काटना मनुष्यस्य वर मनुष्य सक्य के समें पर बार्लेप करना है (सार सुरू-बार मनुष्य सक्य के समें पर बार्लेप करना है (सार सुरू-बार महूर, २५), और दिन को कट ही जानना (केलर (३)-- सक्य य, २१३); बज़ा पून व हाट होट स पह राज हुए (५,३ मा भीत हुए कुछ निवासी क्विप के दिन काट रहे में (मूनरू-पू ० हमी, ४३); अंथ तो दिनों की मकेलना है मैंनिक-बीच राव, च३), में तो यन पर को भून नहीं सकता । यो भीवन के दिन पूरे करने के लिए पाई जज़ा परा यह किस्ति की जिन्हा, ९५)

दिश किनारे सतना

अस निकट होना । प्रयोग—शिक दिन ऐसा विजिय परिवरण मेरे स्वभाव स दिलाशाई र तो सम्बद्ध आहेत है। दिन किनार सर मने हैं पहुमार के पत्र पहुमार आहे. उर

दिनको दिन और राम को राम म सम्मन्त्रमा स्थान मून पा विश्वाम को प्रश्नाम छोट कर काम प्रमन रहनो। प्रपोण---मान सान भाग छै उसने रतन की हैवा सभूषा में दिन की दिन चौर राम की पान म समझा था (मनन---पंत्रबद, 3284, क्षत्रमोहन को मेन करने दूस उठा-कर भागा, प्रमुक्त कंप्रदर्भ दिन की दिन चौर राम को प्रान नहीं सुनक्षा (विश्वाक--कोशिक, इंड्

नवीची मानी वा पूरित होता या बातर । प्रशंश---प्रशंत बाव दाने तो अन्धे पैस बावे के, मेरितर अब दिन बाराध सा क्ये (देशमी०-- सम० वर्मी, १२६), सर्व देशाय निर्देश होशे दिन मोटे हैं जब (सर्वा० ग्रेसा०--संधा० दास, इप)

दिन कोटा होना १० दिन कराय आना

दिन कोना

स्थय व्यर्थ क्ष्य करना । प्रयोग—सुनत् सूर ऐसेहि दिन सोशीत, काल नहीं केरं चार्याह (सूर साठ--सूर, १८३६). नहि काक कोत करनो हमें यह व्यर्थ दिन भोनत गो। (सभार प्रयोग--रोधार दास, १४).

(समाव मृशः - दिन संचानः)

विन मिरना

बुर दिन आना । प्राप्त—अन इस इन ज दा ना नाम क्या इनकी × × पद नवाप्त करते हैं कि बाद इमारी देश के दिन विदे हुए हैं (देश पी०—पठ नांठ निष्कृत्यः)

दिन गुजरना

पे॰ दित **क**उना

दित बढ़ना

(१) प्रश्तकाल हुए वेर होती । धर्माय-व्यहो, हमकाशा की बालों में इतना विन्त कह बादा (नाठ पंठ-भारतेन्द्र, इत्त्र), भी हो । हम भागांकी वालों ने इतना विन्त कह प्राचा (राधाव प्रथाव-न्याधाव दास, कवक); अब विन्न कह सापन तब बहा से क्या हटकर निधाय(प्राची करने क्या) (क्यावाव --वृत्व वान), इत्यो) हम तो व्यास का देवी है। कभी तो दिल भी नहीं बड़ा (कायता-प्रशाद, के), भरे उहर, इतना दिल बढ़ बादा, हो वेलिये बान का समझात भी नहीं विन्ना मुखे (सुहाराठ-न्याठ नाठ, वर

(१) क्यी का वजनती होता। प्रयोग—समना—समं दिल बड़ा है माठ माठ (१,—किंव मीठ, ५४ दिनका कें कुछ बच्चे बाद एक बाद नाई के दिल बड़े के मुद्रेव—संव माठ, १३

दिन कामकता

मान्योरय होता । प्रयास कताम यहन सांचा करती ही कि यह मेरे दिन चमकर तब में इन शोबा को भी करने साथ काल्यी (मानव ,२)--विमयद, ५०)

वित बला आहा

समय कीतना । अयोग -दिश वर्षि तर स्थान क्य कारा (रामक कारा)--सुक्षती, ३६१

वित जाना

(१) दिन बीतवा । अयोध-न्द्री में नेवर गणन वन्, आप बना फारस्स । ता मूल बे जिल्ला असी, वॉट लॉक्स दिन आग करोर प्रधान कर्वार ३३ दिवस जान शहा नार्वाह कारा (समक (स)--सुक्ती, शहर)

वर्षे दिन अ रहना । प्रयोग अब वर्षे व नि तर वर्षाकार १ सन् १० १५३

্যত্ন তিন মহিং মানা স্থান ভাগ ভাগ সংখ্য তিন লাম্মানাৰ মিলেয়ে লাম্ভনীয় হয়তে ক্ৰীয় পুম दिन इलना,— मुंदना

ग्रांच होती । प्रयोग—दिन बन्दी-बन्दी बण रहा का पौर मानते ने सरका कृती के नाम पांच बहाय चनी आसी बी तुल निक—वाल पुरु पुरु, दक्ष्णा, दिन देलने समा बा नदील—साम या १२५); ज्यो त्यो करक दिन शुरा, दास वाई (पहल प्राय—प्रदेश अर्था, देश)

(सवार प्राप्त-तित हरकता)

विम हमें

नध्या के सबस् । अधोन-स्वष्ट स्व व्यक्त भी है अ अ दिन को साम के नके बोरों का बारों योग अधना आसा-आल क्रकार कनु०-सारती, ६८

वित्र बहाडे

िन के समय कृष्णसम्भागा । प्रशेष—दिन दक्षाये. राजवानी के राक आने में इसकी क्षणमासि सूट भी नई पहम परिण—पदम्य कर्मा, ७०), दिन-दहाने सून की जिल कर पुलिस की दूजा कर की निल्, जान बेटान सूत जायेंगे राम ,? —प्रमाद, २९६;

दिन दिन सद्देना, अयाचा साना दिन दृशा बहना या होता

बहुत बाकी तस्ती धीर बहुत व्यक्ति दृतना, जुब प्रस्ति पर होता। प्रवाद-कर धवाई दिन-दिन दृत है विधि सका जब उत्तर गड़ा (पद०-जायक्षी, ११६६, यस कम बहु वानि वन इता, सुन् नोउरम् तृत्व वान् दिन हुना दिन होता पर्व कर्ता क्षेत्र क्षेत्र हिन हुना दिन दृती वहे वर्गन पर्व क्षेत्र की कोई (क्षेत्रक्ष्ण (१ --क्षेत्रव, १०); दिन दिन दृत प्रव कर हो हा दी (भाव प्रव (१)-भारतेन्द्र, ५७०), परव बहुत वनको नेजनान होता, बाई दिन दूतो देव बादित कुमारी को (ग्राम्य) धेवाव-एकाव द्यार, ६५)

(पमत्वपूर दिन पूना गत बाँगुका बदका था हाता)

हिन-दिन सभावा हाना १० दिन दिन सदना दिन देना बदना १० दिन दिन सदना दिन शक्तरना १- दिन क्रहना



दिन पतला पश्चना

(१) बुरे दिन होता । इकान-स्वारे दिन पतने हैं, ज काने कर करा हो जस्म (गोदान-सेमकंद, १०९); कर्जा का स मतने तुम दिन किसी के कभी भी जून रंग किसी के ज कीको (चुमरोठ-सार्डजोस, १८५)

(२) विर्षत होता ।

दिन पश्चदमा,—फिरना,—हाँदका

(गमा० गृहा -- दिन बदलना, -- बहुरना)

दिन पूरा होना

- (१) मृत्यु समीप होती । प्रयोग—रास्टर नास्त्रार नार्धः विभावर दश करते में पर एक वे भी काम न किया, क्या कि उनके दिन पूर हो। यह च गांधा प्रथान राधान दान २९३): विहासी, नहीं, वर्ष बहुत है। दिन हो। नम् पूरे ,पश्च—र्जनेनद्र, १३६)
- (२) अवधि गमान्त होनी ।
- (1) वर्षवती स्थी के प्रमय का दिन विकट होना ।

दिन पूरे करना रे॰ दिन कटना

दिन फिरना दे० दिन फ्लस्ना

89

O P -185

(२) स्वस्त्रता में शबद बीतवा ।

दिन भरता

ः दिन सदना

दिन मुंदरा

र दिन इस्ता

दिन में कारे दिवाल बहना

होम वृत्र होना, बहुत करेवाली में पहला । प्रकोग--क्यम् के मान तथ किए मुक्त केंद्र है जो सामर्गदन रेपकर कर स्थानकान रिजा करते हैं, उन्हें भी दसके विना रिज में नार्ग रिकार्ड करते वर्गत हैं मा--कोशिक, अस

दिन गत

तर नवय । प्रयोग---कोई-कोई देख सीमवस दलना वर्षिक साम तैयार करते हैं कि उमे किसी देश के गल महते की किस म किस राम बरते रहते हैं (विद्याप (१)---सन्त, क्ष)

दिन गत शीमका व जानना १० दिन शीमका न जानमा

दिन ल्ह् जाना

- (१) सम्बद्ध दिनों का संभ हो जाना । प्रयोग-स्थानं कहने सब कि सब भरतालुबान के बचाने के दिन सद गए सुहाराठ-खाँठ नरंठ, १४३) : सद गर्य में दिन जब कि बीच बाब तेल राज दरज करते थे (धरतोठ-रियु, १४०.
- (२) विवर्षि बदल भानी । घरांग—अब बहु दिन लद गय बब देविया इन एकमी म या जानी भी गोटान --प्रेमचंट १६३) गोनी-गानाम का कर्णका तो छोटा नहीं है - व दिन सक नमें (गोली---बदुरंग, ३०५-४)

दिन जीरमा देश दिन पलस्ता



\$ 1

विनों का केंग

समय बदलने का प्रमाण (प्रतिकृत स्विति के निर्म् प्रविक-शर प्रवृत्त) । प्रयोग — कस् यनगति के आहटति दिनदिन शीवत तेर । विवृ विकास विकास कथा वर्ष दिनन के दौर (जन० — पट्टमानर, है): रहियम वृप्त वैदिए, देनि दिनव का पेर (श्रीम कवि० — शिम, नेशः विका को छर प्राह्म, नृत-सर पीर कार्यो, वही पन आनम्ब न वार्यो केशी कीति (स्वत कवित — स्वार्य, है) क्या दिनों का पेर इस बनको कहे वा कि है दिनामा गई। शाम विकार (गुमरी० — प्रतिक्रीध, प्रथ)

दिमान धान्समान पर चडना, जाना दिमान सदना

बहुत अधियान हे तो जार गम्य भूमा दिएअअबस नामका वीर कृतावश के दो जार गम्य भूमा दिएअअबस नामका विश्वास आम्मानकार जा व्यूच्य मानव(१)—प्रेमकाट, १९०); तम बुक्क्य विश्वास धाममान कर वह जाता जा भीनक (६)—प्रेमकाट, ३०); नुम मोनों के दिवास कर वह में क्यूडां (१)—स्वस्थात, १४४); किर विश्वास कर बढ़ा तो पर्यांग्या भी मही वितर्दे -धामक १२६

गराज्यसः विद्यास अस्यक्षानपर होना दिवास व दापा जाना। दिलान व जिल्ला) दिवास भागसान पर जाना

दिमाग राजभाग

न्यस्य तथ हे कुछ सोध न धाना । प्रयोग—कम्मा व। विमान उपास मा नथा (वीने०—संव संव, ११६

विस्तान का गृहा कर हो जाना

रे॰ दिमार भारतमान वर बद्धशा

भोगरी काली हो आली लंग पर जाता । प्रयोग—सभी भाग काम दस विस्थाता परणः समान तमायकात विमाय का पृशा कर हो सामग्र (1890—समाठ, अ)

दियाग की अर्थन

मार्थानक उपन पृथल राजवन। इतिहार । प्रवास नार्था व (दिवानको सार्थ) हार हजका प्रशे पुष्क—है व्यक्षे -४

दिमान जपाना,--परुखी करणा,--क्रहाना

बहुत गरेन किया करना। प्रयोग--रिन्धे विश्वकार अ अन्य की करा भी आई में प्रमुद्ध कर दिलाता है उर्ग का अकट गरना कवि के लिए इनना दुक्त है कि नहुद दिमान प्रयो करन पर दो चार सरकनियों ही के काफा न यह मुखे गाई गानी हैं साल यूक-नाल भट्ट. २१), हम भोग बनना दिमान बना कर देन की उन्तरि के लिए पारित्रम निवाद हैं (प्रदेशाठ-गाँव दास, ६६) शार व्यक्तिय निवाद ही सकते हैं तो मुख्या में मान । वा नाद प्राथी है, यह तम दियानप्रकों ही रही (मृतन प्राथी क्या क्षण्य है यह पेरी समाद में मही भागा (भाजपंत कराने की क्या क्षण्य है यह पेरी समाद में मही भागा (भाजपंत कराने की क्या क्षण्य है यह पेरी समाद में मही भागा (भाजपंत कराने की क्या क्षण्य है यह पेरी समाद में मही भागा (भाजपंत कराने की क्या क्षण्य है यह पेरी समाद में मही भागा (भाजपंत कराने की

(समाव मृहाक---विज्ञास जायता, --समाजा)

दिसम्ब जार्ना करना

दिमाग संस्कर साता

हिम्मन का चन्ना भागा । अयोध-नरमनो भी नेम्स हुए है. ररमनो विभिन्नम, कोर्डियो बार्म्स । रिमान संस्थर वाले नगना है (सामठ (ही-मेमकब्द, प्रद्र)) उसका विम्लयक संस्थर भागे लगा (ब्रान्ट-- देशपाल, १२४

दिसाम श्रद्धना

९० दिमाग आसमान पर सद्भार

दिसाम चारता

(१) हैरान का कायना—दियाय साथी का सरहता। प्रसंग दिलावित्त के प्रकृति उसके सन्प्रान्तक) गर्णसान की हर एक सकत में जिल्हु और देशा की कालाम करते-करने हमार गुरासरमार्थ इन दिला का द्वारा का दिसाय हो। बार कन स्साठ मुठ काट सहा ५३

(४) क्षेत्र को बान सकता । बहुत बनव्यक्त वरमा

(यम) पहल दिसाम साना



विभाग टंदा होना

(१) कांच शांत होता । प्रयोग ~ चर्मा वस करने कार गुम्हारा दिमाग रुपस होता (मंगाठ--सर्व, ७७ (०)

(२) पारत्य पिनना—कृष्यि विनयो । प्रयोग—विनये प्री में होने मानी रिकास तथा। (\$310-4500, ४६) रेकिने धकोग (१) में (२) की

दिमाग यक्ता करना 👫 दिमाग श्रेपाला

विमाग फिर जाना

(१) धमाद होता । प्रयोग—चार वक्तवर बना पद ग्राः। उसका तो दिमाए ही फिर गया (मृठा०(१) -वंशपण, श्चिप: इस वर व्यक्तिविर्विवही का अस्तिवार क्या विक गया, सभी के दिवास फिर गए (१४० (१) - प्रेमबंद, १७४०

(२) विचार बंदछ माना ।

दिमाग यह जाना

पमन होना । प्रयोग-नहे सिमान नहें शुर है इस नुद fing के (मुलेक-सराव कर्मा, १७०); लाखर्कन के मुख्य कई बार पृद्धकार्या कि श्रम श्रभू की मान्त । परंग बटन ब्ध तए बग्रा ? (मा-कोशिक, १००)

दिमाय सहाता देव विकास जपाना

विसंधाना

प्रेम हो जाना उच्छा हो जानी । प्रकार-- कियो पर सियो का दिल का बाय मी जमें ब्रेट रोड वेता (ब्रूट०-५० নাত, প্রহণ্

(समाय मुहार---- व्हिन्ड अटफला)

दिल उछात पहना

(१) बड़ी प्रसम्बद्धा क्षेत्री । अयोग-एकाएक उन्ने बस्त गूकी, रमका रिस उद्याग पहा (गकन-प्रेमक्ट, १५-१९) . सामिनिको के बारे में उसे की श्रीवनिकार स्था मान्य हुआ, सभी अपने ही में देख दिन उद्युक्त स्था भेवा (बर्गण--नामांक, १६४)

(२) पनराहट होनी—क्लेबा उक्तना । प्रपोप—अव किस्तो करवर वेती को नांगों के दिन उपन्य कर

भोडा तक था जाने (गवन दोमचंद, ३२६) : यह करान दुम्य ती नहीं देशा काना, बच्ची का विश्वाप नहीं जुना भारत दिन उद्युव रहा है. इनेबा मुद्र की भारत है (पहन पराग-पद्भव अर्धाः ३०

दिल बहुता

क्यों होती। प्रयोग-दिन करा एक, एक दिल जनता, दिन उदा एक एक दिल वैदा (बोल०-सुनियोध, १५६)

दिल उदा-उदा फिरका

मन अस्थिर शोना । प्रयोग----चारिए दिश धरा-नदा स किर्र दिश प्रकृष में सगर पुरुष पाने (क्षेत्रे)—हरिसीय, १९)

বিদ্য ব্যাহ বছলা

इंदर्क का ककामाई होना । जमोग-सायकी यह हशीयत मृतुका केम दिन बाप से बाप उमारा प्रांता है (परिश्लाठ---प्रो० वास. ११): नेव विश्वने रामय किसी विस करते जारम विषयानि की का दला में बैटा रहा है। दिल अमह-दसव काया 🗲 पहानद के यह - पहानव वार्मा ६९ - जाति को क्या हरा भग बाधा दिल हमाग्र असर उसर असरा गुमलै०— हरिजीय, १०६)

विन्य उन्नरमा

- (१) की प्रवासना : प्रमोच-नाट ना कब गया बहुत ही शह । इस परे दिल उमर गया गेरा (मुमते०--हरिश्रीध
- (२) कृता होती।
- (३) मत म सगना (

विन्त भोठो तक भाग

बहुत धकराहर होता । प्रयोग-अप विकती करवट तेती नी बीगों के दिन उसन उसन कर बोटी एक जा जाने (सहन—देवसंह, ३२६)

दिल ककोटना

यन में किसी बात के सिश् दीस उठनी । प्रयोग-समीना का दिस कचोट रहा है (साम्छ (१)—प्रेमचंद, २४)

दिल कच्चा करना

प्रवरम्बः, वन के कथजोरी सानी । प्रपोप-दिन इतना

करना कर लेगी हो कैसे काम बलेबा (गोदान-प्रशस्त्र-८. २०९)

दित्व कड़वा करना

दुर्भीय माना । प्रयोग – हम किमी है किमलिए करने वर्न बात करनी कह न दिस कहना करें ,वीश०-स्टिओध,१५५.

दिल कस में होना

मन क्ष्ममें होता। प्रयोग---किस तरह तन का करण ने उप तके यह किमी का रहा तका का में न दिस (बोला)---हरिसीस, १९०

शिक्ष कर कांदर

मन कर आक्रोण या दृश्य । प्रयोग---कम्म काटा व को गर्क विस् का तो किसी, की न पाल हुन काई कुमती० हुदिजीक, प्रक

हिल का गुकार

परेष । जन्म-सम्ब पहला है जानकी बनयनती और गरापल ने मेरा नृत्या क्ष्या कर दिया । यही थी, मेरे दिल के क जाने किसमी मुकार करा हुया का (१४० त्)--प्रसम्बद्ध, ३२६.

दिल का गुढार तिकारता या विकासता जुलार विकलना या विकासना

सन का क्षेप विकास स्। विकासना । प्रयोग—ध्य की विद्या भी की, एका जी, केविस तभी जैसे किसी के सम-भाग कुमाने की परवाह नहीं करना वरहती, अपने दिख का कुमार विकास कर ही रहेगी (मान्ठ—(क्ष' क्रेसकन्द्र, भूक) , विकास गया है दिल का सवार ,कुट०—क्षम, १००); यह स्थव्ट क्ष्म के कोई भागति नहीं कर क्षमी । हां दूसमें पर क्षमार क्षेप क्ष्म के की धुनर-पुनाकर दिल का गुवार निशासनी बहुनी की (भवन—प्रवक्ष्म १४७); इस नीने से असके किस का गुवार विकास सम्मा पर (मूठ सूठ— सुदर्शन, १०४)

मधानम्य —दिसका बुधार उत्तरमा या इतारमा दिसे का प्राप्त

मर्शनक कीला । यशका स्व क्ष्मीन कोलके-बादन उनक दिल के सार धाव भर गयः सन्दर्भीक- नाहुल ६६ अरा धाकर महा का भीर किल की कार भा नहार की है रचंदमा पुराती पर नई घी, दिस के अक्स कुछ सूल पने में कि किर केंद्ररे हो वस (पड़ेम० के पत्र--पद्म० शर्मा, ३३५)

दिल का बाब सरवा

कियो सम्बंधनक प्रोड़ा का पोर्ट-बोर कम हाना । प्रधीय--११ वर्गाव वेश्वने-बीटले उनके दिल के खारे पान भए गर्ग सतमोठ---एट्टन, ९१

दिल का पांचे हरे। रहेगा

क्य की गोला सदा बनी पहली। ययांग---शार जगक दिक के शास द्रयांश हो में (शुरु सुरू-- सुदर्शन, १०९)

दिव का बुखार निकलना वा निकालना रेन्ट दिल का मुशार निकलना वा निकालना

दिख का बांध्र इताना,-- हत्का होना

ियो निया में विवृत्ति वायो । प्रयोग—पेरे दिन का बोभ इतर वया ,मानव (११—इमचंद, ९६१, येरे जितने यथ बारके वान है उन्हें जमा शीवन या सर्वमाधारण को— जिन्हें जांच सुवामा चयन्त्र करें—मुना शीवित जिनम दापके दिन का बोभ, हनवा हो याच (पद्मव के पन्न -पद्मव सम्मी देश

दिन काला होशा

एक कार्यन, नीयन-जरम्ब चाटनी । प्रयोग ---ग्रहीय का मुद्द धार्थी दलना काला न हुना चा कि उस पर कीई रंग् ही न चढ़ना (कर्म०---प्रेमचंद, ३५%.) हाल काला पूजा वर्गी में है काल से है चन्त्रल दिन्द नाला (चोसी०----हरिजीय, ३०

दिल और भाग

पनका करूर पा कोच । प्रयोग आज किनमें दिनी से कालेज पानो है, तो एक बार तुम्हें अवस्थ देशती हूं । नहीं देसती ती, विस की बाग नहीं बुधती (किनो-निशस्त, ११३); कुछ हो, दिसको खान भी उसी हो नई (संगठ(१)-मेनबंद,१५७)

विन्दे की आग वसता

दन का कर वा कीन विद्या (प्रशेष -बाज (त्यने दियों के कार्यक वारी हैं, को एक बार तुम्हें क्याय वेशारी ह । नहीं बेलनी, तो दिल की भाग नहीं कुमली किली— निराला १९३

दिल की कर्ला जिल्हा

णून सुधी होती। प्रयोगः न्द्रैश मर्गे दिश्व और क्ली जिल यह ,धोली—चतुरंक, पद्धाः, लिल मनेची क्रिम तरह दिसकी कली दोलक –हो सीध पप

विक को गांठ, -गिरद

- (१) मनस्टाय । जगोग—सूत्र सके बाठ भी नहीं ही की ती पत्रे बाठ को सिनी की से सिनीय—हरिक्कीस दुई।
- (२) मन की दुविधा, निता । (समाव मुहार—दिल्स की घुँडा)

दिल की गिरह देश दिलकी गांठ

दिल की बात दिल में रहना

- (१) यन की बाल न कह भागा । प्रयोग—तम कियान विस नरह दिन के जुल बात दिन की जब किसी दिन में रही (बोल) –हरिजीध, १८६
- (२) इच्छापुरी गहोनो ।

दिल की समना

प्रेम होता । प्रयोग—पिए उन दिल की अपनी है, उन दिल के सदर राज्या भी पर का बना देन हैं किसी निराक्षा १९५ जिनके दिल की प्रयोग जनने दिल हुए कोई बीज नहीं हैं सुरु सुरु—सुदर्शन, २२।

दिल की इवस निकलना

गन का रोप हुए अला : प्रभाग --नश स्म सुद गारितपा दे सेने वी, जिसमें प्रमदी दिश की द्वत निकल जाये प्रेमाठ-प्रोतपद, ४६

दिल कुदना

सन व कलत होती । प्रवास दिस इंडमा न क्या हुडान स (बोल्स – हरिजीस, १६६

विस के काले होता

कुष्ट-प्रकृति क्षेत्रा, जोटा व्यक्ति होता । जयोग—वह 90 OP.—185 स्थीत दिन के बहुत काले. होते हैं (श्रुतार (२) -- यक्तमाक, २१५)

दिस के फफोल

यन की गोहा । अयोग----वश कहे दिल के क्योनी की रचक हुट बुट का तो गहा राजा नहीं (भूनवै० -हिस्सीध. ६१)

दिल के ककाने इंटना,—कोइना

िय की कुरून निरम्भी को निकासमा, पानी कृती पूरा कर की उंचा होना या करना। प्रयोग--है फफ़ासे पर क्यांने पर को ट्रिडे दिस से फ़्यांने हैं नहीं (मून्से०--हर्ग प्रोचे पर उपने बारमार में दिसा प्राचीय पाड़े हैं में उसमें चीवने की सूरम में पूर्व हैं (मून्से०-सू०)---हर्ग सीचे, को: कहानी सहने चने हो, मा दिस के फ्योंड़ कोड़ने (प्रेक्ट्रिक-प्रति), २०)

(नवा व्यार - जिल के क्योंले फुटना)

दिल के फकोले को रना रेश दिल के फकाले ड्डम

दिल के मजबूत होना

साहती का कुछ जीना । प्रयोग--- मेरिन इसमें तो सदह नहीं कि कोटन के बहुत महदूर य सन्तर्भक राहुल एक

वित्र के साफ होना

क्षत्र में क्षत्र क्षयर न शांता । अयोग---- नो पुन्ताची असी भागा में है लाग न ह दिल्य के मार्च पुन्न वर्चन ६३

दिस बाटकमा,---में बाटक होना

- (१) स्टेंड् में पहना । प्रयोग —युनुक तरह न पाय, दिल में सटक थ की कोटीक—नियमत, प्रश्ने; दिल हमारा हैं। सटकना है नहीं कीन स्थित्य प्रत्या नहीं स्थाना हुए कीली हरिश्रीम, १९३। (२)
- (२) बैब होना । प्रयोग--देखिए प्रयोग (१) में (०)

दिले जिल उठमा

हर्ष क्सम होता । प्रयोग-व्यक्त साम दो बार्चे करले



दिल पीचना

दिश जिल जाना है (दुक्ताक- दे० सक, २५०); दिस्सीय दिल करें किसी का लिल (बोलठ-हरियाँच, १९६)

दिल जीवना

एन को आकृष्ट करना । उपोय-अपो न ित कोन ने उक्त काला जो कि उपनी कमान भी कुछ के कोसें---हरिकोझ, ६)

दिल जुला ग्लबर

- (१) मत म मीत रचना प्रश्ना । स रह नगर शुक्त रचना करी । कोई विनदार मिन शाम इस बनन मी रे (छोटी०—जिसाना, ७०)
- (२) मोद्रे हराय न करना ।

वित्र कांत्रकर

- (१) वहे क्रवाह में । प्रयोध नाह तो दिल क्रिक्ट प्रत्याम निकानती (मान० (१) — संस्कंट, ९४), बोल दिल भी तले ने पिश पाने तो मिलाई न बाल निट्टी में अर्थ० — हरिसीध, ६६) (↔)
- (२) विका किसी हिएक के, विका क्राय के । अयोक— बरमो हो गये, मैंने गोकिन्दी में दिन लोक कर बात की मही की (गोदान—प्रेमबर, २४०); सम्बारकाचान प्रक सादमंत्री और पंत्र नगएति अयोजी आदि ने संस्थानकीती की विका बोलकर राष्ट्र हो (घटन प्रात्र—प्रद्रम्थ अर्था, च्या संस्थित प्रयोग (१) म (÷) श्री

दिल जांतना

मन की नव कार कह देना। प्रयोग—सेने पूरव तो बहुत होने की तकी ने सरका दिन जोतनो हो (व्यवन—ग्रेमक्ट, 198

(नमाः नुसः—विसं कोलका रक देना)

विस नदाही देना

कोक अंगरा । अयोग-सन किनी की करें अवादी करें यह समापि न ने क्रमारा दिश औत्तर - हरियोध, १९४१

दिल-चन्द्रा

र्गानक प्रमान दिल बहुत हाथ दिल बना का जो ना न बहुत रहद प्रमान हाइन जुसलेक वृद्धिक्रीय रहेपू

द्ति जुराका,— छात्र सेना

कियों के बन को आवश्वित कराना । अयोग--- मूल जिया को सुबर म दिन केया और दिल का म क्यों भुगा के दिल को सैठ--- हरिक्रींग्रे इंड काय क्षत कर सोचने देवे हम, सब नवा किय, बह न जब द्वीन किम (बासेठ -- हरिक्रोंग्र),

दिसंबुर चूर होना

दिस को बहुन कप्ट होता। प्रयोग—मा भूरी चाट युक्त चपटो को हो गया चुट चुर दिन घरा भुमसैक हरिस्कोस, १९८

दिल दिस्ता

मन को क्या होना है प्रधाय-भागा का के दिल किया है कीन दिल बाद जो खिल पूर्व का तलवा दिवले (पीताठ-भ हरिसीय, है)

दिल छात्र लेता १८ दिल **स्**राता

वित्र होत्स्या

धन को बच्द पहुंचाना। प्रयोग—जो स्ह्रे द्वीपसे द्राया दिव वर्षो न ने द्वर-करे सुनी हाई (कुनरी≎⊷हर्राचीध १६५)

दिस 🛊 सेना

बर्गत सम्भावन होता। धयोग—दिश ही कमाल ! मारी वजन दिन की सुद वाली (अपनी सबर—दश, ६५), बीड एकी होकी बाह्मिक कि दिन की सु जाय, पनाड़ के स्टाट हे —यंज्ञपाल स्वर्

दिल छोटा काना या होता

दिश उदास करना या होना । प्रयोग-व्यादे उत्तर-राम । सरक्षेत्र काई का दिल सहेटा हो जाता कि नहीं (ग्रीदाश-क्रियद, ३४.) दिश खेटा क्यों किया और यह विना क्यों है क्यों हुई (नुद्र--शक्त, ३)

दिल क्रमंड करना या होना

ि जरावाणन देन। १ तोन प्रयोग - अस्त्या देश भरे व दिव व तमागर दि तबदे पत्री गार देश भरोहाव योवदेशस १२ प्रत्यक्षणी र अभी गशी देशे पर नम्पर्य न जो को सुकुष्यक जिल्ला ६५ वस्त अमे दिल जाव स्थित



海外型

जबई हुई (क्रेंजध-हुरिजीय, १८६)

- (२) छवं करनर या श्लीना ।
- (२) संबुध्ट करना वा होना ।

चिन्द असमा

- (१) युद्ध होती। अयोग कुल मिलेक्यों न कोर की युक्त है, शिन अलेक्यों न शिन बलानेक बोलेक -हरिफ्रोध 30
- (२) बुल होशा। प्रयोग—हुन्युर, नेगा तो दिस सन इहा है (स) कोशिक, ३६०)

दिल जलाका

- (१) वन को दु व पहुंचाना । अयोग--दुश विशे क्यों न भीर को दुल दें, दिश असे न्यों न दिल जनवन ने (वीर्व) -- हरिऔध, ३०) (->)
- (२) विद्राता या कुटाना। प्रयोग-नेतिए वर्णन (१) में (+)

विल भुचना

प्रेम क्षेत्रा । प्रयोग-वर गई बाड जब जुवा तब बया हुट बारके जुवा म दिश हुटा (बालिक-हरिक्योध, १२०)

विकास करना

संतोष या नगन्नी देना । क्योय-व्यान नाना को उपर उसकी दिलजोई करनी स्थर इस कोनो की अवस्तीयो करनी (राणाः प्रथाः - नाभाः दास, स्टकः मा के बहना पर तस्य माना करके परमा भाई उपकी दिनअर्थ करन सम से (मानः (१) - ऐनवंद स्ट

विस्त जीवना

प्रेम करना वा करामा । प्रयोग-इटशी बोदनेवाचे कहा दिल जोड़ नकते हैं (देशमीठ-रामठ वर्मी, १०९)

दिल टटोलना

धन की बात जानते की कोजिस करनी। प्रयोग—चेव दिल का उन्हें नहीं मिलला, हे नहीं की हटोल दिल पान चुमहोo—हरिग्रोध ४२'

(सप्ताः गृहाः----चिक्त देखना)

दिल दुकड़े-दुकड़े होना

तु व्य के कारका यन का कहत ही जिस्स होता । अयोग उसे इस हातल से देखकर मेरा दिल दुकड़ टुकड़े हो गया विस—प्रेयतद, २५०)

(लगाः पृहाः — दिलं दुक-एक होना)

दिल टरना

- () इन्नेत्साह होना । प्रयोग—यसे १८ अ ऐसर काम करना नामकृत या जिससे अभियो का दिल दृद नामें गवन— प्रेमक्ट ६० अनक प्रश्नवादा क दिल दृद्ध नग सामोठ दृश्वमा उपन्य , ह्यानक वंद पना प्रश्न कि परा दिल पर नहीं स्थानिय हरिस्टरनाम में मं नय, प्रयाग किया वर्ष (स्थानी सम्बद्ध-एस), १०६, ()
- (२) बहुन दुनी हीना। प्रधीन-नाता विलाके विल टूट नमें व और उनक नकतो की दूसरी क्षेत्र भी नक्ट हो गया को नदील अलेश ११९ कान में हर नाई बनुत्र व निष्ट ता रहा है पर म भी नुम उम व्यास-दूलार नहीं योगे, तो अवका विल टूट मध्यमा (बहुल-देल क्षल, ११६); मूरवाय चला क्या होता। यह हाल शुनेना तो अस नरीय का दिल टूट वाधेगा (व्यल(१)-नेमचंद, ४१२), यह नई बाद यब मूहा तब क्या दूट करके जुहा व दिल टूटा (चीनेल-हरिसीध, १२७); वेलिए प्रधीन (१) में (÷) ची
- (३) दो व्यक्तिको में मनोमालिक होना ।

चिम उंटा होना

- 43
- (३) प्राप्ति मिलनी ।

दिल डिकाने होना

दिल में आति, मनोष या चैसे तेला। भिन्त स्थित होना। प्रयोग----तब कहें बात क्यों डिकाने की है दिकाने न अब कि दिन नेका (जुनति--हरिकोध, १११

दिल गडपदा

(१) व्याकुल होना । अयोग-वह गए हम तहर करने



दक्त कर दिल शहप नवः मेरा (बोला) -इस्त्रीछ, १९१)

(२) फिल्ली बात की वर्का प्रकार होती ।

दिल नोड कर

बहुत जित्तक प्रयास है । प्रयोग—कारोले नक्ष्य कर निया या कि सरील में कामिय्सरी की कुराले के स्थि किय निर्म कर प्रयास करेगा। प्रोमीर—सेमबर्द अपन

दिस तोक्ष्मे बाजी बान

वी की बुक पहुंचाने वाली बात । प्रयोत—बही कोन्या-पाला सील-स्त्रह का पुतना बाव क्यों ऐसी क्यि शोवन बाती बाते कर बहुर का स्वीदान-प्रमाधेद, २३०)

विस्त भाग सेवा

दिस में अस्पान दुध होता. भी यतान कर रह जाता। प्रमोध—मैंने इसे देसकर दिस बाम निया (संत्रा)— प्रमाद, ५०), काम ही क्रम्याहबरी निया स बाध के तथी बाह्य (मान्क्वीफ़िक, १२०); अब बाद बाती है तो दिस बाम कर यह जाता है (क्ष्येपराग—प्रदान क्षमी, शहर

चित्र ददता

विक कमकोर होता । प्रयोग-स्थ विश्वी की न राष व साथै दिल वर्षे कीन दव नहीं जाना व्यस्तत-स्वितीय, ५१

दिस्स व्यक्तना

पीका होती । अयोग----व्यक्त बहुत ही क्षणक रहा है किल हो गई भाग करवृती क्षणके (भूभतेत --वृत्ताहोत, १) विस्ता दुसा होता

साहत बढ़ता । अयोग--दिनयानो के आयन दन दिन-यमे दून की में दिन अगर दूना दूनर जोलेंठ--हरिजीछ, इस्त

दिल देगा

धानिक होता, जैन करणा। अयोग—दिस काइन है दिल देवने की विजयार तो कोड़ दिखानो नहीं (माठ एक— सारतेन्द्र, ६२९), कभी ने दिल है दिला (कोट्रांक—दिसका, 59 किन रहता है यह देव विजयाद की मिन को सि

दिल वीडमा वा दीरामा

पने नवन। ए। बनान। । प्रयोग जारून बांडमान प्राप्ता

प्रकारी बीजों के निवस्य किसी घर विश्व नहीं धीकाते परीकार-व्योक देखा. २१: बदा नियाहें भी नहीं हैं शोदनी बोबता है दिन व दोदायं सनद हैं (चुभतेय--हर्र-प्रवेद, ३१

विल धहकता

वयभीत हरेगा । प्रयोध---शाम भी क्या है बहर कृषणी नहीं दिन परकने को बहुत दिन हो गये जुनगैव---हरिसीय, ९८

(मना - नहार---चिक्छवर् प्रथः करना, -- ध्रमकता)

दिलं नग्म पड़ना

पहले की दुर्भावना का र प्रेरका म कार्ग होती । प्रवासनक राजी के दिल उसकी सम्बद्ध के नम पढ़ का स्थित (ह)----प्र-वद १९०

विन निकास कर रक्ष देता

दिल प्रकार सेता

िन क्या के रेन्या । प्रयोग—काहिये दिल उदा उदा व किंद दिन प्रथम के अमर युक्त यात्र (कोमें) —हिंदिही। १९

(नवार महार-विक चक्रष्ट कर चैठ जाता)

चित्र एकडे फितना

दुनो यहना । प्रयोग—का समय से है पक्ष प्रशी वृती नद न दिन काचे किये तो क्या करें मुस्तिय कृतिसीय, १९२

(नमा॰ वृहा॰—दिख पर हाथ रखे फिरमा

दिल पश्चमः

रतानार र १ वर ह वजरार ते से ११ व न देख होना ।



प्रधान---मान ही है। पका नहीं मेरा देवले देवले वदा दिन भी (भूमहें-----हरिस्टोध, ६६), बाज काले हैं। पर दिल दक गया है (क्ला-----बुद्ध, इंटर्स

दिल पत्थार का शरेकर

ह्ययं कठोर होना। अयोग—मामा, सृद्य दे अभ्यका दिल्ल व जाने किया परधार का बनाया है (१४०(१)--प्रेम्बद ७०

दिख पर खोट करना पर होना

दुली करना या होतर। प्रनाम--दर दिस पर चोट समती है तो मूंह ने बाह निकलती ही है (कर्मक- प्रश्यद, १५२, दोनों का सरमिया xx पहलद दिस पर चोट समती है (पदल प्राम--व्यक सर्मा, १९९)

वित्त पर पन्धर रक्षकः

बहुत दुल यहने को यन को दुब करना। प्रधान—दिस पर परवर रक्षकर किए सपनी कोटनी में क्ली आही (साम्बर्ग (१) - प्रेमसह, इत)

विल वर्माजना,--विवलना

देशाई होता । प्रयोग-नगरमाणें को यह रेणकर नतान हुआ कि नारामण को दिल सन इतना दिवस नगा है (बाइन्---दै० स०. ३९६): किसी का दिल पसाजता है दे नी बहु एक मूजी या एक गर पान्स भी प्रसादना संस्थि। -राष्ट्रस, २): क्यों की भारतपना कीजिए तो सादव देव का दिल गरीज जाय (पदा० के दश-पदा० सर्मा, ४६०) बाजाज में भीश था, जो सूनने बाले के दिल की विकास देशा का (पदान पराग-पदान० समी, १००)

दिल पानी करना

कारणार्वं करना या जीय, कोच धारि की मिटा देना। प्रयोग—माहं तो कमम ने के दिस नवका कर्व पानी। गुठतिरु—वांडमुञ्जूब, इतर

हित्र पिघलना के दिल पसीजना

दिल फरना

(), हिल्लामा प्रत्यागा करता काली । प्रयोधि— हम्बरी 91

OP 185

मानो बन्द बुनकर माना का किन और मी कहा जा ता भानक (१)—प्रेससंद, २४९), आंख होती धनर न कूट गई, देख कर कूट क्यों न दिल कहता (कुमतेक—हरिद्योध, १०६

(२) किमी य विश्वकित होती ।

दिन्द फिरना

दिल कांका होना

उत्पात हीन या थिन्न होना। प्रयोग—साम को ही सुन यह डॉक हुए रंग कीना देश दिल कीका हुआ (बील०--हरिसीध, १९६

दिन-फेक डोना

गरव ही धनुषक हो माने बाला पन-धना । प्रयोग— एवं कर निवसन बाने दोस्त प्रता बाहत है कि बाठ के हो कर बाब तक बनाव दिल-संक ही है ? (अपनी अवर —स0, 60), एक कर पुनिस मुर्चारटाट बाएं के, और बाल बीट दिल-देश (पीसी—सन्दर्भ, १९६)

चित्र केरका

थन को बदन बना। प्रयोग---धर्महर्म तो फेर सेथे फिर इस दरन म (धन जनर) फिर नवा वीतः हर्षिक्षीध १९३

दिल बंधना

वेम होता । अयोग—विम दिश वमी एक मूं, दे सुन भावे नवीत (कडीर प्रथात—कवीर, २०)

विलंबदमा

पंत्रकाहन विकास । प्रयोग---श्रममे बन्हे प्रयमानन्त की प्रमान हो एउ प्रयोग दिन प्रयोग की माप हो एउ प्रयोग प्रश्न भी। (प्रश्नुक के प्रश्न---प्रदेशक अपी, प्रश्न), बढ़ करी क्यों ने काम हम बढ़ बढ़ साथ बढ़ दिन्हें स्थार बढ़ाने से (भूभतेक--- हरिजीध, १००)

वित्र बोसों वस्त्रका,—हायो उस्तवा

(१) प्रवराहर होती। प्रयोग—यह यहां भी तही आगे, सान्ते में भी नहीं भिने भी फिर नमें बहा है उसका दिन शोगों अपूलने सना (शेवन—प्रेमचंद, १३९., रह यह कर प्राता ध्याकुन ही बाना था। दिन हाथों उसके परता था। (सीठ—मेठ घट, १८३

(२) बहुत भूग (रेनर)

दिल शाय-साम होना

दिल बुक्तना

भित्त में दिली वकार की उपन या अल्पाद न घट्ट बाना । प्रयोग—क्यो भूरफाई हुई धियं हो, क्षेत्र बुधा हुए। है किस ,नुश्क—शक. १), यर बुध दिले की बुधायं किय सम्ह भीतक—हर्शश्रीय, १९३

ਰਿਲ ਪੈਂਟਲਾ

- (१) बुध्य के सारेन के कारण विशे का हुना जाना । प्रयोग—साधा और निर्माण की दिल्ल नरमी मा किया का दिन केंद्र जाना का चिन्न (२)—डेस्स्ट, ६६); भूषायी मादनीनोक्स पहुंची नय उत्तका दिन केंद्र तथा (सुन सुन-सदर्शन, ५०
- (२) बहुन प्रश्नाः प्रयोगे—साम उस अवक्षर स्वतरको सामन प्रति देशका व्यारी का रिश वैद्धा साना का (मान० (१)— देनचंद्रे, १५३), मध्यत् की सामाय कान में आई दिन वैद्धा, सबसी नजर पार्ट जीर हाथ नाथ पूर्व (मान० (१)— देमचंद्र, २५३): मोसाक्ष्म का दिल वैद्ध नमा (पोटी०— रिमानः ६२

दिस योक से इंग्रहा

मन चरित पादको होता । घटना - इ. रहरून ६। रहक बच्चे पर को ब्यूर होने बदारे थे। उसकाहित एक क्षेत्र संदर्भ तालाका रोग्य १ प्रेटबंट २०३

दिल बायका

मन का जिल्लाकाच्या स्थानक। प्रयोग स्थित क्रिका रे कि तम इसके जिल भवसे कर्णबाट क्षाटमा। सर्वाहरू आग

जहांचार है। जोशी १२९)

दिले भटकरा

करियर क्षानिक स्थिति होती । प्रयोग—नवी व ती इस भटक भटक धारी दिल भटकता रहा सगर मेरा कोलक—हो।को॥ १८९

विस्त भर भागा

टवाई होता, हुशी होता । प्रधाय—हमका दिल भी रह रह कर भर बादा का (प्रस्तीक रेष्ट्र, क्षाड): बेटी, तुम्हारे बारे की ओर नावनं की (हम्मत नहीं पहल), दिल भर भर भागा है (स्माठ २/—ऐमफेट, २६%): बाल भर हेल प्राप्ति की भूक दिल भगा कीन मर न कर साथा ,वीलय—हिस्सीस, १९२

विन्नं अरमा

यन की करोग दिलाका या शाना। प्रयोग-आंगा क बनार नेते उनका दिल कभी नहीं भाना था (द्युट---१० २०, १४०,

विस अपने काना वा होना

रिय दुनी करना या होता । प्रधार-धार मुली की सामू बाती, हुम की, दिस आही कर जाती(सीठ-बार्मन, १२०)

विसे मञ्जूत काना

धन को धनमूह करना, विश्वत करनी । धनीय—प्रश्विक उन्होंने दिश समसून किया और जान पर संस कर सीते मोदान—केनबद, कर

का का दिन्ह पाट्रा करना)

दिल मलना

धनम वर्ष्ट होना । प्रयोग---वनस्त्र स्थों न दिल रहे प्रयान। दुव दुवी विस्त विम्त तरह हो स्व (बुधते०--हरिजीध, म्द)

ज़िल प्रमान देना

- (१) प्रश्ने प्राचार का को प्राचान के स्थाप कर हैना। इसका अवदार कालास्त्र के काला है स्थाप हुए। ना हुआ दिस का देखा है समझ अस्टि हुए स्थीप अर्ट
- (-) यन का बटा कार उहुवाना (

दिन्द अस्तामना

(१) मन के क्ष्ट्रेका विभा ध्रक्त दक्षण कृत्या

प्रयोग मुनश वाल तो अब का किसा प्रकार प्रका किय दिल गमान बट गान कर ए एन बार ही काल इट स्पट्टम प्रशास-पट्टमण क्षमी, ३०,; ग्राम पर जोन पट्ट अले ही के क्या करेगा समीध करके दिल गोला - हरियोध १९१,

(२) पर को इक्दर को पर व ही दश कर रह जाता । (समार- मुनार----विन्द सम्बोध्य कर रह जाता)

विक मिलना

- (१) वर्तनम् होता, सद्भावता हाती । प्रयोग—दाम इनकी है नहीं गसती नहीं क्या दिमान है नहीं की दिन मिल [बोल्ड-स्टिजोध, १८५)
- (२) हेम होना । प्रभाव—राम बाम मू दिन मिनो बन हम पड़ी दिशाह कवार प्रथा—कवीर, ५६ ; बनते दिन नारायण को पड़ा चना कि सनाम मीजी की बेटी गंदी वे साबू का दिन मिना हुया है (बहुन०:-दे० स०, २५०)

दिल भिकाना

- (१) प्रेम करना । प्रयोक—जनव तुत्र पहले हो वे साम नो गलती ही | अला, पहले यो वं भी बड़ी दिन मिसाने क्षाने भित्र गकते हैं , जिल्हों—मिराला, १२५,
- (२) जुल कर बाह बीत करना । प्रयोग—वर वे दीव की धीरने—वंह उनने दिल नहीं विनाया का सकता (परता—धीनेन्द्र, १२%)

विल में भाग क्याना या सगाना,- सुस्याना

बहुन कोम या कुढ़न होती वा पैदा करनी । प्रवास—पर उसक दिन म दिश्की न विरुद्ध को आग स्वयं रही की, उस देनकान्त न नदका दिया का इहमान देन सन देन राज्य म न। यह अग्राध्न कीनी हो की विद्रांह को काम दिला म स्वयं रही को मानन के देमनट, १४९ जन आम दिल म नकी की मेन हिन्दी नहीं पड़ी क्योल न जिलासा, ६६): मह बाबल, मह बरसा, विज्ञती, दिन म नाम समर्थी (पैटारे--अन्त, १९,

दिल में आग सुध्याना देश दिल में भाग लगना

दिन में ऐंड कर रह जाना

दिस में कट कर रह जाना

दिस में कमर हाता

कही दुर्भाव होता । अयोग—क्यो घरा सौदा किनी विक से रहे काहित दिन में कार रहना नहीं बीलक—हरियोध १९०

दिल में कांद्रा साच्यता

वारित होता, शति युवाराची होता । प्रयोग-नापका सपनाय वृश्चित्रय के हर वार्यास्य के दिल स कार्ट था वृक्ष रहा है सम्बद्ध-नाठ वेद, इक्षा

दिल में बारक होना देन दिल खटकता

दिल में घर करना

- (१) यम के शराबर काश्य दमा रहना—प्रिय मगनः । प्रयोग—सम्बन्ध में तो उसके दिस में पर ही कर लिए। वा (सु०श्व०—सुदर्शन, १०५); उसके उनके दिलों में वर का जिला (प्रेमा०—ग्रेमकट, ४३३.
- (२) कर में विश्वास कर जाता । प्रयोग—क्साकार कार्यियों तीय पर करियान हाता है यह तर तृष्ट्र वाया के दिल में पर कर प्रया (मृद्य—अंध नाव, ६)

दिल में कोर होता

- मनस इतिया ठानी । प्रयोग —न्त्रीकत नुष्टार दिस म अब भी चार है । तुम अब भी मुभाग किसी किस चान म दर्श रखते हो (त्राम- ग्रेमकंट, ९१)
- (२) क्यट करना । प्रयोग---चोर क्या चोर का अचा है वह कोण दिनम अग्रन कियों हात चाले वहाँ भीत. १२%

चिल में जगह देगा

प्रेम फ्रास्ता—प्रकारण बनाया | प्रयोध—िश्य में विश्वन मुग्ने चयह वी बाको पर विख्याक (मुर०—नवश, ६२

बिक्र में वर्ष होना

सामग्रीक बेदना होगरे । स्वोत-वे जानने है कि सार्य-जाति के लिये और किए सध्यनवर्ध के लिये उनके दिन से कितना वर्ष का (बद्ध प्रतान-बद्ध कार्य), २४

बिक्त में ककांसे पहला

यन में बहुत कुल होना । प्रधोम-बहुत ही कुरे स्वतन भार भार कारोले क्यों दिल में हालें (मानंक-शुर्वकारेश, ७३.

दिस्त में बसना

देश होता । प्रयोग---वाकी दिन ने हॉर वर्ग, तो नर कान्ये कान कवीर दंशार--क्योर ४२१

(तशक मृहात—दिस से समाना)

दिल है देखना

- (१) वस में किसी बान का बच्छो नका नमक मानक । प्रयोग—को न बोली बात जरुरी बेंडली बात दिल में बेंड काली किस सरक्ष बोलत—हरिकीय, १९६
- (२) शत में स्थाधी स्वाम बना नेता—बच्ची नगती। प्रयोग—बह पहली कवित्रा ही जन्म पर वह वप दिल्ह में हैठ गई पहल प्रशा—पट्न- शर्मा, २६६.

किट में भारत सुभका

गहुत हुन्स होता । प्रयोग—शनको यह सक्त मृश्य पार पार्थी है भी दिश में आर्थ में यूभ आते हैं (सुर सुर— मृद्यांत २)

दिल में मैल भागा

गवनाय में संतर परनाः । प्रयोग-नशाः गर्ना के प्रशः होति है, पर ऐसी नहीं कि दिल में तेल जा जाय सुरु सुरु-नमुदर्जन, १०२)

दिस सम्बद्ध या समाना

) पम होना वे ११ना प्रथम क्षेत्र सम्बंधिक कर पिन को १४माना प्रशासक्तर स्थिती के संगतिन्द् धर वृक्ष को सालका व होगा क्रियोच क्षण कही न कही दिन्द लगरपा होता कार्यः —प्रेसक्द ३३०), एक कात्रु हो यह हो संस्त्री है कि बही इसरी काह दिए समाया हो हैं।— क्रोफिक, २७५); दिल स्त्री से तो सही स्वा हुआ है (स्ट्रीय २) यञ्जपात ४५३)

(२) यन शवनं का लवाना । प्रयोग—क्या कर मोग वास के दिल में जान के दिल अयर नहीं समृता (चुभनैसः— तरिओस, ७०

दिस लेगा

(२) प्रश्न पाना । प्रयोध—नुम ने दिन वे दिया । यह दिल कई को न दी । नेन नगरंगी को मानूब होगा कि बह मुख्याना नहीं चिटोल—निस्त्यतः १२०,, जिन रहे हैं औ गई है वे विका दे गई दिन औं दिन है के गई (चीसेंश— हरियोधे कुद

- (२) वेष में पदना।
- (६) यन का येद मानमा १

दिल लाफ करना था होना

यन वर दूर्थीय दूर करना या होना । प्रयोग-कर सक नी नाक दिल अपना कर बाक दिन में है कमर रहनी नहीं (डोल०-हरियोध, स्थ्र), स्थाक्ष्यत में पृद्धा-मेरी तरक से नो नुम्हारा दिन नाफ हो यसा ? (सन्तः (स)-प्रस्थर, ४॥

विक से

(१) भी क्याकर, प्रकाश तरह व्याव देकर । प्रयोग— कविता आहे अरही ही एक ही प्रवित हो, पर अवधी हो, भी में नगह कर के बीट यह कभी होना जब कविता परिचय प्रोट दिस के विश्वी कायबी (प्रदूषक के प्रश्न-प्रदूषक सामी २२०-२१

(३) बदने यत ने घटनो इच्छा सः

दिक से अचात्र भागा

वन में इक्का का प्रेमना होती। अनीय—पर दिलाती इक्का करी पादान प्राची भी कि लिखी प्रीपे गर्दी जिल्हा १८८० **में पन परम**् गर्मी इंट

दिल से तिकाल जालना

भून जामा । प्रयोग—अन्हे दिन से निकास दानका बहुन नहीं है (मान०(७)—प्रेमशन्द, १८)

(समा० मुता०--दिल से निकाल देना)

विल से मलाल निकास देता

मन से दुधाविका कृत करती । प्रयोग—जब बाप ने दुवती दया की है को दिन से मसान जी निकास द्वार्थिक रंगेक (१)--प्रेमकन्द, १२५

दिल हरा होना

की प्रसम्ब होतर 1 प्रयोग---करा दीयो, शाल भूग कार्या दिल हरा हो जायता (मानला३)--प्रेमकन्द, ५०)

दिख हलकर करना

भी के क्षेत्रक से स्ट्रकारा गाना। प्रयोग—कह को सकते हैं, कह कर ही कुछ दिल हरूदा कर नेते हैं (मीठ— क्ष्यन, सुरू

विस्त हाथ में रखना

मन नम में रलना। प्रथश --- थोर के हाम में न दिल में वें दिल सदा हाथ में रखे अपने (भीनेठ -- हमिंध, २९)

(गमाव मुझाव----चिन्न हाय में लॅनर)

दिल हाथ से जाना

दिल वक्ष में क पहला ३ वर्षाण ज्याप क्षाप ! इसको बेलका मेरा किल विश्वकृत होगा में बाला पहा (मांव प्रेक (१)--अक्षरेन्द्र, १८४)

दिस हाथी ४७लनर १० दिस बांसी उजलना

दिल किल उठना

- (१) अस या आतक होना । प्रयोग-हिल वर्षे दिन भी म, दिलमा भारिये जार्थ हिल वर्षे देर वा वानी क्षित्र चुनतेय हरिक्षीध ३७
- (२) क्रांगा के हुम संभर तका। क्यांग विश्वनी सूत क्षांन प्रसादिक दिला क्षांच भर आई वैदेशीयन हरिक्रोध ७६ जन नहीं कर पना दिल हिल कार हरिक्रोध कि जन नहीं कर पना दिल हिल कार

O.P. 185

दिस हिन्हा देवा

मन में समयको सन्ता तथा, वेर्चन सार तथा, कार्नावत कर देना । अधान—नामपाडी का विनाम हाव के सभी होत्र वेड संको के दिस हिला रहा था बहु १०—देंठ ६०, १८४)

दिलदार, दिल्यामा

र्गनक । अमेन—कार्ड दिनदार मिन भाग इस दक्त तो ? (बोटोक—निराला, ७०); स्वासकत कार्ड दिनवाना नीमवान क्या शहनता है क्या ? (वैतरे -अफ्ट, १३५)

दिवसाला

देश दिल्ह्यान

दिली प्राप्त में

सन् है । इदीन-स्वान बंजान वे पद की जब दिलीजानमें नहीं बदटे (वृभवेक-स्वरियोध, १०५)

दिलार दूर है

पत्न वास्ति वरित्र और हुए है। धरोध—भी धुन्तक निश्चनी है जबकी नामग्री-नध्यादन में ही अभी लगा है। दिल्की बधी हुए है फिर भी बन्स पर पहुंचना जनकी है। (प्रकृत्व के पत्र—प्रकृत्व कर्मा, दश्र,

दिवाला कडना,--निकलना,--पिटना

रिवाना होता । प्रयोग-नाहकारों के सम तो धनिषयं रिवाने करते हैं (गु० नि०-ना० मृ० गु०, ६२५); धीर नगर पात्र लामा समस्तांत्र का दिशाना पिट नाम ? (कर्म०-ग्रेमबद, २१.) बीस को इस क्यस्त या नेमस के (समनेट विकास और जीन नार खुद पीये तो धाना तो दिशाना पिट ग्राम (पैतरि-जनक, १६०); धनाने नम नम। (जारा निजयना कह हो दिशाना र (समक हरियोग), दक्ष) (-)

(- पुन् अप न रहता प्रयोग दिल्या प्रथाया र)म् -)

दिवाला विकलमा १० दिखाला कडमा

दिवाला विकासना

दिवासिया अन जाना--करण चुकाने में असवर्ष होगा। क्रमोल---वह समाई कि अन्द यह पत्र वद हो दायगा और

विकास मार्थनी महिन्द दिवासा निकास कर प्रानेवा, पर बात कोर हैं। हुई (पुँठ विश्व-बाव सुंव पुष्ठ, प्रदेश); यह शव रवा प्र

गाहम है, बसी ने शारे अर्थ बढ़ा क्या कर सेशा दिकासा जिल्हाम दिवर (गमम--प्रेमसंद, १४)

[ममान पहान---विचालर मारना]

विद्याला पिरवा

दे॰ दिवासा कदना

दिशा फिल्हर,--प्रदान जाना

परभागा होत के जिल हम ने बाहर जलन। प्रयोग--eिया बीटान पाने के बागव की लोग बीचा नहीं स्पेरने हं मिलाक-रेमू, १०॥-१८, व्याहे स्पी हामल में क्षेत्रकर मुली दीमा क्रिक्त गमा (क्क्ट--समाठ, ५३)

(ववार पृहार-चिद्या जानाः-होना)

विशा मैदान जानी रे॰ विज्ञा किरना

विद्यार्थं दहस्य क्रामा

बारी ओर भव चीर चानर सा अला । वरोन -- म्यन अनल कारिताने जिन्हान एके नाम केरी परच आगे दिया दशकति है (भूपण ग्रंबाठ---मुण्य, १४६

(गमा + मृहा + -- विद्यार्थ हिले जाना)

गामना कर पाना । प्रयोग--क्तिये प्रण दीउ वन क्वजी वह मकेती न दीठ रीठ फिरे (वीस०- हरियोद, ६६)

दीह उत्तरका

बुरी दुन्दि का अभाव दूर होता । एक्स-सम स्थारे वर्ड रहे करते पर उनारे उत्तर व दीड मकी (वीस0—हा। घोध,

होते भगात पर सदना

रोगी नजर में देवका अधिम प्रदेश प्रदेश कही महाराज्ये भीर ने गान का हो होर है। उनकी और कनाद गरं नद प्रधार्गः सुगठ **द**्दशः ३१४)

इन्डि गहाना

(१) दकरकी बाध कर देसनः प्रयोग अग्र हमन गहा

देशा रीठ को पूक युक्त जाती है (बोस०—हरिफोध, ६६)

(२) नवर पर क्या नेना ।

(तमा: प्रा:--दीठ जमामा)

श्रुष्ट, ज्वनता

(१) व देख सकता । प्रयोग-वीठ ६पने नहा गरा देना, रीठ हो कुड़ कुड़ जाती है (बोल०--हरिओध, ६६)

(२) विश्वराती में प्रमायकारी होती ।

दा**ठ छिपानाः—** क्लाना

(१) मध्यते पहले हे अचना । प्रयोग-न्या हिलाये न रीठ हम प्रचनी क्या करें रीठ ही नहीं जानी (बोल्ड०— हरिजीध, ६०१

(२) बोरो-बोरी। प्रमाय—नांबन की बीठि को बचाई के निहारत है, जानन्य-प्रकाह बीच पायत न पाह की मलिक मक्क-मिलिम्म, १३५

(नकार मुहार-चीठ खुराना)

दाष्ठ जुडना

रका-रेको होती । अधोय-कव युद्दो रीठ साथ रीठ नही रीड में होड कब नहीं नवनी (मोल०-हरिक्रोध, इद्र)

बंग्ड उहरमा

किमी को बोर एक्टक देवना। प्रयोग-शामिति, कार्यित समक्ष्यी, वर्शन कोन में बाद। होति नहीं क्षराहर्वे, हरेकिन ही उत्तराह (संतित मेक०—संतिराम, ३७२).

दाठ देना

देवता । प्रणेष—वर्षे व्यापं न बीठ हम क्यती वर्षा करें रीड सी नहीं जानी (वील०--हरियोध, 4७)

दाठ प्रदेश

टिनमाई पहना । अयोग-पौयक शेकि धरे रवदावर । रात्ति के विष के मुखरायक (केशक (4)-केशक, ३६६१: कह बाहु वे शीह न परि बाद (राधाठ प्रधाठ--(FOR RIS OIGH

र्दाद फिएना

(१) क्या-दृष्टि होती, बनुकृत होता । प्रयोग-न्ही गर्वे



すもう

फर म एड ६२५) अल्डरी वीट शाज और न फिरी (चूबते० हरिक्रोध, २)

(२) प्रेम न रहता ।

र्दात फेरना

क्या-वृध्द व रहतो; तूमरी कोर देवका । प्रयोक— करिये भाग वीठ एक अपनी उठ क्कनी व दीठ दीठ किरे (बोल०—हरियोध)

र्शंड बचाना वै॰ हीड छिपानर

दीड मरोरमा

विमल होता । प्रयोग को अपना दिनकामे वक्ष निक गो कह बीडि सम्पेरियमु है (ठाइर०-सङ्गर, ३॥)

र्वाट में ठहराया

- (१) स्मृति में बना रहना । प्रयोग दादिनि कामिनि दमक ही, क्रिनि कीन के आई दीठि नहीं ठहराइमें क्रीटिन ही इहराइ (मति सक्-मर्गल्सन, २३२)
- (२) बहुत प्रभावित करता। (समार मृहार--दाड में समाना)

र्दाठ क्रमनर

- (१) पेम होता । प्रयोग--दीर हम तो रह जवाने ही बीद की बीद जब गई हैसे (बीलश-इरिजीस, ६६)
- (२) शबर समया। अयोग--शिंड व समे विदीना देकर काअन के कर सुने समार्क (विसोण-नीते. ६५)

दार सहना या सहाना

देस देखी होती या करती । प्रधान —कव मुनी होठ मान दीठ नहीं दीठ म दीठ कर नहीं जरती वोल्ड हॉस्डीय 66)

र्वादा-दिलेर होना

निर्फरन होता । प्रयोग -में हत्यारिक है नदमानी है, दीवा दिलेंग है , तुम मनंगणावरी हो, मीना हो, नावित्री हो (मान्य (२)-चेमसद, देश्न,

(समा: पडा:--दीदा ब्रस्टल होना)

र्यादा काम कर देखना एकटक देखना - बहुत स्थान सं यद और देखना । प्रयोग-- कार्ट बीर्ट में किया, जबरि व सार्व कोड़ जिहि कींट वेश बाइवॉ की कड़े मानां होड़ (कवीर प्रयान-कवीर, ५२); शिंद कार काड़ देख रहे थे, जैस करें बच्चे की निक्य ही आक्ये (मार्ट्सन-संग्रह), २६)

दीदे फेंकना

इन्क जहानकः प्रयोग--- इत्तरे कें,क्षत्री हातीः, सभ्योदे याजगर काली है (बीनेक--सांक सक, २०१)

दीन की दाय मोटी होना

वरीय के तलाने का ब्रा क्या कियाता । प्रयोग—अव्हरी मुख्यान का रोजा देखकर महत्व अर्थ थी, जानती की सीन की हाम विकास बोटी होती है (रंगठ (१)—वेमजंद ५३)

र्शापक बुम्हता

निवं व होना । अयोग—जुक्त दीय कामी का तब दल-होजी वस वे सरवादा (मुक्त —स्० कु० वी०, ५०)

दाया बढाना

(नवा॰ वृहा॰---र्याया ठंडा करना)

दीया लेकर द्विता

वारा और हैरान होकर (इसा, बड़ी हाल-बंध में र (अस) बधीय—स्थारे किए दिया ने कर बुधको बो को में (माठ ग्रंठ — (१)—मारतेन्द्र, ४४७): बच इस साह वर्ष की वस में चिट शियायत करूं, कि हाथ है में साहर जीवन बूड़ का यूड़ हो रहा सा मध्य मा बनियद हाथ माइट लेकर दूहने पर बी दुनियों में बड़ी मिकेसा (अपनी अस्स-स्टाप, २२)

द्विये की वर्ती ठालने को न कहना

सोटा भी काम धरने की न कहना । प्रधान-विभान पुरि विभि अध्यक्त रहेक , दीप वालि नहि टारन रहेकें ,शमेठ (त)-कुससी, धरफ)



ब्रांबार उठाना और बहाना

नांतर प्रकार की कल्पना करता चीर छोरना । प्रशंत---नीनों पहरों के किपाही भी मौड़ पर बड़ी थे, तबह तथ की वीकार उठाने और बढाई हो स्वॉटीक निव्या, ६६

क्षाद्यार को कान हाना

सपूरा मुख्य कय के कही वर्ष बाग के भी मुख जिए कार की सम्भावना होनी। प्रधीय-क्य ही जायो रोन्हों। दीवारों के भी काम होते हैं। (वीनैठ-पीत पंठ, 106)- मुना नहीं, रीयहर के भी काम होते हैं ।व्यवन-देंच संत. ११७ प्रत्येक भिन्ति के जिलाबा के कान हीने हैं, केनक केना पाहिन, देव बना वातियं । स्वट्०—2स ८, ५६

र्याचार दृद्ध जाना

विशेष का दूर होता ६ अधान-पायन म यह अनम बीर असर्गत मुक्ती । जीवा की दीवान दृष्ट करने की (गाँदानीक व्रवस्त ३०६

••• व॰ दावार विव प्रका

देखार तोष्ट्रना

वक्तपट हुर क्षत्री । प्रधान—यहता में पथराई जिल्ल की दीवार ताबी (स्माठ) धेंत. घ९.

क्षिपार रंजना

सप्तांवर बसानं रहता । अयोग---नाहि के नर्न निवयाक गमसेन सेनी, विस्कीयमा प्राप्ति के दिशाल पाणी पूर्वी की भूषम वंशाव—माग, २०५।

र्याचार से करना

गमें स्वन्ति से कारता जिस पर कोई असर रही। प्रकार पर रजने बन राजारी जन्मीय क्यान करना औ दरेगार में रहेगा मान राज्य क्राप्त प्राप्त गांक करी লালা মুল্লাত স্মৃতভাত হয়ত

द्रानीय होता.

राजस्यात्राच्याः । प्रथमि — एक योग् अत्र यस्त्री । (इ नगर्क कोनुक देशन न बीभ ये एक टीवान 🗲 हुनपर दुष्ट वह दसना के भारताई उनके स्वर् नभावन करियक्य न द धीर उसके रोजक अध्यत विद्यादन है जोन से दी लग ,।नाम वास की जदीन चल्च १२६

दुरदुर्थी बजना या बजाना

- (१) ह्व प्रगट करना। प्रयोग-सक वेबाना बुदुओ बजाई (राम० (बाहा)—तुससी १००)
- (२) प्रपार करना—चोवागा करना । अयोग-भोर हो लोग बोल शकते हैं, वॉ अपनी प्रविचता की दुन्तुंची वनाते हैं, के तक के तब बाप होते हैं क ?' (मृथ्य---
- (३) वय परेकाया होती । प्रशास--- प्रश्न क्ष्युची अवाती. रहतो नही बपयोनम दिनलाना (धर्म०—हांश्योध, १५)

(नवाव पृहाव-चुनदुक्षी देना) दुकान बाह्य निकादना

(१) दुकान में व्यवसाय-वृद्धि होतो । प्रयोग-- सुन्होते केम्बरतन छेव भर कुमान ब्याम सी है। अस निकलदे की पूरी सामा है। बेरान-अदक, १७०,

(२) दुवान म नका हाता ।

(भगर- पृहा+--दुकास कलता)

व्कान बद्दाता

दुकान और करनी । अयोग-साम बहु मसक्षे कि आठ नो बन पर प्रानी दुरान दराय बहारर लांध थ पत्र है .धै क्रांड०--साठ नीठ, १०४); अपनी बुकान बदा सर भीत गाना को पास्त परिस्तास शाम पैनी सहक रूप , दूसरे किन साथ की नाम देनप्रकर एनके पर सभार होकर अव । वे दुवान क्या गृहा का (प्रेमाठ--प्रेमकाट, २३५

दुव्य का घुट वीजा

ुल को पुष्पांत नह जाना। अयोग—हुन्स की बट पोकर वह नदा के निश् प्यामी पह गई (वीमेव--eto eto

दुल का पराह दुइना के समुद्र में पहला, सागर में इचना

गीर हुन १९४८ । पारीय जनम न भीत मीरे मुक्तमार। । रुद्धि हो। करो दुवा समृत बारास 'पद्दा- जायमी अक्षर बर मुरुद्धि परनं र्नाह जानी। दुग सागर-बान्ध समागरे सुर छार-सुर, १६००); बार्वेडी वर दृष्य का बहाइ ट्रूट वका (सेंक सेंक-सेंद्र)च्य २४८)

(नवार महारू-चु:का का बादल दु:बार)



दुष सारमा.—इसमा

यु में दूर करना। अधीत—इसे दूस राम राष्ट्र कारह मेरा (क्योर प्रेटा० -क्योर, २५०), मुन्दर सुमान प्रान स्थारे पड़ा कोमल हो दीन के हुई की देश दुसान बड़ा अभी धन० करिस धना०, २२७ वह सन् कार हा न दूस अपना तम रहे होठ कारह हम क्या (क्यों० --हर्व सीध, ५०)

पुत्र की काम हाना

मृत्य का मृत्य होता। प्रयोग----वसमृत स्व तृत हर प्रयोग तम दुक कानि (राम्य (यर) तृतस्ये---वश्य)

चुनाकी घटा

अपनर दुस । अयोग-वंश कर खातो उनक्ती दुल-पटा, धारत म अस्तु उसके आना नक्षा कुमतिक हरिओधः १०)

युक्त के बाव्ज सर पर महराना

तुःश की सम्भावता होती। प्रयोग—ऐना बनीत हो इस है कि माना हम दोना के बीवन पर हुन के बादन संबंध रहे हैं (विश्व०—अस० संगी, स्थो; धरा पान बादन कृतों के विश्वों (वृभक्षैक—हरिसीध, १९२)

युष्ण के बीज बीका

द स का कारण पंथ करना अयोग पुरशस प्रभू पनि धर्म विश्व दुश के बीज वल् (सुठ साव--सुर.अश्स्थ)

वृत्व के समुद्र में पहला ८० दुवाका पहाड़ बुदना

दुव्य के लागर में इवना देव दुव्य का पहाड़ दूरना

तुष्ठ का दहना दृष्ठ हर करना। प्रयोग-नरे वक्ष दुरुण को दही सुठ साठ-सुर ४०६)

बुग्र दलगा दे० चुक्त कादमा

दुख देखना

OP 184

कारते सह्याः नक-शिकः नकानी । अयात्र नार-नार गर्न स्कृति ह्री देखा, ऐसे दुल देखांगी (पशस--जीनेन्ट, श्रम प्रा

द्वा बंटाशा

यहान्त्र्ति करनी—प्रस्ट वर सक्ट के समय जान देश। । प्रयोग—एक नागरत्ता वेशाची की, विनया कृष्ट परनी दुष बटा लेनी सुग्राग0—स्त्रण नाठ, १२०;

दुख आसा

कर्य का संकट के दिन काटना । प्रयोग—नाइ यही क्यों का करिहे, जान कर कार्य वृक्ष महिन्दे (क्यों) वंशाल-क्यों), १३%); अब शृङ्क जीवन शांकि भी मरना । भग्न कहार करन शृक्ष जारना (धर्य—जावसी, १९५५) रही करह हमारा गृचि करन । हम तो उन विनु बहु दृष्ट भग्न (मुठ साल-सुर, १८९८)) है बहाराज, कन नी इस बनाव न सब्दा म राज करन क्या भी उपमन दृष्ट भग्न (ऐस साल-क्षण साल, १९)

दुव भागता

रुष हुए होता । प्रयोग—पूनरुक्ति गीवा कर रुष भागा ,शम्ब (सू)—सूनसी, प्रवदः

पुषा संहराता

पूर्ण का चारो धोर से केंग्ना । प्रयोग-न्यन युतीनत न कामने चाई क्या अचा धूर्ण रहे न अवनाने (वील०-वरित्रीय, १६४)

द्व्य हैं गारमर

हुन में हुई प्रदार । प्रयोध---दश्मी बात बाँग कहियी इस्तिती, क्रम वाभि यह जन दुध में नारे (सूठ साठ--सूर, प्रदेशर)

वृत्य में अत्यान प्रतिष्टेता, वाधान्यहोता अन्यान शोरणा होना प्रयोग कोम श्रीत प्रति गृति अन्याने । में सब जोन तोक दस बीस (११म० (म)— पुन्ती ६२६ ना कृष उन् दनन एक शान दिन दिन वरत जुड़ाल दिवीपी (सु० साठ—सुर, २४८४); सहिम बान्य इस करें में नाई प्रती तक मूल विमरें सोई दशन आयमों ३५% हरीपद, यह दिन उन भी क्य नी पा दुस वरी (माठ संठ (३)—सारहेन्द्र, ५०३); हो ! सीमाना इस दुस पर्वे प्रान्त की वर्षों कर में हैं (श्रियंश— हर्षाओं से, १९३ युवा में जलानां,—पीसना

कृष्ट पहुंचाता। प्रयोग—पूर वयो नित पणि परेणित एही कहोर ! असी दूख पीतत (एक्ट कवित —प्रनाट, ६६ पित-पाड निवाह की बात रही दिन के नित हो। दूख देख इसी (एक्ट कविता-प्रभार, १९४

क्षड़ी साधना

मून मूहर्न निकासना । यदोश--वेटे शाम उसी शबन दूसरी माप थी ही दिन बार मॉटने का शबदा कर विज्ञां पर को स्वामा हो यद (अपनी सबर, छुड़, ५०

दक्तिका होता

) क्षत्र प्रशासन्त राजः प्राप्तः रीतः की सं साक्ष्मा करको हुं सिल्लु सरसे पा औ से स्थ्यार हुः । दुनिस्त होता क्या ठीपा है है (स्थान—सन्सन्द १५८)

(२) यम में विका का लडेह होगा । प्रयोग—कोरि कर कारत विहोति कहै कौतिक क्षी आपणु जी गण की में! में! इचित्रहें हैं मौताठ (बात)—सुरुती प्रदर्भ

कुथ-श्रहर

भागाम भीमा भीर नाराम (प्रशंस—मृत दूव वस करिश न कोटू (शमें) (शास)—मुक्तसी, २५२); दूवनहर नामक अब सक बता है कैंगा प्रकास रहता है अह निक—बोक सह १९७), तमर यह वच्चों के बानकोशिय गोमने हम के बान को ही उमें दूधमुद्दा नहीं जाना है जैसर १)—कात द १४४-१४६ । एक बेयुद्द दी किसी बुद्धमुद्दे दर को विभय-हामा न नुमकी वहिंदी (मोस्ट)—हरिजीध, १)

(२) बहुन कर उस के, पूथ पीछे। प्रयोग किन्दुओं मैं तो दूपभूते बालकों रूप का विचाद हो जाना है (भागत (१,--प्रेमचंद, २०२)

वृतिया वजहना

प्रकृष कर ही बाना । प्रमोन—उनको बोनी है जा। भी हैर कर हुंबा कि नदनेव की क्रम्यत कुछ में निमा नागरी और उपने बाद को देनिया को देनिया के देने रापको भैनात रेष्ट्र किया रही । प्रसादनिया को उस भूगी है (भीरक—उन्नव दावा, हुंक्)

दुनिया की हवा कवन

सामाणिक मेनुनेय होता । प्रमाण प्रेम राज्य द्विया हो

टका नहीं अवने ही (मान**ः'**७)—प्रमाद, ३७)

दुनिया के ऊपर होगा

प्रमाणास्त्र होता. ऐसर कप, साम पा स्थिति होतो जो सम्र में न हो। प्रयोग—भूपन भनन महाराज सिय-राज कहे कानी कृती जनर कहाए कीन हेत ही (भूपण एका०—स्थम, १४५)

वृत्तिया देखना

जन सब द्यान करना का जोता । क्षतीन- नह प्रकर दुनिया देख खाकी है तो वहां कर वैठ दुनियां देख खुनी हूं (मिन० ' — दमकेंद्र २०६६ केंद्र शिनक क्षत करा देखा है बावक हरू एक दिवक, १६ , केंद्रे भी देखी है जिसकी दुनिया भी जी दक्ष बुद्धक-बारक्त, भूदे।

दुर्गिया देखे होगा

बनुष्यी होता । प्रयोग-----ित्य में काले होंगे यह तो नित्या नया है पर पहा दुनिया येथे हुए हैं (स्थ० (१)----प्रमानट ३५६ जाने या न इतिया देखा है क्टांश अयुः वर्ग कर

थुनिया सर पर उठाना

वेश्य किंद्र करके गया १। हेशन गरमा । प्रयोग यह वहीं वेगमध्य करका है, जी वी सप्तपद्व पहले मिठाइयों के लिए दुनिया निष्ट पर दक्षा केला वा (मानत (म)—केमबंद, म

दुनिया से वढ जाना

(१) मृत्यु होनी । प्रधाय-एक दुनिया से वहा है शहना और है उहती बवानी एक की (युमले०-हरियोध १६१)

(२) रिवास का एकदम मृद्य हो जाना ।

दुनिया **से कृष कर जाना,—बंदा पार होना** नत्यु होती । प्रमोग—हो वह देत पुनियाने कृष कर गए है विश्व-क्षमी, २४); हमते-हंसते दस दुनिया दे कहा उपकर दहा पार अमे (मार्थ देवाठ (२)—मारतंबद, १६५)

(मना० मृहा०—दुनिया में नाता तोषशाः,—यन समना)

दृतिया में वंडा पार होना द- दृतियां में कुल कर जाता

दुनियान्। होना

(१) संगारिकता में लिप्त होना । त्रयोग—को पुनिधातार है और जिनकी वृधिया वहियाना है न उस रथ का लाजा की मनुभव ही नहीं करते, असने रहतो जो जोने हैं (कंदोर—ह० प्रत दिल, १७६)

(२) व्यवहार-कृशस होना ।

वुक्तिवादारी

रामान्य तोक व्यवहार की बात । वयोग—वरम्बु निरो पित्यायको की सकते में जी को द्विकारको जा काम नर्ग पक्त सकतर (परिकार—मी० दास, ३)

दुवले होना

(१) विवस होना—गतित होना । यथीत —कोङ कयर यण-दूबरो ह्यूं करि वर्गी नहि नायन के सर साबी धनन कवित—ग्रामा०, १७७)

(२) जितित होना ।

तुम के बीछे अने रहनर

हर समय साथ जने रहता। प्रयोग—नाहव विकार जेमने आये या दीने पर देश कर्तन्य है कि उनकी दुव के पीछे जमा रह (पीदान—प्रेमबंद, १॥)

(मनाव नुवाव-- दुम के पांछे फिरना)

तुम भाइ कर बल देना

मुक्ताप बने भारा । प्रयोग—विस्टर तथा वावस्य है आदमी में, तौदा बटावे में अ अ बन्य दवाने में, बुने फारकर विकल प्राप्त म विद्यारत कियान प्रयद्ध के

(।।।।। पृताः - नुम स्वाकर वल देना)

दुस द्याकर भागना

हरपोक कुले की तरह शरकर मानवा । श्रवेष— बही हर कर परी का प्रतृत य निर्माण दूस दशकर भाग अवसी दूधगास—दैश सर, २५६), बागीयान यथी के लोगों के त्रीव के सामने दूस दशकर सपने वर मंत्रा क्रिया सूठार राजपाल, १०६ त्रव्याची प्रति की नमक भीर नुष्ट्यारे नेवर देखकर ही उपकी सह करा हो जावती। शीमा दूस दशकर जागेमा (ग्रवन—प्रेसचंद, २३१)

दुम द्वा जाना

- (१) दर कर बने काना । प्रयोग—असीन के कवि सन्दर-नेन में नुस्तें तकर हो धरना एडमा । यह पाद एमनी और नहीं दूस-दक्षानें से करम नहीं चलेला (पद्रसंक्के प्रश्न—पद्रमंक सन्ते, ४१)
- (२) पर कर काम बीच में कोड़ देता। प्रयोग—प्रव काम करने का अवसर जाता था मो सीग दुव दवा नेते वे सन्तर ३)---प्रेमक्ट, ६५

दुम द्या बेधना

क्षवान भवजीन होकर वेंड वालां । प्रयोग—सम्बद्धे पाम जमोन नहीं, कापराद नहीं २ × वेर्किट आप और वृग कार्य वेंद्रें रहने हैं (गोदान—प्रेमक्ट, १७८)

दूस करता का होता

कियों के साम नपने की दी पश्चना । प्रणेय—आप वर्ष ईवानकार की दुष को है ? क्षांगमा कही का | (गवन— चम्बंट, १९८)

दुध दिलागा

एन को नार विसं क आसीन या अज्ञाकारी होता। समीत-केवन नयनरों के सामने दुन हिना-हिन्स कर किसी तरह उनके कृता-मात्र बने बहुना और दुनशी मुश्तका ने प्रश्नी पना पर ज्ञानक जनाना की हमारा प्रश्न है (गोदान-नोनचंद्र, १६); बनने जावने, बागेना के बाने-तीचे दुन हिनाएने-कुनों की तरह औरनो, पर बुद्ध कर नहीं सकते (चतुरोठ-निहाशा, ६७)

दुशदुर करता, दुशदुराना

(नवाः नृहाः---दुर-दुर फिट-फिट करनाः)

दुर-दुर-मारी होना

मंब सोर में जिस्माल होता। प्रभोय-अब दक पारा-

हाको रहे, क्वाँ कोई कुछ म छह नका । उनके बाद दृरदेग माची हो वर्ष (बृदेश—घठ नाठ, १२

दुरहुराना

दें। तुर तुर करना

कुभाग्य के की वे कावा

बहुत बुरी संबद्धा में दिन किनावा । प्रशेष—और इसी निए बुभीव्य के कोई काकर मी में बदल न गर्ने । सुरुष्ण ग्राठ नांग, रेडम

कुलका दीइना

वीर-शिर वध्यम वर्ति से वीरना । प्रधान— ८ ४ के वीध वील सह निए कुनवी दीवने मार्ने में चतुरीत—निधाता, ३६

युक्तचियां काइना

(१) जिला सन्त्रभा तिरस्कार या शहार करना । प्रधान— १६.स्ता है। सन्तर दूसनी तो क्या न जो पाल हम उन दक (बोसत—कृत्वीध, बरेश

(६) दोशो बाठों से माध्ता ।

(तवार वृक्षक - दुर्जानयां छोरता, -फेकता)

भृत्याच वसावर

भारर-मोह करना । प्रकोण---शना मोर दुनार वागाई (सम्बद्धाः) -- तुलसी, ६५७

हृद्रमता भाग्य लेका

मानक्ष्म कर प्रमान कानको । या गा गा गा । भोनों से कुक्तकी सोल केने की अभाव किसी भी कानक स नहीं देता (मृतित-अग्रव कर्मा, क्षर्थ)

दुसार्थ देवा

अपने सभाद के जिए किसी का नाम नेकर पृष्टाच्या । प्रमोण-आअस्य नीम प्रवर्षियों के मी गई पॉक्टरम है साम देने मही | सबसे की वे भी कुराई आज है (अवक-गुण, इ.स.); राजापाहब ने उपकी कमीन बाजा को वे दी है । समाद्य प्राप्तकल कभी गमी कुराई देता किया है (अगक (१)-पेमबंद, ३३६

बुहाई फिलना

स्थारः धार मधो या प्रचार होतः । रोपाट र को पापस्य। हाका । प्रदोग रूपुरसीय प्रभानकर बाहनकी प्रभाव प्रिकी दुस्तक सुरुमारू सुरै इध्यद्धा प्रवादकर्मात स्थाद त्व किरी दोहाई देव (सम० (बाक्ष) मुक्तमी, १६४), गाम मेन नृपाई वार्ष । किस बोको जनु किरत दुवाई (मंदर प्रशास—स्टर, १२३%जेम-दृहाई किरी चन-आनद बांधि लिए कृत केम बुहामी ।धनर कविश्व—धनार, 128), को दोहाई न एमं की किरती हो विपत पर विपक्त बनी करी (भूभतेर —हरियोध, कि

वहाई बोलना

नव-नवकार करना । प्रयोग काली भाई सम की दुहाई (करोर प्रमाध-कनोर, १११)

वृक्षाई होता

केंद्रला मानी बाजी । प्रयोग-सुपने वय दंगल सारे म. तम पारे में (प्रय तुम नह नहीं हो । आवस्त्र मेरो की दहारे हैं (140 (१)-संसमय, ३६)

रूप और पानी अलग करना या **होना**

दूध कर दूध और पाना कर पानी करना या होना (१) निकास निजंब करना या होना । अभीग-नदीवों का बचा कारना दूसरी बात है : दूब का दूध और पानी का पानी करना दूसरी बात (गोधल-प्रेमबंद, ११६); नरकार नदकीकात कर रही है। बस्त पर दूध धीर गानी क्षणा कर देनी (बोटी०-निराला, २०), बदायन में कर दूब का दूस धीर पानी का पानी किया जायगा नव बच्चे क्षणा बेदान क्षर जावन ,क्सांक-स्मा, ६४

(२) बारमधिकमा धनट होती । प्रयोग-न्द्रस मार्गह नह उपॉर परेंगी, दूध हुए, चानी सो वानी (सून साठ-सूर. १३५१), तीर बीर धानद बरवारा । दूध पान सो करद निमास (यदक-न्यायसी, १०१४)

दुध कांजी की तरह

दर देव क्रियका श्रीमान पहितकर हो । प्रयोग--- हुद न कम है दूर कारी वा चित्रे को मिन तो दूर जम नैया पित्रं (जुमतेश--हॉरफोस, ५०)

तुन का दूव और पाना का पाना करना या होता रे॰ दूध और यानी अलग करना पा होना

द्ध का धोषा

रहे। चिनकृत पह, विमने कोर्ड बांट नहीं ही । अशेक---

कम में कम जपने जिए तो में यह कवाणि यही कह सकता कि उस समय तक में परम सम्मारित दूव का भोषा ही यह से कोर्ते के अब नाव, २७ दि सह दन म क्या हुआ, अब भी उसकर सम दूव का भोषा है (लिक्की--म्माद, भे , तम जान गान हा सरका पर सान है, और विनन असल-मूळाविम है, कब दूव के भोग हुए है (रंगक (२)---प्रमार्वद, २०९,

(२) परमन स्वच्या शुक्षः यसम्ब—हर कान यसम्ब वनकर हो साफ़ हुध की योई (मृश्य—धरा, घठ)

कुत्र का पंत्री पाना का कृध काना

न्याय का अन्यान और अन्याय का न्याय काका । प्रयास — न्यायालय कानून की बारीकियों में नहीं एक्सा, विवयं उत्तरभक्तर, जिनकी पंचीदिययों में कावकर, हम अन्यार पंचायद हो ने यो कात है भवतर दूस का पानी और पानी का कुछ कर बैठते हैं (प्रतन—क्रिकंट, 34%)

गृथ की कुश्चियां करना

मुद्र मृत्य-वध्य मा १६ना । प्रयोग — साना और १व गदा दरिष्टना में पहले ही रहे वस कि कार्य किया के पर दूधा कुल्ले किया जाते वा ये कीठ के अंगलीक देश मागाण्य मधी कानक दूध की हरित्यकों महोत्यकों , निसला प्रस्ति देश १६५)

वृत्र की वू मुंह से व छूटना

सहक्रपण देपका पहला, बहुत पोला होना । प्रयोग—पर बनारी आरती के पूंह से तो अभी कृप की बुधी गती सुडी (हत्क्व-देव संब) ११)

(बागक मुटाव-न्यूच की वू मुंह से आना)

कृद की संस्का

प्-व, उपेदाजीय । प्रयोग—नेम खनाई करन बेल् भागी, प्रार्थित सम्म द्या कर मान्या १६२० च नुस्ता ३८६ चीतन अब बट दशका, भीग भेग मान्य भाग कर मान दे रहु है, प्रवान में २१ दूप की मान्यों दना दिया प्रयाह की अमने अंतरहाम है। एक साथी उदी आह निकास जानी [मान्य (१)—प्रोमचंद, १६८।

94 O P.---185

दूध की प्रकर्मा की तरह निकास फेकमा

हुध के बांत न इंटना

(1) प्रचार बना र का प्रस प्रस होता। प्रणोग अनी हु। इ. इत्य नहीं पर मुख्यों न प्राप्त को गोदयभाषा है वर बाद वह नहीं के दिस्त्यी करता है (रंग० (२)—प्रेमधंद, २७८): दूस का चीन है नहीं दृश्य क्यों सता बीस पीन प्रस करते कोता—हरिजीय, ६२) (२)

(२) समन्भवी होना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) म ()

पूछ के की। को पत्र से तोड़का

यालत कोमब व्यक्तियाँ पर कठीर विर्मात कानला । प्रयोग—सीप धातु कह विधि वृधि वांकी से का कंतृ पोर विधि हांकी (काक : ठा)—सुनसी, ६३५)

हुन्द्र-ची से महलागर

प्रश्व वर्गनीत कार र करता । ३ १० — वह मेर्ड वर्गनीत व बुक्त की है है इसकी भा क्या दिया (बाल्ड है) प्रश्न दिया १५५

कुछ देनेपाली गांध की लाख भारता

श्चितमे लाभ हो उपकी मिर्चाकरो सह करा। उपोध— बह बस से क्ट बाटे थी भी-वी करह ने भनाया करती। इस देने बाली बाद की चाने भी नानी कटने हैं हिंद हुत —सुदर्शन, १९४१

कृष पारी की तरह, कृष में पानी की तरह

(शया: नृहा:--वृध पानी का संगः)

सूध-पीतः चना

तित् । प्रयोग—इन इन रीको स्टब्स्य पेटी हिन प्रोपतः विकास (श्याक्याक—शायक दास, १६६) (+); पंटिया काह हुए पीठे के यह दावें न दूध के प्रेकं (मुस्तिक —हरियोग, १४६)

- (०) नावान प्रयोग को किए गांच बुध शोकर की दूप गीरे इस्त्रों इसे द्वा को ले समयन दें साथ दें। वॉक्स प्रयोग (१) में (१) की
- (१) तह तकता से कार्य मा का दूप रोजा हो । प्रतेष जनके पाल सदस्य छोत नक दूप प्रकार सहस्रो का कृती ल जिलाला, कर

हुत में वानी की संग्रह देन हुत वानी की तपह

तुःश्रों नद्वास्त्रो पूनों पत्नो पन और संसान की वृद्धि हो । प्रयोग—हुनों नहामें और सह दृनों कता करे (इताय—वंशाय, यह,

द्वी स्थापत

वृत्रकी नेता,-वाकना

रोप की वार्त करनी, बहुत बहुनाह कर बातें करनी। प्रयोग—करनी स्वाधिमास्ति मेची की हाका करने में की हम (कुर्त नाम, १९९), दिल्पमा के सामने कर दिल्पमी हम की के चिन जगर बूचा हुआ (कोसा-हारिजीय, १६)

वृत्रको स्कार

नामध्ये के शहर की जान बोजनी । जारेन-पुन्हागर केट चरा है जुन्हें बुनडी मुकती है (आठ प्रकाठ (३)--भारतेन्द्र, संदेठ.

पूनकी द्वाकरा देन **दुनकी** लेगा

दूर करका

बनन करका, व रहने देशा, विश्वनर । प्रयोग-नजीव पांद्रवा हुरि करि वार्षि पद्या संशाद (कवीर प्रेडा०-क्वीर क्षेत्र

दृर का और।

क्ते रेक्ट्रेड का कर्ण भारतः प्रयोग—शेश्मीय कास भारत कर रहा देश कालत या हुए ही होती सकती भारत किंद्र के क्ट्रेड केट्ट

दुर को कोचा जाता

इ. वर्ग राज्यमा । इद्योग ना ब्याच । १६ मान्य ही मार्थ

इतनी बारो भय दियों से न पकती गई थी। बाग हर की गौड़ी जाए हैं पूठ दिए कर पूठ पूठ पूठ, अ(६) न स्वान परे सम्बद्धीनय करने हुए कदि न दूर की की ही (त रान की की जिसा की हैं (बहुएक—दैठ पाठ इस्ट्रें के को ही कथाना भी न कर गर का की एक दर्शनी दूर की को हा सावीं (प्रेमा)—प्रेमावद, १०८)

तूर की बात होना

म्हिन्छ बात, बाद में आने बहनी स्थिति । प्रयोग---ही पया पूर वाति का सथ दूश हुए ही राज है गई नाने। (पृथतिक--हरिक्कीय, हुन)

तृरकी लेगा - हाकता

धीम होकती, यही वही वाले कारती। कार्रम हाती कार्री दूर भी के रहे ही भाग को नाम का हो बाओ, तो बह बात मुल जाय पैमा०—प्रेंसबंद १९) दूर ही जब बक्षे बहक कर काम के हिन की हुआ थे हो नहीं (मुक्ति) हृशिमीध, घड़, और बूच की मही हाका पर किर भी कृषि हैं (ईस्टा०—सम्बद्धमाँ, बर)

पूर की सूकता

दूर की कल्पना होती। यातेम—शास्त्र की भी हुर की मुक्की (बठठ—देव सठ, दफ)

तूर को द्वीकता दे॰ हुर की लेगा

कृर के होल सुप्तावने होता

हूर की रस्यु में क्षेत्र न आग रहता। प्रयोग—नवृह्य भदु ही मूना गटकी धर्म हुए के दोन सुहाको पी (ठाकुर०—ठाकुर, २०)

मूर देशो पर कोन् । प्रकृषि जीवर परत से संगी संग व्यवस्थ है सम्पूर्ण राग समान हो। प्राणी विकास कि प्राणक केविस धानाव, १०६१

पूरं शहाना हर का देश - प्रशंक - १८१ तह यह दृशि हरा^हासल (आ)--**पुलसी, १०४२**)

पूर की प्रचास करनाः,—सन्तास करना कार्य कम्बन्ध न रकताः, वककर रहताः । अभीत्—मै हिंग एक्स्पन न हुए स हा प्रसास १४०। प्रसादः प्रसदेत स्टा

एमी बमन्द को दूर से बन्हर श्रीतिम् (शास्त्र (श्र)--प्रेमश्रद. २००२

(पना॰ नुस॰-- वृद से हाथ जोदना)

पूर से सन्दान करना दे॰ दूर से प्रभाव करना

दूर हटका

(), सनामाध्याय पानस्थाय निकासा है। व रहता (प्रमान-कार्यस्थ ने सन्त्रम दिया कि विश्वस्था उनमें दूर हटती या रही है और यह निक्तेशन ने (विद्या-स्था वर्मा, क्षा)

(२) इट काना, प्रथम होना। (यका» पृहाक--वृष्ट क्रोनर)

दूरण देना,—जगामा विनी को दोशी कारान्य । अपोय--बहु आणि विनिति भगाद कृष्य अवन वर्गर विनोनही (राम० (वर्श)— सुनारी राज्य मोन्दि दूर्गन दर्शत दही रामण वाल पुलारी, १६३)

पूरम स्नामा दे॰ पूरण देवा

नृमरा क्षार देखना

हुतरे का ग्रहारा को तथा । अयोग-नी हम बार देशन हुओ होने कहा दवाब (माठ देठ (द): नगरतेन्द्र, ४०८)

(नवार वृत्रार-वृत्यरा धर देखना)

वृत्यरा श्वार न होता, - क्यान न होना यत्य बायन न होना । प्रयोग - क्यो हमहि भीच रह रहा और किर यन। न क्यान रे प्रकृतात मृं अन्दर इसरे को दूसरी न हार राज दमा साम राजरीए यदि बंदर विश्वय विश्वन की (कविक-चूलसी, २१९); पास्ती प्यार

को किलाने और कुछ हो जिलानी हाटा प्रति आणे आहे. हार दूसरोज हो जिल कवित प्रस्थक प्रस्ति करी जिल पीर एक तुम ही की बेटी श्रीय माही कीए हीए, कार्ट सांकर्त संस्वारिये (सन्तः कविसः अनाण, २२४

दूसरर स्थान न होता के दूसरा शार न होना

(प्रपा॰ मुहा॰—हुमारं के मुंह का कीर संक्तिर)

दुसरी का जीवन बनाना

दूसरों की जनति करमाना । प्रयोग-सारी वाप दूसरो का प्रीवन क्षमाने व समाध्य कर दी किंदू भाग सुवा करोबर कोजने की ती विशी तसक की जीक विगठ-दानी दुव

मृत्यरों का मुंध ताकना

हुनरों में तहायमा गांग ती पाया करनी । प्रशंत —काम करके पुत्र उदार्जन करना गांग की वात नहीं । दूसको का मह सन्दर्भ कर्म की बात है (कर्म०-चेमचंद १६

(गयान मुहान—कृपको का मुंह देशका)

पूर्वित स्थान संपत्ती पर सर्वाना, के ताल पर ग्राम्याना पूर्वित में प्रेरित में का कोई साथ करना । प्रयोध — क्ष्मारी भनवनती वा जोग क्षमान करने नने, तो सब पूर्व बोचते हो कि ऐसा काम कमं, जिनमें और स्वाई हो । यन वस्त पूर्वित की ताली पर नामना व काहिए (चित्र (२)—प्रेमक्टर, १४३); नह पूर्विती की ताल पर नामता है और मक्षीन के साथ काम करना हुन्छ स्थ्य मगोनक्ष्म् हो आगा है (मैरे०—नुसादक, ७०-४१)

दूसरों के धर में बरण क्रमाकर क्षाब संबंधा दूसमें का अपकार कर के अपना काम करना । अदोन— में बाक्टर माह्य को कृष बानता हैं, यह उन कोटो में हैं ता दूसरा के घर में पाय जनावार साहता १८० वर्ग हैं बारत नदेशबद, १०५ द

दूसमें के नगर पर नाचना 'दूसमें को नाकी पर नाचना दूसरों के लिए कुत्रों सादना

हुनरों का व्यक्ति करना । प्रयोग—श्रो कोश पर हिन क्य जनार्व, पर्य सु क्यदि गाही (स्थ साठ—स्य, ४३०५) दुन्तरों के लिए कुआ कान्द्रने सान्ते का ग्युत् बुत्भा में प्रकार

धनिष्ट करते वाने का अतिष्ट होना । प्रयोग—जो कीय पर दित कुप जनाने पेर जु कपहि माही (६० सा०—६), ५३०५

हमार्गे के किए गण्डा सादने वाले के किए कुआ नेपार होना

दूसरों के मिर डॉकरा फोइना

इन्दर्भ को दोषी आराजा । अयोग—दूसरों को स्वार लेते हैं एक से बीर विश्व में निष्ठ । यह बहुत काम पाक बनते हैं कियम कोड़ दूसरों के लिए (मुम्लेक-स्टिजीध, १०)

धुन्यरों के इत्था विक जाना

रिकों के पूर्व अनुवस होता। प्रयोध-स्तव व वेकार वावन वन वर्ण तब दिने हाव दूसरे के हैं। पूपतेल-संस्थित, १०५

कुमरी के हाथ बादी होता

हुनरी के क्या में होना । प्रयोग—है व सोटी नान न्यम इनरी हुन्य में को योग के मोटी रहें (वोसफ पूर्वस्मीय, ७

ट्टा छक्तमा

रस्परा पूर्ण मृष्यि होती । प्रयोग—सूत्र स्मृक्त है स्वीत भाकत ही मृतनेती वर्ष समुगान स्वते (धन० कवित्त-धना०, १३०)

इस जोदना, इप्टि कोदना

परंच विकास, एक्टक रेम्प्या । प्रयोग—काँ सक्तात कृष्टि व बोरस, बोर्ड्स कर बिहारी/सुरु साठ—सूर,३१०४); पति व नय नाम यह समावस्थी नित्र या समित वस बोरी । बहुं तहुं बहु धोर्डम, विको चरार्थन त्या पारण पर्व पक्षोरी (केंबला २) केंबल, २४%); जिति देल साम्रत सर्व साम्रो वृद्धि हा चौर (वृ ० स०--वृ द, ३४

द्वपिद वडानक

वसना । अयोग—हम किसी की जेन का पूर्ण कृष्टि की इयर उठने न की (१४० (१) -प्रेमचट, ३१५

प्रीप्त ऊर्जा करता

मतान और धेष्ट विवाद लागा या कार्य करना । श्रमोक— अपना तहस्य महान करो, अपनी दृष्टि ऋकी करो (अम्बर्—राठ देव, हुन)

दृष्टि गहरा

दृष्टि जोड़ना दे॰ दुस जोड़ना

द्वप्टि मांदरी होना

कार विकास : प्रयोग—कथहुँ कहनि वजनाव वन वर् जीवन धन अर्थ दुन्ति भग्रवसी सुर सार सुर ३०१)

इध्दि डालगर

- (१) देल आता -पड़ सेना । प्रयोग--गम सन्दों की सूत्री १२६ पृष्ट तक ही है, उसके साथ के कार्यों में अन तर एक पूर्व और काल जाओं (पद्मव के पत्र--पद्मव सार्यों, १२५
- (प्) देलका, विचार करना ।

दुष्टि श्रीलना

दृष्टिर धृषता कियी योर ध्यान काना । प्रयोग आना कानी कारमी निहारियो करोगे की छी, कहा यो निहल क्या रवों न दीठि होसिहै (हन्छ कविद्य-अपनाठ, प्रदे)

टच्टि तानना

अवसी तरह देवना । प्रयोग—क्य घरे पृति को पन सानद मुक्ति वृक्त की दीर्ड बुकाती । सोयन केन नयाथ के सम सन्त्र अध्ययं की बृर्गत यानी । है किथी नाहि जानी सम्मानित सन्त्री न पर्व कवि क्यों ह प्रमानी । तो वरि-वेश्टि किविति वार्यात नहीं भी गयी मुखान हो जानी (धनाः कवित्त-समाः), १२१)

इप्टि-तार बांधना

उन्मृष्ट होना । जयोग—इतै धनदंशे देश्यवंदे जीग दना भई ने नो अनाकानी ही तो बांध्यी वीर्ड-तार है (धन० कवित—सना०, १०३)

इच्डि देना,—क्रेंकना

देखना, ज्यान देना । वयोच—पाद परं हुं तें दीतन ग्यी गरि शमक श्या हुन म दम दोनो (केंग्रायक १ केंग्राय, ४१ , रामा नर्यानह दाय बाने को न दोनो कह - वंदिन कों गीडि चौर चीडि परमारी को (कांक—पदमाकर, १६); पहालामन न परिश्वद के बाहर-भोनर दृष्टि फुंटकर आहा बीची कर की वैद्यालीक (१)—चतुरक, १६)

इच्छि हीहना या दीवाना

- (१) दूर तक की बोचना, ज्यान जाना या व्यान देना। प्रधान— अमाधान्य का आर लोगों की दूष्टि भी भणिक दोक्तों है चौर टक्टकों भी चणिक लगतों है। जिलां १ — कुक्ल, २६३)
- (२) हूर तक वेचा जाना वा वेचना । प्रमीय---अपनी पीनी समेत्र क्रांचा पर लीगा गानल हाथ की प्रांचा कर क्रूप-टूर तक दृष्टि का दादाना रहना अतीत० -महादेवी, एक)

इप्टि फेक्ना रे॰ इप्टि देना

दृश्यि क्रीरमा

- (१) व्यान स्टाइस्ट करना । प्रयोग-स्वना वह कर प्रनाम प्रापकी कंपन द्वित द्वार है गोरी वैदेही०-प्रशिक्षीस, ६७)
- (२) क्रम करना । अथोन—सम्बान् कर्मा तो हमारी बोर दुष्टि करेंचे (शा—कीजिक, २०)

द्रच्छि-बंध बेलना

नवानद करका, जाद के प्रभाव से जादूगर की की बन्धा हो बही सब दर्शकों को दिलमाई पदना । प्रयोग---राणी

OP -185

95



कान्द्रि दिस्त इत्र केला १६०--सम्बद्धी, ३९३) समा महरू दृष्टि वधक करता, दृष्टि वरंधना)

दृष्टि में भारा

(१) अध्या, अच्छा वान परना । स्थोध—मार्गित होत स्रोत विस्त परंठो । और पुरूष कोई बाव व बोटो (पटे०— अध्यक्ती, ४९ २०

(२) ध्यान में अला ।

हुन्दि में बटकना

भूरा समभा, अधिन होता । प्रमोष--अब वेचन हम लोगा की कृष्टि में इसाम इसेन वर्षे ही कि राज दिन सटक्ते में सार ग्रंडांट (ह)---मारकेन्द्र, ४०६)

वृद्धि समस्य का समाना

हे मारता

के देशा, हुआ देशा । प्रयोग—जिल किले क्यांटियाओं त साथ में केरियों की क्यों नहीं है मारने (कुमरोठ--हर्टशीय), युद

देणकर मंक्की निगमना

सानकारी में कोई नृशा काय करना । वयोग—सम वे देलकर केंग्रे पक्षी विश्वन शृं े खुठालाश—समयाक. १४६), देखकर मनभी नारी जिल्लो साथी (सुं) मु००० सुदर्शन ९५

हेका म सकता

सर्वाध्य स भार संक्रम् । प्रयोग —अपने स्थारत धोदि भाषा देशिय सर्व सिधार वराया (पद० —सम्बद्धीः ४००३०: पर्यान सुभाउत्तर ३०० (सम. अ. वृक्षकी ३००

साधाः जना संभाग करा, त्रीका प्राप्त केती । प्रकास करा देखें कर्ण गाना प्रतिभावत भा प्रस्थित हेणू १५७६६ जूम भोगवात हो देखें हो समस्य होता करा सामा है। ही जात कुछ पर पृथ्व सरही ४६

देखने दतता

देख देता

मुंदर कामा 'प्रयोग वर्ग विकाद वर अरका स्वातः

दर्ज हो बनि भागे (सुठ साठ- सुर. ५७६%)

ईका नहीं जाना

सहने न होता । प्रयोग—सभगत होने न जाइ तुन्हारा ।रामठ सां— सुरुसी, ३५४

देगार्था का एक जावल इंडोल कर संग जान लिता एक बसूने से पूरे का जवाज कर्मा केता। अपीय-दर पहा कर को देवची के एक वाजन को उटलेस कर भी उनक इस बहुत की कर्मा कुछ बातों है (वै कोर्डेश-अठ माठ, १४९

देते के बाध मुख्यां सनोहर होना

भाष दिलाना पर देनर नहीं । अयोग---नहीं ऐसे लोगों ने ही बाम नहीं पत्ता भी साथ मुनना में बाहते के पर ऐसे बोबों के भी को उद्दुरम्हाती मुनाने कर भी देने के नाम बननोमनोहर न (एसेंगे ग्रंथान १) --पुटेरी, ब्रह्म;

देवता कृष कर जाना

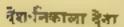
होवन्त्रवास अला गरमा, विमी कारमा से ठव् हो जाना । प्रवोध — रोजन को दौबान उन प्यास के पाने से मेरे देवना जी कृष कर नव व ।माठ माठ (१)—विठ गीठ, १३३), हु।हे टबकर का दवना कृष कर माते हैं ,स्कट्टठ—प्रसाद, २५); बाव के देवना कृष कर वर्ष 'सुठ सुठ—सुदर्शन, १६८)

देवता सनामा

द्रक य शिक्का राजा द्रवता को प्रकान पाना प्रति है यानगर। प्रयोग—पृति मुख्य आहू समेत सै पृति यजावह द्रव निर्म द्रवर्थ रेफ ६ योजन स्वर्धिक परिध्यम करने में तो भी दिन धान देवी-नेवतन मनाते बीजना भा (प्रव पीठ अपना नाम दिन, ६६); प्रति दिन क्रियो ही देवतर नी मनाती प्रियण—परिणोस, ६२)

वेषताओं की शांक पहला

देवनाका को उपाय जन जाना अर्थान सूच्य होती प्रमाण समागे गागर मान की वर्धनका होका भी सुर के काम में दूसनी जनर और मानी बारा के काम में इतनी नियान की कि इसका मा कामी दिस में कानी राजी की कि कही महत्वी का दनकान। की साम में कर आये मानठ के कहती हहती पर दनकान। की साम में कर आये मानठ के कहती हहती



प्राप्ते राज्य की शीमा से निर्वासिक कर देना है। प्रयोज---रेट वर्ष्ट प्रवर्ष्ट करी करमू जट कहि अलोह विकासी हम् सम्बद्ध स्थान-सुकासी अवह

(गमाव मुक्ताव---देश से निकासना)

वृह की स्वयं न होनर, दशा गंघरना, -न मंभन्तना तम बदन की भूप न होना—बेम्ब । प्रदोन—मृहर छंड़ निर्शन देन की हमा नवाई मृद्र साठ—तुर, २०१०); मुक्तियास प्रभू वर्ष प्रवन्ति के बन, भन रही न संभाग (पीताद (छा) -तुलसी, २९); वह की म अवदि मुनेह की सार्थ भीन वात न सोहान म सोहानी परिवारिका भूगण प्रदाद— मूपन, २२५

देह की दशा संघाना देश देह की कबर न होना

देह को सगमा

वाशीर को गुच्छ समाने से महासक होता । प्रयोग-काने ये वह पारे तो उपन है समादेश रामणा है वेशिक tio (10, 32

देह जुराना

निमदी सी रहता। प्रयोग—अब सब ऐसा हो एक प्राथमी प्रमक्त दिशाया, जिसके सामन वह मिर सुकाकर देश पुराकर जिल्लाची भी। अब उनकी अनम्या ना पन आहमी उसका पति वा (निर्मशा—प्रेमधद, १०-६१)

देह सुरमा, स्वीहरा, तमना, त्यापना भूत्य होती । प्रवाग—देशी देह सुरत जन परण, निगड़ बूद बंद वी (पुर मार्क-सूद, १५१); तो वे चितद करक मह सोरी । सुरत बेति देह बहु भोरी (एमर (बार्क)— मुकसो एक , विवह ह एक दह बेहि देन एकर बात सुनसो एक सम कर शेरम हार्गिंद देहा एकर सान सुनसो एक, साईगी देत मुख्य विना बेटो देह र का ह कर्म हे दिवाई केशवर्ग के केंद्रव क्ष्य मिन मिन क्ष्य का वा निद्या सो प्रशी सुनिव देश मिनिर सकर—मिनिश्म भूति विवह है साईगी देश उन मार्च में देश नकाव दिका मिनार-रेण, भूष) देश छोटना देश देश छुटना देश दुटना

स्पर का करान आदि के कारता बदन में पर्य होना। पर्यत्य-अनीकरी में बहा कान का कार्ट हुए कि देह ट्टने सभी अवस्पद्धां बात समी (महन-प्रेमबंद, २७०

देह दलना

मरीर में क्रमी न रह काना, क्रांपे के चिन्ह रुवर पाना। प्रयोग - क्रमणी ही उच्च अभी बचा थी। द्वर्शायको ही गाम तो चा पर x x पारी देह उच्च गयी थी (गांदान— प्रेमबंद, श्र)

वेह नजनर

🕫 वेह छ्टना

देह स्थापाता

🖙 हेंद्र छटना

देह घरना

अन्य नेता, प्रयास हैना । प्रधोग---वै दिन कर वाकेंगे बाद । वा कार्यत तम देह करी है मिलिबी मंग नगांद कर्वीर प्रधाठ--कर्वीर, १९१३: तह प्रभोड़ा वचन क्यापी । ता कारत देवी परि कामी (ए० साठ---सूर, २२३०): नाम व्यापन देव नहि हह स प्रयोगक्टापी समाठ बाल) धुलक्षी १९३

देह न संग्रहरूत रे॰ देह की अवर न होता

देह पानर

किसी योजि में बन्य नेनर । प्रयोग-सामम प्रमुप वेह निन्ह पाई (सम० (बा)-कुलसी, १३४)

हे**ह विमारमा,**—मृतका

तम करन की भूद व रहेगा। प्रयोग—जनी जमने कुं नीकभी पीच का युनिय कनेहैं। सक्य युनत जीन निकल्या अर्थन पर राज देश कवीर प्रशान —कवीर छए। राज नुजयी मेर जिसम विकास देश जान निर्माण की साम भी ती ही (मीहरूठ (क)—सुभक्ती, १६६); भिरदामां के प्रमृ बंद-नदम कुनीर निरुचि देश मेरे नद्दाराज —नेट.२९२। देह भूलवा

वेह भूलना के- वेद विसारका

देह में भाग लग्ला

कोच बाहा । वर्षात—नेते वृंद्र वर भारतो का क्यान न दिया करो अनका नाम कुनकर वेची देह ने नाम सम बाली है वोदान—प्रेमवंद, ३९)

रेष्ठ रक्षमा

शैरियत रहता। प्रयोग—रामी वेड वाच वेडि वाचे (राम० (डा)—तुमसी प्रश्नः)

हेब्र सहरका

बहुत कोश के स्वरीत कांपका । अयोक—इस मोनों को इस मांग में बसने दीफिएमा या नहीं है मृतकर देव नजरने मानों है 'सारीम—हेमु, १४६)

वैच फिलमा .-- कडना

भाष्य प्रसिद्धन होता । ययोग—अवर्ड तो देव वेदि वर क्षत्र (राम='ले)—सूलसी, ५४% सनि कर देव फिर बातर है तो क्या क्या नहीं डाला (माठ दंठ (१)—असरीन्यू

Чij

विष स्वता

देव देव फिरस्टा

दो संगुल कंचा होता,--वहा होता

कुम् बद्दकर होत्रा । प्रयोग--शनकी कली नतने भी दो बंदुक संभी जी (मान० (क)--प्रेमकट, क्क); वह जी प्राप्तरण का पतना का पीपु में और दो अनन्त कहर रजा रंगक । प्रेमकट, क

दो अंगुल बढ़ा होना

रे॰ दो अंगुल क्रंचा होना

हो भाग से देखता

मध-आव वाश्या : प्रयोग—वैते क्यू १८६८ ई० वे इंजियन नगरन कारम संस्थानकात करके दिन्दु स्वय-माना को हो द्याको ने देखन का बदान गेटा निया पुट निय —बाद मुठ गुट देश्

हो अन्य बहुरता

(१) द्रश्य प्रगट करनाः प्रशीय—सहां आकर सुध्य प्रकारित भिन्न की साथ भी नगपः वहरे हैं। इस्टेनक पुराको प्रद गई भी, निन्न के उस्त्र मुख्य यस या कि किन हते हो। तथ अनके निए भी दो बागू नहां में दो आग बर्दू (पहुम प्रतात --पटुम० करों, ३३४

(२) योग रे वेग ।

(तमाः मृतः—हो श्रांस् विदानः,—कालना)

दो करम देना

त्रवल होना । जनोध—हिल की क्योंकी कोंको सर्व के जनरकत, किरोपनी विद्योंकी नेह-जन एक वृद्ये कई (हम० करिक-स्थात), १६०

(नवार बहार - इरे बहुझ मार्गे बहुआ, अलना)

हो कींची का

(नमा नहर--हो कोंडा का भी नहीं)

क्षे गाल बान करना

कुछ बालें करनी। वादोव—जाप तो थास और देते ही। स्यों व दो नाल और बलिया में 'गोलo—हरिसीध, दo;

हो साम्र हम-बोन्ड लेना

पोरा हस-बोध मेगा। बयोय---यह बयो नही कहते कि इसी बहाने दी नाम हंसने बोध्ये बया या (गीदान---केनबट, 262)

यो-कार

पुष्ठ कोई । वर्षाय—देश मध्य परियोक विशंतां, श्रह तोइ पर्यार को पृष्ठी साथ स्थातः कवीर प्रदाय—कवीर, १६७ को न कोन् तुम तो टो-भार दिन के मेहबान हो को इन्ह प्रदर्श बहु तो हमार्ग ही सिह पहुंची प्रिंमा०— प्रैमचंद ४०

दो कार दौना

मायका करना । प्रयोग—स्वराती और प्रेडानी के इकटुठे करन में करन की किन्स विभी म किसी नदी महस्या है। को बार लोगा करना चेतन स्थाह २५%

दो खिला अन होता

मन एकाव न होना । जवाय-सम्बद्धा का का वह XX किसी प्रकार की विनार से वो विना रहता है तब उनकी भन्नच्छित समार्थकाल्य रहती है (साठ भु-वाठ नहुः, १), भी भी करि के करन पहेरि नित्त दुवित करावे (स्थाठ प्रशास-साधाठ दास, ५०)

दो जीम बाली

दुरनी बार्क करते बानी । वर्षान —विभिन्ने, उस से विष्य मन पोन (साक्त-मुप्त, ३०० कर दिनासे उसे कह भाजम क्रोभ मृत में कमा नटा दा हा चुंभतेर -हरिक्रोध, १४२

नी बर्ध्य बात

धो-नरफी मान। प्रमाण—इस प्रकार स्कानक कथी व्यवह उत्तर न दरे व गर्दन दृहल्यी कार बहुत व विद्यव— कीशिक, ५०)

दो दक बात करता

(१) बोड़े में स्थाद बाग बधना । प्रयोग-जनमी बान इस्ती भी ना बन दो हुक बुद्धार्थ : यक्षपाल पर , बान दो हुक वी और गुजकी हुई घड़्यं-देवराज. २८३), सब की सजरह है कि तुम तकबार मनोजर के पास प्राकार यो हुक बान कर को मानव दे प्रेमक्ट २५४ विका सूमिकों के बाद इस नयह दो हुक नामन देवर दी गई तो बह संबक्षणाता (परका क्षेत्रमह, ३४)

(२) बेटको रे बान करना ।

(समार मुहार -हो द्वयमित्रम करना,---दकी बान करना)

दो दांत बाला

बहुत नादान, घोत्रा। प्रयोग यह भी किया या देवी दो दांत की लड़को, उसके सामने दूवर किया की बाह्य (कुंक्सिक निराक्ता 70)

वो दिन का

O. P -- 185

सुर शतक द्वारं दिन भीतर विवादं पृति सातर वी कार्य दिन केरे गहाई क्वारियर को भूषण प्रशाब भूषण, २२४

दों दिन का सपना

चोड़े दिनों का खब-नवाजा । प्रयोगम-अब कोस्ट मार्थक है ननाम अपनान बखु नवनो दिन इ (कदि० नुषती, १२६)

(ममा॰ नुगर---दो चित्र का सेला)

दो-दो बांबें होता

आएम म कहा-मुनी होती । प्रयोग निराजन में दिन म एकाम कार इस विमय की में कर बोन्दी चोंच हो जाना अनियामें हो एका (कमाक-प्रसाद, १८९)

धी-दो बातें करता

कृषी बंग्ले करना । अमोन—सना अपने एन स्वाकृष प्रयो की दोन्दा बंग्ल भी भून को हाला शासाव प्रयोव— गामाव दास, ७०४% में सभी प्रयम दोन्दो बाल करके और आई है (कर्मo—प्रमाधद, ३४३.

रो-से द्वाच विकास

अगर्म। अस्ति का परिषय दना । प्रयोग —गृष्या है साथ इस भी पृष्टे का सकते हैं, हम भी धा-वो हाथ दिशा मधते हैं (कठा —देव सव, ३४३)

वो दो हाथ होना

धारपीर होती या प्राचना होता, तक जिल्लो होता । घरान-म क्रिया पुरत्नको को सहायता के ही उनसे अभी प्राव्याच म दी दह हाथ करने हो लेवार ह प्राच-प् • वर्मी, ३४२,

हो-धारी तटबार

हर दिवान में हुए। करने बाजी | प्रयोग—नियंता रेनकी हो पार्थे क्लबार से नापकी रहती थी निर्माला—प्रेमबंद संक्री

दो कीकाओं पर चैठ कर नदी पार करना विश्वादी पता का अस्त्रादन करके सप्तनमा प्राप्त करने का प्रयक्त करना । प्रयोग—जाप दी मौकाजों पर बैठकर



नदी पार करना चाहते हैं, यह वनस्था है (१९० (२)— पेमबंद २३९)

को बंद आंस् दासना

योगा थी हुन्य अग्रह करना । स्वीत-न्यामुगी ने यह नहां मेंसे सके की नहीं तो कुंच आनु तालना (बेस्स०--सरिकोस, ६०

(नवा • मृतः --- मृते बृंद आंस् नियानाः,----रपकानाः)

हो प्रदा नाप

होती को न से अधिन करने शायर 1 प्रजीत—नामः नत्त्रव पर नो मृद्दे सांच को क्यती वाक्टव व्यादिय को जोट-पोट बार देनी की 'धेमाल—चेमबंद, १११)

होनंगा बाल

रीती तराह श्रममा, बहना कुछ घरना कछ । प्रयोज---यम में बहा, जान नेरे बाब हो रती जान जन गरे हैं देसार --डेमबेट, बड़ा

हो-स्था होता

काकि दिवालाओं, की-तर्की दान बण्याः । वंशीय—''आप मही कान कविष्ण''---विश्व दुस्त को वर्षे होचय कीओ कृषी० —'मिरम्ला, ११६

दो-दर्का बाग

योजवाजी । प्रथीय-सम्बन्धिक क्या में हो यह बो-क्यो पान न क्या गरता (१४० (१)-प्रेसकंट, ४१३

वी रुखियों की प्रांती जुएना

ही किस प्रशिक्षकों का एक यह होगा । चयोश— जाउनीय हती का करूंच्य यह तब है जो पनि को प्रिय नमें कर्ता ही क्षतियों की खानी जहनी ही नहीं (दीनैठ—संव संव, ३०

दो शंदियां होना

शतनाथां जारी होकर बास। अनन धनम कानर । प्रयास— अस्तिनी नहीं, भी मेडियो होंडे ही दी बन हो बादे हैं मध्यम १ प्रेमचट १

दो गाँउयो का डिकाना हाना

क्षेत्रम भागाम को महमान्य व्यवस्था हो जानी । जारीन में निरंपन गांचरर में उद्देश कि बारी किया प्रकार को कोई नोकरी दिन प्राप कीर ही रौटियों का दिकाना सन जार (सहास-६० ओसी, १०)

दी रोटो क्याना

नामान्य भरता-रोधन के नायक कमाता। प्रयोग—उसकी यो चारणी थी। कि बहु बचने हाम दो रोडी कमा नेते के योग्य बन जान (ककाल - प्रसाद, २३१

दो अन्द कहना

कृष्ठ वाही बान कहनी। प्रयोग---बोन किर भी आवह करने गई कि रामी भोशताला सरने मूल ने ही सक्य अवस्य कहें (सहस्य) --देठ सठ, ४४२१

दो स्टिर होता

- (१) जनदंश्यी मृत्यू को कृताने शामर काम करता। प्रयोग—इर माम केंद्रि रक्तिशब बंदि क्षु वोधि कर मृत् सक्ष्मा (२२० नाम) सुक्ती २५
- (२) से तरह की बान करता ।

को हाथ बहका

- (१) पडनर अधिक ६ अधीन —हुनी असर है भी दी हाक आने करी वानी है (कर्मत च्योनश्रद, ५१२)
- (३) और प्रविक पूर्व होना वर रौतान होता।

दानों भाग मीटा होना

दोनो नरष्ट्र स स्थास होता । अस्येय-—बेपाया नवक माप्त बाता है । प्रशासन के तो होतों बाब मीठे हैं (मैरे०— पुत्रायक द्र

दोनां चल बरावर करना

भागद नो के सन्मार वार्ष करना । अधोग---केंद्रिश मिश्री के शानिश्य बतकरर ही तक ग्रहना तो सामद ताहिर अश्री विसी तरह जीवनान कर दोनों जुन बराबर कर मेते (१९७० (३): --फ्रेंस्स्टर, ३३०

दोनों भुका उटाकर

सबक सहमक पीयाना करते । प्रश्नात सन्य कहा हिन्न सक्त अपद्री समित्र बांग सुरुक्षी १७५

दोनों हाथ भर अभा

तकरम चलका समस्य को जन्मा । प्रचीम अध्यक्ष

वर्षी गहेशी, तो हम इस हीशक्त्या में ती सकते दुवी भाष्यों के कुछ काम जा नगम । अगर यह भी निकल धर्द, तो अमार दोनो हाच कर जायने १४६० ३३—प्रेमचट, ४३९७

योगी हाथ सहद

हर तरह से जन्दन क्यिनिया प्राप्त होना : प्रशंत — युह हरन मृत मोदक भोदे (समक (प्रा.—शुक्तसी, १४०) इस लोगों के तो बोर्नी हरन नष्ट्र है जाजक देखाक—शहरक देशा, १९७); आएक तो बोर्गा हरन नष्ट्र है (दुश्यात—

दोनों हाथ सफेरना

मान बरोरनो । प्रशोण---परिय स्थी हर्षे हाथ गर्का वै हो थिथनो दर बैंड स्थो शिल (BRo कदिया -चनाठ, १९६)

(भगा । मुहार---दोनी हत्य से बटोरनर)

योगों हाची (से) जुरनर

भवती तरह लुरमा । प्रयोग-वे स्पेश प्रभा को बीनः हाथों है जुट रहे हैं (१४० त) - प्रेमचंद्र, २९८।

बोनों हाधी से

वोपहर द्वारता

दोपहर दीतनी। प्रयोग—दूनरे दिन तम दुपहर दने गीता के कर में कमना नोटी और मृत्यू उसकी नाडी का नोर स्वोदकर सरक्ष्यर सा वंड कर रोटो जाने नना तो यह बोजी—(डोने०— (10 (10, १६७

कोष खढाता

दोची उप्रयोग । प्रयोग---नेषु खरे मुप्परे सब काम जका । इसी प्रयोक पहुँचे (धन० कवित---धना०, २००)

(शमः मृहा - चीच सदना, - सादना)

दोष गुष्प व गिनवर

कुरा न अभना । प्रयोग—कोशिक कहा समित्र उपराद् । काम दीप मृत नतीह न सन्दु (रामेश (दास)---धुससी, २८१

(मनाव महाव-होप न धरना)

दोम्की वांद्रमा

शोरती का शम्यस्य बनाना । प्रयोग---योगनी गांडमं ऐसी स. जिनक घर में खाने का दिकाना मही भीना (१)---जेनकदे. ३११% नृष्टाची मजी हो यो नृष्ट भी विसी के योगनी बाढ को म्यू देव----सठ नाठ, २२९% में हैं चुटून निर्मा से योगनी वाडी है मि!--कीशिक, २६१)

(शबार प्रार--दोस्सी जोड्सा)

द्रोहरा बदन

१६ व्यापना निए संगोर । प्रयोग-वह सोहरे वस्त्र की, प्रतिभाशानी निहत्त्व वी (मान० (१)-प्रेमवंद, २६१)

दीड-भूप करना

बहुत जवात करता । जयरेग-नृथने दीवपूर्य की थी।
तब करी था के बीने बाई थी (शानः (७)--प्रेमबंद, ६३।
बह बेटो के यहा से क्य तक प्रोप्ति बा-लाकर रोगी की
रेतर जाता है वीर इंचर उधर पीडपूर्य करता जाता है तब
तक उपके बिल में भी नतीय रहना है x x यह उसे
कराति न आपत होता, नदि बह रोता हुया बेटा रहता
(सन ० १ शुक्त १४, मर्टा इ तक दोराप्त करते पर
नो प्रेम का पानद नहीं रहता (कामना-प्रशाद, पर)

(नवा० वृहा०---क्षेत्र-अपूर्व सवानाः,---स्यानः)

दोड में पाउं पर जाना

स्पर्धा में शीक्षे पढ़ भागा । अयोग---वीड में हम है पहत पीछ पड़े भूमति>--हर्दश्यीध, ५७)

बीड संगता

किसी काम के निये बरस्यार जाता —बहुत प्रवर्त करना । प्रयोग—सरहद ने कडी दीड कमाई । सरकार पर भी मंत्र चला दिया (रंग० (२)--प्रमचंद, ३०४)

(नवाव नुहान-वीड सारता)

र्वीड होना

वींडे प्राना

(१) महत्र करनका होना । वयोग—नाम यो १६म ने प्रश्न आशामील नगरनता होयी छोट वर्णिक नाम होन कर्ममा तो पूजी प्राप ही बाच चोची आवेगी नेतर ११— प्रेमबंट, १९

(२) दुच्य सामा ।

द्रचित तीना

हर्रायही श्रामायण करना

मीधे बाब को बृथा किया कर गरका | 2710-272 में बाब्यों का दर्शवादी शामानाय हो पूर्व शेरकथमा हो बाब है (बहुम्य के प्रश्न-वहुम्य क्षमी, देशों में अनुस्थ जान अपने निवय के पूर्व में वहुम्य कोनों के नहीं, नविशा विवयों को, नवियों ने दरवादि कम निवान को हासिही श्रामावास न कराइये (साथ सीध-वहुम्य दिवेटी के

(नग» मुश»—दाचिद्रो प्राप्तामास कांचनः)

द्वीपर्दा का मंदर

र भी में समाप्त ताल साथी इस्त् कड़न जर्जी । प्रकार — सक्क निर्माण संदर्भित के की संक कि स्वाह अली ही नहीं की बसन, बानर सहिन बिहाइ (मिलि० मक्क-मिताम, देशा), प्रोत्तम निवार करलामा मिनु हाम यह आयम की रात निवी डीनरी की जानी है (मा० प्रेशां० २)---मारतेन्द्र १४२

द्वार जुलना

- (२) काम विकास : प्रयोग---वच्चा के लिए कोई व कोई
 हार कृत्या हो (ध्वन--प्रमद्ध, इ

द्वार कर जहें दाना

हिनी भाषी परिस्थित के निषय होना । अवीत---आन्त हो पूर्व विकासी के हात पर वर्ष हो। (मीरेड--आरंड मासुर, १७

द्वार पर काकमा

नागरण के किए जाना र अधार---वर्ग-कर्य बांधे बाह्यस्य तो उनके हार वर कायने जी नहीं (पंतन--वेगवाद, १६१)

हार्ग क्रमशी

- (१) दरवाक बर होना । प्रशास—मैं वई दिन से देसता है क्या के वंदिर को छार दिन कान जना नहता है (प्रेम माठ—सठ लाठ, २४६,
- (२) कालाई के महता ।
- (६) द्वार एक गृहच माना ।

हार होता

प्रथम होना भाग होना। प्रथमि दुनिहास समा जीवन भागित का प्रथम न्यापन को सानो प्रांत काले सुक्रम प्रथम स प्रश्निक कार पन को एक प्रथम द्वार है सह नियन बाठ सह ३७



धका काना

- (२) प्रमाणक होना-दुवस होना । प्रयोगः वृद्धियों का प्रवृद्ध प्रमाणकका मा बार यहा (देवलीय--नांप स्ट.) २३

धका अगना

मृत्याम् पर्वजना आमान सम्मा । प्रयोग—उन् वयस्याः म रगभमि भी रवानि ह। धान्य वयन ह । वन्द्रेत्य ते १७५०—देवस्व, पश्ची, अगर स्थापं की महरा प्रका न स्था सारा नो य जनाशास्त्र स्थला या गान से स्थाप सम्मान

्षण होते. (पाटीo—निसना, १२)

धक्रियां दहता का उदाना

(१) लख देवति हातो हा चरतो । एउल जना वर् परिवाह वरो तो गालक अर्थन है। सन ६५ वन्दिक

97 O P -- 185

(२) टुकर्व हुमर्व परमा, विद्रीवे बश्या ।

धरक म्यून्टला

भग या क्रिकंड हुन हरेगी । प्रयोग—वृद्धि वृद्धि शहर "र वर वर पर र व व व व्यव पर पर वर व देश वरो पात विकास वर्षे वर्षे ""(विद्यात १)—द्विश, दृष्टी, प्राप्त भी क्यों है बहक कुमती मारी दिसा व्यवसे तो बहुत दिन हरे समें (क्रुमेरीक-इन्बिक्ट, क्य)

बराके से



यानमा करना, हटामा, धनामा । प्रयोग—है दनने यह प्रक्रित नहीं जो ने नतन्त्रने क्या (नर्म०—हरिकोध, १४, मो नामाकीमें इन्हें क्या नतानी वहीं (वैतरे—अप्रक. ६४ . साव तो क्या आई ही दहरे, नवहन को बना क्यों नहीं कराते ? (रंग० (१)—केंगवंद, १०१)

धता होगा

भागमा, हरना । प्रयोग-एक जोग ने तो बनी जून बहरूर रहा है कि सपना बोधिया बंधना दायो, कहा ही स्थात स्थात (१) --मारतिन्द्र, ५७१

धन जोडना

सम्मांस एकतिम करना । प्रयोध-स्वोट कपट वर्षि पर् श्रम प्रोप्तयो से भरती में बाह्यों (क्योप प्रयोध-स्वोध, ११७); बचा बोहर्ष अपना पन बोर्थ की आप वर्षा कर क्रिक-दिनकों, ११३)

धन परमना वा बंग्सानी

धन की कहत श्रांतकमा होती वां कर देनो । प्रकाय— श्रो क्यापार ने किरमों में घन काला विभा है (रेजनोठ— कामत समी, १५३)

धन्य बढाता

घष्णा सेंड होता

मपने साम को बहुत कहा सम्बद्धने बाका का बहुत केंद्रे भागा । प्रयोग नाहण्य प्राणाण्य नाग्वद पान प्रद साम मानक १ वेदवह, ७१

(यमार यहार अस्तर सेंट के नहती

धन्ना सेशं बचारना

पास बाग को बहुन बहा और पान बानका । प्रश्नेत भाग को दूसकों के पर की करिया समयागत है और पाना संदेश को बचानका है जिसकी प्रस्ति हुई

धंनीर भातर । त्यानर

कर्णन सम्बन्ध करीन स्थार राज्यों । प्रचार क्षणन नार्याक पर सुरुष आयों गां | बाली-स्थानिको कारित स्थ हरत क्या शान अस्मा (कर्मा) वैमायद २०), वनकी वेर्ष समरेको से बनने पर विसे नहीं बनाय स्थे, पर्धांक स्थेन रेड न उपना इस स्टार्स से ईसाइयत को प्रन्या सम शान कर अरेका है (सासी० वृ'० वर्षा, २२६ , संसुधे इसन न बन अर्थ कसी जो क्या प्रमान हम देवे नगर (मुमते०—हिर्मोध, १३४

प्रथम अस्तर

रे॰ भाषा भारत

ध्या क्षेत्रहो प्रचाना वा होता.

उत्तव करना । वर्षाय -नवष्वको की भूमा बोक्सी एक इसरे को गार्नी क्लांग्र × × इन तब की गुजाइस मार्ने पर में नहीं हानी क्लांग्र -- भग० वर्षा क्षत्र न्यू जान साने पर भी वरी बसाबीको बना रहा है (लिसली--प्रमाद, ४९ , कर बमा बोक्सी कमी दांब के क्यों मेका दे बमार ना उत्तम बुमतेक-- इत्योध १३४

धर द्वाना

वर्ग नरह बद्ध के कर लेखा । प्रयोग—पर म जाने कथ १८२ की भटकन की प्रविधिका में उसे वर बकाया और वह की नवा दोनरक (२)— संक्षेत्र, २३७

धानी सामाश एक करता

क्ष उद्योग करना । प्रयोग-वनर तृष्ट केरा हाम क्टाओ का में भागी कारणा तक कर तृष्ट (सेटाठ-प्रेमकन्द, ११९)

धार्मा क्षीड्मा

वर कामा (वर्षाय-स्पर्त्त वित्त तक मोतो ने देवनस्वत को दूवतो की जलाई के नियं चूबले देखा था, पर गील इसको भी परती झोरजो वही '880-स्ट्रिफीस, 68.

धानी वर पैर व पहला,—न रणना,—शीधे इ.स्पना

बरताना । ताला - प्रयोग -यन अन्यद्र अपनामान्य श्रेष्टी - राज्यसम्बद्धान प्रशासनी स्वतः कवित --प्रनोदः १९६ वक्तरामाना सम्बद्धान भ्रम्भाष्ट्रसम्बद्धान स्वास्ताना (गोदान---प्रेमचंद, २९७): वर्षान्यकर मी भग्मी वर पाद म पदमा फिर ? (वीदे०--गो० राठ, ११३)

धरती यह पैर न रक्षता

- (१) बहुन मध्य प्यार मुख्य भुनिका में गणना । प्रयोग— यस भरि प्रथम से भूषि न धरत गाय नहीं स्थान पान छोड़ि सम विकासनों हैं भूषण प्रशास नुष्यम् २१२,
- (२) वहुस गर्व होना । अयोग---वेक **धण्याः वय पेट स** भाइना

धरती पर पैर लीचे व रक्तता पर धरता पर पैर न पड़ता

धरना पर रहते पाळे का आकाश चाटने का प्रयत्न धरना

सामध्य काथ करने की चंदरा करनी, बोट व्यक्ति कर यहर काथ करने की रच्या स्वतः। ध्रमांग शह वह राज क्ष्म कर पाटा । ध्रमती पर गण्य की सोटा स्पर्य---जायसी दशक्ष

धरता से उठ जाना

गरभा । प्रतीय-च्यम मीलों के सायक-वादिकाओं को प्राथाभने बाले भोग जब प्रायः करनी में उठ वए हैं रहे कोडोक-खार नार, ५५

(समा: स्मा:---धरती से उठा सेना)

धरना देना

अपनी मोग पूरी कावाने के लिए रहा अमर के प्रान्त प्रथम—गई भी कहन है कि एक बार अपपूर के राजा हवदसिंह भी सपूरा में सकता से मिनने बए पर सकता है। म नीन दिन कर उन्हें मुल्यान नहीं की क्योंकि जोने महरकार के साथ गांक (क्यारणी को दिल हर) राज्य कर निष्य म जिसके जानने बहुत में आरंग्य महत्त्वे से भारत वैकर पर गए में (पृष्ठिती प्रशान (१)—गुलेती, देशके

धर्म का टीका होता

गर पर्यो में घटन होता । प्रयोग — गर्म केटन विन को हरू नाका वित्रु जायमु अब प्रत्यम होका समय च

धमंका साग

पनंपकं सावन्यतः के लिडान्त । प्रयोग-सन्तृ पंधितः पर्याद पुरान् । धरम श्य कर करहि बचान् (पद०-सामसी, राध

धम विगाइता

रन कर र १ करका प्रधाय-दिहतनों की लक्ष्मा, बहुए सन्दर्भ करने भारती और यहां देने के जीभ में अपना यम निमादनी दन्य १०—प्रेमकन्द, १२६०

धर्म अवता,—मे व डोलका

कर्मकाव्युत व द्वीना । प्रधान—देश्यर राष्या धरध ह्यासा । वेहनि है अनन परिकास (शामः) (शामः) – सुनक्षी, १८२); वे नमनेटु भित्र धरमः व होते (शामः) का—शुलसी, १४७)

धम हेका

क्षणपुर्वक व्यक्तिकार करना । प्रधान—हे धर्म देवना तुम नाभी रहना, देवी यह धर मुखे अकेनी पाकर वेरा धर्म निवा कारते हैं साल्यकाल (१)—मारतेन्द्र, ३१,

भयं से न डोलना

रे॰ धर्म रकारर

धाक जनगा,-वंधमा,-वंधमा,-दोना

स्व रोव-टाव होना, सार्व हाना । प्रधान—उसके कट्ट कारव मोर तीव प्रास्तेत्रमा की पार गाव के भाव वसी हुई के अगरु (या)—प्रमुक्त, ११), कई क्रम्पदों में भी प्रमुक्ती बाक की देदेहों क- हरियोध, १५८), अ × स्वाधी विवेदा-स्व की पति जानबीय प्रस्ति की बाक मारे क्ष्मार पर प्रधान पान केट के निवास १० प्रधान प्रधान पर बाक किए केड गई (उंगठ २)—देशवन्द, १४६, , जुरमापन स्वरूप साम एक प्रतिये हो बाह न स्थानके , मुन्तिक— हरियोध यह

तमा प्रमान **भाक प्रसा, नम**ना)

धान्त बंधना

रः छाक अमना

भूरक बोधना,—बैठाना

होत जनाना । इस्तेय- नाम जनती नांच उत्ता में रहे। तह अरे क तन व ही लाइ नुसनेक न्हरीक्रीध १३३०

केहल एक लेख ने उनकी बाक विद्या है। प्रमाण-प्रेसकट.

(समार महार - भाक जंगना)

धाक बंदता

र॰ धाक जमसर

धापः वंडाना

१ । धान्त संगोना

धाक होता

देश **धाक तमाना**

धात्र मार सर रोगा

बहुत बोर-बोर से रोना । प्रधीय-नुरक्त हुना समि रोई इकारः । होटे अस् नजनह है सारा (पद०—जायही ausa); बंबी को एक हासश में देशकर में बाद बार कर बी कहा (जहांजा::--व्हo जीवी, २७८, चरव शार कर, विमान श्री पढ़ी शानी ओमी शाकेल -पूर्वतः धरंगां, यह कहते कहते बार बाक् बार बार रोते लगा (१९० व)—पेनक्ट ३४०.

धानः धूपना

कहोत गरिनम करता । प्रशंत-इस रह की ऐने होता की मैन्या इस देश में नम बहुत नहीं है जो चार क्ये जिला अपना तथा बयते कुनुम्ब का बावन कर नकते हुँ (90 चीठ ---प्रेट लोठ मिठ, १५६

भारा-प्रयाह

- (१) अनवरतः । प्रयोगः नया नामानिक क्या पानिकः क्या देती, वन विदेशी कारी विषयी पर वे वही बुनवना से अधिका सावध्याप्रवाण प्रधान क्षार जान का अन्त । प्रदास
- (२) बाह्य का प्रत्यका का । हवीत-वादा का पहर-मनात वर्ष पंचा तम हुन देर तक स्ट्राट होट से मेरी और बेचले इहे (सहायाध—यः) जोशी १५७०

भौगा भौगा करता

क्षमा भागतः गरन्। भागः । साम ाष्ट्रशामिक्य को श्रुपत स्थाप पर पास पास समाग्री है क्या है। प्राप्त 과학자를 입하수

यमा महाः भौगार मुहर्ना करता, सम्पन्न करता।

धीरज को निगत्त्वा

योशक व रहते देशा । प्रयोग-अभिने रहिषे भी मिसे स कहा, बहि पीर विसाप में भीर उंगसे (धन**ः कवित**ः धनाव, १०७

(अयोक पृहान—श्वीर**क स्टन**र)

धारक कंपना

हिरमन भागी, भारतायित होतर । प्रयोग -- मो समद विध जल प्रमुखा प्रम महोत्र बाचे चीप ,क्वीर प्रेक्षा०---कवीर, ७९,-

भीरक बंधना या कांप्रता

भवे दिलानः या करना । प्रयोग---वनी पार्व विति भई सनि गुष बनी पार (क्वोर प्रचाठ-क्वोर, २५६

धारता भागना

भीरणां न रह कानी, अभीर होना (प्रयोग-सीव विकास पीरतर प्राप्ती तामक बाला,--सुलग्री, ३५७)

चुन्ना बोरमा

अगगपास करता नाम रोक कर गांचना करता (प्रयोग----बद्दल तिननी भूब प्रम, नाहि थानन प्रोति (सु० साठ--मर ४३०६

ध्रुएं का हाथी होना

टिकावटी होता, तत्वदीन होता । प्रदोग-नेवल भने, कार के ओवर होत चुन के हाती (सुं० सा०-सूर, ४५५४)

धुक्र-धुकी ध्वकता

अञ्चल के करण्या कृदय का स्थापुन्य होता। प्रयोग---मृत्राम समय प्रमुकी परकी (समठ (स)—सुससी, ६००)

(पना० पुरा०-भूकपुकी भदकता,-बंधना)

पूज समना, सखार होना,—होना

विजी बड़म की करने की बोच से लगन होती। प्रयोगः नकती के कारकान की भूग सवार है (मूटी०—अंतंध हर्मी, १३८), वय इस स्था में स्वाद जरने की भून सवार हुई है प्रयुक्त के प्रश्न-पट्टमक शर्मा, १६प-१६९), तन्त्रे अपन अ.स् भारते की ऐसी भून भूवार है कि कर तथ विश्वय स सेरे सह में एक फेक्ट मूनवा की रेसर न राज्य । 🗥 🤏 प्रेसक्षद

केरेश), यम बाहब की केया की देखने की कुन है (तंतठ (व.—प्रेमंचद, १२), व कभी बाद में मही बात देन नई है किन्हें कि सक्ती बुन चुनतंठ—हरियदेश १०), या किर एक्स्यान मादन के सकते ही अगर कथा करने की बुन है (वंबर ,2) बाहोश, १३६)

(समातः मुहात-धुन समानाः,-बदनाः,-बंधनाः)

पुन सचार होना दे॰ धुन सतना

थुन दोना वे॰ चुन समनः

धुर्रे वक्षाना

(१) बहुत चिवक सारता, दूर्गति करती । प्रयोक—जब पूर्वो के बचके ने इस महान नगरी के घूर उका दिने होने रूप भी दमकी मिट्टी के बचन के लिये कप्युद्धीन के कोने काने से छोग भावमें (चान्य0—मध्य केंग्र, प्रश्न), एवं चपूर पूर गर पर ए सम के हैं रह रहे पर चुमते हिंग्याचे पूर्वकेतामें करते हैं भीर ऐसी कर्मना, विनकता और पूर्वकेतामें करते हैं भीर ऐसी ऐसी आजीवनामें अ अ मिन्यकर इस लोगों के तर उत्थान है कि मिन्य प्रभा कारत के सारे सार्वन परियों की चान्यों में बच्चानीम वैदा कर वेशी हैं (साठ मीठ---महाठ दिवेदी, १०३)

(२) दुकरे दुकश कर बालना ।

धूर्ण रसामा

भूती अलाकर माधना में कीन होता। विधोन-जनेकिया भ विक्षी तो बाइंगा ही नहीं। यही वृत्ती स्वाइता रण्य (२)--धेनपद, ५५ : घर रहे पर पुत्र नहीं घर की नहीं जब अमें उनने रमा करके पूर्व (भूमतेश-हिंग्योधे, १२४)

धूष खडना

पूर्व न । कुछ न ज होनाः प्रयोग—अ रही आसी एवं भा पह बढी और बीरिवह न कस्या तो कर्तारी धीर पीठो दहाइ भार कर रोने अभी (सुठा०(१)—समयात, ३४६), भीक व नावनभानी गभी दहन इहते घलती गराणी भी नह आई (ज्ञान०—बक्तमाल, १२६-२०); कह रही भी कृष, गणिया के शिन, दिना कर समन्त्रमाना कप (क्रानाठ⊷ निरामन, छर

भूपमें चटा न सर्पात करना। याज्य न एकाना न सर्पाद करना,

विना सन्तव के बीवन स विनाम। सन्त्रदी होता। परणा -- असन में ता असना सुरत दसन हैं। नार समी भी । पूप में काम नहीं सुकेद किसे हैं (मानव (१)—प्रेमसंद, वेप्पा: बृदिया— पाणों में नहीं पदेंगी बटा प्रमण में पदनी हैं, पून में पूड नहीं सुकेद किसे हैं (मानव(३)—प्रेमसंद, वेप भारत वर वर पहड़ नहीं पार में हैं वाप इनक हैं पह होने वह स्त्रिक्ष :

भूग में बाल सं प्रकाना है। भूग में चड़ा न स्परेद करता

धृष में बाल न सफेद करना र॰ धृषमें कृता न सफेद करना

धृष सेना

पूर्व को भेषत करता । प्रयोग---पोहो देश में सलकारी इस्ते बनार के पान पट्टी कोड अप बन लगी - संस्थित ---व वसी, ३२वर

(समा+ मृहा+—धूप कामा,—संकता)

ध्रम सब जाना या होना

(१) वही स्थाति होतो । प्रयोग—नगर में नये तिर से उसकी युग वाची स्हाग०—अंध नांध, १२३); चोड़े ही रिजी में 'सकवर' की कविना की यूग मंत्री (पद्धशाग – पद्भव सम्म, १६९), रेवले हमारा यूह मोहते में, न्यमें में हमारी बूग मी (कुमरीक(मृष)—हारेक्कींध, १)

(२) कारो घोर जमन होना । समीम—रंगर्शनयां भी अहर पर पूछ वी अप्यूचा हो है करो पास वहा व्यक्ति --हर्ष और, ६४)

धृन्द उद्दश

व्यवस्ती होती, तबाही बानी, चेहरे पर रीवक न होना । इसोम—सम्बद्धारी बाना है यन उसकी ही रहती है (मर्मे**)—हरिकोध, रू**म)

पूर्व कड़ाते फिरना

मारे-सारे फिरला । अभेग—कर्य मी हाथी पर करार फिरते से साथ तंत्रे लोग क्व-मन की पूल कराते जिस्ते हें (Min Bo (ह)—सामसन्द अस्प्र)

थुक करना

कार कर देना । क्रवीय-कानन क्रमारि, कान्युवारि, कारि, पूरि कोली, बनक प्रशास्त्रों, जो विन्योक्यों क्यू कीन को (क्रविठ-न्युक्तसी, क्रथ

धूष्ट कानर---धार्मनर

- (१) व्यर्थ बरबाद करना । वयोग--वृति भीता पनि सील मुक्तात । भोद न मन, सम पुलक, सम्मे अन्न तो तर बोहर बाज दिनविक-न्युलसी, १००)
- (५) सारा-मारा विक्ता (वर्षाय—मै तो मही कहती कि ऐसा बोच का भर जोक्कर अल्पान का की भूग ही सोतो (देशी०—गुप्त, ७३)

भूम झानमा रै॰ भूस बाना

धार काइ के बल देना

सार बाने पर विशे प्रशिकार के पुत्रवाद करे बाता ह प्राप्ति—स्वयंत गीची कावा में वे ऐसी नहारी चांट करत है कि मार कार्यवाला केवल कृत काढ़ हर कर देने के सिवा और कोई गाला है। यहां काला (क्योरक - 80 हर) दिए, देशह

धूल फांकना

माराजार। किन्ना । अयोध-स्तो वहां, देव-विशेष की पूष श्रीकता पूत्र रहा है यह अवकी (शृतिक-स्वाठ कर्मा १३%) तम से क्यावर जिल्ली की सबक वर पूछ दार हैं। पूज कांच्या हुआ (श्रीक-स्वाठ शाहर, कर्न्, कूल उसमें है जहार का यही पूज में विक कुल के हैं साकते पूछित हरियाँक उपने

धूल फेकना

कर में क्षेत्र प्रतास कर्षत्र मुख्य के स्टूट स्था नुभावत्र में स्थापन के स्थापन क्षेत्र हैं

भूक में एक्षा होता

भागात्म तथा तथा । यो मा सं प्रतास कर प्रतास और व

पान नोलों ने मुख्ये बाजाक कर कहा दिया (कर्मण-प्रेमवद, उरु

पुल हे जिल्ला वा जिलागा

वस्य होना वा वरणा । वर्णान-वर्ष धारेशि क्ष्म वर्षेश क्ष्म विवार विवार वर्ष वर्षे वर्ष होने क्ष्म (स्थल क्ष्म वर्षेश क्ष्म क्षेत्र व्याप क्ष्म क्ष्म होने क्ष्म विवार (वेदेश वर्षाण-वर्ष क्ष्म क्ष्म होने क्ष्म क्

पृथ्व में (की) सम्बंधि करवा

पृत्र में मह बारमर

लावें काम करना । जनान-स्पष्ट कृत में अह बाग का रहा है ,प्रक-संदर्भ, इस

पुन में मानवा

(१) किनो नृते का नृत्यक काम में किसी को ओवनर । प्रमास—न्यप्रमय बाध्य का मृत्य आवने हो नृत्य, वर्ता स्वी कृत में मुख्य कानने हो नृष्य ? (सार्वशः—गृष्ठ, २४४)

T-174 9 (F73)

पुट सम्बद्धना

कर रुप "मलना किया रिश्नी म संदाना। यात नर्व के द्वार प्रता क्षत्व स्था स्था प्रति क्षा महा प्रत



20.7

भूग से बचा शोधा

िनदा जिन्नकार होता, सिटी इत्सन से होता । स्वतेत्र— पूर्व जिन्द पर या करनता नद दिनो दस दिनो हे सून ने है वर रह (सुभरीय-हरिसीय, ३३)

धुस होना

- (१) मुख्य होता, कार्य होता । प्रधान कही पृथ्ये और स्माम मुजास तो भूषि समान है जेतीन चहेदको छन्छ वर्षक —धनाठ, रुठा: धर्व कहाई चूल, सामित को बहुई कन त्राधाठ गुंधाठ—राधाठ दास, ४७. (~)
- (२) नष्ट हो जाना । प्रमाप---वन्न्य क्वार यह नक विवाप प्रसार का कवि चाह हो बाव, यो वह करना चाहना है वह मच चूल हो जत्वना (श्रेषर (३) -- खड दे, १३०), देखिए प्रयोग (१) में (--) भी

धोकर मी जाना

एक्यम म्थान स वेना, शवदनका करनी । ध्यान— क्यों बयरर, धर्म की धोक्य की क्या ? (मिटी--निरास), खर

भी बामना,-हेनर

दूर करता । प्रयोग—साथ इत बहुय को को वार्तिए कि
मैं साथ से भाराज है (पट्टम० के प्रया—पट्टम० कमा, ३०),
शब तह इस लंकीय की को पासन के लिए यांच के और
निकट यांने का यत्न कपता (शिमर० (२)—साथ य,
२०॥ तुमन जयरम, किया यह तुमन निवय जात बचाम (तिया या, उसस अपना जातराय कहरत राज अपराय को यी दिया (चित्र०—साथ बाता है एकन राज अपराय को निवास को दूरवार या सावना है एकन प्रमाय के

धो देता दे० धौ डामना

पोका काना

ठया अंग, अस्म संवर्गः व्यवस्य अंजाने सम्म गणा गणः विश्वतिका अन्ती वर्गः (इस दिस र गणः) भीवा बाला वर्षेता (गणनं क्षेत्रवेद, १३४०वेध

घोले का कुनमा

महा पालकान । प्रवास । श्रुप्त निर्मिकार कहनाने पर थी

नाना प्रकार की भीचन किया करना है। यह बोजे का पुरुषा नहीं है तो क्या है ? (पुरु वीठ--पुरु यार मित, इन) मार्च की टर्डा

प्रश्न में कारणे जाको बीज, दिखाक बीज । ध्रवीय— इसे मेरिय के बाद इस कहें कि देखार जी जीते में अनत नहीं है जी बावन न होना नवर्गड ऐसी कहा के पदि पत पांचा बाता वहीं ना बोज के काम अवस्य केंग्रा है किये , है है के कर सकते हैं कि पांचा है। या बाद कार कार कार ना बाब की रही बाते करता है। एक पीठ—पठ ताठ दिए, हैनेत बात ने ही बात होति, नह बिन्ह ने हना अहे सब बाब की रही की है। (मानठाया—सेमबंद, हहा: बारमावन का अह है, हहते के ने (मानठाया—सेमबंद, हहा: बारमावन का अह है, हहते के नहीं का का का का कि बहने का बात है हही की है। (मानठाया—सेमबंद, हहा: बारमावन का अह है, हहते के नहीं (मानठा-प्राप्त का के बादने

भोना होती होना

तय बारता — हिम्मल बार कागी। अधीय — टीमे के बोशी की नहें भागने ही हों। गूरव कोभी हीजी ही बाबनी (पहरहें) — नेषु, १९)

मधार मण - भाना बाल देना, ईम्ल देना,-

र्याली कर देना)

धोता दिगहरा

बर्शन वर के मनसूच कर काना । अयोग-पूरत देव ना तो कोती विशव काय-वर मारता हैनी क्षेत्र गाँध है विश्वक-कीतिक, १९८

चोची का कृता

साथ र्पण-त्यन विजयनाता विश्वस्था । प्रयोग -तृत्रकी वर्ग है क्षत रावद हरता साला वर्णिक राववण्ड, न पर को, मुकार को । क्षतिक-नृत्यकी, १४२

चील प्रमाना

कारण समाना । अयोग-मृत्य पर कृत्य एउमान गर्डी सरने दिन समाज परेन क्या असानो हैं सानक है ऐसपार १०% कर्डीम राजाओं ने सपनी चीप सभा कर नहीं नुष्य कर्णायक स्थान को ना जानावा देशमान देश मान



थींस सहना

रोह में का पाना; प्रकारित ही बाना। क्रयोश—में विवद पाऊ तो बना में, पर कियों की चीम दो न संहमा प्रैमाठ—प्रमादेद १२।

(गम । १८७० - भीम्ब में भर ज्ञाना - पट्टी में अपना)

धींसा वजना

क्यांति होती चारो और चर्चा होती । इपाय--स्त दिनां स्वामी दयानन सरस्वती का चौना बजता था मृतेशे प्रकार १)--मुक्तेरीर, २५१

थील पच्चा होता

हुनी-हुनी में भारतीर होती । प्रयोग-सूनी-रिक्नणी बीज बन्दा सभी कुछ होता का (प्रेमाठ-प्रेमचंद, १५४

प्रीष्ठ सारमा,—समाना

भागा मन्दर्भ । प्रयोग---भीर नात कर जटांच से एक भीन मारियो अजार---वंशान, फर्न, क्या अमको किसी ने एक को भीन नवाई रे (माठ प्रक--भारतेन्द्र, यह

(मगः पृताः—प्रीतं कमना,—क्रमानाः)

धील ज्याना

🕫 पीड मारश

ध्यान ग्रहना

मनावि भग होनी या विश्व की एकावना व चानी । प्रयोग—मुनन व्यवस धुटीह सूचि च्याना (धमक बाल)— सुक्रमी १३५

ध्याम धारता

नपरित्र नपाना या स्वरथ करना । प्रयोग-स्थेना स्थान भरी करत्यी, स्वर येनाहर न्यानन करी (क्वीर प्रेडाव---करी १९६ वर्ष्ट्र रोव गावीर नप्रचान व (१ प्रशेष प्रक्रि प्रपान सम्बद्ध (बाहा) --शुलक्षी; १३१

ध्यान पर सहना

- (१) कन वे स्वास कर सेना, वर्ष दाना । प्रयोग— इसने वें सपगहयो पनान वहीं ।(१३११०—१३११०, ६१ बहुन पहारशकों के पुनरों से बाते वर्ष पर विस्ती पर इनका प्यान न बहा क्यांग्र—१३६१०, ६४१६ प्रोटीन्याडी कानों को को प्यान के बहावें रखना, मेहनड में मूंह न मोदना ४ अ वे बातें कुछ एनी अपनी नहीं है कि पुस्त और बाजाब को बागारियों में बहुन कर के सामक ही महदे निय—बार मेहट हर
- (२) डॉबर मनना । प्रयोग—सर्व भी जो वेश कहा नुम्हरदे क्यान वह तो तह हुए दिन पिर सर्वते है इक्रा॰—इक्षा॰, ११३

ध्यान लगाना

- (१) स्वयंत्र करना । प्रयोग—स्वयंतर देखि म भीजिए यम ज्यू काई क्यान । योई देखि अपेटमी, यू ने बुई व्याम स्वयंद संसाठ—कडीर, प्रया, सनकादिक सुक नगर सारह ध्यान जनावें (गुंट निठ-न्दाट मुठ गुंठ, ४७४)
- (२) वर्तकोष वे ।

भूब सन्य होना

सर्वत्रत सन्य । अयोष-ध्य नहीं भुना अध्या कि बीदन सबस स्थित व्यापा अवको होना है, को धरना वालना है, यर है वह को सूत्र सरव (सेंसर (१, --प्रशास, १२५)

ध्वज्ञा फदराका

कोणधाना होता। प्रयोग—अब नहां सन की कगट की, पूट की। नरणटी की है रही फहरा धुना (मुनर्तक— हरिसीध मुख

ध्यक्त होना

सबसे चंद्र होतो । अयोग-स्तोधन बीट्य बाहु विराहत इ.व. रेन्ट्रान चंद्रव दि जावन , बेरिन को प्रोहराज ब्यास्ट्र है जिसकारित को सूचे जावह (वैश्वद्य (द्)-स्वास २६०)



नेपा कोरी लेगा

नुष्कृ अपके सलायी लेखा । प्रयोग-नव्या, वेशी नंगा मांजी ों भी, भी लेरे पान चेला भी ही स्व० (३)--डेमबद, 456

मंगी आओं देखना

विज्ञा किशी दावरण के, सुनी । प्रयोग-चन्दी पुर में नशी धावों से बीजों को देवन की घारत वालिए (भोर०---जगव शाक्षर, १६

र्वती तलवार का बीच होता.

जबरशस्त गण्ता होती । प्रयोग---अनके और राजा के बीय में भर नहीं तलवार का बीव वा (गाठ (व)--**렇**피원적, 2844

सर्ग धाना संगे जातर

माली हाथ जन्म नेता और मृत्यू को प्राप्त होना । प्रयोग 🖚 मांगे आवल मांगे जाना, कोई न शहहै गांवा राना (करोर रहार-समोर, ३००)

र्नमें हाथ जाना

मृत्यु के समय कुछ नाय व से वाना। प्रशंत—नावे हार् न राज जिनके नाम करतीर अधीर प्रशास- कडीर २५

नेगों के देश में धोवी का कास न होना

अन्तर्भक्षक वर अन्तरभाषी होता । प्रथम अस्तर्भक बस्तक्षक

99 O P -185

में रेजर करेंच्या होटा पिन्हेंडी के विकासन देने हैं। जान स होना और न बैरमयों के जलकारों से बीजनेप, शकी, जैम बीर करी के विकासन अपनर कर्षा निकास सक्षेत्र । संगी क देश में योची क्या करेगा मीट-गुलावत, 63)

नंबर यंका कर

पहले पहला का सबसे अधिक । प्रयोग---नशर धन देनरे-बान है हार्राय बार्च (चैतरे—धरन ५०)

म ह्यार के रहे म क्यार के, म यह के म बाद के

न उनकी मनती, भागत-भागत में या पनाय ,सुर सी०-सुर, २९३४), कुनमी जली 🛊 पान पानर बनाएं मा तो भोजी केंगों क्ष्म, न पर की न चाह को (कविक-पूलसी, 188.

न गिनना

कुछ न प्रयासना । असीम---भाषीह गर्नाह न नवपर पाटा रामंक कं -नुजसी ५०७)

संबद्ध का संघाट का दे। स इधर के रहे में उधर के

अधिज श्रीत व राम जीव

हर समय जिला बनी रहती है अयोग---नव हैं कुमत सुगर में स्वार्थित भूग न वागर तीर न बामित (पान) (पी)— तृकसी, ३९१)।



नककटा नकटों का सरताज

मान मर्मादा को देने नामा वह जपमानित व्यक्ति । प्रयोग—नाम पर बैठने न दे भएको नक वटे नाम हो प्रशासी (बोला)—हार्फशीय, ७३% नयो नये पत्मे न पर पीना किने प्रथम नकटे का वही होना पत्नी (बोला)— हरियोध छह) ये कोय की यनाई थाउना वह येन पुर ही नगरों का नरताय हो रहा है किसी—क्सिना, १७)

तकवक्षा होता

साल भी सिकोबनेवाली, क्लेक्स प्रकट करने वाली । प्रयोग क्षेत्र-सम्मादक बचनी प्रश्ली से देल हैं, कारणी । सुक्षपत्रीकृतने के भी कार नहीं क्लेक्स सुक्कु-देश स्थाप

क्कटों का सरताज

अवस्थाः

मधानको बहुया देना

भगत कर पात गाँउ अपना स्थापन मा ना ना ना । सम्बद्धा दुवा कि बाद कार्त बंदा सुद्धान-भागतील, वेश्व

लकाच उत्तरको

बाररचिक अथ दिन्दला देना । श्रवास--गनी-मनी वं यसका नवाब उत्तर कर दिन्नमध्येगाः कुवर मिट (परसीठ--रेणु अपन

(गमाव पृद्धाव- मकाच प्रदानर)

नकुश्चर ज्ञाना

नेग को शाना । पंथीय-स्वतं को कही कुशा व विका नक्तुओं ने वसे बहुन नकुता (क्षेत्रद्र- हरिश्लोध, 66

(समा: न्हा:--समिया जाना)

नकेट हाथ में रखना या हाता

निर्माण अपने त्राय संदर्भन या त्रान्तः । एक एक्क विष्णाः मामने अध्यक्ष इतः महास्मानी अहत्र यह उत्तरा स्मान सम्बन्धि प्रेमकः विभवद १५७

नातर वाले में नृती का प्राचात होता

नार र गाने भारत्वारोत रोजा बटर र गायम प्र भी क्रोज न सुनतो र प्रथम - उथ मद≑राज्यक स्वयार दी सामक्षत्र क्षीन सुनता को कार्या क्रम स्थलनेट उपन नएक बनना

(२) बदनाय होता । वयोग—बाबू माहव अगानं ठीक बहुर पर हम तो छेना करके नक्ष्य नहीं बन सनते (एम्मा० प्रकार—स्थार दोस १४६ : तो गवाम में रोजाक तेरी हुम मी किलाने को क्षायर को भाग मार वहीं माहस के साम इतिन बजाम पर बाब बाब मन्त्रप्त हुई तो बाब्यम प्रविचे-विची में नक्ष्यू सन्तर हैं (अट्ट अठ--वा० सट्टे प्र अस बाव दिन के नित्र विश्वदर्श स नक्ष्यू वर्षों स्त्रू (अवन क प्रमाद, २३६), अस विकास पहले ने बदा होया निना सन्त्रू स्वारे हैं प्रदूष्ण के पश्च-पद्मार समी, १६६

तक दिला थे, तल से शिक तक

निर के पैर तक । प्रयोध---त्यत देश नव्यविक्त रित व्यापी रामक शाल - सुलको, २८३०, वसन विक्र की मृदु भाषूरी कांक्ष्में पहेंदूं किनोचनि वासी - जयक--पहमालस, १९३०, प्रशानेत्ये का कोरिनिको समान शिक्ष भी पर जाप स्था। समान कारा- समान १६६

(पमान महोत---नवाज्ञिषा)

तक से शिक्ष तब रू तक शिक्ष से

तरराष्ट्रा बहुना

नाप्ट कहना—मृति काम योकाम सन्ति । प्रयोगः— राजि कराइ नमाने दे हैं ही दिवन्तनहिं पर्द से (माठदेशा० २५—मारतेन्द्र, ५८% है मृतीनत का नगाना समें यहां योग पर एक पान हम है तो यह (मृत्ति०—हरिसीस, १००

श्वादा

(३) पर करना प्रयोग नामन बाक दर विश्वयन पिरेट नक्ष्ट भारत समाचे सुक्षणाय पूर्व ३८८४ जोड वट करण सक्त्या साथ । स्तर द्यादी विश्वयक्ति वाही प्रसाद मुख्यों १०६४ (२) सनमानी करवाना । प्रयोग—पुरुष हमेशा ने नरनशर भाषा है जिसमा तचानी बायो है जिद्दी०—सञ्जास, १७६ , है जिसे पँगा नका पाना सही या तका ऐसा न भाषों के नमें (चोसे०— हिस्सोध १४

बचा नेवास्त

पूर्णंग वट में रसने बहता । अभाव जम् वेकन तुम्ह देलनिहारे । विधि हरि मेंभू नभावनिहारे (११६० छ — सुशतो, ४९१)

नज़र अटकता

गरका समना--- प्रेम होना। प्रयोध-- बनारव में बेटला अब भी दशारों से बात करती हैं। यान को किसी कर्ष भी की किसी रईस पर नदर अटक गई है तो वह बजाक-मधान के प्रथम कह देगी कि बरे हम तरहे का के आब मानी पृथ्वें प्रथमें प्रेमाण्येंगा में हम बाफ ही लेगी से कोडें। अठ नाठ, २०३.

सहर गङ्गा यो गङ्गी

- (१) प्राप्ति की देवका क्षेत्री, प्रिय कीना । प्रयोग-नया नुष्पृत्ती नवर वन पर यही है (माठ माठ ११)--किठ गीठ, धर्
- (२) एकटक रेजना । प्रयोग--- 'प्रयोग अपनी कृती पर केंद्र गई । मेंगजीन भीन उसी समझ दर्जी में सबर परत ही सिली - निराला, इस।

(शमाव म्हाव—सजर जमाना)

मज़र खाद होना

हरित विस्तान । यथाया इसी बीच राजा जबरे चार ही। मुद्दी (बसा)—नागांव, १९३.

जन्म खुरानां

- (१) सामना न करणा। यद्याव कदात्र की नजर भूराकर भी वह सम्बन्ध स्थानो स्क्या ना सकता है (मृद्य-गरंत नांव, ४०३) (२)
- (२) विश्व कर कुछ करना। त्रयोग—देशिय प्रधीन (१) में (÷)

सङ्गर दकरानः

परस्तर अन्ति मिलना-एक साथ एक पुतरे को बेमना ।

प्रवीच-वे सकदका समा, क्यांकि उस समय सर्थानका मैं उसी दिया में देख यहा का दोनों की कृष्टिया दकता नहीं (अख्या-देशाला, ४४

नेजर प्राटका

(१) प्रश्ने का कृषे जान से देखका (प्रयोग-सम्बाट प्रत पर रकर वालना कातन है क्या ? (भोरठ-स्वयक माधूर ३२

(३ देगना

नजर दीयाना

- (१) क्षेत्र-पृष्ठं करना, निवसकी करनी । प्रयोग— वन्द्रर विसाद का बेठे और विमान जायदाद की नुसरावर्ष नवरे दौराजे नवे (माद० ६१ - द्वेसबद, १४,
- (२) दूर तक रेमता ।

नहरं ने उठना

सामना करने का भारत न होना-स्वाहातनक क्यिंग में होना । प्रयोग-स्वाहोंने मुक्ते समय प्रदाने कानम नही रक्षण दु दुव-अंद नाव, दुवद

नक्षर पश्चा

दिलकाई देना पाप्त होना । प्रयोग—मागा या सनाग में देवला की शह क्या । कहे बजीया संत ही, पहि नया सर्जार क्रमुप (क्रवीर प्रयाध—कर्नार, १४)

शहर पर बदनी

- (१) बनार क्षा नामां, जनार मानुसं पत्ना । प्रयोग---रूपी एकार भवनार की नजर में बंदा जाना है (निशिध---दिश प्रथ, २९), पत्न पहली कविता ही नाम्दं पर जहका दिल में केंड वर्ष (पहल पराग--पद्रमण शर्मा, २६९)
- (३) हर समग्र प्यान वर रहेना ।

(समार मुहार-जजर पर छ। काना)

नज़र फेकता

(१) सत्त्राच्या घोर पर देश केता : प्रत्या - प्रयंत्रय बार-बार नजर केंद्र कर देश केते हैं (परती०-रेष्ट्र, ३१३, (२) दूर तक देखना : प्रयोग--शोध ने एक ऊन स्थान पर पह कर कारों और दृष्टि कंडी (वैश्वकी० (१)--

बतुरक, ३६५-७०.

सक्तर्यम् करमाः सर्वे पहरं में रकता । प्रयोग—तो इत बाब् माहेव को मजरकर किया प्रथमा, हृत्र हे (कर्म०—क्ष्यंद, ३१९ , इसके क्षिम प्रकार समग्री जाय हो स्टूड्ड वही नकरवत्य कर दिया आग्र (प्रदूष्ण के प्रया—प्रदूषण क्षेत्री १९७) (ग्रावाच मुहाक—क्ष्युय क्षेत्र सक्ताना)

शहर पंचारा

हिन्दि से बंधना; कीरी घोडी; जिस्सा । प्रयोग जाति सेत्र भूपन बस्स सद की समय बंधाद रही ती: विशि गोदि साद्या स्वाद सी साद प्राप्त—पहुमानत, २५), बादव होती के लोग एक एक कर अगर बंधातर मी दो स्वारत हो चुके के मिलां — मि छे.

सकर बद्दल जाना

कांव का नीयत हैं अंतर पहना । प्रकीत—ननावक की जीकार करते ही यापकी नजर उनकी धोर में करन आधारी (वे कोर्ड-का नाट, पंर

श्रास्त्रपाता करते?

ित्य क्षण क्षण कर्तर म तहान प्रथम सामान्य क्षण का प्रथम भागामी को सहके नेमहत्त्वात करने महत्ते हैं, यहां वक्तनाती के निवस बीर क्षण करने हैं (१९० १९)—प्रेमकंट, १९०

सजर भार चार देखाला

इन्ह्या वर देशाने प्राप्ती वरह देखना अस्ता करा इ.स. नहर भर कर देखन वर्गना है कि कि देश कर काइन्ह नाप भी रहे हैं कि हुए हैं। इस देश अने देश प्राप्त प्रमाण कि ते नहर भर देश ने किहा कर सादर द्वार देशाय कि ते नहर भर देश ने किहा कर सादर द्वार

स्तर भेरती

कुलक्षण सम्बद्ध अस्ति । प्रश्न के एक की विकास के शिक्ष

नजर भरता हु बचनी (बुद्ध-मि० नेम्प ध्रप्य)

गतर मारता

- (१) किरको बिनयन से देखना । इयोग—हैन में उन्हेंने हो येरे मनो ने पहले नार्त्यक वाली ही को सजर मारी कमार---छर १२०
- (२) इतारा करना । प्रवास इतना कहकर बाबू नृत कृतार्थ और नजूर सरकार एक नाई-वार्र आदमी का ध्यान मही क्षेत्र साथा बलक जागाव, इतर

नकर मिलना या मिलाना

बजर में गिरवा पर गिराका

इन्दिक्त में क्यों बानी। क्योम---में मानूम होना या कि में नक्की नक्षर में निव क्या हूं (मानक क्यो -- प्रेनक्द, 60 में अवनी ही दृष्टि के कृष (तर ग्रंश (बानक -- श्रंत प्रव कि कुळ

बक्कर बैन्डा होता

(१) कुर्वाप्ट के श्रमना । प्रयोग—उनकी नज्द करी सैसी p. मेलाठ—रेषुः १६४

नप्तर स्थाना

- (१) क्टॉस्ट के देशना । प्रयोग—भीट फिर में X अ न किसी और कह बेटिया पर कृती नका रणाया है, से अमृत्ये आओ जाटिय से का गोपाय हारा अपनी अधिक अर्थी बढ़ा-कहा कर कोटा होता चाहता है (खहाजाo—50 सोसी, 23%
- (२) ध्वल गाना ।
- ्राष्ट्रप्रदेशको अस्ति। स्टब्स्यानी अस्ति।

नजर सम्बद्ध

र कि बहुन इसेन बहुन महिले शिद्धि न लाई

नातें मांग किया दिनी सू पर (मूठ साठ—सूर, उर्द) सीतं मुहं वीठि न सर्ग में किंद दीनी र्रांट दूनी सू नरमन खनी, दिनें किंदोना र्रांट (निहारी रसाठ—सिहारी, ३६); एक कहें दूनें बीठि नारी पर भेद न कीड नहें दुनहीं को (सन्दर्भ कर सीठि के मेर्नेंट न बीच सुकी मू सनीमियें रीकिंद में पीति किंदी (धनम कविछ—सन्दर्भ कर सहित अपन्य की बोद किए विश्वा रहीं की दुनियों कि यन कियों की देश्वा कने (प्रेस साठ—सन्दर्भ की दुनियों कि यन कियों की देश्वा कने (प्रेस साठ—सन्दर्भ की दुनियों कि यन कियों की देश्वा कने (प्रेस साठ—सन्दर्भ की दुनियों कि यन कियों की देश्वा कने (प्रेस साठ—सन्दर्भ की दुनियों कि यन कियों की देश्वा कने (प्रेस साठ—सन्दर्भ की दुनियों की साठ कियों की देश्वा की दुनियों की साठ कियों की देश्वा की प्रेस साठ—सन्दर्भ की साठ की दुनियों की साठ कियों की देश्वा की प्रेस साठ—सन्दर्भ की साठ की दुनियों की साठ कियों की देश्वा की प्रेस साठ—सन्दर्भ की साठ की सा

- (२) किसी बस्तु को पाने की इच्छा होनी । वशाव— दी ६ पर तेरी बहुत हीं छ । यस करनो कोटा पर क्षेत्र पीठ (करोर प्रथाव—करोर, ३२९)
- (दे) पेम होता। प्रयोग--- चकी क्यी नी ही पही कुछ भागति नीति कहूं पीठि लागी, सभी के काह को बीटि (विहार) रहाठ -- विहारी, बहुद

सक्रद लगाना, लाना

यभी वृश्य से देखना । प्रभाग—दीहि समावति कान्द्र ही, प्रदे वर्द से आणि १६० साठ-स्था, २१०६); अति नृह्यस्य कृष्णी दीक्षी, मनि काञ्च कार्य दीठ (सुरु साठ-स्यूर, ४४९१); ऐ तीज काबी, भना कोर्द स्थान सबके को नवर समाजीता (सानठ ११)—प्रेमचंद्र, १७६, नवर नवाभीत समा (बृद्ध - उद्ध नाठ, ४५४), तो बृदी दीठ दिन तरह सम्भी सुमतेठ-हरिक्षीए, ४५:

बक्द लड़ना या लड़ाना

प्रेम होता या करना । प्रयोग-सेडानी को अपरे यपन बरेली शाले नमधोई से शह गई (वे कोठंश-अव नार, धुरू)

बजर लागर

दे। इतर लगाना

नदर होता

(१) ध्यान वा बाक्येन का केन्द्र होता । ज्ञवीन-नरं. धीरतों, बच्चे, जूडो-सभी की समर है वस पृथ पर (बुद्धo-बध्यन, ६६)

100

O.P.-- 185

- (२) मेंट होनी । प्रयोग—खरी हुई बालिया दीसकी की नवर हो गई। पद्मण के पत्र—एए० समी १२८।
- (३) क्षण-कृष्ट होनी । प्रयोग-क्षेक्ष समित हम अपनि
 नाती क्या क्षणिकत्वत अपन्य (क्योर ग्रेडा०-क्योर १९७.)
- (४) कुर्दान्ट सबना (

नजर्गे में बटकता

व्यविष्य व्यवस्था । अयोज—वे तो बाटर पहर भागों है नामन रहपा, जिल्हा काकी अवारी में सदकता रहु हा त्यक ३,—प्रेमबद, ११६.

नदां बहना था बहाना

प्रकृत सामा में होता या दशा। प्रमोन---राती मी हिम्सेन प्रकृत संस्कृतिक महा और कृतक एक्से यह । का दृश्या बहा दिया (प्राठ (१)---प्रमचंद, ७४)

बहुदार

हा-ना । प्रयोग----वसना ने जया भी नम् नय हा निया धोर पार उठाकर पानी केन चनो नई (सुरु सुरु---सुदर्शन ६४

मना सा मूंद्र शिक्स भागा

विभिन्न जाना । अध्यम-न्याम साह्य इस व्याप है दिन ब एडकर पह वर्ष । नया का मूर्ग विकास साथा (१०० (१४-केमबर, २९१

नपा नुन्हा

जिनमें की सामन्यकता हो जनना ही। मपोग—जिय प्रधार एक प्रपराधी किसी न्यानकार्य के बाये भारा होकर वयन मरिक का जनस्दाता होना है और फिर न्यादकर्ना के मुख ने कई जुने के कप में अपने मरिज की नयी-नुसी जोट निष्यक्ष ज्ञानानना मृतन है, उसी प्रधार में भा पान को खू के स्थान से स्थाबर उनकी सानोपना करों (शैलर (१)—अश्र स, श्रम

न्या मुली बात कहना

दिन र हो र बात बहना केवम उनका हा रहता विनया अरबस्यक हो । प्रयोग-काम ती ठीक करके खाती थी,



त्रका स्थाना

मिकिय कामजीत में हमेशा जये नुके शब्द (देशमी०—राम० दम्।, ४४

नका वदानाः—वामा

नाथ होना । धरीन—तही दीने पृत्र पूरं, नको तुम कह नातु (सू० सा०—तुर, ४१३६): भी बाद पहत धरनता है यह बच्चा ज्वाता है (क्लंध-ऐमजट, ४२

नका नामा

देव सफा उद्योग

श्यक इटोलना,—प्राचानना

वाह मेना, बन की बात कानना । वर्धन-- मुक्का ने किय क्षम हरोजी---वर्ष कृष-समूद, वहना-विकास नहीं देवल (कर्म0--वेमबद, १६०), कृष्य इसस सम्बन्धे कियों कि एक बादनी भी विद्य की नक्ष्य बहुवाननेवाला किया (४९० के दश---वट्टम० सर्गी, ११४

बदल पहुच्छानना

देश काम स्टासना

सभ बुद्ध कर दूध काहना

बारभव कार करनी था चालों । धर्मान-नोभी कन् वर चार मुमानी । नम वृद्धि दूध चत्रन एकानी ,रामठ ,आ। गुलमी, छार

तमक खाना

पानित होना विभी का दिया जाना, एहमान-पर होना । प्रयोग वीर्तिय से भीडि, इस कोर्तिय क्या की टीटि मेनापित पान्यों है तिहारे एक जीन की 180 दि—सेनाप्रति. १९६३, हम लोगान उनका नियम जाया है इसमें एक करन हुए बडमा म लेते (पान्या प्रयोग—सामाद दिस्त १६६ मेरस्यानी इमलिये करना हूँ कि उनका नाम जाया है— रहे प्रान्य स्थान (निमान—कीजिक, १९६६), कावण सनक राज का संघव नहीं भून भी मार्गने (नुश्व—मक्त, १०६)

नप्तक-स्थाप होना

नमें करण होता चंकादार होत। प्रदेशस—में आहेब पानेनी नेमें राजादार हमानिय देवना इंडना है भारतीऽ गठितात हम्

नप्रक खिडकरा

विषय केन्द्र देता । अयोग---नुन्हेश्यी मित्रवित्यो सुनकर बार्क जिल्ला बार्लक्क कन्द्र हुआ और हो रहा है यही मेरे विश्व असान्य वा । उत्तरर वृषये इस समय और भी नमक जिल्ला दिया (१९० (२.--प्राम्बंद, २१४

नमक नेज का दिकाना न होना

बहुक गरीकी होती । इस्रोय-स्वक्षा तो तसक नेम का जी डिकाबर वही है (किहुएव-स्व० मित्र, २०.

संक्षक पाना बना होता.

वितरि न्यान वर न्यक्ति के यात या आधित होका गान। क्टा होता । प्रयोग---देनिय, अध्यका नमक-प्राणी क्या होता नो सम्बद्ध हो ही बाउंचा (भिस्तक--कीशक, २०)

समक यहांना

वाने वालक वर स्थामी के उपकार का काला मुकाना । प्रयोग---वहते हैं दमारा निवक कार्ते ही, निवक की बमाना (सासी०--वां) वसी, 252

(नवा∗ नृहा∗—समक भदा कानाः,—का द्वक भदा कानाः)

नेमक मानना

उपनार मध्यमा । अमाद — वैसे मोन हमारी मान्यो कहा नहीं, सहि नहीं सुनाई (स्थाप) सुरु संठ—सुर २५७७)

त्यक प्रिचं नगतः

बदाया-प्रशास दाना । अयोष--- नमक मिन्ने जार्थ कर



वात जटपटी ही जानी है (पुमतेष (मृष्)—हरिसीय, ह (भगर पुरा — जमक मिर्च मिलमा) नमक मिर्च नगाना देव नमक मिर्च मिलाना नमक मिर्च स्पेदना देव नमक मिर्च मिलाना

नप्रक लगना

बहुत बुश्र जगना । अपोन —मुनन कवि में राभी किए मोन अस साथ (पदo—सामसी, पार

नप्रक-हराम, -- हरासी होता

अक्तवज्ञ होतर । प्रयोग—में तन दियी नाहि दिवसको एको नोन हरायी , पुण्याल—मूर, १४मा, प्रभू में नेनक निमन हराय भाव देखाव (२)—भारतेन्द्र, ५४२ , नाम पानर निमन हराय न हों भाग बचार साम के भूखे (जुनतिव— हरियोध, १४१

नमक-दुरम्मो करना

नगकोन होता

अधानकार करना

सोह नेना । प्रयोग---मा की इच्छा को कि परनास्था ने जब इनको गुब्रथमर दिया है तो करें उसका पूरा बरन एकाकर स्टेंट को बर्दन के सिए नवस्कार कर देना चाहिए (जैतन---बाइक, 80

नयतं अधाना

देशकर शृथ्त होता । प्रयोग---परत त क्शक क्कोर वंद स्री सक्तोकत सोवन न सवात (धू० सा०--सुर ४०००)

मयन की कौर

निरुद्धे शहर । प्रयोग---सन हरि भियो तरक जिल्लानि में नवन शबद की कोड सुरु सारु---सुर ४३५२)

नवन की कोर जोहरू

क्याकाओं होता । अयोग—वरमु मधन की कोर सदा अहर वह वा हर (राक्षण प्रवाठ—राक्षण दास, १८)

नयन के अतिथि करना

देशक का गोजगावदेश । प्रयास— हा बार्ने कोट मुक्त र शामी। कथन ऑनिक कीम्हे विकि भागी (समय ,काल)—सुक्रमी, उक्षर)

अयम जुङ्ग्या

भाषां का तृष्य होता । प्रयोग--जभू विभोक्ति सृति नयन स्वाने (रामक खाल)--सुलक्षो, १४४

नथन-पट रोकना

एक्टक क्याना । जनान-व्यक्ति समृद्ध हृषि कम विकासी । तकरक रहे नकन पट शोकी (शाम० (बाल)-सुलसी, १५९)

नयन-फल्ड

दारेन-मुख । प्रयोज-एडि विकि सर्वाह नवन पान देगा। देश शता सन राज विकास रामव काल गुलकी ३४४०

नथन बाण करानी

कटाक्र करना । प्रयोग—वाने कपनी है वे शव नवी करी करने हैं नवलों के शक बान (क्षणां)—निगला, १४८)

त्रयत से प्रतारी बहुता

बांखु है के प्रवास कर न एकमा । प्रयोग—मन कम मीति योध मुचि याचन, बैननि बहुत प्रवासी (पुरु सार्छ—मूर, सम्बद्ध

(तया» पृहा • -- नयन से भारा समाना)

नया गंग फिल्हा

कोई नवी बात होती । प्रयोग— उपाध ती वया कुछ नयः यस निम च्या है जिसकी बावत कभी योगा ही संगा मुक्ति—मगठ वर्मा, स्थ्रप्त

त्या जिल्हार करमा

नवा बामायी कंद्रे में साना । ब्रवीन-कोई नदा विकार

भंता होगा. पगर मुख ने भागवर सामग्री वडा (मानम (७)--प्रेमवट ५५)

(समा । युगा - स्था पंछी कांसनः)

स्यो अपोर्टन देना

तम ज्ञान देना । प्रयोग—समार को नवी स्वीति देने की जिल्लाकारी आज हमारे तक्षण नाहित्यकारी के कब दन आ पूर्व है सामोक्य—हण प्रश्चित्र, क्ष्यः (सदान मृतान—सूची सोरामी देना)

मये चित्रे से

किर में, प्रायम्भ में । प्रयोग—विना विभी क्रियम के यहां एउ पू कि में उमें रचनाओं की किसी प्रकार प्रगतिवादी प्रायम की तैमार नहीं हूं जिनमें संमार की नमें निर्दे से उसम कर में दानने का पूढ समस्य न ही (अज्ञांकक—हरू प्रवृद्धि ४६

शरक का कुंद

यावन्य संदर्भवः । प्रयोग-नानी कृत नाम का विकास क्षेत्रे ताम (स्थीर प्रवाद-नानीर, ४०

तन्त्र के कुर्य में प्रकार, नरक में पहना

बोर प्राथमा सहती। प्रयोग—सम जयने यह कार्य प्रयो। बाहाँव परा शरक के क्या (पटण—जायसी, इसक), अवसी जाति और देश को दृत्यों के दुवंड शर में देश बेशका उन्हें यह अच्छा न मानुम हुमा कि स्थप तो मुक्त हो जाय और उनकी सानि को हो सनस्तकाल तक नरक में बड़ी तहपती हो (पदम प्राप्य—पहंसक अमी, 28)

मक्त के समान होता

महत्त कृष्याची होतर । स्वयंग---नृष्ट् निनृ राज नक्ष्य श्रृत्य भगवर, नरक सरित बृह राज नवाया (शम० (अ)---तृशको. ६४८-

मन्द्रः में दिल बंद्यता

बहुन बुरी दया में दिन शीतका । अयोक—विस्तरे ही महिने उनके भरक में बीते में और दान सदा कदा के लिए उनके नरक का प्रकार हो रहा दा मुलेश—स्वत्यार्थ रहेव

नरक में पहला रेट अस्स के कुण में पहला

तरफ होना

(१)यदा होतर। संयोक-सम्ब तो यह है कि बेश्या-जीवत क नगढ़ को उस गांड पहली तार देला (ये कोठे०-मांत साठ, 38 ()

(२) दुन्तराणी होना । प्रयोग—मर-सारी धन नरक है, नव नव वेह सकाय कई कबीर ने रांग के, ने पुलिए निह्नाम (कवीर पंथा0—कवीर ३५); यह चर सुन्ने नरक के प्रयान कवता है पर तुन्ने वेन भूग के कारण पीड़ा बहुन की बारन काना है आठ प्रथाठ—आसीर्य, १८६० अन बात के घर की कोठड़ी बचनी ने नरक बन नाती भी (मुठा० १)—यञ्चयम, ४६% वेकिए प्रयोग (१) म (+)

(1) नरक भोगतं भी सवा जिनती ।

नरद करको करवा

हरर देना । प्रयोग—न्यत दर्गरचे मात्र नरव कस्थी कर रोजे (कुन्द्र) निर्माश दास प्र

तरम-गरम होता

तम्ब सरम

साचारका । प्रयोग —सेविस पाना मातव की इतन। सकर दिवा देना वाहमा हूं कि अवस्पान सिंह नर्भ चारा मही है (गोदान प्रेमचंद, २३७

नरम-दिल

महत्त्व । प्रमाण-कर्णात्म से मिला मरम दिन परा मुन्ती०- हरियोच, प्रभ

नग्म पहनर

हरका प्रवर्ध हरता जाय या अपनीय क्य होता प्रतित-न्त्रामा हरीकारण न वृद्ध नम्य गर धर देश है प्रशिक्षक ग्रीकटास २० अवको आई गाइन काम कृत्र वर्ष वह गर्व में (सामक (१)--ग्रेमचंद्र, स्पृत्

नरम बोना

(१) कोच वा कवार्र में कमी होती। प्रयोग—वापा

सारणान करानभा हाकर ग्रहा की अपनी दान द लाहा ह बना नुमहे इसका कुछ खदास नहीं ? (बान्न० (२)---प्रेमचंद, १०६

(२) वर्गम्स होना का कुछ बहिया होता ।

नग्सा करना,---भगतना

कठीरना में अपवहार न करता, शहदमना का व्यवहार। प्रयोग - इसमें तो नश्मी नहीं बन्ती दा काशी हासा-देश सं0, १०६ . तुम्हाने माथ तो फिए भी वही अभी कर ग्हा ह (शंबन—ग्रेमचंद, ११८)

नरमी गर्मा

इत्र एक मान ६ वयोग-अरमी-नाथी, बाट-क्वर विक विना नहीं बल सकता (प्रेमा०--प्रेमधंद, १०३)

बरमी बरनवा देव संग्रमी करता

मधाय के मध्ती होता.

यह यस्य शाल, वह आदमी । प्रयोग-वन्त्रे सलाव पर बैठ कर हुबका हरक में से लेता है, तक मालूम पहला है कि गवान का नानी है। सितको—प्रशाद, १७२)

(सम्राव महाव--- नयाच होना)

नशा क्षत्रका,—क्षत्रका,—हंडा होना

- (१) मन दूर होनी। अयोग—कभी न क्लरे बलका 역독립
- (२) किसी भ्रम, त्रोश का बावेस का समाप्त होना। प्रयोग-विजय का नवा उच्छ पया (क वाल-प्रसाद, १००); पुरुक्ष-तुनहत बने रहते का कार उतरते तो वेर नही श्वाती ,कतर--देर सर, २०३): पर जब नगा उस ह्या तो मुक्त बहु धर काटने मगर (सेमा०-प्रेमधंद, १५२)

(समाव मुझाव—सद्या हुटनर)

नशर उनग्री

६० म्हा इलडमा

नशा उत्तरस्या

मनर हर करना। प्रक्षेत-सनोहर दो ऐसा खिटपिटा

101 Q. P —185

वया महत्त्वे सैनडो वृत्ते पटे हो। इस भटाई में सबके कहा उतार रिवे 'ऐमाल-वंगबद ५९

[मय] महार नशा भगहाता)

नशा फिरकिश होता

- (१) जोश, बार्वेस, जानगर के बेग का कर बाता। प्रयोग-मार्ड नार्ड ! अब के अलके भाषान के नशा किर्गकरा कर दिवा (गु० नि०--बाठ मु० गु०, १९६)
- (२) कियी प्रतिय पान के गाउना नहीं का प्रशा की वार विवद्ध भाना ।

नेशी बदना

समर होना । प्रयोग---पारले ती उन्हें प्रापने जून यहा और किर कुछ करका ऐसा क्या बढ़ा कि जिल जातों की नारे नुष्टी बचनाचारण के कामने मृताना डॉनत नहीं नमध्ये है, यह उन्हें बाबार में लई ही होकर भीवी की मुनामं समें (पट्टम पराग -पट्टम० शर्मा, १७१

(२) वृतं पदती ।

नक्ता छंदा होना

रें= नशा उम्बद्धना

तशा- पानी करना

मारक इस्सो का नेवन करना । प्रथाय---धोशन मेरे थिए करता है, जो कुछ पाता है, नमेन्यानी में उहा देता है (file ,2)—direc 200

नशर मिईंग् होता

बहरपन का बहरनार दूर होना । प्रयोग-नद अपने से वर्ड नोता की घोर नमा निही ही जाते के भग से देशने का महम मही करता (चिन्ता० १) अन्ता, ११६

नगा हिस्त होता

- (१) कियी धमाभावित घटना आदि के कारण नहीं का विज्ञकुत इतर भागा, हास गुप होना । अयोग-वर्धी न राव काहब का नह फैसला मुना तो नमा हिरम हो गया गोदान--प्रेमचंद, १७६), बहागानी प्राप्त का चहना गया। हिरम हो वया था। देवकी०--गंव शब्द ७०
- (२) धन दुर हानो ।

नस में हवा

नकें में दवा

(१) किसी पून का जिए पर ऐसा नवार होना को कानी पूर न हो। प्रयोग-व्या युक्त की न्यू मा बैंक बनाना चाहत है। काडी पहर तानाभ ही के तम म गूना यहा पूर, अधिकारियों की बीबाट वह प्रानक रहाई बंगान है।— क्रीडक्ट, 2051

(२) कराव, जान भारि का बत्यमिक नगा होना । (समा» मृहा»—नदी में स्पूर)

सम्बर्धाक कर देवा

श्यक्त नवक सिकामा । प्रयोग---मृते तो नवकीनकार हो की वक ठीक करते की शब्दा की जितली---प्रसाद १०५

अस-जन्म का पना होता. जन्म जन्म पहकी ननी
कृष अभी नाह से जानना, गैय-गेय से परिचित्त होता ।
प्रयोग—सब मेदी गुनामी करने को नैयार पहने हैं, यांगर
मह बन्धि पन जनम में भी, नेकिय में पन गंधी थी
मम गृहवाननी हैं गोदान -प्रमाट, सुद्धी में श्रीरती की
मम-नम गृहवाननी हैं गोदान -प्रमाट, सुद्धी में श्रीरती की
मम-नम गृहवानना हैं गियान -की मम-नम गा
मना है मियान-की दिन्छ, हुद

मनजन होती होता

(१) तमाव कम होना, ग्रंका दूर होनी । प्रयोग—किशंकी के ग्रांट काने पर विपादियों की अमे हीजी पड़ी, बॉटीए— मिराला, १४१

(२) बहुत बदाल दोती ।

नेम-तम प्रत्यानना देश सम्बन्ध का पंत्रा हाना

नग-नम् म

क्स सम्बंधी विकासी द्वीड जाना

िमी प्रसीदक का द्वारों का दश केवर - प्रणास--- वस्त

यहां मुक्ते विच्या में दत कारा । यस-स्था में भिनकी सीव गई (सीठ-४० स०, २३

नस नस से पाकिक होना

नमंत्र कर बेल हातर

भाग्य में भी हो। इक्ष्मि—सभागी हो, तो राजा के पर में ही गंधवी। यह वस नवानों का संख है (मानव ती)— संस्थार (श

नम्रोप के मारी तम्रोप-अन्ते

सनावा बनुष्य । प्रयोग-न्योगमें की बदना में प्रतीक प्रण में ही भागने आई थी, बगर बम्बई में उस समय ऐंग इसकी नवीब के बारे वहें में दी कोठिक-प्राण माठ, २४%, अब जी बुध नवीब-अभी का सहाश हूं ही है ,मान्न कोफार, २३०

(मधा । मुझ्क-- समाब के बार)

तमांब क्रम क्राना,--फिरमा, फुटा होना

नाम्य नाम होना । प्रयोग-- स्वर हम संगो है अमेर है साम नाम नोमा का पिन भी किए गया ? (शक्षा प्रयोध---स्थान देखे. धारत; वह बहती होगी-- मेरे पास महत नहीं परा नमीम यम नमा सबन--प्रेमचंद, १३६), केन प्रित्त, हमारा नमीन करा है भूगी---स्था नसी, बहर

(नवाः वृक्षाः--नर्माय स्वादा होता,--स्वी जानः)

नसंख्य जन्दे

ात नगान के भारे

नसाद फिन्हा

🖙 तसीव जल जाना

नमीच फुटना

र० नमाच जेल जाता

तह उंगली का दुख्या न सहा जाना

लॉबर और दर में प्रकार के सभी राजी । प्रयाद के समय कह

अन्तर्भाका दुलना भुभः से सहान जाता (सर्मठ—हर्रिकोधः. १५०

नह गिर जाना

- (१) काम करते कोरव न रहतः । प्रशेत—हार दिस्तन न मोद वंग हम तंतु नहीं किर मदा हमारा है जूमठे०— हिन्नोध, फ)
- (२) प्रशासित या कोदी हो जाना ।

मह में काल श्रीकर्मा

बहुत कट्ट दना । प्रयोग—कर नवं तो नवा करे हित हम कीम नवा में कली नहीं क्षेत्रं (बोलo—हरिसोध, २१७,

सहर बहा देशा

महतामत कर देना । प्रमोन-स्था कराम, समर्थन्दर ऐसाई के यहां तिकाम भिडाधा है । सम् वयः ती नहर बहा देश क्यान की (पैतर-सम्बद्ध, १०७)

नहत्त्वसम्बद्ध

पुरी तरह किन्त कर देना । अयोग---नित हृदय नाभूगी में अन को नहसाओं (क्यमंधूलि--यंत, १४४)

नहरने समय शाम या न जनना

तिक भी अभिन्द व होना । चयोन-- पूर यभीस आह दही, अभि न्हालहु बार असे सुरु संस्क--सूर, ३०८८)

नहार के लिए याथ मण्डका

प्-त अध्ययकार के किए अदा तकनात र त्या प्रयोग किरि चस्त्रीहरि अंत अभागी । वारित बाद अद्वाद व्यापी रामo (का)—सुससी, क्षण्ड)

ना-मुलायम बार्ट

क तथन प्रयोग स्थित्यनकार। की भी हरत ही का है हमय काई उईस्त्रादा तक दी कभी तस्यन्तयम सात कहु मही बकता (मा कीजिक, १९६)

शाक-शांक

नाम उहना,--- तताना

रण्यतः जाती । प्रयोग---नाक उट काय पा यता गावे नव-वहे नाक है वहा संते (शोक०-- हॉस्ट्रीय 62

भाक उत्तरका

रे॰ लाक उड़ता

नाक अंबी रहना या होना

इन्स्य पहली वा होती। प्रयोग—(मृगोकी) बेलि— बामनो की नाक अभी सही, जब में शले बेलिमें का कर की ? (बीनेo—संव सव, प्र

नाक कट जाना - कतर काना

क्षणक वाली आभी । अयोग - कियो पात और प्रभीरन क्षणक परि, पर्द किट मान सितारेई किली एन की भूपन प्रेमाल-भूपन, १६६), यह कि करतृत में गये करता। बाद केंन में तह करता जानी (बोलाव-हिस्सिय, ७३ , प्रथम कीरन पत्र की तब नामिका-मी कर गई जयव--गुप्त, ५७), बाह्यस ठाकुर योव ही थी कि नाक कर नामती मानव (१)--प्रेमानद, २/; और धांचक विचानी धनाने म नाम भी करती भी कासीव--ईंच कर्मा, २६८,

नाक करधाना

बहरवरी करकामी । प्रयोग—यहरे मब बातं तरक कटान की है (मानक १)—प्रेमकट, ६१) हम बाते आई पीत की स्रोड प्रयमी नाक कैंस कटा में स्टार्फ (१ —स्टापात छ), मैं उसकी सहकों से स्पृष्ट करके अपनी नाक कटबाउता। (विकाल—कीतिक, १६)

शाक-कटर्प

बेहरजारी १ प्रयोग---काबी-काबी एँसी द्रपंटमा हो ही बाजी है, कर दूसम केंग्री बग-हताई और सक-कटाई (मान० ११) ---प्रयक्त ८३

नाक करार जाती

दे। माक कट जाना

शाक काटनाः — कान काटना

क्षणस्य करमा, बेरज्यन करना, अपमान करना । अपीन----स्वाधीनमा की मारू करटनेवाली इस मानि पानि की कुरीनि ११६ नहीं यह में बाता है कि . (मष्ट निठ—बाठ महूट. १९६३) तब धवाई नई बने से ती, कारती क्ये व नकराई १८६०—हिंगीय, १४), बांबेट के असक जिन्ने बरवारी गवात नहें में, भवी के नाम कार कार किये के पनितान के देशाठ—रेगु, १४६०, बनी नक्षी दावाना नक्षे से वारी शरेती—बन्दामा नक्षा पन की नाम करवेना जैसन (२ —असीय, १४१

(६) शका एक देशा ।

नाक-कान कारना

रे**ं नाम कार**ना

सम्बद्ध की मीध्य में

सत्तरम् भीके पानो । प्रयोग---नभा नेकी के नाम नाककी गीव मामना हुआ क्या गया (भिस्तिक--केर्निक १३५-४ ५ ५ वटे को शहरों से अ ४ इसके क्या र ५ निरुत्ता और बीम के बचनार को नाक की नीच के बने जाते हैं ... (गुठ कहार----गुलेरी इन्द्र)

साक के लीचे

प्रस्तक्ष अभिन्यति में । प्रयोग-व्याप्त आत्मकृ की क्यों में भागते मान बच्चे मार प्रति, हमकी साक के बीचे 🗶 अ तम सो निमार्ग्य पालम् पानी है (गंगत-स्मा, 20)

गाफ के बल संघाना

मृत हैरान करनार-प्रमहानागर ताच नवाना । प्रयोग---मीर नेम हिने वीर मृद्धि नक्तार मुझै क्षीर नाक नवाम रक्षा १५२० कवित -धना०, ४६)

गाक के बाल होता

दश्य मनिष्ट या त्रिय होता, बहस्य पाता विशेष-स्व दश्या न नरह मंदय नयोशाय का बाम श्रम क्या कोई (बंधा) - हिन्द्रीय, प्रशि; पड़ी करण का कि नाम भी महत्त्राय की नाम का बाम दशा हुआ। या (गोशी--चंद्रारः,१५०)

माक वृंगाना, इंग्सना

^{ामा प} नाक धूमेरचा

नाक बदना या बढाना

(१) नफरत धरना वा जमनीय प्रयट गरना । प्रयोग— समान-वाल-इस नेव विदेश । उत्तर कोयल कमन प्रमेश । नारर श्रीका नाथ बहावे सो वह मुन्यारता कहाये नदंश ग्रहाल- नदंश, १०५०, बद्दी मोग प्रतिती, छंड तू ने प्रतिति इस बाक । सदा माथ द्विति हो हुई प्रति वो नाक विहासी स्टनाल- विद्यारी, ६५॥ /), पेंड्रम प्राप्त वारो प्रनामित मुनाक बहायह शेरका हुई। (धनत कवित -धनाल, १३३), किर हिमाकर, मृह क्याकर, मांक भी कहायह पानो किराकर सने कहने,,, ६३१०—इ आठ, ५५), नाथ ग्रह बाय वा उत्तर मान नव-परि नाक है वहा हुने (वोलेश —हरिश्रोध ७३

(२) रोच करना । प्रयोग—देशिए प्रयोग (१) में (4-)

नाक छिद्दना

भगमान, दुर्गन होती: । यहोय--देशकर नत्क प्राप्ति की विदेशी । बरमारली कार नहीं पानी भूमतेल-ह्विजीध, १४

नाक जाना

रेश्वन मानी । प्रयोग---वस प्रनाप बीरता बराई अपहा विकासी का विचाई रामक बाला-- तुलसी, २०३

नगढ, हुगलना

< नाक श्**माना**

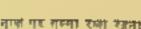
ताक तक

वकरण जरा हुआ । अमीन-समुरी की इस्तन क्षय बहुत सराव की रही की । उनके बाक तक कराव दुस हुई बी वैक्सारीक (१)--बाहुरक, १९६)

नीक दयाना

नास प्रकट का वृह्माना

কৈয়েৰনাৰ কৰি কৰকাৰে ও জাজাৰ ব্যৱসাধি কীটো ও নামান বাং বিন্দ্ৰতাৰ নামান ই নাৰ মুখত এই আন্ত ইয়াই নিন্দু উমৰ্ভি ৪৮৪



वाक पर गुम्सा रखा शहना

माधारमा यो हाना पर कोरन काम प्राप्त प्रथम । प्रथम उसकी भाग पर प्राप्ता का, बात-बात पर कवहरी की मानिया देना, शटना ओर पेटना उभको सारत वी (मानः) (१)--प्रेमशंद, ३०२१

लाक पर अवर्ता व वैठने देता

- (१) अपने ही गर्व में दुवे रहना । प्रयोग-अंग तो कह दिशा, भेयर वह नाम पर सक्तो भी नहीं बैठने देती, भागियों से बाल करती हैं (गोदान-जेमक्द, ३०), बारती का विचार वा कि क्ष्मारा उसे कट करने का की कान बना देवी पर जनसङ्ग सो राक पर जनको नही बैठने देना चाहरी है (ब्रह्म-दें० स०, ५७.
- (२) जल होना।
- (३) साम होना (

माक पर रक देशा

मागत ही तुरस्य दे दना । प्रवास—दूरणा शादको अट का जगह मूल भी गायब हो जाना, हमने जिया है हो हाद वे गपमे जाते ही जाक पर एक देने (गोदान-प्रेमचंद, ३९५), भर्र बेटा, हम बोगो च नेमा ही होच है। हमार बाद पर

साक करना

बतुत दुर्गम्ब के कारहा हैगान आ। आना । धर्मान- गहर की उन अभरी, शंब योगयों में 🗷 🗷 बहां ब्हेंन्स के आहे. माक फ़टनी भी जारन की कम कमरक मनाव 🗴 🗵 प्रात्म हे रही की कमल प्रमचंद २७६ मील प्रीर बन्य ह नाम कटी जानी थी। (सबन-प्रेमपद, ५०१

नाक क्यता

इत्यन रह आमी । अयोग-विवर के विव्यवस्था और अब में तो परिवार की शांक नहीं अब मकती की क्रिकेट (६) -- यशपाले, ४४४

नाक दमाना

इस्क्त बनाती । प्रयोग—नगर वब है निकोरते हिन चुन किस तरह शास तो बचादगं औलफ-हरिसीध, ७३

102

0.0 44

नाक सी बदाना,--सिकोइना

अर्थन या अध्यान्तवा प्रयट करनी, विभाग या विद्याता, ना-पर्मद करना । प्रशाम-हमारे पाठक 🗙 🗶 नाम भी सियाह प्रती कहने बस्त हमने कही कर पाक्ष का का कर्मा मारेचा प्रारम किया (संस्ट्र निष्—बोध मेस्ट्र, १३४); सेर नार्व वर अव भी नारू यो विवाहरो (कर्म०-प्रेमचंद्र, 04/s हम नोच नुभ्हारे सध्य बहुत तक बावे तून क्या हूर कतन म भाजाय-भी विकासताता सिमाठ कोशिक एउन तो इम क्या कर रे---जुननाता ने ताक-जो चहाई अहर---CO 190, 220)

बाब भी निकारना रे॰ ना**क** भी कहाता

गक मन्त्रना

तम करना । वयोग---नाम की शक्त मोम दिल होगें नाक मन नन कर व गाका रूप ,बोल०—हाँ। घोंघ. ७३

नाक जारना

- (१) तृष्य सम्भना । प्रयास-पुरी बढ़ा शहसी ही तथा ी । उसने वर्ती नाक भार दी तो बवा होगा ⁹ (शुठाठ (३) —8374.6. gob (÷)
- (२) जपला करती । धवान—देखिए प्रधान (१) में (२)

नाक मिट्टी में फिल-प्रिल कर गर जाना

बहुत प्रयश्न करनेर घर अनवत्त्र रहना । अधीय-धार मिया, बानर में एक देणका का यू तो नाक विद्वी में पिन किन कर नरं जालीन, न लगम में जादना, न कुछ वस्त्रे पहचा (दुधराष्ट्र—देठ सठ, २६८)

नाक में दस भाना या होना

बी उन जानां, परेमाम होना । प्रयोग--नाक बनारत अपने ही मार्कांड नाहि विनाकिहि नेक् निहोरी (कवि०--कुलबी, २०१८ वस कारी की बाधीफ ब्लवे-मूनले को लाकी मं रम या नवा अधार प्रसार- राधाव देशा, भूपप्र): कमी तीरच कही कुछ कभी कुछ, मेरातो x x नाक में दम बा मदा (गरन -प्रमन्द, १९६), यून मिन्ने के मारे माने दम बहुतर है, बाकर हैठ बादे हैं को उठने कर नाम मी

तर्∤ केते (सास्य (१)—प्रेमचंद, रूपश), चेनार के यारे दिसामसूच का नाक में क्ष्म था पदा है आस्तर—देश सर. सरेश

लाक में दम करमा

सहूत धरेकान करता। क्योग—ध्तम कमनका अन्द्रशा साक में १म कर रहे ने (धट्टम परता—पट्टम० असी, २०१ इन स्नानो ने मेरी नाक में रच कर रक्षा है (मकत —प्रेमकेट १०४), इनकेट के प्रकारक इनने करता प्रीर साकताम में कि साहाम मेरे पर की भी ने बाकोटन कर मनते है (साठ सिठ—महाठ दिखोटी १४

शाक में बकेंद्र शास्त्रा

मूरी नरह बस में करना। समोग---श्रेष की आसी पर पट्टी बाब तर कानी में तीड डोककर, नाक म तकस क्राम-कर अरक्षी की क्रियर निचर समोहे किरना है प्यूट निध---बाद मृत गुरु, २०१

साम में अंबेट न होता

साक रखना

गांक साब कर रह जाता

ण्यामन करत-मरने हैरान हो जाता; केव्हा करने कर जी जगणन रह जाना चयणचा महानाक रहायर रहा हरय तम भा यह सीवा होकर क्षेत्रा (सानव (श)--देमनद, यह,

नाक रगवृत्ता

বৰুণ দৈৰণেয়ানা নিজন কৰণ। প্ৰয়ান— সংগঠীৰ মান্ত ৰট সাধ্য বাত লগ নান স্থান কঠে স্থান হৈ নিজ নতাৰে সাম সংহৰাত সম নাম বন্ধে কংক के सामने जिसने इस तक की बनाधा (क्यांक- क्यांक) पर इसके को की वर्ज होती को वह नाक रनवता पाप करा प्राचेता (परिवाठ- व्यंक दास १०६); नाक उनके मिट्टे नहीं रनके (मुसरेठ--हरिकीय ३२% यह द्वांटी इनके बस की नहीं है, अब एक वह नाक उनके कर दसे पूर्व तरह स इनके पूरेक--माठ वर्षा ३०६

नाक रगहपाना

विश्वस्था प्रसट करवाली । स्थाम —है उन्हें पाद ही न सन्दर्भ का पाद की प्यार-पंच में शांठे के स्थान न काम क्या ने नाक ही क्यों न हम स्वत्या से पीलिए— हरिजीक्ष १३६

नाक गहना

इन्कर बनी रहती । इपोय-नी मृत जो कि बाक कुल की है यह बनी बाक बाक रक्षते से (बीठ०--हर्स्डीध, ७३

नाक निकोदना

- (१) क्यामीनता प्रयट करनी । प्रयोग—किर नारी की भाषिक क्यामना पर साक मिकाइने का क्या मनसव है दुधमान-देश सल, २४९, (२०) (२०१
- (२) कर्मक या पूजा प्रयट करती। प्रयोग—क्षिक कही जुल बाद तो वृ जू कर क्षय ताल स्थितहेगा। स्थान प्रयान २:—सहस्ति, प्रयक्षत सम्बद्धिक की प्रयास करते हैं, गुर विक पर नाक क्षितहर केत हैं स्मृत मृत—मुद्धान, १६३

हैं दे एक ने मृह बताया और पूर्वा है आया सिकोही प्रस्टोठ—भगेठ करो, १५, (+१), मीना की सहांत्रता में नाक विकास (क्टर) देव सब, १७) (+१, दक्ति प्रधान (१) में (+) मी

 स्थारण जा पर का पर स्थापना प्रयास क्षेत्र कर कार्य के स्थापना सुनि अभ नरकष्ट्र ताक निकासी स्थापन (भेक्क, -- स्थापनी, क्षेत्र, देखिल प्रयोग (१) एवं (२) में (२१) भी

ताक से आगे न देख पाना

बहुन की मीरियन समृद्धित दक्ति होती। प्रयोग कियान आजन का न वहार तहा हम सवती। हुने स्टिहीनी है दाम वह स्ट्री करेंग्रीको चुनेन्द्र हुन

नाक होना

- (१) सम्ब होना । अयोग—प्रेमांड मार्च साप्रपृताने की नाम है विद0—प्रेमी, 8%); राजाशहादुर सम्बद्ध के पर्दमी का नाम है (बुद0—180 वाठ, ११), प्रेमु को वह जहर के पहल्कानों की नाम बनाना बाहना था (१४० .१)—देमबंद १६२
- (२) इन्यत होती । अयोग—माच विश्वती में सबदी प्राती है बोनेक—गांवराव, 188
- (३) प्रांतपक्ष हाती ।

नाका क्षेत्रमा,—यंद करना

(समाव मुहाव-नाम्हा बांधना)

माको चँद करना है। बाका छेकता

नाकों भाग

हेराम हो जोना—बहुत तम हो जाना । प्रयोग—बमुबति सामाँह कहति, छ।क [हो नाकै आई ।नद० प्रदार—नद.० १७१

नाको जने अववाना,-- विनवाना

वृत तंत्र करता, देशम करता । प्रयोग—दसम्बन्धिता तिकोक कोकपति विकल किनाए ताक चता है (गोला० (४)) — मुलसी, १३), प्रक तुम देखता नियासक को वह कंतर माको कर्ने वसकाती है (१ंग० (२)—प्रेमचंद, १८६); हवारी मीना पराये प्र जाकर की वह एक्टिक करेती कि एकवार तो सास-नगर को भाका क्ष्में चक्रमा रेगी (क्ट०—दै० स०, ४०): क्ष्में याक्ष्मी कोलेंद्र हुए भी वह पहादेवी को गाको या कवना सकती भी भी कोलेंद्र—क्ष्में नेरंठ, ६१)

बाकों जमें विनवामा रे॰ नाकों अने बदवाना

नाकों दम होता

नान्त दुवता

विनिध को वक्ट होना । अथोब—बरम दुल तो जी हमारर बाब दुख वेडियर उनकी न नह उमनी दुले (चीक्री) हरिक्रीस, १३६

भाग को जगाना

अंतरमान कास्ति था स्थिति हो क्षेत्रता । प्रयोश-सीते ही अध्यायत का लगा कहा किया, तथा की स्वारण निह के सूद से समलो सालों (१०० स्व.--प्रेसकट ३५८.

नास उटनी

- (२) बहुत उलेशित होना । प्रशान—इसकी प्रवर नाकर वह कोश्रम नाम उठता है (विताध (१/—श्वत, १४३)

नाय नयाना

वैधा बाहना वेसा काम कराता । हार्याय —तीति कोक पूरा पंत्रता, ताच नवार्य एके जना (कवीर पंत्राठ--कवार, १४४), विशिवर की चपने वस कोन्ह, नाना नाच नवार्य री सुरु भार- खुर, १८५६); अंग विश्वय, अन्य-भीर दुव भीर नवाच सन्यक्त नावति (धनव कविस-- धनाठ, २००)

हन्मान में अ अ हैंड के दशन करने गांध राजन को जून भाग समाचा था। पुरिती प्रकार (१)— गुलेरी २६८, अप यह है कि बहुनों को कैने भी बेतरह तथाह हर दिया, ओ भाग बहुत अन्हें तथाया (यह प्रति—प्रदेशत समी, ३९८

(२) दिक करना । प्रयोग—जह वर्ष किरते निसापर पाषति परि भक्त बहु नाम ननावित (राम० (सं ~ तुससी, पदश्र), विशारे बहु विशेष नाम नवानी (मा० री० ३)—पारतेन्द्र, २७६०, तु महर बड़ी भारतक बनी नुभकों से नाम नवा स्थी नुरठ—मस्त, ५२/, सूट्टी पर भंगनी की हम माथ भया देव (मेंसां०---रेन्), १८०); माथ मी भी यह मधाना है भुम्हें दर्गालयों पर तुम नपाने ही किये अभिक---हरियोश, १९२)

नाथ नायती

किसी की इध्यानकार काम करना । यदोश---वाच हमन स कीन वा नाचा कव नमामा न का जिना मृह पर (मृगरी०-- हरिफीध 40)

तास्त्री

मध्यमा कृदमा

इत्तर्भ तृत्व का व्यवस्य कामा । प्रयोग---पृत्तिकाओं जुन शाम पीममें, जुन मार्च कृतने गायद कृतः वणका ही जा काक (शाम---प्रेमनद, क्षण

नाई दंदाना

मसरे नामा । अपार---असर में मृत्ये इतका नीच इ.६६-हिंस इतका विकासम्बद्धी हो इस सम्ब पुरस्के नाम म दक्षानी सामा छ. --वैधनंद ३५

नार्ना निरी होता

भागी की गति एक शांकर विशिष्य होत्री, इरकान दील होता : प्रयोग---दश समय तो शांकी बहुत नियी हुई जानक होती है जिल-- क्रीफ़क ८४

काडी पालासमा

नाडां फड़कला

आक्षेत्रसम्बद्धाः । प्रतासः चलक् विकास (विकास) वृत्रसम्बद्धाः

याँन निवत किर्णानक की नावी फरकति है अभूपण प्रकार— भूपन, २१०)

नामा जोडना

सरवन्त्र बोरना या स्थापन काना । प्रयोग नव नहां येन क्षेत्र है जाना विकॉमये बावते फिरे शांते बील०— हरश्योत अध

बाता द्रश्ता

सम्बन्ध न रक्षमा । प्रयोग-न्तव ने नृष्ट सी बाता दृद्धी. अन काली मून सी सुरु साठ-न्सूर, १५४०

बाबा बोइका

सम्बद्धा स राध्या । अशोध---(१०-(६व तीरक व्यये ताती सुरु साध---वृत, ४४४२), सुना-नुनाकर अभी कटी वह तोड रहा है जाना (मार्गठ---हारसोध, १४०)

नादिश्याची द्वयम

नानी का घर होना

काराम को जन्म हरती । जनाव---राम धवान कीतिल से कम अभी को का का कम जाता पूर्व निवन काव मुख्युव,

नाना कनाम गोना

र र पास प्राप्त प्रमाण क्षेत्र कर कर प्रमाण स्थाप सन्द्रासी के नाम की जी मान⊙ स्थाप प्रमाण है देवला

नानी पर काना

() होश्व हवास वृत्र होता या तिम्बन वस्त होती। वदान--का मी जिल नगत वह यह नगावाम मुनेता हो जानी वर जानती (मी--वीडिक 28%) पहल्ल का मेरी किसायट कीसी की जने बाती पूर्व निध--काव यूव पूर, किसी जान को देह मेर, काल करने की नानी जाती है जानक (ह) नोमका करह

(० व्याप्तत संस्कृत रोगा । प्रमोण—भाग सूक्त बाज रह इ.स.को को साम सर संस्कृत विकार पेक्नु, देशका पुर इ.स.को वर्ष साम सर सर्वत विकार वेशनद १८४

नाप मीत करता

टीन जीन प्रांच का परमा काशी। प्रयोग—अवाज्यी है अपने शीवन की नहानी तो संख्या है, उसकी एक तक बात की नाम तीन कर, अवनी विवेचना कर तब किंद्रतेन के शीवन में इसके महत्त्व पर विचार करता है, त्यांश्र्या उसके पति परा जाकर पास बहुता शाना है जिसका है। — उसके महत्त्व परा जाकर पास बहुता शाना है जिसका है। —

मार्था वरा

कम चल्लाना, अन्यान, अन्तूषको । प्रश्नर—नाडी सभी वृद्दं बोदी देवी वास बोचनी अन्त ? (पटतीरू—नेमृ. प्रदेव

माप्त उद्यान्त्रवा

- (१) साम का प्रकार करना । प्रयोत-त्वन ध्रवनर वर सह दूसरी के करा क्यून करते के निय नुभग्नय नाव प्रशासना किरेगा (गंग० (२ --प्रेमधंट, १४३-४५
- (२) बदमानी कम्बा-नार्थ तरह विदा कानी ।

साम उत्तरंगर करना

मृष्ट क्यांति होती । प्रयोग—काप दाया वा नाम वो मृष प्रभागर कर मृकी, अब क्या करने वर क्यों है । स्मादान —प्रेमवंद, २२५

लाम कटना

किसी की मूची का विभन्तर से नाम पूजक किया जाना । प्रयोग----वा तो कीस वीजिए वा नाम कटाइए कर्म०---पेमथट, १

माञ्च कमरना

103

O.P -- 185

(नगा: मृश:-- साम करमा)

नाम का जला पहतना)

किनों दूसरे के बाद का कावटा उद्यामा, नाम में । प्रवीत — बीट के भी आकर्तकात के बाटा बोच फूंब काटी पर शार्थक के बाद का बूचा पहुच कर बाद गया था। नाम केंगा बाटने के बिता बीटेंग्—राज राज, ध्याः)

नाम का एंका पिट क्राका

कृष यस कंपना । प्रमाण-सुम्हारी दावश्मी हंती वसकेती कि नुष्हारे भाष का देवा विद सायमा (तिराठी--प्रमाद १४९

नाम की पूम परना,---मचना या शोना

न्दर्गन होती । प्रयोग - जिम दिनी ग्यामीश्यासम्ब ही के नाम की वही चूक-बाम बड़ी की, क्षेत्र दिनों मुंगापामांक के मनदी इन्ह्रमाड़ी के नाम की भी बड़ी थुल मंत्री की एठ निठ—बाठ मूठ दोठ हर

नात की पूप स्थान या दोना दे॰ ताम की धूम पहना

नाम की प्याम

वकाति की प्रण्या । प्रशेत—साथ की श्री व्यास विद्या है दिन प्रश्ति कृत पाद त काला के लिए जुनती । हरिश्रीय ६२

नाम की सामा कपना या जर्पा माना

रमराम काता का किया वाता । प्रयोग---राह की नीटी हो, और सबंदे बर-कर तृत्वारं नाम की भागा वसी वा रही है निहोंक- विश्वपत, दवन।

हार के

िश्चम कार्यातकार्या न हो विश्ववही । प्राप्ता नगा न जन कार्युजी के कार्यगंत्र क्र किस स्वतह से जाप कृत वात मन्त्र (कुमरीक- हरिकीश, १२५)

नाम के भूने

कार्यक प्रदेश कार प्रश्न के बहु दूबन्द के प्रदोश साम के है। इसे बहुत प्रश्ने काम की बात काल का जासके चुमतेऽ इसे क्रिकेट पेटन

माम के पांछे -- लिये

- (१) चोश मा । हयोय—नाम के हो कुछ गुनाहों के लिए है गलर चोटा नहीं जाता कहरें (बोस०—हर्यस्थीस, ३०,
- (२) क्याति के लिए । प्रयोग---के कर हिल न तो कहित म करें हो न वरनाम जान के कीई (जुमते०--हॉरकॉर्थ, १४२
- (२) कहने धुनने के निए १

(समार मृतक-नामको)

भाग के लिये है॰ साम के पीछे

शक्त को एकता

पुरुष १९७० घर धितरास्त । प्रदश्य जब ८० सज्ज निमेता कुनिया मेरे बाध को मुकेनी (मार्गतीय---नश्यात), १७६

(मना० मृतः।---नास पर भूकतः)

नाम की न बहुना

मध्यक् भी न होता। वर्षाय—मध्य के शाम के लिख देवी जो रेखे नामको न वेबीयत (कुमतित — हरिप्रीध, १५८६

माम को बहा लगना था लगाना

बरतामी होती या करती (अयोग—समके तास को अट्टा वही नवता वर्णाहरू (मूलेक अमक समी, १४६), से हरासाब क नाम को बड़ा न कमाजमा (सानक कु)—सेमकट, २००३)

माम को रोगा

- (१) दिशी रिकट मध्याली के कुकर्म पर दूशी होता । प्रशीत-व्यक्त हो नहीं होता कि पूर्व की वृत्तहरूँ उत्तर हे भीर क्ली उसके बाय की रोती रहे (कर्म० -- प्रश्वेद, २००,
- (२) फिसी के जिल शेवर ।
- 🤼 मार्थन व विच नामाधिन होना

नाम गंध सजानना

निक्त भ जानक की न होता करना वास्ता आने माई ये तो ध्रम म धना ना ताल क्षण भा तता जानता करना मद 90 हि० ३००

(समाव मुशक ~नाम न ज्ञानना)

नाम चमकना या चमकाना

मूब स्थानि होती था करती । अधेग--- उध अमाने में कारपुर की वार्ववावियों में इसका साम नेत्री से कारक मना वा से कोरोल--- सन क्षण, १९३१, में तो पहले ही बातता वा कि दू अपने बाप का माम वसकावना (मा-- कोरोक 322

नाम चलना

- (१) वंश वसनाः । प्रयोग---शव यह है कि वाचा भा भाग तो जलता पहेशा--- रियासस वती पहेगी (शिक्षा०---कोक्रिक ६५० (---)
- (२) बादमार वनी नहनी । प्रधीय-न्यो कही संगान दूबनरिय निकल वर्ड तो नाम क्लन के बच्चे और प्रस्त द्व माना है त्या-कीशिक, १४७, बेलिसे प्रधीय (१) म (२०) थी

नाम हेकना

किसी के काम किया प्रकास को बेबाक करका । प्रकास— मुख्यके नाम नहीं में आहे पांच यह मिला हुआ है × × दे दो तो मुद्दारा नाम श्रक हु (मान्ट हो)—प्रेमकट, १५१,

नेपस जपना

- (२) बार बार नाम नेना, अरोव रहका ।

नाम दांकना

बही बारि म किसी के बाथ रकस दासनी या अक्षा करती. प्रयास—कृतिया ने वरते काते बाता—तो साओ दे दी बेटा, मरा नाम राज रजा परानित (करीक—दीमबद, कृद)

नाम द्याना,-धारना, बोरना

सान प्रांग्या है। नार नहता। ये न प्रतिहा के प्रत्य है। वह ने प्रतिहा है। प्रश्ना है। प्रश्ना के प्रतिहा है। प्रश्ना प्रतिह ने प्रतिह स्व प्रति

नो राजपूत को नाम धुनायो (सहाठ ग्रंसाः— सहाठ हास ७२५/; नाथ दांदों का नाम तो नहीं द्वापा नाता (रीठ (१) —प्रेम्बंद, ५६/; जारती दिसांचन्त्र का नाम द्वादेती वह्म०—देव २०, ११३

नाम द्यना

- (१) बेटश्यत होना ६ प्रधाय— जो बड़ो सन्तम दुरवर्गात्र निकल गर्म तो नाम जनमें के बदले और क्षेत्रक कृष बाताः है सा- कोशिक, १४०
- (२) अस्तित्व समाध्य हो जाना ; नामी नियान न या आभा । प्रयोग-व्यक्षी यश्विसाचा ची कि अअमरने के पीछे अपनी कुछ विधानी रहती नहीं तो कीन जानेना कि मंपा कीन चा अ अ वर्णन निकल पड़े तो नाम इंड जानगर क्षेत्रक कु)-प्रेसबंद, १३३-२४।

साम तक म रहते देता.

िष्टभूत्य एक परमा प्रकात— ताची योग वाबद्धत प्रथम संयोग क्षेत्र प्रथम की करम बहाजो, ऐसा कि कही विदि का चिल्ल सीट क्षेत्रवासियों का माने के रहे (प्रेम सी०—80 साठ, 28)

शाक्ष तक व लेगा

- (१) कोई सरोकार न रथना। प्रयोज—देह रहेन की मुख्यिक भूषि हन हमानस्य न याज धनेक केंद्र स सन्तात, २०७
- (२) किन्तुनः त भातना । प्रयोग--वह तो वेदरी का भाग तक नहीं होती (गवन-प्रेमवेद, ४९)

नच्य धरना

(१) बरनाम करना । अयोग-कवीर मृर गरना विस्ता रिक नया आहे जूना । बाति यांति कुम वर्ग विद्या नाम अरोमे कील (कवीर प्रसाठ-कवीर २): यम बांच रे नाम प्रमोने कील (कवीर प्रसाठ-कवीर २): यम बांच रे नाम रे कील परी हम सांवरे रंग रंगी को रंगी (तिकृष्ठ- ते पून ३४ माहि अपन करम या काम यना कुम न कृत नाम परी सी भरी (माठ पंठ (२)--आरतेन्द्र, १६४), कुम प्रीरिक शव कहत गांच वे बोर नाम का वरिहे (श्वाठ प्रसाठ-राधाठ दास, ६४), जीमनास परमे कि नाम के दर गये (स्वाठ (१)--यगायाल ६)

(२) नामकाक काना । प्रशेष-मून विहन कर पेक्स काकर धनिये जाद (कतीर संसाध-कदीर, २३९), नाम ज्ञानि है जाया बाद । शीर्व मिक्सिन नाम घराड (नंदे० प्रसाध- नदे०, २१२/, नाम परे क्या में धन सानद नाम महानों भी नाम वर्ष (सन् कविस-सन्त), १०२)

नाम धरातं होका

बदमायों होनी । प्रयोग—विकिशे बड़ी दूर रहते 'हरिक्द' दर्द इक नाम बगाई हवें (मा० पंo (२)—भारतेन्द्र, १५८), बाज इस नदंबत हो शामधार्य ने हो (राधान प्रशाल— राधान दोस इन्द्र

नाम धराना

दे॰ नाम ब्याना

नाम व देना

- (१) क्यों भाद भी न करना चर्चा न नग्नी । वर्षाम— बोबन कर दुशह बर्बो है, नानी केलि न नाम (स्० साठ —सुर २०५९); क्या कीच ? धर्म राम शम ! बाबा, भीक बावने का नाम सन नेका शिका≎—कोशिक १९,
- (२) दूर घटना, धरना ।

नाम न होना

- (१) तनिक भी न होना । अयोग-भार समा वीर पीर में भीतृत नाम तम में न यह स्था तृत का पुनरी० -स्र्यतीध, १००
- (२) विक्ती न हरेनी पत्र न होना ।

मध्य पहला

- (१) नामकान्य होना । प्रमध्य---वन-पण आयो-सधा संतरकासी बढार, जगत में शथ कानराव दायो परि रे (एक) कविल-- एनांग, दुर)
- (२) बदाया जिल्हा बादा मी होता ।

नाम पर जान देता

- (१) बहुत बढा वा बेम करना। बमाग—साथ तीन-नीयादं दुनिया निम्न सन्नात्मा के नाम पर बात देती है अ अ बसन बहि तेरा मन विमुख हो रहा है तो यह वेरा पुर्शाय बीर केरी दुर्शींड है (१४० (१)—सेमबंद ४४)
- (२) किमी के लिए मरनह।



622

(२) किसो के प्रेय में भर नाले की की परवाह न करना। (समार महार-नाम पर मिदना)

साम पर (में) प्रचा कराता या क्यानाः—वहा स्थाना वा समाना

शा पर लाइन नगरा या नगाना, बदनायी कानी वा इति । इदांत--में सीन यसन के मारे बीतों का नुक्तान करके उन्हें प्रकी बराबर का बनावा बाइने हैं वह बन्ध्य के ताम की प्रका नगाने हैं प्रीवपाठ--श्रीव दास, १६२), वर्षामा को बाह्य कर रेते तो उनके बाब पर कहा नग शाना हुंच मुठ--सुदशन, १४९ । किसी के पर बाकर काल बाह्य काने में बड़ा के नाम में बहु। नगना चैठठ--हरियोध ३७

नास पर घण्या होता

क्षणिक होता । अधीय-वी आवश्य दिवि वृत्तिके वा विधास वर्षे ही है। अवद्या वह जिसके बाम वर कोई भाषा न हो निरीक-अक्षण से ४३

मामे पर बर्डा संगता या लगाना

रैन नाम पर पञ्चा लगना पा अगरवा

गाम क किकना

विजी के बता में वृत्ती अरह होतर । प्रयोग-जाब प्रहे समुरावि नावि के नाम विकासो (बुरुस्क-विस्तान सामा क्रे)

माम पर संस्था

- (१) नाम होने के भिए ज्याकुछ होना । प्रयोग-व्हां भाग भूष से ही नाम पर मण्डे ने, हनोभिन नृष्टे भी चारते में मूँदेश---च० ना०, १९६०
- (२) किसी व्यक्ति में बहुत प्रेम होता ।

माम पाना, पेदा करना - केंग्सना

रूर्वनशा में दान पाना काइना है (यँतरे---अध्य, श्रद्ध), नाम पाकर नमक इराम न हो नाथ बचे न नाम के मूल 'मूनतित ---स्विश्वीद, १८१%, इस पानी में पुरनक प्रकासन कर स्वक्ताद करके भूगी अवस्थ विशोर ने बढा नाम पाम। स्वाट सीठ--- महाठ द्वितरेदी २६३

(ननाः नहाः---नाव वक्षमाः---दोशनः होना)

नाम वैदा करना

देन नाम परनर

ताम फेलका

देश जाम पाना

नाम बदाना

कोर्नि बहाना । इकास—किना ने अ आधीर्मार दियाः— मु इकारे नाम को इइकिया ,राधान्यंद्याः—राधाः दास. अपन

शास बेचका

नाम बारना

ं नाम दुवाना

नाम भी नहीं।

विवर्त नहीं । प्रयोग-कर दिया सहर बहुर शिक्ष पर में वहान दुस का नाम बही (title time-title द्वास, दर

नाम मिरना या मिटा देना

समार नार होता का इस इसा प्रश्नोग इन्होंने पेलि इस किंग एका स्थित अर्थन क्षत्र नाड मिटानीत पुस्ति सूर्व १५५५ सम्बद्धन इन्योगन का नाम मिटा १ इस्टाठ स्टाठको ५७



(२) स्मध्यक या कोलि का ओन हो यहता। (समाक मुद्दाक—काम वट जाना या उद्धा जाना)

ताम भाग लेखा

- (१) सम्मान समाय स्थान । धर्यान—बाह ने स्होदा ! नाम राज सिया जान का त्येताल—रण्, १००.
- (२) नाथ निविद्यतं करनाः, नाथ-करणा करनाः।

नाम गप्तना

हर समय स्मारत करते पहला । प्रधान—पहलि रहना नाम र्थाः-परि, कठ अपि जुन नान (सुल्याल—सुर ४१९६)

नेफ रह जाना

मान मर्यादर रहे कोनो, प्रण बना रहनर 1 प्रथम— सनमोदन नार्व गई सु करी, एन की पटिहे बढ़ श्री मरिक्ष (प्रमान कांबस—समान, १०६)

माम रोजन करना या होना

भव रम निरोधी । प्रयोग । स्थादर र राज्य स्था और भूगा की भियाही से सुद्धिया में सपना नाम परेमन करना है (मानठ (१)---प्रेमचंद्र १८४

नाम लेकर

- (१) स्थरण कर के । प्रधाय-पहिलाई वेशिक वाज सह कथा कही भवताह (पद०--आयसी, १९)
- (२) नाम के प्रभाव ते।

नाम लेशा

मुक्तिरम करना । प्रयोग—हॉर भी खपा कर लिय कावे, साक्षा हरि हरि नरव नियो (क्योर प्रशः —क्योर, ३०९)

नाम-लेबा

- (१) प्रतीयर करने बान्ति । प्रयोग—दुनिया न हमारे नाम-लेवा के, देस देश में हमारी बाक की (मुन्नतेय,सूर)— हरिक्रोध, १)
- (२) बधाय ।

नाम लेवा यानी देवा न वहना

(गुगा: भृहा:---भारा लेवा न रहना)

104

D.P -- 185

नाम सम्बद्धनः

करने नाम या धर्मित को दनात शक्ता। धरीय— नाद धरे जग ने पनपानट, नाम सम्हाधी सी नार्न सही वर्षी पन्छ कर्मन्त-सनाठ, १८२

नाम स्थला

वदनाय हाना । प्रकार—नाव धरे तम भ पनभानंद जाव सम्हरी मी भाव मही वधी छन० कांवत सनाव, ५०६,

नाम इंग्लंड

वरनाथी वरवानी । प्रयोग-साम अपना अस हुनाते १००८ हे हम्मेन्स्यान वहा प्रयानक हुई जन्मी वस प्रोध. १६३

नाओं निशान न होता

वृक्ष भी म इरेनर । प्रयोग-स्थाने का नाम-नियान सक न क्या वर स्थाय--व ० वसी, १७

नामो निशा मिटा देगा

सम्बा नक्ट कर देशा । प्रयोग—असह में उनका नाम विशास तक विटा विचा (मानव (१)—प्रेमचंद, ६१)

नारद होना

नारदी भिया

हभार की तकर कराने वाली बाटत । प्रयोग—का में किया भारती, दिवसक देश संसद, चेल बीर जुनि स्थान की, कहत बनो की जरून (देश संश-पुन्द, १०३.

बाल एक ही जगह वर्षा होना

व न प्रान्तर स्टान्त) प्रयाम तील प्राप्त और न प्राप्त अगत की नाम एक ही बगह स्वार्ड यह होगी (बहर्म०---देठ संघ, १९)

नारिया डॉकना

बुक्दमा राजर करना । प्रयोग—एक आदमी में टाइम्स के अपर मान हानि की मानिया ठॉक दी (साठ सीठ— महाठ टियुकेटी, १३२)

(समार मुगार-- सास्त्रित दान देना)

...

नाच सलगा

म्बूनकी का क्षत्रं क्षत्रं करना, बाद्य आहे बहना। प्रयोग—नुक विकित्र सादमी हो न कुद आयोग न पृत्रं प्राप्तने बोगे को धार्मिक व्या नाव क्षत्रं नामनी प्र राजन—प्रस्तवर १९

शाय इवना

ाह पूज अदो । जो पुरा हाना मा हो मूना प्रमाल-प्रमावत अपर

नाम पार हताना

- (१) तकता दया । प्रमाय-पर भी पण नव्ये दर ब्राम्प रो पहुँ मुख्यारी माथ को गाए समाप्या (बीनेक-राष्ट्र १६, छो करें पार बीप को जान है जनर के याने नहीं पढ़ पान व्यूमतिक-हुर्ग की छोड़ दूर
- (२) मुक्त देवा ।
- [4] किसी कार्य की यूपर करता ।

(तपा» पुराः--जाच चितरारे समाजा ।

नाम अंधर से निकासना था। निकासना

समाइ की निर्धात मा स्थान । प्रधान— प्रमानकाम ही की नहांचला से हमारी लाग इस क्रीवर से निरुण नवानी है नीमांठ—कोशिक हुए

नाव संस्थार में पहला

विपत्ति ही स्विति होती । प्रयास—बना केरने वो के पीत, बाति की तार पति बाधवार संस्कः हरियरे॥. ११वा

(भव । । । भाग पान अपर में पुरुषा

निक्य भागा या होता

धारित देशनर या होना प्रति । स्थाप प्र या ना गरंभ तंत्रन के लिए । संख्या हिन्द हाभावे प्रश्नास्थ्य जीता । सञ्ज्ञास्थ्य

निकल जाना

ीचा प्राचिता असे या नाम्य है है। तीह

कर पत्नी तहना। प्रयोश—हम में में किमी पर विधा इह मान ± । किसी की निषमा जह निकस मान ५ ≈ तो उसके कोर कभी भरदें एक पर हमेग गोधान बेसबद १३

(२) न रह शाना दल हो गरना ।

(१४) वृद्धकः निकल ध्रामना)

निकास सामा या निकासमा

- (१) किसी क्यों को अगा सामा (प्रवेशा—किसी की बह बेटी को नियान के सामा कीई मुंगी-डर्डी है। स्मार (३ – ग्रेमसंद १२०
- १२) विक्री को घर हा निकास देश । क्रवीन- कुलवरि रिकारोड नारि सनी सम्बद्ध — गुलकी, ११३०

निगाह उठामा

(१) बायमा करती, शहे को इच्छा करती। प्रयोग— पर विरह्मती x > क्यमान्येता, केथा-कोडी, अला-कपशा-कोवन का बाह अकार करता हो। विक्ति बंदी के विदे बंदी कोच विवाद उद्याना और वृत्तक्त समग्री शाला है (अल०--नागठ श्रुप

(२) साहम गरमा)

निगाह बार होता

नायना हरेना, अजब भियनो । प्रशेश—स्त्रीत्व से उनको निकाद कार होना है (वैतरे—स्वयक, पड़ा, वर्गम बाद कोर उनकी निवाह कार हुई मा-कोशिक, १०६.

निराह सुरामा

नामना करने हे कन्याना ६ प्रमाय-काँचू निवासे चुना रहा था (सुन्नक-पुरुक्षमा उत्तर

नियाह देदा हाना

प्रयोग के वार्ता का किया कार्यात् क्या अस्त्रीत् क्या अस्त्री हैं। इस्तिस संबंध के विस्तार हामधी क्या हती हैं। इस कि को कि

निगाह कालता

(१) देवता । प्रकार-नारो तरक विमाद हानले हुए काम ही भाग वरवहाते हैं औरठ-देशक मध्युर ६८

(२) पृथी तजर स देवता । प्रयोगः—समय बहु बहुः पर लादी है हो अवस्य ही विश्वी पर निवाह इस्त गही हाती स्थितेला प्रेम्बद, ४३

निगाःह देखना

कृषा चादन पहला । प्रयोग—देशने ही शरा निवाह पर यह बद्धा आवशी निवाह वही (गोलo—शृश्योध, दश

निवाह दीइना या दीहाना

(१) कारी और देखा जाता का देखना । इयाय--- वर्णाम न बाहर बाहर इपर-इपर निगाई दौराई, असरकान कर कही दशा न था (क्-म०--- प्रेमक्द, ३४, पान-प्रभाक् का एक लाज यह और होता है कि जनके निए भी कुछ कान वक पाहक अस वाशा है और उने दूकान के क्की हुई कानुका या निगाई रोडाने का अवसर निम बाता है ,मेरे०-- पूर्णानंक, धर्म

(२) बूर तक वेकता या सोच-धनार दोना वा करना । प्रयोग—स्वोतार के मान घर किननी स्टब्स नगरी है, मान कितना मीजूद है, किस वसद बचने वे कावदा दोना, इस बाला पर कार्र निगाह क्षेत्राता है ? (परंजा०—सीठ प्रास, १३६ ; क्या | नगाहै भी नहीं है जीदनी, बीजना है विस स क्षेत्राचे अंगर (चुमलेठ—हर्सकींड, देरे

निगाई पहना

[१] क्या होती | प्रयोग---देवते ही क्या निवाह गहे पर कहा अल्पकी निवाह पडी कोलण--हरिसीम, ६५)

(२) मध्य जानी।

निगान पर भागः

जानकारी में भागा, मामने स्पष्टियन होता, भिर व पाना । पत्तीत जो साथा की निवारह पर आस्ते (बोटीव) जिसास. १८३

निगाह पर (में) बढ़ना

(१) भ्रतिय क्षिण है प्रधान नह यह ना नह दिसी चित्र पर हम हिसी की निगाह कर न को (भीनेय- हर्न-जरेश, २१), पुनिसवामी की सिवाह पर यह बाडता, रुपियाकी बने उन बातने, की इस बंदी की बाद ही बड़ी यह प्रेमाल प्रस्ताद, ३१५

(v) शिथ व्यवस्था भ्रमाय-स्थाय समे क्या विशाह हा मेरी पक्षे नहीं तम निमाह पर यहते (बोसo-हरिम्रीध ६७ । पटी कार के सामने कार्ड कुमरी निमाह में नहीं पहली (मा-कीटिक कार्य

निगम्ह पित्रका

क्या में परिवर्तन होता। प्रमोग---मान एक हाते स देक पति हैं गुण्डाची निमाहित्वी हुई है ।शानक के --प्रेममाद, १७०१

निमाह फैलका

मानकाकी होती। प्रयोग—नई विक्रियनियों मिनी, नये तीवन विके तियाह फेनती वर्ष और जिल्ली की क्याहितों मुद्द कोलका बायने आई (स्थान-क्षेत्रेस्ट, १८७, काम केंच्यून करा में है इस बहुर तक निमाह केंग्रामें भीता हरियोध म

विवाह बनाना

(१) चोरी-चोरी । प्रयोग—मै मानिक की नियाद समा कर एक कोती केला भी हराम समामना है 'स्तर १) ग्रेमचंद १०२

(२) नामना होने में बनाना । प्रयोग—हम बनाये क्य नक्षे आप के आप जन अपनी निगाने के बना 'कुमते0--हरिक्रीस, २)

निवाह बदमता

(१) नाराज होता । अधीय—अव्यक्ष हेरे कहती हैं, कि इस तर्ग किट दश्य नाय ना याप का कहा पना न द्रा सक्त पनकद अपध

्राच्या हरवला ।

निगाद में गिर जाना --से बतर जाना

पूर्व प्रतिष्ठित प्रयोश में कर्ना होंगी। प्रयोग-नाव और पृत्रिक नियाह में बीजों लिट वर्षे (भोडी०-निराली, प्रश्नी, किर संस्था ऐसा कटने से ही में युद्ध महाप्रय की विकासों ने स्तार सहके (गुण क्षण- गुलेरी, १४ (सबार मृहण्य-नियाह में सीचे होना)



लिगाह में अचना

श्राच्या नगरा। प्रयोग---वाच नमें तक रिकार क देशी नमें नहीं हम नियास पर पहना (बोल्स्य-स्थिती) इंटर

नियाह में पहला

रिधारी प्रकार में ध्यान में धाना । ध्यान—नाम अपने महने के श्रीतरिकत उन्हें और पिधी जान से मनवन न पा । स विभी की निशाह में प्रका परानी भी सामान—र्जिन्द्र, प्रश

निगाद मोटी कर लेगा

हिन्दी को तान्त्र से जन हर आना । जनान--- नेरी वरण से जान और निवाह जीटी करे तो आल-करेन्यान से उस इस उच्चामन में शिया सकता हूं प्रेमाण- ग्रम्बंट, उसर

विद्याद्य रचका

- (१) देश रेख क्याना । प्रचान-कार्यो हे धरणानार ही तुर प्रवदी साम जिलाह प्राची वी काळ दे केल्क्ट, ६६६, यान कार्या प्रवद कार्य नहीं वाह वहाँ निमाह तरे इक्ति अमरिक-हरिक्टिंग, दे ('
- (२) क्या रकता । प्रयोग—इवं बंगमें व पान्य तो वेस बाह्य पट्टमी भी, वह मुख्य पर वसी निकाह स्थानों की मानक हो -केरका स्थान, वेलिए क्योप (१) वं(⊕)की
- (१) मृत्याकन की रहण होती ।

नियम्ब बहुना

क्षीत करना । केथीयं---संघन धेन की पृथ्यका के विकासन संघर्ष क्षा मारत र पा। जन्म स्वरूप रहत है से भी भक्ष दुष्ट गा

नियाह अपना

नमा पार्ग नीर प्रकर्णका शामी । अद्देश क्रांग्य काण रह नामना २१ व पर पना विस्तार नाम १ । क्रांग्य होस्पीत ६६

विवास के

सामा किर्मात स्थापन अक्षेत्रक कृषे संबद्ध महस्य किर्मात संबद्ध चारत कृष्टन जिल्ला उ

तिगाद से वसर काना है। नियाद में गिर जाना

निमाद दोना

- (१) इया राजी । प्रधान—क्यो समर फैनती नियाद क्यां कारको को जिलाह हो गाती औड़क हॉस्बोप, इस राज्या के के के प्रशास हमसोनों की राज्या के के के कर राज र गर रे से नम राज्या के के प्रधान इस्त
- (२) केने की एक्का पूर्वते । यात्रीम--क्या एकाच पर सारको भी विकाद है ? साराक स्था, ६०
- (३) पान उस्ते ।
- (त) पोरकी होती ।

निवासी का अवदा न होता

क्ष्यक्त होका । प्रधाय-सेंग सुन्छ है, तेमूर विभादी का सम्बद्ध स्थानी नहीं है (मान्य १ - प्रस्थित, १९०)

निरमहाँ के नाने जाना

अवना । प्रधार---कारके दशनों के बाद मेरी निवाहों के लोग वर्ष दुवचा कानाम भागा नहीं (कारक--संद्र १५३)

निनयः चित्रका

भीत, स्थान क्यान आर्थ निष्य कता प्रयोग किया किया करि कृष पर अर्थ अमेठ नेस्स - मुलारी, २४७०

निका देवी की शरक लेगा

को भागा । प्रकाश-जी गाँउन ने परिवारिका को प्रकार के अभग-नृत को प्रकार कर का की गामा देवर निवा देवी को समग्र की जीवक-समाठ कर्या, १५

विश्वि होसा

विद्यास्त्रा

स्वराज्य क्षेत्रस्य प्राप्त प्रकार प्राप्त स्वरूप प्राप्त स्था स्वरूपाः चर्णा को को क्षेत्रस्य स्वरूपाः स्वरूपाः प्रतिकृति स्था स्वरूपाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्वरूपाः स्वरूपाः बैठो, जो आगे आमंगी, दभी आएगी । शब मां गाउव ही म तिबहता है (गांव १)—प्रेमक्ट, १०२,

- (२) बड़ी भागा।
- (६) गरेन नगरा ।

निवाह करता

(१) महावक होता महारा देना । चयान—हम दिशहिनी मानि, हरि विन् गीन करें निवाद पुर मार्थ—मूर ४१६४

(२) महना ।

नियाद देना या होना

िसी के नाम मृजय हो आकी । अयात---नेर्डेडन दो-जार महोतों में ही मानी को भागूम हो नया कि हम का के महत्त दिनों तक अनका निकाद ने होगा (मानक (१)--प्रमाद, २०३

निवृक्षा नीम कटा देना था कारना

हुत भी न देना या न पाना । समीन—उनने तो स्तप् समाप्त नुस नीव बोल चाटकर यह नवे (कर्मo—प्रेमबंद, ११३): यस प्रत्यार भववान की की तुन नेव् चटा रहे है सहगीनकार माहेब, तो सार्थी जनके प्रवृत्त ने क्या है मैलाठ—रेम् अवर

विकास बकासा

मुद्ध-बाद्य द्वारा मुख की बोबन्धा करती । प्रयोग—चेरन्ति स्वर्थ निवाल बजाई (रामक बाल)—मुलसी, १८४

विद्यान संदाना

निर्फारक करना वा होना

सब अद्भारी का पूर करना या होता | प्रयोग-करि विकारक या भारत को देवसार करना को स्वाप्त देवरक दाधान कास, भारत हो

सिग्नत्थे

दिन्त श्रम्म-सम्ब के । बयोग---व्यो प्रश्नक बान अविवास

किर क्यों निकृत्ये यर प्रकार्य हाच हवा (वी**ला**क-स्टिश्रीध, १६८

नोद जाता

भशाय में वह रहता । अवाय-स्वारं देश सम्बद्ध सोमी को जी केंद्र दृष्ट्व व्यक्ति साही है (सम्बोध देखांक-कृत्वाव द स यह

मीद उद्य जाना

नेप्य न कानी (प्रयास—सम्बद्धी और विकाल के व्यापन ने इनकी नीव प्रशासन क्यों की पर्यक्षण—बीठ दास, १५३

र्वाच्या,-पश्चा

मंद मनती । प्रयास—निम विक नीषि वयु जोड पत्त है, विश्वास आही जाणि (क्यार प्रधाठ—क्यार, १५५), मेर्न निर्देश मोद वर्षी नोड वर्ष्ट्र स्टामन (फ, —तुमक्षी, ५००), इस म दर्व, मीद म वर्षे, हमें म कामनंत्रपायु । (सुनयु सादि प्रकृते म (पति, कार्षे कियम् धांचनसम्म विहास स्टामठ— विहासी, ३१६७, ज्यास मरे दून मीर चरे, अहि बीट वर्षेत्र म आमें म समग्र अन्दर्भ देश है, उन बारको की सामा में जीव युक्त गुरी की (प्रोडाठ—क्योठ द्रास, १५१

नींब स्टबर

- (१) स्थान दूर होता । प्रधान —मीद नहीं हती बंग तक, वृती विस्थत का है होता - मुश्क--मण्ड. दे।
- (६) मोने से बान बागा ।

शंद पहना

रें और धनना

नाव भा साना

- (१) विक्रिक्त होकर बोमा । प्रयोश---श्रुरकाम यो परम-सद्य राष्ट्रो, को क्ष्म निपट गीव और बोबी व्यू० शांव सर ४४१
- (4) इच्छा घर गोना ।

05

Op 85

नींद्र भूक भून काना

बहुत बेलेंद, बेकल औरता। हवीत-वारवार विवारत यन में, नीट भून बिनरी 'स्o साध-सा ६६६)

शींद लेगर

मोना । प्रयोज-नींद व जीन्हरेनि सक बाना (२६०--**आयसी** ५५/९

(समा¤ वृहाब---भीत सारका)

नीका दिकामा या देखता

मुख्य बरावा का बभारता, अयवर्गतन करना या होना। प्रयोग-ओ क्या में हर्गकशीर की जिद पर उस्की होतियें के केना और बम बीच को के बारते हुए-होसिन्द को जीवर देखने देला । (परीक्षा०-प्रो० दास, ११५), तानित पूरा में नहीं पर अनके ध्यान में बहुक हरती. थी, तो भी उसे विस्थान वा कि वै बोमने में उसे वकर नीचा दिवर सकती हूं (सान० (९)--डेमबंट, ३१), हाधन बीजी की हो-बेन्हां मिलाकर यह लोजमानि को नीयर हिन्ताने पर नृता हवार या अहमर--दै० स०, ६० , पर गया अब कि देलमा मीचा तब प्रमार किया तरह म बहु लकता , भागते०—हरिजीय, १४

(मधाः भूहो ब--नीमा स्वानाः)

अंखे विस्ता या गिरामा,—सामा

(१) प्राप्त-मर्याद्या तवानी, परित्त होना वा करना । द्रयोग---उमने मुखे जीवं विश्वाया (ईस्टी०-स्माप वर्गा, १०), बह शास्त्राविव है। तुम अन्तुं कोई वंबी बेसी बान करके नीचे मही का अकती (अय०-अनेनद, १६), (० वी ६) अवर काले के बीचे किराने के आँध्याय के न केन कभी किसी की प्रशास की है न जिल्ला (पद्द० के पत्र- पद्द० समी, १३३)। नीय वंग पाले बहुत तीवी विद्याहम विद्याल शांति हो मीचं रहे (चुमरीय-१विक्रीस, १३२)

६ - वे पर परने करना

र्वामें साना

द अध्ये विकास

नाचे होकर रहता.

दन कर रहना, नच बनकर रहना। प्रयोग-नार नार कह कुछी है, ऐसे दूस देशंबी । पुनिया है नीया होकर रहता चण्या (परस--होनेन्द्र, ४४

तंत्रं स्लाक्ट साम साही

बना काम अनके भना कम कारे की बाधा कामी प्रयोग- जो सन आहे ओर प्रश्न वाहे । जीम लगा आम को बार्च (स्वय साठ- सुर १५४२)

जायन इंचा डोल होना

नीवन अराज होनी । प्रयोग-- यह नुपने दारा का हानिन कल संदर्भ को तरहारी जापन इस राज हो गई गुलेशी वस ११--गुलरी १९८

जीव-वर्रेव रेखर्चक करमा

बन्द असन्त का विक्तियान करका । प्रयोग-कहे कडीर नोई अन तेरा, जीर नीय का करें नवेरा (क्वीर प्रेसा०— क्कोर ३०४

नीय था धेन

रोव दा बजर की दगह । प्रयोग-नोबा नहि अगवस्त बरान को, बबन नोल का बेन (सुर सार-सुर, ३४८)।

नीय पालना,- देना

पाचार कहा करवा, स्थापना करती । प्रयोग---वीन्द्रिय क्वल क्रियांन में बेई (सम्बद्ध (क्य)—तुलसी, ३९९); ती प्रसाद क्या हुई एएडे बड़े औष प्रसाहे की धूरार बाली सुई चुपरीक (सिक्रीय, १५५), उन्होंने बनास की अजियादिक व)बादने की बीच पानी वी (सार सोठ-- हहाव हिवेदी), 23

(१मा० १हा०—शीव रव्यमा,—ज्ञामाता)

नीय देगा

रे॰ मींच द्वानना

नीय परमा

मुक्तमत होना अधार कहा होना । प्रधोत-ध्यपि हिन्दी की नीम नहत दिना से पढ़ गई की, पर इसका जन्मकाल

गात-नहां के समय से याना जाना है (युक्त निक-क्ष) मूक पूक, १०५); यह बच्चे की सम्बन्ध झान कुछ कुछ होने लगता है तभी दु:ब के उस मेंद की नीम पर कानी है जिस करणा कहते हैं (बिन्तांक (१)--शुक्क, १५

नुकाला स्वर

नीका मन पर भाषात करने वाला कर। इतरेव— पीविन्दी ने न्दरित कर व बहा—नी भानती से स्थाह कर सो व गोदान—प्रेमचंद १९५

जुर का संदक्षा

बहुत मनेरे, वी फर्टन । प्रथान—प्रमुकी कृत के तरके तरक मूफ लेकर आली और जल अपने वाजी के विचा जाती (रंगठ ,4)—प्रेमबढ, ३१०-३११।

मेका कर वृतिया में *बास्त*ना दे*ं* मेकी कर कुर्च में डान्सना

नेम-उपयास करना

जियम संयम से अध्यम विकास । प्रयोज-साम प्रथम मनि कीम सब करत नेम ज्यासमा (सम्बद्ध माः-सुमनी, दृष्ट)

तेवला फिरना, ज्योहा फिरना

मेह जोड़ना

प्रेश करना । प्रयोग—परव साणि वेदी वनि हा हा । कून तंतु तात है नाहा पद० सामसी ३८०१७ हरित निर्दे तंतु की सुत वोदि तोच्यों नेह (२० सा०—सूर, ४४०३)

नेह दुटना

मेन गर्बण न रहना। ब्रमोन---मठे व सावा विन्ते उट री

नुर्दे नेह (क्योर अधार—क्योर, एक); पास आर्मि चेत्री सन हर हा । भूगर नेह मोब ने नाहा (पदंर—जायसी क्रांश्स), नेह कोटना

नेन भाषाता पर बढ़ाना

नेम क्रान्यकार

प्रेम होत्रः । प्रयोग---देशि क्या सद्भूत तेथी, रहे तेन इत्याद (मृत साठ---मुर १९६०)

तेन बलाना नेनवाच सारता

बटास करना । प्रवीत-कः दर नेम भगानीः सार्वात्, काति न विभक्त भार (सुर सार-सूर, १६६), जो नहे न बीजी केरि नेम बान बारि से (आर धेवार १३)-आरतेन्द्र, ३८४,

(तवा» मुहा»—जैन के बाद कराना)

वैत कुड़ासा_ः—सिरामा

बाको को बानन्य विकता । यथीय—रोषण गाँउ वर्ति बात तुम्हानी देवी भी वरि तेन जुदावत त्युंट साठ— मुर, ६०६); बाए को तेन सिराय बीतन जन से पीर्न (माठ ग्रह्माठ ३)—मारहेन्द्र, ६२)

नेन जोडना

- () इंग्ड विजाना । प्रयोग च्हीयदि मेंट भई जुनिति वृद्धि वृद्धि वृद्धि सात् सात् स्टब्स्ट नेप वृद्धि वृद्धि
- (२) वेन करता।

र्वत उपकर्ता, दरना दोरता

प्राचा म प्राप्तु विश्वता । प्रयोग स्थाते बहुत होत्र वेन इशाने

वैन शरका

संध-वर्शन शुक्त भाष (६० साथ—६१, ११४६)) नूर प्रन् के वरित मॉसप्रति, कहति सोचन गोरि (६० साथ---सूर, २०६०); रुष्णु पित को बटपट भाई दय दय दयक्त नेन (१९९३० ग्रेक्षा०—राधी० दास, १०६)

मेंन हरना दे॰ मेंन ट्यकना

मेन होरना रेज टेस इपकरा

वन बंध्वे होना

र्जन पदलकृत होता

आसात दूर होता । प्रयोग---श्राम वेशन यह पान भया मैता पटल दूरि ह्यूँ गया अमीर प्रथाण-कार्यर, ३१९।

र्मन बाज सारका हेव जैस करावा

र्मेत प्रदे भारता था स्वाना

मानों में मानू पर पाना । प्रशेष-पूनी क्रेसी वहा जनक म, नैन प्रशिक्षित केर (पुर गाठ -- पुर १८४३), जीव मरि बार्व नैन, विनड़ न परे चैन, मृजह न पाने बेन नम की नता कुम और नई की (म्टर प्रशाक-स्ट ३५%)

मिन भुक्ता जानर बाकों भा मुख्य हो माना । प्रयश्य —हर्षि कृष्य विरुक्त देव भूगाने (सुरु भारत—भूष देशक

🔹 ਜੌਤ ਸਿਕਤਾ

दृष्टियों का पेनपुर्ण आराज-प्रदान । प्रयोग-जीव विके इर के पूर पैठते तथ्य मुटी न शही किनका भी ... 840 क वन धनार १८३

र्मन विस्ताना १ जैन जुड़ाना

र्मन से कहा छाता — जिस्सा प्रस्ता बोक्स के महाज्यांक स्थापका कार्या कार्या माहका, रहट वहै निय चाम (कदीर प्रचा०—कवीर, ६), मणद निकामी देनि दिन, यहै नैन भदि चामि (मिर्दि० सक्क-मन्दिराम, ३१३

र्दन से जिस्स समना है। मैन से भए। समना

तम में खाद रहना, जसना,- समाना

तर न्यत स्थान में बना रहना । धर्मात—तेत पून्य पारम पारों, तेनु रहा समाग (कनीर प्रकाण—कनीर, १६ ६ कहा वारी कुन्द्रम कुरति, इस मैनिन माध्य नमानी (सुर सार —सुर, २२३६ , नमगे मैनिन में पर इन्यू (सुर सार— पुन, २००६), तर भटन सामनायक रहे नेतिन साद (सुर सार—सुर २६६३ नेता नेतिन माध्य समाने (सुर सार— सुर २९१४

नेनों में बसना के नेनों में छाए गरन

नेनो में समाना के नेतर में समान

तेनो में स्थान देना

बारान्य विश्व वशाना । प्रशेष —वै तृष्ट्रती जि**व कापा है।** वैनना वह काव (पदक-जायमी, क्षणाप

नांक क्रॉक होता

बहा मूनो होती, करवा होता । धर्मण—मूपले तो मैकहो बार देवी जोड बहेर हो चुकी है (परीक्षाव—मीठ दाम, ११४)- भारो जोर एटियो की वही जोक भ्रोक बजनी दी (वै कोर्सेठ—भैठ नाठ, १९५); होतो बहिलाओं में इसी सरह बार कोच होती हही (रंगठ १/—प्रेमचंद, २६०), जतपूर प्राय: ऐसे व्यक्तियों से बालटियमें की मोद-कोच हो बानी वी (सैक्स य)—संस्व में, ५०)

पमार महार निक क्षांक का होता)

नाच-समाट काना

रान कार का के अपना र उसका हिन्दू आणि किकानक्ष्य रिक्ट क्षेत्री कर करने पत्र के से पद्म प्राणी की स्थिती जन नार से नाम स्थान के के पद्म प्राणी स्पृष्टीत की सी दम), में नेपण नहीं, कि मुम्हें मीच अमोट कर क्याना सम्मा क्ंा (गदन—प्रेमश्रद, ४६

नीचना,नोसं सामा

तंग करना (प्रमोत—राष्ट्र वसत जिल्लामें नांचे बाद करें बाता सी (भांठ ग्रं०(१)—साम्सेन्ड्र ३३४), विका भांचा तथर लांच जो भने दोडते हैं। व जाने कियना कर्य के ग्ला है (गबन- ग्रेमचंद, १४६)) कारिन्टे जनांचियों की नीचे जाल के (ग्रेमाठ--ग्रंमधंद, १४३)

सोबं जाना

वे बोचता

नोन-तेल-लकडाकी खिला

घर गृहत्यी मारण शावता की विन्ता । प्रमान—धव वैसी हमी एक बार भी भावे भी नीत तेन सकती की विन्ता के बारण कुल दूभर हुदव के तुल का बोध विन्ता हत्या हो जाव (कार शुरु—गरु महु, १०,, क इस समय महाक के 'सूर (मील) क नहीं है" 'रा भी केंग गर्नत हो, नोत तेन ककती की विन्ता जो अवार हो नहें" (भिनार—कोशिक, २०५)

नी दिनमें भदाई कोस जलना

बहुत बीरे बीरे काम काना । धयोग—सक्टर का हाय नी दिन में पहाई कोस की म्योद के कम गृहः वा (बुंटक —स्रत नात, ११९), जिस पर लोगाकी अध्यक्ष होती है उसक निए स्पवहार के सब भीचे भीर मूलम वार्ष क्या हो मति है-इसे का तो कांटों पर वा दाई कोच नो दिन ने काना प्रश्ता है (बितात (१)—सुंदर्त, २०)

नी-हो-धारह होना

देशते देशते भाग जाना। अयोग—एक भार के तो बली भूत बहका रहा है कि समहत को दूद करों भोर वो

106

O. P -- 185

दी न्यारह हो जायों (भाठ ग्रंठ (१)—मारतेन्द्र, ४०१), जब तक विश्वादी इक्ट्रें हों, तब तक हकी वेशवादी प्रोकते वार्य को स्वच्छा पर कर जी दो भगरह हो वश् भूग०—द ० वर्गा, ४४१-४४२); यादव टोमी के जोग एक एक कर जबर बचा कर जी दो गगरह हो चुके वे मेन्स०—रेणु, ४)

नी नगद व नेग्द्र उधार

भोडा ही साथ ही। पर नुस्त्य हो। प्रयोग—किन्तु आर्थ नराज | भी नगर भारत्यु, तेरह उचार नहीं (मेरे०— गुलाक0, २३

नी मुक्का होता

किनना भी प्रधान करना । प्रयोग—सभी तो नहीं गाऊ गा चाहे कोई तो जुड़का नवीं व हो साय—केंबू होन्सा (भूग० —यु ७ वर्मी, ४१३)

नीयन को पर्वचना

हातन होती : प्रयास—अन्त म हिन्दोम्यान म कृद्ध गरी कहा नृती हुई कि बदमजबी तक सीवत पहुंची (गुण् नित—बारु सुरु गुरु, ३३४)

नीका भारता

मुझ सरकर पर जीवत सम्ती । प्रयोग--- निवृ पीर पर जीवन अन्द्र रही की (गीली--चलुरंध, पर्ध)

(बयार पृहररू मीयत बजना)

नीयत बहाता

करों) प्रसद करती । प्रकोश-कार्नीर तीवन आधरणी, दित राम लेडू कराइ (क्योर ग्रेसा०-क्योर, २०)

न्योतः फिरता

दे॰ नेवला फिरना

पंचा हुउन्ता

पता के रेंचा करना । प्रयोग विशेष पता प्रयोग विशेष करें स्थापने कीन, विना कुलाये ना मिने, प्रयो पीना की योग स्थ⊝स्थ⊶युन्द ३,

(नमा० नुहा०---र्यका करना --- फलकर)

पंगु हो ज्ञाना

कुछ करने सामक सं गहता । अयोग---नंद-नदन क्य पर गति वर्ति भई तन् वंद (सु० सा०---धुर, २३००)

पंच की आंक

वर्ष बाद्धारम की कृषा अवका सामीकार । सर्वाय-अव की भीत कृष कल-मोहन, कहति असोनति वाह ,सूर्र भार --शुर १०७३

पंच मुहाता करना

भवको भक्त समने वासा कात्र करना । प्रयोग-स्मी येथ। सबहे नहि कीडो, कीडो वंच मुहातो (६० सा०-स्मूर, ३०२)

वेबायत करना

() दुसरा का सक्त बरना अवाई बराई शरता, प्रकार पर कार से हिटल अवना एक बरनान के जिल और के प्रकारन के बरन है प्रीकृत और है से १००

- अगरा वे ६०ता

पेंड्रों का पर भी समार सकता

নিধাৰ মাজেটুৰ্ণ কো সুধাৰ স্থিত জনি ক

वर को द्यांद्वा से सामा शत्य दिवर जाता था। क्या सजान कि कोई वर्ती भी बहा पर नाथ सके (गोली— चनुरु, १५५

पंजा बलाका

पने हे ब्रह्मण करना । प्रयोज—पिन सका जिसकी कि पंचा राज्या कर अन्य पर चराव किस पर बीला हिस्सीध. १९६)

पंजा बहातर

हरपूर्व या बहा के करने की काशिय करना । अयोध-जी रहा स्माहको का जब बदा तब मना पत्रा बढाने वर्षी म के (बुधनेo-हर्साओध १३६

(पनार पृहार न्यंजा फेसाना)

पंत्रा सदाना,—सेना

मुकारका करना । प्रसंद—भैरवी केरी हेरी फामा तभी बजेकी कृष्य बढाएकी यह दूस है पंजा (परि०—निराना, १५०), नृष्टारे हाथ कृष्य है, अनमे जिससे तूम पंजा हैने बा रहे हो चरंग बरंग हो उठके नष्ट हो आयेने (कला) —छप्र १५००६

(मना । महा । — योजा परम्मा — जिल्ह्या ।

पंजा हिना

८ पंजा लड़का



पंत्रे भारकर पीड़े पड़ना

सहत तंत करते पर उठाए होना । इस्तेय-क्यांनी पौरितक पंजे कारकर मेरे पीस्ट्रेयक एई (मान्ट (४)-क्रियक्ट, ५)

पंत्रे में माना,—पड़ना

काबू में आना । प्रयोग—नहीं कारण ४ ४ वह देख ४४ मदा विवेधीय नेनायों का शिकार बना, उनके पत्र में पता रक्षा , मह विश—वाल मह, ६१% संस्थार के द्योगा वर्ष भोर देखकर भाग धारी, यानों वह रहे हों, या क्या पंच से (गंदन—पंचायद, २५५)

(समाव पुताव-पंति में होता)

पंज से करना —लाना

मा न करना । प्रधान- मैन नुम्हें एक नहीं, क्रमक ऐसे सबसर दिए कि नोई दूसरा बादकी उन्हें न कोइना, लेकिन भूग्वें में बादने एके में न ना नकी (मानक कि)— प्रेमियद, प्रको, हिन सलक से भरी नगावट के कर निया है किसे मुच्ने में (भोनेक-मुश्मिय, १६)

पंजे में पहला वेश पंजे में भाषा

पीते में स्ताना देश पीते में करमा

वंजे से छहाना

- (१) किसी नियति से बनाता । प्रयोग-व्याद ऐसा है तो मैंने अपने स्वामी के किस को भना बार्यात के एने वे कैस बाहे क्या में छुटा घाडा ,शाव प्रवाद निम्नास्तेन्द्र, ६१७), पानमता भरत ने नातम-भाग में पातक यत को पातक पत्र है कुटा (वैदेहीक-हरिओध, 84)
- (२) किसी के कबबे से सुवाना ।

पंत्रे से छुटना

काने से प्रुटकररा पासा । प्रयोग—मातप के यह से श्रुटकर मुख की मान सकल तम्बर में जे यह सेंदेह'त ही फीध २१८)

पेजों के यह बहुना

(१) बहुत बीरे पेर देशाहर जलता । प्रयोग—यो जैसे

आई थी नेस ही नंत्रों के ताल चली नई (पैतरै—अक्क, १२२

- (२) बहुत सेव बसता ।
- (३) जीभमान करना ।

पत्रों से मेह क्षेत्र

नम् पर पर्ने रमपना । प्रयोग—कथी किसी कोने में बैठ कर पनो के पृष्ट कोनी हुई किस्सी,अधकभी समाधा दिखाने मानो के टीपी नगरम हुए बंदय, बोहनी बीई हुए भारतिया नानननाता गास, आदि स्वाम की एक्ट्रयाना हुए बारते ही रहते के (क्रातीला-सहादेवी, ३६-३७)

पंडिस होना

- (१) कुणव होना । अयोग—चंक विमान रंगीले रमाल धनीचे कटावि कमानि है वरित धिमत कवित—धनात, १२०)
- (२) क्षेत्र रचनकामा होना ।
- (१) नेव चॉन्च होना ।
- (४) विशास द्वासा ३

पंथ कलाला

- (१) विकास काम का मार्ग दर्शन कराना । प्रयोग—कबीर बार्या नाव परिं, कोना चाई नृत्य जिसह चनावे पंच तूं, भिनार मुन्यवे कीन (कबोर पंक्षाः—कवीर, ६२)
- (२) किनी यन का प्रारम धोर प्रभार करना ।

एथ ओहराः -- देखनाः -- निहारसा

अतीला करता । प्रयोग—स्थित्यां आहे पही, यव निहारि निहारि क्यार प्रयात—क्यार, प्र.; जिन्हें विरह अस धीएक बाती । यथ जीवत अहतं सीएलेंबालो ,पदंच—जायली २७३६ : वितवत पंच नहेंद्र दिन शती (गाम्ठ ,प्य)— तृत्वती ६९६), जामनि आति भरे चींधनामनि के पत्र पत्तके पंच कितने (धन्तक कहित—स्नाठ, २१०), वो ही आज महस बन के देखती पत्त कही सामगम नृष्य और मन्य रही कही साल्त मानकर ,कुक्ठ—दिनकर, प्र.

यंध दिखाना

(१) वास्ता बनाना । बयरेग-साम तरम रहि पेन बेलाई



यम देखना

काँद दिन बार्टर जला देवकाई (रामं० (म)--सुलसी, ४६%

(२) इंक्ति कान करते था वाने क्लंग कराना ।

पंध देखना

दर पंध जोहतर

पंध निहारना

एक यंथ क्रांहतर

पंच सगनः

- (१) तंत्र करने के लिए गीचे नवना । प्रयोग—किन्नर लिड प्रमुख तुर नामा । इटि सपटी के प्रयोह नामा गमन् (बाह्य)—सुरुक्ती, १९०)
- (२) अस्याची वा अनुवाली होना ।

र्शनर राज्यां भी।

क्रोरी में क्षा क्षेत्र की भूज करना

बहुत नहीं भूम करना । प्रयोग--वस्तर्क सामकर मुक्तन स्थान में गोच केर की भूम की वी (द्रारमण -दैठ सठ, ५५)

क्षाह सुद्रमा

अधिकार वा क्षम मा रहतः। वयोग-- इतने कवार्थ का मुखारी प्रकास्कृद वालगी जिला (२)-- सक्ष य, १४४)

पुरुष्ट्रदर्श

स्वीकार करना, नद्दमत होता, नवधाना । प्रयोग---किन् एसके एवं में इति प्रकान में इनकार कर दिया (जेनराव (३) -- प्रश्लेष, २२)

क्का भाग दोवा

बहोती को पानों। संयोग—नयों बुद्दे औं न देख कर उसकी क्षेत्रन त्रेस कर न वाद क्ष्म काला कर की कर सामसाओं से जिसे को साम की पश्ची काली (बॉस्टर्क) हरिजीय, १८७)

पक्षा पांचा करना

- १९) निरंत्रय करेन । प्रयोग इत्रय म त्रिय ग्यान इत्र इसक विकास प्रवेश-१९३ कर निर्देश त्राच (अया)= कौशिक १८६
- वर्षन देश मादि कर अन्तर पद्मात वस दुवर का

अवाना कि ह को पट्टी पहार्ड, सबर गाम बामों की पश्का शेक्षा का दिवा (प्रेमाठ—प्रेमचंद, १७५

वका होतर

- (१) पूर्व जारहा सः विद्यात स्वयं कामा । प्रयोग-न्यन-तम गार्क) जो हो काची जो जो साहि पाकी, जारूब के चन वेपनिवाको स विवादिये (१९२० समित-समा०, २२५
- (२) वृष्ट होता । प्रयोग—३स मध्य वेरे विचार १४ने पर्यः व वे ।प्रमाठ—प्रमुख्यः, १४३
- (१) हुएन होना ।

पक्षी-कच्ची बाल

हर तरह को चल्को कृती या किन्तरन-अविरक्तन वात । इकाय---वॉर बलो से रोड को कासी की पक्ती और कर्ल्स तह करने सुवाई | झांसोठ ऍठ वर्मी, हुट्ट.

पर्का कर लेका

- (1) विकास के विक प्रतिभूत होते की पहली कर्य।
 प्रयोग —गर्क के बाद के ती कहा थे कि प्रकी करने की वारत दिखाने विकास प्रथात प्रशास करने की
- (३) है बर नेता ।

पक्षा बात बहता

भगूमने और मानकारी की जात काली। प्रयोग---नगर का करको के सालकोबित तोलले होते से बाद करे ती हात दुवसूता कहा भारत है और क्यों की सी स्वकी काल कहे तो उद्योग समझा भारत है (जैनार (१)---व्यक्त से, १९५)

क्या वसीते

ती वे पदा हुना घोरान । अधान—बाब् जी, रशाई कैसी इनकाई आय—कभवी का पदकी ? (मिसीन—कौजिक, १२६

पक्ष करनर

किसी की कोर में बोमना (उसके दिन के निये), सरफ-दार करना करण —पहर्णन्या न इसका पक्ष किया— यह भी है, सर्थन में यह करण इसके वहां करना करिए सरस्य ६ इसकेट १०

मधा । मा - पुत्र कवित्रका ।



किसी को भी जाना जाना न होता। हा कि—उनको स्ट्रेस भेदे वर में वश्वक वंश्व भी नहीं जावना , वेठ०-- हरिसीय, इट.

पान-पंग

तर रेमान । प्रयोग-न्यन नेहर मिर्टर करन कोहा कर प्रमान प्रमूपन-पन भोडा (रामक (स. - सूलवी ५००) क्रम नम उपर निसान शानि जनमा पम पन प्राप्ट इसर्ट स्थिन-राज की (मूचन प्रशाक-भूजन, २१९)

परा पर पर पर पर

- (१) बहुन याम जाता । बयोग---पैन पैन पर कुछा बावती माजी बैठक यो पोनरी (परण--जायमी, ३४६
- (२) इर विवति में । प्रयोग---वनावृ व्यक्तियों का वा स्तर्गालमय अधिन और विभी का नहीं है क्वर्गांद इरेक काल में पर-पद पर अने मय बना गाला है (मटट नि0-वाठ स्टूट, क्व); जीवन कार्यन्य का बंग है, वन-पम पर सम्भोना है (परमं--जेनेन्द्र, पद); दीनामध्य पूर्व रहने १६८ वर्षों हो गां वर्षों मान प्रमायन पर का भा कर रहे हो (मिलाठ--क्येशिक, १४८); के प्रयन्त्र कर विद्याधियों के असाद पांड को पूर्णां करनी की विद्याल्डेठ (२)----वर्ष्ट्र, पदे)

देशियं पैए भी ।

कारी उत्तरमा -नीको होना

हुदशा या बहायनी होती। प्रयोग न् श्रीते खीरे भारतियों से लंबनी फिरकी है नियको पगड़ी नोबी होती है, बना रे (गोदान प्रेमचंद की उत्तरनी आनो है पनदी, आवक धार्चे सहनो है मर्सन-स्टिडिंग छ्या नाम को पगड़ी उत्तर गई। नुम बैठ मंदिन काल ग्रा । अप्यट दे संट

(सथा= न्त्रा=-प्राप्ति उपस्ता)

प्राची उद्यालका

बेड्रह्मती करना. नपहास करना | प्रयोग---विसी के बी हुए बाग दादा की गमकी प्रसानना -- वार्च असा । सम्बद्ध

107

O P -- 185

⇒া। টo, টট লালবং হিল নদ মিল কুট মুন্ধিয়া গুলুটা হয় ব্ৰুট ১৪০ | প্ৰিটুটা হুঙ

(समा+ मृहा»—काईं। उसार केला)

पादी देश

नकश्य नार्टि सेवे कवद प्रकान नामिक की नवश्या देता । प्रयोग-अध्यक्त में देने क्लैंट के लिये तीन हवार में प्रान्त हकार नव प्रवर्त मी हा जानी है पैतरे प्रश्न 88)

पगरंत बोची होता.

र- पगरी उत्तरना

पंगरी पर दाथ इंग्स्टना

देश्यन को ्द्रमान पहुनाना । स्थोत—यह तो सरकार पगरी पर द्वार सामने का आध्या है (ब्रेस्ट्रि—देव सेठ) १०७.

पगर्रा पंचमा

- (१) प्रभाग्यवार मिनमा । प्रयोग—पृत्री के विना या विनास नाम काल अन्यार के भून नहीं जानते । यह याको कर ही किए ना क्या है। स्थानक एं प्रसादि स्थ
- (०) उच्च पर वा स्थान प्राप्त होता । प्रतिप्दा मिलती ।

पगर्दा बांधना

- (१) काथय देश । स्थीत—सायतर बाए तिन्हें निवर क्षणयमें भी, कोट बाक्षियनु काली भाग वाणियनु है सूचन कुरार- सूचन, १४६
- (२) वहीं पटवी देशा ।
- (१) गौरव पाना ।
- (४) उत्तर्राष्ट्राः देना ।

कारा

() पूरी तरह दर्गमण्ड हरा । प्रदोग— विषय भोत ही में कि रहारे एक साठ- एर एर इस क्या है भार न होता है भीड़ी कार्टीहरी चींच युगान भी मू रे कार्ट के भी महारी नहीं निर्देश, पानी कही पत्रकी मित जुनी (एनव करिय - क्षमाठ, १२१ । तम कहा नक्यों मनन है नय गरी व्याद में बन को न क्या देखें मसे (मुमरीठ-१६ म्री/८ के

(२) वहें बेबर्वंक वातवीत करती ।



वय भग्ना

विशी काम के जिल शहन प्रतित परिश्वस करना, हैरान हीता । प्रयोग - स्त्या निरम अकाबि प्रत्य, पंथी शूर पूर्व । य. १ वर्गन वर्गन २३ फूट व्यवस्थ परि दूरि प्रवीत प्रतिक-क्योर ६६, ब्रह्म् पूर्व शूर व्यान वर्गन प्रति वर्गन परिश्वास्थी सुरु प्राप्त-सुर, ४६१४ वट व प्रश्न किंतु साथ कोटि अवस प्रति पृथ्व सुरुष्ठ (११म० (४) — मुनसी १९१०

पुराका के बहुता

- (१) क्यो जिलमें नियोग वर्षण न हो र प्रयोग- विश्व ? शृक्ष काल कीनवा पत्रका नेकट बैठे हो है (१९४० प्रयोठ---राधांठ देखा, ६६८), जाने कमल करने के लिए हम क्या नहीं करने स्वार पत्रका मुनाने तम् तो सायद पत्रह विश्वान म सार्व गोदान-प्रेमक्ट, १५
- (+) रिवार कामी ।

ध्यामा

तान्त्री तरह हरदश्य भाषा, वयसता । अमोर-मेलर में दार्ज को साधानक्ष विद्याची-भोगम के दुख कीय कर विद्यार कुछ पहोत्री के अनुसक्त का वयस्य किया सेलर उ - प्रश्य दुउ

बहाइ का कन्कर रोता

भार विकास करना । प्रयोग---नित्रक का भारता । प्रश्ने भार्त का प्रमाद कान्या कर कीना सुधी मधे में दाव है स्थानी संसद- प्राप्त अह

प्रकार मान्दर

प्रश्वन कुम सा कारण निर्मायन प्रमान । प्रयोग-न्यक्ति प्रशास महोतन - विका अनि प्रयाद हु ज सु साठ - पुर अ६०० , सम्मी प्रपाद काली औ, सुमनो सिर प्राप्त प्राप्त १ प्रसाद उपक

पट पश्चा

िम्हरियनकाराम प्रशास कोत्र क्राप्त व प्रदेश राज्य सामा राज्याकार मुख्य है दुर्भ ≼र्

प्रकार

प्रशास किस स्थाप हात्र प्रस्तात कर । प्रशास किस स्थाप ।

हे बरवजे बज्जव कमय उसमें पाद का गांच पांट मोगा हैने ग्रुमतीत—हामें प्रोध १६

- (o) take (
- (१) वरण्यानी वर्त रामया (

पटकरिया जाना पटका जाना

- (१) अनस्य होका कन्यम प्राप्त काना । मधाने— न्द वय निष्ट उठे वय पटक आम के भी विलट गर्न कीये कुमरोठ हॉरडीय १०६ (१), यमानी का कहारी गेमा होना है। जान न्दकी न्यान विना मानना कीन है। असम २ अक्ट 8, १४४
- (२) पिटोच में इंग्लिश । प्रयोग—विसु अस देखते हैं कि स्वीन्तर के दुक्तिकों के अस्पने परवची माई, जिप के मन मेंच का गई। एक किए कार कुछ गुंठ, नेहेंके.
- (>) अध्यक्षांत्रम विज्ञा जाना । प्रयोग---वैक्तिए प्रयोग (ग) में (--)
- (४) कृष्टरेश्य करेगा जाता ।

पर्का जाना

र- पटकांत्रया भारत

वदभा

- (१) निजना । प्रयान-- महारस्य देशकी और प्रशास स्मामी की नमा की नहीं। पदनी (भाग प्रणः)---भारतिन्दु,प्रका , वरम्भू प्रस्तवन्द्र महोत्र ने मेरी पहनी हैं ,कामना---प्रसाद, १)
- (२) अपने धनुषम् शस्त्र ।

परमा हो जाना

ार नुष्यान असा । एवान-- आकर घट देसता स्था हु कि सब क्टरा हो नक्ष है पुरु ब्हाए--पृतिती, श्रा

नवर व प्रदूषा बैहुना

व्हरीयाःता बेरता

वन क्षित्रक पान जा र पान जाता सम्भागात सह रहते के पान कि भाग की वह सानी प्रतिष्ठ रहा के का स्थान कर कि स्टूटिंग के बाद के निस्ति। रहा कर्म के अध्यासन करता है जाहा के निस्ति। प्रकार में ठ गरारी अजी ला कपटी के **बात पटी। बट**णटी जार महासे रक्षोले≎— हरिस्रोधा १३५

(धमान महान-पश्ची जमना)

पटर्स पर लाता

रीक्ष पास्त पर सामा सुनारना । प्रयोग—नारे ज्ञान सबस की कामाकृती एक तरफ रक्ष काना वाम छोड सटी तक बाह मेरी कहारिनका की क्याकरता की पटरी पर आहे गंजर बंगानियां कृषारते कामने सवर स्वयं, इ०च-५.

पटनी वेडका

६० पटरा स्वाता

पर्या बैटाका

- (१) काम के लिए पूर्विस निकासनी । अधाय---विको को सभी नहीं पटनी, अब बका बैंग का व की कटनी बोलक--हरिक्रोध, २१) (२)
- (२) देव सम्बन्ध काना । अयोग---देखिए प्रधीन (१) में (२)

(समा० मृहा०--एटर्गः ऋशासः)

पदा-कर

विवाह में ही कर की आने वानी मुख्यार की सम्ब । प्रयोग—शारी गांड पटाफेर कियों । कुलरको को सब प्राची प्रेम साठ---१० साठ, १९६३)

परिया पारता पहा पारता — संयास्ता पारा पारता

वोती और विवटा कर के कान बनाना, बनाव सिनार करना । प्रयोग —के प्रधानीन पाटी वारी (पद्यः—प्रध्यसी, प्रशाह): जुड़की दरिया बारी चाहे, कोडी कावं केस्टि सूच साय—सूर, प्रशाहक): ब्रोग सम्बाना नहीं कि पट्टी बार मा नुस्त करावर पट्टा घोट गान बनानाट मांच पट्टी बार —सारस्तिन्द्र बच्चा, तेल घोट पानी ने बट्टी है अंबारी निर्म् प्रण (भाव देव (का—भारतेन्द्र सम्बद्ध

(नम + न्हा -- परिया आहना)

पश्चिमा लेना

क्षण के अपने के अपने प्राप्तिक एक क्षण किस का

कार १ वह परिद्या केता जैलाक-देव ३६३ १ वकार वहरू--पटा दिला।

पहा रिट्याता

निना पर्दे करके कोई जापकार कियी को देना। प्रयोग---मधान दिना है, को क्या कोई देने नाम का पट्टा निन्न दिना है भा--कोक्सिक, चला

पट्टा सिम्बर देखा

पहा सिर से बांधना

कार्य गीरव देना या धारीण जगाना । जयीग—याचे जब दिनों यो बहुशरेचना करने चलते हैं, हो सनाम पर सब अल धामको रकाम पर है जाय-नाम दौरता है और दूसरा धामकी काल पर कुछ कह ती चर "ज्ञानसम्बद्धिरम्थ" का बहुत उनके जान से बांच दिया भारत है, इनका नम् बारता रे (पुर निर्—वात पुर गुरु, धुरुष्ठ"

(नगर- गुरु---पहुर बाधना)

वही पहना

- (१) जानना । प्रयोग—में करना रहन में बानू, बंद एसी जारे है वही भूर0—मरान, पश
- (२) अनवर तीमता (

पट्ट प्रांता पार पंडाना पांड पड़ाना

(१) बद्धान की राव, देनी वृती राज देनी । प्रयोग सीन बुजान जर्जाति की पाटी, वर्त देन नातिये गीने गढार्ग खना कांग्रस- सनात, ६), किन् विदे प्रोटियो ने जने नुध एकी पट्टी प्रवाद कि उसमें बेटा बदेमा क्वीकार में कि पा सानत २)—केंग्रसंद, १८० ; बजीर नाम में आकर नोगी

को पट्टी पदा रहा है (क्या — देव सव, इस है। () बरशास बरश र बनाव (क्षा न र बाव न किए। पट्टी — कुरहास तथ नह बनाव पान) पट्टी पांठ सुरासाव सुर १९ ६ संग्र हरनो । ४ नहीं बड़ी पट्टिय पड़ाइ यह उसन नातन में दो दो पढ़े क्या किया सापके नाम से में टीपियें दी है (प्रांक्षा — बीठ दास, १९), सनव समुख काहिए को बी यह पट्टी पटानी सुक कर दी (सहक—दैठ सठ. १०६): यह पहिंचा त्या हम निषयों को आहार था तुरस्य क्षणकों न भावती हों (कर्मक-प्रेसक्ट, राज्या: तुरसों ने तो मुखे पट्टी क्या-स्थापन विष्युत क्या दिया है (विस्ताक-कोशिक्ट २२५); बान शहरा है बानवहत चेटियां र घोट प्रतकों स्थोपती पूर्ण न यह बाद प्यापन प्रापक प्रका सेता है सुव्याक-पाठ गाठ, १३२

षर्दी पारमा १० परिया पारमा

बहरी पुत्रना

विदारंग होना । ज्यांन—वंदी पही पुत्र चुनी थी और में सा पर उननी रच कर बारणी के स्थान में पान बाममानी, जाज कार्य के द्वारा नव थी बात कर नेती थी क्लोक्ट--व्यादेवी. १५-१६), जब क्यांच् बाच् चाच-स वस्त्र के हुए तब उनकी पट्टी दुवाई नई (वा—कीजिक, पट

पटरी है भाग

बहुकारी है जाना है ह्यांच--वेदान जीका कारणी थी तथा बहुत में (मानक (द)--वेसचंद, ३६५

वर्द्धः संवारता के वद्धिया पारका

परशंदार होना

गाबेरार होना । प्रयोग--- (त्रमक) गोर में संभाग वही अब वेरे पट्टीदार होने (साम् (१)-- हैमचंद, १५), इनके बार इसारे पट्टीदार आई विष्णास्त्रकी बांदे का गरिकारी, सल्दन परिवार अस्त्री संबर- दश, २०।

प्रकृतः

- १) वियोग या मनोबन बानी प्रदान क्रक बर नदी हो, को गरे । जैसी कृष क्षेत्री, वेजी कामकी स्थानक हो.
 --वेशवद ३४३
- भग भाग्नीन एक मी होनी प्रयोग न्यमान बन्धा की, मीद म के नी ४ ५ विकासन नृत्यको प्रशा है पीटान नौम मेट १८६
 - प्रमोक्त होना

पहाच सारका

मंत्रिक ने करना । प्रवाद विकासका होन्द्री हैंगा

कियान कर क्या । प्रवास करर किया (कासी क्या वर्गाः) २९५४

- (२) शाधवों को तह तेना ।
- (३) वरी हिम्बन का काम करना ।

पहिचा के लाऊ होना

परिने-पार्क वृद्ध होता । प्रयोग—एक सी जुद ही पह सब पेडिका के नाढ़ इस पर बदकी बजी बुकाबद हाँ × У वस सार्थ के बात क्षेत्र हो २० जाव पंत १)—आस्तिन्द्र श्रव्ध

पटकर स्टिर पर जासना

जानू करना । अधीन-सुर स्थान माहिनी कराई गुज पति में निर कारी (सुर साठ-सुर ३०१९)

पट-परधव होता

पंद्रशा

- (१) कर्नु निर्मात को समयक्ष्मान्यासमा । वर्षाय-स्माणिक होन्द में बीकी की जानांच जन्ती है—'ग्रेन्टर ।' सेचर इसमें वह नेता चारता है कि बहु अपराची द्वाराचा था। कृत्य है वा ज्यान के लिए कृतांदा सा यहा है था गरी है। इस्ता (२ - क्या से, १८६
- (२) शीचे होता ! प्रयोग---त्रवास प्रभु निशी संसर् ति दर्शन वही तसे जनगई (पूर्व साठ स्तृत, १६/०४). बहा देनी बन्दरमें, पदी सार अपूर्ण ! आपूरी प्रकरि बहुता की वकान ही (कठ १०--विस्त्रवि), ४१); लाग यह बहुताति की कार्न हो दंद सनीनी न नह बहा सी (१९६०---टेस, १६) कच-वृत-वद-५लनद नंह-नह भरे खन-बन-लानने बहुत-चान्दी यह (एकठ कविस---सन्त्र), १२६)

पदाना

(१) प्रस्ती शीर्था बात नवका देवा, बहराया । प्रयोग— अर्थाट व क्व कवर भवताई । कोटि कुटिस मिन गुरू इन्हर्त एक अ तुलको ३९७ श्रीकन इस हरामबादे अक्ट अर्था र मा अ उस पन दिया है वही पहला गहा मुक्टित स्टब्ट क्यों ३५३ (२) सील देता, प्रादत कालगी। प्रकार — नव-प्रश्नि कृत भर्ती पढाको ,सु० सर्थ — सुर, यक्ष्य, जन्देशा यह होता या कि नही द्वारा कृष्ण बना हुया स्थवन बेटियक, क्य की निद्यायन नवी विश्वाचा भोने संविधा को पर्दाया वा अपनी स्था — सुर, इक्ष्य, पुने इस नवह प्रवाद की प्रधान नहीं है सु० सु० — सुदर्शन, १२३

पन उठ जाना

- (१) विश्वास मा एक जाना । अयोग इस्पति क्रमन कड़ोर कड़त पांछ, सति विन् पति शांत कड़त (सुरु कारू— सुर, अर्थार
- (२) उपवत्त म यह वानी।

पत जनगरमाः—सेना

बेदण्यन नारमा १ प्रयोग — प्रतार पत्न वयो और) वी विगाने क्यों बाले कारी ? (सर्वठ— हरिक्योध, ६६०); बाल के संक्षे कहें कचनी मती काम के पत्नी म रहा लंगे गहें (बोलठ—हरिक्योध, ७७

यम कोमा,--जामा, यत-वार्गर जानर

इश्वत काना या न रह जाना । प्रयोग—हर बंगयह अपनी यति कोई । इमर्र कोज परह बंध कोई (क्योर प्रयाद —क्योर, २५७), गति उत्तर्गत, देवी परी है विपति अति होगदी गृहत्वे सन्तर्गण कृत्यन कंदर के केनापति ११० लग गई मणत्रक पन गाना एमा भूभतेत हरिक्रोध ११७ वस कि कस नी पन गनावे पर कमर रहा जानने का रहा नव कीन हर (मुभतेद—हरिजीध, परे।

(गमाः पटाः । पत्र उत्तर जाताः—गंबानः पत-पार्ताः स्रोता गंबानः)

पत्र जानर

दे॰ यन खोना

पत-पानी जाना

दे॰ यत कोना

पक्ष पानी रह जाना

इप्रथत बनी रह बानी । प्रयोध---शांच १६ रहता न फ्ट

108

Q.P -125

पानी बना काम में जायू धनर बागा भूते (बीहरू— हरिजीध ६२,

यत अस्ता

परवय बनानी । प्रशास-- विन्ती एक राम मुनि कीरी भव न कनाइ पार्थि पनि कोरी (क्वीर ग्रेशक--क्वीर, ११के सूद सर्व नुष वह बाकरी, कानी पदि कह रामन मुन्नान- सुर, १९४१)

पन देना

👫 पन उतारका

पनन के सहर में विश्वा

पीर कान होता । अधीन—वृत्ता और ई.प. ते औ अहता है वह पील ही पतन के नज़र में विष प्रश्ता है (संशोक) —हर पर दिस, ४५)

पंतरता कान्द्र

भट किमी की बाम पर किश्वास कर लेने बाना। प्रयोग गवनमार का गया प्रजानन व्यवस्थ और राजिया का ऐसा क्लमा कान समक्ष कर काबू हॉर्गाकर्टनी ने सानवेदी पणिपट्टी और स्थानियाल कथिकारी बादि से इंग्लोक्स के दिया (राधी) ग्रंडांक—राधी। टास ५००

परिवास स्थाना

नवना सकतिष्ठ वेम करना । प्रयोग—मंदनदन श्री पतिबन सस्यो नर्गहर दक्त विजी भूट सम्ब- सुर, ४१५०)

पने की बान

- (१) अवार्य वार्ते—बहरवपूर्ण काते । अयोग—नाय मह तो मशी बाते पते की कहती है (आठ ग्रंथ (१)—अवसीन्द्र, ४६०), बार्यक में कही कही सीरव के वपनी पुस्तक में बदापुत्र के मान के बाते की बात को को कहा की । —देठ सठ, २३६); यह ते बात को पते की कह की। इनका बचाब मोजकर देता (ग्रंबन—प्रेमधंद, २६८)
- (२) वेड प्रपट करने वान्ये वार्चे ।

पत्तल स्वमानः

उद्योगार में काने जाता । प्रमोग--- मृत्नी के दीनों आई



जीर बहुक सूब काम-बच्चों को साथ के छन दलान बरवाने गर्ने में (बार)—नागांश, पश

पंचल पहला

भोजन के पद देशक पर शक्षकी पराची उन एसोक जाएक जोग पत्रकों पत्रकों ।सिक साम स्थापन

(क्षण = पृत्रः -- यक्तंत्रः चात्रनाः -- स्वरनाः ।

एकर कर जंगता

स्वयम् भागा हो बाता वा कर दिया बाता, काई नरावार स पहने देशा । प्रयोग—(बतन) विकास की है का शापन पर पता ही कह जाता है है (दुध्याध—दै० स०, ३१४), यह विकास रीजीय होती तो देखता कि नवका पता कर हवा वितर—अवक १०३), यह को में कि वह बाद वर इन्ह है। दियी तरह दक्का पता करता काहिए (निशिठ—-विक ५०, १८३

एका काटना

सबारम भवन कर देना । जनाय---जन तक किन्नी का बाता नहीं काट दिया जाता, न राजी गुइरानी जान के कुट मकती है और न देवकाल ही दिवानमुख मीट नकता है स्वामत-- देठ सब, ३३२% जिसे ने पता ही काट दे बंगा की कोई अनव नहीं (वैली--काक, देव

यका कावनाः- डोवका

पृष्ण गटका वा आहाका होती। यमाय—प्रयो तो जला भी गरकता को धान कर्ज करके को क्षिया प्रयत्ना भा निक्रम कावता (पोटेल)—पेक्सेट बेटी; करण विद्य करी जो रोमता प्रया भी था, निभा क्ष्मण स्वस्ती थी, नम्ब्यांका हो (पिटक क्ष्मोंकों स्व.); यहां अले हैं पत्ना करके को सं

पंचा चारमा

•) बह धन

पत्ता चरेकना

🐶 पुला जडकर्गा

पत्ता न करकताः—न दिलगा

(१) हवा विश्वकृत कर होती । प्रमोग---वै सापको विश्वकाय दिलाना हुँ दि बना नद्य में दिलेगा (रेगम (३)---प्रमुक्त, १५१

[= | वर्ष कोर सकदम नीम्बता होनी, कोई गीव न होनी । प्रयोग --नाने हैं क्यार सनापति देत बंदिर के दरका कर नामकत कड़ पात है क्यारक-सनापदि, प्रय

प्रमान नारने हैना १९८० नार कर कर हैना प्रश्य-मन करने पर नो बहु १९४१ वर्षने में शास नहीं जाती, मुख्ये पत्ती नहीं नीहने १मी धूनक-पुरु सहदे, १३०)

वचा न हिम सफना

हुआ और न ही जाता। जयोग — जिन् नुव क्षमकालन इक कार्न्य शांत करना नहि स्वारे (राधां० धंका०--राधांत दासे, व किसवी नरना वो कि नियन नाम प्राप्त को पृति की ? दिन नाव करा तो कही नगर जिना इस स्कृति की अवक --मूच का, क्या कमान की यह ने समसे इन्छो से विद्या एक करी भी क्षिम जान (सांत० (इ)—प्रेमक्ट, वह, वका न किस्ता

ं पना न सरफता

वना-वनाः

वर कोई, हर व्यक्ति वा सम्मृ। दयोव—स्वतः हुमा साकेम दुरी का पन्ता-कना सामेत्र--गुप्त-धाः

पर्न को देखना अह न देखना

करने दोनदान देखना, बात के मूल दक्ष न पहुँचना । बबान---बार्यल एकन मूल जूले, किरो मुक्ते बूचा, काली बनवार्या के के को बहा वह 'क्वल कविठ—धनाठ, ९६)

पने पर अपना साम विकलाना

तुष्क करते के बदके युक्तकान का महत्त्वपूर्ण अपने देती।

2-14 - अब उक्तर सन का यह र के रे तो कीत नह तहाब य साथ हो कि की धर (तहाह करेगी)। जिस तमह अपने असमे यम है कि करह कर दूसा महा संबंधा है। मो क्या प्रकार प्रथम प्रथम विकासका जातन हो के मिलिए । प्रस्तिक 200



स्वयं अपना अहित करना । प्रशोध---पाण्य केंद्रि वेदार्गत काटा । सुल गहुँ गांक ठाट् धरि ठाटा (शमक (स)---सुनको, धरेट)

पसे बाज़ शोका

पूर्व होता, वासाक होता । प्रयोग-पुष्प घोषपूनर जी पर्नेशास है दुधपाछ -दै० म०, ३३२)

परधार का कलिया

गमा ह्र्यम जिसमें देवा, ककता बादि क्षेत्रम मृतियों को गमान मंद्री । प्रयोग—विन्द्र कहन की हुए किएकी है, पाइन ह्र्य हमार (सूर्व साठ-स्मृत क्षेत्रक); बुद्ध म होना नी गरपर से भी अधिक करे करेने वाने को कीम विवयस कर बानी कर सकता है (सट्ट निय- बाठ सटट अप उनके गमों को देखकर नगर के गम्बर में बाबर दिन भी मानी हो गम (वै कोईठ-- बाठ नाठ, ५५); पर मैंने पायस का कोमा वाने उसे किया कर दिवापीकी—बहुन्छ, १३४

(सवाक नृहरक-पन्धर का दिख या हृदय)

पत्थार का विश्वलना चत्थार के कराते का पानी होता

क्तीर ह्वा का स्थान कामा । प्रयोग---वर्ग बादै वर-घर काके पाधर को भी विषयाड (वेदेशेक-हास्त्रीध, छप); रेजा रेजा सिर का घेजा ही गया रेख कवना प्रयव का पाणी हुआ (बोलक-हरियोध, १५०)

(ममान प्रणात प्रथम का पानी होना, प्रध्य का कलेजा पियलना)

पत्थर की सकीर

भदा सबंदा बनो गरनेवानी, अधिर । प्रकार वाले सिन है हर्मान की । नरको गंज पृथ्व कार्य यह रेखा क्षिय एक्ट्रेड की (विनयश—सुन्त्रमी, ३०), याजा आह्य में जो बाम कह दी उसे नुम पन्दार की जकीर सम्बन्ध स्थ० र —देमबंद, २२०)

पाचर के कलेजे का पानी होना

रे॰ प्राध्यत का पिप्रकार

फ्या को साम बनावा

रक्षीर व्यक्ति की भी तक बनाना । वर्षीय - व्यक्तिक बह कोड है कि कवर को मोन बनानी है, बेच की दूह के दूक विकासनी है (पत पीठ--पठ टाठ फ़ैठ, पूर

ज्ञाब तले का दश्य होता

प्रेमी निवास में बीटा कि जिसमें निवास न वा बके। वर्षोप--- सुरदाय के प्रमुजन मेगी, क्यी प्रभी हाथ शायर नर्ग भी सुरुक्षाल---सुर, २५३५

क्थर पहला

(१) भीतर होता, नव्य होता । प्रयोग—वन्यर वहे ऐसे भवा पर (राषाण ग्रंडाण—रायात द्वास, १२०); अहा अधि-एक प्रस्त् का रहे थे, अधुनों के कभी जुन वा रहे थे । भक्ष परिलाम में परवर पर्व मो, बादे ही वह नये नव के भर का सर्वता पुत्र प्रश्न को नुस्तानों कुम, सिट्टो से भिन्नों को तक्तानी पुत्र पर परवर कहा कोसाव--हिन्द्रोह.

(-) श्रीत परना

वाचर पर दूव अप्रता

- (१) बहा कुछ किनने या तीने की साथा न हो, नहां भी होना। प्रयोग—भान के जमाने में तो कन्यर कर भी काम जन रही की। जिसने कभी न कमावा का उसने भी कुछ कमा सिया (कुठर० (१)—यजपात, नश्र)
- (२) धनहोती वात या जनमन कान होता ।

क्यार बनना

- (१) वित-कृत्य हो आता, निरुचन होता । प्रधोन— कत्यक्षणी को बेचे इस पर परवर वन काई वी क्ष्यक्षणी— क्षेत्रन्य, एक.
- (३) बडोर बनना ।

क्षार जुदकाना

- (१) वडी दशास्य खडी बरनी । सभीय—मैंगा, निस् बाह्य ने तो नेरे बायने परवार गुड़का दिवा (१७० (२)— पंत्रवट, ३६५
- (२) किसो की त्याही अपूर्ण ।



मन्बर हो जाना

क्ष्यर ही जाना

(१) सन्त रह अला, बृष्य बढ़-बोम न राजा । प्रयोध— रेला पत्त्वर ही वर्धा (नदी०—अक्ट्रेय, १४४), तारा पत्त्वर वर्षा सुन रही की (\$550 (२) - अलपास, १२६)

(२) कहोर-दिस होता । स्थीत - मैंने वृष्टारे जैमा नेटरे आपमी अधी त देखा, किमकृत करवर हो त्योदान -देखांद (७६): हो नवे काठ, कम मंदे तत्वर अधात पामत क्षोता हम वृभक्षि-इदिशोध-इन्-

(३) कुची सामगी

पद्ध पर बत्दना,—सगरा

(१) किसी के द्वारा विकास है नरीय ने काम करना । प्रयोग-में नावी को मानक है, में उनके क्याए का वर भनेता (संसर (१)--असे स. १२१), तुम्हारे यक पर में यान गर्नार है (कानना-प्रसाद, क)

(२) किसी वह की मानगर । वयोग-कोई बाहवर्ष वंश लाने कोई विकास सामग्रीह नावें (पट्ट-आसमी, शह.

पद्म पर खगना

है। प्रश्न पर चलता

प्रथरण्या

(१) कृति करता । समीय-भागको तो मान्य ही हुआ होता, बरोता की में मूले अन्य भूत प्रकार (प्रेमा०-कृतचंद, १०६.

(२) निम्तव हो साता (माम) ।

पर जिल्हां पर चलना

किती के विकाद धार्न पर बहुना । स्थोप—मूल भी सायद प्रशास जी के पद-विन्हों यह बहुना चाहने हो (पैतरे— ध्वतक, बहुत मूले प्रापकी केवा में रामने के प्रत्यका प्रदेशक मही होया कि में सापके ही बध-विका पर बाजू (प्रेसाठ— प्रमाद, क्षत्र)

(अमान्यशान पद चिन्हों का अनुकरण करना, पदानुसरण करना)

पद-दल्लिन हाना

() अन्या सम्भा नाता प्रयोग—स्व कोचिन उन्हें सम्प्रसम्बद्धमान के उनसीय यह का इस तरह प्रदर्शनद होना न प्रयोग में दें। एसाई ३६

(र) दिन्हें के द्वारा समाया का बर्गांगद किया अना

पद-पद-पर

€± फा-पग पर

पद रज्ञमिर पर बढाना

बन्यत संघ्य माद्रश्यासम्बद्धाः स्टब्सः । स्थीय—श्री तुम भीवद्द्राष्ट्री स्टब्सः पद्धाः विश्व सिनु स्टब्सः गृनाई राम्स्टबस्सः मुख्यो, २०००

पनाह नाकता

प्रत्य कारण । यागा अध्यत में पूर्व प्रसाम तरनाह से है, नावन प्रताह दिव्योगित विश्वताम की (भूपन प्रसाठ— भूपन १४७

क्ने इसरमा,—सारामा

पुरतक पहला, यरवारी नवार स देखना (पुरतक) । प्रयोग— स्थानाम पृष्ठ म ४६ छन्द आर्थक प्रविद्या के पाने अस्तरम इत मृत्यूका रहे के (सुन सुन-सुदर्शन, १९६); ''साम्याप-सम्बूक्त के पाने प्रश्न आपने कनी घोटायें हैं हैं ,कुछ-पान पुन सम्बोत १७।

पत्ने रंगमा

नियम । प्रभोद-सम वाचित हतेह वर्ग वनधान मोनी वी नारीक में पेन के वेच रंगते बाव मी भी हम धोर कीर नव नहीं नहेंच जनमें (सां० मृठ-बां० मट्ट, दर); दर्शाप वह बराना के बच्च यम से नहीं, केवल वर्शियन प्रमधीन के नियम रन ने ही पाने रंग यहां है x x (मैसर (व)— प्रक्राय, २०), वेशी रचनाओं का दसवा महस्य नहीं कि वनके नारे में सांधक को रंगू (मारठ-सांगठ मासूर इस्ट.

पन्ने हाँद्राना देश पन्ने उन्हरता

वस्त्रवरा दोला

परम्परा पर जल जनना (प्रयोध—अभीक म्लदक्ष का हर चून चौर हर एक इस दिश्य परितर्गत की परम्परः दीवे क) एहर है (प्रयोक्त—हरु ५० हिंठ, १४)

पर कतर हाता

र्राप्त या बार रा प्रधार न पर क्षता, अध्यक्त हो जाता ।

प्रयोग---भी पहे आसमान पर उस्ते यात अनके अनर वद है पर (जुनतेफ--हरिजोध, १५)

(तमाः मृहाः—यर कट जानाः—हुटनाः)

पार्कील कवृत्रह

यसहारर का शक्तिहीन व्यक्ति । प्रयोग—और प्रकृत समार को तरह वह इन्हें अपना बसवनी राजने ने ध्योधाः प्रात दोस ६५

,गम । मृत्रः पर कटा अकृतर)

पर काइ का अलग हो जाना

गण्डम प्रमण हा जाना । प्रयोग — क्रांटा करा नवाने हुण, ६२ आवकर निकल जायंगे (मान० (१ — क्रेमबद ४), वस आवे ही, पद्ठे केल. पर कारकर, वृक्ष को व्यक्ति। वं अगुटा दिवार, अपनी याह कावे हैं .क्सा≎—स्प्र. ३१।

पर निकलका,—छमका

- (१) स्थम कुछ करने नायक होना । बनान---वक्षणक वर मही तिरुक्त हैं, राणू का घर हुए हैं मानक १ पेनस्ट, ६), चन्द्र में तीकी कुष्टि हैं कोशा की और देखा, माना कह रहा ता 'अध्या नुष्ट भी यस नग २ स्टंक चक्रस, १७९.
- (२) बातबीच-व्यवहार वे मुश्रर होना; शुनना ।
- (३) न रहन का सक्तमा जन्मन्त होना बहरून मा बुरे
 श्राती पर जाने का रंग-संग दिकाई देना ।

(समाः नृहाः---पर असना,---पट्टना)

पर-पुरजे विकासना

ध्र फड़फड़ाना

किमी काम को कान या बधन युक्त होन के जिले बहुते. 1049

Q P = 185

प्रयान करना । प्रयास — बहुन पर फेडफडाये **पर सब** स्थवं (देशानीक २)—बसुरक, ३२०,

पर मारका

- (१) मृत्यविका करना । प्रयोग—दीपावली का कोई क्यांचला नहीं उनके नामन को कोई पर नहीं जार सकता कड़०— दे० स०, ६२।
- (२) अवना, पहुंच होती । प्रयोग—बार सनते हैं परिन्ते की नहीं पर विश्व तक । विदिधा- वाले के वहां सब व परी सानी है (बीठ प्रेर) (३)—बारनेन्द्र कर्या), सी अवकार के मुनतने वर्णत, विभने यारी पंच बारना नहीं भीता अ अ कलाठ—यहा, १३५,

पर लग जाना

- (१) बर्व्या उपना अस्ति पणना । प्रयोगः न्यशे कार्गी को नय गर व पर कृडः --विश्वन, ५४) ध्यन्य के बेस पर मग गर्व ऐसा भाषा (वोटी०--निराक्ता, १३६)
- (२) मेची में बागान
- (३) सरक्षी होना, फैमना ।

प्र उपना

🗱 या निकलना

पर-लोक विगडना या विगाहना

त्य कार्य करना जिससे अध्यक्ति न हो । प्रयोग-नगरिन इक विनारिति नश्योक् (रामक (अ)--तुकसी, ४७१)

प्रधानीक सिधारना

वरछर्षः ॥ पहना

तर्मक भी धमर व होना । अयोग—मू १९, नानों, पड़ी आज नर सभी न हुन्द की परदाई ,चक्-०—दिनकर, १६०)

परदा जुलता

क्रदा जोतना

विनो बात प्रमुख महाया— मेट उड़वाटन करता । प्रधीय—इस निरु तक प्राच एक मुंबक में बारहों का मोह पहेंच कर उसकी कीति का करता मोम दिया तो प्रमुखी चेतना देंसे जान उठी सान्छ (१)—प्रेमपद, १९५७, आग ही प्रस्में हाला से से हम पहारा प्रचा बीले (मर्ग०—१६ मोड, ७३

(भवाः मृहाः -- प्रद्या वडानाः -- फारो करना)

परदा इका दिना

बाम्सविक विकति प्रयट न होती । प्रयोग—देन्हें बहा रहता हुता, सामा विजया दशा, परवा दका एह सावना १९९० (३)—प्रेमबट, १६

परका वूर होता.—कात होना

रहस्य को प्रवर होता । प्रथम—नेरे स्थान में औरनेर का रकीक दिश तथ के कारे के कामना मानाय को नर प्रका काम दूर हुया (राधाव प्रकाल—राधाव देखे, ६९१). प्रशासाम हुआ । यस नष्ट् (बीटीव—निरामा, १९८)

(बमा॰ मुद्दा •---वरदा इटला)

पन्दा न हाता

पीर्व दुराव या सकीभ में हीना । ध्रमान -- तम नक प्रकाश और बाधा के बीच कोई बग्दा के बा (मानठ ३) -वेसपट, Ek

गावापतका होना १- पादा दूर होना

प्रदारकता था होता

(१ क्षिणव रक्षणः दुराव रक्षणः प्रयोगः सुन्तृ सूर हमकी कह परणः हम करि हीन्ही वार सर्व सूर्व हो। सूर २३५६ देवा तमन मुस्तमे कथी परदा नहीं रक्षाः। इस समय मा १९६२ हो करना भारतः १ नदीनवेद ६२ कुमार सर्व विकासमाध विद्या है वस्सा उत्तम परदा रक्षण की भारत्यकार नहीं (बक्षणः का प्रवृद्धि पूर्व इसी सरह तुम और देवा माद माई ही दुमन बमा परदा है कसंत-देशबंद, (हुद्द)

२ - स्थिया का सम्बन्ध न होना।

पादे की धोट से शिकार करना

(१) विश्वकर किसी के विकार कार्य करना, मूरा काम रूपना। प्रयोग-सारी वृष्टि में दह केंद्याओं से भी गरी होनों है कार्यक्र वह करने क प्राप्त से विकार केंद्रशी हैं। गोदान सेन्बद १५२

(५) सिप कर किसी पर बार करना ।

पग्देश में क्षाना —लेना

दूसरे नाम था सहर में बनका। प्रयोग--- नू सप्त मनि ताकरि प्रम करदेस न लेई , व्यट---जायसी, देशकि), वो विश काम नहें परदेशा, ग्रीट करें, निह यहें करेंगा। गुठ निठ---वाठ सुठ मुठ, 256

परवेश केना देश परदेश में छाना

परनाले का पत्थर बांबारे हैं लगना

कुन्द व्यक्ति को सम्मान का स्वान सिमना (प्रयोज---यवर रिया हुआ न होता तो तो जेवी कमकान को केने व्यक्ष काना है परकाने का परवर बीधारे में लग समा सुठ पुठ-- सुदर्शन, २०१०/४२

परम गाँत पाला, पर के अधिकार होता पद पाला

पन्म पद के अधिकारी होता देव पन्म गति पाना

परम वद देना

धरिन इनः । प्रयोग -रन हरिन राम परम पद दयक रामक क्षेत्र -सुनको १३७



परम एड् शाना देश परम हित चाना

परार्था पादा पाना,---समना

दूसरों के दू:भ की सम्माना । प्रयोग—सामी दूस कीएए हो बीरा । बेहि सुनि के बामै पर पोगा (पदo—जावसी ३१/२), कामामय रथुनाय गोमाई, डेनि परदर्शांड पीर पराई (राम० (अ)—नुसमी, स्ट्रां

पशयाँ पंदा कामा वै० परायी पीडा पामा

क्राये हाधों होना

हूमरे के बहा महोता, प्रयोग अन अने ही हाय मही और के यह पारव हाथ महोद न अन कालें हिस्सीय. १२६)

(छमा० मृहा०—पराये वंधन के नीये) परिश्वों के पर कतर देना

अश्रमत बार वेना प्रयोग—पर कतर है दिस परिन्दों क हाथ हा तुम उठे नहीं किस पर बोल्ड -हिंग्झीय १७४

प्रविदान्द्री पर बसला

परायशा के सम्मार कार करना । प्रयोग-वृहिती परि-पाटी चली, नई चले क्यी जाजू (पुठ साठ-वृह, २०४५)

परिवार बलावा

वृहरूको का भश्यान्यायण करता । प्रयोग मा सपूत परि-भार गुलावी में यो करभी जिल्ह दनहीं (कु साठ-कुर, भूष्युक)

र्यास्कार दुष्टना

परिधार के लोगों का धनग-जनन हो जाना। अधीन— पह बुनिया किया प्रतामों से भरी है जिनके इसाया पर किया। निम्मी है, जिनके प्रभाव में परिचार टूटन हैं, जिनके कहने से हस्वाए होती है (मुटेंड-माठ धर्मा ३२९

परोक्षा धाल होता

प्रस्तात काम हाना । प्रयोग काफ बार दिशाव किनाव देन ज तो प्रांश कृष नाम पानुष हो काम कि अमीदारी पंराका पान नहीं है प्रैमाण-प्रस्तवेद १३%

परामां चानां शासने से बनां जाता

,मवान वशान-परोप्तां धार्टा सम्मने से छिन जाना। पद्मन को निल की ओड करना,---गई बनाना या होना

क्यों बात की तुष्ण करना था समझार । प्रयोग—को बात्त कामा के भागक विश्व वेश्या के पहाड़ को तिल की बार कर, बाव पुट तिल से दृष का पहाड़ बनाकर विश्व हुश्य पर रकता चाहते हो ? (क्लाo—46, 44); होत का मुख्य थी प्रयक्त दिकर हुना था गई संशोक गुह उठ

(थ्याः नृहाः —च्छाङ् को तिस बनाना)

पर्यंत को पुल और धून को पर्यंत बनाना कोर की बढ़ा और बढ़ को दोटा बनाना। प्रयोग—र्गत मुनवोस को बले न कार जो करत परवय न सार प्रांत प्रशंब प्रकट ही (कतिं0—पुलेशी, १६४

पर्यम को गई बताना या होना १० प्रथम को निस्त की ओड करना

पर-पन युग के समान बानना

समय किसी प्रकार न बील पाना । प्रधान—के तिन दसा वर्णत वह सेखे, प्रसन्धन पूर्ण सम चात (प्राः छा०--सूर, प्रमान

(बबा- वृहा: चन्नचल आगंग होता, --लगता)

करक उठना या उठाना

प्रशास देशा । चयोग्य—ये त तच भी पशक स्थापन हम पत्रक पर समार वनक राम न चीलें≎—हरिओध २१ रीम इस रिक्सची अनक है जो रह बया उभी की है नहीं रहनी प्रशास (कोला)—हरिसीध, १८०।

एक्ट्रक की और

नजर से हुए । दलोग --नमक भीट पश्चन नहि मोदी, कहा इ.ही तर्गह ज्ञान (सुलसाव-- सुर प्रदेश न्म दिन दिन दिन कैमें करें । पलक आट भय दानी करें चेम साव--संक्लाव,



115

१०३); बाल से बुर श्रद करें कींच यह गरफ और सह नहीं मकत बोचें:--हर्रफोध, ३४

पलक के मज़ान बंग्न जाना

सस्तंत कम मनग हैं कोई काम हो जाना था समन बीन भागा । हयोग—राम भरत नुक बनन समोनो । निनि इपनित्ति पत्रक हम बीतो (यमण जाः—सुस्ति), ६४००

एकक बांहना

म्हान देवा, शास कोलकर दणना । प्रयोग —एन दिनों हो है विश्व कृत केलनी वृत्रमद वस ती प्रकट हो जोस दे कृतहैं≎—(दिनोंद्र, १)

पानक अधकते

शरवत भाग समय में---वान्त करने । त्राभेग -- कीट ही पर तो पनक अनकते बीच भागेंगे (केनच---वानक, २४).

(मण : पृहा :---थनक निरते।

पलक अपकर्गा

- (१) नीद वाली । प्रयोग—चार विश्व तक प्रमक नहीं। प्रती पुंच कहा0—पुंचेती ५०।
- (२) सम्बंग होती । वर्षात—विश्व की चलक म चलकता क्रोब विवाद उससे और शीने (वर्षेनेक—बंठ १७०, १९३)
- (१) भग के कारात बहुगत होती।

पञ्ज बालना--पांचडे विक्राना

विशेष अर्थन देव है क्यानां करना । वयोग—जिन पोती नाई के लिए राजा करक भावने विद्याते थे वह विभागी दर-दर दिए गूरी है होसीठ- यूठ दर्भा ११३ पन-पन जिन प्यांग के लिए हैं विद्याती पूर्णित प्रस्ता के पावन प्यार-दाश विद्या-प्रशिक्षीय २३४ औं उनके पर भावना प्यार-दाश विद्या-प्रशिक्षीय २३४ औं उनके पर भावना रचना नहीं तो पनक के भाव है क्यों अपना (बोसाठ-कृतिद्योध, ५०)

(तमा व्यूहार -- एन्डक विद्याला)

पलक न पड़ना, अ हाजा

भक्त हेक दशना , प्रयोग —पान्त न गयह भकार यह शी सबसोकत मोजन न जवान सुरु सारु-स्पृत १७२७ - सनह सकारी पान वेटी जिस जिस सीध जद ही कियन की पलकी तामावकी कविक तुसको १३०

पारक म समन्त

- (१) गीर न जानी । प्रयाय---प्रवर्ण न अनं, पुत्र लोगन की पुर मांगन की वश्चिक समझे (प्रव्यक--देव, प्रद्र
- (-) शक्टक देखना । प्रयोग---माथ, गुरहारे छ्या की कही, र्थान यह परेच । जानी शामत पमक दूव सामत पसक यको व निहारो रहनाठ---विहारी, ३९%/: बसकीय सरी, देखि तमके तकन यन यहारे कालन, यही यहारी विवृधि की (का रठ----वैहार्यात, ३५)

पॅलेक के लाका

देश पेलके स प्रदेश

परक पांचडे विद्याना

रश्यालक इंग्लिंग

पनक जारते

पृथ्य । वर्षाय-जन नमें भाग नहीं मुख्यों है, होता पंचा नहीं माता । जन कि पंचा मातों कात का एक पंचा है। अपा सम प्रमाण के कि पादा मात्र मात्र का प्यक्त पात्र है। हो मान्यों क्यांक-पंदा प्रमाण का कुछ पंचा मात्र में हो मान्यों क्यांक-पंदा प्रमाण की का पंचा मात्र मात्र

(समाक मृताक-पानक न मापते)

पत्रक बारशा

- (१) प्रथम करन जा पर विभाग । प्रथम पूर्णि मी शाम सामा कम नेपी । प्रमास म कार पेम विश्व कामा (पद0— अवस्थित १९० जामार्ग उनक पारना भूग गई है कराए— पण १५०
- (२) आकी ने वंकेत करना ।

पटक समना

पलक-बाजा

धिरकर द्राप्ट विभिन्नव । प्रयास स्माने । सं सुरका पुन्नाव के

भाग गर गरणामृत नगरम ही के में पश्चनाओं पूज पर्ण, हो एक पश्च एक्से (भाव र्यंव १)—स्वतिन्द्र, ३३८

पलके विद्धा होना

ह्दयं में स्थापत करमा । अयोग—इनका हु उत्तर्भ वाके सादये हैं निम्नो हुई पलके (भूभतेण—हरिसीध, १,

पलके भारी होता

नीय मानी । प्रकार---वासिय इसकी पत्तक पारी हो जाई धिरती०--विकारित, ७६.

पेळकां का देगा देता

नीद म भानी । प्रवान--- नूरदाल बाही से यह बए, यनक-निह् इंडि दमा वर्ड (स्० साल--- सूर, ३६१४)

पत्रको पर पानी फिरना

रोना काना । मगोन---रोकड़ि रोच भरे दुन तेरे, फिरत पत्रक पर पानी स्थि साठ--- छु , बढ़ा

पलको पर रखनाः ---लेता

अभ्यत्त बादर करता । प्रयास केत्रस्यो हृदयन्तन्त्रसः तृत्र हो जो तृत्रका पत्रका पर स्वत्रा प्रदेशक हॉस्स्रीय, ७० , ओर उस क्या कम सृष्य है । मर्गनक पत्रका पर उसे हैं (धरत्योक-विक्रमक क्या के नुमर्गक-हरिजीय, ६)

(ममा॰ नृहा॰—यसकी पर विद्यानः)

पटकों पर हेना

देश पालको पर राजना

पलकों से पांच आहुना

बहुश धारर करता । त्रवीश--वर्षी विठा में उन्हें न साथा कर वर्श करता स, न पाव रूप स र वील्य हरियोध ४६

ঘূতত সাকা

मुकर जाना । प्रयोग—दय समय मुध्ये बनमे बनी निता अपनी बात जोने भी है । सोन कड़ेने, बाठ कहकर पनट गुटु (एंग० (१) —दोनचंद, १३४.

यस्रहा आग होता पहा बदाहोता.—अगरी होता वयस य तिर्वार भव्द अन्य - प्रचय-कद्रश्य उपये थी

110 OP -185

^{गमाव महाव} पायका ऊंचा हाता - अहसता)

वर्यामा देना

श्राम कवाना । जमोम-कहै कबीर मृत दिया पनीता, यो कम विरुष्टे देनी कबीर प्रकाठ-कबीर ९१

पलचन खगना

प्रशास का का वा प्रयोग सन नहां वृष्ठ इस्प अपनी विरह का प्रनीवन नवा नवाया है ? (परीक्षाo—मीठ दार्थ, ३३), तेजी-अभागी ने भी देखा कि यहां विश्वता-मृतना कुछ नहीं दीनवा, करों और प्रतेषन नगने का अस है (प्रेमाo—सेमबंद, २०६

इस लग्ह एकरक के परमा नहीं काड देंगे (मा—कोशिक. २५२)

परना भार देगा देश परना भार कर भनग होगा

पत्ना पकरना

नान वकाना । प्रयोग—भामह, द्ववट वादि हुत धार्यान अध्यासीने वेरियम्ब का परना पक्ष असकारों की अधारता दे (विसाद (१)—शुक्ता १प२), वस से हमने वसे छोटा



कला पर होना

सीन मुख को पान्त करने की चेच्टा की सभी में यूना ने इसारा पाना एकड़ा (मिला०—कोलिक, २२०): निका ताला और में किसका पाना एकड़ है जाए गाए (१)— किस गोर, २०.

क्रम्बर कार होना

नाम धन माना । प्रयोग—जनर एक गरीने मी यह धीशन शो तो पत्ता पार 🖟 ,गरम—प्रेमकट, ९४

यसमा बहा होता वे» क्लडा भारी होता

पतनाः सारी होना है॰ क्याहा सारी होना

पत्था इसकर होना

मुक्त्य क्रम होना । वर्गोचे---एक उत्तर कल्य ने वनिया का बन्ना हल्या कर विवा का शोधान--वंगकंट १५०

पहले पश्चा

- (१) विश्वात होता। प्रयोग---वक को बल्लाह से यही दुवा है जि मेरे बीचे भी कहा कियी वके बल्हबी के क्ल्ब एक आब (अमेद्र---फेनबंद्र, क्ष्य)
- (२) विश्वे साना, बारन दोना । प्रधान---वश्वद्रया योर इनाम के स्वत्र भाई नाइन के वल्ल अप - अपनी सवर --यम होत, नयनवासा के कृद्ध भी नहीं बहुता वस्त्री कुट्ट०---क्षमान १४)
- (३) गमक में पाना ।

पाले बाधना

निगमें किया जाना । प्रयोग---विकास में केशी व्यक्तिका-वाची कीर मनुषों का वर्षनान्त करने के नियों कुन्हें केश वाले क्षेत्र दिया है । (शंगठ (३)----हेमकंट, १४६.

पथन का भूमा होता

तुम्माराज्ञान रिक्साना उत्तरार नहीं कही सकत्त्र की भागल को बच्ची नाल हती आधार मुख्यां का मुर्ग्यांच

प्रमु होता

प्रकाशिका प्रसानकाता किन्द्र होता । प्रसाद हता सर्वाका क्षेत्र स्वत्रकास कल्याना है पर क्षानकस ह प्रमुद्दे भागप्रिका स्थानकात्र ह

पानकी दाली करका पर होता

न्त्र परस्ता कर करन साला । प्रशेष—को यना ही बीच रीका किया गर्थ की वर्ष प्रश्नी बनार हीली लही बीकाय— वर्ष और्थ, २२०

प्रस्ता करकता

(१) यसन प्रमाह हरेगा. ओधा कानर (प्रयोग कनी गहें हम बहुत करके परा जो न प्रथमी फरफ उठी मेरी (बीता० क्-ह्यंत्योध, २२६०

(२) पवदाना ३

प्रमाजना

दशक होता, कहोरता वं धनी होती। क्यान-गीरर वर्गरम दुनी प्रमेकं भेगन गीरर जीम यां भीते (पद०-क्यामी, भूश्वा); 'में ब बू दनी भी मानव मरमा, बताप नई भगवा कु प्रमान-क्यांत. १०६), नरमी के निम हहरे, बाग पर प्रमान-क्यांत. १०६), नरमी के निम हहरे, बाग पर प्रमान जात हा गीर न जात्या / और बहा मध् व प्रमीत्रमा (प्रव प्रांत-कि मान क्यांग / और बहा मध् व प्रमीत्रमा (प्रव प्रांत-कि मान क्यांग / और बहा मध् व प्रमीत्रमा (प्रव प्रांत-कि मान क्यांग / और बहा मध् व प्रमीत्रमा (प्रव प्रांत-कि मान क्यांग / क्यांग क्यांग व प्रमीत्रमा (प्रव प्रांत-क्यांग प्रभी विक्रिक्त मानविक्त प्रमानविक्त प्रांतिन प्रमुख्य क्यांग नगर म प्रमीत्र सानविक्त प्रा-भीवव्य (प्रांतिन

वसीया प्रया

कार्यत क्षेत्रवित होती । अवाय —देवल काँच बाहुदर तम कार्यद कुँद ६० व्या० —६८ ४४१३: पून्याम् के वसीना बुट बका । विकास भागद को भी बाह्य, क्रम्यू बहुा बाल बरावम भी बांग म की कांग्री०—वृंठ देशी, इस्तूर,

(समान प्राः - प्रमाना धानाः)

प्रमोता बहाना

वर्षिक वर्षिक करना प्रदान और इस्त करना ? तथ विद्या हु मार्च और एवं नसीना क्रिम्मिए करावा है र भीरत अगत मासून १०३ किया द्वार कृषि म इन्ट्राव किनना प्रयोग क्षा कर हुन कृष्णा गूलेंगी प्रसाद र पृत्रेश वक्क उन्हरू

पर्काने की कमाई, कोई।

परिवास के काराया हुंबा एवं । संपाय—हुंबी विहास में गुंक्तुरा सहयान और संरक्षण और सामस्वकता होने कर गुंक्तुरे हामों का परिचाय और कुन्दारे वर्णान को रोटी संसद (२, —समार्थ, ७० , यह भी अपने वर्णाने की काराये सामें हैं, तब भी अपने प्रमीन की काराई कार्यन (तोसान—सम्बंद, १३२,

पेलंकि की जगह जुन बहुउना

सी बीड़ा उपकार करें उसके बंदले से बहुत इसकार करता। प्रमाण और वह तुम्हार सार्थी नेवर हो एवं हा पहल जरता पूर्व घेर पहले व और त्यहार प्रमान को जनह त्वन प्रश्न की तैयार रहते वे स्थानक (१)—वंशक्त १०): है वर्गाता वाति का गिरता हहा व बहा अपना निकान है कर पुनरीक —हरिसीध, १३२)

पसीने की रोटा

रे॰ पर्माने की कमाई

प्रकार की बाल

वही ग्रहनत पाना काम - प्रयास-चारेर लगा वर्धान की कालु है (मान्य (१)—केमबंद, १६)

प्रसाने-प्रमाने होता

भव, धवराहर या जारीरिक परिधम के कारण बसीना हो आना । प्रयोग नकार प्रतीय स्थीन हो गई मृण्या पू व समी, इद्दर बृदा प्रतीय स्थीन हो गई शिटीय — निराला, ७)

पान्त शोगः

बहुत सक जाना, क्यांन होता हतर जाना (प्रयोग---पु=नी पन्न जैसे कला ही गये (कुबी०--विशास), इस्र)

पहरादर्श देना

रापत। की भर दला । प्रयोग करिय विश्वति पहिरासीन रीत्हें (सम्बठ (बाल)—सुससी, ३६०)

पहला सीदी

दियो काय का पहला करण । प्रयोग-इसलिङ विश्वयो का बोक्युवर्गी होता कुलीजना की पहली बादी है। यह स्थि बाठ भए . 14)

पहल् बन्दाना

- (२) बेबाना । अन्तरम मारवार्ती बोनो में ''बाती बोतो है ''इंबर बर नाम जनर कोई व व । स वहत्र बनाव हुँच, बेबबान कृतियों का बरव मनहृष्ट स्थाने हुँह सलाव बत्त का दीवित (प्रवेश के पर्द--पट्टमेंश समी, ३,
- (२) गांच देवाना ।
- (1) वी पुरासा ।

पहाच बेधा विश

बहुत तथा दिन को किसी प्रकार व बोते । प्रयोग-स्वहाय वैक दिन बीतते ही न वे (ककास-प्रकाद, ४६

पहाड बाडा करना

विष्णुत क्य उपस्थित करता । यदोल--देशर पहला वा ४ ४ व) पृथ्विता उपस्थित को एखें पृथ्व करते थे लिए दुवितास, मनावास्त्रीय और होंच विश्वान विश्वय कर बानव बारव में प्रमालों का ऐसा पहार बहा कर है कि उसकी एक-एक पृथ्वित समार्त हो बाद क्षेत्र (२)--जहां में, १४४

पदाय कहा होना

बड़ी करावट होती । अगोन—काने बड़ने में हमारे सकते से तक बड़ा अपने पहरत बड़ा हुआ है (सड़ नि०—बाठ सट्ट १४०

एट्टाइ स्टॉ

- (०) विशास बहुत बार । अयोग—सो दूस केहिन से परा बहार । सो संबंध सामृत दिए आक (पर०—सावधी इत्रेष्ट इत इप्रश्नातिक से पूर्वी जिनकी सभा पराह गो इसर परी है प्रभाव असंबंध न्द्री कर प्रशाह मां पान बीन को बाक है (साकेस—पुष, २३१)

पदाप्र से दक्त केता

सबरदम्य में शुक्र दिना करना । प्रयोग -पूनमी सुधासन



ने पहलेकाओं की पहले जुनकी के बाहे लक्षण के जिल जिल्लाका महेका कीर पीक्ष युवाकर की बहाराओं के क्षणांचा का सर्व जनाने में पक्षण के टक्साना बदनेत गुण निक—साथ मुख्यूण प्रश्न

पहण्ड हो जाना

(१) बहुत क्या हो पानर । प्रधान—एक यस है पहरद हो जाता देवने के नियंत्र क्यो कतके ,बोलक—हरियोध, धुदारं

पहुंच हाता

पहुन्त की समय है जो प्रभाव कर । प्रभाव कर के तम समयों परकार में अन्यों पहुंच भी (मुसेक-स्माठ वर्तों, ३३१); स्वराज ही माने कर भी भी प्रारंगायल की पहुंच भी भारत में सारहणीं भीर अन्यान मंत्री तक नहीं रही किर भी प्रमान के पहुंच की भारत के सारहणीं भीर अन्यान मंत्री तक नहीं रही किर भी प्रमान क्या कर नहीं हुआ (दू देक-अंग नाठ, ११)

प्रकृता पेटना

एन के किए के प्रश्न का राज मा का प्रश्न पूर्ण महाराज, हम बाधन नहीं है, जो बुरमी-काही, तंती-बजोली, बजनी पूर्णियों में पहुंचा पंता है (मिली) निर्मात, का

पर्वचा हुआ द्वांतर

. हे) देशका का स्थारण हुन्छ पूर्ण प्राप्त वा विश्व स्थानुष्य स्थानका हो । प्राप्त वा अध्यानका ना का बहुत सहस्य हुन सहस्य विद्रार्थ संस्था प्रमुख्य के युक्त प्रदर्भ केशी नक

417 (

पहुनाई ठानता

किया करना । प्रमोध किन प्रेटन से यह कर पर-्

पहुंचार विधि हाता. **ए**० सा०—**स्**र. ४५०५) (तमा - वृहा**ः—यदुनाई करना**)

पांच पर

नव का, तन-मायाराय को । अयोग — वीर तो रिस्न मार्थ भार गरा । जोद निकार याच भाग कहा पद० द्यावसी. ३५१ : भी पाचाद यत साम नीका (राम० :अ, -चुलसी, ३०६ : बीट की बीच गकाचू न पाच को शासत साह भए वर्ष काद कराव पठ— केंगड क

पांच का साम नगाना

योह को बहुत बहाकर विकासन करना। सरोस—याब का बात बगरको, कुठी कुठी के बनाको, आदी जो तनह ११६ तो को अब काह्य पुरु कारू- पुर, २३४२

पाच का सात सुनाना

वा भोता पुरा पह जान सांधक बहुता । अयोग-व्य पाव की बात जुनारह मृहहा मेही वहा जिल्लात में काकुर--काकुर, १४

पान्न क्लक मे

तुरत । प्रयोग---परमे इयाम, सामग्रेट सुम्यास, विभीपन रियपाल की भी पान्यों प्रमुख में (क्षण to--सन्तपति, प्रथ्न,

वांक साम म भारता

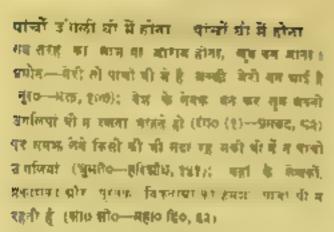
कोई वृद्धि काथ व धावी । प्रशंत—किय वर्ष नारि तर रख पान न पार्थ नात स्थापना स्थापना सुर ३४७४।

परंश्व भारत भूत जाना

यालाको भूव वरनो । प्रयोग---पूर स्थाम के अयुर अवन भूति अन्यो गोहि परच भी सान (सूध साध--सूर, २०१६)

वांखबे सवारों में दोता

श्रीतर के बाद भवना शाम भी स्वर देना । प्रयोग—जाति के व्यवह स्वादों में वीर उनम जिल्हें कहें दरनर वसनी मोट है वर नथ उनस्थ पर चुनते। अभिक्रीध स्थान दीक पीट सर नाम न क्या जना पर है। इन विधा भी र में स्वयं म वजन कर न नव स्वाप्त से निजय क्या गढ़ मेरेक न पुन्त के वजन कर न स्वाप्त से निजय क्या गढ़ मेरेक न पुन्त कर कर स्वाप्त से निजय क्या गढ़ मेरेक न पुन्त कर कर स्वाप्त से निजय क्या गढ़ मेरेक न



(समाव मुझाव---पांची जंगका तर होता)

पांची में में होना दे॰ पांची उंगर्जा थी में होता पांच : देखिए 'पैर' के मुहाबरे

पांचडा चडना

मनारोह ए चन्त्र क (२० १ पड) (बदाया जानः) प्रयोग परत पांचवे बरान अनुपा (११४० (बाक)—तुलसी, ३३८)

पांचड़े चिछाना

यहन आवर करना लानिए करनें। । एक्क जरों न उहन आयभगत की । जमकिन और फिली में कारके में किछा दियं (मृत्य-वृ'o समी, १२४)

पाणकार होता

महत्वपर्ण होता । यगोग—सगर कारण काई उन्हें गणपर मानम हुआ नो उनके पाल उत्सद कर तब दय वनी है कुरुलोठ—निम्ना १३४)

पायल होना

क्षिमी चन में मन्त होता । प्रशंस—गोने के लिए सब पानन है (कामना—प्रसाद, ४९)

पाटी पहना या पढ़ाना

रे= पट्टी पढ़ाना

पाडी पारता

वै० परिया पारना

111

O. P -185

पाठ पदाना

नकोरत पान। । प्रधार जुस्त है बहि से उपने कोई 'केस्थ' परदे न पाठ पदाई 'केस्सर ग्रह्मक देशक देशका हैपदार ही नका यह पाठ रण पहले पहें कर क्या है बाल बहने के सिसी 'कुसरेक हुई सीधा प

(बराव मुहार---पाठ साम्बना)

पाठ पदाना

रे॰ पट्टा बद्दाना

पर्गण-प्रमुख करना का होता

विवाह करना का होना । प्रयोग—पानियहान के कीमा बहना (रामें) (बाल)—जुलसी १९४); हमी वक्स वरी प्रथाव के बनका वालियहरू हैं। १३४ (पह्न प्रशा— पह्नम् कर्म ४५

पान पान

हर बनह (प्रयोग---शाल-यात वृंदायन कृष्णे कृत गरी सब हेरी सुरु सारु--सुर श्रदेष्यक्ष), बन-बन पात-पात करि बोधान व्यारी व्यापी कह नावें (बारु 60 द)---सारसन्तु भ्रदेत्

पांताले तक जाती

बहुत नीचे चने आना । प्रयोग — जन का वहीना का, कृतो का पानी पानाम नक चना गया का प्रशान प्रेमेश्वर, १९०

पार-पंछ बनना

भोडे जाता। समोम—नीर के ही वहीं है जिनके हर पर महारूता का मनत पहला है, व भो शीप हार है को अगहत-भवको वर और प्रतिकृत विधि के पारपीठ वस जाते हैं गुरुश ग्रंथ (१)--गृतिरों, २७%)

पान की तरह करे जाना

बहुत नेका-करून होता । प्रयोग---कम्बा को पान की तरह फेल्डी रहती वी (मोदान-क्रेमक्द, २७

पान देगा

विसी बाब को काने का कामित्व देना । प्रशेष--- प्रदृष्त साजि सिमार समाहर चसुर कीस है गान पहार्ट सुरु साठ---सुर, बहरू।

पान-पत्ता

- (१) सामान्य कातिर । प्रशेष—पान क्या के नित् बीट-महर काबू वैवार है (क्योध—रेष्ट्र, ३२२)
- (२) तुल्झ पूजा या घेट (

पान पर्ने तक सामित होना

दात-पानी बद होना

यान-कृत के माधार पर रहता

बहुत बुहुधार होता। प्रयोग---श्रति नुष्य को यांत गुहुबारा। पान पृथ के साहि बधारा (४६०--अध्यक्ष) भारत)

पान-फुल लेक्ट पूत्रमा

बहा बारर करना : वर्षात-न्यूड नवस मो कि वहा नुस बहुत कुल ने पूत्र न बाजोगे (कर्मo-फिक्क्ट २५४)

चान कुल समस्ता

बहुत सावद सम्यान समझता । जयोग—जन नौगो के कट् भारको को पूर्व भार समझ भिया, मृत्री को अपदेश देने सती (प्रेमाठ—फेमबद, २५-३०)

वान केरता

पान कार-मीचे बरना नाकि मडे मही। प्रयोग--- मूमन जर्मन कियानू से देश है पान है फेरन बीरंग नृजा (मूक्य ग्रंडाक--- मूक्य, २१९)

पानी उत्तरका

(१) प्रस्ता आसी। यामानित जोता। प्रयोग—हेनले सार्यामधी के सामने उसका पानी उत्तर गया। शास्त्र १ प्रेमेचेट, सम्भ्र गानी मह्हेबा का पानी उत्तर सदा। सीटी ० -निवास। ७

- कहर चरा हो नाने पर सोहे की धरम करके उसका
 मरापन मिटाना ।
- (३) वरीर के किमी बग विशेष में जस बर पाना।

पानी उत्तरघरतर

वेशकात होना । प्रयोग---अगर अपनी कुशम बाहते ही यो अन्ही पेनी कहा ने अपने हो नहां लीट नाजी उसके यानने मान्यर क्यो अपना पानी उन्तरकार्यात (१४१०---वेशनंद, २७४

पाना उनारका

भरमानित करना क्रवत क्राइश्मी । अयोग—उसने कृद्ध आने पैसो के लिए एक अर्थिक्त आश्मी का पानी उतार निवा मिनिट (६)—क्षेत्रबंद, १७); उस आश्मी का पानी स्थान वया—यह बहुत पूरा हुआ (सोसी०—द्वृ० वर्षा, एक , योग पानी यथा नवा बयना पर्मे किसी का उतार में पानी (संस०—हरिजीध, ६६)

पानरे बर देना

रिनों र निन्त हो हहा कर देना गुस्सा उनार देना, नरम बना देना । प्रयोग—में लीचे दक्क हुदय की भी पानी कर देनी हैं (विप०-प्रेमों, यदः,

पानी का बुरख्या दोना

शना-वन्द वश्न होती । प्रयोग-वह तन वस वर बूद-वृदा, विनवन नरही बाद (वनीर इसा०-कबीर, ५३); उनको सदाद पानी क बूगवल थे, जो इपर बनते हैं उपर दूद बन्ते हैं (सूठ सूठ-सुदर्शन, १४७), नाव बन्नी मादत मू को मूले हैं बहुद 1 किमलिये दलके सूख बनते हैं वारि-बक्ते हैं (धर्म०-इरिक्षीय, ३)

(नवा॰ वृहा॰-पानी का क्वाशा होना)

पानी की जुपरी होना

नत्त्वहीन या गहत्त्वहीन होता । प्रयोग---ती शनि सथ पानी की कपटी को कॉन शनियन दोहू (सूठ साठ सुर प्रश्नुक)

यानी को तरह बहाना

र्वचागर नर्व बरता प्रस्तात कुराना । प्रयोग फिर रवा या पर कार्ने की आर्थि करने समा राधाव प्रेक— सधाव दास ३६३ क्षत्रकार में महा विश्वत वे सब हुख किया कराया तुम्म पर न्यांबावर थन करके वानी मुख बहाया (नुरक्ष-अक्ष, १२५); बनर मेंने मुना है कि वह कड़में के बहा जाता है और यानी की तरह के क्यम बहाता है (से कोटॉट-अठ नाठ, १५३)

पानी की तरह साफ होना

एकदम स्पट्ट होना । प्रयोग—नात नानी की तरह नाक हो गई कुलोo—निरास्त्र, ५४)

पानी के मोल

बहुत शस्ता । प्रयोग---पानी के राज मेरा नृद क्या नवा (तितली---प्रसाद, १८५

(नगा० मुहा०---पाना के भाव)

पानी को भी न पूछना

- (१) कोई प्रदेश न देना—तिक भी पादर-मान्सर न फरना । प्रयोग—देशो नृत्तारे प्यारे शास की रूप दता हर रही है काई उस पानी का भी नहां प्रदेश सान्छ १ —प्रेमचंद्र, १४१,
- (२) मेशा स करना । प्रयोत—और कोई पानी तसक का पृष्ट्य वान्य वहीं न्यवे सुरमा का काम है कृतपा काष्ट्रमा (बु'दे०—फo माठ, १९६०

पानी क्रीना

इत्तान कद करवाना । प्रयोग धन्मा रिवर के निमे वृप रिहें । वयां अपना पानी भाग को रहा ही ? मान० १। --प्रमधंद, १४२); क्यो बनका है वनुभ मंत्रा कर वानो विकास पहा सम०—हरियोध, २४ , प्रयोग म ताना नह सीप्रों, कुरके हे अब कही निकल (नुर०—एक, ४)

पानी बदवा

- (१) मीन्त्रं भागा । प्रणेग है यहर्गलमा मुन्दरी पर वित्र दिन पानी चन्द्रा जाता (नुष्य-सक्त, १४)
- () बॉक्सॉक्यां या लीनमा के बरिये पेट में पानी नवाना ।
- (३) नदी में बाद सादी।

पानी चीरमा

भाषारत्त काम होना । प्रयोग—समर वहां भाषत्त करना, प्रथम करना, वहस करना काम है जो आप हमारा जिल्ला नवार्थ करना भाइता है, करें, पर में श्रंत काम नहीं नममना, यह तो पानी चीरना है (१३० (२)--ग्रेमश्रंद, १४१)

पानी छुता

मानदस्य नेना । चयान — मृत्यी इतते में दीला किर का पोमार में पश्री धुने नदा (वल्ल०—सामा०, दन

पानी दिवाना

भारकों के नामने पानी रखना : प्रयोग—किही ते कारे का एक तृष भी द शाला : हां, एकबार पानी दिला दिया प्रत्ना वा भागत (३)—प्रमुखंद, १४९)

पार्गा देखना

र्यांकर या इस्मार का प्रमान पाना । वधीन-स्ते आशी कपनी दाक नामदार । में अपनी माना हैं । फिर देख भी मानी का पानी (हासी०-दू o दमी, १४३), अहाराज कर इस अहम क्षेत्र का दानी देश ,देवठी०---(10 राज, १४७)

पानी ईना

- (१) तर्पत्त करता (प्रकोश-स्थार क्षणी सुचि सम्बे ती कुल्कुबर कामी देना (कर्मठ-सोमधेद, १८३)
- (२) कृते इत्यादि वर नाव वेना ।
- (६) पानी में बंह घरना ।

पानी हेने बडला

वश्यर । प्रयोग-वन्त वश्य नास तथ हो है । अंतराना व र्षाहरू कुन को क (राम० (वास)-युमसी, १८६), को र्र उसे एक विस्सू पानी देने वासा भी न वचा (मान० (१)-वंसवट, ८१), हवारे पीसे हवं कोई पानी देने वासा भी को होना चाहिए (मा-कोशिक, ३०)

(नग॰ वृहाः—वार्ता-देवा नाम-लेका)

पार्जा व पचता

बहुत द वेंगी होतो । प्रयोगः अस्तिताहन का यांगी मही वक्ता (महाट निक—बाध महूद, १३६)

एर्क्स व कारानर

तुरुव सर जाना । प्रयोग — और ग्रंडाबिट की जानते हो । असका सारा पानी भी नहीं भागता गोटाल-अमबंद ११५.

पानी पत्र ज्ञाना,—पित्र ज्ञाना

(१) नाट हा पान । प्रवास-का का नाट पर मान दिए पास (प्राप्त0 (१)-- प्रेमपट, ६२): किनमो की विक्रमाधिक प्राप्ता पर पानी पित जाता है (बीठ-व्यक स्थ. १), कीचा प्रथमी कारी कार्यमाओं पर पानी किरते केंग्र कर किसीनो सी ही बागमुनी करने तथा (बंकास-प्रमाद, १८३)

कृती पर माना

वोक्त बाना र प्रयोग-व्य बोय वर्णन हो, पर स्वाधिकारी होते हैं। पानी पर या वाल को चून खनावा हो बान क्यांक-वड़, 121

पार्मी पर बहाता

(१) जोग विकास, बाकामा । प्रयोग—बन प्रकार तय विका में विकास पृत्वृत्तमं की गेवा धानी पर अवस्था कि उन्होंने बहु बाव की कि आई जो कुछ हो, परंतु यह सूर्यास की के सामम में नहीं पहेंगे विशव—कीडियक, १५

पानी पर दोबार उहाना

अर्थन्तक काम कम्या । प्रकाय---सम हुत क्या व सुन्द सिकाफा महार गारि पर चर्मित क्याचा (११२० (वश्तः--सुनक्षी ८५

क्रमा पान को पुछला

भाषाम्य नर्गनप्रदेशः करकाः प्रदेशः —जन्यसः संस्तरं ५२४ तकः ४८ अन्तर्भे निष्णारमी व हेरी ग्रो_व कर्ण दश्योज्यस्य की कात पृद्धन नर्गन भाषाः मूलाकः— ६० आः. ८४६

पानी पाना

नर्गंच पाना । पानेश नगर विश्व पानि व पाने प्रतान आहे. कानि 'पद्⇔ाक्ष'ससी ३१%

प्राची-पर्वा करना

निश्चन करता। प्रकृत न्द्रांश की क्या धीनत सरिया क्यादका के अ अ व्यव पाल अनेक सहाजनी की सन ही क्या पानी-दानी कर केने के (मृह्याक-- क्षेत्र नाठ, ६१) वरकार को क्यो-नानी कर देती है सेंग्राठ -रेणू, १००)

पानंत्र होना

(१) काता के वह माना । क्यांच-इम निर्माण है कि प्राप पानीदार होने को देव बात के उन्ते ही पानी-पानी ही आवर्ष पर प्रीठ- प्रठ नाव सिठ, शहरे, इन्ते विचास हूप को प्रवचन क्यांचा तो संख्या के सारण पानी-पानी हो नई वीने प्र-दार पा, इस्ते-, तब किए बहु। काय को प्राप पाने का प्रचान कर क्यांचा अनेन्द्र वह । (३) होना पा निवस परना । प्रयोग-परंग का निरम्म नवी के भाषाने पानी-पानी हो नवा (सुठ सुठ-सुदर्शन,

वाजी वीक्स वर कुछना,--जाति वृद्धना

कात कर केने के बाद अनके बारे में बोज-मूझ करनी। प्रवेश----सम्बावने कोच विकार धर्म नमपान के पूत्रनी इत्तर सही (अन्य दंध '१)----वारतेन्द्र, प्रवेश, जो कहिये सी कीरियों, पश्चिम कर विधार, पानी की घम कुसकी, माहिस संभी विकार 'मुं ए संघ -- दुन्दे, पंछ

वाको बीधन ज्ञानि पृक्ता है= वाको वाकर वर वृक्ता

वादी पी-पी का कोमाना

बहुत बुधी तरहे बीसना । प्रयोग—दिन त्रव दोह-वृद्ध कर गाम को पर धाने तो स्पी दी पार्च हरको नेते—औन कोगा बढ़के को, पानी बी-पी कर कोबो (भानक (१)—वैसबंद, स्रोद)

वार्का वाना

यंत्रण क्ष्यादिके वारण क्ष्याचित्र होता । अवोक-वी तो ररशा र साथ विज्ञादन का राजा है। व है को जेकर चातुरतः १९७

पानी फिन क्रान) इ॰ पाना यह जाना

यानी फेरना

नक करना - व्यक्तियासक कर देना । प्रयोग---मने सन

दार्गर बदलना

स्थारकानुबार के शिवे स्थान-परियमंग करना । बयान---भाग पान काहे वाली बदण कर बार 'कृष्णेव--निर्माण, धर्म

पानी विल्लाना

जार होता विक्ती को सहस्र देश तक काई बार सम्बद्धान पुर द्वार होता । प्रयोग—िक्जो न नोबर पाना किन्छा स्मार-विकासी, २४%

पानी भगना

- (१) स्वर्धा यह सुनना में हीत होता। अभीन-सहा तो भगवान की दया के निष्य नगर तथा सुरत द्वारते के अपनी है कि विश्व सामुद्ध दशक यापन वाली भर रेपक द चैमकह, चेवर
- (४) परी नरह अन्यंत्र हा याजाः प्रयोगः उपकी यह आपन्धा पृत्री हुई ता क्यों स स्थानको और यो कहा राजी की पदवी सिक गर्मा वा यह सरा प्रजी कराने क्यां

प्रेमचंद ११७)

पानी भरी काल

स्रोतित्य या हालसगर प्रातीतः। स्रयोगः तृजनी तो सन्धी वै तुक्ता ही किए कृषासः कीर्यं न विलंख दनि पानी सन्धे स्रात है कविः तृजसी १४१

कार्नर अधना

अपने प्रवस्त करता । प्रवास-नाह कर्ष तह और वर्ष हर

O P -- 185

112

के बढ़ केंद्र को केंद्र विश्वति अधनेक कवित्त—संग्राक, १९५ पाना में कर नामक दोना

अवस्था निश्च प्रात्तर । अवस्थ-भी यम अञ्चल क्य विशेष पानी में को कोत् (विद्यारी स्थात-निव्हारी, १८०)

वाना में किर जाना

नंदरे हो जाना व्यर्थ अस्ता : सभाग—सरमा मिश्रम वार्थः व विर वदा स्वयन-प्रमुख्यः, ३१२८, वही हो क्यूबे सी तो वार्यो में तर्वा विर वहें .सिर्मशा—प्रमुख्यः, ३५)

वाना से काम देना

न्यर्थ को दशा । प्रयोग---काफ व्या की धानी में पान दिय कर'ा सम्बद्ध हुए

वाना से बचकर सगर से बेर करना

पाता रक्ता

इनिया क्या केनी । करोय--- रहिम्स वानी पानिय, विन यानी क्या कृत (पहोस करिश्य-- एत्स्स, ३३); चलिने पास मुनान रुशिय पारना नामा कृषक्त- गिर्धा द स नव दे न क्या वानिय संवा पानिय एके पांच पर्ने पर न पांच हात हम जिल्ला--- वृद्धिकीय, १९४

चाओं सगया

- (१ जानाम तरन स्थवना होतो प्रमान मानाइ धर्म बहार कर पानी समान (साम्—सुलाती, धर्म । बाबू का रेस सम्बद्ध नहीं है बहु। जो जाना है सम पानी सम बाता है (राक्षार—सेंग सक्ता, करते हैं बढ़ा पानी सहन सब्बा है ,क्रेंसर—सेन्सर, ३३८।
- (०) द्वान स्थाप होन के स्वाप्त पार्थ स्वत संपीता.
 इ.सी. (प्रयोग स्वत सक्त और द्वान म म कभी दिन तमें द्वान में स्था पार्थी (प्रोसंक-स्थितीय, १९)
- (३) वक्षर होगा। वक्षेत्र—मुक्ते नाम्य ही गळा कि अहर का पाले तक की बात लेकक— वेपचंद, १४ जेलन की बेचा की काप का पानी जम बहर, तब भी म बोच सुठ हुत—सुदर्जन, ११४.

(४) कृष्टि होती, कही जमनी ! अपोम—नावरि भोरी कामती ही जाव परी संस्थार । निश्च मधियादी पानी नामत उनदी बहुत बमार (माठ र्यंc (२)—मन्तरेन्ट्र, ४६०)

(६) वाना एककर एकवित होता ।

पानी होता.

- (१) चेश्रेर का कार्तिमुक्त हाता । अमीय—पार्तिक जनार मनप्रामंद इकति भोजी, करन-मृगति जीला कौन है नगरि है (क्षेत्र) कविश्व-दियोग, १५०)
- (२) क्री4 सा एकडम जात हो बाना । प्रयोग—सेने गर्नसी था, का अपनी बात पर कड़े रहेंगे, यर यह बादर निक्ते । एक ही श्यकी में बाबों हो बने (प्रेमाए-प्रेमबंद, १९)
- (३) श्वाह' होना, नगम पदला । अयोग-न्यं रक्षणार जान शुनतानी दक्ति अफरेर अस् यस पानी (पद०--पास्ती). प्रकार), बनके गणी को देखकर नगर के परवर के परचर हिन जी पानो हो गए (वे कोठें -- ऋण माठ, ४५), वे बांगक बारे शृब्धे हैं जहें, मुंदरी और नचतुनती स्थियां को रेसने ही बानी ही बाते हैं, और। ठीक वे ही बाता है वैशासीय (2)-- **45**(0, 165)
- (४) द्वीर ही बाना ।
- (५) बतीय माधि का बहुत जानाओं हे बणवा ।
- (६) शांत ही वाला ।

पार्णावाय बोतर

- (१) वण्डतवार होना (अधान-अर्थ निवस्थ है कि आप पानीबार होने को इस हात के रठते ही बाबी-वाली हो बाबने (प्रथमी०—प्रथमा० मिठ, ५५); बेने रेख जिला है कि मुनोनकर पानीशार वंश है ।सांसी०--द्रु ० वर्गा, स्था
- भण्ड होना : प्रयोग--नीखन ईत्तन बान बलान मां বীনা র্যান্ড লী ধান অত্যাবন ঘানন জ্যান এই ছবি प्रातिष माधन प्रायक क्षेत्र क्षत्रकात्र छन्० कविस- छन्। 🤋 118
- (३) तम नामदार हरेना । प्रयोग—बहु अमृत्रपा का महर मा क्य मिन्ने तनवार याजीतार सी० वस्त्रक ४४४ नीवार प्रधान २ म (🕂 भी
 - ४, मॉलीको ध्राक्टार होता ।

पण्य कथानाः

राव कर्म करना । अयोग--मृटंब कारणि याप कमार्व, यू अर्थे वर बेरा (क्वोर प्रता०—क्वोर, १२०)

पाप कर वहनी

र्भापत गाम । मसोम---वर महस्त बड़ी बात नी पापी की महारी बनाएना है, फिर इंटि की हुना होते देर नहीं समर्थी । ब्रह्मण---देश संग, २४३

पंप गळता

नान हुर होता । प्रयोव---वत रहा है परमनन है भून रहा । क्दों अका भी को न इस वसके पित्रं (शुभरेत-हरिश्रोध, द)।

पाप अयोजा

पान के नाम का ३४व कराया (प्रयोग--- मीलिमायन का नाना कुछ कर्मभारियों के समसे पाप अना वक्षा ,सुहाग०---To 310, 113

पाद जागना

- (१) बाप कर्ष के परिस्तान स्वरू ज्ञाप्त कुक्ता १ प्रधीत— जाना जाता कवि यह नहीं कीन वा पाद जाता (धिय०---हरिजीय, ६३
- (२) पार का बाब आगा ।

पाप मिटना

- (१) काम क्षर होता। जवोत---भक्त वृत्ति वाच बिटिहि विभि वेरं अभव (बारु)—तुलसी, १५०)
- (२) शमट-परेशानी हुए होशी ।

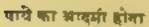
(मना० पुहा०--वाच करना)

पापड बेलना

बहुत तरह के काप कर कुकता । प्रयोग-फिर क्षेत्र हुधारा सम्बद्धाः क्या पायत् केत्र, इसकी लगी कहानी है। द्वाराख देव सर, अपन क्या नाका य दम होते भी तू प्रकार करना र अस्माठ हान् और १४२

पाचा सजदत होतर

नियनि इक् होली । अक्षाया विकास्तर और सिकान्द्रत के मननाः याणायानः भाषाः अद्यानुनाः दिल्ली की मननमम् का वांका संबद्धन सुगठ दूव दर्मा ५०६



निक्ठाशान, विवार व्यक्ति । प्रयोज—को पान का आदनी है । इसके जंदर काम जितनी भी है, सक्की है (बुंद०— काठ नाठ, ३९%)

पार उत्तरना

भवनागर से पार होता । प्रयोग—नुस्तः पश्चरे मेंट ही, प्रतरमा साहै पार ्कवीर प्रकार—कवीर, ३७/

पार उतारनर

- (१) बढार करना, सनार से मुक्ति दिनाना । प्रयोग— सीता-राम मूर मंगम विन् कीन कतार पार ? .कु० सा० — सुर ४३३
- (२) ठिकानं सवाना ।
- (१) पूरा करता ।

(ममा+ मृहा+—पार संघासा)

पार पडना

- (१) शहन होता। प्रयोग-स्वायति स्वरण हम धन है विहारी, तमे मिली, दिन मिले, सीन पार न परन है (४० १०-सिनायति, ६४)
- (२) पूरा होना ।

पार पाना

- (१) अस सक पहुँचना, नीमा बांचना । प्रयोग—ना कर्त महस होति कहतारा । तुरन वेति ना पावद पानः परण साथसी, १८६६, हिन्दून कमा बचार पान नदि पाइये स्मृ०सा० - सुर ३०२ - रक्तकीर निर्म समार नारिश्व पाद कवि कीने सहसे (राम० (क्षाल)—नुस्तनी, ३६६)

(३) कोई काम कर नकता । प्रयोग-नाम गर्नि शार न पाने काई (क्योग इक्षा०-क्योर, १९४); बासी कहति स्थाम तुम एके, यह मूनि के परमात । एक अंग की पार न पायन, विता होड सरमात (मृ०सा०-सूर, २४६४), जी अपने परमृत यह कहते । बादड कथा पार नहि सहद्व (राम० ,वास)---दालसो, १५)

पार जनका

- (१) काम तीक के दूरा होता । अयोग—दशारी कांत में को कहा नहीं है पर गामशाना की कृषा में पार मन आवत मुग०—वृंध सभी, ३७५
- तडी बाहि के दूसरे किशारे वर्ष पागर ।

पारा परम होता,—बदना

कोव होता । प्रयोग—रायकांक की पानी का पारा काफी कर नवा (मृतिक—संग्रद कर्मी, १३४); काके की वह सा पाना बीर क्या (बुद्दक—संक नीत, २३), सनाव देजीहेग्ट गार्थ वस्तद्व का पाना जब गर्म होता बाज अन्य कालकी क्याप हो का दम नवा वा कि वह उस मृदक्ष का आगान कर (गोली—बसुरक, १३६)

पारा चढ्ना

है। बारा नहस होता

पांचा बहाना

नाराज करना । प्रयोग —जनर वर्ग सरकार ने ताई ने पाद बाकर उनका पारा चना दिया (¶ दं० — च० मा०, ॥)

काराधार उमहत्तर

बहुनतपत होती । प्रयोग-शील-शास के साथ धीत भीश हुए अलाह का परसकार उम्रशा मेरेक-गुलाबक, १९६.

पालमन का दिस्ता

मुद्यावद । प्रयोग-नव पहुष प्रवा पालसन का क्रिमा चैतरे -पालक, ४३-५४)

पालः पद्यना

(१) तब्द हो बाना । जयोग—समयः पर पाना कैसे पना अर्मा०—हरिस्मीक्ष, २५. : हुशा भरा बहुता परियालयः, जन पर पर बान पानः संधु०—सम्बन्धः, पद २५ : कन्या इत्यन्त शोर्व के परवाल हमाने सुवायत जीवन पर भागा पर गया (चित्र०--कोशिक, १०६)

(अमा = मृह(+—मास्त्रः निकासः)

पाठी संस्का

(१) बाजी बोलका, विशव होती ह प्रयोश—या ह तो सामा सुबने बड़ा सारी सामा जार। कर्मक-प्रेमकट, १६६); यो सदा सामी रहे पाना, वे वहे राजरूक के बाले सुमतिक—श्रेरकोध, २०); समाद सम क्ष्मी, विभारों का रिमाना निभान समा × अनुन्य को पाना कार समा सुमतिक मुळ---हॉरकोध, ॥.

(समा० पृक्षा०-पाला जीतना)

पांचे ने फरकना

समीय न नामा, कोई सनाम स स्थान । समीय—समस्य में गंग-गंध प्रस्ता और निरास्त रहिएक सन पहा है है भोत्मीन स्था पास सक नहीं सहस्त्रे पाती (नेटक सु0— साठ बहुट मंठ सांच हनना ने हो सह तो उस गम न प्रश्न दो तो प्रे. भोवटन व निग्न होन्स मीर नाम स वस अप्रांग पठ पाठ- पठ नाठ मिठ ६० जाव हो। कितर भीर ह का संभ होता । में पास नहीं प्रत्नता मानठ १ प्रस्थित स्था प्रस्ता की द्वार देवन है जो स्थान मार्फि सीर प्रस्तान की द्वार स निज्ञा कर उहान्याम निगमि भीर हरिन में पास नहीं प्रश्नते जिल्हा १ मुक्ता १५५ मीरानी उनके पास कर देवनी ने मी जम कि की भागमधियों में ही समें रचुमतेः हरिसीध, १२२:

पंचा प्रश्ना

स्विति पत्तर जाती । प्रयोग—जात पाता जहीं से पातर नवा वा देवकोण—गांव स्वतः उद्योग, में साथ ही पामा व्यवस् सकती हूं । में मुखा उत्तर उद्य गां। है, उसे एक ही महत्वः में पूष्यों। पामने के किए विश्वस कर सवती हूं ।स्किदंव— प्रसाद, ११५

पाना सीधा पहता

भाग अन्यून होता । अयोध-अधिकक्ष मृति कौतिया नक्षि मुदर पतंत्र कर्मन स्मीताठ (वा)—शुससी, २५

(१मा० मृता०- पास्त प्रदेश),

पिज़हे का पक्षा बकता

बचन में शतका। श्रमोत्त—अब आप स्वतंत्रता की ऐसा बच्छा प्रापं समान्त है को बाद नामा मध्य की इन्छा नृतार काम बच्चे में गोडकर क्यो विश्वते का वही बनावा बाह्ये हैं ? (क्योशात—बोठ दास, इस्त

पिंद सुदाना

विंद स्ट्ना

कृष्णाण पाना वा होता । अवाय--वित्र कृथ कभी न नामच ते ज्ञान के समय कोण कम न वहा (बोस०---हरिप्रोच, १०३

पिंदा पारता

बाढ करना । अयोक—कानक वता निव पितु को तबही विका वार्टिको (चीमा० मधान—समान कान, ववदे)

पित्र दुव होता

सरस्य म नेश म होना । प्रयोग अस्त्रत अह पित हुई पी भारत १० ४० दि० ३० आजम सीमा है नहामार उसे दिन पुष्प स्वादा कि हुए ये पद्रम प्रशोग पद्रमण जानी, २९०



8 m F

पियस उटना पियस कर पानी हो जानर पियस जानर या पियस्ताला

द्यार होना या कर देना, पूर्व कोम का कम होना।
प्रयोग— नहर अपारे हुएव में प्रमान्ति अवकी वही हमारा
प्रमु हम पर विकास हहा (प्रव में क्रमान्ति अवकी वही हमारा
प्रमु हम पर विकास हमा दुवस अ अ कोई ही है जो निर्द्र हिला कर केंद्र रूक, आहे भग्न कोर प्राची के अमसमने
वृक्षाने में साकर विकास जातां (मध्य केंद्र कोर्या वृक्षाने में साकर विकास जातां (मध्य केंद्र कोर्या वाले को कीर्य विकास कोर्य प्राची कर सकता (मट्ट निर्द्र— कोर्य को कीर्य विकास करेंद्र कार्य था, पर सन्द्र ही विकास भी जाती को पंपव (१)—प्रेमकट, ५३); को का ववीर को विकास मने अ अ हम नके हंगा कहां काबू निर्मा (मुमरीठ—हाविद्योध, १९६); नयों कह काक्टर को देख कर रियल गई हैं (मैसाठ-क्षेत्र, ४५)

पिघल कर पानी होना देश पिछल उडना

पिछल जाना या पिषलना देश पिषल उटना

पिनकारी कलना या बलाना

भिषकारी में कोई सम्भ प्रशाय को दर्श । प्रयोग---रंग जिसमें मुपाद का हो, यसे ऐसी विषकारी स्मान---प्रशिक्षीओ, क्षेत्र

(मगा० मृता० - चित्रकारी छटना या छोइना)

पिछलम्य होना

भनुषत होता, पीकं धनतेशाला होता । प्रयोद—ही सब कांक्टर केर पश्चिमणा पदेश सायको शब्द अस स्वत-कीत में किसी के पिश्चमण नहेंग्स्हें मेरें०-- गुलावा, २०१

पिद्यस्ता महर

विद्य जाना

मार का भागा, हार फाला । इमोल-लूट तब पिट उठ

113

O P 185

नवे परके आध्य के भी जिसर गत्ने कोष्टे (बुभतैठ—हरिक्षीध, १०५)

पिटा देवा

नम करना कियो काम को करन का नावा करने किए न करना, कियो को जामने में इसकर काम क करना। प्रमाप —बतरह कम विटा निया कनको कोन पृह ने भ्रमा हमें बोले कुंगरेठ--पूरियोध, ६२)

पिटा दुशा

बार बार विश्व हुआ को कहा हुआ। प्रयोग—उसका सर्विम प्रकारत कोई मीकिस सम्ब नहीं है, केवल एक रेशा है, तब दिन क पोट किसे नई शीक दीवर ३ अश्व में २०६); पुरानर किस हुवा सरिकश—इसना विद्य हुमा कि सिनेका बाने मी उसके हामभाग बना नेते हैं (मू ६० - १६० नाठ, २१८)

पिट्ड् होना

कारायदी होना । प्रयोज— वै भी देखंडी जाना प्रतीराम और इनक पिन्छ रह पन पानी म है असक प्रैम वट २४६ विकट्टी के को नवीनदी जोग x x अपेनों के पिटड् वने रहे उन्होंने बाई : एवं ए वार्की को जरीये के अधीप इन दिया सुटांव २)—संभावत, ३९७)

पिडी बोन जाना

एक होना, हिम्मत हार जाना । अपोन-संस्कृत में नी कृत क्षणा है उपका वर्षि एकाश भी किया में नम नी अस्य पटी चर में निधी बीच जाय और हाय से कन्य रक्ष हैं (सार बीठ--महार दिवेदी, 46

पिक् जीलना:—जनना

भर्ततन क्षाना । धाराम । असे उसी निकृत समान पुनियम हैं जरत क्ष्मारे पीले (शु० सा०—सुर, ४४१४), इस बास पर सक्ष्म ज्यादा भागन विश्वा का पिल जीवा । परशो०—रेपू. ३२७)

(भवा+ मृहा+—चिक्त उपलगा)

विश्व जलना

₹० पित बॉस्स्मा

पित्ता पानी करना

- (१) बहुत परिश्रम करना, अल नकाकर काम करना । प्रयोग—मने तन भागक नर नागी निसा पानी करते हैं गुठ जिठ—बाठ मुठ गुठ, ६३६।
- (२) हिम्मत पान कर देवर । ध्योग—समि, तुम विश्वाम मानो कि मेर इसी च र न वह ये वह बेर्ग्य न १ के पा पानी कर दिया है (भाठ ग्रंठ (१६—मारतेन्द्र, १८६), इन सनकार में सभी के पिले थानी कर दिये (मोदान—प्रेमवंद, १२७)

पिल पहना

किसी कान में एकस्म पूर्व सोग से बुद नवना । अथाय---बार तथवार तर पड़ पिन हम कूर का दूर साधना सिक्सा (कुस्तेय-हर्गकोध, १९,

चित्र चित्र कर

भित्र क्षर । अयोज--- इत्तर उत्तर के सुन्तोर दिल दिल के द्वार भारते हैं भी कामर केन सोड़ कर अपना भी के भारत है (प्रम सोठ---सठ लग्द, १७४

पिस जाना

- वैनिक यथ का बीधन भी कोई जीवन है। इसमें दिशने इस बारभी रक्ष्य रह का समा समान है। जलन ग्राइक, इस
- (२) नष्ट होना शय होना। प्रयोग—हैं निसी आ रही उसमें नम, सुट नहीं पान-रंग की कानें (मन्नेo— हरिखीश, २०)
- (८) अध्यापन द्वान म पहरा ।

चिमना पामनः

परिश्रम म नमं रहना । प्रयोग— रात दिन प्रोसना पीता करता है जब देखों इकरत काम से प्रश्नम हैं (राधाव एकार—गंधार देखें, करप

यो जाना

क्षवाय सहन कर अस्ता, अगट म होने देनर । प्रयोग— इसके बाद सरम्बनी की बात के बिल्कुल ही भी गया माद मंद्रव हो---किंव गीव, १२०); मृतनमान सवाय और अन क्या प्रम क्रिनोनी को यो ही भी आवग है (सासीव --वृष्ट क्यों, १९७८) नेकिंव यह भी भी जाना होता—असाई का न अवकर है, न वह स्थान है (नदीव----साहों से, १६९१वव)

पंछा बुहाना या छुटता

- (१) यदिन या रच्छा विश्वत सामन्य का साथ कर देश या होता । प्रणीम—एक कार कोई उनसे मुखानिय हो जाय, किर कीचा कुश्ता कांट्रन है गुठ निठ—बाठ मुठ गुठ, ४५६., यहन्यानी करके यह कुछ को यहा केंग्र शिवसे जिस्से हैरा कीछा कुछ ,परीक्षाठ---बीठ दास, दक्षा, खूट मी कीचा सका दुव से कहा जी मुनीयन है कहा कीचे हुटना (बुनतैठ— हरिकोध ११६
- (६) गीक्षं यहे स्वर्कत ने मी युराना वा कृटता ।

पीछा न छाइना

- (१) तम करना । प्रयोग—अब तक तृष शाह पर नहीं आदी राजी तृष्ट्राय पीछा नहीं छोड़यी , बोटी०—हिराला, प्रकार क्यी तरह दह बार-बार शकती वहीं, केवित पंत्रे पीछा न छोड़ा (प्रका—प्रेमचंद, ३०४
- (२) हर समय सत्य छवं रहता।

पाछा पकड्ना,—लेना

अध्ये का भाग का बनन र प्रतान अभ्, में वाची सियो कृत्यामें (सुरु सारू—सुर, शाम); इसी से कहते हैं कि वंश का संगठ पकड़ किया किया का निवाद नहीं पर पीठ पठ नाठ सिठ, १९२)

पाउर नेना

ः पास्ता पक्षद्वना

क्लं

अनुगार, भाषार पर, माम पर । प्रवास--- उसकी स्थी का नाम मधु, मनायी जनका मानशी विजना है । उसी के बीज् मनुष्य प्रोप मानश कहनाते हैं पुलेशी प्रकार १) --गुलेगी, द

पीछे पडना,—स्थाना

- (१) प्रत्यत नायह करना । प्रयोग—कीया विकास वलाला नाम् प्रीरित नार्तत वेदी विक्रियाहर वहें, सार्व मोनी आहि कवार प्रशाद कवीर, इंड., ब्रांस्ट्रान मोनी बाद के वोद्यं कर सहै सीसीक—वृज्य वर्ता, इसका, तु जा स्थाना करन वचा । महे बीद्यं वर्षी पहला है है सार्वण है, खेन इंट. १७०
- (२) जी काम से काफ में जुट कामा । अवस्य—कियो की प्र क वोसं, लगें, तो इन वर्डित जो की कामि कम 'गुंव मिठ— क्षाव मुंव गुंव, ३३/
- (१) मीका या सिंग बुंदकर किसी की पुराई करनी।
 प्रमोग—में भूती मोती सूठी बोल । येरे मोम बानी कोल
 पूर्व साठ—लठ लाठ, ५१), पर म बाने क्या और बानो को
 बा हो गका को बस्तक मेरे पीछ पर मो है ? (पांचाठ— बोठ दास, ५०); परम्यु छव भिनीर क्याता नहीं दीकना,
 बाति यह दृष्ट क्यार की द्रावत है राज्य प्रसाद नामान दास दश्य नुम क्या अन्ति, यह है राज्य प्रसाद का नामान मान मनून के पीछ पर ये के फिक म रहे और १६ जान कर मनून को नाई गनी जनता निराम कर्म दिस्स हार ब स प्रसाद में के विरुद्ध ये पहल परांग प्रसाद होना
- १७६ (भ) भनुरमस होता । प्रयोग—नैन वरे द्वार पासे री (सुठ साठ--सुद, २५४४), तब हो अ अ अडवधा ने ठीक हो कहा था कि रमनेग्यों और निकास धनक पोस नगों है (देदकोठ—र्ाठ राठ, १३)

वीचे वीचे बोलना

वीखे लग रहना, साथ रहना । अयोग न्यीस पीछ राजन है, सामृह हो स्थानन है, मोजन है घषर सृत अनन प्रतित है (शब्दo—देव, ६१)

(समाव नृहाव-पाँछे पाँछे ना नमा)

पांछे पैर हुना

निष्यप से विश्वता । प्रयोश-पाणी पाय न दीनिये सागे शह को होड़ कहार प्रसाद-कतीर, ३६१

पाँछ चित्रका

(वया» वृहाः—वास्त्रे सीटनाः)

पंछि समना

- (२) दुवाबनक करम् का नाथ श्रीनाः । वागीय—वैश्वितः प्रयोगः (१) में (+)
- (३) साथ पहुंचा ।
- (४) देश पाखे पत्रमा

पांछे नगा

पीक्षा करने पाना । प्रयोग---पीक्ष जना आदमी जान बनावर बला ,बोटो०---निराहा, ८५।

वंश्विद्दना

- (१, विका काम क करन म विकास होता। प्रदोश सन्तर प्रारंगिक करत के ही धीखं हरनेवामा माणी नहीं है फिलाठ (१)—जुक्त, ६), जब मैं तुमको अपने दिस की बान बन पा रहा है किए तुम नदी दरना पोछ हरना चाहते हो (१९मीठ-नामण दमी, ४६)
- (२) हार धर पीने नोहता ।
- (७) निश्चम से शिवना ।

वीहे होता

- (१) धनुषायो हाता । प्रचान —पीटाङ्ग वस भी स्म बेदान में उसके कीसे कोसे है (पद्म प्रधा—पट्टमठ कर्मा, ३०६)
- (२) करकर होना ।



वादना

(२) क्या केया । वयोगः --सी उनकी निवर्ति वृदी न वी दी बाई भी स्थल महीने बकायत वं वीट सते वे स्थान० के --प्रेमचंद्र, ३व

(२) प्राप्ताना ।

पाटना है बैटना

किसी युवा को शरर-बार महना । प्रमीय—निरान आहे की कोई शाम की नहीं होती केवल एक पीटना में बैडना है (शास) प्रमाल-अधीर दास १४०,

पंख

प्रतिकत्तरा, विमुखनर । प्रयान—शास को पीटि नया पन शासक बानन भाग से होता । क्यांटी (यनक कॉबरा—यनाक. 151)

वंग्त करना

इनिकृत होना । स्वोच-एक कहे, काम विश्व दाहिनो इसको प्रयो, यस कीन्सी चीठि, इस की मुद्देग्दि नई है ग्योसक (अ)--चूसकी, इक्षा, बृह्मी बढ़ चीठ कम बस बर बार पीठ वेशी जीए कर, देते न क्यों (बासक-हरिक्री), इस्प

चेन्द्र का कथा

मबादी में राष्ट्र देने शाला (चोशा) । अयोग नहें न चोडा पिंड का कन्या अला बोल०- इंग्रिजीय २२७०

पंग्र का सचा

वनका, बारामदेश (देशा) । प्रयोग—नो भिरमा एक बच्चा भी नहीं वीठ का सक्वर अवद चोदा पहें (बोल०— इस्स्मित, २२७

पाठ की काल उधेडका

हुमंति करती । प्रयोग--वीट करके अध्य यत में पह चीठ की काम क्यों उनेट हुम (बॉल०--हॉरक्रीय, २३७

वीद की श्रीड होता

सामार होता । त्रधोम—उन्हें बापकी पीठ की रीड कहता माहिए साठ सीठ- सहाठ प्रदेश १०४

पीठ बारपार्व से तम जाना

श्रीमार्गः स कारण सामन दवना त। समझार हो बाना ।

प्रयोग—नव यसे है की भगान गाम ने पीठ वस है स्वत्यन्त्र के बागों औसत—हर्शकोध, २२९

पांड ट्रंट जाना

भारी क्षेत्रक उटाने के बारान पीठ में पीका होती। प्रमोत --- रुठि न सकत कर पीठ टूट गई कब इतनी गणआई ,पाठ प्रक्षांक क्षा नारतेन्द्र, प्रभुद्र,

पांढ डोंकमा

अल्ला करनी, लाकाती, केनी, अल्लाहित करना। प्रयोग— कर्शन सकती चीठ ठोकी (ईशांठ--क्षणंठ, १०६८, इस व्य सारको उसकी चीठ टोकना चाहिए म कि उसके नाराज शवा (गूठ निठ--नीत मुठ गूठ, १०६८): विसंख् उपन ने चीठ ठोकी---वेने समझा दिया भाई, भागे तुन जातो जुन्सामा काम जाने (सानठ (१)- नोमकट, २६०): बहुमा तो मै, यार केमल नेती चीठ ठोकने काइएमा (१९० (१)--मेमकंट ठाई, मान नकट हो, जानी चलना होगा----नेत्र सठ, वे बीना प्रका की चीठ ठोकने हुए कहा (सहनठ---देठ सठ, व्दर); उनके आने के बाद पहा जुन कहकहे कहे, और प्रकार की जुन चीठ ठाको (१९० (१)---प्रेमक्ट, १६६); भी चाहना है १८ ४ वाचको चीठ ठोजू, हाच चूनु और व्यक्त खुड चटुमठ के प्रक-प्रदूषध कर्मा, ११४

पांड विकासर कामा

- (१) चर्मी काना । प्रयोग—समाहि स्थी समूताकि सिनु, चन्दरि स्वयन् वें पीर्ड । बाही स्थी डहुगति यह, कविश्वनशी भी शेडि विहासे स्वरू –विहासी, ३०)
- (२) क्लंड तीरचर चने ताता, विमुख होता ।

वांड विकास

यह या मन्दर्भ म पास जाना । ध्रमां के न्योह आक स्वयं दियं में प्रियं हर न पांड पदक न्यामसी इक्षारण , सुरदास राम प्रीम कियम किन विकास न पीडि दिलाइ मूठ साम-सुर २००३, में में हो नपामम है जो तुम संस्थी को सी क्षेत्र पीठ विकास मुक्के हैं सिखां प्रकार—" अब दास, दश्य , प्रथन दृश्यन को पीड दिलाई है सुठ मूठ सुद्धांन, २५२ नशी तर है कि जब गानन को नरफ स सार धाना है जो पृथ्हें पीड दिलाक। शेला है करवाणी जैनेन्द्र, पर मधनाम हिन्दुरमान को पीठ दिलाय। योग जयनी विकासक म स्व मारो (आंसी०—द्वां) दर्मा, ३५९)

पांड देना

- (१) विद्या होना । अयोग—ऐना तुम्हारा क्या अवराव क्या है जी हुद्य पीठ रिये आने ही जिन साठ—क्या हाठ, १०२) (÷)
- (२) विमृत्य होना । प्रयोग—अवे मंतरि प्रायन्त के डाडी किन्द्र माना निन्त दीन्ति न पीटी पद्य—प्रायमी, १८०६ धूर सानर एम स्वायी को दिह गीडिया अधार मुठ साठ सूर सानर एम स्वायी को दिह गीडिया अधार मुठ साठ सूर सानर एम स्वायी अपने हीडियी, सनर वाहिए दीडि, नी कि हागलाह देहता, कवट पानित पीडि टांबर्ड —तुनसी अप, मानु दियी मनु केटि की, पनटे बीजी भीडि । बीज भाम यह रावरी नान भूकावन सीडि विहासि स्ताय—वह री २९०), दीजिये न पीडि, यस कीजिये स्वा की देगेडि, मेना-पति पान्यों है निहारे एक जीन की केठ रा—संन्यांत एक, जान अन्यांत यह भारे कन मानि प्याने अव र वे समानी केडे पीडि पहिचानित है सन्य की केठ राज केविन—सन्यांत समानी केडे पीडि पहिचानित है सन्य की स्वाय ना नाम है (कल्यांकी—सोनन्द्र, ३), देखिए प्रयान (१) में (+) मी
- (३) जान जाना. चीठ रिकाना । जयाग-व्यविद्ध देहि महि बामिन्ह आने । चायत जाहि पणिट्स पन जाने ।पद०— फायसी, प्रक्ष्म), मीतल भई बच्च की स्थाना, हरि इसि दीक्षी पीठि (सूठ साठ—सूर, २७४), दाला वर्षानद दोन बाने भी न दीनी कहूं देखिन को पीठ और दीठि चरमारी को (जाव—पद्धानर, १४), परन्तु बीर बालक ने पीठ देखां सीला तीत्र वा (शाधार प्रदार—शाधार दास, १५००,
- (८) शबर बनागर । प्रयोग-- मुभ विगाद नामे सर्व दे सलीम को गीठि भने समयसे हार भी कुनी अन्यवनी मीठि (जग०-- पहासकर, ६०)
- (प्) किसी की ओर पीठ करना। हिपोन--- सेटि मिने मृति पीठि वर्ड दियादन की बान सर्व कहि जा है हिन० कविस - हजार, १६४
- (६) सेट कर साराम करना ।

114

OP-185

पीड नपाना या नापना

मार काना का बारना । वर्षाय-है वयम बाह् आप केने को पान नो पाद नाम अधनी चासे० - हरियोध ४५ वीड रेवे न प्रेमपम में पढ़ चाहिए चीड नक भया देवें (बीझ०— होस्योस ३२५)

पीठ पर अचा होता,- पर होतर

गरावक हाता । प्रयोग—कश्च और बीरभहर बाब प्रत्नी पट पर र परलेक रेणू. १४२, दानंगर में तुम गमभले रेग्य कि इस सर्गवा की पीठ पर काई तही है (शास्व ४) प्रतिबंद, १४१ , बाज कोई सरी पीठ पर कहा हो जाता तो भीरी मुखे बनश्वर की पृष्टी पर ताम देता हुआ न बन्ध काता (रंगव (१)—क्षेत्रबंद, ५४), पीठ केंसे अब नहीं मानी बना, है इसारी पीठ पर कोई नहीं (बूनति— हर्शकींस, ६६.

पाठ पर बाबुक होना

परी तरह वस वी होता । प्रयोज-स्वादी पक्षण श्रामित भी मारा । मुख्यो पोहि तारि है कारी प्रदेश द्वारासी, देशकार

पांड पर बल होता

कार्य मधारत महायस होना । प्रयोग—बोबम के भीनर निर्भवता की, मृष्यों की वीठ पर वस मृगठ—कु ० दशी, ४०३

पांठ पर मचार होना

हर समय साम नावे गहना । प्रयोध—प्रापी ऐसा धोग तो नृपने बाच नही पाया है कि के पीठ पर सवार नहें धोप तुम पायम्द के साथ दुवते चूर्व कर दर्शन करनी रहां मुग0—प्राठ दर्श, ३१६,

कंड पर हाथ फैरना

म्बेह का दुलार करना । समोय-अनर वे जरने हेवक की बाट-कटकार कर्ष, और तुम उसकी पीठ पर हान केरों, तो दसके सिवा और क्या तमक अकता हूं कि तुम कुड़े कर्जाहत करना चाहती हो (बंग० (२)--क्रेमधंट, १४७)

पांड पर हाथ रहाना

साम्यक का प्रशास होता । प्राणेष पान कर कर है कि उन बाक् व उनकों की पान होना है प्रशासिक के उनके आहे जिसको पान पान पान का तथा है। उनके का कृत भी कड़िन नहीं स्थिन्त — मुक्ति, वेंग्रे.

र्धाठ पर होना

है। बीट पर बड़ा दोना

पाउ पीछ

म प्रस्तित में, परोक्ष में, । प्रयोग—पीठ-पीदी कारकी भी पाने पक्ष प्रभाव कुर पर कोई हुआ पहें तो अपको मू इस कार गाएन अपनेद एक अन्य किनीद कर इसके पीठ-पीदी में पूर्ण रह दशा चंदनी सार —स्य. १०६); ब्रांपकांस ने पृष्ट पर स्थित ही पड़ी, परस्तु पीद सार कार गरंभ पर गरंभ मा—कोईहरू :-

वीड कर कर देखा

अपनुष्या क्ष्म है अपना और पान क्ष्मण व पूर आहे साथ कर पि किए स्थान है। स्थान के कृपन तथ पुरुष हैकार का पूर्व है के किए (बोब्रोक-कृष्टिसीय, पुक्त,

र्वन्ह क्रेन्ना

भीड दिलाना, हारका । अधीन—सम् सम्बे विक भीत ! वीठ भी कुमने पारे ,साकल—गुप्ता मनव

I BRY Q E QUED D YE W ...

to the gue ma

पाठ बनायत साथ देता.

हुत्य प्रदेश के सामान्य क्रिकेट का स्माप्त का स्माप्त

इन्होंने बाव भी पीठ बंबाकर दिया का (घोटी) जिस्ताहा, इंद

पाह मलना मा मीवना

बाहाबर वा देवा करती । प्रयोग—मुरुतों वह पीठ सक का का बना पोट मेरी घोट कर बैठे त क्यों श्वीहरू— हर्दरक्रीय, २५६३: ई क्यों १९४ बीच बीच जिने । हैं क्यों बीड़ क्षेत्र बोच पड़े स्वीहरू—हर्दरक्रीय, २२६

पाठ औं इना

रे॰ प्रांड क्राउनर

पाड में खुरा भाकना

विद्या प्रधान करता । अयोग —प्याने विद्याने मान नाविक विद्यान के भागमा का भी कावण की गीठ में सुनी मानी मी कृतक १ —सम्बन्ध १३६

पाद से धूल कराना,—सिट्टा कराना

नीया देखना । वर्षक--नेर हो बारक वेटी वीठ में कुछ कर रही है (नानंक :१:--फंसवंद, १६, : महुरे सवी बीठ वे तेरे वय क्या बार दिकाना जुरक अक्त, ६२)

पंख में पूज मगाना

नीम दिवासो । प्रमोत-कभी किसी काई के बात से वेटी पीठ में भूक नहीं संपार्ट, सो बदर कांट की (रंग० - दो-- देशकट, 200)

पांड में मिही समाना के बाद में पूम नगना

पीठ मोदना

वृत्रका आने नामा । प्रशास-- प्रशाहि कृष्णु वीठः आस्तर । यसः १० = १ १०० वादः स प्रशास कराः देव स्था २११

पाठ न्यामा

(१) प्रशासन होता, जीका १६०० - 2000 अस् विकास को बोट को विकास प्रशासन र १० टे सम्बंध होताहोत्, १८

, पर पर पान भी बोला, अंग्रेज्य । सी र

पीठ करा देशा

पश्चाम केला । प्रयोग-नाम है हो वर्ष क्यांनी से वर्धा समामें स पीठ के पत्री (बोल०-हॉस्ड्रोध, ३३%)

पीठ छगाना

केटना, मीना या माराम करना । प्रयोग--कुनर प्रदेशक भागों काथे को बीढ़ नामकर काने बोगों ने निम के अपने कर बहुने (बंदी)--क्सोंक, प्रा

पीड सहस्राजा

पोतान के अध पर गुजान करना

मानुषी बन्तु पर गर्व करना । प्रयोग—बदा तक कि बद भगनी व्यक्तिया को प्यार करने कृष सङ्ग्यास को कि पान कहते कि पीतन के उच्च पर इतना गृयान करना है। सन्दर्भ (३)—प्रेमचन, ११६)

र्पाता

मिरिश-नाम करना । अमोत-चटकते हुए उसे को तीन प्रचार क्या किया को भोग प्रकार काम कर दिए प्रोत कर नाम (तदीक-प्राकृति १६६६); जना रोग कर जान पिए ती इस्तरहे केंद्र क्या जातने (पैतरि--स्टब्स, १३६/

पीयल के यने की तरह कोयनर

बहुत अगभीत होता । यमोग—अस सम पुनद बाह नर्ध मोता । पीपर पान नरिक सन् दोना (सम्ब सा-सुकार्त), श्राप्तः

बीपल के बन का दादिना देना

भागकृत्य शतुल संकात प्रधान अवस्थि कृति व साथ प्रधा स्थान होत्री सीमान को साथ अस्थान सुरु साथ सुरु को क्

गुंख्या पहला या होता

. र) मून को जम्म व कारण बेहना कांत्रित होना । भगाव विभाग उन्हों या कोन निवश भागे वर, विभागई सुद्दीन विजय की इसे एक क्षेत्र एक (२) यह का मन्त्रदाने चेहरे पर करेरी साथा । प्रयोध— स्थापंतर करे यहे (चेंद्रोठ-जिस्सा, १५३); सुषम जी को व्यक्ति महिल्ल व होरिका । बेबारे प्रश्ले ही पीन वह गय है (प्रद्रमठ के पन- च्यह्मठ क्रमी, १८५

पीम कर वी जाना

नकुत्त नष्ट कर केमा । अयोग—क्या मृस्हरक दास हो बादमा तक ना इस महत्व कर दान कर दी सहस्राय ातन देमकट २०६

पंपरवा

- (१) परिचार करना का करकाना । स्योत—सन्ना और दाश को दिनका तक नहीं चटाने बेती और कुछे वीचना चरहते हैं (मानक (१)—प्रेक्क्ट, ३५१)
- (२) बहुन कर देशा, चून चून दिने देशा । सभीय—वीदि र स सारत मर रेट राख या सार, केरा ग्रांस शक करदार राज्यों कर में (सूचन प्रेका०—मूचन २०६०, बाल रहें सन् भाग करी यह कांचिया गरिति दीलों कार्यत (हर्का०— बीधी, देश राजन्य क्या को पीयना है, विसर्व सी (मृड०— प्रस्ट रू. में इस दीयन में प्रदेशन साथ तर तरी कार्या ना: ३ प्रस्तद रूप प्रधानमा हाथ में पान से दायिया ने इसारता की पीच साला, क्योंकि निम्म को भी सामन्य प्रमान के प्रविकार संपर्ध में पूर भी (क्यांकी०—पू ० समी, १६६९, दर्शिकार संपर्ध के प्रस्ता भी पीच देशा है विद्या-प्रमी, १४१ +)
- (२) स्ट्रेट बारो बचकार करना । चणेन—देखिए चयोग
 (२) मं (±)
- (४) क्षमधील होता ।

वासे को पामना

हुए काम को दुवारा करना । धर्माय-नेमार टालने को नक्षित्रत नहीं भारती कीर पीने की पीमना पमा है पहले करत गांकी बाल कर को बनवार को नव गोंका, नहीं तो टीका की साधारणना कहा है (पड्रमठ के स्थ-

क्षाने ज्ञाना

करुर प्रात्म । अयोग----में भाग्य के विष्या≠ स पोमी तर रहा हूं (शितको—श्वाद, २५१)

युकार कर कहना या युकार करना

(१) दिनता गरता । प्रश्ति—गणगणत्य भी मृतः मृतः यसम्बद्धा हार । इह हा बाते हे बुद, कार्यात करी पुकार (कबीर इंटा०-कपीर, 86); कार्य पुरुष्टी का यह अस्त । भाव भीन होड एति हात (पर०-खाउमी, 1901०), सूर नोध प्रमु बंतरवाणी, काली नहें पुकारों ए० छ।० - सूर, प्रदेश्योः रहे तहा वह घट रवकारे क्या नार्शन वस्तु नार पुनारे (शम् मृं - तुन्ती, पश्का, नानी में न मानी करी सोई बोर्ड जिथ बाली, इंच ती पुरुष एक दोही भी करत है (BO to--सेमापीरे, ६५), तब जिसने पनके नायरे भीर रहनुमें में सब के नद 🗙 अन्त के नाम जान पुकारे र्वाय सार्व-सार्व कोठ, १७५

(म) निक्तिम क्या में, दुवता ते, यह नवट क्या से कही बात । प्रधीन-कहत क्योर जीन में हारि, वह निर्म कक्षी पुकारि पुकारि (केवीर प्रवाठ-क्योर, २८३), शत्य **मनम** नृप कात पुकारे (कृष साठ-सुर, ३५४० : वह सकता में बहुउ गुकारी (राम्छ मूं)—एकसी, द०६)

पकार परना या होता

 अप्रकार संस्था भाग कर जाता प्रदोग परी मुकार बार गृष्ठ-गृष्ठ ते भूगो लग्नो दक जोगी बाजी ·श्व सा0- सुर, ४१३१ त रासमीर दमम बुमारी भी परी पुरार, बार बान धूमधान कर साम वरी है (भूपन संधान —-भूपण, २१३.

) #°ण रहेबडे पुणवरंग अला

व्याप स्थाना

अध्यक्षभ वक्ष विननी यहन्तीः प्राध्यम्भक्षाची वर्षत्ति वक्ति कृतिक को ए व सर्वेष्ट प्राप्त विकास क्रमानं, साम, भूत नके पूरण कर्ता करण करण है। हाई हिन्साक विद्याराज्ञ हर राज्यां चारणे सरस्याच्या वात्र अह এন নি কলবত ২ কলব ১৭১

पुकार खुनका

विननी पर प्यान देना । अयोग--तुम सौ बदार दीन होन अधिन बर्धी हार मुन्यि पुरुष्ट याहि की भी सरसाय ही धन्नः म'दस—धनः०, ६

पुष्पादवा

- (१) सन्बारनाः । प्रदोष- वर्षे शांति पुर हार पुनाशे । बानी रिपु बस सहै न चारा (राम» (कि)—दुतसी, 641)
- (२) रे- युकार कर कप्तना

पुटट पर इन्ध न स्थाने देना

प्रशास के प्रवास न रहना। प्रथीय—बहुएसे पोड़े पर नवार की कि जिंग निन्य फेरता लाजिय था। बन वाच दिन बचा रहा भी फिर दुरडे वर होच ही न घरने हता (कर्म०-देमकट १५

पुण्य करना और कुएं में जात देशा

नेंबी के बच्चे में बुध में बातना; नेंबी क्षत्रके पूज प्राथा । प्रधोद -- नेरे क्यर भी दशना चन व्यय विभा है अने नधार नुनी कि पूर्व्य रिया और पूर्ण में बाल दिया सुहाराठ---DO SID EL

दनका हाना

- (१) वन्त्रप भारतर या वाधार होता । प्रयोग—डीनना के वर्ग रहे पुगर्न 1 हार हिस्मल कभी न हम हार्रे (मुमरी) —हर्गा औध, सुर
- (२) प्रकास होता ।

पनर्का का शका

क्षम्यन विष होता । वयोग—जब ते जुवान श्रान प्रशी पुनर्गान-नारे, सानिन यमे हा वय सूनी यम अंधिये (सन्दर्भ कविष्य: -सन्दर्भः, ब्रह्

पुरका दूसम्ब करता

मारी स्थिति की ठीव बंश्या । प्रक्षीत—हमें बुस पूराने रमार के अनव पृत्र दरस्य करने प्रदेश अज्ञोक्त हैं० ५० (CH 1989)

पुरति-पुरते करना

(४) रंगडररण परनर - प्रणाम चार्थरान यथ ४१



पाटकर पुजेन्युकें कर कासा (मान० (१)—प्रैमधंट, २१४) (२) सूद सरर वहनी ।

(समाः मृहाः-पुरके-पुरके वदाना)

पुरजे-पुरजे होना

- (१) ट्कडे ट्कड होना प्रयोग पुरसे हा वह किनाब विगय तेपा सार बयान न हो ,भार प्रकार १२ - भारतेन्द्र, भद्रभ
- (२) ओर्ण-बीर्ल होना प्रधान—भूगः नवही पर्यापद सर्वे भगो के इंत पृष्टिका पृष्टिका हो एवं अक्र क छाउं लेक ,कबीर प्रधान—कवीर, ६९)

पुरानी राह पर कारना

पुराने वंग से ही काम करना । जमोन-जा गडा मानव यक्षा मन भी पुरानी राह् (कृष-दिनकर, ८०)

पुरानी सर्वार पंछना

परम्परा का पालन करना । प्रयोग — बगावियों के टका स्यूस नहीं होता, ता इन धराती सवीकों को पोटकर क्या अपनी बाल सबट में काली जाय (मान० (१)—प्रेसबंद, १५४), सब बूढ़े पर्य चौर प्रानी लकीर पीटनेकां कह काले हैं (कामनां—प्रभाद, ५५

(समान प्रतान पुराजी छकीर न छोडता, लीक पर बलना)

पुरुषार्थ धकता

प्रक्रित कम श्रीजी । प्रयोग---वाके शुन्त, चरतगति वाणी, अह बावजी युहवारण भू० साठ---सुर, ३पन्छ

पुरु बांधना

बहुत समित्रका कर देती, कम न दूरने देशा। प्रयोग— सब जगह बात रह शही सकती बात कर नाम दें भने ती पूल सोसंक हिल्ली। बद नमने प्रशास क पुन दाप। वे कुरदारी बाती में या नमा (दुधगाहा—देव सक, दक्षत.

प्रा पकड्ना

माश्रय लगा । प्रणास-आस्त्रित मेने अन मार कर उनेकी पञ्च पकड़ी (धीटान-श्रेमचंट २३%)

115

O. P -185

पर्जा दुइना

मृण वन में घटी होती। प्रयोग -वन्तिक स्टानी पृति होट, बाद दह दिसि गयी क्टि/म्बोर प्रशात -क्टीर, २१४ - बेटड कोड अनी वो ब्टीर माभ न शावत सूर भी हुटी (पद०-साधासी, २०१३)

पृत्री क्षता

थियों काम में सभा धन पूज काना । जयोग—मीर संसद का नमय है, कड़ी पृत्रों न पूज आय 'पड़मo के एत— पड़मo अमी, १७)

पुछ होना

- (२) भाग होती । प्रयोग—यह और बात है कि 'गुबरेव'' की आठ-दम नाम बाद पहिलक में मुख्युक्त हो रही है पर बाजाद मान की पूजरा ही है (दुधनाड़—देव सव, २५६)

पुछना

सामान करना, बहन्त देशा । वयंग्य--किन्दु में सायध्यं-याम होकर हवें में पूर्व अ अ तो हमारे कलेजे पर साप भारत नागरा है भान० ४ प्रेमबंट २०६ कोई पहलर मही, तो लोग पहले क्या भारत को हैं (मा-कीशिक, १६६),

वृज्ञा करमा

- (१) विका पूर्वक कावर करना । अयोग—स्वि सुवेप का अवह केंद्र केंच क्ष्माप प्रवर्षित नेंद्र (गम० (बास — तुरुक्ती ४६ देखि, केंबे बचा मुम्हापी पूजा की है (विक्र० —म्बारत क्यों, ६४)
- (२) वृत्र देता । जयोग---कारित्या नाह्य की गुजा की करती ही होती (तोटान-प्रेमवट, २७)

(३) बारता ! व्योत—करन देह इनकी मोहि पूजा बोरी इनटस बाज (६० सा०—घुर, ब्यक्ष); वो जब न मनको तरे हम तोरी जुब पूजा करने (सक्षाः श्रेमा०—स्थाः द्यात. प्रह्ना: वजी नीने जीरतो को वहियों से अपने नदी को पूजा करते देखा है (इ.द०—अ० लाठ, १३४

पूजा बदाना,—हेना

- (१) पूम देशा । प्रशंत—श्वय क्या तक हमारी पूका न पीर्म तब तब मा खुटाँचे (साठ पंत्र (१)—भारतेन्द्र, १); इस तकाशी का अवह उसके बिट से टल काव, पूजा चार्म कियानी ही बहाओं एवं (गीटान—प्रेमबंद, ११)
- (२) भवित गुर्वेक सांध्य करना ।

पृत्रा देगः देश पूजा सदाना

पुत्रा होता

- (१) बहुत आयर होता । वदाय-हर वस्त है क्यावार। भी एक बाद-मी दा जाती घोर लेकिकाको में उनकी पुता होते क्यों (मानक (१)—प्रेमकट, ३२३.
- (२) शांट कटकार या यान परनी । अयोग-स्थानकार में में प्रचान भूनों के निरु वासियों के द्वारा कुछ विशेष प्रवा भी विश्वने नहीं (असीराय- महादेवी, प्रश

पून के पास पालने में नज़र भागा

्रिशान से ही चरित्र का पना संगमा । प्रयोग—नहीं ही क कर पूर्व के पांच गरनम में नजर मा जाने हैं (धरती०---हिट प्रठ. ३८)

पूरर आवा

- (१) विशेष में भीत पाना । प्रयोग----भी नर नाम नद्धाः स्रोत कुण किल्लि दिल्लीय म अल्लि एक सेक्स प्र सुरुक्षों सदस्र
- (२) काम पूरा होगर । अयोग-स्वर्गत विकास वठ ठकुर-मारामा नाम न राज्यात गाँउ आला रामक ल मूलस् घटन
- 🜓 प्रयोग्न हान

पूरा उत्तरका

सर भीरतर हथा। यस स्थान च्यान है कि सबी

वार्क्सवारी हम बात वे पूरे नहीं उत्तरते (आहोक०—ह० प० दि०, ५५), को बात लेक्सपीयर कमियों और प्रेरिकाओं में बार में यह बया है, बहु को बाकई हुम्सा निक्तिवानों पर जो पूरी प्रमरती है (क्टं०—दे० सठ, १५१), स्वाकरण की पिक्षा पूरी करने हे यहते "जूही की हमी" निजी औ, में क्याकरता की पृष्टि के बाद को पूरी उत्तरी (कुकी०— निक्ष्मा करें भाग अविद्यामाओं संस्मरता पूरी उत्तरी। भिक्षा करें भाग अविद्यामाओं संस्मरता पूरी उत्तरी।

(३) गम म होना, ठीक होता ।

पूरा दिन होना

बन्धा वेदा होन का नथय निकट होना । प्रयोग—प्रिक बोध-श्रवा नथाने पर प्रता नवा कि उसकी दिन पूरे बग रहे थे बीप उमे समसी विना भी भी क्यान्त —सैनेन्द्र स्टे

पूर्व पहला

प्रनेष्ट होता । अधीम--प्रवहत बील स्पष्ट में स्था होता है हुन्द्रे, हतना मी हफारे बिए ही पूरा नहीं पहला (मन्द्र) 6'--फेमबंद, ३२)

पूरा पाना

निर्धि पानी । प्रयोग---भाज्यो नाच सच्छ औरासी, कहरूं त एने वाची ए० साध--सुर २०४)

पृथ्वी का स्मानल में जाना

भोर अनिष्ट होना । धर्माय—मीडि शासू इति देवहरू अवडी । यका रशानक आर्गाह त्वही (रामक स्था)—सूलसी.

पृथ्वंत कायका,—होस्ता

नंदर्भ कार्तावन होना । प्रयोग—नमन कमान्त कीरुति यवनी रामक काराः—शुक्तको १९०): बाला तिमके कंछ बालु मकपुर्वाः कार्यः (११४१० ग्रेस्थ०—सध्यत दास. ६७४

कृषा दालना

🐫 पृष्या कांपना

पृथ्वी पर भाना

करम स्पन्न र प्रेप्टरण क्रम्म किलागान्य प्रथम काला । सा प्रविक्ती सह काला का प्राचा प्रदेष⊷ क्रम्मसी ५७७

पृथ्वी से वंड क्राना

मृत्यु को परन्त होना । अयोग—को हो चार वर्ष है तुमको पृथ्वो से वर्ष जाना है (गु० नि०—का० मृ० गु०, ६३१)

वेग बद्धमा

हों मन्त्रः बदना । प्रयोग—दनने दिनों तक मक्द किए कैटा वहां कि अब भी कह सुभागी को दिखाल दे × × दर देगता हूं, तो दिम-दिन समग्री देन बहनों ही जाती है (रोग) (२)—प्रेमबंद १९४

पेक ताव काना

नमेथित होना । अभीन—यम् सम्मन्ता जनाम सूनकर भीरंगजेन देश-तान सामर रह नवा (पट्टम प्राय—पट्टम० शर्मा २३२,

पेस में भागा या क्षेत्रा,--पड़मा

भोके मा वभवन में सोना । प्रयोग—नीभर जनक नहेब पेक परि गई है (गीताशका)—तृतको, ८६); तो न क्यो प्राप्त वेक म गटनी भी रुक्ष पंचाहब को बात - पुस्ति?— हरिक्रीध, ६८); किया कभी तक वह वेच में नहीं आती। वेदी बातू नहीं जुनती (स्थार)—का स्ट. ६६)

पेज में पश्चमा देश पेख में जामा

पेनदार बात. पेमग्राम की बात

बात भी स्पष्ट न हो. भीने की बात । प्रयोश—समार गाइड इस विभिन्न ट्रिस्टों की पेनदार काले सनक नहीं रहा था (कड़0--दै0 सफ. ६४), तो शावको कालि चेन पे दशरी औ क्वी पेनपान की बाते 'मुभसे0--हरिजीध, ६८'

पेचपास की भारत

भाष्य और प्रश्वक काले की आदत । अयोग---बोट वे पेश्रवाश की आदत बीथ का बीयनान कर वे बाग व्यवसीठ ---हरिज्योध, २७:

देवपास की बात देव पेसदार कात

पंद

पर्ये । अयोग---रांच बहुत बेट किए, चुमती है (बुद्ध--अंव सव, २१,

पेट वेडना

- (२) पेट में वर्ष होना ।

पेट और शन काटना

बचन के जिल कार्न पहलने में कार्यों करती (प्रशीप---भेन हो पर कोर तम कारकर यह गृहतक शाही है । एत्व १)---सम्बद्ध, ७१

पेट कटना

भोजी कारी कारी, कपना बंध दिल कारा । प्रयोश—पेट करना देख बढ़ में पेट कर कोए पीटा ही करने द्वालियां कुम्लेक-हर्वद्वीच, ३१।

पेट का

- (१) धन को प्रयोग में सम्पन्न कृत् भी न प्रिमाद्धार—
 से अपने पेट का सब पान बनाने को सैयार हूं (भिसाध—
 क्षण्डिक, १५५
- (२) बाम दिया हुआ। अयोग—ऐना करका को कि चित्र प्रमण ही बाव। यह अभ ही न पड़े कि धार का है या पर का मा—कोशिक, 5%

पेट का उपाय,--वक्कर,--धन्धा

त्रीनिक्ष का उपाय । प्रदोग — जमयगर्योग होन नर जानी, इस्त उपा उपाय। क्योर प्रशान क्योर १४५ वहन लोग यह कहेंगे कि इसको पेट के पाने के बारे खुट्टी ही नहीं इस्ती शावा, इस नवा उप्तानिक करें हैं (भाव प्रशाव, इ)— भारतिन्दू, घरको, जब मून्सी क्या क्या सेम्पा हरकार, जब बा दर व पान म कुट्टी नहीं दिल्ली भानव है प्रमाद देश, क्येंग्टरें में दान बांबारोग कर पेट के यंथे किए अबे रहे 'कुमतैव-इस्तिया, ११२), इसनिक् में भी पेट के स्वकार न बहा काना है बुदेव—स्व नाम, १२६)

पेटका कुला

बात के निर्देशीयें बाला : प्रपोद —का, य कुल में किसी के भी गर्क पेट के अपने किया वो वो कर स्थीलo— हरियोध २२०

ऐट का गुलाम

भाजभविका के लिए सब कुछ काने को तैयार । प्रयोग -हम मध्ये हु में नहि पंट है बने मुनाम (५० मी०-४०ना० 角6, 20年)

पेट का अक्कर हेर देर का उपाय

वेट का हर

#देव—अंच नाव, १६०

पेट का पंजा देव चेट का उपाय

चेह का एकी न प्रवता

सम्पन प्रत्यका होती, प्रष्टा व जाता । प्रयोग - नही पाया, यह की बनवान ही पहणा नहीं की वर्ष पेट का पानी नहीं नुषेत्र (मुलेक-माक देखी, प्रश्र

पेट का पानी हिन शाना

बहुत परिश्वयं और प्रभट होनी । प्रयोग-- हिन नय दिन भी स, दिलमा कर्माएं । अध्य दिल क्यों वेट वह बानी दिले क्मरोत—हरियांधः ३६

पेट का भूत

भूग । प्रयोग---पहासम कि जब पर में कोई ऐसी चीज म बधी, जिसमें के फार नहींने नेट का जुन किर ने टाका काता 'मान० (१)—प्रेमचंट, २६६

पंद का बलका

जिसके पेट में बान के पर्य । जनीय--जम्, तुम बादे पेट के हेलके हो। यह पत्रने में नदा काणता कि विक सरहब ने असीन दिस्ताई है (१२० (१)--ग्रेमचंट, ३४६-३४६); अपनि द्वित का संबात काई की कर सके तम न देत के हुलक्: **बुलनैद**⊷हरिक्रीस, ह्या

पेट फाटना

(१) ऑक्का-नियाँह के आवस्त्रक वर्ष में वश्त करनी । प्रवाद -दिन्देपहुमार और मनविस के दर्शनों के लिए वपने बच्चो का चेट काटते हैं (द्वागात-दे० स०, ६१३); बपनी मजदूरी बरेर पेट काटकर भरो इस भिक्रमदे हा पट (मृग०—एँ० दर्भा, ३५); यह धन जो मोधन में सर्च होना पाहिए शकनकती का वेट काटकर पहुंची की घेंट कर दिया जाता 🛊 (श्वल-सेमधंद, ४१); असेक पाप, धनमध्य समझार बारके को इन्हें पर बाटकर देवना के निहर दिया, माना है। बया बह भी लेख ही बनहों के लिए है हैं (तिससी —क्साद, १६६), को धन-दौलह हमने××देट काट-फाटकर इन्द्री को है× प्रवरी। नुमहाने पीता बानान की। पुरस्तानी के समान खुर नाय, और से बठी दुष्टर नुबुर नेवा कक, यह नंग भना मुध्यत क्षेत्र देश: सावता (मा-कोशिक, १५)

(२) रोबी बीन केनी । प्रयोच-दूतरों का बेट काटका पाप 🔰 बीनेक--राव राव १० 🛭 किसी का पर कारकर हुन, कियों का बचा दक्षते हैं (मर्म०—हरिश्रीध, पश्च,

पेट की जान भीतर विपाद जाना

क्षेत्र वा बारवर्ष होता । प्रकान-वित्या के पेट की वाने भीतर निवह वर्ष (पीरान-वेमचट, १५६)

पट की आग्र,--- उचाला

भग प्रभाव- हा हमारे पेट की स्वामा हमें बहुकाओं है विष0-प्रेमी, ६४); जान है लग वर्ड कमाई में वेट की बान बुध्द क्षेत्र केते चुमले०—हर्शश्रीधः ७५,

पेट की भाग बुक्तना, 'स्थाला शांत करना भूषा सात करनी । अपान---एक दुकान से थिठाई और अवकोन केवन वही बंच वर बंडे-बंड उन्होंने पेट की आग बुच्छ की (क्ट्रांज—देव सर्व, ३०५); काम है सुम्ह बुम्ह का करने पेट की बाब औं अंग्राने हैं (चीबेo-हरिशीध, बेरे । पेंट की ज्याना बुग्धने के लिए उन्हें बीड पुर नहीं कानी परती। साथ सांध-महाव दिवेदी, ५३

पेट की कहिताई,—विकार

भागे-भागे की फिता । प्रयोग-स्थानम् करम्, प्रधारम की बहुत बली, पेट की कठिन बन् बीच को सबाद है 228

कंति — ऐंसमी, १४३/६ x x इस दर मां कोली. की कि पानी से पेट की फिकिस नहीं करेगा भी जाता बहुनता हैं। जायगर (बला — लागान, ४); भी जावनी अवने केट की फिक नहीं फर सकता उसका विकाह करता मुख्य तो पान्य मा मालूम होता है। सबन—पेसबद ५ अभी पान्य हो पट की विकाह, तक एक अभी की भीर जिता हो जावनी। (रंग० (१)—प्रेमचंद, १०-११)

पेट की बिना

६० पेर की कठिनाई

पेट की उचाका

र्वे पेड का भाग

पेंद्र की ज्वाला शांत करता

दे॰ पेट की भाग बुकाना

पेट की थाइ जेना, पेट की पाना

यन की गुष्त वास का शदान पाना मा केना । प्रयोग— द्वितिधिक प्राति भागि इस कवि दस्या नक्त बंगको चया एत के पट की न पाई से ठाकुर०—ठाकुर ४) सूभागी न गमस्य—मुक्ते कांचा के रहा है। मेरे पेट की चाह कन के सिस् यह जान फंका है (गाठ (१)—मेमबंट, २०१)

(नगः नुहाः-चेद की थाइ पाना)

पेट को पहना

कार को किना हाती । प्रयोग क्षुक विदाल की विदायनका सही क्षीन वेट्का यहकी यह की स्वीतिक हति सीछ. २१९.

पेट की पाना

दे। पेट की धाद लेगा

वेड की चात

गुष्त दान । प्रयोग —ाक ही यार्थ को जिल्ल जिल्ल जनक भ्वतियां हुई — मोलिक को यात्र साल्ल्य है — बंध पेट की बात दाव देत हैं जिल्ली—जिल्ला ६६ पेट की बात आनंतर है तो पेट में पैठ क्या नहीं जाता मुनलैक—हरिप्रांध

82)

देर के गहरे

(१) बहुत चानाम । बनीय-वर्ष देट के बड़े गहरे हीते

116

O P.--185

रे इन्हें बड़ी दूर बरे सूचला है १९० १)--प्रेमचंद, १०६)

(२) बात को गुएकर अपने तई ही रलनवाके ।

पेट के पनने

- (१) किनी बात को मृत्य राजने में असमये। समोच---यर का हानि हे हाह मु सिर यह यह पानके नहिन अमें यह (बेंद्र- इंडा)---नंद्र- १३१)
- (२) यस पंचा स्थानं में समामने होता। प्रमाण---वयने बटो के किए ही यह बट की क्लबी हो को बाद नहीं, बड़ बानक के किए प्रसिद्ध की किए में) बड़ किसी से दूर नहीं भी (धर्मतीo--किo पo, १५५)

पेट के लाखे पहना

कार्वे कर को भी न होला 1 जबोच—सूझे वराकर पैट के लाके रहे (कन्दी०—निराहा, ३८)

पेट के लिये

वीरिका के भिन्न प्रयोग—रही उरर के कारणे जग मांच्यी रिम बाब क्योर प्रशान—कंबीर ३५ पाइ सर तम, अभी राम भी रत द बर, संकल रत्तम पेट काम के हरे हैंदे (७० रठ—मेनावरि, १९६०); केट कामि चैराट वर, सप्त रमाई भीन राम्म कंविठ—रहीम, ९१; पेट कामि चैराट वर तप्त रमोई चीच (राधाव प्रशान—राधाव दांस, १९); किम किम पानी केट हेल सब सारम सीर्य शाधा ५० पीठ- ६० माठ किठ १७१) कन कर पानी पर दिस थाप करत में स्वांत (मार्य)—हरिओचा, २६); पेट के मिन्ने ही मार्य है बाई मार्ग (परिए—निश्नक, २३१)

पेट बलामा

वेट बहुना

पेट में कृत करना, यह होता । बनोय--काम गढ़ने का किया अब सामगापेट कोई तब पड़ेया क्यों तहीं (बीस०--हरियोध, २१४)

पेट गदराना

बच्चा होते के समय वेट बढना । प्रयोग--शृक्ष गरनायां ।

हुआ जोजन गया, देवकर के एंट गटराया हुया क्षेत्रत्य---हुविजीय, २०१

देट जिस्मा का गिरामा

गर्नगत होना पर कराना । क्योल-ई निराकर पेट दिन दिन गिर रहे ।कोसक-सूर्रकोष, २१८): बान निर पीट पीट बंद रोई बिर क्य पंट पटकानी का बोलक-हरिजीध, २११)

वेट गुडमुडामा

भट पुरुष्कारण ग्रह व शहर होता । अव्याप नया वारो वास्तु क कारण ग्रह व शहर होता । अव्याप नया वारो व्यवस्थ नहीं हो जायभी वृष्टनृवादा पेट की बवता पर्ट वोक्स्य-वृद्धिकोधे, २१४)

वेट कलता

(१) सहस्य पोदाय नायक वित्र प्रत्ये । वर्षाय स्थानि स्थानि

(२) पतने वस्त धाना । सयोग---दूतरे ही दिन मठ के एक साबू का पेट बृंह चनमें सन्त (मैसा०- रेमू, ४९)

पेर संदर्भा

सींद क्या होती । व्योग--क्या क्या क्या क्या कते कावा वेट क्रस्ता नहीं कंटाने के कोलक--इस्मिय, २१४)

वेड स्टब्र

(१) प्रति कम होना । क्योब-एक मा यस स्टामा होता मती स्टोमें में पेट क्या पेट कब (कुम्मी०-इरिजीक, १३६. (---)

(२) क्षेत्रिका की समस्या से कृश्य होता । वयोग—देखिए प्रकोग (१) में (→)

पेट जलमा या जलाना

(१) अन्यन भाग नगती है। भाग पहुंचा । प्रयोग—अब इसके पेट राजका नज कर छाप उद्देश्य स्थापना स्थापना १ —किंग पीण १३६), यह बाल कुछ पेट संस्थि विक्रीयाय का पान पर्ने (राखाः) प्रयोज-स्थापन दास, २०), है से बाह प्रसादन कर है की नंतन पेट अनुना है हमारा भी अने बोलo—हर्द्धक्रीध. २१७ . जब पेट जलने समाना है तब मां भा-भाकर नाक रनदनी है (वलo—नागांव, २३)

(२) भीष वाना।

पेड जारी रहना

बररबार शासानर होतर । प्रयोग---हम कसर श्री अपेट में पढते पेट बारी जगर नहीं होता (बोक्क--हरिद्योग ६१५)

(ननाः मुहार-पेट करनाः—पनला होनाः— विगटनः)

पेट बामे फिरमा:- वकड़े फिरभा

मूने पृथना, पेट के निये भागते पृथना । प्रयोग-शत दिन पेट पान कर घरना दीवले पेट के निये हम हैं पृथतिक-हारजीय, क्या); यो रहे शक्ये क्यान के सामने पान के यह पक्ष किए यह स्थतिक हरिसीय, प्रश

पेट दिखाना

वेट दिवाकर भूमें होने का नकेन करना । वदोग—नह यद हे न रेग्यन सार पर क्याना विसा दिशाव हम सुभतेत —हर्मिजीध, क्याः दीन भनी बाधीन है सीस नवाबन वर्षात । बान भन की बृधि बहु, पेट दिशावत साहि ह व संठ—वृद्ध, १४८

पेट देना

परने नन को बात बननानी । प्रयोग--- अपने पेट दियों में इनकी नाक कृष्ट नियं पत्र कोशी सुन साठ- सुन, २००६ , भेट काल पर म जुनने धेव वे वेट नेने पर न देव पेट हम बोलय--- हरिसीस, २२०)

पेट एकड्ना

परेमान होना, म्यानुन होना : अवीय--निवासमय मोशी अभी पाप त्यार के नियं पेट पकड़े नया है (परेशा--मीठ टाम १६३

वेट वसके फिरशा देन वेट धामे फिरशा

पेट पा सुरो चलाता, -- लात बागता

मार्की कान तथा। प्रकीत हमार पर पर मान मानत है पुरहार दामन माहब दूधनाछ-दिए संच ३०७ सरकार यर पर खुरी बलावेगी और हम ब्यमण कहा होते हहेगा? (परतोध—रेषु, ४९९)

पेट पर पट्टी बांधला

मोजन के सभाव में भूने रहना। इसीय—दूसरे सीम अपने गर पर गट्टी बायकर इनके जिसे दय जान शेराना बहा तक दन गर्हे ? क्ट्रांट २ - शेरापाल ३३३ - शे धाना है भी पेट पर पट्टी बाध कर बाता है आस्तीo—गठ गठ १०५।

(समार्थ मृहर - चेट पर पन्धर बाधना)

पेंट पर लग्त मारहर

रे॰ पेट पर सरी बहाना

पेट पलना

नीविका का ज्याव होना । अयोग-है जहां पर पैट की मनभा नहीं किस अन्त सुख से बहा कीई हिसे जुनति। हरिसीध, 80;

पेट पाइना

णाना पट भरता । प्रयोग -चारत यो समृद च उनको है वही वेट पारने ही की (मृभतेठ—हरिकोध, का)

पेड पानी होना

पतने दम्त होता। प्रयोग—हो नया पानी किसी का जब मह पेट कीमें तक भना भानी क हो (शैलक—हरिजीय, २२०

पेट पालना

विसी प्रकार निर्वाष्ट्र कामा । यदीग -- वालेट इत्यादि वे भवना पेठ येम केम वाल मेमे हैं अह निर—वाल भट्ट १९०: देववर की दया में में सभी समान हैं , हहा कट्टा ह और भवना पेठ वाल गकता है (मिनाल-क्रीफिक, श्रम्), भागने नहीं ईमानशारी की तो कीन ने भेटे नांव दिसे । मारी जिल्लामें पेट वालते रहे (पलन-अमचंट, १३), उना कर मान बूसकी का, कृत कर भी न केट वालें (मर्सल-हरिजीश, २० हे ना होट ही पर अपने कर नमाने दिस आने रहेंसे ग्रीट पेट पालने रहेंसे (मुगल-कुल क्यो. ११०)

पेड पांड एक होता.— से लगना

भूक वा अन्यत्वना के कारण वहुन पूर्वक हो बाना।

अयोग—जन नई मूच यंत वर्ष भागे, पेट है चीठ में सहा बारा 'ज़मरीo—हरिकीय, य०, यार हम येट भी नहीं पाते बिग अरह पर केंद्र एक न हो (बीलo—हरिकीय, २१७), बांग है का पड़ी हुई। पोटी पेट है बीठ से जया जाता 'बीकo—हरिकीय, २१य)

पेट पीड से अगवा दे॰ पेट पाड एक होना

पंद-पृज्ञा काना

भीवन काना प्रयोग —बद्ध साक है पेट पृत्रा के निय कैस-बैंग कान ग्राह्म कानता है (जहारोक ६० जोशी, ४८०)

पेट-पॉस्डमा

वर्तिमं बनानं । प्रयोग—इने बत बार देव वेट-पोस्टनः है बनो प्रेम साठ—सात लाठ, २० वही सहस्रो पर आंधरी वो गोटान—प्रेमचंट २६६ वृत्तेश उपका कार्यक्तृ सहस्र है (प्रातीठ—वेनु, ३५०)

पंद फाइकर काता

न्यादा जाना । प्रयोग— देवार गेवक - - मुक्तमा गरे ये कि इमर्थ गानर क्यों इसनी और दी गाँ है । याकर कोई नियामत नहीं कि पेट कारकर आई जान (रंगठ (१)---पेमबंद, ४०-५१)

वेट फलना

() बाई कान कहन था जानन के निग बर्चन होना वेर्चन होना केर्चन होना। प्रयोग —वेट न कुनल विन् कहें, कहत व जागर हर । मुस्रिन विचारे वानिय सर्वाध नुष्ठें सुरुत दीहां — तुन्ति । अति व दुसरा हो बाई ऐसा कार्य होन्ये में देन देनते हैं जिसस समाज के साधवाद की संभावना होती है तो दुसरा पर कुनल नगन। है जिसा १ — शुक्त २९ । दूसरे का पट कमा देन कर दूसरे का पट क्यों है जुनता ।

- (२) बहुन हमने के करराज पेट में कर्य होता । हवीय---येट जाब कन इसना नक हमा बोलक हरिसीक्ष शहर
- (७) अधिक कोचन का बावृत्तिकार के कारण देट में कम्ट



होता । जमोन-—रात काना से भीर आया का नया चा. सो देट कुछ नया (सक्ता-प्रेमकंट, इक्का)

पेट बहुर होना

- ्र) प्राप्त का लालक होती । प्रयोग—न्वेरित यहां तो जो जिनने कर्न ऑस्ट्रेट पर है, उसका देट जी अंतरा हो बचा है (रंग्ठ (१)—-देमचाह, ३००)
- (२) व्यविच शारत करने की बनता होनी।

वेंद्र बांध्या

मूर्थ । इसा । इसोप —ककारों में सिने घर के कियान, गेर गांव कर यह हुए हैं सैलाए—क्षेत्र २२१ । बरनवर्ता के माने बोग आप देनक पर काम कर नवर्त में, केविन गेर बोच कर काम करना कर सुम्बित का (मानक (ह))— पुरुषोट, ५९

वेद भर कर

रच्या सर । जमोग--निर पटक बाद पेट घर रोई पिर सम्बे पेट पेटवाओं का ,बोलठ--हरिप्तीब, २३१)

वेद भएना

- (१) इन्ह्या पृति हात। विश्वी बाल की रामरा वाकी त गर भारी ३, प्रयोग—नर क्ष्मक समर्थ नहीं, पैर मण्ल कू काल (क्षमीर प्रशाल—क्ष्मीर, ५१); क्रप्योद पेट लरत है जिलि किल, और व लेन न हैन (सुंध क्षाय—क्ष्म, २५-५४), बाब भी एक-एक बहुना बनवानी पहली है। ने माने क्षम इन्ह्या नेट प्रदेश (व्यन—क्षेत्रक्य, १८६); वो हवार क्षमा हैरे सेट की पहली ही, क्षमी क्ष्मण केट नहीं मानिका (वैस्त्रे—अवस्थ १८७)
- (२) जारत में तुर्के राजा प्रवाद- क्या और बरेगा के वैट करते के बाद चीन वाजार बाचों का भी देश अरबा बहुता है (वेदिक-पूजाबंद, क्य) (रू.)
- (३) ब्रोनिका श्रमणी। ज्योक---वर्ग क्य करना पहला है × × रूप अर्थावया का रूपम पर घरना है अरसीठ -श्रमण १० रूप कार किसी का चेट, उरह की है जयना भ्रमण मार्थेट हरियोध, १४०
- (८ अन ठड्ड २५ म तिवन दर्शन (२) म (÷)

पेट भाइ होना

बहुव कानेदाला । जयोय---वेट समका चाह हो पर आध अर वेट बचवा हो कियों का तो जले (बाल०--हारिजीध, २१%)

(समार वहार वेद सरस्याचे होता)

पेट मारी होता

- (१) जाना न दचने के कारण केंद्र करा-तरा समना 1 अयोग-व्येट कुछ जारी जानम वेला है (रेशमी०--राम० कर्मा, २४% जब भरे पर धरा बना है वह तब अभा क्यों न वेट जारी हो (बोल०--हर्ग और वाप
- (२) किनों का बाना जारी वा महता ननना । इयोव---यहां कीन बक्के यो रहे हैं, एक केश ही वेट अस आरी है क ? १९७० (१)---केशबंद, २००७

वेर सम्बन

कियों की दोशी पर धाषान करना । वयोन—वर्ग कृषी किया मुख्य मोने की पेट हैं करनता नहीं परेई औलंक— हरियोध : 228)

वेद मुंह बसमा

रक्त और उसदी होगी : प्रयोग—नूमरे ही दिन यह के तक बाबु का देर-वृद्ध फलने सबर (वैकाठ—रेम्, ४६)

वेड में साम समना

बहुत भूक करती । प्रकार जल नहीं है क्यों जलाकों से क्यों, पेट के हैं काय जलती दो जले (बोल) —हरिजीध. अपन

चंद में कमन होता

(१) क्षाकर काल न होता । वर्षाय—हम क्षाव की वर्षट स पहल पर प्रारंश तरण नहीं हाता बोल०—हारिजीय नव्य (२) जन में दुर्जाव होता । प्रयोग—सी न हम बैठते पण्ड का कर देट तुम्ब में म वो कन्य होती (मोसेठ— हरिकीस, ११५)

पेट में कनमता प्रचता

ा भंग्यर में ही बहुत मुख्याना था मिल्ल होना। प्रवरण—नाम्नु कामों है लिए यह प्रमयं गरा बार्गन्दर होता । वसके पेट के कसबसी याच जाती और कीत आस् बहाकर भीडी पेर के जिल प्रण्या जो कृष्ट् १८६। कर २ । वी (मिलाए—कोशिक, १९०)

(२) फिसी काम को काम मा मानन की बातुरता होती। प्रयोग---वीप मे सब मानियों आमें नहीं। येट में नद के भवी है समझली (वुभरीठ--हरियोध, ६७), मेरे येट म राजवानो सभा हुई है, कहन हो प्रवर्ध रहा है। जिसना प्रेसक्ट, १९७

(लगः) महरू । ऐट में बुलबुका ४८मा । उधार पुधार मच जाना)

पेट में बहा कृतवा - दीहना

- (१) कियो बान का जामक की उपमुक्तमा राजी प्रकास मुझ सब भी विश्वास न अध्या पर मार कृत्रम के पर म मुहे दीड़ सो में (मानंष्ठ (४)--येमचंड, २९०) (+)
- (२) जोशों की भूग मनती । प्रयोग--- है पूरा दाल भूग से मारा पट म कुंद है रह पड़ जुलका हारिशीय पन
- (१) शालक्षणी मनको प्रयाण महरहना न मा हता १८० देखी नापर म चूहा दोड़ गोदान अनवद १५७ , यामी गम से जब में साम का नाम गुन निया था, सभी के उनके बेट म मूह गाउन तथा था मा नकोशिक अब देखिया प्रयोग ११) में (क) भी

रेट में जूता दीवशा

दे॰ ऐट में बूहा कूदना ऐट में छक्षेदर छुख्यान

#ोई बाल शानन की बहुन इत्यूकनः होनी । प्रवास वार्ट जनिव्यति आई साथ म कि पेट म सुदूनका क्यानान नगना है (प्रातीक-नेषु, हम्मठ,

पेट में ख़ुरी ऑकता

निसी की अहित करना, वें निका होतनो । प्रयोग—वर सक पेट ना रह भरने, विश्वतित पेट स जुरी अर्थ बीट्रक —हरिसीय १९७)

वेश में जाना

निसी बस्तु का हजन ही जाना । प्रयोग-नहीं तो बयी है

[17] QP .85 —मीर नरे यह दाथ बांधर इ वेंट में बचा वचा 'नितली'— प्रमाद, ३०.

पेट में औं न होता

बहुत दर सामा । प्रयान—शोधे वह सदयनि सब कार जीत न पेट हाथ हिए कार्प 'पद०—जायमी, ध्रश्ताव

पट में जामन

- (१) का अना । प्रयोग—धूक्ष में बाव वात क्यों वेकों की तक हाल वेट में आहे. (बोमेश—हर्षिकीय, २०)

वेट में पड़ना

वर्ध में बाना, बस्थ पाना । प्रयाग---नोड भरे, जिन काय के बान वरी पहि बोद मों नाय के आगे । येट परे को क्ये पत्र ३०) नियम हो स्पृत सुआवति जागे। धन० केविस -धना०, १९९

पेट में पाच होता

वालवास होता । अयोव—है वहां पांच पांच है ही था वेट में पांच क्यों किसी के ही बीसफ—हरियोध, २१३)

वेट में पानी न पचना,—न इसम होना

- (> बान को स्थान तक किया प्रकार नाल न एक गक्ता । प्रकार को बड़ी बृद्धिया में न कह दना, नहीं तो उसके पर म पानों न प्रथमा सबल-प्रनदेश १६५ वृद्धिया बल किर सामगी, उसके पर में पानी न हमन होगा मानत (१)—प्रेमबंद १६५) (--)
- ्र प्रमाण बहुन मनदर्भ सथनी । प्रयोग पर म बात दश मके की क्या कमा देश का नहीं पानी (बोलाठ---हरिस्रोड, २१६): देलिए स्टोन (१) में (🛨) भी

एंट में पानी न दक्त होना देन पेट में पानी न पचना



वेंट में पानी पड़ना

घेट में पानी पड़ना

सम में संदेह होना का बाटका होता। वयोग—पर राजा की तरफ से सदर के लिए पेंट में पानी पर नया (मोटीज — किस्सा, पप)

चेट में पानी होना

सम्बद्धि स्थापन क्षेत्री । प्रयोग-वास्त्रक्षी कोरायस्य, सुन्ता और स्थापन क्षेत्र संभागित कोर्टेक जिल्ह्या १९७)

भेव सेमा । वयोय-वेट की बात कावना है तो वेट में वेठ नवो सही बाते (कुमतेo-हर्भकीय, 84)

वेट में बार पत्रमा

पर म दर र ते । हार्थ के नामक) प्राप्त मन मन से प्र पष्ट कार मानते नीमल नवान प्राप्तुम्बर्गाक जा के तुनी है नाम म स्थान स्थान मार पर म कल पर पर मार है है । जिल् —बाठ भूठ गुठ, २४०); भारतार भी की कार्ने कुनने-भूनने वीपाली के पेट में बाल पढ़ यह से की (क्वार —के सार, १९०), मान काही के पेट में पढ़ मारवा है समार हमना हैन्द्रोश को हुने भीतार—हरिकीस, १०६०

पेट में बात की गंध न प्रथमा, नवात न प्रयमा ---बात न रहनां

बास की अपने तथ ही न रच पाना । अयोग—वह बान मेरे पैट में नहीं पण नकती (क्सिंग—क्सिंग, १२०); नवी व पहिल बाम का मेर कहना प्रतिन नहीं परोध पनवे पेट में बास नहीं रहाती मेम साठ—कठ काठ, १९१६ पुरत बाद एतिटर बान । किस्स पेट पर्य नीत पान (भाठ प्रधान (ह)— भारतेन्द्र ६६६); ठेरे पेट में बास पंत्रती नहीं कुछ पून पायेगी की मांबचर में विशेष्ट पीटकी किस्सी (मीट्यन— प्रेमचंद, १०५), जान बाबू को बीम कही है पेट में बान की संस हक म नवनी की (मानठ ११)—प्रेमचंद, २६३।, वेट में बाद एक पन की पी (मानठ ११)—प्रेमचंद, २६३।, वेट में बाद एक पन की पी पन सका पेट का नहीं पत्नी मोलठ— हरिजीस नश्का, की मन्नाम, जोरे पेट में बचती नहीं बार के पूर्व की पन सका पेट का नहीं पत्नी मोलठ— कति पर उनके पर से कांग नहीं पहनी भृतिष्ठण-निरािला, अप

(नदार मुहार-चेट में बात न प्रपता)

पंडमें बाग न पचना

रें केर में बात की गंध न पंचना

वेट में बात त ब्हना

रे॰ पेट में बात की गंध न प्रवता

वेट से बुसबुका उठना

विनी क्षात को जानने की जाकका होती । वर्षाय-जुगन इसी क्का विनेश टहन के कर पहुँची । उनके पेट में कुम-कुम कह रहे के, कर निर्मश टबन को नदी की (सास्त्र (१) --ग्रेमकट, २०६.

वंद में रकता

अपने तक ही रचना । प्रयोग—सोख वर के पैट में रहे त कोटी कात (वृ ० स०—दृन्द, १३५); काटिये पेट मत किना का भी पेट की कान पेट में शंकिये ,बोल्क-इरियोध, २२०,

वेश में समाना

- (१) स्वीकार होता । प्रणंत—विन पे ते वे चाए कभी विर्माह के पेट समेड्रे ,क्षण साम्बद्धाः ४२५२
- (३) श्रम के कियी मानू को से मेना ।

वंद में होता

- (१) बन ने होता । प्रमोन—मृत्यता है मृह मोठी बाद पेट के महता है कुछ सीर (मर्न०—सिंहसीस, ११२)
- ् , प्रांतरात्री हाता । प्रशेष—यं यस एक व गाने कितनी व र अपने प्रेट से क्लिए कहा खद्द, कहा बंध, कही पर है किताल (१)—कृतन, प्रदेश), के इसमदा प्रास्त एक के केंद्र सुन्न पर साहित्य कर का प्रदास । कुल्लेल क्लिओल इस

पेट बहुना

লয় সকলে। অফাল পৰাই থাকৰ বিশ্ব আহি কথা হট্ট প্ৰায়ত অৱশাপৰ কৰিব। ভূপিয়ীয়ে ২০১৮

वेट लेला

प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक भारत । इ. जिल्लाक प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक प्रश्तिक स्थापन ।

वंडचयकी

प्रस्थानी । प्रयास भाग भिरापीर कर राई किर स्थापर पंडवाली का (बांक०-हरियोध स्वर)

पेट से मारता

रोजी सीम नेमी। जमोत--- बनादार नरीव सारवी हूं, पेट से न मारिएगर बोटी०--निराक्त ६३)

(नमाव पुराव-न्येट में छान मगन्तः)

पेट से होता

गर्भवती होता । प्रयोग—जब अंग्रे हर बार श्रोता ही पता पंट ने होना न होना एक 🖁 (वील०—हरिचीध, २१६)

पढ होना

गर्भे होना। प्रयोज—पेट उन्हे भी या पर दिलार की ष्मियादन की तरह राजरपुर की हार्टटन दुवन *नरा-कन*ा०। -- RU. 61

पेंड काट पत्ता सोबना

मण प्राप्त र कर करके वस्तु बनाए रशन भी इच्छा करनी श्रमंक्रम काम करना । प्रधीय-वेड कार्ट से पानड लीचा, कीन जिल्लन हिन नारि इसीका साम**्या म** - सुन्तरी ४३४

(समा: न्हा:---चेट कार कर शास सीचना)

पेशानी पर बस पहना

जिला हा जिल्लामा प्रगट होती। प्रयोग-सब दनाको में जिल वेशाओं पर कभी न कर गावा (बैटेहोक-हरिजीध, খুন্ড)

चेंग बढ़ाना

(१) भूने का तब करना । प्रयोग । रिमाधिय रिमाधिय बाला कत की, मानिया का बढ़ाय चैतरी धहरू छए

(२) जान पहुष्यान बदासा ।

चेंद्रा वेजना

सदारा पार्टना । प्रयास आयु ही एपाल पारी साम भूतपाल सोट दूसारे व तासी, वेदो दसन हो बोल को २ , कठ १० - रोनायति १०६)

वेंडी बदना

प्रमास मान । प्रयोग - बोद्धा किन्द्रा कारणी नाम पृथ्वि

म बाहि, पैडी बहि पासा पर्ड, मार्थ बोही सोडि (क्योर 2810-Bailt, 33.

पेट परमा

व गणार्था (तसदोब प्रदोश भागक ! कावण को मिनू हु ৰাৰ খণিত ঐ (চনত কৰিল-জনাত, দুচ

(यशः वृहाः — येदा सारमाः)

पंतरा काटना

धरना क्यानं करना ; बहार क्या जाना । वर्णग---भूगन अवक्या नवा। येत्या काटता क्षमा भोना "पहने तो बाक्टर कहना सामगरक नहीं है" (नटीठ-अझेश. ३३)

पेनम दिक्ताना

नधी-नती पुष्टि विवास । अयोग-विवास वैभरे देवना शांतिम वर्श के पैतरे--काम, ५७

वेनरा स्टाप्टका

 (१) करत की प्रकृत कीता । प्रथान अवस्थीतना का मृत्य रका है। जब हमय प्रगान देने की शक्ति हो नहीं है, तो व्यक्तं में द्वार वर्धी वाचे, पैनरे वर्षो वदने (१०० (१)--प्रमण्डे, ५१५

(-) एक के बार दूसरी एक्सिया प्रयोग काचा । प्रयोग---हम बबरावे कि कही सम्बन्ध ही बादर की स्तृत न चले जाय, पैनरा बदम बद मेने बहा--बापके दर ने मुमीना त करने भी जब में खार बाचे बेंडे पहेंगे (पैसरे—अडक, 201

विनदा भगगा

क्षाते बक्चर बाब नेना । अयोग—है जनको संबद बनारे में, बैनरा शंब वर नहीं शता (बुनतैक-इरिक्रीय, ११६)

र्तेनरे बाज दोना

बरा फारांव होता। प्रतीत-नवर वन पेतरेबात हे हैं शिम बार्ड (वेंसरे-अपक, रहे.

वज वह जाता

प्रयोग - प्राप्त पन्धानस्य भी संगीत नुध्ये पेश



वैदल चेंकरा

पत्री कार्तियोगी देक ८२ कोन की मण्डीवनी धनट कविन धनाव, ५९

पेइस फंकता

किसी प्रेम को समान। प्राप्ति -धीर धीर कुछ नन गुनासर सह पेशन फेकता नका था छहा वा (नटी०---अक्षों रू. ४१

(समाः मुहाः---वैद्यस सारमा)

वैश्वर करना

कम्पन्तः । प्रयोग-अत्र विना कुत्र देश किए काम नही सनेता ना-कोडिन्स, १६३

पेर अञ्चल

्रिक्षी काल व व्यापं व्यवध्यात्रक हथ्या किलल दश्या दला । वर्षाम-वर्षी विच तथा पाच जिसमें क्यापा (मृथते०— हरिजीध, १५६)

पेर आंचा से लगाना

आवर करना । प्रयोग—नित बहुत दौड वृष की ने वर । को मिटी प्राप्तिको उठा देवं । नार्षहरू पांच बाह के उनका । वृष्य के बाल है नमा केवे (चम्मी०—हरिक्सीध, प्र

पैर उक्कारना यह बक्ताहरू।

- (१) इतर व सकता। प्रयोग—निष्याङ कानी में कत पत्ता, पर नहरं नेच थी, यांच उक्तइ वर्षे (कर्म0—प्रेमबंद, 198), हुमगें के समाप्त हेने में पांच क्यो है समाद उक्तप माना चुमनै0—हरिग्रोध प
- (२) नहने के जिल्ला नामने सार्थ न रह करना । अमीन— पेतना के नम्मां के पैर असार कुछ में (सासी)—वुं 6 करी. 5%)। यह साथ के साथ के आरे में अनुमान है कि रोक्षमक की बटका के बाद ने सुमानवानों के पांच उसार रहे है खुंडाल ? सहायान ३०% मानना के पांच उसार न हुए मानम हुए, यह संपूर्ण मानाक्षी हुई उनमें विकार गर्दा (मिटान-नोमचंद, कर , आहे के पांच क्षणह गई से फ्रिडाल स्मानकार 583

(समार महार-नीर न टिक सकता, -- न टहाना) पैर उटना या उटातर

(१, अन्त के जिल न प्राप्त प्राप्ता के ता । अपरेल — का

यसम तृत्वारे वेण्यातन की सम पर तृष्ट्रारे नीस वसव तम भी परिक्रमा देवार नायते रहे ने किए यह की मीर वठ चंत्रे पांचे कनूठ--भारती, १९); नृत्वा चयकी बात पर बा कृती थी, एक सत्य एक न-प्रांता देवाब एक तक्ष्य भी प्रिमन उनके पर उठे (चोटीठ- क्रिसेला, १३३-१३॥), पैठने को आति हिन के पैठ में ए हमारे पांच उठ पांचे कहा चुमरीठ-- हरिजीस, ११३)

र्वर इहासर सळना,--इटाना

- (१) भगने के निए करण उद्याना । धर्माय—पूनर दिस क्या में बेना को हुए में बोला, पर इन दोनों ने बेन कदम उद्याने की करण जा की ची (मानक (२)---प्रेमचंद, १५३). वह महेना उद्या प्रताह नहीं चांच भी को कहा नहीं पाना बोलक—हरिधोद, २३६
- (२) जल्दी-अस्पी पेट आगे रकता । अयोग—वयो किंगाने म काम पहुंचानी चांच थी हुंच उठा उठा चलते (बील०— हरियोध, २३८)
- (१) रे॰ प्रवासा ।

(तया । मृहा - पर वढाकर जाका)

वर उठाना

र पैर उठना घोर पेर उठाकर चारतः

प्र असे शीचे पहला

हराज्यका दश्या ध्याचित राम करता । प्रकेश — अगर विद्यार स किताब हुआ धीर करता है पात कही उत्तर-में से पह तमें में किए कराब की मान कर गयी सात्र उ प्रकेश देस किएन ही पर पांच पह उद्यान्तीय सीक.— वस्त्रत उपस

O.P -185

र्याका पुलि बरावर होता और न होता होता होता होते. निनको पन पंचन हम कृष्टि (स्वीर ग्रेशांद क्यू ६, ३९३६, तो नहत्र रोज्य को बाद्य विद्युत करण सुध्य आहे. नार्टनी लड़ राय का हो व जाजी कहि जीन पद है जियेला । २६११६०: तम मामनी की केलि विकास की हैं। ऐसी अंसा Bun wie aft um als mer ein nieffen em Ginfrebind या देशकी दे ही। भी योग की भी वह नहीं विकास की guide from This about the court along the man is merge uff fift effengerichte im unt nich mermit ein m उसर पार्श का भाषत भी तर रे अंदिक वर्ष में मूर्व की क्र पर की श्रीत भी में हैंगा - 'पान Miles in the Party १८ वर्ष की धीर्ति बर्गाचीर होती रहे किया कर कर है १८० वी भाग र्वेग को धृत्रि झारी बदाना,—स्याप्ता and the fact and which and as an an and the ab 31 中心,在在本意。在一个是一个是一种的人。 पंचर मारक रेस रा ए में प्या करते हैं पूर्ण परिवर्त है में तम नाम है कि समार न वर वर मन पन रचक तैन वर पालां की संदर्भ की किया करता के पाला के मुख्य कियों (६) अस्त्रे में के के किया के किया मामकरीय किया पर वेर की पुलि साथे लगाना OF A MER BUT के इस साम्यास्था

por ularity okur to de attellie mit Bellen innen in innen ein hip puttig ge april 4 ALLE (44 L かいないない 年代に 後に 神明な 中では上出かれ (1) 2000 15 airlig for best fine frem appetit generum werne su and has a new to up o orderin charge Car he so my r ं श्रेष्ट-काल्यांका कारण होता DATE & SHIPP T र्तर भी श्रीधमध्येश्वर सम्बंधक है पर वर प्राप्त का र चैन को शक्ति बी तेन ही तर \$5 PE - \$1 . P - W 4 10 DF च्चित्र का बेर्ट्स के कि पति कि किसी पत्र कर कर पर केंग्ड ge the der States ibr bint ab tanb bie gebrieb uteil effet of the fie auch E Mas bet o .

प्रकारिका वर्ष वह बाई हुनक हैं। मेरिय किस बाह कर (१) भगभीत हामर शान्यवाय क्षेत्र । सम्बंद- क्य र्वेड । हरियोध, बुद्ध) - (१३ व्ह जून और है क्या ३३ लेकर्स (र्थ) स्थिति सीमानमंत्रक स्थापक लोग से त्या की है अध्यक लागे देवा को। मो प्रकार समादे का पर स्थान वास्त्र स्थान है। MAS 保持官 电影響 医水色管 पेर कीवड में कंग्सा क्षर यह भागत के काम में प्रमान । अवस्थित कालिया कार्या निकाम प्रेयर एका गाव कीवक कलकार है करा सहीतक **एरियोग्र, शोप)** भीन धकती तीत्रको किए किए करवाड़ीत पर कृति जीकार, विद्या । १८ १ र अथन कृतिहास प्रशास विभी पर जिल्लिक विकास विनाध मुतिया ह नेयता, मेरी नव ही पूर्व किया नेहारे " कर्तोर २०५ वह मार्ग मार्ग प्राणीक प्रमणिशी मुपर पर पर श्रीमण अपूरी कडीर शाल-कडीट २०६): १००० वर्ग्स भवी पान की, अाम भवी पार की किले मुझेम के मूर १८२५ , पूर्व कामारवरी पत्त परंच का बैंगित बाव बैंगियों । भी मन्द्र के प्रेमतद १९४ पत्र में है मि में उनके हैं वैश्री में में बंध बाद मों हैं। "प्रवृद्ध हैं हैं пр चेंद की जुनी होना नुबन् शाला चनात वातिया ने किर केले हिन्दी क्रिकेट ! pt - औरन बतना ६ र नहीं गितृत्व क्षेप्र क्षण है प्रश्नीकर्णन tio tio, 146) TREETS PE पर की डाकर वादा अपशित और अपीम नित्र होता है। प्रेरोमें कार्जी अपि हैंस मे में पुत्रत रह पांच को ने हीचर की नावते स्नुवर्तक (श्राहिओच, ५३)। tubla at प्रकृति भूति भूतिहरू । विकास का का का का का बन्त आर्टर माधीन कार्या के स्वतंत्र अवस्त अवस भारत बाला किस तरह राय कान भार निकस विसेष ⊷हरिजोध, १५०) TREETIN OF (समान वहर 🖛 वेबकी युव श्वश्यकर को की जिसर 🗎 🛪 🕝 ergent uffrig eines bereit f forer un bent f nicht fer



वैर करना

(१) किसी काथ को करने को उच्च होता + प्रयोज— देश-जाति-हिन सम्बन-रत रह जिनके प्रगति पान है नवी (मर्ब)—हरिसीध, प्र)

(२) व्यविकारी होगा ।

(बरा॰ गृहा---वैर निकलना)

वैर के लक्षरे कारण

कृताम्ब करनी (प्रमान—एक से एक निदान को एक में एक प्रमानकों को में सरीट सकता हूं, उनमें अपने चैर के तनने बत्का सकता हूं (हस्टाठ--अगठ कर्मा १८

पैथ के लीके की मिट्टी

बारतविकास, अधार्ष । अयोग---वाशित्व के उदासक स्वयंने पैर के तीन की विद्वी की उपन्ता गृहि कर सकत (अञोकक ---वृत का दिल, १८३३)

पेर भीषाना

- (१) विश्वन होता : प्रयोग—है व्यवन्त्रय यथी हो ती ब्रह्म श्रीय न पांच हम न व्यान व्यव (यूम्टें) होत्जीध,
 १२)
- (२) किसी काम है किरम कंपना जरमान करना । प्रयोग-एक हुए। जीवनान प्रथमि में हैं हुएरे परंत जरेवने वाले 'कुमरे-हरिकीस, १००)

वैद ग्रहमा या बादमा,--जमना वा जमाना

(१) स्थित वृद्ध होती वा करती । प्रयोक—सन करं, क्षेत्रता समझ क्या में क्यों नहीं यह बहार को पाता। इसरों के स्थान देने में पांच क्यों है उनक उनक जाना (क्सों) — हरिसीध व. यह तो कहता है, आभी साम भर ही काम कर नारे हुआ है। बांक क्या माने और कुछ हरकी भी हो भाने "" " (क्यों) (१)—स्वयाधा, १०६); किस राष्ट्री के सिर कर दुव्यानों के वैर अने हुए के ने कुछ महद्दूवर किस विजयी साथ्यों के वेर अने हुए के ने कुछ महद्दूवर किस विजयी साथ्यों के वह में बार कई हुए है महाकि - १६० पत दिल, १५ क्यां कि विजय की पत्रन्त् क्यां मेर क्या-अभ कर क्यों की बोद क्यों के (मासी)— में क्यां, ४५); हमकर यह कराय नहीं कि इस कर बीर महाने व्यक्त को बहा कर क्यांने के (मिन्न—मेनी वा) एक बार ऐसी आपेसे की कर्ष तैयार कर तेल पर की कि बारार में कल्पिटीलन के होते हुए भी अंगड की अंग्लि दूरना के लाक प्रपान पैर अमा लेगी, वह दिन्तियम की नेवारी कर तेला है (मेरें: - पुलाव o, at)

(३) वहीं टिक वर रहना । अधीय---जब स कुल्ली की हरवन मधीन हुई बढ़ स उनकी तभी के बहा राज भाग पैर नहीं जबसे (कुलोक--मिरामा, १४५

वर गहना --क्काना

- (१) किया इस दीनता से कहना । समीय—कार बार वर्ट करन नवर्टी करने विकार विक्रम मनि पोची (रामक क्षां) करने विकार विक्रम मनि पोची (रामक क्षां) करने करने इस नव मुनन की आह तह नव नव करने करने हैं आह तह नव नव करने करने हैं आह तह करने हैं की तौर तैर पर करने समन है युक कहाक न्यूदिरी प्रकार सब के पांच करना है वह कह बात हुन भागि (मर्मक हिल्मीध, उन्हें किसी परमहन के पांच क्षां नहीं पक हो है वह वार है वह करने समन स्वाप करने हैं वह वार है वह करने समन स्वाप करने हैं वह वार है वह करने समन स्वाप करने हैं वह वार है वह करने समन स्वाप करने हैं वह वार है वह करने समन स्वाप करने समन स्वाप करने करने समन समन स्वाप करने हैं वह वार है वह वार है वह वार है वह वार स्वाप करने समन समन सामिक के ही पांच परम, वह नुभी माफ कर देने स्वाप क्षां करने निर्माण करने हैं वह वार करने समाम करने हैं वह वार करने समन समन सामिक के ही पांच परम, वह नुभी माफ कर देने स्वाप करने समाम करने वह वार है।
- (२) वार्त के रोक्ना ।
- (३) पैर कु कर नवन्कार करना ।

पर माइका

- (१) वस बाता । प्रयोग-- डीड कर के जानि दिन पैदान य पांच केम बंद जना सहना यहां चुपलै०--हर्सकींध, ९०
- (२) अपनी बात वर बटन आना ।

वर कोपना

- (१) मुझाबद करती । प्रयोग--- तो एका बाप बाप देते हैं पांच हम बांच है एडे उत्तरहा (बुमतिय--हरिजोध, १००)
- (२) नेस कार्गे ।

पर बारता

कृषाकर करती , कीन बहुता । प्रयोग—सोव को भाट भाट को बोव, है अवटा हथ करात व अभिन्न हिस्सीध १५३

वेर जुमना

- (१) अधीन होना । प्रयोग-भेग की हम लगा रहे हैं कात कुट के याब हम रहे हैं भूम समय--(परिश्रीध, ९७) (न-)
- (२) बहुनायत होती । प्रयोग—सामानीता के गाँउ है कर्ष सामन्द्रतीन चर को सोहकर यह एक विशास ध्रम में सामी की तहा सम्मणि उपके केंगे को सुमनी हुई बात पत्रती सी (मान्द्र (१)—प्रेमकंट, २३४)
- (१) जादर करना, बता में होना । प्रयोग —यों में नुम्हारः सम्मान करता हूं सबर कम गां, नुम्हारे देर कृतवा नदीठ —सक्षेत्र, ९२): देकिए स्थीन (१) में (४-) भी ।
- (४) मृताबद करती । प्रयोग—जब किसी का यांच है हव भूमते हाथ बाये मामने जब है कहे भोलेक हरतियोध २५)

पैर सलगी होगा

मनने-मनने बहुत बय्द होनाः पैर मिन काता । प्रयोग सभनी पैर हुआ आता है कितना और रहा बनना न्यूप — भक्त, १२ , कीम काले यह कलेगा हिम युवा पाद सारो ने चिने मननी बना (भूभति»—हरिसीध, ७६

(समा: मुहा:--वैर बलनी होना)

पैर छानना

पैर प्रकारना, जिनकी कारती । प्रयोग--- मेरी शादी कापने हाथों मानिक के पैर कार्त हुये हैं (क्लय---नगाठ, ३)

पैर जमना वा जमाना

१० पेर शहना

पैर अभीन पर न पड़ना,--धन्ती पर न पड़ना,--

(१) पहुत भक्त होता । प्रयोग-- उसका पनि जब सम्हात आभा है, संस्थी के पांच जबीन पर नहीं पहले (मानक (६) --प्रेमबंद, १४): इसके पांच चरनी पर व बरने में (फेतन--घरक, छन्नो; शहरना साथ कर रहे हैं मेळ असिन तरह माद कर नहीं नीचे (बोसक--हरिजीस न्ध्रप्त), युवानी कृतो व समाती थी । उनके संग कृत्यों पर न सक्ते वे 'सुठ क्षेठ—सुदर्शन, ४०-५१)

 विकृत सक्षद करना + प्रयोग – यन के मही प्रथक पांच समीन धर न पहले ने (मानक (३) -- ग्रेमचंद्र, १७)

(मागाः वहाः -पैर क्रसीन पर न पडता, पैर सीधि न पडतर)

पेर दलका

पैर दासका

मह तिनानी हराता। प्रयोग जुमान मोगे उत्पात है उसको है माग जब नवा हिला हाने । ताल क्या टालट्स ने होता जो सकें टाल राव को टाल कुमते० - हरिसीध, केट।

पैर दिकता वा दिकाता

- (१) करी स्थित होका प्रत्या । समीध-नाम न हिन्हें पर्यानका लोगांत कार्ट बैल क्वीर प्रशाय-क्वीर ३१)
- () रिकॉल क्वी रह बाजी । प्रयोग—वही ब्रमाना पाव वहां पर वह नकता हो टिक (वर्मठ—हरिजीध, १४२)

पैर ट्रुटका

र्परो में इट होता अयोध-- वय महे-महे वही देर हुई भीग वैर ट्रिके नमें अअ तब राज वारावात दास आसोरी मजिस्ट्रेंट होनदार की मानि क्षेत्र उठ 'पिट होत' (वैठ अको) (भार प्रेर (३)---भारतिम्ह, दक्षर)

पुर टेकला

वैश् रचंद्र कर अध्यक्ष चाहना । अधीय-अधुकान काणि वय इकेड्र जोगा । मृत्रा क नेवर तूं जा चौरा (पद०--आधनीः २१%'

पर सहस्रमा

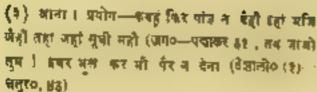
लडे रह परना । प्रकोश--किन सरह शांव ती ठाइर परने, है कही के कही करन स्थान (बोलाध--कृषियोध, प्रका)



प्रेरम्हणसम्बद्धाः विकाससम्बद्धाः । विकास । कि.स. (१ कतव्य पर से विश्वतित शेताण्ड प्रकृति-असूक विक्काम् पर करने ता तिस्पेत कारते हैं । पासन करने साथ की हो । काका के पंग तमामस्य हरते हैं। अस्मित्य केरे तीव क्षेत्रक मेरा के रहमाना वर राहे पर देवा र स्थान र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान । भिकाल के शिक १७५ (२) क्रियंश बांबाडीम द्वीती, क्षमतीर होता । प्रधाय-तार। वो भार्य का ही अरावा था, पराण उस दिन स्टूडिय के बाद परावस वेहें हैं शुरीत हैं देशकोंच पट्य क्यों न बैरिनी हैंने क्षा तमें पाने नहीं आब हमानी मेरा en. " wiffn, off it 1917 (जुमते०—हरिऔध, ६) येथ स्वत्याप (३) पैर ठीफ-ठीक न पहनर । पर क्रम्पूर्वत विकास स्थापना अधिक । समय प्रतिसारी क्रम (१) बाब तम करेंगी, प्रतिन मिस में देव शिर्व करेंगी Bu af na g dane av delle elle- fit ult. Hill (२) बतना । प्रयोग-सर्देशिक तमकत्त्व पत् दारा : अमा " alpeat of any or use made to the tree [रवर्तनोः क्रम्यास्थ्यकारम् स्थापः स्थेतः योजन्य **स्थापः स्थापः स्थापः** स्थापः gray deliconstitution of the at the sail चेर स्तिरमासक पेट--अफेल । गिर्माट एक फेस ऑक्सी (८) ि गाँउ च राह प्रश्ने रहाँ कि मेहिक असे मीत पर्व-मेराचा प्रशास । प्रशासक रूप । ब्रुध में प्रक्ष प्रमा किए क्या का का का का IBSS IP पट्व अध्यक्षि ५ ह property and the state का करे का आर्था होता है। उन XX TH ATE TO THE 小型水的水學 新心脏疾病 新放性的 女生此 मोरिया पानक नव का महामान के किया है। कि (पे) प्रतिम कीर यो पर होता । यदाचा जीवल क्र⊿ाल (१) में (२) पर कोड़ कर पुरसा पर कोड़ कर पुरसा पर काड़ कर काड भगों में बार्ड बसेश हैं पूर है पांच नोड़ कर केंद्री (क्यरीo-डि¹⁸) हिंग्डिट हुन TREET, T पर शेक्षेत्री वेलेखन्येत्री 🕫 🔞 💍 करता या जिस्ताम ग्रहरू जासा १५ हंगार ४ २२५१वेट अ.४८०

हिन्दु पर्य पर चमाकर यह राज र हमार पार्व पर सम्बद्धाहरू। च्यानेक--स्वाधिति । इत्योधिक स्वाधिताने । उन्हर्भक्षकार वर्ग्यकारिका उक्कायार २३ से संग्या सामा कारक तक न बकाए, यह बुराई के मार्ग पर चला चुरुबैधर राक्ष का जोड़ी इस ए जिसू वेर अपन प्रदानक व्यक्ति अह ती ह वर जनक के, 'स्वारी अंदियपते भारत तथना 'सिव्हेर' " (Pierale die fo fee fine wiese ige fe fom f PES 18 49 P OWIR & BAR पंर धरांनर । 'ह-दिला'के होर' अरुप्ते । _{'सिल्}या क्षार हे दोह हे ार्किए हेरे. प्रश्निक प्रश्निक हर दिए के स्वरण तुर कर कर कर क 444 un a, aa) eften nabe (e) u (+) u i (page 7 and 4 a page 10 than the control of (पार्वाक संपुर्व कर्णाम श्राम्भार (स्वर्व) । १४ 🕠 🕟 (4) येर बंबीकार करना त्य प्रथमा विकास स्थाप क्षेत्र eam होते के हेर्सन के अपने अपने अपने का न्यानिक के क्षेत्र कर के क वर इतरण में पामकं , का है बा समेद में क्षेत्र हैं है विश्व है कि कहा कर बनरह दयर न स्था है हमार्ग या दयवर्ष मा पान पानते। - इरिकोध, १९४) (शाकि किल्ला पर्ने अपन जासक) The strain पर देकर मलना पन्नीर भीरति के ते भारतति । " प्रधानि के काल भीति वृक्ताला है, पनि धवर्गन रहाकारणी क्षेत्र निर्माणा है और **क्षेत्र अस्ति के** से सहस्र है बनता ? (कुरू०--दिनात, ३२) इल्लामक पर प्रमान पर रें। वेश शहरत पर देना (1)」。通過過過過過過過過過 विश्ववस्थाते व नावास्थली प्रवस्थान स्थापन्स्ट्रियास्थली । name and the date date has be edited. ११६० के पार्व शहराह माहत , बुगहेन हैंग होने, tolk, and it for a so from oir fer '80 obob -है जिसके । जोकोर्स अपूर्ण की क्षेत्री प्रश्निक प्रदा अपनि जि

भीग हो। क्षेत्र में कर में भेकारिय जीवनारी छोटे 💎 🥕



पैर धरती पर व पहना देव पोच क्रमीन पर न पड़ना

पेर धरमा

- (१) आता । प्रयोग—मन् तेहि बारम दोध परी बंत बरै जह पाउ (पद०—जायसी, ३०१२% वेरिये कुमनि और कहर कही केबोदरस जायनि है जास बाब दहा पाद बारे की केरावर-केराव, ५०%, वीखे हारि जरूवन इस होनी दूनी मन तुम्ब्रे तुम नाथ इन दाव न धरत ही (क्य to-सेनावति, ८।
- (२) दीमता के किनय करनी ।
- (१) पैर शु कर प्राथाय करना ।

पेर जुलवाना

आवर करवाना । प्रयोग-भी नके हैं बनर में मन का मैन बाहिये तो न पांच बुलवार्च (बोल०--हरिचीध, २४३)

पेर धो-धोकर पाना,—पनारकर पीना

बहुत भादर या जुगायव करनी । प्रयोग -सबकी ऐसी मेहरिया ना गुंगा कि इसके वेश बोल्बो कर विज्ञीने मान० (१,--प्रेमबंद, १५४), हाय यो वे भाग पीछे हैं पढ़े, जो हमारर पांत्र यो पीते रहे ,वृक्तें०--हरिऔध, ५३); पांत्र बी मुल काढ़ पलकों से पांच उनका पंचार कर पी लें (बोल० —हारियोध, १५०)

वैर धोते लायक न होना

तुलना में ब्रह्मन्त नुक्क होता । प्रयोग-तरे ती उनके पैर धोने सापक भी नहीं हैं (धातीo-विo प्रo, ac), बगर पाने पड़ी एक जुनट के को तुम्हारा देंद योगे नायक भी मही (सेवा०--प्रेमबंद, ५४)

पैर न रजना

(१) किसी कार्यकी और प्रवृत्ति व होती। प्रयोग---रम्बनिन्ह कर सहज मुधाऊ । मन् कुपन पनु चरह न काऊ (शम० (बाक)--चुलसी, २३९)

- (+) आवरम-भ्रष्ट होनाः । प्रयोग-सब उपने देश निकाले हैं, बातों में बूबे स्थाती 🛊 (बूर०-अक, ५३)
- (२) किसी काम की सुक्यात करकी । प्रयोग सेकिस उपदेश की मीमा के काहर व्यवहार से भ में किसी ने पांच निकामा और मधान में इसकी गरदन पकड़ी (क्सं०→ देतचट, ६१७, हुन निकामें पांच, पानें भी निकल । हाच दिवनाये, दिवार्षे हाव वरो (बोल०-हरिऔध, १७३)
- (३) जाना । प्रयोग---जनान लडकर बहु के कप में प्रमुक्तर बाहर देर नहीं निकासता (किसी—निराद्य, ९१)

वेर वचन्न कर सेचा करमा

(२) स्वान-विशेष ११ व शासा ।

पैर निकालना

मादर समा कराहि : यथांच---दश्य नेद ती बाजी हेच करी वहि पात (पर०—जागसी, ४२७)

वेर क्लडमा

रे॰ देर गदना

वेर वचारकर वीशः

रे॰ वैर ची-चोकर वीमा

वेर परक्रमा

- (१) शबक देश । प्रयोग-स्थापन स्थापन परिचये कि किसी के राज में बयना कर नहीं परकता चाहिए (झासी०--वृंध क्यां, ३८३)
- (२) क्रोब वें पैर परकना ।
- (३) प्रयत्न करना (
- (४) शक्षा कर रह नागः।

वैर (वरों) पड़ना,—कर गिरना,—लगना

(१) प्रकास करते के जिए करन क्या । अयोग---आ कार्राल् में इस्तर, सरमुख मिलियर बाद । वन मेली पिक उजनाः लागि न मकी पात्र (कबीर प्रदाय-कबीर, १४); अपि संदुर बार्चे होत करी। परित देव जी पाएन्ह परी (पद्-जायसी, २०१), बारत हुं या परित्र तुम्हारें (शम० (बास) -तुलसी, २७९), पूजा करि चाई परि विशसे (नदेव



Asak

प्रकार—नदं, १६६); सदम मजला एक वर्षि में विसान मारुवी, बुमता ही नवा वोहि पॉट पॉर पाइ हो (संगर— पहुस्तका, ६६) (-), के बजी बजी बच्च राजी के निकट जान पाको पढ़ कोसी—को तुम x क (प्रेम धार—कर साठ, ३१); राजके पर का पर कृषणे के पांच पर निद्ध हराठ—कराठ, १०३

(२) किस्ती करन्त्र । प्रयोग—पान नानि चैदी पनि हाता | कृता नंह बीच दे नावा ,पद० सहस्रती, ३०१७७% मों कह प्रस्त करों या नाथी, बिटे द्विये की गूम 🐪 सार धूर, ४३०४): दलनी सुपतः विक्रीयन वाले, वधु पाद परो (सुरु सीरु पहुर, ४४२) वै पा पराइ कहर जनदेश । अपट मुद्र तथनह । अयष्ठ - विभवता (१०५० तामा — मुक्तमी, ५३), पहित नागत, सोधी वदावत पात नवादत ही तिनि जाते. **ब**वाये० (१)--विवाय, चंछ), पाद परे हु मैं शीमण स्वी शर्रह क्षेत्रम्' प्रयो हु म् में मून दीओर (बेक्स्प्य (४)—क्षेत्रस, श्रृष्ट): भी बढ़ीम बरामर वर्ष, अवस्त जाक यह शील - स्ट्रीस कविक -- (होस. fo), मेरो काडी करि-करि, श्रीव रहते अरि-करि, हारी गांव पॉर-पॉर, तो न बीन्हरे हे श्रीशार 2000-देव. १४), शतं पर जानंद मुजान व्यारी शेरिक स्रोति, समिन प्रमृति भेर केर तेरे रा पृत्ती (संघठ कवित्त-सन्तठ, १९४). गोप गुना करे अर्थित पथ्या द्वांत पाद पूरी विजना स्वति बार्श्व (मार्तार सकत-मारिताम १६), वृ कोरे नाम करा, कर तेरे पांच पदनी हूं कोई मुनने न पाए (ईफाठ-ईकाठ, पश्च): हिसा थिया तीरे पत्था नकत है, बना मा गहका स्वाप माही रूपी सार ग्रहांच ३ आस्ट्राट्स ६६३ पण्टन १५६ ही इ.शन धुनों को पुनना सकतो पर राजा है के पान दर बृह किर राष्ट्रात वृद्धाल संध्येष दास इतत नदर माद्वार भारत हा नी ना शहर दुनक वेश कर किसी जीत अ प्रेमचंद्र, ४२-४३ । भूत तरस के इस कृतन का उसा ज्यानक करी ठठक हरिक्रोध का बना बना करण नाम ना मधानन म दंध-बंध निर्मातन का का करीन न जब के ही पैश प्रभुक्त मानव १ - उम्बद ३३ - १६ नम् दर्जा तथा मोल-कोल प्रस्टित काम पुरुषक्ष प्राप्त को जगण्या स्कंटo प्रसाद १३४ स्थिए दक्षण (३) स () की (सम्राक्षण व्याप्त कृता)

पैर क्यार हो जानर

किसी पुण्या के कारण पैर न बहुना । स्थीन—पर्शामन दिन में वह कार प्राप्त असी हमारे कमर के दरशाओं एक पाने-आते. इसके पैर पाकर हो जात (ये कोठंठ-- प्राप्त नाम दर्श

पैर (पैरो) पर शिश्वः रे॰ पैर पदमा

पर पर परड़ी रक्षणा

वहुत विनास होता सन्तम करना | प्रयोग—नी तृष्टारी य पत्र रहेकी निर्माणा पर वानले किर प्रयोग (बोसैंठ— सर्वात, १००१

पेर पर पैर रख कर सोना

- (१) विशिष्त होकर पत्रे पहुना । प्रयोग—है मुनीबन को नवास क्षम रहा पांच पर २व पांच हम है को रहे .कुमीक-हरियांश, १००) (२)
- (२) वर्धका होतः । प्रयोग-न्देशित प्रयोग (१) में (+)
 (४४१० महाराज्यिक पर पर पर एक पर वेडमा)

वर पर साथा रगहना

किन्ती करनी । प्रधाय---नाक रणके निट नहीं दवसे आस क्या पान पर रजट करते 'सुमतिश--हरिजीक, ३२

पैर पर भिर रक्तर

(१) जनम करना । वश्रोत—स्वतः सीरह से एकनीया । करतः क्या हरिएक वॉर वीहा एम० (सुन्त) — सुन्तती, अर्थ (२) कर्नय-विका करनी ।

पैर कहोडना

मुमानद करती, आहम देना । प्रयोग -- कोरते पात के तमे जी वे पान उनका वस्तोतने हैं हुआ (कुमति०-- क्रिजीध, मुन)

पर प्रमार कर यह रहता

जिल्हिन रहता । प्रयास कार समाति करकी शहर नी है जैन राजी राज स्थापि सुरु संस्थ- सूर्व 333

पेर पेमार कर मोता

विदित्तन रहता । प्रथम —धीनि राम वस्म सं , प्रवीति राम

नाम की, प्रसाद रामकाम के प्रकारि पाव मृतिकी (कवित -- सुलसी १४४)

र्पर पसारमा,—कॅलच्या

- (१) थोडा पाहते-पाहते बहुत परहते जनगा । धयोज— पाहिए या कि जैसे-जैसे प्राप्त से अपने प्राप्ते, एक-एक पास पूरा भारता जाता । बहुत पांच कीनानं का बहुत प्राप्त के चंगतः (१)—प्रेमसंद, १९५३
- (२) वह जाना; अधिकार सेत्र बदाना । वर्षान —इस् प्रम कामती को भी आर्नाटक अधिप्राय जारत को बीर पीचे कामी पट्टी से कर केने का था । प्रीट अवरंश की दर्शा इसदे में पैट फेंगर रहे में (सांव मीठ—सहाव दिवंदी ४६) इस बेंगनम्य से यहां तक पैट फेंगए कि स्तवारी लाग घोए कामोहरू जान में भी मनामानिक्य हो नया मा—कीश्वरूप, पेश्वरूप, सेलने देख परंग और। के से क्या क्या मही स्वताह आर्थ (मुक्ति -हिंडीय, ११४), हो क्याने क विमे काह जिसमी क्यों म देलना ही एसारे पान हम (बोसाव—हिंदगीध, २३६), इसहीती में पेत प्रमारे अब तो पान सपी कावह (मुक्ति अपन्ववीत, ४१
- (३) धाराम में पढ़े रहना ।
- (४) साहामा बदाना ।

पर वृंछि व रक्तमा -न इकाना

पर पीछे न हटाका

रे॰ पर पाछे न रकता

येर पंतरता

- (१) वटपण्टना । अभोत-मीटनेवाके न माने बीजा के । भीटन में पाप तो तीटा करें भितनक-सुरिजीश २५४)
- (२) ध्रमच प्रशन्त करता ।

पैर पूजना

- (१) आहर करना, भूताबद करनी । अवस्थ-में अब स्थाने वटांगित का पैट पूजती हैं ,परतीय-देषु इत्योध है प्रवर भाव पृथना ही तो पूजने जोग पात ही पूजें (प्रोमेय-स्थाओंध, २१)
- (२) विवाह सी एक सम्बन्ध

पेर फिल्क्स्स --श्वटमा

नमनी होनी; धावनशान्त्रस्य हिना । प्रयोगन्न्दै स्पटन्य बनर नहीं बटनट बांच हो किर राग्द नया की (बीस० — शरित्रीय, २५६ , कह न किनमन यहा विभी छनकी यांच की नहीं किमन बाना (बीस०—हरित्रीय, २५६)

चेर केलामा

रे, क्या व्यास्त

वेर बंध जामा

कारों न वह सकता । वर्षाय-विश्वास के बाद सिद बचन कर्षे कुटक-आठ कार, २२०), उनके पैर वंध वर्षे (सुनीता-जेटाह पर

वेर बहामा

- [१] उस्ती-जन्दी नत्त्वा । अगोत—घरी नेक पांच बहाए चन राधाः प्रेडाः —गर्वाः देख, ६०२); वित्र जन्दी-जन्दी वन रहा वा और सामने में नध्या कुर्ती के साथ पांच बहार वसी मानी वी रगुरु निर्—कांश मुरु गुरु, २३३); वर, जन्म कांच प्रम रचिक की भागि जिसने दिन विचाय में कार दिया हो, अब अपने ब्यान पर पहुचने के लिए पूने केन में करन बहुए चन्दा जाता वा (कर्मण-प्रेमक्ट, प्र)
- (२) राज्ये पर बहरा वा प्रवृत्तरण करना ।



वैर बांच देशा

कोई काम करने में रोकना । प्रयोग-वेबमी ने पान बांच किये (सुरु सुरु-सुदर्शन, १४६)

पेर बाहर निकलना या निकासना

स्वतिवारिको होता । प्रयोग - मोग बाहर उसे निकास सुके पांच बाहर निकस गया जिसका बोलo-हरिजीध, २४४)

पैर विचलना

- (१) यम-अस्ट होतर। अयोग---चन क्या यस न नार्ति-हित यस वर श्रंथ की म तम निक्य कारा (मोमी०---हरिसीय, २४०)
- (२) दिवस्य से ६टना ।

पैर भर जाका

पैर सकता । स्योम—भी घर नया गई वर कर्ष्यं, वाच से गुर्वे गैर भी भर (मूर०—भेष्यं, १४), राष्ट्र वारी हुए चर सामा त्री, भर गुप्ते पांच, बांच भर आई कुमते०—हर्शक्रीध, ११६)

पैर भारी होना

(१) एवं पहला प्रयोग -यांच भागी है, कही वर-करा नाम तो और बाफल हो। गोदान जैमचंद १२४३, कठिल बना वा निर्दिष प चन्ना उनका, जो सुकुमाने हो। बारी देन, दु:ब की बारी प्रवास से तो हारी हो (नुर०--अख, १५) (२) जनुम आगमन होता। प्रयोग --एसमरी हृदि भरी बहु प्यारी पान भारी हुए दुई भारी कोस०--इरिक्मीध, ३४४)

पैर सन-सन सर के होता,—सी सी सन के होना जब या जार्यका है आगे न यद पाना। जयोग—चॅनिवह वर निगाइ पार्ट तो दोनों के पान पूज गई पांच वन-यन जर के हैं? वजे (मान० (१)—मेमबंद, ३०३); धांचों को के संभय बन के नाथ ही के उठाई तो भी के में न उठ जवने हो गई के माने के फिया—हिंडीच छक्ष देर मी-दो पन के हो गई के, जैसे उनमें काश घर दिया हो 'गोड़ो—सनुर०, की, उसके पांच यन पन धर के हो गई के (चेसन— करक, ३९), तब थवे, भी को यहाँ के बन पये। जब गये है सह पर कार्य कहां। पैठने को जानिहित के पैठ में ए हमारे पांच उठ पाने कहां (जुमलेक—हरिजीय, ११३/, में निरास होकर पर को लौटा, पर पांच मन-मन के मारी ही पहें से (सुठ सुठ-सुदर्शन, ७)

पैर में कार्ट पहना

कस्य होना । प्रयोज---वृत्ती गाई क्या खोड़ी एउँ , अहुत कार्ट पांची कें नवे (समठ--ह्रस्जीध, प्रत)

पैर में बक्कर होना

हर करन बन्ने शास्त्र होना, कही न टिक्ने वाना । प्रयोग— वर नुग्री तो कहा करनी की या, कि येरे देव में स्वकाद है द्याल—देव सव हर । अपने सन्तव के निष् सन्त्रयी करन जाता हूं । यांच में सनीवर नहीं है और न सकासी करने में कोई बहा सुख मिलता है (गोदान- प्रेमबंद, १७)

(बना: भूत:--रेर में यन ककर होनर)

पैर में बेड़ी पहला

वयन या बजान में कमना । प्रयोग-अस्ति-हिन बीहा स्टा बार्य कहा प्राम है, जो बाद वें बड़ी एड़ ,बुनलंठ-हरिजोस, १२)

पेर में बेंडबी करी होना

विभी काम को न काने का बहाना क्याना या न जाना। वयोग —उन अनवन्याय जारी विहरी मु कहां निय जीएअ इस्य रहें (धनत कविश-धनाव, ३२८ , हाय मे वेरे जमाया है रही। है हमारे याव में मेहदी नगी बोलठ—हरिसीध, ३३६)

वैर में शतीचर होता

रे॰ पैर में चकर होना

पैर में सिर देगा

- (() वजीनका स्थीकार करनी । वजीय—सौत सर १९ स्वार हो कावे पांच में किए कभी न देंगे हम (बोला)— हरियोग्ड, सहर)
- (२) बारर करना ।

833

पैर रक्षता

(१) माना पर वाना । प्रयोग—पृति तहं राज मेनि पन् पारा ,पटेंठ जाधासी २६ १९ वर्गन सम पृत्र धनि प्रया हमारे । जो नुस बरन क्या करि पारे (सूठ संत्र—सूर. ३६३) रंगम्भि जब गिय पग पारी रामक (क्षा क्षा) स्थाने स्थाने क्या माना पर पारो रंगम् (क्षा) क्या माना पर पारो प्रेम संव्य माना पर पारो प्रेम संवय—लठ लाठ, १०४ वंशावी राजाको न न माने केसी कुमाइत में पैर रजा है कि वालाको के उनक फेर के साथ ही साथ हम कोगों के बाग्य का भी उनक फेर कर दिया (राधांठ संवाठ—राधांठ दासा, १०३), जान परता है कि वृत्यलयानों के इन दस में पान रक्षत के समय महा पारों और अधेरा साथा हुन वा गुठ निठ—साठ है। प्रियो न प्राप्त न बाहर पैर रजा हो (सलामीठ—राह्यल, १३ , पर भीतर पैर रजत है। उनके होना उन्न गय बोटोंठ —निराला, ६)

(२) प्रकृति होती। प्रयोग वह अने माने भाग को छोडकर प्रतान राजने पर पास राजने काली को कमान-प्रेमसंद. १३): भी स्थाचे नामन के लिए यस बाद-पद में पद धरो (१४०—गुन्न, १म)

(३) सहसर होता सबस्या को भाष्य होता। संयोग— पत्यह बरम भाग के उनने कोनहब म पांच रूपा या ,वंशाव — इंशाव, ५१ , परम्यू अवर्था म वेर करने हो रम वह प्या संयो कि हम दोनों एक दूसरे के किया सन्योग म नहीं गह कहते (पिसाव—कीशिक, ४२)

(४) प्रासीन होना ।

पैर रक्षने की जगह न होगा

बहुत भीड़ होती । प्रयोग—मीड़ के कारे वेर वरने की प्रमाह नहीं है (भार प्रसार (१)—भारतन्त्र, २००)

पेर शास्त्रा

भुगामक करती; रीम होता । प्रयोग---को स्यह को रणह सको सक को, पान क्या हो पनड़ स्वत मन्ते (कुमरोठ---हरिजीक, ३२)

120 O p.—185

पेर राष्ट्रभा

रे॰ पांच फिल्क्स

पैर रह जाना

पॅर्नी को बहुत चक बाना । जबोल--वर्गो बना प्याप-पंच-पाड़ी बड़, राज़ में बाब यह नथा जिसका (बोला)--वृत्रिजीध, २३७)

पेर बोप कर

दुबता पुनक । अयोग—सूट न राम क्या विन्, ताल कहाई पर गाँव गामक उ. तुन्हारी १ ४९० , यह वरि कोण के रुपोम पाद शाँव वर्षि सनापति बीग विरुद्धानी बीग दल से (क्षा रुक-सेनापति द.र , सेश सवाणि सुपाणि सर्व ध्रम बादन के तम से दम रोगे (सबद्धक-देश, ५१)

पैर शोपना

- (१) प्रत्य करना । प्रयोग---पात्र रोप्प सब मिनि मीहि भागा । प्रत्यकाम पत्र जापन पाना (शतक (क)---तुलसी, ६२॥
- (२) मुकारणा करता, सटै रहता। प्रयोग---नृर वीर गांडा पर गोंचा इह किये पाया स्थानी किसी प्रयोठ -केसी, १८५३: वें में किस शामिए संया परित्र एसे पांच शीर्षे वर स शेरों हाथ हम (केसा०--सांग्रीध, १७४)
- (३) स्थिर होता (

वेर (वेते) समना

वेर पहला

वर सरपराना

र्गेर ठीक-दीक न पहला; रणनपाना । प्रयोज-स्माद नई क्षेत्र रहा है सरपट पांच केंसे न नश्यदा साक्षा (बीस०-सरिकोच, २३९)

र्वर खड्याहाना

रे॰ वैर शामगाना

र्वर समेरना,-सिकोहना

अयमी बन्द्रस्थीया जानस्यनताओं की कम नरमा ।

प्रयोग-ने समेटे सिनिट नहीं बाते बाब केने क्लेट हम कीन मुख्यक लाटप्रोध ११५ जाटण ट किस्सा जना में बाब केरे जिक्क नहीं बाठे (कुन्सेंट-स्टिप्सीध, ११६८

पैर शम्बाङ कर रक्तार

सभाम कर काल करका । वयोग---वो मध्य पाइते जनाई है पांच है है, बंबम शंकत स्वतं (बीला--(र्वासीय, २,३९)

देश महस्राज्य

बलात्मी करती । पर्याः वोर सात प्रतिस का विना नव है अलेकार के बाद बहुआते हैं (सानक (क्)-देशक्ट, १३४७, बाहत नित नर्दनर्द हो है सहस्र बाद का न सहसाता बुमलेक-हरिजीय, ६०)

देर सिकोक्स

है। दैर समेरका

वेर सिर का रक्षमा

दीन बमना, कुशाश्य करनी । बनोन--किर रहे, जाहे क्या ही बान शिर, बाद कर निर क्यों किया के इस उसे (बास) -हरिजीध, २४०)

र्यंत्र संस्थे न पड़ना या व रचना १० वैश करंगा या न पडना

पैर से का लगना

(१) देर कुनर । प्रयोग-न्या किर मृत्ये सभी और असवामी होचर सामु के येगे दा असी (मन्तर ५)--प्रेमचंद, ४१

(२) दीनवा दिनानी ।

र्पण से दृषशाना

मुख्य नामक कर ज्येसा कामी । प्रमाण—विशे धनेकशंहर में अन्न किनने ही देशों भी नामकार्यानच्या के कारण कर-बांबर किया, यह उस कृतरेय की बहुता की की मानक यनचा है जिल्हान एक नाम्बरूप को जान में इस्ताकर यन का बांबर निया (कुक-प्रमुख्य करतो, १५६)

पैर में बांध कर रखता

बरावर भएन पान रखना कही जीवारी राहरी । प्रयोग --

पैर मीं भी यन के होना देन पैर यन यन घर के होना पेर सींग से बाहर निकलना

भागवादे के बाह्य र होता। वर्ताय-काण्ये मकानी का किराजा प्रत्या अधिक का कि इसके प्रतिमास कदा अपने के केर पांच और के काहण कियम आते वर्गित-पुरुष्णिक.

953

र्वर इचा में एइमा

बहुत बुध होता । यशंभ—निक तमय मुनी तिथमान कक्कर के कंपनर के बाहर विकोध, उनके पैर हुआ में पर यो के (मुस्कि—माठ क्यों, प्र)

वेंच हिल्ला

विकासित होना । अयोग-नाम नेर हिले सही मां भी थे नामहे बहा सनेक गये चील०-हरियोध, १)

वेशे को पृत्ति चारता

क्षात्रक समयो । सम्रोत-एंडी मानी मनोगी कि साल-नात पाने पंत्रों की चून बाटने-पाटते निदारे करवे (मृगव --क्षां समी, २००)

वैती के जीने की तारीन विकास जाना, जिसक अध्य कि हैं कि स्वस्ता, से सिट्टी कि सकता.— नहीं की उसीन जिसल के मा, जमीन दिस जाना ए कि से अपनाधिन घटना में एनका सकता है जाना। प्रवाद ज्या के देश में सिट्टी विकास गयी (प्राप्त—पेमचंद कि है। अनके के अने से जनीन भी निकास गरी, कर्म के यह सही जाना मान्य के सेमचंद १५७ जाना के केश ना का देशों के जिससे कई झानेच युग्याल है देश पर है कि सेमचंद्र में यह के सेमचंद्र कर प्रयुव करों देश पर है कि सेमचंद्र में यह के सीच के मिट्टी विभव हुई की सेम्बंच के प्रयुव के सार्वाव के सार्वाव की पर है की सेम्बंच के प्रयुव के सार्वाव की पर है। सेम्बंच के प्रयुवक के प्रयुविध की

दुकान कहा गई । चरा बीट बाने बटा से काब का देन विकार दिवर । बाद तके हे विट्टी तिकन वह (१४८ (२)-वैभवद १३४ शिरतस्य दशकती तातशकर कवाण कर की वर्षात्व सरक गई (प्रेमांक-प्रेमकंद, इसक); केन कुलो मत्र आहत्व में से पहुंच कर की मुख्यों करण बालक करियाँ छ 4331

(२) किमी बाबार वा नहार का ट्ट जाता । वयोव---वो कुछ था, वेसे उसके मीचे से बच्ची जियारी का गर्रा 🖟 (नदी०-- स्नाग, 🖘)

पेटों के नीचे की प्रभाव निकल जाता दे देशों के शांचे से जमान जिलक जाता परों के बीचे की मिट्टी जिसक जाना देव पूर्वे के बीचे की उद्योग जिसक प्राचा वंगी के बाबे रकता या रहता

बचीत करवा वा होवर । प्रयोग-नांगवर्शवहरमत के-भीरत के तेरा के मीच नृष रहनात परिव निरक्षा २१७

पेरों के ताबे से मिही जिसकता के पैरों के नाचे की प्रमान जिसक जाना पेरों तहे की ज़बाब निकल जाना के विशों के नांचे का प्रसीत जिल्ला प्राप्ता देशें तमें का प्रयोग दिल जाना के पैरों के नाचे की प्रधान जिल्हा जाना र्वतो तले कुलक देता,—सँदिया

(१) तस्त करता । प्रयोग----वन तम्मति ते राज्य करने की हो राजरंबर हम लोगों में सुद की है उसे देश कर हूं बचक क्षा प्राच्या होता है। संगठ १। प्राचीद ५०४ वृ असी की, बीके वेटी तर्ज शीता (बेमाठ- बेमचंद, उक्षत) (÷)

(२) चीर अपनात करना । अमोन--क्विए प्रशेष (३) 亨(+)

पूर्वे तले गंगा बहमा

बरन समझ होता, जाप्यशामी होता । पर्याम---ना परे बार र पुरस् को जामा। को सम्मोत है जन, वह उससे से बोर्ग थी हमें दें देंने, यह तो बाबी बरम नहीं कुछते और कुम्हारे वेटर वल महार बहुनी है। युव र अबस्य पुर

वैभी तर्ल गारत दवना । और। दवना —इवे होना वर्षाय होता। स्वाय वें होता । प्रयोग-प्रश्न पुनरी के हो। अने अध्यानहरू नहीं हुई है तो इन मृत्या की सहस्रक वे ही क्षमत है (बीटान-केमबद ४) है दर्व गांव के नने नी क्या का इसे बाटने नहीं जूने कुनतें कि हरिसीध, ११६), चीट पर चीट तब व क्यों होती. जब दवी नाथ के नमें बोटी पुपरीत- इरिजीय, ११४,

वर्ग कर्न बाल व जमने देना

गरिक जी विकास न करना । प्रयोग-विकास जान केवल पेरा-नाने वास मा असने पेना चाहते थे। इसरें ही दिन इत्हान एक बेरियटर से प्राथनश्यक निराकाया और कुछा। नातक की दिलावा (१९३० (६)-विशवत, ३५५

पेगों तमे चोरी दवना रे॰ वेटो *स*न्हे सरदम बचना वरों सने दवे होता रे॰ वेगों समे गरका क्वार

पर्रो तसे वहा श्रीना

ब्रोडिन होता । ब्रह्मेन-नोक दिन पानी तथे जब ना पका काम में बोबी दवा तब क्या बने (बीमठ--हरियोध, 204

पेटो हुने वीद्रका रे- देती बले कुक्त हेना

वैगो नमे बोदमा

क्षत्र में होता। तुष्पा होता । अयोग---साहमी के हाथ मे ही विद्धि है जोग्ला है जान पांचों के शमे (मुमरीय---व्यक्तियो, ६

वेटो क्षत्रे होका

तोरे सब बसार पाप वर बोरे (घट०) उत्तरमें, ३१%)

पैर पर भड़े होता

वरों पर नहें होना

प्राप्त निभार होता । प्रश्नेष— वे विद्यादित ये और प्रप्ते को स्थलत करने के लिए उत्तान पही भाषा पा कि हथी को कुछ विक्षा केंकर अपने धारों कर खड़ा कर दिया नाम (सतमी0—राहुत, घड़), वैद्यक की ककाई के जपन वैशे कई होने की सामा निष्क्रण हुई (युक्तेरी इंड ,१)—पुरुते।

वेटी पर निरमा,-अक्समा

पैसे पर भूकता दे- पैसे पर विवका

वरों पर ताक रगहता,—स्मिर पिसना —स्मिर राजना

गर्थ अनुगत होता। वी हुन्यों में नने होना, विरोध करता: प्रयोग—हित कार्यत को वित बाहत ने वित पायन करद भीत वसी (इन० कवित—बनाव, १५३), सु समानती है वह नेचे कर पर कृत्व होकर नेदे वैदों पर विद रागेगा कम०- पैसंबद २० वहीं में बच पर म उनदान मुस्तार वैदों पर नाक रसहता (बकात—अमाद, १७); किर अन्दी विनीयार स्वांत्रम महागान के देशे बाल कार्यनी पही (सिनी—निरासा, ६५)

पैसें पर छोड़का

- (१) किनीत होनाः वेका में बहुना । प्रयोग—कार्टालपुष का स्व-मध्याय निष्यंत्रमा के येगी वर ओटा काला ना किन्नत— मगठ रामो, १०): केव' दिनशास्त्रन की, देवी मुक्त-बाहन ने, गामा उद्गारको के, पाइति ने बोग हा इस्तर व कि. ३ . क्या वर्ष नगके येगो में मोहन नमा है (कालस— प्रशाहन २०)
- श्री प्रमुख सामा म सहज प्रधानक होना प्रधान अधन

ने सब और चरित मेरे पैरों पर कोटत रहे हैं (इंस्टा०---माठ बसो, इंड

(1) बस ये होता । प्रयोश—अब नहीं बाता तभी अन्य और मृत्यू मेरे वेटों पर सोटते हैं (जनाय—विशक्षा, ९४ देंगों पर सिर सिस्तना देंश परों पर नाक स्वाहना पेरों पर सिर साहना

वरों में हाल देना

दे॰ वेदी पर नाम रगहना

नया वा भाषाय का जावतंशी बनना । अयोव—ऐसी दशा अने कायी घर्षय दिना हित-प्रति कीन संगारे । है तिन दी की क्या जन भरतात हान नहीं विच-नायाँन चारे । धन० कविश्व—खनाठ, एपए।। अबी इनकी वा में XX कह दिया में कि इनकी आपके पाना में शतकार कह देना कि मूर्थ पानक जोधिन शोकार भने जाने का शाम शुन्कर नदी विमा हो हों हैं" (परीमांठ—सीठ दास, १५२

पैरों में पर ज्याना

बहुन तथ बायवा । प्रयोज—हानिय के देशों में तो जैसे पर भव थये है (गानव (१)—प्रेमकट, २५)

वरों में बेहियां काम देना

वर्षन में दान देना । प्रश्लोब---में विश्वाह पर प्रश्लास स या, अपने पैरो में बंदिया न जानना चाहना या (मान० (8)---प्रेमचंद, २२,

वेगों में बेडियां वह आना

वर्षन वस आना । प्रयोध—रहिषन स्मातु विद्यापि है सक्हू तो अक्ष्ट्र बनाइ । पांचन वेरी परत है दोल ककार हनाइ ग्राम्स कविक—रहोय, २६); पांचनि वर्षर मई यस प्राप्तन्त बार्जन बार्थरों प्राप्ति का वर्षर (धनक कवित्रः -धनाव २०१

वैशे में मन खराना

भद्रा गरिन होती । प्रधंग - स्रोत को त्याग विभी गर्ना प्रमुपरका में कर कार्नि रहा है (इस्स्थ-भीका, १२)

पैरो से कुनस दासता या कुनला साना बहुत दुवनि करना शाहोती । अयोग—वेरी हियाकी कसक स्वन हित आहु पांच हरि (राधाठ ग्रासाठ—वासाठ दास ७६० अगन निद्यम विस्त, मन ना प्रेम ने वृजन बालंगी धनका निकान मिटा दुनी (१४० १)—पेनस्ट, ३१९): स्वकारी की उठने की देशों से में कुममूँ (सूरठ— मक, १६), आहि चीत और वस्त है और उपका द्रम्यं मसहाय अवस्था में पैशे से कुमना वा ग्या है स्वटठ— प्रसाद, १३१)

पैरों से इकशना

पृष्यः वाननः, धदता करनी । प्रधान--शाक्षाकः नम्झाना को भी असने पैरा कृतमाकः मुकुलः मुख्युक्त की भा

र्वरों से बससना

नास करना, दुर्णान करनी । धाराय-सोपने ही या रहे हा तिन्दुको भाइका को यात्र में अपन संतत्र धुंअवैद्यान हरिजीके, यह)

पेसा भागा

- (२) वित्यों के महारे बीयनमाधन करता। प्रयोग—-भाषके मार पेसे माना हूं तो आपनी आत्ता में रामध्य यह में म विश्ने तूं वा स्वठ १ - प्रमास्त ३७७ मुख पर नीत्रयम लगाने हैं कि में बीजा का पैना माना हूं बुंद०—-अठ नीठ १९॥।
- (६) देश हुउप जाना ।

पैमा जीवनाः---धर्मादना

अर्जनित क्रीति से किसी का भने लेता। प्रयोग अवधान विश्वाकर पहले परिषय क्रीये नाय—स्थल बताई जाय किस उस परिषय क्रीर साम में से में क्षेत्र जान -पर क्या है 7 कल्याची जीतेन्द्र ४० , यह इस्काम कलन है कि हम स्थीनों में पेसा चक्रीटल है में क्षेत्र --- ४० नां १०११

पैसा धर्माटना देव चैतन जीवना

121 O.P.--185

पेमा बाटना

पत्त्वे केना; अनुक्ति पेति है पैसा काना । प्रयोद—ऐसे स्वक्ति पर नदि कोई यही सभा में पह सामून समाए कि बह किसी सठ पर माणवाद कोरत कर पैसा घोटकार अस्त इह ही बया है के उसे स्वायाधिक कर है वही हरकीक हानी (मुद्दक—सठ नाठ, १९५)

पैसा जार कीश क्कड़ होना

चन इण्ड्रा करने बाजा कजून व्यक्ति । प्रधान—स्थापी बेटापी टावण भी मारुवन दास चैना बाह्य व कोटा पकड़ भवनो सक्त—संद्र, ५३

वंगा कथना

चन बर्बाद करना । प्रयोग—तो फिर प्राप्य बीमार रहिए x x रेवा कृष्टिक् स्टॉट कावटरो की फीस बीजिए रेडामो०—रामत वर्मा, १०१-१०२,

पुनार बनाना

क्ष्माई करती; जाभ करता । जयोज--नृमर्ने बहुत पैसे कर्ता विसे । करता सामारमी हाता है तो लगे भी हीता काहित (क्षमाठ--देव सठ, वहर)

वेमे का राज्य होता

कत ही सर्वोदित होगा। प्रकोग—का वार्षो बोर पैसे का राज्य हो त्य उसके बाक्याय को काट सक्या वर्णिय है (बाजोक्क-संघ 90 दिए, 35)

र्वमे की गर्मी होता

यन के कारण गढ़ होना (प्रयोग—किन मोगो को येंगे की वर्ती हो गई है (मैसाठ—रेणु, 186)

वसे को ठाकरी समस्तर

पैस की परवाह न करना । प्रयोग अह प्राप्त (वरे के लाज) में पहला पेस की रीकार समयता या कर्मक प्रेमवंट ६। (वर्षक पूराक-पिसा में समस्तार)

र्वमें को दांत से पकर्ना

डड्न कन्न्यो करती । प्रयोग---निक्रम मैन कभी ऐसे को कांत्र के नहीं वकदा (मान० (क)--प्रेमकेंद्र, ३४); तभी में बोन एक प्रमा दान से प्रसाद कर जनते हैं अशिकीय- होठ राठ, १६)

पैसे कड़े करना

वैसाकमानेना, बनून कर बेना। प्रयोग—किनने हो शक्तुल जो बर्मोदार हैं, पर है बाजों हाथ जुरूरमें बटने बनस हैं, विन-भर करना के विवाह के बहरते या दिसी संबंधी की मृत्यू का हीता करके भीना बांगते हैं, यान की न प्रवन गर पहें बहें कर केते हैं (tho ह)—प्रिक्ट, 22

वेंसे-वेंसे को मोहनाज

क्षरभेत परिष । मनीम--किंग राज्या की मृतियों के शास्त्र भाषाता मानाशा बना है वही राजा वैन-वेसे की मृतना ह हो (राष्ट्राव ग्रंगाव-राधाव देशी, ठठव : जो कुल राष्ट्रा पंजाते है पने इस बोय-बार्डन तब सर्च कर वासने हैं। कीर किर वंश-वंशे को वृह्यात हो जाते हैं 'मानक भी-प्रमण्ड, पट,

(तकः पृहाः-पैक्षे-पैक्षे को तरसनाः)

पादी दृष्ट की जाना

मध्य कर दिया जाना, कांश्रमा बना दिया जाना । प्रयास----यह जरम की बुद्ध भी गोटी गई। भाग कोटी को गुद्धी जब रण वर्षे जुमरीय-विश्वीध, ११७

पोदा अभामी

भागवान । प्रवास-विष्यास मानिष् वाता प्रोदा आहली है हीर बंधा का प्रकाशिय (मानव (४)—प्रेसबंद, ३०६)

पांचा के बेठन

बक, वृजं, भीता । प्रयोग-नाम-राम, तू अना वर्षी भूठ बोलको सुनो निरे पोची के बंदल हो। (माठ संसाठ (१)---मारतेन्द्र, ३३५

पांच क्षीला होना

भूता विकाश दौना, पार्वट होता। प्रशेष-वह दर्जन दन की क्षमां, यह पूजा कराने की प्रचा यह तक गोच मीमा हे मृते०—मग० वर्गा, ३५३)

क्षेत्र-पोर में

अगा आहाल । नथानसाधाः प्रदेशकः स्वास्ति प्राप्ति प्रोप भूकी भी**ं पृश्चांक २** भागतेन्द्र, २७३ वर तदा वीर दीर में अध्युक्त नाम हम में न नह नका गन का चुलते। क्षति चौधा, १०७

पोल क्ल जाना

भवा कुट बाना । प्रयोग---बह हमला हम बाध है मिनल रहा करना है कि अब मेरी पोश सुन्तरे तब साली (मेर्ड निक--वाक मह. ७६

योज खोलना

महा बोह करना । बयोव-- रही हवारी को कुछ पीत । बारों ने नव शानी कोन (गु० नि०—वाध मुंध गु०, स्था), पत्रं नीर नगम व्यक्ति की पीत्र बोलना, कावी के कीड़े लकातर बध्य के जयार चरम बाद भी विदित्त संस्थान कार्यक: (पट्टम० के पर्ड-पट्टम० अमी, ५१); जिस जिल जनह जज्ञेन निहा में बन्तों का विश्वाह अध्यक्त करना पादा नहीं जनके छन्ती ने नन्द्रशांक के विश्वके जीवन की पांच कोण कर उन्हें भारका दिशा (मिसा)-क्रीक्षिण, २२२

वी करका

तहरून होता । प्रयोग—र'चे बाप उत्पर सुवास चनशानंद पै पर के परत तथी है। हिन करि जो जबी (धनव मिल्स-प्रस्तः, २१वः; पौ प्रशी है निकल रहा सूरव (वृभते०-हरिओध, प्रदेश बात करन की की पहले (मृग०--व o बार्ग) BLS - जहा की करण के वहन्य पासमई कीर स्थाओं के कुछ में 🗶 🗶 शांति यौन नोई है (कता)—पंत, ६२)

यी बाय्ड करमा,—होना

- (१) मून शांच होना । मधोन-नाद वे दांची, हजारी-बाव की तरफ किसी राजा के बहु। बैतजरी हाद समी। मन तक वहा रहे भी बारह कटी (बलo-मागाः), ७३,
- (२) जीत को दान पदनह जन आता, साथ का अवसर विक्तवा । प्रवीत-वाह भागी तुम-वहां ही सवा यौ बारह है (रायान प्रमान-राधान दक्षि, केन्द्र): सूत्रक आम के आस बारक में मंदी बीठ बयकपाने हुए बहुए-को गृब, बी दारह है तुम्हरदे (बालव--हरू ए० हिंक, २५२); पत्ना की बाते सुनकर अभिया नवधः सत्री कि वह अपने दी बारह है (मान० (१)—प्रेमचंद, ११)

पी चारह होता

दे॰ यी बारत सहसा

पाने सोल्ड बाना

बहुत प्राधिक अञ्चान पण्डा में कुछ ही कभी होती। प्रयोगे—एक ती आपने बाजपेवी को हिस्क प्रवृत्ति के बीयान्य से जो दारामा अ-निवामी माहित्य स्वितंत्र के प्रय अन्तरे का दमारा किया है बाद बबा मकरार है, कभीर होस्य है भर जेमा सदस्य आदमी उस समझे दमसे पीनह-सीयह आने बाक है (महमक के पन्न-महमक क्षमी, ११३)

पाँरा जाना

जाना; अधिकार समाध्य होना । प्रयोग-नृत्र नरेगो हे उदाय य यह दिन देखन से दाया कि इस प्रवित्र गण न म हिंदू होती स्वयों का पीता समा (गणा प्रेचा०-नाधा० दास, १८३); जाओं, किसी तरह जाना पीता तो है जाओं (रेंग० (२)---प्रेमचंद, ४२५/

प्यादे से फरजी होना

होट व्य में उठकर बड़ा पर परना । जनोम—में प्यादे हे भजीर नहीं हुई हूं (र्गय० (१)—प्रेमचंद, ३३०)

प्याच-समी

प्रेमपूर्ण । प्रयोग -- मंगीह लियी शुर्म हों। स्वीन वर्ण स्नीत स्वार पनी अधियां हव (धन-) कवित ग्राना०, १५२)

ध्यार क्लांजना

व्यार अपहरा । प्रयोग—पर यन से नुष दोना वरिनो है किए इसना व्यार प्रशीस उठा है - 🗴 कि बाहती हैं कि एक एक दोना ने काफो और पहिना सुगण वृश्यार्थ, १२७:

ध्याना दानमा

हाराव पीनी । अयोग—बंधा पीना, निर्वार म वंध तक ढाला ध्यानों पर प्याना (मधू०—बंध्वन, पट ६७)

प्यास्ता भर जाता, — तथरेज होता, — तथास्त्र होता प्रतिम स्थिति को पहुँचमा । अधरेग— वय उपका प्यासा स्थारत हो गया राधान ग्रंथान— गर्धान द्रम्य, उरेट , यर भगी प्रतक अपमान का प्यासा नहीं भगा है सैन्दरन (१० — ग्रंथाय, १५% , द्रमाणकर और भी कोर हुए ४ < यहां एक कि प्याना नवालय हो गया प्रमान— प्रेमबंद २५ , मर तकानव नदा नितम-ध्याना कुछ हमारा न सका सब भी नव (पुगरीव--हरिजीध, थ€)

प्याचा स्टबंध होता

रें। प्वाला भर जाना

व्याना तकात्रव होना

टे॰ Cबाला सर ज्ञाना

प्यास सरकता

त्व त्यास सन्दर्भ । प्रयोग स्थास जब की बेताह बदकी हुने किया तरह तरह द तब जाना घटक बोलाठ कृतिकीय. १९००

प्वास बुक्रमा,—सिरमा

(१, उच्छा गण गांतो । वधांत इताम तो कह दो-निही
गुनारे ६० बीचन की व्यास ? (सनाठ-निहासा ६५)
(२) व्यास का म रहना । स्पीत-न्दोत निसाद क्यों
सन पार्त नयी मुळीत कन व्यास दुआई सूठ साठ सूर्
१४३६)

प्पास विरता

रे॰ प्यास बुक्तम

प्वाम से (धासे) शरता

कायत काकुन होना । त्रमीय-भूत हरि के कर कारन नरत नोचन प्राप्त (सुर कार-मूर, ६८४६)

प्रामी सांब

विश्वी की देवने के लिए बाकुन बान : अयोग—हरते सनोहर सीन एवं प्रेम पिकामे नेन एम० बाल —तुससी, ३३१ सम विसी नवी की और प्यामी झानों से नहीं देवना है, धीर न वी कारही के बावस्वर म झपनी नीचना पिहाला है कामना—प्रसाद ६८ उसकी बानों को मुनवार देवनपुत्र में पहले प्यामी बानों के उसकी देवां, पीनों कहा 🗙 🗴 (केंड०—हरिस्मीं ६), २)

प्यासी द्वीता

तोव इयस्यवाली होना । प्रयोग—कमिया हरि दरमून की व्यामी (सुरु सारु—सुर, भ्रश्नुक)



प्रकृतम् इत्यस

विवयं को क्यार करतो, येद प्रसर करता । प्रयोग-स्थारे कोता की द्या कोनतीय है, धन-पदिश दम पर प्रवास शास करते हैं (वैक्षालीक , र)-- चतुरंक, १९१३ हैं। अन्यद भीका देकर मनुष्य की घम में दान रहा हो, उस मनुष्य भी नाम्यविवस्ता पर प्रकास सामना कराव्य है (विश्वक----माक वर्षा हुक.

प्रकाश भर ज्ञाना

गोर्नि सा अगरे : प्रयोग---गांग राज्योहन राज की प्रतिज्ञा का प्रकार भर चुका का (बोटोश--न्सिक्ट, १०)

प्रकृति एडमर

धारत गढ़ जानी १ प्रयोग -परी व् यहानि पास्ट दरतन की देख्योद क्य बहुन त्स्व साठ- स्ट शहरन

प्रजा-प्राप्तन कंग्नी

प्रवा की देल-देश करती । प्रयोग—शानेह प्रवा करव यन शानी (राम० का:- देलसी, ४१%

प्रक कामना —स्वना

प्रतिष्ठा पूर्ण करती । प्रयोग—प्रतिष्ठ पान यस सापन पाना (रामक (स —कुन्ती, ६२४): भूपति भरत छम पन् रहनी इरामक प्र. —सुनती, ६२०

प्रण रक्षता

के प्रयो पंपलना

प्रज रोपश

भगः करनः । प्रयोग---भृताः उद्धाः कहत पन रोगीः (राम० (क)---पुनसी, १५६

प्रणाम करना

पूर रहता, योगना । प्रयोग---तृम्हे स्थानवान की नवारित पर तटकर कहका होना कि परवा वृती प्रया है, योग अस्य ने की सलाम करती है ,हैं0 हैं0--सुदर्शन, ३९०)

प्रथम रेख होता । जोक होता

न्द्रक निजन होती । प्रयोग निश्त यह देशस रख जैसे साली रोमिंक देशी कन्तुनकी ३६ स्टब्स्ट प्रथम प्रीक नेप निष्यु राज्ञक देखा नुलसी १६६

प्रधम सीक होता रे॰ प्रधम रेक्ट होता

इतग्य ज्ञासना, - तपना

प्रताप नपना

३० प्रमाप जागना

धनानि काना

विष्यात करना । अयोग-स्वाम मृत्य संही वृहतीति सुरु माठ-सुर, ५६०६

प्रमु को प्यास हो जाना

मृत्यु को शाया होना । प्रमोत-निर्दे एक वर्षण बहुत काई वे जिनमें अधिकतर पैदा होते ही वर मान को मान के होते होते क्रमू के प्यारे हो वसे वे (अपनी जवा--छन्न, १७)

प्रत्य प्रचाना

बहुत दलात करना । प्रधान-नृत्यु के दूत पुलिस 🗙 🖂 करो जन भर में धनव संभाव हैं (सट्ट निव-नाठ सट्ट, १०:

प्रशंभार करते व धकरा

बहुन प्रयस्त करनी । यथीय-व्यक् स्वामी वर्तनानंद, विवकी सपूर्व प्रतिका, सार्थन्ते-यहूना सीर विवस्ता वर्तनकार की प्रतास काय तकार वार करने सही बनाने से अ अ (पहल परमी--पहुमा अर्मा, ३४)

(श्याः वृहाः—प्रहोनाः करते शुंद स्वना)

प्राप्त उट साहा होता.

समस्या उपस्थित है तो । अधीत-असहयोग बांदोनन की तालकार्किक नहीं सपने अल्बर्स पर की, और पाई नहीं, बैनो सथा हो, उससे सामनीतिक कर्मा का उठ पहा होना सरिवार्स हो क्या था। (शैकार (२)—अक्ट्रोस, २०६)

प्रश्नों की कड़ी लगना

सन नई ,स्ठा० (१)—कश्यास, ३५)

(समाव मुहाव---प्रक्तों क्ते आंड् समना)

प्राप्त जोटना

कथ्ट पाना प्रयत्न करना । इयोग--नुष्टी सक्षके निर्द तर इस अपना प्राण कोट रहे हैं (मृग०--वृ'o वर्ता, ४६१)

माण ओटों तक भारता, —कंटनात होता,— मुद तक भारता

- (१) पारा निश्मन पर होता, कृत्यू निष्ट बानी । प्रयोग प्राण ह्यारे दिन हुदि ध्यारे रहे खपरन भाष (६० सा०--सुर, ३६६); यह जो भेरा भी होतो का बा गया (६सा०--\$शा०, ५०) (÷); क्षण्य नमे हैं सारित करि के क्यान साथ, चाहत चनन के संबंधों में कुमान की (धन० कविश--धना०, २०६)
- (२) धन्यन मकट दा कर्ट की स्विति होती । प्रयोग—
 प्रान कठवल चया पूजालू (११म० जा)—हानकी, ११७),
 हाय हाय ! इनको बानों से तो प्राण पृत्त को चने वाले
 हैं 100 प्रथात (१ भारतेन्द्र ३१०), धने वनते हाव
 अर्थ जब प्रान कर्यर नर राधात प्रयोग—राधात दास, १४ .
 पहा पृथ्व तत्रतंन्द्रते गामा के प्राण कब्दाल हो रहे वे
 (प्रसीसर—महादेवी, १६), देखिल प्रयाग (१) म (०) भी
 (३) भयभीत हीता । प्रयोग—तक स्वत्र के प्राप्त पृत्त
 को प्रा जाते हैं कि वहीं बोहन भी तसका नक्षण करत हुए
 हम में है (केसर (१)—जाने में, १३६)

प्राप्त कंडगत होना दे॰ द्वाप्त जोटों तक आना

ब्राफ की नाई

पासु की जरहें, क्षत्वंत पेन से 1 प्रयोग—गणिहरी नगीर प्राप्त की नगरि (शम्ब (सुं)—दुससी, बहुए)

प्राप्त के शाहक होना

- (१) दिक करने बाना प्रयोग यह समस्ति है. सार। या मेरो इंग्ला कर रहा है। समके सम परे प्राण क पाहक ही रहे हैं (तक्क-डेमचंड, प्रण)
- (२) प्राप्त नेत्रशाला, मार शालतें की नाक के रहतजाना ।

माच चिंचता

प्राप्त बढ़ाना

कियो निविध प्राच स्थापना । प्रयोगः जिन चुकावती ने भवाद के मान की एका के निविध नदा हंसले लोगते काण चराप में, × × प्रशंक को एक चरदाकों की कुविध का दण्ड संस्पृत्ते काला को दला उकिन नहीं होता सिक्-प्रमी, ३१)

प्राथ छिडकता

बहुत स्वद करना । प्रयोग -यह मायता विश्वती बेदना-दुर्व की कि बही वालिका, विश्व वर माला-निता प्राण दिवसने रहने व विकास होता ही दुसनी विश्वदक्षण हो आए (मान० (२)—केशबद, १७)

प्राप खरमा

- (१) प्राणात होना । प्रयोग नुगडान प्रभू प्रान न स्ट्रम सर्वाच आम से लोग पुरु सार-पुर, अधाई), भूगण स्रमोने नाहि करत कमीचे पुनि शतनि क गाम सृष्टे प्रान नुरक्त के (मूचन संभार-पुरुष, १४८)
- (३) सुरकाम मिनतः।

(स्थाः मृहोः -प्राच्य अपनी,--निकारनाः)

प्राच छोडमा,-त्यागमा

मृत्यू को पाप्त होता । प्रयोग—राम राम कहि सार्था। प्रामा (राम्य (सी)—सुकसी, ९२६): हीत अप मान भीत मधीन, कहा कह यो स्थानानि स्पान नीर भनति को साथ कलंक निराम हुँ साथर त्यापत मान ।धनय कवित — हामान, १)

(वयाः मृहः -- प्राप्त सम्माः -- प्रयाव करवाः --प्रमेश्च तद प्राप्ताः)

शाम जानः

बहुत हुन्य पहुन्तमः । प्रयोग---दत्त तो पान कान है त्या वित् तथान नमात हुन हो हो। य ० धराण २/-- भारतेन्द्रः २७३/

122 Q.P.—185 (२) बहुत सम्बद्ध स्वयाः विश्व होत्या । प्रयोग--रंगी पर इसके प्राप्त जाते हो थे, उस पर मैंने १८ १८ सपने कन्हें हाथों से उसके निश् उतनों तथी बोही आहुनों कादी यी (प्रतोसo-महादेवी, ३२)

(३) बला ।

प्राच ह्यामा

जी को मुख पहुंचाना । प्रयोग-स्वां गणि । साधी, बांड बोल हुए बगकर कले, जुड़ा लें प्रारंग प्रकृत पत्र, ६०

श्राप त्यागना

रे- प्राप क्रीड्ना

शाम देता

- (१) विश्वी को बहुन अधिक बाहना, बिह्नम होना। प्रयोग—पान विर इस जान बानना, मुख वर्ष कृषिका वित्ती प्रशास स्ट्राम अध्यो । यह उनकाद प्रकृति के वित्तीय प्रिम सङ्ग्राम उद्योग और विश्वी पर प्रयोग देने काले सादकी से (बान्ट ह -प्रमुद्ध, प्रभी आनु सम्मानी नक देनों पर प्राण देने हैं (कर्मट-प्रेमचंद, ११)
- (२) बहुन क्या पाना । प्रयोग—क्य उन्हें मेरी रानी कर पानाम नहीं है तो में ही क्यों उनकी पिटक से प्राप्त हूं (सानव (१)—प्रेमक्ट, २४०)

प्राप्त नहीं में समाचा

- (1) धरमन्त्र कक्षी होती। यदोग तह बन्द दासनी धी देर स घर आहे है दो हाथ कही थे कमा शत है (मान्य (१)—प्रेमचंद, ६२१)
- (२) सम्बन्ध वयंत्रीत होता । धरोय—वर्तायः कृषा हुना या । क्यों को स्वरं काया । रीजाताय के शाला नहां में क्या वर्ते (सामा (३)—सेमकंट, १५६-५)

(नमाव मृहाव-प्राप्त मही में जाता)

प्राण निकलका

्रे) निष्तंत्र होना या नार व रह जाना । अयोगः अर पीछ द्विपायमा की ने धमने जिल्ला होड दिया । इसके पत्र का प्रान्तु निष्यते स्था (गृठ निठ—बाठ मृठ गृठ, ३१७) धाण निकास लेगा

क्षांत्वक प्रभाव वाकवा । प्रयोग—कामणि हो प्रामित विकासि केन एरी बीर ! ऐसी ककू शाबद मधुर बसी-सुर से (स्वत कवित—स्वात, १८६)

(नगर पृहार-धाप्त के केना)

श्राण एक जन्मा

ब्राच पिचलना

दयारं होता । प्रयास -नियम पहन है आता, उबल बलती है दुव बक्तनार (प्रकर-पंत, २१)

प्राच-स्वारत होता

भरपन्त प्रिय होता । अयोग---कंड उसा वस बात पियारी (राम० (काठ)--कुनती, प३)

शाचे क्'कमा

जोचन प्रशान करना, किसी कुथली हुई सहसाया आंक्षीलन में पुनः जोग भारता । प्रयोग—चाहता हूं ४× में यू के द्वारा स्वरीत में नका प्राप्ता सूच हूं (पुग्य-एंज स्त्री, ३४६)

(क्या पुरा --- बाथ बाह्यरा)

ब्रांच दसमा

बहरों संगाय होता। द्वारीयं नेरे मनश्य बाद नाई बरगा पत्र मीर्गय स्थम प्राप्त भाई से बसन है (क0 र)---सेनापति, अद्यो बोर्ट रंग कर, कावा, क्रस्ट्या सीकीय, यूगक या विस्तय प्राप्त बाग स स्थाने स कावा प्रेमसंद 3)

प्राप्त मुंद तक जाता रे॰ प्राप्त भोडों तक भारत

प्राप्त मुद्दी में सिर्ट बहुनर श्राध में निर्द बहुनर भाष को पानाह न करना । प्रमोध — नीख बिन गोपियों में बहिनों जिन्होंने मेरे करने खोड़ी है लोक मेंद की लाज > × कीर नवक की खान किय प्राप्त मुद्दी में निर्दार है कि तुन कर नाम गोंब हुनि को संग्रधान अन्त भनी प्रमे सार्व-सार्व सार्व, राज होच हो जिल गई थीनमा दिन करने रामांव प्रथात साथ होने जिल गई थीनमा दिन करने रामांव प्रथात साथ होने हिन्ह गई भीनकर धारण का मुद्दी में लिए हुए ताक पर बैंड काती है (निसन्त) ---प्रेमबंद, है)

(सत्त- मृहा---प्राप्त इथेकी पर किय रहना)

प्राप लगा रकता या खता

भरवत पेन करना या होना, यन समा रहना । प्रयोग— स्थम पुनरि करि वीति बढ़ाई । राज्य वरन वार्माकीह साई राम्य (स. — एसमी, ४२०), तुरहे बान नमं हुए पानन हो प्रमानेहन मोहन वारियों जू (धन्य कवियो—धनाय, १२०)

प्राप्त स्वना

भारतन्त प्रयमीत होना । प्रयोत— उनक मान क्या मी मूर्जे भाने में कि कोच के भारतम् मं कोई पामनपन न कर वेंट (मान्ट (8)—प्रेमचंद, २१)

क्षाण हरना

सार दालता, बहुन मनाय या दुख देना । प्रयोग—सहयवाह के हुदे प्रयाप, जा प्रोधन पास्त्रों में भान (क्कीर प्रका०— कवीर, २०३ , एक्कि धान प्राप्त हरित लीन्हा (रामं० (बाल) —सुलसी, २१६)

(तमा: नृत:---प्राफ होना)

प्राण हरा होना

सुक्षी होती । प्रयोग न्यारे कुशक हुई कि सारों में नयी हो गयी और किमाना के आगा हुई हुए पोटान न्येमबंद, १५४)

प्राण हाथ में लिय बहुना १० प्राण मुद्दी में किय खना

वाण होता.

(१) धन्यान्त व्याग होना । धर्मान—हिम्म्बर्गि तृ प्रान परवा । धोल न भाग करन नोहि सेवा पद् — आससी क्षण्या, गोकुन कान्त्र कथन देन नोचन, हरि नवन्ति के प्राण (सु० सा०—सुर क्षण्या) सची तृ वेशी प्राण है (भा० प्रशां (१)—भागतेन्त्र श्लव महागान बाजो को सहित्रा प्रीण वाल्लामियों का प्रेम मुख्य क्षण वहां नाही प्राचा, वनके तो तृष्ती हो पान प्रेम सा०—स्न शां०, १३०१ १२) गर्मस्य होना । प्रयोग नाममें बाल को नो मानो हाथ वाणा है (ब्रंट०—सा० स्त्रं०, धर्फ)

भागों की पुरुवी होना, 🗝 प्राप्त होना

भायन्त विश्व शता । प्रयोग---शृत पाय विश्व मृत्यू सवही के । भाग प्रात्म के बीजन की के (शताः (अ)---सुससी भरेश , जब बाध देश उसते देशा उत्तक प्रार्त्मों की पूतारी यह वर्शनका जीवन में बागे वह शही है (वैशासी०-----ससुर०, ह)

शानां की हंसी

त्या प्रसाद मा द्वरार्थ हो बाम १ अधीन—देखि बाम या नुबल को कीन वर्ति कराऊ , बहरे बीट मधी है, आनन को हाती कीन काल की ,आठ देखांग (१)—मगरतेन्द्र, ४४१)

प्राची के प्राच्य दोना

दे॰ क्षाणी की पुत्रकों द्वीमा

शाणों के लाध होता

भपन बमान महत्रवाणं होता । प्रयोग आगं निर्देशन रहिये । पहा उनको किसी बाह का कब्द नहीं होता । बाबू राजसाथ की पर प्राप्तों के शाब है जिल्लाक कीजिक, १४२।

प्राणी क बंक्सा

कृत्यु की जी परकाह ने काली । यतीय--- XX संग यदि बाह्यत्वा पर हाथ उनावना तो में कल ही क्युटा के संभवी और कृत्य विद्वेदियों के साथ उसका सबनाग करने की बाजों कर कृत बहुदला (टेवसी---सन्दान, ९३)

प्राच्यों से की प्यारा,-कर कर

वाजों से भी बढ़ कर

रे बाजों से मी प्यारा

द्राप्तों से इत्थ धोना

मरना । प्रयोग—जब तन जन्मानारियों के रण जन्ने था मुनोक्ट्रेट न कर हुयाँ, चैन न मुनो, बाई को सन्दर्भन में मुक्ते प्रारहों ही से क्यों न होन कोना पड़े (रंग्य (२)— प्रेमक्ट, २४)

प्रातः किया करना

मीच इत्यारि कमी स निवृत्त होतः प्रवीय-शाम विदार करि से पुर सही (राम० (राम)-शुलसी, 180)

प्रीति की बेस बोना

प्रेम करना । प्रवीय—स्था तत्को उरचार करें किया गीति की बेन वर्ष से (सुरु बाठ—(परिच इ) सुर, कर)

(सभार युवार--सोलि समाना)

रेत सगना

मृत का प्रकोष होता । अयोगः —धनन पार व सकी चेत् । सर्वन्दि कहा पृद्धि स्थान परेन् प्रदेश—उस्प्रकी, ३५.४%, प्रोकृति ही प्रचित्र केन बानदा, हेन प्रायो कियो येन सम्बो है (प्रमण कवित—प्रमाण, १४)

प्रेष उपजना

अर्थ होता । अयोग---वर्ट क्योर धेम वृद्धि त्याच्यो, बाध्यो क्यानुरी कृती (स्थित स्थान--स्थान, १०१)

प्रेम की बोद

प्रेम का बलर । वर्षाम —मृज्याम जाने वहें जिल्लिक क्षेत्र की बोटा (सुरु सारु (वस्ति १)—स्ट. हर)

देश की और मैं वीमका - वेदी पहला

मन के बारामून होना। प्रयोग —पृत्राय प्रमु वी मन क्षत्रमी केंग्रो पान की नोरि (कु साथ—कुर, १२७५); सर्वात पारि नो कनवानद वायनि वायरी पीनि की वही (पन्छ कवित —धनाय, २०१ , हम मदबान से प्राप्तन करती है तुम रोनी स्वेश हमे कुन की नाला की भारत कारत म प्रमु के बोर में बंधे रही (भार 1880 (१)—मारतीम्ह, २०)

प्रेम की बेड़ी पहला

दे- ब्रेम की दोर में दयना

ग्रेम के प्यासे होना

देम की गोब इच्छा रखती। प्रयोग हरत सम्रोहर शील खब्द देव विकास तेन (राम० बाल - मुलाई), ३५५ वेम जोडना,—शानना

भेग करना । अयोग—सम्बुं कुथ्य में किसी, रहता नहीं नेही कोइ । प्रोगंत न मोड़ी राम जू, रहत कहाँ में होद (क्योंच प्रशा—कवीर, 57): बच हाँच कोने भी रहित मोरी (सुरु सारू- सुन, 5404) प्रभू तम कियह प्रेम तम हाता (१९४० चाल तुलसी २६६ , प्राथक माणी देव करि मोरी प्रोगंत दूबाइ (राम्प्रशाकि)—तुलसी एड्ड): बचहूँ प्रीनि म बोरिये, बोरि मोरिये माहि (प्र० स्थ—पुन्द, १३०), तुम्मो बच मानव नेष्ठ मना अस प्रीति को किर पोरिये मा (मारु बचार (द)—मारकेन्द्र, यन्द्र)

क्षेत्र शामना

दे- श्रेष अरेवना

प्रोम लोइवा

सद्य-सम्बद्धान र स्थान । स्थोन को तन घोरहि यम न घोरी स्थित दरे को बीरित स लोगो क्योर ग्रह्मा०-- क्योर, २०५ स्थान समझोतन सिय से कारि सनह विधान दीको स्युत सा०---प्र, ४१४९ , कवहूँ धोरित न अस्थित कारि दीनिय नाहि (वं ०स०--क्य, १३०)

हे स में काला,-किएटे खुना

प्रस य वधना, प्रेम काना । प्रयोग —विकास हार नहां नट नागर रहत प्रम नपटान सुरु सारु—सूर, ४४५%, वर्त पट्याकर प्रयोग वो प्रतिप्रम हो य पटीवांत तो मी निया तु ही प्रथमक है (स्थार - प्रयोगर, क्षे), बोर्चान ही प्रविधे पत्र बावदहन प्रायो कियो हेत तथ्यो है ध्यार स्थित-सनार, १४,

(बबा॰ गुरा॰—प्रेज-सोर में बंधना)

यो स में प्रमार हुई — लियटा हुई, —राम में साली हुई कारका प्रमार्थ । ध्यान—बाला साली मलाइर वाली । भय स्वतीय प्रमारण वाली शामक बाला मुख्यो, एक मूर्ति कार के बेल प्रमास स्वत बरपट शामक का न्यूलसी, ४६६ प्राति प्रमी सक्रियामित दिवास के द्वार अनीत मुशीट विदेशे (शामक क्षित —सन्तक, १९)

वेंन में निपरी दूर्व दे॰ वेंस में फ्री दूर्व प्रमुख कि कियुक्त करून

प्रम स क्षेत्र हाना

प्रस में जियाद रहना इन प्रम में गगना प्रम रस्त में धर्ना हुई इन प्रम में पूर्ण हुई

क्रेम लङ्ग्ला चुन प्रमाणस्थार प्राणः प्रमुद्धिन प्रशासनिक र अन्द्र पृति उस नकार व रामाः कालः तुलस्य ३३३ वैस्म स्मृत्य सी पूर्ण्य झीलाः उस संपर्धकार अन्य अस्मारतन्त् देस सूर्य फार समस्य केले जुलस्य अ

भैम में बन्ध होता प्रमान केन अस अक्त-प्रमाण इत्याधित वट नीके पर्दर अध्यक्ष क्षेत्र



यदि मैं पहना

(१) वित्ती के बोले में या बावाय में बाता । वजीय → पत्नीर नामा नामती, बंध में वैदी रार्टि । तक रूप तो धर्मे प्रवास तथा बर्चीया काहि (करीर संबाठ -क्योर, ३२ (३) बाब में बाबा । प्रयोग—मेरे बार बच्चूं तो परित्ती प्रवार तथार है। 'सुठ साठ—मूर २३१८ विवार बचार - पत्नी में बाता - क्याना ।

प्रोम जाता

- [२] बोक में बहकारे में माना । वर्गात--मानाम नहीं या कि कोई ईंड बीठ क्षेत्र माने प्रंत करने परंत क्षेत्र की बीक इंगार का कालकेक विकार में, तो तुझ में हुँड कीर कथा भी दिश कार (सामक (क)--वेमनट २५ , वस में) बारा संवार क्षेत्र गाव है (बीटीठ--विकास १२६
- (१) वंशना, दशकता । प्रयोग-सम्बद्ध पनिष्य स्त्र शी भंग ही पर्य-महा वे अयोगे मन्त्रा प्रयंता (विकास-क्षीतिक, १९४)

प्रियास

किसी इसी निधन संदिती को स्टान जनक संदर्भ । समीत -- जात कल यह एक निधा को देखा को है मैं कोड़ेल- घट नीच १५८ क्या नाम, बीड्ये मयो नहीं कोड़ेकि इसे स्टानकर दूसको को दूस कर के समीत । सहायाल 308

फकद होता

मान मा लायकाह होता । क्यांत - अध्योगन कंपत्त.

की जिल्हारी कियानेपाला कायानहें भाग काने की इतका कारपीय को समस्र कहा है हैं (अल्डा)—हरू प्रेट हिए, यहाँ (भी भी अप में बाग यह कबनेकाया।

कर अध्या

पंत्रव होता विस्त्र साम्य प्रकार | प्रयोग-नर प्रयाग को कोची काई स के समय प्रीते बार बाक्षित गार्थ को उन्हें के कर कर अपोर्च कमनवानी को लिए को के सर कर कको की कनाए ही 'तित किए-नाठ घठ गया प्रदेश' करनदों के बड़ी की कर अब काम की स कर सक बागा बारिक सरिवाध प्रदा

कर क्रमान

- (२) नाराय होका क्ष्मा। प्रयोग—शेष-वीच में अन्यत प्राप में वदक्षांकर कार्ने सामूद भाव में स्था करूनी करती है, फिर हक्षांच कर प्रश्नी है (स्थाय)— जेनेन्द्र, १९)
- (६) बहुत भीष होती । प्रधीय---वारा सहर देशने की कर प्रश्ना का रहेगाल--क्रेस्बट ४५४
- (४) भारतिय होता मन्य होता ।
- प्रकारण का प्रकार

पाइक प्रदुष्य कर हेव्यक्ता करणे राष्ट्र जाक प्रदेश । धनाम प्रदेश प्रदेश विश्वपत्र विश्वपत्र राष्ट्र प्रदेश राष्ट्र मुक्ता स्थापन



करकाना

9.4

- (१) पान बाना । प्रकोश-व्यक्त कार्य वस्त ही से हैं पर धिनगरम् अस्ते हार वस नहीं बटक बडना है पूर्व निक-बार्व पूर्व तुरुष, २०६७, इनके बहुक में बहुरिक्ट सरमा भी नहीं पटनते में (गोली-बनुस्क, १९८)
- (२) मण्डी गाड भाषता । प्रयोग--देखी वसम् सँपार विद्यारी, मीन्द्रे सुरि क्टके सूच साल-पुर प्रश्चन

फटकने म देना

पात न वाले केटा । प्रयोग—हम की बीमारी में और बराबर विश्वाय हैने और प्रकार में किसी की प्रत्यकों व हैने (पेंस्टें— स्टब्स ६२), यह को छाड़ों वह व स्वयंत्र केवा करता है। जू ही उन्हें प्रत्यन म देनी होती (१७० १)— प्रमावद हुए?)

फटकार प्रता

गाटा माना । अयोग-अव नि चटनार ही उही पतनी भूग चटकारने रहे तथ क्या चुमतिक-हरिक्रोग, प्रद्रा

फटकार बरमना

- (१) श्रीहोत होता । वर्षाय--वेदवानों को तो पूछत ही ते प्रस्तार वरवती है (मानक (४)--वेसवर, ३९
- (२) भून गांट पहणी ।

परिकारता

- (१) धामानी से पर मेला । प्रयोग—मो एक देवार प्यान । हर महीने फटकार कर विलाल में बहाते हो। अनमें धारण-क्षा प्रची पन्यु रह ही नहीं सह है। गौडान जैसबट ग्रह्म
- (२) जना बुरा कहता । अयोग---सवार में भटकते हुन जीवर १२ देखकर बच्छा के अध्य से वे नातर नहीं हो आहे च दिन्दा और भी कार्यर है कर फरकार बन्धन च कर्षा हुए पूर्व दिन, १५४)

क्टना

सन्धन पीता होती। प्रयोग —सगर महिन्त से प्रयोग करण कल होते कि गहन है। टन लगी - गोंदरन पैसर्चाई क्यो

करा गरा

भारी कडी हुई आसाहा स्थाप कड गर से जनका बाक्षा र मुख्य पुरुषको ४५०

फटा-६टा रहका

3वार्थीय रजना । स्थाय—हम देर दाद शोहरा वादेशस या स्था वाच अक्षय भी करान्यता रहा (तयन—कंत्राद, व्यव्हा: इतने दिनी तक वह मृद्ध के करान्यता वहा, आक या यह वेरे वाच भागा, यो वसी है जिंस—कीक्षक, 300)

कटी आके

केनी हुई मार्च । क्योन---कानती कही बाचो हुई सम्ब ननी -'पुरुष्णक---का गाउ, १३९); बाधा कही हुई आयो वर्णन क्षुत्रमार ने स्ट्रा वा मुगठ---बुंठ वर्गी, १९४)

फटी बांबों में देवता

मान मृत्य बहनो व देखना । इसोन ज्यक्त यह दुस् वर करी बामो के मृत्ये देशनी रह वर्ग (क्रम्यामी— जेनेस्ट १०२

फरी हास्त्र बोनर

क्षणे रामा होती । इस्तेष—नवी स स्त्रती क्या पारी हामन याम तुक विक कान करण सामा (कुमनेक—हरियोध, ग्रुप)

पादे बाभ मा स्वर

कार कीर कर न क क कारण तकतानों प्रत्माम गयार में करका कर कार्य का क्या क्षेत्रा—मानिश्य कहां है है प्रस्ता (१)—कार में, ६३

फर्ट साम

बहुत ही दूरपान्या में ब्रोमा । जयोग---वाम नो बह रानी है । इस परे-ताम में भी पानी है ।गीटान--वेमवंद, २१०), नेर्राट में का फरदान करना बानव और कमनापति ने ब्रॉन्टिश नेपानित पूथ 'क्यानी स्थार---छड, ९५)

फद्द दालगा

मुना का तथ हाता। प्रदान अपने मां चीर मानी की प्रतान के पिछा पर म केंद्र कर मरा मार्ट निषय नाम में मूद्र का बान सामता (कारती नाक्ट-प्रस्ता, 28)

(बारा व व्हा-- कट विद्वास)

फड़क बंडमां

(१) प्रतस्त होता । प्रयोग-नोड़ (वी शामराज वीड) को प्रकृत प्रत्य क्षेत्र प्रदेशक के प्रय-पहुनक अभी, श्रेष्ट), तथा प्रदेश को के सहय व ज देशका क्षेत्र वह प्रदेश

चेमबद, को

(३) उन्होंना हो सन्छ।

फडकता दुआ

आर्थान्ता । प्रतान वजनायां को प्रतानो करिया ने कार भूने हुए, प्रकारते हुए तराहरात बाव भीर भेज दे तो उद्या सम्बद्धा हो बहुमा के एक-पहुंचन क्या, दर

कफ़ककर रोगा

पुट-पूर कर रोग'। प्रयोग—नहमा होश विस्तृत स्वया हो गयी ग्रीय कामी वर राहे ग्रीय किर टेक बर फफ्क कर हो ग्री (भ्दीक—सहये, ८३)

क्कंडना

प्रतासीरता, श्रीशानिका करना । अयोग—हिनेशी की ने प्राप्त ही हमते में इरिश्यन्त को यह वरवार करेता है कि सब हिन्दी बाने की बोल अध्यो (गु० नि०—बा० मृ० गृ०, अंतर्थ

क्ष्ममा उदाना,---कमना ---विना

होती उन्नार व्यांन करना । प्रयोध—हमारे क्रेस्ट प्रमणि कसी वर रहते हैं ज च उन होतो में तूरन कनके सिया 'मृश्व--वृंच वर्षो (२०), कर्नात्वो से नियस--वृद्धिकीं वर्षे क्षण बार है से महानी का देश समय--वृद्धिकीं करने को। यह पर कर्मायां जनाती मृद्ध की मानव है)— हैमबंद, १६), दहित हुनीकेंद्र की की इस प्रमण्य क्षणियां होनति और व्यांग्या की नेपाया मानावं से उस वर्षायक मोगों की मान भी नरम नहीं किस्तान क्षणे अवश्वी करन पर क्षणियां उदाई की (यद्भ प्रशान—पद्भक प्राण्यां, ६०), होनाक सहस्य बहामयों में देशों जनाव में क्षणियां भी कारी (प्रमाण--प्रमण्या, २६३), वाई की की कोच नेपायक कीम राजेनांस पर क्षणीनकी की कम रहे की कोच--स्त्रापाल, ४६

पायको कमका देन पायका प्रकाना पायको सेना देन पायको उत्ताना

कारकड

प्रमानकार । प्रयोगः जनित्र । नित्र किया किसे प्रयोग जीक प्राप्तद के ग्रेट वर्गा चुमले≎ सुरिक्षीऽ इप कर्ज कर देना

क्राहारे सलाम

कृत कृष्टकर किया काने पासा समास । प्रमाय—असाय भी ने बाते ही पहले मोर्नो ध्यानिश्यों को एक करोगी समास विद्या मां कोशिक १२४)

(मधः न्याः---पत्तीं सन्यामः)

पहल श्रामा

वरित्ताम भूगवता । अयोग—काथता बात बात में है जी। कन वृत्ते है इसोविये चलते (कुमति)—हरिकीध, द)

(समान नहां क--फ्रम कामा)

कर बकाना — देता

िये का उपित कल देवा । अभोग-निव पवित पुग्वारय का कार देह कलाई राधाः पंजाः-राधाः शास, इत्यः); देई वस कार बनाड (रामः ,क्षाः)--दाससी, है)

फार देगा

१० फार सकामा

कुल पानर

हिंची का वरियमाथ मृत्यनका र प्रयोग — हो फल सुरत नहव सब बाहु (राम्छ (बाल) — सुरुती, छर)

^{98 र बट ९} कल कलना, आंगना मिलना

फलका

कन्यम हीत्राः सम्बद्धाः पत्र विभवाः अयोग-मालूग इत्या है इत्यान वा पत्र यह है भूतेल-भाग वर्गा १६५०

कुरुका कुल्ला

इन्सिन होती। इयोच-मीड कात की भारता को मुन हात जर पर इस अमहारत बच्च को फारते कुलत देखना (बीमेक-सेठ सठ घट); करो देखा जमूबर पहले कम पुन. वह कमे पुन समक हरी होता. व

कमर्जः बुखार

द्रोगम र बारमा स्टब्स्यस क्यार । प्राप्त-नय। कमली



461

बुनार का का अंदर जोग 🛊 (यहम० के एक-प्रद्रम० सुन्नी 2051

कांके मस्त होगा

६रिङ्गा में भी प्रमन्त्र या बस्त रहना। प्रयोग-स्थानन मुफ्तिश तत्वांच चाके सम्त धव बचने शह के प्रजनता भी क्षेत्रीय पर भागे हैं ता देखन हो बदता है। मेट्ट निर् <=ची0 मंद्रे, १६-१९); पर प्राक्रमानी में की वी परिवरे के म्याच देलता रहा (पंतुरोठ—निरामा, ३८३, का क्षेत्र कर घरने ने काने परत रहना कही अच्छा है (मान० (३)— प्रेमचंद्र, (५)

फांस लेगा

धाने का मा प्रचान में कर नेना। प्रधाय-स्थवनन अन्ते कहा है। इतना हाव-नाव तीम बाती है। वी मोन-भागों को दों ही साम केती हैं (मारती०--पं० ६१०, ९०). हम एक दूसरे को फोचना भी काहर है भीटेंट निरामा १२६ १ जान मेरे पायरेक्टर काविर को काम निका (वैतरे—अरम, ४८)

(समार मृहार---फॉस खाना:---रकना)

कांसी बढ जाना

- (१) सांशी की क्षत्र मृतलगी। यहोग---वेंगे थ × पक्का क्षत्र निया कि क्षेत्र कार्युगाः, कानी चडना 🗙 🗵 मगर इस दोनान के बता संपन्ने में भी मिर नहीं जुबाइला [46](0一河北河。气仙)
- (२) मीत को क्यराना ।

(समान मुहान कामी के तकते पर क्राज जाना -पर भूतः जन्माः —पर तरक जानाः)

क्षांसी देना

- (१) काल्यापन जिल्लाचे सामना : प्रयोग जाता केर काला किया में कुछ का**ली** काली ही। साध्यय वंद ००० हाधाठ दोस, ४६०)
- (२) गते में क्या शानकर बार शायना ।

हो, बजबार्यन की कोंधी सुर साठ-न्यूर ५३६६

परामी होता बहुत कटटरायक होता । प्रयोग -- बांग करारे जिए जिस्त

काय बेसमा

शनलना बनाना । प्रधान—विश्वत भए केट बोलत है बारहवामी पत्ना (सुर साठ--सुन, ५२००)

फाइ काना का फाड़े बाबा

- (१) बहुत दुणपाणी होता । अधोव-च्यो चर बबुवा की पादे बाना का, उसमें बाम पहुच कर रोवा बानन बाध। नेप किसी क्षित्र मिन ने फिल 💤 मानद 🕆 -प्रमाद,
- (२) वहुत तंत्र करमा । प्रमोष-नाह की मुंबाध कार्ग हुँ है केनो फेनव' शुक्राच ही की बाब और-भीर खारे वर्गत है (केल्स्ट०--केल्स ३५५)
- (३) पृथ्वा होना । वयोग—दमे किसी वन्ने को बांटने का भी वाधिभार र या, बात काइ साती वी (मानं० (३)---प्रमादद, 💖 '
- (४) विद्वविद्याता अस्त्राताः।

काल बाधका

उन्नर कर जावरा; करन वर का फानमा । बरोत--रहे वर्गमञ्जर व्या हुंकरम, प्रकरन प्रेमन प्रमान पाल बाधन कृतका में (यहमाका राजित: हि॰ और भार)

फिक्स करती

बाई कुमश्री हुई बात बढ़ बेमी । बयोच-कुबर काइब को रक्षकर बोदों में फिक्षी कहें (ईस्टोठ-भाग बंगी, प्रव), इस्त में एक के बाजन ही दूसरी के बाम उठन का उल्लेख कर प्रन्तात को जिसर कमा उन्हें सुनकर से द्वार वर्गीया वृत्ये हो बांबी काती ही वी (पैतरे-सावय, १५)

(यदा मरार फिकरा बृत्य करना चार्जीहरूतना) फिल्हा मुंध

- (१) 'बहु-तम में बात दो चाहे ही यह माथ । प्रयोग---बचने आप में तो शकत नहीं किए ऐसे राज का किट्टे मृद् । कहा तक चाप की कतावा करें (हेशा)—हशांव,
- (२) किनियापा हुआ लेपुरा र

फिरंट रहना बरनी रखर्न विजय होता । प्रयास---वस्तून तो वह खुद हैं आप में पर पर गरना मनत आप भी भित्रत तिहर (A) -- 47(1) F. 340,

क्तिर जल्ला

- (१) प्रतिकृत होना ३ प्रयोध-नदकारमा इक ने फिर वर्षा है (राह्य (३)-प्रेमचंद ६१)
- (२) बबल पाना 1 जयोग—बबन वाम विवि किरेन मुधाज (११९० (बाल)--गुलली, रूप्त), इस मीर केएन को मानून है कि राजी शाहर के देश विश्व किनपुर्व किन क्या है (बालो०--वृं० वर्गो, ३८२)

फिर पहला

कीर काम। प्रयोग यह होनी य नोर्ट गरी वर्गकरा बंदता बंदा जाना है ती बुला बाद सबने पर काप उसे मारते व सांचरी, उसने दूर हुईगे, पर निर्द तहां-नदां सार जान है बहा बहा कह भी आगरे माय-नाथ बहारीन क्या ग जाना है तो जाय क्या पर बिहा पहेंगे (चितांठ (१)— कुन्स, बुद

फिल्ला

- (१) बन बन जाना । अयोध---नै विच विश्वनृती कृष चमार विच, तुम होते उत्तरदावी (भयर्ग पृति---वतः, १४०). यात्र केनं नहीं वित्तन कोई भी यात्र है विश्वन-विद्यन भागा (बोलय---तृतिशोध, १९९) (--)
- (२) यान होता : धारेन —यह जानती थी कि अवस्थि संस्थारील पुरस् बही शिक्तल से विकास है, जबर कर सक्ष बार विकास मार तो किसी तरह में नहीं बन्तक वकते (रहा (२)—प्रेमबंद, ३४०); र्शनात प्रयोग (१) में (÷) औ

4रीका

फीका पहना

संपेकाकृत कम होता । प्रयोग—सन्द साथ इमारी जननी सनना संप्रद कर तो नियक्त छाटे दुःस कीके पह साथ । पान- उन्न प

फीका समना

- (१) बुनवा के धी-होन सर्गता : प्रचेश—वुमारे वित रजवानी नीकी, येरे दश्स-वाम के केरे, विनकी सर्गति कोची (कुछ साध्य-सूर, २१६॥); यदि के कहं कि सम्बर्ध की इत्तरों के रहतों की देसकर हमाहरवाद में उदय संकर कर नाव कोवा माना को इसस स्वयुक्ति म होती। पेंतरें — अपक, २५ (→)
- (२) श्वस्त्वहीन वा तृष्य जाना । प्रयोग—सोह साम वृष्य को धरणका पनि हो न्यूनांन पने हो सुठ साठ- सुर, २६६२ बीका व दो एक बान पनोहर पोहि लिंगार नक्यों तथ को को श्री (केंग्र्य ग्रेग्रा)—केंग्र्य, १६६) सब कर समन व पो सनका ने नार प्रवर्ण अस्ति पीकी लागे नदेठ प्रयोठ नंद १६६ व्यार के सब मुख धरान प्राण भीवन विशा उनको योग स्वारे वे परिद्यात न्यीत दोस, १४६ देखिए श्रीय (१) में (स्न) मी
- (३) गीरक नगरा, बेस्बाद नदमा (प्रयोग—रंग-नगावन कान विता एनआनट सराम कागन परिको अन्तर कवित— प्रमार, १६), भीकी ये कीकी नगे, जिन सदसर की बात (इंट प्रथ—दुन्द, २); पास सबन सूच मात्र सबे, ये सुध वित्र हमको कीको (राधार प्रथार—राधार दोस, २५)

भीका स्वर

कीका बान

नीरक, बेडकी बात ६ जयोत—बात कीकी धून पड़, कीके हुए एंड कीका देश दिल कीका हुआ (बीस०— हरिसीच, १९६)

धरीकी हंगी

न्द्र हुन्ती हो। हुदय के च उठी हो, विकास की उसी । प्रकोश—जीव्यय कीकी शृंती हुन दिया (केला २)—धाक्र ये, २१०)

(समान मृहा - प्रतिकी सुस्तकार)



फुटार्श निकल जाना

पीजपानी बस्य ही पानी; पान हो बाना । एकोच--पद हो नाव जेते-बंधे बादी बुटानी जिस्सा बाती है बेदना 🖁 (ब्रोहरू—हैर्व सर्व, प्रव)

फ्रेंग्री छेना

बर या रायांच के कारण वरीर में बंदन दोना । प्रयोग---महि बन्हाद नहिं हाई पर चित्र विदृत्या तथि होर । पार्थि कुरहरों में फिरनि बिहुमति चूंननि त तीर बिहु हो रस्ताः विश्वती, इक्षप्त , फर्याद प्रतांक बाहु कुण्डरी वर्तन सर्रात बर्रात उठे वेन सर बोजहे देव -हि० छ० सा० (मना: नृहा:-- कुरोरी जाना)

फूसफुमान्ता

कारण्युती करती । प्रयोग—मेरे वर्ड भाई जैसे हजरत विषय विषय पुनयुगाले कि नहत्त्व वर्ग्य विसामी है। प्रायनी सबर—उप्र, ४५,

(समाव मृहाव---फुल फुल्ट करला)

क् क देता

- (१) कर्ष कर शासना । प्रयोग-इसाहाबाद वैने पूर्व शहर में भी में दो मो कुछ देना दा त्रेशमी०—राम० देनी, 489 RRI
- (२) किसी बांडोजन को दहाया देना ।
- (३) चूह के अंगा में इबर देगा :
- (४) नम्द कर देश ।

कृक-कृक कर वेर रचना

- (१) बहुत संभान-संभाग कर काथ करनाः। प्रयोग---पांच मचना फुंक-पून कर बनती पर में नवती हूं हैदेहीत: हरिजींध, १२८ . देशक वह ऐंशे बबरे नहीं सापने, रोगी टिप्परिएयां नहीं करते कि सिर पर कोई भाषन वा जाय र पूंड-कृत कर करम स्वतं है (गोटान-पेमचट, १८४). तब से बेंथारे बहुत समल कर जनते के पूर्व न्यूक कर पांच रकते चै (तवन-प्रेमचंद, २)
- (२) बचा बचा कर बरामा ।

फ्'क झारकर उड़ा वेना,--मैं उड़ा देना

(१) बहुत सामानी में उच्य दा समकत कर देता। प्रयोग-कड़े हेशी हूं हुट बाबों, नहीं तरे नुम्हारी सबस्त कुम बर्गामां को एक ही फूक म उदा हूं वी क्लंदर- एसाट 養養を

(२) यहन तृष्य तमक कर उपेका करनी । वर्गाम— जिम प्रकाशन और धवमुर की समाक्ष में बहु इसनी दूर काया का, किस तरकता के कुछ नारकर वह रहा दिया वा या का (क्षेत्र०--व्यवपास, १६२)

कुंक में उड़ा देशा

दे॰ कू के बार का उड़ा देशा

फूंक में उह जाना

तिबढ वी विश्वति ने पान का सन्ध हो जाना । प्रवीत---पुत्र संभाग उद्देश बावरो पांच क्यों पूजा कुँक हैं। स्थत पु भरीय-हर्वर प्रतिश्व. प्

कु के से पक्षा है उद्देशका

- पृति पृति थाहि देवान नुसार, यहत तक्षानत कृति पहान ।शंभेक (बात)—तुमसी, २६६) (🖘)
- (२) मासूनी प्रयान म बहुत नवा काम नामना प्राप्तीम र्दाबर प्रयोग (१) में (÷)

पुर के बीज बोना,—शासना

हैर हराता । प्रयोग —थाने पीन की विकासर और अनि पानि के बहारों को नवनकी है देश में सब ओर पूर्व क हेंचा होत्र बांचे कि जानोयना या कीमियत की कही गांध बी म रहा भाग (महह निः—नाव महह, २३): देने वर्र राजी और दुराजी राजियों व काफी फूट रमवा दी। मुग०--वृष्टियमी ३९४ , इसे इस मोनों में पहुर बालन को संबर्ध गया है देवकी० राज्यात हवा है हमारे त कारमाये क्षत कुट के बीच बेनरह बांच (बुमलें)— हरीजीध, ४९)

पत्र की बेह्र बहुना

कुट-भ्राष्ट्र फेलना । प्रयोग वर्षा गर्ही प्यारी मानवना, बढ़ी कुट की बेल (कामन्य-प्रसाद, १५०)

फुट हासबा देव पुरंद के बीज बीमा

प्ट पड़ना, फ्टना

(१) को पहना, करागाई होता । प्रयोग-अन मां फ्ट ort (क्ला—क्षेत्रेन्द्र, ६०): 🗙 🛠 पंडिया की 🛪 😕 गा से काक्तिगढ़ प्रमाग वर फुट दक्के से पहुंच दशाय—पहुंसंव शर्मा 477

नहीं समाना (वंशा०— इष्टायः ६६ - इस सम्पन्न का सानन्द केंबर का कृती के समाती थीं (भानक (१)—सेमबंद, ६६). रंगनों में रंग कर करनी कृत कृते न समाते हैं (शर्मक— हरियोध, १५

कुला फिरना

- (1) प्रवृक्त में गड़का । अयोग किशत कर करवी करवी (क्ष्मीर ग्रंडाक-क्योर १४४) (--)
- (२) सूच प्रसम्भ होतर । प्रयोग---कृषी किर्गत रोहिसीः सेवा तथ विक किया विकार मृत कि प्रथ साठ द्विक प्रयोग (१) में (+) भी

क्ता डोना

- (१) बहुत बार्यर का तथे में होता । क्योन—दकरक गहन हजा नहीं कहते की पर है जुले (शुरु बारु—सा, ३९८९)
- (१) कहा होता ।

क्रेड और व समातः -- व समातः

फ्ले न भवाना

देश कृति भंग न समाजा

क्षेत्रे करे किल्ला

बानन्द में होना १ प्रयोष—क्षणे किर्द मोनी स्थान हुन। ठहर के मृत साठ—सुर, १५२ कमन की माना हाथ, भूगी किर्द घरनी माथ, सावन करोबो आहे गरिनी उनक की (नंदत ग्रेडा)—नंदर, २६०) कहि एउँ जिस बावनी निय सावन की कान । भूगी संग्रह में किर्द कांच न ग्रांच तमाल (बिहारी स्वा०—बिहारी, ३४४); यानिय सकत मृश मने किटें क≓ बचा साली बनमानी व के फल की कहा को सन्दर्भ कवित सनाव यथ कती किटनी को प्रयुक्तन। कम्मकानी नुरक्षित को (बैटेही०—हर्तिसीध, ४६)

फर्जों की सेड पर स्रोता

वर्ष जाराम में रहना। इधोत—साम में पूट पूट रोते में जो रहे पन वेज पर वात कुमतेव हरियोध, ३३ , मूच जोर इस के जिनने ही विच नम देल चके । फार्के की मेंक पर लोग हो कोटों की राह भी आह भर पार की (परिठ— जिस्सा, ३३३)

फेंट कम्बनर

क्यर कमकर तैयार होना (वयोच—दोन बनावरी गरवनी वीत क्यावणी वृंधुर वृदि के बारक खेट को की कडे डिजरेंक क् चंचलना यस संचय नारक (विपादेश— गैठ शठ साठ)

(नग» न्ध»—केंद्रा कसमा,—बीधमा) केंद्र क्कपना

इस प्रकार प्रकारत कि शाम के पाने । जागेय-स्व भी तो त्य विरम कमायों कई के बोलों मेंट । बजी विरम के मोलि इकारी पूर गड़ी किस पार नहीं कि अन सान, सुरदास केंगूड़ वैड में बोल न पंत प्रकारती सुरत-(हैन शान सान) म जनमान मान प्रकार पंत हम पैट में है तो रहे वर्धों पेट मी (मुम्मी०-स्विज्ञों), 82)

(नवा+ नुहा---फेंट ध्वामा)

फेर में पड़ना

- (१) अकर में परना । प्रयोग—न हो तो सपनी बहुनिया में कोर दलवाना कि सम-नारकार्न न कर में सहावित्त त पर्व मृतिक स्थल वर्मा १३९ किन्द्रस्तों, हाथ पान क होते जब कि बेचकी नार्ने भागी । नो समा नयों न परन में पहले देन की सांक नयों न किन जाती चुमतेक—हास्त्रिय ३४)
- (२) समीवन या बहबाब में आ जाना ।
- (३) यसमंत्रस में पहना।
- (४) चारा पहना ।

फेरन-फारन

इतार। हुना कपडा । प्रयोधः अरे धपना बहुन विसाधार, अथना फंटन-संप्रदेश पहलाकर ही तो हमारा परिवास करती है । (बन्ड०—नागाल, ५)

फीरफट की कार्ते करवा

खन-कगर पर भारू-वारंग की बाने करना । वर्षान-पितः मेरा भी दरोगने के निय खरणट के मान बान करके आर्थ नवीं ममय नव्द करने हो ,भारू बंद्याक (१)-मामसेन्द्र, १५६)

(तता» नुहाः—केरकार की वातें करता) केरा करवा

भागागमन के नककर में पहला । प्रयोग—कामति वट्ट भीव वितंत्र , बतुरि त करिंदे केस (क्वीर प्रवाठ—क्वीर, १५४) फोटा केंगा

विकास में मांबर पहली था होती। प्रवोग—सरे बंटा, हमलोगों में ऐसा ही होय है। हमार नाफ पर कार स्व फरे विद्यासी है (धारतीo—विश्व पर, १४४)

(समा॰ मृहा॰-फरा पडना)

फेरी बेना-लगाना

- (१) बार-बार जाना; जाना । प्रमोध—पेट के फेर व पक्षेत्रम है तथ भना किस निष्म हैं खेरी (बीक्क---हरिजीस, २२४)
- (२) मूम-यून कर देवना । प्रयोग-मा तरवारिया तेवर केरी अनाती 🖁 (अतीतः - महादेवी, ५१)
- (३) परिकास करती । प्रयोग—रवन छरो देही, ताव जिरस्त करतुं व हेही (कवीर प्रयाश—कवीर, १५७)

फेरी लगाना रे॰ फेरा देना

फेल करना -- प्रचाता

(१) नेकार करना जिद्द करनी । प्रयोग—ख़ेल नए निम् पोकन नेश यु फेनव का थे जरेन अबे हो (एन० अधित— एनाव, १९७ , बक्या, जब हम रोतर को इससे मुन है, से फिर सू करों फेंस बचानी है हैं (मा—कीरीक, क्य)

(२) बन करना ।

पॅल क्याना

रे॰ फेंग करना

कोड केना

दूसरे पक्ष के सन्द्रम को सपने पहा थे कर तेना। अयोग— पान्छा ने उनके से पानेक प्रयुक्त व्यक्तियों को स्थापनरिक्त रियान देकर सपनी कोष प्रोप किया का (मुहाय०— अठ नीठ, १,०४), परन्तु सोगा का प्रपत्ती बात और व्यवस्था वर्णिय नहीं केनो की, प्रश्निक्त काबू मन्तु को फोड़ किया और रमन वर्णिय कथियों को दिया जिया (भाषीठ—प्रीठ कर्मा, १३१), पानूच होता है, उन कोगों ने द्रांद को फोड़ विका (१गठ (१)—प्रेमचंद्र, २३१)

कीत्र रेपाना

कीय आगे बहानर। प्रयोग-हीं आरिही जूप ही माई, अन कहि सम्बूध कीम रेगाई (शास्त्र ,लं,--दुलसी, पप्र)

(す)

वंटाडार करना वा होना

काम बर्बाद करना था होता । प्रयोग—क्याने नाटक पर्दा उठाओ पद्मी गिराधी' में मैंने रिहमेंको में बड़ी सीग गारने बाने अभिनेतासी को अ अ कुछ का कुछ बोलकर नाटक का बंटाडार करने दिशाया है (पैटारें -अक्ट, ३३

चंद्रस्त होता कासत् होता, मूलं होता । प्रयोग-न्तुम की पार वजीव क्टम हो मुम्हारे हमारे ये कोई फर्क है (वैतरे - ग्राफ, १२६) कंदर का जादी कर स्थाद न जानना श्रम या प्रमान ध्यक्ति का महत्वपूर्ण बस्तु के महत्व को व आवना । प्रयोग---श्रम है बंबर चाडी का स्थाद क्या । जाने (माठ एंट (१) --मारतेन्द्र, ३०६) वंदर की बस्ता स्थितिके सिव पदना किसी की मुनोबत किसी और के स्टार असी । प्रयोग -- बंधर की बना तबेले के जिस धर बाती है। में बाबा, क्य किसी के लेले-देने के नहीं पहले (बुटार (१)—डेक्स्पॉट, क्षण्य) संबद करे बाइनर दिख्याका

संशोध्य का समयर्थ स्थानत से कुछ सम्बं काम या नात की साधा कमती। स्थान-व्याचित आव पर्वेटिक सम्देश' विसे मृतामा चाहते हैं हैं भैन से बीम की बाद केना बाहते हैं। सामर को दर्गत दिवामा बाहते हैं है (बद्धात के प्रम-सहमत हमी, इंधर

बंदर-धुड़की देना

केवल दराज के सिल बारनर प्रयोग उनका यहा रहता ही बता रहा का कि वह केवल बंदर कुटकी के रहा है (सामक (३) --प्रेमकट, १२६)

(नमा» नुसार—संव्य अअसी देंगा)

बंदर-बर्ग्ट

हो के अभवे के बचना नाम कर तेना । प्रयोग—भेषा, इन इंटर-बन्ट बचनेवाले वर्षों हे बची (विश्व—प्रेमी, व)

बंदक छतियाना

बंहुई को धानी में नगाकर निस्ताना नावशा । स्वीन— हम कॉर्ग नगी न नहभंगे नगी न बन्दूक नीन धुनिया से बीलाः हरियोग्ड, ६०

र्दधन के बासे भागा

- (+) बचनों यें वधना (प्रचोन—मिनिया कान् जान प्रति मृति कार्टीं चवधान । को कि र्यंत नर बार्वे, स्थापक विस्तु निवास (राम्ट (स)—सुमती, वस्तु)
- (२) बरवा-बोह में किया होंगा।

बंधन बंध्या करना वा होना

- (२) भवनीत होना । स्वोध-शुक्त दशक्त के हमें बंधन डीफे (बिनस०-सुकती, ३२)

बंधन तोहता

मृतिह पानी । अयोग—कहन करोरा भी हॉर ध्याने. जीवन बंधन मीरे (कांस दंशा०—कवीर, २८३)

बंधना

- (१) बाम के होना । प्रकोश--- यह महिना केई वै कानत, बाने पाणु क्यानन मृत साठ में। १०%६ (प्रिजी आ) कि-विस से प्रकारी कोर्नि स्वि सेपी नीरिया उनी कृष्य में कंपकर में यह नई (प्रजात--- निसंस्त, ४)
- (२) पुनित क्षाय एकका भागा । समोध—बगर हाकियों ने प्रशे भी बह दें, तो साथा भीहम्मा बंच बाब (१४० १)—बेमक्ट, २१०)

बंधी राम बजागर

यो सक करने वर कहते हों वैता ही करना । प्रयोग---में सामित कोट करना नगर। यो शस बी निक ही। वंधी गर सम्बंबनानो नहीं धानी । आजवान मुसानोधना और अभिना को गय तम बी क्यी हर दवारण प्रकरेर हो। वर्ष है (पट्टमं) के यश --पट्टमंग श्रम्बं, ६१०)

कंकी कीर

प्रमान । अधीय---वंब सर्वे, और है वंचे भाते, पर वंधी बीठ काम भी न कुली (कुंपरीठ--हॉक्सीड, प्रथ)

वंधी रकत

निवित्रत क्यान । प्रयोग-नी शनाय, कोई वंत्री हुई स्थान है कही (प्रेमाo-प्रेमचंद, ३९१)

वक-ध्योतं स्राप्ता

क्षेत्र करणाः कषट करणाः । प्रयोग---एन हे निमान भागि पृष्टे नागर, पूर्व जाप क्षेत्र क्यान भगरताः (राम० (ही)----पुरुक्ती, १५९)

वक-ध्यानी

बन्दी, होंनी । प्रयोग—दिश्वा का दिलाव मेंन बक काकी गर्नी बर्गात न होई र प्रांती कमी ग्रंशांक कावीर, १६७), यह बोना नायम वह क्यांनी (११म० सा— तुलसी, १६२)

क्य करना

मुख क्षेत्र पाना । अयोग--च्या कई है क्षेत्र नहीं एक नहीं बटवा (पुर०--वृं० कर्मा, २७)

क्करी की सग्ह शुंह जनना

हर समय कुछ बाने रहता । अयोग—हिम न अको की तरह दाको नके. पृष्ठ न ककरी की तरह करता रहे (श्रीसंo



447

—हारियोग्ड, १९०**)**

यक्तो बनमा या होना

(1) सीथी नम्म हो जाना । यजेन—सन्धन में हान सोक्सर तक ने प्रश्ने मूंह पर नशाना जाना, ब्रम्मी सहस सर शक्री इस गई (बृंट० —क्काना १२०)

(२) दिन पर नाते वानर।

धकरें को सां का जीव सनाना

भी मुकापन होनेशाला है हमें कर तक टाना का नकता है कार्य कामा करती। प्रयोग—मान मी, इस करत देशे मृत्यू वंश्वापी के, तो बकरे की भी कर तक केर मनादती पारत—प्रेमचंद, २१८), हो, जबके काम के जनको योग सह नारी दिन्द प्राप्ती है किन्दू बन रे को प्राप्त कर कर पेर पारा करती है (मेरेंग-न्युकार्यक, देशे)

श्रक्यात् वदाना

धार्च सी काने कान्त्री । प्रयोग—कहि कदि कपट बरिमाँन धाराकर । कल बकाराय बदाबत (सुरु सारु—सूर, ४४०६)

श्रीवया उत्पंदना,- उधेहना

(१) घडा कोट करना। द्राग्य — व्यक्ति में इन वाली की मी स प्रांच पर एक एक हो बिलावा उपह कर ग्यान हु, मा नाम नहीं सातत हु प्रमाद हुई हम वह ही द्वार रिया राज आप प्रांचन प्रतिहम विश्व (मुम्लेक हिल्ही) कुर्तिको

(२) कट्ट यायोजना करती । प्रयोग—सुम्हारी रचना के शन्तिये चयेरकर रक्ष दिवे (कड०--२० स०, ६०), देनिए प्रयोग (१) में (२०) की

श्रीमधा उधेड्का १० विश्वया उधेडका

कासूर मागनाः—दुव सामना

बहुत तंत्री से प्राप्तना प्रयोग- एक द्विपनी मेरे नामने कर्तात्वर उठाए था गई उपने गीए येन वारा उपस्ट फुका बुधार के शाम ५७ , प्राप्त में आग तथ पड़े, शे पिकृता क्येट्ड धामा (रंगण (२)--प्रेमधंट, १३६)

बगटर मानना के बगछुट मानना यगम आकार

मोब-दिनाय हो प्रश्ना, प्रप्तृत्व प्रस्तर म के सामा। स्थान--- त्य बहनो हुं--- स्थय हो है पाये, जब बाम नवी नवीं नेता। जब बर वर्ष मृत्यारे या कोला है---की प्रव करन माथ बर रह अन्त है 55नं । प्रेमबद, प्रश्ना, प्रश्ना करने कोच्यों बाता मृण्ठि---पृष्ठ वर्मा, का)

वयन्द्र निकलनाः

वक्तभग्या के पार्र्य काल में बास निकालना : प्रश्नीत---नक्ष्य का कर कर बाया, काली विकास का है र 💥 स्वय बहुदा नहीं है जीना कर हो (कुल्लाक--निराला, १४)

बराज बहाना

(१) बहुत प्रकारतः। प्रगत काली सब सुधी स्वामी । श्रमण द्वाम से किसी प्रण दियी हा अपन ४ ४ था सपने समामितं से हाली पिट साम तो उसके भीर सभी भाई उस पर हुंचेंगे, समसे समाधेरी (गोदान-संमाद, १६)

(२) जाहान करना । प्रयोग—नेनिय् प्रयोग (१) में 🚓

बगल में दबानर

प्रविकार के राज्या ने नेजा । उत्तरिकाली प्रतिष्ठ क्या निर्मा क्रमने दाकि प्रविक्ते केवान कृष क्रमन बहार है (देवेल्नीहरू %) सार

मनाः प्रशः । **गाल में दिएपाना** ःश्वनता,--रखना)

बगला अकि

दिनाको दिनावरी जनसम्बद्धन है अधीन---यह पात के ब व करत नारकार को बदना अधिन के प्रधान से कह रहे क नारकार नाम करा हो उन्हें का कर आग नवान का पात नहीं करा। सकता बहु मेंठ--देंग सठ, २०१०, दृहर पर ब हर नावी नहीं का पटने कुर्यार हो हुए। मीट हम मान्स कारकारकारकार किया पटने कुर्यार हो हुए। मीट हम मान्स

बराला अगत होता

कारी, वरेववाण र प्रयोग — बच्चरा या समान धीर समृता-वनतं पन्नी ने किनकर मेरे एक भारतर समानीकी सवाई कर रिट्टा मोटान—प्रश्चिद, १७६८, यहा समानुता प्रमान-भवत है नजरा (मुद्दा-चार) नोठ, प्रश

बगर्चे का इंग हो जाना

अयोग्य व्यक्ति का योग्य क्षत्र हाता । प्रयोग----मज्यत क्षत्

126 OP -- 185 वैभित्र शतकासा । सात्र होति विस् क्षेत्र भरासा : सम्बद्धाः —सुससी ॥

विश्वास्त्रा

और-ओर के कहना; दिशास करना । प्रयोग—बहुत केंबिरव करमप्रश्यार, तीची तरह के जिल्ला क्या किनते वेंचारा मध्य, जान (पहुमक के पत्र--पहुमक कर्मा, १३६)

बचत निकल्ता

क्ष्मत का त्याव बक्क काना । जयोग---वश्मी कान्ने विक मही, सोचा, श्वस विकास सार्वः (योटी०--निरासा, १६०)

वध्ये वध्ये की जनाम पर

बक्बे से होता

गर्भवती होता । प्रयोग-- बूल्ये स्थानी की महकी करने से की बीट रेम का कार्यक भी एन बाट खेरानी वर कहा बाता है (मैतन---जरक, 26

वच्चों कर केल

बाणुकी कार, बजाव समाजा । अधीय--अर्था केवा की बच्चों का बेच्य समाप्त रका है (१०० ,२) - इंग्लंड, २॥६

[नरा: गृहा:---क्कों का किसका छ)

बाहे का बाटे के बार बाहराना

कोई समाम कांकर ही कहि-कांकी वाले था कुछता करती। प्रयोग—इन्हों के शह देने या लोड की इतनो अस्त हुई है, मही को शताब दी कि वॉ टरॉना वाहका कुट काहि बाल कुदना है (प्रेमाध-क्रोमचंद्र ४२

र्वाष्ट्रया के तथ्क दोजा

भीनं होता मुख होता । प्रयोग---हो तुम भी विशे वस्तिया के ताळ - गान-- प्रमाद, १५,

(मगा: गृहा: -वशिया के बाबा होना)

वजना

भीर से सहाई क्रमण होना । प्रयोग को राज से धर में पनिन्यत्नों में सहयह सम रही है । सम दोगहर में की बहुत और से क्य वई औं (बुद्ध-प्राठ गांव, १०२)

से ने 1क्ट

क्का पीटकर, कुल्लसम्बद्धः । प्रयोग--- पुरितः मीण सम् साम कवाई देवे जरत कहुं राम् धनाई (राम> ख)--नुसारी ५०१); वर्षि वीचा बचाइ के प्रीति करें, यह मातथ-काम दिने से वर्ष (११६०--वीधा १)

वज गिरामा

भोर सनिष्ट करना । प्रयोग--कीशन्या यस काह विशास तुल भोड़ि काकि सभा पुर कार। (राम० स्र)--नुससी, स्रोप

बराह होना

- (१) निर्मोदी होना । यथेग चटक लाय हुए हिं यस जी निर्माण में फेंट । शांट गांठ गाँउ वय नेट्या मा परिभाग म चेंट 'खायभी - (१० ३० मा०); वर्ष बटाइ नेड्र सुन्नि सार क्यांच वंकास । अस मान देन स्टाइमी दर उन्हांनि सार महत्र (विकार) स्टाठ—(देशरी) १५२। [—]
- (२) चोडं दिन के काची होना। अधीन—अवस् विशते कोन कराक। दिन बन पहे आपने स्वारच, तकि किरि मिने न काक मु∞साल भूग ४२६६ देखिय प्रयोग (१) में (±) भी

बदक विकासी श्रीता

क्षण दक्ष के जरकों के अवधित सम्बन्ध राजने बाला व्यक्ति प्रयोग---मेरे कर भाई वैधे हजान प्रिये हिंदी क्षण-कृषात कि प्रदान करने विष्यानी है (छपलो स्वस्ट छुछ ४९

बहुर व्यथनर

(१) पान या वर्णक लगना । ययोग—याँ देरे नाम जाय व करना जायमा नो इस गाउथ के इस मिद्धालन पर कि वह प्रति वर्ण के प्रोशं को एक दर्गर टेक्टरा है बहुत नय वापमा क्षांच प्रश्नांच १ सालोल्ड्र, ६१३) मुद्दम विचार के देलों को फारम लोग धर्मक को प्रोप के मोत - ४ मानं ध्रम में कियी ठरंड का बहुत न मगने देना और स्मादन के मान परि चीर होंचा जिला के प्रथम मनस्य गांदना ४ ४ विस्कृत नहीं बानते (२० पीठ----प्रठ नाठ मिठ, ६२ , बीक ने देला कि उनक बहुत्वन में बहुत मगना है (तिस्ति) --प्रसाद ३३४) (२) किसी बीच में निजाबट वा सारादी के कारता दाज में कमी होना।

षहा लगाना

- (१) कर्लक्त करना । इशोक—होस (शेक) केवी जूरी बात है जिसमें सम्बद्ध हो उसके मुखी में बहुत सका ने दिश पर भूठमठ आराधिन दिया जाय उसकी सार्थ अस कर में (प्रठ पीठ—एठ नाठ निठ, बन्न); दिस में ब्यूना ग्रहे य कि नाहक अपनी सराकृत में बहुत स्वास्तर (१ग० वि. —प्रेमधद, ४१७)
- (२) ब्रानि करकारी।

बर्दे-काते ज्ञाना,--शानना

मुक्तसाम या कृषण की रचन को बनावर करना। प्रयोग— यो गाहकारों ने कई हमार नवते बन्द नात करन काम वजह, जीभ दकाकर सजर किया कि बुनार व कोई तक है तो वह है कि महत्वेच मिश्र (भवनी संबर—82, न्य , इ.जामी काम प्रतिबंध कहा काम नहें जाते के प्रमाण— प्रेमचंद, हेम्ब

(२) व्यय पामा, नि॰वंक होना । {समः= प्राः•—बट्टे-बामे स्टिबना} बट्टे-बाते डाळना दे० बट्टे-बाते जाना

बद-बोला, बद-बोला

बहुत कोलते बाला । प्रयोग—में हुछ ऐसा अनोबा कर बोला सही जो रहाँ की परवन कर दिवाळ (इंडा०— इजा०, ६९): गुट और स्पेट्स दोनों वस-बोलों की स्टाट (१)—ग्राह्मकार १७ , बोसने में कव न बढ़-बोलें २३ कोल सें, बोली बनार हैं बोलते (बोला०—हरिश्वनैक, १२२)

बङ्-भागी होता

मीध्यम्यवान होता । प्रयोग अयो हम पान महे वर भागी सुर सार- नसूर अग्नर , भी विवित्तेस सुना वर्ग प्राणी । स्थी मून मासुन के प्रम सामी कैसवर । २१— कैशव अग्नर बन्नमानी राजी धर्मन ! तहे बनमानट मो स्रांचिन मिर्गेट पम् लेहे भाषणी सभी एन० करिन— एना०, १९५ , प्राणीय उपनिषद म रेश्व के बहुआगो होने की मी उपना वी है कि ४ ८ मुलेसी संस्त ! मुलेसी, ९०,

बड़ा करना

- (१) मान्य देवा, महत्वपूर्व सन्ताता । प्रयोग---भूत्यास प्रमुख्यांच्य देवार के बार कोट कॉन डीन्ही पुरु स त---भूत, १९१
- (२) पानव-भेषल करता ।
- (३) दीवा बना करता, दीवा बुकाता ।

बहा कुछ

मध्यशिक नवः । प्रयोग-सूत्र ती वर्षे वर्षे भूम जनमें: सब सबके सरकार (सुरु 810-स्तुर, 8141)

बदर गाळ द्वीना

वद-व्यक्त वोतना । प्रयोग—हिंब कह राजि गास वह तोरं (स्मे० (स)—सूलमी, ३८४)

बड़ा सर

- (१) जंगमान्। प्रधाय —में दिना नामा को बड़े पर विक्रमाने पाननी नहीं (गोदाय—प्रत्यद, ११०), वह तो जिनने दिनों के भिष्ट पाहना बड़े पर भिज्ञका देना कलाठ—खा पुछ।
- (२) वनी या बध्यानित व्यक्ति का बर । प्रयोग—वह धर की बहु वरी, करति कृता अवादि (मृ० सा०—सुर, २१७३८ हरूड बढ़ पर सा सहका चा (राधा०—त० स०, ध पहुर नी विषया गर्गा हाती है विशयत बढ़े घरो की—विकसी कामसब के क्य में भी मोगों के बामते हाम पैर हिमाने को बढ़कर नहीं सूनी सूनी (विसाठ (१ मूक्त, ६६, तिनमें हम लाग कर घरों की औरने हैं बीक स्ताठ माझुर, ६६,

बद्दा दिश

क्रियम् । प्रधीन-एक बार वह दिनों में मैने क्रमपटर बाह्य को बानी दी (रिश्वमीठ-११म० दर्मी, ५)

बड़ा दिल

प्रश्नाक व्यक्ति । प्रश्नाम जान कर न वही हिसी काह की संबोधित है है के न कहे हैं की मुक्ति नक्षान के निर्देश सक्ता निर्देश है हैं । यह दिस का न का भी सिर्फ उन्हीं सोको न प्रश्ना है भी इनना कहा दिस गमने ही भी देश अरु नोरु, १४९)

बहा नाम होना

बहुत कर्तन या प्रसाना होनी । यथांगः श्रृता है पूपभान्



की ही, बड़ी समग्री नाज हिंदू: कोक-मूर, १३३४० कारका इनका दशम है शनना बहुर काम है मूर्गठ-माठ करी, १५०

बचा बोल बोलना

बीच शंकती । जानेच-नो बृध्या कोरे हैं को यहां बोव्ह रिक्षों के सूरी बोर्क्स (पैत्र बाय-संग्रहण संग्रह)

(बना- वृहा--- कहा सीम झारता)

बचा भाग्य होता

गीनारम् होता । इत्तेष —गांव चरित नाम इति गांव चित्तवर्गातः, जान वहं पानी वाले विशेष त्यानि क्यानि— सारोप १३को समाने काली द्या विश्वते, जाने वह कहि सारोपारी सुत सांव जून इद्यान चर्चा कर काले कर्ते पान्त (गीतान कर्ता) — सुनारी ३६ उन्ते के वहं कर्ता है भी पीत्रम के संस गहेंगी केम सांव—संस्व स्टब्स, १०३)

बबा दाध दोदा

- (१) समाय श्रीका । जयोग --- काष्ट्र की म कही कियो काह की म कही हाल, जाड़ के म कहे हाली कुल्डीक ज्यान के विकित संबद्ध---- विशास, १६०
- (१) बहुद बील होना ।

बाह्य होता

भेक होना । समीच-कृत बहे चीन वर्षे के समी कम सर्व मृद्ध बाब (१०:व्हा११४व) प्रा ११०० प्रा १४ (४२५)हि वित्रक्षि सर्व प्रवक्त वित्रामा १९१४० (४४०)—कुल्बी ३६०

बदर्ग बागा

वरमान गामा । क्योस-कारा में एक विक काँग यह क्या है बाद क्योग ऐसा - क्योग 10

बकाई देशा

बारर काला येथे का भागी धनाना । एथ्वेथे कीत्र्यंत्र परमाम विकास वर्षा पर्देश जागलो १ ३ डब श्रक विषयन वर्षा विवाद देवल गर्यात वर्षात्र वर्षात्र अञ्चल स ~ शुक्रमी १००३

बहार्द साम्बा

बोको समन्त्री । अथाग को प्राप्त गर बचनी कहाई आपके हैं को का। कुछ प्रत्ये कहाते हैं कि साक—संस्थातात. १७०१ क्टो सन्द होया

वरी-वरी करने बरना

तीन बारना | प्रयोक-नमा मो नही-नहीं नार्वे करने का किए प्रकार किया गाउन -देमबंद ३०% काले हैं— "बॉलिटिक, कामें कारे-नहीं, बाय्या की वृद्धिया करना बां" कुरूक दिलार, हरू

वर्षा बाद होता

बहा क्यान का नहातक होता । वर्गात -वानम संबंधार सं है को भी देश की कही बाद है। सनगीठ--वाहुस, १०'

बारी बरकर करना

तर कार्या । वर्णाय -शोग्य दशक के लिये राजयानीय प्रत करी, कोई नहीं जानसा, कर वारी साथा करनी यह प्राप्त संस्त रह :--केम्बार, अर्थ

पढ़े भारती

(१) वनकार । प्रयोग-विने बोर्ट बरन ने नंदन वान के काव । बदारे बनावी जान नवीं बांद्र जुड़े से बाव किन्दी समाव-केंद्रनी, १३११ (); बड़े बर्ड जारविनी के उच्च नक ही बाव नो क्या नहीं है। बड़े बड़े नाम विकाल है (१८६६-केंग्सर, ६०) (÷)

(व) कामानिक र वर्षाय-मी शरीक वर जिल करें हैं इतिक वर मीम रहीन व दंग रहीन र वर्षा आहरी समझ कर वस्त्रीर सरस्य कर एक नियक्तर पूछ पहल में क्ष्मीय राजा या दहक प्रत्या पहला क्षमी दूरव हरियान वर्षाय (१) में (क) भी

वहें कांद्रे का होना

वदा वंग्रहेनचार होशा ३ प्रणीय-सामा के निजा कर सार ब राष्ट्रर क रोप्यों अनुस्तार

वर्षे गृद की पदाह दोजा

करून बन्धान तथा। इन्तांत -बह यह हो कृति प्रति वह प्राप्त की न संपत्ति (हा साक-नहर, २३४२)

पढ़े पर की दक्ता आता

केंच प्राप्ता । प्रश्यक-न्याच वद पर की हमा बाद राज्यू



मेलांक रेमू, शा, बीच बाव की बाई पर की एक का एक हैं कितानी प्रकार पहलू

यहें घर का श्रम किलाना विश्वकाता भ्रम की गढ़ा करवानी । भ्रमान - इस वर की अनर नारे भीड दशर-ज्ञार हुई ना नाव नट सेनो को ही वर्ष कर हो इसर किया हुना 'मूनिक -स्माठ कर्या अन्तर्भ करी, किना ही बढ़ा को बढ़ कर मिलका दिया, नुकारो किना देन हैं साजा (हू) -बोधबंद एउठ

महे पर भिज्ञपाला रेट नहें पर की हवा जिलाना

पड़े छाटे

गभी लोग । प्रयोग — सामु प्रयम मात्रा यम निय निर्देश यह होट (रामंध के —तुनसी ११%

वह बाद का बेटा

धर्मी-मानी प्रतिथित व्यक्ति का पृष् । प्रयोग-है वर बाप के भगर वर्ड सम्पन्त का नमा न तो करते समेठ---हरिक्षीध, बद्धा

बडे कांक बाक्तर

पर्यक्ष की बात करती। प्रयोग---का यह वर्ति कोटि यह भौती। यह यह वोल तील कह होटी (प्रदेश---क्षायमां प्राप्ता, बैंक यह वह तैहत के कह बोलांक क्यों है इसी इसराती (प्राप्त कविश -प्राप्ताः, १९६८); वह वहारी या वर्षे वह स बोर्थ बोल (१९३म कविश -प्राप्ताः, १५

(२) प्रभर गृंश कहता । वयोत—यहा तस्या को कोटी का सारमी नवर योग गुनाता है जीने०—राज्यात १५%

(मनाः गृहाः--वन्ने पोल सुनागः)

वर्षे आग्यवार्था

स्रोजास्यभाविती प्रयोग परि तरन मन सार्व प्रार्थ । भ्रष्ट मी विस्ते मी भी यह संपत्ती ।क्स्मीर प्रसार जनवीर, २६५ पुर रक्षम बद्या को चार देवन (बोल नाव नहार सुक्रमार मूर्व अन्त

बड़े भाग्य से

बारे सी महारा व प्रापटणका। प्राप्ता प्रश्ना कर गांचा को यु प्रति प्रति १० १४ व कर्तार हुन्या कर्ता व्यक्त प्रमुख सोश नक को अवदातु । यह जान प्रत्य सामु र प्रमुख हु।

वर-वर कर दाने कावा बट-वट कर दाने करना क्षेत्रज्ञ

- (२) वर्ष कार करने । प्रयास—नेक्षत को मी बनोद भी सुध था, याँ-व दर वी मुनान स वर वह कर वार्ष कर रहा वा करू -दै० वक २०५
- (३) मानी बकारती । प्रयोग—स्वारती, बहुन बहुनर कार्ने व कारी (१९०० १ -प्रश्नेद केहें), नयो कुमर नात्व मारगांच का तो सा-बहुकर सामे न कार्यते ए (१९१० २ --प्रेमक्ट कार्न, शामतांक ने संवारती के न्यायांक के साम में कुम तीर हार्यों ती, जुन वह वह बार बात की ती त्राम देखांक्ट हो।

बहुबहु कर दाने करना १ वह बहु कर दान करना

यह वह कर काम मारता

्र । तो क्या कार अवदी क्या के करवा । प्रकीयकर्त्य बहुत कहन्त्रत्व कार्य कार्य कार्यों है, सुद्ध किया को तेती पुरस्क कहर क्षत्री है १ /देशकाय-की/सक

(र) भव काम ।

बर बर का बोधना

रेश वह बद कर कार्ने काना

बह बह कर हाथ सनमा ति बनाव हिली कृत् के किए पाना का बाना । अगोय— तीन बरीने काद पर का नानिक किनने मनवन्तीय में कह बद्द-बद्द कर हाथ वर्ष में, वर्धीर हो रहा नान्छ भ) केमबंद, १६०

यद याता. हे॰ वह-कामा

127



पुत्रना

तलानि इस्ति । एवीन-स्वर हुआ को वर यह यह पर /ब साठ—ब शाल, ९८% वह नहीं नामा कभी कोई कहें। ब्रास्ट बंदन भोगी का बढ़ा (बीलक हाँ। हींथ, ३६

वन-महा होना

- (१) बदा-बसकर करो हात्र । वालेत -या तरे हुटा का बनकता है। सर प्रकार-सर मिस्र, २५
- (२) बहुत सात करनवाता ।

श्रम क्षेत्र होता

बहुन बरवाबी होता । अयोग--वानी वर्तन कुर हर हमकी बंतनम बंचम नहेन मुठ साठ-मुर आदद

बन-बहाब बरना

feere of afr gunt : gabe-qu ufe evaces सम्बद्धी (सम्बद्धाः (स्रो) - सुरायो, प्रदेश

क्षांमा

बाल, कार्य बात । क्योत - बाक वित्र की व्यवद् लिल को mirb unft weid finft geibe gibafte, be

वयु जाना

शर्ने नगानी । प्रयोग---तेषु निवः जीव जिल्ला कुन में का ना पुत्रक सग्रकतापी रहत.

यद है। सकत में बन्ते हैं । प्रशंत-नृष्णु अन इस कर की चाल । जुल्ल इपाने वह में लंकरी बाहर नहि दूस बाल the se ple to

धनमं स्टेटने

17 GERT PATE A CONTROL ON THE STATE OF

म क्ष्म क्ष केन चलाई (मेंद्रुठ विकार - मेद्रुव, १३५ (जन्मार कादि के कारण स्थापन करण हो गाना ।

बदन में आगा लग हाना

the doctors and the manders of the दान सं यात ही ना रूप निष्य के बद ना,

क्षप्राप्ते बारमा

किया सब काम क राम म काम का अपन वर्गात द्वीति वर्तात कमार्थ की बरेगम बार महात्रीर पान মূৰ্ত ক্ৰিক মূৰ্যত ২১

वधाःवा चत्रना

कृती के होत्, वरश-वर्शया होता । प्रयोग-न्त्रा निर्दि शिष क्यापर पार्च ना निष्टि नीत नाव नहीं नाज (क्योर प्रदाठ---44"0 385

वर्षिया के जाना

बहुत हाति होतो। प्रयोग-नाच हुआर रहेन में दे वे चौर पांच इपार क्षेत्र स्वीकासर, वाले-नाथं में अपूर दें, मी फिर हवारी द्वांच्या ही वेड मामनी वानक (११—वेबाहद, दक्ष)

पन सामा

· • • धनमा प्रतिशत होता । प्रधीत-कहत केनी र नगरू रे करह यन देवी पन आई (स्वीर प्रवाद-स्वार, pog क्षेत्र हमों में सरको भूग राम सम्ती है (सम्त० g) -वंदाबद, हर , यर वाले पर अब सर्वे वेसे या आगीयं, में कार्य या पहुर के जाहर खेनारे निकामी की इस बावप बनवी के बच्चों की तम आती. सतामीठ-नाहुन, व)

वस क्षर, संग-उत कर

सम्बद्ध कर । प्रधान—देशी वृशासन बमहि गोशन । सक्ष र्वार होते वार्ष ६० को बात युवनाव-पूर ३५६०), बाँव बाहम बाँव बाह के बींड कम की हाट (शूध्य कवि०---रश्य १, १८४ ने इस्तानक रे प्रमानक है दन रूप है। सर्वत -वृत्तिकीयः, हो

बन का कृषा दाना वेकार कर्नु होती । प्रकोश---पुरशांत अन् दुन विक वर असी इस भीनम के कुछ , युग सर्गन युर, बरश्य)

दल-देश कर

रे दनका

क्य पर्या

(१) सन्दर्भ होना । प्रधान--द्रम जिल्हा का छात्र । पर बहुत प्रचार पहां और प्रचल पृष्ठक पत्र धारण को विशास करें। का दिल्ला रक्षात्र सः । अपना गवन विदा पर मुख् en 4 Ter · 是E · ATER · 中国的 · 新科 · Terb · 5% · / (पण सक्ता । दालेश वर्तात (१) में (⇒) () ammer famel gute-ent) & tet Q frieft क्षण काम वार्ग की बन एका महार निवा बात सहह



- (१) मार्र-मार किएवा । प्रयोग—या प्रापके कुल के सामा हमा यह समीर मुख ने कामक्वर करे कीर बार कम-वन की महाही पूर्व (साधान व्याप्त—राजान दासा क्वर
- (२) बहुत श्रीष्ट-वृत करती ।

(गमा) मुना। - यन यन की पत्ती तोवनत)

वनका

- (२) तथार या बीग करता । प्रशंत-- मुख नहीं तत रही है, या प्रत्ता पुष्पापन ही नहीं है कि इनकी कह कर बर (रीठ (१)-- वेस्ताद, एकं , हो से समझ नहीं हैं -- साथ नीय रहे हैं, यह भारती यह रहा है जीवन के-- सम्राय, ६३
- (१ विकास होती। धनांग त्यानो निकास नवको हको साधी जाम की कीको सुर साठ-- सुर, धनदकोः बाव वेटे वे विकास कही बनतो कर्यक पंत्रबंद २० वकास्यक्र स धनदो करती नहीं की स्थानी - बसुर क्रमां
- (४) बेबस्य बनना । प्रयोग -वर्ग बाद 'शाय' वानना शह पहिनमा नहीं की फिर को बनाये (राधाय कवार---राधानहास, ६४), जिल्ली की दूबरों की बनाये को के पर स्वयं बन नव् पृथ्विक-नाम मुख्युर, ४२५

बनशा विगदना

उन्तरि सीर सम्बन्धि होती । इयोग---वक्कीर का लेन है. भगवान की तथा चालिए, कांच्यी के कार्य किन्दाने देव नहीं नगायों सानगा के प्रमानगा ३५

बनाकर

(१) स्टबर, सुरात प्राप्त की दस्ता करा करव

वनाई पानंत कान सुनाती हमाता, बाद में बाहे पाने और इनके के देश्वर को हाकिर-आक्रिय जानकर कहा ग्रहा है देनके बंगा भी कराकर नहीं (पहनंत के प्रयूक्त-प्रदूतक करों) हुं

बना-बनावा जेल बिराष अपनर

कर र १९ राव का रेडाम्ड अस्तः प्रयोगः नाम् रथाः राज् चीर्यं क्यो क्या क्यांना चाल विकास रहे हैं शिक्त-प्रेमक्ट अद्ध

पंची संसा

तनी नेना। यनुष केना। प्रयोग—नुनाका क्रम नात में अर्थना ने एक द्वार कर्ना किया का आनश्य-विकासन, ४६

412,

- (१) वेषण्य वसाया । समीत—विशेषी भी दूसणे को बताने योग ने यर नवत अस तमें (गृत नित—वात मृत गृत ४२६., तेने कार्य इस कहार—वात तरे बता गृही है सामत १)—देशचढ़, २६२): इस बहारो-बहारी की बनाये बहा देश कानी है जिल करिता, ३६५
- (२) इम्बॉन करानी 1 प्रयोग—की बनाने ही विनद्शों को तो प्राप्त कर ने हैं विनयते का यो भूगतिक-वृद्धितीय २२ , बन्दे बाब, बावें कामें ने ३१ में वाने किनमी नानम ज्यानका कहा कर्षे और साम के मार्ग्यम के बनाने में बचना हाथ करा नहीं सजीका» हैंठ 50 हिंद, 41

ब्रहानकी काल करेता

बहुत होग्राशारी में बोचा देता, अरे आव प्रध्यानित बहुता । उद्योग —दुर्जानुद में उस सार्थ्याओं में में भी स्थाने बहुता के सहस दर्शक-क्य से या, जिसमें स्वामी भी के सहस बसारकों बाम बागी गई थी (तिनती--प्रसाद अठ,

दमाया काना

हैतारी करनी । प्रयोग-सम्बद्धान व्यवस्थिति वृत्रामा, बद्धा बार्ड कर करडू बनावा (समा (कु)--युक्सी, व्यव

क्षी मुन्ते पात

रिकारटी हा बनार्ग हुई शत । वर्गाय-में यूनी की बूजी एक बना कर जब है करते हूं । बान अध्यक्षक श्रीकीय

÷4

बली बाल विगव जाना

होति हुए काम से विच्ना उठ सका होता । प्रमान—सन्न पश्चिमानि मीन महत्रायी । विचित्रक सक्यों सक्ष निवासी शासक क्षाला—जुलसी, २७६

बगुल लगांकर आम काहना

भिष्यरीत कार कारणा | ज्ञांश-कारता वा तो क्यू रखाः श्रम कार क्यू पहलाह : बांधे पेट बक्ष का, वय बढ़ा ले धार्च (क्योर पंताल कदोर, 10., कारह संघ बढ़ा लगान्त्र) बदन की कार बर्गा : शुल साल-सूर, ४५२६

वश्यक्तिता विश्वका

वर्षांच् करना । प्रयोग - प्रतिका के निकाल पर नी गढ सम का गोला निशा दिया यहम० के यक यहम० जनी, यह

व्यवस प्रतता का विवास

भगवा था कहरनाती होतो हा करती र प्रशास -- पाहन है कि महिलायों हा भी क्षत्रका युव प्रमार-- प्रमुक्ट, दश्

यह भोजागंध होता

वक्त ही नवस होता । प्रयोग ल्ल्बट्य अमयोगानाय है विह ही निलाय पेपू. ३६

दरफी पाते के शब गुत बाना

क्षाच्छी वस्तु के बाद वृत्ती बान्यु जिल्लामी । प्रयोग्य—नापनी कार्त के बाद गृह कार्त की कियका की परहरश है नमन— देशबंद के

ब्रह्म प्रदेश, बरमना

- (१) बाल बीधन प्रतिकार राज स्थारण स्थानः प्राप्तः । प्राप्तः मन्त्रारे सम्बद्धाः स्थाने स्थितः स्थानः प्रशिक्तः हैं (मृश्य—भक्तः ६२): नाभ्यानी सीभी । ॥ स्थान के दोकने ही सरम प्रशा धरतील रेषु त्रस्त
- शास्त्र प्रमाप प्रश्नित का नियं नार कर प्रमाप
 प्रमाप प्रमाप प्रश्नित के प्रमाप कर प्रमाप
 प्रमाप कर प्रमाप प्रमाप प्रमाप कर कर प्रमाप प्रमाप प्रमाप प्रमाप कर प्रमाप प्रमाप प्रमाप कर प्रमाप प्रमाप कर प्रमाप क

ष्यमना

🖙 ब्रास्य स्पृता

यम जाना हुए

चल माना

- (१) वाटा वहना, हानि यहनी । प्रमान—धनर दी वार भी नक साने दहें तो कोई बड़ी वात नहीं सान्य (४)— देवनद क्ष
- (२) भूरता (
- (३) सवस्या ।
- (४) एठ अस्ता (

वस साहना,-नाहना

पन बाह्ना,--पहना

- (१) वनकर में कासना का बहना | प्रयोग—स्वयं सुधी के ट्रम पर पर उंड़ीन रजन कोनंदात स्वयं सुधनेतः हरिकोधः कर्
- (२) तमप्रव ना भर वेटा करना या होना । प्रयोश—सम का रहे वर्ष समे में प्रयोग अस यह सम्म गई सभी वासे वोज्या हा प्रोध प्रमा

बल नांड्ना

रे॰ वेन्द्र स्टाइना

वर्ल धकरा

প্ৰক্ৰিয় কৰ্মা বিকাৰ অধ্য কৰি আৰম্ভ কৰা আহে। প্ৰকাশ ক্ৰম্মী হছম।

बल पहना

ें/ बेल डीलना

बल पर पमना

किसी की शक्ति वर निर्मय करना। प्रशीन—सुरक्ति बसद शह कर काके लागठ अं — सुनको ३५॥;

वंस्त पाता

महारा पावर और मजबत होता। प्रधीम---वय उत्तर मानु बल पार्ट रामें वाल) सुलसी, १६५

पल मधना

दम को नुष्ता प्रशासित कर देना। स्वोद—नुमा बांध मेहि सब बल कथा। करि बच्च महु मनपनि जवा (सम० (त))—नुमसी, ५०३)

षका जाना, — टलना

समीवन रजनी अवश्यानी भागव निभी असर व दही भिजनी : प्रमीत-निश निकरन नहीं वाई बनाई : जिब विस्थान तथा थोहै के साई क्योर प्रसाठ-क्थीर, २५०। बना से जाड़ी परेगे, बना नी निष के दल आवशी मिनव १) -ग्रेमधर, १४६।

(गमान महोत चाका प्रत्यका कृत होता, सिर से कृत होता)

बला दलना

💶 बन्धा जाना

बला पड़ना, - पीछे फिरना

विभी जनवाही अपन का जनस्यत्मी जिन्मे यह जाना। प्रमाण---जिन्न कृद जारश्या नहीं कि र पूर्ण जानकी कियाह भैर अवभी कृतिया परा पटी जलाह कवी। पदा । क्योर प्रश्नी, किस रही है कृती जना कीच्ह जोलमा दृह विहंस है किस कर (कृतिक --हरिओध, इर

बला पीछे फिरना वेश बला पडना

बका सिर पर लेता

परम कृम्स कर सम्बद में पहना । सपोन —मैन पहने ही बाप की पण विका जा कि यह बना निय पर न जीतिए (पहनक कै पत्र--बहुमक सर्मा, स्थ-१६)

(सपा० महा०-- करहा माल देनी .

बला से

कोई परकात् नहीं पह सात । अयोग-सी धनेक

भोगत भोगीत असे पारि क्लाइ जो बनि समृति ह दिशा बेट्यांन राज्ये बाह जिल्लारी स्टब्स०—विलाही स्टब्स

क्याचे लेना

त्रम से दूसरे की विषयां से अपने जपक केता । प्रयोग— इस प्रकाद दायकी है के रहे । चीन हम एक साथ आते हैं बना प्रोमेठ—करियोग ४९

विल कर वक्ता

(नवार पदार---वस्ति का पशु)

बन्दि जाना बन्दि बन्दि जाना

वस्य धरम बीना; स्वीक्षायन होना । प्रयोग---वानु कि मोर्न सरम बसंता, मैं वर्षि मार्च नीरि प्रमावंता (कसीर प्रशाल-क्योर, २३६ , ताल वर्ष वस्ति मेरि महानु भी धन भाग नवृत्र कथ् माह 'राम० (अशोध---नृत्तनी, ५२२), क्ये विकास पट्टा विकास अनि रीमना दिलाह । वस्ति वर्षम को क्योप मूनि वर्षो समि मुक्तुं परवाह (विहासि रहना०- किस्सो, १५६,; वस्ति वर्षे चसु वर्ष्ट वयोशभी स्वि विकृति विकोस वर्षेट्य की सिंदाल--हरिजीई इ

दिल-बलि जाता रे॰ बलि जाता

वश्वदर का जिनका होता,--- पत्ना होता

वर्षेट्र का पशा होना देश वर्षेट्र का तिनका होना

श्रकारह चालना

सम्बार-कंदर होना या करना । वयीय-कारम-बाह क्ष्महा करके बनान पानदा और चथन में मुक्त नगः॥ देखने का बन्धर भी कोना-यह उनका मार्ग नहीं पा देखर (व)--ताक्ष में देश

128 O P -- 185 (समा॰ युहा॰—क्यास शहर होना,—पैदा होना, क्याले जान होना)

बसेरा देवा

शहराता, बाच्यत देता । अधोग--प्रमु कड वरनवयु शस्य केता । अतिविध निज वर दीन वकेता (कुनमी--विध्यताका)

यह जाना

- (१) पूर्ण कर से प्रश्नांकत होना । अयोग--- दूर प्रभू के प्रमान किन वर्षट लिनिय काई कार्न (मूट माठ--- सूट २३६४), मसहयोग की एक लहर पाई कीर देख उत्तमें वह गया (शेसर--- कार्ज रे, १९२), बहु व ज्यान वह कारे, "बीच्य मूस बहु को अतो हो है" (कुक्ट---दिनका, ६४
- (२) तकत राजी पर पणवा । प्रशेष-प्रेणी की कति शर्मी, प्रजा हो की मृह्यारे एक लाव-सुर, २०१६।
- (३) महत्त्व को रेमा, न रिक सकता । अमान-नह गए लोग को म सब बहु गए भए अकास के मूह करने आमान रोशांठ-राधांठ देखा. २३); करे-वड़े धर्ममान गाय्यन मार्थित का लेरेस सेक्ट बाए हैं और मनूब्य की दुवंगताओं के मानले में न माने किया नह एए हैं असीवठ-स्वयंठिंड, यद
- (४) बहुबायस के कारण कह न पह दानी ।

बहुकी-बहुकी बाहें करना

बहुत कही जाते करते । क्योग—यना नही करो अनेक श्राप पहारामा भी बहुकी-बहुदी कार करने कर वाले हैं (विक0--वेसी, १८)

बहुनी ग्रीमा में हुए प्रांता, - अदी में प्राच प्रमाणना सब के काम बनायान जुद जी माल उस नेता। प्रयोग---यह रहे न दी पत्नी नमयी बहुनी नहीं गांद कमार से दी (ठाकुर०--ठाकुर, ९) यह दूनियह है एक तथाया जानी मूदो होही हम्हां बहुनी गांच या जा हम्ब दहरे हात है होंगी पान पुठनिठ- बाठमुल्युठ ह्वद सम बहुनी एक म मधी है ये यो अकन ये गांदन दमन्दर हुई अधिया बहुनी गांग म हम्ब यो जा सेन्स्स हिंगू नक ही बहुन

बार्ती नदी में एक प्रधानना के बहुती संसा में हुन्छ धीना

बतलार पाद का फानी पीवे होता.

बहुत पूर्व और सन्ध्रमी होता। स्वीम-सीर यह भी कालने हैं जो बहुतर चार्टों का वानी वीकार की मिन बनी किन्नी है गोदान-देमबद, ६६), निश्चनिया की बात होड़ों वर बहुतर चार का बानी वी चुकी है ,40%-हे040दिंठ, १६४

बहुनाया जोदना

किन्द्रों का प्रश्नान क्षेत्र-स्थान करता । प्रयोग-स्थान जातती भी कि अञ्चलका जोडनकाची किए कोचे तृह करा भी न कोची का कोडिक क्षेत्र

शहरा का देता

बहर देशा

- (१) बहेर देशा । द्यांय दान क्वीर रहा स्थी लाइ, भग्ने कर्न श्रम दिवे बराइ (क्वीर प्रदाक—क्वीर, १९६); जा दिव में जगराज कहार । विकास वृद्धि विवेश कहार केशक (१) - नेपार्थ क्षांत्र । विकास वृद्धि विवेश कहार क्षेत्री हमें कृष्याय । या दिव गृहण्य-पीति हो किन बीनी वर्षे बहार (मान प्रवाद २ —मारतिन्द्व, ६६०)
- (३) ध्ययं नष्ट वर देना ।

बहा के जाता या बहना

भाषातिक क्षत्र देशा या होता । प्रणीत —और माटक टर्जनों को देश नाम की मुजबूध भूमाये अपने मान बहाये विशे वा रहा का (वैनरे —असक, २४)

बहाऊ होना

रही का निकास होता, बहाने मताब होता । असीमे— सरी पानची काम की कौन बहाक वर्गन । साक कमी क उन्हें को को अन्ये दिया प्रचित्र विहास का उ--विहासी, रिक्ष

यहाली बनागर

इसके इक्का र प्रथम जर को उसमें बढ़ाकी **बना की** के करकी हो। सार संहोत है। सार सेन्द्र सुद्ध है

पदुरुपियापन करना

स्वांग का बीच करना । अधान—नी किर वह बहुर्यायक-यन वर्धों करते हो। माः अधिकक, २५२

यहे जाने का सहारा होता

निपत्ति में प्रयु हुए का सह।यक होना । प्रयोग---नोति सम हिल क मोद संसारत । यह बाल कर प्रदीन असारत सामक (क्र)---तुम्मसो, ३६६

बाका होना

षहुत स्वर सीना या भावयंक होता। वर्षात—उनक सक्ष्मे का क्षम क्षर काका वा ,पुरु निरु—बारु मुरु गुरु, १००

वांशें विकास

बहुत प्रमान होता । प्रधोत-- नपूर नामने ताते ही उनशी बालूँ जिल गर्दे (सुनागठ---अठ लाठ, २३० : नवाच नाहर की बालूँ जिल गर्द (सालोठ---यू ० वर्मा, १०४ , अबद ने भूकफर प्रधास भी को दश्यक किया और वहां से बाहर निकास नी उसकी बाल जिला भी कर्मठ--प्रेमबंद ५०६

बांध दूरमा, नांडकर वह बलता

(१) क्वाइंग्ली शेके हुए पान का और न कर पाना, फुट कर निकल पहना। प्रयोग—मोनी, ग्रांस संस्तर तीनों ही देने कोई दांच नोंद कर चोसले रहे के (जंसर (२)— अहाँ या, ३१): प्रद्विमी का आनंद खान बांच तोड़ देना बाहना था (क्षाण)—ह०५०दिए, ३०६), एकदम योग कर बांच हुट गयां—भीर 'यन अनदक' (बाह बह्मारिम) की घोषणा सूच उठी (पट्टम परागं -पट्टम० जर्मा, १६४

(२) मधीदा संघ करती या होती।

बाध तोष्ठ कर यह चलता देश बांध ट्टना

षांधनाः

अपने नम को अधिकार में रखना। प्रधान—कृत इसहरा हाब न प्रोहरे। तृम से दिस टूट कृता था मनर तृबने दगा कर भी बांच निया (कोटो०—नियाला, १२५), पहले ही परिचय में उनके मीहार ने मुखे बांच निया (वैतरे—बाइक), १५%)

(समा। मुद्राव -कांच कर रक्तरा)

यांस की जह में यसर्थ होना

न्ययान प्रमान काम्य होना । प्रयाग—अवही ने तर गनव तर अभ्यान मुन घषत धर्माई रामण हो ज नुष्का दक्ष

वास पर बहुरका

- (१) यसमा करती—महत्त्व देना । अमेरा—वह तो सट-यावर की नाइत के मामिल है कि जिसकी चाहे बांस पर नदा है, जिसकी चाहे देना दिवा है (क्टक्-देठ सठ, 305
- (२) बंध्यानं करणाः।

बांशो इसकता,—बह्मियो इस्रमता

- (१) बहुन बसन्द होना । प्रशास—सेपी विमास युट्टी कर की भी तो नहीं, पर नुम्बर (हमीन) बीच देखी और 'बताब (बन्ध) हो तथर, बामी उद्यानने समाह (पट्टा पराम -इस० प्रामी, ३९३)
- (२) नागड होना, विश्वस्था । प्रयोग-माते हुए क्याया-स्था २४ प्रधान इनका भाग स्थाय स्थाय नगरभागत विश्वसी व्यापारीयात क्षेत्र और उल्लेखना में सामा-मिलमी उद्यापने यो सुहायण- चण नाण, १४७), अपनी इच्छा है यहि सो करें, यह समें कहते में महिनमी इन्ह्यमी है (चित्रण-कर्णक्रम, ४८
- (३) अन्ति प्रापेश में माना

बार्मी पानी बदना

सनस्याक रिवरित क्षेत्र्यत हो आनी () स्वीत--गावा के काम में बात पर कामनी तो बांगों धानी भड़ना सोटी०---जिसामा, १२०

वरंग्दी बद्दना

बहुत अधिक बहुन्छ । प्रमीत—सफ्ताही में बहु इत्हर आसी बहुन्य एक नयं अधे का आसी पहुनकर फैल वर्षा जुदुर का ने अ

बरंग्यो बह्मियों उसलमा to बरंग्यों उसलमा

बांड उठाकर पुकारना

क्के काम पोपजा करनी । प्रकोश—वर्षी रांत वर्ष अति उदारे, ठाडी बांद कबीर पुकारे (कबोर संबाध—कवीर, १२६८ और कुम कटवर बाह ज्या उठा घर कुथ वह रहे हो सन्दर्भ आरती, ६००

बाँड की छाड़ सेता पर दोना —में बस्पना

श्वरह में जाना । प्रयोग—गहर धमन्त्र-नाम है तेरी बाद बारकों हुँ। (विनयण-न्तुलसी १५१): उनी बार-स्थाद, राजाः राम भी जनम भनि धनि ह व बेमार्गन और इर कामी है (का राज्—सेनापति, ९४); राह को अनुभ से उनेन्द्र सम्बार पर में तेथी बाजि साहि के बनावि मास्मिन् है। पुष्प येक्षाण मुग्ग, १४६

वांत्र के सहारे

काम कार्य थे । धर्मात-ति कायान्य पृथ्यि में ही बहनारी बाह के बहारे हैं मुध्येश-नुर्विधीय, म

श्रोह शहना,---वकडना

- (१) महारा मेना, आचय तेता। प्रयान-विमनी जिल्ह्यी घर की जिल्ह्यादी की वी जिल्ह्यों हवेंच के किए बाहु पकरी थी, बना उसके बाय पतनी भी उद्यानता ने पारोसे हैं।सान्छ ,२ --प्रेमबंद, १६
- (२) बहुर देवा, बाज्य देवा। प्रधाय-व्यक्ति वर्ध युर हर नात हाइव देवा अयद क्रिया पामक कि)—सुबक्ते, १६६३), विश्व तद्देव बाद बाव में काम बाद पामक विपति पाद, क्ष्मा रस भीती है (६० २०--सेनापित १०६.) जिर्दे-पाद अवाद है भार-मन्दार हुई, यदि बाद के वीर्ति यु प्राप्तक कवित-व्यक्ति, च , हरियद की बाद पर्कार दृद पाये दोव म देहु (भाव प्रधात ६३, --भगरतेन्द्र, ३६५%, बुवनं वेते गाइ समय मेरी बाद पत्तवी अब में बीच भार में बहर का रहा का गाम--मेमबंद, १६६) पाय हम हो रहे पर्कार ही पर कही बाद आपने पहली मुम्लेक--हर्तिकीय देल सेनी बाह गति क्यांनी में देन चमकी स्वयं गति। (मैनोक--ग्रम, हुन) के
- (६), विकार काला वेदरेग काई राज्य क्षेत्री अहा दर के भीर में जानकात रम हो भएना मान मुकार स्थानकार ३६ विकास क्षेत्रकार मान भी

बाह यह द्यां निर्माताः, न्हाक

महाराहन के बचन को प्राप्तिक साथ क्षात्रका । प्राप्त — मूक प्रित्त प्राप्तन को स्थापन कार्य गर कार्य सु । सा सुर २१९ दा कुण गीति बडने की प्रीति की काह गई की विकर्णतपन् है उन्कृष्ट---वाकुष ३७ , तक व स्थामी प्रयास गजर नेटि कह गते की बाज (माठ प्रथान (३) --भारतेम्यु ४०

वाद गहे की मात्र देश बांड गहे की मिमाना

वांड टरला

नहारक न रह कामा । एकोय-न्तृते वयो न तर किर कानो कृतते वाल वार औ ट्टी 'यूभतेठ-हॉस्बीध, ठ०}

वाह देना

- (१) यहारा वंतर : क्यांव-सूच मोळे मुनि बचन तुम्हारे, द्वा क्या करि चम्ह : खूक साक-सुर. ५१ : जूद भी बहे, साच में अहुदक्तर विकास की बाहें देवह (म्हांक-दिनकर, १४१
- (२) देमपूर्व । एक्कि—वर्गर नावः जिति सिर्के, सी वर्षक दे बाह नारद के मृतिकर निके, किसी भगेगी हमाह क्वीर संदाल—क्वीर ३४

बाह एकदमा

रें: बाह गहना

बांद्र फड़कशा

कोय-इल्लाह का अनुभव करना । प्रयोग—बांह देरी ही करकती ही नहीं है फरकती बाध तो फहका करें (बीसंट— हॉरडीस ३५)

बाह में कमना बाह की छांच लेगा

बाद होता

महारक होता । त्रयोग-पौरा वर्णस्य शासी शहा । शहत दुने दुने १० ४ - ५६० अधिको ४६७

बाहा सं बेधना

शर्मर व ाता । प्राण चीर त्यत युक्त चपती बांही संदर्भ कर्मु० संदर्भ ३६

(यम परः वर्गहा में भगना)

बाई छुना - लगना

्) राज्य र २०१४ होनाः विशोध स्माणी **धन स**.प् वश्यकोश कार राज्य भी विशिव स्थापन साह आहे **विशेष** २



复竞车

ित्र २०४ तत् यर राग शक क्दास्य । इ. स्ट. हे विस्ति वार्षी (श्लेष प्रयोग) (समेठ—हरिक्रोध, प्रयो(+) (२) पनद शांति क कारण व्ययं का काम ० च व करते। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) ज

(समान मुद्रात -- मार्च कदन्त)

बर्क पचना

- (१) वधव ट्रामा । प्रयोग—प्रव कि बर्ध वयी अवान। भी नाम क्षेत्र न नो रिजक जाना जोकाः —हर्रकोशः हर भगवान वसकृतात के नाम भाव ने सर्विया की बार्ड वय भानी है (गणाः — संग्र ३१
- (२) बाक् का श्रकोप ताल होना ।

वर्ष प्रवासा

मर्मत पूर कर देना । चयोय--भूग्डे विद शासा हो सो में पका हूं चुननों की कार्च विदेहीक-इस्तिकोध, ३८)

धाई सरामा के बाई छुना

शाकी न उठा एनती

सर्व कुछ रह पा कर कानना । प्रधान । अब अन्य विकास वैधिक हो जाइए । इस सोच कुछ काको उठा न रसरा रोदामीठ---समाव देशी, पर

(समाव मुद्राक-नारक्षा न रक्षनाः)

शकी निकलका वा निकालना

देनर वा गावन। होता । प्रयोग---धरणवाह अब केना गावा बाकी विकास मारी (कांनर गंधाक---कवीर, १६६)

बाध की बना

प्रतिन क्षा गाँव रोकाशी । अधीय-मानि को क वा उठाने के लिए काम अपनी रहन व कोच रह चुमलेल हाँकीश १३२

याम न मोदना

ात्रम रास्त्र पर चल गहे हा इसमें क्षिण न हाला अयान सी व्यची पीकाविधि मध्या रही न राज्य काम न सारा (पद0—सामसी, ५३।९,

बागबीर हाय में लेता या दोता

(१ प्रवास ताच में केशों का दीवर १ दर्गम १ वालका है जुड़ाबत सरकार मंत्रीय विहाल मेवाद के यह मारास करा विषयी सेना पास रक्षी है। चौर उसकी सागदरर अपने हाय य के रक्षी है (विषठ-प्रेमी १४)

(२) पम में होता । स्वक्षेत्र—क्ष्ट्रें सायद विक्रित्त हूं। तया मा कि उनकी बायदोर अन क्षी के द्वाब से है और पाटिक-इन के दर्ज से बच्चे सायक्ष्मी की केवल सकत पर स्था सक्कों है सिक्षण -स्टाल समी, देव

त्यमे यह वागाइक प्रकट्टा वागाइक संसीति स्वर

बाज प्रांता

हैराम बाला; रिक्थानी म सह बश्मी । प्रयोग —गाति की ये वित क्षेत्र की यू अब ही वेरी भागति बाजहि गार्द करावत—कराव, ७०

बाजारे बरका

नरीदने के नित्त बरकार आना । अभीत-न्यापने ताहा हो बाब ननीवर है व । इसलीय चामार करने चार्य है अकाल-असाद २२०

शाक्षाय गरम होता.

- (१) जन्न्य होना । धर्याय-मध्य धून होना हनमन बदने बानों की बाजार गरम हुई (अट्ट निव -बाव मट्ट,
- (२) जूब काम करना, बहुती पर होना । इंतर विनी नक बनवत नगर ने नर-मूख्या चीर व्याय-मुख्या का बाबाए गर्म वा (१४० (३) -क्रेमक्ट, घटा) (२०) और का बाजार गरम हो रहा वर (विटा-कोशिक, १२३
- (१) सूत्र कर्या होती पर प्रचार होता । प्रयोग—दिन्ही के बनम वर्षों के लिए पारिनोधिक देने की आवस्त्रा की वर्ष परस्तु कर्मों भी निकारिक का बाबरर गर्थ हुआ राधार प्रयोग—राधार दास ३६०): वेलिए प्रयोग (२) के (-) भी
- (४) वाजार में परहक्त वा चीन की विधवता होती ।
- (६) याम बस्ती पर बोना ।

बरहार सलते हाय परकता

बान-बाड वे बारपोट कर बंडरा । वयोग-अस्तो को काम ही ऐसा बीन सा है ? बादरर चमते हाम पटनते हैं बीनेक-सार राज, २४/

129

O P -085

बाजार उत्तरभा

क्षाचार-ताम में क्रियरता धर जानी । घरोम —हतर गर्द बाजार, स्थल गर निवृष्ट समी करत्याचे (शाधाः वर्षाः)— शाधाः दोस २२१

बाज़ार हेज़ी घर दोना

मान का वृद्धि जीयो वर होती । इयोग--- भीमा ने कान भगायी चन्द्री मालस्य वदा केव उता मलतो, प्रथम अस्ती एका देने वर्षे भीदान---प्रेमचंद, ६

(बनाव पृहाव-आज्ञार पर नेजी आना)

बाजार मिलना

(१) काम का पृद्ध होती । ध्रयाम—जिन विषयों के मंधीर प्रध्यक्षम से मन्त्र्य का परित्रका परित्रका और हुएक प्रमाणि होता है. उसमें यम मनना है योग अपक निर्ण शाक्षण प्राचानी से नहीं विकता । प्रशासक—है। एवं प्रिय 180)

(२) विभी होने की नुविधा होनी व

बाहरर में भाग समना

बीचे बहुन शहरी होती । प्रयोग—वेदा, जना बाज का सरका तो दोक दो । शामार में जेंग जांग नग गर्थी है एक्स- प्रेस्पाद, १७००

बाजार में बंडना

देश्य विश् वध्याती । प्रयोग---और ओश-पुन्स करने से पृष्टि विश्वानी की बरकार में यह बैटकी तक भी तो इससीय किसी की मृह विभाने सायक स रहतो ,मार्ट माठ (१)---किट मो रहत

दण्लाक आदमी

इस काल कर का अवस्थान प्राटमके कर अवस्था अस्ति । प्रयोग जास असे तम कि से से से में के सम्माण प्राटमिया को सेट् कृष्ट के से करों के प्रशेष कल्ल्यांट टीस दुर

बाजाद स्था

बार्या प्रयास होम बहु यय करी मेरह कर संबंध है प्राप्तह बहुँ। इस सबाकी कि पति बाजरण किएको के साथ समझ सब्दोन को भोदेतील संविध के पद बाजी बहेला

शर्व बद्धि । ध्रमाय — इनकी लाग्न व्यवने या क्या स्थापन है वह नवा काजी बदकर व्यन्ते हैं परीक्षाः — क्रीव्यास, १०३) (समाज वहात — बण्जी संस्थाना)

क्रजा सार केना,— है। काना —हाथ मैं रहना या नोक

वर्षा स वर्ष्ण हो जाना । प्रवाद—हमलिए किन्सी भी भन्ती योजना बनाइए और किन्सा भी मुंदर उपरेम नृता आफ्, वाल्यिक वाहित्य की बीर प्रवृत्ति नहां प्राणी पीर हान्ते हम का शाहित्य वाजी बार के भागा है प्रशोधक-न्तु प्रवृद्धिक शाहित्य पहार्थर में मोचने का बह वारों का अनमें भूषक उनमें 'बाजी ने समा' या (नदोक—प्रशोध, प्रदे, राजा बाह्य ने बाजी मार मी (गिर्फ को का रव बह यहां, बाजी हाथ है (बीटोक—निराला, दक) वार्मी कालों भी उन्हों के हाथ वही (गिरुक-मेमसंद, इह)

वार्जा है जाता देश बार्जा सार लेता बार्जा बाद में सत्ता या होता

वाञ्च पकडमा

रें। बाजी सार सेनर

महायेगा बाहती का करती । प्रयोग-समझा बाजू वकड़े रहता है (कोटो०-निराता,१५४)

(समान गुडान**-नाज् हेना**)

बार करना

रास्ता चौतना, बान बनाना । वयंग---वीत्वी वरासंप्रस बाद छोरी । वृत्रम क्याट विकारि बाट करि, जनसङ्गि हैं स्रोत क्योरे सुध साठ- सुर, ४५३५

बाद जांदने भाग पंचरा जाना

त ने देनोक्षीर केरने करने कर ज्ञासा । प्रवास प्रमास स्व कार समान वार्थी आसा ज्ञास क्रोडले-बोहन आस्त्र स्वकारण प्रदेशों वृक्ष्यकों ५६५

बाट डाइना देखना निरम्नता कायर दलन प्रथम विकास स्वास्त स्वादक, सुरस्रि



निर्भ भी अभिन है। उद्दान किन्नियं दशक्त विश्ववादिक दिनिक्के बानि के कवीर प्रयोध -क्वीर, पद्ध बहुत दिनन ती प्रोवनी शह नुष्टारी शव क्योर प्रथा - क्योर,प्र): निर्माण निर्माण समान समान को प्रमा समान कर कारे मुठ सा० - भूर ४१९७), गाँउ बार्कान औष, व बाबरी साम, इत पर एक की काट यही (धनक्कांबरा--धना०,४३); भीग जिलान कियार है नावर बाबगी बहुट विमोक्त 🥫 है मिलिए सक्छ---संस्थान, १३४°, बोहत परी फ्लव्हिना, पियके बाह १९शिमकविक-महोस ५४ . तो नव छन्दि हो सब बोध क्ति भागी गर्व के प्रशीत जा बचना के अन्दर देशे किया, भी कृपम बलदेव की बाट देख देख अति विदा कर जाएन में बाहते अवे --- (प्रेंग साठ--वित साठ, १०५८, इमारे क्य मित्र अम् लोग को क्षेत्र ४ हर र स अवेष १ । असर्वेन्ट् प्रयक्षा, कृत असम क्ष्यंत्र प्रकार प्रवासाथ आपकी कार संद्र रही है संधार वंशाय आधार दाश, ६७३), क्या उनके निर् फलपान रखे जेताका प्रथमी बाट ओहती कानी (कर्मठ--वैमध्द, २२) शाम्त्री मध्यो तीर में बैठ में मेंस किसी ही बार देख गहे हो (झासी--वृंध वर्गा, ५४)

(समार पहार-पाट तकता)

दाट दिवासा

(१) बार्ग धनवान करना । प्रयोग—कहि बनीर परचा भया गृक दिलाई शाट कनोर ध्यात-अनोर,१३) (२) प्रतीक्षा भरणानी ।

बाट वेणना

देव बाट जोतमा

शाद जिन्हा रेक बाट जोहना

बाट पहला

(१) शासी में संग करना । पंतीय-नाट पंती ऐसी नात, मोद्रि तो अला मुलान का हालान करने पंताने हरू पानी (माठ पंताक (३)—शास्तेन्द्र, ५०

(२) र पत ए अर्थ निया साना प्राप्त गाना, हरक होता। प्रयोग—तर्यतिल सृति करिनी होड गार्ड। बाट परड मोरि नाव चडावें गरीठ साः—चूलेकी अध्यः

दाट जाना

वादिवस होना १ स्थोन—हर सक से प्रण्याती की एक पान की जा जाती (मान०(१)—प्रेमचंद ३२६), अधी उन्हें नाहीर कमें महोना जी न बीना चा जब पानी के पूर्ण की बाद या वह कि उस जक्त्यर के बरक से सीमा-नितीस निवास कर बाहीर के स्वर्त बेंग्रावंदावा भाग सेना प्रश्न २३६०, उन्हों दिनों बनना उपन्यामों की बाद म हिन्दी की नई मनानों के नामकरूप म भी पूर्णानर मा बाद म हिन्दी की नई मनानों के नामकरूप म भी पूर्णानर मा बाद मा (सिनो—निराधार, भूष)

बाद में का जाना

विती बान वा बन के नहरे प्रजाप में पह नाता । प्रयोग हम क्या क्या कांच में यह जाशना : ओडणा भी देवा दिवह (गरून--प्रेमचंद,6१२)

बात जाई-गई करता या क्षेत्रा

पान कृत आभा; बास को बीर बहत्व न बेना। अयोग---अवद्या बंग हराओं इन सद बाना को ' क्षान आई गई करो ब टठ- चठनाठ ४२२)

(नवा॰ नुहा॰---बाल मई मुजरी कम्ना)

कात भागे बहाना

- (१) वर्षा योग जावे बधाना । प्रयोग—श्वाना प्रमाय का बाबा उपका, केविन श्रम्होंने नाम बागे मही नदार्थ मृत्येक—माठवर्षा,२०८
- (२) भगरा वण्या ।

दान माना

- (२) चर्चा होती ।
- (३) बोच मनमा—विसी काम के शिवें दोवी अहराया भागा।

बाठ उसस देखा

किसी पृथ्य काम की कह देया । प्रयोग---अतः में उसमें सब बाने उपलबान का जबनार देवाने सार्थ गोली- चतुर्यः २३८)



कात उचार कर कहता

- (१) जुल कर करी रात कहनी। प्रयोग—देखिए प्रयास (१) वें (२०)

कान उद्घालना

रणहास करना था किया चाना; बाध-वर्षा होनी। प्रयोग-अन्तिम् की दुवान पर आस्ती का सन्तेष वर्धा 'शिम विकास हिंपनी' के रूप में विका जाना, कभी रेस 'जगम की हिस्सी कह कर बात प्रकारी असी लगा-देस संस्कृत

बात उठाना

- (१) वर्षा प्रकारी । अयोज— यह तयाओं में बात नवन की कृत ही यह बात प्रतापति (छुर-कृत के स्था), भई, दिस तरह बात उत्तर (मां-क्रिके, ५६०) जिस बाता में माल तब प्रनक्षा पिकाह किया है वही अब मी करेगा, तुमको हेगी, तेनी बात व प्रतानी काहिये एउ०—हरिक्केंग, ५६ । हम या बात उठाना भी ठीक व होता भूठी० १।— रेका गता ने देश
- (२) जानवाद बात सहनी । वयीग-कन्या ने फिर बान पहाई (६६०-अप माठ, १३०
- (३) अध्यास मानना ।

बात उद्देश का उद्दानी

(1) बात को घोर कार महत्व व दिशा कामर वह स दाना। प्रयोग-अस देने मानिय ने हुनी में दह बात रखा तो दी की पर भीतर ने हुन है ही मानवा वह (मान देवा०११)—मारतेन्द्र, भूम); पर किसोरी को यह प्रेट खाद घच्ची ममतो वही हम्मल नह में है। यह गह कर व न उदा दिश काम किसाल देवा है। यह गह कर व न उदा दिश काम किसाल देवा है। यह गह कर व न उदा है। व न व देवा मानव अस्पर्देश, व न व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व न व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व न व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व न व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व व व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व व व वह मूल व का बात उद्य गह गदन प्रमानव अस्पर्देश, व व व वह मूल व का बात उद्य वह गह गदन प्रमानव अस्पर्देश व व्यव वारोग व वह वह वारोग व वह व वारोग व वह व वारोग व वह व वारोग व वारोग व वह व वारोग व वा

प्रकार हा १३४५ । त्यर व पर्याप इन बाग हा

केंशने से दबाबा यमा क्या कि बात तह ही गई सुहाग०--भाग नाम, १३०% जोन के किए-वेंग की बात उस रहें हैं। दुक्ताम -देश तथ, २५१% वर्णात बातों की छाती बसनी है। उस्त-वर्ण की बात इटायन के पराहों। --रेण् ३०६

(१) विषय देशमा जाना या बदनना । प्रयोग-का बुदे, ना बुदे, नार्व की यह सुरथ है (-हरनोविन्द के बात उदाने हे बान्ते हता (१) विक बीठ दास, ३०

बान अपा हो भाना

- ११) मेर णून जाना । अशोग—कारी, यदि बात कार ही भा कामे तो में मन्दे पाने तक के लिये तैयार हुं हासीक—कुठवार्ग प्रश्

यान कट जाना

वान का विशेष होता । अयोग-वार के मृत मानसा है तो भीरव भी नाम कामको । जब तो कट मई तुन्हारी वात रें (स्मेठ १)-- ऐमचंद्र, १८५०): बात जिसमें सदा रही कटनी वर्षों न अस भीभ को कटा हाले , पीर्वेण--हरि-ओस, यह , वसू की बाली कट सको मृतिस एक की बट त मका (साकेत--पृष्ट ९०

ब्रास स्थान

नुरन, बहुन बीछा, बहुने ही । अधीन—सम् है मुख का करी बाद करने हो बीत जाता है ,राधार प बार—राधार शक्त ३०३

वात करता

विकाह की बच्चों करना । अयोग—बह करियत् तो राज नहां तरि हर्तेत बुगई नद्द० प्रका०—नंद०, १७१)

बाग कमना

ब्दाय सराज्य । व स्था - इति प्रयुक्त की लगा कि यह दश जनमें य प्रारम करी है कि यह दुसी समय दश या दी एक बाम कम दे सुनीला क्षेत्रमद्व ३६



보환하

यान का काटना

बात द्वारा पीक्ष पहुचना । धरीम-जनहीं हर कात परनेश्वर की बाटें जा रही की कीनैक-संव संव, इस

पान का गहरी होना

महत्वपूर्ण वात होना । अयोग---वर वह वाने गहरी वी ज्याला प्रमाद की सब वस अवध्या हुआ मुसेठ- अव० मर्गा, ४८१

बान का नार उठाना

शान का कम चान् करना । प्रयोग —सरुप्रच जानी कार का नगर प्रथाना काहना का (बुद्धः —अठ माठ, २५३

बात का धनी होता

प्रतिल्ञा पाश्य करनेवाना । प्रयोग—वन वर्गमा का वैने गमश्र किया कि वर्ग वानों के वर्ग करी है 'साव्यंत (१)— भारते-दू २३५ , तेम मश्री हरणहाय उम गम्य एक विचार ने इस्कार कर सकत थे, पर वान के बनी के मुलेठ—संगठ कर्मा, १८); में यह निष्यंत कर से वह सकती हैं कि पर प्रयूनी वासका पनी है त्यंत (३)—हैन्यंद,२५): मान तब वक मिल नहीं सकता हमें । बान के यस तक में ही जाने चनी कोस्रत—हरिजीध, ९८,

(समाव मुहा०-चात का पूरा दोना)

बान का पड़ा होना

(२) शास निविश्त होती ।

यात का बलगढ़ करना या होना

तृत्व या माध्यसम्य बात को कार्य बड़ी बनाना । वालेश यदि इतने बड़े दान के दनशह म भी न मध्ये हो जो "म धार में कारन म हम क्या मध्यः मधीव (देध पीठ प्रधनक मिछ अप , सोकी अअनग्द्राम नाच की नमा अन्याधार किया भाता है। जरा-भी बान का दनगढ़ बनानी हो देगठ है — प्रेमचंद १९६३), बै-सबब बाठ-बाड में बढ़ करें क्यों करें बात का ननगर हम (दोला)— कृतिकीय १०८

पाल कार्यका

- (१) कियों को कही बात का विशेष करना । प्रयोग— के भाष की बात तो नहीं काट अकता पर इससे तो पत्री राक्षण ही नद-वह के जान परता है (भारत्रक १)---भारतन्द, १८७८ सभी अकर हो बोरें आहा और पाण दिन भी और सामा भीर पाने के लिए सवाधार को कियों ने केरों बात काटी (मानक (१)—प्रेमनद्द, ५९)
- (२) दूसरे की बात बयाजा हुए रिना बीच में दोनना । प्रयोग—सूच फिरकी करनायाम का दूसरी बहुत जाम परता है दूसी के बात करत कर पूजना पड़ा (गु० मि०— बाव्युठ गु०, ४४७), विक्रम् दूसरों की बात नहीं कादनी बाहित (भूलेठ स्थाठ दस्रो, १५६ पेचा बात कर कर द्रम हो (नहीठ—सङ्गोय ३५), बनोहर बात कर वोषा— दरे राव-राम चाची, तुम पद्म कहनी हो (धिलाठ— कर्षिक हरू

वान की भारी जगना या जगामा

बहुत बानें होनी था करती । अयोज—पूज मूंद्र के अगर व भार पाया परत की कह अच्छा नगी तक क्या (कीवे≎ — हारिकोच, करों)

बाह की नह तक वर्षयता

समनी जात का पूरे भेद को मानना । अथान-सम तानी हुई कि नगर दश्य दन की राम्य अ वर्ष गान का पह तक तो यह क आने ही (प्रदेशको पत्र-स्पद्गमक समी, १३४)

बात की तान हुरना

कर्मा ज़िरमी । जमीय-कभी बाठ की जान की पर उन्हों कि उसी क्यानी प्राटा मानी का नवी का नामी है। कभी कावल का भावलक (क्यून्य-देय स्थ, ४३६)

बाक की बात में

विश्व विश्वय प्रमान के । प्रमोध---हन्के निकट शीति धीर रंगजना बोई ऐसी धीज है को बस पाँच की भी कमर महर्न में बानों में हाथ बा सकती है (परीक्षाठ---होंस्ट दास. २५-२६); सिर अ्का कर साथ रंगदना हूं सेस पाने बनाने बाले के बामने जिसने हम सबको बनाया और बाल की बान में का कर दिखाया कि जिसका घटा किसी से न गांधा (हजाठ----हें सीट, ५७); हमें सी शांत की बात से के नुना



बात की बात होता

बात की बात होना

सार बात । प्रयोग---वनुगर्ग हरि क विके, ए बाता की बात (क्दीर प्रका०--क्यीर, ५०)

कात का मार साना

नकी से परास्त होता। प्रयोग---कमक बान की महर सा कर विक्तर यह वर्गी (स्टाए (२)--यशभात, ३०६)

कान की तथा

बाल का शतिक औं बार । प्रयोग—साई लाई के बार शब्द प्रया की बात नहीं यह च नकती बात की हुआ नहीं यह च सकतो (गुर्जनिक—संच्युवगृत, २०५

द्यान सरकता

बाल अनुनित और जनगर नात परनी । अयोक—विनय की धनवान तकर का नाम कच्चा गया करन् वान वृती करी । सटकी ,सुरक—यु ० धर्मी, ३२७

बास बाजी जाना

बचन निरुक्त होता। कहते के बतुवार वोई बात व होती। प्रमोत-स्थानकहार है। जाए, व्यर्थ मत, करके धारती आसी बात अपाका मोल लोगिए यो अब करके सनम बेर हरश्य सुरक-साह, १९०३

बात शुक्रका

पूर्ण बात की जगट होना । प्रयोग—या निकृत्या में के प्रेमी है किय की ती जम जीर नई जीर में कर्ण है किय की साथ बान कार (माठ प्रेमांत (१)—मार्गतन्तु, प्रदर्श, उपन मोजा निकृत में बात स्थान में हम वही प्रदर्शन में पर्यो (राध्यक प्रेसांत—राधांक दाला, १५९), जभी जब ती बान प्रियो हुई है । मेकिन प्रमार कियो किय बुद्ध में ती मेरे मुद्द पर स्थाही मुख आवगी (सिंद्रक—साठ किया, ह), जब बान प्रमा प्रमा पा। तब प्रमा दिवसन की बाता कार्य है , मीठ—संव सर, ९५

बात जोता

(१) गाम भिगातनः, प्रकार स रह चाना । प्रयोग इस सम्बंध सुग्र सबके बही जिल्हा अपनी बात अहेने भी है (१२१० 'हे अन्यपनंद, १३६

(२) बात न शानी वागी।

बात श्रीत कर कहता.

कार सम्बद्ध करके कहना । जयोग--- तो संघा समान विश्वा भागना तह में तक-एक बात कोच कर कह हुन्या (प्रेमा०---पनवद ३०२ ३२३

वात कोलना

कृष्य कात कहना । समोग---सूच सकं पा न सूच सक प्राप्त, क्या सूची कात को घटा कोचें (कुमरी०--१/६अ)ध. ४४)

वान राष्ट्र-राष्ट्र कर बेताला,---गदना

काल्यनिक बात बनानी । प्रयोग—भूते कहत स्थाय-मंग सुन्दर, बातें मर्दर-गरित बानत (सुरु साठ-न्युर, २६२६); यह बर्गन्दर्शन कही एरियानि रही एरियानि, नियन की होरे (६२० कविस—सन्तठ, १०५,; क्या किसी की हम एस्ट्रो होट्यां बात वह केने सुनद यहते को (भूमरीठ— हरियोग, ६६

बात गढ़का

देश बात गद-गंध कर बनाना

बार्ट्स सामि करना

बान को नन में रचना। प्रयोग-नुम नह बात गान करि बाजी, हमकी नई भूमाई (मूरु साव-नुर, २३६६)

बाह गिरह में बंधना

जल्ही करह समजला और पार रचना। प्रधीय—मेरी कार निर्माणें कांच की जैंगा, वहां वह समझा न होना ,किर्मका—केमचंद, १०००

बान गोल कर जाना

न कहना । प्रयोग—वहां बैठे-बैटे तीरर में निर्मय किया ना कि वित्र सनुत्र यह पर्धन भारम करेशा तो नह बात की मोल कर जावना (बह् बैठ--देंध सठ, २०१); तुम स्वकी बात को योज कर उस्ते हो, कुछ नहीं जिसके पहा है (पट्टमठ के एक--पट्टमठ कर्मा, १३०)

बात बटपटी होता

हरको-फुर्न्सी सनार वस कात होती : प्रयोग-स्थान मिस् सगन पर बास बनगडी हो बातरे हैं जुनते०--हरिश्रीधः १

धान खवा जाना

क्ष्म करते-कहते क्या जामा । प्रयोग—आह बहुत घडाने हुए कान स्वतनाना है जैताक रेणु ३६९ परन्य दूयते ही शरा उनके हुआ में यह विचार नहां कि इस्तू न महात एसी बात कहना हमारे भारमगीरक १८ १८ के लिखाक है। अवस्य सम बात की बना नक्ष (मा—केश्विक, 193)

बाद बलना

- (१) बात बारो कानी; बातबीत होती, बची होती। प्रयोग—साह बात होहि आमें बजी। हाजा बतिय बाव निएली पद—साधनी, अह , बान को बाते क्यों मूजर स्थित के टोल, होएं है कोइन हमत, विहमत जान क्योंक विहारी स्था०—विहारी, १३४ , कुछ बात क्याने व देखका मूह स्वासिनी हो एक बेस्टर बचनी है जीना । अस स.
- (२) बात मानी जानी । प्रयोग—प्रक चलावे न वात चल पर्य तच कला किल तरह न मृद चलता (भुगते)— हिन्दीश. १४)
- (३) विश्वाह के सम्बन्ध की कर्जा होता :

यात्र शतासा

- (१) जिल सेरमर । प्रयोग—को सम हरण मिण मृण पामर । को यह बात विना मी चरमा (पद०—आयमी, १९१५ पृति शती शतिन वे आई । इ.५६ म् ११ तव नार ममाई सुक्साठ -मृद, ५९१५ , इन्ह काल पामरान चेंड नने मम सामनही पनमाच असे (वैदास पठ—केसच, ९३ । नहीं प्रमायने हमानी बान ने सन नाराने नार उनकी हथ नहीं (दोलठ कृतिओध,१९१), भेदा हमाने नदा बान करान हो, तरे सादमी वेट पालते के लिय भीना मानाना, वेट एन्य-बारम बन्हा करेगा (१०० (२)—हेमण्ड,१६६)
- (३) बान पृष्टिनी, कड होती। प्रयोग--- अहा क्याँड टिट मिर शाता। वहां इमार की बाने बाता (५८०---प्रायक्षी, ३९१)
- (४) बाठ पनवासी । अपोन—वन चनाचे बात न पठ

पार्ट तन मन्त्र किया तस्त् मृद प्रभावः मृश्योगः स्विमीयः १४

चान दंग्लगा

 न पात्र प्रश्न करना । प्रयोग—न्याम अस श्रीमञ्जील कालो को सम सम्बद्धि कर किये नहीं स्वतने (कुमते०—हर्षिः-सींध,१२०)

बात खेडना

भिष करना । धरोग—किन् क्हो येरे सामसे हत कानों को कह केरना (माठ एका०(१)—मारतेन्द्र,६५०)

वान बहना

इंपर की बात उपर कहती । प्रधोग—वर्ग किसी की बात इस बढते रहें (बॉसे०—हरिसीध:१२२)

बान सम्बद्धाः या जमाना

- (२) किसी बात कर हुइन के अभी आर्थि क्वान कर लेखा या कराना। अयोग—किर की यह बात समके दिन के क्य क्यो (क्यंक—प्रेमकंट,३४,
- (२) बात का चन रच जारा।

(मग॰ मृहा॰—बात बैठना या बैठाना)

बारु हाना

- (१) विश्वास न पह जाना : प्रणान—मेरी वान गई तन बार्च धवति कर्यन विश्व भानी सुन्तां (स्ट्रूप्ट्रेस्ट्र
- (२) बात व वाकी वाना।

वात उपल्या

कार न पाननी । हमाय—धनु की वार्ताह टारि आपूनी बार्नाह राज्य स्थापन प्रचाठ—संधाठ टास, प्रदेश

यात इंटना

किसी बाजनी हुई बाज वा सम्बन्ध को समान्त करना पर हो जाना। प्रकोश-सूना ना कि सापके विश्वाह का निरंचय हुआ का, फिर सुन्त कि बात ट्रंट गरी (नदी०-चहारा.तर

बाह्य शोहता

क्षत के जिल-निवे भी बह करता । प्रयोग-न्वीमन वग

रहा । राज्य में बान बही लोगी बोजा (मृतंक-बूंक समी, एक बान बंध्य में पर्त हो न कि का बायादा माने नाहें । उससे विश्वाद जी (देवडीक--रोक स्ट. ९)

भाग तील कर करना समझन्त्र कर बात महती। प्रयोग त्यह हर बान क पूरी तस्त्र गीम कर ही मृद्द से निकामनी (बंदेश- टेट सर, १६४

बात दवना या दवाना

बात की और भागें नहीं न होती का न करती । प्रयोप— बात कैन गई, अपेशार आए, फिर क्या देकर देवाला (कृष्ठो¢—निश्ला, ३५)

बात देगा

समान नेता, किसी काम को काम का प्राप्तानक देना । प्रयोग-भी बागी जात के मुक्त हूं क्या तृत्वे द्रमका कुछ ग्राम तही हूँ (सान० २)—प्रेमकट, १०६ , जिल कर के विश् कह ५ × अवात के मुक्त है गुणिन को उसकी व्यवस्थात है।

काम स इंडा समाना

कोई प्रश्ने के किये कोई बान उड़ा नहीं रजी कर्म — पैन इन कराई से मुचने के किये कोई बान उड़ा नहीं रजी कर्म — फैनबंद, सुद्धों; हों, हों, हमें कीन अपनी नगर से कोई बान सुद्धां नहीं रजाने जहाजंठ— इंच कोडी, १७६०: विकाद समार पहुंचने पर परिचर्ध और सेवा मृत्युका में बाने बाकों ने प्रश्नी ग्रांक्त मेर कोई बांस देवा न रक्की पट्टम प्रांत— पट्टम कार्म १४०

कात न पुरस्का

(१) काई लाक-लंदर में देनी । प्रयोग ने बंग जिल्हा निर्देशी बान ने गंदी निर्देश पदि जायेगी कुल्हा मीन बिगोद ने परि यही नीत ने पदि बान सूर कि छोट मीना प्राप्त करते नहें दिन ने गाँगी बाग ने दिनी कान श्रीपालय श्रीप राष्ट्राल देश हुए। प्रेग स्वस्य की प्रति मान ही नहीं प्रयोग प्रयोग प्रेमद १३

(२) कोई महत्त्व न देश, कड़ न करनो । प्रताप यह विद्धुते नन प्राप होएको कोइ हे बान प्रसानी (मुठ काठ --सुर, ३०३ प्रयो हो जाम सामने हुए का आवक्त निकल मायने, बात भी न पृक्षेत्रे (मान० (१)—पेनखदे, ४ वादना बात नके नहीं कोई पर नहीं तार दोन का दूधा (कुमते०— हारओधा ९४° देखिल - धर्मान (१) में (⊕) भी

वान निकन्तवा लेता.

किनी मृष्य भाग को कहनवा सेना । प्रधीय-हम है मृ की रामेनाक, हमने बात निकलका केना सामान सही है (मृक्षे-मा) क्यों १६)

बात एकड़ लेता

- (१) तर्व करना, हरवत करनी। प्रदोध—हमारी तेन तो पापन के भी बन्दी बाउ को प्रकारी है (कड़--दै० मंठ, १०३)
- (२) कियी की पामान्य कर में कही बात को अभावश्यक कम से बशन्त देना।

वरत पकता

ननाई बर्मावरा होता, निवंद विदा शता 1 प्रदोद—दे शर्ने चार में पदी और किर शांत के दस-पाव कृदद प्रद्रद नोम कोजकन से पिनले के थिए पादे (सुहाराठ—घठ माट, १७६

बात पक्षी करता या होशा

(१) विकार में करना का होना । प्रयोध—अब एम तरह पूरा नाम गूजर बया घोर करना का स्वहता जय यथा तो मेने एक अवह बान पक्डी कर की (मानकाह)—प्रेमकद,\$20), बरते के, करना हीरे का रूबका, यूक्स का कुछ है । बात-बोन दय हकार में पक्डी हो गई है (मिली जनिशाला, ११)

दाल प्रदश्त

- (१) जावरपण्या होतो जोका पामा । अयोग---भव ही एक दे पण वार्थव पे सम्, बात परे पर माहि बहु (धमण कवित---धमा०, १०९)
- (२) कर्या यम प्रकार । प्रयोग—स्विधान ने वृ'त पर तकित ही कहा, प्रश्नु चीठ-पीछे कात परने पर कोल... (११:--कोड्सि, ६२)

पात पदाना

चित्रास्य-पदाता । उद्योग—सामि आगरि जी बहु प्राप्ति इस्ते कह कीन सी दान पहेंचे चनः कवित ग्रामा०, २००



पान पर काला

कात पर ध्यास देना, कहने पर अयोगा करना । प्रमीन सुन्ना उत्तरी सात पर या असी यो कोटीं नियम १८८)

बात की जाना

कियी कट्ट बाल को भन में देश कर रहे जाना । प्रयोग— बृद्धिया कहदा यू ट बना के बान कर थी। यू में में के देश स्कृतिकार, १५७)

वान फ्टना

किसी पूज्य कात का प्रस्ट हो आला। अयोक—यो कहत हतारा अयकत हैंद्र माजी अध्य क्षीर कहें जो किस्त प्रकार भी बात माकृतम् पाने (कासीत—यु ० दर्गा, ३०६

थान पेंशना

क्ष्यस्य भाषता स्था कलता । जनीय-जन्मपूत्रं का ते हुर म् बान कती परतीठ रेणु ३० साल महारेखान नवारा मुक्ता । दूसर पर चार कवा ते काल कोल हिल्लीकाल

(सप्ताः मुहाः—**-वातः सारनाः**)

दान केरमा

वार्षा का विकास करना देता । प्रयोग—यह उपने धीएक को हाथ से जान न दिया था. इसलिय बार फर कर बड़ा (कैट०—हरियोध, २१)

बाम फॅल्स्स

बहुत भोगों को आलुम होता। धकोय—संभि वर्ष भा सर्रहर बात मू तीके भई इन कात्र कमीको सन्द्र कर्जन सन्तर, १४ बात फैल गई, चानदार आग फिर कान्य देवर स्थाना (कुमी०—निरम्भा,३६); कह कोनी तो नद् बात फैल नामगी कि तम घोर कु वर नी अलग-चनग जानि के हो समुग्र—इंक्समी, नेल्यों)

(तमा = मृहा० -- वात चीक्रियाना)

बाह फैलानर

चया बहाना । धयोग—हम की क्या पड़ों हो एना गरी बात को फंनामी फिर्डे मुस्क—व व तभी, स्वत तब वह बान किस ने फेलाघो है, जानने हो भेया, हमी पाओ महीनू में (सिन्हरी-प्रसाद, १७२)

बाद फोडबा

भर प्रवर करना । प्रयोग—ऐमी न होए के यह कात फोर्ड है उनहीं काव सपावे (भार० प्रसा० (१)—भारतेन्द्र, उतर,

वात बवाश्वा

रोप शासना । प्रयोग-वड वडी अपन्तन है भी कभी नेपार वाडी बाने बचारा करना का स्ट्री देश-अल्लाट, स्ट्राडी

बात बदबोन्डी सगना

सोर्ट मूझ बजी बात बायमी । अयोग---संभर की समा कि बद भा रहता पाइता है यह तथी कर गढ़ना पन माथ ही उनका उपहान भी करता कार, नहीं तो बात बड़ी बहुबंग्यी नहेती (क्रेसर(२)--अपनेय, १९६)

बात बढ़ना या बढ़ाना

- (१) विकार का करना करना या कहाना । क्योम—कान तक वंग अला स्ट्रिंग नहीं कान पर पर कर पर करने अगर क्याने --व्हरिक्षीत इस न्यांका करने वहीं गरी । न जन-क्ये कह वर्ष-तृत कर तथा निमाठ—रेमु १०); गुआती ने तो कृत क्यान क दिया, नाम वह नाने का सम पर (मानठ (१)—पेमचंद, २५१); संगर क्यान क्याने क्यान की बीर वाला हुआ क्षेत्रने क्या, काम क्याना की पर नहीं क्याना वा, केविन बीर काम क्या या ? (शैक्षर (३) — क्यांग, ३०)
- (२) व्यर्च बालों का कहा आता या कहता । अनीय---बारह कवा वार तीर बहरू 'शम० (बाल)---नुतासी, १६)

बात बनन्तर

(१) प्रशेषक निर्दे होना । वसीय—कोच मारि एप् इस्तर नामा । यान इसस्य क्षिति नांद्र बाना समान हो। नुकस्य ५५२ थार यसे अवस्थान वहा अब तो वनि बस्त वर्ष दनि आर्थ असिल मक्क स्थानाम, १९० वन म बस्ते म बान कोची (मर्मठ—हरिकोस, ५); यह दादमी यसे है इससे बात बन भी वर्ष (स्थानठ—स्तिन्द्र, ३९)

(२) साम रहनः।

(समा॰ मुहा ०---बात संचारता)

बना बना क्षेता.—संदारना विभी विवरणे हुई स्थित का काम को अधाल नेया।

131

OP -185

प्रयोग—वह भाग विवि वान धनाई (रामः (द्यातः)— तृत्वती ४१३), नात बात वे सकत सवारो सम्बद्ध स —शृक्षतो, ५२२), तंत्रभी विवको दश्य वनायो । भन्ने बाय कर नाम क्याको स्टबंध—हरिग्रोधः १६

बात बहुत्वाना

बात राजना १ प्रयोग—नहचरि चनुर बात बहराने । टेब है वर्गह मृदद्वा बार्च ,नद० देखा० –नंद०, १२०)

बात बंग्त में

थोड़ा हा भी कुछ होने गर । प्रयोग-नापना बात परन में हूं जो पत्न जुने हैं इसरिवियं चलते 'मुन्दीय-- (र्वराजीय- १)

बात विगदना या विगादना

- (१) विश्वति सरास होनी या करनी । प्रयोग यहदि पर-सपर पूर नय नारी । असि सनाय सिंप सात विधानी (रामक ,का) — सुलामी, इन्हा, विधानी सात सने नहीं, नास सरी किया कोई एक पेमा नहीं दिया । सेन नी ने यहा हो गये नहीं तक एक पेमा नहीं दिया । सेन नी ने यहा है, बाग सिनकों पर कामें दिया नो स्वत दिया गयन प्रेस-पेद, ११२१ (२), जब कि हम नात सात या निवास सात सेने म तम सिनक जाती 'मुनतेय— हिन्सोस, १४% है ह्यारो सात भी यह सामगी है समावद सात नात विभावते मुनतेय — हिस्सीध, १४%।
- (२) इन्तर तथ्द हो नानी या करती । देविल प्रयोग—
- (t) # (+)
- (वे) विधन होता था करता ।

बात बैठना

(१) पंत्र मीन हाता १ प्रयान जान गया उसन् (१८) प्र बैठनी केर करके पीठ और है बैठना (चीनोठ—हरियाँच, १३) (२) प्रेंचन मकत होती १ प्रयोग—सब चना बात बैठनी केस बैठ पाई न बात जब दिश में (बोलठ—हरि-क्रींच, १९६

बात महोरता

शांते करनी । प्रयोग — अयन क दर्शनी क विश्व दो नीन सौरते दरमान म बेडी दुई कार्ने प्रश्न रही ह यू द० — ६० नाठ, १५०:

बात सधना

मन के पत्थ की उत्तर-अध्यक्ष के आम सेना । प्रयोग ----चर्चा अर आधा है परन्तु बात पक्ती महीं की है। साथा पहने बचने पर पर दान की सब कूंतब प्रकी कक्ष ,मुगठ--युक वर्धा १३६

वास सम में बेटमा

बात उपरम्प नयती। प्रयोध— पृष्ट्रारी बह बात मेरे यत प तर वर्ष कि पृष्टाक का विद्यासन्तरक को पहुँचे के विद्ये अपनी व्याचीनता का व्यक्तिशाम वर्षों करते हो (साठ रोग—बंगवद, २००

वात शांजना

बात क्षेत्र कर केनी । प्रयोग-स्ट्रम समस्य में असने अपनी बान बाज जी (प्राणीठ-सेन्द्र, ९४)

बात मुंद से निकलता

नान गर्गा जानी। अयोग—काम आसम् अवान 🗙 🗙 कह कर विर नाम जनर कोई वेजा बात मृह के निस्ता जहर एग०— वुंच दर्मा, ३०४।

बात में व होता

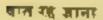
भाषा या प्रमाण में न होता। अपोत-उनमें श्री शाफ कह दिया कि जनकी जेटी जब उसकी शाम में नहीं (पार्तीo-रेन्, २०६)

बात में सह पहना

कात समाप्त होती, वड अध्या । अयोज—एकहि बोल, ई अपू पणी अवस्य समाग्रा विकि कात पर्ने सक्ष धनंद करिस —सन्ताद, १९९,

वंश रक्ता

किसी की बा सपनी कही बात पूरी करती । प्रयोग प्रमु की बातकों दर्भर अस्तुनी बातकि साम् राधान होतान राधान दास, ६६७ असा भी राज भी अब उमरी नहीं रखी गई ! परस क्षेत्रिट, २७ , उस पूरा विद्याग्य था कि बामायण दरीमा उनकी बात रख लेगा असमन है। सन, ९२ साजपूर्ण ने पाचाचे की बात स्थली देशालीन मी चेत्रुन ६०।



(१) कही बात के अनुसार कान होता। प्रयोग—बात रहे भी कात और वह मरधम आई कुम्बन रिश्वास्ट्रास १)- पुष्ट्वें स्थालाभिष्ट् के वहां चले बाता चारिए था। बाबाओं की बात पह जाती (प्रेमांठ—प्रेमकंट ३९), तब जगर धान रह नहीं समयी बात का बाब द पन ही पुष (कोसेठ—हारिओंच, धुष्ट)

(२) इञ्चत बभी यह करना ।

बात संगना

(१) किसी तीक्ष्म बान का हुएन को क्यांचल करना । प्रवीम — तमुराहन — नया बान है। चौर देखर के घाया यही बान उसे नम चयी (नामक (३) चौमनंद, ६६), देशो बान कुमार को क्यी (बायक — हुक प्रकृष्टिक, प्रदे), वह समाय बान उसे नम गई है। यह अस्ता का उहाँ है पर बंगा कर्क ? (प्राटक — योगिन्न, १७९)

(२) विवास स्थित होता । प्रयोग—बाटवीन करते हो गही है पर दो चार वित हैं तब आधनी (मा —कोईतक. १३९)

बान लगासा

(१) एक की कही हुई बात को तूनों से कह कर महोका तिन्य पैया करा बेगा। प्रयोग—यह न कहो, पर का भेदो लेका दाहै। कीन जरने, कोई आदारी गावानी परने के निये मुख्य बनने के नियं, बहा मारी कार नगा भाग (रंगव (१)—प्रेमचंद्र, २१%)

(२) भूगमी क्षणा । अयोग—न वानिये कोई तृष्ट क्ष क्षण समाग दे, इसने उभिन है कि गव विक भेट के धन (वेम साठ—सठ साठ, २३)

बात छडना

तकं होता। प्रयोध--- मुक्ते बीमती भी की विद्या की बाह नहीं भी एक दिन बान लड़ वर्ष कुळीं किसला देव

बान संघारता

देव बात बना लेगा

बात सुनना

(१) रुहा मानना । धयोग न्यूरदाम—पम् मनन हिन तै, कहे नुनत नहिं बात (सुरु सारु—सुर, ४३९१) (२) यसा धूना मुनला डांट सुननी । अमीन—मीकरी में कड़े मध्यट हैं, काद बहुत करना पहता है, रात-दिन गाणिक की बार्चे मुनली पहली हैं (मिसा०—कीशिक, ५); जापके भोड़े मुख्ये काले मुनली पहली हैं (मबल—प्रेमचट, १००

बाद सुनावा

नना-वृत्त बहुना । वर्षोग-वर्ष की हम नेह कियो वन मो नव को नुम बातें सुनवानी हो (माठ र्यंत (२)-भाग-तेन्द्र १४६ जिनमी कारी-कारी इसक निम गावे) को बात मृत का नक्षती संसद्ध-वर दको संस्म, यह दिसना बातें मुना क्या (कु8-दिव पूर्व बक्शी, स्रत)

कात से फिर अरबा

कड़ी बात से मुकर बामा । अशोग—सम फिरेंगे भ मात से अवती (मुमलेंo—हरियोध, १४

(संग्रन् गृहा -- चात से दक्ष जाना)

बात में बात शिकारता

गर की बान है किसीय 3 में हिनी दूसरी बात का प्राया । प्रकार जान विकासनी सभी नई संस्थित- देव सर १३१

बान हवा में उछलना

(१) बारों ओर फैन बाना, बर्बा होती । घरोत— पावित्रसाव बनने की जान बार-दार हवा में उद्देशकी कठ०—देव सव, १०४)

(२) क्ल का एकस्य समस्य हो जाता।

(बना) नहार--जान हवा में उब जागा)

दाल हारशः

क्षण होता । प्रयोग-केश्वित हमारे साथ के लिए वृश् बात हार करी हो चोडों किस्मा, १३५ अन्तर्भ र स कार हार कुटी हूँ (प्रेमर-प्रेमकंड, ३१४)

बातजात स्थानर या होता

भारी का नै होना या चर्चा होनी । भयोग—हा यह तो बताओ, नदकी का विचाह कर करोगे हैं कहीं चातशीन नदी है हैं (जिला)—कीक्षिक, २१%)

वार्ते भाइना

अपने करना का किये जाना । अधीय-स्थान तो वधी वर्ष काम रहे हो (रैझमीट नामन्तर्मा, १६७)



दाने तोषमा-परोडना

बार्ने कादुका-मगाइका

नानी को कुछ का कुछ कप देशा, विश्वासना । प्रयाप— नोड कर भी मरीड़ कर बाटे जानि का करो नजा मनोड हम (चुनरीठ—हरिजीध नर्ग

बात दशना

- (१) मूढ कोलना, बहाना करना । क्योन—बाट काट भीन्द्र समुना तट, काने कदल कराई पु॰ भा०— सु॰ २०५०), कहाँद्र कृति कृति काठ कराई । ते किय नृप्तिः करम में मार्च (दानेश (अ)—तुससी, ३५६); भोद ही बाय बनाव के बातन कान्द्र हुनै जिनती जह कीले ।मिति स्व० —सिताम, १०६); कम बहुद बाले न बना मी० ग्र० १ —भारतेन्द्र, ६), सरका बार्यक्रकोष वाले कालमें में कर होतियार है (परीक्षा०—सी० दास-५३), में कालों का बनाना बाथ दश मान से देश रहा हु (सिनी—निराला, ३४ , दम बहे कन्द्रीय में हो, मार्ने बनाकर काम निकानना बाहते हो ,मान० (१)—पंत्रवंद, २५४
- (२) वो ही कृष कह देवा : प्रयोग—संधीकृ की वानकी कोचन विभिन्न की होद करिये को योगू क, मैं करते की प्रमाद है गीलांक वाल अनुसारी का : महाराम, बहुन करते क्रमांकर कहीं उन्हें को से मुद्र केमा (गठन- प्रेमकट, श्रद (१) केमल वर्ल बहुन की कदको कर बाम न करना । प्रयोग—कम नक हम दाने बनाकर काम बना म क्ष्में में, काम नहीं बना ककते (संशोकक- कुंक प्रकृतिक, १६२)

(र) बुधायर करनी ।

वार्त भारता

वींग होकतो । धर्मात -30 रिट म यह अस्य प्रांत्रा एक बुदियान कारती की बुच्ट में द्रय सकत होता है, अब बहु एक मध्य आदमी को बुद्ध-बद्ध कर बात मान्यहें हुए रेक्टना है बिह्मा कीशिक ६०)

कार्नो में आना

विशो के बहुने पर विश्वास का लेका । प्रयोग इसिन्स में बहुनर हूं कि इसने की काली में बावन अगला कालेख भूनना नहीं मूल की जान है परीक्षक श्रीत दास ३५ , वे कभी बान में नहीं शांत नग वर्ष है जिन्ह कि पश्ची धून मुम्बीठ-- हैंग्बिरीय १०) नेकिस में इनकी काली म बान-माना नहीं हूं १९० १ — अमबंद, १३६९

बानों में उड़ जाना

कानी हारा फूनलाया जाना । प्रयोज—सातनि ही ठर्डि आहि पीर २वें, २वें जारी हम कोची (सुरु सारु—सुरें ४३०४

बारो में पड़ना

विश्वी के बहुने का किस्तान कर केशा। प्रयोग---भागे तो बीड भिक्षुकों की बानों के सभी नहीं कहें हैं (क्रिय---संगठ कर्श, १५१

(२) किमी बात के मध्यक्ति होता पर हस्त तम करना ।

वानों में पंसाना

- (*) बान में बनाय रजना । प्रकेश—की मनाभग मुक्त बानों में फंताय हुए से उद्युक्त कर कई करम गैर्ड हुट गरे फिट्ट अब्द मिन्न, १६६.
- (२) बानी शहा बहुकारतः । प्रयोग---नेह फरदेने प्रताने ग्यो नहीं कम विकेता कीन बानों में फंगा बीट्रंड-- हरिग्रीध, १९१1

बातों हैं सगरता

कानों में नीज स्थाना (प्रयोग----मानिज अध्यापण हानों, रच हो रम में यन हाच के जीनो (मतिक सकत---मतिसम १६०

वार्ती में लागा

- (१) वाली में भीता कलना । प्रयोग —बार्गात ही मृत बाइ किसी । तब मी यांच दक्षि प्रचति अमोदर धालन करि हरि-हाच विधी (मुल्साक- सुर, इन्दर्ध)
- (२) बाद बंबूर करवाना ।

चारळ क्लना

बदकी हटनी । प्रयोग—नूसरे दिन शादक ज्ञार अध्यः (क्रांमी)—वृ a क्रमं, २०८)

बादस फटना

वेशों का विकर-विकर होता | प्रयोध---वादश अब कर एवं च जोर मुख मेनवॉन रह रहवार भगन दक्षेत् है देते से (मुलेक-मनक दर्भी, युक्क)

बानक दशका

नेम सम्पत्ता स्टबर । दियाय—बहुत जनम करि सानक टान। भीव पिलाय भार गहा शाना (कती**र शहात—कहीर** २५१^९

धाना पहन लेना

(१) युद्ध के लिए प्रस्तृत होना । प्रकोश—"हरियद" को भयो शायना नोके कृतको नामी (नाठ ग्रंत (३) नहर-रीन्द्र, ४६०।

(२) अप भारण कर नेता।

बाप के जाय होना

संसभी होता, एक रूपय के क्य में द्रमक्त (हमीय— दारों मुख्या गुल्ह तर्व बावा की बाई (सुरु साठ परिठ (१) — सुर, ३८)

याय दादा का नाम उपना या द्वाला — मिटना या मिटाना

पूर्वजो की प्रतिकता नक्त होती था करती । स्वीक पर सेषुं तो यहां केनेवाणा ही कीत है है और फिर बाद दारो का माम हुक्ता है ,मान० (म)—हैसबद, ६म); ताब वें सबर उनी — नरेगडबाद में बाधारती पर कमर सम की — क्या-करदे का नाम मिटा दिया (मनुरी०—नियात), ६४,

बाय-कृत्य का नाम भित्रना या मिक्तना के बाय-कृत्य का नाम क्वना या क्वाना

बाय हादा की हो जाना

शिक्षी के व्यापकार में ही जाना । वयोग—विश्वते विश् काम के बारते जिलमा क्यमा शक्त के निमा कह देनके कृत बादे का हो चुका (पर बाद—बीट देशक, ५०)

क्षाय वनमा

व्यापंत्रण निसी की एकार या जुलावर करनी। प्रशेष— पानि देश लोकिए, प्रशासी विकास कर उसमें हुन। सो ये लोग वापी भी के मामने प्रश्या विवास पानी दन भी-सामाधी पर पड़ी सो आकार ताजी भी की बाद जना सिया (ब्रह्मार (३)—यशपाल, २१९)

बाबा बादम हे वक का

बहुत पुराती दम्म या बहुत दर (पराने सथाल द न । प्रयोग—दमका एक पृत्य कराण हमारे मन में यह भी सहक दहा है कि भाग जातियानि और विश्वासने के भाषिकों में सुगह दिसायन के बाबा अदम के परहारा पृद्धों ही की प्रधानना रहती है भटट नि० वाद भटन भंगे

वाचर आद्म तिराजा होता

कारा रवेगा अनय होना। प्रशंब—हिन्दीवाको का बाधा बादव हो निरमला है। भाहित्य सेवियों की कह कुँछ हो। व्यद्भः के एश्रं—पट्माः समी १७००

बायन देवा

वायें देना

वना वरना, कराया कर निकल अस्ता । स्योग—आयो रियो विश्वव बूक्यवि को भीजन आप विदुर कर कीन्ही तुलकी—हिश्वव साठ।

बायें हाथ का बेट होता.

बहुत बन्तान काम हीना। अयोग—एक एक की मान-पाण काम के सिंक बनावा हूं। यह मेरे बाप इत्या का केम है में दान प्रमाद १९०० टीय न जी ने प्रत्याह या हान २ पहुँच कहा। पहँचा भर बाप हाम का मान है एपरचीठ --रेणू, ३१६ द सूज मानारिक कृतार की वी परमाचे प्रेम बनमा कर दमदी की भार में सिकार बेलना मूर्पियों के बाए हान का खेस है (पद्म परमा—पद्माठ अमी, २०३, , बनाने बोनों की देना बार्य हरन कर उनका केम (ने १०— सक्त, ७८), अपने दोल को खिलाने के निधे दूसरी पर दोषश्रीपाल करना सनके बार्य कुछ को खेस है (मेर्गठ--एसाइठ, १८)

(नवा- नृहा--वाचे हाथ का काम)

यार्थ सन्त

रिका होना चपतन्त होता । प्रयोग-माम केत बाहिती होत बर, बस्य विचाना साथ को (विनयत-मुससी, १५६)

बारह गई। प्टाना

प्रारंभिक विका देवी । अशेष---सूर मकल वटदरसक है, हो बारतमङ्गे पहाल (सूरु साठ---सूर, ४७४४)

बारह बाढ करना,--काना या होना

ज्ञिन्दर्नमञ्ज करना या नष्ट कर नेना वा होना। अयोग —योहि वर्षि यह कुठाट नेहि काटा भानेति स्थ वर्षु सारह बाह्य (साम्च (क) —तुलसी ५७२), राज करत जिलु काज री उट्टाट में कुट कराट हुए से ने कुटर व स्पा, मेर्च नारह बाह्य (दोहा⇔ नुसनी, ४१०,



बारह-बाट जाना से हातर

बारह बाढ जाना वा होना रे॰ वारह बाट करना

क्षाबह-बानी क्षांतर शतक रहित होता : प्रयोग-सब्ब दोप मह नूति-वृति क्षाबी । तेथ्य यह दोगस करदह वादी (पटण-स्टायक्ता,

मार्थ , हरि के चरित नवें उड़ि नीतें, कीत है में चारह नाती (कार) एक मार्क सुर, २३६३,

क्षाकात अध्यका

भीत-भाव होती । जमाम-नायकरात के बरामदे में को निक्य एक बारान दहरती की गंगवान सम्बद्ध १४९

बर्भाक निगाद होता

मूल्म और रेजी वृद्धि होती। प्रयोग—तंते नयस्था मरा वारीक वृद्धि वांतता है संतर्श-देखाल, यह रे रितापू वृंधी वारीक वार्ष वी थि मृतत देखते ही आरंधी यह बात असे वा साल ६ देलवंदि १३१

कारोक काम

सर्थ पर यज्ञ व्या राज्य राज्य प्रदेश हैं पुँठ क्रिया के बावशी में एक वहुत ही बारीक कान कहते हैं पुँठ विक—बाब्सुवाहुव, 883

बारीकियों में उत्तरना

मूत्रम स्थापन करना । स्थाप न्यानश्चित्रो धी भारोकियो में प्रत्य के लिए साथ उनी ने वहण की की स्थापाठ--- दे० सठ, देशा,, ब्यायावय करनुत की सार्गिकका में मही प्रदर्भ (गान--प्रेमण्ड, ३२१)

बार्गको से

मुध्यसर से, विस्तृत ब्योरे के शास । प्रयोजन्तनविद्यात सरकार के भारत की गतिनविद्या में स्थानको सा जिले अर में दौरा करते, स्रवेद रकतर के ताल को सर्वोद्यों के साल देशने भारते बालों, सहसीओं चीर नेत्रमानक का निर्मालक करने का महत्त्वपूर्ण क्यांत का झालों के दूध करते १९३

बास कराना

भाष्युं हो बाना । प्रधाय कान वर्ण रह स्थार की कार स्थापन जोग का कटाये साथ शोवत हरियोद क इन्त्र की बाज काडना -- निकासमा

मार्थ को कहन शास्त्रीन भारती। प्रयोग --- मृत्ती-कारे प्रदर्भावन के सहरको मृद्ध वर्ष है पर इन मधी को भिना क्षण की बान विकासने कारों मर्था प्रवास कारों के बहुत मार्थ के बोई समाद नहीं सकता (90 वीठ --पठ नाठ सिठ, ५७); कारी मू सकता के भी बहुत मार्थ पूर्वती थी, बाम की कारत निकासनी देशको थी। (इठाठ के) --- यशामाल, ६३२ , बहुतो, बाम की भाग निकास करती थीं, यह बनारे कुछ मही कोशने (स्वान-केमचंद, ६००); बाम की जान करता काम पन कर कम किसे बनाह नहीं क्षणते (श्वभतेठ--- हरि-और, १२६)

(बनाव वृक्षाव---बास की बास्त बीकना)

बाम की भारत निकासना है- बाम की भारत काइना

बाह्य की मीक बराबर, बाह्य बराबर

वास विवदा शंबा

- (१) कानों का काना क्लंड होना । प्रयोग—है उस नहीं ऐसी प्रशास को निष्यते बाम प्रशास है (नु१०—अस्त, १०६), किर और राजी के बाम जिनहीं हो। हम के (१०० > प्रशास राज
- () यामार उसेर हाँको ।

बन्द प्रवासा

हेता व करणान्ते । प्रयोग नवसंत्र को देश विवासी कह अह बाज करणात्रा न समझ वाहित बोलंग कृषिद्रीस हो

बाल नोचका

पर गरना। प्रयोग । वे निकी वरीय को सन्दर्भा

नहीं पाष्ट्रता, नेकिय यह भी नहीं देन समना कि वह भय पार्ट्सियों के बाल लोके (१७० २)--वेमक्ट १९३०११४)

यान्त्र पक्रमा

वास बरायर

देव बाल की लोक बगावर

वाल बाका व कर सकता या न होता

मिन भी संग्रिट न कर एकता मा न होना । प्रयोग—
गूर केम निह टारि मके कोड, दांस चीमि जी अन नरें
(सूठ साठ—सून, २३४); होड न वालो नरर भना को, जा
कीड कोडि डाग्य करें (दिन्यठ—तुमसी १३०); धनी
केनसी का एक बाक भी बांका नहीं हुआ (इ ताठ—दे ताठ,
१९४); किय्नु वास्त्रध में ४ ४ कह विद्या था कि दांचन
का किसी प्रकार बान बांका न होने वाचे राधांठ दंचांठ—
इाधांठ दास, २६६), भनर देने नट का बान भी बांचा हुआ
भी घर में भाग नदार हूं भी शोदान—पेनचद, १११), में
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बान बांचा म बांचा किया है।
भाउंचा कुछ दिन पर्य बांचा की क्षांचा की कांचा की बांचा करें
(स्थिठ—गूस होने), है कीन ऐसर जो कुश्यारा बान भी बांचा करें
(स्थिठ—गूस होने)

बाल-बाल ऋगी होना

पहुन क्यांगे हाना असेत द मरीन हे नार यू गारी कारपार्व से क्यों, हो जगका कान-वाल वेठ पाइन का क्यांगी था (सुरु **सुरु**—सुदर्शन,धड़-

बाल-बास बंधनः

ित्ती दृष्ण्या में बहुत मूच्य अत्रा म जन प्राया । इति सहाराज सम्ब बार हो। में पाल देवन ही बना है भाल दृष्ण में पाल देवन है बना है भाल दृष्ण का बीवने का दृष्ण है। बीवने देवने में पाल देवने का देवने में पाल देवने का बीवने का बीवने का स्थाप का स्थ

बाल बाल वित तहता

मृत दुर्गात होती। वर्षाय—प्रदासि सम्पेट कर नहें हो मिर ! तद र गो दान दांग दिन दोते सीलक—हॉस्सिंध, १०

काल भार

विनक्त प्राः। यद्योग-स्थित वर्षे बाल काम भी भ हटे जुमनीय-सुरिक्षोध, 201

बाह्य भी स द्वारा

श्रीतक भी युक्त कच्छ व होना । असंग्र—ताई भीर पीर की दक्षा के तेक बाज व दुक्ते (क्षान०—संग्राहत, १०१-१०२)

बाल सक होना

बाल सबेद ही जाना, बढ़ाया बाना । प्रयोग-वृद्धिया के बाल नव ही नमें ने कर्मo-देशबंद, ३४।

बास संबंद कामा

धनअब प्राप्त करना । सपोय—मंत्र की क्यी पूर्विया म बाद मफेर विशे हैं कार-प्राप्तद, ३५६

बाज सफेर होना

- (१) बरापां कामा : प्रयोग—गीनी पण ऐसे ही स्थेग केस क्या जिल्ह मेल (१९० साठ-स्वर २५६ , कोक्से) भारते रहोसे कर्य तलक विर | नृष्टारे बाल उतने ही को (बोसीठ-हरिक्टींध.68
- (२) उस क्षेत्रमी १ प्रमोग—बही में वैदा हुआ वही मेरे बाब सफेर हुए (कट०—दै० स०, ३३), हिरी की मेना में ही इनके बाब सफर हुए के बहुमंपराय—पहुम० समी ३३६)

बारियक भागका

पोटा । प्रशेष-नाह सब शासनी के बुनार का पत्न है कि वर्ग्यक्त कर कर शहका मुक्ती बननाता है (वित्रध-क्रोशिक, 40)

बान् का प्रशीदर

- (१) बिह्न-जिन्द हो आनेशाचा । प्रयोग-व्यवि को रहत (र पे नाग्य हो इत्यव गाव सम्पूर्ण दिशीयन पर्णे से हतो बाकु को (कविण-मुलसो, ११४)
- (२) अस्तानी, व टिक संपर्नेभाना)

बालु की भीत

र्कंत बाबार । प्रवोध --एंबी बालू की दीबार पर श्रीवन



शाम में से तेल निवासना

को आधार कही रज मकनी ही (तीदान-प्रभाद, ५१)

याकु में से हैं र निकारना महत्त्वा दिसरी कुछ न निक्षते की संजावना ही। बहु भेर मानं का प्रयान करना । प्रयास-आप अन्या सर्वाः मा बुक्त मेरे बदर एक कृत्त है जिसे बाप बालू व से केन

निकारकार समान सारत है। प्रश्ना के १००० कि ३६°

बावन सोसे वाब रत्ता

भी हर तरह से डीव ही विनद्भ पुबन्त हो । प्रयोग-बाल 'बागी बोली' बाबन तोले याव रतां - यावी विसर्क मही और सम है (ब्हुम्० के एक -बहुम्ब क्यां,११०)

बायन हुन्ध होना

बहुत सावत-सरपाल होनाः। प्रयोग---वार्यादार के काया प्राण होते हैं। प्रेमा०-- प्रेमबंट, १७०

शायते की यह

यानक सन्तरी की कार्य की जाते । प्रशेष-जावकन "बिहारी बतमई" की टीका में गांग हैं । टीका पर कुछ समृत्य भेपता है। देखिए कुछ है भी वा दिनी बावस की बह ही है (महस्र के वह प्रदेशक सन), ४३०

बासा हैना

- (१) अपूरते के लिये स्थान बतलाना । प्रयोग-सृदेश सारन् मुखद सब कामा । तहा वान् ही दीन्तु भूताना जान० (बारा)—तुलझी २२७)
- (२) रचना प्रतिपातन करना । प्रधीन —काम दिव को महि पान है प्रवासनंद की जिल शोध न वाये (यन० करिय **─धन्त्रव, २००,**

बार्सी कर्नी में इवास जानर

भीय ठंडी पहन के बहुत समय नात पूनः योख जाना । प्रयोग-मांवयो बाद यह कानी वनी वे तवान धाना और **राज को वि**त्रकारी जनको (पदम० के पत-पदम० स्रमी, \$118

बर्ग्सा काब केरता

बहुत प्रत्यान स्टना । प्रशास-नीड हंग दश् काह वर्षी मेरी नई बंबाली एर बाली आहा, फार्न्स 🛊 गंगांठ उद्द

बन्दर अन्य है भी लंदर किया कर किन्मा होना नुष्या या मात्रात्म बस्तु भी भगवान की क्रया के विमीन यह बाजनः । प्रयोग-एके बानगमय क्रमध्य जीवन क जिल् में ईक्वनका रहत्यान नहीं केना आक्ष्मा। आर्था . १ ६ व : के बार्क की अध्यक्त मही (मानव दें) खेल-86, 189

काहर की हवा समना

- (१) बाहर के बाताबाल-स्थित का कुश्रधान पहला। प्रयोग—पूर्व्य कार्यको ह्रवा नही अधी, नव भागी सो त्व भी केरे ही समाय सोचने (सम्पर--देश पर, ७७)
- (३) पर से बाहर सम्बंध संगता ह

काइर न खाना या ने होना

बतर व होता, धन्य व होतर। प्रयोग-हर भने ही दिया जो की किस महेगी, यह शोम् ह्रम सब काह बात मंत्रे काहर मही (मान प्रेल १,—मारतिन्दू, ४५०); वै वाच नानो ने बाहर कोड़ ही हैं (मान० (B)—देशबंद, १५०)। है। प्रतान्त की न्यार कि यह इस नारी से बाहर, बही है कि बह हती समय जन पर को एक कात कम है सुनीता -देनेन्द्र ३५% वेष शावनी भेगी इच्छा हो, में अपने बहुर नहरे हैं परन्य मेरी बुच्छा की मंत्री विकाह करते की। नहीं है ,स्मिर-०-कोदिन्छ, इस्र

वाहरी तस्फ

(१) शहर ने बाहर । अरोव--देन ही सूप भाग वीना, कः ताह इच्छे पर सवत्य हो स्य माहरी कीर जाना 🗶 🛠 मवस्तर हो तो क्या साम है (मान ग्रंज (३) आपरी-ह. ९२०): वनका पर पर बाहरी तरफ काने और बुदी छाननं ही स पुनिवर कर बाता है (शधांक प्रसाव--सधांत दास, १४)

(३) अकार्यकारम के लिए जाना ।

शाह बढ नीप्टना

प्रकारण अंदर कम्प्रदा प्रयोग मन्द्र लोगि विस चारदर, मारारण तथा प्रमु समेठ दल्ला तुलक्षी 年 て

বিশ্বনা

उचार । जाज परजानद सुझानके शिक्षार मधान होता । বুল আলিজ নিপ্ত বিভাৰ - ভিজাগৰী বিভা আনত জলিল

200

—धनाव, १३६), जाहि चाहि रहिम कियो, परे ज जिलि यम हाज कर्म जिक्काकी अनत सी, रहारे काल की जाल (मिलिट सक्ठ—मिलिसम, २०४)

विकी हुई

भारम विरायतः देवांग---वंशी सी, वधी मी विश्व करे की विभोहतः सी, वंडी वह चकत, विनोधत विकासी सी (अव्द०--देव, ३२)

विकास दुआ मन

विश्वर-जवांन सन, जन्मच्द्र बन १ वयोश—इव वश्व उससे मिलने में उशके विवारे हुए यह को एकाव होते के किए काशी जोर अवाना पड़ा (क्रेसर (२) -च्यास १०३), इस एकात में अपन दिवारे हुए तन को लगान स्रू (१) दर —प्रसाद, ३६

विकट जाना

- (१) मार्थिक निपक्षि कारण हो जानी । प्रयोग—किन् मीपर और पहर मान्यक उम कियर पर की बनाई माओर कहता ही क्या (जिन्हीं -प्रसाद, ५१)
- (२) वरिय-ध्यत होता । प्रयोग—यहाबृद्धि चॉक फूटि किसारी । किस मूलव वर्ष विगर्शक् तस्री (सम्बः (क) — तुलसी, संबंध

विगर्श प्रतमा या वताना

हरी रिनांग का सभन जाना या संसान नेना । क्योन— गतित उपारन विन्द जानि के विनयी केंद्र संसामी (सुरु सारु—सुरे, ११६३): उच-अर बुनिया को विभाग, बाब नो कम राम को विकास में ननी हूं, के वीक जारू सो मेरी विवसी यन नाए (वैकोठेर-अर्थ नार, इस्स)

बिसड़े दिलाहोगा

बान-बाह में नारात हो अन्तेवाका व्यक्ति । व्यक्त-टाक्ट दीन विवट-दिल में हो पण्ड पड़ कड़ कि गार (व)--प्रेमचंद, ३१प)

विगाद का बीज बोका

श्रद्धाई, वेंबनस्य का सूत्रकात करना । स्पोन-नीज अन से निवास का दर्शन किया तस्त्री वाट वॉन उप पार्था सुंभ है। --हरिक्रीय, 88) यक्त काना । अयोग-वृत भीके वर स्थम सबी, किसका नाय सम्बा है, जिनक गई नवस्त –छप्र, ४६ (नवरक मुहाक-विकक्त सामा)

विन्धी बद्दता

विचक् ज्ञाना

- (१) किन्युरे के बहुर का असर होता । प्रयोग--छ। वरी बन् तम तम बोन्स्रो (११४० (छ)--नृतस्रो ४१५)
- (२) बहुत न्याह्न होता

विद्या होना

बहुत वर्षिक हाता । क्योग-बहां वामगान क्यामे कारतकार की कई वर्षादार विशे वह वे वस्तृत न्यामात, २६

विद्धोद्द पहला

वियोग होता । प्रधान-एक दिन ऐमा होडमा महम् वहे विक्तेह ।क्वीर प्रधान-कवीर, २१

चित्रको विस्ता द्या,—स्ट्रना

- (१) मृतीयन नवती, व्यक्ति होता । प्रवास-एजारती वय" नवा धीर मध्या के लिए नवा । पुरुष के पाह के मृह में बाद पर्व । कृष्यम के तीर्थकाय देवता पर विभवी विदे पहमत के पन्न न्यद्वत ज्ञानी, २३७), होई दिन लागा नहीं बाता कि एक-चनाढ़ वर पर विभन्नी न विस्ती ही (वैमाठ, जेंगबंद १६५)
- (२) बस्तंत नप्रस्थानित पटना के कारता क्रिक्तंत्व विश्वय हो निमा। अयोग-नद्ग नमा हुना अनानक मुद्ध एर किनमी हुट विशे जो (२१०-मण, ६२), अधरकान्य प्र विश्वमी सी निमावर्श (कर्मण-प्रेमकंट, १०९) (१मा० मुहा०-- विश्वर्मी पदन्तः)

विज्ञली विकास

विज्ञली दृदश देक विज्ञलो गिरमा

133

विज्ञाती वन जाना

सामन बगल तम वर्गनाय होता । अभीत --वर्गना कृष्य में ती वह विजयी कर गई सुंद्रांश---अल व्यय, वर्ग

चित्रकी मार जान?

- .२) सरावाल से विजयी कियत के बारण कवान वह कुरते. वह अस माना र

विका कम के श्रीमा कृतना -- करकतर

दिना बाध का कान बनना । प्रयोग---नी प्याः जीक स्था-सत्त बीर्जा वितृ कन तृत की कृष्टे प्राः स्थान प्रयः अवद । स्वती बात तृत्रीच्यी वितृ कन्, प्रदेशक द्वाम न पार्ट सुन्सान प्रयोगका

बिता कल के भूमा परकार रेज बिता कल के मुम्सा कुरमा

दिना कान ए छ हिमाने

विकार किसी प्रतिकार है। अयोग भी पिर करो जिला कामन्त्र के दिलाएं क्षेत्र आए हैं १९० के जीवकट, यक

विमा गुडली का मेवा

पेया काम या कीम जिसमें बाज ही बाज ही । प्रकेश क इस है जारे कीमा का रोजनात क्यों नहीं करते, यह दिस संस्थान है कर है है है

चिता खांड है

विमा विभाग-विभाग के । विभोग --वाभाई में पुरताह जब मही मनरे कुछ ब्रह्माया कुछ बमाया, चीर वन महो दिना साम के मोद्रे मध्य मध्ये हो, बेंडने का डिकामा भी मही कुछ हुए -देसबट, इसका

विशा लय के काशी वाला

वित पालम में क्यां चाल होता । क्योंक—मूब ही का में महित की देखें जिल्लाम नक्ष्मी काओं (कुश्वीक—सूर, सन्दर्भ

विता दाम के लीकर, मान का केरर आल क गुन्ताम

हर गम्म गोवा संघटनतः यात्र प्रमुख्य । उद्योग सूत्र सार्वे प्रमुख्ये भागास्य । इतिहासकाय अट्टोबन् स्टब्स्टिन् सार-सुर. १२४६ , माना ही दिला मूल्य नाम विन् भीन को बालो जंदर प्रशास-नद, १४ सबी, बह कहा गाँड को इस दिल किय प्रोत की बाली हो। बही कार्यान्द्रीय हो जाती, बहु अनुना बही बाल्य सुमानता नदेन के निए प्रमान बेदरन का नमान कन माना सीनक ६३---प्रमावद, ४१% दवाका बहुनाका, हो बंधी विना दाल ही बेडी मुक्त--भूठ कुंध बीठ, ३०।

विना दास क अभाव देना —गुलास दलाना । यहा में करना

पूरा चनुनन बनानर । ज्ञान — धान आने आपोन भई धन बनिया, जम कोली विन् पोन :सु० साठ--सूर,इ४५३), रीकांव में निवयी दिवस परवानर स्थान भूगान कुपा को बांव विजी विन योग सनोत्त है येग प्रशास-दान पूरा को प्रत्य कांवर्ड—धनाठ, १९४१, ज्ञान नपनी खरा यो अपूर को विनार से बादशाहर को दिना कीनार खरीय सबसो हो उपार प्रवाठ—राधाठ दास, ६५०), ज्ञापकी से ही वान में बाला को बादस प्रवाद बना केनी है (प्रशीकाठ - साठ दास, ३१० वान के यह समा के विना दासों के बावपा के स्थान--प्रमाद, ४४०

चित्रा बाम के गुलाम बनाना देन विज्ञा क्षम के स्वर्थन लेगा

र्चना दाम के विक ज्ञाना

प्रकार करें। उस्पार कर कर का प्रशासी प्रकार के राज देव के सु प्रकार मूं प्रकार मूं प्रकार का दार दोस्त्वती सके, इसाविक विक् सोत विकास कर कुला पूर्व का दिन मान दिवार वहीं, क्षेत्रकार को संसाम क्षित कर सके करियाम का स्वार देव विक को बंदान देवती गुन्ह सामा प्र वह रहनर ३५०

विना राज के बता में करता है। विना राज के बताद सेता

दिना नाक का करना वा होना

ernelan un feine fein ern beite feute mult fie fente fun neu fum er befeit ber befeit werten.

तीक्षाक (बाक)--सुन्नसी, यह - १० वि व व व १० व व भाग है, में नाम बिन अब मृत्यस्थक भ्यात से कवित--युमसी, यह

विना यंग के उहना

धारंभव काम करना काहना; विका नायन के और काम करना । सन्ताम-नारव कहा नाम और काम विक् कान्य सम कर्राह उद्योग (रामक (काम,-सुमान), दन

विता पानी की करना

बेडरनन सरमा । चर्गात—मेरी नाम नई इन कार्त, सम्बद्ध कर्मन विम् गरमी सुरु मारु—सुर, २३६०

विज्ञा पंच्यों की अग्रजी

काम स्थानक । प्रयोग—विना सन्ति की नफरी का होती स क्यों वैदेशी०—सन्दिशेष १०७०

विना बान की बान

विता शांतके नित्र प्रसास

धारात्रक काम करने की चेच्छा करनी। प्रयोग----विका भीति तस विकासियाँकों, को केंग्रे विकी से स्मृष्ट साठ नीर १३६१

लिया और कर जानकी

विता सोण का लेगा देश विता रास के लीकर

दिना झोल के गुजास दे॰ विना क्षम के नौकर

विता सीत सरना

युग्तो तथारे दिना हो इस एक विश्वा का एक पाना ह प्रवास — सब पर में विश्वेत है जारियों भी भी जिल्लामें भी तथ्ह वह अपने र ने परत प्रवित्त है को विश्वान स्वास कुष क्षेत्र अमेरक हते। सम्बद्ध करवार: समाव: १००।

विना सीग-पूंछ का चल्लु होना

मन्द्रक होने हुए की कामकाचित कावकाओं से हीत होता क प्रयोग --चन प्रमु खाहि सर्वाह चेटि खाला, में वर प्रमु विन् मृ स चिताना स्मिक 'सूं :-- सुनवी, प्रश्रह।

furteit grat

विराहरी की हरका करता । अधोध-इच्छक आहानक का विकास देव और हैं भी क्यांक मान केनी केवी, नाले-रिम्में दोष आचे करके विराहरी कर दावी (मृतिक-मंदेश करी १८०,

बिही के गमें हैं पंटी बांधना

वर्षकार कार्य कार्या । प्रधान-वारी ने वर्षकार है कि विकार के को वो करी कीत्र करके (समेठ) अगठ वर्गी, दशकी

चिर्दा के शान्य में श्रांका दरमा

वक्त्रक वर्षते कर्नास्त कृत हो आता । वर्षान- प्रस्थान में शाय ही चेज दिया । किन्मी के वानो बीका दृश ((१९० (३)—ग्रेमचंद्र १२वृष्ट विस्त्री के वर्गा ग्रीका दृश —सक्त्या र संप्रदृश की त्रक में बाहोर के कृत प्राणी निकास भागा व्यक्त व्यक्त्य 35

विभिन्नाच्या ही वादन होता

धन के ही कुल होती। प्रशेष---वबर भी बच्चा न विना तो विक्तिकार ही तकत ही बावमा (जंग्यान की विशि) प्रकृत पृथ्वे ही दिन यह कनद बच्चा हुना कि । बच्च हुई ही बावे बीच बाने का होना (स्त्राठ है। प्रेम-कर, एक्ट पर्क

विकास गाँउ करना

विदा होने निया प्रस्ता होना, यामा की तैयारी सामी। प्रस्ती । प्रशीय—एक दिन संस्ता की विस्तार मीमाकर अ अ न्ययं-नेपकों के पाने दस के बावा केवर से का पहुंचा जीता । विदान को प्रशास की का प्रशास की का (पीती—संस्तार केवर मंग्री मुले के प्रशास की साम (पीती—संस्तार की प्रशास की मुले के प्रशास की प्रशास की का दूर्वा के विद्या की साम प्रशास की प्रशास की

(नगाः वृहाः--- विस्ताः वहामाः -- अपेरमा)



z

बांच करना

प्रशासना काली प्रयोग—ग्द्रां से पोन्द प्रणानिया करें भी पूर्वे बहु बीच् प्रदेश जांधली हर्टश्च वरेष प्रवत जी आपी प्रोह, तस्त्री मोह विश्वतह नृष्ट्यां प्रश्नि के शाहर, सूर्वे कहा में पाठां प्रश्निक्त हों, देशप्त , अन्तिन प्रमूटि तिनक प्राप्त, विश्वत अपर दिन प्रमान, हान पाठ तर क्षांक वानिका सूर्वाई स्पूचन कृत प्रवाद विश्व क्या विजाति शीवन पर कान नंदन क्यानी मानो बीच विजा प्रार्ट कुनमी—हिंद अन्तिको

बीच का दोपार होता.

क्षतारमः दूरी का मानगराय को कारण होता, यस इकावट मानी । कारण-पद बननारी मेरे कीर कारण भीच में रीवार का नई है (मानक १)-वंग वट १६०

काब के जानमंग

(१) मध्यत्य व्यक्ति । योगिय--एमाँगवे शोप के आरशे द्वारा यात वरती होती है निरंग-पुरुषक यन

(n't nite frafe fr befon i

क्षाम लेख

कृषे पेदास, सबके आसत्त । प्रदान-क्ष्म केना केना होती प्रीय क्षेत्र केटी होती ज्ञानक ३ प्रेयक्ट १०००

पाय पाजार

मुत्रे बार्ग । प्रयोग त्या व गंदी पति वी व वर तात्र है पत्र राज्य व व द द व व्यवस्था की श्रेण व्यवस्य

बंध्य में भागां पहला

4 में इ.स. वह तथा लें के सेंब 20 की कर करें ▼) रहतीय करता के ये क्षेत्र कर की क्षेत्र कर की

(त. व. मन द्वांकाः

बाब में कूरना

भिनेत्रवास हेम्लाहास स्टब्स् । प्रश्ति प्रस् अस्य स

क्याद कार में तीता का स्थित, तो का बोज सं कृतनवार्ता मील रें गोटान—प्रेमवट, इट

षाय में शानना

विकी कार्य का मध्यम की कार तीन किसी ध्वरित के हात। करकारी । प्रयोग जन्हान स्थान होता कि पका जी को तीम में राजकर काम निकास नमें अग्रेट ए अप्रेममेंद्र हुए।

वाच में देशकर लही होता

(१) धरनते में विशंध मां देवताय होता. दूरी होती। १२१६—अवर पर देवपीय विशास है, तो सबसे हमादे धौर मुख्यते रोच ए दह दौराद तथे भड़ी चार दी है हैं १९०३: नोमचद, १६

(२) धनवागुकारो क्षत्रो ।

य स में पश्चा राजांस में भागा

वाब है बोलवा

इनको की बात के बीच में मोचना, पूनवी के आगई में भारतो है अधार-स्थार ? यह कहता नहीं सू जेते जीन म बाननवानी कोन है हैं (मानक (१)--प्रेमचंद,२३४)

वीचे रेक्टमा

हुराव करना कराया जमस्त्रा । अधाय-कीरिंद् भीति कक् कोच न गामा माम्यव समयाति सव भाषा ,समठ र १८००

बरम बानर

व्यक्ति क्षेत्रमा । अवाय-माना मन बानम कर वो जो । वीन विदेश की बद के वो जो (पर्माठ-हरिस्मीय, १६)

के ताकायाज करता यो हाता

शास्त्रक को ता चार्च के उत्तर समय स्थापन का वर्षक के का विकास का वर्षक की वर्षक की है। कि वर्षक की वर्षक की व वर्षक की कि वर्षक की वर्षक की

बीक्ष इंडामा समा

कार काम का ना का मान मान का मान का ना का का मान का का मान का मान

1951: की गति में उस प्रतिका को सारत का सीना उठाका (पालीत रेणू, 895 , यह नहीं समादन कि इंगमी में इनकी विराजी पर का बीका गोड़े ही स्थित है 'स्थानक है, दोस चंद, १६%): मानावहन में महाद्रश्यक्तक को हमाने और विदिश करने का भीका चठा सिता सुमायक अब नात. २९), प्रत्येक ज्ञामेश्याप का मही में बीहा प्रश्राच है (क्याक स्थानों सेनार के क्रम्याम का मही में बीहा प्रश्राच है (क्याक स्थानकाद, 88%)

बीका देना

किसी कार्य की कारने का दावित्य देखा। कारेन किरिया करीय न कारीय सकीरता। नार्यत्य स्थान होत तीव बीचा (बद्दक-नारक्सी भूक्षाकुत)

(२) बयाना देना, वाई देना ।

मीड़ा केना वैश्वीड़ा ठठाना

र्वातता

महत्ता, परित होना । प्रयोग—बेन कवा सोर्ट वे धाने, जाने बीनी होडे (सुरु साठ— सुर. ४१६०)

बीम विम्हा,—विस्मा

निर्मा का निर्मादेह पूर्ण नग में । अध्या-- य वृ विश्व सस्य हिन आगनी गुरम दिन मांची बीम्यू के हिन कर तम आणू औं मौतार अ मुन्नी ३६ कर-न को दिन मांची निहाशी दिन्नोप निम्न विश्व काम दिन है केंद्रावल के --वैदाय, दक्की, हैं भी पंचीति की विश्वों को यह पंच्या भी, बीस बिर्म अपने महामध्या दिशास है जान पहिल्ला श्वर कीम बीच सज्ञा मर्ग्यन कि ग्री को का पंच्या करेंद्र अपने सामान कि से होन कृत मेंग पर कर जाना । बीम दिन्नी बहु मुन्नी पर ही यह जिसमें (पंच्या, केंद्र---वेमकंड, कृत्य)

बीस्य विकास १० बीस्य विकास

हाम में उन्होंस पहला

मुलना में क्या पर कर होता । धनाय जाई नेवा राज गहने प्रतान का मीको विकास समझनी वार्ष को हो विका जाता है और मुन्तीबात का नम्बर पुनरा हो बाने के लगे- पन या सम्बद्ध परेणा रहता है। उत्तराचार यह तृष्ट्य बीच के उत्तरीन पण जानों है (द्वाराद्वक कुर द्वीशी १५५)

काम होशा

(१) नष्टकर होत्या । प्रयोश आवा की रामना और रेत की दृष्टि के भी आवाद काला काला कोता ही नी प्रशासक रेतन देन

(२) बजन में का नात में बुध अधिया ही होता ।

बुका फाइ श्रद बोला

मृहत्वपुरत्य जोर के गीता। प्रयोग ज्यह आर्थ करन्तु प्ररेणम प्यर प्रश्न कालों के गर्थ को विश्व दश कर के वॉस्टा यह कुच्या प्राप्तवस्त्र को स्टी मानसीठ—नाव साव, १४९

(वया» मृश्राः —पुष्कार काषकर गोमा)

बुकार इतरका या उतारका

बुलाय हरता

ज्यार न प्राप्ता । अयोग-न्यार मेर्च दृष्ट्या ही व भा गोली चन्द्राय, अक्ष राजवार नीच में भगाना चारि बुचार दृष्ट चना है अलिल-- विठ घठ, प्रय

द्ध शाना

- (१) क्रम्बाह दीन हो काना। क्रशंन --वाधवी पटने को क्रमी क्रमंत्र पूर्व परन्तु बाद में मृक्ष नई सुरुगर- और बाठ, १२६८ वाकेश क्षीतर से मृक्ष प्रशासा करार- देत संग, २२४
- (२) वकान्त्र हो आता, यर आता। पंत्रीय व्यवहारी हीतक वक्ष अर्थानि और के जिल क्षेत्र हुन्ती का नवा, प्रयोग पार र बाराम का राज्य का राज्य देव स्थान के हुन्ति है (सर्थक क्षेत्र के कर स्थान पुरेशी होहां मुख्यी होते.

, यक्ता कर स्थान होता। स्थान करा स्थान

कुमना भाग में या देना जिल पहना

प्रतास प्रथम प्रयोग कर किया का राज पान अपने करोग - वृत्यकी पूर्व भाग का तीन प्रश्न वाला के आनवा तहते कर दोनी जिस्क-पंत्रकों, ३०% जीत कर अन् न को और इस्त स्टब्नीक मुक्तनी विकास में विकास पूर्व करवान के कुक्क-दिनकर, २०

सुधनी काम में तेल पहना

बाह्नकी अभा में तेन्द्र पहला हेव सुकती आगा में जी देना

नुका बुला हृदय

निस्थ्यान स्टार्ग । वातीय-जनके बादने इत यह वे जाना कि बान कुछ गनि नहीं है जीवर २१--फ्यू टे. १६३)

बहार्ष की प्राची

बर्गणमा व तत्त्व में इन में बरण की सामी दिन बर भाषनाथी करू, चौर आप मीजें पार समाठ---उप भार्त

इटापे की अकड़ी —लाठी

संदाने का बहारत । इस्तेत — नवीं नहरूर भी बहाने की सदाही का (मार) एंट हो। आएतेन्द्र ५७६ ईडवर में कोई संमान है ही को नवी हवाने बहाने को बाटी होती स्टब्स् १६ — बेमबंद, एसं रवीनियों भी एक बड़े बहाने की नहती सहस गया है सार की शाव है

बहुत्वे की माउं।

le बहापे की लक्का

वर्त में भारता

भोजे में बाला । वर्षाय-मा, व बले में किसी के भी सके पेट के कुल किया भी वी कर बोलाव-सर्वाद्यीय 2201

प्रदम् यते रहमा

मुच-पृथ जोये रहना । प्रयोग---वेर वजीरदान प्राय-धानो में उन्द्रे राम-रम का धरणा भग भग भीर के दिन राम तम मदारस में कृदद कते रहे कवीर -हल प्रत हिंठ. स्था

विद का फोटा बाटी होता

र्वतरण होता। प्रयोग-च्येत्रणी असळ नदादा, इ.स. मन्द्रेश वटिया होता विश्वतल नागी है कुणीर दिसाला १९६

विदि का पास पाने सन्ता जाना

निवंगकोन होता आहे जिलाह करत में क्षणका होता । प्रयोग सम्बद्ध जान नकत हो है दृद्धि काम ना नहीं नह सही है मंगाठः एक ५५

वृद्धि का र्यक्ष होता

(गयाः) महारू मृद्धि सम्ब होनाः)

पति की मोटी होना पुढि मोटी होना

वनकार होना । प्रशास-भी रियाई सी सहा पहिल है, दिन निवाद में यह लोगी । यह दुनीर नरक टोइ साथ नाकी यति है कोड़ी कपीर प्रशास-कपीर १०॥ : नगर है हान-कप भगी है पूरन जान, न वृद्धि भी मोशी पुरु सार- सूर नेभीय : पूर्वीवरण और सिम्ह्याम वादि भी कहती कहते ये कमर न रुपने क परनु भक्ता भीड़ी थी हुआनक्ष दुन्होंने इन्हें जिनोना बना स्वकार का विभिन्न - भीन हास. १५०

नुधि को देना

रुक्षि देखी होना

ब्रॉड क्लिन होती है। प्रयोग-सोच बाद कर दिनि वृद्धि ब्राजी पापक अ-स्मृत्यती दृष्ट्या

विद श्रीहरा या दीरावा

रण्यास नमा प्रतिन निकासको ६ था लाळ व के प्रत्या में पुरुषी बाँड गीरणी है (धरीक्षांक स्रोत द्वारा ५०)

बृद्धि पर पदा अर्था हुर होनर

भाग या ब्रह्मान पूर जीना १ - प्रयोग---मृति सूद शह बनन उप्परि के उपरे पटल परमूचर मनि के (रामः /नाहः) --सूननी, २००१)

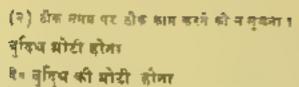
वृद्धि पिछन्दी श्रोता

मुखंडोना, वस्ति संडोती । याच्या संदर्भ के की पदि यानिक दार परिचित्र पत्ति सुक्रमण सुरं अपभूत

(ननार महा) - वृद्धि र्राखे होता)

विद्य प्रायं। जाना

(१) विद्वित्रपट होत् । ४०)म का कल्य-१२४ तृत्रम दोनता पात स्थय क्ष्मच कोह पा गमा असमे विद्विमारी सर्व सुवेश क्षमक १ मुकेश भ



मंगे यही पहला

मुक्षीबन प्रकृति । अयोग—काहान की सुध कहने देशान हमप्रकृति गाम का उस पर करी मही पत्नी (इसाट इसाट, इस

वृती नजर प्रकार

पुर्वित्यमा । प्रयोग—पह यो र्यका है इत्रण यह ही बदमाग है। दूसको की वृह-वेलियों पर बकी दिसाह स्वाता है (हंगा) (१)- निमायंद, २११)

ब्रे विश

पार्थिक या सम्य रुप्टि के कुरा समय, वागद्रशास : प्रमोप ---किसी के कुरे कित म आयुं (दुधगान्न वैठ सरु २६६)

मुरे शक्ती पर कलना

प्रतन काम करना ३ प्रयोग—वरी गई कव छोरी वर्ष सहस काट पानों में गई (सर्म0—हिंगोध, पड़ा, वर्ष पान्त पर पैर प्रवत ही अनकी आत्मा उन्हें विकासनी है 'मेरेठ —गुरुवार, १४)

बुलदल हो जाना

स्या होता। प्रथम होता । यानेल — सप सर्थित को प्रथमका हो। तती द्वारता काशिल कि वट बानकल हो। बाद देस'ं —प्रेमवद १९५

बंकना या दुकना

करन आना सन्ताः प्रधाय- ए वैशावरण प्री निर रूट समाना राज्ये हैं जो उशावरण विश्व का से निसी सन की स्वाध्या में सा गये हैं, बन कही नक इनकी जीते हैं। सह भी पुस्तम सामने हो तथ, नहीं तो साथ बाब मार्थ, जो है सी, स कन प्रधन हैं पद्धार के पन पद्धार करीं १३२); साथ महत्या बनावर अपनेती कु बते पहें (पद्धार प्रधार—पद्धार नार्थ, ११६)

र्यवाबादी होना

हरूकी हरूकी वर्षा होती । इयोग—को एक बार वृदा-बादी हो नई है (पदमक्के पश—पद्मरक्शर्मा, ४८)

व् भाना या होना

वृत्र जानः

वकर दूर न होता । प्रयोग —प्रापंत दिवसा से हुवायत की व वाली तक नहीं वई हैं (क50—देव सव, 585

इस की इच्छि

अंतर्षका विषय कृति । चर्यात—क्य भरे वृति की प्रक चानद मुक्ति कृष्ण की दीति मू तानी । भोषन केत स्वयन के बंद चनव सक्षेत्र की मूर्यत कानी । है कियी ताहि बगी अन्ती भी अली न पर कहि क्यी हु प्रमानी । तो करि भेटीट किकिन सामित तेरी भी ए भी मुख्यान ही जानी चन्छ कविता सन्ति, १२१)

(मना- वृहा--वृद्धिय की इच्छि)

वटी छानमा

प्रथम्ही पीता । प्रयोग-प्रथमां पर वहनार महरी तरफ आने और वृत्ते सानते ही में द्वियों का मजा है स्थाठ प्रकाठ-प्राधान दक्ता एको नदी में अन्यकों के बुद हो केन की बुदी नहीं क्यों धानते (शोलन-हरियोध,

वृद्धे तोते का न पदना

कुद्दे क्यक्ति का कुछ न कीच शकता । प्रयोग-वृद्धाः धारमी दनती जामाती ने नई सिक्षा नहीं पहण कर सकता शहा नीता पहला नहीं भीजना (१२० (२)--प्रेमबंद, १९५

वहें जीने को पढ़ाना

कृते काकित करे कुछ सिकामा, उस बीच वाने पर मिकामा । प्रयोग--नुसको तो सुझे तोते को गाम-नाम पदाना पहेंगा गोटान-प्रमुख्य, १९३

वृद्धे मृह मृहत्सा होना

क्दे मेंद्र मुंहामा होता

दरलाम स्वासी ना लोग शंकः प्रयस्य हमान्य स स्वरः, साहसमा गीम है। बाता वृते सुंद सुराने की सूल बोलाः — मृश्किया, प्रशो

श्रुम मानगर

बनार कोर प्रस्ता । प्रश्या-तय गानः वासी प्रशी दूर्म पारता है (वैसरे-आफ, 124)

वेश अंचाना

वर दिलकाश्वर । प्रयोग--नूच दान व काई केंद्र । बरेर बरुवटी वर्षीय मेंद-पुत्त, वहरू कंपायत केंद्र सुध साठ---सुर २०६६)

देन की नगर कोपना

चारभार काणका हरण करित समारा पाता विकास क पुनार पूर्णी । पूछ अपराधी के समान केंद्र के कांग्रीने क्रियममा--प्रकार, दक्षी, और उठा केंद्र की तरह कर तम भी हिली जांच केंद्र से शिक्षा--स्टियोंस, दक्षा)

बंग काना

बाँत के बारा आरा । प्रयोग-चो को काम बेंग आर्थ का बीठ का बेंग है बड़ी बागा 'बीतक-स्थिक्त, २२व

बे-कार जे

- (१) मध्याक्षेत्र । प्रशंत—यम होते हुए क्लेजा भी है हुनो बीत बे-जलेजे के (मुन्तीर—हरियोध, ६६)
- (व) कडीर हरव १

बै-कहा होना

किसी की कही बात न पुत्रनेकाता हो जाना । प्रयोग-सान समानी बेक्ज् को केबहुक 'चुनरीठ-हरिजीह, १४)

के जह होता

तिस्थार क्षेत्र । प्रथम तद सन्त दह विस् तस्त की ये प्रथम कर्माई साम हो इसर गई ब्राइमनै०--हरिग्रीध ३४)

वे-जाम श्रीता

प्रभारतीन होना चरित्रहीन हाता । प्रमान नीम केवान यन गर्ने जब है जब यो सन सिन, त दाश दर्श कुमते०— हरिजीय, इक्ष्र)

बे-ने करना

भगान-जनस्य ६१मा । प्रयोग-जुमरत त पुमकर गृहा ~ मणवन ! वे, में जन करों जितको असाद १६६

वे सकत के अर दोना

किनी के कहते वाल होता, बचने घन का होता । वहाँक - इसी का बहु कम है कि महके के बवेस के डॉट क्से हुत है (पासर (कृ)—देशकंट, ३१६)

वे-पर की बदाना

नम्म क्षाप्ता । प्रयोग—कोरी ने य-पर की उताई । अपने महाज्य के भारते भी यपनी नमृद्धि-प्रकार का ऐसा अय-पर पाकर कह की बोड़े 'गोदान-प्रेमचंद, ३८)' शिकायन निमान दल केंग्रों व पर को उक्क हैं - बोटोल-निसास, १५

वे-एग्नां कर देना

वंडरवत कर देतर। वरोष--नेकिन, जिल्ला वासू ने वरोबर को की वं वानी कर दिवा (परतीत--रेणू, ४१२)

वे-पार्मा होना

- (१) रज्यस्य क्रमा कामी । अयोग-च्यी पानी होने के अय य क्रमण क्रमा विस्तानको है दूरण अस्य ३० हो दिनहीं के क्रमण क्रमा के नाथ दुर्द सन्यानो दिस्ती चक्रका दिनहरू ६५
- (+) भाग मान-प्रयोग का प्राप्त न रेखन माना होता.

वे-पेदी का, बे-पेदी का जोड़ा

इत्यास विवास कार्यः । प्रयोग यह पात्र बाप कारो के लोट की तरह क्यों स्टूडको किस्ते हैं (रस्तात पंतात— राज्य दास उठट (मार्ग इस क्यू.) वे अपन को देखकर एक बाद बहरदारों कार्ये की भी हीता है-हा हा-हा-हा-नदोठ अक्ष सं पत्र

वे-पेरी का सोदा वर वे-पेरी का

दे-माच की क्रमाना

कुरी तरह बारना । अयोक—सरे बार स्त्र न पूर्णा, एक तो चीर सभी दूर्णा बानसाओं के आद की सम अयान रतकार पूर्णार सकार टाइट

वेकाच की यहना

पटरी दार पर । र संति वसी वरह मार पहली । प्रयोत— परा भीने नहीं कि यह ने भाग दी पतने नमें दि निय मुजना-कर पष्ट जाना पवला है (thuic प्रदाo—संधाद दोसा, धी९)। जब अनवरी की चमड़े को छोटी मी भंनी जी नम हो पर्द तथ नो पास दीन पर है-माम मी पत्ती (सिनली -प्रसाद १०७), जब बीच माजार में समाम की पहली, अब पोएंगे (१००(१)—क्रेमचंद, २१९ , जिन मोनो पर दना। की पर नहीं पी ने भी, कम में कम उस समय दम पहें मा , मैंनरे--- घरना, २७

वे मूंद का

यहन बीचा या निरीत स्वक्ति । प्रशेष--राष्ट्र से गृह की दुशमूरी यह भी शिवन दाना न तुनको काहिये (कोलक दर्श भीच, छ)

बे-मोल करता

इत्य करना । प्रापेश-अधिवर्ष वेगोण करना ही पहे। कुछ नहीं है मोल ऐसे मेल का (मुनल्क-हरियोध, ४०)

के लगाम

विना निवस्ता पर अनुभ के। अभिन-तेस के भारत अब में इनकी सब बात बेनमाम बोनना जना भा गा गा ना लग यह देखकर मेरे यम के भीतर विचा हुआ तमामबीन सम्बद्ध मानव्यका सनुभव कर दता का '' ' (जेरुक्क 0—50 कोशी, प्रश्नी: बान नगरी केनमामों की कृत च क दिन भना विक्ता तरी है। सन्त गार बोनक नोवसीय १ के नथर इतना के नवाम न मेरेनर जातिए का कह (प्रश्नी—प्रेमचंद,

है लाह यान

सरी तुनं निष्यक्ष बात । अयोग—बह को बात कहना है. ऐसाय कहना है मानः ६ प्रस्तेद १५ हा उकार न कोई सुरक्षत सही की भी—सुरुवय खेलान बात की बी (महीद—अहोय, २००)

ये स्वित चेर का

धनस्यतः, नाम । प्राप्त - स्व नामन् से नेजने से स्वर पर भी बहान बनानार सोन चना यथा भीरत हुमर दिन प्रश्ने मो से समा भोगी (जैनने - सकते, १९५) वे स्मिनी यकता वालवलाता —काता — करना, डांकना वे-स्मिन वे टिकाने की बात करना

विश्वेक सम्बन्ध बाव करनी । समीत-- में बुध एसा मनावा बदरामा नहीं हो गई की प्रवृत्त कर दिलाई में अभीत बिंदर के दिलाई की समझी-पृथ्ती वार्त मुझाई मैं शिल-इसाल, देखा, वर मुझे प्रवृत्ति काल भी तरे मूंकी पर देखा है और मुखी पर सीत साव- विश्वास श्लीकर स सिर पैर की बचा कर करने हैं (मांच ग्लेट (१) - मार्ट-तेन्द्र, 40%), बाव तृत्व सवस्थ बजी से मांच बा के आग शे। देवी में पूँची में विश्वेर की हांच रहे हो (पठ पाठ -- पठ नीठ मिठ, ११॥ , वृत्व ती म सिर-पैर की मांचे करन मने, दुवंस्थान भी मान्छ (छ)-- प्रेमकर, १४५), सिर्ट ग्लेट मिर यह हमार बिर्ट पर बाव के निश्वेर की माने प्रथा मूनतेठ--- वृत्ति सीच, ११६), भाग के बिर पैर की बाने प्रथा गई है दिवासी की सठन, २५१

वे स्वित पैर की बात उद्याना
है। वे स्वित पैर की नकता
दे स्वित पैर की बकता
है। वे स्वित-पैर की बकता
वे स्वित पैर की बकता
है। वे स्वित पैर की बकता
वे स्वित पैर की बात होकता
दे। वे स्वित पैर की बकता

वे बाध-वेर की होता

रतस्य ही बागा, रियतस्य-विश्व ही जाता । अयोग---कीटर की प्रतीन की गानी देशि मुख्य । पाद जहाबक देह को आपु वर्ष के पाद-विहासी स्थाठ---विहासी, श्रष्ठ)

चे-हाच होना

बच्च में म रहना। अवान करोनि पना बनु धपरिन्ह लावा। योग हाम हु^{र्ग}न मन्गर बेहामा (प्रदेश—सायसी. २०६३): निगार्मन सृप्त में घटकनवाले इस बीव (मोर्ना) ने किमी ऐसे महत्र करांचन-हारे की प्रकादक न की, उसका हाथ भी भीन दिया और सूद बंहान ही गया (स्वीतः हैं। प्रश्नित, ग्रह्मी: बंहरी में कारह बंहान ही हार विनर्ने हैं न बीवा नीतवा: (बीक्षाः —हार्रद्रोधः, १६०); प्रशा के नृष्ट् बेहान होने हे बकता है। इस मार्ग्स म रहना क्लां — तप, ४६,

थम कावर

भवा देना, नष्ट नकता। प्रकीत—स्ट्रू वन मेरे हरि वरे गाउ, गाउ न वाची वेचि न बाद (कड़ो प्रेमर०—कबोर, मुक्ता पुष्प केरी नर्व मोहे कुमरी के काम, तुर पन् की गाउ प्रकृत केम नाई नाम पूर्व किए छाए साठी, तुन भेषा सानी टेम बरन की सकुक देनि मी बाई नगर (कुमरी)— लिए छाए साए

बेक्त शर्व होता,---इनता का द्वाना

काम विवास का विवाहना, तनाई होना । चयोन— पर्ता के बीध उठना गैठमा कोई मान्यू में बात नहीं हुवा करती हुआर, पर्द भी कोई बान उनकी मानवार जानिय ही तो तमारा बेहा ही वर्ड हो आग दें केंद्रेठ-व्यक्त नाठ, ६३१, हमी ने बहुद्र आनि कहा हुबहार मुन्तेय-हमिश्रीय, ६८६, इन मूर्च बाह बम्मी का बेहा हुबहा वैश्वासीठ (हम -- भागूर्व, १८४)- कुबना देन वर्गन का बेहा कर कभी भाग व्यवसा नार्द कुन्नतेव -हिन्डीय, ५७;

चेड्ड पूपना या दुवाना देव देशा गर्फ होना

येका पार करना -स्वाध्या

विनी की भंकर से वार नगामा दी क्यांना । प्रयोग-कही सी विश्वास है और देव का स्थानार, बल्लाह ही केंग्र वार सवाद (मानंक (१) प्रेमकंद २५ . 'बहा बार ज्यानंकाना' स्वाद वार बरमद (मर्थक- हुए सीद्ध ११)

बद्धा यात्र संगादर

धर वे रा यस करका

पड़ा याग होता.

सर्वको विश्वति स दशकारा १५०) । उत्तर पृथ्वत् स्थारकर पर बस अस्त्रहरू सह गोलो चनु ३ ४६६ स्रोत संद्रुवर स्टूर चटुका

निर्मो काम का इन नक शोध श्रीक स्वास्ता । प्रदेश - मह जल मुद्र महत्त्व सी नहीं है । . साम नक ही दक्षता नहाग (रंगत (१) -ईसबंट, घट): इस समय पान्य होना यां यांनी यह रेज परे न बहेरी सुंठ मूठ-सुदर्शन, १५४)

वेला अवता, --इलना

याम होना । भयोग----वम क्षेत्रा तथ वसी, हम भी एति-वाम को प्रात है (माठ येठ (१)---भारतेन्द्र ५ व न न । नवा है सम्बद्ध वस्तु भी वह बायम मैठीछ---वेणु, १३)

ये हा इलना

रे- देला भूकता

यहकार संग्री

विना कृत काम क्या दिए नैटे नैठे बामा । प्रयोग---पर तक को यह बात कार्ट की नरह कुम रही की कि उभी कमाने और पूरव नैठ कर आये (यूक्शास--देव सव, २५६.

वें काना

- (१) किर पनना, मध्ये हो। पाना । अयोग-न्यहः रनपान है। वैड नवा है, बो-एक अन्य से आन्म देशा है (कुकीन --निराला, ४५
- (२) वंद ही काना, समाध्य ही वाना । प्रयोग—क्षेत्र, यह कम्पनी नो वैठ वर्ष (पैतरी—अवक, ६४
- (3) किमी काम वे म मर्चे हाता (
- (च) यदंग तरीमें में कियी के साल सहनर (

वेटक-बण्ड

- (१) दूरान कुंग् हुए जीन । प्रशेष---नालाकत कृतिकामा गर्मी पर्शन्यतेशी में प्रश्नित काला उठका है, यह कैठक-बाको के वार्ष पर क्या नहीं प्रश्ना (गरन -हेनबंद, १९४), यह दन कता के क्यान्त का ही में या कर, जिन्हारी अक्षा केंद्रवकास (कर्मा०--वंत्रवंट, २
- (३) निरमंड गण करने नामर ।

वस्ता

- (२) बैग्याज्य का रतना । १८४० मानंबनाजी अभी क मोत्यत्र तम् हेर्ग्य १ हरनाः सामग्रहः १५९)

वेडने का दिकानर करना

(+) विकास पर करना यात्र अपन सम्मान

488

समाप्तने होते, इत नवारों के निष्ट् बेटने का दिवादा जिल् जाने हे (मान० (७) —प्रेसबद, ४१)

(२) रहने का स्थान दीक करना ।

वेटने का दिकाना होना

कोई साथप रह जाया । प्रयोग—मोर क्या, कुछे कही वैठने का दिकाना रहेना ? (मा. कोफिक, १०)

र्येठा देशा

मधानत कर वेतर, वृती विश्वति को शास्त्र कराना। अयोग — एक बेंग था, बाक्ते म जीत नते थे, वह भी नगा द्वर स्थापन को भागा थी, यह भी भगवान के बड़ा वर्ष । वर-सान्या ने सब नज्य से देश दिया (किली-जिस्सा ६५

वैठा होना

वश में होशा, उत्तराणिकारी होता, घरना होता । प्रयोध —मेरे पातेर अपनी दोहियों को बोट सामाना को घरनी धानुन समाति कर धनगरिकार भी है सामगे कोट उनके वैठा ही कीन है सुहाराण—घटनां, १४३)

वैठाउद्दे होता

बेकाम होता । प्रयोग क बेक बतात हो गया है, के मी क्रमेरे तब बही हुए बेक आईता (प्रेमा० - प्रेमबंद, क)

वैदाना

ित्ती रूपी के साथ विना विवाद किए ही रहना । यानेन— ता जानी को जिलान बाद न टाना याचे । विवाद टे प्रश्नीक —रेणु, प्रश्नीक, उन्होंने तक प्रतुतिया बैठाई की क्लाकि— निराता, ३६); बननी काति की सहसी की विधिप्र केंद्र प्रश्नोंक साथ बदात्र हुना था, कोई बैठाकी प्रश्नानी जी लो सही की किसाठ कीशिक, देवरा

र्बद्धा रहना

- (१) विकास्त रेप्ट्रकाना प्रवास अपने को प्रोड़ी गया पूर्वी परिपर्शाची के कारण भाग काली केल करते हैं किये को बहुत वेटी ही यह भाषणी कुंबीक किराला प्रवृक्ष के बहुत वेटी ही यह भाषणी कुंबीक किराला प्रवृक्ष
- (२) क्रमिया संबद्धाः

चन भरता

कोलना, नामी करनी । यामेण नकता वे दगायम के देखी कन पुत्ररे महा देन की अमूठ मारू-सूर ६९४

र्वेत्र कादना, अता

बरून लेना। प्रक्षेत्र, मोट विस्ति यह वृत्तीन प्राप्ती हरू

काइन केंद्र दुराओं (मुर०--हि० क्षण सात); केही केंद्र दिना तेचे की बेंद्रे कहां परगई हैं (मुर०--हि॰ क्षण सा॰); कालों कुर कोर्किन कहां को बेंद्र काइन हो, कृष्टि कृष्टि जब ही करेजों किस कोर्टिस (धन० कवित--धना०, ५०) (धना॰ मुहा॰--केंद्र सुकामा,---निकास्त्रका)

र्बर दासना

रामको जन रका। प्रतम प्रतिकारि वहि सारम गरी ऐसी मोमा केंग्रहमें (सुरक- हिल्लाक सांक)

वेर घडना

- (१) सन् डोकर काट पहुनाशा । प्रयोग—मान्दी केस असे वृद्धि सिद से, यो अस बैद वर्ष (सूठ साठ—सूर, 50), किस माहि कहा करें केमें मरे यह काम्ह की बासूरी बैट वर्ष क्षांक क्षांक कार्य ११६
- () देश प्रत्तः

यर छता

ं वर कादता

यन के से दोई निकालना

विना हुम नगर्छ में हो तास्ते कहना । प्रयोग—गत्रती है या मारू" "कन केने रोदे क्या निकाम रही है" आदि मास्त्री में को कड़ांग्या की पामा बहती रहती है, उसे मेरा भवांच मन भी जान ही नेता वा ,अतीराठ—महादेदी, ३७,

र्वत से दृश्व निकासना

- (१) बहा से दृष्य की विश्वन की बाद्यार में ही बहा से भी कृष निकासने की चेंच्या करती। प्रयोग—स्वासन कर चीत है कि परवर की बोल बनाती है, चैन की दृद के दूध निकासनी है (90 पीठ—90 नाठ मिठ, १९)
- (२) बनश्रव काएं करने की वेप्टा करना ।

देख होता

- (२) बैंक की तरह राष-दिन करन करनवाला । प्रधीय मैं बैंच नहीं हैं । शुरहीं नोपों के पिए हम केनान में फना हमा है । करंग चेंचल, १४

देशाची छोडका

सहारा भोतना । प्रयोग-पुन बही बनवर, प्रकारण और सबसी बार साम्य बन्धन जनामका आप है, यौर सिर्वानों की बंशासियां कोटकर सेमर० (२)-वार्ड य.

वोम्स उत्पाना

दिशी कडिन काम की विश्वपारी जाने होए नेना। हातिम-भोग किए, नक्य मेना का पारी बांस उठाकर पुर्ने क्रोश्यन की की सम्मान है सेना शे - महोग,३४% अप भी पदि में लाइनी का काम मीमा मार्ड नो न केयन पुरना क्षिक मारे परिचार का बांस अपने क्यों पर उठा हा (बेहन-- इंट्रेंस हर्द

क्षेत्र शासना

कोई इन्धिन्त देन। या कान करने तो करना । ज्योन— ईश्वर की दया ने में बजी जवान हैं, हड़ा-वट्टा हैं, अरदर पट पास सकता है तक वयी तुम पर बोम्द हास् निसर---कोडिक, हफ)

कोरी उचना

क्तींत होती । प्रयोग —वेबमर बाट पड़ी जब है जायमी तृष म किमनिये बोटी - चुभरीठ—हरिओध, ११४)

पोतस उद्दरना

शराक पीनो । प्रशंक अह में देशक कोचक उद्या करते ही सीर वहां आकर मिली कारतते हो क्वियंक प्रमायंद्र, यदनो

(अंधा संक सामार महामा

बांबा हुआ कारना

करनी का पान पाना । चारीय-न्नीधान प्रनीते व्यवनार वेलि वेचनार, बती मृतिकत यह वाशी नारोजार हो (कविव --कुछसी, ४८)

चीर देता

हुमा देना, भोपट कर देना, कर्ष्ट कर देना । प्रयोग---व पण वह भीर भी बोटे, बमरित जनाइ अहित ही सोचें कंकार प्रशास कड़ीर, १३८।

वर्गारका वंश्वता अध्यक्त काराना

मद रहित रहेत कर अन्य अन्तर । प्रवहत अन्य अन्य

पाँउ वह मुख्यमा जीत नमा हो हमें कोविया-वंधना छोड़कर भाषना पढेता (सान्छ ३० प्रमुबंद, १३३

वारिया वंदनाः वरंधनाः,—समेदनाः, न्यप्रकारकाः वर्षारेथा वक्तवा सारमा

क्तन को नेवारी करनी प्राचान करना । प्रयोग--- पानव बाई कार् क्योरी बन पुकार, बन शर्व क्येरी जावती-हिन्दी सं । एवं बारवा मा बनी भन बंदन हर है कि मपना नपना वोशिया वयना वर्षणे, मता और (Min Ro (१) —आरहेन्द्र, ५०१ ८ वहना हुं नीचे ने बगने बोरिए बकने नादी पीर पार्ने पिरने नजर बाजी (रंग० (३) - प्रेनबंद, 530), इन इक्टन को जब यहा ने बोरिया-क्षता संभावता वरेना (रंगर (१)--पंगवद, ५०६), वेन मृतिवनिटी वें हर-मध्य की है। मध्य की मधी तो बोरिया-अंपला अवेटकर उपर की रहत मुना (प्रेमा'०-प्रमुक्त, २५४), यहां हे आश-कम में वारिया-जनका संबंदना है (मोटी० —निराहा, १३८), बार मिरिका बचनाइयों में साधिक ही आये ती मुध्यती कन हो बंदना बोरिया धायकर यहा है अन देना पहेना कर्मार व तमा प्रथम वर्तामा प्रश्नमा कि मोनिया वयना सभान महत्वकि भी उस वक्त भानते किरते । सहर क्षान , अपनी सवर—सूध, १४

वोदिया बंधना समेरका है। वोदिया बंधना बंधना वोदिया बंधना सम्हासमा है। बोदिया बंधना बंधना

कोरिया वक्तमा सादमा रे॰ कोरिया संस्कार बाससा

योज जाना

() विकास के प्राप्त न रहता हम न रहता (प्रयोग इस्ट अप्यास्टर को दी जिस में बीजि कापन (स्थान) है) प्रस्ति अपने, प्रस्कान गर्ग है। हम केये अदमी समा जिस्ते को प्रभाव कर कर के सा कोशिक अपने () साम कामा।

कोल न आना

इतर न दे जाना कर न जाता । यू वेष - तुर समन पृति

智裕能

रखी दगी थी, बहुरि ने भागी बोसि (गुल्सा०—सुर, सक्छ) बोल त सरवी उत्तरमन से बहुँ अध्युम ने शुद्धि कालि न ए।ई' (मर्स०—हरिसीध, इस)

(समाक पृथक । बास्त न पाना)

घोष्ठ फुटना

(ममा० पृहा०-कोली फुटना)

पोक्ती आंखे

ऐसी धाले जिसमे जन का बाब प्रषट हो । प्रधान--परस्तु उनकी बाल कोलती, बारी और बावाद कडणबार साल पत्री तक वेली ही हही , प्रपत्नी सदर -- एड, प्रवा

योलती चिडिया वह जाना

सर जाता । प्रयोग--- छोत्र सूता नवीर पिनदे को सम्माद साथ बोलती निविद्य (बोल०-- हरियोध, १२२

योलनी बंद करना या होना

तिशतार कर देशा या होता । प्रवाध—केने व नया कार्य ने वाई-वाई हाकियों की बोलती. बंध कर की उपलोध—केन्, ३९४ वृक्ष भी की बांध के कर हो वर्ड (कुम्मान निस्तका १९२), विभ वर्ष आज को नमें बाले बोलती बंध क्यों ने ही वाली (बीलाय—हरियोंस, १२१

बोलबाला बहुना या होना

सम्मान और आदर बना बन्ना, महत्य होना। प्रयोग— हा, नवित्र की है सामकान को सबसे का बोलवाना है कालीव निकासा ६० बादबाका हो नवा उनका यक को बनाधर पृष्ट रहे, भूद बोलने (बोलव-हरियोध, १२२) बोलार प्रम्य पूचा भी बोलबाना यहा विदेव-पूमावव, १३३

बोला बाहना है

सस्यम्स समीय । समोग----यह किस वितेरे की निपुणना है कि निज बोला ही बाद स है । माठ ६० (१ - मारनेन्द्र, ६०७)

बोली-डोर्ना

कभी नोनी ठोमी भी मुनाई के जाती है सानी बाजार वं किमी राजक वर्ट केमध्य म दोने से बह मजाक वर्गन के सिध दी आई। वो सुटान (२)---यशपास, १५%,

कारी डोली करांना आक्ता, वोला दोलगः.— अक्ता

विनी को सहय करने उपतान को व्यंग के ग्राव्ट कहना।
प्रयोग—हा मेर वर्शनको जीतिया न ग्राव्ट (ग्रांक्ट)—ह ग्राट,
प्रवेग —हा मेर वर्शनका जीतिया न ग्राव्ट (ग्रांक्ट)—ह ग्राट,
प्रवेश में ग्रांक्ट में क्या न वह मंग्ले वह बोल में बोलो मगर है
बावने मोंगंध—हरिश्रीच, १२२), निहानको है प्रवंश सहनी
वी ग्रांक्ट मार्गनको के प्रशंत कोच प्रगट किया (ग्रांक्ट) (२
—यग्रपास, १३३); मार्गन मही कि मुहल्ले का एक भी
पान वन प्रवार काम न ही प्रवंश मुहल्ले का एक भी
पान वन प्रवार काम न ही प्रवंश मुहल्ले का एक भी
पान को ग्रांक्ट कोची को मुद्द —मांध्या अपनि हो मोंची कोची है को में स्मृत्य —मांध्य है।

(मगः=महान-कोली कोक्ना)

कोला-डोजी मरस्या १० बाला-डोजी कमना

बंग्ला बोलना

(१) तीकाय में बाक बोन्ता । वयाय — संव इमादा मत हुआ तीमात या, दिव्यनिये कोती म तब बोली गई बोल०—हरिकोध १२१

(२) देव बोर्लर-होर्लर कसना

बार्म्स सारगा

रे॰ बोर्जर डोर्जा कमना

बोन्द्रः हे चिटाम प्रान्तना । से असून ट्रंपकना स्टब्स्ट क्यर एवं प्रिय कार्त बोनवा । क्योन—नह हीएएनस

पंतित सूत्रा । में बोर्ज तो सवित पुधा (पदंठ---जायस) मा १६१; सपनी कोजो में जिल्लाम पीमकर मेरी मा से उन्होंन

बहुना सुक दिया (नल०- नगांत, 18)

बोजी से असून दशकता देव बोजी में भितास घोलना

बोहजी-बट्टा होना

पहुंची विश्वी (रेजी) प्रयोग—सरे, तो पुछ कोत्रजी-बद्दर तो हो अध्य (समार्थ (स्र)—सैंगबंद- पर

बाह्यार पहला

बारी मोर से बबकी फटकार पहनी । प्रयोग- यह सब

होत्स्य सः १९४६ है शिक्षात्रक द्वाक-नाध्याक देखी, ६६०० वाली स्रोत सः होत्रा पर वो ३ प्रता । यो द्वान देशवर्द स्थ

धीने का चांद प्रकार

स्योत करता —समना,—होना

कोई हिनास बैठना वा बैठाना, व्यवस्था बोनो । वयोग —ए वर्ड एमी प्रश्न कर क्योत मु दब्द स्ट्रांबन के बूग दाने (जगक-पदमाना १५) करना विदेशक-हिटाडिय के बच क्योच देवाचा पैने वारम्यार वैदेशक-हिटाडिय क्या को मध्योग की ब्योच नहीं बची अनिनाती--श्रासद, २३२१, दूटने को स्थीन बहुननी हुई पर सुरा क्यान तांतक दूटा नहीं गुमरीय-हिटाडीय, एक

र्क्यांन लगना है। स्पीत कामा व्यक्ति क्षेत्रा रेज्यकीत काली

ब्रह्मांच फरना

(१) निरकृता (

(समा: मुहा: -ब्रह्मायष्ट बटकर्गा)

क्रमता का अपने हुग्धों से संवारता

मान्यन्त मृत्दर होता । प्रयोग—नका एक में आश्रु विहारे वर्ष विश्वि निज हान समारे तम≎ (बाह्य ⇔सुमसी) ऽरेड

स्तर की शाम होना वनव निवर होना। वदांव — येर जिन होती पानत पह वन्तानन की साक सुरु सार—सुर, ३८५४)



भंग या भाग भाग होता

(गमान मृहान-अंग का आंग स्थि इंग्ला)

र्मन पर भाग वर्षामा,—शमना पा छानना भाग पीना । प्रयोग—शम नन पर पने नवार्य पन (धूमते० —हिन्द्रीध, १३२): अब ध्यन कर महाराधणी ने वर्षत्या पर सम्बद्धि होती (हु० नि० नवा० हु० हु०, ३३४

र्थम छन्नम या छानना दे० भ्रम चदाना

भंडा या अंहा फरना, काड करना या होता --फोडमा

भेद प्रकट करना या होता । प्रयोग—यर इसके नाव धानती अंगरणमा (कानरोन्न) के तमे वर कृती भनाने का गण लगा पत्री का भाग भी ऐसा लग्न आता है कि बीकर की वर्तमार कर देशा है और एक न एक दिन धानत प्रशासन के गणी दाली विना उना है जिन में पत्र के गणी दाली विना उना है जिन में पत्र के निर्मा का प्रशासन कर महा देखकीं के प्रशासन कर गण का भी प्रमा उसे लगा देश भी संबंध को समझी नहीं भी संबंध के बी कि एक दिन सारा भंगा पत्र का प्रशासन की का प्रशासन की स्थान के प्रशासन की प्रशासन की स्थान की संवध की सारा अवस्था में स्थान की प्रशासन की प्रशासन की स्थान की स्थान की प्रशासन की स्थान की प्रशासन की स्थान की स्थान की प्रशासन की स्थान की स्थ

धीर अवन होता पार्टिन 'ब्रुट०-प्रत माण्यक्षा) इती दश्ये में वेशवीया या बदायोह हुवा पर (निस्तात-मोलिक, १६५), कर्म वा तीर मूच हुवा और सपका जीक सहद हो बावे पर एक दिन चंदा कृद बचा (ब्रुट०--अठनाठ, ५७५), बनद वानरथी भूगो का भंगायान विधा है (पहुन्छ के दश्र---जूनरा अभी, १०५); किन्यू - शृत्युत्म ने अहा दोष दिया वह देवकीठ--नोठगाठ, १६१

(२) जिसाबार रोगारीयथ होता वा करता । प्रशेष--केरे बाव वर रोग का बंदा न वरही जिलार-स्वयः भ्रमः

र्भवा का ग्रांदर काव करना वा होता देर भंदा कटना

भंदा या भांदा फारना देन भंदा फटना

अंबर की मन्द्र होता

चन-विक्त कर जुनी नवान पर वर्ष पहला । अयोग---विक्री किर्दि चित्रु उत्पत्ती रहत्त हुटी आज की नाम । मेग-मेंग सर्वि स्रोत में भवी जों। की नाम (विक्रारी स्थाठ--विकारी, १०)

भारत करका

भ्रमा बनना, भ्रमा करने का बीद करना । अयोग--जब देन। कि नहीं साम नहीं समनी, ती जनते बन यमें (गवन --वेमनेट ५३)

अगवा पेटलंडी

सन्दान केवा । इयोच--श्य में हो हो पर मनवा पहर जो जुलाची ये रही जब को यहे (मुंभते≎--हर्म-औध,(२३)

अगसान के घर जाना, चनां जाना यह शामा । प्रतेष--दश्य स्थाना की सम्मा पी, वह मी सम्बाद के सहा वर्ष (किमी--विस्ताः ६५), देशीरोत वे कावी होती होताकर कहा —काम बच्चे भी गढ जानवरन के बार शक्षे 'तावन—प्रेमवंद, १३६

भगवान के पत्ती जाना है= भगवान के पर जाना

भगा है जान

दिली ही तथी को बाने शाय श्रमों ने में माना : प्रणोग — भी व्यक्ति इतना नदमन्द निकला कि नाव के 174 भूते आदमों की नदनी को प्रमान नमा अ एंने आदमों की नाम का का विकास (निकाल—कोशिक देदद)

असीरध प्रयाम करना

जी बाम से प्रयम्भ करने । प्रयोग---मण्डी जी का मणी-एक क्यान अपन्य हथा (गीली---चमुर्फ, 33१), मृत्रहें भी धालम है, इस मंग्डी में स्वाम में अधिनकों के उद्धार क नियं कितमर जनीरन अपन्य किया (गेंग्ड (35---वेंमक्ट प्रश

वरमा साना

भारतभार। फिरनर । प्रधाय-न्येचा देशी तहाद वर्षि ज्ञा भारत। वर्षा करोट प्रदाठ-न्यनीर, २५४

भट्टी मा अगमा या होता

बहुन दूसराती ननमा का होता : अरोम—सका व्हार्ड भागी की नातन, अर्थन जोचही गोचक कुठ सरठ—बूट २४६०), दूस की भी मही पूर्वि वैसे वहीं भूमी आकर्ती देखें दिला का ती समय कांक्स -समाठ, इसक्ष)

भएक उद्या

- (१) नाराज होता । चर्यान—इत्रजी सक्त देवते ही यह घरक उठते हैं (मृतित—मगठ तमी, २६१); नेरिज क्या-कापन क एट में पर चया घोड इन्ह्यान के के रिश इन्टर भोग न से की महीद शुनते ही यह खंच-मस्त की महत्व वर्षे , सपनी सरस—स्त्र, ११
- मोटा कर पर प्रत्य ।
- (६) साम का चीव अंतर ह

भदभदिया व्यक्ति

रिया प्रयास का दिन। शास सम्भावन क्या सम्भाव हर है प्रयास स्थानक मेर विशे किस्तारिका र जिल्हें में जनम दिया देशन करता है। यहभक्तार यहफ इस्से प्रश्चे अनगर करना

मणी का विभी में प्रवेश सम्बद्ध करना । प्रयोग—सरम योक से तम कवि कार्य करने क्योर प्रस्तारी किंदीर प्रश्लाव नानीर १६०)

भद्रा अनाना या उत्तारना

न्य हार पर कार पहले वा नवानी हानि होती। प्रयोग — —हम को में में से तो कोई कभी उनकी हम्मा के अति-कम कोई काम कर गृजनता था तो यह अअ महामाय की बड़ी निरमी जिनका देखते ही यह मांच केना था कि देख यान हम पर क्या नवा नवा (सांच सुठ — बांच महरू हुद)

मेनक उद्धरा

कोधिन ही बरका । प्रयोग-स्थानिह समझ उडा (सुन्द --इ प्रयमी, ३६६ : मैं पृत्ये में भागक केता हूँ और चया) यन का मुनार निकल जरना है (क्ट्यानी---वोनेस्ट १२१

भभृत रक्षाना

धन्याय नेवा । प्रयोग---तम पूर वयी सोह अंश अपन रवार्थ (मा० प्रं० (१) ---भारतेन्द्र, प्रभूष), तो प्रवासे प्रभूष क्या होका को रहा जन न राम में रमता (चुमते⇔--हति. क्या १३५

अव काला

हर काना । प्रयोग---प्रश्ने तीम बहुत अप लाते में बेजामीक (१)---धनु(०, ४४); सब नहीं साता कभी सम्म भीर मृत्यू मेरे पैसी पर जोटते हैं (असाठ---विशासा, १४)

सर सामा

श्रर जाना

- (१) परिचन होता। प्रयोग-नवी बलार बाय घट वर्षे पारव पान टी वा का विरास्त या जीसेट हरियोग हन
- (२) वद वाना । अयोग--- देवी क्रम की भूगा भूते भव वक्र बाह भरी है पूर्ण अन्त पूर

भग औम बोलका.—मुह बोलका

प्रस्ति नात कर करते। । प्रयोग — भर नहीं भरि झक सन्दर्भित होन न को है व केल नबीज कैंदावा ने देशक. ५७ कि हो से अर सह बोलनी नहीं परनीय हैसू, प्रत

धर पेट

(१) भी सर कर । प्रकार—याद सुमर्गतक स्था को भरि देह विकारी (विनयक सुससी १४%)

(प) विशा किसी मंद्रोक के।

भर मुंह बोजना

देव भर द्वाभ बोल्डा

भरता

- (१) भवकाता—किमी के विवद तिवायत वस्ती। प्रयोग—द्वत दावे के सक्त में हुआ कुड़े तक्के बचाद की पेम कर रिथे और क्कोर को ऐसर करा कि वह सनुत की भाग का पातक हो तका पहुंच पराय —बहुमठ छमी, 1961 बृत्यूमन एक हो जुद ही बृतीय भी के तंब का कर के पूर्वर भिन्नों से भी अन्ते जुब कर दिवा का (विक0— कोशिक, 18)
- (२) घन देना : प्रयोग---कृषा मुजाबका नती, एक ही पाई सही; वह क्य पाप को भवती पहली (१२० (१)---प्रेसबंद, १५
- (३) दिन विसाना, महना। प्रयोग—एमी बढ़ी यन भानंद बेटनि देवा प्रदाद में आवे नवागे। ही ही बनी अक्नी बड़ी बील थो, वा विच होत है बाद नवागे 'यन० करिस—यंनाo, ४४), सिंहवे बाबी बी बहुरे प्रतीकार जा अप्र। तो नव में हरियन्त में विपत्त न भाने बोई (बुंo सo—पुन्द, इप,
- (४) किसी बात को सम्माना वर यम में वैद्याना । मनोन
 —बहु बहीन काए जरून सामग्र । सम्बद्ध को बाब ही ने भरता शुक्र कर तो (स्मे० (१) - वैसमद, १०६

भरमा भरमी

सनभाने, विना सीच-अभी । वर्षात—शामा इत्यास्य ने भूतका भूतसी ध्यान स्पेट प्राप्त सन्त तन में नपनी प्राप्त अलाई (प्रोस्य-सीठ दास, २७)

भरा धर

मानक परिवार । अयोग—भदै घर वे परे कर वे धार्ट को (भारतीय-नांज धाय १४%)

भरता शुक्रार मान्या भगवानितरह सामाने जनवात्र । प्रयोग हल्लीन भर हुल नने ने प्रश्न-स्थानन बीज मृत्य इस अस्तक में एक बदा ग्रहम्य दिश का (विज्ञo-स्थान वर्मा, प्रश्न)

भरो अवामा

पर्ण मीवनायस्था । सर्वाय---दे हो उसकी मर्ग क्यामी । यह क्या नृत्ये दिन्य में हाथी (मृत निक--वाक मृत गृत, केम्प्र), इसी परित्य के सरस्य निकंदन ने यह स्थानी में अपने प्रश्न को दिन्ने (पर्वश्राक--मीठ दास, १९३), अभी स्थानी संभी उसके हो न स्थानी होती सून्य (मिर्न---सर्वित, १४), इसके सर्वित्यम् हुनीनायाई स्रोत नसीम स्थार राज्यात को स्थान न सर्वायम् प्रथमि नहीं प्रस्ति में री प्रसार को स्थान न सर्वायम प्रथमि नहीं प्रस्ति में

मंगि वैद्याः

नुम्य व पूर्ण । प्रयोग-सम्भ सी मूच अस्ती अकि भर्र वेडि रहन करने दिनम से, बोब्रा परस्के हमहु सरने मित्र कर यह कृत् करि मृत्या सुदेश-फाल्माल, प्रदर्भ

अरे घर का चौर

विनी परमु की अधिकता देखकर इतकहि हो आहा। इनोक—कित देखी जम अभी दिलही की, सभी जमें की बोर की क्ष्में आफ—मूर्त, १४६०), बोद इस नैनिव अटकि गर्य इसे लोग जुमारे, जर बदन के बोर क्षम बदनता ही क्षार नदंश प्रकार—बंदर १६३

भरे मुंह गिरना

- (१) बानुर होना, आमाजित होना । प्रधोत—बास्य विकार के यह की बकी हानि है कि "बवॉडरामा" के निय-बानुनार केचन हरड़ यात्र देव बदका या बदकी के निय-बोच बरे बुह विक्ते हैं, जैसे बुदनी बानार पर दूरे भट्ड निक—बोच महादे, १९.
- (२) बृह के बंध निरमा; परान्त होगा । प्रमोत—विस जिस सात के लिए किए वडाते हैं भरे मूंह गिरते ही आते हैं सह्द किए —काए सह, यह

बरे होना

- (१) नाराज होना, कोच क्यांट् हुए होना । यथोग--बहुत और हुए है बाप काकुर साहेब, कहिए नगर बात है ? भूतिक-सगठ बमी प्रशः
- (२) बहुताका के बीना ।

137 O P -- (85



धरोसा वाना

चिरवास होनाः । अभीग—सृति नृतं वचन संरोती वास्ता स्रोम० (हा:—तृत्वसः, ५१६

भर्राया स्वर

मनाई वार्ने के बारल जारी हुमां स्थर । प्रयोग— रवेताक में भगत स्वर में उत्तर दिया—स्थामी, बेन क्षण के तथा विश्वप्रधाल करने का स्वराध किया है , विश्वत—स्थात देखें, इस , नीनमान की स्थान करोई हुई की अहां दिवस्त, देव

भारता ताकता

भना चाहुना (चयोप---वन दीनिना भीर चल ताका । सम प्रजू कहाँह देवी करेंद्र वाका (१४२० (च)---शुक्तको, ४०३

भग तरका

संसार हे बृध्ति-साम बारता है। प्रयोध —से बन नहीं तर्थ विकास, भी त्यू निरिधे मी चारा (करीर प्रधा० —कर्तार, इत्त्र) सोई जल गाड़ क्ष्मण भव सम्ही स्टामक (बारू. — मुलसी, १६७

भेष पारा कारमा अय यन्धन कारमा सामना सामादिक यावानाह में पुन्त होता। प्रयोग—नपूर्णन विभूत साम कर कोरी। कवन सका अब क्षण प्रोगी सामक (बाल)—सुकारी, दतन), जालू नाम करि पुन्दू भवानी, भव दंशन कार्टाद नर सामी (साम (मृठ)—सुन्ता), भेरेशी, विनिज्ञा बालू नाम करि मृदि कार्टीह समराव (बाराठ (बी)—सुनाती, ५४६

(मनार मुहर अस्य संधन ह्यानर)

भग यंधन काटना

६० अवयाश कार्या

भव-बंधन कोहना

दं • अध्यक्षक कारता

सप-बंधन एउना

मानश्रीवाता गामुनना होता , प्रचाय — साथ वर्णना विकि करि वर्णना, स्रो बदाना छुटै जगा कृतना वक्षण प्रधान -क्वोध साथ मुनना नगा सूर्य भाग क्षणना राजना ला -सुक्रमी १००२

भव-तस्य निवस्त्रण करनाः

अब-मागर नरका —से पार करका

- (१) कृष्णि देना वा पाना । प्रयोग—कौबार वेलि वारं म भारत ता जिन्न का करह विकास (क्योर देशां०—क्यां व्यक्ष , जो न नर्र अब मानर नर ममाब नम पाह रामठ छ) शुंखती, १००० वेशा वही समेरम है कि राजन्य कर नामको नर्रमा कर्ण कर वामको अर्थना कर्ण तो समागर तथी (प्रेम साठ—स्व लांठ, २९०
- (२) बोधन-यापन में सहायता देनी। प्रयोग-न्यही नाइटर बीधन का मुख और सलोध है'''यहि सबसोगर से बार करा देना कीनेत--गंत रोठ, २६।

(नगरः न्हार-अय-समुद्र नगना)

प्रवन्यागर से पार करना

रे॰ अय-स्रागर तरना

अविच्य काला होकर मध्यमे नायमा

भविष्य संभक्तरमय नाम पहना । यदीन—भविष्य एक-दम काम्य होकर कवामा के शामने नाच रहा दा (वीनेप ---राठ राव, ११४)

अविष्य हाथ में होता

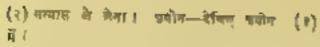
अविषय निर्माण की समन्त्र सीन बाधित्व ओना । प्रयोग --त्यार प्रश्न देश का अविषय हमार होया में हैं अशोकन --हरु प्रवृद्धित, भूदी

श्र्वे तनमा

धोरिक होना । प्रकोश—उमरी भर्ने तमी की । मृह कका हो रहा वा (वितमी -प्रसाद, १५)

भ्रम्म सद्दाना । भाजना

(१) पारोग पर प्रस्म नगाता प्रक्षेत — नर वदन भी सदन इटा । सन्य पर् (बान्ह नन पहा पदे) जायसी, १९६ (च प्रकारन नगन प्राभवन की प्रस्म सद्दाव पूं साठ सूर् ४०७४ मध्ये बहा पहिता प्र स्वा - जावर ४०० या मूल मध्ये सूठ साठ । सूर ४५०९



(ननाव मृहाक—अस्य रमाना) अस्य म्हेत्रता देव अस्य खडाना

भौजी मारका

कीय में एक। घट वालना । प्रतीय-तो प्रश्व करन बैडिंग । हो, बीम में भारी न मानियंता (मानक (१)--प्रेमचंद, ६५ याचा नुम कीय में मांजी अन मानी, में दम समय दिना कृप कार्य यहां से टब्डू का गही 'विकाल-कीफ़क, ६५)

(गमा) मुहार-भाजी हालना)

भारत भर कर पाप करना

यहन पाप करना प्रयोग बहुत असंस्थी नानि न्रशानी, सम कीन्द्रे मरि भागी सुरु सारु-सुर, १४६१

भौषर पड़ना या होता

- (१) विवाह में प्राप्त की प्रयक्तिया होती। प्रधीय— करि होम विधिवन माहि होने होन नाती प्रावकी गायक -बाल मुलसी 330 प्रवासी प्रोप्त होन परन में यह सवागी (विध0- प्रेमी, १००)
- (२) विवास होता ।

भांकर फिल्हा, लेना

विवाह राता । प्रशांत रायदन गरि अतिर जेर विव धनि भाग हमार (केबीर प्रशांत-क्योर, घठ), त्राता रमें भाविर फेरी, सांडि जोरि वार्च गरित ताई (कवीर बंबाo-कवीर, १६५)

भाषर होतर

देव भाषर फिरजा

भर्ष बारा

मैत्री का मन्दरण । प्रयोग—मै इन्सक्त के शामने मैं भाईवारें को पास नहीं आमें देना (परोड़ा0— थीं० दास, १३२). यून भाई स्थानी दयानम्ब जी से बारका विनय्त भाई बारर का (पटुमपराग—पट्टर० जनो, १३३). पड़ा जी जब भारते जाईबागर हो सथा, तो क्या परदर है (वगठ .१)—प्रेमचंट, १०२)

भाग-वीड की जिंदगी।

क्षतंत्र स्थलतं कोकतः । प्रयोज—केषकाम्यः ते स्थलं हो तो जनस्या था कि वहां का प्रीवन तो भागदीव का प्रीवन है प्रहास— देव काव, सुर्थ)

मामने मृत को अंगोरी

र्वने बन में से भी कुछ भी बोरा बर । प्रयोग—नेहिन भार रहते यहा र मारहण ह स्मृतिक भागने सा की अभागी को ही अनी अस्ता हूं (ये कोडोठ—स्वव नांव, २०६०, तक कृतार विक्ते हैं के बो, जानते जुन भी मगोटी ही असी (१९० (२ --वेजसद १६६))

(नवार पुरार - आमने की लंगाई)।

মাধ্যক

व्योगार न करना दर राज प्रयोग-नृत परिध्यम नो यद्य करन रा कलाचा ८ १८ फिट स्थल वेते से क्यों भारते हो । (कलाव-छा १३

आगे अपो फिल्ला

- (१) कल्यानाः । समीत-वया वात है, क्या वह स्वीम (प्राच्यान) त्री नदा करत का तु हो उनके भागी आवी दिशनी है वयुक्त १ —प्रमचंद्र, ३२१)
- (२) डोड-वृत्त सनना ।

मान्य अंधेरर होनर

बर्धावनमधी होती । प्रयोध-स्थाय तो तृष्ट्राशा पृक्ष जैया। अपरत नहीं है, देखों उसमें वर्ष श्रेतामा था। रहा है (वीनेव --राक्ष्राण, 101

भाग्य-उपर्दाः

मोमाग्यक्षाली । प्रयोग—हर्ष है ओड़ बरी भाग- उपरी जनसमन सुरण बर्गम काल देखियी हरी हुई (धम० कवित रामा० ६०

भाग्य का कुलंक दूर करना

क्रश्री की चिटा देशां। इश्रीय-वांच महायाँन विचय स्थान के मेटन कड़िन कुश्रीक जान के (शामक (शास --- सुलसी, ४४)

भाग्य का रोगा रोगा

भाग्य का सम्बुध होता,-साथ देना

भाग सनुकृत होता । प्रशेष-जनीकरी की तताम है प्रश्नी की शक्त कान हाली, यतर भाग्य ने वस नक कही मध्य नहीं दिया था है काई/उ--या नांव, ३३)

भाष्य का साथ देना दे॰ भारत का सम्मुख होना

क्षान्य की लक्षीर

मास्त में भी हो। प्रयोग---को सकीर है अपनेरे साम की सब व मुठी में हमारी दे रही (पुनतेश--हर्ग(क्षेप, ६)

भागव के धर्मा-जना

वर्ते भागप्रमान । जनीत—अस्य के बकी हो तथ मुख प्रसाद स्मानक (भ —प्रेमकट दर

भाग्य के बन्दी १० भाग्य के धर्मा

भ्रतम्य मुन्नना, —कमकना, — जागना, — अरेडना भागारव होता । प्रमंत्र —कोण बहुनेगो वेगी नोण ह निकंगो होते हो न अग्नी कर परे उनीहे जाग में वायोग (प्रमण करित —धनार, ६७), प्राण् वेरे भोगाँह जाग मान (मान पेठ (३) — मारतेन्यू, २८७) जनवान चाह में ती नृष्यारे भाग मृन नामने, ऐस धन्ये करुदन है कि बाद (गोटन— पेमचंद, ३८), प्रम दम नेशा नामाम नीट क्या है (मानीठ —वृष्यार्थ, १६), कोशी परिशा नहीं है । मान्य जावने माना है (मृन्ठ—वृष्यार्थ, १८५), जग्ना म विजया भागा मनना कियान प्रमान देश , ममन —हरियोध दस , पामानाव का भाग्य दनने दिनों के बाद अभक्त रहेना (महम्या के पद्र—पद्मार्थ शामी, ६३), यह म विज की साम मृन समी नामें किया नग्नह भाग मून मके कोई मुम्नीठ वृष्योध अप

भाग्य काटा हाना

वृति विश्वान अवतः । अवतः । अस्तान व्यक्त व्यवद है कि कोई भाषान जना नह देना । व्यक्तियाः । व्यक्ति देशस ६०५ तस्त्र रे भाग्य जी कोट है तो में क्या करू - मोदान-- वेभन्द, २०

भीग्यं समस्ताः देव भाग्य स्वयं भग्ग्य खानना

हिन्या के बाना; सब कुछ के केना | अयोग—बाही बहुर है यह नहीं, पात्र पुरतों में विश्वारी का सच्छ छीन से गई - मृत्यां>— चंद्र नाव १३

भाग्य कामनः

रेक भाग्य मृत्यमा

माग्य ठोकना

अस्य के बाग दोना। प्रदोग—भाग को मी क्षेत्रते ही हथ रहे। जान दानी क्षेत्र कर भी देश में स्मृप्ती०— हरिसोध, रक्)

भाग्य सिराङ्ग होना

विकि प्रतिवृत्त होता । प्रयोग--- तिराही करम प्रशी वृत्य की, प्रतिव प्रयोग्याद की केवी सुरु साफ--सुर, १४२४)

भाग्य-दशा कोलना

पन्यम् बनानाः। प्रयोग-नोनि निवरीर करी सन् कार्यस्थानी क्षान् स्था विकि सोनी (क्षेत्र साठ-सूर, सुद्दस्र)

भाग्य पानशः बानाः -- फिरना

विकात में विविध्य होता । अयोग—मृत्य वहत सब रिष्ट को मान किर्ट को ते कुमिन वकता विदान सामी में अपन प्रशः — मृत्य, १॥२), जोत को स्वर्धीय मानू हरि-रणह भी के समय में हि-दों के आध्य में नमहा बाजा व्यक्त निक— बाव सुक गुरु, ११॥): जिसके बाद सुआबी खायकी, उससे मुख्य किर मानुके (मानुक (१)—प्रेमचर, २१७,

(वर्गाः नृहोत-भागय प्रस्टता)

भाग्य विस्ता

रे॰ भाग्य प्रमद्धा सामा

भाग्य पहुंचा

वर्णकानमें होती; दुनित का विश्वित मानी है अयोग— हो । इकारे पूरे काम पूर्ट मो एसे पति मिने (शाधीक प्रशांक —संभाव दाले, १६०% पहली बार कामार्ग के मुहानसात के दिन प्रकारमंग समय करा का नव बहुत विश्वास होने पर भी उस प्रश्यकायका का क्षत्र पर सुव येव अर्थ न क रिप्त करनका मांग का समय न है दलता नहता है समीव हरिकीय, रश्रे

भागम् सहय होता । भाग होता अध्यक्तन हाता । प्रशंत अध्यक्ति भानी सम सम मानी भाग भरी पुर नर्रान बकानी (नंद्रः प्र'ताः — नद्रः, १९४), भाग गड़ी यति यागति की, बहि भागते के, एव धीन समार्थ (सन्दर्भ—देव, २४)

(पमः मृहः-भाग्य बला होना)

भाग्य भरा होता.

वे असम्ब बहर होना

भाष्य में उज्ञान्त होना

धन्ये दिन जाना । प्रयोध-भाग और तृम्हारा सुम्ह हैना धन्या नहीं है। देवी प्रयाने क्याना का रहा है (बीने०--रात राव, १०

भाष्य में किया होता,- श्रीक सिन्दी होता

विश्वमा में होता । श्यान —शाद वित मी देह बीन्ही, जान निको मुपाइये मूठ साठ—मूर, प्रश्नक), जो निक मान म लोक लियी गुम्रहाई नहीं न पट न पटाई , उत्तर—पट्माकर, दय , मोई मिले सह नर्ने मिले निलि नहीं भाग में स्थापत एखां — राधां दास प्रयोग हमाने भाग में सही लिया है, सन तम हीयमी हमी भागि बनेना कृटती रहती (ठेठव —हरियोध, ३०,) लियी दाय में तेरे भी नम नहीं विवसी ग्रभाग्या (मध्य—वन्नन, पद ६०

(मधाः मुहाः -- भागव में लिला दोना)

भाग्य में श्रीक दिली होती देश भाग्य में शिका होता

भाग्य सहसी स्ते जन्मा, भाग्य भी जाना

अध्य का प्रतिकृत होना । प्रशास-नोग बहुनेने केने सीत ह जिलेगी हुए, ही न जानी कब दी उनीदे जान बनीन (हानव कदिश- धनांव, ६७), गाम्ब उत्तर जाएं जुने की भाग्य मुक्तकों तो जाए अध्य-वस्त्रम, यद दशः

भाग्य छोउना

वेट भाग्य खुलना

भ्राप्य साथ होता,—सीधा होता

मान्य प्रमृक्ष्म होना । प्रयोग—वेदे परम इतकी कहनी भी केटी, कि बाँद भाग्य सीना होना तो धान्योकन हुम्हं सहाती (सूहाय०—ताठ नाठ, ५०)। ब्राव्योद भी है और बान्य चनके साथ है (ब्रासी०—वृं० वसी, ३४)

भाग्य सीधा होता. इ. अस्य साथ होता

138

भगव भी जाना देश माग्व सदस्यों की आना

नार में जाता

नाट होना । प्रयोग—को बश्च विकास न दिनासे, वह भाद में बाब चन्य०—राठ देठ, ४७), भाद में दर्श टोडी मृगेठ--यू ० वर्गा, ३९४)

माद में कोचना

पत्ना, वर्ष्ट करना । प्रयोग—दश दशमन में संशोध या, नामक्या थी, एक जिस्स दर्द ना जो जानना है कि सपने की स्थल्यमा भाव में कोक बहा हूं जिसा (2)— ५५ ६ २ ० वर्ष विश्व में निवर्ण का न्याह करने २० महनों को बचा बाद में कोकना है (सिस्सी—प्रमाद, १०६ (मशा मुहार—आद में साम्हना)

अन्द्र सीपकर हाथ कान्द्रा करना

क्या काम करके कुमाई पानी (प्रयोग-नेस केना, मार सीमका द्वार्थ काना ही पहेला (मानक (१)-प्रेमकट, द्वा

भादे के रह्न होता

र्वमा नकर काम करना । प्रयोग---को जिल में काम नक बिहनमाना राजे का क्यान नहीं हुया है, क्यों कि मूझ रित प्रस्त रह पन- से प्रचा है (माठ प्रसाद (१)---आस्ट्रेस्ट्र इ.स.

মাল ই্ৰা

(१) पान का भोक देश (इंड ब्यक्प) (प्रयोग—विदादरी में यह कल फेलेकी को हुक्का कह हो आपया, भाग नेता दरमा रगठ (१)—प्रेमकट, १९२)

 (२) विकास में कर यह करवा के बाद्या का शावन एवं और शामान तेना ।

(नगाः नहाः -- भगतः भगताः)

अग्य उठाना

आर्थ पाष से बलवा

क्षेत्रे श्रीतं समन के मनना । अवस्य---भारते गानोः अन्तकर समना इत्यन वर्षः कीने०--गांध्याकः ३८ धारी करत

भारी शत

महत्त्वपूर्व, नारवित कात । प्रयोव भाग न भारी कात का भारी को बात हमारी कह वन हमके न का (वीसo---हारियरेस, ११०)

क्षार्थः समना

क्षेत्र मानन होना । वर्धाय-वेटी गेटियाँ बादी हैं, व द (शोदान: येमचंद, ३५०

भगवा सोलना

भागा कराना वा कनाने का सम्माम करना : प्रवीत---इस भी महिता पर पूर्ण रखनेवाले किमान तलवार की मुख्या प्रकार के लिए प्रवाहर हो तब के, बड़ी गौनने पासे भागे नीनते ने 'बान० (३ —धेमचंद १४४)

भाव के सुबे

इक बाहर्ने बाले । इद्योत-दोही भवी, सर्वे भाग्य की भूगो, भगोर्र कियो सुनिर नुवसी सी अभि०-- मुससी, ३०३.

आध गिरमा

क्षामी में क्यो क्षेत्री । प्रशोध-नव में इनकी विकी क्षम हो तर्द रक्ते भाव भी कि। वजर (राधाव प्रक्षाव-राधाव दास 3281 केलिक इत नाम समायान हो। विस्तां का धान शिरः नर्ज - येमभंद, २५१/

शास मन्ता

द्राम बद्द बाना । प्रणेष---वम्नायः, पान, पाद पौरः मिना का क्षाब एक सरक चढ़ तथर (मैता०—रेजु, ३५%); ऋष बद तका है ती धावदरी भी तो बद नवी है (प्रेमा०--प्रेमबंद

(समाव महाना-आब क्रेंबा शोना)

आव बहाना

(१) मंदेत से मन का जाद बनट करका । प्रयोग—कवहंश प्राप्ते, नावटुंश पार्थ, भागा याथ बताओं (सुर साठ--सुर. 4 배덕)

ि वद्याने समझाना ।

(गमा - महार - आम देता)

भाषनामं सोई होता

दण्याण देवी अहता । प्रश्नीय-वह महेवा हुआ ना देन मोनलं की सीर पल देन। है कियम उनकी सारी मानवाए सर्क है जीलर १ सक् व १६१)

भाषा बन्न करना

नोक प्रचरित्व कोको व विकार वा भाव प्रपट करना 🛊 प्रयोग---वाचा-बढ करवि में मोदै मेरे यह प्रयोध जैति होर्ट 'शमक (बाबा)---तुलमी, ध्रम :

नियो जिलाका जगाना अंग्या दुधा समर्थाया

बाब बाटका-कटकररमा; दूर्गीट करमा । प्रयोग---उसके जी में एक ज्यासा की उड़ी कि इसी वर्ग अवर जायर साग को बोर माना को धियो जिलोकर समाये पर अला करके रह बया 'मान० (१५--पेमबंद १५४), देखिए कि बाप लोगों के इंडबर क्रमी मानियांनी पर यही। यही प्रामी मानी पर क्रिया नवत जीवा कृषा भागीया समाग्रह है, मैंने (दरतीय-रेणु: ३५<u>६</u>

(तक्षा) पुराव जिसी भियोक्त जना मापना - वेना, बिगा कर जना बारो. जीमा हुआ जना मारना, भीने दूष जुने से भारता)

भिन्न का बना खेरना

वनस्थाक का पाकी बाहकी है की करवर । प्रयोग-नामरी हिन्दी में आयोगमा करना जिए के खुनी की खुद नेता है एक जिल्ला बार्क मुख्य गुरू, प्रवस्त्र), जिल्लो के मुले को सेवले के क्टा बराव ने (क्टिंग्ट (२)--वेशपाल, ४०६

নিহুৱা

महना बावने वृद्धावने वे बानां । प्रयोद-∹सिव से शिवने बाबर एक बार वह पिट पुने थे, भिष्टा से बरते थे और बडरेब के भी टक्कर केकर और सामें में (असोस०-ह० মুক হিবত খু.

सीम कर देखना

वेयपर्व दुन्दि हे देवता । अयोग-नव कन याना-नाधना हो शूर का, शब बच्च मेरी और तुरद्दारी तरफ मार-बार-रंग ब्या का कवी-कवी त्रीय-वीत कर रीज-रीक कर मुगठ जुल्हमा ३१

र्शण जाना

स्वर्जनिक टाना । प्रयोग । दुध विद्यास पर से नीम सानुः ह । उद्भव अभिन्द १९० क्षीना के बगानी पार नगनर विक्रम बाव से किलाय ना पहली ही स्वादान में मीन अर्थाय क्लें — देव सेंट ३५)

र्भागता स्वर

माधवृतां करुतुः स्वरः । वयोग-करुवालीः मीतने-वापने स्वरं में कर्तनं सर्वीः । (बृद्धः-क्षः नाः), १००।

भागा हुआ बसरीचा लगाना ६० भियो भिगाका लगाना

भौगी विक्ती होशा

महमा हुआ, दवा हुआ । प्रयोग—माइयों के बायन प्रीती विश्वी अस जाता है पाणी कही था, हत्याता । (गदान — घमअद, १११ ; हमीम अ अ भीनी किस्मी है चीर बाठ के सम्बद्ध है (भूभरीठ (मृठ)-- हरिओध, ४), उनके वीच्चे चीच्च भीनी विश्वी की सम्बद्ध नीक्य का रहा है सीरठ--अगठ मन्युर, १०४)

भीगी हंगी

विनम्प इंगी प्रयोग एक महत्र के जिल एक आयो हती. की देशर दलके सुत्ती अपनी पर जील वर्ष (शामा)—ए० प्रव दिवस, १६६)

भीद छंडे जाना

भी इं कम हो जानी । प्रयोग---प्रतोक्ता में बादे हुए निराम मुहारों की भीश सुरने जानी (बिल्ल---भाग वर्णा, प्रय

भीव पहना

सनी वस संसद पाना । प्रयोग---नेन्य में आब क्दे कि की की हम पष्ट गर्वे भी इं क्यों कृत काम (बोलक--हरिजीध, ३८)

भाम के बिना चित्र बनाना

के सिरावेट की जात करना। प्रयोग – तान रिम करन भारता को अस्तिही, भारत जिन रिम तृप करन रेजा (पूर्ण —हिंठ श्रेष्ठ सीठन

भीत में दीहना

भएनी गानवर्ग से बाहर जनवा समयब कार्य करती। प्रयोग—शान्ति क्यी करदूवन और समेक विदे से में मीत में होरे (सुलगी—हिं० स0 सात)

श्रीलर की आंधी अंधी गोना

प्रतितिक प्रत्यान द्वार काना । प्रयोग त्या हुना थ्या बाहरी प्राप्त दय यह कि संस्थ भीवरी सभी हुई (कुंभतेल कृतिकोध ३९)

सीवर से पोला होता

बार का तथ्य न होता। अयोग---हींव हाकते रहते हैं कर भीतर कहें भोगे (कर्मo--हरिजीध, १२८)

भागव काहर

हृदय के बदर चौर कहर । प्रयोग—सम भाग मनि दीव यह ओर दहरा दवार, दूबसी भीतर काररह हो भारति रिज्ञार (रामक जान)—सुससी, ३२,

मानवी आच बोर्चा होता,—कुटना

जानहोन होना । प्रयान—को नई हैं नाइये बावें दिवन तो नई को कुट बाब जीनहीं (कुमतेत—हरिजीध, यह, बाहरी बावें नई पहले ही रही आंनरी हाल हो जब बनी हुई (कुमतेठ—हरिजीस १३४)

भीतरा जांच क्टूबर रू भीतरी जांच अंशी तीता

भुता दराकर करना

(१) विश्वीय और दूबना के कहना । प्रशंत—मूजा हो। के गांदन घरेना । मार्गह देन अथन की होना (जायनो -हि) का बार्ग के सहा कुन सन वारि-वार्ष । कार्य कहा दोश मूजा केराई (राम० वार्मा) —ऐसमी, १७४३: में अथन नहीं है, भी मनुष्य द्वारा गांध्याच्या विश्व हुए गहुँच म विश्व न नहीं रूपन, व वन्त्र सके में उपन्य कर यह जाने हैं पर भी भाग है, में भूजा उराव व पायला करने हैं समुणाह संगुणाह नहि कर्यु

(२) प्रांचा करने ।

भूतर देक वर करना

रे॰ श्रुजा उठाकर कहता भूजा होक कर स्टब्स

बीरता पूरक असकार कर सरना । प्रयोग —को प्रमास्तर प्रयंत को करेगी थी उनके करि तोगो भूजवर होकि प्रश्ति जगठ—पट्टमांकर, छर्।। वैगीन सर्वात, भूज होकि के वर्शन, कही बहरवली वाकि के कुमार पार्च शीच है का रठ--मैसार्यन, प्रश

श्रुवाः अर भेरतः



धुनाएं काफ रहना

काँद चय संघ त्याँच त्याँच त्यांच पुत्रुवारी (आध हैं) ,र.)---

भुजाएं फड़क उडना

(२) कुछ करने का उत्पाद दोना ।

भुजाओं में बांध होता-भर सेना

क्रमक्त आवितन काला । द्यांतः —शीर मृत्रति प्रश्चित क्रिंत क्रिंत

रै॰ भुताची में सर नेता भुताओं में बांध लेता

भुद्दे हा वहांगा

वामं बाट राजना । प्रयोग---मृद्धे की नरह मरहण उसी शान का तीना उसा की उद्ग यथा कोलठ---मृतियोग २०६

ध्व जाता

मीतर ही मीतर कृतकर यह जानर । प्रयोग—परामय सामना होते ही जिस क्याप कोली क्यारे ने बहा—"नुब देखिंतर" देशी स्वस्थ में मैंबर भून समर (शेलर (१) → मान स, १२१)

(मना० पृहाव—श्रुत भूत कर रह जाना)

भुरकृत्य काला

मिन्द पार्टन हेटम कर दन। या जनवन विकास सं प्रतान को भाग का लाई। साहि नान प्रवार क जनका व कार मार्ट नवरक कर शास्त्र है सन्युद्धीं ७—०० किये नद के नाम को माद्धाराम नेपापाकी मेने मार्ट व्हाई हो पर मन प्रभवकार कि नम्ब प्रवार नेकी भागकुम न कर है थे। मेरा नाम नहीं अपनी नहर खुद्ध पुर

(स्थान वर्ताः) भूतकुम जिक्कान्त्रनः)

भुत्वा सेना

बहरमना, बनावटी बालें कह कर सत्य की नानकारी से दृश प्रधानः । प्रयोग—स्वाये किंगत सकत कुस्मार्थात, गामकि वृद्दे नार (सुर सारः सुर, श्रदश्च) (नमाः मुहार--अुल्हाचा देना)

भूस में चान समाचर तमासा देखना

अपहा का अंतर लगावर धावन हो। बाना नथा परिणाम बा अका बेना । प्रणान—पता तो नृत्ती हो स्थादन को नशी बते हैं । बा तो अब में बान कमाकर दूर है तनाया देशमें धाई वह लो नृष्हारे जिए आपनी ।रंगः (१.—प्रेमण्ड, १०७:

भूकता

व्यव बोलना । प्रयोग---भव वर्ष यूरोपियम रगत अभी नयो बर्ने हिन्दी वर्षे भूका करे (भूमतेश--क्षिजीय, ११८)

भक्त कालना या भून डालना

बहुत त्रंब करना । प्रयोश—गामहि बाय समेत पर्ट बन सीप के भाग में जूनी भरत्यहि केन्नव (२)—केन्नव, २६॥ को मत्ते, कर के जनाई का सके दूसकों को औ मही है भूतते (क्षेत्रक—हर्दिनोध, २४२)

भंती या भूगा भाग न होता

बहुन यरीय होना पाम में कुछ भी न होना। प्रयोग — भू में जोग नहीं पर फोनर का परितो का पाई (माठ प्रशाव (३)---मानतेन्द्र, प्रदेश), वे मिया लोग बाहर ही में उपने धनके पाने दिवाई हैते हैं। पर में भूनी भाग नहीं होती और पर में भूनी भाग भी न होती तब बाई पृहल्के हाने में मन-माम मन मेंह के बाती , संपनी समर—सप. 30

भूषे प्याम करो असा

मान गान का हाथ भी न राजा अस्त्र-जिस्मान की अस्ता प्रयोग — देशि का सरकर कर यह दिलाय जी कृष (४६० — सामग्री, २१६)

(नमार परा - भूस प्यास र स्थातः

भृष कुछ जाना

(t) भग का सिक्ता । प्रदानः अपने मन्दु बनि गान

बन्दर्भ : जन मोरकृत्य कि जुल बृत्या (राम० (बाल)— तुलकी, २५३) (🔆)

(२) रच्छा का अंत हो जाना । प्रयोग—वेन्तिए प्रयोग
 (१) में (+)

भृष जिटाना

(१) इन्धा पृती करती तृष्टि करती । प्रयोत—पित विक भाषा से करोड़ों जनना अपनी शाननिक क्व सिटाने की बाधा करती हो यसमें इतना भी न हो तो बोई केंस समझे कि सक्ष्म हो हम इस बाबा ने देश करते हैं बाधांत—हुए एक (हेतरा, १६२)

भूग से भाष ताबना

मंत्र में साथे निक्शी पहली। ह्यांच—स्वे मृत्यहं हहं के बाल गाम मने ही बाव में, पर मृत्य में जिनकी बाक्षेत्राच एति हैं, उनको के बाजी की की के देते के रक्षांच नहीं (बुधरीठ .भू)—हर्षश्रीध. ३

भूक होता

इत्था होती । प्रयोग---भेदा, मूलं तरेन की ज्ञानहीं है इर्गाठ (इ)---प्रेयभंद, १९४० वह वर्ष बीच भी मुख्ये की ज्ञा तक कि विकास के समार कान है बीचक की पीच प्र

भूका होना

व्यवस्य होना । वयोग —हम तो कान्द्र केति की भूको हि॰ साउ--सुर, १३००); वाहिन राणु राज के भूको । परम पुरील विषय रत कक्ष रामण (को -सुकती, ११९), उसत सारी उसर एकात्स में बैठकर विकार विचार ए वद प्रश्ति का भूको न वर हु० ति०—वा० हु० १० ६९६), में उनके बकात की भूकी नहीं हु, अपना बनान करे रह (गोदान-प्रेमचंद, २०), में उनके साथ के निए इर वक्स भूका रहता था स्टाल्ड--जीनेन्द्र, ६)

भूको वांचे

्र_ु देश र (१ नोप इन्छ) । प्रयोग - किर बहे मुसी आया से प्रथ निश्वनने स्थान **केसर (३) — क्रम यः ६**८० (२) कामनामय दृष्टि

139

OF BY

मृद् के जेन पर गोना मारवर

्ते काव से कुछ पाने की साथा करना बहां से प्राप्त होता जनगर हो. कान् से केस भिकालना । प्रयोग—किश पट पर नोता गारत ही बाद जूड के सत (शुट साठ—सूर, धररध)

मृतं उतरका,—आराका

(२) क्रमाय कूट होता । प्रयोग—स्त्रा कहे हम सभाग की बात पात्र को भाग पत्र भव स भागा। भूमतेक हिस्सीय क्रम

(६) भून का प्रधाय हुए होना ह

भूत बतारका

तह वा जिद निकास देना । अयोग-सुध्य मार-सार कर धवने दुवसन का मून अनाइति हुए पृष्ठले मने कि किसन शिक्षमध्या है (कुल्ली०-निश्तान, प्रश्न), कर बनाया अस भूताईने बस मून सिर पर जो किसी के यह नया (बोल्ल --हर्गाभी), १५

भूग का हेगा

मुक्त चर (प्रयोज-अंग भी करी गयी, दन चर भूगों का इंस हो यहा करी0-फ्रेंसचंद, ३३१), यह स्त्रा फून हो गय। काटा स्थवं से भूग का बना केसा (चूमरी0-एरिक्सीध, ७४, (अवाक मुहाक-भूग का बास्ता)

भूत को तरह हुए जाता

विजी काम के पीछे यह बातर, पूरा किए विकास छोडता । वर्षोद---यह कन्मरे बडी पागल है । मधेरे से भूत की तरह कुटा है (विभाग---कोशिक, ३१०

भूत की मिठाई

(शराव प्राव-भूत का पकशान)

भूत सहसा

(१) पून का प्रकीय होना । प्रधोत—नरे वर्षना व पून विश् यह पर्यो पूज बन बाव को किसी का नम (बोसेक— हरिजीय, १८२)

(२) बहुत जाना या हुड करना । ज्योन—इंशानीपन का मृत पना रहता है (प्रेमाः—प्रेसक्ट, ४०%) (१) बहुत अधिन कोन जाना ।

भूतं भागना हे॰ भूत उत्तरना

भूत त्यानां वेत-अश्वत होती । प्रयोग---नेत्रम प्रशास तको वेतु । शर्वाक व्यापति कात परेतु (पद्ठ--आवसी हुद्रक)

भूत सर पर सकार बरेता, - स्वार बरेता दिली बाल की कुछ होती ३ धवीम-इन क्वय केवकर का कुछ दिए पर सकार है (प्रदेव) के प्रश्न -प्रदेश प्रश्नी आहें, प्रश्नी भी बरताय है कि बादे बचनी पान गई पर बाध इस प्रश्नी की विश्व की बाद है। जिस कर कर भन्द कर बचार हो बाला है (प्रसाठ-प्रोधभट, देव

भूम सकार होना हे॰ भूम सह पर सवार होता

भूत देवा कोतियों में बाद कावना । प्रयोग—अववस्ति में मूर्यक्ट-मूक्त पूजित को बीजियों ने मूल शासा (क्ट०—६० स०, इस्ट)

भोग का सर्वे होती विभाग में अन्याद्ध का का पान ने के कि स्थाप होता है। भाग का नहत्त्र केलन मृद्धि स्थाप है है। भाग के अध्यक्षित मृद्ध है

भारतकार्धानही मधीनहीं। दलका को शिंक प्रश्निति स्थान की स्थान स्थान दल्क कुलसी 1935

भूत पहला भल कर अस्त्राना । प्रयोग अंगु बनोई, याची विधि की कॉर भूति यर किभी काह जुनायं अव्दर्श—देव, उस में छन्तर हु, मूल वर्षे करिए कहा है अपना मृत्रवाणाय सम्बद्ध रहिए यहां (स्थलेस-- गुप्त, १२०)

भग-मनेया में पहना

(२) विकासिय-विवृत् हो भागा ।

भूनना शास्त्र-विरम्त हो जानः । दयोग---मार्कत देशि भवर या सत्री (पट० --सादमी, १४:२४ , इरि वृत्र देशि भूगे नैन मुक्त सार-- मृति १९५४

भागे की भीत होता तृत्त मध्य ही अल्डेबाबी केन्द्र । अशेश—पूरवान प्रभू तृत्तारे विश्व वितृ, वह भूग पर की भीति सुर सार-सुर १६०२

भृक्ती करंग्या, —सामया जाए (रमानः । प्रयागः विकाय में विकासः स्वापः सापः वहां क्यो काह वे क्षिता नरेस भृक्तीः क्यारं है (भृष्टकः प्रकार-मृत्यः, २०७); विहासनं द्वितं वहे, राजवंशी ने मृद्धी नानी की (मृद्धा-पुरु कुरु कीर, ५७)

(ववार म्हार—मृक्टी देही करना)
भृषुणी नवना भृक्टा में कर इस्टर्गा, कर पदना
क्षेत्रीया। प्रयोग—बहुन ने साम्बन्धि की भृष्टियों के
क्षा वह नए (देहालोठ (१)—बत्तुरंप, २४) किर मृक्टी में
क्षा शानकर कोले— x x (देहालोठ(१)—बत्तुरंप, ५३)
क्षाची मृक्टियां तम नहीं (वावठ—हरू एक द्वितंप, ५९)
भृक्टी नानका

दः शृकुटी चटानी मक्दी में बन देग्लना दः अक्टी नत्नर भृकुटी में बन पहना दः मुकुटी से बन पहना दः मुकुटी सनना

मेह बारह करना या होता

एक जो काम करें कर का उसी को करना । प्रवास-देखर देशी करत तथ, नाहि न तथा कियार वस्ती वह अनुवास है केंद्र वाल संगार (दू ० २०--दृन्द, १५४); जब नी वही भड़े वाल वल पड़ी है, सभी घोरचगर अवस्त और दूरत की वोड़ी से रहे हैं (दूधनाछ-चैठ सठ, २९६)

भेडिया होना

दुष्ट भीर मात्री होता । प्रथाय—तृत्र वानो | जनात। भोषिया है । तृत उहरी जवान (बीनैठ-संकराक, रूप्त्र), जयने विका है कि राजपुत्र भौतिये हैं वतने विना की गरंग सावनान रहता काहिये क्यादठ—प्रधाद, १४

महिया-धनात होता

(२) बहुत भीव होती।

(गमार्क महात-अहिया श्रमान असना ,श्रेहिया-भाग्य होना)

भेद करना

(१) दुराव करना । प्रशेष--हथ भी प्रद कर हित क्य मी, तेष एक अश्वे सी (चुंव काव-स्वृत, २००४

(३) मधान वृष्टि में न देखना ।

भेद का बाध बांधना

मेर की प्रचार देता । प्रयोग—मेर का कांच कांच्यी केंगा कांक पर बांच में न हम पड़री चुमरी०—हरिकोध, ५४०

भेव भोलवा

महत्त्व प्रसद करना । अथोग-निय को वंद म करनदे मह नागरि चनुष मुनाम । माठ प्रेष्ठ (२) --मारतेल्ड्र, इस्टो. रिसमें पड़े धना में कोई, महो बोमता दे नह चेद स्मर्थठ --सुन्योध देश)

भेद पाना

() मन्त्र सहस्य जान पाना । प्रचाय अन्तर नहना भेर है नक्-फल पानी मेद (क्लोर प्रमाण-कनीर, ३१०) (२) पता पाणा । अयोज--कृष्टित किर्यात स्वर्णासी हॉर की किन्दु केंद्र व क्यांत १६० सा०--सूर, १०७०)

भैस के जाने बांत बजाना

युद्ध का बजानी है नायन रस था जान की बजी करती । प्रयोग----वहा के बोच वृष्णे हैं, तुम्हारी करर नमा कार्ने । मेय के बाद बोचा का वही है सुठ सुठ---सुदर्शन, १२०)

नेम लगना

भेत का दूध देना। अधोन---सेटे चय तो एक ही जीस न्यानो है प्रमाणदूध दास बच्चा में उठ ताना है प्रमाण-पेमबद, पर्

मैस से बाब का बाद सेवा

মিকা-কাৰ

निर्मेशन । अमेन-अवनम ही एक दूर के मैमानार रहते है क्षेत्रिय को रोटी निन्दा दिया करते हैं (मिली-स्निम्हात), इत)

মাজন বালা

ा तम करना । अयोग — योगो समय क्रीपन गाने धारे है चीग फिर कडोने म यमे वाने है (सु० सु० —सुदर्शन: उत्तर

ओर का तारा

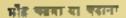
- (१) विकास, समाधीन । जापीय-सम्बन्धी लीव दूसरी को दु:ब देने नहीं प्रधाने तक कीवन के विकास भीर से बावे हैं का काते अर्थाक-सुधिधीय, ३०)
- (>) तृरत रण्ट हो बानशामा विश्वका अंत निकट हो।

अर्देह उद्याना

भाष या समयोग प्रकट करना । अगोयः कमी उठा पाय य नेते वायने बन्धांन्य चष्टक विस्तवन, १९४

भींद्र जिनला

क्ट होता । प्रशेष-निषय गई मीहे बका से विष गई यह वहीं की गई बीहें बड़ी (बील०-हर्स्स्सीय, ३०)



भींह चटना या नदाना, देश करना या होता सन्ता या नानना, निरुद्धा करना पा होना नी करन का रोता प्राथा— बटन कार दहा नियदक निर्दार सोहि न करने बार-बार कुछाई हारी भींग यो पर नान । पुर- निर्दार सार्व कुषार बहाई भीते, जब को विनोधे नीते कर रह में स्थेन सोत के ने प्रोण है भीता।

कर ही बढ़ता बहती व अचन और के अध्वति श निक्र में जाने और नवाई केन्सक केन्स की मोड़े हैं केर में व स देनी पार्ट गाँव गड़ी की बेंडी बिए लेंडी म्बेडी ufte ifungel emit. famet gon't irbn' mar mit क्षांत्रेत स बार कालेर हु, यह मीट मरेनी (सब्देठ--देश, द०); पासन वान परधानर की भाउनी की वर्ष वर्षि भीहै जेती सेवी तप्रार्थे भूषे (प्रार०--०टुमाइन १०); को मण्यी पर ধাৰ্মণ কী বিলি লাল স্বাধী, যিল মীত্ৰি লাগৰি হিলও करिए-समातः १०४१ प्रथमें हा में कार्ने म सकी में स्वी महा बीम भी भीत मनेबी चित्रे 'साठ एंठ ३' - मारतिन्दू, १५६); हैंगी और बद्दात दिन दरी तीन वर्तानित कर वह दिखाउ ग्रेशाक--संभाव साथ दर्श अ अ अध्यक्ष के काल काल पर भौते बहाता बोह रें 😾 छ तो दरांगवर अवश्व हमारे पुण्तेत का क्रम है (देव पीतः सब जाव मित्र भूत , मदर पह करने के बाद ही उसकी तभी हुई और होनी पढ़ नहीं taum १८ प्रसंद, १४६); उनमें ने कोई तरे की पहासक प्राणे किया नये और कोई जिस दिशाकर पत्र औं रहे (गर म क्यां) - यह मo झर्ज, चया हरदारी का अस्करामा क्षा नाहन को क्षा नगर उनकी भीते का वर्ष (शिक्षा)-क्षीतिक नक्ष्री पाल कर दैनारयत के बाल में नव असा भौति बहाते वहाँ व वे वृत्रतिक हरियोश १५सा: सम मार के लिये जी पत्रकों जब शृंबिय नहीं हुई --वाबे बर हम नहीं पर् कही। इत प दि रूप पुरुषित में हरणा की दाल सुनों तो अलगा और निरसी से राज गनन प्रस्ति ३३३ हैंग की हरी समार भीत न हा । बगर करण संग्रह मुद्देश भीत कर जासक हरि छोता २९

माहि देही करना या होना

रे॰ ऑह ब्रदना

भीत दीकी पदनर गरमे में वरी पोणी कम होती गरमा समे होना । प्रयोग —मनर वह कहते के लाय ही उसकी तती हुई मोह दीली कह बची 'मान≎ (१)—ऐमचंद १४६

र्येहिं तनना या नानना दे- भींद चडना

भीड लाकता

और निर्मा करना वा होता. रे॰ और बदवा

भीत मरोहता

(१) आंक से हजारह करना या कननी पारणा । प्रयोग —परक करन में जानांत नुम की भी पर भीड़ मरीरांत हो (सु० सा०—सुर. ३प्पांक) (ची: ही हु गई परमाकर टीरिंग मुश्रीह प्रयोगति सेन की बाई (साफ—सद्माक्त, हक) (२) बाक जीई बहुना—भीड़ विकासना । प्रयोग— होनाकों के नमे मश्रीह क्यों भीड़ जपनी मरोडकर कोई (बोनाक—हरिजींड, ३०); वेबिए प्रयोग (१) में (न-)

भीत में बल होगा

असनोध का तनाव का आप होना। प्रयोग—नभी क्या गरि तमको औह में एक कन है सामो के बोरे में जिलाह है कलाना—प्रसाद, हर.

ओंड सिकाइना

युग्नीय प्रवट कामा । प्रयोग—मामने कत्याको भीते विकार रूप पटी की जिसमें समस्दे १०

भीतां के इज्ञारे पर नामना

प्रतान वर्त में स्थान है। या पान की नामाना | प्रवान क्षति विरोम नक्षति नारी पान० व्यक्त नुस्की २०६ मिलों पर विश्वस पहला महिते में बल पहला जीवन इंट्रिंग, प्रयोग नाम प्रत्यो प्रवान, पन नप्ति गर्मात व्यक्ति और दिन यह स्वत्ये क्षति स्थान, पुरुष



भौती में बल पड़ता

440

भ्री स्थंप करना

वनकी मोही पर जिसन पड़ी सीर हमारे धाल मूल (गोदान-प्रेमनंद, १४): एक श्वेशः बन न देशी मीह दर हम भना बंदिंगियों में क्यो एसि (बोशा०-पृश्शोध, १०६)

भींकों में बल पड़ना दे॰ मींकों पर शिक्तम पड़ना

भूम की अवस्थिका कारणा भग हुए होना । प्रयोग-नहीं बार भई, जोका उद्यो मरन मन्तिका काटी (सुरु सार-सुर, मरूर) स्तम के विकार में म्यूक्ता बहुत वह सम से होता। जनेश—को सुनि निरमत मी पुनि नाही, सरम दिशोरी सुनि (सुरु सार-सुर, ३९५५)

स्वाप्तिक की प्रदान का महत्त्व देना । प्रयोग—स्व नक मनुष्ति सरकता किरता है समझत उसकी कार धारक करा करा । (रिकार-स्वरूपक सुरु, 80)



प्रेमस्यामुखी

शिया । प्रयोग-नव नवर की वय जनना मृत्यियों की कुलबाबा (देना साठ-नठ लांद, र.इ.) एक और वायक और वर्तेकिया संवक्षणानी वार-कवित्राए स्वतित सूच्या कर्मकों को सम्बद्ध नहीं दी (देशानीठ ३) - कर्मुरंठ, १००

संज्ञाया हेका क्षेत्र

प्रशासीर प्राप्तन होता (प्रयोग—हम कोशों को नो साथ हरिस्ता प्रशासन प्रमुद्धे नगर पर है और उनका नम भी तक मोने-वह की योग नहां है (माठ एक है)— भारतेन्द्र, २६०); "जान की कुर्यों" अ अ वहर-वार केने माने और वहर-वार कहीचित होने में पन पन कर नह, महा नक वहरवीयना का प्रशाह, कहा ही उन्च कोर्ट कर ही गया है (पेंतरे--प्राप्त, २६); कुराने आदिवर्धों में अभिकाश नो क्ष्यन में ही मिल में बाद करने के अभ्यतन में भीर कृष मंत्रे कुए (गोदान--प्रेमक्ट, ३०८); बोहकर हो विश्वादनाओं का है मंत्रे होय के मने दिक्ता (कुमरोठ--हार हो। ६९

मंजिल सारका

()) प्रश्न कृष पैद्रम्य सम्बद्ध स्थानः प्राणीय भन्नस्य स्थानः विकारणकृष्ण को द्वारा संयद्ध सभी कार्यक प्राप्य स्थाने अभी अपन कमने स्वाराण कृष्य गमन्त्र प्रश्या सहित स्थान विषय स्थानकृष्ट सम्बद्धीय स्थाना का कर्षेत्रः स्विति स्थान कर्षे

कार्ट कार्य कारण के

संजी अध्या

परिकारण भाषा । अयोग—संगी माचा इत्तरों येशी हुई न हो। अधिक भारती र जिसे सैन एक पहिल सी सही निष्टी (सब २) प्रसर्वेद १७००

संस्थार में छोड्या.—दोस्या

- (१) विश्वति के समय साथ क्षेत्र देना । प्रयोग—कायर कृत कृतृत है होनि देन मध्ययार कृतक्क-निर्धार दास, १९), तृति संस्थान से सोट देने के बदनाय होना संस्था है (१०० (३)- प्रेमचंद, १०%)
- (३) किसी बाठ की शरितियन अवस्था में गाड़ देना ।

शंसधार में बाब द्वना

- (१) औरत का चार न नगना । प्रयोग—भदया, यस रचना तुम न नाने । नहीं भी नयभ की नैया मंभ्रताद में इस जानने (बोनेक—रोठ शर्फ, १६०
- (१) बाध प्रदुश रह वाना |

वंभाषाय में कोरना देश वंभाषाय में खोडना

सम्बद्धार है होना

धनिश्चित मा जस्मिर होता । प्रक्षेय-व्यक्तित इस धमय अध्यार में है, दिनय के भागरण ने उम एक प्रमुक्त बना में बाज दिया है (रंग० /२)-चेंग्सचंट, १७%

संदर्गता

वाम-नाम नुमने रहना, पीछे लगना । प्रमीत—देखहु नाई नीर काह की इति पर सर्वाह रहाँस मंधराती (सुर सार— मृत २१०६ नगनम ना जानगाना देखता ही इत पर प्रदेशन स्वता प: स्ट्रांट के साथ न ३१३ वर्गी करी। प्रदेश रहे होता कायण करों सा की शक रेक्स

संब चयना

बार क बार रोजा । अन्य कालना । प्रणीय । वर तक ने श्राप्ति श्रीद न्यार्थि । अरकार पर भी या । वर विषय १४०० ५ प्रेमेच्या ३०४

मंत्र देना

(२) गुप्त समाह देनी । प्रयोग—सम्बद्धाः, सुध यहा स्थर गाप्ति को समाह गहा है। पुग्तारा गांगः सर उत्तर पट्टी पहर रहा है। विगत (२)—प्रमावंद, १५०)

- (३) शना बनामा (
- (४) प्रपरेश देना (

र्मेश्र पद्धानर

युक्त कप ने कुछ शिकाना । अमोन----कक्का, नो काची ने यह नवक दी है, यह मैक प्राया है (मानल १)---क्रवडर, द

संघ लगना

यन कर अगर होता । प्रयोग---विग्र भूभतमतम वर्ग, जन ज कार्य कोड । दाम वियोगी दा जिमे जिमे त बीरा होड (स्वीर ग्रंथा०---कवीर, प्र)

शकान बैठ जाना

मकान का कमचोर होते के कारण गिर वाना । प्रयोग---हरिहर प्रयाद का मकान विस्कृत बैठ गमः और देगी में बहु वह कर पर गमा है (माठ माठ (१)---किठ गाँठ, २१८)

मक्षीसम्ब होना

सहस कंजून होता। अयोग—जल वाहे की को पन विवास ही प्राट प्रकी जुन हो प्राट अहां हम मार दिन प्र सापनी हो में हो विमायन प्राट नवाद्या तो नाव कर तक राह वह स प्रापंधी (प्रण्योठ—प्रण्यात निरु, ध्या) विस्ताप प्रमाद तो क्या नक्या के मनीजूस और सबकी सापनी है (मैलाठ—रेनु, १८६): विश्वास कानिए, बड़ा गोहर भारती है और बना का नक्यीजूस (मानठ ,४)— प्रमाद, २०६)

शक्षां किंगलना

भवित्रण या अप्रित का बाम करना । प्रयोग---पर विस्टर जिल्हा जान-मुख्यस्य प्रश्ली न नियमका साहते वे (मान० (८)---प्रेमस्ट, १४१---१४२)

इक्की पर इक्की मारंग

विना विकारे हुन्हुः अनुकरस्य करमा । प्रयोग---नकमणी इतिहास सेलको ते उन्ही के स्टथ्सर वर जिना अधिक धानवीन किये अवसी पर घरशी बारता सुद कर दिया ।पदम० के पत्र—पदम० रामी, २४%)

प्रकृती सरका

विन्तुत्व निकस्या रहना । अयोग—नुदक्क विनश्नर काबी मारा करते है, इतमा भी नहीं होता कि नरा अप्रदूष्टी क्या है (मानक (१)—क्रेसबंद, ११६); बागह साल तक मकते की तरह कार्यों का भाग पुनता हुना के मन्त्रिया भागता रक्षा (बसुरोठ—जियाना, ३८)

प्रकार में वादे का वेक्न मगाना

बन्ध् तम बार क माय नृष्य या संमान्य की मेल कराना। प्रमोश—में उसकी करकी में स्थाद करके संपनी नाक बन्ध होता मानवास म पाद का पैदान संगाऊना तो सीत दया कहेंने (निसा6—कीफीक, शुद्ध)

मकाने के पर्श से मुंह पोंधना

राम्य रहता । प्रशास न जमनिया माराने के पर्ण स सुह गोक्षे सब अपना (परतीय⊶रेण, ४२४

मर्जीय बहानां, अञ्चाक बहाना

श्वक्षाण करना । प्रयोग—मंत्री विश्वनाण की समा कि उनका सरका इस मन्य और ईनानकारी पर जरकर अपने देशों में ही कुल्हाड़ी अही भार पहा है, अस्ति यह उनका प्रयोग की उड़ा रहा है (भूते0—भ्याप वर्षा, १८४८, प्रशक्ते तम और वरव-निष्ठा कर स्थाप उड़ावर आता है प्रशोवित —हें0 प्रतिवित, १६६)

प्रयत्न भीवना,—सहाना

डिजाब समाजा, बहुत मीच विचार करना । प्रयोग-पिता में को-भीव दिन और संबार के साथ मगत मारा , मेला २:---क्यांस १४३): बजरपी, बरा भेगी को बुधर जो, बन्ह सब बाद समाधा हैं । से इनसे कहाँ तक मगत जबांक (१४० (१)---प्रेसकट, २३४)

(समा: महार--- समक्रपच्ची करना)

अवज सहस्या

देव संगत सार्वता

बतर से बैर कर पानी में सहता

अपने दी ताल के तमका मोया ने नैर करना (प्रयोग — समर से देर कर तो कम म से क्यून किए नहीं या सकते (परस्र — क्रेंनेन्द्र, पर) भगकरी बक्तबुर हो जाना

यदं हर हो जाना । प्रयोग-पृथी मने सम् सूरत की महापुर हो जान नवे मगध्यी अवका-मीधाः श

सहस्थी-बहा बनाना या होना बहुत कोर-मृत होना या काना | प्रदीय—पपरासी | दश्यक कोर्यो को या वा किसोबी | पदानी ह्या बना देना है /प्रतीय⊶ीम् १४३

(स्था : स्वाः अञ्चल्लास्य सम्बन्ता)

अअवन काउंग

प्राप्ता किर्माकरण होता.

माताम रूपान्। १० मधील इसका

मेर्टरगणना प्रतना

प्रभाग प्रमान प्रमान सहना; भीक करती । श्रमीश—से और दादा में नामने महदगरती ही किया करता पर (गोदान— प्रेमबंद, २७) काम के बात कम्पनार्थ जागा। सबस्वामी परम प्रमान कहरकानी कर गो है अपनी सबस—सक, ४३

राया प्राप्त इति शतंत्र क्रासा

मरियामर का देता मित्राधेन का देता

ि तथ भाग रह रम । प्रमाण पहिल हैं को प्रस्तर को प्रधान के हि एक प्रधान के हि एक प्रधान के हि एक प्रधान के हि एक प्रधान के हैं एक प्रधान के एक कार्य के प्रधान के प्रधान के प्रधान के प्रधान के हैं है तो दूसरी सार एक क्ष्मानक के प्रधान के

संदर सुयाल धमकतर

न्तर्व की वरी-वरी वाने करनी । इसीन-परे की । पड़ा म मिका, वनकने नया वड़ा मूनक की (मृत्य--वृंध वर्धा ३३)

मिल केंक कर कांच क्टोरना, --- श्रृतिः क्रांधना मन्द्रकान कर्नु का निरम्बार कर कार्य की कर्नु का नगर बचना । बचान- जरा क्रांच के नगर कीन्त्रे, कार्रि अमेल बनी सुरु सार्थ- सुर २००६ , सुरदान क्रांतक परिद्रति कें क्रार वादि को बार्च 'सुरु सार्थ-सुर, स्थाउ)

मध्य केन्द्र कर धृति वांचरा १० मणि केन्द्र कर कान्य बटोरमा मननव के वंदे,— मान,—यार

सनस्य के संग्रा है। सनस्य के बहे सनस्य के यात्र है। सनस्य के यहि

प्रतलप ग्रहना या गांहना

नवार्य भिद्ध करना यह होना । प्रयोग-निरं वाजाह ननात काटना, वितेषकः दिवानी में तो देश का देश ही उनती 'स्वार्य माधिनी' क्षणा ना स्थवन ही जाना है (90 पीत-प्रश्नीत मिठ, १०५); पुरुषोत्तव दांश में बाना पदन प्रोहन को नृष्य देशास देनकर करना मनस्य गाउने के निर्मे नहां (प्राव्याल-कीठ दांस, १०१); में तो प्रतत्तव गाउने के निर्मे नहां प्रयोगित नाई मिछ नवे सहारा मिर्मठ-हिंग्लीय, १०२), बाद की देशोगे संस्तार प्रयोग हो हो गाँ। मनन्त्व गा दंशा न

दिसाना ५५ (समान महार प्रातन्त्रम् साधाना निकाहना या निकान्त्रमा सन्ति कञ्चा होना इस समय होना । प्रयोग—पुस्तान कमोट स्थापियनि १८५४ (पद**्र**ागशी, ५३(१)), इतिकरनार्धश्य नक्षि आकृत स्वत कहुं तिनकी मनि कामी (सुठ साव—सुर, १८)

मति खोना

जेक्ड वर का विवत पा बैंग्जा प्राप्त में जियन पाजी पति कोई परे प्राप्त भूको मनि कोई (कवीर ग्रेशा०-कवीर, 1931), स्पृक्त है भन्नो मुम्मि कह आई (सुरु साठ-सुर, 1950

मति धकतः,—पंगु होतः,—मारी जातः

विकार विषय हो जाना प्रयोग में प्रमाणित मुस्ति व्यापित हो। सिन कही, रीडि सी पांचत भी पांचत विष प्रदे हैं (धना कि विकास विष प्रदे हैं (धना कि विकास विष प्रदे हैं (धना कि विकास विष प्रयोग पर्व मूर्च प्रयोग पर्व प्रयोग पर्व प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग है विकास विषय प्रयोग पर्व प्रयोग है विकास वि

(गमा) महाः अति गति हारता भुग्द होना)

सति पेगु होता के सति यकता

मिति फिरना

विकार बदलता । प्रयोग—निय मिन फिरी अहर वर्ष साबी रहवी नेदि पासि वर्ष काबी (पान्य (स)—नुसरी, उदक्ष)

प्रति फेरना

मृद्धि बरम देना । प्रयोग---अजन पेटापी तर्राह करि वर्ष विदा सनि प्रेटि (राम० (अ) - तुसस्ते, अपः

मति सारी जाना देव सनि शकता

मति हर लेका

वृद्धि शिक्षण नवड कर देन। । अयोग मधन करणा । । सनि होत्र शीरही (रामक (फ)--यूलसी, शन्ध)

म"ये जाना,—पहता

अन्धं पत्ताः

दे- मुन्द्र भ्रामा

मन्त्रे सहना

वनस्टमनी इयर राजना । प्रयोग — > > ही गीर ग्राह-दीग रित में एक पृश्द र्रावहत्त-शंक तैयार करके वचारे प्रशासक के मन्त्रे यह रिवा (प्रदेशक के प्रश्न-प्रदेशक श्रमी, ३४८) (भराक प्रशास — सन्त्रे कालना)

मध् प्राप्तता

- (१) इस्त्रानित करना र प्रयोग---प्राप्त में भाग के घन और मस्त्रिक को क्या दिवस क्षत्रात १ --शप्तदान, ६०)
- (२) एक हि बान को बार-बार को जाना।

सद गंद्रन काला । व्यः क्रम्म । भागमा । यः स्ता ---स्थना

तर्व दूर करवा । शर्माय --नेति समेत न्य दस घर तेश स्थात सू --युवसी, घरण); रिष् घर मस्य प्रमृ धूनस् मृतातो साम् (ब.---तृत्वसो, १००), आगर को अवकर्षर विकारि विकृत की देह विद्वारि स्था मू (कैन्स्य० (६)----वैज्ञात ३१६), समान मनोच सदा मो यन, पै ती ह कर्ष् प्राव्यति याम याम साय-यद केरिही (घन्न) विकार --धना०, १० १० वह-बीच बरीचनि की क्षित करिक व्यव की मद बर्गन स्थान करित --धना०, १९४

प्रमुख्य करता

🖙 मद्र गंजन करना

श्रद कारतेर

🔧 मद् गंतन करना

मद फेरना

क मह राज्य करना

मद मधना

द अद्र शासन करता

141

O P 85



हान से अंधा शीना

द्रभन यम्बर म होत्सः यज्ञातः महत्र असह गाउदि सभा समञ्जयन और (राम० (हां) -सुससी, ^{रा}म०)

मन भटकता - उत्सकता

प्रमुखाकाश में बहुदा

सन् में बहुत सी कामानाको का धारता—बारी मुनी होती । धारोम—बैना का पन धारतान में उसने चना स्थानक (१)---धेमबद, १८६

व्यवसाधार होना

हमोत्साष्ट्र होता ६ वयोग —प्राप्ते बच्चो वायो प्रयो जन योज विदेव जीवन वर्षे गांधांव ध्रशांक—शंधांव दास. १५

मन उज्ञास

यस का उदावील का इवाट होगा। श्रवांत- नेता हर प्रमान-प्रमान नहीं देखाएं--वेंच एंक १६); डीड नहीं है, में भी कृष कर नहीं था रही हूं, यन उसरा-प्रमान का रहता है से तकाय नहीं हो सारी उज्जयक-देखान, २१६ , गावा साहन ने देखा कि कृषान का विश्वास प्रभाव-प्रमान है (सोटाक-निर्मास, देव

其中 3(3)22(1)

म देहीन प्रयोग रिश्वर है होत्र सहरत, हुन्ति रहा है महारा देशा दहनेय यह , हुन्ति हुन्ति मुख्यार स्वरूपन दुन्ता न असे , र

हर उद्या

सन बदा भ न होता। प्रमाण ज्या करिश कर ध्रुव ना जहीं सो गोर करों ते वर्षि । होती गांव गहाड़ी कहे कर्षा है। दिन गांति दिहारी स्थाप 'बहारी प्रभुट प्रस्ता था कहे रतभाष्य के कर सका दो कि प्रक्र क्रिक्स की नाम स विस्ताल की नरश्च हो देहा था। सन दक्ष कि करा था किसी दिशाहा 80

मन वदा-उटा हरेगा

सर उत्तरका

उदान हरेगा । प्रशेष-किमी हो, पर जैसे सम उत्तर। उपरत हो (क्रम्यामी जैसेन्द्र ३१

यन उम्रहना

- (१) भागा तरेक होना । प्रयोग—उसका यन २ कार्ने वया भोगी के धनि समता ने उसका था रहा है जिसे यह स्थान करने का सावक नहीं अञ्चल जैस्सर (२)---अक्ट्रीय, १५१
- (२) अन्तरह का सम्बद्ध करना । प्रयोग-स्तृत प्रश्ताः विदेशाः -श्य-कोलासम् स्वपारः, प्रमदता गरी मतः, स्तर्धः तृती है स्वान कार रक्षनाठ--निराताः, १६२।

धन इत्यक्ता

रे॰ सम धारकता

भन अंचा होता

- (१) क्य व दूरिकता बसी गहरी । अयोग—दस्ते नेकर तर्श कः यम वटा हो ऊना रहता है वृटिक—क्रम माठ, १६२)
- (२) दशर मा उच्च विकास वाका होता ।

मन यक काना ग्रा होना

धनित्व वाय ने दाना वा होता । प्रयोग--विहरत हो ह धन एक को सुरु सार--पूर, इंग्लंफ, एक धम मन वहूनि के, धुटे न किय क्षार (मिन सक्क--धनियाद, क्षर्य,

धन करता

सन को बार नामा काति होती। यदीम मुक्ति की एत के प्रति हैंगा के भारतका सन रहत को उसे का स्थान के स्थानिक कुछ के सामा के संस्था गोरी को नाम के प्रतिके कि नीच प्रति

मन करू करना

पन म १६वनर हर गरनो १६वन १०४। परिवर १ महत्र हे मन को रहा केहियल श्वास्त्रक नाव हैव पुर



製造者

पहचानो निश्च कर्ण पृथिष्टिर किया कर्ण कृष्ट सन को (कुरुए-दिनकर, १४०)

सन करना

- (१) मेम करना । प्रयोग—नरमन को नो मन करे, नर. इटि हरि हो दीन (बुंध संध-नृत्य, इक्ट
- (२) वाद करना । प्रयात—कश्रद्ध स्थाय करन साथी मन, किमी प्रीति विभवाई स्मृप सा०—सुर, १३०१)
- (१) प्रथम होती।

श्रद कमार असर करना

मन में दुविशा होती मां करने की दक्का न होती। प्रयोग—काल में नद न क्यों करूर होती। जब रहा बन इ.सर-मनत करना (बोल्य—हॉस्बोध: २०२,

प्रत का अध्यकार

श्रहात | प्रयोग—है ऐसे नियहोप कर का अवकार जिला गर्भ ? (क्लांo—धंत, धंद)

मन का अर्थना होता.

प्रश्न के भागों को प्रसट करने बागर होता । प्रयोग—कप इकनो मुख्य बाग्य नहां है सामारि वट वन का आहना है (सामक (क) —केमचंद, सक)

धन का खोर

- (१) अन की लुभा मेले बाका । प्रधाय-ने वीपाम करा यह पेरे बन के बोध (सुठ साठ-सुर, ४॥६२)
- (२) अब की बुवंशना । प्रयोग- में बुनिया में नहीं बरना शीला । अपने पन के बोध से प्रश्ता है जो दण-अंव नाव. प्रश्तः

सन का दाद सिटना

सन का कर्ट हुए होना । चयोग—शृष्टशम जवही उति जैही मिहिहै नगरी सह (सुरु सारु—सुर, १४९८)

श्रम का शैल

श्रम का कुल सन की कदना मां संप्रकार प्रणोग—विद दलपी नक परिकार मन को जल हों। मूठ साठ सूर, इप्तर , कुछ यथन की में बोच दियार करके येर तक का सूत्र की बटकना है जिलाको (येन साठ—सठ आठ, एक)

मन किमी में होता

श्यान में होता । प्रयास-विशा सन शृतिहै शास हूं, यह यह उत्पाद काहि (कडी) प्रयाण-सवीर, प्र)

शन करें आप

बनर कि प्रयास न्यून क्यांनी बनियम मुख्या की हास नहराहकों का रहक्ष की सब की सामों में कोची (कसा०— यह 80

हर भी गाउँ कोलना

- (१) जब की बाद कहती । वर्षण—अब मी उर वार्षण है गाउनों इस मा गावत न नानिय मि, यह की निष्य हूं मिले मी विकी यन न गम गाउन न जॉन्सिय मी ,धनक क्षांत धन ० १४५ यन की गांत यह मेरे नामन ही कोन पानी भी (गीतो—कतुरंक, ६१); कनक में इस वार्याय के (नाम के निष्य की ने किया या को नुष्ट कहा उपना नेयर की मन की बाद कोनने का क्षांतर मिन क्या (मुठाक ११) — सामक्ष्त १३४
- (२) जल के दुर्जान को दूर करना ।
- (३) वस के प्रशास की दूर करना ।

सन की जलवे जुड़ानी

सन् का कृष कुर होता । प्रतीय---नेकु नवन सन् अर्थन वृक्षक (रामक का--शुल्मी, प्रभूष)

पन की चाह केना

किसी के सब में क्या है, इसका संदरत लगा पाना। प्रयोग ना बन के के से सार्थ-क्या में उसके मन की कार कु माने। (१)-- देशकर, दहां

वस्तर वहा अस्त की साह परनर)

प्रम की बीड

निम को मुख्य करणका । प्रधान—है जहां पर न कीट यन की को का जिलाई दिलाई क्या तीर जासीः— हरिक्षोध व

मन को बान मोलना

मन की क्षेत्र राज्यों र अयोग-अवन्या में उन्हें मनकी

यह की बात कर में रहता

शाल कोल ही (मानंद (द) -- पेमबंद, मूध)

मन का पाल मन में रहना मन का मन में रहना

मन का राज मन में रहना मन का मन में रहना

मन का राज मा की मन हो साम रही। मन वि व्य वर्षः

प्रोत -- भाग की पर जाना अला हिं । वर्ष वि व्य वर्षः

रो महा प्राप्त के रूप वर्ष के । वर्ष वि व्य वर्षः

रो महा प्राप्त के रूप वर्ष के । वर्ष वर्षः

राज वर्ष मा क्ष्म के । वर्ष वर्षः

राज वर्ष मा क्ष्म के । वर्षः

राज वर्ष मा क्ष्म के । वर्षः

राज वर्ष मा क्ष्म के । वर्षः

राज वर्ष

प्रेम फो प्रजाम रहना कि प्रजानी प्रकासन में स्टब्स

मन को मुक्ता कारण मन में सुविश्य कारण १ प्रतीत-अन्य कारण की केरण मन उत्तिकारों और अधीर सुद्यात—करोत, प्रश

मन का सिरुष्ट भारता के कार भारता कारक स्थाना

(a) and a server of the server

(दे कि १ (प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्

सन्न की बोटी पोना

काला प्रकार को का पन करकी र प्रणीत है के न परवार एक मन की निज्ञासन की की सीका है समीठ असिक्की है, रहते

सत की सकाई

भारते भी पत्र प्रभाग तमारो समझ से की इस नक स बहुत कुछ रहात्र की इस्ति निकासनी है जा राज रेट्स के की में मूल की किसना ही साम दे पालिक को का हिन्द को में मूल की किसना ही साम दे पालिक को का हिन्द को में मूल की किसना ही साम दे पालिक को का हिन्द

शत पुरस्तराज्य

प्रश्न दार भैता। प्राप्ति प्रश्न चार स्थाप्त स्थाप रेग्र नर्गार न गास्त्र र केल्ला प्रश्नाद - प - गार प्रश्नाद स्थापन प्रश्नाद स्थापन प्रश्नाद स्थापन प्रश्नाद स्थापन प्रश्नाद स्थापन प्रश्नाद स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था

सन के न ह

र प्राप्त सम्बद्ध अर्थन्त्र वस्त व रह र र प्राप्त स्टोर्ट्स

प्रम के कारत होता

र या राज्येस स्थाप स्

सम के प्रमुखे परिचा

है। व चीर के उसा के एक रहता येथा। भार सह रूप कर प्रमाण श्रद स्थापने तक रहता के सीए देशकर रूप के प्रमाण करना दीन शाहात की सीए देशकर सुन के सकत गुरू करना दीनों के अञ्चय दिस

यत के मेरे

220

ा सन संद्र्यांका रणकात्रे प्रणोग सन के सेशो वर्ष कर्ष (क्षीत स्वयुक्त पर वस की प्रणा तती त इतीर प्रश्न कर्षा १६७ स्वति द्वित स्वयू स्थित स्वत्रां प्रश्ने प्रति स्वयू प्रशासी हस स्वयू भूकरी प्रश्न

सन के लाग्य

त्रती कड़ी कल्पमान् । प्रयोग-स्थमं सरह सनि गाल सनाई यस प्राप्ता सन्दर्भ रामक काल पुलस्ती प्रपत्न

सन के उत्तर काना

ं प्रत की विश्वाद बाला

बन के जनह में अन बिटना

१ दे के कार्तिक वस्त से वर्ति पानी पानीत कार्ति सन गुण्यम् कार्यको उत्तर्भुतित पेति सुरु साथ ही प्रतिक स्थानुष्यक्षणानी सर्व वर्ति भूत सन गण्यन पर्व नद्वारक्षणा नेद्या है। भूत सन स साहर्यन स्थान्य सर्व क्षेत्रण हथियोध देव्य



45%

मन को खाद जनना

हुरव को क्लस होना । प्रयोग—िक्सी सामाज्यिक या गार्क मीनिक प्रत्यास का व्यक्त किन देशकड़ क्यों अभाग यन का भोड़ समुत्री है है सान्छ (क)—प्रस्त्य था। (ममाक सुद्राक—सम्बद्धी कांद्र गर्कसन्ता)

शन को दशका

- (१) मन की दृष्या की बरवन प्रतिना । प्रयोग —र्ग्यकी हु मन की दशकर ही सबंदर ,यश्रीक—गुप्ते, १३०), अब दशकृ से नहीं मन ही दशकारक को तथ है दशक दिस्तिये भारति हुन्दें प्रीप्त १३१
- (२) यम पर दबाव बानवा । अदीन—हा, पापनी आहा का ताब नह विना क कर पर दिस्तानगढ़ अवनवार न दबा संद्र्य (क्योत--क्रियट, क्य)

मन को असता

भ्याम केन्द्रित करना । प्रयोज—सम्बद्धार गाडि वट राष्ट्री बाह्य रहांद्रात क्यानं बाधी (क्योर प्रशांक—क्योन, ५०

सन जहां दोना

- (१) की बुको होना । प्रयोग---नेने जदान पर बंगन नहीं। आया का बस बन्त भन ऐसा अहा दुवर कि बादे नहनों की साल दार दूं (गवस--प्रेमचंद, १३): दोवान वर वन सहा होने समा (धारीक--विक दक, कक--दश) (÷)
- (२) किसी के प्रति अच्छी प्राथनाओं का नव्द होना । प्रयोग-वृत्तिकार का भन मट्टा हो गया (संतत्ति--नांव् ११०, ६०); देशियं प्रयोग (१) में (-) भी ।

सन सिंधना

- (२) किसी म विरक्त होना । एकायः अधिन अधिनयः की प्रोप्त म नगरना सन सिचना याः कोद १ दिवस्त ३६४

মৰ থিও বছৰা

वार्यत असल होता । प्रशेष---ऐस प्रवस्तम्ब है कि वेशते ही यन विका प्रत्या है (सीदान---डेसबंद, ५३

राम की करा

यत को बाहरद करना । प्रयोग—नृत्य के अमनवाज में इत्यों पर हार कवित्र दरेकर देवनवानों के नेच और मने का नवरवानी क्यांके होत कोन्द्रों हैं (मांव छंट क्के — भारतिन्द्रें स्टब्स , यह द्वार एक बहुब्ब बांच-र्यन्त नेचों के उनके नव का करियों क्यां विद्या—केमचंद्र सूछ।

प्रवाद्या

हुम करने की तथ के प्रकृति होती । प्रवीय-नेका मन उनकी तक्क कुका नहीं (ब्याय-न्योनेन्स, २५)

शत कोलका

- (१) सामान के मान । अधोय-स्थानी मु सीनि जंग भरि राज नवारी कुण्डल-सिस्सदान, २४।
- (२) क्या क्या मा

प्रम कोरामा

वन का शक्ष कृष्ण कह देना । प्रधान—कमना का श्रीवनी रही क्षीना पुत्र नामीक में साम्मीयना कर बीरन पानी रही क्षीने0—10 राष, १४१, मनू ने प्रनाते अपना कर बीनने के निये कार्याहत किया (अंग्सी०—वृक्त वर्गी, १४

शब गाउना

सब गिरमा

रुकाररीय होता, नाहश ब्ट्ना । प्रयोग—इम ग्रंथ साथ को फ़िलामकों के टेबन की बहुत तथा कमान है, नथी कि वय किश्ता का रहा है और वसे इसी टेबन का टिकांकर सबवत रखवा होता (शरस—क्षेत्रेन्द्र, १६

सन गिरामा

क्सात होता । प्रयोग-धनमी, स्वी मन विदर दिया है क्रांसीक-च ० क्यों, १६०

प्रश्ने प्रवादशा

धन यो सार प्रधार की घालक या तर तरन । प्रणाप कंग्रेस का मन प्रमुक्त समा (बोनेक--र्शः (१०, ६३)



सन करती होता

अस चकरी दोता.

सरिका अस एक की शीवकर पूत्रों से मेन कार्य याचा । प्रमोन न्यह ती तृत दिलाँह के मोती कितके यन चकती मु

सन चन्द्रसः

(१) प्रेम का बाच बंदा होता । वर्षोय-किन उन ितन ये हंगी दो ही भीन दिस का उत्का मन करता कना करता -प्रेम्पट, 326) वर्षा इन किसी का पूर्व अन कर बना का है (माठ-बंद देगी, 248

(२) पुण्या गोनी ।

श्रम चुराना,-स्रीनना

सब द्धानना

रे॰ प्रम जुरामा

HE GENT

मन या विश्वक का मुक्त होता । अनेत्र— काके कृत करो मन सुद्दे और औरति से, बहुत विश्वक को के स्वादित सर्वति है सम्बद्धारम्भ समातः १४०:

यन क्षता

हुदग का प्रभावित करता । १९४० मा स्वयं वर्ष स्वयं क्ष्मात कर्मा के मह को कू नहीं (इ.६०—स्वरं नाम, १२०); श्रम करूब करके मह को उस बोबों के करते कू वर्ष (कर्मा) देश १० १६२

मन क्षेत्रा करना या होता

- (१) हरता किस्ता वा क्षण संया (प्राप्त प्रयास्त्र म स्थान कर्ष प्रमान प्रस्ति ३ व
- मत सर्वातत करता का लाग ।

भने इसमा

११) मेन का दिखर एक्टब २ द्याराग । पड़ी व ...

बाव(बी, प्रश्नव प्रम्यान की यदा न होती संदित धीर बंगम दिनी पर यस न प्रमेगा (१९० १) --वेशवाद यह (२) यम वे विस्तान केंद्रमा । प्रयोग---क्रयप्रम में और सब तृष तो है, पर यह प्रश्न त्यापाय का बादमी है। इस बायम वेगर तन हम पर नहीं समन्त्र (१९० ,३) --वेसबंद, १८०

सम्बद्धाः

बलाना, तबका का करान की पहुंच होती। स्थोत— र , में जो र भाग जाग के ना कार पूर्ण —कवीर १९०%, कर्रा जैन निर्मात कर पूर्ण किरि सम बात तहा (सुरु सरु– सुरु १९०७), वो नोचर जह मां। बन अर्थ राम्छ (सा – सुरुसी १००६)

यम जंग्यना

- (२) यस में कर देना, यायांत्रम करना : 2011—24 भगने वरिष की अंचाई कीर जीवन की स्थाई के समुदे नाकी नरवारी का यह जीवना वर्गहर दियंश क्षेत्री, दश्व

मन जोड़ना

वन करना । प्रयोग---वे सपनी वन दरि को जीरती १९० काठ--सूर ३३७९

सम्बद्धीया बद्धमाः

सन रहोत्स्या

यत को बाह देता। प्रयोग पाय गण प्रथम का मन रुपायना को को बंदी वंदी के नाम है जिस्से मुग्न मार्ग प्रदेश १९ वह प्रयोग नवसन पदा स्थाप देन के किए सामा है, यो नामा है हहा है। इस इंस्का पन ट्रियमा प्रयोग रुपा दें प्रस्ति १४४ वर्ग में हरान प्रान की भीन का नम रहांगते क्यो है है रक्षेणत—हारेचीय: २०५.

मन दरना

- (१) माहरा कृतमा, इसाम होना, किया श्रामा व वयोग -- वृही -- करवी कथाई से सम दृश का नमा का (कांसीक-- वृद्ध वर्मी, २२६), पर बान गामा है प्रशंका मन दृश क्या क्योंकि मा कभी नीम से तिल रिकाकर में क्यों है और कभी भाग देने की गक्कण वाले की मून क्यानी है (जनामक--महादेश) हुए।
- (व) रण्या होना । प्रयोग--- अनका क्य सरश्च पर हुटना चा, यह उसे किय शिमाकर उनकी प्राण बुकाना वराजी वी (रंगाः (१)--- प्रेमबंट ३१२)

मन उहरता

भित्त की बाबुनका दूर होती । प्रवास-उमी बहरें स कृ ८३रे सन, देह को माहि विरेड को नेमी (छन्० क्यास-धनांठ, ६६), दिय के विरोध पत, क्यान क्या उहरात युक १९०- बुन्ट, १५२

मेन प्रतिकार

मन गरा रहना, जिल्ला रहना । इक्षोन—इन विह जन इहके नर्वातन के, करह की बर्बी क पूरी है (क्शोर केला० ⊷क्सीर, ११४)

सन कांबाकीय होना —दिगना

- (१) किशी बात वर यन का एक निश्चय व वर कार। प्रयोग-मन व पिने तम बाहे को नराई, वरन करण वित्त प्रयोग-मन व पिने तम बाहे को नराई, वरन करण वित्त प्रयोग-मन व (कर्म प्रयोग-मनीर, २५०)। वा ! मता (क्ष्मित देना (क्षम्य मन न क्षित प्रयोग को हम वम नराधात दास कर्म); बामते पीम प्रयंतों को हम वम दिवापी आह स दिन पाना (कोसिक-स्विधी), १५१), जिस वही नराम। वस दम भावि बायादोग वा, क्षमें प्रयोगी की एक धोर में प्रयंत्र म कर्मी वार वाप देश। (तैक्क-सुविधी), १५६)
- (२) भत का निकाय से हट दाना। वर्तकर होना ।
- (1) यह में करेतिक बार्काना धानी।

सन काल काल दीवना

श्रीम का धरिधर हाता धर म नावा प्रशास की वात

नरनी । वर्षाय--नुषा सम्बद्धा गही बनना १ वन शाम-शाम शीरन। फिरना है (गयन--मिनाट १४९

(बनार मुहार- जन शाम-शाम फिल्हा)

सव दियाना

C- सेव दांबा दाळ हाता

मन द्वना

देशक होता, दू की होता; विकलाद होता । अयोक-सी बढकर बीच विक्टि हो कई दो करद का का दूवने बना क्टार । इ. -- बक्रमण क्टार

सन जोत्दर्भा

नम कर प्रथम होना, आएटट होनर । वर्षण—नस्य काम माने होन्दे काम्य है, ना मन की मन कर्ष कोने (क्योर प्रमाप-कार्य, उपन्त, नहीन केम भी काना हाती । नाप कर्म मन कोच ना माने (क्यंक—स्वादको, प्रभाद), होने प्रीतन नाविका मन होना (रामक (म)- नुस्तती क्यंक), वर्ष मानकोत्र विद्यासमय का क्षत्र क्या व होना शामाव्यक्षीठ— रामाव दोना, उपन्ते, बहुरे काका क्ष्य बीनावर भीजी क्यं माना, उसे काने की विश्वी का नम होना (बुद्धक नक्ष्य), दश्); क्या कारी कृष्णांक, मरे नम, भीवित का वन होना कृषण—दिस्ता, शहर, भागती है नानी है कार्या

सन इरेनो या इलना

रिक्षी को बार शेवर । बजाय के बान क्वल रही पह सामन कोई पर्वाद करकी सुन्धी भी भी भी भीकरण कर-हीन क्वहरण कर्मारी नाली क्वल के स्पर्ध में मुक्कण पूर 895न

सन होता दोना

नव दुवल होता, बाहच्य होता । प्रवोश-स्ता, एक पृथ्याप के बावने कर दीवा हुवा (श्वद्य-प्रचाट, ४९)

सन तपना,--वहनी

कर को कर होगा। प्रयोग—कामी वही नगत यह विकि रिम, को वह पीप वहें (हुए स्थान—कुर, १८१६०); हुएस् रहम प्रयोग विमु केचे, प्रहा-नहीं नंदमान हुएसे (हुण्यात —कुर सम्बद्धः)



भन लोडना

- (१) राज्यस्य विरुद्धः कर मेशर । घरोत—से वपनी मन दक्ति भी क्षेत्रमो । इति यो क्षेत्रि गवनि सो नोस्यो ।सुरुक्षारु—सुर २२७५
- (२) बहर केम्प
- (६) प्रभाद क्षम करनाः, दृशी नरनाः ।

धन भोजना

यन के किसी विचार की काना या रहना की देनना । प्रतीय-कारबार करिय विधिया ते में नर जो धन वी ने (सतीर श्रेषाक-कारीर २१२): है हिस्सन है मुन्यानान धारते सन को भीसता है (पालीठ---रेण, १३०), सान विसाम है कि यन को नीम से (पालीठ---रेण, १३०), सान

प्रव धकता

- (व) वन का कामना-मांतिष होता। प्रयोग तन-योध्य यव कामा सम माँद्र याका हो जापो (भाग प्रशाः २)---आसीन्द्र, ६४९)

यम ध्याता

मन का में होना। प्रयोग---गंध वर्षणी किय तरह संबोधनी बायने से सम्भाव अब दमना रहा कृतकः --सर्विस, ७१६

मने देवता

- (१) प्रमाह-श्रीम श्रीमा । प्रयोग प्राप्ता वस क्षण का देशों का सहा है है पद्भाव के प्रया प्रदूषक इस्सी ३६
- (०) र्ष्माराभी का यस स हाना । प्रकोष--- सन तथाये छे सन ही नहीं दक्षा नांक को नव है दक्षात कि शन्तिय नोसैं। हरियोध १२.

मन दहना

९० मन तपना

मन कुनरे के दाध होता

हुमां के बार म होता । प्रमान-मृतिहि सोह पन होत

पारक, हमाँह भागु वन अति भागार्थ (राम० काल) — रुक्तो, १४६°

सन देका

- (०) यह समारा, प्यस्त हैना । प्रयोग—पन टीपा हर पाइल, यन दिन यह नहि हो। (कड़ीर प्रथाठ—कड़ीर, इद (—): इन स्तिप्रति हैने यह रोजें सामारा प्राप्त प्रदेश । पान प्रयोजन के यह हो, यह है यन पानद कीने बनोती प्रमुठ कड़िल खनाठ, पन्न प्रीकृत्यम्बद होने कि पुत्र एक यन है नृती प्रया की बृता में बाधाकर कहना है (प्रेम साठ — सठ लाठ, प्रश
- (२) हम करना । वर्षात न्य सन दियी कानि वर्षिता गो, में धन सान अवायी स्व साठ न्यूर, ३४४४), वीदि इति वर्षात हम दीनी दूनी यन नृष्ट्री तुम नाम इस पाप न वर्षात हो (७० ६०--विनायति, ६ , ६४४६ पन में १४४८ हो, यस नाम की ४ ४ दनों को यन नहीं देनी (विद्वाल---देसबंद, ४६), देनिय प्रयोग (१) में (०) भी।

मत दो होना

मनोपालित्व होना । प्रयोग---काकी, तु भी धानन हो गरी है क्या है जानकी नहीं, दो पोटियां होने ही दो पन हो माने हुँ (मन्दर्भ (१)--प्रेमचंद्र, १०)

यम श्रीद्वाना

मन को इक्ट-इक्ट सनामा । प्रयोग---नेद मृति श्राट व्यान निरंगर, तम केची रोगड़ (सुरु सारा--सुर १४५२९) सम चरना

- (१) क्यान केमा, यन समाना १ प्रयोग-सूरवास स्वासी नमधीरम नामे यन स वर्ष (शा-विकालसात)
- (२) पन में निश्चय करना ।

मन भूतना

सन के करण की दानोंग का दूर होता। याचेन वासी पन्धरण सन करी चना ने संस्था से कहनी है। नम नहीं राजन कीमर हो। सकुत कहन

वेद ताचनर

- () भागद होना । उन्होश सहि यह क्या राजिन गण राजा का विकास प्रतिक्षण प्रतिकाश का नामा शामा अ — नुस्की १०५:
- 🖟 चाम होता।



复汽车

मन पकट्या

यन की नाम समयती । वर्गक-पी उनका यन पकड़ नहीं सकता (सर्वठ--सेनेन्द्र, १२६), तन पर न इकारे वर्षाटन । यर हाव पकड़ केती इस मन (स्थमेर्स्स-पस, १४४)

मन वकता

- (१) किसी के दृष्णंबतार में विश्व जिल्ल होता। श्रवीन— उपनें कहा कि द्यापे के बाद इस वेधे में रहना सब बहुन ही कंदिन हो गया है, पेश मी भी सब इस बाद के पढ़ गया है (बै कोट्रेय—स्वतनार, दव
- (२) अस में बदाना जाना, कायसा-रहिन होता। प्रधीय— केम पर्ने तथ पश्ची पीग को नगओ समृद्र न वाका काठ प्रथा० (१)—मारतेन्द्र, ६४५

मन पहला

सन का भार जानना । प्रयोग—पत्र मेने इकटा क्रम रह निया था, उनका आधीर देश निया था (सुठमूठ— सुदेशन २३४

मन पर शहना

पन भी जंगना पर प्रिय जनना । प्रयोग—सभी कर्तर यह संगीत गारणी गाना मनास्थानो के यस चर नहीं हुई की /वे कोटंट—अवनाव, १००)

धन पर सन्दर्भार चलता

मन को चीड़ा पहुंचती। प्रयोग—प्रेमपाच की भीह का तनक हिल जाना कन के उत्पर मध्यपुत्र नलवार ही का काम कर बाना है (प्रवरीक—प्रवनातकित, प्रद)

शन पर लगाश देशा

यम् को नियमण में रममा। प्रयोग—धोर किनने गोधान्यकाची हैं, जिन्होंने नम पर स्थापी समाव दे स्था है (क्राज्ञक—संबद्धिः वेद

मन पाना

- (१) यत को पान जानती । प्रयोग -नमन देवपूर्व निव्दर्श के पर्स की कापर नहीं देवी हैं । निर्माणका नपकती है समसे पृक्ष कर सुध उनका जन या सकते हो (बावक-हरू प्रश्रिक, १९)
- (२) स्तेह प्राप्त करना । प्रयोक—नन दीवा मन पाइए,
 मन जिन भन नहि होइ (कवीर पंदा०—कवीर, ३८); नाए

न परके हारे शए न जन निहारे काहे द्या नारेह सकाई रीजियन है (भूषम पंचाक-भूषम, २५४)

(व) रूप पाना, इच्छा देखनी । अधीय---नेक बीर तरह करि बातन अनाह करि, कक्ष कर चान् हरि बाकी गरि वहिला (मसिकाकक-- मसिसाम, १४७)

मन पोरशः

यन मनाना । प्राप्ति --कृत्याम स्वतमी हरुसम्बद्ध, स्वाप-नरम यन रोट सुरुसाठ--सुर, २६२।

मन फंसका

याम्परित हो जाती | प्रयोग—क्यरवाही के तंत कर कांत् यथों कुटाब (माठडवाठ (२)—मारतेन्द्र, ४०३)

मन फरनर

विश्वित होती, सम्मान्य राजने की भी म बाहता । प्रयोग — यद प्रत्य सहस्य परें, मिटी नगर्थ मानः (करीर पंकार— करोर, ६०); कोरि कोरिट "मिलिशाम" कहि, जनन करों गव कोड पहरी गम श्रम कुथ में, यह म सबहु होड़ 'मिलिशसर —सितगर्म, २३४१; एक बेर मन फड़े मुक्त मिह पेरि महत्त्वी (राधां० प्रयां०—संधां० दास, १५ , पुरी के ऐसे ही विभी क्ष्याहरू से अमदा सम पार एसर होता (स्वांति) (२) —सक्ष्याह, ६६४); राष्ट्र कर हत्त्व मरे की होर से दिन रित प्रत्या जाना वा (सान्य) ११ —पेनसंद, १.

मन फिर जाना

कियी नरम हे विश्व का उपट जागर । प्रयोग—सम्बूध तब्दारा यम मुख है किर बग्रा है । वीनेण—संक्रात २०३): में बही बागती, कि बेरा स्मामी सबर पृथ्व से प्रेम बरुता रहे । जनवप यम कभी मृक्ष से म किर्द (प्रथम— बेमक्ट, रश्य

प्रव फिरम्बर

मन को दूसरी भीर कणाना । प्रयोध-कबीर माणा काठ की, कहि समुध्यमें नोहि । अस न किराने जाएयां कहा किराने मोहि (कबीर ग्रंबाण-कबीर, १४

सन फिल्मलना

काकुरद होना । प्रथीय—पृष्टको का कुछ ठीक नही एक पर मे बारका बन क्याट कर किन्तनी बन्दी धनक पर फिलन श्रान्तः है। 'सूप०—वृण कर्मा, ३९४५, हमारा भी नया ती नया सरमाना सर, सन फिसन नवा 'संूर०—क्रम न्तर, ६५०

सन फीका होता

सन में उस्ताम या उस न होता | मनीय- मा पन भी हर सामि के तेमें | क्या दिस गीडि दीन्ह माति दर्ख (पद०--जन्मसी ५२%)

प्रव कुलवर

सहा होतर । यहोम---सन पात कृत संग्र पटन में व दिरस मनां (अदीर एंडा० कहोर, २२०) मः व । गरीवर पूर्व समा क कर देखि मन भूने पट०--आदारी शक्कीः अपनी ज्ञा बीच पर मेंची, कोपिन के बन पूर्व ग्यु० सार--सूर, ४३१६), और केवोशम केवि पही पूर्वि गीमफल-नृत पूर्वी पनु पनु मेरी त्यारे हिंद पर्विचे कहान० --कैशव २१२।

प्रत फेरका

- (२) मन को हराना, विकार परिवर्तन होना । प्रयोग— मेर्न तब न्यो है जिसे में पम में बहुता है कि में प्यार कावा है परम्यू बदि कमें निर्म में माने से किसी देवता की बहुतकर मिन समनी मो इन पाणी जैसे के बिता को केंग्र देता हो मुझे जनमें होने थीन में कुछ लोग न होनर (भाव प्रव (१, —भारतेन्द्र, ६३५), बन उनी बमय में उन्होंने पंथार की बोर से मन को केंग्र (राष्ट्राव क्षेत्र—गाठाठ दास, ५५८), यह कका भनेक सेपनोधम किन्तार के बाग चुनानी हो स्थी की मेरा जब बेहने के निष् और बम किया भी (स्रतीत्व—महादेवी, ६६)
- १) यत बहलाय करना ।

मंत्र बंदता

स्थान दुष्यों सीर प्रयोगः। प्राप्तेगः निष्यक् के प्रश्नेत् समान्त्रः यक चित्रपंति स्थितिमधी को नाम स्थानी शङ्की । प्रयोजनीत विकास प्रमाग संघन वर्णन्यः सिनी जीतरास्त्रः, ३८

प्रेम बंधना

प्रमाताना । प्राप्ति । चंद वृत्तान प्रतानि भी वानक, हैते

बंदश्री दियों भूर साठ-स्त्र छहत्यका, मन सम्मे स्वर सव। सही बाद्य बन बाद है अहान बंद आता चोलेंक हरियोदः १४४

यन बदना वा बदाना

(१) तम्हम बदवा, उत्पाद होना पर करना । प्रधीम—दिको दिल्लाच क्यांत्रध ने सहर को अस्य पहरावनी सब दिलाम् धनिह क्या पाइ के क्यों किर नाइ के द्रावि नंदराइ के यम दनाम (सूच हि० छ० साथ), इयर कई दिन से पनि। को कृष कर्य देखन र जनका मन बनने समा था (गोदान— प्रमाद, १४३), यदि केटा यम वद्या हुआ र रहना है भी हम कृत में दाव वसम्बन्धारकंक करने के जिल नेमांत्र हो आते हैं (किताल ११)—दोशन, १६०

(२) इच्छा होनी ए। बरनी ।

मन बदलता

विचार का का के परिकास होता । प्रयोग—विभवेशः का इस्य करने भया, इसका की वर्गन्त की कुछ स्तीत आभाग हो रहा है विकाम-मन्द्र वर्गा, हुआरे तांच के सेवी का की मन करन गया 'अनुसार (१)—संशयान, स्टब्स)

मन बहियो इस्टब्स

बहुत बानंद होता । अपोय---वयमा का सम बस्तियो तक्षणने क्या (बीनेठ---एठ १७०, १५६)

वन बमना

वन को बहुन कारा होना। प्रयोग---मोहन की यन काहनी में बन्दों, मोहिनी को यन मोहन याती (सगठ---पटमाठ, रक्ष

मन बांधना

- (१) यन करना । प्रयोग --हमति सांदि कृषिका अस शाहरी कोन केट की सह (कृष साठ--सुर ३६०४)
- (-) मन को जान घारन । प्रतास जाति है पदी पत्र पत्रक साधित को पोल कु मान्त्र सुर १६८९७ हम होता की क्या कर करन बन का पोल करने का सोली । धनाल १६७

सन विकता

सन कियों के बार में ही अध्या : देशीय---चनक स्वत्य प्रति नर्दांक चन्द्रीन तीकी संद्रमणक्षणानि द्वार महे मन दिन्छम्पी - पन्य कटिटें सुन्द : १८॥



मन युकाना

भन के उत्साह कर 3श पर जाना । प्रणेत—गरवेतकर कर यन भाशा बुध्द गया था कि नीर्नियम नहीं वा नहीं है सबी बीनेय—रांत राठ, १६६); वेशा यन भी बुध्ध-बुब्ध का ही रहर या (सतीत्य—महादेवो, २१)

मन वृद्धा होत्र

मन में पोबनोत्पाह का न यह जाता । प्रयोग—तन वृशाह मन कृत न होटें। अप न रहा नश्यक जिस बोटें (पर्०— प्राथकी, १९१३)

मन बैठना

- (१) निकशात हो अता पर सवना। प्रयोग—विनासे के सामने गृठ कोलने की जवाधतेही करने की कलता है कनक का सन बैठ-बैठ अल्लाका (सृटाट (१)—कल्पास, १८६
- (२) सन को ठीक जगना । प्रयोग-- येगा वन वेंड कथा, तो सब ठीक सुधक्तिएगर (१८० (२)-- ग्रेमचट ४४)

मन भरकना

मन कर किया न हीता, बहुत ने निकार उड़ता। वर्षात— किनू वीरत ही उसका मन भटकने सना, नामा सुनना बह भूत गया (दोसर १३)—अझ य, ११), ओह कुने पूने भने गीने भन भटकता किया बनुनों में (बोलेश—महिद्योध, १३८)

धन भर धानां,—उन्नना

- (१) मन में हुन्य होता । प्रयोत—बाबू रावज्याको को सम्म जबस्या में देलकर पुरी का सम भर बावा का (भुडा० (३)—संत्रापास, २५०)
- (२) धःवानियेक होना। प्रयोग—सेव्यर को सनर प्रयास भार तठा कि उसके बाठ मीन कर नका (सेलर (२)— साहोस धक्को

प्रत भर उड़ता देश प्रत भर प्राप्ता

मन भर जाना

(१ प्रधा जाना, नृष्य क्षीता प्रधिक प्रकृति न होती । प्रयोग—तब तो वापका दश अभी कथा नदी (भारती०— रांक्सक, दृद (२) धन के निज्ञान जम बादा (प्रतीम—मै स्वया पर भेट खूँन) और किस सरह मेरा तीव होगा इस पर विचार करूना (माठ शक्षाठ (१)—मारतेन्द्र, ५६४), और अक्ती तरह हमारा यह यह साधका ती हम नाजित नहीं करते (परेश o—मोठ हास. १८९); बतर विशा मन न अहा ती वै बोट बाहता (गबन—पंत्रबंद १६६); इतने में बदाब सरहब का पन पर सथा (सोसीठ- मूंठ करो, १४५)

मेंन भाग

मना नगरा, बारू होता : प्रधोग—कहेंद्र शीश धीरेष्ट्र गर माबा, बह सम्बद्धि कहि बेंदन बटावा (शुक्रसीक दिव्यक्ताता)

मन भारी करता या होता

दुकी या उपाय होता। प्रयोग---वही भोती वर्त के पहा ते कोटकर पाते हुए येश भग भारी हो तथा (दे कोटक -अञ्जोक प्रयोग कर बहुत जारी हो तथा या पर प्रशासी को विद्यामा प्राथम्बर था सुटाक (१) सत्रपाल २७६०)

यस भारता

মৰ স্বৰা

मन कर घरिन हो जाना । चरीन--वर्षि घडी माध्य कन मूना जुरे पांच जैस तम कुला (पद० -जायसी, १४८)

प्रत संज्ञा बोना

मन नाफ होता, कोई दुविधा का आशका न होती। प्रयोग---नाम भाइन दुत्यादि हुम मोगों को धम्मद्री तरह नानते हैं, उनके सम मंत्र हुने हैं (सामोल- यू व्यामी २६७)

प्रज सर्वजन

- (१) बन को रूप्ट पहुंचना या पहुंचाना । अगीग---नयत यनोज बदा यो यम, वै हो हु क्य भानपति पास पाय ताप-यर केतिही समध्यवित- सनाय, ६०
- (२) बन में इन्द्र होता । प्रयोग—बह अतिया या कि विकादक बरह के उत्तर में कोई ऐसा कुमता हुमर सम्म कह देवी जो इस समय उसके यन को यथ हाकेगा (यूंट०— अठ नाठ, ३६२

मन भरता

113

(१) यस की इस्तानों का येप होना। एकोन-संबीर सक मृतक संवा कुरक संवा नयोग, हकीर पंडीत-केनीर, ६४%, वो मन मृत्रा न विशे तकार, जो हरि स्वीय अपन्या कारों ने किनीर पंथाल-संबीर २२०%, यह यन स्वीतन मार

नारा कारण (पद्देश-जायानी प्रथा), चीर दूसर हुन्स सम जीता वस सके साद वर नाएं पानां सुमतेश (पियोध

(२) इत्यातहील होना । प्रयोक—नय महारे स वशा नके कर को अन उन्हीं का बार कहन हाला भूभतेल व्यवसीय, २०

प्रमायम् कर वह जाना, --वाना

विश्वा का विद्यान हो कर देह अपना । अनीय—नवास कर मन मनीय का नवा । यहम्म अगीर्न काला नकी द्वीरी 'द्वीसीठ--वृद्ध बर्मा १९०), यह प्रधा कर्ण 💢 🖂 मन मनीस कर रह अपना है ,प्रदूषण के प्रधा—प्रदूषण अर्मा रह देखका मान कृत के मिलता नव इक्ष्यर बर्मान अन्ता है (बोक्क--हरिओध २०५

प्रम सम्बोस बाता वैश्व सम्बोस कर वह जाता

मेन मानना

(१) प्रकार होना । प्रयोग—शःशा भै निर्म्य सन नानः । शंभा रतन मीदि सै पाना (जायसी हिल्लाकसक) सपुरुत नहि सेरी यस मार्ने (मृत्यहिक सक मार्क)

(२) निष्यम होता । सर्योग—महै कडोर में सबर कार्ने, साही सू मेरा सर मार्ने (क्वीर प्रसाद—क्वीर, १८६) (+), के सिन् मण्य न अस पन माना गण्य पंच दाना रहमांना जामारोद—क्वि क्वार सांत जोय विस्ताल हरी यस मार्ने परी व भाग कर पार्थ कुमाई पूर्व साठ सूर १५३६ (वे सम्दा सदन्य प्रताह होता । प्रक्षेण जनस्याम वी मार्गे मन गार्थी कहा पर्योग कोई सूर्व संदान सूर २३६१ पदन प्रसाद प्रमाद स्थान क्वार प्रदेश पदन मान्य पत्मव काल मुखल सुध द्वीयक प्रयोग (२) वे () भी

सन सार कर वैद्र प्राप्ताः,—शत प्राप्ताः सन सरवतः (१) मन की एक्स का सन मही उक्तक का बाला क्योध-नवर मुन्नि वी यन की मार्ग (क्योग प्रशः)— करोर , १४ महरूमण पर पर पर परार है तह रिक्षि पान काइ (पदण-जामिंगी, ३५१ पर देनों मन गारि वापनी, क्षण पन पोण परपर (सूर स के सार मन गारि क्योचित नाने वही निर्मितन मन मारे मन(राज किया ने करते हैं के प्रपन्न के दिन मन भार कर बेटी (अवपी) प्रभावित हो नाने हैं है (यांचाय-पीव दासे, पर्दे); भण दिस्त की नाने हैं है (यांचाय-पीव दासे, पर्दे); भण दिस्त की नाने से अवसे थान भी नान हो यम थे। फिर का क्या भन मारे कर में परी शहरी (मन-प्रेमकंद, ठ०) (-), बाद भने मनमोहन की सक्तिया मन मारि महा परमार्ग ,मार्ग-हाल्लोध, ३६), भगर तुन्ने कम वर्ष नी भीक-भगव दार्ग नवा

ंश) मिला-विन्न होना, उदान होना । प्रशेष-नदित अंतर पूर्ति कर कुप पाना । यन नारे मुन करे उदाना कुलार-चूर, स्थापन); इर धरि भीर नू मध्य दूधारे । व नांश नक्त रेजि वनु मारे (रामन (स)-सुलाते, सुन्यः । व नांश नक्त रेजि वनु मारे (रामन (स)-सुलाते, सुन्यः । व नांश नक्त हो पन नांश विचार करता, पति लिये, समार्थ क्यानीत वक्त हो पन करे पान के पान करें पान करा पूर्व का पान करें हैं (सान्युठ-सालस्ट्य क्या में पान करें हैं होए में प्रोर शाधव गांच गई वं-व पर में मान करों मोनों के सुवय दमके दूसने फिर वम है (मानन (१)-जेमचंद, १३५७: देखिन प्रयोग (१) में (+) भी।

सन साम कर रह जाना इंट सन साम कर बेंद्र हाफा

मन झारता

ै मन भार कर बंद जाता

भन क्रिक्टर्ड होना सन् वा किस्माध्य क्षान । क्रमाण क्षत्र प्रकार हान कमा क्षेत्र नगाल को कान पा । मन को सना किट्टी हो सन्दर्भ भोजों सनुष्ठ रहन

धन मिलना

- (१) धनुरुष प्रकृति का होया। प्रयोग—नृम मुमानी की भगरते बहुत हो, बनसे उसका मन तुमने नहीं विस्तवा हंगव ,१)—प्रेमचंद १८६), सीर पित हुने भी वणा है नहीं भन मिने बहा साही कामी काहिए (बाहर०—देव० ६०) (;)
- (२) प्रेम होना । प्रयोग—नश्नि है सन मी मिने हरि कीड न कर्रात प्रमारि (ए०स१०—मूर, २१९०): उन हरणी मिनके एने इन यो ने मनकाइ — नेद धन मन क्रिन तक डोक, मिनवत नाइ (बिहारी रेमा०—बिहारी, १६६); कन धार्नद प्रापे सुवान पुनी, न मिनी सी कही मन क्रिंस मिने (धन० कविशः— धना०, १००), मोस्थित खन्नान क्य ने थि० वनाने में कुछ कियी हुई राजी भी; मुदय बहुत दयाने पर भी उनमें म सिनवा था (१५० (१)—मेमचंद ३२०); अब मिमाने ने नहीं चिन्न मन मका तब मिनी दो आतियां भी क्या मिनी कुनिक—हर्वनीय, ५०); में अ अ किसी कारणावश अपनी सम्पान साव होने । समझ्य-ममदोई का अन मिन मेमा (दी कोठंठ—चठ नाठ प्रशः वेलिए प्रयोग (१) में (÷) भी ।

(३) जिल्ला होती ।

यन प्रांदा हरेना

संत में प्रानंत होता । प्रयोग—कृष्य एमी निरुध की अपन कि आज नव उससे यक मीठा होना रहता है (मानः (१)— पेमचंद, १६६

मन मुंह को माना

तीच रुष्या होती (यन की बात कहने की) । यथेय---शरीर पर लगी बोडो की पीडा से कराई देने को यन पूर की जा रहा था , सानठ---यजपाल, १२४)

श्रम श्रेमभाना

मन तृत्वी का व्यक्त होता । प्रयाग प्रदूषावित मन आर्थ को सूरी । मुनत नरोकर दिन वा पृथी (प्रदेश-सामसी). प्रशः

मन मुसता

प्राथमित कर तेना । प्रयोग—कियो नवजंद (न) मर भूतकि तुमरे मन मुसे (नंदशसाध-नंदण, ११)(कान् वनो ति वेठे वहा है यन मृथि परायोज्य कमन शास वेजावर—केजाव, 90

मत में भाषी सनना

- (१) मन वं विचार) का शंधवं बसना । प्रयोग—उसके यन में आशो कर शरी दो, किन्तु मुख पर धेर्य की शीवसना यो (किन्नती—प्रसाद, १७
- (२) मन स्विर न होना । धर्माम—इनके सम्रोत के विकास य भन के करती पाकी है (२१०--मक्ष ३), देखिल प्रयोग (१) में (४-) भी ।

श्रम से भाषा

- (१) यन में विश्वास का होना । प्रयोग---वाधी सह कर् वर्षन मुनावें । वे ताके यन कक्ष्म भावें 'सुरo--हिस श व वर्षा नोद वर्षन बोरें वन कावा (वस्त स्वाह)--- तुलसी. १६
- (२) विचार परना । प्रयोग—अवत प्रथित नृष्ट्रो सम गाई । तमह नोच् विधि बात बनाई (स्थ० (प्र)) शुक्ती,
 ६२४ । तमे बहाई चृत नारिक की बाई मन (स्था० प्रथा० राहा० दास ५०
- (३) स्थान में घरनर । प्रयोग—यह तम् स्थों ही रिधी स आर्थ और रेत कम् यम नहीं आर्थ (सुरश्-हिंध शरु सात)

मन में उत्तरका

- (१) समान्त्र में जा काला । प्रतीय—इस तरह बनाये हैं कि क्या सन व उत्तरता कहा जा रहा है (प्रतिशेठ—विक प्रक. १२९
- (२) मन को स्वीकार होना ।

मन में करकर रहे जाना

- (१) बहुत परिवत होता। प्रयोग--नै मन में कटा जा रह बा पर न जाने क्या बात की कि पह तफेद भूद उम बक्त मुखे हास्साध्यद न जान पहा (मानव (२)--प्रेमधद, १००
- (२) किनी तीलो बात है यन पर गहरा बायान होना पर कुछ कह न पाना ।

सन में कहता

अपने कार सोकना-विचाधना | प्रयोग—विहमे अपन् कह। यस काही (संसठ (काल)—वृज्ञसी, २८६)



मन में कार्ट की तयह बरकार

(सपार परा-सन से काटे सधना)

मन में गुरुता —समना

(१) सन में गरण ज्यान करना। यगीन—कर पृथ्ति यह गरी त्यारे हर्गत न भोजन पार्थ 'क्य साठ 'वर्षको — सर १९८१: हरति न हारे अबि बन म नहीं (ए० साठ— स्वा २९८८): ज्ञान करन नेते मेरे यथ वर्षे हैं (वित्यठ— समसी १८०): हां सोहन भन गरित रही नाती नहींन्, गर्मान । उठे नाग सम्मास उनी मौनित के तुन सानि 'मिलाने रक्षाठ—विताने देवन'

(क) सम को कार देवर । यागिय — मेरे संब के जो कर राज्य निकास के बार सक जीने मेरे ही हुएए में सबसे खाँ (0000 151 — बेर्स्सर 540)

यत में बांड परना – बेटनर

विजी स्थित शाम का धन में दर कर नैजा । प्रयोग— तम मी बह दी का निकित उभी बान पर उनके यन में शास्त्र तर्गत के वह (करवानी—जीवेन्द्र, 30), येगों ने येगी सभी नजाई से बानचीन नहीं हुई । उनके सन में बांठ पड़ी इही है (१५० १९)—जेमचंट ३९२)

मन में गांठ देउना दे॰ मन में गांठ पदना

सन में सन करना, — जात करना, — होता कोई या हैंस होना। प्रयोग— तिय को मन नंदलान ने निय सन में नवलान (पद्माठ—पद्मावन, प्रदः) हिली के परम स्थित दूसरे हरिक्षण पंदिन प्रतर्भ नारायक विष्य के जरूप में साथ सम्बद्धीत विष्ट के जिला हिल ने जाता है। ' 'गुठ निठ—साथ मून गुण २० - उत्तरी तर्शन के दिल म सम्बद्धि भी ने पर का निद्धा है। दिला है गुण १९३

प्रत है समेना ६० प्रत है गहरा

सन में जोर पालका पा होता, पैदा होता (१० व्हेट होता । प्रयोग प्रकासक्तिका र प्रवृत्ते को भीर का, का कन्तों का भोता मा र्ष्य देशकर ही वहाँ में हमना काइकी की (मैं कीतें) — कांव मांव, ११६), किए भी हीनामाय के मनमें चौर वैदा हुया का । भीरी से इस विश्व में बड़ कक कहा भी न कह मका (मानत (द) — इसवट १८६)

(२) कोई बरा करके स्वय मन में सामकित होता। वयोग-सेना राज्या गहरा आती होते पर भी पाने गम में भोर पानका है कि मध्यमद करके सोनों से अपने जिल नम विश्वसान है (ब्रैट०-अठ नाठ, ६७)

सब में बोर पैडना

मन में अर्थाका होती। प्रयोग—"उनके मन में कोई भीत रेड मान ?" "जोर पेंडे या कास्, नाम नी उन्हें ही देशी पहेंची" (गोटान- ग्रेमचंद, २%)

(नगर- गृहा--मन में बोर बैठना)

मन में छटी रचना

बन के कुर्याचना रकती। प्रयोग—नायद दुनिया की दिलाता है कि में सपने भाडवों को कितना जाहता हूं और कब के कुरी पत्री हुई है (मानठ (१)—प्रेमणट, २)

मन में जगह करना देश मन में घर करना

यन में जगह बनाना

वेस प्रामा । प्रयोग—चम्हरूका के यह में कोई जगह नहीं क्ष्मा नका (सिट्ट०—से० सिम. ९२)

वन में जीत करना

नत में कियार करता, मृश्ति शोवशी । प्रणोप—विता गत नदी पुरुषि प्रपर्व, यह करता वन होर (सुरु सारु—संग, सरुद्वर)

(नपान पशन—सन से श्रीफ बांधना)

सन से नुष्तान वटना

विकासी का अधिमन होया । घरोग-पह व समको संघाप विद् कि में क्या हैं । बाठी दहर मेरे हुस्य में एक दूपान उठना बहुता है (विद्य-पेमी, ३१)

सत में देगर पर जाना

सन स अतर पहला | २०१व - सर्वे पन में पटि में तेनी

एक देशाव । काहा फटक पर्याता ज्यू , सिम्बा न पूर्वी बार (करीर ग्रेश)—क्वीर ६०,

सन में धंसना

चित्त में प्रभाव उत्पाल कानाः—दिन में समर काना । भ्योग—हमारे अपन अथान कानी के धन में यह कभी मसता ही नहीं कि दुनिया के और-धीर दिग्यों में क्या हो पहर है (अप नि०--वाक भट्ट, १०६), हाय, हाय, इनया महा पुलित्या नुसने निराधियां, यह बात परे सन में मंगनी नहीं (माठ माठ (१)—किठ गोठ, धूफ)

मन में धरना

सन् भे निश्चय करना । प्रयोग---चरी धारप मण वन पक धरा (रामo अं०)-- सुलसी, ९५४

सन में विजन

धन पर प्रशास होता था यह को और सनना । संवीत— इसका सन्ध होत्यर के यह में चीरे-जीने पैठना है (संबद (२)— प्राप्त सं, १९०)

मन में फटकते न देशा

मन में निवक भी न भारता। प्रधीन—बहु किसी बुगाई की मन में फरकने भी नहीं देना बाहता (व द०—ऋ० ता०, 886)

सम से फलका

बहुत लुझ होतर । इत्तेम—न पोर धन फन्छ। विशे पारता हो है होन (क्टोर प्रसाठ—कवीर, ३८०)

शन में फोरना

बार-बार मन में पोद करनी लोधना । प्रयोग ---पर नरस्थनी की और में यह पेश्व मरिमयण १ पन। यहचीनव नहीं पर बह बाजकस बाने क्यों चितित नी चनती थी, धाने क्यो-म्या हत स फेरनी पहनी यो अत्तर (१९ --फक स १५०

प्रमुखें बलता

ध्यान म बना बहुना, स्मृति व रहना । ध्योग —िन्द्रा हरवन बेक्ठ आहर्ष । नाम प्रदारण मन्दि बमाहर्थ कर्कर ए एक —क्वोर, ३०१), विश्व एक सम बखत हमारे, नाहि धिने मुख पाइम् (सु० सा०—सुर, ४०६७)

प्रज में बात उद्धा

मन में विचार भागा । प्रयोग--- जब में पेरे बन में यह बार

उठी, उन वे नेरा काना-दीमा भाषा रह नगा (मा—कीश्वक, अर

(स्थान वहान-सम में बटना)

मन में बात बेटता

(नमा+ मृहा+—धन में बान जमता)

सन में बैदना

- (1) पन को ठीक जब जाता, यन में निरुष्य हीता । प्रयोग —मेरिकन यहां भी कृतः करिकारत् उसके मन में बैठ गई जीतर १)—प्रश्लोग, २५७), मूरदाय, मुख्याने पन बान मेरे यन में बैठ वर्ड कंगठ (१)—प्रमाद, १२७
- (२) यन पर स्थापी प्रभाव जासना अवसी सवता । प्रयोग --- मृत्यी इसके यन में बैठ यह है (अन्तर (१) --प्रेमचंद, ५५)

मन में भाना पर सुदी हिलाना

वर है बयानी फिरना

यन में ब्रह्मेनन होना । ब्रयोग—अम स्वाम को देश कर मयनवनों के तन में मवानी भी किए नई (मृंगंव—यूं दर्मा, एडर

मन में संगेद उदया

किसी बात का रह-रह कर बन में उठना । अयोग — सायुरी के सब से अनकरी की बाद रह-रह कर बनोर उठनी ची (सिसकी - प्रसाद, ४१)

सन में मुख्या

व्यक्तकरा । प्रयोग—नगर सभी मन नेकु न मुरर । वालि सनम् प्रतिकार बांक्स (राम० (से/—सुन्तमी, ५५०)



में मन में नेती और से इलगा मैंक है जिएक है --धिनका इस्ती, मुद्दे भी में जो मैंन मनी, प्लामें भी मह नहीं मुनी (सर्गठ--हरिसीध, पष्ट), इसीनिए सन में मेंन रचनमार म दीनर भी में नदा हुए एन भी ब्याई पर विवत्तान कर मेंने की सम्पर रहते में (दीना हो --अक्टोर, श्वाद नह नद मो चीर कर्द्द गम पर भागा न मेंच नेते पत्र पर साजेता- गुंह,

सन में सैल करना

सब में दिन जपना के सब में देल भाना

सने में विश्व रक्षाना के अने में बैल भारत

प्रश्न में मैंन दोना देन सन में मैंन भागा

प्रम हैं स्वाता

(२) मूचा वयनाः, प्रस्ट न परना ।

सर है रसना

मन पर गरण कलर होता। प्रयोग न्यून परिमानने मनो हर मृत्रिक को प्रतिने प्रतिनामी प्रदूर-सि≎—मृं/प्रदूर-सन्दर्भ ज्ञानक

(१) विकार राज्या, बावका । प्रधाय-स्मार प्रमुखन प्रहे भाको सर्वात देव नदाइ सुर स्थार सुर ४०३१

🕞 हरण म राष्ट्र स्थान तना । प्रतीक जारी की नर

रोलि सभावें । वें अवसे निहि कन नीत वन स्वार्थ (सु० सा० --सुर ४४६

धन में कुछ होता.

यम में रह-पह कर रुप्ट होता । प्रयोग---वृति मुनि होए परत सम कृता (राम्भ) (क्षा/---कुनवी, ध्रेश)

यन में समाना

नन में बस जाना । प्रजीन—पूर को निज कर स्वाप की है पन बाह समादी पुरु सीठल पुरु १३१४)

श्रम में होता '• सब में सर बरावा

यन मैका करना या होना

दर्माद करना वा होना । प्रयोग—सूत्र असि सब मैलो वारो भोजन वान प्रतो (विनयण—सुलसो, २७२ : तृत उटए के दिन सम्बाई । यान कोड यन केलो गारि वर्ष (मेद्र्य प्रयाण—नद्दर्भ राज): हो यन केलो न की को कयु प्रव प्रारम् केलियो बील हजीहें केलबर—केला, १६), प्राया देवा सापने, इसका सब प्रशा भी केला नहीं हुवा (१११० ११)—सेसबद, हव

मन मोज करना

वन में दुर्भाव माना, कर होना । प्रयोग---पुम ३०४) कोर में कम म बोटा करना (सेंगांध--प्रेमक्ट, २०२)

वन प्रोदना

प्रवर्णि का विकास को दूस में और कम्प्ला, प्रदानीय होता। प्रयोग—परिभिन्नि सामे पर मेरी वैध्या-पृक्ति तुम बीना। की बोच में ही सन बोड से तो काई सनक्षाती, सरगरी कार व होती सुक्षमाठ—पठनाठ, १५६।

यन ग्याना

(१) श्रेण्या पृथी करती । यसीय—स्ता हमारी नव यह राजे, हमारे पर ननस्तर गई (सुठ साठ—सूरे, २३%६ संदर के बाधा कर मूचन करक देश एक नायु सर्व बीस रिश्या शर्मा कर है करते में संपत्ति १९८ स्थापन एक न तर वि दर यह मान महन मोहन कर ही ना राजा पिए इस करने का मान करा न स्ताप स्थाप साठ सा न कि गों। १९५ करनारे बान हर प्रशासिक शास राम का इस्ति का साम हमार कार्नो का सुराग्य — जी। लीव, १११), मुद्र, नियाद, व्यवशासक का वज प्रवान है अभू कानक में (प्रवान-गुप्त, १६); किए भी कभी कभी भए। यह रक्षते की यह जेवलें बेंद्र कानी (बाहरव-टेडव, २३)

(4) मन बहुनामा : वयोग—मध्य कृपान वयट दर्गम विन् वयी राज मन नागर (40 सर्छ -सूर, 8777), दनी लिये कि बहु केन न रहा था, मून्ने विन्ना द्या था, जेना यम रक रहा था (सर्मठ (१)—पेमेन्ट, १६६); जान श्रवन यम रक्षमें के लिए इंचर-अगर की बाद करने नमें (प्रैलाठ— ऐम्मंद, ९४)

सन प्राप्तः

- (१) यन बीन होगा। प्रयोज--जेर्न वाका वस रखें, व् जे राम रमाइ (कडीर धेवां०--कवीर इ
- (२) पेन होतर । प्रयोग---विद्यं कर चन् एक वर्धा तम रोहि नेही सन काम (सम० काम)-- शृहको, ६१

धन रह जाना

(१) यम नगर रह माला । प्रयोग—साती हो से यम रहि गयी । यदि विवर्ष की कच्चा भवी ।सूठ साठ—सूर, सठकः।

(२) इच्छा पुरी हो जाती। अन बाला होना

अनुरक्त होता । प्रयोध---वृत्त्रारे जरन कवल वन राता गृत विर्यूत के वृत्ता विश्व काना (क्यारे क्या०--क्योर. २३१); असं विश्वेक क्या देह विधाना । तथ तथि क्या मृतिह यह शुक्ता (राम० (क्या)---वृत्त्यती ११

श्रम रीता करता

सन की बाम कह कर धम हत्का करना । प्रयोग—करना सन रीता करने और वैदा भरने के तिस वर्ष मुख्य स्थानी जीवन कहानी मुख्यों तो केंगा करों सुरुणि— संस्कृत अस्ति

ह्रत समना

(१) वन की क्या नगना। प्रयोध—वद नदन वस भीन्हे राथा घरन गए थित नेषु न भागठ (यूत संक—सूर २००६); देश पन भी कहां ननता न दा (तिसनो—प्रसाद, घप); दो तीन दिन दन कर कुल्मी की पाठधाना नरेर गल्नो का नरकार में परावक नमा आया तरिक की वहीं सामा (कुली०— मिराला, १२६)

- (२) लगन (१४६), एक्श्वना होशी। प्रयोग---तन धनर गाँउ विक क्लम में य नमें यन समय मानि मन में स शब बाला--हरिक्षीय २११,

यन द्वापना

- ् र रन करता, आंतर्य होता । प्रकोश—सन कय कथन कर्तात ही सांबी में कर तृष्टि वसानी (सूठ साठ—सूर रज्ञात ही सांबी में कर तृष्टि वसानी (संसठ (क्षण)— तृष्टि १६) (-); वारायत क्य होत कर्तार कृष्ट करि कृ समाचे एपाठ एखाठ—संधाठ देवर ५६), जातरे भी तो कर न वपानी पत्रव पत्र वी वस तृष्टे बाद बया (साठठ ए),— प्रमुख्य १० , एक दो बार उनने प्रमुख्य प्रयोग भी किया कि बद वपनी बहु को कृतायेया या इषर-ज्ञार सन् वस्तावृशा क्षत्रन चाइक १३२)

यन माना

प्रेम करका यन सपाना । सपोग—पूँचे यह साह है गम भगना, यक्ट मर्थात कोम कोम कुला (क्कोर प्रथात— क्कोर, २१८६ स्थि नावेपरि पूज कोमाधा । क्कब किनेचे भी कम कावा (पद०—सामसी, ३४९); मह कहारे पूर्ण सभी दिवाद । में तो राज-भाष सम साई (सुर्व साम-सुरू, १९०३); ची कहिन कर्म मनेठ कुलानिकेन पर यन साइही रामठ करकी- सुमसी, ७२५); यह जगीरा तर्थ करपां कोही तो कम करम कीम साठ-साठ काठ, १८)

414

धन होता

यम जीउना

पृष्ठः श्यापात् द्वा ध्यान सामा । प्रयोग-ध्यार वा क्या किर काले कामेल के अनेक वर्णनायों की चौर मोट नवा शेमर [२]--असे ये. ७०

हत, चयन कर्म से

पूर्ण क्या है। प्रधीय---वस, बन, जम वे स्वविः पठावत बम की तुरत पनानी (सुर सार --स्त, सुरक्ष), अदिन की-तिका पहि प्रधिकारी कानी वस कम बनन तुरहारी (समर (बाल)---सुलमी, १२३)

मन माधनो

सन की बात में करवा । यशीत—स्वयम वन स्वी काल है यन अपने निवि होड़ (कडीर प्रधाठ—कडीर, 574)

मन साफ काना,—रश्रमा,—क्षोता

हुद्दर में कोई दुर्भाव न होना । प्रयोश—सिस्पर्ने नहने दानों को भगनायन जुन साफ रणमा पर्गहरू ग्यूप्टनिक—साठमुक्यूक, १८०३): यहके अपने यह हो। पाप नाफ को जिले प्रमणा सम भी साथ हो पापना (दियक—प्रमो, ५७); जिल तरह कर भरी मधानक में पंचों ने मुख्ये निरुद्धांथ कहें। दिसा दशी सपट तुम भी मेरी भ्रोग से प्रयुक्त कर साफ कर लां रक

१ - श्रेमचंद १५५ १६६१

धन माप्; रसना

दर सन स्टाफ करना

मन साफ होना

देश प्रत साम्य, कराना

यन से अकता, अहरता

सन की इच्छाओं के उत्थर विशव पाने की कीशिश करनी। प्रयोग—किंद्र पनि नाम किनाम है निहि पटि बांबटगां पन्ना दिन कंट संबंध है जिल विट यन माँ भूभागां (कवीर एयाठ—कवीर १९); भी शन्या को यन नदी नदे ,कवीर गुमाठ—कवीर १९९

सन से दूर होता

- (१) जुन सामा । प्रयोग—स्वारी होति न निव हैं संबह भिन पंत वर्ग वर्ग संदर्शत (सुरु सारु – सुर, ४५४४)
- (२) यन व सिमना।

पन से देखना

निक भी भोजना (किमी बारे में) । प्रयोग---वरमारच स्थारच तथ खारे भरत न सपनेहूं चनहु निहारे (राम० (स)- सुकसी, ६४७)

मन से निकल जाना

बार का ब्यान में न पहना । प्रयोग—किन्तु क्या तीनर के नर के भी ने निकल गये हैं (बीमर (१)—अहाँ य, ४९)

यन से निकास देना

हरव से दूर कर देना । प्रयोग—अनुर मेन के दल के लोगों को चीर कील करियों की यह नहीं आसानी में यन है निकाल नका का (जेमर 19)—सक्कार, 20)

मन से मुद्रना

यस ने पूर होता । प्रयोग—सीकी नामा-पुट ही को उपति एवज जो पूर्व के दर्जान को न नवी है कम न पूर्व (प्रतिक कर्तना—समाठ, १२९)

मन से सहना

🗽 सन से क्फना

मन सर्वधना

यन को स्टांबना, क्या के दीन दूर करना । प्रयोग—हमरें इ.स. इसि है में प्रधानों हो अने सोगी सुरु सारु सुर अन्दर्भ

बर माना होना

दरक की विद्रोध अने होना। क्योग की नह का मन इनक है। भी भारतील अक्षाल क्य



सन हरना

आकृषिन करता, मुखाना । प्रयाद-च्यंटक वाह हाति कन भी लिंग गय है कंट (घटण-साक्सी, श्राह), तेंकू विने भगुषपाई के सब को मय हार बीन्दी 'स्वारः—स्व. १३३', भवपू विश्वाति विभिन्न रचनो क्षित्रने व्यत्यन हुएँ रास्त्व (बाल)—सुक्सी, ३२६), हुएँ हुएँ बोम्बाँड किमो बित हुंगति हुएँ, हुएँ हुए बर्मात हुएँदि यह मान के बेस्स्तव (१)—केद्रव, १२३); और यह जो मेर विश्व का यम हुए है वह है मुहन्तव —अव नाव, १३

सन हरा करना या होता

मन हत्का लोका

सन से जिना दूर होती । प्रतीय-व्यवसा हुधा न्यारे वारे से क्या जन से एक कृंदा हट नयी । वस्तारा पन हरका हो गया हुट(० (२) – यक्षपंत, २८७); कोनो का मन हरका था[†] संकाल-व्यवस्थ हट

मन हाथ में करना

बता में करना। प्रयोग — धन करि हाथ नापने रामें जिले न कह दूजा के (सुरु साथ स्मा प्रपान का पनि भाग लगाय मार्ड, रस ही रम में मन हाथ के बीजी मतित सम्बद्ध— मतिसाम, १६०); मन हाथों में काने का यस कोटे खोते हाथा में है (बोस्ट—हरिकोध, १०१

(ममाव मृहाव—सन हाच में रक्षता,—सेना)

श्रम हाथ में होना

मन बचा में होना । प्रयोग—कहा करी मन हाब नहीं 'मूठ माठ-- मूर, बश्ठक में वह में न माब रहे द्वारे बजनाव रहे कंस मन हाब रहे माद रहे माद रहे मन मा उत्तर पहर कर रहा का रहा माद रहे मन मा कही किन जाति रहीम मन होने १० वर्ग न मने तो उत्तर पर का रहे का माद रहाने १० वर्ग न मने तो उत्तर पर का रहे का माद रहाने १० वर्ग न मने तो उत्तर पर का रहे का माद रहाने हैं भन-वर्ग मादा दोसा पर रहाने हैं भन-वर्ग मुक्त-वृक्त कोतो है (बोला—हरियोध २०६)

सन दाथ से बना जाना

मन वस में न होता । अधेश---वह सुंदर क्या विनोक्ति सन्दो मन हास हैं मेरे जायो हो सम्बो (मार छेट (२)---भारतेन्द्र, १७२)

मन दायों का लिए रहता

दर इंच्छा पूरी करती। प्रयोगः —तम पर विति दिन तमा। मन दावीं पर मिने रहतेवाली प्राधियां कहती भी वि समके पार्च धनवृत के हैं, नहीं ती कीन एक निक्रमें व्यक्ति को बंद-बंदे विका सकता है (धतीहरू—महादेवी वर्ष

मन-गरंग होना

सन-कर्म होता

- (१) शीतक होता । प्रमाय-वास्ता है न वीम यन की बान है बहा वर न यनकाँ की गुद्ध (सर्मठ-हिन्दीध, बह : बहन्ते के आदे दर्बन समयो बाह्यल पुरस उस बहना है सिमने मेरे बहुए वा जयते ने (चारनी सबर--एफ, २३), हम किसी की प्रेम-वस-नृत्ते दृष्टि की जयर जठने न वस, कीई बननमा जवान वपर करना रामने का माहम नहीं कर सकता (संगठ (१)--प्रेमकंद, ३१४
- (२) किसी बहनू को देशते ही असे पाने की इच्छा करत बाना कर्मका ।

सन-कार्ता होता

यन के इच्छान्सार होना । प्रयोग—सोनत स्वाय यही रहे श्रीते । भए नवनि के यन के बोने (सूठ साठ--सूर, ६५०), बान धूनारे वही रहि बाए हो, दोनि रही है सदद विव बोनी हानकार्वस —सनाठ, ६६), तेरे मन की दुख पणिहरो यह बीन्सी बारज सब करी (प्रेम साठ--तठ काठ, २५१)

प्रम-बद्धावन

क्त में उस्ताह वैदा करनेवामा । प्रयोग—धायो गुगावत क्य क्टावन सर्वाह के मानंद भयो (tiuto प्रथा०—राधाठ क्य १५

मन-योती

मत में जो कुछ नहा हो। प्रयोग-जन्मे भी नवभाव प्रगट करि, बचने मन को बोनी ,संच साम-स्टं, ४-१०)

यत-यांगी

इन्सानुषय । प्रयोग--- इनिम असीन नदी अन सार्थः (राम् (स्ट)--- तुलसी, ६०१

शतन्त्रे वर्ग्यका

य्कित् प्रोक्की । प्रयोज-स्थानिक भी हम बावन करके क्षत्र क्षत्र वासने के धनसूचे बाध रहे में (वर्गण-नागाण, १९८५)

धनाता

प्रामंता कामी । प्रयोग—सकते वर विभागण धाम वर्गाः समाद प्रदेशः (१८४० च्यो)— सुलामी २०३ नधाय अधानी जातिके मनदि बनायो देशः कृषकः—सिरधादास, १३

समोभाव चेंडमा

यन का भाग प्रतिकृत होना | प्रयोग--- प्रतका बनावान साम क्या हैं& तथा कुछ-पुध मेरी समझ में सांसा कुळां० --- निरस्ता, भूद)

मनोग्य श्रमा पहला

मनीकामना अपूर्ण रह वाशी । बयोव-व्ये समृ कीला लोहि विमु पूर्व । नेहि वे परेश वशीरण शृधे (राम्य (अ)-सुनसी, ४०२)

मनोरध पुरवना

मेनोकामनः पूरी होती (चरोम---प्रमूप क्यम प्रकोरण पंथि रामः गासः पुरुषा ५३

(समार वरार - समाग्या पुत्रना)

सर कर हो।

किसी भी संबरणा संनग्ने । धारोग यह बहु सर्पट स भी नहीं का सकता दीला है जोड़ से १५२ पन कर नैस्ट्रांग काम समायत होता है कहा शहर भरे निवन्ता चाह ना सर्पट भी नहीं निवास सर्वता देहाओं , हरता समी १३५

मा जाना

(१) सम्मान्त हो जानाः प्राथेन — योग किए पर नया जानाः
 कि येश भिष्ठलेख के प्रति प्रथ साम्राणाः क्लिक अग्रा

क्षां १७६); यह फटन, यह अध्यु, मन्य की काता बहत क्षी है क्षण्यातर है यह बनुष्यता क्षत तक नहीं वरी है कुरु---(दनकर, १४५)

- (२) पेद-पोको धा मुख सामा । प्रयोग—पहा कृम्हर रुनिया कोड नाही । य नगजनी देखि धर आही (शम० नाहा नाहती, २०६१
- (३) क्यम हो किसी बच्च का हाय से माता रहना ।

वर सिटना

चम करते-करते दिनव्ह हो गाना । अधीत—स्वा कहूँ, मै नो इस बार कनकते वे खाकर यह विद्रा (पद्मि० के पञ्च— पद्मि० कर्मा, १८५

मर-केपकर,--पश्चकर,-- मर-कर

विको जवार, वर्षे वयान का परिषय है। प्रयोग—
अक्ष्यर गाँव ऐते हैं कि जिन्नानी मेहनत से आर-अपकर
उन्होंने जिन्नान-पहना हो श्रीक किया है पर कविता के
व्यान्यार से पनित हैं (पट्टम प्रांता—पट्टम० क्षानी, २६६ :
ये पर पर कर कमांड पीर पर बंड बंट भीज उराय और
परक पीत्रें (प्रथम—प्रांतवर, १७०); कान कर-मर नारें
गरं-गर से करें (बीस०—हरिजींछ, २३०), विकास प्रांतता
पूर्व जान साथा है, दूसरी जगह में भी कभी पट्टमा
होता। अंग यह वार्ष है तो बर-पण कर क्षम पर
जिन्नान से क्या कायरा हुआ है (पट्टम० के एल्ल-पट्टम०
प्रशं द. .

बर पन कर

े । प्रशंकाय कर

भीवे साव करत

दं सर-साथ कर

(समार महाद । इस प्रमुक्ता)

प्रश्या बनना

पार हान्यों। स्थोय—समामा साम क्या सहि हेल् प्रथम मुख्यों दाव

"KEG

) ये पर प्लार करेका आहेर अहंत तुस है से मान्त । प व नाहरते है मध्ये की आगी कहा है पुरुष्ति । । प कु केसा पार्ट की सब होता माहित है। जिहे सुमने नाहा, भाग पुनिया उस कर घर करो है । अस्तर-राठ देठ, ५४% में हो। इस पर बस्ते आगे भी। (यूपस्ता-टेठ सठ, ६५)

- (२) हिरास होता; युक्त पाना; बहुन प्रयस्त करना । यात होई प्रकार सरपनी, साई ब्रुग मधी में (कुछ साठ— युर, २६२०), सर का लग्न म्यान की घर में भोग होई स्वर्गात । अब कारदी बर प्रमानी नाइस म जानी अधि । युवा साम परि प्रदेश (लंदर प्रसाठ—लंदर, १८४), करि कीक कारब द्वारा परी रच नाया एउ का ब्यान (युव करिस न्युगात परी रच नाया पुरु । युवा नाम प्रोम सिर पारी (मारु द्वारा (१)—सारविन्दू, ४५९), प्रकात विमा है इनके पीस मरसा है सोदान— प्रेरमद, २४
- (६) बहुम पर्यंत करना । प्रयोग—गजाब पाने पुन्द श्रम का राषणा मुनने के लिए भरते हैं भी ओउँ० का ताल, इसके
- (प्र) भरतन्त्र निर्मित होता। घषाय---पोर्ट-पोर्ट देश लोभवश दुलना पोपक माम देवान करते हैं कि उसे कियों देश के पन्ने मदन की फिकाने दिन रात काले बदने हैं (फिलाक (१)-- सुनका, का

मन्ते की फुर्सन न होना

वित्रकृत वीको न सिभता। प्रतरेष—दिन कर दावाजी कामार भेजते पहले हैं, अरबल की कहा नाना है। वरने की सुट्टी मी निन्दनी नहीं, नजर-पद्म नोवंबर निदान— प्रेमक्षद १६१।

सरने पर भी नहां

कपी सी नहीं, किसी प्रकार की मही । प्रयोग—सीर शबकु मोर पश्चिमातः। मृत्यहं न मिनिह न न।पटि पाठ (शबक (अ)—सुनासी ४०६)

श्रप्रमुखा होना

हरितः जो साम को नगम । प्रशेष—माणक कोना है, कार ब्रायम्बा रोख क को है, क्लो किरे का कमोना बौर लिकोण पतन प्रनंत २६६

शरम्ब करना या होता

 (*) राज माध्याः, पृष्टेका करली । क्योग - कैविन करों सा सभी एक से हैं, धुम किस किय की मनस्थत करों गोराम -प्रेश्चर, ४०); यू विकार में मा तथा है। जह मुओ दूसमें पर दूस है, देवला काम की श्री श्रीतमात होती है। (सान् (१)--प्रेमचर, ३१७); किंतु परित्र की शाई शाहक की मरमधन करते हुए पानने में ही और आमें जिस्स--उदक, ३४

बराब स्थान

- (१) कार्यका देवी । अध्यय-स्थापत के विका कीत्र प्रम दानी के नगर सहजा है कीत हकता दिस्त पर प्रश्ति कल सकता है (स्तव्य १ - बोसबंद बदश
- (२) विगरी बात को बनाना ।
- (१) विशे नागड कास्ति को प्रवासः ।
 (नमा० नता० सग्रहसन्तर्श करना)

नरा क्राना

व्याहरू होता: हैरान बोना: गान होता। अधोग — में ती क्रम जा रहा हूं इन काव्यरों के मार्ट (रेजमीठ⊷काव) दहीं, पक्ष

संबंध होता

- (१) विस्तान, निभवा प्रयोग का वाहर कम हो गया हो। प्रयोश—अंत को स्वर्गीय कम्मू हरिश्यम्य की ने वसी हुई हिन्दी की किए के विस्ताम (गुणनिक—वाक्सूवगुक, ३१३) पृथ्वीक्तम ने हमारे देख के करे हुए हिन्दी स्थापन की पुन-जिल्हाने म विस्तास कहा दश्य किया है, इस हम मभी नहीं क्षाम कुछन, मैंडरें अपन, हुए।
- (२) क्षी । अयोग—किनाव काके ने अब अपनी साजका चन्नद्र की और व्यानिकरी अर्थ मुना हान्यों तब धरानी उन्न

बरी हुई हाजत में की मेर्र पन में यहकी शॉनिक्त यह हुई कि तमके मुंद पर एक तमाचा यह हूं (जहांजरू हुं- जोशी, ४९

प्रत को मारना

कु वर्षे को और दूस देना । प्रयोग—नपना नहा समीन मृत् मार्नि संगक्ष महत्त (शासक (या)—सुरुपी, देशको, वेर्ष यह शाहाद जू बीयन को देने किन ही की नाम मार्निन दे मार्निक को रहियो (शतक कांद्रस—धनाठ १०३

क्षे जासा

क्याकृत हार जाता; किसी बान की पाने के निया बहुत ही आतृह होता। अयोक—वह नवस्य कर दोन है कि इस लोग बाहरी ठाटबाट कर इस अवस्य बर परे हैं 'गोगेफ— 80 80. प्र), जान के अस्मान की में के बरें । मेंन बनने को मरं बाते रहें (पुधनेठ—हरिजीध, १२५

अयोग गहना

कीय करना । स्योत---राती बांदू, विश्वनी राती, वी वर्गर गहै बरोर । उस वे अनिर्मेद सराहती एक विश्वर्य भीर विहासी स्थाठ----विहासी, प्रथम

(शबाव नुहार-समोद्य प्रकटना)

संगोह जालना

महाका और वेषस कर देगा। प्रशेष---श्रीक राखे वृदय, सरीकि राखे पानमाझ केंग्री पीर्ति राखे करराज कान्यों कर सं (मूचन पंथा०---भूधम, २०५

अरोही करना

सीया-ताओं करती । प्रधान—तय विश्व को तिक कोर प्रसम सँग पीन्हें पर कत करत जरते हैं। एक मूर्ति तृत हरूकों बेची गरवम कम नजरी होयों का होती (हु:0—50 Sto stic

मर्म का भारत नगता की नोट स्थान

हुन्। पर गतरा प्रभाव होता । इस्त - मा प्रश्त प्रवाहिता पीर पुरुषो और मानो पोर सरस्य का रक्षा । होता की। कवी। प्रशास कवी। २४६ | हहा कही कर राज्य व आहे नहीं मानो की अस्ती भूत गांत स्वाहित्य

मर्भ की चीट जाता

रे॰ सम का भारत जाना

सस को छुलेगा

सन का नक्य की बहराई तक वह बना । प्रयोग---वर सक कान करतो हु , उसके यहां को कु को ,तेटेहो०--हर्सओध, ७०

सर्म लेना

भर नेना । यदोष---वरह बाट घट बमिटि सब नेड बस्य विक्त बाद (समेठ (च) - सुक्ता, १५६)

सर्वश्रेषी वाले

वन को योजा पहु वार्त शामी कार्ते । वयोग-वड़ी कुण-राधिनी वय-वची वात है हैंदेहोठ--हरिस्तीय, यः)

मर्पादा के दार सोप्रता

मर्थारा का उस्त्यन या उपसा करती । द्योग-होधि-परवन पर वन न चमत कथा एग हो में होती की एगीमो बन्दी दांच दी : दिन ही में तिन-मध कामि के कपाट तोरि कु चरित प्रधोत की को परनम विकासकी (प्रभ० कवित-प्रमाठ, १८-७

प्रयोग धापना

वर्गारा निकरित कामी | प्रयोग—विक्षीयत क्रफाद वर्गर मन बोद बदाबत (संधाः प्रयोज-संधाः दास, ७१२)

र्वालया पहला

भोद नवाना । प्रवास-पने पनिया दुनिया लागी, ईट दवानी मनुशास्त्र (नमु०-सम्बन्ध पट, ३५)

মন খুলনা

बुराइयां पूर्व कोनी (प्रयोग---यस रहा है बाव सब है धरू रहा क्यों समा को को न हम तमके दिस (कुमतेव---शृहिस्रोध, ६

श्रीलयाग्रेट कर देना ा अस्टियाग्रेट करना

बरोने काना

कार्यक्ष प्रदेश गृहती प्रथम नव रता ने समान क व ने ना ना ककहा - व्यक्तिक ब्रह्माल पर

अधास करना

िन प्रत्या । प्रधान कि पद्माद र ए किया है वहबार पे सा पन को पर शह सहज प्रधान है पहेंगाल कि प्रशास

मष्ट करना —धरना,—आश्रना

सूप रहना; न दोनाना । प्रयोग--बोधन श्रवाहि वनक इसही पट नारहु अनुनित अब नाही (तृप्तमी--क्षिण प्रश्नामा , मुन्यो बानुदेव क्षेत्र नंदमुषण आवं 🗶 🗶 नहीं विच बहुत मुन्ति वात पोरिया जाय कहिन्दै वहीं बद्ध पार्ट (सूर---हिंद प्रत्न कार); उद्देश करके क्षित्रमों से आवं नव बोई नहीं कोता । पर पट्ट मार्गन्य बीत वकता है ,पूंठ कहात----पुलेरी, देव

मणु धरना

देश मध् करना

शष्ट्र जारता

देश मध्य करणा

मन भीवना,-भाजना,-भाजना

म्योग—दीने पृष्ट वृत्ते देश्यके को दुनि देश रह की दूर न प्रयोग—दीने पृष्ट वृत्ते देश्यके को दुनि देश रह की दूर न को भार्त । सार पनके उस भी तल के दून इस उनके निम्न भी भूत साम (स्वायक-सहमान्य, स्व), दूस को ही की उनकी मर्ग प्रीतारी जानी की इशायक हमाय, प्रश्ने अवस्था कोन की हो गयी भी वर संभी नाने भी न भी तो नी (कर्यक— देशबंद, ह); नाक्ते का क्षेत्र कुट याका अ अ अन भीनन साम, स्वय बस्तार नहीं है, भीना कर को कुल्लीक—निमाता, १४।

मन भंजना

4e अस अंग्यता

ग्रस शीनना

दर अध औराना

संसक्त की कमर्ज

परिश्रम से अभित धन । प्रयोग—मेरी यह दर्गन इक्षीनय म है, कि अबा है, भीन मांगता है। जनकात की बधाई आता होना तो में भी गरदन प्रकार न काता, बेरा भी भारत-मान व होना (गंग्र) (१)—पंत्रभंद, ९३)

মুদ্দত বুঁদা

मध्य कर देना । प्रयोग—सीर्व राखे मृगन मगोव राख पालसाह देनी पीत्र राखे करवान राज्यों कर में (भूवम राज्याः—भूवम २०९): जब भी लिनको सर्गन महि पुन गुर ग्रेंड बनाइको राज्याव्यकाः—नाधाव दास, १००३): मिय-सने नहीं हैं कथी मानकाले जन्होंने यसस कर न वाले

मेमर स अस्ताकः

पंचयम वर्गत होती । प्रयोग—वर में जनस्टा ना, जिस ''सना नहीं बन्ताय' कहा है (कुमीक-निराक्ता ५०

ममाला किन्त्रता पर होता

नामको भिन्नको । यदोव — यद हम को एक ह्य की देर वही बारको । कलकला द्याना हो भाना है । यस श्रुध । हमारे शक्ष मी बनावत है । यह बही बाटकी है (बाटोठ — जिल्ला, १३३

सम्बर्ध पर्यस्य करवा -- समाचा

वाममृती करती । अधीय-व्यक्ते सम्बा समामा है असे भी परका करते हैं दिल्लाक-देवलव, १४६३; सबर की शवमध्य रापरंकरण करिए की फिल्ट का दीनो ताल का रहते हैं जो भागी में सम्बा पालिस करना बाहिन् पितर -अदंक, १८६

प्रकात स्ववाहा

रे॰ सम्बत्त पान्तिहा करना

बस्ब-प्रीमा होता

कोई पण्यात स करने गामा मस्त स्थित होता । एयोग---वे तिर से वेर नक सम्मयोजा से कवीर--हरफाहिए, १४७)

प्रधानक प्रत्यतं करते।

- (१) मध्यान विकासा मा गामा । अधीय-नामनं भागतः की दिद्धियों का मन्तक क्रमन कर दिया (१४७ (२)---प्रमुद्ध २०७
- (३) स्वाधियानी, वीरवपूर्व वनना ।

(महा० म्हा० - प्रध्नत्व क्वंबर करना)

प्रधानक भागता

नित की करावत करकी, मारणा १ अयोग---दुमपन सामा-भीर निवह को अन्तक कारी (कृतका--गिरधादाय, २२

विकारक की खराक होता

व्यक्तिक भोधा होना

(१) कुछ समझ न धाना । वनीय-विषय भी प्रसर मेरर किस बढ़ होतर का रहा है, बढ़ि यान होती का रहा है चौन वस्त्रियस मोबा जो रहा है 'बालाः क्रमादिक, १६६ (२) जह मुर्स होता ।

हरवासाध स्वाना

एका ही बाल की बाव कार कहे जाता; जिब बचनी। शहोत-कॉर्ड विकारकों की यह नगर शह है को बॉर्ड वेंगी के लिए सहनामय सवासे हुए हैं (मानव (8)--एकवर, प्रदे)

प्रशासन का पेट भरना

महास्था भाग सन्द

स्वार्ट-अन्ता । धरोग---चर में बहाधारम अवा स्टब्स है त्योदान--प्रेमक्ट २४% दलने अहामगर के बाद कर विस्तान में ग्राम. राभी दाना में क्य किया साठ सीठ---महातदित, १८%, नगर यह कृष्ट्रारी बीच है, विकट कारक चर में यह प्रहाशासा कृष्ट कर यो हो रहेल्यूठ---मृद्यांत १००)

महारधी होना

मनर्व का प्रोप्त होशा, बहुन स्थाना-सम्पन्न होता। प्रयोग---हिन्दी में अब सर-उद्दे बहारकी पेदा हो हह है। विद्वार के पन्न पहुरु जारों दर्ज

प्रकार करें। प्रस्तर

भागक विकासना प्रदान पर । सारायन र ०२ व्हारण्ड सामान कि पांच प्रदानका जी। सहरहेती सुरु

शहरत भएका सरीत पहलना

कर्मना नामा प्रकार का प्रश्नेत हर ६ ००० ०० प्रतीत करिया प्रकार की भी प्रश्नेत मर्थाण दश करार कुल की काल नहीं है सामक १ फ्रेस्ट्रेस्ट्र

साइन से पापना

निवास के समान आहर करका । प्रयोग अंद की है

मीचिन पर मीनो नदा नाम एक मिनही ; दक्ति कोदन दोना गरि देही एक माहन में चर्चित्री 'स्टर--हिo झाल माठ)

प्रांग संचारना

वालों का भू कार करना। आतंत- वस् नृष शारी तीहरें, वर्ष वर्धशहरारे की सान । वा पान कवारे पीय की, का नित बंद सुमिरे राम (करोर प्रशाय- करोर, पुत्र)

(तमार मृहार-मारा पट्टी करना,-वाधना)

भाग करण में शहरता

िया । भीभागवनी तथा सनानवती रहता । प्रयोग— भागर भवनि राज राजी तथ सावह कोल जुडाती (गीहा० (बाव)—सुकसी, भ्र)

(वनरः नृहाः-साग-करेक से सुकी करता)

मांडना

भवाषक करना, नृधारमा । सर्पाय-नीते ही अरम में उनमें भवनी योजह कहातियों का एक स्वह स्था साथ-संबार कर तैयार कर निया था (हुठां० (१)--सम्बद्धाः २२

मार्च का ठाल

वराक्त प्रवर्तन । प्रयोग—कभी किभी आई के काल ते मेरी वीठ में चुन नहीं नवाई (वंद० (३)—प्रेमक्ट, ३७०)

माई-बाप समध्यमा या होता

- (१) यम कुम नमस्या या होता । ध्रयोश—वैसा ही कार्र-यात्र होता है ।द्रयाग्रस—देव सव, ३४४
- (२) बहायत । अयोग--धारीको का कोई साय-नाप नहीं है है कि के रेणू ६० पर न जो, जोग हमार्थ सहन के दिनमा दसार १६०

मान का हाना

े ४ र टो प्राप्तः प्रदेशाः दुशा विश्वयवस्य को अस प्राप्त प्रिप्त का स्थान मुख्यान स्थान सुक्ष मुख्यान स्थल

न नम पुरस्त करना

१ संपर्यत्का प्रकार करका । प्रतीका जान ही संपर्वकरण १ वर्ग प्राथमिक समस्य पूर्णी करून सम्बद्ध ६ इन्ह (२) किथी की मृत्यु के बाद उसके वर आहर दशके परिवार के लीगों से समदेदना प्रसट करनी ।

मरता का वृध मज्जिल होता

कामस्ता के कारण करना का निषय कारण । प्रधीय — सामीकिय बीजिए, वृद्ध वर्तदेश की बाला का स्टब्स वर्णियत कही (कांद्र०—प्रसाद, ३)

माधा ऊँचा करना

प्रतिष्ठा पानी, मगर्व तह होता । प्रतीय—वर यह प्रयान म को संधा जनक के कभी कावा व सभा कर सके प्रशेष्टिक हरिओध २६ । दुकराया सँग डोको को स्वकृत भवना क्षणात क्षणात (मीठ—वरसन, प्रश

माचा का जाना---काली करना

पहुंग तम करना, मयजपक्षी करनी । प्रयोग—किर स्थार हरियान बाबू का माण मुकुर भीभी हुउअन जगान माचा माठी कर समसे ((भावध्याव (१)—सथरीन्द्र, १३०), कि तृथ के लिए हमारा माचा न नाओ जायो जहाँ उठ इंक्योगी ४४)

माथा काली काना दे॰ साथा जा जाना

माधा तरम होता

मृतमा साता । प्रधीय-नव वेश माना वरण हो उठा । सृत सीलने सता (जहारा०-४०३)शी, १८३

माधा रगहरा

भारिको करना (प्रयोग—नर दश बनीर को धार्ट नहीं), रात बर पाया रगवने ही रहे (जेस०--हरियोध, २५) (समार बृहार--साद्या मिसना)

प्राचा बद्धना

प्रमाद होतर मृश्या होता । प्रयोग स्थापर की देनो नहीं प्रालुम देनो । हरपक्त प्राणा पदा रहता है लेकी सनुरक. क्या

माया भूकानाः नयानाः

(१) मार्च प्रधान करना । प्रयोग - प्रेटि पाट समदन के फिरे नाइ है याच - पद० - जायभी ३४/२६ , रण्डल मनि संस स्वामि सीव, कहि जिस नायव - मार्च - (शमकासन) --कुलसी, १२५ - वीजी मुख्याब टिक्टेश का भी ज वस्की नव भीनश्रमाओ इसाहे , ताथी न मायटि दिस्त्रद्भाय न साथ म मैन न हाय हम्पारी भूयमहत्वा०---थुमण, १६०), दशे बड़ी का कर नहीं सकते धरव देल इनकी क्यों ह माथर भूक सका (बोसर--हरिश्चीय, २६) (--), कह दिया बाबर यही क्या कर्म दिया सन्त क्यों मांच नवायम उन्हें बोलठ ---हरिश्चीय, २६) (--)

(२) बादर करना : वधोक—बहा की केने पाया कोई बाबा नवाने बोक्य, क्षमके मुख वर वी दिवस (दृद्ध०— बच्चन, ४०), देखिए प्रयोग (१) में (÷) वी ।

माध्ये क्याना माधना लहराना, दर्बी करना बहुत दियान नामा । प्रयोग—मना इस की विसे हथी बचन मादत वाच (मुल्माल- सूर. ५०३५), ऐसी की डाजी बेडी है नमसी मह क्रांके मुन्याल सूर ४५१६ वर्षाली की गायाहर के मादा विकास माध्य प्रकी करनी पहेंगे हैं कि बेर्स दिख ही बस्ताल है (कर्मल-ईमश्रद, दल); तथी देख का बहा-वर्षा वाचानाला बाटी परेन्नने वाचा वाचा छहा कर हर गया। धानील नेयू ५६ फिर वाई बर्मलय। वा श्रीमा वर्षा की नहीं है, जिसे साम्यका वेने के भिरा विश्वी का माधा प्रकी करनी गहरी वाच्या- मुल्यालीहरू हदा।

(गमान पूरा साथा मिद्राना, चिट्टन करना)

माधा हमकता

प्रचा हॉकना

भाग को दोष देवर । जबोग —हम नोगों ने सपना-सपनर सामा ठोंका पोर इस इस्स को उसी मनुष्य के सपेगा किया (भावक्रमाव (क) --मार्ग्यन्द्व, १६६८) एक दिन नेतन नेकर नाम्ह बन रात का सोटा मगर देखा तो आपं उपन सिन उस बक्त की बटे नुष्य में । भाषा ठोक जिल्हा (मानव (१) --



प्रेमधंड, २८५); कुछ न बीने सांच उनकी घर नहें । डीव सर नाम बेनारे नर रहे (बीन्ड०—हर्पओंध, २५)

भाषा नवाना

६० झाधा भुकाना

क्षाधा जीना होती

(१) शरिकत होता । प्रयोगः जेल इनका इन सन्दे माना किरा बहुत माना हो एवा जोना सहुत (बोलक-हमी डीब, स्थ

(२) बहरवन होनः।

आधा पकड़ कर बेंद्र जानर

हताना होका बैंड जाना । प्रमोध---देश कर यह एवं निर तेशा नवा । बैंड वार्च की प्रवत्त कर हम पर्वे (वीता० --हर्तानीय, २४

माप्ता पटकता

प्रयक्त करता । प्रयोध-नृश्व नामसक को नमभाकर राष्ट्र यह काने को इकार-इकार भएका पटनो दृष्ट नहीं होता काल्युत-नालग्रह, देवो

मध्या पीडना

इस या अस्माद्धर प्रगट कानी । प्रयोग---शांटर से आवर गीर विका (मान० (३) --प्रेमचंद, १६३), मध्या केने चीन पृष्ट्वी व्याननता का कम उठना तम (स्थर्मधर्म, धन, ३)

, मगाव मगाव । सरका फुटनग, -- पुतना ।

बाध्य पृथ्या वर रक्षमा

भागमा अध्यक्ष प्रतिकारम करना । जायेक-बुर्ज निकार प्रतिक वर्गि कर्गा । संकर देखि वाच जुड धरा पद्य-जायमी, ४१८।

(भगाः नुहाः—हाचा देकना)

माथा भदी तक साकर जुहार करना

संस्पत जुक्कर समाम करता । प्रयोग---वीन्द्र बोहार मान सहि लाह (रामक (च)---हुसती, ५५३)

माया मारका

ि बरने पेनले करना। प्रदोकः महत्रने ही ॥ तही मेरी कही होग कहां नक महत्त्रे माना रहे होतः— हरिक्रीध पह

(२) देश माधा भूगाना

रेन संस्था भूगाना

माधा सिकरना

त्योधे पर क्षेत्र पहला; जनलोच प्रतर होना । प्रयोग---पाप ही कृष्टको सिकुष भागा पहा आपका माचा विकृततः देख कर जोलद---हरिजीध, २०)

माधाःगर्धाः करना देश्याधाः भूगानाः

माधे का लिखा, —की लिखाचड, —की मीक वो गाम में हो। क्योग—काम करके ही अगह में में इस बह बका है तक बाबे का जिला (बीठठ —शृतियोध, शह. है भना किस काम का बहु और शहे बाब किसी से बीक बाबे की मिटी (बीठठ —शृतियोध, २५), कोमते हो हमाने की किस लिय कीन माने की निवाबत पह दका बीठठ—हरियोध, २६)

बाये काइका

दर्शयत्व दरमना । प्रयोग —मी वनु हथरेहि साथे काहा । दिन पनि वर्ग स्थान वह बाहा (राम०(माल)—हुलसी, २५१)

माथे की मनि होता

त्रस्यम् विक होना । प्रयोग---यनम् मो योजि नगम् निरम्पर्छ । पुनि सो पिता वाचे यनि अर्थ (पदम- -बायसी, ३११)

गर्थे की नकार मान कर बलगा

भाग्य पर निर्मेर करके कुछ करना । प्रयोग — वे भाग कथ प्रोप्त क्याने पंच को बान नार्च की अधीरो को चले (सील० —हरियोध, ३५)

माधे की किसावर क माथे का किसा माथे की जिस

र अधिका दिवा

मध्ये बदना

(१) बजदर्ग होना। यथोगः त्या मृद्या होः । ० ८म १९९१
एवं पड़ी जर भी आसा कः । अस्त न रहन गादमा १८६॥
अवास्त्रिय साञ्च राना है पर प्रकासाय गाय पर नद्र रानी

ही तब तो हमसोग बलाप के मरदे पर आहे हैं (मांव प्रेशाव (३)---भारतेन्द्र, ५४७)

(२) गगरती होता।

माये पहला या होता.

निवसेदारी नानी । प्रयोग—को कुछ निक्यो नोड वर्ष पर, मानि पर सब महिसे (सुठ साठ—मूर, ४११९); सुर स्वाम बिनु प्रान सर्वति है, दोच नुष्हारे वार्ष (सुठ साठ—सुर ४२२५

माधे पर उठा लेका

गुरमे के कारण भूष बीजमा-चिल्लामा । जयोग---बीर कॅस प्रस्माये, कि जाते ही सारे वर्गने की पार्च पर इंटर किया प्रमुचि (कला०--छार, ४४)

माथे पर चढावर

किरोधार्य करना नवीकार करता । ज्ञायेक्य नार्व कृत्यों श्रीवत्रक्ष, सूर वकशीस पाद, सार्व को कदाद नीजी नाम पी बगा (सुरु साठ-- सूर ६४७); गोका का उपना नव पलकर माम हो जाता है, तब नाथ्-मेंग उने पाये पर बदाते हैं (मानठ (फ)--केमचंद, २८)

(नना= गृहा०-- झाथे बढ़ाना या धरना)

माधे पर त्योरी बढ़ना

कोधित होता । प्रयोग-आवका जल विया शिलाल उडाता वस अध्य तो भाषे वर स्थोरिका या जायवी (सुटा० (२१--राजवात, २१४

(सवार मृहार-साधे पर भी वशना)

नपून की लामने वस न माथे पर कभी उसके पहा (बोळ० • हिंद प्रोध, ब्रश्न कार्याच्या बृद्धियाना ऐसी प्रतिविधानको म प्रकर प्रवटर बद्धतर है, पर बेद्धकार्यों के बादे पर क्या नहीं प्रशता (माच--क्रेमचंद, १९४), बेलिये प्रयोग (१) में (♣) की ।

(नवा= वृहा+—साचे पर ज्ञातना)

माचे **पर कह पश्**मा देन माथे पर कह धाना

माचे पर शिक्त पश्चा रे॰ अच्छे पर बल धाना

साथै पर सीम होता.

कोई विश्ववता कोती । अयोग-धीर हारते के याचे क्या योग होती है ? (माठप्रदाठ (१)-मारतेन्द्र, १८)

आरो पर आरम्ब की सम्ब होता भारत्वात होता । प्रयोग—को देखें पार्थ वह शत् । की देखें पात्र सन्ति कान् (पदण—आदसी, १०१९०)

(मनः मृदा - माचे पर भाग्य होना)

मार्चे पर द्वाच होता

क्ष्या होती । प्रमान-न्यूनहार मस्तक पर हो परः कृत्या का बहु क्ष्मांक्षक हाथ ।सुकृतः सुतकृतवीत, यस

प्राथे पर होना

(२) कोई वर्धित्य अपने अपर होना । प्रयोग---प्रद गो अनका हु, येरे ही साथे है, में न ककता दो मह चीनट हो जावका सानठ (१)---वैसवट, १३७)

माचे वेठाना

बहुत सूट वे रखनी । प्रयोग---भाषे बहि देशारिक सर्टाहे भूषा जो हो न (पटर---जायसी, माप्र)

(भवा - मृहा --- साथि बहरता)

माथे प्रदता

निम्मे बामना, रनस्यायो हहराना । धरीय—सारा योज समी के बावे बढ़ा पता (कारनी व्यव—तम, ६४), उनके पाने कोई अपराक्ष नहीं पढ़ा वा सकता (व्यव—दे०६०, ६६), राम कर बामना व वर वर वापना देव ने वाने दनी

वि वह रिया (डोल०—हरिजीय, ३५)

माधे मानवा

माक्य स्वीकार करता। प्रयोक—मूरवाय प्रवृक्ते विश्व कार्य बागमु पाने अभि (सूर्य—मित्रश्वात), व्यवस् को बाग्रमु को क्षु होई बार्य वानिकारी सिन्ध कोई (सन्दर्भ का) • सुकारो, (१७)

साथे मारजा

(१) जनसम्पूर्वन देशः । धनीय-स्थापः सादः, सादः नी व स्थमे नाहः जी के मार्च मारो स्रोतः इतने नदी कि अपना राज्यः नामें (कट०-देश्यकः, २७६

(२) तुष्य समस्ता ।

माधे में बंदि कुलक्यातर

किसी काम को बारने की दलाहा होती । अयोग-सहस्तरे मार्चे में की सदने भिजन के नियं बीट कुलबलक्ष्या करते हैं भूगन-स्तु स्वर्ण 54

मान का धुग

मान-गरमार्थ । प्रधीय-नान विश्वता प्रथ्य प्रयक्त के मिन्छ, नद विगाही काल का चनके कृत (कुलतेक--सरिकोध, ३४)

मान की दोना

भग की होत्र , प्रकाश - हाक्टर थाटक प्रदेश पा, अब बटा क्यारी—कार में काम हमारे मान की बात बटी गड़ी क्यारि यहां कैम मनक नहीं हैं न मैंभी बचा है। कुमांक जिसाला इंडर

मान मधना अदेश करता

पूर्व पूर्व करना । प्रयोग कान वस का घरते हान, तह पूर्वना कु गर सन्तर्भ करीर प्रयोध-क्वीर २००० पूर बरमाध्य प्रदर्भय सम मात्र सचि वर्गय दिन् कान बन्द दहा प्रान (सुर हिप्योक्साध केन सहित तर सम्बद्धि कन समाध्य पुरु महित (शामक (छी)—एलसी, महिक); हा बहित मेरा पहल नदंग करामा ही अधीप्त हो तो दूशरी कात है मेरा०--फेनमद ९१)

मान भदन करता दे॰ मात संदर्भा

भाग ग्याना

प्रतिब्दा करनी । प्रधीन--वर्णनमी का यही धानमा है साम कर बान, यहन रख केने आसे०--हरिओध, दह

भागना

- (१) बादर करना । प्रयोग—नगमकोच की भी विनयभाद कृत को दनना नानते के कि करनी में उन्हीं के पहा रहते, उन्हीं का करन पत्ने के (अपनी समर—सब ११६) (--), काणी 4 करवार 3 ह बहुत सामनी भी में के देश अवना, २०५), कामीराम दन्हें बहुत ही मानते के (राधाव प्रधाव न्नराधाव दास, ११६) (--); क्षक विनामी महा दिवाली को के पेनेकर मानता है (स्थान—कोशिक, २२६)
- (२) मानता वानना । प्रयोग—धर संबोध मोहि प्रेक्षह समय मानि ही मानि (पद०—सामसी, २०१०.
- (व) केम करना । प्रयोग—देशिय प्रयोग (१) से (--) ।

भाभना गरना

नतमन पुरा होना। प्रयोग—सब यह तथा वासना, प्रष्ट भी नपुत की करनी अपनी आंखो नेक में (लिको— निराहत, 63

मामका गर्म होता,—तृत्र पश्चन

क्यका या बानचीत आमें बढ़ती वा तेजी दर होती। अभोग-मुक्ता ने सम्बन्ध वर्ष होते वेदार तो पूर हो गई बर्माठ-क्रेमक्ट १०५), कही बायमा तुम क वृक्त अवा हो ? (क्रेमठ-क्रेमक्ट, १८५)

सामका गोन होता

कुम नाममान होता । प्रयोग में प्रय भाइटी बहाराय के पान उनके देशिय कम में पहुंचा नव उनकी बहा देखन हो भाग मेंग कि मायभा कहा गांच है। और उन्हें के आंधी स्थेष

सामला दीला होता,—फोका होना

सफनता की जाया न होती। प्रकोण---वहाँ कारी की बात जली थी, यहा नामका डीमा बालूब होता है का ? (६६माच--देव स०, ३६६); मम्पादकीय दिर्मालयां बहुन की न हुई तो माभमा कीका रहेना (क्ट्म० के क्यू-पहन० शर्मा, ५,

मण्यका तृत्व प्रश्नद्वना 👣 भागका गर्म होना

मध्मला फीका होता वै॰ मामला द्वीला होता

शायके की जूनी में खुताबू जाता

मायके की किसी भी की अंका अवका जनता। प्रमोक— रत्री का स्वभाव यह भी है कि संपुराय की शई उस पराह समती है। बीर मध्यक की असे में भी उसे मृत्यु आको है वोनेव---शं० शं०, १४२)

मन्या कटना

मध्ये-भोत्रको स्रवाय दूर होना । प्रकोत—साहा कट कटली मही (सञ्जोक्य- ह्य प्रव द्विपण, १४)

माया ओडना

भौतिक साधन बुटाना, प्रेम तबब करणा । प्रनोत---निक-निव करि यह माद्या जोरी। कन्नी कर निया उन् नारी (सबीर ग्रंडा०—सबीर, १२०)

माया स्थाना

- (१) प्रमाय पहना । प्रमोध-कहड करतृ जिल कोटि उपाया । इहां स काविदि शाविर मावा (गम० (१६)--सुलक्षी, ४०३)
- (२) हेम होना।

द्वार कार्ना

- (१) धीटा बाला । अयोष-चीनी कीको कुलक है जाने स्थान स्टाइ । आणिक दरि सुनी जारा, बार मुद्र मृदि बाह् (क्षांर प्रयान-कार्य, ४३)
- (२) वराम्य होना ।

झार होना

(t) क्या काला; इडम अस्तर । अयोग--विस्ट्रिक्ट बाट

148 O. P.—185

के सन्दर्भाव की संभूती होते हैं, स्त्रेश सिनाहै। सब कुष्याच बार कर जब बंगार बोज रहे हैं (मेशाo-रेनू, te)

(२) बान्त करना । अयोग-गावा की बादी विश्ली राज्यकारों से देंहरू का बादी और देश बीस हजार उसी में बार मिथे (गोटान-प्रेमचंद, १६०)

मार से भूत भागना

भार के सभी का करना। प्रयोग—क्स में तो काए सौरत का बाव, जीरत किया जल की धूनी है, मार से ती जूत मानता 🖁 (१ग० (१)—प्रेमश्रंट, १८८)

मार्च होता

- (१) कृत अवर होना । अयोग---वर धर्ननिस्त की वही यो मार है। वारि गहर नहीं जाने हेंगा सब कुछ का अपन होना चाहिए, पर जनमा झान (नदौत—क्षप्त द, पशु-पशु)
- (२) बार-गोट होला ।

मार-प्राप कर वेदा बनाना,---एकाम बनाना

- (१) किनी बयोग्य को जनवन्ती योग्य बनाना । प्रयोग---इन्होंने कार बार कर वैद्य बना दिया (गादान—पेमबंद.
- (२) वकररानी करना । प्रयोग—बन नक गुम क्यो दस मार-बार कर इकीय क्यामें पर तृत्री रहती वी (मान०

मार-मार कर हकाम बनाना रे॰ आर-मार कर बेश बनाना

सारना

- (१) बसुमना । प्रयोग—कुरा हुम नाफ करे चीर मोटी-योडी सनक्याहे वे सार्षे (सासी—द ० वर्षा, २४३
- (ः) हुव देना । प्रधोन---पूर स्थाय मेरी वाति वालक बारत क्षाहि रिनाइ (सु० सा०-सुर, १९२८), नवा सवध्य इस दुष्ट बारिय ने मेरी प्यापी नुहोती सीत की है तब हो वार इन्सर वाची ने (गगा०—सप्त, ३८)
- (१) जमान नप्त करना ।

भाग क्राना

नुक्साम ही बाना, नष्ट होना । प्रमोय-इस सरवह ते लाज इठाने के निये स्वापी पुरनक व्यवपारी प्रकाशक,

भार काहोबालो भीर बनम्बद्ध हीकाकाकी संस्मंट वीकिया भ्रकाणित काली स्थाना सम्बद्ध तीका काली है भीर कामेब करीकार्थी मूचन में मारे बाते हैं (पहल पराग--परं,40 कर्मा ३९० में अपने तकार्य-मेन के कारण मारी वह (प्रमा०--प्रेमक्ट ३८१

मारा फिरनर —मारा होजना,—मारा फिरना

(१) वृत्ते दश्य में दश्य उदद फिरना । क्योच-नाव शहर मारे कोले । सानी पुष्ट निर वृद्ध-वृद्ध कोले (माठ ग्रांशठ-मार्गन्यू, १४०% तो लेंगे दिना मानव, विश्व कोई ठीव-दिनाने दश्चा वृद्ध-नारें फिरोले—यहाँ वृत्ते वृत्ते व 'मिलाठ-सीरिम्स, १८% एक दिन वृद्ध गाम नव कोल्सी शी नुकास में व्यास-भाषा किरना गहा (मान-प्रमुख्य, २६) (२) कोई वृद्ध न होना । प्रयोध—निम्मी बीन के नाव ग्रांसियर की राजी वृत्ती रहे और शय मार्ग-वृद्धी क्यो क्यो (मूग-न्यू द तमी, २५१% से नुसार की क्याई हूं, होकर शांकर मार्ग-वृद्धी है (क्याह-समाद, १५)

सन्दाकारः होन्नन ३० क्रांस फिल्टा

मारत-मारा फिरता वैश्वभारा फिरता

सर्ग

गरीका, क्याप । अमोग---तलबी बाय के सीर बीज बीज में आर्थ के, यह बीच प्रातका है (स्थल--अमबर, ३)

मार्ग का दीएक

पथ-परवांक । ज्ञानि—इसकी शरकना धीर नज्जनता ने एक बेटवा तक की जुन्म कर दिवा और यह और सहकाने और बहुमाने के बंबके अनके कार्य को वीएक का नवी शादन—प्रमाद, \$20)

सर्गा करना

(१) कम रूम प्रका: प्रयोग---प्रमक के शास प्रोप्ट मध्यपदश का नाम होतर को विको भी होती सीन अविध्य के निम्न प्रामं सुन्न नाममा (वीसर २)--- अक्ट्रय १५९)

(२) करावट का रांच होता।

सार्ग देता

माने में हंट भागा । प्रयोग -- वब वह असह की बाला

माहता, धानी एक मात्रे, पहाड प्रसं मार्च दे बेले (पुलेसी प्रशाक—गुसरी, प्र)

(नगर पुडार-सार्ग छोड्ना)

मार्थ पर कावा

टोड करना या सरकार्य प्रकृत कराना । प्रतीय—देव करद दया मोदि मरस्य साबह जिलू जब क्षण्य दृहना (ककीर प्रवाठ--कवीर, रूपकाः वंदित सुमति देव पंच माना । जी क्षण नेति परित्र म जाना (पद०—जाशनी, प्राट)

मार्थ में बड़ा होता,—बाधक होता

प्रगति, कार्य या विवाशी में प्रकारत जानमें का कारण गोना । प्रयोग—देवनी हैं, में तुम्माने मार्ग से कारक हम नहीं हैं (जैसर (३)—कार्म स, २१६), कार्म और कींग भी उनके मार्ग में जबर कहा हम होता, उन्होंने उनकी कारीय नाहम के मान जीता (करीरं)—हम प्रश् दिश्य, इस्तु।

मार्ग में बाधक होता देव मारा में खड़ा होता

मार्थ में रोड़े विस्ता का विद्याश

प्रयोग और विकास में कावक होना का बाबा हालता। प्रयोग---वर्ष्ण मेंने तो मुस्तारे वार्य हो स्वश्न काले हे निका बोर्ड न विकास स्वट----प्रसाद, ६०:

(नपा॰ वर्षा॰—प्राप्त में गोड़े बनना पा दीता)

सर्ग सम्बद्धः—हेवा

(१) किसी राज्ये पर मध्या । प्रयोग—कारि पटीर गोन्ह में क्या । बहु पिउ मिन्ने मेहू हो एवा (पट०— जावसी, ४०%) (÷); बोधी हटु हो जुन्नि हों मानह ममृति नेह में बारव शासह (पट०—शायसी, २०१२)

(२) कोई कामें करना । अधीय—मी जिस कारीर परन क्या भी वहि भारत लाग विभयत सुमारी, २०३ देविक प्रमोग (१) में (+) भी ।

(समा: ४८:०— भागी प्रकारता)

मर्ग तेना

देव साग स्वासा

माल उमलका लेला कोरी ना पन नमून गर जेला । वर्तमा माल (उमल) को उमनमा स न हम जुनतेव हरिग्रोध ३१

साम वद्याना

- (१) धन क्रृंबना । अयोग—स्वाकर बान कृतरो का, भूस कर बी न पेट पासे (मर्स०—श्रीरकोश, २०), सफ्त कर याल स्वाते क्या अवता है है (प्रेम०—क्रेमबंद, १९१)
- (२) जून विकास मोधन करना । क्योन—वार्ड, सस्टर राध्यक का इनना पान मेंने उत्तय। कि किर मुख्य में यहा तक बातें की शक्ति क रही (माध्याप (३,—किश्तोर, ५०)
- (३) यन-सम्मान चोकी क्षत्रमा । प्रयोग और बही लोक किन्हाने मान उद्यक्त अब एक यह प्रिच बने हुन हैं (१४० (१)—प्रेमचंद, २२२)
- (४) मोत्र करना । धयोग-स्मार कमाई करने वाले अद मसंदे याल प्रकृते (बोल०-हरिजीध, ७२)

मात फटता

- (१) माल मिलना । प्रयोग—किश्यत **बुनी, वर वै**ठे मान कटने अता (अट्ट निक—बाठ सट्ट, ११०)
- (२) मनुनित एवं में किसी का का हरण मेना।

(समाव पुरस्क - झाल का दना)

माल चाभना

विद्या मोजन करना । प्रयोग-काव में मान कान कृते कह है मुक्ते भाग ही नहीं कम का (बोलव - हॉरबीध २०९)

अस्य किरायका,—सारका

माल सारना

देव माल निगलना

मग्ल-मलीदा उडामा

मीज से काना-पीता, अस्तःम करना । अपीत- बहां क्षमाना-अमाना नही, मेहनम-अस्तिक्षम कही । यहे यहे रहाम के मान-मनीदे उदाना है (मोली---बनुस्क, १७६)

माना बढ़ाया जाना

सन्मान-बहुत्व विसना । अधोग—है भसाई वां इहर पानी नहीं हो बुराई पर जहां वाना कहा (बोस्ट-हर्ग छोध, १२५)

माना परेना

- (१) वाना नेकर वय करना । प्रयोग—किसनिये वाना २१ वेच करते जब पक्षा स हाच मरलामास वे (बोसेंध— हरियोग, १९३)
- (+) नारवार वाद करता ;

(नमाः भूराः — शास्त्रा ज्याना)

माशा भर

विनय सा । प्रयोध-करण करीमां भिष्टि शता, सब क्ष्मु निम्या न नाड । भागा गर्ट न निम्म वर्ष, जो कोटिक करें तथाड़ (क्योर प्रशाद-करीर, श्राय)

मित्राज बासमान का बदशा वा होता

बहुत वर्षत होता: प्रयोग—फिर स्वी न औरती का भिजान वासमान वर वह जात (कर्मत—प्रेमचंद, १३६), है उनमें ही विशास उपका में आसमान पर वहा हुआ नृत—लक्त, ४२), बाद नाववी का विशास कामपान वर होता (वेमान—पेमचंट, १८२)

मिजान यस्य दोना

बरने में होता, क्षिणा बराव होता | द्योग—एके दीको पर मृत्येन महास्थ का विवास क्रम ही उठता था साल्सीर—व्याल दिवल, ४३

विश्वतक पूर्वी करना

- () अब वीतमा, सम्मानिता (अभीय-- कृतवक्तर जुद कनकी भी विकास पुरसी करने भी जरूरत होती (तकत -- क्षेत्रकट, इस्क्ष)
- (२) हाल-पान पृष्ठकाः कृतन-समारवार पृथ्वतः ।

बिंद जाना

किया होता; बहुत बहुत्व देवा । ज्योत--- मान् के ही किनमके पर मिटा हवा था, भरानु के इस व्यक्त-स्वान ने मीर भी जान पर भी का सम्म दिवा (सहस प्राण----प्रदूतक समी, १५२)

मिदरी

यव । प्रयोग-वहरं नुस्सोन न जाने विद्दी की क्या पन करो ? (हेमाथ-देसबंद, २३६)

मिटटी नच्छी होना

वरीर हुन्छ-पुन्द होना । प्रधीम-को ऐसा बरी प्रसदी

मिन्दो है उनकी (मान्छ १)—क्रेमचंद, १५१)

मिरदी वर्तभा

प्रम का सक्याचा के किए सहस्या साना । पुत्री होय-हाय करनी जाती वी और कोमरी जाती थी, तेनी पिट्टी उठे, कुछ जिस ही बाब, देशी बेबर वृक्त सोग अन्य (शब्दान --प्रेम्टबट, ३१)

ब्रिटर्स कर देशा

वर्षात कर देता, तब्द कर देता । अयोग—वंद वरन की यदन देवा । असव वदाद की मानव वहर (वदं)—वादनी, ११६६) वह लंगार का युक्त मीनमें के दिन वैदा नहीं हुए विश्व देवा नहीं हुए विश्व देवा नहीं हुए विश्व देवा करें हैं (विश्व देवा नहीं देवा करें हैं (विश्व देवा नों) दोस, ११६), इंडियमन्त में हिन्दी तथा देश के लिए मार्च संमार की दृष्टि में बचन को सिट्टी कर दिया सारा वृद्धां कर दिया सारा वृद्धां कर हैं।

विही का पुतना

शतकाह-तीम निष्याण । प्रयोग—अब तो दिश मिट्टी का कुलता है आहें साहब, विलयुक्त जुड़ी अनिक छ)— क्षेत्रकाट, ३००

बिट्टी की तरह फेकरा

भारतम् तुभ्दः सम्मानस्य अभाग्यस्य । चारतः । गामायः यह पाहित्राक्षकः भी जीवन को जिल्ही की तरह कर करती वी (तैन्नरं (२)—सक्तीय, १२०)

बिरदी के माधी,—क्षीवर

मून होता; नामगढ़ होता। प्रयोग—तमसे संदेह नहीं संप्रजी पास्य की क्या ने हम कर नह निर्मे विश्वी के लोगा मही है जो क्याप को पहले पहें (पटट निठ—काठ पट्ट, 134 में तो गमअभी की कि तुम म भा मूल कमनत है, भग देशती है तो जिसे मिन्दरी के लोड़े ही (मान्दर १)— प्रमुद्ध के प्रशासन क्षेत्रत को प्रिस्ती के प्राप्तन के क्या में नहीं देशमा चाहते हैं (स्टेंठ—पूक्तक, प्रव

मिट्टी के भौक

- १) मह नहीन । प्रणीप पाठ विन यह बोल को कोला । हाइ बोल मध्ये के मोला (पट० क्रायसी क्रम्)
- (र) बहुत सम्बा (

मिटटी के लोंदा

देन मिन्द्रा के साधी

मिट्टी के हैं।

सनावटी बहादुर । तमीय--धरे वारे पेर मिट्टी के होर ! वना बात कह बना दम बन्न (बुद्ध क्राउन्तक, शहरू

क्रिस्टो क्रमण करना यह होना । क्यार करना या। सामर

- (१) दृष्टका करनी या होती । प्रदोश—प्रति केवा ही संभाग, ब अ सुराधि नवी न हो, पर क्षुशामय म मानता हो नरे देस जमाने में तो प्रस्ती बहुटी स्वरत है (प्रदर्श) —प्रदासित, क्षेत्र, प्रदो; एर कोई पर म नवालं के निरु से संप्रमा ही दरन्वर विट्टी स्वरत में नही करना सुराव हो। —प्रस्तास, क्ष्म्य; अ अ द्युना में निर्दि की विट्टी इतनी सराव नहीं है विद्यी बेनारे संधि की (साम्य (स —प्रेनस्ट रेग्या) सब नमा मेंने तो रसन की बाद न बान कर संधनी सिट्टी स्थाय की (सुद्धाव १) -प्रस्तवास, १६१) (—)
- (२) बदर करना या होतर । प्रयोग---वेब प्रदेश ही संच्या वहीं तो जनने कृष्ण क्षणांना समझी विद्दी गरांव करना का अन्तरहा--क्रेमक्ट, ६८ - हेन्किए प्रयोग (१) में(+)भी।

मिहरी कहार करना या होता देश मिहरी कराव करना या होता

बिट्टी हुने सोना होना

यो बाब तांच के निया साथ असे में स्पन्नमा निवनी। वर्षान—बहु जारी की बरकत है कि बाव विद्दी की खु सं को बोबा हो साथ, वेशिक बारमी बरसक अपनी किया है (संबंध(6)— अनवेद, 5%); वस बहुती कर रहता है (संबंध(6)— अनवेद, 5%); वस बहुती कर रहता है किया का दिव सब बहु पाटी की छू देवा की मोबा ही बायबा (मेहां=—देषु, 550); बाबा वामनारायहा समुद्रमार के प्रांपद ब्यायारी के बिद्दी को जी हाम कथाते को मोबा ही बावा कि सुद्ध—सुदर्शन, 250

बिहुं डिकाने जनना या उपाना पार छनना या जनाना

अ प्रिक्तिका हाना या रहती । प्रयोग आज मा आय तो विक्तिको ही का इस सिर । वा तक लगायको ने गोरान- देमकेद हेद , है न) अपन । यह काऊंकी क सिर्दा को दिवान कमा देशे करीय संस्वद ३५

(धमार पूरा -- मिट्टी की गति क्षाता)

सिट्टी पलीद करता वर होता

धुरेशा करते वह होती । प्रयोग—एंट्स जी बाद तो बात, यहां तो मनू की मिट्टी प्रणेश हैं .संसर २।—प्रक्र स. १५१,, तुस बढ़ सैदरम ही पाद, मेरी मिट्टी नयी वजीत हरते हो (मान०—प्रेमबंद, १०६); क्यते यहा की विकास का समावाद बहुत ग्रेमोंदता के बाव खुनाना हरू काने के पीर फिर पर पक्ष की सिटटी प्रणित होने की बात बिल-लिलाकार हुनने हुए समाध्त करते के साली०—प्रंथ दर्भा, ५१।

भिर्द्दी पार स्ताना वा समाना

दे॰ सिट्टी डिकाने लगना या लगाना

मिट्टों में भिल जाना था मिला देता

भीपद हो जाना का कर देशह तप्त हो जाना वा कर देता। प्रयोग-केत बनायत उत्तरे वाटी । केन बनाइ का निर्माट मांटी पटेंग अध्यक्ती, ४३ व । उब दार पार्टन प्रथम मा पूर विकल प्राचा है और विक्रम । ५ छ।३ एवं शार्थिक। गढ में मिल बानी है उस समय सारी मुक्ताई विद्री वें मिल जाती है (प्रठ पीय--प्रय तार मिय, बढ़ा, क्रोब भरे गरे परम्य दसको निकलने किनी प्रकार व दें, नहीं तो वद किया करावा विदृती है दिस बावेगा (क्रासीक-दूं) दशी, २०३), मिट्टी में मिल यह बत में जिसस सोने की नवा (बंचo-नुष्रं ६६): जिल दिन हम माता का एक जावते वस दिन हमारी बन्धा विद्धी में भिल बाएगी दुश्यात-दैठ सठ, ५७ - गिरस्को के बीदा तुमने अपने का चित्र स विसा दिवर ,मानव (१)—इंसर्वर्द, १२२); जब वक्सावर्ताः का भारत प्रकर्ष पर भागा है, तक खुरावतों को फिट्टी में मिला देने का यहन किया जाता है विपo-ऐंगीठ, ६... लोब दिल को क्षेत्र किय पार्च, दी किया देन मान निद्दी वें (बर्मo-हरियोध, ६६): ब्रस्टवाद बीट वीची भीववाने हिन्दू मिटरी में मिल आपरी। चीट । जिल्ला 53)

ਸਿਟਵੀ ਫ਼ੀਗ

(१) वर्षांच हो जाना । प्रशंत---नना गर प्रध्नद किंग्यो हुआ (शक्ताo प्रशाल--दाधाल दश्ता, ३२१) साना कीन पकारिया है अ अ मेरे विना सक निरुटी हो जानका ज्ञानः—धरापानः, १४): मेरे यो माने पाच सौ निट्टी ही पर्वे कुठा० (रा—सक्त्यानः ३३५)

- (२) बहुत विश्वित होता । प्रयोग—कश्या क्षत्रमा और स्थाप में सिहडो हो जातीः—स्या केरी मृख इतनी अधिक है ! क्ष्त्राव (३)—स्वत्रपास, ३४९.
- (६) बहुत ग्रंदा होना ।

मिटा-सिटा का बोलना

बहुत नकता और प्रेम के कह करती। अयोग—दोनो और भी सहस उठें। बाज शकुर जीतर न बोहेगा हैंगा पिटा-मिश कर बोल रहा है। उत्तरी ही भिनो-भिनो कर नगरका (बान्ड प्राप्त के के क्षेत्र)

मिनी पुत्रना

हुनी का निवत नमय पर निकास जाना । प्रयोग—इन्छ कोई बोको नहीं ही बबना क्योंकि मेरे प्रशास किनी पुत्रने के एक महीना पहिले अनवर ही पहुंच जाएते (साठ प्रथात (१)—अस्टरेन्ट्र ४६%)

(१४३० पुराक-सिनी पुराबत का पुराना)

मिनमिन करना

- (२) बहुत वसना से बोनना। स्वरंग—इयारे शासने मिक-सिन करती है, एकाना में साथ पर तेल शिटकती है - एक एक-सुटर्शन, २१०
- (२) टावमरोन दरना ।

क्रियां की जर्ना मिथा का भर काना या होता.

- (२) जिसकी चीक हो उसी के विकास समास प्रयोग करना ।

मियां-मिह्

कारम-कत्तमक । प्रयोग----माम काप मेंसे पिया मिट्युओ की सकरक नहीं सेवाध----धमचंद, १२५

ब्रिक्ट लेगा

अपने पस ने कर नेनाः । प्रयोग—सीर सीम पुणिय को विना देवे हैं भान०—पैमचर, १३४

फिलो-भगत होना, मिले होना

किसी हुश्रिमित में मीस देने काला । प्रमेश—कश्यद चौर मूल गरिसोटा मिने रहिंह गेहि तांच (प्रदेश—मादसी नाय मेरी मीर जार्ड साहब की सिमी-मदल की मैंनरे —च्यरक, २१ , सरकों की तो सिमी-मदल है। मरद पर्र चौरत के चौर-नांग, चौर-नीर काट हांचे, गाँड स्थकों मने मही करता (रंग० (१)—ऐमक्ट, प्रदेश

फिले होना

वे॰ मिला भगत शाना

निहरी भी बजी दिवाकर विव हेगा

भोषा देखां; बहुना कृष्ण करना कृष्ण; हेम जनाका किय इसाई करनी । प्रयोग-स्थापित है कीओ अनीकि प्रश विश्व दीओ दिखाध विद्वाद दवी हिन्छ करिस हान्छ १५००

विश्वी धीवना

यहर विकास में बोलका । प्रयोग—बाली से घन क यह की विकास चोले (सर्गठ—हर्गच्ये-छ.११० (समार मुहार —सिकी की अली खोलका)

म्हीडा नवदेश

बहुत समजा-नृभाकत हैम से विद्या हवा उपहेस । स्वोत-यह यह मुखे विद्यती को मीठे-वीठे अपवेश दिया करती की स्वाय-जैमन्द्र, दा

मीठा क्रोध

हरूमा भीम । प्रयोग—एने कृष्य में सामान्य दा धनायकां से प्रथम सेराक्य, दुनने की धारित ने धनती जार्राक्षण प्रोटाई का बोध, दूनने की भयगानना की दुनका, बोट बोट में दन दुनका की पूर्ति में बायक जब दूनने व्यक्ति कर एक मन्दर का मोटा प्रथम, दूरन नावा का प्रकार कर कि उस मान्दर का मोटा प्रथम, दूरन नावा का प्रकार कर के कि उस

मीटा आ

त्रिय कार्य कार्य क्षेत्र कार्य । प्रयोगा - ज को कर इकती चिक्रमी कार्यो कार्य को कि प्रीक्षा क्ष्म वास्त्र को द स कार्यो साव्यक्षणी स कार्य को कि 10 % अख्यि की व मुखे समग्री जाय (मैरेंट - गुलाबर), प्रश्

मीडा बनना

प्रियं बतना । प्रयोग—जीम नो है जह नमें यम नहीं जो न मीठा बॉल कर मीटी बनी जोनी>—हर्तकोध यक

माठा चीतना,—बसन चीतना

गभी तान कानर जो जब को जिस ससे । इटोय—शेना क्षेत्रा बोनरवी, तेला संग्रहन जांग्या क्योंग स्थाप —क्यों। श्राप्त, स्थाप वर्षा द्वारों रहें (ते) जोनक मोद क्षेत्र स्थाप स्थाप—त्तर ३४६३; और भाजा, संबद का गोप, कुल बोनने बोग्य, मुमका का क्षेत्रक प्राप्ता हो और बात करने पर मनुदयों को सीहा जलाद के (गुलेशेक १)—गुरीरो, १२-१३

मंडा लगना या होना

विभी प्रकार के आध या जानह जादि की प्राप्त होती।
प्रवोद—र्हमा वेश मुठा मोठा साथा, नामे परमे सु जन
भाषा (कवीर पंथाठ- कवीर १७१ , को वोदि पाए मगाते
बीड । ती वस्तक-बटास-रम-प्रभाव ही माते पन जीते
किनयठ-न्द्रमधी, १६६); मिठाइया धाने मन्मत तो पोडी
बान्स होती है बान देने बढी सम्बद्ध नगता है (स्थाव (१)—
प्रमुख, ३७२); बिन तरह ने दूसरे मीठे कने और हम देने
बने नीने रहे (चीनेठ-संदिजीध, ४६); स्वधान क्षता तीहा
है कि नुमते पना वह सुठ सुठ-सुद्धान, १८६)

पीटा प्रमुख बोलना इन्हें मोठा बोलना

स्रोता सन्द्रा गच्च और करचा करचा भू काला प्रत्या प्रमान परण पर देवर धीर वरी पर एका की वर्ष की गोर देवर , प्रमान अपन म व व व व व्यापनी कि भीका-मीठा कम, बहवा-कहना मू हैं । भे सक-बेन्स्स, ३३०)

मीर्डर मांच पर प्रकारत

धीतर भीतर करत पहुंचामा । अयोष—पितर का फीध कर बरन करता था, तब मेंकर कानना वा हम फिर मुखा है, या कर कुछ नहीं करती थी तब उसे अनना का कि केंद्र मंदी जांच पर पकाणा का बहुत है (मैनर (१)— भेकरा, ११६)

मोडी बुटकी लेगा

वानं कान मा इत्या १० में महाक बहानों 1 प्रयोध कर राष्ट्रमें न कीटी करकों भी जानकी साथ देते विकास हो राष्ट्रमें होगा २ हजार ९२ (यमक महाक सहस्य सार्का सहामा)



श्रमित सं अपनेवाना हमी-वजास । धरोन---कानारास की इन मीठी सही को, अपनोत्त है कि अपने सामिता समग्रा (पुठ विक--वारु कुठ तुठ, ५३६)

सीडी बींच सोना

मुख की शींच कोना। प्रयोग—शीनो लाके धीरी और माने साते हैं और में कंसों को सानी-वानी देता हूं (मान० (१)---प्रेमेसंट, १३४५, बैने बाते ही सकते बदा सम्मस्य अप्र किया कि तुम्हारी मीटी-बीडी भीट में विकास बात दिया ति जिल्ला के लोगी प्रश्व सब बोडी नेंद्र म न्याश यह मीते हैं (पट्टम स्थान--पट्टम० सभी, २६४)

माठी बात

मीठी बोली

एँगी बोओं जो मनको सम्मी नगं। प्योग—मानिक छभर दसन नम हैरा। बेन रसम्बन्धात महु वेरा (पद०—सम्बस्त), श्रुप्पा); श्रीहेन्सीडे कोल बोलि, उसी पहिलं नौ तक, अस जिस मारह, कही भी कोन स्थाप है (पन० कर्नडा— धना०, प

र्माठा होना

पारी होना, क्रमी नगना । इसोध—विद को परन दोरो कदन, क्रिक्ट भान, रस निकृता कीडी पृदु शुनवकानि में (धन्नः क्रिक्ट—धनाः, देः

भोडी मोडी बाते बताला

(नवा - वृहा ---- माठी मंदर्ग वासे स्टाना)

भाग-वेश करता

विश्वी काम के काल में आया-रिका करवा : प्रयोत— वर्ण भी कहा तो को अर्थ किए, एस कहा ती एक । शिती से मोनवल न की (मानव ११,—प्रमक्ट, ४६), करके मीन-वर्ष तक बोर, विश्वा कर बुध बाद कहार (साकेत—गृह्य, ३६४

मान-मेच निकासना

शेष निकासना । अयोग—जिसस्य वे बोल-वेण निकासने के कारण प्राप्त ही रिजीशंध की प्राप्त की त क्या-व्यक्त ही बाती की सुठाठ २) निकासने क्षावत क्षावत प्रीप्त की स्वापी कीन-वेण निकासनी तो जनकी घाडी हुन्दी प्राप्त म कर हूं तो मुद्द कर नीठ, ११० , जब कोई क्षाविक प्रस्त बाला है, तो तुब, अपने स्वरह्म-हवाह बीर-वेल निकासने मुसले ही (देगठ २)—प्रमुख्य १६६

र्वात-वेक होता

वर्ष्य की संभावना होती। प्रयोग—पद इसमें मीतमेल नहीं है कि संवाद के उनका झोना न होता बराइट होता (प्रव कीठ-प्रव नाठ मिल,१४४), सबद बंद घर की सेर मद घड़द और देव नी केम्बे का कलेवा स्वयंत्रात्त के जिल् मीजूद | उनमें कोई मीतमेश्व ही नहीं (प्रतंत-पुठ तथ), 450

मुख्याना

काटा करवाना, काम बम्मना । प्रयोग-मनोहर ने मुक्स् वे न्यादा बादबीय नहीं की । समझ बमा कि यह मुसे बाहते हैं (बंगार-बेमकंट, १०१

संह आगा

(१) बार-विवाद सम्बंध । प्रयोग---ऐसे दरबार को दूर ही में नवरकार करना बर्गाए जहां औरिया व्यक्ति से मह अस्त C

(भार प्रधार १६:—मारतेन्द्रः १६८६); एव-वी वस्तियो के भिग्न को कोई मध्या कीश्वयक्ति के पृष्ट न सावत अस्मर — देश सर, प्रयाद कोई यरे पृष्ट क्या वश्यक्ष केवारा ? अन्तर (का-प्रभाव, १३०% काहिए या पृष्ट कही सामा हम स्वर भागा हम कीन सुद्द केवार कम (बासर—हरिस्टीय, यर

- (२) युह के बहर हाले प्रांत ।
- (३) चंहरा सुजना

मुंह उजना करना

इंज्यत पानी या वर्षानी । जयोग—यारत-रचनि नदाव ! भाग कलल कोनी मृत्र (एवा० प्रधा०—संधा० दाम, ६२९)

मुंह उजायर होना

प्रतिष्ठा बड़नी । प्रयोग-स्वस्तर में बहुत में अन्यो-अन्छ काम बड़ी के नियं किया जाते हैं कि जार स हमारा सुद प्रजासर सहे अहह जिल-बाल महद, १३८.

र्म्ह उठाना

- (१) मान की प्रमुक्त का विका वक्त्यती । प्रयोग—सब विभव के इसके हैं ? अ अ देखा, जियद सुद्द का बाय [मा —कोशिय, २००)
- (२) सम्भान या गर्व से हुछ कहना वा काना, सम्बानपूर्वक जीवर विताना (प्रयोग—केविम तुक शाम मृह भी कटा सकती हो तो मेरी कडीवड (करवाणी—जेनेन्द्र, 80

मृत बत्तर ज्ञाना

- (१) मध्यम् श्रोता । पदीय---(यममधा का बृंह कटर वया ।देवकोक--गठ गठ, २) (÷/
- (२) निकलाह होना । यमोग—पृत्त नरक आये व सहके में पढ़ पान से उत्तरे, न पृढ़ आये उत्तर (बोगाठ—हरिऔध, घठ), बेलिये प्रयोग (१) में (+) मी ।

मेंह उलग होना

मुंद्र ऐसा श्रृह क्षेत्रर

सिट्टॉवटांकर प्रयोग —निदान कीन्द्रकी साहर सूद लगा सूद्र लेकर स्टंड जान राज्यक ग्रह्माक स्टाइक इस्त्र

मुंह का भाग उगलका

मुंद्र का उतार-बढ़ाक

नहरे का माध-परिकात । प्रयोग—पह कह कर राधाकुल न कुटरर्जामया के मूख कर उत्तरर-प्रकाश ध्वरतपूर्वक देश। सा—कोर्डरक, ३८४

मंद्र का कश्वा

र्वेशन बोलने पासा । हवोत-मृत्र की करती है । जास निर्व ही हो है 'इहार- देव सव, हद

मृह का कहे देना

बहर से बनट होना । प्रयोग—नकी नेरर मुख्या कहे देता है कि तु हुछ भोषा करती है (भाव प्रशाक—, १) भगतेन्यू, प्रश

मृत को कोर छिल जाना या छीतना,—की रोटी छिन जाना या छीत सेता

(१) गोनी सिन नानी ना सीत तेनी। प्रयोग— रिश्ना को है कि सूर कर किसी के जुटा नाना है भन (सर्माठ—हरिजीध, १०); अनर काम केरे मृंह का कीर प्रीतना कहते तो सरम मरहे में शहेगे (गोदान—प्रेमसंद, १४% नाम है महि या ना विश्वार नहीं छोनत। उत्पाह है जा क्या दिया के मृत का और सहीठ हरिफोध १४ उसके बुद की रोडी धीन कर तुम्हें है दूं भी नुष कम भागा करोग शाला है करें प्रमाद १४४

मुंह का कीर होता

आपान काम होना । प्रयोग—दश्च समाने में शै-कार हजार के महुने बनका केशा मृह का कीर नहीं है (सबन-प्रेमबद, श्र

स्देका नगद

नर् बोलन बाजा । प्रयोग—नोरर इतना नीय वही है । यह यह का ही सराय है गोदान जैसबंद, १०९)

मृह का टांका ट्टना

बुद बह पाना प्रचारा क्या कह दिल क फ्लांटों ही

की रणक । सूट मृद्ध का वी अका साम्राज्ञ तही रचुभवैठ— हरिग्रीध, ६१

मुद्दं का पानी उसर जाता.

- (१) अपमानित होना या सम्झित होना । प्रयोग----वरजन कृत वंत नव साजे, मृत्र को नीर क्षण्यों (सू० साठ---सूर, ३६४३)
- (२) बेहरा थी-हीन हो जाना ।

मुद्द काला करना (हमरे का)

- (१) किसी अवस्थित या कुरी बन्द सम्बा व्यक्ति को दूर करना। प्रयोग—न्त्रमी देख दूनो दगा हुटू द्रांत कियो मश्र द्रांचिद को करिया कवि० तुलकी १३० नु शर वर मे अब महा के लिये मुंह काशा कर सुहशा०— अल ना०, ३१।
- (२) देवनाम नामनः; कमित करना । धयोग—नुम्हारा एक कनता अफनर निरान्द्रीमा का मृह करना करने के के भिगातक कथानी नकण को बादगारों के और पर नमा गया है (गुठ निठ—नाठ मुठ गुठ, ३४३), नामिया का कर यो व समनी नी बना में न अपने मृह काना (मर्सठ— हरिकीध वध)

मुद्द काळा करका

- (१) कुक में करना, व्यक्षियार करना प्रयोग—सगर (सै) भारत हुनों जो मोध पता प्रयास मृद्ध करना करने माने हुने कुछ कम भारत नहीं है (मेरन० २ प्रसम्बद ५१) मृद्ध कर कोई न मह करना को मह रह दिन रण में सक दिन रेगा (बोस०--कृरिजीध, महः
- (२) बदयामी पाना । प्रयोग—कालि को शाम काल के मुंद में बंगपद यू ह विध्या गया कामा ज्यूनेक ही प्रोध क्यू

मुद्दे काला कराना

- (१) कलंकित होतर, बदमान होता । प्रयोग—सीहमन भीने दिवस को कौन करें मूख स्थाद (शेम कवि०- रहोने २५ अवना यू द काला करा रहे हो, हसरार भी सराभीय (शुद्धां० ३) समामाल ३०३
- (७) अनुषित गर्बप कम्ना ।

150

O. P. 185

मुद्द करका होता

- (1) कर्णाकत होता । प्रवेश—में जि रही धम् को प्रम् वारो । नेततब होत है भी यक्ष कारो 'केंद्रायक (२)- केंस्स, ३२३), भी बरशा निव तो जय मेंस सी होत है क्लेक्सन के बू है कारे भूक्य प्रेश्नाठ—सूचल १६०); यह तत होता तोच की बब बह गय, जार कर्णाल के यह कारो (राधान प्रधान— राधान दास, २२// अन्यवदी नाटण के सिको जाने से बाह-वाया के बर्गालय का जूड़ करणा हो वसा है (गुन निय— बान मूल गुन, १४४), यम बन्धायमान किया नो जम स तथा मुह करणा होता (गिली—स्वश्नात १६७
- (२) भागना । प्रयोग-स्थेन क्या इन दुव्हो का स्था नालाः होता है। (भाग्यंबाठ (१)-सालोन्द्, ५२७)

शृंहकी काना

मुद्द की बात छीन लेगा

विसो के मन की बात कह बैठता । प्रयोग—अमने मेरे बृह से बात सीन भी (पिठ १)--प्रेमश्रद, २५०), आई । यह बात सी नुमने केर यह से सीन की (सुठ सुठ--सुदर्शन, २००

मुद्ध की मीठी



श्रृंह की काली रक्षता या वा जानी

मृद्ध के कर

मुंद के बाद विव धटना

- (व) मन्त्रित होना वयास होना । प्रयोध—बही विशेषा म व के बन को जावेगा नववड़ा (वस्ति — प्रतिकोध ३५) परम्यु तुम मांगो में नवड़ बनावड़ को है ही हाँहरूओं और भागों कर भी परताब किया है। तुम्ही मृद्ध के बन विशोध बामना —धुनाह, इस
- (२) फिनी बस्तु की वाचे के सिवें बार्चन कानूर होता।

मुद्द के लाब प्राना

चेहरा देखका सामनेवाचे के भाग जान केना 1 गरीन-विकासका महत्वाच के समाजित आह पह जिल्ला किस माठ तमी हुठा

मुद्द जिल्ला

प्रभाग होता प्रदेश स्थाप मृत्य सूत्र देश क्षाप्त हो। विका चुनतेक हरिक्रीध ३५

मुन्न ग्लूलभा

है) कहना । प्रयोग वरा महे नहीं मून गरना उनके सामन भामी अपनी र ० (१०, ५५ पर विदेश का मह बाब भी न अना रूपंत के प्रभाद कर मह गना जिसकान भीता के निम्म दाने प्रशासा केंद्र रूपो नाना पही भागे — हरिकोध, १५४); कही कर्मणास्य हो तो असक। यह मुनना चर्राहर (भूवठ – प्रसाद, ६१)

१८८ । या परिन्धीसका पूर्वक कार्य करने की अर्थन प्रभार

मुंह खुल्याना

कारने को विकास करणा । वयोग---गुनहारे अव्याकी वारनो देश भा गड़ा हु बेट*् यश गृह न जुनहार*ो (करोध ---प्रेमक्ट ३४४

मुंह कोलकर

मुद्र कोल कर अंगवर

नकोष कोरकर नायमा । प्रयोग-मृह भीनका होरे अनम्ब को काम जान वैदा है, तक यह भी है हो कि अमे अपने निम नहीं पाहिए (मुनोसा-स्नेनन्द्र, यह

(पमान धृहार-मृद्ध कोल कर कहना)

मृह कोलवा

- (१) यून रहते के बाद दुख बोलना । प्रवीद—यूनपती योग के मारे बोट क्या रही थी, यर इस जवनर पर सूंह त कोच सकती थी (मानक (१)—प्रेमचंद, इत); जरा औं भी महार प्रवा पर्यात भारत आगत साथ्। इत्ता करित बीना करतर विसक्ते हाथ है, जनीचे हाथ है। हम बीत जो उस पर भूच बोलें है (कायाची—सैनेनह ३७) (०), पर न बाव उटा यह माना सुरा कासना दिसनाना है। विदेशिक—श्रात्त्रीध, १०६०
- (६ जनाव सनाज करना । प्रयोग नह जा बान कहता है जनाव कहना है जीर साथ के अनुष्ट दूशक सामन महानुश मध्य समय भागत के प्रमुख्य दूध दीन्नार प्रयोग (१) म (१) भी (
- 🕩 वाचना स्टब्स



मुद्ध कोछ बंडना

मुद्र गिर जाता

वदास हो भागा । अध्येष---राम नाइव का सृह निर नदा ,गादान--प्रेमचंद, २०५)

मृह चढाना

कट होता प्रकार मो में मूद बनाकर बड़ा x x (न्दिक्त) ---विक प्रकृतिक

मुद्द बलना था बलागा

- (१) पृष्ठ में कार्य की बात या दुर्वचन निकाना या निकासना; कृषा कोसना । प्रयोग— जब बकाय न बान बन पाई तब पत्था किस नगर न मह सबना कुलने कार्याचा रेश , बहुएँ पाडा पाम नेती है, यह मुहानी नवाता क्या जानें । हो, पृष्ठ बकाना जूब भागती है (शोडान—प्रेमक्ट, रेश), अब बन्ने बाप यूड बकाने क्या बीच हो कब नही रही कमती (बोमें)—हरिजींध, प्रथ
- (२) भोजन होना या करना ।

मृ'ह बाहमा,-जोहता,-ताबना,-देवना

(१) सहायता कारता; क्र्या या साध्य भारता। प्रयोग— सयिक्ष-समृत्रि, गृह सारति अपनी, धर्मपृष मृख कोने रसूठ साठ—सुर, २४६६, यन तम कोरन यो नंद किने रहे, तम में मेरे आवक कियका मृह वहें (प्रेम साठ--काठ साठ १४३), जाप ऐसी बात कहाँ। कि योक से मित कियम ही रही है तो भारतक्ये किसका मृह देखेला (भाव ग्रेशाव १)— भारतिन्दू, ४६६६); यहां की बातों के किए दूसरे का मृह जोतरे हैं (भारत कि। बाठ भारत हुए मारी दिद्र जाति इस समय एक पुष्टापर मण देल गरी है कि क्या पर काठी है, समर से तकवार है, चेरो में सिवक है, कम पर काठी है, समर से तकवार है, चेरो में सिवक है, हम नया न कारते वाले हैं क्यो दूसरों का मृह नेस हैं (गाठ (३)— प्रसाद, १६६८ देखन नाग है हमारा मृह, मार दिवाने हमें नहीं समना (नुभन्देठ हरिप्रोध ६० पर मान मन हो करेंगे आहे हमें में भी सनका मृह म मोहमी (कार्य)— प्रेसकेट, दर्भ, जिस कोई को अवसा सुनाम समान, द्वसका सूह न नाकनी सान (१)—ईमबद, १), को लोग कहते सभा म बादना कर पहल्द क काते स, के लोग साम जिसा पृष्ठ बोहन है संधाठ---कात्रव, ३३-३४ १ -- १, (१), जानिया सूह कोई विकास को सकी दन दिनों है अपने में भी तो स्वी कृत्रवेश---हां(बोध, २२, ८ -- १

- (२) पाई गोप शिवार करना । यथीग-मोने स्वतार पर वे स्ववे का वृह नहीं देवना (अहल-प्रेमक्ट हत)
- (व) निर्वेष करना । प्रशेश---आम स्थितही मी इन्हीं बोबो कर मुद्द नावजे हैं (मृद्यक वृक्त कर्म, इल्स); आनमी ही नहीं, नव बानों में उन्हों का यूट बोहनी रही है अख्यक---देवराज, 66) देखिए वर्षोय (१) में (4-१) मी १
- (व) दल्ल मानवं को उन्तुक रहेगा एक नृपत पूरी करता । प्रमान—का-बाप पोनो ही समका मृह जाहने पहने हैं (गांदान—प्रमाद, २३०% साप के कई भाई-भनेको होने हैं, बढ़ अभी दलको बात भी नहीं पृष्टा: आप बपावप समझा प्रमान के रहन हैं सानक शा—प्रमाद, ३१५), द्रांतरा प्रभाव (१) में (के २) भी ।
- (१) प्रकाश केंद्र गहना ।

मृंद चिद्राना

- (१) फिर्नी के हामकान मा कमन की बहुत मिनामकर नकम करती। प्रधान कभी धमड़ा रिक्ताता है, मुद्द है कभी विद्याना मिन्छ-हिन्द्रीचे ११%), एक बाद ती जब एक बहुदन मेरे बहुई बंडन्स मुद्द नम्भा के क्षित तोच निना महे के तब बहु दरमाओं के काल्य करी होत्तर उन्हें और कम्बो की तरह चुंद मिना रही की (अंतोड़ा)— महादेशी १२३) (१)
- (२) उपहास करता । अधाय-मेंने जो भा तमे में पून-यून का सूद किरावा ईआ०-क्सांक, प्रमान तु बान कथा क बार-बार को पूसती है है एसे पूछने को जो पून विकास कहते हैं कीर इसके विका मुख्ये कार्य कार विकास करता क्या देती है है माठ पंचाल (१)-मसतेन्द्र, ध्रवत , पून विशासर न बाम सूह की हम बोलल -हरियोध, ६४), देविय क्यांस (१) म (२) जी ।
- (३) कुलना में परास्त कर देता । प्रयास-पाद तो आपत
 हमार किनक हुए राज्यों की भी कात कही को पहताने मा

मृह राज्या

HEE THE

(t) # (+) c

😘 मृद्ध काहता

मुद्र नाइ देना

SCHOOL STA

म् ६ यामना

मुद्द नाष्ट्रका

मुद्द माधने यह क्राका

अस्ती है। नवल-चेमचंट, यह

मुद्द ब्रागाना, विद्याना

कमेरेकी समावट में, बीची में पान गीर गराव में

मीत्री की ध्यानिको में -- नाम दिलाने की बजी नागी में

मी अधेजों को शुरू कियान है नेदिन जिन बातों ने अनरेनो

की अवरंत बना दिवा है X X उनकी हका तक नहीं मु

BOOK ACTION OF SHEET OF THE

बारर यस दिन वही नेजी रही तो शतक के पूर्व के कर

बाम्यरागी के भागन जाने के मूत्र कृताना का 🖫 देश---

(२) बचमा-कल्पामा । प्रयोग---वेडि पिन सहते साम

क्ष हो। दिन कुलाहि विकार्त ने पेटांठ वेदाव—गळाठ राज

👫 🖟 अनुव इत्तरी संबंध में एक संबंध की मीवन नृपय रक्ष

प्रमाणक ६०% वामक बार की जनवान के मुंद प्रदेश के लिए

फिन प्रमाने नेतर्हे में क्यी कर नहरं फोला अलाने करी। क्ति। (३)—बज्यास, ५३४) क्यी को बर्वन करिन की।

चीता निन्दी की भाग नहीं बदना। विक-विक के बूट

चुरावेगी (मत्त्व (१ -क्रेसबंद, ३४८, देविन, वदान (१)

मीक्स व क्षानेची (१४३) पेरवद ६४ -

स्तान को वास्तान है। वास्तान क

सुद्ध स्टजाना श्रावमानित होता, बॉक्स्ट्रो का हो कारो । प्रवास-मह

मुंत्र भुलसवा क्षत्रभवन पुरस् कृत करना । अपनेतः । लावतान प्रश्नक कृत को यो कारण को अन्य में ११०० हरू ६८ (बया- वृहा-—मृह क्रांसवा)

र∗ मुद्द साहताः

मुंब क्षांबना

(भगाव पूराव-मृद्ध क्रांग सा रह क्रांगा)

निवास भाषा गाँउ स प्रसम्बद्ध पार्

मुद्र करर सर निकल जाना

सर्वति सर्विता हीता । अनीत-दर्गता का व इ वरा का

育(十)明(मृद्ध खिपाना रे॰ शुद्ध जुराता

प्रभाग या, सम्बादकीय तेल पहला सालवार अब प्राप्त, मनव के विशेषिकों के बृज् हर बाब (रेनर (१)--अश्राय, २१४), यद कि मुहलोड पर बयाब नवे तक पना क्यों व ट्ट मु र माता । धीसै०--हॉरफीट १५४

मद देशा होना

धनकृष्ट का कर होता । प्रयोग —को नायन बाए तो तथी।

के कृत देव के जुरु सुरू नुदर्शन, २०६

करनं के जिए किसी बाज में सुद्ध देना । प्रयोज—सम्बासुद्ध

रापर्शन स्वारं मान यस कृषः नाए (हुँ० सी०-भूर, ३१)

(१) पुत्र न कर सकता, विवस होना:। प्रयोज-सम्बन्धः

हुत उसे भागों ही से इहसा में आते हैं यह सेशारे उनके

बृंड को नकते ही। यह अन्ते हैं (गुंव ज़िव--हांव बुव गुंव)

६२७ । बहुमा बेमा याना है वसे वे बर्च धुनीन असलेवरके

प्रतय वर्षणा पह मुद्र ताका करते हैं (महरू मिठ-वाठ

(२) निराम व्य आना । अयोग—यक सुभार बक्षण्डी वे

क्य क्रिकेश्वर व थे, केविन यस मुद्द तसते रह गये

(१) विना नाम ६ छ। माना । प्रमोत-दिलिए प्रमोत

बबारव देना । प्रमान स्ता ता तेगी का मृह रोहते

व किए में हो कारत है। जीवाक प्रस्तवेट अप क्ष बृह

প্ৰকাশস্থ কৰা ভাষ্ট ভাষ্ট্ৰ কৰা জুইতে ন আল্লেখন,

हार को जैसे बन्दून कर मृह तोह दो जीति।

बोनन न देन। प्रयोग कोई कियों का मृजु सही शक्त

केला कोने । बांध्यात १९४४ , बांक व्यवसाय की बृधिन से

बनन बनान के बिए इस्ट उर्रा है। हि इस कुछी का हाय

의에이 (g)—**현대학**(, 원드리) (~)

म ह प्राचर

경이 취소 호텔

बुह बाममा

मुझे पुचाला

502

न्य व कोल प्रकता

गामं शोर पृथ्यो का गृहः (विलाठः १)- खुरसः ६३ (शंथाक पृहरक—अृहः गोकासः)

मुँद प्रधाना

मून पुनाताः । प्रधान—स्थित विभागतः, सूर् कंपास्तः, साम् सी पदास्तरः, आसं किराकर असे स्थले हरः हः (हस्तरः-इसाठ, क्यू)

(ममरः) मुद्दाः --- सु द भुवश्यकाः)

मृह वर मुंद करना

- (१) सामने कहना । प्रयोग---निर्म किए क्या नहीं प्रतित्व उपाय है कि उस बीपान के किए पर संबंधर हो जाई और उससे मूज-बर-सूद कार्ने करके एक संबंध्या की शह तक पहुंचने की बंधरा करूं (मानक (३)---वेसकट, ३०)
- (२) मुझ-तोष बंबाय वेता।

मुद्द दिकाना

मामने भागा; उपस्थित होना । धर्मात्र—को नो वो हो नी मेरो हेन् दिया है। ती को दश्य देवाननी वृद्धि वयत इसारे ।धिनद्य⊶नुकाती, ३३०, क्यो बह कृत् दिवकाता है को बन दाला में कहा (कर्षक कृतिकोध, ३५

(२) सामना करना, इस माधक काना कि भारतन व दोना पढ़े। अमोग—हमारे नार किमी तरह का राज्य फारत नहीं है नाबू माहक। अ अ मानिक को नी एक दिन मूट दिलाना है कावओं एकन नाम ३६ ३० उपच नात हैं हमारा मुद्द मूट दिलान हम नहीं काना चुमति— हरिग्रीय, ६०)

मृह विकाने कायक व रहना

, गाग- मृत्र - युव विकासे सायक न छोड़ना

र्मन देखकर

रमान का घरान वरके। प्रयोग मेन पुरास हो नर

इंग्लंबन विश्वाद किया है, सुन्दाने किया की ओर देखका में १६ वर्ष का का मा वह किया मुख्य का अध्याद का विश् मात कर बायकान की नहीं महें (मुनतिक—हरिसीस, १०

मृद देखकर ब्रांका

क्लंब इस करता। इसीय—साथ है है साथ के ताहर वर्ते कृत दसाना देस की अभि महे (बुमतेव—इरिक्रोस, यून)

मुद्द देख कर बाहा देशा

यो केशा हो उपके काम बैका ही कारतार करवा । स्वीत-व्यविक केमी-वृद स्थवन वीवा दिया जाता है, कामने हो वि वही अस्तिन-अंगवद, शुरु

धंत देखना

ं सुर अपराना

संह दम्भ का

भी हार्रिय न ही केवल कारने दिवाबा ही। धरीन-भारत नोबी मृद्ध केव की हमकी धीर्ति कही आठ ६० (३) - भारतिन्द्व, तक में बनक वर्षी, कुछ मुख्य बन्धन नहीं प्रत्ये । केवल मृहदेश की शीति करते ही (गवन देशकार कार)

मुंद्र देशर

- (रे) जिल प्रशासा । प्रधाय-ज्यास्त्रे सामय जुड न सीतिसे मूल न सीतिसे सामी । बाद यह वर्ग नोट वरिः वारे, मूद बाद है कामी (कुन प्राप्त-सूर) नेतिस
- (२) बावकरों का कार्य के बारेन में मूत्र कामना ।

मृह भो रकता

विजी क्यांचे की प्राप्ति की घोट में निराम ही माना । प्रयोग-मृद की पर्मिए, जनकी बोटके स्थानकों के निर्म क्षित्रकों है जानत (ह)-द्यावेद, क्दाः कृत्री प्रश्नका म विज्ञका । क्ष्मकते होन क्षेत्रों दुवान विभावत बहुत स्था क्षम कृता दुवने मृद को नक्षों सुर कुर-सुद्धान, प्रदं

(बनाः वृहः--बुंद को छेना)

शह व साथ सकता

(१) शोर व वक्षत्रमा । प्रचीय-वहाँ में मीनूथ वर सीर कृत्वा हों सूर व चीमक केला था पर पत्ना तुम सकेती

151

गहोती और कुम्याकी मनमाने कारोप करने वा अवतर विकला रहेगा ज्यानक (१० लोगचंद १५०

(२) कुछ सह न नवना।

मुद्द न दिकाना

- (१) तपनना न करना, नॉस्यल होना । प्रयोग-न्यांकिन सूच दिखाइ नॉह तकं ,नंद प्रयोग-नंदर, २६६ इस मनानेन के मारे तांग निर अधा नहीं करने, मृद न व्यापना ने जिला। १९.— सूचन ४६), इसता क निर्म कर पढ वी पाला ने निर नागरे, किसो को मृह न दिला नगरे (११८म-नोमचंद, २६६ : सामारहण इसन दुनी में कि किसी की सूचना मृह तक न विचाल के सुवारर --सार नार,

शह गईभना

प्रशाह न करमी । प्रयोग—रच मनद रस-पाण परने का मृह न देखना चाहिए (सल्टा (४)—प्रेमचंद, ७४-७६

मुद्र स होता

- (रे) योष्यतः या लामकियन न होती । यथाय-वी पृष्टारा य पृष्ट कि बीधनांगे मुोड तरिक केम बादने व लो प्रपटेठ —हास्योध, ९४)
- (२) खेद न होता (फोई बारि में) ।
- (६) अल्लाम पामर ।

सुंह निकल धाना

- (१) चेहरा जनर जाना । प्रयोग—नृषक् का शृह उस मानिया में विश्वपूज करा ना विकल जाना (शानक (१)— प्रेमकट २७०
- (🗤 इपम तो जात।

मृद्द संघ हेसा

- . र अनेद प्रगत करना । प्रणागः सुत्र जिल्लान जान्यकः बनना प्रशानि ना बारबार महन्त्रासः बीलठ—क्षीद्रीय प्रश
- (४) अभित दर दना ।
- (पे) अध्या जनाव देता ।

मु ६ वकड़ना

शोसने में कावा देती । ध्योम—काको काको मुख माई कावी को विवर्ष (मुख साठ- कुरे, २३४२

सह पा

सरमकं, सन्वसः। प्रयोज—सावकं द्वाशो पर पनने वाले शावकं सृद्ध वर आपका सप्रमान कर रहे हैं और भाग हम रहे हें भुनेच⊶साठ ठामी, १६,

मुद्द पर भाना

- (२) उपट कर नवाब देता (

मुद्द का बदला

उपियति से काला । असीम-में उपके मूह पर कह करता हूं (सामी पुरु दर्मा ४००); मक्षी बात मुह पर बह सबते हैं इमीमिए दिसी की पटरी नहीं बाती (पाती) --रेम, पट), यह कोई मुद्ध पर म कहें, केविन सम सूबी-पटी करते हैं (१९० (३)--प्रेमबंद, २३६

मृंद पर काशिक पोतना

कर्मकर या अपयानिय करना । प्रयोग न्यात मी कि पंत्रथा की ननान जानी तो क्या हमकांग इधियार दासकर अपनी के मृद्ध पर कर्मकल पोनले ? (क्याति—-दें o दार्थ, ३९४): शिव कानी की प्रियाने की उनने इनने कियों की पंच्या की भ अ तन क्यों ने आधा मनने इसके मृद्ध पर कर्मका पोन की (गान--प्राचद, १३१)

(नमा॰ नेरा॰—मुँद पर कास्तिक समाक्षा)

मृंद्रपर कहा होता

बहुन पास आकर बर्गा होना । अयोग—एक की ह्या भी हिं कम भी, दूसरे उस अवार का कावार मेरे मुंह पर जहा हो नाना नानी देश गुना रवान। वा (मान० (१)— प्रेमनेट, १९१)

मुद्ध पर बाटा स्टाना

भाग विषे जुर क्षेत्र याम पानः अपवाधिन होता । प्रयोग-स्था मह व जिल्ला सान क्षेत्रमा इयो गंधी जीने सर्गाल-हिंगकीच के

मुद्द पर भूता चोतका

प्रथमनित करना । अपोत- क्यों में परिवन्त्यती, तेरी पेटी धान मासालुबान भीर जानावहन के क्याई के सूत पर भूना पोत बाई, सुना है । (सुहान०-- क्र० ना०, १६)

मुंह पर फाड़, फिरना

मुँत पर भरड, भारता

अपमान करनाः वयोग—दूसरी होती, को मुस्तरी स्व पर आह्र सारकार निकल वर्ष होती (वीदान—प्रेनबर, इस्प

मुह पर नमाचा बाजा

स्रवमानितः, सर्वत्ति होतः । प्रयोग-न्तव हमने व कीन सा ताचा । कथ तथाचा तथा विचा वृह पर कुमतिः-हरिजीधः, ६०)

र्मुद्ध पर तमाचा सारकर

(रे) निविधार प्रमाणित काके। प्रयोग—पर श्रम बान के निक्त भट्ट क्या कान निश्च महासूह र व्याप्य मार्ग्य एक से प्रथिक जन शिद्ध कर सकते हैं ये कॉडें○—अंश्ला०. ११)

(२) शृहनीड क्वाव देवर ।

मुहे पर बाला जनका - प्रास्त्रका हेना —पपना —मृहर स्थाना या संगानः

कृत बोल स नामा था बोलने व देना । प्रथोग---इन्हे मन ने अपने मृत पर मृत्य देकर में कृप रह नथा (राह्म-न्य) स०, १७२): प्रत्येक सन्दर्भ स्वयं बाने पर नेपार था कि कपश्चंद सर्वेश निर्दोध है, प्रेम ने अपके नृह पर वाचा नया दिया है (मानव (म)--प्रेमचंद, सर्), मेरे मृह पर वाचा होता दिया गया है, मेकिन क्या कर्क किया बाते यहा नही माना मानव छ प्रमद्धद ५७ वद सावनाय वक्षीय न परन किया कि नृम नामनों हो कि तिस नामने में यह पर वर्गा करें में से, तब किसी धनक्ये सक्ति ने मेरे मृह पर वरना करें दिया मोली---चत्रेय २४९ वो संच पर न सावना पर प्रसंक मृत पर तासा (मानव्य-व्यक्ष्यन, पर, २६)। में पृत्यने है, क्या वे सब मृंद पर मृहर जगाउँ रहती थी ! (आसी०— प ० वर्गा, २६): बाब किसके मृंह ये तरमा जगावे जुली है (पाटां०---रेगू, ३०); कियाजित अस्ता ने समने मृज पर तामा बान दिया जिला०--कोशिक, १०३); जून बके तो किय तरह से कृत वह या किसी मृह में जगह तामा रहा प्रस्ते०---मृहिसोध, ६६)

शृंद पर नाका बालना दे: सुंद पर नाका जडना मृंद पर नाका देना दे: सुंद पर नाका जडना

मृद्ध पर नरस्या पहनर दे॰ मृद्ध पर साम्या अङ्गा मृद्ध पर थप्पद्ध सामा

(१) जनगांतर होता । प्रयोग---जीव संप्रारि सः शोशते हैं सुन पारत वर्षी जब बावी बहेरें (धनक कविश---धनाठ, १९९. (०): विम तरह सह है दिसाते दम रहा वर्श वर्षड़ है नहीं युद्ध वर तम ,बीसठ---सरिक्षीय, १८४)

(2) बाटा बारा जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (2) में (+)

मुंद पर धृक देता

भाषामा वर्षमा या अपनाम करना । वर्षाय — मृत्रको कथी पृथ्वे परामे तो भरे मृत्र पर कृत देना ,आसीक--पृथ्व वर्मा, २१३), मृत्र विपा भेगे नगर सुद्ध पर मना पृथ्वे वाले न क्षेत्र पृथ्वे पुश्चेक--इतिसीध, ५०

मुंह पर फटकार वरमना

बेहर्न पर इकारमा उरली । प्रमीय-सीट बार्टी संस्त्रमाँ के पृत्र पर फटकार जन्म रही की (गोदान-प्रेमचंद, ११८)

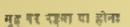
मृद्ध कर बढाई करना

विसी की दर्शन्तिन में उसकी तारीफ करनी। प्रयोग— सम्बन्ध क्षु कृति सङ्गाई करत बदन पर चरत बहाई (शमक (क्र)—तुसमी, क्षाप)

मुंद्र पर मुहद लगना पा समाना देव मुंद्र पर ताला अदना

भृष्ट पर रकता

(१) कहना, जम्दा । प्रशंत-इति के नांद्र पहर निर्मय कर्ज, कंग नाम नित भूका न परर्ज (क्योरपंताक---



कबोर, १२२), जिल "आप" की बाद खबने किए तथा भीरों के प्रति र्वटन राज मुद्दे कर घर रहने हैं, यह बाद क्या है (90 वीठ—पठ गाठ मिठ, ५३

- (२) दे रेश (क्रांप सं) ।
- (3) बाला +
- (४) पोडा गारता (

मृत पर बहुतर यह होतर

हर समय चर्चा करना । प्रयोग-देवसांत से युक्त वर नी गया भारतमाता का नाम रहता है। कामठ-देवसां, ३१०

मुप्त पर खाना

- (१) मृत से रहना : अयोग—नात-नात न वर्गमा की यहाँ बाम मृत्व पर अध्यमे—केल तुन्दारी राह देख रही है (साम्मठ—देश काठ, ११७); यह अपने दिए गेंग चीर विश् पेस भूगता नहीं था, पर ऐसी बात कभी मृत पर रहीं साला का (सुनीता—फेनेन्द्र, ६), बान प्रकार मृह पर नहीं साह का परनी (मुंगति (मृ —स्टिजोध द
- (२) सामनं कहना । प्रयोग—कियो का मृह मी यह बात हमारे मृह पर भाषे (इक्षा०—6810, ६५): हवे निश्वत है कि चाप पानीशार होगो नो इस बात के इस्ते ही पहली काशी हो बायगे और किर कभी यह अस्त मृह पर भी न नायगे (४० पोठ—प्रेठ नाठ निठ, ४४

मृद्ध पर श्व्याकी पुत जरना या पोतना

भवनानित यो कर्नाकत होन्द्र यो क्यन्त । प्रयोक- हुम्-तिति सु देनित नहि मार्थ । मुह मसि वंशित क्यार्थ नार्थ (प्रदर्श-प्राधिमो, १९६१मा) भंग-साहित्य के मुह पर क्यमे स्वादी किरती है या नहीं है पूर्व निर्माणकार मुख्य पूर्व प्रदेश स्थान सीर पीत नत्र की प्रश्नाम उत्तम । में बहु प्रश्नाम । पार्थ को समूर नाम के साथ पूर्व पर जन्द्र प्रश्नाम । पार्थ को नव नाम पूर्व होते । महिन जन्द्र किनी दिन सुम गई ना भर मूल पर स्वाही पूर्व अन्तमी किन्द्रमा साथ मिन्न ह

मुंह पर हथाई उद्यन

मेडा स प्रकारत्य प्रगय होता । प्रयोग -- नियस्य प्रयो प्रतिस्था १ क्या को, मृह पर अदि हुनाई, राधरण्यकाल-- रम्हाठ रेज्य. २३); जनके मूच धर हराहरा उच गर्ही ची (महन-प्रेसक्ट, ६९); वच हवा चाप हो यसे हम सी क्या व स ह पर हराहरा उच्ही (कुमतेठ--हरिश्रीध ३९

मुंत्र कार होके परमा यह क्लिकर, जीवं प्रश्ना । इसेल-इसीमिए जे नारे जान के प्रश्न पाट शेवे पता था (इसक--इसकिए पर)

यर पंजा

- (रे) क्य देखना । अधीय-विदयं पहति, अपित नहीः कार्ट, कृत पाएँ यह कुलि है (सु०सा०--सूर, राज्यक)
- (२) सम्बनि पाना ।

यह पिठाना

- (१) वृती दक्षा होती । वर्षाय-वेदनी की अपेट दित कर कर वालमा पेट युद्ध विटाना है (बीसेक-इतिजीध, २३)
- (२) चून्ह भार में भागा।

मृह पीला पहना

- (१) ज्यान होना । प्रयोग--रियरे बचन पुन हिमरे प्रकार होते, १४७ घ च ३ न विकास विस्पर को (मार्टा) मण्ड-महिराम, ११३ (🛨)
- (२) सब मा भरता के काराव सूंह भौतीन होता । प्रयोग — रावक ते काल पृथ विशा की निर्माण भए स्याहमूच नोरव नियार-मूच विश्वदे (सूचक प्रशाल—सूचक, २१४.) स्थाक का वृह पीना वह क्या (विजय—स्थाल हमी, २६, देविय प्रयोग (१) में (+) भी।
- (३) कारत जाना । प्रयोग—चित्रनेन्द्रा का मृत्र तक शांत के लिए पीना पर नना पर उनने संभव कर उत्तर दिया (४५० मा००म) 38

मृह काइका कहना

- ्रं चार्याचनकर अवस्थार नामा (प्रचाय--- अधिमें मुज्ञ को भी रार्थ क्षाप्त को स्टब्स सा इट्स्का नदी नी भाज प्राप्त करने हत्य जाह के सार कार का विधिया के सह विध्यम है इ.स. - इ.स.० ५७)
- (-) कहना अभाग -जरं नकता मृह स्थारका नहीं कहा। समा x x थरनोठ- वित प्रत. ३४)

मुँह फाड़ देना

थराजय स्थोकार कर केना, धीन ही काना। अयोग---मंत्रील देखते ती मृह काय देते हैं और पैर पकरके समके हैं (मृठ हाम्राठ---गुनोरो ५०.

म्ह फाइना

- (र) बाधवर्ष से देखना । प्रयोक-प्रतिषेत वावल की भारत मृद्ध का बक्तर देखन रह वर्ष (विज्ञातिक ११-वसुरत, ५३
- (२) क्षप्तन अधिक मध्य करना ।
- (६) प्रसम्बना से बीतारा ।

मुंद फिरना

- (१) विश्व होता। प्रयोग—मृद्ध विने वृद्ध विरेहणानः वर्धो वृद्ध किरे बृह वृद्धि केय हवा (वोसक—हरिकोध, यथ
- (२) सकतः सार गानाः।

मह कीका करता या होता

- (१) समान्द होना । प्रयोग—जामुनि भीति, धर्मीन दियो, सुनि लोमन सीति, भयो मल पीजो । अब्दर--देव, ११६) (---); महनी अवका रेकने वाने है पर दव को दशा देशकार मृह पीका करके जले जाते हैं (गोदान-पेमकंद, २८); पार पक्षे पीका म पीकी बान कह कीन ना मृह हो स्था पीका मही (घोलक -हरिजीक, ६६)
- (२) प्रशंस होता । प्रयोग वारो वह प्रशंसक विचारित जिल्लामी कर्द क्रमचार किसी की त्यो प्रशासन कोची बमास जब अब साम को ह्वी रह्या कीको जगक प्रदासका २५ देखिये प्रयोग (१) में (न-) मी।

मृह कुन्ताकन पंठना कुन्ताना, स्तृताना देवर शना प्राकृति व प्रमानाय या अपन्यत्या प्रकट शेनी । प्रमाय — प्राप्तया माह फन्ताय देनी यो उक्ती प्रमान मानन (१)—प्रेमचंद, १५६), कारिन्दा नाह्य नाम के लिए बुड़ पूज प्रयो गोटान प्रेमचंद २६ केलाइन न १६ -इन्दिर (सरी सन्दी) हुआ क्या है क्यार मुद्द मुजाये केंग्री है (श्वाल(१)—यञ्जात, ६५)

मुद्द कुलागा दे॰ मुद्द कुलाकर बेटना

t52 O P.—(85

भृद फ्लबर

- (२) यसमृष्ट होता । प्रयोग—मृद है कि प्रश्ने करते सूत्रा हुना । वास्त्रित कृत नवक में भी ती पार्थ (करवाणी— केनेन्द्र, १५१), देखिये प्रयोग (१) व (क) भी ।

श्रद फेरका

किरका होता। प्रयोग—साम नुस्तापी ओर से मृह केरते हुए साली टो ट्रम हुई जा रही है (शिक्षी—निराणा, १४) (२) मृह मृद्धा कर देखता। स्रयोग—रासी मोहि तात समनी की, धरन मृत्यास नाम मृत्य कंगी (सूत साय—सह, १६०६

- (प) विसय होना । प्रशेष---वानकी रमन वेरे । राधर करन चेरे, ठाउ न समात कार अकल निरंपने (कविठ--मुन्ना) १५१ तेनित कार्नान गीती गांच पन पानद भीतीन जो बन केरे (एनठ कविल- छमाठ, १६६)। 'दास' केश यूल केरि रेकि कुछ में यह लांकि व (राज्ञाठ संबंध---राधाठ दास धन): मुन्ना में यह सारक केले, संबंध में तह मुन्न केले (कार्यक-नृत्त, १००), धमर वह यह समान कि घोरनार नाम रवान या पाप का मुन्नाहते में आकर सपने कर्मन्य से मृह केर मेंने तरे पा तनका भाग है गोदान---प्रेम्बद, १७६
- (६) काला । प्रयोग-- योहं काश पर सृह फेरने असे सूर्य-- सूर्य दश्के.
- (b) कास प्राप्त का भारत हो गया, पुरुष का गानी। भूत केलाना
- (१ दिश मार करती प्रणाय अन्य मन वान) परित में दी कादमियों की कांस कुँछ कर सामा समय सूम मू ह फैलान भी (गीटान—डैमबंद, २५१), बायते के लिये न मूंह ऐसे मार निर्दे पर न हान सेकाने (बोनेंग—हरिसीध, १६४) १ - बर्ड उल्लाह तोता प्रधान ग्रांट र कर कर परंश इस में जाना करने की मूह फैलामें हुए में (शानक (4)— ऐसेबंद, २७४)



मुंह क्ष्य कर लेगा

मुक्त म कोलया । प्रयोग-सन्द तम तम न गृह कर अपना स्रोत क्षेत्र तक न बन्द हो जाने (कुस्तेक हुईरअध),

मुद्रि बन्द करना

- (१) निमी को बोलने में परास्त कर तेना । किया के हो से हो से मान मुख्य कर कर अने हो स मानति—हिंगियोध, १४
- (२) विभी बात को खिनाने के लिए प्रश्नि करना। प्रयोग-इन दुव्ह धनाइक में मुख क्या नरका दिया 💢 💢 मैं बसका मृह बढ़ रखने के निए, इन प्रसम्भ रखने के स्थि, कितन नरन किया करता है 🗵 🗵 मन ब्यानिय-दर्शनों का यह नपहार है 🏌 संगठ (१)---प्रमणंद, देवप
- (३) बरनामी की बात को कहने स देना । अवान-कह मी बाद तकी धर आगान यह बहु ऐस के बस के मार्च गांव का मृज् बर कर बाद (गोदान-धंमवद, १३०)

मुद्ध बलानाः

यद-वद वर वालं करनी; वाल वजाना । प्रयोग---काम बाबी का बहा तक कौन का मृष्ट्र वजान के अवद वजना पहा (बोलo--हरिजीक, प्रभ

मृंह बनवा

- (१) नेहरे वे समसोच अन्तर होना । प्रचोच-स्यू इ बना देश मृह बनावें नवीं (बोस्ट-स्टिमीय, ५४).
- (२) गमिना होनः।

मृह बतादा

- (१ ६०० होता द्वार प्रतासे दानक दरा दरा है बारो पर सुद्ध बनाए हा अतीर दूसरे की बहबती बहुर बहुर का भी द्वांपकार सुद्धी (परीक्षा)—श्रीक दास, १२६), पुक्ष बंदी बहुर दनाए इस सुद्ध विकास विकास (मा) श्रीवाठ —शाक्तेन्द्र, दहां
- (- किमी प्रतिय पा अनुनित काम पर जहर ए असन्तर प्रगट करना । प्रवीध-स्युष्ट चना देख सुद चनास क्या (भोलक-हरिओध ८४
- (१) भग्न सम्भवता

मृद्दं का कर रहे अरहा

- (१) पारताने हुए गई जाना । सम्पेयान-स्वित्ति प्रसिद्धार सम्बन्धि होते पहि जेही युद्ध काई (माण्यकाट १) मारतेन्द्र प्रदेश
- (२) शरमा शामा ।
- (१) परित हो भना

मुद्द बानर

तने की इच्छा होनों। अयोग—अक वाई बोरला विवा हो तक क्या यह कार कार मुद्द काते. भूमते≎—हरिस्रोध, प्रष्ट

मृह बाये होशा

- (१) १ण्ण्क को उत्करित होता। अयोग-चया यूगे महाक्या नहीं क्रती में गंगा कका। में याने किन्त सकी-दार पूर बाय किरते हैं (निस्तंश-कीशिक, ४३)
- (२) अध्यने प्रस्तृत होना ह

शुद्ध विमादका

य ह बनावा (उपलान बंग) । प्रयोग-- जनहोते शृह विवाहकर कहा--- नशी कृष्णी०-- निराष्ट्री, १३०) ' युह विदासर म स्थाय सुह की हम सृह विवाह स सुह क्षण स्थाने कोम०--- हा (स्रोध, न्य)

मृद्ध विस्काना

- (१) पूचा वा अमतीय प्रगट करना । प्रशेष —सिन्यू तरंग १व सनी टारों में बहनी घरा बाति की पूर्वन्य श्री-में कर कम्पाती पृक्ष विकासी क्याह साती प्रति हैं ,क्यां⊙— यह करं।
- (२) अपेबा बरनी र

मुद्द मर

संस्था जना वर्षि प्रकार करकी ताली (उद्योग रहे) नोज बान सातु सी सुद्ध प्रति जन्म स भूमि कही। यातः० सुर <u>कुनमो ३०</u>

मुह भर के पाना

अन्तर तन्त्र सन्धानित होता । प्रधान-नीर विगते होत सर का जिल नया पेर नेरपाया व सह सर पर गरे कल्क- अस्मिन देश्य

मुद्द भर बोलना

प्रस्ती नरहे अने करका । अयोग आवका सुद्र नावन ही

रह गर्मे । अस्य तो तृह भार कामी बोले नहीं (बॉक्सेट— हरिक्रोध, 83

मुंद भारी करना या होता

मृह पूजाना; अमनाय प्रस्ट करना । वर्धन्य—को तो वे जानका हूँ —क्षत्र कर की एक्ष्यन्त ने मृह जानी कर निया (कंकाल-प्रसाद १४ : तोकुन प्रसाद ने नेन्द्र—कनी का मृश भागों है (सा -कोशिक, २४९)

मृंद मलना

निरादर करना, वर्गनस्य करता । प्रयोग-सम्म किमी का मृद न कोई मृह विने (बीलक -हरिओच, द्वरु

मुंह सारना

- (२) मुख्यादु प्रोजन को जन्दी जल्दी इस या सामह ।
- (१) किमी बरबु को मेने की दच्छा होनी।

मुंद मीठा करना या कराना

(१) किसी गृम अवसर पर मिठाई जिलावी । वयोद— चलो बार, सुनी बाजार की गीर करा है, युद्ध थोडा करा है (भारत (क.—प्रेमचंद, ६४): बलो करे चर, स्वत्या गृह गीठा कराई (चलती संबर—उप. ६२ , चाची बाज हमारा गृह भीडा करावी आज चडा सूच समाचार नाता ह प्रमात—सीक्षिक, ६६)

र्म्ह सीठा होना

- (१) प्रिय वर्षन कीमना । प्रशेत—पूर्व मोठा मन विश भरा, रहे तपट के इस (प्रेम साठ--सठ लाठ, पर
- (७) पिठाई मिलनी ।
- (३) शाम होगा ।

संद सुरक्षाना

यहरे पर उदासी मनकनी । प्रयोध—रहाय सम्प्रत के बाद मेश्र एक मुरक्ता पथा (बाल०—ह० ५० हि०, १००)

मुंद स्वना

बायरे न देश। । प्रमोधः —यो बन्ते ही अर्थि का सुद्ध सूरिते । दोन नाष्ट्र स नुस्कारे तो असरः सुमलेक--हरिधोध, १९०)

मुंद में और पेट में और शोना

करता कुछ पर नियस कुछ दूसरी हो होती । प्रधान-स्था कर बान पर वस आना । नेहि औपून दस हार विकास पर-आधनो, पर्कः

मुंह में बचर न आना,—बात न भाना

मुख कहें में पाना । जयोग — मए किसन कृष आब न बाता (गानक (बाल)—सुलको, पश्चाः जसर कृष खायो नही कब कवि नायो नेन (केंद्रका (२)—केंद्रक, हुर्भाः

भूत से काजल लगना या श्रमाना कालिक पतना या पानना कालिक लगना या श्रापता, स्याही लगना या नगाना

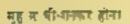
सर्वाचित होना मा कर्या । प्रयोग-संप्त हुरता कि अब कर्त्त पाई । स्वि वृचि मी विधि मुर्ग सनि नाई (गम० त्यास० स्वयं वृच्च नी विधि मुर्ग सनि नाई (गम० त्यास० स्वयं वृच्च वृच्च मानदी प्रमादित प्रमाच्या, मानि विध मोती, बीच नते मूंह क्रियोगी (क्षि०-सृक्ता) १५. बाव वह मूंब तृच्च कर्या, विस में मा बूरी क्यानिया कर्य का अब क्षेम्री०-हरियोध १३६); युच विधानी व्यवः क्षेम्री क्ष्मि क्षमि क्षमि

मुंद्र में कास्त्रिक पुत्रना वर पोनना रे॰ मुंद्र में काजन स्वतना यर स्वताना

मृद्ध में काश्यिक समना या संगाना देश मृद्द में कावल समना या समाना

मृ'ह में काक पड़वा:--छाई पहना

नुष्णा समझता । अयोगः - "शासतोदपः" गया और हमेगा के लिए गया । पुण्यम के बाह के गृह में मान गर्छ (पद्रम०



के प्रतः—पद्भः अधाँ, २,६०), हत्य विद्य वाशो व क्या क्यानी बसी मृह क्षिणे मृह प न क्या सुरक्षी पत्ने बोलाः --हरिस्मीध पत

(नमान पुरान-न्यु स ही ब्याब्स देखा)

हु हु में बी-शक्त दोना

सन्दूत वा करने वय की बात किसी व कुनन पर कमन्य होकर उनको शाक्षाद देने के आप से नेता बड़ा अध्या है। प्रशीप—स्तोबधार्र—"सावकं मृह प मी-जन्म × × प्रत्या अब तो प्रशासन सीजए" (पैताँ—प्रतक, १४१) पुलोक्ता— 'तेरे सुद्र म बी-जन्म । अब तो पुन्न कमोड-सभी का सहारा यू हो है" सा—बीजिक, २३७ (शमा: पुतर — मुंद से सुद्य-धीर होना)

मुद्धि में भंदन समना

शम्बात विकास । प्रशंत-समा क्रिके मूद में जनात, क्रिमी मूह में का निवा योग है अमठ-शृतिकोध, ६५.

मुंह में छाई वंदर रे॰ मुद्द में बाफ वंदना

मुंह में छेद व होता

कारने का समाय म होता । प्रतीय ज्योग वरिद्यालया । वर्षों पहें श्रुप वह वह का कियी के हैं जहीं (कोसेंठ---हरियोंस, १८३)

मृद्ध में नुलमी रक्षक बात बहना

र्मास्य और ठीमा बाग चडनी । प्रयोग—मांची जान सर्वे बोनन ही, मुख में मेरी दुलबी , ए० साठ—सुर, १५०६

मुद्दे में दही क्रमना

मुद्र से द्रान व ताना

बुहत्या भागा । असाव - किया विता इस वर कराय दान कर दान बुद्र से पर भी क्रिक्ट नहीं चुंपरेट हरियोध १६० सुंद्र में सान होता

मानवस्य होता। प्रदेशना इस दो अक्षर (पान के हमाइ तथा इस वीटो सेरे छोटा-छुटी हरिसदा सुधी जन्म कारीटार ने यह कीतान टिप्पन्यास है कि विस्त के सुह स र्शन है को कुरा-गुरा कर्णन कर नके (५० फीठ--४० ता०) ि० हर

मह में भूल शास्त्रा,--पत्रवर

वरण धानो । धनोग--- नान पराई प्रापता वाषा घर कर बंद । जीनो की धरोचता क्या में गढ़िया के (कर्तीर प्रश्नात --क्वीर, ३० , जनामिष्, सिमुदान-न्यास क्या पृति के गीनो न्यत्यका --नेया, क्या, जी न क्यांत पित सिमन की पृति मुक्ति-जुद्द रीम जी नक्यों संग सजन, तो पराम नेक्य है की ब जिल्हों स्था के बाद साम प्रशाद (३)---सारक्षिद हैं के,

सह से ध्यापण्या १ - सहसे ध्रम्य द्वारता

बर में पाना जाता । अपना

भावे को समकाना । प्रमोध नगा के स्वयं में स्वयं मा कि मोको देसकर इपके स्वयं के पानी भा नया है (सुठी।। (१)— यहामान २३), कर किसी की अभ्यो कीम देखने ही जिनके यह के पानी भा जाता है, के बरावर करी-सोटी मुना बरन हैं निर्मा ने शुक्त देश राज्य में बर अगर को देखकर कनकटन गातन के मुद्द में पानी का कथा (रैज्ञमीठ— समाठ देखी, पश्ची: कृष्ट में पानी भए आवर (अग्ना भन्ना क्यो नहीं, सहर पहान्यदा मक्की ही हो बार यहा है। के समाठ दिल्ली है (गीदान—सेमबंद, वहन्द)

(२६ ६८२ प्रतिवेदाना **हुट्**ता) मृत्ये दाला भण्डा * सहसे पण्डा भाषा

बुह में बाग आवा

केप्टररण के तर्ज प्रयोग क्या सर्ग की आयन, बह या की जार सहस्र का अला सर्गिती संस्था हरिसीच्या

सुद्ध में बात न आना रेट मुद्द में इत्तर न आना

कृद में मक्ती जाता

(। कार करण परक की नहांका प्रयोगः आंग कराही कि सरस्य का कियो लाग स्टूडिक को स्टब्स मिलायो कार्यकाली कार्यक्षा के स्टब्स

্লি সামূল ভালেণা রালা।

मृत में मुद्र सिम्बाना

हो-भी, हो-को करना। अधिन—तम स्थितः को करन हैं उन्हों के यह म और नोम भी मृह विकार जनके हैं कियार सर सर ११७

भंद में राम बगल में खरी होता.

दिकाने को सामृत्य नवटो होता। सबोन—सङ्गरेश है सामी और तीर्थ-प्राची। यह वेंदान, वनत वासने प्राप्तत- देव सुव. ३३६

मृद्द में लगाम रचना -- जगाना

अवशास करते हैं। बोकना (प्रयोग-- वह इसोदे की बाट लीककर बोला--- सह के लक्षण क्या (1980--- 20 स्व उपक्षाः असे, मैं काला हु जुह से बताब क्या (एस०--उठ सदह, ४४

(नना । नृता :--- सृ'ह से व्यवास हेना)

मुद्र में लगाम न होना

भी मृह के आमें, कह देना । प्रयोग—स्वया ना की मृह म लगाव नहीं ? परलेश —रेजू, २५९), यकर रखनी गोचाल, मर्बरदार के से से से संबंध कहीं किसार —राम, १३१

मूंह में खराध्य लगाना ४० मुंह में खराम रणना

म्ह में लग त होता

शोपने में प्रशास्त होता । प्रयोग-- पर्वत के मृह में नन महा है 'परतीठ--रेगुं, धरन

मुंह में महर्दा समग्र

माह सूचनः । प्रयोग---सूचहि स्वयः स्थानि वृत्त्वाती (सायक स्था--सूमसी), ५०८.

मृद्ध में स्थाई! संतमा या संतामा के मृद्ध में काजल संतमा या संतामा

मुह मोडना

(१) विकास होता । प्रमान स्वादान प्रमाणिक स्वाद् स्वाद करने स्वाद कोई मुख्यात स्वाद गाउँ । विवदा कार्य करने नहीं अवाद कार्य जिन्हा समा मोरा करेंद्र मुलसी दिश प्रसी सी समा भोति है बहुत निर्माण साम सहस्रोणिक लेंद्रेश क्ष्म को निर्देश मून समा भी मनी वर्ग है, विशेष्ण भी भी वस भी मू मूर मोर्ट है क्या — केसर, श्रम् । कोड, बूंब बोरों, जोगी कोट व मनाई क्यों स्त मुन्न कोड, करि भोगी मेर को मूर्न सन्द क्या कोड, करि भोगी मेर को मूर्न सन्द क्या कोड़ क्या के मूर्न सन्द म्या मोर्ट प्रमान कोड़ी निरूप प्रमान (२) —स्तारीन्सू, १९५); सर्व प्रमान भी निरूप कोड़ी मूख को (साधात संस्था प्रमान कोड़ी मूख को (साधात संस्था का मूख मोर्ट क्या के मार्ट कोड़ी समझ मार्ट क्या के मार्ट कोड़ी का मार्ट का मार्ट क्या की समझ मार्ट क्या का मूख मोर्ट का स्वार के मूख कोड़ी का मूख मार्ट का साथ का मूख मोर्ट का मार्ट का मूख मार्ट का साथ (१ देही० — हिस्सो) —

- (२) दरास्त्र करता । प्रथाय—सामा है सबकी धार की बस्तान कर कुर बोरकर बार्कना (सुग०—यू o दसी, २४% , बोरकर बृंद किमानकाणी का वे यमे द्वार के असे दिशका बुमति—सुनिक्षीय, दव,
- (३) इनकार करना (अयोग-साम से मोते न मृह, शोड़ं स इस रम्परिक-हर्गातीय, ३७), एक तरफ तो स्टू के जिल बुवजीयाक नरफ है और दूसरी तरफ मृद्धारे जिस्से मोता बर बार्स । हो उनसे युद्ध न मोतो ज स्टाक-भगठ दर्मा, १८ (४) विकास मोड देना ।

मंद्र कथा करनर

क्षित्र का क्ष्मंतीय जनर करना । अधान-धार में पूर भंदा करके कहा-योगी के कोई कान नहीं सरना पाहना जन्म (कांठ-केमकंद, पा

ध् ह समना

- (१) प्रश्तात्मृबंक बार्च करनी । प्रशोग--ऐस ही भोगो का महारा पाकर कसी-कभी कोट बादमी मृती भी के भूद लग भाव के 'सारत पाक्तपांचद १६', भी मुलगणी न काय-भाव कभी प्र-यमें भी गण्ड नगे होते. भोसेय--हरिजीध
- (३) दिनी अपने नीने की कान की पता जीनी । प्रयोग— हिन्दुओं के तो में पूरत से मूढ सती हो (मान प्रयोग (१)— सातिन्दू, प्रयोश साम सामय, पानर उपमें सवा म होता नो कादगारों के मूढ को अनती (मृगठ—यून वर्मा, ३२४) (३) दशाव-समाध करना । प्रयोग—नृत कहा योचे सम् सामन, कीन यादि प्रव पाने (सुन सान—सूर, ॥१९३), मिश्र

इसके मृंत प्रश्त नगी, यह करितार्थ में बनी प्रकार है । माठ संश्राह (१)—भारतेन्द्र, ३००), वृद्ध मगता है मेरे ! करित बनता चादना है क्या ? (मृंग्य—मृंभ क्यो. ३५) एमानार्थ में बहें भाई को बाक्य —भाग चानक्यार बम्बा के मृंश मगते है माई माइब ! मानव (१६—केमबद, १९)

(४) परण कामा । क्योतः अवदा को का पैसे, विस्तरक के दिया काशी की ४ ४ इसके वह कीटा एमके कृत सम गया का (मान्छ ३ - प्रमान ३१९

स्ह संग्रना

(२) तम रेनम् गरम समा । ययोग- संगं ही इति यह समान । य प्रत्य स्थान । य प्रत्य समान । योग न स्थान स्थान । या प्रत्य समान । योग समान स्थान स्थान स्थान स्थान । योग समान स्थान स्थान स्थान स्थान । योग समान स्थान स्थ

िक्र साला≽ यार्गन सगर या इस वर्गस का तर र की सुंद्रामुख स्टुड्डेन इदार

में हे लटक जान्हा

निकास होता स्थित होता प्रयोग जालकाकर का ग्राहरी हो गयी क्षाप्तक से प्रयोग का यह रहक से के प्रयोग देशचाँक के के महास्वयं का स्थापन स्थापन के स्थापन के स्थापन संसद्ध के के प्रयोग के स्थापन के स्थापन

मह रहकाना

रिक्स बान के अन्ता न नगन का समनाव प्रत्य काना

प्रशेष — यह प्रत्याप मोनन प्राप्तः और किर बाहर यनः बाना 'पान० १ — प्रेमचद श्रर , दिन्दों ने हाप की भान पर कर हामी कर थी, पृष्ट चटका किया मुगल प्रश्न वर्षा १११

मह अपेट कर पह रहता।

प्रकार पर्वे रहता । असेन-नार्थे दुश्ते की वर्षट मा अस्व क्षेत्रे पूर्व कह कोट कर कोई (विध्येष-मृतिज्ञोध, २४)

वह मायक बाहा होता.

हिनी क्वांतर के बीधा करने यर कानतार होना | इयोग ---बाद नोय राशा है, यह पोटी-मोदी नीने निम मूझ से बादची कह क्या 🗙 अनु ह नावक चौदा नी होना चाहित मानव (ह)-- देशबंह, २०४१

महासास करता

बहुत पोरना। वेशोन—जन्म किथीका सृष्टन साई कर तिले नाम वृश्व कर हो न कोई मृह हरा (बोल० --हरिजीध प्रश्

मंद्र भाग हो जाना

- (१) वर्ष के चेहर का माम हो जाना । अधीय—हो रहे वय कि काम पीने वे तथ मना नवों न माम मृह होता चौरी०~(ग्रीमीध, 28) (*)
- (२) बार वनना । १रोए—टेलिए प्रदोग (१) में (+) । (वना» वृहा»—सद सुर्व्य होता)

मह सम्हरत का बासना

वद्याद करने में वोकना । वयोग-मूद सरहारि दु वीनन नारों करत वद्यादि करने मू सांग भूग १९५५ नग अब व न मो, से ह सम्दोस के बोमी सही तो एक मूचका ऐसा या ना कि के लिया जारन नजाने आठ एका है। में दू प्र नामन प्राण से में है सम्होने का बाब न है, व में के में पर में विकास प्राण और अवन का श में हुए के मूच में विकास प्राण और अवन का श

१७ सम्बने स्तना

र पना व नर १ ८ क्या उन्हास सम्बद्धा पार्ट्स कर सक्ताचार न सार करना आहे. इस प्रोध ३

मह सीधा करता वा होता.

न पर पत्र। प्रथम नम प्रयद्ध स्थलन सक्षत्र अधार

कारके भी उनका मुद्ध भीवा न कर सही व्यानक (१ जनवट, वद), गढ़रे करन कार्य-कार्य वर कार्यो वर कियाँ का मुद्ध हो नीवा नहीं होना (मानठ १)—क्षेत्रकट १३२)

मृह सीना

म न में बात म निकासना दा म निकासने देना । प्रतीत — सुमने राजन किया लोगों का भृष्ट तक की दिया का (पृत िक —बाठ पृत पृत, २५%); सहै-बंधे चीनों के सृष्ट ची किय यह .वैदेहीक—हरिजीय, १६६); प्रशीका च ह वहने ही की दिया समा वा (गरन-प्रेमचंद, २००)

मुद्द सुजाना २० मृह कुलाकर बैटना

मृंह म्लना

(१) भग म। लाज्यावय नेहरे का तेच जाता रहता। प्रयोग—स्वत भूगाइ गयी क्यां तेथी, बजा कर वन्, बोरत नात पुर माठ- सुर, ११६०), मुक्त कुछ सृत जा हर दाह , सात (८६)— सुरुषी, ४६०); लहमीलदार आह्र का कृति मूल जाता है निसाठ—रेषु ३६४), ने भना आप मूल जाते नया मूल ह मूला जनाव मूला सुन कुमतेठ—हांग्लीट १०। (२) व्यास या जीत के कारान गना न्यूक होता जने और जभात म कर्ट परका।

मृद्य से अक्षर न फुटनर

मुंध भी न मोल गाना। प्रध्येग -- इतनी नारी नान नृत सन पर भी जुलका**न के मृत के** एक बाकर नहीं करा अस्तर माराह, ५५

(सम्बद्धाः अपूर्वे अध्योक्तनं निकल्याः सक शम्बद्धाः निकल्याः)

सृह से भाइ भी व निकलना

सनिक औ पुत्र म प्रमुट होने देता । अभीग---पद म करो से किसने सिक्तिमी मृह म पाह नहीं वेंदेरी०--हरियोध, ६०

त्रृष्ट से कदसी-पश्की निकालना

कुर्वेषक सहसर, अनुस्थित सहसा । यमाय---इस पर बहुत जिसके । कस्मी-परकी सुद्ध से निकासने समें (शास (२)---प्रेमक्तद,२३७

(महावस्तार-सुंह से कच्ची पक्की कहना)

मृद्ध भे खीनना

किनोर के वर्गवकार का जात की काल श्रीतको । प्रयोग-स्थाः वार्ध-मनी की के कृत ने हीन कर काल श्रदक्त की दे देनर --वेद तो काल व्यक्त कही मुखा नहीं (मा-कोशिक, 83)

मृद्ध से पुत्रां निकासका

निराहर करना, धारताथ कहना । प्रयोग-सम धार्म पृष्ट काई प्रशा । पार्शन परा नगत के कृषा (पट०--आवसी, ५७०

मेंह में जिसले पहला

गरमा कह परमा । प्रथम । प्राप्तपत की जनम सन्दर्भ इस इमी-भाग नहीं, भूम-मुक्त में समाप्रदामी की भागे मुंह में निकल ही प्रार्थि है। विसाध (१)—सुवस, ३८.

मूंह से जिसानका

करना । प्रयोग — की मुक्तन न हो नकना तो यह बात सुर से क्या किकानचा (इंका० — इंका०, प्रयोग, जावी समुख की क्षाप्त मुझ्ने राज्य नाम निकानके व्ययक -गृह क्या

र्यंद्र के प्याका लगा होना

करेज-बातव में दिन कीतना । प्रयोग-वर्षों किसी मृह पर कुटर होने नहीं नहीं किसी सृह से नथा प्रयास एहं बोलक-हरिजीय, यथ,

वृद्ध से कृद करना,--वरमता

प्रस्ता बीठ बंबन बीजना। प्रयोग—बात बननी ही रहे ब बान, रहे मृज्ञ के भी महना पूज (मर्गठ—हॉस्ऑध, घड), इसका दिन भने ही रोगे x x किंगू उसे अपने बेहरे दर इसी ही स्थना है, सपने मृह ने पूज ही बरनाना है अम्बठ—सठ बैठ, ४४

मुद्दे से फल कामना के सुद्दे से फल भटना

मृद्ध से बात छानग

- (१) कृतरा को बद्धनवामा हो उसी बात को स्वय ही कह रता । प्रधान- अस यह बात तुम मेरे भू हम जोत ने प्रश् (मह —क्षेत्रिक, इन्द्र
- (०) हमरे की बात के बीच में बोल पहला।
 (वबाव बारक-मृह से बात उचकाता)

मृद्ध से बात निकास लेगा

कियों से कुछ बहुता ही केशा । प्रयोग-त्यांची क्या कर बार-बार राज्यों कहीं; केवित मेंचे कीया व बारा । भागित उनके मूत्र कावान (तकाम ही को काल- सन्त्यदेः ३०४)

मृष्ट से बात निकालना

बात बजी कानी । यक्षीय – म विजये वही जान पूर्व में बिक्ती में क्षामी नहीं क्षण्डे सम्बद्ध समित्र स्थितीय प्र

मृह से बाली न परना

हता जी संबद्ध काम । प्रक्षेत्र समृत्यिक की सी कियी, समिति के साथ कोन स्मृत्यात सूर 2009 जिस किय हव सोर के प्रमुख्य सूरी, जो कि सह में बंध्य की सर्वी नहीं स्मृतिक हविसीच १३५

(स्थान नव'र-सुंह से बकार वः निकलना,-चान

म भागा — बोली न फ्टना

मृद्र ही लाम-काफ निकानना

निवयं भी विशेष करता । प्रदोध--- प्रमः की अन्य प्रस्क तुप, मृंद में नाम-नवद जिल्लामी और मेर्न प्रस्क द्याकी वैमात---वेमबंद, 200)

मृह से लार रपकता

मोन्स्य होता । यथीय—यश्रीको को आरत में अन्त विस्तार करते देव भीरत के भीर मोनो के मृत्य के भी नार राक्ष्में सभी (भार बीर—महारु दिस्त, प्रक (समान मुहान—मोह से बार विकास)

मृह से भी कृष्य न कहना

कार्द्र जनाय-स्थास व कारणाः । प्रयोग-स्था विकासी सं मुर्भे कारी की कारणा-स्थापना कर पूर

प्राण भीवः १५६

(नमा॰ पुता॰—मुँह से गाम या कुरवा व सहका)

म्ह स्थाह एउना

प्रदेशन व दृष्टिकता स करा व भौद्रिक राजा र प्रदेश तथक त लाग सन विद्या की निराध बाट उत्पादधान कीरा निष्याद्रवात विद्यार भूषम ग्रेडांक शृंधण २१५

मुंह हमा होना

ममन्त्रमा होती । प्रयोग न्यम दिनी दा माराच ४३६

स इ. कि.चै. मान स इ. कर हो स कोई मू हे हरा (बोला) — इ.रि.जीच, पहुं

मृंट होना

- (१) इस नायक होता। प्रयोग इनका साह है कि हमारी कविता मुने (साठ प्रयाण ११) जारतेन्द्र, १७५०, तथा मृह है नहीं कि कामर मू लिए के संख्या है (समेठ नहिंग्सीध, १४२); दिस कर की कुंब सुमारते की विकादी शामना है। संक्रिय क्रियमें कर मूंद्र भी हो हो (ग्राम- न्येमध्य, २४२)
- (२) हिन्सन होता। प्रधीय—क्या आपने समान्यमें और नरोपकार के निम राज्य को न्याम दिया औ दिसका स्ट्र है जो आपको स्थानी कह नक (१०० वि) क्षेप्रसंद १७९६
- (1) वदा-वृत्ते होती ।

सह अध्य

बहुत नवरं, मुर्वोदय के वर्त । प्रयोध—स्थार ही मृह इका और की रहे के जिला धारी (गोदान—सेमलेंट १५० हम मृह भागरे ही विकास के किए जाना चाहत है किसाठ की तिक, १२०); परनी के शेष सुबह पह अभेरे जाना बतो में ने पर्क संस्कृते पून गहा था। सामठ—संश्वास, ६३१ (वर्षात मुहार — मृहा का सामठ—संश्वास, ६३१

भद्द-गार्ग

नायन, अध्यन निकट । प्रयोग---नरामा शृह वारी जना जीवाय का नव अहर कियोर प्रशाक--कडोर, छ।

मुंह-कोर होता

ने मासु होना । अयोग--- भरतमपूर कानेज में कदता है हो दा, नेकिन मृद्ध चौथ है (याती०--रेमू अर्थ), को छाड़ है नगद मृद्ध चौथी क्यों स मृद्धचौर मृद्ध चुरासे ती (होता० -- हर्स और), यद

मृह जोग हाना.

्रे चर्च रेक्ट का घरणा प्राप्त । ज्ञान प्रस्ता के सार्वा कर्यों है इस का घरणा प्राप्त की है इप्रति ज्ञान भारे है पर क्या पाडकार की स्वत्कान हो गई है एउँका के विकास प्रदेश हैं क्यों क्या किया प्रस्ता स्वी देख की सार्वा के इस्ता है क्यों क्या किया प्रस्ता स्वी देख की सारवा का प्रस्ता क्यों को स्वीक हिंद ही सुंध



(२) या पस में न रहे । प्रयोग — मरनत नाम-नामा महि नेस में नहर नभेर । जीन नाम सर्वत साम के दन-न्यत मू हजीर (मितित मकत — मिलिस १४६६); अनकी दशा दन गमन उन नाइमी की-सी की को क्यां मू हजोर चांचे के माग अने पर नाम हो (रंगत ११)—प्रसन्द, ३६३); केल सावारा में मू हुन्दोर पंग्हें को नपह नाम नहीं नान रहा ना (बाफ्रा-न्युत ६० ६०, १०)

मृह-तोड़ जवाब देना

मृत्त विरोधी बतार देता । वर्षाय— वस तक आप प्रतः।
मह तोड स्थाय म देवे यह सीच न होत प्रशिक्ष क्षेत्र
हास, १०६३), हवं का विषय है ऐसे भाषाणों का या प्रवार
उत्तर सहामहोपाध्याय होन्दर हरायगर प्रार्थी जैस विद्वार
के हारा दिया स्था है (साठ सीठ—महाठ विठ, ३२-३३)
स्थाय के प्रश्निक स्थाय को तृत्त एक बीदिन कर
क्रिरोधी पर्श्व को मृद्द तीय समाय देने के लिए उत्तरिक्ष
बता रहे के त्यू दंठ—सीठ नीठ, ५७०

मंद-देशा

निद्धान म्, किमी की नानित्र से दिनाये का । प्रधान — सर की त्याद न की में, नहां एक कह भूग (क्यून नाम — सर सहस्था

मेह-देखी कहना,-- बात

वी सामने ही उसके जैमी बाल करनी । प्रयोग—स्वर्थ की नगर बसने हो । शब यह केवी बाल है (बीक—सेव मेठ, वह); समोनी बभी तो परमानंद की नगरिक कर रही थी। अब अमर की मृत-देवी कहते सकी (कर्मक—मेनक्ट, ववम); में लोग सारम का पारामण नहीं करते—स्वर्थ करने हैं ती सब बात न कहकर वसमानों को समुद्ध करने के जिल केवम उनकी यह रहते करने हैं सामित व्याप्त की सह करने वह समीत व्याप्त की सह की वह की वह की की साम की समुद्ध करने वह समीत वह की की साम की समुद्ध करने वह समीत वह की सह की सह की वह समीत वह की सह समीत वह समीत सम्मान की समुद्ध की साम की समान की समान

मेह कर होता

हरे की म आग प्रमें कह देने बाला होना। प्रथम मह फट मोड भी स्वयासमय मंत्री का ऐसा नाम अ अ बंबन न का भवाने हाथे (ग्रेमक-प्रेमचंद, १४६); सबकी अ अ ग्रीबार महत्त्रहरूं, बोह्यहरू के बाबे प्रकृत सन्त १९ अना कर 'ठंडर---क्रियोस, १), बान कर से मगर न कह है, यो किए उसे कीन क्यों कहें मृहक्त (बोलo--हरियोध, पर

म्ह-बान्डी

सम्पन कोह जिल कर हो त्यारी। इसीय जर नके हीय दोर करें। क्या जब एको हह न काल मुख्याकी जुमतें। क लॉक्सीड, १६३८ बनक मृह बोकी हो है। अनका वर्षों मां बाई से भी ऊषा है। एक सुक-मुद्धान, १००५: बाह्युट के नावा की मृहद्वारी कहन 'सबीकी भी 'मृहता—सुव कुठ बोक, ५०

मुंह भागा जिल्ला

देन्सान्त्रक सिकता । अयोग-नारकती-यविकायित होति को वर किस्ता नेश्वय कार्ते । सापूर मागन सीम सिमाधित इन वर्षे वृद्द नामी कहा है (वेस्तय-नेश्वय १५१), बृधिता इन वर्षे वृद्द नामी कहा है (वेस्तय)-नेश्य १५१), बृधिता इन वर्षे वे अ अ वयानी की पोर्टावता बसायक नानी और स्वयं देने वाह वाले क्या देशक ने नेता कर्मा -ग्रेमसंद वरः

मुद्रभार्या मुगाव जिल्ला

र्राच्यत वस्तु विस्तरी । यकान-स्वतर वह मूळ हे तिराग हरचेर यह बारणाना जोजने का विचार स्थान है, हो है यह-बानी क्राइ से बाई रंगे० है)-सेम्बद १२५,

म् ह-कगा

(२) जोवल चरना हमा स्थानितः

मंहा खाडी होना

परस्पर देसनाः। प्रमोध--वृहानारी वैनापनि क्रीयते वक्षत्रे का बहाती सुरु सहत--सुरः ६७९१, आनाकानी, बंड-हमी वृहानारी होन नवी दन्ति दमा कहत विदेश विन-बाहकं वीताल हा --वृहसी, पश्च मुद्रा-भुद

प्रस्पर, संबाधव । जयोग-पुनिया भाषा दुव का, गरी मृहायह भूव (बनीर पंषा≎-कबोर, ३४

भुकदमा डोकमा

स्वाह के बिन प्रशासन की सारत जाना । प्रयोग-साह नारी न प्रशास या दिना का दिना हैन् इस्त विकास प्रशास मुक्तियों काल्यस काला।

प्रकार करावर

स्पर्के से भारता । प्रयोग---है अहाँ नीनी दनाइन कर इसी क्या करों) हम बडां सूथा क्या (बोल्स्स-न्याधीध १६३

(समाक म्हान --- सम्बद्धाः सारकाः)

मन यंड से कहना

विक विकी विकर के बजन प्रयोग उन्हा सरवर के कहा बन्ना है कि कैचल प्रश्चेत्रवर का विश्व मध्ये हैं आत प्रश्चेत्रवर का विश्व मध्ये हैं आत प्रश्चेत्रवर का विश्व मध्ये हैं आत प्रश्चेत्रवर के विद्राणों के बन्नावर्ष्ट के प्रयोग की है (प्रद्राव प्रयोग—प्रदूषक कार्य हम्दर्भ, क्षेत्र भी सन्वयं के प्रश्चेत्रवर प्रयोग प्रश्चेत्रवर के प्रश्चेत्रवर्ष के प्रश्चेत्रवर के प्रश्चेत्रवर्ष के प्रश्चेत्रवर्ण के प्रश्चेत्रवर्ष के प्रश्चेत्रवर्ण के प्रत्य के प्रश्चेत्रवर्ण के प्रत्य के प्रत्य के प्रत्य के प्रत्य के प्रत्य के प्र

अस्ति का इवार

भृतिक-प्राप्ति का मध्यम । असीय-प्रिव शिक्षणीय होत मन्त्रित दुवन्त । वर्गाद वेद्या नहीं संगर्शन कतीर देखाल-संग्रीत, २५०

मुक्त कुम्हम्हाना

निरुक्ति, इनाहा वर सन्तिन होतर । यहारा आसर पासर विगद की सांविद्या भीट सुमदा लेख कुछ्हमाला करी सुमनेक सरिक्षीय ५०

प्रक भंजन करना

भेडे लोकका प्रयोगनिक धेवता, हरातः। अयोग चनाहि व करि सम्बादशित तोषः समर्गास्थ स्था तृत्वमी द्वर्षः

मन मुख्याना

प्री-क्षीन होता , अयोग-चांत्रम्थ की आसा पर न्यारा-पान हुचा उनका प्रकल्न सूच सरस्य गया जिल्ला स्थात सर्मा ११

(गमाः महार प्राप्त परिका पहला -- सन्ताम होनाः)

मुख-दुति चुम्हलाना

दुन्त के कारण चंद्ररे का रीमा पर जाना । प्रधीय —क्षुप्रय कर जुल हुन्ति कुमलानी असम्बद्धाः (बालव) — सुलसी, २१६

स्ववाच

बन्द कर्मावर्गा । प्रधान — यहापि वाक्यर एकं।न शबी दन बजन के ज्ञापात के पर खुना हवा जैद पर कि प्रेमश्र हर ही उनके करवार है (वेमाठ-वेमश्रद प्रदुष

सुजरां करना

(१) पलाक करना । वयोग-नद मन विवन के अल बचरा करि वास मुख्य (साठ रोत (२) --वासीन्द्र इद्दर्भ

(२) वेदवाको का रिजी के वहां काचर जाना गाना।

मृज्ञवा पाना

विकट पहुँच पाना । प्रयोग-वाहे बहे कृति देश बहस गिन वह कृतरा वहि बार्च (मा० ग्रं० (३)-मारतेल्ड्र, प्रयुव

नुरमर्श

भवत, नामाप्रकी । वयोन-स्वारा यह मुस्तवती देली कि यह में किनी को सबद तक न दी (कर्मध-प्रेमक्ट ३३२)

मुद्देर जनमा

(१) उदारकायकंक देना : प्रयोग—हे नरसते एक वटी पतन योकाय की वहीं नहीं पत्र भी खन्नों कुनतेल हिस्सिध प्र

(२) वृत्यु होती ।

नड़ी चोलना

उद्यारतापुर्वक देता । अयोग---मिक्सदम इस दिनी यपनी मुद्दी जगा कोल देती की (क्का--शामा), नदः

न्हीं नाम करना या होना

(१) यून रेना या केना या मिनना । अयोग-कोई भी गाम कांद्रत पर प्रामान जम बह क्यक्ति नुप्रक्रिया भागर गंग गामना चा - बध्यते कि प्रमणी पट्टी प्रस्की नगर गम कर को बाद गोकी चन्द्रात १३६ कांद्री कींग्डण वास कांद्रिया कर्ष कांद्रस न बोध्या । अस्य, कर्मचारियां सिट्टिया कर्म कांद्रस प्राप्त के प्रमण्डेद २९६ बादमी को समोदन व बहा नो किसी की पट्टी गरम होती नहीं बोदेव कांद्राक्त कांद्रस किसी मामन्य म गहरा प्राप्त कांद्राक्तरण दिलाई है ना प्रत्यक्तिकां की पट्टी स्थम होंने ने सब कुछ ठीक हो। बाना है (जनाज0—46 कोओ १८६)

(२) माम करना या होता। य ग्रेश — शन यह है कि सम्पादक लोग लेखा है से महकत में जेवार नेवार महिता के माम कर के माम के

मुद्दी बीली शीना

बहुत सर्च करता । सबोत---जितना ही उनके बाव कंत्रम च उतना ही कुलबाव की सरहा दोजी वी करण नागण ४४

मुद्दीभर

पहुंच नोहे। प्रयोग—माना कि यह बहा नीति हसम है वर बनावन कही होर पकड़ वह तो महती अर बार्याक्यों ने बह बड़ा कर सकेगर है (मानक (१)—दैमचंद्र, १९६७: बाधी पहाँ कुछ नोग हैं ⋉ स मुन्दी अर हैं, वर युवा है •सुनीता— जैनेन्द्र, १६८)

मुद्दी में भा जाता

भविकार या वध में होता। प्रयोग—वर स्वया हुई बार उनकी मुद्दी में आहर फिर निकलना भूग जाता या (मानक (फ) -ग्रेमचंद्र, १६), दश रात विकास थी बृद्दी है भीतर विभागाई पहले कमी सामीक-युक्तमां, ३९॥

मुद्दां से करना, —रक्षनर, —रहमा या होना क्या मं करना या हीना । अधीय—भोनाई यहेन्दर निर विसकी यह सब करनूत है क्या भी उन्हों दोनो अबडे दूर की युटडी में है (बैशाध—इंसाठ, ११३)। इस एक काम अध्यक्षियों की मान उसकी बृट्टी में है (अस्तर हो— प्रेमचंद्र, १५२); बाजवरकां। के कुमार भी उसकी बृट्टी में रचन है (मैसां—रेष्ट्र, ५७); बसां भी अन्तरा को ब्टटी में रचन के निम पुत्र राजा नवासों का बनाए क्याना नहते द्वारों है (कानोठ- युंच पर्मा १३०), वेकिन जिन ईस्वर के हीने न होन को इस नवास नकते हैं, जिनको निर्मुण निरादान, पर्णानक वब पुत्र पहाकर भी जिनके बारे में हमारा मस्तिक प्राणी अवता प्याना है कि प्रमक्ते होने की पृष्टी में कप प्रक, किनी समें से का मके कि बात है, उस ईप्यर के होने न होने के क्या (क्षाय (१)—जब्बेट, ९०); अनुभा को भी असने गया करही से कप निया है कि क्या कहू (क्षाय)—प्रेमचंद ३३१); के बच दी पन्य और प्रधानकानों के, नवास को प्रवी वदी में किए हम से दूर्य—चंच नाग, प्रवास को प्रवी

मुटरी में श्वामा १० मुटरी में काशा मुद्दी में शाला का होता १० मुटरी में काशा

मुठभेष दोना

- (*) समर्व होता । सवीय—पिय को यमायो स्थाद सैसी श्रीयमध्य थी, भए सम-अगनि में केते मुठमेरे हैं (भूदम प्रकार—पूरम, २३९); रास्ते में कभी-कभी हिनमा भेगूमा के बृहसद हो जानी (रंग्य (२)—प्रेममद, ए०), अब तम कई बहर को कभीच साहब के ही समसी मुठमद हो मुनी है (क्वीर—हत प्रव दिवन, प्रह); कभी कभी अगम के अगम प्रहार हो बानी (सकार-प्रमाद, ३०) (÷)
- (२) सरमने परमा, मेंट होना । ध्योम—आम मही दिन या तरे तुम से मुठभेग हो नयी (हेका०--में शाठ, यह कति कुठभग कर बरमस माँग रोस्वी से मीडि असम लान (आठ सहाठ २)—आस्तेन्द्र, २६०), देनिया प्रयोग (१) से (२) भी

मुद्र मुद्र का पढ़ाड काना

बहुत विश्वाय सम्बा, पूजी होता । प्रयोज—उपरूप स्पत्तन जेन क्रम वरि पूरि प्रकृत जातः भार प्रशास (३)---मारतन्द्र ६७०)

मुद्रता

विक्त होता, हार क्योकार करके मागना ४ प्रयोध--- विषु-व्यक्त नितरों भग गामा भीक्तवात ४ कुठ-मूरे न प्रयो कहें जापन करून बहुत्व (क्षेत्रवट (१५--क्षेत्रव, ५५).

ब्क्टॉबर्डी में बाटा गीना होता

कारमें मार जो बंधारा है, आरके कहने में से कभी पड़ना नहीं बहाना - ठंड० -हॉरऑंट, ५७

शुक्रकिमी में आदा पाना होता

समीवत है। बनी व भीर वर्गादन के बनी होती । प्रवरेत — फिर दलों बाधा बनीना मह बदन हो। हुआ मर्फानको में फिलमन स्रोदा करो बोला हुआ (भारु प्रकार-भारतेन्द्र पहरू)

मुरभा जाना

दश्यम और स्थीन हीना । स्थीय -भगान प्यान नाट नीत पाने, याँ वहन परकाइ (ए० नाठ- धूर अध्य-प्रमाणिकारी जिने निते सुनि मुनि गरबाठ नेदन प्रशान-मंद्रव, २६ , देनाम ही अस्ताद गरी नित्र गुनि गरे गरी पंजारी मीजी (शहरूठ— देव, ४५) कुछै नहीं मुरम, प्रान्थि गंज-मुरभान मुर्थिय-प्रांच निविद्य प्रावणीन है सन्ध्य स्थित—सन्ध्याद (प्रमाण—हिस्सीत), २६०, क्या सरकाट हुई सिन ही कीत बुधा हुआ है दिन नुगठ- अस्त, १

मुर्केषन का मूँह मानवा

सीयागमा का बाग करना, अधिया होना । प्रयोग विक स प्रथको नदी युनीवल बीर नहीं जी जिल्ला केने न क्षे कल हुने, बेहनर जी सूह कुरोधन वह धने के विदा को यन सूह के बाद हुने (जुंजतीय- हुरिक्षीय, प्रश

मुब्रं-दिख होना

पान्याहरीय होता । प्रयोज-स्थाननं का यह उराहरता हिन्दुयों के मुर्दो दियों में साथ प्राप्त देशों ऐसे उरहय काय-सीय है और प्रश्यावक हैं। यहमठ में एक-यहमठ कार्य श

मुद्दी हरता

र माह होन होना प्रशित हात होता। द्रांता नाह द्रांता हैन जी ता पर्दो हो गय पत्ती सलाव हेंयू के पा अध हैन्द्र प्रशित्त हो जावारा कि में जिल्हाल पुरा है हमार के प्रमान 10% पन ना लिए पिन्टी का युगला है नरहे

गाहर विवद्ध भटा (भावत) प्राप्त ३०० मुर्दे को जिंदा करता --- में अपन भर देवा उत्पादहीत काकित हा सक्षत होता था विषय करता । प्रभीत - था तो तुम प्राप्त भवतह सम्म हर (देव ह) कर परा का नुवसान प्राप्त देवे हो मही स क्षात कुटा वस्त्रेत इन्द्रः पर यह की सामी जाति ही सुदक्षिः किस-किस किटार जिल्ला (प्रदूषत के पत्र -प्यूट्स० समी हरू

(नग॰ नहा॰ अूर्वे है जान जाना)

पर्दे जाग जनमा

मारक का अधिन हीन नवित्तवों का पूर्व इस्म (४० हो अपन प्रयक्त अरमी की क्षण म प्रकारण के अन्न इस स्पन्नी ने बना कार्य किया । सूर्व अपन प्रश्ने । कार्यक प्रश्नि और कार मुक्तवम की प्रेरकी क्षण्ये सहा प्रमाठ—प्रमुक्त । एक

पूर्व में जाभ भारता है- पूर्व को जिल्हा काना

भूर्व से बाजी समाक्ष्य ज्योका

वहत नहरी नोड वे नोना । प्रयोग-- "योग नोचे तो पोडा केपवर, सूतों से बर्च सतरकट ? (मान्द्र (१)--पाचंद्र, १५६% पूर्वों से बाबी बायकट नहीं, मूर्व होकट नो गह के पदम प्रशास-- प्रदेशक कर्म १९१

मलायमियन से

११) नमना के, बोल्यन के। प्रयोग-अविध नाहेब में उपने भी श्रीयक यकार्यायम के मान बता हुन्नर गमनाको माफ हो भूलेक संगठ वर्मा द्दा उन्हान गिन्द कर संवायक मून यस प्रशास दिया किलो निराला, देश

(२) इसके हाम में ।

मुक्ते बहाता

रो ने समाओं को पीठ की ओर करके कब बेहा । प्रयोद — अभिन्द बीहु ने उसे फिर पटका कीर बृक्षों बढ़ा दी उसक (१) -प्रेमक्ट, १८५१

(नगाः मृताः — सुक्षे यस्य देशाः — बाधनाः)

নুদক্ষন বীত্ব ভাষা

बहर रह हर की बरहान साजी । प्रयोग प्रकार हर उन्हें बरह पर पर पर भग होता है अझसे एत (नेपार महें हैं सुस्वकान की हेंगा स्थित आजा)

मुम्मंबर्गों का पहाड़ —की टाकर्ग

बत्त मी महादत बना म जहां मुमादत , प्रयोग तम



समीदेनों का पहाद सिर पर रहा सुनति ही 'मूळे०--स्त० समी ६२७ सक्ष स्वास्त्र पर कि जाय मेरे निर सह समीदनों की डोकरी क्षी है परन--प्रसादत, २०

म्स्रीयतों की ठोकरी देव मृस्रीयतों का पहाड़

मृतरे लगना या लगरना

- (१) वर्षश्रांत सिलती या देती । यदीव नित् अब तर अप की मृहर व लग अब तर तक वह परामन्ने वार्षश्र म परिस्त नहीं हो भकता (मा—कोशिक, ३६९, वर कृति पूसरे वार्षों में कृत पर सम्ब की मृहर लगा दी जा कृते भी पुगलित भीने घीरे संबक्षा मनोचेन्नां क प्रधान उम विकास तथ्य के अधिक्यामी नोगों पर पहले नगा (जहाजल — इंग कोशी पुनल) (क्र)
- (२) समान्तित होना या करमा । क्योक-एक आविक एक का प्रम्माक में भी बनाब भी से कई दिनों ने कर रहा था। जापने समझी पृथ्टि का के भी किया की कृत्य समाद्व (पद्धमा के एक अद्वर्गत सभी, २३६); देखिए क्योन (१) म (+) भी।
- (३) प्रभाग प्रत्या या कालमा । इपोग—मेहना के कृष्टि-बल नेप्रस्थिता ने उनके अल्ब अपनी मुहद बना ही (गोटान अप्रेमचंद, १९६)
- (४) भक्ती माति वद करना ।

म् छ बमाइना या तथावना

- (१) कठिन देश देशा, अपनाय होना वर करनर । प्रयोग— विश्वने शाप से कहा है जरा जमका नाम नो क्याइमें ? मू में उलाइ म्हें उनकी (गक्न-ऐसमंद, १२): नेहमा है बेह्माइन से घरा 🗶 🗶 मूझ उलाई है मूझ करना जहां (बोह्माठ—हरियोध, १२६) (÷), कोम मनुरा कहता है कि श्रीम भागतो रही । हमारे वायने कहें नो मूखे अनदस्य मूं ,भिन्नाठ—कोशिक, १९१)
- (२) वसह प्रकरना । प्रयोग---देशिय प्रयोग (१) म (-)

मुखें वेंडनाः—सरोडना

शाम विकास । प्रयोग-—ने नाप्यों की सूर्ध उकाह कर सूच्य प्रशेष्ठ रहे हैं सुभते≎ भू क्रिकोध ३ वय स्मार्थ एक ही जानी गड़ी तब सत्या हम संह्य प्रपा है मेंदर्द स्थोलक — हरियोध, १२३

मछ के बास अभि होता

गमें होता, यस विकास । श्रयोग - समें आपृष्टि हाथे श्रम बार्ष कार के बार 'साठ चंडाठ २) -- सारतेन्यु चठा

स छ के बात्र विज्ञ हाता

- (१) बहुत अपमानित होना । प्रयोग -योजिसे प्रमुख रवाचर देशिये मृद्धके भी बाल अब हैं जिल रहें (सुमरी० -स्टिक्टेस, ह) (÷)
- (२) बहुव दुरुष्टर हानी । प्रयोग---देखिए प्रयोग (१) में (🚓)

मुख वर्षा बोना

पॉनप्टर, वर्ष बना १८मा । प्रयोश--- अर्थत है: देख देख कर दुलड़े को व वंताब कर उन्हें पूर्ण । पोन्डे कर साहे न हो बन्ते तो रही क्या नहीं बलं (पुमलेठ---हान्यीध, प्रथ)

मंद्र गिरमा, - जरमा, नामी होता, पट होना (१) प्रविधा क्ट होनी। प्रमंग—माम क्रेको की बाद क्टली है कीर कुकर नागर्यमह की मृद्ध धानी है क्रांसीए—प्रविधा क्रिको, जिल क्ष्म के करने के मृत्त की अंपने मृद्ध की क्रेको पहली, जल काम की में भी बहुत क्यों म कर सकृता ठंडक—हरिकोध, को, किर धन मृद्ध हमारी गिर महि। देख नीका, मृद्ध भी की हो नई बोलक हरिजीध, १२४ , मृद्ध की पर भाग होनी मही वह म काई जान के बह को गई। बोलक- हरिजीध, १२४

(२) धमद पूर होना ।

मृद्ध जाना रे॰ मृद्ध विक्ता

मछ देना

प्रारंश में आना । प्रयोग-- जम कि हमें तने की देने पर नम समा हम मू स देने नयर चले जीता०--हाँ(सीध, १२४)

महा नातकर

भेगर्व । प्रयोग-स्परन्तु न उपके मन में बहा से भाग जाने की इच्छा की भीग न मीमनो चाहते में कि वह मूंछे तान के सिर उठाकर बना वाने सुग0-मू ० दमा, ४०३% उनके वर्धनवाय से मुद्रा से बुदर वर्धनन भी को वामान कर मान से मुद्रों शासतार सपने नकान की बोर चर्का कारी है (Milow GR. १२)

मंद्रा नीची होता वे- मूंद्र शिरता

मोंत्र कोच लेका

 (१) बदरमा कामा ३ प्रधीत —वीसियो कार कर वसे लग्नय म म वो नीम तोम में नेने चीमित्र प्रशिक्तीय ६३

(३) वर्षे पुर करता ।

तका प्रशंत **हाइ कात** प्रसं

श छ पकरनी

अपनात करना । देशोगः विशोगी व श्रापाएने हें कियो की आम दिवाने हैं है अर्थतः हारियोध प्रश्न

मृष्ट धट होना देश मुंख शिरमा

संस्कृ फरकारमा

मुस मार्गेटना इ॰ भू छ वेदना

मु स भूदर दालका

सम्भी होर का स्थानाम स्थीकार स्थाना । स्थीन—वह साथ मही को सुद्ध सदी जा साल, जा प्रसाद पुजन परिश्व पिश्लाना की देश से सुबी जब रहे सद जाका (मुमतेo—हर्शिकीश १५७

मुख्यें की काज रहना

प्रतिच्छा रहे प्रश्नी । प्रयोग । भाज के मध्यीन लग्ज पही सेना भीवनि मन प्रकास साथ नकाम सन्तित सक्तात सालाम १५०

मुक्ती पर नाम हेना

श्रीमान से मान महोहता। भविष्यात दिवाला । प्रशेत नाम दे हे मुश्न कारण के पान दे है पान द हे महित्य कृषे पत्र कोट में भूकत राखाल भूपन २०० प्रमान पहिताओं की भाग बहासती, में शांपर नाम द है कर स्वकारने जने त्यांकाo साथ दाम १६ त्या १०वी वीधी स्वकोर नियान के होती तो साथ मीमा घोर होता मी स्वो पर नाम देन कियत है, कही मीस मामले होते गोदान केमबंद २६० काग्रमी समीदानों ने आई वर्ग मीर नार-नव्य मु हो वर नाम देने नम वर्ग ने त्या मु स पर नामाठ १९६ देस भी सह तो नवा मा हो नहा मु स पर नाम वा व र र भी बोल र हिन्दींथ, १२३

(नगा: मृत:-- मुखी का हाच केंग्ना)

मुक्त बद्धा

के-सहय हो जानर । पहेल-अपी उनी करी क्या कानि करीच जो ए - वहें कह जावन नेक धन्न कानत नहनाठ, १५५

स द सारका

- (र) व्यर्थे नगणना (प्रकोश --विकास संवादित की तृक्षा विक्र मनोरम कोचि । जनित्त, अपारं, जगाध-तृषु जन्ती अस प्रमाध विकासी स्थाध- पिहारी ३६७
- (३) सहस दिवास मताना ।
- (४) यर बाह देवा ।

मृष्ट मुक्तवर

बायश्य केला १ प्रधीय — बॉड ह्यावय दिन यह अन्त्र स् विकित्य राम कवीर १६० हवा १६८ वलमी वा है गाम को मुर्देड स सहस्र भवेड (मृद्ध बदानों स्टिडी भाड प्रधा की गर्देड सामान जुलार ८३

मुच्न केता

देस नमा प्रयोग सारा प्रश्न बना बनावर प्रश्न क्रिया भाग प्रयोग के भारतमध्य १०६ प्रमेश क्रिया क्रिया कर्म सूदा के सबका है गोड़िन प्रमक्त अपने विकास सब हुमारी की सहसे नव संस्था नमें भी ने बंधी जान सूह बोसार प्रतिकृति क्रम

भ की किलाबर

न्दावृत्ति नेती अयोग धीन व प्रतक्ष समाई विश्वते ही है

शृष्ट कालाना, आवना

जाद्र करना । प्रधान--- मध्र दयमांन विकि मंदी कृत वार वो । दुलसी हिल श्रेण माण), बीट दिले ही, केंद्र कृति, कर प्रथट-पद् दर्शि । भार, मृज्यान की कृति वी, भद्री कृति की मादि (बिहानी दवाण- विहादी ३४०); वश्या कर्यादवे इन्द्र भूमान की कृति में मान्यति कृति क्यांचे (बन्नण कर्वतः) प्रमाण, १९०

भुद्ध संग्रहमा

< **मृद्ध अ**तरका

वृष्या ज्ञागमा

म् चर्नारे के बाद होशः वाता । अन्यान—केपनात वी वृत्ताः अन्यो समाठ तो ⊢ मुलझी ९५६

स्ति यत अपना

निश्यम बंदी पहला। प्रयोग-न्यश्यक्तं की वर्षि करो, स्मयं हुए प्रभू कान-पत्री स्तर्कता गुरू १०४

सह र्यक्रका

भवने वाण की बहन् को भी को देना। प्रधान-वहा की यो हम पारद करि कहा कहेंने बाद। इन के भवान उन की बाले एक तबाद कियोर प्रधान कवीर, की

मान पुरसा

मृत्य प्रमाण करता १ प्रयोग जारी योग सन्तारी अयो सुमाणकु स्वाह्य सुरुक्षाक-सुर, ४१३४४

अस्य डोगा

मन्द्र होता; महत्य होता । प्रयोग —तव मेरी मान का यह मोल है (वीमा (व) —यक्क म. ०३)

क्षम होना

- (१) घोगी-बोरी सामान दश के बाना । प्रयोग-स्वतीर मध्या कोह की, भई संघानी कोन । वे सुने के बृद्धि नितः. रहे समत कुं रोड़' कबोर संघात -कबीर, ३४.
- (२) का नेवा ।

मुसलाधार पृष्टि होता

कर यक्त जार सार्गित काली । प्रतान । अलालाम । नार

मान याँ वास्त्रहरूका सम्बं मुसलयात वटा मात संहित हैं। कवित- तुलको, पुष्ठ

समनो होस पीरमा - बहासा

- (२) म्ब कर्ता बनानी । अयोग-- नवानी वक्त कानल कावना । जनानी काकी मुख्यों होना कावनी कारीत -कावक, प्रकृत

यसको होत बन्नाना रे॰ समस्ते हाल गण्डना

अगुगनुग्या

त्या राज्या का वा का अपने का वा अपने का अपने कार्य वाक्ष सुरित काम सामानी, मृत्यविभागों आठी दिस पर है किसीर कार्या - समीर २३१

भृत्युका मुह

मन्त्र । प्रथम अन्त्रो है शाव । नम भी भागे पानी र पिता का कृत्य के सुक्र में प्रथानी अधिक नुभ दक

मृत्यु का लागा स्वित पर मंदराजा । जभेजी है पास नाम

प्रवा निकट कान करनी । क्यांग — समरा नागी निक मह इसर्व्यक्त दाव । यह नवर्ष के बान में मृत्यू इकनी थान गोपाल प्रवाठ नाभाव टाम्स इको जब बाव की बाधा निक कर बारगाने नागी नव उन्हें बावनी बावनी विवर्ण का प्राप्त हवा मुस्क बाव क्यों, क्यांगी बावनी विवर्ण का प्राप्त

(नवार मुतार - सृत्यु की ग्रापा यसका,- अंदराना।

हरूय के मुख्य में बहुना

कर्या होत्री; कर्ट होना । प्रयोग-- दम काम को नह सम इसके बृत्य के कृष्य में पर्य जयग--गुप्त, धुर

मृत्यू बुनाना

आक्रमुक्त कर लेका काम करना जिनम मृत्य कर अस ही। इस्तेम—नव सिक्त रहिः सामस्ति कामी । राज करन एटि कृत्य इकामी (समेठ की —नुसारी, केटी-

मृत्यु संय ज्ञाना

सर काला । प्रथमा चहाला की जेमे उनकी नाम्ला -वी पृत्यु मृत्र वर्षे हो (वेतन- उपन्य, १४०)

मृत्यु से नेलना

समा कार्य करना किसमें मृत्यु का भव ही र प्रयोग -- वन क्षाने कुछ नहीं बोलतों । यह मृत्यु ने भन रही है। बड़ी----\$6 \$0, \$60)

(वशः मुगः--सृत्यु का चेल चेमना)

सुरुषु हचेली के परम होना रे॰ सुन्यु की छावा मिर पर मंदराना

बेंदर्का को जकान दोगा

ब्रहरदेश्ती नवका करना । वर्षाय-अध्यत 🛊 अन को भी मुख्यम पैदा होता हुआ । क्यों म हो। गैसन प्रमाहर, २५३

मेर्न कापना

मयोगा विश्वय करती । प्रयोग-नती वर्ष की यह कारि वर्ग में जब कार्ज 'स्थान ब्रह्मान संभान दान, ६३६

मेला चंडना

मेला समाध्य होना । प्रयोग—नेरा यह क्रिया 🗙 ५ देगुना मुनवान है बीते हुए अध्यत था, वह हुए केले था---कनुत-मारती, ३३)

मेहतत की रोडी बातर

मेहनंत करके वीकिया करानी । प्रयोग---(बाबरारी के माच मेहनस की रोटी माते हैं भीर रामनाब का प्राप्त **बरते हे मुले०—स्मात कर्मा, ह**

मेद्रमानी करता

मृह गम बनानी, धारमाजीरका । प्रयोग —वह सहरि की कानि कर्गन हो भागक कर्गन केश्मानी सुर हिंद अव ffo

मैं कोता, मैं-देश कोता

बात पान पूर करना । अयोग---कहि कालोर में मेरी लोई, तर्वात त्राम जवार नहीं कोई ,कवीर प्रदान-कवीर १०६

है हेग करना

स्रमने अधिनान्त्र करे सहात्मकत् स्थान वालना । प्रयोगः से

मेरी वर्षि वह तत भोगी, समप्रत नहीं गंबार (क्सीर प्रकार -Balt geg

वे देश मांतर ৈ মী জানা

संदात कामी करना

यह भूमि में जाम काता र प्रयोग - मध्यी राई के परास्त को और साच्या की रोजो हकदियों को दूसरी दिया ने बाना हवा देखदर मिन्धिया के वे स्: प्रकार नेवल मेदान मानी दर वर्षे द्वारां ०--वं ० वसी, प्रध्व

मेदान छोड़ कर भागनर

- (१) मुबाबके में हर कर भाग बाला । प्रधीत-- दिनाइ परम्यान वंदान लोग दर जात वर्त थे। 'बू देव- क्षेत्र नात, रश्द , यंत्रे प्रतम काक-भाक कह विधा है कि स्थानी औ बेशन बोट कर दिनी हात्रत में नहीं प्राणेगे अफ़्रेंग्-HITO BUT SHE
- (२) कार्य में भाग भाना । प्रवीय-सम्बद्धन का व) फिन्मी समीत का चैवान होत्रवर भाग भागा गरी निक् कारत है। दुध्यास - देव संध्, बब्द

(३) युद्ध है मान माना।

(भगाव पुरावन सेदान छोडना)

सेवाम क्षांत्र

में मोटा वेकर मेदान की और वाते हैं (मैसाठ--रेमू, १५०) मेदान पड़ा होना

विस्तान संप होता । प्रश्नेत कारकारी ही के धरिन संप व प्राप्त । प्रतिक बीट भीट्य पीता की अनिष्ठा होते स करराम् प्रभाव की संध्यन अवकृतिकार प्रकृति के अवित्व र और ब्रह्मार के जिल् मेहान पड़ा हुआ है (विहार (१)--शुक्त, २००)

मेदान महरूनर

विजय प्रशन करना, त्यन बाजो आदि स जीतनरा वयात हाबिद व बेदान मार निया सीतः ү इमबंद ३५ राजेस्वर बाब के शकाब में बब वैशानी का मेंटान कार किया तो पदा निर्धालिको का कथा सर त पट्रमक के प्रश्न पटमक क्रमी क्



र्मवास से आका

मुनाबल पर आना । प्रयोग---भव परहे छना समाबि ३०७ मेदान में अस्तर बाहिए (अ.के०---माफ दर्जा, १६५)

र्मदान है उत्तरका

- (१) किमी मिद्धान की लेकर प्रथम के सम्बद्ध वाला प्रधीय—गंगा काई नो बिले इस की केंद्र विकारित । स्वयन करि किरवा करें, के इसारे प्रशास (क्वीर प्रथा)—क्वार, देवा, जान संकर इस सम्बद्ध पद के पुराने अधिकावी के प्रमाण—प्रमुख्य ४३३।
- (२) न्य के निर्वे या किसी कार्य के निर्ध परमून अहतर मैदान में आना। अगोत—सान्तिटियम के मैदान के इन्हें तो चोटी के की बया की मोटी पर जा चयके (यह प्रता— पद्मठ जानी, उद

मेराम में करण रकता

वीई काम युक्त करना । अधीय-व्यक्त तक कि जी लीव स्वय प्रम मेंदान में बटन नदाने हैं, वयनी वामी बना होत बनकर मही नृगंक ही। वाते हैं। युक्त निक-बाक मुक्त युक्त प्रश्

मैदान साफ होना

कोई काथा न होनी । प्रयोग--नयो ने सर्थिक मूच वह दास की किसी तरह जैदान की बाक हुआ (मानव (१)— प्रेमवेट १३२ वहां दंदान साक दशकर स्वित्ता पर पायन को नई (बुंद्रिय--व्यक्ताक, २५४); जैने द्वर-उपर देखा, पैठान साम था सुरु सुरु-सुद्रशन, वन.

वैदान द्वाध से निकल जाना

भीका निकल जाना । प्रयोग—स्मेग पावृत्ते हाह यह अभाव सुना सी ककराने वेदरम हाच से भारत हुना दिनाई दिया (स्वन—दैशनद, ५२,

मेल रचना या होना

नैपनस्य रकता का होना । प्रकाय—दमके व्यवहार में कोई मैस मा दुरस्य नहीं था ने कोई सचिक धयोपना ही थी (नदीक—उद्योग, १७)

सैमा करना या होना

बद्दमान करमा या होगा । प्रयोश---नी पाइत, पर द स पते. वैशी होड क मिला। एक प्रावनु न मुनाद तो नेह-परेकनी चित्र (विहासी स्थाध-विहासी, इस्क ; प्रेम में प्रश्ना करकें की इच्छा है वहा सेन भी है (प्रस्म--जीनेन्द्र), स्था; मरिनयीं में सूत्र दिश के सेम में नीरवर्धी की बाद न है मैनड कभी। (सुमती0--हान्त्रतीय, १४४)

र्मन्दे अनुवास्त

कृत व्यक्ति । प्रशीत-पठल काकि होति यन वेता । भागी पूरत व भी यह जेका (समाठ कि)-मुतासी, स्पर्ट

मोको के मानी रह जाना

पतने की भी कृते रिवर्ति में यह जाता । प्रयोग—वरि सेशा ते तो तो यह क्या संघय हो सकता है कि बड़ी बड़ी काल-निया का ये जो तो वह ये हो लखा जाय और बलार सजदूर यही योगी के मोची को गई (विज्ञ0—कीक्रिक, 20)

मोदा काम

- (२) व्यूष का कार्राक्षक काम (प्रयोग-मोर) काम है वर्ग विभागन का अंधने0-संश्वास ९०)

भौटा काना सोटा पहनना

पश्चारण निर्मात में नगर बारमा । प्रयाद —श्मी भी पित्री तो पड़ों निर्मार, भीड़ीन जदान की नेग जिसे औह। बारने चीर मोटा पड़नने में मर बाना क्ष्मल सा (शानक (२)— प्रमुद्ध, ४९

(बकार गुरार-सोदा कामा)

मंदा बोल महरता

कर करन बालना । अपोम---बोन म भोटे मारिये, सीटो मोरी बार । ओर बहस मन्द्र हारियो, जीने हारि विहास टोहार--सुरुषी हरू

मोदा मध्य

बता हिन्मा । पारेन-जनकी पानदकी का मोटा शाम औ ध्या तक पान माने-पानियों के लिए अर्च होता वा, कही बाहर क्षणे होने नवा (कुँट०-काठ नाठ, या)

बोटा साम्ध

मीमान्य । प्रयोग सुर तर करे मृति बना, जहां न कीई

†56

O. P.--185

योटा रहन-भएन

बाइ ६ मीट जाग कबरेर के, तहा रहे पर लाई (बंबीर प्रसार-वरीर, ३१), जूरवाम अन प्रित अमीरा, मान बहे, कर्षन की बोटी (सुक साथ-सुर केन्द्र

प्रोटा बहुत-महन

माचाराम तीर कर बाजा-पीना, गहनर । वयोग---उपन कोई मतान नहीं, नेकिन अपन-नहन बोटा है। निर्मेशः देशबंद, ३५)

क्षरिक बस्त्र

अस्ता बन्द । प्रयोग--- भूमि नवन वह बोट पुराना सुबलो—हिं० तक साव

(मदार परः क्षेत्रा अस्त)

मोदा होगा

- (१) अमंत्री होनाः । प्रयोग-नौटी रमसंग भी ग इकारः विजीवता हो, वृद्धि वही शाहरे की प्रेम कारकोनता सुभावी--हिंद सार सार्था
- (२) तरपण द्वीनर । प्रयोग—नाहिर सभी मोधने वर्ग कीत मनार हकते पोटा है। जिसे धान त्यान व है तो की क्यह म करें (१९० (२) —ग्रेमबट, २२४), धन-मधन करने का कार्य तो प्रमुप्ति कोट-पर्नट जोगी के शाय में होगा है (क्विक-प्रेमी, पश्चे: बीमी पर उपदेश का जी शंच चमता है, बीटी को कोई प्रचरेष मही करना (रंगठ (१)- ग्रेंगचर, बह

भोदा-फोटा

सामारम वर्जे का 5 प्रयोग-वर्षिया यही पाहती है कि मह सब 🗶 🔀 योहा-म्होडा नार्य और पहेर महे (बाहरू (१)—प्रेमचंद्र, ११): बाद मीन राजा है, यह मोटी-मोटी कीय किस बुह से जाव की घेंट करूं (मानo (g)—ग्रेसकट, 205

मीटा प्रशंत

मम्हानगा। प्रयोक⊷ कभी कृत्यं की श्रीदन जहां जह मोदा महीन दिन मा की बार अमर मवानर शालाना पा र्वतक २ विश्वदे, ववर

मोटी अध्यक्ता

बहुत आमंदनी । प्रयोग ज्ञायां में अर्जु मारी धामरनी है। बुंद०-- भाग नाव कर

मोटी बाम,—संबर्धाः

महाम हो सबर न पढ़न काला। प्रयोग -मोटी जमही पा बन्दर हुया है। मैहरू नेष्ट्र क्षत्र । प्रवत्ना औ, होशी होशी बान तुम करा से मानोते चैतरे—चरक ५०)

बादी बहरा

र क्षारा सार

ओरी द्वाम प्रकटना

वबम का पक्त केना । प्रयोग--पनिया मुक्षा प्रश्रहर उपर होती-नाम भी भोटी शाम समझन पर्वे धाँदान -पेयबर, ३३१

योटी दशकाह

काकी ज्याव ननकराह पांचर । क्योप--काश हम अभ्य कर और योगी-मोही तमस्याह यथार आसीठ वट वर्मा ३५३)।

बांटरे नद कर्मर हरेना

किसी प्रजाब का इसना गहरा जोना कि बीए कोई असर त पर्व । प्रजीत -ननतवा की ननाम की जिल पर है कमें। तक वक मोटी तह । इस उसे कह विकास कही सकते हैं न वह वेळ है मिनाग न वह (चुनति०--हरिग्रीध, धूद)।

मोटी बान

(१) म्यव्ट जरम बात । प्रयोग—शाब करने में द्याप श्री निर पंतरे हेंनी मोटी बात भी है न' समग्र करें (शंधा) प्रवार---राहाल दास, बहुका, यह मोटी की बात है और इसे पक बच्चा औ समाध्या है (शश्रेष्ठ (B)- प्रेमब्रेट, १०६ (२) बड़ी बाल । इसीम-- होटनन मह बाह है, कैसे मोटी बात । क्षेत्री के बुह में वियो क्यो एक न नवान (वृ o स०-वृत्तदे, १६३)

मोडी वृद्धि

क्य बृद्धि । प्रयोग----पर यदि कोई मोटी बृद्धि जाना कहे कि यो कीरे अवस्थ ही उही ना किर यही क्या नहीं बहुते कि पूछ नहीं है (प्रक पीठ—प्रक नाठ मिठ, १५०); बेरी मोटी बढि इन स्थालिक सुगाका सुगाबद्ध कर नहीं मानती राधीक प्रसाठः राधाक दासः १५६६ समय कृतार संहो वृद्धि का तथा कुछ दीपंत्रकी बाटमी का (वैश्वातीय २ - चतुर्व १९४ , योगी ब्रिडिश के स्पृत्यदर्शी सर्वाधश भीग भना इन परस्य की बाबों को क्या गमभ सकत ह (पद्रम प्रशास—पद्रम० अभी, १७१); हिनी जोटी अवस के बादमी हे ज्यादा करवान करवा अवर्ष था क्यांo— क्रेन्स्ट. ४६

मोटी रकत

मही रचन । प्रयोग--- ग्रोर किए धनवरनो की प्रशंका नी महारमा गांभी भी समय-अभव कर भी कोन कर करते रह मैं पर शर्स यहां रहती है कि मैं वर्षा घलाने हो, शहर पहनने हो और उनके क्यां क्या में बोटी-मोटी रक्षण कर ही (पद्मक के प्रश्न---पट्मक क्यां, १००)

मोदी मोदी बात

साम-मान बान, रूपम बार्च । प्रयोग — पोली गोटी कानी की वर्ष प्रावट स कटत मूलन है आवद्यक 3 - आवत दू. १५३

मरेडला

- (१) विच रत्यान करती । प्रयोग—विवयशिकासको है मधिकारी इस नतानकों को यदि जोक साहित्य की जोत मोच सकें तो है अनेक महार्थ दानों की मृद्य के साथेन (संशोक—हर पर द्वित, १६३
- (२) दिसा परिवर्तित का देना । प्रयोग—यहां से नाटक कुछ इस तरह मीज जैता 🗙 💢 कि क्षणक जवाब नहीं व्यक्ति – कुइस. २७१

मोम का प्तला

- (१) नकशी, कृतिम । प्रयोग—यह मैं क्या देखना है कि यह बना देश और अनुस्य अह से वास्तविक सम्य नहीं, मोभ के प्रति भग है (बसाठ—यस, १९)
- (२) सहज्ञ ही प्रधानित होनेवाना ।

मोस की गुड़िया

क्षत्रक्षम्य कोमनः भोनी। भगीन — यह वियम गये है उन यह ही जो निती मोध की नुक्षिया है (चुर्राठ—सक्त, धर

(तका व महा क-अनेस की सरियम)

मोम की नाक

- (१) सहत्र ही विधार वदमने बाका स्वस्ति । प्रयोग—ये बिकारे तो मोन की बाक हैं, आहे विधर केर हो । (आठ प्रंठ (३)—आरहेन्द्र, ४(०)
- (२) कॉमल-हृदय हीना । प्रयोग--योग की नाव, मीम

रिम डोव नाक सम-अक करें ज आओं दल (बोल्य—हरि-ऑस, ७३)

(१) नहम ही विश्वास कर देने बाना व्यक्ति ।

योग काता,-होता,-दिल होजा

को सम हरत होना । धर्माम—देशा न । वा ही वर्ष देश। वर्षनी वंश्य क्ष्मार निष्य — सोम कम गई (तिलातो — ध्याद, धर): राम समा कि वह नाची औरम नती है, उमके बार वी है (कार्य — कोनेन्द्र, २४-२६); बोब की नाच्य, मोम दिन क्षेत्र नाफ तम मन करें व नाको दन ,बोला — धरि-भोध, छक्क।

संग्र होता

रे॰ भोम करना

माम-दिल होता

रंश मोस पनना

मोर-नोर

क्षतंत्रकातं का मात्र । प्रयोग-कोर-नोर क्षति वरे धराता, वृत्रक्रियमा भूडो सभागा (क्योर ध्रक्षा०-क्लोर, २५५)

मोरचा धामनर

मोरचे कर नवन के निए जाई होता। प्रशेत—गरू दिन मोरचा जावना वहें की माधने को जगह न विके (स्थ० १) --वेमकन्द, ३२

सोरका बनागर

महते का मुकाबने की संधारी करना । वर्षाय—यह साहा, यह तो कमकना के मोर्ची बारण करके दिसायमूज के क्रिक्ती भाग नगरना करना बाहना है (नश्मय—देव स्त्र, १९६)

होस्का लेखा

- (१) पृद्ध करना । प्रयोग —मानवा क युरनान से मोर्चा नेत्र के विमे पहना और वहां अष्ट्रा मही वा सुगठ--यू ० वर्मा, १९)
- (द) अवर्ष करना । प्रयोग—विसमें कई वर्ष है, इसीनिए, मैं सरवार धरनी मानुक कृतियों से मोनों नेता साथा है ,शहर0—देखा, हो; मैंन स्वय उमें कई दिम एक मगानार क्षोर का नेत देखा पर (स्ट्रालीठ—दिव प्रव, १५३)

सोल व होता

कोई बदल न होती । प्रयोग---वी क्षमें वर्गान करता ही

पहें कुछ नहीं है कोक ऐसे येल का चुंबलैठ--हरिखीय प्रतः (समा≽ स्तु।०---मोल कहन कम होन?)

मोट हेना

सोह की चार में बनगर

यो। में रहे पहना । प्रयोग-स्थानी वर्ष वृत्ति गरी पृत् सन् बोट भाग में दहने वृत्त साल-सुर, ४१६८ ।

मोदिनी इप्यंता -जाना

साधा के बाद में बरना मोह नेता । प्रयोग -- किन विनयन हरि हमें निर्माण प्रकार मोहिन वारों (में) मान-ज्य १६५८) जिल्ह निष्ठ कर्य सोहिनों पानी कीन्स स्वयम नेवर वर्ष बर्गी (रामक (बाल) -- सुलसी, २३० व्यास की वर्गन गाम कहारे मु मयानिय में मनी सोहिनी हरे हैं का साल-पद्मावय ५६% वेनापनि स्थान न्य भीत कर कर सर यानति ही नुम्हें वस योहिनी भी नाई है का रक --सेनापति, हर

मोहिना काना देश होकिनी कालना

मीका हाथ अगना

भवनर नियम। । ययोग—रीपो, शब्द्ध श्रीका तृत नीतो के साथ नवा है विधाल देवाल—स्थालदास, १३१०

मींस उनाना

मातल नना : भयोम--वरे, और तो घीर, हमारे वर्षे भूकेरे, मजेरे, मौसेरे भर्द जो इसी विधासस की बटोनन भीज देवा यहें हैं अं अं वह भी मुख से क्यते हैं (गोदान - ग्रमबट १३

(नमाः पृद्धाः — मीज करका, पार्जा केना, मनाका)

मीत का शिकार होता

मृत्यु की प्रधन होता। प्रकार सेवार के मध्य सक्ष स काम जान वाले कीर प्रोदा स्वयं ही मौत के लिए फिलार होंगे दिएं प्रमी ३१)

(ममा- मुहार--मील का निवासा होता)

मेरित का स्थित पर केंग्ट्रजा

मन्त्रे को होना. प्राथमि समीप होनी । प्रयोध न्यही समझ को कि मीन हरदल सर पर लेननी रहती है मान्छ (१)-----प्रेमसट, २८४

मान का दाथ होना

मीन के क्षेत्र न होता । प्रयोग --क्या क्या रह क्या विकास का जीत का होक है नहीं किश्व (मुमलेक--हरिप्योध, हुन

र्मीन के घाट उतारका

(पनाः नुबा— सीन के मृत में जाननाः)

सीत के मुख में आना

मरमा । प्रयोग---मीत के मह स मल है वा गई. है प्रयश् हम पुनशों पर संग गई. भूनतेल--हमिथीय, १७१०

मीन के मुद्दे में ऑकता

वान कृष्य कर कारणांच काम करना । प्रयोग-सारणांची में भी कभी राजायी की नाना में सूर-कीर रखन, भाट बढ़ बढ़ करके (कड़ने) कविशा कहते में कि लोग जान मानी गीत के मृद्द में भोग क्षेत्र में (पट्टम प्रध्या-पट्टमठ प्रामी, २४०

(पमा- महा--संग्र के मृद में क्र पहना)

र्मीन तोइना

वर्ष्यो हार्ष्ट्यो जानन वयना (प्रत्या - प्रारी हर वज तीना मीन पहें, जन भीन को कुमार्थवित ने तीना (वित्र० --मन्द्र दर्मा, १८४)

(समार सदार - सीम सजना)

र्योत कांध्रक

पूर भारता न कालना । अयाग—स्थितक भीन वादा विज साला अध्यमी- हिल्हालमात को बोर्ल मा मातिक माता । सारि को बीज काण होए मुख्या जा उसी किल्हालस्थल

(समार मुझा अस्ति ग्रहमा अन्द्रण करना —धारण

म्याक्षं का और

\$34

यही शामित्तर

करता, पहुना −लेता सम्हालता) स्था≾ंका ठींग

 टनका स्थापी हपारे आसते हुए सीता का घीर न उसके बावदे हुए हम एसे बटन्ग्जन का सहस्य कर सकत क फ्राचीतक नाहरदेशे १७)

(मदा० म्राप्त⊷ क्याऊँ का मुह)

ø

य

यम का केश पकड़ना

मृत्यु कर माना । प्रयोग--- अब अस बाद केल वे पंकरे, नड श्रुष्टि को जाम स्रशासन (कबीर धंवाठ---कबीर, २८५)

यस कर इंडर लगना

मृत्यू निकट अली। प्रयोग—नवत कवीर तक ही तर जाते, जम का दह संूष्ट महि जाते (कवीर प्रसाठ—कवीर, ३००)

यम का पाश

(१) वृष्यु । प्रयोग—वेद पुरान काल वाकी संस्थी श्रीरचि वनि व कुटै जब की पानी (कवीर प्रेडांक कवीर, कुट्रा

(२) बड़ी कारी विकास काली । (समार मधार अंग्रासी फॉर्म्सी, यम के मोटे स्वयना

यम की फोमी पडनर

मृत्यु होती पण्य असमकुद जिह्नचा सरशयण पर्येन असमी पहेंभी (क्योर प्रेसाल-क्योर, बद्ध)

157

O P 185

यह के मुद्र से छ्दाना

मार हुए को क्या करती । प्रारंग--- रेमम नाम कोपरा के एक कोत करें की जान के शहर से मुद्दा विभा (मैलाय---रेश रू---

वसपुर को घर बनाना

वृत्य को प्राप्त होता । प्रयोग—देख बनक हिंह बानक सृह । बीन्द्र बहत बह मनपुर मेह (रामस (बान) — नुबसी, रूप

(बकार प्रार-समयाम को कृष करना, यसपुर यहानना, यसपुर से निर्माण्य भारता)

वय-वानना होना

वायस कार्ट्स को शांक । प्रयोग—भीग रोयसम भूपण आह. यह कार्या महिन संसाद (राम० (ज्ञांक सुलसी, ४३३)

यश कमाना,--पाना,--हेना

केष तेमा, स्वर्गन पानी । प्रयोग---कामु राम नेवक नेन् केई (100 अ)-- सुलसी ४००), समर वाणि सन करि



का का रीक

जम् पान्। 'बामठ (स्)। सुन्धमी घरकः विवर्त राज्यावाः घषाम में सरमायक ने बना कार कथाना नाः (वीटानः इम्बद् १२

समाज्ञ प्रतः 💎 यक्त स्टुटना 🕨

वश का दीका

यता । अयोग-सनो निहारी उनकी रूपो, कावी जम की होको (सुरु साठ-सुर ४२३७

वश गाना

(१ प्राप्त प्राप्तः । १८८७ म ४ ११६० १८ वर्षाः सहित्यं प्रस्त महर्षे द्वित शाल-सुर, ६१८८३); ३१ वर्षः स सामहित्यस प्राप्त् (शास्त्रः (शास्त्रः —सुरासो, कद

(२) एहसान मानना ।

बद्धा पंच्या

वैश्व यहा कारण्या

यह है प्रजा त्यका

पूर्व प्रतिष्टित सम्मान में अंतर प्रका । प्रयोग—हरेक प्रकार में तीन त्रवा की हानि हो सकते हैं एक अपनार करते दूसरे के यस में पस्तर नगाना, पूनरे अंतर की चीह वीकर मान का प्रकार नगना (प्रीक्षा—सीव दास, १०४

यहा सेना

रे॰ यहा काराया

युग क्षेत्र ज्ञानर

कृत दिन का समय बीत जानर । प्रयोग—नियय प्रयोश वैद नहि जानत, तिन जोवत भूग बीते (सु० सा०--सुर,

वृषराज्ञ धरका

वृत्तराव का पर देशा। प्रथीय--नाम राम् करियाँह वदराव (रामः क्रा--नुस्तरी, ३७५



भग या करना ने चेहर की रतत जानी रहती । प्रवीत— विवरण भगवं निपट नागान् (पानव रता)—शुक्तती, ३९६ . बीजवृत्व के मूल का रंग उत्तर गया (विज्ञ0—माव दर्शा, ५४) नैना के चेहरे का रंग उद्य बदा (क्योव—प्रेमबंद, २१९)

रंग उतरमर

- (१) सम्मान दूर होता। प्रयोग—नटमटी का रच तो उत्तर। मही को किसी व क्या लगा रोका विद्या भूमते ० एरिजीस, १२०३
- (२) दे॰ रंग दममा

रंग करना

मीत्र में दिन विनामा | १६६०--मृतम इन्त्वर वह योशमा करन नामा एंग 'सु० सात--सुर ५३१

र्गम सहस्रका

- (१) संभीय का देन जान्य होन्स । अगोन-व्यक्ति का दन वित्तना कृष्ट तथा है (भीवान-व्यक्तिक्ट, ६०४)
- (२) प्रधान और श्रीय प्रणान्य होता। प्रजीन—दनव हारा प्रभारे उच्ट के स्वका का पूर्ण विकास दिकाई क्या है—इसके बीच उनका (स्थ्य का) एक धीर क्या क्षा है (विताक (१)—हक्ता, ६६)
- (६) विभी वे एवं का किस उड़मा ।

रंग बदना

प्रभाग होगा । प्रयोग---वैका देशी समित है, करोज करते इस क्रिकीर प्रशास---क्रिकी ४८ , सूरदास को उसी उतास गर फिटिंग कर्त रहे प्राप्ती सुरुक्षक स्तुत ४७६४ प्रयोग र हिरमं पनी दनना कामा स हमा मा कि दन पर तोई एंस हो में बदता (कर्मक -प्रमुक्त, ३४%): मुना है, उन तर इस मौनमं का अच्छा ग्रंप बहुर है (वैशाहीक (१, —क्तूरक, ३४७); मुद्धे दर है कि मुजवाती हिल्ली का ग्रंम आपकी भूकरमं चौर कमद पर म का बाद (पट्टमक के ध्रा—पद्मक श्रमी, ४५

रस बहाता

- (१) बरकामा । प्रयोग-स्पर बहा बार लोगो अ को रग चदर निवा का बहन अनुमा स्थ्रीव निव-साव मृत एवं आहे.
- (२) किनी काम को क्षेत्र प्रकारकार्त बनागर । प्रशेश— सम्बद्धित ने बाहुर के ही इस बहुन्छ। जाने क्षेत्रे, राजा क्षार है बहुने इन्हें हैं मुगठ— कुठ कर्म इन्न्छ), व्यक्तिकार के सुरहें क्षी-बोहके का कर्मकार विक विकासकार है और कहिश प्रसाद देश कामते हैं कामता- प्रसाद ३९

रंग कोशा करना

व्यक्ति प्रधानपूर्ण बनाया । प्रयोग---श्रमण में छारा बृहान एवं नृत्राका । एवं योजा सपने के निए दो-बार कान प्रपती तत्त्व के जीव को (कर्म--प्रमण्ड, १४

रंग क्रोडमा

- (२) प्रकाष दूर होता ।

रंग असना

(१) क्यांन परना । प्रयोध-श्रीह के दिए प्रेम १४ बच्चा । का रेड्डि जून कीट दिनसामा (१८०-आसपी), १२०१४), बाहम बटीरकर कार्यो के उन दिलान बीमानी की मैंने भारती करिनार मुना ही दी। लीट मैंन अस गर। (अपनी सक्त-सुप, १००): पृतिस का एंच अनेना नवा (नवन-प्रेमनंद, २७९), एउके बाद किमी पुसरे का रंग न

जमता या, बसमिए उनकी कारी मब के बाद माठी वी

(Ra Bo-Basin, 167) (२) सानंद होता समा काता । दयोग-कोई याने दयान हा देव अमाना है, कोई चोनधन्ये नवकर, हेनदा बुंगाण है मुत्र ऐंके बादिधवों से किसी तरह की बार्यय नहीं हो नकती. र्वयोक्षात—होति दास. १३५६ प्राणी मेंत्री नहीं माया, उपने

(६) बोवह में देर ही वोटी का किसी अध्ये वर में वैदना जिसमें भीत हो ।

बिना एवं मही समला (रीफ (१)--देमचंद, २८)

र्रस जमाना,—बाधना

प्रप्राप्त वाश्या, यो नाम लगाना । प्रयोग---यो-चार अन मुना सो बामी अवना एवं भवाने की बेना हूं (वीटान-प्रसबंद 😩 🛚 बद्दो वेस्, क्या हान है ? बाच हो तुमने बहा देन जमाना है (शहाता -व्हांभी, ३३४), बाह्मान के केंग्र एंग ताबाज पर बाज रचा का /अपनी माल-अप, देश का नो क्षाबत हो स जाय ही बाध हो एवं बाध दिया जाय (बहु) -- Bo 180, Sinb

र्थेश ज्ञाना

पूर्व प्रवाद होता । प्रयोग--फिर वह मोपार, वह नव विशोध का सत्तरोप के शंस्कार का ही कर है जिसके हमका बनर रंग। गया है जिल्हा (२)-लाह दे, २२६

रंग वेकाना

बाजन्याम, बाबहार रेकता । वर्षाय-वहुत विगर्दे के तृत्रहारे देन देव पहा है, बाज नारी कमर निकास अनुहा (हंग्रठ (१)—ग्रेमघट, १६४

र्रग न छोडना

क्याना स्वरंप की स्वजाद न होत्रता। प्रदोष-अपन ह रहे मंत्रत क्षेत्र तेजन न बदनो उन बक्ति निपादर दिवसर सरम, सदर रहेन इस मन १० म० जुन्द, १०१)

¥श पक्रक्रमा । यर भागा

 तिकी पर काता, क्षेत्र प्रकटना । घषाय-व्यापना प्रद _{प्रका}क रहा है। चौटांव -सिराक्षा १३%

(२) वपके वादि वर र्थन काना । सयोग—क्यों (बन् पृष्ट पर नक्ष्य न गम को, यस व रखें परे अपूर सार —शुर शहराश

(२) प्रभाव के बातर । प्रवोध---वह महिली का बारदा रणमकर निर्मानको का रंग प्रकृतिही है। वीटाम प्रेमबंट, PESA.

रेगे पर आजा

दे॰ रंग प्रकटना

रंग पर सन्ता

अनुकृष बनरता । प्रयोग---तक से मही राह पर ३६ असे का में का पाई हूं कैसे उमे रच पर काऊ तीय हो व सबकाई 경 ,링() -- 기당 당도

रंग फीकर करना या होता.

- (१) विशेष श्वत्रवा न रहना वर न रहने देना । प्रणीय---बननी बान यह है कि यहर्शकतों का उन्हें बीवन करने हैं इन्हें बारून भारत 🛊 (२०२०-१३--वेशबंद, २५२०), 🕊 भी यों ने पतने हुए दिन विजो के मी कभी हुए रहा किशी के ह क्षीके 'मृमके - हरियोध, १६४१
- (२) सना त पाना, करनाह वा जहरव में कभी होती । प्रशास-कवि भी (प्रदेशर भी) के सः भागे में रेग परिका रहा पट्टम० के पश्च-पट्टम० शर्मा, ३२

र्रंग फीका पहला

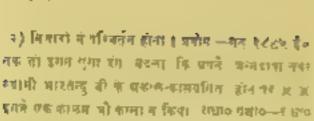
- (१) बानंद में क्यों का मानी। प्रयोग-एक विश्वद हिना, कीक अब सक रोग (सुरु स्तरु—सूर, ४५६२)
- (२) वहरे हा प्रवराहट के कारल पन् हो जाना ।
- (३) गंबराय में क्वी होती ।

रंग बंधना

- क्षणंत्र होता । अवीत-स्थान एंग क्षण जान फिर शी. इन्द्र बेरबर विद्यालयम धैली। अवक उन्ह
- क्षेत्रिय के इस्ता ।

रक बदलना

(१) स्विति म अतरे जाता (प्रधाय - इमारा वेदर बद्धते ही बनरर अल बहरून ग्राम राजा महाराजाओं ना रंग वेदल अंगोला जुसले≎ ह्यू ⊷हरियोध ह



(३) कळ होता: साथव होता ।

रेने परस्ताना

C'TT, NOS

मानव देना । प्रधायतः जेम को वर्षटी कोड नियट समधी मान, मो नम नियाय बाग को नम कृष्यती । तम ने वर्ष हो पृथि भूमि असि वावशी हो जुन की नरवाँन से रस सम्मान गयी (शामक कथिया--शामक, इस्त्रान्य)

रंग बांधना

वेग रंग जमाना

र्धश विगष्टमा या चिगादना

- (१) हानत विगरनी योक्सव में कर्या होती वा कर रेगी। इसीय—रंग विगरा कम न, बेनकसी कमर रत में काने सना भूमी रही (चुनतेय—हार्रिकी), ५०
- (२) मना भगक होता या करना । प्रयोग ⊸रंक विश्वक्षा भो भौगो का, क्यों में तो के क्यों पैटें (मर्मo- हरिग्रोध 58

र्शन ध्रमता

(१) वात की बदा-नवा कर, अतिराजित करके बहुना। प्रयोग-अश्व कोच को होगे केंद्रे बाको में करना रंग क्यो प्रशा, केशन प्रश्या का प्रथावें मृत्यात क्यों न कह जुनाया (रंगक (१)--प्रेमचंद्र, १७८)

(२) रंगमा।

र्थाः में द्वरता

किसी प्रसाम में पूरी अपन कीन होता। प्रवाम—स्याम मुर्तात के पत बरे सुरु सारु - सुर, १५%।

(॥भा० मृहा०—रंग से इपे सहना)

रंग में भंध पहना

कानम्य में विश्व पहला। वयोग--- इधर मी हुना रंप में इति ,साकेल-- गूछ, इश्लो, रंग में धन हो गया, जो ही जिस भरत को तमन दिलकार कोल- हरियोग के

रश वे संस्कारण

विनी काव का वर्षां में नानीन में जाता | भागा-रम पृष्टि कानी कहा जनन होए हुए (पट--जावसी, २०१० में परिमें का रम स्थाद रन मक से भई रन भाग कु साथ सुर, १६०३); गाम को औह भरानो है काम को, राम क्यों, दिन राश्यों न केही (कावं — सुनती, १६६ . नाव कर्ष किन काथ कार्य सिमार्ट मी कार्ट किन रंग रम ही (कावं कावंस-कावं), १९६३), नावंस भाग करमधोत्रम के रम को नव न्यानी (माठ श्वांठ (३)--मारसेन्द्र, १८ १८ का सन्तारी में बाद के मार्ट्स्स में की साम सम्म की भी वामने मानना के रहा के स्थान पढ़ा (हिन्दी साहित्य — हुए पठ दिवठ, ६३), जोन क्या नय रम में तो नया रमें जी म वर्श्यक के रम म सो हमा (बंगांठ — हुट औप, १५३ नय परिचम के रम म सो में इ विकादन की मारत (क्यां-धार का ह

रम् से रसमा । शबका

पर प्रत्य सामाप्त का किन्या निवास स्वयं की का को का किस्ता है की अपने की स्वयं की स

रंग शंक्या

देश होंग में रामना

मंग्रा संग्रहता

प्रेम क्षेत्र, कत्रका होता। प्रधोत—साथ सर आही हरि स्य नागा। धन चन को जब पुरुष सञ्चादा (स्थीर प्रधाक—कार ३६०

रंग सहसर

- (१) प्रचार या मृत्य रिक्याना, धरमा । प्रयोग—नेन रहे रच लाई, क्रम बेंगर पहल न साई । (क्योर प्रयाण—क्योर २९६), तो येशरशान, यह मानवा तो कृष रच नावया मृत्येक—क्यार दमी, प्रयूष
- (२) प्रधानित करना ।

रंग होना

(१) धननाव होता । वयोग- कुरुण् कोनु वर्धन रंग-रंगी कर्मात कुर्वत करं, जोड । वायम, मृत व वास यह, सूर्वन ह रंग् होड 'बिहारी सम्बाठ-विहारी, ४०४१

(२) प्रेरपान होना ।

58



हेम-हंग

(w) 2048 1

बीत-कृति चर (में) प्रमाना

श्रीनित्य ब्रह्मा ६ प्रयोग अनी को अमारित क्यां नरा इस्त्राहित वह प्रवाद क्ये हैं अम्बेश न्यूश कि द्वित तथन

हीत-बांबर का रीत-रास्ट होसर

सानुरक्षा होना, प्रमाप में होता व प्रतान—वाह वधीर पति शाना, फिल्मी यन बोचन शाना क्यों। प्रमात क्यों। इन्हरू यन यम कार्र शोजानची जन बहजरून एक लंबी

वर्गसङ

- (१) किसाना र १९६४ -- नहण नी को गणाम जी ही गाणा है को अध्यक्तवी के गणना गण जाने हैं 'यहनक के पण-वर्तमा ग्रामी भूष
- (2) nieffn eint i
- {a) unite even i

इंग्वेन्ट्रियी

प्रीयनातीतः वर्षाः—तृष्यः स्थान्या मृत्ये हे पति भारतीतः कृतिः

रंगा जिल्ला प्रचारता

(liedere von von bereit ficher

eige sogre

राम मान्यस्था साम क्षा कर कर रहा नम् भारत्मात्रः स्थानिक कर्यात्रः स्थानी अर्थक्षेत्रः क्षा विश्वस्य भी स्थान क्षा राज्यस्थात्र क्षा स्थानिक हो रही है स्थानक स्थानिक स्थान aut gint

होनी होन्छ। प्रकोश - मुक्त विकेशन हुए मोधनो हा हाहात नहीं नारके - सन्तर का दी सह पुर

श्रांत कितान है होता है। एवं द्वारा

चांक्यको ने करना चिनाना अधिनी की काशनी देव र तर्गतावादे इस पर विच्या पुरु निरु बात मुरु गुन्, बहुद विच्याकी प्रशास भारता से उत्तर और काशन करा करना चाना ना चैतरी अपन दुव

(यक्तर वर्षक --वंदरिक्ष अधिवर्षतः)

रंगांने ब्रांका

- (१) वटारपार, नृहायका एकपूर्ण । प्रयोग—हुनी बहहा-संबाद कोर प्रयोग दिस्सा बहानी उन्हें पत्रम बहानून किय नाम पुन पुन, बेटा नावना एक वर्षपूर्ण कीर समझ हुनक की रची है। एकील मी है पर निनाह हम्ह सनुव के प्रयाद हाथ हो दर कियोग होते काली है (काममा— प्रसाद क्राफ
- (६) गोनक प्राप्ता । प्रयोग-न्तक प्रत्येत है । जेतीन है । बहुष्ट सम्बद्ध दन के हैं। क्रांसीठ--यू o दस्ती, कर,

रगीनी प्राचा पर होना

वरेण नानों कानों हा होनों । स्वाम---भा नहीं ही से न एकानों निकल पह नवना रच म नो साथा रचे (यूमरीक---

CATTLE STATE

े रतान सिकाम के हाना

en erm

र द द कर राज्य प्रशासन प्रशासन प्रशास (इ.स. इ.स. १ वर्ष कर राज्य प्रशास कर कर का प्रशास उ.स. १ वर्ष कर राज्य प्रशास का स्वाहित कर कर वा का इ.स. १ वर्ष कर के कर बार प्रशास कर की स्वाहत के प्रशास इ.स. १ वर्ष कर का का प्रशास कर का स्वाहत के प्रशास इ.स. १ वर्ष कर का का प्रशास कर का स्वाहत कर का है है के कि प्रशास कर का स्वाहत कर की स्वाहत कर की स्वाहत की स

gen.

रक्ता उद्देशाः

- इराई काली है। मैठा०-- फ्रेमकेट १४
- (२) क्षात कव करमा । वयान-अवेरे वाहें में एक स्था हा दोनों होती में बेमलर बाध्य रचम को बा तो मुक्त में बचवा माना-पान के पूर्व में बना दिना प्रध्नों बाल नक्ष क्ष

रक्त् भी हिता.--द्वाना.--द्वा क्वान -- प्राप्ता मुरारे के बंग को इसर बाधा । प्रदाय-परका रवनगर रक्षणं नहीं क्षेत्रं संकती साविध करते दक्षणर में काता योग निवा बावमा विशेषात पीठ राम १५७ को हो बार दिन में विशास दीवान देश हजार की सकती रेगम MER MAR MIR MIR (9)-100 3 NO K. F. विकामी क्षेत्र राज्य स्थान कर जन्म के लेख न है. का मिना प्रस्ति है। अब इस माध्यान में का रहा नाम क्षेत्रका को उनम् दश र जाने हैं का रमा कि र पर तक बाजा केवर ही जगर्द वर्षों ही बाबें - राज्य -सम्बद्ध RH eif d'at | des it sad de ca d cen-वेस्बद् १६० अमार्थमधी रचनार दुगरे स् पर पर रचन मार्ग व गीएन प्रस्ति १०६

(गयाः सराजः अक्षत्र द्वकारमा

रकार दवानर

१ प्रसाम को जाना

बक्त एक् जाना

है। इसक्ष भार प्राप्ती

उक्त मार्गना

र बक्स भर होता

रक्त की नहीं बहना या बहाना

मुध्यस्य प्रदेशस्य । यात्रकार स्थले व्याप्ति । इत्या get a latter pure fiften harte fare a la la भी भाग्य को प्रोक हुए हैं नगर नह । जार नहार कर Pen की करी बड़ अपनी अपना अस्त प्रश्तिक पह विपरिण करण कृति तर को अर्थ है हमान है। अ रक्त की नहीं नुहारी तक्षण धुन् प्राप्त द्व

बक्त के भाग गाना बहुत दुली हरना प्रयोग अनुसारको व १६४० अ पंतरन्यमा कर नेपादर उद्दात हो। जिल्ला प्रश्ली 🕫 प्रथम 🤻 कामू न प्रोत्न, को कह यहा कोई वहनत वह राजन प्रेसक्टर,

रक मैं होता

are a trai, and more that to Ante-mille at THE OR OF ELECT \$ 18 PER

218 P.43

4 7 19 X क्यांने क्षत्र, अपनी जनत होत्र अब साना । क्षेत्राई एर्डि eim fentet fich biefill baim nemm nift die करनार्टन, जन्मिक क्षा ग्रही पुष्पान सुर्व प्रकृत बहा पत नकर १६१ बांच, पूर्व धेनो बाह्य पाने रहेया. कवित मुक्तारे १३४ कर यह बादी नर्गंड तबु शक र्नारवी कुलाग पन सामद कुनर मुनकास ही 'प्रनक समित - संगोध १९६ विकास वित शक्ते तीतृ कार्यु प्राप्त साथ -स्था स्थाप केंद्र व स्थापन के प्रश्न प्रकार है के विकास क्षात्रक क्षात्र कर्मा, बच्च क्षात्र के सम्ब की पर्यक्त

fact of the two parts and the contract (६) किनी बनों को पन्नी कर सामगर्थ पना कैया। क्ष्योतः पर्वतः प्रवति स्वप्ततः कर्णनाः एक नेताः स्वप्ततः

A GAME SAT

en de dage mitel.

mulou urre unei i uite-ar teran fant it कि अन्ते एका एक बोदा का चरित्रके कर दिया है। कुछ पर है कि कहा नव नव बध्यन व बाय दिया है। ARREST OF THE PARTY STATE OF

शा शा क्रियोजना

क्यकी करह कारका । क्षात-नी तो इचकी त्यानत प्रवासको है करून देन तथ हुन

ुबब व व्याप्ता अपनेता वापना स्व वाणिका

हांबा }

तात्वा में पूंचर वड प्रस्ता

कारी रक्षा से कृषण क्या उसने हैं। द्वाराष्ट्र देव सव,



ध्यङ्का

बहुत मेहमत न, सन् कर | प्रयोग—यातारीय मण्डो मे रंगहश्वर साम मेल चे गोदाल ग्रेमचंद, ३०५

बराह कर संदर्भ करना

ग्रहरम कृत मा अध्य कर देला । प्रयोग---काणि के ग्यार बहात जो गो बान उतका क्यों श्वत नदन करें जीकिंग हरिक्षोध, २५३

श्यक्त देवा

(१) सबा देशर बदला केना । प्रथम—जरहे वन मालूम हामा इंद केरे दोरों तक बच है कोई है जो मेरो मनोधन के भी गरा है, तो व्यावस्थान किए प्रश्नारी कनेगा और इस दुश्यना को स्वान्यक करने जगह कालमा (बॉने०—कोट स्था, १४१ , को स्वार् को स्वयं नको जम की मुसरोठ—कोटकीय, ३२

(२) किसी के प्रतिकृत यह देश का कार्यवाही करता ।

शाह-आह समना

मानका प्रांता । प्रकार — मरे ही कारण को यह रणक-सकड मधी हुई है, वहां को बाहब की तुमस कीन दुसमनी को इसक हा--प्रेमण्ड २२०

बारायाः क्षेत्रसं

सक्त्रोफ पाना । प्रयोग – बही को स्माह जाने हैं किया सक्ते हैं को प्रवह समय-मृहिस्कोध, म्दर

वर्षे होत्री ग्रहता

यक जाना । प्रवाय---वको न एक जाव रने द्वीनी कर्ण प्रमा भिराम युग्न जाना हो। शुभरीठ-- हों। और्थ, ११५

ग्मों में विजन्तं दीवना

गातम और पुल्लाह हाला । स्थापन—कार किश्रमी कीर धरी रग गातर जिल्लाहर सरवास्थान स्थाप के लाल हरियों - १९४

रस रह का

- के जान का निष्यु । अधिक क्ष्मित के स्वयं । यू का जानाम र जार्मना अपयु प्रोहर अपनि अपनि के स्वयं का काफ सूर्य पुत्रु ।
- स्व कार पर। कर प्रमाय—विश्वय दोक स्वि कहार भागतः सूच क्षावः पूर ४०१०°

रह बरायर

अपने तनस्य । धनायः । सम्बद्धाः विस्तर्य की साम कार जिल्हा सहे राज सम्बद्धाः सामाध्यो साह हो। सम्बद्धाः हमिन्नीय स

रण से रज रखना

नम जीनका । प्रयोग-सोर्गित बेरिन को बरमध्य है, दात यहा का में का भूजी असिए मुक्क अस्तिसम, १८०

रक-बाक्रम होना

पोर क्षता । प्रथाय—पानद हुन्मत अनुबद वरके दस बाकृते बीर वर्षत करने रामक छ - शुलस्ती, प्रकार

र्रात जाइना

क्षम कराना । प्रदाय - ठाडूम की मनि मिन्द्रय नायक, राभी भी रवि प्रांगी एठ सरू-सुर, धरपर

रेलीर अब

बहुत बोहा का, करा ना । प्रयोग---वाकी वंतर तिरिंतिया नाकी तेता होए । एंनी घंट न निम वर्ष, वो निम क्ट्रै कोई करीर प्रथान-क्यार, प्रथा, हिन्दी के पुणाने और मध्य मुक्तवर और एक्टरी की पुणाने और मध्य मुक्तवर और एक्टरी की प्रमुख दर्थ के बनुवार कैसी कुछ दण्यन क्यारे को में है इसी दिनाय में पढ़ रखी को कम दण्यन था प्रिक्टी की की मही काना (गुलनिक--वाल्मुलगुर एक्टर विश्व केंग्रिक को प्रमुख प्रकार कर से मर निभा भा यह दलना निक्त्र ही दायथा, प्रमुख अनको गर्भी घंट भी बहारा न की भानध प्र---ग्रामवद, नहरूत, कई बार सहया में ऐसे क्यार घंटर एक्टर प्रकार मुद्दी जिसकी जभी कर भी सम्मानवह न होती केंग्रिक- प्रश्नि हुए

रक्त-क्सर

- (३) गोश-गोशः ।

व्हा चड़ाना —जगाना

- (१) फ्रेंक जमाना । प्रयोगः यह जीवा एक ही प्रार्थः निकला । एक को ८२ फटकार मुनामी, प्रयापक प्रदास भीता रुग जमा का ६० - प्रस्तित प्र
- (-) हैंगा प्राप्त का पैन प्राप्त का प्रमुख्या हैगा प्राप्त केम्ब्र रहन न न्हा तकाणा अन्ति है से जा। काना के मेरी बात कानक के प्राप्त 2000 जहीं प्राप्त का प्राप्त के किया है के नाल हमान से एक न्हा का या है कि सिंद एक

.प्रकार पराः स्तुत्र कामनाः देनाः न्यापनाः)

रहा क्रमाना

रेट बहुए **सह**ासर

रफुलकर होना

माग ताना, पानव हो जाना । प्रयोग--यह हाल श्लबर मेरी और और भी रफ्यकर हो कई (माठ माठ ,क)— किं सीत, नरा, समाम दुनिया अर के मैंचे कुचैने बसीफ मोग इकट्ठे ही हैना पैदा कर रफ्यक्टर होते हैं अष्ट निय-बाह मार्ड १५%), बसी वर्ण की देवकर पहते ही विदेशी से रफुन्दरूप हो गई और खूँद्रण आयानान, ३४२)

रेषेदा पंडना

सुध यानी वरमना । प्रयोज-अहि चलते रचते प्रयाचरती होद विहार मी संबंध माने करे वर्षक करे विजाय कवीर--हिं० त० साठ

रवन-जयत होना

मेल जीन होन्छ । प्रयोग -- प्रानने हो, छहर के हारियों ने पुनका विकास रामन्त्रक है है (४१० (१) - प्रेमक्ट ३६

रम होता

माधनाये तीत श्री जाता । प्रयोग—जोती का तौ रनि तथा जामित रही विज्ञात ,क्योर वंदाव -कदोर, ६४

ध्य रहता

- (१) वीत होता। सरोत—पोर्ट घोरे मध्दको अनत न भाइबी रोम राध पान राज राजियों (बबोर धंकाठ-क्योर, \$5W
- (२) जा कर रह मानेरा

रम आता

शानंद मिनता । एथोग-अनि कंद और बनी को भी इन कार्नों में रम पाने नमा था (वहंब०-देंठ सेव, १५३

राम की बाते

रतीनी दार्त-प्रेप भी बाते । प्रवीद-प्रान-प्रधान की रस की बात भूगाने लगा। (भूति०—भग० वर्मी, २१५),

इस ब्राह्मती

भ्रति मधुर होता, ज्ञानद पहुंचना। प्रणयन की विजन भारमा बहुर जाना सकते स्थीत कर है विस्त मिन (जोसैक हरियोध १०३)

रस है गंधना

प्रयोग प्रवाहरि सीत के रस मिय इन्द्र भी प्रदेश (स्ट सर०—स्ट, ४४५४)

159

O P 185

म्म में प्राना

अरनन्द मं पूरी करह नीव होता। प्रयोस**ः नहि क्**रसि र्गत कविर कामिशे वा रच में दीत पाने (सुरु सारु-सुर, १३०॥), विषे वारो परासित के एल में बम में न कह बन वरे गहे । जग्नः चंद्रमाक्त्व, १४%

(ममा० मुहा०- जस में दुवना)

रस में पर्या हाता - कोर्या होता

- (१) पूरी तरह धार्मिक होता । प्रयोग-इन क्यन रचना विष नानी प्रेम बनाय कीर उस पानी (राम० (बाक्र)— कुलसी १४६); वर्ति वितीत बोक्ड सबन मनहं प्रेम रस सीरि (रामक स्ट्रान्न सुमती, १०५१)
- (२) पप्रा

(समा पर अस में उना होता

रस में बारा हाता

🗫 प्रस्त में पंगी होती

रस्य है स्टना

चनमञ्जरवर्षे । प्रयोग-कोशी वनी सनाहर बानी वय मनाम देव रच वानी पाम० (वास)—मुलसी वह

रस ल्टना

बानम्द परना । प्रयोग--क्षपा रख अरकी मृदन नागी स्रुव सारु—सूर्य, १५३९

रस हेना

- (१) बामन्द्र राजा । प्रयोध-व्यथर ने इस शिकावत की कामनता या तो नमभी नहीं था भगभ कर उनका रच न वे सदा - कम०—प्रेमबंद, १४)।
- (३) वर्षेत्र रसना ।

- (१) सामम् नकर; स्वाद लेकर । प्रवीय-महिपाल वहे रह में पत्नी की बातें मुन रहा वा कृद० अवलांक, ४९८ , कृत्व रत के वेदर का रहा था (देवसीठ--११० शव, १६
- (३) बाल्ते-बाब्ते, ब्लायम हार्य ने ।

शब-मंग होता

बासन्द का बीच में ही अब हो जाना। पर्योग --धेंग मृति विषयीत भागत, होत है रस मँग (सुरु संठ--सुर, Hoat), कहि सुपंध सब अधा प्रसंयु । जोह विकि साम राज वस अन् शामक का जुलसो. ५५२

रसातळ को मेजना

भाग कर देना ६ क्यांन जानि को भेष कर नमानन से काम में तेस जान कर सामें भूभते (विद्योध प्रद (यमा - मृहा - - - स्सानस करे पतु ला देनी)

रकोई तपनर

भोजन प्रश्नातः । एयोग-नदः नृपन नावे तपत्र रसोई गमना नावे कावे कोई कवोर प्रश्नाव-कवोर ६२२ वेट गार्ति केंग्रेट पर नगन स्थार्ट भोग संध्यात स्वयंत्र-संध्यात इन्स् ४४

(तमार यहार-समोदे सदासा)

रक्ष्मी जरूने पर भी पर पना गहना

रक्ती हाए में रकतर

चपने बार में कामा । प्रयोज-स्थि प्रानिय क्यों है । इसे दीन कार्ड किननी हो दो पर समी धपने ही हाथ में सकते। व्यक्ति पारसीठ-स्टिट प्रयः छर्

रहेद की धविया होता

नेनी बश्तृ जिसमें स्थातार यानी निश्तर हो (बाली के जिस्तों) । प्रधीय--- भग के लेल स्प्रेट की घरी । असी ने बारी सुन्ती भनी (स्ट्रेस -जासमी क्रांस्ट्रेस

रोड का करका अरेटनर

(१) मही पुरानी बात करनी । प्रभीय-स्थाप पाइक अ नाम मी विकाद यही कहेंगे धान हमने वहां का गाड़ी वर म चर्मा मोदना प्रस्ता किया (मह निल-का अगर १३५)

(२) में में बक्षा शतन करन के लिए गांच प्रान्त का काम

गर्प का प्रवाद और पहाद का गर्ग करना

दर को सार और पार को बना बन नो । प्राप्त नाई म सब रोग है बन के राह अगेड नाई के परवन करें, परवन नाई मानि के बोर रोहा के कहीर हर जाते ने पर भने नाई जोई बद कर सुरू सुरू नहर अपन्त

गई का फाइ बनाता या होता

- (१) योटी भी बात को बहुत बढ़ा-बढ़ा देता : प्रयोग— में कुछ ऐसा जनोसा वह बोना नहीं भी गई को प्रथम का दिकाई (देशां)—इंदारं, मंद, में क्या जानता था कि गई का प्रथम हो आयना, नहीं तो जपने हरेगों में उस मोंगई में बाद नवा देना 'रंगं) (३)—समसंद, ३८१
- (२) एरेट को बहर बना देगा। धरोग असरे मूं सब होत है, वॉर वे हुए अर्थत । साई वे परवन करें, परवन राई पाठि करोग संधाव—कमोर ६८ साई से परवन करि राई, साई यह करें पुर सारु पुर श्वरूश), प्रवसी कारावा तो राई का पूर्वत हुआ केती है मानुर १)—सम्बद्ध, पुर

गाई भग

सनिक भी । अधीय—गाई-भर भी है स कुर्ग्य कीसभी वंदेयोत—हरिजीध, २८३ , करके पहार मा पाप भीत रह शक्त है शई भर भी धनुसार न करने पार्ज हैं (सीकेस— एक २३१)

(नमान पुरान-चाई सा)

गाई-जोन उत्राधना,- करना --बारना

लक्ष प्रकार का शेटका को क्ष्यांट के प्रभाव को क्ष्य करने के किए किया करना है। प्रयोग—नकीर करनेयां नांव गाँव बीवा शाई ज्याप (कवीरप्रधा0—कवीर ६२ ; कवहूं और प्रथान बनावति, साह भोन उनारि सु० कांठ —क्ष्र, संदर्ध), बाररावी बारेक कर बारित । पनि-पनि गाई नोम जनारित (न्द्रेश शंक्षा0—नेद्रेश, २००६), बुनी दुनि गाई देव प्राई दुवार्गाई पिछ, शाई जोन कांग्रिये क्षियों की विवशाई पर साल- २० मानावान १३६ काम इन्द्र मान्य कुन कांग्रिय द नान नांच गाई जनार क्ष्रीन प्रशी बीका नदिस्मीध

गई नोत करना रे गई नोन उत्तरका सई नप्त धारना रू गई नोत उत्तरका

राई नजी

दमायम , प्रदीत जिल्हा अपर माई रली नाप बील धर



पानी को पानी कह कर अवस्था देवे का राज्यिक है, के अपनी भागे (द्यागण-जेनेन्द्र, प्र

गाई रक्ता से परिश्वय रखना

सब कुछ हातका । प्रधान—आसी के जामपाय की पृति का उनको पाई-एकी परिचय पाधन हो एका (क्रांसी०—वृ० वर्मा, १८२१

रासम् होना

- (१) महन क्राहीना । प्रयोग-नम्हारा सिर अके यह नहीं चाहनी की---किसी के आने नहीं, और उस प्याप राक्ष्म क नदी । प्रदीय २५२
- (२) बहुत बनकाय होता ।

राख करना

वर्षांद नाम देता । यदोग---काल विगये केलबह दिलये गही। वर्गी वर्षा गल, कर दिली की पास हम , मोल०--हरिजीध, उप

राम की चित्रगारी बमकत

दक्षे हुए जोश या उल जना का उभवना । वशीय—परिया बाद यह बासी कड़ी म उकाक आया और राज की विनया बी कश्रदी (बहुम० के प्रज्ञ—पहुम० क्षमी, ३-४)

शक की जिनगारी क्षेत्रा

रवा कुमा योग या उपना प्रधान—सन्ति वार यह वानी वहीं में दवाब जाया मीर चिनवारी थमकी (प्रस्त के प्रत —पद्मत समी, इन्हें.

शक्ष जगरना

हवा देता, दक वेता ३ प्रयोग—मुख्या की मां बात पर नरक बाबना नहीं नाहती (परती०—रेनु, २५%)

राज में मिल जाना या मिला देशा

क्वांत कर देनर या होतर । प्रयोग—वदे-वहें प्रमाणी भूगणि कुश्हारी जानों के जायने राज में मिल गए (गम० न्य)— इससंद, ३८३)

राज़ क्लना या ऑकना

रहोध प्रतर होता दे करता । प्रधाद—अगर राज चन गया अ अ तो मुझे और तुमकी कहने हो तो झेंगा कि उस बरकार घोरत ने मुन्तान की किसी रजिया की बजह है बहुर दिया इसनिए मैंसे इसको सजा दे की (मृगठ—मृष्ट वसी, ३३४

रकाराति का कोडा

इंट तमब यानवीति में ही सना रहनेवाला (प्रशीम हम नो साहब राजनीर्धेत के कीट हैं (बुंदल—जल साल, १५३)

राज्य उत्तर जाना

- (१) यास्य का समाप्त हो आता । प्रयोग—साव्य उत्तर जात मृगी की भाग्य मुन्दरवी सी आत् (मधूठ—करणत, यद ३१)
- (२) प्रविकार दिन जाता (

राज्य करता

- (१) मुख और वैश्व में जीवन विनामा । प्रयोग—बहु-बह रही राज करों तह नह केंद्र बॉस्ट किर भार सुरु सार— सुर ४२७०
- (२) परियाम में होता ।

रात प्रांको है काइना -- निकलना

रात प्रांखों में निकसना रे॰ शत प्रांखों में कादना

शत उत्तरता

रात होना । प्रयोग⊷रात जनर बाँड भी । नारायण कुरमी पर वैठा रहा (8म40—दे० स०, २४५,

रात का दिन करना

क्ष्मत प्रवस्त्रधीय हाता । प्रयोग--सम्बद्ध इसे ध्ववाने के लिए उसने राग दिन एक कर शाहर ,कट०--दै० स०, ३४१

रात की एक

- (१) बहुत बान्दी-एंसा बीव बाया कि पता ही व भने प्रदोस-स्थ, बान सान्दी संत-की-गरत मं कट वर्गे (१९०-दे० स०, ३९५
- (२) शत-शत भर ।
- (३) एक ही रात में ।

रात महर्ग होना,-भंगना

(१) पास का पीरे-मोरे बदना; बड़ो-रावि के बाद कर



तावय । प्रधात—कृषि एडि शरी वीरियनाह कर सारव थी, शीव सूत्रकी शाम अभी रुपी शीवल करवारी प्रमण करियान्त घताल, ६१८ , ज्या अभा शाम कहारी शेवर पुन्न पान क्षेत्र बीतन नमा, बंदक-रियोग्यय) की विकलाहर घोट कुरून की साम में बलार (एन जमा विकल-प्रश्रिपात, १६४ अन पान क्षित नधी चीर बहु न सीटा यामी पहर करी कारी गीदाल प्रमण्ड १२६ , सीकी गाम, बन्धा गीने वस्तु पान कृषा द्वारा प्रमण शुक्त सन्तर, ६०

राज इसता

प्रभाव सीच होता । प्रयोग-न्यांगार विशेष नायक गाँउवय दिशा बाधी भी वर्ष देव चली हॉन न्या प्रकार आस्टेन्ट्र श्रुद्धत्, दक्तती दाव, बार को श्रावता निरम वर्ष पृष्ठ कोन, कहा है प्रमात गुप्त, दक्ता और शांत भी दसनी चन्दी --रम हत् यह नक्ता दिल्ला के अक्षात्र, कर

राम पहला

पान होता । प्रयोग - विश्वत कमा नहीं मिली, वीर्ध प्रांत्र) रान्ति - सहीर प्रधान - क्योप, इब

राज भागना

रे॰ राज ग्रहरी होना

राजु ह्यातः

अपन्या मनवर, बारो योग विश्वाचा द्वीती । व्याव-व्यावन बनत र प्रतत हुं के अब केंग, पूर्व विश्व वर्ष्ट यू जिलाने जिस कार्ति है उन्तर कविस - समाग्र, पुरुष

काल दिल

पाक्षी गहर, हर गण्या। अयोगक-अस्पत अर्थात हिला की भारत। यह पहु भूगीन नाम किया बारता पर्यक्त-सम्बद्धी, १ ए केटियों न महार्थित जिला अर्थ स्थान रहा के मूल्यात सुर ब्युवान केटिया पाला स्थान केटिया पर्यक्त पाला है साम किया में स्थान करता हर कर्यका है साम किया पाला सम्बद्धा केटिया कर्या

रात दिन का जनर हाना

महत्त जान राज्या । यह शां जा हुन्य हर्णां को एक जह इति देशका जिल्लाकाने समानेत्र सेंध्य नई पेत्र करा । इसहय क व्हार प्रति देशन करीत को अस्त स्थलत की उस उसका अस्

राजी का कड कर अपना राजिपास संजा

करकर वर्ष्य सम्रक्षाची करना । अधोव-सरं वयने राम वर्ष पद्म, राजेर रिमायको अपना रामसाम संग्री (कृष्णी०-जराका १८६

ं प्रभावता का कड़ कर अपना सुद्धाया टेना

गरम को संगर्भ

र्गनक भी नहीं । धनाय अधनकी माहे भीव गाम का नाम ही जानत हा पर जवारत गष्टन पर करना न दूरना अस ने नाम का भी पन काम मृज नकता नेते हैं भीव समाधा की देश हैं साथ मोठ नमाठ द्वादी ग्रंगड़

राम जाने

- ्र) क्या नहीं । प्रधान—प्रमण प्रमुख्य पूसरे संस्थान करते हैं, एका की देवबट दी दटन व । पार्च आन कहा नद रोग है पहला के दल-पर्यक क्यां, शुरूरा
 - के _{विश्व}कार समय ।

राज-कहार्जाः

र्वाकत साथा । प्रधान — धनन —हथाः यह राज-सद्दानी दूव बारोः माठ ६था० १ — भारतेन्द्र, ५५५

THE METHE WHAT

बाप-बीनी मुनाना । प्रयोग---योर्ड बाल मुनाने सन्तर बचनो गाम बजानी चुरत---माल ११८ , मानी पढ़ शाम बजानी तील तुनगढ़ का ककाल -प्रमाद, का

राधभाउप होना

(१) कुलपूर्व धार्क होता । शताय—अब वावकी दशा व १ । व १ व ४ १ र मान्य व्यवस्थात्व

74 44 7 74 }

राध राम करचे.

हर रोग संस्था कर इस्त्राच्या क राज्य कर कर सर्वे बहुस देशी बहुसे≎ शीम करें।

रामनाम करना

िया जार राज्य प्राप्ताच करता । प्राप्ताच अस्ती जानी राज्य सार राज्य निवस्थ कार्य आस्त्राच सामन सक्



गासं-राम हाला

- (२) श्रेष हो अला बर अला ।
- (३) द्यान्तमाम होन्छ ।

रामकाण होता

भक्त होना । प्रयोग—संस स्नियनी क्यापा है, सम्पनार तक्याची का कोई रायकाल सरद्वय है वो क्यावस्ताको की रीच की सोच जाता है अंसर २, - च्याव २३७/

राच गांद्रशा

रस्य में करना । अपाग ---में करिल, बारा परामय बाउडर बाप मेरे पास आध है (या--कीश्रक, २०)

रार झोल लेता

वासक्य कर काला करना । अयोग - मृध्य वय कोकर वाले की वर्षत नहीं है । अ में पृत्तिय वे उत्तर मोस के बदता हु (गवन-जोमक्ट, २४४)

राम भागा या होगा

मुवाजिक होता । प्रयोग -- 'विट्टी की पूरत' में वस्त नहीं बती । बीम राज नहीं चाई (बड़ा: दें) कर, ददो, वेवस् बावूजी दवे जाते अ अ विस्तृत करने में वर वह जिसी मरह राज न होती मी (कर्म०--वेसवट, १६०)

रास्त्रा कट जाना

शास्त्रा क्षण होता । अयोष---वप्ही दुवको व वास्त्रा कर सन्तर (तीदान---वेतवद, २५)

रास्ता शुक्रमा

हकारत को दूर होता । प्रतीय - परि एतम कर स्थान न होती तो १८ १८ देव्यो सर्गद कृष्टे भागों के समाद के लिए सारता कुछ नावगर (क्लिप्र (१)—जुल्ला, ५१)

शास्त्रा स्रोतना

(२) मिनी प्रवा वा नाम् करना ।

राज्या कावना

- (१) पारण में बाने की सगह देशा । प्रयोश-सीम म हाई क्षेत्रको, क्यों वर्तर कनवट आडों सुरु सात-सूर ३०६१
- (२) बायर व बांधा ।

रास्ता दिवार्ष देता

इसर नगर में भागा । इसीय - संगर की राज्या हीया जैसर (२) अहार १०५

गस्ता दिवास

- (१) मी करनीय है, इसके बक्कत कराता । अयोग उक्का वीरण कोनों को एक जरुवा राज्या दिवासामा ४ ४ है राधीय अक्षार — राखीय देश २५०), इसीवित सैने बंग्या कि कानी कर कृष्ण का वर्गासना करने के बहुने प्रकृती से नानों में रहू कीए उन्हें राज्या दिवाई, जामार — देश सब, या , बाव मेंने नवक्कानों को राह दिवास में कृष्ण समीव विजया है औरर — जायद संस्था १६
- (p) ब्रांक काला : प्रशास-देखि प्रशास (१) में (+)

बास्सा ब्रेशका

देनीला कानी । प्रदाद — विका नम्मनि वृंग निर्म क्य हरि यम नम् रहि यम हिंग जर मोनो सुठ साठ — सुर उदेव्ये । हरि नाम्य विकारि यसि योगा (उनक अस्त) — युम्पी १९७ हर्ष्ट विम्न देखन सित्त काना । विम्न मण्डे के क्य प्रमाना नद्दर प्रदाठ — मद्दर १५६ । इस तक न मय सरमद यानि । यम विकास नम्म सरम्यक आणि (केवावव (के) — केवाव वृद्ध । यम हेर्ग्य रहिंदि वृत्याय वर्ष यम ॥ तूम आर्थात योगि करी संगठकदिश सम्भाव देशी हरी वेदा सामा देशा गरी हरेगी दिल्लीक नामक देशी, प्रदा, वे कामज परिना किए यहें सम्बन्धित विकास है। यहान देशी, अपने अर्थ का

(नशर कृतंत- ग्राम्ता सामना)

राक्ता देना

कार्ने के कियू क्यान देनर । प्रयोग-स्थान ने नाशा-प्रेरिन के होकर उसे भाग दिया किंकालीय (१)--प्रशुरू, १८)

राष्ट्रा न छोडना

बीखे प्रस्ता । प्रयोग-करी बिग्द ऐमी, नक बैम न सावन

effect direct

मीनु । रीते हे प्रथमा कलकु जाहि आहे में भीजू जीवहरी स्थाप-जीहरी, १५०१

शास्त्रः नायना — सापना

- (२) राज्ये की बाद एवटक प्रयोक्षा म देवता । प्रयोक्ष-मेरी बाद हेरस दिराजे की पिराजे पत्र कार्य में विकल जैना ताहि लिए गाँव दे । धनक कमिल -धनांक, दे? ए जब न तुम सामित्र-दर्शित वर्षी सम में प्रांतिक्षी मह संस्थित है चनक कमिल-धनांक, ६३०

रणना निकासना

वृष्टिम कोचनर पर निकासना । यथाय-व्यक्तिताहरा में से पाना निकास सेमां प्रमाद स्थापन हो नया है (प्रक्रीक) -शिव प्रविद्या है। में से समझ रहा था कि आपन कोई पान निकास किया होतर (एक्न-वेपस्ट, २०

राख्या प्रापंतर

देव गासरा नापना

रास्ता पकड्ना

- (१) यने माना । वयोग---वास्त्राय--वास्त्रे शेक कुक्ताः राष्ट्रे काम प्राप्तत काम का प्रयु तको समय ३ केळल १६५
- (च किसी नशेक व सम्बन्धाः काचाः स्वयंत्र विभिन्न माण क विचाः और का गारा न ना हु ता वास पकड़ निमा का पर प्रनक्त माहित्या पूर्णीः प्रनक्तात पर का विकार १ -- श्रुवका १५१ स्वयंत्रिया न द्वार प्रक रामश् पक्षाः रुपाः २ केमचेट १५५
- , ३, विभी काम को करन जाना अवीन -कर सकार न को हमको जात इस एको हो १०% सक्क-क्षिप्रीय ४० (४ किमी अस्ते पर कीका कामा । देवान ४४० क्ष्मह ह एक कर। एक या बालगा समुद्राका अध्य कम्बर पद ६

गरमा पंतरता

- (१) निमानाः तरबीय बताना । प्रशेश---व्हिन यस दिस की नवरी है, तब दिस के बचा शास्ता भी बंदे को बना एक हैं ज़िली--जिसासा ११४
- (३) अवसा पाना, रामना ।

शास्त्रा बदलनां

हुनश्च काम वह सम्म व्यक्तियार करना । प्रयोग---प्राथ की यहरे हुन्या हो नो कहिये में प्रयम् रास्ता बदम कु विद्धार -सरु दिखा, कु

गाम्या धताता

गान्दा विगादनर

भाग के निरु यसने किम्पिनाः चानु करना । असीम-पूर सभे की सभी होहती, में भी पद्म विभारत है (सुरु सिरु— सुर ३५:52)

शास्त्रा भूतमा

बहुत कियो बार जाया । प्रयोग—कैंग्रे शतता ज्ञा वह ? मृतिः—आर दर्मा, १७८), ह्यारे वर का शतता कैंग्रे ज्ञा वह, ज्ञातारा ? (इस्सर--देश सत, १३६

रास्ता संस्ता

- (१) जनति में बायक होना । प्रयोग भवजान विकट है, प्राचानक हमन है प्राचनपत्ता हर्गनसम्ब है, दिवता है। वर्णना स्टब्स राज स्टब्से हैं और वरण्य शासार है। सन्देश १०-५० दिन १४४
- ् राज्य व कार्य में बहुन होता. प्रदेशकरूम राग गीते राज्ये को की बहुमल भीड़ कोल स्मृत्र साठ सुर्वे 3254%

रास्त्रा लेखा

() प्राप्ता प्रयोग्त कमुद्दव जी कबुराग्त के) भी बसारा के दिए सुना दिया और बच्चा की कबट धपना पर्य लिया इसे साथ का लाए १६ - दूसर दिन सबर ही रुपा स रमेग राष् के गर का सम्मा विका ⊣तक्त -वेबबट, हुद, रास्त्री साफ कश्वा का होता

सम्भगं दूर करती या हो रि । प्रयोग—विधाना की नी परी प्रथमा नी कि उसे बनवान देखन खरनो वहतो जैना के लिए सरता साफ कर दे किसीठ- क्रेसबट, हा, जब भगरना को भगमा क्रम विचन जीर भगाय कहाने के रोकने पानर कोई न रहा—क्रम, मुख्यीत, प्रशासन ने इनके क्रिए सम्भा भाग्र कर दिया क्रिम मेंठ - म्ह्यूठ हिंदेदी भ्रम किर नो सम्भा साफ हो नया क्रमेंट—हठ प्रवृद्धि । भीग किर नो सम्भा साफ हो नया क्रमेंट—हठ प्रवृद्धि । प्रभा समझ भाग्र दिये साल ने हमारा सुरहारा, दोनो का

गास्त्रः सोचनः

हाराय की मना (अयोग---मैंने उनके निय गढ़ की बाज की है , अम्बर---वार बेर, ६३)

शासे का कांद्राः—गोहा

भागे की बाधा। प्रयोग—प्रमने एक दाय है अपना देश प्रशा दूसरे हाथ से उपनि को राह व कारा का याप किया 'आठपूर (३)—मारतेन्द्र, प्रदेश, पर नेद्रा धोनी न वने दूर है प्रियं के नम का दोशा (संशोठ—पूर्व, ६४), अन्य कन को व्याह्य, मुख्ये अपनी शह का वादा समझ कर नुबने वेगो दलका वृत्ती भी की, तो क्या (बान्छ ११)—प्रमण्ड, प्र शह के कभी कार्र ती दूर हो वर्ष (आद०—अन्य वाधुर, ३६); राह के बी बने रहे होडे दान सरवं न तो मरोर्ड क्या (बोल्ड—हरियोध, १०४

(समा: मृहा:---शास्ते का परवार)

शस्ते का रोडा देश शस्ते का कांटा

शास्ते की धूल बढोरना

गरीय होता, धन के श्रधान में महरा-भारा किरना । सर्वाप --- महत्वहूं मत-मन श्रुपि बटोस्ट, स्टेबन की विनवाद ,श्रूप साठ--- सर १८%।

रास्ते पर जाना

स्थित काम करना । तथीन---भहा हम पार दिन अ अ सारकी हो में हो मिनावये अ अ बतातावए तो आप कर नव राह पर व जावने हैं (देठ चीठ- प्रठ नाठ निव्न, ध्रद्ध), पृथ्य की वर्षिकार के जाब काम करने दिवर काम ती गान्ते पर था जाव भोटोंठ—नियाला, ध्रय, ह सम्बू, द्वय आप रक्षने पर जा नव उपस्त के प्रयु- प्रदाठ क्षमी पुरुष

शामी में कांच विद्याल

पहुंच आरवर करका । अधाम--वान में के बात के बात जिल यहर में नथे, करता में करके पहले में बाब कियानी मानक (म)--वारवाद, ११८-११६

शन्ते हैं जाना

वावक होता । वजान-व्यंद्रस्य वीते सूत्र-समूत्र-नाग । व्यवि विक्र-स्थित के वच कार्य (गीरांक भा-सूत्रासी क्षण)

शाम में कार्ट बोमा -- वबन बोमा

ियो का यहिल काल। विकी काम म किया यहा करता। प्रशेष —वया तृष कह सममने ही कि इम अभागी की अग्र करन प्रीर हानाव की गाह में काट बोले में में कोई खाला काम कमाए है । यहाँ हो में मारे बोले में में कोई खाला काम कमाए है । यहाँ हो मारे माने मारा और महुन के कारता हुए है अग्री इस मानि विकास को भी इस अ अं माने हुए की तिया है । अहाई निक—बाठ अहाई, अहाई खाने कुण-वम ने अपने हुए में माने हैं। अहाई कि आम में सार्थ हैं (वैदेशोक—हरियांध, ६०), हुं मानाव कि आम में सार्थ में मानाव के सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव में सार्थ की मानाव के सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव में सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव में सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव में सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव में सार्थ की मानाव है । अहाई की मानाव मानाव मानाव मानाव है । अहाई का मानाव मानाव मानाव मानाव मानाव मानाव है । अहाई का मानाव मान

(बराव वृहाव-राम्से में कार्ट विकास)

ताले में दश्स बाना देश हाओं में कोटे बाना

(बबार पुढार---वास्ते में बादे-विकारना) रास्ते में विकास भारत बरमा हेर रास्त्रे में सोका अध्यानर



शस्त्रे समना

- (२) द्यव्य साम वे प्रमुख होना

शाह काटना

गामना होने से मधामा । प्रयोग-विश को रेस भागने हें हुए, है पनी पान माटने की मान मानेठ-व्हरिजीय कर

राष्ट्र बसने

- (१) माधारमातः निना निनेश प्रयत्न के । प्रकोध-स्ताह चन्ने ही किन समयो ना जिल प्रथमो, तर आचल वसका मुना, वन १ केन्नर २ -- कह स. १६६ - राह चन्ने इन पर म्बाहनस्वाह की पीटाकसी भी हो जाकी स्ट०- अठ नाठ, ५७६
- (२) शालो पर बजने पाने, विता मान प्राचान है, दन-साकारण । प्रवीम-कारी-कामी सह बजते विकासते होंनेक --संव राक, ३१), एक पाह बजते सरकी है 'कुपहमा'--दनका मगना कर क्टेंचन पहुंचे (पदम प्रशास-क्ट्रावक क्टब्रें), पर,, बारात का नारक उन बक्त पास होना है, अब राह-बनते बारावी क्षेत्र प्रसाद कर केते हैं (प्रसान-क्षेत्रकड़, ६)

राह छेकता

गह नाक नाक का धवा द्वाना । देखने आंधे पक ज्ञाना, —देखने देखने जांचे पद्या द्वाना

देनतार करने प्राप्त हैगान आ अग्नार अग्नीत आग्नार गाह देवन देवन तो अग्नाय पढ़ गई जैनस अब्द ४०६ गाह देवन देवते तो अग्नाय प्राप्त गई क्या १ देव वेद १९६ हम कह का नगक की दान आप को गाह नाक नाक पढ़े मुसलैंक मुख्यों थ ३,

(समाच सुराज जार देखने-देवाले पतक भूत जानर)

राष्ट्र शासन्तर

मलीका करती । प्रयोग हम कह वया लगाव की बाने साथ की तात ताक ताक यक सुमलेक-- हविद्योध, ३ गह देखते देखते आंखें पक जाना रे॰ गट नाक-नाक कर धक जाना गह देखते-देखते जांचे पधरा जाना रे॰ गह शक-नाक कर थक जाना

राह पर बलता

- (१) धनुषाया करना । घर्षाम—मृतिस्त वधम क्षा की ति वार्ड । तर्ड यम जनन समय वादि माई (१)मध वास)— मुक्ती, ३१
- (१) ठीन वार्व वाना ।

गह पर त्याका । क्षाता

ान व म नरन को प्रतिष्ठ करना । प्रकाश—हव म अ वे नहीं की मह जमाने के और भूनी को श्रष्ट पर अपाने के (कुमरीं) (भू —हिंक्सींग, ने); कुम नामवाद को नवभा कर गह पर माने को हवार हवार पाया परको कुछ नहीं होता साठ पूठ—बाठ बट्ट, पर , के हि माई साहब की समभा कर दीक काम पर के बावे (मारतीं) क्लांग की समभा कर दीक काम पर के बावे (मारतीं) क्लांग के प्रमुख पट्मा भागी को भी काम पर माना होता (प्रदूष्ण के प्रमुख पट्मा भागी, १५०): विकासों को साम पर माने का इससे बदकर बीट कोई स्थान की नहीं (मान्य—मेमबट, इ.

राह पर छात्रा रे॰ शह पर छशाना

राष्ट्र वयामा

मायका करते हैं। बचना । अयोग—इस किसी है। यूना करवे मी बहुत करनी जनकी एउड़ क्यादन, उसने बोसीत नहीं विसाठ र —कुक्स, ६५

राष्ट्र भागी होना

रास्ता किसी अकार कर न दोना । अवीग-स्टाह आही हुए कर आमा जी नर नवे पाद, साल अर आई जुमते० -हां और ११३

राह सगजा

(१ दर्श काम करना जो और कोई करना हो। प्रवास --में भी करी दिनसन अपना की भार न जरा अस नय पर राज्य के नदले तो जरी अन्सकुदना न कम नदि आस सरम कि क्लान हो सुन्ने जन दिया जात उद्युक्ती संदर एक दि-



- (२) अनुसरण करना ।
- (३) गारता पकदना ।
- (र) ठोक काम करना।

बीह्रं संस्थाना

ठीक काम करने की बोर प्रवृक्त कशना । वर्षाय—पर मृह्हें विना राह भगाए न हटेंसे मटड निo—बाo मट्ट पर

गाइ लेना

मलं जाना । प्रयोग — स्वक्तं बरावर यह बादका नया पहला है कि वह देश-विदेश की शह न सा (कर्मं) — प्रेमबंद, २०% एक पाह बलते आदमी ते दूशदशां — दक्का बयबा कर स्टेशन पहुंचे और टिनंट करा कर दिल्ली की बाह भी (प्रदूष प्रशा—प्रदूष० शर्मा, प्रश्)

शाक्ष यस्य कारता

स मान्याना, परस्पर व्यवसार ग्रंथ करना । स्योग—कीत माने प्रतमे पानुन्तस्य पैटा करना स्था क्या प्रमाण— येनवद, १९२

विमिन्सिम पानी बरलवा

हरकी बूबा-बांधी होती । प्रयोत—बरकान के दिन है, साबन का नहीता अ अ रह-रह कर निर्माधन वर्षा हो। साजी है (तकन-प्रेमचंट, ?)

रिज्यात कर बाजान गर्म तीना

भूव रिवयत दी और भी बानी । प्रयोग--- दफतारी में रिय-बश का बाजार धर्म है 'कुटाठ (२)--- दशपका, ४२०

रीह दुटना,—तोडना

अस्पत् और बेकाम कर देना या हो जाना। प्रशेष—— आन्तर्दिया स्वत उन्हें दिन है बनर्यक वह राष्ट्रीय असि मान को राष्ट्र को यह नाइ इन्हों है जैस्स ३ क्या ये भूतो, तेरे मान्या क्या गरे बावा की रीड ट्टेन्ड (निक्टिंग —विक प्रक. 86)

रीढ़ तोएमा देव रीड़ दुदना

कुछ देखना

सामन बाले की मनोबुन्ति या इच्छा देखनी । प्रयोग । सर्गाति सबान पहर्दि हम नाह राज्य **या नु**स्तरी ३९८), 'हरियाद मी दास छटा बिन कोल की बीडी सदा कम नेनी किए (माठ प्रकार (३)—मारतेन्द्र, १५६)

क्षा पंजा

प्रतृष्ट्रम राम्याः । प्रयोग—न्त्रमी शांति राम सम पार्ट । कोशी रुपट पर्यष्ट्र समाई १९१४० (फा)—नृत्रसी, ४१२

रुष सोदना

- (१) किनी कार्य को दूस से और उपमुख करनार । प्रयोग अब कुथल कहा इस है नहीं गई विद्या हुई के दर्ज । जन रही ककुथ आयह बाक क्या प्रसाद मोद्यों नहीं (शंधां) प्रयोक राधां दास, १९००
- (२) वानवान का विवय क्टमना ।

र्दाच सरवगा

अच्छा काशा । प्रशास-विशे विकास बहुत यथि यानी, भाषा बोह विका औरहा (कडीर इंबर०--क्योर, १७१), विस्तान क्षत-व्यव की सीभा, नाही यह कींब भावन ही (मुठ बाठ -- सुर, ३८५४

रवया उद्याना

(१) व ज्यान नापरवाहों से सर्व संस्था । अयोग-दुसान में रूप्य न्या-मुख्य कर बानारामार्थी में उसका सरमा सा जार अठ दर जोशों १३४ इसम नई निहासों को सून सरमा प्रशास की है (परशा--जोनेन्द्र, ३३), ओश्ररकार की रूपा अस्तरत है है ज्या रस-वांच कार कार रहे हैं है में रहाने से हो साम का अवाचा भी कारों में होगा (गंगठ १)--पेमक्ट.60

(२) कुछ नेता । धरोम—सन्द नुभावी वर्षो अपने घर ने व्यक्त इस के नई है (रेसक (२)—सम्बद्ध, १०६)

रुपया चेंडता

वास्त-मही नरीको वे वर्ष्य अनुसन्त । अवीन-विश्वो व व्यव तरन व शिए अपन वर्षत्य दिन्यमी वडी है यहन-इंग्लंड १३), यहरास के किसी आस्त्री से वपहनी शताब्दी व तर कृष्यि वज्रुवद की प्रश्च काटर राज्य की वीर्त्यमी मानक वादमी की देकर वससे बहुत वा क्यमा ऐंड निया साठ की--महाठ दिनेदी, छ)



ब्यवा बग होना

रायवा बरा होता

सन्दर्भ मियना के निवने का निरुपय होना । यथीन क्यारा बाहुँ सी काम में केंच सकता हु, मेरे बस्को क्यार नार ही सामने मोदान प्रेमचढ १५%

क्षयमा अंग्रहना

प्रथम क्या करता । प्रयोग-सामास्य लेखर दी करवी प्रोडम क्रीप्त क्रम (मृत साथ सूर ५७

हरका दुटना

धारा होता। वयाय---वरम्न दूसरे माण कई वो अस्ती की जिल्हों साल-बाड हवार की दूसरे वहें अवस्थात--वारेज् दोस १०

ध्यया द्वना

- (१) फिली को ही हुई एकप न मनुष होती । क्योप-भेवा कल लाहा हुक म जाए वीनेध—रोग शुरु ।
- (३) दो तनाष्ट्र स पादा होत्य के प्रथम का मुख्यान शता ।

रुपया प्रदाना

क्यमा बगुलमा, मेन-देश क्यावर काचा । प्रयोग जेन भी कामकानी के माने प्रयास की तुष्ट कर कपड़ा है दिवर का इसकिए में भी अपने को पटाने की यह वाल स्मान परिवाद- ग्रीट हास, क्याट.

प्रयक्षा करती की तरह बहरता

एक्षा अप जेना

क्तिम देश केदर - इद्धार - लोग तर उह - कम करते व दि इत्हान ही देश गाया कार निया दा - देतली - गार १० विका

क्यवा मारा पहला

किमी का काया दव प्रातः त विभन्तः। प्रयोग-विभन

ही समाधिको स कोही अवसूत्र होती थी | क्यम मार्गे पहले वं प्रेमाठ-प्रेमवट ४४७

(नवान वटान - हपया सागा अपनी)

रुपने इसलमा

नवर्षे देश । प्रयोग-कारकृत भी धार वहीं तो केले चुंगके के क्या पुरुष दिवें भीदान केमबंद, १५३

रुपये का अपया उगस्ता

पन में ही और बन आहा । यवश्य-भाग सपदा न्यापा उत्तरभा है ।बीनेक-पंत्रति हो

रुपये की गर्सी होगा

भग का नवं होना । प्रयोग करण की गयी है, तो बह विकास हो अस्त्रती (मोटॉन क्षेत्रबंट, 50

न्यूये के होस्त होगा

एक एडले के मनमाम के दोल्ली करती । प्रयोगान कोई बहुतर है के क्ये के दोल्ल हैं" (प्रशंकात नकीं) दास सह

रक्षे बनाना

430

नाम करना । प्रयोग-रन्तह बरहना हो हो सार भी प्रयास महो बासाबी से बना बेला अन्तर ३)--प्रैमण्डद, ६०

रमये बाध काता

परए बनुषता, बनाता । प्रधान-कर सब बाव बयो न हके योचं कर तक का न इस क्यर सीवी कोल्ड-हरिजीध,

हों के बादन का तरह ठड़ जाना

योध्य नष्ट हो काना । प्रयास—समकी रिमक म पर मृह-न्यो, गाव प्रवाहर तथ कृथ कर के आपनों की तरह तस अ.ग.र. वर्षा

कर से अपेटी जागा

त में नरत जिस्से रूपम से काल निश्चित है। प्रदेशता भी म करी क्षणाह है, नकी ती निकासी पार्थिक क्षण सम ताली है क्षणी, कहीं पोस्टों अर्थित किन्दीर प्रदेशक क्षणोंत अल विहे क्षण कार्य क्षण है। हो तक ए कार्यि नदी प्रदेशक नदी हर क

रुका प्रशास

दिना विका मार्गेष्यण के प्रिया ग्रहा उत्तर । द्रवाग -- हुमत ना ताब एका ग्रमा बकाव दिया कि से ना प्रशी कारीय इनस्ट १००



स्था पहना या होता

व मुरीवती करता; कुढ होता, । सवाय करता म देह दूसह रिम कभी । वृत्तिक वित्तव तत् कार्यात भूकी वालक (ठाव) ---दुलमी, हुन्छ), और्यात क्ष्मी वाल वृत्ती वाल को निय देखरो प्लार न पासती १८ ४ तो इस्त्योहक पासित गामक कमे भूग की प्रतिभी म बावती । हन्छ कविय --हमाठ दूसरे

क्षणा-मुखा

वहत माधारता मोजन । प्रयस्थ—और क्यो नृत्री संदर्भ भारतप वित्र रात सायक परिचास में रक उपनी की चेतरे -भारत २५

बर्जी बाग

भीरम वा अधिय बाल । वर्धात —केने एहति वय रव राजी य बतिया कृति कर्मा (सुरु स्टार)—सूर, अरहात कर्मा कृती वृत्ती बातिय है सरसे मनेह कृति, हिया से दर्द म वे सर्वाच कर है। रिमो (द्यान) कहिला—स्टान्ट, १५४५, तृम इनदार कर्मा क्या ही बोलाने ही (मुगठ—मूठ कर्मा, २००)

रूका गर्मा

पेसी हमी को दिल के मा निकाली हो । अयोग-स्वारण विह एक कभी हमी हम वह (मुल्ला-स्वार कमी, प्रथ । दशरीम में कभी हमी हम कर कहर-साम-वर्ण मो कम भगवान के पर नमें (प्रकर-प्रेम्पेट, १३६)

क्ष्य की दोपहरा किलना,—बद्रमा

स्ति पर भवाज पर हाना । १४०० - उसके का र टाप्टरी शिक्षी भी (तेश सीठ (१, —कतुरतः १०६), यह यहै का भी दो दुवटरी पदी भी उसन हतारी की सरस्र हो उन की भीवा का दिया था (गोली स्वदुन्तः स्व

क्रम की दोपडरी बदना १० क्रम की दोपडरी जिल्हा

द्या भारतर

कर इवामा - प्रकार-मोर्चाह पाम तिस वर्षेट पार्ग सह इह संद (राम० (सृष्)—शुक्तस्थे, पत्था,

क्यकंत

क्ष्या पन क्षेत्रत । प्रयोग है न अन्यासार किह कारी है जिन्ह बार्चट से जाता स्थानिक हों। ग्रीध १६४०

क्य-माधुरा में सने बीना

रूपत प्रवस्त संया । प्रयोद—श्वर क्षत्रीयन साहि मु तक यय, कर प्राथमी साथ "मूठ साठ- सूर ४३९३

इय-राजि होता

वरवन क्यमान होना । प्रथम - वर्शन दीवि बरानिन्स बीना । क्य राधि वस प्राप्ति पुनीना देखत (बास) -मुतनी ३२६

बर कला होता

 म द्वामा । क्योन --- आसी के क्याप है करी कर कता हर कारों है करीं। चेनकद १०११ वहन तो सहस ही कम में करने कर्त को रखते ही केरी वह करा होती वी निम पर परमृत्यक का केंद्र-वन (आपनी समर---- एस प्रदे

रेकार्च इटना,—तोहना

पूर्व स्थापित संप्यत्य काम में स्थापत होता। प्रयोग— इतकी सावदाय धायन हुई कि पिश्वस साथ देशाई दूट यह गोदान—सम्बद्ध ३१% वास से दी साथ गाले सिम सीनत बीच एक को दरीका में बुलियगिटी का विवाद तीह सूको है कराठ-न्द्रिंग सठ, १ ३

रेकार्व जोचना देव देखार्व द्याग

रेक क्रमाना

बार देवा; प्रतिक्रण करवी । अवान--नृत्वादी करो है वाची एक आप बार करवी, दील विश्व नाम प्रतिक्रा ही आए थी-रिही दिन्दर--नृत्वती २५८

रेक फुरमा

म् स निक्रमण प्रक होता । प्रयोग—भागनाम की वस्तियां के सहके, जिन्दा क्रमी ग्रेम नव नहीं क्री प्रश्निक्त का पर-रहता वार्च क्रिक क्रमा क्रिक क्रिक्त हैं 'झांग्य—शक्तपाल, ५०' (स्वयः बडोश—रेक्स झांग्यः — निकर्णमा)

रंक में सेक मारका

करित का संबंधन काथ करना । प्रयोग-नारामाधी पहिता रक्ष में नेक बाद महत्रा है। सुंध सुंध-सुंदर्शन, दश्वर

1 187

ब्राधाय, विक् । प्रयोग---ही तो शृकान नार करवानद पे पहुंचानि की गावी व केवी (धनक करिया -धनाव, इस



rie.

रेशा सीच कर

हुनुसापुर्वेद, विज्ञवासपुर्वेद । प्रयोग - रेज स्वयार कहें। ब्रम् भाषी शासक (अहन सुरामी, ३६०६

रेक्षा संचिता

(२) गराना करनी । प्रयोग--वृत्रीत पृतिन्त् केन निन्त्र ना वी मरत भूगान होति वह नावी रामक ,अ)-कुलती, ३९१

(२) सीवर निकॉसित करनी ।

बस्तर व दोना

काम न होता । हमोन--कामू नमाम न मामन नेमा राज भगम यह बाबु म रेका (रामंध (मा) - मुसारी, प्रभा

रेड सारमा

किशी काम या बस्द का जब विवाहना, उसे कुरी नरह से सप्ता । प्रयोग-इमर्च बहुँ इसको ऐसी रेड मार हुए है शुद्ध क्षित्री तुल्लाने, सूर इस्लाहि कवियों को पण देवता. के बांगरियत और वही विसरों ही गई। सीठ पूर्व --बीठ HEE, 117

रेत पर नाथ बारमा

बराज्य साम होता । प्रयोग-जनगरन की तर रेड वर मी चन नानी है पर नियंत यी तरव बत्यपुत्र में और नहीं पमती (महा०—देव सव. २६

रफ म भागा

(१) निमक्त भी पाच व नवना । प्रवास-कार्य रस विनद मकतीन । सन् जनसम्बद्धानीहर दिव्यव्य ३ साह ३० रेफ व अ वी । नहीं लग् प्रमान्द 🚁

🕡 सनिष भी सहित न होता ,

रेल-पेल होता

(१) बहुकार्यत होती । प्रधान (प्रश्न पर हुए ग्रांच मध्य) माग बहुनी अर्थेड ६ मिन दहर व नामन व 🛪 🛪 🕶 पदार्थों की वहा जिल्ला और बंदू वे जल में ऐस-पल हो बाती 🏌 पंपार-पदाबद, ५४

< र, श्रीकताको

भौगरे बहे होता रोशां बहा होता -फूटना बहुत का जरता । यसागः ताह महत्त्व के राजस्थान कर वहां को त्रमात सन्दिक्ष की ज्ञान का क्षाम समझ भी पर नहीं

हो जहाँ हैं (संस्ट्र निक-संत भट्टे ३७), बड़ी कुंचराविनी सर्व-देशो अन्त हैं जिनको कहते नह शैंतर्थ हो अन्त है र्वदेशीय-वृद्धिक मी, उस मरीर, शही भीर यु म की रमकर उसके शाँउट बारे ही गर्व (मृगक-द्वांत कर्मा, १४ . उनकी काला में केरे रोजट नाई हो रहे में (सहासाठ--ao द्रोमी. शहर क्यायक उस पाताल मृति देवी के सब सं स्कृति प्रकट हुई। लाश के शोवट करें हो वये स्मान० दः-- प्रेंगबट, ¥द . इस मजब के करही की पाद करन में कार्व आई हो जाते हैं ,भिलाठ-कोजिक, इतक), इधर देखी, वर्षे गोव कुट बन 🧗 शिद्धरः –स० भिन्न, ३५०

टो-नोक्सर

वरो कडिनना सं: बहुन धीरे बीरे, बढ़े बु:भ न । प्रक्षेण---हमा जून चनतो की इससे चनवरी भी नहीं नजर पहली, वड़ी मुख्यिक से बाहे हाथ और बागबा तक रोनों कर नपुर्वे अक्ष प्रकार क्षा-मारहिन्दू, १५३

श-रोकर आष देनर

रहर ही दुओं हरेगा । प्रयोग---परी हुनुम चारत सपन पति के लिटेंग व्यवहार के कारणा गो-रो बार प्राप्त हे रही है Filherto)-- Britis, E.

रोओं कहा होता रंग शोगडे कड़े हरना

रोजां व उ: पावर

ह अध्यक्त करने गढ़ भीजा भी महो व् सकता (850-हरिक्षोध, अभ

गोर्भा फुटना रें। रोस्ट बढ़े होना

रोजा राभां कान हाना

कार कात सुनव को नांच उत्तरहा होती। एसीहा कतन का शेक्षा । अर्थ काल जन्मे अच्छा या घल कई वेंटी सपनी कि स्मन, को कमला गुनन को गया हो। गरेन — प्रमाहर, १२५

गंभ कुआ कादना गंज पानी पीता

राज क्याना राज नाता । प्रयोगः राज कृषा माद कर पानी भीन कान कराय व रिमा एक दिन भी हाला बैठना मान राजा है हुँदैव अवलाव रूप्य और हम दहरे अनुता है माटककार 🗶 💥 रोज कुलो जोदने शीर रोज वार्गी पीत बाले लोगों दे सारककार (कंट्र०—दे० सक, भूरक)

रोजर कोलवा

प्रत समस्य करना । प्रयोग—नो चिड्नियो मं में इन अक में नीन तो होती, बाद ने पोने दी पर ही पीया बॉस्ट रिक्षा (पदमत के पन्न -पदमक समो, दशः

(नमाव मुक्तक—योज्ञा द्व**टका.**—सोडका)

रोज़ा बन्दानि नमाज गरी पहला

मास का करन करने करने नुकरान होना । प्रयोग----रसर्घर रोता हुत्ता करा गया । गोडा करपान वायो का, नवरक गोर पर गरी मान० (४ --वेशक्द, १९८),

रोजी हेना

येद भ्रष्टते के प्रमध्य का सिन जाना या सोनवा । वयोव---सेरी दोजी को के रहे हे हुजूर हैं (स्वन-प्रमण्ड, ३०५)

(समरक मृहाक—गोर्जा खुरासर)

शोजे से रहना

इप्रकार करना । प्रयोग — ग्रंथर महो हैंव हम नाम भाषण नीए भीर यह समार) । जाना रह ताथे १९० २ - प्रेमनद ४३४

रोटियाँ बलना — मिलना

भाशान्त्रको समान । प्रयोग-प्रशासी गोरियो समनी प्रदेशको प्रत्न रत्य की बीन राग मान्य छ। प्रवर्ध दो किर प्रदेश राज का दिया होता देश हो दनन। है कि उनकी बीन साम की राश्यों की माग मा पन सकती है कहार देश सम देश है है है स्थित साम स मिलको है कुछि । स्थिता है जि. मेरी नो नगम के घर में गोरियों स्थानी ही (मा-कीशिक 350

रोटियां नोहना

- (१) किसी के पर पढ़े पह कर पेट पासना । जानेय---मुक्त निर्पर इतनी पाना नहीं है कि इसके लिए प्रमुख्य ही रोटियां नीड़ें (कांक--वेंगक्ट, १४)
- (1) भागन करना प्रथात -नत्य करो प्रयोग नहीं है होनल की संस्थित कोट तोड़ एक बनात क्या है यह संस्थे इस है रहते का प्रीतर २ -च्छा स १३५ स्टाइट हाक करो कि बैठ-बंद सरिया का लाइन कर बिन्न असी है (प्रेमाठ-क्रेसक्ट, २०६

धारियां काश्रम

कारर कारा; ट्रकडे जोड़का । प्रयोग—क्रिकारिश बुद्ध दिन अपन को कोड़का करकती भड़ी, किर काम करते क्यी पुरु सुरु-सुरुपति, २४९,

गोर्ग्टयां विस्का रे॰ गोटियां करता

रोटियों के मुतनाज क्षीना

गटियों के लाले पहना

नान की की नर्राया होती, घरमत रिवासा होती । घरोगा --समग्री कारी सामदाद की इन्हीं ओवी में कुदा कर विद्या । अब उसे मेरियों के भी भागे हैं (सानक (१)--धमचंद, १३%)

रोटी कमाना

वीरिका स्थित करती । प्रयाय—स्थानी दोटी तो हर विभी को भूद कवानी चाहिए (करंक—दैंठ सक, १३४), बेस कारकाना एसे बेकरने को अपनी सेटो समाने का बाह्य देवा (१४० (१)—समाद, १७०)

रोटी का बोर

जिलाके विकास से जान समाने काला । अयोग—किंग साहित जानी भोटी के चौर न से, दोस्तों के अपविषय स इन्हें जानर साना जा (राठ (२) देमचट, २१५

रार्ट्ड का अस्त

देह काने की नवस्था । अधीय-अपने मृदमसानों की रोटियों का नवास इस होता है (बोटोठ--विश्वात), २८)

शोर्टर बादरका

भारत प्रयोग । प्रयोग—बहु, तुम से कुम काय या : वया कोडी वकाने आ गृहि हो ? (सा-कोडिस), प्रय

शेरी अपदा

भोधन-सम्बद्ध जीवन निर्वाह की शाववी । ज्ञांगा----स्वसका बार एक बहुत ही प्रशासन दण्डिंग है पर पत्य है देशकर की कि जोगी करते में सुर्वी है पाठ प्रशास एं सारहे रहे पूछन रोर्डी-इस्स बलगा

पीक्प-निर्मात होचा। क्योम—क्ष्म भी उनके वास दत पाच कीमा केत है, रोटी दाव कमी जाती है (ठेंठे□— हर्षकीय, १०)

रोडा-दास से खुश होता

माधान्य क्या हे जुदाहाल होना । प्रक्षेण दीनद्वात्त की अभ बाजील में कुछ कविक की अभ पद रोटी-दाल के जुदा के (शानक (१)--वीमक्य, ७४)

शेटी-दाह से सहना

गीविका के निम् अथर्थ करता। त्रयोग-अपूर्वन कर कृत्वी नहीं अथ तकता चायतत ! अय को जपनी चोटी-कृत्वी महता है (तितको--वसाद, १४२

रोदी पानी के बका में होता

सीविश्वा की विश्वत में होता। यद्योग-विश्व करेशों की रोटी-वाली के व्यवस्थ में समझाण नहीं है के मानदिक कर के एक होत्तर करें ही करोंने यह मननव बात है (बिक्ट--पेसी, 84

(बसर म्हार-स्टेटा-दानी की चिंता होगा)

रोडी-बाजी में लगना

कोटी जेटी करना या होता. त्या स्ववता काना या होता

मान-वान व विभान का बराबर नंबच होना । प्रयोग— गंबई बीट रामणारी रहने परत्यर गोटी-वेदी कही करते वे 'मैं कोटेक—काठ बाठ, २०१३; मुनली ने पांचवनो के केम विमा, गोटी-वेटी का व्यवसार विका गोटी-व्यवस्था, एव (प्रशाद प्रशाद—कोटी-बेटी कर संबंध होना;

मोटी बेटी का स्वब्हार करना या होता. के नोर्टर बेटी करना या होता.

शोहर अदकारर

विकास का बाजा कामली। घषात -प्रतिय के बाद से मोदा कटकाने का की प्रति ही पटी उटका का काम०---टेक सक. २१

(ममाव पृहाव--नोहा ज्ञान्त्रमा)

रोता हुआ होता.

उजार है। पंतरूत होनाः बेन्दिनक होताः । प्रयोग—समीव गोता हुन्य बहर बन बना है वह भूले० नम्पर धर्मा, २५२) भौता

बहुत कुषी होना । अयोध--नुष एक देट की दोने हो, इस बाना नकडे जाने तो पान्तर हो जाने (पैती--सदक १२९

(नवार वृहार-चीमा कानपता)

रोना रोना,—से बेटना

- (१) विकास कानी। वर्गन-को हरा कृत कार्य मण्ड है, इसक भी इसका दोना गेवा ग्रंथ है कि कलकने में जुड कुटनक नहीं क्ष्मी (पद्मक के एह-पद्मक हमाँ, ११०)
- (२) कप्ट नुवाना । प्रयोग—सापने तो मुख से जिनते काने को रथा को बीग में हूं कि अहत्वर का अवता रोता कापके नामने के तेही (मुलिक—सगत सर्मा, 300); चलेवात काम नाहित्य के बीतों में सभी क्षपना ही रोगा रोते हैं (प्राति—रेम् अवस् पहले तुरही ने सपती सहसी का दौना रोका का किमा—सेमकट, 102)

रोमा है बैठना वेश बोना बोना

गेना-नामा

(१) विकास करता निर्दागरामा । प्रयोग — सेनामानि हास-केन मारव अपरेश के किसे की रक्षा के उपाप करने जाने पर कोई उपाध पनता न देशकर जंग में किए संगरित्रों के बाह समय के भीत अमोगंद के अनुसा में गए, बहुत कुछ सेन नाम् (शिक्षाठ Sulo—साम्राठ देश, १०६,

(२) बहुत द की हीता ।

गोगा होता

- (१) कियावत होनी । स्थोप—वध्दे तो युद्ध वे यही भेगा दे कि य किया सत य समया हो नहीं (१० (२)—प्रेंपसद, १६६)
- (श) कमी होगी।

रोनेकामा न रह जाना

निवस घरना । प्रयोग नानी यत्र कॉर्टर स्थाप्तहा । रोजनकार न एकी रहा घटन आसामी २४ १०



रोब नगाना । प्रयोग---बडनर रोक शास्त्रे ही ये सब नदर भीत को महत्रा वर्ष (प्रोसे०--हर्म्-ग्रीध, ५०

रोस करे होता —रोमावली करी होता

भागांतरेक के कारण क्षतीय का रोगांतिय होता। इयोग स्थापन नाम रोग अब ठावें (गमें) (६)—कुतल). १९२३); यह मानमा कवा पर वाबी नवनम्ब नोय रोगावित ठावी (समें) (बाल)—कुलसों ११७

गंध पुरुषित होता

प्रम के कारण समस्य गारीय का कार्नान्तत होता। यहाव —पुनक रोग गवरद नेही क्य मोधन अन अधिमात्र सुरु सार---सुर, १८८५.

बोब-रोप्त बीका हरेगा

महेन करवाई होता । स्थान-- तर बीमा बहाकर तीला मंगोला नवेर चौर भाभा मोबा कुरुश वहने स्वत्रात्ते हे रामान मेरे मामने शा कहा हुछ।, तब भाग ही नहीं बेरा रोम-रोध बीमा ही नवा (सलीतक--महादेश), ७॥

रोम-रोम जलता

बहुत कोम मा कुछत हाली । प्रमोग-- उत्तत ही वरिक्रात न

वडी सभी का धोन-कोन सा**दक नदा (मृग⊙—सु⊘ दस्तै,** अर⊏

गोध-रोक में

हरीय कर में; कृषी तरह ने (प्रयोग—या सीतकता से कारके, बाव किएके बाद (रोज-नोच किय करि रहा), असूत कहा समाह कियोग प्रशास—संबोग, प्रशा

रोय-रोम में रम रहता

पूर्ण कर के व्याप्त होना । अधीरक-पाही करवाही बान प्यार में अनद कर चीरान-मोनि किसम कुरास-साम गर्म है चन्छ स्थित-सामाण, १९)

शंकांच होशा

विहान हानो । प्रधान - वित्रा गुन श्रीमाण हो उत्ता वित्रा वाके क्य क्यम केता है ,कक्षाठ-व्यत, १०३)

गोमानमी खडी होना २० रोम कहे होना

रोशर्मा कामगा



लेवर करना

- (१) बारायन करती ! प्रयोग-सिंग से नीय दश्यों है कोसी सब क्यारी रोग्डिंग वर्ड करकारि कें, इटि करत मू जनसी सुरु साल-सुर, २०३५
- (२) मध्यर ।

सर्वा ठातमा

वास मझना, बांध-रॉय सरायर । दशीय-सूत्री ने राजने विक्र सती नगायी है ,पालीक-रेगु, १४९

जेगांड कमना

- (१) वर्षी से सारोपिक नायाच न करता । क्लॉक--क्लारी क्या में क्लॉ एक त्यान पूज अ होय इसके जिए कनार क्रमे स्थान (मृ.ट. -संच्यां), सात
- (२) कुरती के लिए पश्तृत होगा ।

स गोट के कच्चे

क्षतंत्रिक नहत्त्वल में शतान व्यक्ति । प्रयोग--- केविय नगोर के बहु करने ने---अहं हंग के जिपनी सकर---क्रर, ६२,

मेगोर के सम्बं लगारा वद

बद्धान से ब्रामा या धर्मनिक मान्यस्य में मार्थनात घरोतः— ब्रामा भागवत् शास मिन्नात धर्मर संस्तेत के द्वानों के (अपनी सन्ते दुर्ग भी नगात से सम्बंधान कहा दी के 50 का का नाव २०५ हमार समान्यद्व का का सन्त्य के काम हो। उस्ती काम सैन्या मान्यद्व का का सन्त्य के काम हो। उस्ती काम सैन्या नहीं नगाई नो दान प्रमा की है। जनात के के सम्बंधी उपय-अमिन्नी, उस्ति।

संगोदा-बन्द रे॰ संगोट के सच्य

संगोरिया यार होता

स्थान का विश्व तिनः । इतीय—ध्यते समीरिये निश्व सञ्चान असन कर अवंत्र कसने में अन्ते आनंद आता है अञ्चल—देव सब, १९ वह कर्नार विष्ठ पः धार्योगाम के संगीरिया जानों से के से (क्तन—अक्ष्य, १६६)। यह मेरे समीरिया जानों है कुआंव—निरंत्री १६

नंतीटी समापे पुप्रका

निर्मक हो आना, पास में कुछ व होना । प्रयोग --प्रथम कुमारे वर्ष-मार्ग पर प्रथम नो भाग में भी मनीटी प्रथम भूमतर होता (कर्मo--चैनक्ट श्रा

लंघन करना

गरंगा

रीर्थकाशीन । प्रयोग—मा ने शानी कानी में सत्तापा था कि नेशम का काम करने बामों को अपने प्राप्ते शत्राम से यह जान को नाना है कि वे ठीक अवशर पर प्रोप्त की गरम पानी में साम है (सहाठ--देठ घठ, १५%)

लंबा काना का होना

यम देश । प्रयोग--तंत्र दो-एक हाय सभा के वहां में अपने हो जाना वीट में यस देश मुंगा ।प्रेमाठ--प्रेमचंद, २१६

नंबी हाल माध्या

তিবস্থান থাৰ ফাছৰাবাৰ খালে যাব খালে রানা এখান কৰিব ময়োৰ বৰা চেবাৰাম নীতীও নিগলা १০০

संबंध-बीहा

करा कपित किरता देवांग महाराज ! तुम्मापूर का बनाइन करत अवा बोदा है आंध्युव है साहिन्दू,



१६३)। भूने दा जिल क्या शाला कीता लागा (वेरे० -गुरुवक, २२

के की तनम्बाह परमा

तनसमाह में बाकी माग पाना । सारत —दरकारी ती हारे य भीत करते हैं, बाबी अन्तरकार पान हैं भूतिक सगत यभी, सहस

खंबी हात का याना

निवित्तन पर्ने रहता । धर्मात--मुध्यना है न क्या है हो पहा सोध सम्बद्धितन क्षत्र है यो रहे कुमते०- हरिक्रोध, २५

संबी तक्षता

लटकर भी अपना निविचन हो पाना। प्रयोग-अन शास पार महाराश भी में आहिया पर नानी हानी एक निव— बीध मुंच पुण, २५३), पामको कामों से मुद्रो परवार कामको और प्रशंस पर नानी सानी भरत माठ (१)—किंच गोठ दन पान कि चोट हों करम पर चन गड़ी को बमाबद ने उसे हो एक निवार नाम की नान नापने अपनी वावर को निवाद साना सामका कमा किया पुनरीत—हरियोग १२०), कमी में कुछ पहते, कभी मावस सुनने के बाद किए आब-पीन परें के किए नापनी ताम नेते का मैं कोईंच अग्रंक माठ, हमें)

स्टब्बी बाह

सम्बद्ध प्रकार करने की प्रस्तृत । प्रयोग-न्यायम् नक्षा करने वाते की बोद वरी सकी है विश्वात एवंकि ग्राधान दास, क्षेत्रको, यापकी बांत है बहुत करेते. याप दी बार बांद काने है वोसन-हरिक्कीय, १४८)

लक्ष्मी रम्मी देगा

बहुत बील देना । प्रधाय-च्या प्रकार कृत्यत्व करता, प्रयमे सिद्धरामी को बाबी के अपेनी दानो देता पर मुख्या प्रमे शुर्शको दुर्बन्तता सम्बद्ध तर प्रकार देनो ,कर्मक-प्रैमच्या १४

लक्यां सांस भरता

(मधार १७१० अस्या साम्य कीखना जोडना, -क्षेत्रा)

संबंधियोदी कहा.—संबंधियान करता

का उन्त पर प्रभिक्ष विश्वार वायी शत । प्रयोग — कहो उनके भाने या क्या किया, जब्दी मोदी जात ही अन्तनी पाती है कि कुछ बरना भी जाता है है (माठ पंक (१) — भारतेन्द्र, नेद्र), जाने जनमन के लिए क्या नाजी नानी जाता है जोई किया नहीं ही मकता 'परीवाठ—कीठ वाम उठी, ऐसे ही है जन्म क्या के पूजा प्राचा नाजी मन्त्री नास नहीं है जान बनानी किया की क्या के है जान बनानी किया की क्या की क्या की प्रभा की प्रभाव की की प्रभा की प्रभाव की की प्रभा की प्रभा

लक्षी सभी सारीके प्रका

ज को क का काम कामा देन जम्मा मीडी काम

ल वे बद्धा रकता, असवे प्रारं धरता

प्रकारिकारी कामना । प्रयोग—स्थान के सार्वन के दश बारे को का रह के, उभी नमय प्रमानी दिख्य एक स्थानन का वहीं । तो न्योजिक, प्रमा, काम कदम रकते हुए के एक कीर का को कामक—स्थानना, १३३

व वे इस मध्ना

- (1) वर्षी प्रयम्भिकारण । प्रयाप—श्रम्भ वस्ती-लागी सान सूत्र की साथी क्षेत्रे वस्ते की कतानियां कहत्वा की, अस्ति काबी शाम कर मीला ही तर्वे वनगर है , मृगतिक भूक—इनिक्षीय, प्र
- (२) प्रसी दस्ती वक्ता ।

लॉब वेर कमार कर मोनर

सर आता । अक्षेत्र--अयोग सुरा वया करे, जारित सर्व सम्पत्ति । एक दिनां भी शीवणां, वर्षे पाय भगारि ,कवीर सम्बद्धः करोर प्र



140

हरवे बालंबाली

बर्दकलन, पाप । प्रयोग---ये भीरत नी सम्बे चानोताली है। प्रशानी देश में दुष्यत साम में निना है हैं ,निक्षिण--तिक प्रयु, 250

स्य के स्था देश प्रका इ.स.च क्यम स्वना

स्र'वे हाता

क्स देशा अयोगा--- सगर तृषते इन इनना सिर स पदायां होतर तो सब तक स्वदा हुआ होता (संस्त्र) १)--- अवस्ट, १८५१

अकड़-लोड़ होता

मीरम (तिर) प्रयोग---मृत्यारि-ननमई के पोट्ट वर्षे नवत-सोद है (गुरु मिरु--कांट सुरु गुरु, १४४

लक्ष्मी होना

- [१] महारा होता । स्पोय-स्थाप की अवहो की काह ही बा (सम्बद-देव संब, २५६,
- (२) बहुत १४० न्यतमा होता ।
- (३) गुन कर पना होता ।

लक्षीर के कार्याट

पूर्ण क्षेत्र पर मानने माने । प्रयोग-न्याको हिन्दु की कीव सन्त्रत 'सन्तरमंग्रिक', सनोट पर फनीद (मह निक-नाव सह, १३३) पर मुलो माना मही क्या है सन्त्र को वनाने हा सनीको का सन्द्रीर (बीवांक-इविजीध, २५); आक्रयनमा भी पूर्ण हो जानी है सोद सन्दर्भ की क्योदो का भी निर्मात हो भाग है (हैदैक-मुलाबंक, ३२॥)

सभीर पीडमा, जीक पंकर कर कारमा — क करता. —पंच्या

पूर रे प्रकार यह नरीक ये अनुभार के में नरनाः प्रयास -कोई प्रश्नी अग्रह पाने हैं काई प्रत्ना है जया आकार ग्रही रच भारती दे भूकर को का प्रज्ञा का प्रवास ग्रही हुई प्रभावनी तहा हैन से उनकी काव्य का प्रवास ग्रही महाई दिला रे पति जिलाव है ज्ञान क्षेत्र का प्रवास ग्रही है स्थान बनानी जमनो है इस दूसरा की बनाई हुई रोड़ फीरप है नदीक प्रकार देश रेका में दिश कहा। बहेक हैं तभी जीक प्रसंद कर जनत हैं (लटीत) अहीये. ३१ परने पूर्व एक स्वर्णन प्रश्नास्त्र अध्यक्ष की जीक पर ए प्रकार है विषठ—प्रेसी, ६७); बन् १६ १४-४७ वक जीकामाल जी जाने स्वर्णन कर की बीक पर ही जनतर रहा (केसात) — उने. ६४% वह बृद कुले बीर परानी कडीर पीटने बाले करें जाने हैं (कासना—प्रशाद, ८४), ३८ वर्ष के में रहनर में नकीर शेट रहा है (केशिक—सागठ साक्ष्म कर)

लक्ष्मी बाहर होता

(१) धनवान होता। प्रशंस किनी वाको हा बाना भारत ही निरामा है। बाहित्य-संस्कित की वह क्षेत्र हो। धनों तो सावनत्त्रम्, कोई बड़े भारी सीवन क्षेत्र स्थाने। बाहन बाहित्र पद्मान के यत्र—प्रद्वान क्षामें १७१

(२) यहाम्मा होता ।

देवे जाना या समना

नीकरी व बनना । प्रयोग-वहां बहोने में इस दिन भी जब बाते हैं भी बच्चे विकास सामा है । वैतरे-प्रश्नक, यद

लग स्टबर

निष्य होता, वेश होता । प्रयोग-वृत्या कोई का जिले. भागी रहिने क्षित्र (कटोर प्रशाय-कटीर, इ.स.

रुगर्ना बात बहुना

- (१) वर्ष जरी बरव बननी । वर्षण —में इस बाद-विवाद की वर्षा-वर्षी में सकार तेन ही जाता और बनने वाली बाद बन्ने वाला (बानक १)—कैसबंद, १०६०, सबली बाले बन करता है वह न किसी बन्नी में बोद (बन्नेठ- हरिजीध, १४
- (र) पृष्टकी केता ।

लगन सरामा का होना

- (१) कियों कार्य की कार्य की कृत वय जायी। प्रयोध— बाज प्रशासना के अब भी उस न नगर नहीं सर्वत होंग्यी जनत
- (२) प्रेम होगा। प्रथम जनमे त्रदम् ८ वी ताई स्टूबाल - मृत्याच्या नार विकास राज होत्रकी जानान अपने नार नगर समान—हथे प्रोफ्त १८८

त्रगना

(१) मनमाभा रोजा अन्या शेका (२०१४—१२ स्व २)

इसन गर-पुरत्रे निकासके श्रृष्ट विकेश की स्तारे से सकते नहीं चैतरे अक्षण, ५७)

- (२) अवर हीता । प्रयोग-कासी तृष्टारी जापत काहे मृत साठ-भूर ६२५०
- (३) तंग करता, सेत्रधात करती । प्रयोग धोर्गत की करि पहे प्रथमि, यो भी वयत काहाई सुरु सारु—कु।, २०२२), तुस्मी विश्लोक बहुमानी वानुवानी वहें कार-बार कहाँ, पिय | करि सो न मर्गत रे (कदिरु मुक्ती) हो।
- (र) मर्च होता।
- (५) बुरा बालम बहतर ।
- (६) रिस्ते में क्षेत्रा र

व्यवना

- (१) निमी के निषय नहता । प्रयोग—बीर उसे गानियों ही से सर्वाय न होता, उमों ही प्रेमी दुशन के जाता, गज-एक के भी-सी जगानी त्राय (१)-- प्रेमचंद, १५१।; ओ त्रमचं कहें जभी नियारी के कभी वन नके नहीं नन्त्र (मुम्सीय--हिंग्डीम), १६
- (२) हैय करना । प्रयोग—सदर्श का क्या है, क्यी ने संसाये रक्षमा कहते हैं (स्टा० १)—स्त्रपाट, ६३)
- (३) सम करना ।

लगाई बुक्तर्थ होना

कुषंत्राम् होती । प्रयोग--चे यह नदो योको वी वी वनाई-कुष्ताई है (बुद्द--अ० मा०, ३२१)

स्त्राप्त करना, −चंश्वना,−स्याना

तियवन इसता, शैकना । प्रयोग-सामय होना है सेमय साहिश्य समाम कम रही है (भूतेक-स्वत वर्ग अक्ष्य), यशोगां भी बढ़ते गुरने की समाम कीच सरवन की ओर वेक्सर मृत्युराते हुए और है बोमेन्स है देव-अठ नक, प्रभू प्राप्त को समित्र व कभी कथा में कान प्राप्त में बोनता था कि रिष्ठमेंस के समय क्ष्यों क्यर समाम समानी गढ़नी की (भोदक-क्षमठ मानुर, १६३)

(लशाव पृहाव-स्तराक वशाका:- देना)

समाप्त कीचना

🖥 क्रमाझ कसमा

देगांच दगाना

पे॰ सनाया **प**रमाना

लगांच होता

शम्बन्ध होना; बावबंध होना, प्रव होना । धरोत—सीती शादयों के स्वधाय सं क्यीन-बायमान का सन्तर का और दर्गामिए ज्ञान प्रकास की अपने पर वी कोई समाज न रह नमा वा (मृतिक—सम्बद्ध अर्थ)

लगी होता

यम दीना, ननगरम दोना । जनाय---आर्थ माती होई मू माने (मूठ साठ---जूर, १४६६); बरके भगी दिश आतन मादि को नाम पराये की भानत की है (११७०-वीधा, ५७)

द्धगो कियदी कहता

लगे बहुता

- (१) निभर करना । प्रयोग—मो बृद्ध प्राप्ती लागो, हसी न‡ फाऊ ! पु० मर० सुर ५८६।
- (+) कान्य ग्रामा ।

उत्ते हाच

रिश्नी प्राय है नाथ काथ कियी अग्ध कार्य हो भी कर प्रायमा । प्रभीय—साथ सबे हाथ और भी प्रश्नान है — ''भाषाकों के भी कीयह भी कीया होती है'—'' गुंदनिक-कार गुरु गुंद, प्रश्नात का भी की बहराया कि लग सब उस भी के भी थ × पर जामकारी इस पर भागी न हुई (स्वय-प्रेमकट, च), भागि हिस बदारियां करें हाजी बड़ी बड़ी बाल बीच केते हैं (कुमनैक—(प्रिक्रोध कर

सात धरता

स्वतार्थ के लिए मृहर्य विकासकार । अयोग-स्थान परी यो रचा विकाह (पद०-कार्यमी, ३६११), स्वत्र पदम् भूगीह स्थानको सम्बद्धित स्थान सर्व्य (११४० वा) स्थानी, १९६६

अपर्श्वतात सामे

पुना-विश्वता बनोपाक रंग वे की गई कार्त । प्रयोग---



लक्ष्मोत्तरम् सामा

अवस्ति। स्थित कोर क्योरजब अवस्ति । क्योम —वरत्यु सार्थः शहन सप्तवा की अवस्था परिको की केवी लब्बेशर नस्तुत्त सूत्री साथ मीठ सहार दिवत, ४९

सरका का अस्वश्रम करना,—का जनो सार कर निकास देनो, पोलका था ताला काल देनों भी कालना, -धन काला

(ममेर महार अहम्बद्धाः को साहर इतार केकना सहक्षा भूत चाना।

জেয়াৰ আৰু আৰু জেতিয়াৰ হাৰে। সংক্ৰণ শাস সকল নিগতি হ'ব। সমূল কাম নান্তাৰ কুলি কামী নাম কম সাহ নাম সাম্মী সকল ক বুলকী ২৬১

स्टब्स के सभी सर्वे जाना बहुत अधिका (त) र दर्गण विजयी ग्राप्ट स्टब्स की पांच स्ति साठ-स्ति यह तमने उन ही कार वह इस से देखें का, बदानी काम के मार नह नकी जी नवल -केनजद रङ

(वयात नारतः सरका के मध्ये गई जाना) सरका को जनो मान कर निकास देना देन सरका कर अभ्यास करना सरका कोट कर की जाना दन सरका का अभ्यास करना

स्तरज्ञा हुरमा सम्यान प्रत्नात प्रवास - श्वशा मह पॅक प्रतिहारी दृशी माणु वर्षे अविद्वारी क्योर प्रधान क्यीर २६६

महत्ता दक्त देनां रे॰ महत्ता कर भाजमत करमा महत्ता भी हामना रे॰ महता भी मन्त्रमम करमा महत्ता देन कामा

वरका सुरका नाव व रहती । प्रयोग - जैन मिलं इर के पुर पैठने मान न्धे व स्थे किन्छ। यो (पन०कवित-सन्।०, १२३)। ल स्ताओं शह जानां जन्नान में गड़ जाना, इस मरना दाहरा हाता, धाता पत्नी हो जाना पीला पटना,-- मर जाना --- मानी काना बहुन नरिवर होना । एवोन-नावस्त्र वृद्धि घरनि वर्षि क्रीय परमांगाचाच घटन अपानी तहात व्यवसार गा दर कार साम गर माजनाति प्रति सानोत पास्त मुं स न्या प्रकार प्रति रामध प्रकार भाग अपारि r air ei a afa at ar ; Carao e dista un veren er eine ate affrie, ale nie en यह की र्रोड बाद अग्रह प्रमुख्य 35 ही गरेश बाजन कार कहा परिवास क्षेत्र कार की राज भागक सके अधिकास होता जातत. अक्षणक की संस



धरती में गई अंक जात में पर कृत बोक नहीं करन ब (परोक्षाव जीव दास, प्रयः) गोवर करेवा के वह क्या शासिन (३) - पक्षांस, पर्न, यदि बहु मीच हंग में बेनी कान का उत्तर देवर हो में जिस्त्रम हो बन्धा है पानी-मानी हो हो गया होता (जहांज०--इ० जन्ही, १५६-११व., 🗝 वे मध्य हे धनप की नरह दोत्रभी हो आती हूं म्बलूक-भारती, २६), लोको गर्कोच और घटना के गरी। वानी जी रहेग्त (१) - प्रेमचंद १५६), परस्क मुझे स्वादको पूछ कारते. में मनोब होना है, संश्वा ने नहीं का गाहि (स्कदर--प्रसाद १५०), भारत हो कर यहां नवर शाम करण पर ही काश के के वृक्ष बरने सानेत-गुत्र ६०) (समाः दशः -- साइज्ञा से स्मितिर जाता) लक्ता भे जर्मन में गर जाना दे॰ लक्ष्मा से ग्रह जाना स्वक्षा से इब अरगा देव लाजा से गई जाना स्वका से बोहरा होगा के लड़्ज़ा से गइ जन्म लक्ता से क्ला-क्लो हो जाना है। लड़हा से गढ़ जाना महारा से पीली परना दे॰ लक्ष्मा से गर जाना संद्रजा से मा जाना देश लड़ता से गई जाना स्रक्ता से बारा जाता

लट जानी दुवंभ हो अन्य प्रोप स्वान पन पन गर्म एकमा स्थान ग्रम्भाग शामी सुमने०— हिन्दिय द्य स्था दृदिन पन स्थित नहीं होता हिन व दिन गर्भ हे उत्तर वृक्षके० हिन्दीध ६०' लटने पन काल संस्था

ल्ह्यते प्रदेशन स्वलंगाः १५२ हुत्तानः घीर मार परनी । धवान नामक साम साम लानम है साम प्रत्नी अवस्ताना गार्थाः बॉल्स्स् हरिक्रीस २३% संख्यार

विनो बच्छर दुवसर मुक्सम । प्रयोग—ग्रह्मि सरपट कार्ति दिन सर बास था सोस कृषक>-शिवस्यहास, १४०

केंद्र हाथी भी भी मान्य का होना वर्षवय क्यांचा किन्द्र अन्त पर भी बह परी में बहुत कुछ शामा । प्रमाय-कावट यह बुमार में यह क्षेत्र केंगा बाहरों वी कि इस नवी बोनी दया में भी भटा हुआ हाभी भी बाब का है (शामा (१)-प्रेमबंद, ५३

सर-पर

नव नामान । प्रयोग---तम अभि कीर धर्म की दशर मधीर भरामानम् के पोच के ही विनयने अगरे भी, वस महाराधि के प्रवेश और नहाधानय का प्राप्त कमी नमय संपर्दत ही भूगा था, 'शहरत नहती और 'नगरवंदी देवी' सभी यहर से नमा के निर्वे समा। यह पह बांच कर यस नहीं हुई च पहल प्राप्त पहल्क दर्भ कर

हरूर होता

यक्षाविक होता । याच्या प्राप्तहीलन हो तम साना । क्षत जा जह वह बोद्र इंड्र्स (प्रदेश-व्यवसी, शुभरका, प्रय तो हो कि कर गई मामन महत्त्वेष विश्व वर्तन रेश्ट्-कि अन्तर्भ । रही हाट् हाँ, साम, ही साँच यह बास धनुत्। हेर के दिनाय नारे र , जा नामी अप विद्वारी हरता।-lac रो भुत्रत 📲 प्रदेश हर सट्ट 🧣 मांट पीट अर्थ, विस में कृषी हो और बोच बहवारे ही। जग०-पदमाहर प्रदन्त बार पट्ट हाँ भागों किएँ वार्यात, पार्यात वाहि सरीतियाँ होत्रवि (सन्दर्भवति सन्तर्भः वृत्रवसानी पाप पर इस क्षत्रक बहुत नीव सहदू व त्युत निश्न-कांव युव पुत्र, ppg), बहु बाबीको की मानि कराफे में पहुन कर प्रशानी चनव-दनव कर कट्टू न हो जाता वा (ग्य० २)-- प्रेमबंट, इंदर्श: इसी के देन बाग का एक फास निकासी बेखक वकोबी कारिय पर अटर हो बया है सार सीठ- महाउ हिंदी, २६), बेरी बक्षी मानदं की मृति कर छट्टू है, इसके जिल्ल मूल नगर में चाना पड़ा (दुधगान-देश संव,

ल्हु जिस किरमा

(१) हर अवव बीच कर्न ग्रामा (अयोग--कोन स्वाहम-

द : हरका से गई जाता

मह होता

स्वाहः संगर्शनधन के पीम्री क्ष्टु निया किस्ते हैं (प्रेमा) — ग्रेमचट, १०९)

(२) इमहा बान करनी ।

स्कृ होगा

प्रजान होता । प्रयोग-जनुसम्हरस्य बाल करन में जैना कह ज्ञान प्रकार है नेता पारश्य में नहीं है | सामोठ-ज्युं o प्रमां १९९६

लक्ष्म भवना एउकपृति करता

नकता तथा न व करना प्रतनन का प्रदाय करा करा सरिताई बीजी, साँह नारक समस्ययी (क्षण्याल—सुर, १२३), अपने में बात करनी त्याँ किसी मार्थि व्यक्ति नहीं इसने अक्षत्र विज्ञा की सी की किस साठ—स्टा साठ, २७६)

लड्कवृचि भागः देश सरकारं करना

करणदार्श जीभ

इंक्सि का अगमजन के (प्रयोग—है समा विक्रती भूतनती इस बहुत नम है अपने उत्पाद नक्षाद की । हम जले ही सम-अवाजी जीज से दान कह से सर्वक्यों के बाद की (मूमतेठ⊶हांचित, क्ष्म)

(शमा । पुरा-स्टब्स्य (मी क्यान)

ल्यु पाटना

साथ की बात होती । प्रयोग—कहरू मने ही पूर आब उनमें के तृब्दे तो दिश्मा विनये में एहा (दृश्माक—देव सव, ३०५ कदद बदना

लाभ होता । प्रयोग -- वबर्ष में कीम के महरू बंटते हैं ? (कुमाल--दें0 राठ, 86)

स्वाद पाना

भाग दश समन है समीग पर समाद प्राचन गरे सिंग उन् सरने की बान होती, सगर से उसका आयोग सन्दर्भ भग्न है समस्य १०३

स्वाद मिल्या

प्रत्यकती । प्रयोगः अपन कीवन साहस्य राज्यी सनाहस्य सिक्षी की गोटरक प्रसम्भट १९६

समग्दरा

भना बरा बहना । प्रयोग द्वी की अन्य की हम लगा

समाप नहीं है जानों अपनी प्राय-रक्षा करना कोई पाप है जोटनम- ग्रेमचंद, १३

रकार उज्जान

कर वर्षेत्रका दुर्गात करती । प्रयोग—वस्त्राह ै मैं बारटर नेपरंच के नन्ने उद्या देना । यहां मेनी वैसी जिन्ह न करते प्रेमारः—प्रेमचंद ३५१०

लगेरमध

(क) मन्तर कर करका। प्रयोग—वह कीय में धरी हुई कार्यकारीय के पर नदी और उसकी रूपी को सब अवेदा बावर (द) देमक्ट, दूप', हम बावर्ष भी शबेद क्यों उस बा परेट से म देंदें के सिये (बोसेत-व्हिन्डी), १२८)

(२) मारतर, इसलि करती | प्रशेष-आयकरमा जैसे फेर्स्स और बर्टन की मूंत की जा बना 1 कहां सेकड़ों के बीच से केराय निकल पानर का कहां तथा जीने में जबेड़ हाला १९२० (१)-प्रेमबंट, २९७

(३) पंजाया ।

संबंधा देशा

लयक कर

कुरतः तेशी थे । प्रयोग-शक्तिया से अपक कर प्रयक्तिया इनके हाथ थे धीन भी गोदान-धेमबंद, ४२

लपट पहना

विन्ती काथ में कहा जाता। अवीय---आज वेजान में पह रीते का दिनों काम म नहां पहले भूभतेक हो। प्रीक्ष १ प

नव हिन्हांना

हार बहना । प्रयोग - विस् अवा किय नश्ह दिल्या अह जब दिलाव प्रमार नहीं हिल्ला जीतिक हरिस्कीय १०३

लबर धों-धों करना पर होता

गहबद्द काला यह होता। प्रयोग —पदि गमा होगा कर्न १ अस्य कोरण को विशे सदस सं प्रदेश से भी यह स इस कायारी और काल सहीत वा जगह जीन-गीय भी नयं में मीची सामग्रे और वृद्धि हुई न जानने बाजा व 'जिन्दी' न पादेगी तो बाप मोग्रे की हिन्दी के मबद भी भी भण जामग्री (गुंध निक-बाप मुठ मुठ, १४०): भी उमित है यह करें जिन को लग्रा ग्रांत में या ग्यो सवा-प्रो भी करें (बोलव-स्ट्रॉटिशीश, २२०)

सदाहिया होता

ललाय की देखा

किन्मत में भेरे जिला हो। प्रयोग—परी जो रेज जमार अधिक सुब, मेटि दुकार बनायी (सुरु कारु—सुर श्रमध्य (गमारु नगरु—स्टब्सास के संश्रम)

सकार में किया होता

किस्यत में जी ही । प्रमोच—साथू नेम परश्यति निविधा होत्र विसाद (क्वीर प्रधार—क्वीर, २६१ : केती बाद करें कोषू बादा की नै पाम जी निवा किसाटा (पटर-आयसी), हप.६ कह बयोग हिम्बन गृन को विधि निवा विसार (शाम (वाल)—शृलसी, पद्द); वह बाहू बाहिय विदेश को विधि सिक्दी सिवहर (वृष स0—पुन्द, प)

ररताना जानमी बढ़ा न जाननर

लेकर धानमा, देमा न कामणा : प्रमोध—नवनं स्थ के नोर्धन विकृतका क्या होती कि दयकार में, ध्यवहरद में हा हा केंट में, प्याद में काला के निया दक्षा भागते ही सही। (प्र० पी० ⊶प्रत सांठ विक, प्रक्र)

(नमा । मृहा -- म्यूका पदना पहुर न पदना)

मन्त्री-बच्चो करना

भृतामय की बाते करती । प्रयोग --धतिया ने कपो-क्पो करता म बीका था (गोदान - प्रेमंबद, २९५)

(समाः नृहाः -- स्थ्यो पत्तो करमा)

लवलेस न होना, केस व होना

सनिक भी व होना । प्रयोग—नाम नविश्वसनद दिनेसा । महि नह प्रात्न विमा नवनिया सम्बद्ध करत - तुलसी १०५

लक्टम-दस्टम

िसी प्रस्तार प्रयोग पा ही समा कि नरण्य प्रस्ता असे (संभारतीयार --गामार दास, ४१६०, दो विन पंथवा ने नण्डम पण्यस्य गोला-वारी सन्देशों है बदशी (झासी०--पू'० दश्र). १४६१

व्हता पाना

वेनर विचा बेनर पानर । ब्रह्मय-क्रमी । भहनी अपनी पैर्य सुरु साठ-सुरु ४५३६

रहर भागा

किनी कार्य की करने का भीभ भागा। प्रयोग--- समहयोग की कार बाई, मोर देख प्रथमें कह गया (गैला १)---भक्त स. ११२१

(२) पानद बाधा (

लहर जरहा

विष का प्रयास रह-रहे कर उत्तरका । प्रयोग----भूर स्थास विमु विकल विर्माहनी, मृरि-वृदि महर्द काल (सुर साठ----सुर, ४८९०

स्तृ का यह पीकर रह जाना — अब कर रह जाना कोच को करा कर जाना । प्रयोग— आध में नह का कृ द वीकर रह गई नहीं नो किन हाथ। य नुमन क्या करा है इसस मक नना देनों कांग (१)—प्रेमकद, ६६७, है मह यु ह आप के बोने की यह में नुष्ठ भी साथा , मुनदीठ— हरिक्रीध, २०): कर्नम भी किनियना और स्वास्त्रम का कारक यह कुछ करमाना था और मह के यू ह भर कर रह अपन अमनठ— स्वीक्षाओं केंद्र

लह का प्रभा कर रहे जाना देन लह का पूंट वीकर रहे जाना सह जीवना

व्यक्ष बोलगा

बहुत को ब होना । प्रयोग-वधी विश्वता व आम से छोड़ जब शहु कोल समग्र पाया (बोल्ड-हरियोध, इप्र

लड्ड गारमा —बुस हेना

बहुत करह देवा। प्रवोद--कारमें न मूंह की वर्षित्ये म वंत कार्ट कर बाल पांच वह वर्षों का न कार्यि (मर्गठ--हरि-चोच, १८४), भूग किननों का शह दे की रही रोग विश्वतों का जह है बावते (पुमतैठ--हरिजीध,६६); जानि-नोह चूच केर्ये के निर्ध कर नहीं हम जिल्ह बनते हुनह मुंभतित--हरिजीध, १७२

सङ् सूम सेना

रे॰ स्ट्रह गारमा

सह विका विका कर पालना

(१) बनना दूध विका कर विभाग । वर्गम---विना मेर अपना अह विका विभागत पाना, अ अ जन कक्षे क इसमी को पूर्वरे को केंग्रे दे हुं (मा---की)शक प्रव

(४) बहे रुप्ट वे पासना ।

लह से हाथ रंगनः

मार शाममा । प्राप्तेत—रंग काली प्यार को रनत करर इस्म जाता की न बीट के रका पुनरोठ-हरियोध क्ष

शकु तोता

- (१) विकास होता प्रयोग मो दूपा है नाननायां पर सह साम कर दस है अनी में ही रेना भोजेत—हरियोध, २१०
- (क) शाम बच्चा ।

सहन्दर्भागा एक काना

सहस्र केर्रासः करनी । अयोग----वह कान उपने करने केर ही अयोगः का अ अ इसके निष्ट अपने सहन्यस्थेन। एक दिन्दा कर देवसर---देव संत, यक्ष

花花棚 电复名节

बहुत कहना, विजया भी कहना । प्रयोग—की मोरी दिय मेह ग्राम ती, भाग की किन कोई सुरु शारु—सुर, ३८५३)

क्राच्या स्थम की बाज

भनी भीर महत्वपूर्ण काम । एडोए—या गुमले वश्य स्थए की काम वह ही आहें (दीदाम—यंगवद ६), कभी करता है सकता हिन, बात वह बाब उन्ने की कह मध्य—हर्ष बीध, यदा

क्रमाँ में खेळ सकता.

पान में क्षा प्रस्तु क्षीता । अभीत—अवन्ते जन्म में नदकी जन्म नेता पि.स तुम्ब भी द्वार जिनमें वैद्ये प्रिय अपने हैं—-साम अभन क्षान दुस्ताहर देस मास्तु है

स्त्रीम की जान

মানিচ্যতিকা। সুষ্টাম আন্তুল-মান্ত্ৰ-মানি হয় হয় । বুলুক্তাৰ সংগ্ৰহণ মুখ্য মুখ্য হয় হয়

काम पष्टता

इसका चरको का अंको । प्रशंस का सिकील और दलक

सर रजवा, जब तो मान पर वह ,हंग० (१)—प्रेमबंद, ६१७ (वर्षा- पहार- न्टाय बाधना)

ख्या खपता

(१) वेच हीना, समय मणनी । प्रयोग---मोह व नोयबंद, वर्ण व चरम, चनोयिन भाग म् चाधिन सामी प्रमण करिय चनाए, इस., कम बावश कीन काम कर न मने स्थ पर नाम क्या न द्वाप कथा चूमते०-- हरियक्ति, ३०, (२) प्रतिद्व दिला द्वाचा । प्रयोग----मोना का विचाह हर कहै दिन दो नद थे, नेरियन नवचा क्यो को जैसे दसकी साम नद गई हो कर०----दै० स०, प्रदे)

(३) धून हानी ।

तात-दरद करना वा होता

भाग संपेट

श्रीनभाग वाग । प्रयोग---गरते वे वह व्यक्ति जात-न्येर का नहीं है (स्वयं---जीनन्द्र, १९७)

त्रा श्व-धार्याः

करनायुर्ति । प्रेयोग—साधरी-मृदिनं सुम्न सुनीस माम, सम्म विशास नेत् साथ-भीतिये (वर्णान धनककांटस संगठ, १०३)

न्याओं प्रथम-अनवामा,----व्यक्त

सस्यत गर्मन्य हो गरमा । अमोन---नहं शत-सीति, वहां स्थ-भोषक, मृदि गृति साम गरी स्थ मा- सूर ५१६६ गोरि रेनियान इत्या व विरुग्ध को वो द्वार द्वार स्था स्था नामांच भाष्य है (बिस्ट्रेट (१)) केहत १६६ साचा पूजनी बोच गृह करके जानों न त्वन उत्यान नहीं सुग्ध मृत्य सामां पूर्व

अंदर्जी सरकर

८ ज्याचा दक्ता दक्ताना



लाठी के जोर से

भार-पीट के द्वारा । प्रयोग—पशनपुर इस्टेट के इन हो अमेथारियों ने निमध्य कराव की ओब और गरही के चीर म, अमीदरमी की मला की परशीठ—रेम्स ३८

कार्या में देख लवाका

समते की तैयारी करती । सरीव-स्वीधा शास्त्रा है ३०० सक वार्तिस्त नेड लोडो है को तम बंड को ही उत्तर हो : मन बाकर जाठी में तेक नवाको ।परतीव-संस् इव

लाटी लेशर दीवना,—पीखे वहना

माठी मेकर पीछे परमा वे॰ साठी सेकर र्राटमा

लाइ लडामा

बहुन प्राप्त करना । स्वीम---बुर न्याम वह स्नीतिन कोई जिन विभि नाह लड़ाएं 'शुंध साथ-- मूर्ग केश्वरूपः अब वल लाह न्याप्ट राज रस, इंग्लिस्टिन कंड नवाई (सुन्धाः) सूर ४२७३, अह मदन्यस्य अवस्था निम नाह लड़ाई (बंद्य संस्था-- नद्य), रक्ष

स्तान उठाका

मारते के लिए पैर उदाना । क्योच--वेडि अवद कई नाव क्याई (रामक क्षा - जुलसो, 464

साम की प्राची गेडिया

भववाय में विकार कार भीजन । प्रयोग --वाय की गाने बीटिया कंठ के नीचे न उत्तरेयों (कर्में) -चेमचंद 100

हात के भावमी -- देवता -- भूत

मात पहले पर ही देव पर बान काला काकिन । बकान— लातों के देवता कही कालों के भाननं है (कांक -चेलवंद, ६३ में तो कहने ही से कहला था नहा हू कि वालों के मून बालों से नहीं माना करने (क्यक के यदा—चक्क करों, किय . बाल का धारमी सबक्त देवते वाल से किय नगह बान आला बीलक-वृश्चिमीय, १९११

मात के देवता वै॰ काल के जावणी

मात के भूत रेश लग्न के भारती

संप्रकाशका

पैनो की बोक्य का नार नहती । क्यांत—मह स्थेना नात क्षेत्र कार के बाल कार्न की विशे है सार कारी कोलo-रुपको है 238

আল ইবা

मान में मारका । प्रशास—प्रशासना है बनर हुबली मी क्या न की कार इस पूर्व इक बोलठ—हर्वायोध, श्राप्त

रात क्षमंत्रत करत जाना

पर्ल उपन्ना करके करे वाना । वंदीन—वह बह सामक दर कि इब इस का बच्चनी अवीध्यर होन वर भी सक दिन राजधार को नाम बाप कर जैनली और बनो में बन्दा एक बहु (गुरु निरु-नाम मुरु पुरु, ३३०

काल क्षारता, - हमाना

विशासार करनाः कृष्य समामा त्याम इना ६ वर्गात कृत वर्ण्य के स्थाम स्थानी को के नाम सार्ग द्वार आठ सूत प्रश्निक केना को कहना है नहीं त्याराण नाम गोन स्थाराण, सम्मे मोन प्राची कन काम गण नाम गान था। सार्ग क्षिति को बोनानी पर साम मान हानीया है ही विश्वर राह्म व्यक्ति को बोनानी पर साम मान हानीया है ही विश्वर राह्म व्यक्ति को बोनाने पर साम मान हानीया है ही विश्वर राह्म व्यक्ति को बोनाने पर साम मान हो अध्या का स्थान है। प्रश्निक को स्थान स्थान साम सी स्थान की स्थान हैहिही का हरिसी है की स्थान वर्ण साम मान है का स्थान है।

कार्य समाना

बंदमारिक होता । प्रयोग- नाम पर है जान पाली का रही बुर तकरे का म महत्वाया नका (मुमती) हो। डीसे ९१०

लाम संगम्ब

Se जारत संग्रहलेर

165



म्होले सहस्रो

ज्ञानानित होता १ वर्गाय-नाम दिनों मृंह देश शीवह का रिजये मान क्षत्र काफरपर्व की क्यो नहें (कुमतेक-क्रिजीय,

कात-इंदा चलंगा

मार और होती । यदोध-मार्ग यह बनाना चना नमें जब माजपूत सीर बामन होती के बील बान-बान के बान जुना भागात के मिलांक-नेण १९३१

(समा) न्ता--साम जुना की होना)

काल-जाते से बात करना

हारमा श्रीरमा स्थानाधिक सरमा । प्रयोग--- वनस्यार मनक बच्चा के प्रित्माक है और महाजन नाम चौर जन से बात सरमा है (गीदान- प्रेमचंद्र, ३५०

व्यान देशा या लावना

साजन रेजना

कास के स्रोम में भूग गंबाबर

लग्ध-कग्फ करना

कांचन क्रमध्ये चारणियात काना जिस्स्य करता। प्रयोग गणकारत प्रदिन रोगाय क्रमण भी संघत क दिए, गण्या क्षीर का तार्थाच्यत संगये सिनो स्वयंत्र क्रमण क्षीर मेच्या

(समा १४० - साम काफ निकासका)

स्टॉर ट्राफता

वार को नीय देखका प्रांतक होती। प्राप्त —

भावा हो जार रहत वरों । भट्नर विवश्य मार कार्य जाराम देमल्ट २६७ - जून पत्त्र मनानेनान मान को साम्यु के जिन्हों की कार उपनते, आप निर्माणन होने को बाह्य मिनुरोठ निर्माण प

(-) पार्व मी परम सामग्रा होन्हें। प्रश्नाय — उसी के यहा तथा की विश्वमें माने मान देखा है, उसके बारे में पर्यू विमा नहीं रह स्वत है, और हैंडसमें प्रश्ना है, प्रश्नारी माना रोड में ही रहणकी स्वार का विश्वनिया । यह सम्बंध कर बका है नद्देश्य सहस्त्र हुन

(महार पहार अहार शिरका)

त्राहे भार

कावपणं राष्ट्र । प्रयोग - दिनी की नाम आस देशकर, सपना किरमण बद्दमना सिनोडिया कुन का काराम मही के निद्देश देशों छा

लग्न फीमा

वरकारी कारण (यकतार घोट सुरती स काम होका)। प्रयोध-अनिवर्षन, पुनर्कात तका कभीत विकास काहि तेस बतारे हैं जिसके बारकारी भएन कीता और पुस्तारी है। यह ही क्या नकत है परतीठ-नेष्ट, ४०६

मास बुमकर होना

हर बाल का कोई व कोई उत्तर देने की सेवान होता। प्रयोग---वर्ष कान करने काने एक कान का करने हैं कि नक्ष किनी भी की इस प्रकार अवस्थान काल कुलताह बनकर बस बाल को कुरवादानी का कार क्याने की अवस्थ करने हैं किन के पुंच कुर पुरुष पुरुष का जान बनक्शाद है कहा दिखान सरवाई गतन कुर्मा , इ

लाख का होता

भागकात्र त्राक्ष विषय विषय विषय । सम्बद्धां जातक । भीत जातक सम्बद्ध स्वयं क्ष्यां त्राक्ष स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्वयं

त्यव मित्र होना

करण करा बर्शकियाय गरका बनक सामक स्टब्स । प्रशास करकी प्रकारके काम कि में हो गाउँ सहस्य । देखाना स्टब्स



काळ भाका

पुणिन । अयोग---सायका ऐसा अवकाय है कि बाह सी एक बाद कहर सुटवा हूं । में लास साथ सर पर पर पाउ यह प्राप्त (रंग० (१)--प्रेमधद ४२१

(गमार गा। -- कास पगरी)

साम्ब सोना

- (१) गुम्मे में होना । प्रयोग—अब कि होने हो तमक बन माल युग्ने काल हो। प्राची न दब नयो बोनही खील०— हरिकोध, २०
- (६) प्रवाधन होन्छ (
- (३) न्याम क्षीता (

लाक र्याकी श्रीके विकास

कोम दिलालां । प्रयोग-- विनय में अमका वा दौरान माहन पाते-ही-माने नरम पहेंगे, अध्य-दीनी आंखें दिलालां ,रंग० (१) —दैमचंट, ३१४)

(॥॥० प्राप्त- छाल ऑस्ट्रेडियाला, आर्थि निवस सन्ता)

माल-पीते होना

गन्या होता, कोच करना । प्रयोग---दै है । एक्वारती इनले बाल-पोले हो गए भार पंचार (१) --भारतेन्द्र, १९६७, इमको शुक्रका नी है जोन वह ही बाल पीले हुए गंधार इंडार--राधार डाल, ११६); जोच करने हैं कि बहुत बाल पीले ही रहे में । (१४मार-- प्रमांद, १३% कारती पर मन्य को जीच में बाल पीला है अकर धर्मानकी जिन्निया कर होने पहा (१६०--दैस सर, १६

लाने पहला

अस्थल करी परनी । धर्मम--- जाको कोर जरवाकी वरत धर्मन गांकी, कोरान को बासी परची, दिने किल बाउने (कठ १०--- रिनापिट १००): दिन बायन काह करो उनको जिन्हें देखिन के घन माने पर ठाकुरक ठाकून कि उनको हान बाधकों के माने गांच रहे हैं गुंकीन जो - मुक्तगुंक १८४ - कर मनो क इसे पने साले । है कृदिन में न कीन बाने बान (कुन्तीक---हरिसीध, ६६): इस पीतन के पने धनव-पुर में भी मान्य (सालेस--गुंज ४३०)

लिखा न मेर अकता

काम में भी हो जब कटन म सकता । धर्माय—में काहे पनि क्या नकोती । बेटि म शहर निस्ती वर्षन होती यदेत वायको १४ , पुनिन्युनि बोधन कान निस्ती बेटै नहि कोई सुरु कार सुरु ३००६

(१४) - वटा----सिका स कृत करमा)

णिकाका बनावा

(१) कारी दिवाका कराक रणना । असेम—यहा से निर्वाद क्षेत्रा कटिन हो रहा है । असर ने निर्वादा कराक रणना नवना है । अस्तर—हेठ सह ४०%

(२) (रामना सम्बाह

शिकर्णकरण हाता

पंचय संतरी रीमहाय हानी । स्वाय- मिन्हें प्रथम बहुत-वार नमका, को विकादिका निकास (बृद्ध-अब मुत), शेकि, प्राप्त क्षेत्र विकादिकार को निकादिकारन का वर्षाव न क्या देना वर्गाहरू (सैरेट-गुलाहरू, प्रद),

नीक विश्वा होता

कार होतर (प्रयोग-स्वरधान समयत भागत है (तत्व) बीड वह देन वाची कुठ साठ कुर १८)

लीक सामा

बल बामा । प्रधाय —रपति चन्य याचरम नीका । अजह शाब मृति किन्तु के बीचा (एमठ (क्षत) - सुससी, १५४.

लंक पकड़ कर कलना १० लक्षीर पीट्या

लोक का बलना

रे॰ लक्षार पेप्टना

हरक प्रदेश है। सक्तार प्रदेश

लाप देना

कोचर कर देशा, महत्वर कंग्ला । सक्ता—इत हरामबाद। के बारे दर में एक वहीं भी चैन से बैटना दूधर है अब स वैदर हुए, सब मोद विका मरं—कीशन, क्ष

ऋषा पानी करना

(३) अहस्यक्ष बोलकर बात को दक्त वह प्रदेश करना ।



वर्षाय—पहुंचने भी है भी एक संस्थ क्षेत्र मार बन्द हैं। भूकती है, भी भी बरवारी सहस्रीकाल के बहुने मोरणपोड़ी के लिसे (बहुम पराग —बहुन्द जोनी क

(६) बिगड़े बाल को बनाने या अन्यत्न प्रथम बगना ।

लोना कारर

भगवास का समानत मेकर आज विदानमान नाना। प्रश्नोत-सीमा कीन्द्र को नीत्र समानता को नम करियी कृषि समानता समान (समान-स्मानी 104

(१) तमाया प्रचल ।

ख्या संगादा दोना

परेनामा होता । नामा ना नामक, यह नो धरीयानक है बीट इस बोद कुन्ये-न्तरह हैं---वर्ध रे (यो-कीडिक, क्टर

ल्दिया इंबोमा

काम विभावता । अवस्य कविष्यो को का समझार को क्र गोर्ट किसोपि कभी को संबंधित हुटोई स्थापित जानेकीय, १६४

ig wint

मनी के दिन को नरफ हवा बचनी है। प्रशास-महनक पहन मूं- पीन की यू नहीं बार्च की कृतींक निरानत, हह

स्-तं पालना

विदासर, प्रमास का क्षेत्रर करती । क्षेत्रक—बादो व मृत्यु बोली भीर कृतर बाह्य है कार विश्वय साहत्व दरे प्रमा क्षेत्र। सी सम्बोठ—स्माठ कार्ट क्षेत्र

में उरमा

(१) किसी को केवत चारक चया देशा । चयाय-स्वयम को बहुकामा स्रोत्रा, यह प्रांगी-सामी को ते हो, का गर्ना हाती सामा में कर राज्य मा को लड़ 3 प

ि किसी बार्यका सुरुष की प्रश्नेत करून करून हुन र **चार्यको**र ऐसे सर

में दुरस्का

, र मार्ग्यस्य का नाम प्रचारतः पह ना कार लाग को नाम पात्र नाम का राज्य स्थान को उसके रहे

🕻 🕟 माराब करन जीत करवा

के स्थाना

सप्ते नाव-राष दूबरे का भी मुक्तमान करा बेना र सबीम —वर्द परिका दृदन कर गाना की मुद्ध के पूर्वपर स्टूप्स्पाध —दैव सक २५%। कविया भी अपने मध्य म अ वध की के पूजार पराचा है मैका०—रेणू. ३६७), हाम, में संपन गाम क्रिकी के क्या नावन— हैंसबंद, १६२।

ने-एक्ट होना

त्रम वा बोजवात होता । प्रशेत-स्वत्रम के निये पूषारे पर कम के कम तेवा प्रयाप वामता आवश्यक है कि यह बारक बात का वक्ता है और के-प्रका या क्षत्रका गरी है निरंक-सुराधक क्षत्र

हे-दे दरवा वर दोना - स्वना

(१) विकार होना | वर्षाय - वास्त्रार में वहर-नियाप होने लगा, अवन वर्ष गृह है लगा स्थापे, इस मान पर ज़र में है लगी (कालों) जुल करें, इस , हुल्लाह में हो, वार हुलाई में बोनी वहुत ज़र नहें । कालार में मेन्टे पह गई हुलाई में बोनी वहुत ज़र नहें । कालार में मेन्टे पह गई हुलाई में वहीं के लाग हो भी (बद्दम्य में वह नहीं) में वह नहीं में (बद्दम्य में वह नहीं) के वह ज़रून के है हो भी कहा-देश कर, यह); यह पह ज़िया वह निया मा, पर प्रवापक है की मेन्ट क्या की मेन्ट स्थाप की मेन्ट क्या की मान हों हो निया कर निया मा, पर प्रवापक है की मेन्ट स्थाप हों में वह निया मा, पर प्रवापक हों की मेन्ट स्थाप हों हों की स्थाप किया मा, पर प्रवापक हों की मेन्ट स्थाप हों है हो निया मान स्थाप किया मान स्थाप हों है हो निया मान स्थाप की मान स्थाप मान स्थाप की मान स्थाप मान स्थाप की मान स्थाप की मान स्थाप की मान स्थाप की मान स्थाप मान स्थाप की मान स्थाप की मान स्थाप की मान स्थाप मान स्

(व) द्वंति होती । यद्येत निर्धानस्य मान्न्य की अर्थन मान्य के के मूल हुई कि दूध न पूर्वका (सान्त्र (४) ---

त है सलका

" Rigiarar

नरं कृता

तक न ता प्रदेश प्रकार स्थाप स्टाप्ट की प्रकार हो देश प्रकार स्थाप स्थाप देश प्रदेश के प्रकार स्थाप

on were die und ;

लेखनी पहाचा

रेक्स के किए का सामान्य प्रदेश अपने करकरी के ज्या न र किए का अवस्थित क्षा करवान का नामका प्रताना बाध मेंच द्वल फिलो के जिल बाजो विकासन है गुरु जिल-बार मुठ गुरु पुरुष

लेक्सो दीकाता

विकास । अवाह जांदें सहिता बाली नहीं बीतन कि पत्र म संदेश को कामून ने क्षणी ही बीच सम्मद्दशें को अपनी बेक्सी को दौरान के किस बेहान के सिंग जाता है। महुद निक- बात भट्ट हुं।

ग्रेषा देगा

- (१) रिनाम देश। प्रशास—साजिक सन्त नेका काव, केका
 वर्ष पति नीजे (कर्मीय प्रशास कराव १९८०)
- (२) पृथी नाम मार्गन करना । प्रशेत—में ताम प्रश्न बहुत नृत्व देखा । जी पृथ्य है चाह त नेवा घटन सामनी प्रत्ये

रिका संगमा

विकास सामना । यानि-वारवामा यस नेवा कात्वा, शासी विकास भागी ग्यांस ग्रंथा क्योग १६३ (समाज मताक-सेवान केवा)

लेका प्रोका

क्षेत्रे में होना

विकासी में होना, सुमना में ओका । अभीत— वेटी मान्य विदेश केन कहाती माहह तम केटी केमी माहि (पानेत काम ---शुक्तमी, २०)

लेश देत

- (१) भ्राम का व्यवसार । चयोग---कृत्य प्रचीपाणी है, सर्वा सदार में कृत्य रियानाम है। वाद नेज-देश आपने है (मा---ग्रीतिक ३३४
- (०) करोडार नंबंब।

ज्ञेला एक न बेना को

कृत्य मनल्य नहीं। प्रदान माहित के लेका मन र र साहती लेकेका एक माहित की पार्ट में पन जुनता पहन

स्टेजर देवा स राजा जिले देने में स झाला काई करने के राजा । यहां के ये तीय बीट राज पर प भीभी केन के क्षेत्र कुछ बाध-सुर, इध्देव , नेती स देश इच्या क्षेत्र व. वाली स्वीती बड़ा बड़ी तीती (क्षेत्रक-केन्स वृक्ष्य वीवान्ताया वर्गाद प्रश्वीर साम्रजन किसी के सर्व के स्वेत्रक कार्यक मुन्तकाद कृष्य अञ्चलका प्रश्न विश्वी के केन्द्रक स्वामित वर्गा क्ष्मण १ —स्वाम्यक, प्रश्न

नमें थे. हमें पहना

कार में करण अवसार होता । प्रशंत -वजा पड़ी दन वरित पान होता नेद में देंत (मान ध्रमाव 'ह -पारतिन्दू भ्रमा में बाद दर्शवा की में पानों तक मा पहुंची, तो कर में देंसे पड़ पानमें अक्का-देठ पठ, १९६० में तो एउनी हु कि प्रशं मानक बात कर । कही बीमार १५ नहीं तो पढ़ में के पह प्रापत अवस्त है कि मद है ने पता कर कि नेत है हम दर पद यह पता हम मद है ने पता कर कारण अस्त मिलाई हम

क्षेत्र के हैं व कामा के केकर केवा म हातर

Des a grat

रें। सदस्य स होता

मो वर्षा माथ वटा की बान नामा

बानी पान्य का प्रकार होना । क्यास--मुपीन से ही बाहर में इतनांच दकार और किया कारणे मेरिन हम बाहर को १५ टकार भी संस्थान से निकार । की हरी बाहर होरे कारी कार है जाते हैं नेती का क्रम होंगा।

नाम की जान पुरस्ता । याचा सरक्ष की साथै प्रमाप

लोक हैं इक्रागर डोमा

बोन्द्र में बाब होना । प्रयोग-नाट विश्व विनर्द तृत सामय । तान् मृत्यत् चैन्योच प्रयोगयः । शारु (मृ. -- सुक्सी)

156

D. P. St.



बोकन्ताव की तोर्र वितास्ट्रेडिकना

लोक-लाज को लोई उतार फेंबना १० लोक की लोक झुटना

लोट-पोट काना

- (१) बहुत आनंद देनाः) वयोग—सामा नाहव पर को मृद्दे साम की ध्रवती क्राव्टर बहोदय की कोट-पोट कर देनी की उदेशक—सेमबंद १११
- (२) बोस दिशस्य करतः ।

लोट होना

भारतमा होता । प्रयोग-न्ती विद्यापुत्र चैकः फोटी देश कर लोट हो पर्वे भिसाठ न्वीडिकः १६६१

स्रोद योद होता

- (1) चान्तुल होनर। हमीन—नैतन में नाम भाग, नाने मुकरेशो बीच, शा बस हो प्रीय भीच होन नोट नोट है एक कवित—सना०, ३३
- (२) सामका होना । प्रयोग—अपन सर्वानं कर में यहं बीटम मोटा (सु० सा० (परि० १)—सुर, छ१ ।, बारे प्रवासकार सद् हो नोट गाँड मार्ड किस में चुनी मो बीट बीच कटकारे बीट (सम०—पहमसन), ४९/, जूरदान क्या नक क्या है, हमी से बुनरी का धन कर पर मोट-पीट ही बना होना (रंग० (३)—प्रैमनाई, १२०)
- (१) बहुत हैमना—हमने-इसने बेट बाना । वर्गम— स्वर्गमानी पनित प्रमाप नारायम नियं इसे स्थल स्वत सोट-मोट ही बार में (गुरु निय—बोट मूट मूट, १५०), बनवा हमानेबाली बजानियां तो ऐसी विकासकंक होती थी कि बार्क दिन में बार-बार बार उसी की बीहराने को बजन के भीर मून का नार गोर हो। जान व सन्वर्गेठ राष्ट्रभ
- (ह) बहुत समस्य होता । इयोग साहब बहादा २० यहां को लोग पोण हो गया ,पैमाठ प्रस्ताह १८,१

रुटि मर पानी को भी न पूपना

क्षोन विकटना

सम्बद्धान्यों का भन्न विकता । वर्षाय-सानि मन पीलियल पोर बर्ग्याद विश्व करि भूटि निवस्त है जीन रापदाय को जुलकोट कि प्रवत्ताव

स्रोमणी के बाइडे भगून दोना

कोई चोट न जिनके इस उमकी बुरा बलनाया जाना प्रयोग—वासी वे कोमधी के बहुटें जनुषों की प्रतिव्यति हो। (हन्दी साल—हरू ५० ६०, १२८)

लोगी देशर

नामी बाता । प्रयोध-नानी प्यार के प्रशासा पृष्ठ भूव कर कड़े कोरी दने बावड़े हैं (दुधगाछ-देठ सठ, ३५३

नोइ-सरह

भवनकृत, क्रमारकः । स्थाय-स्थायने को सब्दार काना म विके भवना करका न विके, यह समयह, सवार, सृषद्द्र, लोहनट्ट के पासे पढ़ कर जनम कर बना को (850-ह्याकोश, व

स्रोदा बजना

पूर्व बोना । प्रयास-को समुद्र यस उनके निकट पदा हो -१न कार प्रजारक रूप रहा को देव हर्गपका के पूछ पर भित्र हुटे को नवा चोहा समने (प्रैम साठ-सठकाठ, १५७)

लोदा सानदा

अपन्य का बंधना न्योकार करती । अपीत—तिर ही गई तथा कर तक है, जादा बेरा मानवी काम पढ़ा का उत क्रिके के भनी जर्मन सब आनेती (मुर्यः—शक्त, इस); में उसी का सन्दर्भ (का, कह हुटन क्ष्मी का सोहा आनगा क्षमान समाद, प्रका, किर बोरबर मेना है बीरपास मिह स, जिनका भोदा के भी मानना है (रंगक(३)-- प्रेमकट, इक्षा

नादा सेवा

(१) नवना-पुढ करना । प्रयोध---सन्तमसा स्रोह स्टान सन न - (४ जन न स्टाब्रिंग उन्हरन देंड राम्क प्र मुस्सी) ४५० रम पन सरदारों सन्तरी जयपूर करत संभी स्रोहा सन्दर्भ विद्या प्राणी ५० सह सह ना सह सह न स्टार रक्ष संभाग सर्वक हर्गकीय, १३२

स्वाधना वान्ता समक्ष करता । प्रकार में इत सकी का बवाना में नोही नुना मुद्दतः 180 नीठ ३५५



तमें अब क्षोणी बालकित से कोहर सेत का बड़ी पुलेठ ~ सगठ वर्गी, १९८३); देखिबे प्रधोग (१) में (⊕) थी।

साहे का बना होना

बहुत करिन कार्य होना । प्रशंत—बाच बहु और कहना ठीक है कि यह वर्श वटी विद्याश क वर वह दिवय नाट के चने हैं, हर किसी के बोलों क्टने के नहीं (90 वीच— कि नाट मिट, इंट); वह कहर बाता है कार्य का चना बह मही हमना किसी के यह में है (बोसo—हरिक्कीय, दक्ष)

सोहे का सरेना बनाना

सारतीन या महत्त्वहीन व्यक्ति या अस्तू को सहस्वपूर्ण बनाना । प्रयोग-नृपत्ति बंगह के स्वर्ण बना प्रजू अब के प्रति कर रून प्रीर्थित, बाओ प्रमु क द्वार स्वत्रद्विति स्वतः करें।

लोहे की कील गाइना

सपनी विजय मोदिन करती, प्रिंपका स्थारित करता। प्रयोग— सामको भी जानना चारियं कि याप करवर राज्यत से बात कर रहे हैं जिसके पुरत्या न इसी दिल्लो स त्यद् सी बील नावी भी (पुरत्—वं • दर्गा, 34.8)

न्द्राहे के यमे वदकाना

क्यान वर्डिन कार्य करना दा होता । प्रमाय-मार्ड स्वा वर्ष करित है, जोड़ कर बना यवाये के प्रार्थ, मोनर्ट वीरे इस्ती (बाठ इंडाठ १)--भारतेम्द ३२५), क्लाएं। और क्रीयों के सक्याय क्यामां, सबके किए कोंग्रे के पने क्यामा का (बानक (क)--क्रेमचंद, ३५.

लाहे से जाग कामाना

वृत्व कीर पराचनी होता । प्रयोग जिनके भीते से थान बरतती थी, यह प्रयत्न की सकदिया बटारकर पात मुख-वाना है (एकद०—प्रसाद, १५१

न्दी स्थाना

बून होती, प्यान जनमा । प्रयोग-कानी की भी मध्य एक की बाज की जी नहीं है (प्रिकेट-हुर्वाकीस, २६०

জী জাৰা

श्रेष करका । श्रव्हन—जिहि का मीह व अपने, निव को वहि शह । देवि दिश्य का निव नहीं, नहां क्वीप रहां। व्ही कहा (क्वीर हवाo—क्वीर, इ.घ.); के वहि जानति देव-पूजाई : केवल न्यायति भी जो पार्ट मुख्यांण पूर, १४२१



वकारतम क्रमा

किसी के पक्ष में बीचवां । प्रयोगः—गृष क्यो उसकी वक्त-सन्न कर गाँर हो 7 (साम० अ) —संस्थतः १००,

वंबतृता भगद्रगा

भावातु देशः । एकोग---पानी सपनी चन्तृता आहः रही वी (संस्थात--प्रसाद ४३

इस्त्र ह सामा —में कदमा

कृत कहते न जनना । जयान-जन मनन मूल जनन क भाषा (रामक (फ)--एलमी, ७३८); पृथ्वी दिन्त हेरे सर्व भूते महा हिन्द गीर जैन गहि कहा वर्ड शासक प्रजात--राधाक देखा, २६

क्षांत्र म कहता

रै॰ इयन से लाना

ब्रह्म न प्राप्तर,--न दरना

दिए हुए प्रारकारण का प्रतिक्षा का पूरा होता । इस्तेत-पूर्णत राज काव जब करई । तब जागह जेहि दश्य व दरई (गांव (घ)—पूलसी, १५२), प्रयूक्त रोति जहा क्षित प्रार्ट प्रांता जाद कर कथन स काई (गांव (छ)—पुलसी, १५६); बेटा जिन्न ते अधिक है जारिक कृष परिधान का द्वारक तृष परिहरेन क्षेत्रक न दीनहो साथ (कृत्यक— विस्तिक्ष, १)

चन्द्रत न दरहार

देश प्रस्ति है जानी

वचन प्रमाण करता

करने साथ प्रमाणित कालाः प्रथा प्रथा — स्टब्स् सा । इत् विक्रित कृषि कार किल करना क्षण सा क्षण आस्तु स्थाने अपने

बजन में बंधना या बंध्यना

प्रशासक होना का करवाना । प्रशोग --नद समोदा सबन बचारों । ना कारन देही वॉट आवी (सुरु सार--सुर, २२५०

वनन समहा

कार का अनुर होना । क्योन—आको श्रुट्य कठीर लिहि, लये व क्षेत्रक केन (२० छ०) युन्द, ६०

पंचन-दान से मारता

वर्धिय कालों के चीवर पहुंचानी । प्रयोग-न्यूय बहेत के बाए ऐसी, बचक बान कर मारे सुरु मारु-सुरु ॥३०३०

विभिन्न की बांख्यी का सुग बनना

(१) पूरी तरह वस में होता । प्रयोग---वासूरी के सबह सुनि मुनि, बांबस की मृतिनी आहे सुरुक्तर-- सुर ४४२३) (२) भागे से सैन वरना।

बाददस्य होता

करा जानी। प्रचीत--पाच जन्मभात अनाम-- लेखा चित्र पर किसी का भी वरशहरून नहीं रहा - प्रापनी श्रेक्ट--छय, ३४

क्या कर देता

बहुत देना । प्रयोग---शिकाची पुतः वानु (IIRN पर आगीर्वादी की क्यों काने समा (सिमाठ--कोझिक छ : उन किरमी देन के काम में असमय की भी हरी पान है। पन और दून की वर्षा कर देती है (गुठकहाठ--गुहेरी, पुठ)

वस्त्राक्षाचेत करना या द्वाला

गर इन्तु कोरी कका जाना । प्रकाय—करे पाटिया बासर य तक र तथ यह भागी (माठ प्रेठ (१)—सामीन्द्र ३३३)

वर दिन म रह जाना

तर की वी स्थाविक विश्वति च रह जाती। १५३० व्यव



तम लोगों के वह दिन नहीं रहे कि नुम को भीकर उक भूगी (लिसलों प्रसाद, ४२.४३

वाण स्थाना

क्षाणी कटना

महारा पाट विकासकः । प्रधान—परम्य केटी काली स्व्यापे यस में नारी कृतना, जब तृष्य वा तो जीवता से कुशक्य करी दा क्याप्यति में काम प्राजी गीवति । चतुरम, ३६।

चाम भंग करकता

सर्वर के बाम बंध में विशेष प्रकार का स्वदन (रिचयो के लिए सूथ और पुरुषों के भिए कार्य वाला काता है)। प्रयोग—प्रभू पराल शाला बैडाहि, करकि वाम बंग मन् कहि देही (राहर सुन - पुलसी, प्रदेश)

श्राम वाणी कोलवर

कट्ट बचन कोमना | प्रयोग—नूर नधीप वचने नदुन्ति गरिप्रति बानी बाब 'राम० (बाल) - तुनसी, २५४

चप्य होता

- (१) प्रतिकृत होना । प्रधीय-स्तावतु घडान में, ब्रुट परची मठमनि प्राठी वाम । प्रची वामू वा नाम की गई काम बेकाम (विहारी क्षांत-विहारी १७०)
- (२) दुष्ट होता (प्रधोग बोने भृतृपति सक्त हीन नई संभू नम बाद (राम० (शाम) — तुलसो, २५७)

क्रार जोछा पहना

सहाई है बार का भारतूर हाथ के पड़ना (वर्धाय-न्दरने मृतर न कान धरित में भपनी नलकार नम पर दाई (कार श्रीमा पड़ां, चीड़े की धीठ पर (क्रामीठ-वृं कार्म द्वर)

बार का घर करना

बात का असर होतर । जयोग — रिल्मी दें कोचा अध्य कर कर सम्र (मृग्य)— मुंच दशी, २८१)

द्वार काली जाना

(२) किन्नीका प्रक्षार कव काला।

चार-पार व होता

नीमा न होती । प्रयोग—अही प्रशन्तना का बाद-पार न रक्षा पेंत्री अक्षक, १५

अपने प्राना

न्योस्तर होता । प्रयोग-न्योगा निर्माण निर्धार्थन अपि यह साथ वारते हेही मुलसो हिंद श्रुप्त सादः

वारि पर भान उठाना

समाय कात करते का प्रयास करता । प्रधान—सन् हरू यस म मृत्यु विकास । यहन बारि या मीति प्रदेश्या काल काल जुलारी, ६९।

वाहबाही खुटना

प्रसमा पानी । प्रयोग-मृद्धे है पाइपादी जाप हैं इस कई क्या प्रत्यकी पार बात है जीतक हरियोध, १९०)

वर्णी-तवादा वक्ता

बंदुका बार्ने करूना । अयोग---वार्य को को आई, सुन ने भी बाड़ी जनाटी कर्क करोगी व्येशसीय-- यामठ वर्मा, १६५ , यह बदल को ही बाड़ी-नवारी बकता किरानर है (हैमाठ---देमबद, १४७

विकार शिधिन होता

विवाद-सागा में इंश्वा

विचारी में कीन क्षेत्रा । प्रणान-जोगी कुमानविदि बुक्षी चा, विचार-जानर म कह कृता रहना का (विज्ञात-अगत वर्षों १६

(तवा+ वृहा+— विचार-मध्यर में यांने बाना)

विचारी की विचर देना

विचारों को स्थित न रहने देना । प्रयोग--- प्रमान परमा कि निवारों के की हुए हुन्द एक नात्रय नात-नार मानक जनके विचारों की विजंत की हैं जीवर (2 '-- संप्राय ने),

जिया सनग

बान कीबी बाजी । वर्षोध---पुरर्गहत की कुछ स्म्युराकर



किरोहे का मध्य बदा बंगना

बोर्ज विश्वया एत गृही 🖟 ? (मा-कीर्जिक, ध्रत

बिद्धांस का भंदर जहां करना सातो में विशेष का यान कैनाता । चंगीय-इप माने वा म माने, विशोष के अपे अपे अपे करे वर या नारों की बंदी विश्वों में दीवारों के बंदना किए चांच, किए मी समें मून का क्या संभे नहीं उस अपेता (वे कीटंड--प्राठ नात. १३०

(स्यान प्रान-विद्वाह अवकासर)

विधि का निवा वा लेख

माण में में हो। अमरत-कड़ा रतन रतनाकर कवन कहा मुदेव। केम भी जोरी दूर तिसी मिले मी कननेतृ केम (प्रदेश-प्राथमी १९१३ - विकि निसी महि रुपत क्यों हैं, यह करत सन्ताल (सुरु सिक-मूर्त ५०६३ - कम सरीम हिम्बद मृत् मो विकि निसा मिलार रामव (माल - मुलारी, पर्), तीन कीन क्षत को परेखों दर मार्थिक हो भाग व्यारे तीन विकि जन राश्यित है सनदर्भ स-संनाल १२६) क्या भोषा कर ! क्या हुता ! विक्रमा के किस की

विधि वर्गहरे होना

मान्य अनव्य होता। प्रयोग-वरी वेस विधि भवी शहिती, वर्षि त्रमुमति तेसी युक्त मानी शुः साठ- सुर, प्रदेश, प्रयोज कोरियमंदि विधि यति शक्ति (राम० का -- सुक्तमी, ३८४

विश्व पाम होना —विश्वात होना

मान्य मिनजून होना १ प्रयोग-प्रवाह साथ विश्वि किरेड मुनाक (सम्बद्ध (सम्बद्ध) - सुकारी, २६४), कोनेड्ड बड़े न समय अपट पर्वा जिल्होंन समाई मार्ड रास्त्र काम सुकारी, ६६ अपट नमबंदन के इस्म विश्वि द्वान नाम दान निम्बर्ड एन में दान को गई जनी। सुद्या ग्रहाक सुद्या ३५६ प्रम देश सर्वत के द्वान विद्यालय हो अपट स्वीठ अस्त्रम, ३६०

विधि विवर्गत होता र- विधि क्या होता

विधि मतमुख होना । प्रयोग-स्थल बार्स्यय सम्बंह

शाक् विकि सक किथि भीड़ि संभागन का वू (११४० (कि.--युलसी, ४११

विविकाति बाम होता

प्राप्त विवस्त होता । प्रतीय-स्थान सुधारका ता निर्मेष शह विविश्वति वास स्था तम बाह रास्त स्था-सुन्तस्ते, स्वत

रिवर्षाल का वरणार हुद्धका के बादल रिवर आती गरहरू होर विश्वित का भागा र प्रयोध—इनके ही से मेरे इसर दिवर्षण का वर्षात हुए वर्षा भागो—मिहेरक, केपका, बादल किए प्राप्त की विश्वित के अभिनो पर, रहती समा ही जो बहुदका परिक्त जिसाला, केटल

(नगर प्रारम विपक्ति के बादल फंड प्रश्ना)

विश्वीस कर बीज बाना — कर नीय देनर विश्वीस को स्वापन का बारम बनना । यथीय — राम्द्रि विश्वीस काल वी अवस्थान कह विश्वीस बोजू विश्वीस नम्प्र कारक सा — सुकसी ३६९), यथभ प्रश्नारि कीन्द्रि केंदर्ड रोडिजन क्षमा विश्वीस के नेर्ड समार्क आयो । सुससी, ३६९

विश्वासि का स्वरुप्त — की कांची — की कांची बहुत नहीं विश्वास । विशेष — मिस निमय वेग में मुर्च इस विश्वास माना में द्वारा अभी में इस समय म माने सेनी मोहनी माना मेरे भूटय वह प्रान भवी है (CINIO MINO — राधांठ द्वारा, 600), नामने पानप शिवद की बाधियां और मन्यश नक कुन्द्रमाना नारे भूभतेंठ हरियोध, १०), नुमा भना किम नन्न कहुँ उनका को पहरे ही विश्वास-पानी में भूमतेंठ—हरियोध, १४७)

विष्यित की जांचा र- विष्यित की भागार विष्यित की भागार दे- विष्यित की भाग देना दे- विष्यित की भाग देना दे- विष्यित की भाग देना विष्यित की क्षेत्रें नाम नाम की क्षिति । प्रतीत - विष्यित के ब्येडी से बेहरे नाम नाम की कामान - स्थीत- हुन 80 दिठा देना

वियमि के बादल

मुनीयन प्रयोग - परस्तु ए गरेंद्र र कृष्ट कार्या का बाउन में भाने वाली वियमि के बाउक का तब क्षेटा का दुवसा विकास प्रयोग स्था का (क्षोसीय--- व व क्सी, २५५)

चिपन्ति के बादल शिव लागा वे॰ विपन्ति का पहाड़ हटना

विपक्ति इंटना

विपत्ति सानी । प्रयोग--- मही दृष्टती तुम्न पर सक्के हाक विपत्त गृह पारी (कृष्ठ --विनक्त, १९३)

वियोग में क्रांटना या कलाना, सरता या सारता हर नपर विद्योग में दुश पाना वा दना। अनेत—इक प्रभवी कहा धनी न कीन्द्री, निर्मित्न बस्त विद्योग (सुर साठ- तुर प्रयम्पः) दन भागी विद्योग के वर्षाको भी तो निर्माण की नोके भरतकारी (धन्तर कनिए - एन्टर. ७०

वियोग में सरका या सारता है। वियोग में अन्यना वा जनरता

चित्रम् कातमा

यश बना पहला । प्रकार अंग-तन विश्त को वर्गन नावी साथ सहस यह होते जुल सांध जुर १९०६।

विरह का घाष की भाष की वितसारी, की लघर

भिन्द्र का पृश्त । वर्षाय—मृति के विरत विकास भीति भूती (भूदक--कायसी, १९१४), अब काहे की स्थान क्यापत, विकास अव के दे कि मूल क्यापत, विकास के दे कि मूल के दे कि मूल क्यापत, विकास के दूर के दे कि मूल के दूर कि मूल के दे क

शिरह का जञाल दूर करका जाग भग्का हाल सिद्धका

विषय का भाष दूर करना । अथोग-विषय बनाम विदि योगिति को पायह कात निकादि सुरु साठ नार प्रण्डेय विभिन्नी हुदय शिकाद सथन स्थि विदि विरुट के दान , मु॰ सा॰ - सुन, ४००४), नदगद तन पुनक सथी, विश्वा की तुभ दयो, कृष्णा दरम आयुर पति एम के विद्रासः। सु॰ सा॰ -- सुर ४००३।

विरह का दांग मेटना दे॰ विरह का अजाम दूर करना विरह का शुरू विटना दे॰ विरह का अजग्र दूर करना

विरद्ध की शास देश विरद्ध का सन्ब

बिरह की कानी होना

दिस्त को दूर करने का मानन होना (प्रयोश--नक्ष मिख-निक्षि प्रवश्च नव-नदन काँडन दिस्त की काली (क्षुत साठ--सा १९१०%

विश्व की जितमारी के विश्व का बाब

बिग्हें की लंगड़ रे॰ विग्हें का पान

विरह में जलना.—नदी में द्वना

विरम् व नम्त हुन माना । प्रशास पर यस है सारित की सामह, विश्व नदी है भागत पुर वैशय-सुन, अरुप्रशः इस हम कर्मन विग्न की वारी, तुन कर वहम नहीं सुन सार- सुन अप्रथ

विश्व नरी में प्रथम देन विश्व में अन्तना

विगद्ध-स्वधा भागना

विष्ठह प्रश्व का बंध होता । प्रयोध---वो पे स्थाध रहत यह, ती का विष्यु विश्व न प्रयोगे (सूल्साल--क्षुर, स्वाह्न-)

बिकद बंदना

प्रमान करती । प्रयोग-वदी पाएक शृतमन जिल्हा वदहि सन्दि चीच (शामक (काल -सुनसी, २६९)

विरोध की जाग

विशेष को भाग । भगोग — उत्था एकाएक करने का मतका हैने पर तैसार में हुए पर विशेष की जाम मुनी होती है। (बटन क्ला-बटनक सर्थों, १८६)



विश्वेश की लाख फुटना

विवेषक्षीत होता । प्रयोग--- कृष्टि नए मुनि कान के फेसक सामि अनेक विवेष की सूटी केंद्रस (१४---केंग्स, १०२)

विश्वास वहना

दिश्वाम को न रह जानां । वदाए—दनका दरिकास यव होता है कि बादम का विवयाय रह जाना है (महद्रो निय— बाव बहुट, संदर्भर

विक्यांक उपजना

प्रत स विषयान होता) प्रशेत—कवि के प्रथम सक्षेत्र कृति इत्यो सम विषयास (१५० (५)—सुमसी, ६०६)

विश्वास का जाना

विद्यास करना । प्राप्तेत --- कवने अवस्य का अपन स्वत्र म रि विद्याम राम्य क्ष' -- गुलसी ३९५

विश्वास में विष धालता

विद्यास के मान को देन पहुंचानी। प्रकोत---एन प्यास के प्रमाद प्रकाद के आहे, विस्तान के वी जिल परित्ये कृ 'प्रमाद करिए -संस्तात, के

विस्थास हिल वहना

पूज विकास के कारे के शक्त होती । श्रयोग--- नुष्य का याद व्यवसार देश कर शहरों का विकास दिव श्रव की आस्थ्य भी क्या है है (दूधनाक--देव सव, २०९६

थिय हंगलेगा,- बस्य करवा

- (१) अधिय या चंट्र बीमना । प्रयोग—नेपनार है विकल, प्रथमना है जो विष शु (सावेश—पुत्र प्रश्नन), वह जिल क्यो उपलले हो । साफ्र-माफ क्यो नही काने कि करे का सै मिनल जा (गेंग्ड (३)—प्रमर्थंद, प्रश्न
- श्रीका व विषय करना प्रमाण विशित पूर्णायक स्थापन भाषाम कराज क वृत्ति भारकार के लिए एक विष समय करने करने हिन्द्रमा के निरुपक भी (बंध समन कर सामा भूलेश भीति वर्म १९५० । बंधना के विकेश हमने जिल्ला निय नमन किया नाम के जानकवारी हमा बनम जीवर के उन्नास १९५०

विष का भूट गाना

प्रसार परित्य बान को मह आना । प्रमाय । इसनिय बंबार

इस क्योरित को बिन की जूट के मध्यम देखे (मानव (म) -ग्रेनकट ठ६

विष की क्यानी बोना

बुरे कर्म करता । प्रयोग---विष की क्यारी बॉद करि, अकृत करा पश्चिमाद कवार प्रथाव--कर्मा, रूपा

विष की गाउ

 चारित काले वाला । अयोग —मृत नहीं देती हो,
 में जी विश्व की नात है। यवल जैसमंद, १३०, आप इस नक्ष्मण क्या है, कृषा विश्व की नात है (मा—कीवाल, ३०%)

धिय का एक्ट बाधना

कुण कर्ती का पाल वर्तित करना । प्रयोग-पहुने बुरी बागा करि कांची दिव की योग कवीर प्रकार-नकवीर, है,

विष की बुधाई

- (१) कन्नावर्ध । वर्षाय-कड वानते हैं यह दृष्टिस यस वयन दी दिव के कड़े अदल गुप्त क्या
- (२) प्रविष्टकारी ।

चित्र की बेल काता

तमा कर्ष करना मिनमें हानि हो। प्रयोग—देशीरी सबस पांकिया कर विच श्रीम वर्ष सुश्राठ कर्षा, १६९०,, बार्नर केलि सहांतन को, कोई भौतिन को जिस केल वर्ष मुख्य कर देश, ११३,

विष के दात

विष्टकारक । प्रयोग—टाट यारे विष्ट यसे ही क्या हुआ शतः विकले है नहीं चयनक आहे (बील्स्ट-स्ट्रिशीस, प्रश्नु

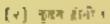
विष योजना

(१) नवाई बनवानी; दुर्भावना पैना करनी । प्रयोग--यो बोन पूर्वित को पूर्व विशास सह धर हमारे विद्धाः रेक्ट पोधते हैं, जाहे वह भी तो नहीं सूच आता बार्यक -रेक केटन म ना उद्योग पात्र नहां यह सकता ब्रह्मक -रेक सक अहत

६० ६ बासरा

पिय बद्दा

(१ विये सा घटन होता। घटान तार केनक सह कारितन जिल्लाकी एउटा दर्द हो ने किए कहै, लोग में परिजाद केनी एउटा करता ५०



(३) फोच होता (

चित्र योजा

स्रोतम् या दृष्यश्यक्षी विपति की क्योतात्र का सक्ष्य करना ह १५७१--- विग नवह नवह का प्रेमकर वीना आया क्षया कर ध्येम के दिन में जीना आया जनता विकास, ३६३

विष योजर

्रिक्टिकारी काम का भूषपात करना। प्रदश्य-अञ्चा, प्रमुखकर भीत क्या क्षत्र ने यह मध्य विवृक्षिण है केसाल-प्रमुखें इत्य

चित्र लाला या होता

अन्यत अधिय नगनः यह शीवः । प्रयोग—वन वासे वर मैनद्रि नाम किय में नामें नेट पूरांक करोर पंडाव—कवीर मैंग्डिंग नशह जेल अध्य किन कर्म प्राचित वृति पद्यः— स्राधिनी श्लापः, नश्यमं यह कि 🗶 🗶 प्रतिना है जिल यह मई नम्भता किम हो वर्ष स्थाप मृत्—वाल सह, अपः, सब प्रामी की गोत क्यो प्रामी वर्ष जक कि किय केंग्रे हमी नगनी रही बोल्डाल—कृष्टियोध, १०७

निष स्थल करना देश दिया उतारका

विष होना

- (१) बहुत कर होता। क्यान—व्याना होती शांद की अपि कान्ति क्या होड , अवोध देशा⇔—क्योर, ३९।(⊕)
- (२) हानि कारक होता । प्रशेष—देखिण प्रथान(१ व (२०) चित्र-कार होता

क्युक्त होता, प्रश्न, हारिकारक होगा। प्रश्नोक- वण क्यह घड कर्माकी विक् क्ष्य कीयक गांड रक्तते प्रश्नाक-कर्नत हुः।

विषय-भग होता.

- (१) जरित करने पश्चा दीना । यदाय नयनि पणक ्रि पियी जिल्लाक्ष्य की मान्य-मनी पीन्यनि की पानिहै (धन्य करित-धनाय, १६३
- (३) कट् शन्य बायने गाननः।

चित्राद का गांड

विकार का भाव । प्रयोग -- नहां बान त्यारी कर पुत को

न क्षेत्र लहे, नाह कर ज्ली पर विशाद-मृत्यहाँन दे (धन० कश्चिम—धनाठ, १६

वेश करना,—शारक करना

वेश धारक करशा रेट वेश करवा

वंच के जाने भेड़ कैया

जिसे बंदार दिना काथ न क्षण प्रथम वदा दिएका। प्रयोग केंद्र आने बंद्र केंगी, क्षेत्र नी काली जिल सुरु साठ ---सुर ४४८३

वंधन्य को जीन देना

वैनाम पर नाम बाना । प्रकार-- कमना की नाम नामी भी है जाने के वैनाम की भीना है गड़ी है (बीनें) जीवशाव पर)

वैद्याप्यत्रहरू होती

क्ष हात्। प्रशय-अर्थन जून प्रेतक वीवन वैशास-नदम बुद्ध कर शासीन प्रशास-राधार दास, १६

व्यंत्य कमना

क्षाम करना । प्रतीय-स्तारानी स नदा इस पर स्थाप होता व इस ठ देवसर प्रम

(मधार ब्दार--अवेच्य छाइना)

क्यथा भगता

रक्ष्मा सहस्र करमा | प्रयोग—न्त्रक यह विश्वा कीम विश्वि व रण, रोक्र देर बनाइ सूं≎सां≎—मुर. ध्रुप्रश्रुर

व्यास्थातं भारती

भाषण केला प्रमोत-अब तक जिल देखा, यथ पर म्युक्त्यान कारणे ही देखा (मानंद ,३)-मेनर्बंद, कर)

वन दानना

निवस मेना, प्रशिक्ष करनी । प्रशेष---वृद्धि प्राणा ससार स्वति की, प्रम कवलित कर कान्त्रे (सुनसाठ--सूद, ४४१४)



शामुका युद्ध है पाउन देवना

कभी हार न होता । प्रथान—जिल्ह के नहींत न शिषु एन पोडी महिं पार्थात पर्शनय पन् योदी (शमः (बाल —कुनाने, २३९

शनि-दृष्टि पहना

सूरी कृष्टि पहला । देवोग-सीव वार्षेत्र कीव की वाल कृष्टि दक्ष पर पश्च जानी सेरेठ-मुख्यक, इन.

वाष्ट्र प्रता

सुनाई पहला । प्रतीय-स्थानार दूरे नव्य पर है। सूक साठ -- पूर्व, ४०६०।

शक्तों के करेड़े अनवा या नगरना

भगानुभा कहा जाना यह कहना | प्रयोग—वृत्ते और पृथ्य व्यक्ति की कीछ गोनना अन्दों के कोई नगाना भाग से हजार कहा बाद भी विक्रिय अनुमा करवया प्रदेश के प्रशास कहा की

शस्त्रों में पांचना

सन्दर्भ द्वारर धन्तर करना । अयोग-वह सामनः है कि बह कृत बातना है जिस बाकार नहीं है। सकता, सुरुशे में नहीं बाब सकता 'देशिंग', दर्श-लक्ष का २१३

शर सहजा

किन को किना पर वहार परिकास काय क्ष्म संस्था प्रदेश स्थाप करे कह सर कहा हो सी नहीं कि नामा परंज असायको ३५७

श्रमण नाकता

शाप्टर भारत्य वर्षमा को ना आहे समान्य संग्रेट अस्ति । समय संग्रेस समित सम्ग्रेट सुन्न समित हो ।

श्रूषण रस्त्रना

भवता कृष्णन्यात्र वनावा सरक्षण स वनः । उपायः । रास

मुच्छ विभीषत् रोळ १ राखे मान कात समृ कोळ (रासक काल)---तृत्वसी, ३५

शरायत का पुतला होता

बढ्न करारती होता । प्रकार —बह की सालरत का कुल्ला चा, चीमू से भी ही संस्था वहा शुक्रा (रंग० (१)—सेंसबट, ६०

शरीर गुल्ला

सरीर का शीला होता। अधेव—रणु एड्विशिंत विकल लिंग कोरे बर्सा गात जिमि शालप और शिम० अ गुलमी, अंदर

सर्वा विश क्रामा

र्वन होता. योक्ट श्रीभ होती । हवीम —कई हिन हे दुम्हारी ऐकी क्या वर्षों हो रही है × × दिन-विन हारीर निया परना है आठ पंथाल (१)—मार्शन्दु १८)

वर्गार पुन्त ज्ञाना

क्षांत क्षरना

भरकु होनी । अभोगः --शरमा तो यहो है कि जल्द स्टूटने भीर बीच होने के पहले ही सरीर भूटे (माठ प्रसाठ (१)---मारनेस्ट्र ३०६

शरीर छाइसर, स्थानना

पत्य कर द्वान त्रांतर १ द्वाना । इत्यानी सात्रीर साह्या जनसभागों ने स्थार साथाश्चा के द्वान स्थान के द्वान करी को जो सुरक्ष के वा करून दोन पहले हो उसस पानी र जी छोड़ दिया पाना प्रश्नात—राधां द्वास अवशी, पता तथा कि पान पहीं ने कर्ट भोनते के बाद उभने हों के हो की के दिन धारी र स्थान दिया मानव को प्रेमचंद्र, इह , भीर कीन भागता है, तेरी अरह मते की प्रजान क्षमाम हम क्षिमधान में जानेर खोगना पह (सम्भी — नाइन. ६५ , परि प्रेमी को यह निज्यम हो अन्य कि यह जाने पर शिष्ठ की प्राची में भागी हुई कानू की शक्ष कंछ क्षत्र हैया मनेना तो वह चाना जारित खंगते के किए तैयार हो मचना है। जिल्ला हा — अपन, यह न्य

भारीय जलना -- में भाग समना

(१) कीच की जानर १ प्रकोब—शोग की कीव वृषय करें श्रेम कार्या कई ख़िल साठ—सुर १३३१ क्याब मेन की बायर कहानी मृत्यत सभी यन नामी (सूठ साठ—पूर १९६१) (०); स्थाप व कक पृथ्वी सुमनाया अस्तित किमोदि अरे श्रम ग्रामा (११६० (बाल)—गुलसी, ६६), विकासिको के पृष्ट के बड़ी कही कार्य स्थाप स्वाप्त केरी देह भाग हो भाग है परिदान—पेमचद १८६

(व) क्य जाता

शरीर त्यासना देव शरीर छोणना

प्रशीर भर जाना

शानिक पत्रह हो। बाधाः । प्रयोग—मै तो चायको कहवान कव स कसी ...कायका बारीन अन्य गया है (चैतरें --अउक्त १४३

क्रवाव में भाग लगना

देव शरीर अलगा

शरीर में गरम हवा भी न स्थाना

भागंत भारतवार में वर्ते हुए होता। वर्तेम -वर वर्गत मक्षार मुधाद गाम शाउ तम साथ न काढ़ भागंत हो-लजभी, ४६०

हाजीर में न समाना

अत्यतः स्रविकताः होशीः यक्षेण--वृति सानी पुलके होड आत्रः समिक मनेह प्रयास स वाना 'राम० (कास)---सुलसी, १९४)

शहार में किशमी द्वीर जाना

र्राप्तांत्र ही जाना । प्रयोग—एक दिल ही ती उपने सारीय में गरी में जीती तक कॉट गई (ब्रान्टर—यष्टवात, (००)

शर्म सून कर का जाता

(सनाः गृहाक-अर्थश्रया घोषार पी जाना)

राम से गहना - गरदन उटना —पाने पानी होना बहुद सरियम होता । प्रयोग—मने परों की दिवसों नी दनके हाट देश कर ही शर्म में पानी-पानी ही अपनी हैं मिल्ल (१ —प्रेसबंद, इपक); सैन मिह बारे समें के प्रमीन से गरा करना या (सपन (१) — प्रेमबंद, ३०५ , शरम के मारे उसकी दर्दन भी नो हुट सर्व होनी बेल—समाव, १५३)

शर्म से गरदन स्टना रे॰ जमें में गहना

शर्म से वाजी-वाजी होता के हार्म से बहुता

छद्य की सरह जीता

गोरपहील होकर जीना । प्रकेश—भीवत वयः मध् भीतह जानी 'शामक ल'---सुमसी प्रवश्चा

शस्त्र प्राप्त देवा

शहर काल नेकी । प्रयोग--- विश्वन सहस्य भीन विकार । वह बूबा एडि कायभ पारे (नेवायत २)---केवाय, ४११)

(नवा+ प्टा+∺शम्ब कोड देना)

शहद् लगाकर काटना

क्यर्च रकता । प्रयोग--- मृत्यान अन्त सीमा बनावे, सहय भार वे बाटी सुं० साठ---सुर ४५५४): पुरतीट की सहय जनाकर अन्त्र सा क्या ^१ (गंबरे--- प्रेमधंद, प्राप्त,

शाला बढ़ाना

विक्तार करता । एकोज---होइडि मोड यो राम र्राच गामा को कृष्टि नक्षे कार्यो माना (गामें) (बाल) --तृतसी ६६)

शासीकतार करता

कादी ज्याना का नगरना

दिवाह मृत्यान्य क्रियर होना या करावा । अयोग -और वे साही जमाई किसने वो ? (रेजधीय--एमव वर्मा १७८)

शांने नदाना

(१) किसी तक बान को बीट बहरता—नीय बंगाना । प्रयोग—नीयत रेलन बान क्यान को वेंनी उन्तर्सन के नाय क्यान रिवार के बहरावत (प्रयम्भ ही सकता है में बनाविकाणे पर सात है करें। प्रशास बल्कि तमी परिमाणित करने हुए बहिए के परायों में साथ उनके प्रत्याणित करने हुए बहिए के परायों में साथ उनके प्रत्याणित करने हुए बहिए कर पाँच देने हैं रिवार के प्रयास (Supply) के स्थापनारिक नियम के काम करने ही है जिल्का संचारकारों की साथक बीट दूसरों की मानक बीट

- (a) मध्य करावे सिवार करता ।
- (६) माएकम लेख करता ।
- र्दको प्रमाणकीय को प्रमाणित करवार ।

अवस्था अधिका

मान की कार्य करवी । बयोग ---भागर विश्वविद्य में करें कर सामीत ही मान क्षेत्रक--विश्वविद्यात क्षेत्र)

(ममान महान-शास बाधानमा)

शाम में बहुत लंगना

रोबदास या मान नवांदा है दीव जाना या कभी दोनो । प्रयोग—सन्त्री दार्थ के स्वतिनियम कविस्त्री दी साम में बद्दा नहीं वयना (कर्म०—देशबंद, १२०) (नमा: महा: — जान में क्रके जाना)

शासार्था खटना

प्रमंग करती । धरीय करीन अस्त कोई साहबी काकानी स्टब्स के निर्मा असे स्टब्स क्षेत्र करता प्रस्त करा १ प्रमुख्य १९६

शोध उत्तरका

मानम होती । अभोन — पाम अन्य करी है और विकास कीम नामर नहीं बाल कहुत है तक कुरूक

शासन का अबर दोन्हें देवना

त्रापन मार्थनित अस्ताः पर्यागा दिल्लीका सामा स्था की रोमो जन्म रीजी कृति कि संस्थानकारी प्राप्ते के राज्य कर स्थापन में सुनार दुक्तामां हुन

शिकते में कथना

पाने बल वं का देश काम वं प्रमाना । प्रयोग मिक्स म पावर विक पर देन कम है दिवर शिक्षण मुख्य असल ६११, प्रवर्ते क्या केंद्री क्शांशिक विकास की बाते की इस्तानक को इन्हें केंद्रा दिवर्ग व कमा कि बेट्यां की डॉ-वर्ग करने के जिन्हा और क्या न सुन्ना (गयन— पेमचंद्र, २६ (नवा) वहान — हिन्कांक्रे में जनकरना।

जिल्लाकर्ता का क्यूनर बांध्य देना

हर शिकायत करती । प्रयोग—यही सर्वेश्वर अध्यक्ष से यजनी-यम शिकायती का रफ्तर साम दिया (१९८२ -प्रयक्ष २२०

शिकार लेखाना

विचार करने में नहायना देनी । प्रशीम--नहानम् नृष्टित प्रोप सेनाइक । कर निरुक्तर कन काथ देनाइक ,रीमस को सकती, प्रकार

शिकार फंपना या होना

विश्वी को सारवी को कुठ कुछ यह कर क्षेत्रामा जिनके बाध होने काल हो र स्थान---काब का विकार में बहुन हो मुक्तेन है (राहांक प्रकार---गांधांक राम इत्याह, विवारों ने बधनार का विकार कमा दमसे कहा हेड़ हो (सानक क्षा) - केनकर २०३६, तुम्हें बहुनाने की है किनके करी का वोच होना कम इन बाकों के जिनाह (बुद्धक--वस्त्रन, 8)। । वकार कृता --- जिन्हांक क्षाननार)

जिकार बनना

(१) क्यात्राच म काना १ प्रयोग देनी कारणा अस वह देश अस्तार क्रिक्षीय विजेतायो कर विवाद कता. अह मिर —बाठ सहद दृष्ट , हम परिश्विषयिकों के जिलार करें : है सीत्रात प्रयोग प्रशे का कि साम का अस्तार कर मुख्यायद होने का क्षण्य कान केले पर भी दृष्ट गान दर तो यह कार है । १ वहार और परिश्वा हमें त्यक्ति भा । यह की प्रकृति हो । यह क्या कन क्षणे हैं चहारिक क्षण कर दि ५०

र न लगा बनका । अगोध । यथी की प्रश्न को कालियों के जनगार मा अकत विकास करू औरके गुलावक १४%

शिकार होच से जोता रहता

व सर्व कर भ गामी कर बार में निवास ताना : प्रयोग----



क्ष, तेर अध्यक्षक में उद्देश किए यहां नहीं गया । जियान हाथ में निकल जायगां (चांडीक--निराक्षा, १६०), श्रवत कही यह जिकार हाथ में निकल गया तो किन न जाने किन्ते दिनी और राह देखनी यहें (सेवल--प्रेमचंद ४

शिकार खुना

(समा: मुहा:--शिकर पर पश्चमा)

बिग्वका खोड़ना

नवी बात सेंड वेनी । वयोग-वेनित, नाव माहब ने वह सवा जिनका सोना (वेमा०-वेमचंद, २५६

(तमा = महा=—जित्यक जिल्हाका १

ज़िप्पर जमना

शीन सारता

इंद का गक्षण कृषभाषं होना | प्रयोध-न्यु स्थान करू होत करी भू सीम गई तुनु मानी (सूट साठ-सुन, १४०६) (समाठ पृहाठ-प्रदित संस्कृत

शीतक बाणी

चानंद देने बाकी कीठी बातकी । प्रयोग—मृति बुवंच निय कीतल बाजी । अवत विकल जन् करिन वन हानी (रामक रज)—शुलकी, ४६४)

शीराजा विवारमा

(१) इंतवान सराव होता । क्रवेय-सभी वी महीने भी नहीं गुजरे, केसिन बीगाका विभार बाग पंगण (दे)---प्रेमधंड, २०११

(२) डांका इंदना-किनाई कर कानी । (समाक कृता :---कीराजा जूनमा;----ट्रटना)

इरीश नक्षाना

तन होमा अधीतना स्वीकार करती । घषाण होन पत्रो आधीन है भीग नवायन नगरि वृ ० स० — वृन्दे १४५ (१) पोदिन सम्बद्ध का में कर केनर । प्रयोग-आपने देखा, इन दोनो साहबी न पावजी को केसा आँमें में उत्परम निया रे (ब्रेसार-पुरस्तद कुट्ट,)

(२) वृत क्रांग ।

भारते में उत्पारका

शृष्क श्वसद्वार

बनरोगती करती । प्रधाय-और श्राप सुननं काही सुम्हता का व्यवहार नहीं विद्या (विद्याः)-कीक्षण, १५२)

गुन्दे करेगा

बारताच्या या दुःख कर दूर होत्या १ वर्षाय-अवा वर वेर्न नहीं, क्ट्रें न बहुत सम कबीर प्रशाय-क्योर, ६०)

हाल सिदनः

क्ष्य का हुए होता। प्रदेश-स्ति विश्वनत की मून न बाद (सुरु बाद-सुर प्रदूषक), कह मीना विधि या प्रति-कृता विभिन्नित न पावक विदिश्चित मूचा (राम्प्य (स्तु :--तृक्षकी, प्रदेश), यह क्ष्य पूनि अवर में यह बरवन कन सन्न विश्व गई नद्दर एक्षार-नेट्य, २२४।

हान सहना

बच्द रामा । प्रयोग-अपनी करनी विचारि गुवार्ट साह म मृत सही सुठ साठ-सूर, ३५३ : गृन वापनि मान परै असु-नाव नमोत्र के योजनि मृत गड़ी समण्डनिस-समाठ, २०३)

शुस्त होता

बेदना होती । वधीय-जुन्दाम स्वामी के दिवृते राति रिवय वची मुख सुरु बाल-सुर ४०९०

दीकी किरकिर्ग होता:--वारी करना

धरमार्गनन होता, वर्ष कृष हो जाना । प्रधीन—उप्रदेशधं कृतारी क्या केली बादी जाती की है (रंग० ११)—प्रेमकंट प्रश्), जानी बाध किन को नहीं बचा कार्ज हो थ अ बादी जानी किनकिनो हो जानकी जिसका—प्रेमबंद, १४०

(समार वृहा--दीवी कटना, -- निकतना)

रेकी प्रधानमा-अस्तर

क्षक्त-क्षत्र क्षत्र कार्यो, बीच भारता । वयीय-व्यव से क्षेत्रकर कीत्रक के जोतन क्ष्मा जात हो भीर वहां जाकर समा क्ष्मणक हो। असं इसक्द २६३ जात हालो क्षार



साम दबाई किने बनाये, समाई तो समाई है (ब्रॉड०-हैo सo, १४१), माना वहीं संबी माना करता है हैंमाठ-ग्रेमबंद, ४०५।

(सम - समाव देखी जनावर होकना,

बोक्त सारता

रंट होस्ती बस्ताना

होली जारी जाता

ए॰ दोली किरकियाँ दांगा

शेर का बच्चा और होना

बहातुर व्यक्ति के बहातुर सतान होती । अयोग—वंश का बच्चा होर हरे होता, सभा नी हो शही बावना विशेष— महापाल, १०३

शेर की माद में धुमना,—हाथ राजना

भागवाम काम करना । प्रयोग विकास निक्रं की गुका क प्राप्तकृत कर क्षेत्र काना है है (शंधार वेकार --शंधार देखा, प्रश्ना: बोर के नीट में कृतना कोई बहावूरी नहीं है, मैं इसे सुसंस्थ क्षमञ्जा है 'गिटान - प्रेमबंट, कर

होर का मांद में दाध प्राप्तता दे॰ होर की मांद में पुणना

शेर से पंजा सेना

यद्यक्त के मुक्तवमा होता । यहोत—आहित्समा की सम्बो का संख् समग्र १९वर है । यह सब्बो का बंच नहीं है। होर के बंबर नेवर है (वेयर) ३१—प्रेमबंट, श्राह

क्षेत्र हरेला

- (१) श्रक्त बहादुर होना | प्रयोग—हो नमें है अर वे नी इस समझ वर्षों न वेचमें हमें बेकार वर्ष (कुम्सैठ--हर्मकीं), १३६१, यह सब आप ही के हाया में है, पाहे तो पान रिक्ता श्रम हो बाल भूठ मूदर्भन २ ६
- (०) निर्मेश और भ्रष्ट होना अयाग--नम सही मुमकाराहर के मन्द्र इसके जान मनोगे ना कह नमा हार न होतो है जानक 2 डेमबर २०० उसकी संदृष्ट क मन्द्रीर है। कन्युष्ट निकल भाग संबह परी नरह होर हो सबके बुद्द---अंक नर्क १६५०

शेर-विक होता

बहादुर होता। प्रथम मुखा है दसके वर्धवर बहा देश-दिस का कलाव अप १२४

शा-वकरी का एक पार पानी पीना

मनक-निकंत कर को एक नमाने अधिकार और मुक्ति होती । घरोम न्यल पियन निष्ठ वर भया नाम (राष्ट्राठ प्रकाठ—राधात दास १०), उनके मोबा कि अभी तो सर्वत कर राज है अभी तो होए और अकरी एक पाट पानी वी नमते हैं करूठ देंठ सठ, २५१ , इसके राष्ट्र म संग्र धकरी एक पाट पानी वोले हैं मुसेठ—सगठ दार्ग, ४६

शंकात की भाव

कहुत जपनी बालू । प्रयोज---केंग्रम कोर्ट की बीतान की मात की तमह बताहर है (पैतरे-- असक, ६१)

रोनान की फटकाप

वृती दया होती। प्रयोग-सम्बद्धा पीताम की फरकार राज्यों है केमाल क्रिकाद, इंदर्स

शोधा की नदा उमहना

गोना का वाधिक्य होता । अयोग—संग-वंग स्वस विकार्ड उक्तरि खर्ड कीन भरि चनी बोभा नहीं की उक्ति है दनक बांस्स खनाव, १४२

र्गोक वर्णना

भीव होना । अवस्य—चडो का योदा वर्शमा वा, उनका दान गोको (सानक (हा--वेसवद, उनके , सकता, जब सापको भी योदा वर्शमा (सा—कीशिक, २१०), दुवरे प्रोफेसरो को बोटिया में रहते देश x × बुझे भी कोटी दशने कर बीड बरोस मेंरेक--युशाक्त २५,

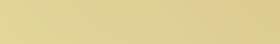
शरभाग जगाना

ामान व वंड दर अब विद्य करना । प्रयोग---क्यट समानि कहनि कद्य जायनि मनद्र बसान् (शमः) (यः --वृत्यसी, ४०६) भौगरोजा करना जा स्रोगा

प्राचीत करना का होना। क्या में जाति-दित के निर् गो गांग ताता है, मुखदा के हाथा उसका श्रीक्योदा होता है कस० भिन्दा २१६ दय मानि काना संगाम के खीरणण तथा हटा जया--नुस ६१ , वर्षिस में जिस गांग का यो गांगस किया का सामा प्रसं क्या किए जिना बारण न सामा किया का सामा प्रसं क्या किए जिना बारण न सामा किया किया किया क्या

उसेत यज

निमन यहा प्रथमि का भागा विश्व का अन स्थाती होत है स्थनका के सूह कार्य भूषण प्रशाल सूषण, १६०



मंक्ट के बावल अंदराना

यारी जोत से विपन्ति का घेरता। प्रशोत--भने ताल, बाक बण्डीयन के अध्यक्त पर कीर मतन, कामी, कोल वाल राज्यों पर सकट के बादन कहारा हो है (वैसालोव (३)--महरूव, ५४-५४

(समा - न्हा---मंश्रद के बाक्त धिव आमा,---

साला) मंकरा समय

भ्रतिकत का नित्र । प्रयोश-सर्व सांकरे शृक्षित्र, समस्य हिनक री जिस्सा शृह्यको ३४ नहीं विश्वीर एक अस् ही की दौर, साही और हीर, काहि बाकरे समारिये धन्न कवित्र - धनांत, ३८४०

मंबर्व के मार्था (होना

विपाल में सहायक होना । अयोग---शुव वृद्धि, नाकरे के भागी (भूत साम-- मूर, १४२

संबुद्धित हाय से

कंजूही है। प्रयोग—प्रक्रिय का क्यान करके संत्रमी प्रये बहुत सक्तिय हारा साथ करती की सनमीट सहस्त म

शंग होलकः,—सर्गा दोस्त्वा

माध-माध चृतनः । अयोग-सूर स्थान जिनकं भन दोलन इति बोलतः, प्रति वीचत केन् (सूट साठ--भूरः ११०० : हरीचर मंग भागी दोली सुदर कप-भिकारी गर्दे (माठ स्थाठ (३ --भारतेन्द्रः ४०३

क्षेत्र लगमा

माच में धनना (हवीत -भोट कान भवर नंग नायहि पद्य-पारम्मी, ३६/११); चर की नारि बहुत हिन जाती, रहिन मदा सद नामी 'सुंच साध-पुर, ७६), वृत्तिहर कृत्दे विदुल संग नामे (संस्व का,--दुलसी, ६९७

संग-कर्ता डोलना देव संग जोलना

र्थगाम के बस्त पर

यान्य का सब किलाकर । प्रधीय—गोकिस्टी में जैने संगीत को नोबा का कहा—प्रवाही कात है, जिला हुनी सोदान प्रमुख्य २५५

नेशीय खढ़ावा

बहुक वर वक वरह का नृजीका हरिवाय कराता । प्रयोग —वे विवाही नवीन वहार बीचीन वंटे फांपडी के बानते क्षत्रे प्रशास में रहनते बाले के (१४०-२)—प्रैमचंद, ३५६)

मंत्रीवर्गा बुदी होता

क्षामदान देने वाचा होता । प्रधीन—क्षा है निवाद जनोदा नदम जान नजीवन वृद्दि । सुर सार-सुर, ४३०६,

गंड के गंड रह जाना

चह होता, वृष्टे होता । प्रशेत—हती के हम जिन वाली को क्यमी बीत बीजना आरम्ब करते हैं उत्तम 'टकार' के बीच बाजी तथा की च कि पटक मी ह्यारो एति कव होती है वर बीते के जहां कृत्या में कुके वहीं गंठ के बंठ रह बाते हैं '90 बीठ—90 बाठ विठ, कों!

संबेह की हवा बहना

सर्वेद्र फैन्नकः। प्रयोग-नथरं भी नहां कही स्थीना गया वहां के कृत ही स्थेत बाद्। कार्यक, नयह की हका नह कृती की (फिली-नियम्हा, ३३

र्वयन्ति खाना

सब कोर बरा-पूरा होता । प्रयोग---अब ने उता मैन पृश कार्ड । प्रयास निर्देश सर्वात तह कार्ड (गम्प) (बारा)---कुलसी क्यो

र्तक्क रूटना



संबन्ध तोडता

सम्बन्ध न रवानः । अधीन—मे भीन कोनाः सरव पहणे सम्बन्ध शीतः कृषे में 'सुठा० .२,—सञ्चल' ४६६।

मंसार

मैक्स अंदेश लगना

सन कुछ कुमारक कीर मुना समना । अक्षेत्र—सीट कीर विकासम्बन्धन विकृति वातन अति अतिकारी स्मीताक अ —सुनती, दर

गंसार की द्वा नगता.

- (१) कामहरतन्तुरातः ही नरगर | प्रयोग---दोन सुम्या-सर्वतन्त्रः ती मनमे । इदि समार नदार म परमे नदाः ग्रमा०- नगर, १८६० १०
- (५) एको होना । प्रदश्त देनिय पंत्रोप (१) में (४)

र्मकार सहना

कारण का नाम होना । प्रयोग-विश्व का विदि वय कहिएँ नहीं यमें समाय सुरु सारु मु ।

संसार छोडना

- (1) समार में विरक्त ही गांगा। प्रयोत-प्रांती है हो मर्गार्गेंड उनमें संस्तर कोड़ दिया था। विकार अगल क्यों, १६), हो मेंने अब संसार कोड़ दिया है तम विन्नी की बान मर्गें बहु है संकाल-प्रसाद, इस्टरा
- (२) यायु को प्राप्त होनर । प्रशोध—विश्वकेना को एक पुत्र हुंगा, यर उत्पन्त होने के पात्र ही यह प्रशास की ओर गया (विश्वक—म्याद कर्मा, १०.

(थमा । वृहा - संसार व्यागना)

संसार तरहर

मोद्यापार्थः । प्रयोगः सूर्य इति के सूर्याची कर्णाविकारः समारं मूर्णस्यकं सूर्य १७३६

(समान पदान । संसाद-मानार से तरना

संसार में पदार्पण करना

समुभव प्रत्य करता । प्रयोग - भीर बीजगण्य ! तुमन स्वयन सही बहुना है कि प्रवेताक के दोगा का सहा करता — प्रत अभी सबीच है, असार में यह सभी पदारेत कर रहा है। विश्व — भगव वसी, १४

मंत्रक से उह आता

- (१) प्रवसन में न रहता । प्रयोग—क्या समार है मेच मुशा-स्वार विश्वास वह तथा (सांधार—बील देख, ९०
- (३) वर वातर । एवंस--तृष इस बात कर संद त करो वि तृष्ट्रारा विश्व समार से उठा काता है (साथ पंठ ११) -भगतेन्द्र ६३३ और मोन उनकी बहायमा करते म बह समार क एक एक कर तह मुके से (गूंव तिव—सीव मुक् गुठ, २४६

संमार में बन जाता

नर माना । त्रपंत्र---का नो देवो के ब्रशंत पाडली वर पाडी रच्छा किए समाप के प्रकार कर सार्क्षको (सान्क (स)---प्रस्तेद श्रुष

ावः वरः वरंकार से भावद्यमा उठना भूक कर ज्ञानः युक्तर ज्ञाना —विद्या हाना, याचा वर्षभादाना

लेमार से अपर उदना या होता

अमावारस्य होना । प्रयोग---भव सवाई दिन दिन बहा । (वर्षि कम्प कर करर नहां १८०- जागाओं ११९८)

संमार से नाना इंदना

- (१) मन वाना १ प्रधाय --वह तीनं की बड़ी होती जब दबार से बेटा नरनर दुरमा (प्रेमा०-प्रमद्यद, ३५५)
- (२) मन्यान के केता ।

(वमा॰ मृशा॰—मैसार की सरका त्यामका) मैसार से विदा करका वा होता

मार कालना का अपना। अधान—किस पर को हुछ कोननो यह किस में ही महती की और जब न यहा तथा की मंगार ने विचा हो नवी (मानक का—क्रीमक्ट 28)

र्गम्या चौतना

नायो पारस्य बरनो वाल स्थान प्रशास राम्यस्य स्थान स्थानस्य स्थान स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स् स्या स्थानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्

मन्त मृत्त करता

नेना का रूप । प्रयोग असमे सामा कर मैंने बुका की

कृत समय सुरूप कहा (सामाठ⊷केनेन्द्र, ३४०) कल इन्हें कहन समय सुरूप कहा (वेमाठ⊶ क्षमतंद्र, ३७७)

मधर्षः सामा

भिषाह सम्बन्ध की बात केन होनी । प्रयोग—कई बनते से नात कीत हुई, कई समझ्दयां आपी पर उसने हायी न सरी (मानक को प्रेमसंद, 40)

सर्ज्ञेच वर्णन

पेसर निका मेरे बार्गन को हुनत और प्रधानपर्यो हो। प्रयोग अवस्तिन में पापने बड़ा श्राप्ति बजीन निका है (प्रचार के प्रका प्रदार सभी २०

(शयात म्हार-न्यातिक स्थित)

महिया ज्ञाना

वृक्षि प्रदासे साथी। प्रयोग—प्रकार से मोगना की प्रतेश गर्म रूप नेता विद्या मांग्या गर्ग में देवकोठ एक राज राज दिल में अपने प्राप्त यह की महिका नवा में पर, प्रश्ना मृतिया केने हुए हैं रंगठ १) अपनयंद्र, रेप्टर्ड, सू पहिना गर्म है। इनने ने और चैंग की मुन्दे बना पूठ पूठ — सूरवीन, सह

सहक की धूल समेरना

सारहीत को महत्व देवर । अयोग-दिवसी की कुछ के वे दरते की बात करने अवने हैं तो अवद की भूक अमेटने अपने हैं ,गुरु निर्माण पुरु पुरु, प्रथड

स्पृष्टा करमा

हु हा क्षाद्य करी रहता। जयाय--- तुम्कारे विका बीर कीन क्षेत्र हुआ है। जिसके निक्य यहा पदा सक्य क्षाप्तन --समस्य क्षा

व्यर्की होता

(१) बहुत पटन महना। प्रयोग प्रमासके पही या उपने करी करोलका है। में भी बदकी क्रिक्श के संस्था करो

हुई हूं (गोदान—प्रेमचंद, १३३)

(२) विनदान होता ।

सम को देगा

समरकाती समामय करना । प्रयोग---नामास, तू ने कह पदा अपर किया भी मेरा पत मा दिया (येम संट--ल० सार ७)

(लगा॰ मृहा॰—सत्त तोड्ना)

170

O. P -185

न्यन क्रीपना

नेत पर निवर रहना । प्रयोग—कहेनि देश और प्रवेश सारी कार्य नाम नाम रोग न आयो (पट०— जायसी, १८५६)

मत्तर करें काए होना

हर नरह का कर्न किन होता । अधीत-व्यवसी ही पुराकी है, बेनी निमादे हैं । नजह कृष्टे आई वृद्दे हैं (मैसाव-चेनु, एक !

सदम दश्वाका होता.

प्रमाण का मर्गाका होता। प्रयोग-भाष्यका हो पत्री स्वाधिको का क्षत्र करवाना हो गता है (प्रेमीठ--प्रमाण १६०

मनक सदार होता

वृत्त होता, विश्व होती । प्रयोग ---वर्षी-क्यी ऐसी सनस् भवार हो अभी वी कि सब क्षेत्र-बाद कर कही आग नाऊं (सान्व (१)--वंबर्षद, १४८)

(यश) वहर क्लानंस सहसा ।

सक्रमनाने हुए जिन्हम जीवा

मन्त्री से निकक आसा। प्रयोग---नमी बन्ध मेरे किसी तीक नाते से तन कर नेते ही देशक पर में नहीं सूरी कता कर निकास अध्यक्तने सकत पर नने गत से (अपनी सक्त सुध १४

(गरा) प्रशः — धन से निकल जन्ता 🕽

धना होता

नमादा बीचना

क्ष आरमी वय हो जाता। प्रदेशन—संबन्धि सब लेखा सम्बाहा कीचे केंद्रे रहे। काल्य होता का विजी के पृष्ट से जीन ही नहीं है (देगा) प्रसन्धद ६०

(ववार पृहार---मन्त्रादा सारता

क्रकारे हैं जाना

श्राप्तक सम्पन्ति स्थापि स्थापि स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित क्षांत है सर्वात क्यां तत्त्व की अपन्य प्रद्रमाणक अह

कारते की शास्त्रीण

ब्रायक्ताके कार्य-अवस्था अवस्था अवस्था है। एक हो। एक हो। क्षाती कक्ष नाती मूं या ० पूर ५ ८६

RE HE MEETER - WINNES ET ध्यपने और राज्यकारी

भद्रका क्षाप्त देव व. कार्यकाला-दूषण दूर देण व. म. जन्म 🔺 🗶 हाचादि सारो में हमान सीन प्राययध्य (Activity) की प्रवास की प्रतानन व प्राप्त प्रमान पर न्यान कर है।

क्षांच करते की क्या के तरश्री करना और वहरात में

धारण में बान कभी व जिल्ला में जानकारी उन्होंगा

श्रमध्ये की बाम

अपना विकास क्षमा दिन यम अवन को व नाम के क्षमा MINE STREET, THE

शयका शोगा वाबारमधिक होता, कार्च होता । वर्षान -- हम व वाल्डी काल ऐसी, रेंकि की कुरती सकी पुर काल-पूर much, and well if over over 1 as el-भागम करता तथा सकता (रामक सा' -- कुंग्यारे, स्थार - कीय

क्योत-मूत्र के की काई ईजावकार कर के, पर कर हुए ment ift ner (eine in). Grac, be-

श्यमा के जाना uift e femmit vont, corn eine et tiet :

व्यवस्था का बोक finen gier : gebe-meile femile ale un ben. बहु सेवार मुख्य करि केवा (करीर व्रवाण-करीर, देश

ध्यथमा वेष्णमा कलावा काली । प्रशंक-नी की तुर वस्ता देखते ही क्षाले का तब क्या व बाव पृटेश-वाका, ता

क्षमान्य होता किशी बाई से बिरम्स होता । वंदर्श --वॉवरे से हिन्ने मुख्ये है प्रथमें कियाँ। बार्व का विश्वपंत प्रथमें वे पूर्व हो meger fe fiene que fiete all - am der eine

शामारं में वा वर्ष 'मेमान- क्रेसमार, ३६९

बुक्त करते एक वृत्ति में अन्य करिया अस्ति। हैरहर

बन्धे ही तर्गार की इंच देश पान्ती पत्र मानव गरा मी

कत्री नहीं । इसीतः अल्या सनवन विशेषक का, बाना

इच्छ संबंध की संबंध हुए हैं है। यह बीची वृति है।

क्यार बंद्यक-क्योर, ३४% वे जिनकी बचनेतु रहि देखी.

विक्की बान व्यक्ति किति केरी भूरु प्रार पूर्व, दशक्त,

क्षित्रक क्षत्रक क्षत्र क्षत्

१९७७ (साम) - कुल्परी, ३६ , यह रख अपने नामी जनह ofe tret feet den dens des, ret, and and a

बाक्सी क्यान धारतार (वैकारत है) विकार देवह पान

वर्गि अवस्थात कार्या कीच (रहीत क्रीकिल क्षीम, प्रत तर ही हर कार्यान है बाजनी कर को मर्शनई या क्षेत्रिक ही

एक कदिल एक्प १४० अभी दर्श में इस है रैंदन्त

हम हिन्दुनों की क्या व्याप वें भी व्यंती नवीं स्वही है

चरम् वैच्यति से होना । प्रयोष -विका सी या फोप नाजन

हरू विकास दश्या कावता । एताचे कार का समाई देनी र

प्रकार करता लड़ बार सुधारी की समाई बनन मिनन थे,

काला पूर करा केला । प्रयोग-वेले बहुन परार वि

रुव इकार र राजी पानी में समार्थ कर हु। समार व नाना

है, के बर प्रधा का पूर्वर क्षेत्र है। मानव के प्रस्केट है

जीवान अवस्थान करना विवर्ति वाच्य करनी र प्रशेषी

किन्दिन इक करना ना उत्तर नहीं है, तुम्र कार्य में माननी

क्षाच हुरवाई कहरे हो अन्त (हैं: प्रेमबंट, प्र०१)

कोष्टात पर कृषा कुम्राठ-निर्मात, श्रव-प्रदेश

and date 1 -dated CM

शता कोपाव पर होगा

(१) वह दूस पूर्व वेदी र

(४) का १व पूरा है शाना ।

(PRT 9 4 181 ER!

(६) सार सम्बद्धाः ।

अन्यत्त्वे सम्बद्धाः

क्यार हे हेगा

सकाई का देगा

gegra det

munft ber



स्पन्ने हैं थी तह

भीर मीना वी मधाई है रहाही सामक का देखाई हुई मेन मारावी अवदेशाय को अपनी क्या है भी है की है मेर कीपाल ११६

मकाई से

- (१) मुख्यमा केर प्रकार नुष्ट करन्ती अनुस् करन्ता कि दिया संपादी ने केने कर्तावर संपाद क्षेत्र करने कर स दिना है जिल्हें चलक तुरु
- १२) देमानगारी में । यथीन-- का के कर्याच प्रकट करन इस् कहा-- नंदर काम है, में क्यारे में काम करना काहन ह रहेक्य- संस्कट प्रक
- (१) मुनवर, विना दिनो पुराय के । वर्गाम -- केटी के गाँवे कांची कांचाई के बालचीत नहीं तुने । प्रवर्क कर वे नांद्र रही हुई है । ऐसर (१) -- बेलक्ट, इस्त

क्की को कामा करना

मने को क्षा बनावा । जनोच-दाक वन बोन को अधन में भी क्या कर कुम्ब को बावा (बोसक हर्रामीक, इक

मकेष क्र

माण भूत । प्रयोग -- में यम में क्या का नहा था, यह स माने क्या जान की कि तह क्यांट पूट क्या करत कुले हान्यांत्र्य ने मान वहां मानेन (१) - केम्बंट, १०६८, वस्तु-या प्रयान ने नाम की नाम हुए कहा नहीं किस तीना यह प्रयाद हम को काई बान नहीं है नहीं ने नाम द द्वा (१९ की स्वान्त्र ना हम्हें प्राच्य के बान्त्र काम प्रयाद पूछ बीच पहां है मो -- कीकिक, अन्त्र

मेर बाज रहा है जा--कारक स

सम्बंद क्यार

र्वताञ्चल स्वर्ताः । इतात् । ततास्त्रको स्वरं के जिल्ला सार्वते भूगि भूगि अन्तराद्या स्वरंग वर्षेत्र क्षेत्र क्षार्थः वेताः हा (व्यक्तिक स्वरंधा⊶व्यक्तिक स्वरंधः होताः)

क्ष्में बाजों की जात रकता

इश्राप का सामान क्यांप रमाना अनीत दश मध्यी शही पर निगरद कालिए इस नुमान बामों की मात्र गीयर 'मेमाठ-पेश्लोड, स्पा

सर्वाद द्वाची कंपना वा होता

सार्च बहुत क जानक होता अपने बड़ी हैतिक पंच मुनीरेंच की के लिए एकेंच दूरती दल नवा पुलिश्चिम है मुनिरों इक्क

नकार कोता

काओं कारण के मुनलियात । अवीत --- दो नार कर दिनकें कारणीयों के वी हैं जिन्हें करती. हीनाकावा ने कहर के दिनस्थान कर दिना है जिन्हें करती होनाकावा ने कहर के

व्यव्यक्त व्यवस्था

क्ष्म वर्तक का प्रश्न वहत । अवार-वहत हुए होती (जातीर---क्ष्म वाले कार करी है। युवर वही होती (जातीर----

लावे परंग बाह्य बनारी हाता

- (>) किन्नरीयम युग्त की सन्त्रकों को वस समस्त्रत).

शब्द दान विकास

वाम विकासन के किये क्यों क्यों कामाएं दिनानी । स्वीत - व्या को कुछा कुमा है और विद्यारी कातू व्यापकों पाए व्याप के किया कुमा का पान साथ दिनानों है उपियान - वीत दिना कुमा का पान साथ दिनानों को का दिना किया है कि साथ का प्रमान को ना सह साथ का दे का अपने साथ व्यापकों का साथ दिना क्या का विकास के पान साथ का स्वाप का साथ व्याप क्या का शरिक की व्यापकों ना की ना स्थान की का वाल दिनान के का नार्वक द्या

संस्थात की भीषा

विकास की मिन्नि र प्रयोग --या-क्या की आता जीतिया कर हमानी काला के सामा जन्म कर है । क्यांकिक कुछ कर दिन कर

लक्षत्र के बंध्ये बाई। जिस प्रवचा

हामकारी करता. इंडम्पी क सामाजनी प्रश्नेत करूब हे तीव नारी क्षेत्र करती और अंतर से नई बारती ईंड्रोड्डी कुल्ला—का साठ, इंड



ममाम से अंजी रात

मूँसी बान को बुद्धि में न मानी हो । मधीय-मेंबी विका भागत हमारी समग्र में को क बीड़े यह दोनी विहर-देन मार अस्ट

(सपा) मृहार---ससम्ब के काहर की बात)

सम्बद्ध वर प्रत्यव पहला

वृद्धि का काम व काना । प्रयोग--- वी स्थल कर कहा न वाका है है क्लेजा जबर नहीं क्या विलाध-हरियोध, इन्ह

समय भी हाना

मृत्यु निकट हीती । प्रशंत—कोको बंदो में बहुत बीव-पुण की दशम्भाग का समय या नवा का अहला० (१)—वेशायाल.

6

समय का पहरा काना --- किर जाना

(१) स्विति में परिवर्ण व बोमा । प्रयोग--रहा वचन यस ते दिन बीने मध्छ चित्रें रिष् होर्ड पिरोते (पामक चा--मूलसी इंदर्श), यह टीक है यर समय चित्र गया है (राहाक ग्रेमक--ग्राधक दास, १७१ , जूर नया है आय हा। मूलव ने है पनशा सावा ,सर्मक--हरिसीध, १६०)

(२) बौगम में परियमन दोगर।

शमय का चेर

भाष्य-दशा । प्रदोश ---भगम् ध्याम विकास-परची मुधा नर्ने के पंतर । सावक दे हे बोलियन् बाहम् वनि की केर विकासी क्षेत्राठ-विकासी १३%

समय की हवा

पण का सम्बद्ध प्रशांक—प्रशास्त्र स्वयं की उत्तर के कि जान होने के का गण विश्वका के वर्ष विश्वक का प्रशास का हुन्य विश्वक कि का भाग क्रोसीय की जुला हुन्

मप्तप श्वका

दीन धनगर पर काल न करना जाता समय सक पूर्ति ना परित्राम समय काल न्यानुष्यमी वस्य वर्षा समय न परित्रा वर्षाक्षणिय क्षणान कुण्यक्षण रिपाद्वास्थ्याः सम

स्मय पहना

विथिति प्राप्ती प्रयोग वदता समग्र 🕽 वीर दर 🏥

मोम-नावर पर नती (जय०-- गुप्त, ३४

समय गिरु जन्मा

समय कर प्रतदा जाना.

समय होता

सन्ते दिन जेता; प्रतिष्ठा के दिन । प्रयोग-स्थय प्रतान-शान् कर पानी (राम० क्षाल)--तुलहो १६८)

नगर सेज पर माना

यह में मृत्यू को परण होता | प्रयोग-साम निरादर कर कर् पाई । मोश्रू नगर पत्र दोड पाई (राम० (अ) -नुसरो, श्रुप्तः

नमा बचना

याने क्याने का आपना आरंट का बोध्हता के कारण हा। बहना। वरोध---दर उनके माने में गया न वंधा तो आग को वह मतं दूरी करती पहेंगी ,परीक्षाठ--क्षीत दास, ५६/; इपर का इस घरित कथा बंधा, उधर क्योम हुया कुछ और री. विकठ--हरिजीश, क)

मप्तर्थं रचना

(२) यह बाया र

(नवाः भहः -- समार्थे करनाः)

समाज जुरमा

यय नोगो का गणजिल होना । प्रयोग—भीर नाइ सब् कृश क्षत्रक् (UPO (प्रा)—दुससी ६५०

स्यात्र माहना

मच का जरातर निसी काम का देवारी करती। प्रयोग कोन (क्षेत्र न करिय नृत्य साजिय संस्था समा अस्ति अ व्यवसो, ३७६

मसाधि कुरता

भ्यान *मेंग रा*ना । प्रयोग नहींर समाप्ति ग्राम नम जागे रामक काम जुलारो एक्ष्म

(नयाः महा--सम्राचि टरना

ममाचि लगाना

भ्यान नेगामा । प्रयोग----लक्षर कहात्र सक्ष्य क्षमहार्था । मानि सम्पन्ति कन्यर समारा (राम्न० साह) --सुससी, स्थ

सप्तान देना

तुनना म रक्षभा, उपना बन्ते । वर्षाय—वदा कृशनिकाय हो कहा कही मुखान हो, वकान क्षत-वान हो, नकान काहि होजिये ,क्षत्रकाविक सामाव, क्षत्र

सर्माप भाना या होता

भन म निकटणा वा धनमञ् करना । प्रयास—म्बद्धा उसक समीर भाग नहीं ,करीत—प्रेमबंद ३२१

ममृद्ध उसड् आंग

अस्यिक प्रियान में होता । प्रयोग—अन में करक रह म उनकी नवर्णन होती है नवर्णक दानीर की मृदि अन्त ही एक सभा स्वर्धी क सम्बद्ध प्रयोग के साल प्रशास १ —अस्टिन्स प्रयुक्त

ममुद्र पर लीक बालना

अभवा कार्य को करन का व्यक्त करना। अयोग—व्यह इस्होने तयुष्ट पर नीके दानने का पत्न किया हो, पर चीर ने ही नहीं है जिनके जिस पर सक्तनता का पृत्र करना है, में और वीर होते हैं जो फनदने-कार्यने पर धीर अनि-कृष निक्ति के परश्रीत कर जाने हैं (गुलेश प्रश्नान) मुलेरी २७६

(तवा+ पृहा+-- शमुद्र की चाह सेना)

समृत्व ज्ञाना

पूरी तरह तरह हो काना ! प्रयोग—दिक्य वादि वरना रहे, अति समृतः लाहि (सबोर प्रेसा०—कवीर, ३९,

स्वयहरू कर बोमता

मर्माता में रह कर बात करना । स्थान—तब कृति कोली स्वर्गन बात किंग कही समारे (सूछ साठ—सूर, २००९): रे कृप बालक श्राम बस कोलत तोई न संसाद (१४२० .बात)—सुरुसी, २००)

सम्बद्धाः सम्बद्धाः कर पैत रक्षनाः

वरी सावमानी के कान करना। अवोश-क्रियमध्य ने क्रीकः वा कि तीक जाबी रात को वर से निकल कर पतना ठीक न शैंगर । समस-अंचन कर पैर प्रसदा चार्यस मुनोना--रोनेन्द्र १७६

धर होता

- (१) ज्यान शास्त्र असर जान प्रदास । ध्रयोम—पर की सर्वाक्ष तर हो वर्ष (फोटीक जीतराहा), क्षे
- (२) विश्व भिन्नती । प्रयोग—स्थाना वाबु के नहाये ने क्य वैद्यानी का मैदान सार निवा हो क्या दिव्यनियों का इ.स. वर न होना (प्रस्तव के बन्त- व्यक्तव क्रमी, क्)
- (३) अगर भा करणा ।
- (४) हिम्म क्रमा ।
- (५) ममाद्र हाती ।

सरकार का बेहबाकी जाना

क्षेत्र की बचा प्रयानने । ध्योग— मानद बी-दार मान के नित् बरधार की नेहमानी मानी पढ़े (प्रया—प्रेनचंद, 10द.

(नवान पृत्रान-नरकार की मेहमानी करना)

अरहार होता

केटा होता । अयोग---सूच ती वह वहे कुछ बतने, प्रव सबसे नगराए (सुरु सरु--सूर, श्वरदा)

व्यवपरम्य होना

हेलकाण बन्द पाना। प्रयोग-प्यानी मैंने श्रद प्रणाती भागों सोलबार पूजिया थीं विकासी वेटा कोई स्वप्यदेश नहीं अधनी कार : श्रद्ध, उन्न

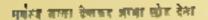
व्यक्तरी सीर पर,—नजर शासना

बहुत व्याप के नहीं। प्रयोग—क्ष्म की 'मान्नी' बाई ती वे क्षाप के पहा का। अ अन्यक बाद जरभरी भीर पर सब पह तथा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० क्षमी, २२४); जी हां अभी काश्यो नजर हाले चला भी रहा हैं पूट०— 30 नांग, 801

सरमरा इत्र इत्स्ता

इंट सहसरी तीन पर सहैनाई कड़ना

भ्रम्बर-वृद्धा कहना । अयोष---विस्ता क्ष्म्योने की प्रशोध म प्रकार को काफी नर्प-वर्ष सक कह बाधा (स्थात--औनस्त, २५)



सर्घम्य आमा देखकर काथा छोड़ देगा बढ़े नृबयम्य को बचाने के लिए बोबा नृबसान महना ! प्रयोज-अकुपर तात कहन एक बात! । अन्य तर्माह नृप

शरदस बाता (गमक (ज)—शूलमी, ६१४)

ध्रेलास करना

सोड़ देनर । प्रशेत-जन ये हुन्य नशरीय के वर्ष, मैन की नोकरी की जसाब किया ,प्रेमाठ-प्रशेतकर, दश्य

झक्रामी कारण

क्षेत्रा में उपस्थित होता । अयोग—स्वयं वनस्थ के नियः सन्दर्भी कार्य कारत हु (गोदान—क्षेत्रचंद १७)

(भणा: नृहा:---सम्प्रसी बळाला।

सबा कीस होता

बहुत होक होना । प्रयोग—नवर्ष को कहे नो करा बीय (दूधना8—देश वंद, ४४

सदा सोलइ साना

पूर्णत , दिना किसी क्यों के हा जारेन—सम्बन की बाल कुछ स्वा सोलह सामें डीक अब रही है किसी (बूट०—खंध माठ, २०६३) अ आ बोस्वामी मुनर्गाधान की हारद प्रति-पावित केरायम्भी अध्येस को मेंने कम के कम तक काम् दे स्थानमा में साथ भीनह बाने कम से स्थान किया है मेरेठ—गुलावठ, ६३)

भवारी गांउका

- (१) नवारी करनी । जनान—तुम क्षणे टह्ह हो तुम्हे माम मिमायेनी x x कुम्हारे पृष्टती पर हाल करेनी वेदिन १वोनिए कि तुम्हारे कपर मक्तरों शक्ते (गोदान—केसबट, १९५
- (र) अपने बता में काना :

सबाठी की कड़ी लगा देता

एक के बाद एक प्रकार पूछे काला। वर्षाय—जब विदुर भीदा, प्रवसर पार उन कामका ने आसी वे विवस व गवानों को सहो लगा हो झासीव—यु o तुसा पुर

समुगक की राई पहरह असहर

सम्बाद की मोटी कान भी कही नवनी। प्रयोक उन्हीं का स्वभाव यह भी है कि चमुताल की गई उसे पहरह त्यानी है और मायक की जुनी में भी उस लुखह आती है बोर्ने०— संव संव, १४२३

स्ट्रा

- (१) मुच्यि-सून्यः, बालनापूर्णः। प्रधीन —उनमें सूमना के उद्यान देखें न्यस्ती जजाबट और मुख्यित के प्रधान कीय इस ! जैसर (२)—अक्रोधः, २६
- (१) महत्त्वदीन ।

मम्बे

आमानी है । वदीय—केर्डड अध्ययको इतने मस्ते नही हार बान बडनी ही (क्ष्म्बर्ध—राथ है), हम

माने कृत्या

भोड़े ही भ्यय, परिचय या कष्ट में कोई काम ही आमा । प्रयोग—सामा ने नीचा, बहुत गरनार कुटा यह आसी०— युक्तमो पुद्रो

(नमा» वृहा»—सम्मे शस्ता स्टबर)

सहस्र मुख से भी व वर्षम कर पाना

पनागंनीय होना, जॉन मृन्दर होना प्रयोग गति विधि राम विधार उत्तरह । सबद न बर्गन महस सम्ब हाह दामठ बला मुख्यो ३४१ इत्तर पुरुष गरिष्ठ के बैधव सीर बण्डान एवं दानगीनता को देख-देख कर कीम अंतर-सहस मृश्वी य प्रथमा करने नहीं स्थान से देशालीठ प्र — चनुरुठ, १५१)

महारे की सकड़ी

भरायकः प्रथान—मेरे स्रे जवार वेते इस स्वाई में वेसी प्रवार के लिए मारे सम्बद्धी मालो मेरे सहार की सकती विस्त वर्ष (परिकार—सीठ दास, १३०)

नहीं भरता

न्दीकार कर लेखा । प्रयोग—मानी विधि तौरि हर संबह गनग कही मही असे लोगम ज्युविबृह बारियो जुलसी हिंर शरू सात

साई के भी केत होता

बहुत स्थाप होता । प्रयोग-अजी बाई के मी बेत है

शाका उत्तराम में कर अवता हूं (तवन प्रोमक्ट्र, १२८,

सीय को आंख न होना

माचे में दका

मुंदीम सुमहित । प्रयोग—सुरदास अनु गेरिक बकित मत पनदू काम गांच अरि काड़ी सूच्माठ सुन ६१६ आपनी स्थानी में में कुछ भी निकास्ता है यह गांच व दका होता है, इसमें सी किमी की इनकार ही नहीं (पद्माठ के पश्च— पह्माठ शर्मा, ३५४

मांक वश्वा

मध्या होती। प्रयोग---परी साम पूर्वि वली को घाई (प्रदेश---अध्यक्षी २७/३)

व्यक्तिगांड करता या कराता

हैंस येश करना वा होनः । कुप्त नम्बन्त करना वा होना । प्रयोग—इसी मदी गय ने ही साठ-बाठ कराई की ।वृद्ध —क्षठ काठ, ६२), याग्यी-बीक के फोजियरे के बाठ-गठ रक्षी है उपने (पैसरे—क्ष्टक, १२३

मार-वांड होता

११ | भीतर-भीतर एक होता । प्रयोग रोग परिमान काय में पुत्र से सांठ-गांठ भरता जनकी संतरश्ला की किसी मन्द्र स्वीकार ने या गतन- ग्रेमचंद्र, २५१ भेरा के मन म मदंह हो गया कि जनर इन दोनों में कुछ पाट-गांठ है ,रंगा १ श्रेमचंद्र, १६३ मांठ-गांठ पंका होते ही होता मदंद कब के शास कीड़ में पुता सा समें (क्लांक-चंग्न,

ęęt,

(२) गुप्त कर से प्रेम होता । बनोय-स्था कोई स्थी वितर साठ-गांठ के जयनी साती किसी पर-पुरूष के मामते उपाइगी ,मुगत सून देश । २९६ प्रमुख एक ग्यास्ति में साठ-गाठ हो गई हो मुक्त बाबू को इस बात का पता हत सुधा (बस्त--नागांठ, छ)

मांद का नरह शुम्रमा

भागारी कीर वेक्सि से बुक्ता : प्रयोग--दिन भर नाड की तरह किरते हा, कही समृत्रे क्यों नहीं काले ? स्थाक हर--चंप्रवंद, 109-५०६०

मांच के बिक में हाब हालता

मान-मृज्यस्य समीर भीर नृज्यान में पहना। प्रयोग — मनर बहु नयो शाय के बिन में हाथ नहीं कानते हें हथीं निम् तो कि उनके भगवानी को सब्द म उठाना पर्वे (मीदान — प्रमुख्य, १७५)

न्यांप के मुंद की उछतर होतर -छछतर का गति। होता

सांच के मुंह में बंगानी बालगा

जान का मानग योज देना (प्रयोग---मोकी, श्यां नादान सनती हो है साप के पृष्ठ में क्षेत्रशी कानना कीन-मी क्षत्रियानी है है (रंग० (१)--फ्रेनबंद, १७)

लांच के साथ बंदरा

- (१) अवंकर कार्य करना । वयोग —कोटे घी वहेरे ये? पृतक कोरे तक, शार्थन की नती, मेले की स्वाधार सं। कवि—तुससी अप: (२)
- (२) वान्त-वाक्रकर सामस्ताक काम करना । प्रयोग वेक्सिन प्रयोग (१) वें (÷)

सांच को कुछ चिताना

विसी दूष्ट के प्रति करेंद्र शीता तो भौगा विसर्व ही अहि र

करेता । प्रयोग—तब हुम कर सकर बहुने क्या कि मार्ड. प्रश्न करे किस हुमरा प्रकृत कहा में आया, क्या हुए पिना कैसे मुखे बहुरका (केस स्तठ—बाठ साठ, १९४६

(तमा । पृहात----व्हांच को विम में जगह देना)

लांच तिकल जाते पर लकांच वीटना

काम या बात है। जान पर कार्य प्रयत्न करना । प्रयोग दूबाये में भी कृष्ठ वाका के जिया तुमारे संग्र वाम नाम निकल बाने पर कार्यार रीटमा है (यह पीठ-पठ नाठ किछ प्रशे), यह के भूग बाते हैं तब कही कोरी का बता काना है। साम निकल बाने पर कहीर पोटी जाती है (मेर्ड)---गुमाबठ, प्रशे

क्षांच पालना

वातरनाक व्यक्ति को प्रचय केना | क्यान-प्रणाया नारका भी क्षत्रमा नहीं होता : हाच-माण हुए, और मुख्डे हुम्बार क्षत्र क्षत्रम हो आश्रमा | मुख्य व्यक्ते निके साथ पाण को हो (रंगक (१)--वेम बंदे, दद

स्रोध भर काब पर काडी न हुटे

काम भी तम कात्र और मुचनाम भी माहो । वयोग---पीज एसज गीठ में मोजा, जान भी नम नायगर, मध्दी और स रहती (पोटीक- निराता, धर

मांप मुख जाना

(१) तम्म में आना, बन्धन भवभीत के नाना । प्रधान— स्थाना प्रमाद को जैसे बांच तृष गया हो (मृतिक—मंगठ धर्मी, २२२), वर के करातकात थ वर्द कवी ही कभी अभा कारी में भीते अब भारते के तथ 🗶 अने तक को नाव सूच आहा था (मृद्धक—ज्ञाठ माठ, क्यो

(२) मात्र काटनः । अधोय—अदे, तृषः क्याः नरकातः न मो वर्षः है अभी तो अस्त भी नदी क्यां । कही साप तो नहीं मूच रहा सात्रक श्ला—क्षेत्रकट यद

माप-छछ् दर की गति होता र॰ सांप के युद्ध की छछ् दर हाता

सांय-सांय क्य करना

बहुत भीर दान करन्ते । यद्योग वह कार्त्य के पास वा बैठा और दाना है पाय-काप काल हथन जाते । रहेश व वस्पेद १११)

माम उपरता

(१) पूरा हम मा गहना हिस्सत परन होनी । प्रयोग = पास बनसम प्रसार देने स गाम अब सी उसह उसह सारी मुप्तरीक—हरिक्रोप, १७३

(२) होक्सा (

(६) परन के नमन रोगों का वह करत में नाम मेना । (भगा» मृहार---सारंख टूटना)

माम उपर-नंचे होता

(१) विकास भवतानी, परेवाजी होती । प्रयोग--- तलाशी है इस्सी की बाब क्ये-इसर होन बयो - सोदाय---चेनस्पंद, १९४०

(२) संख्या (

न्यांच शिवना

मृत्यु की बर्गाशत करती । बजोज - क्षता ये आवती । नाम विक रही हुः समस्तीक--राज्याव, १२३

माम बहुना

रायमा । वर्षाय—दुर के मीनवर्षाता भावना मुन्ना जाया । जनका बान क्या हुवा वा क्षित - देव संत, २३५

सांस धनग

माम शोहना

लंबी शांव नेकी । यथान—सारङ स्टाङ कारि कर् वादिन (राम० (अ)—सुलसी, ३८४)

मास हरता

ठीक व बाद बार्य । प्रयास—कि बुधाया शासत के लिए करको को बोक कर जिसकी की इस करने नगर । शास जुडी नो बेबर—गण बादकी (बीनेठ—गठ (१०, २०)

भरेम दर जाना पर दर रह जाना

(१) विश्वन पान होने । अपान आस सेस न हुट आसी नव नाम यह टट-टर आती है पुनरेन अधिकाधि हत गणनाय का बिट पंद क पान पहुंचन हो उसन दो कोन काम बोग मोना होने होने इसका सांस टट पट पुत कहात पुलेशे उह

- (२) मृथ्य के पूर्व या एमें ही बान का का का कर कर काता ।
 प्रयोग—नेशिए प्रयोग (१) में (÷)
- (१) मरागासम्ब होता ।

मांस वोडना

मनना । प्रयोग---र्गन को उभन बंगने सामने नाम नाहने देखा (धरतीय--विच प्रयः, १५२)

मांस व लेवा

(१) महरा गरना—भाषर धरना । अयोग—सम व केना मांस जिनके सामन बाज उनकी नांगते हैं ही नहीं (सुमति) ---हरिजीय, ४२)

(र एक्टम भग-पान प्रत्या निक्स भी न हिन्दता पूजना प्रयोग साहा मृत अभी दश्यन दृश नहीं है अभी साम न मेना (राधान द्वासान-नाधान दशम नद्वार

विश्व मी नव न करना ।

सरंध म होना

- (१) वेश भी स्थान न होना । श्योत—निवस आसन ॥१ भी भारा, परन्तु नहां काम करावर भी काम स री (क्षासी—सुं o वर्मा, 8८१)
- (२) नुराय या अंका अरहेका खेर न औरना

सांस निकलता

मृत्यू होनी । प्रयोग---राम क्षितः निकति तः वाई-वाव अजन् कीत सान् (वर्गार संकाठ---वर्गार, १२४

मांस को मैं बंधका

बहुत वर नगन्तः । हयोग—वेरे तो तांस नहरे में बलते है ,साराव-स्तेनेन्द्र, ९५)

मांस फ्लरा

दमा मा विराधिक के कारण सब्दी जन्दी ताल नेता। प्रमोध—सेतरह शाल फुनती है क्यों जान क्यों हुट ट्रंट जालों है तोलक हरियोध ११५ . बार्ट में की काय कुन गई (ज्ञान»—संस्थात, अप

सांस भरता

(1) साम जना । प्रदोश—विनको तथ मोनि विनास करी कुल गांभ मरे बयुरी प्रवत्तः धनेश कवित आत्राण, ९७ , है उत्तरते अग्रद स्थर नेवें । शांक इक सम सम करन गरे (भूमति—हरिकोध, ३९) (२) विजी शीव के अंदर हवा करती।

मांच्य क्षेत्रकार

- (१) पूरी रकावता से, और यह कुछ बार 1 प्रयोग—सीम साम रोड कर बुवने करे (कुछोठ—निराज्ञा, ठर
- (२) विका किसी जिनकार के; बुचवार (बचार-की प्रत वर्षी तथ जान रोक कर इस वृद्धावनमा म मह बीधार वाद देवती रही (कार्य-80 Go Ro, 31%)
- (१) पर गामी; तस ही बटके में ।

प्रोम नेतर

- (१) स्वया । अयोग-नाम क्यों में जातिर्नात काल क्यों (कुमलेक-सुरिक्षोध, प्रक
- (२) भारत्य विषयाः पूर्वत विवर्ताः । प्रयोग—यह योगः सार मधाने तो मृषः याः। नाम केन का सवस्था विष प्रमात –इस्पदः १८०

मांग नेते की जगद व होता

बहुत कीर हाजी । प्रयोग---माही में नाम नेने की अवह नहरं किरकी पर क्षेत्र मोन नेने नाम ही नवर ती प्रम पर इस्ता प्रथम ! (सानक (१ -- प्रमाद, १९१)

मांग माथे होता

स्तरम् होता, विसी चन्ता की ब्राह्म से बतका मालवित रहता । अभीग—कारक के नाम अभी ही मालव हुआ सारा कर नाम साम हुए है रकुमांo—निरामा हुआ

माध्यम का उकरा

क्टूम करी मेनीकन । अयोग—जिसके जंग-जंग कामस के क्रमें करे क्रावर्ट रे (समठ—हर्गकीध, १२३)

माका यहभा पर बनाना

इत्राच बाना करना । अमेन—हुदय मन्तरमाम निरमतः वर्गर क्रमीय नमाच । क्रम कर पंग कमन वास्त्र वर्गन् बहु नह नाकः पुर⊸हि० इत सार

क्याचा उह जाना,—जाना, —न गहना,—सिहना पुरस्त विकास का न धाना प्रतिपता क्या होती। प्रमास— अब ५ त मेरी काथ जाती गढ़ी तो किस की जिस्त में बेगा क्या काम निकास है (प्रतिशत—श्रीत हास, प्रत्), बाक निर्दे वह जैर साम में परे थू नगकहि (ग्राप्त)त प्रशात—



राधाव शास, ५१): वाजार में तो अब दनकी रती कर भी माम्य न ५ही की (रंगक (२)—वेमलंद, २१९), इतने हो दिनी में मुनोजी की साम भी उठ गई वी निमंता: प्रेनस्ट, १५१) गमा व मुना क क्यास्ट उत्सन्त जनता, में स्ट्री स्ट्राप्ट

मास्य द्वीचा उदया

भीर प्रश्नित प्रतिस्ता होती । प्रयोग-न्यास्मा की नोति भीर पृहत्ता ने उनकी साम अवी दहा ही सुहागठ--अव साठ, १०७

माण जाना का जमाना, —वंधना कर कांधना रिकान कोर प्रतिक्षा होती वा प्रत्य करती । प्रयोग— हा भार्च, काप्राप में इनकी बाक दनी है (मध्य पंट है)-भारतेन्द्र 3361: कर नुकड़ी हेगी-बंतरदेशी क्षेत्रों में प्रमुख की बाल प्रमानी है ? इड०—वाधना १४९.

(नग॰ गहा०--स्राच्य दनना का बनाना --होता)

माभ जाता

👣 साम्ब वट जाना

स्याचा त रहता

वेत्र साम्बा इ**ड जाना**

माम र्वधमा वा वर्धभम

देश स्थापा अस्था

म्हाच महियामेट काना

गाम विचारमा । यथीश--कोल मित्री के विकेश क्यों म यह साम ही जिनने कि परिशावेट की (बोला०--कृषिक्रीय), २१०

माच पिरता

देश मास उठ शाला

मार्थी गोलना

भारति मानना । प्रयोग निगम प्राप्ती नामी बोले, गहें सन मुखान क्योग प्रशाब क्योग १९०

मात्र सताता

नैयारी करनी । प्रयोगः न्यामीत देव कान्ति वृद्धारत । मत्रीत मुश्लोकति मयम संस्कृ रास्त्र क्ष तृत्यक्षीः ३९०

माओं की विशी

मामें का काम प्रयोग : दोनों में माल को जनी भी कहा-मुनो हो गई ये कोटंड— धन साठ ३०) माओं की सुई का देते पर लदमा

साह के वा पंचायती काम का दीर शिम्मेमारी में हाना। प्रतीक—मंद्रे कर श्वायत हुई, पर सूरदास के शाम को वि स मना। बान्ध की मुद्दे हुने पर सदशी है। हूं कम, मैं सामा हूं, रहीं हुआ किया। (गिंक (व)—मैममंद, क्षेत्र)

ब्यारे का बाढ़े होना

बहाये व की पूरी प्रांतन रहती । चयोत-त्म जैसे बह शांडे का पांडे नहीं होने गोडान - प्रेयचंड, इ.)

बाढ़े मानी होगा

चोर प्रतिष्टकारी होता । प्रयोध—मध्य प्रतीति बहु विशि गाँव प्रोमी । प्रवस माद भागी नव बोमी (समय अ मुससी, ३८७)

भान कोडरी में छिपा का रखना

न्य से कृष्य करत में जियरमा । प्रयोग—साह कोठरी में जिया के राष्ट्री, पर हमकी निगाद पहुंच असी है (गवन— देशबंद, १७६

मान पाट का पानी पीना

(१) वृदी-भणी सभी जनत वाना । अयोग—नुस्पति साम मान वाटों का वानी दी कुटा है (पत्ती०—रेजु ४६)

(२) बहुत बास्तक होना ।

मात जन्म में भी नही

कभी नहीं। प्रयाग क्षिमक पर में भनी भाग नहीं, और संग व्यक्तिक है। को भर सामने बाद करते हुए सर्दाता है उसे में स्थान समयों कर के यह की साम बनस नहीं ही स्वत्या (सिमारक-कीविक, १३)

नान राजाओं की साक्षी देंगा

विकी बन्त की बन्यता पर बहुत और देता। प्रयोग---इर तम् वह दोल हिएके, भात राजा नामि (कु० सा०----सुर अभा3)

सात पार में त्योहार होता

गोंड दी उत्सव त्योहार कथा गाना । प्रयोग अवस्था प ही नड़ी प्रष्टा तो सात बार नी त्योहार कर दीग गहना है दुधाराध- देव प्रव ४६

सात-बाँदह की मेर कराशा

अन की हवा विकास । अयोग-द्वा, यह पर एस का



14.5

हमलोगों को यह दसाम जरूर देशा कि पृत्तिम के ह्रवाचे कम मार्ग चौदह की चैद कमावेदा (मांठ माठ (३)—किंठ गोठ, १६

मात-यांच

- (१) १६१-तपर व्यर्थ का काम । प्रयोज-केंग्र इसी कान पाच में राज कट गई (माठप्रधाठ १३)-मारतेन्द्र, ६६०)
- (२) अन अपट । प्रयोग—-एकदम सम्योगस्थाय है दिस्त्री।
 मन में कीई साल पांच नहीं एकते (मैलाठ—एक), 25

मान-यांच करना

- (१) बहुत सेवैन होता। स्थाप—सात वे मुनते ही प्रव रात भए मीदार आई धीर उपने मान पाच कर रैन वकार्ट (प्रेम साठ—साठ साठ, १९२)
- (२) शामाची सा मृत्ता वाली ।

मानवें आसमान पर पर मारता

वर्ग क्षम् करणनाए करती । प्रयोग---कश्य हरव केने हरे कितने कश्यिरे की साम की परी विशय वाहित्य के वातन बानमान पर पर महरती है (कुलोठ---निरामा, १०

ब्यानी ब्रीप से बरेजनर

स्रातों सुधि भृत जाना

होस हवास में न रहता । प्रधान---शृरदान प्रमु के विकार से भृतित गई सुध्य सालो सुक्षाक---मृत श्वरप्रक प्रशं मृद्धि सालो तसा विवस विकार गति । गोदि बावरे हुँ तथ और कुछु सामिये (सन्द्र कविक्स-समाठ, १२६)

(बवार मुहार-स्थाती भूल आना)

क्याधा लगसा

साय हो जाना। साय-नाथ यसना । वर्धम---ना साहित के मानी गाया दुख सुल यहि रहारै घनाया कवीर देवरू कदोर २४३ . बालक बृद्ध बिहाद गृह् नग मोग सब साथ (रामo (अ)---तुलसी, ४४१

सारता

किसी नाम म किमी और व्यक्ति का बात को भी किसा देवा | प्रयोग---करत को सामती है जाव में क्यों ? वर्षये मूर्गक्ती पाप में नमें ? (सम्बेस--पूफ, १९)

मानी हुई

भिनो हुई । अयोग—मेने हरि नैते तुम प्रेयक, कवट चतु-चई नाने ही (सूठ साठ—सूर अर्थक्य), बोले प्रभोहर स्थल कार्रत सन्दर्भाग सुभाव श्री (समठ (बाल)—सुलसी, ३३४)

नाक शाममान देवता

निषय की ठोक-ठोक बातकाकी करनी । प्रयोग---वै जनर कुम्मी कर नाम आवकान देवता (कुम्रो०---निराह्मा, ४६,

भाषा करमा

- (१) निवरित स्थाद करती (अधीय-स्था मानमे की अभी ते ताक कर नेवा काहित क्षिमाल-प्रेमकंट, ३५
- (२) बार कालना, बरबाद करना ।
- (१) बेन-रन बाहि निवटाना ।

न्याफ सन होना

कोई दुर्भाव न होना । अयोग—नातः मदसयोद्धन में साफ धन में कहा पर इरश्याम के पापी नम को इनमी ही बान में नहरू हो नमा (परिक्षाण—मीठ दास, २६)

मण्ड होना

- (१) का जाना १४कोय--शिनमें उपरर्यन और काम स्वयं माने कारणे है, याक हो नम् 'नुम्मोठ--निम्हार ६०)
- (२) त्रका भारती होता ।
- (३) यह नमध्य हो यागा ।

साफ-माफ बोन्डना

क्ष्यद्र बात कहती (प्रयोग - इस मनावेग के मार्ग लोग सिश क्रंबा नहीं करते, युद्ध नहीं दिखाते, सादने नहीं आते, नाक मन्द्र बहुने नहीं (चिताठ (१) - सुरुत्त, १६

मध्ये आता

क्षयत होनाः अन्यय य जानाः। प्रदोष-सम्भा कीर गरा यह तम मृत्युक्ते सहस्य आसेवः (स्थित-सम्बद्धाः, १५०

सामने की परोस्ती चाली छिन जाना

विश्वी हुई करन का जिल जाना । प्रयोग — बाद धीक्य लेक प्रशास, किलाब हाय में उठाई, पढ़ने बैठा है। या कि बामन्तुक मियर को महन्दी ने भा चेटा— मंत्री रहने भी दो इस महत्ती में पढ़ने बेंटे हो ? किताब कहीं मानी जाती है, दिन में पढ़ नेना । एक समझ ठठ, सेंग उठाका पूर गण काई, दूसरे किलाब छोनने तथ । वर्षों के मूखे के बारे

में मज़े आदिमियों ने पत्रमर हुआ पर प्रशासिया (पट्टम याल-पद्रमण सर्गा, २५०

मामने दृष्टि करना

सकापने व विवासित सहीता । अयोग -- वार्गे किये अंडि भौती कीती । तब वर्ति विशे देश की वीती पद्द० -बाठमां, Martin

सामने बोलना

बड़ों को प्रस्कृतन देता । प्रकार-नह अनेह अवश्य दस सनम्ब कही ह देन शास्त्र या न्यूनसी दश्य

सामने मुंह कर चात न करना

सामने म पाला । प्रयोग - तट मी युद्ध करि नामहे नहता रु वह अस्तिही सद्याव देवाव नाधक देखा करन

मार्थ से भागना

बुर-बुक् रहमर, बद में शरधने में भारत । प्रयोग-में रमधे मार है जानना जिल्ला है चेमबर, पर

सारक्ष का साथ छोडूना ---द्रना

साहय के सबी बाजी । प्रयोग—प्रमुख साहस प्रमुख नाव क्षीतमें लगा अस्तार-कीशिक १३% जब कर्या जनगण्डे व्यक्तित पात्रक वह येस प्रदर्शन की इच्छा करने नजी उनका माहर टूट जाता पर निसाध--कोशिक, २५

मातम रहता

है। बाहम का माच छोटना

मिन्र स्टना

विश्वका होता। प्रयोग-स्थीर तक मध्यक्त के अन्य विश भाग तनके, रेम वेच की जातिया है क्यी जिनके 🕶 सिट्टर में कुरुण- दिनकर, १)

(समाव मुहाब-स्थित्य पुरस्ता;--सिरमा)

मिंद्रकी मंद्र पर हाथ फेन्टर के मंद्र में बाजा -के मुह में ग कर्ना देता - के मंद में जिर हेता क्रमाहम बर या म सरन । प्रकान- व्यति कानह बोरा सी बहरता । सिंह की बाव हार का बना बना बहर जायनी 43 18 भने ही सरवाष्ट्र का घरा बहा किया जाता है। अभागा विह के यह से प्रमानी शाला १०० वं प्रेमन्द्र \$प्रफ सुरक्ष चौधर को कर सम्बद्ध का कि सारत बिह न रार समाना सिंह के सह सुधिर देना है। सान्छ ।

चेमचंद्र, ३०% वन गया वर मास्ट से, फिर सिंह के मुक्ष में बाबा बाह्या है (सकद० अप्रसाद, १६६)

सिह के बंह में जन्ता रं- सिंह का मंछ पर हाथ फेरना सिंह के मेह मैं व नेता देगा रें/ जिंह को मध पर हाथ फेरबा भिरंह के मुंह में सिर देना रे॰ सिंह की मुंछ पर हाथ फेरमा

मिहनाद करना

बोर से हकार करना । प्रयोग-पृति पृति नियनाह करि भारो - राम० (बाल) — तुलसी, १९०)

निका जमना

(१) सेव काना नाना (प्रयोग-अन्तवार नार्शायन से बरकर अवा कोऊ । निरुषा व अस गया है कि भैगा जी है मी 🖟 (मी० प्रकार (३)—मारतेन्द्र, प्रदेश , तब तक इस देश के लोगों ने नमक लिया चाकि अब बीबात पर सही के बारवाय का पूरी निक्का जम नवा (गु० निक--बाठ गु० तु०, २०० - उस वर्ष्ट देर की समयकान में ही मेरे दिसावर उनका निवका क्यानवा कमार प्रमुख्य ५१६ हमीला में महस्तिय म सामा निवका असा मिला का ,से कीन्छ । प्रधानात ११३

- (२) यात्रक होता (
- (३) बस्थिकार स्वाधित होता ।

(नमाः) मुहाः — स्मिका सम्भाः — बेटनाः)

न्तिका सम्बाग या सामग्र

प्रवास क्याना , बेप्डता प्रमालित होती । वर्षोय—हिन्दी बानों को नुस होता चाहिए कि उतका भी एक बादमी एमा है जिसन अपनी प्रतिज्ञा का विक्का चिन्नी देशताओं व वजवा विकार है चैतर अवक १४४ - राजगृह की लावान का निक्का भव को भागना पटा (क्ट०--दै० स०, १५८): मनमञ्ज्ञानी था बद्धानन्त था 🗴 🛪 जिल्ली तक भिनका भाग नवे ने (पट्टम पराग—पट्टम० समी, स्थ)

(गमार प्रान्तः स्थिक्तः समन्तः, --बेटामा)

न्यका-बंद

टबमानी क्षमानिक। प्रवान 🗝 बुँबिनह को भने ही कोई

तिक्के बन्द एक्टर न कट्रेश्लयर जिल्ल भन्नी सीर तस्यवना में उनने इस दोल में काम किया कह दम बाद सा प्रभाव है कि अन्यवान गक्ष्म भी होता है कि है किशेष है जिल्ला है। मानव्यता नहीं पहली (क्टा) —देश सार, २१८-२११।

निर्दापटा जाना

सरिवत था सकृषित हो भागा | व्यान—गोरूर में जिट-रिट कर बदाव दियां हुआ कह किथी तरह प्रत्य रही स दी भी में क्या करता ? (मान्ध्र (२)—पेशबंट, २३५,, जब पानरी साहक को इसका पता चना तो कहन करपटायें (पहुन क्यान—प्रदेशक सभी शुरु-श्र

निर्देश गुप्त होता.—भूदना भिर्देश पिर्दर्श गुप्त होता

निटिविटा प्रामा, प्रवाशीन ही जाना । प्रयोग—अवसे नामन तो भी भाग हो ही जाना है—विभीना जा भा जाना है। निन्दी मी भूग नाती है से सीठ दु ठ वर्षा उठत अहर उनके का भग पर अहर हो की किन्नी नमें हो प्राप्ती की हो भीर अन्तरी तरह यहद किया हुआ समाद भी प्रश्नावट पूज प्राथा नामना था (प्रायनी समय —च्या, प्रदे); तिना को जयनी और देशन राजकर उसकी विकरी किट्टी गया हो गई भू दठ —जात नाठ, २५५ , उस दलग ही होता को विद्री भग गई निस्त्रों—प्रसाद, प्रदेश

निही भूतना देश निही गुप्त होना निहरी-पिट्टी गुप्त होना देश सिही गुप्त होना

नितम दाना

बस्ताय करना गणन करना । प्रमोध--- उक्त, हैने नृष पर रित्यन जुन्म किया ने मे-ने में निरुष तथे पट्टम प्रथम पट्टम० शर्मा १९९९, किस नरह ने उन्हें जन स्थों जो स्थितय कृत बूंब कर बाहै। जब हमी में व एक पर नरमी क्या करेगी प्रथम परम पाहें (मुम्बी०--- क्रियोध, करू

(नग॰ पृहा॰—सिसम करना) चिनार का तार उत्तर तरना

पहले ही महनी या भारतन्त्र न रह जाना । प्रयोग कहा है समक मुद्दमा म, नार उत्तर मिलार के हैं ,मनी०--हरिसीय, ७४ स्मितारा समस्ता जानो पर होना — पूलंद होना भाग्योदय होना, सम्मीत पर होना । धर्माम—सम्बद्ध वेटर भारत । श्रव को जावका सिनाना समस् उठा—और ऐग-विरमा सेकर (२)—अलेख, २१६), गाम बाह्य का विज्ञास कृतंद का (गीटान—प्रेयवंद, ३१६), श्रव समय इस लोगी का विज्ञास प्रका है (सारोठ—दे ० समी, १५२); लागका विज्ञास प्रका है (सारोठ—दे ० समी, १५२); लागका विज्ञास को से पर है (पैतरि—स्रक्ष, १५०)) वर्ष्ट ही म

निकाश क्षेत्रों का होता दे- निकास बारकवा

सिनाम इक्ना -- फाँका होना

क्यांकरमत होता : प्रयोग-स्थ कृतक्यानी का वितास देख में क्या के जिए कृत नक्षा है (विद0-प्रमी, स्थ- यस क्य वर्षत को के हो यो है जिलारे (प्रिय0-हरियोध, स्व/ (क्या : क्यांक-विकास सर्विश में होनर)

निमारा कीका होगा रे॰ निसारा ब्रूबना चिमारा बुलंद होना रे॰ सिमारा बमकन

निकासमा हाना

क्यम होता । प्रयोग — नर साधेर केनम जानस जानुसी क्रिक्स विकास में बड़े निद्धहरूत है इसाठ सीठ —महाठ द्वेदा. ८४

चित्रपा जिल्ला

(१) वृष्टित सम्बद्ध होश्री । यमाय-व्यहो क्षेत्र इसका विष्य। चित्र वसा, कृत समक्ष स नहीं स्थल। (मृद्ध-सक्लार, २४६)

(२) रोब जनसा (

(सहार वहार- सिप्पा बैडनर)

मियद काना

नक्षा करनी । वयोग--वह नदा भिषट सी नई, विश्व भी मुसकरती हुए अनने बहा---(इस्टा०--महा० वर्गा. ७,

शिवाचा सदना

रहेका. कुषा क्रोका । अपोय-कार से कम उन पर यह किसका का उनमाद और जन्म कर का नियाप तो नही सद्य का कि इस नियम ही जानने (गुलेसे एक (१००० गुलेस) १०४-१०४१

न्दियस्य बोलसा

प्रकटन कुनसान होना । प्रयोग---विन नाट्यधानो य निन राजने की बन्द्र स मिलनी की, वहाँ नियाद बोल यह द (मान्क (६)--प्रेमवट, १४५

विवय

क्रिके (प्रयोग-प्रयोगन मेरे निय कर हो। जो हम पाना है समेन्यामी के दक्त देता है (रंगत (२)-प्रेमक्ट, २००.

स्वर माना

- (१) द्राधित्य ग्रीनर, क्षणस्थानी ग्रीमा । प्रयोग—न्यम नेशा व्यानस्था तो स्थानी रामा भी नुष्याने ही निर बरई (संधान प्रशास—स्थानस्थान, प्रयोग जारानी सुन प्रमा भी हो सम्बन्धे कार भागी प्रानित मेरे जिल्लाहित न क्षणर ११)—प्रयोग ११०
- (२) भूत देश साथि का जानक काना ।
- (३) आवेश होना, प्रशास होता ह

निष भागमात्र में तराना

बहुत सर्व होता । धरोत—विन्द्र प्रद्री काम कृतव निन्द्र बागा । बाते पर्दे काप तत भागा (पर्द०—बान्दनी ४५) प

निय उठाकर करना

गर्व में साथ पंत्रमा । इमोग---- विस स्वाम-कार्या में इस गर के सम्मित्रों के बावन किए उठावन जनती भी इस पर देशना कड़ीकाराय है (मानक पंत्रमंद, १६५) विकत् में इसके यम में कहा के आप आर्थ की इक्या की बीच से मीमती चाहते के कि यह कुन्ने तान के, किए उठावार करा मार्थ 'श्रीक--- पूछ वर्षा, इक्ट्रद यह विध्यानगर की सर्वादरों में समान मादी की बहुनती है है यह किए प्रकार करों मानकों है सहस्त्र है कर उठा है।

भित्र इंडाका

(१, विरोध में भारतहाना) प्रदोश करिए रेड्ड प्राप्त इंडिंग्स प्राप्ती पर जिलार प्रदेश हायुमी श्रुप्त प्राप्त में क कोई सम्बंध कर्म क्या क्रिया संस्था में भारति में या नहीं क्या भी स्थित ने उद्योग्य मुगर मैन कार्ग अम्बिक या नहीं क्या स्थित १ क्षेत्रमध्य स्था सही क्षा साम्भवको ॥ ॥ जिनमें बंधनों किए जठाएं की बादमाह को भी भनाम नहीं क्ष्म सुरू हरा का का बाग में उनके कर करने के लिए बीद नहक मूटा का कर बाग तो मुख की दोन करने के लिए बीद नहक मूटा का कर बाग तो मुख की दोन करना है ? (मांच प्रत्य का मार्गन्द, दश्शा (=)) किए उसने बानों जमता को म मनोदार नान्मकेवार ही कुमत दिया बानों अमरीक-इ 0 बर्मा, १६०), उसने मुखासा का मिन्ट बिद क्शा मो नाम्म का पहला कर्मक है कि बहु उस निय को मीमा कर है (अप्रेय-विनेन्द १६५), =)

- (६) अवध अवध्यः । प्रयोग--देख्यः प्रयोगः (१) में (🛨)
- (३) वश्यने युद्ध करना, चनिन्दा के लाख आहा होता : प्रयोग—शोपी निज्यों के सम्मने क्या निव हठा सकते कथी (अयक--मूच, कर्य); रंगर कठाना वर्धा पहास मुक्ता (औ उठाने प्रशंक प्रमणी कर (मुसरीध--स्रिजीध, इक्)

वाय व देना की पूर्वत व विकास, काम में सदा कारत रहता । प्रयोग—नह जाहना या इतना काम, इतना साम कि निर इंडाना मृत्यिक्य ही काम (शैक्स (१)—क्षत्रोय, २०६१, रशको की निर इंडाने की पूर्वत व थी (मानक (६) क्षेत्रवट, ११

सिंग वढाने को फुलत न फिल्मा देश सिंग वढाना मुक्तिक होता

मिर उद्दाश

नाथ करना । प्रयोज—धारी बीम १ मनुज्ञ ने उसका स्थाय पुरानेशामा है जा कि स्थाय चोचने विवृत का बीम उद्याने बाना है (कुंक- व्हेनकर, 30)

मिन करावा वा क्राएका

निरं चढ़ में कार कर जनम किया जाता का करता । उद्देश अजीर जिल्ह घर ४म कर दारत स्वास अवाध । भाग नवारि दश अबि धर्म तक निर्वाद ग्रम का स्वाद केवीर ग्रम्भ कर्नार ६९० ऑस्ट्रिक जार श्रीवर्गद्व हाती । निर्माण कर्नार ६९० ऑस्ट्रिक जासमी, २२१८ मिर मराज निज कर्गन्त उठारी, कृतंत्र स्थान कार विक्रारी गामक (सं) — गुलसी, पमान); विर तनार केंगे। सना क्या राग परतीय रेण् १४७ काई बरमान स्मारी हो दर-बटी की मृरी निनाह से केंगे, भी कृता करेगा कि बारि। उसर कार पान सा सावत सान गामक को निष् उतार साग रंगक (द)—प्रेससद, 800,

मिर केंबा करना वा क्षेत्र

- (१) प्रतिस्था के धाव करेगों के बीच वर्ष होता। प्रयोग— इस मनोबन के बारे कोच सिर क्रीका नहीं करते जुड़ नहीं दिवासे (किसाव (१)—चुक्त ५६
- (२) प्रतिष्टा होती । जयोग---नोहको वर्शयदा बहु गरी यो कि इससे नगरे का सिए क वा हुआ है (कर्ड०--दै० सि०, १४), एक तेरे अपने ही सिर तथा किर नगों के वह मगह कोचे यह (बोला०--हरिकीय, ७); उपने देविदो दर मानक कोचा कर दिए। या नान० (१ --येमचट १५०

सिर ओइ लेका का ओड़ाना

न्यतं उत्पन्न विकास सम्भाषा रहा । प्रयोग स्वर्ण सम्भव अपन स्वी है, यह मैंने विद्यारी बार ही कहा था। और जो सुद्द आक्षाधा विकास साम कर समा करने यह स्वयाप की कथारी आह कूँ तम स (अदिक-प्रयोग, ३६४-३६६

मिर करना

- (१) द्वाबित्य देना, सद देना । अयोग—आप नेनी पाय माने भी ऐसी औरम को विभी दूसरे के सिर कर व प्रमान में पुर्श्वकार चम गुरु है। वीनेश नाम राज्य ।
- (२) बाम समारमा; घोटी करनी ।

विनय काराम काराना

सिर काट केशा । स्थोग-शो क्लम अभी कर दीने, हाजिए है मेरा शह कर (दूर०-भक्त-३१

मिर का बोध उत्तरमा,--इस्का होना

भागा मा किसी दाविष्य से स्वतः होता प्रयोग-स्ट्रान दिनो के परिश्रम के साथ जिए का कोम्स कृष हस्का होता (सांस्व (१)-प्रेमकट, १७); जनद वका है जिए का दोस बुद्धए-स्वयंत्र, १००)

(तथाः थृताः — सिर का बोमा दसनाः) चिर का बोमा दस्का दोना देः सिर का बोमा दस्या

थिर की कमग्र

करन का एक कम । प्रतीय—सभ्यक्ष काली, मेरे जिस की करन, कि नवते जुदर बाच नहीं है रें (बानत है)— प्रेमक्ट, २८३

मित्र की करा

वधनी क्योजन । बयोग---वसावें वधने सिर की वधी दूशनों के किर वर इसके हैं (सर्व०--क्षिकींस, प्रष्ट

मिर कुचलगर

पराधित करता दका देता। प्रयोग—इनका निर कुल्लनं के निरु तेने एक वक्त नेतर नीती क्षणनं विकास म दर्शी है 'विक-केमी, (०); श्रांत्यों का नर है कुलक दिवर दथीर सीवं दिवसाना है। मुश्क—बक्त क्षप्र

न्यर बुटमा

बहुन परिचान का प्रथम करता, रीता सुरपराना । प्रयोग —जरको क्षेत्र जिल्लाकर, बाकी नेना होए । एनी वर्ष न तिन वर्ष, जी निय कुई कोट (कडीर प्रशान—स्वीर, क्षेत्र), दूर प्रकृति हो रही निय पर विषय निय परकते कुरत ही हम रहे (बोला)—हर्ति होत्तर, रह

मिर के बल

- (१) बाहर के । प्रयोग -- जी निर्म जी बोलकर हनके वहीं बाजन) है जी कि दिन के बस बसे (बोसo--हॉन्झीध १२), जार्क को नो निर्म के बस बायर्ग १५० सु०--सुदर्शन १३ हम बाब को पाप निर्म के बस करन है सार स्टेक- स्ट्रांट हिंदेही 104
- (व) नत्यामा से १ प्रयोग—नविष्टीन संघनी क्ष्यपृति के विश्वास में निष्ट के तम सता हुआ से (मृत्या मृत्य समी, इस्ता); तृब बुक्त देशक क्ष्यका (मृत्र के तम क्ष्य क्ष्यका क्ष्यका क्ष्य की कि तम की विश्वास की विश्व

स्मि के बत मीचे अरमा

बरी सब्द प्रशास क्षेत्रा । अमोश-व्यव्यक्त सब वेकन हैं कि संबोधाट के मुकादिके में अभने प्रश्नती जाते जिन के बस बीचे का रहे गुरु विरुक्तार पुरु पुर, २१६ ř

बिर के बात होना

चित्र के बल होता

भट्टत प्रयत्न करना । प्रयोग—सक्ति पान होने के निय भए के बल हो रहे हैं (भूक्त०—निराला, १४)

भित्र के बाल सफेद होता

इस बोलती बुरायो अलगा एकांग न्यूक्त तोग्र दोवपा इसी कालपुर में भीमूट है, जिल्हां विर के बाल पहिला-प्रभाव की सेवा करने-करते बजेर हो यमें ,सुरु सूच-सुदरोल, १४०.

लिर खपाना, छिन-वर्षा करना

क्षिण क्षा कर कर स्वार सहित साथ किया न वर्ष । या 'त आह दिया आह साथ मुख्या की हरूर पर विद्यारों की है मू निर्माण मृख्या के अदेश राम आल्य माहित्से तक गाम महित्स माहबार को ये अदेश राम आल्य माहित्से सहस्र पत्र पहिंच क्या किया क्षा ना है क्या का माहित्से हम हम स्वारंग माहित्स क्षा माहित्स क्षा हो स्वार है जो नहीं हम किया क्षा ना साहत्स का साथ माहित्स के स्वार हो जो नहीं

चित्र काना

कार्य ही बक्षवान कर तम करता । यक्षेत्र—हतने किरपुका ही जनर विका—निर वत आधी (केलर १)—ध्यांत्र ६०) तम लोग भूड ही वेशर विर भा रही ही (तिरानो—

(२) ना करना । प्रशेष-विकास सेवानीय कार के किन देश सिन न बाका करी (समीठ-व्येमक्ट, १४)

चित्र बार्जी करता

सर्व-चिक्तक बाल भीत करनी जयांग उनके कोई विकास की स्वयं करण है जो अगले सिद्धों-त के स्थान कर स्थानकाश हैन अगल जान है। च=1 उन्हों से स्थित काला कर कुंठ करण — गुलेशी केट

ब्सर रोजा करना या करवाना

भूब दिलाई क्यांने या करवानी प्रधाय—कोन किए लाग करुपाना भूका एक नेया तम् कीन वंदा के किने कोन्छ इसिजीय १६२

मिन माडी पैर पेटिया करना अवक परिश्वम करना जब श्रीप वणकरना प्रवास सं धर्मकर्त्यन्त, हो सिर बाही हैंग बहिया किय मेट से वेतावप हाद की बारोस बासर करते हैं 🗶 🔀 उन्हें चेताव कितावा दिवास है ? 'हंक्षणाध-देव सव, इरेड')

म्बर गंधना

नित के बाल तथायमा । अयोग---(यदि सिर कस युमुम यदि मुद्दे होने मान वहेंबे (पुण साण--सूर, 8३१०)

निर धुमना

- (१) वंबराहर होती : प्रयोध-नित्र गया चून बन नमें इन हम इन्त्र मृह से तहीं तिकल पर्यः चूनके हिस्सीध १८५
- (२) मर्याता का अन्तवन कर नामाम्य नियम अधि ते भिन्न शास्त्रा नेता---वर्ष या पृष्ट हो बाना । मयोग---पृष्ट कार्य करो कोई नद्द नमें केन्द्र की पिषकरों । मय०--हार्रजीय, ६८
- (३) हिर वे पस्कर धाना ।

सिर श्रद कर बोसमा

(१) वर्ष करता, उस्ता होना । अयोग---वर्षे वारे मारे राज अना रूट बिट बढ़ि बढ़ि केन्द्र साठ प्रशास । भारतेन्द्र, ६७०,

(* c. gratignion year c

सिर बहुता

बस्द होता । प्रवोध-कष्ट बायक बृह व दीजिये, सृह म दीजिये नारी । ओह मन करें सीट करि दारे, बृंह बहुत हे करा सुन करें कु दश्केद दानव-स्तृत वह महासूद सूद बढ़े, जीते बोकनाय नाथ है बक्ति वहच (विभवन-कुमसे अहर में दिवना हो नाम देना है, प्रश्ना ही यह सिन बन में करी है भीटान प्रेमबंद, १९१ करना उनका महत्त्र बना करते भी परन्तु करक के प्रकार में क्रमा बहन बिन बहुत करी भी प्रस्तु करक के प्रकार में क्रमा बहन बिन बहुत करी भी स्थाठ (च उल्लाह इसके)

- (१) कादर करका । दशन—को हम **हम आवते जासति** ≐का कोम क्रुपट सुकसाक **सुर ४४३व**
- (२२ प्रमृतिय महत्त्व देवन प्रत्य बनामा । १४रेग प्राणी काम दे संबंधि प्रशामी वार्ष हो से वह बदायों सुर सार---सुर १००९ - सेने वह दक दक दक कर बना उनकों सिक



थवा विवाद (परीकार-कीट दान, १९६); मुर्के को उस करी पर कोम बाता है, को दिवको को किए बडाते हैं (ग्रवन-प्रेसबंद, ८८), बादर दन कमोनों को बहुन किए बढा दबा है प्रापने भूतिर-भगत वर्षा १९१), तुन्ही के उने प्रश-विवादक इनना किए बढा एक्सा है (भोरय-खनर प्रापृट १०६

(६) मादर स्वीकार बाजा। प्रयोग—पानी नीमा वे पीस पतामा (पद०—प्रावसी, २६-२१); जब तो तब वीम पदाप गई मू क्या मन भाई मूर्गभी के मू शतक करितः यमा०, श्रद्दो, महावाम, तुक्ते जना बना किया यह बचक समते भी निर पदाप मान निया (प्रेम साठ—सठ साठ, वह)

स्तिर सियाने का स्थान

माश्रम का रमात । प्रयोग---मिर विषाने की भी तो नकान स था, कहां होकर आती किस्ती हैं (मृठ मृठ--सुदर्जन, भूरे); प्रशित भी दिन-रात निर विषा अकने नामक अनह की सोज में में सुठाठ (१) --यश्रमक, ४८२।

सिर अर्थात पर रकता या होता

करीन ताना नियम होता । मयोग जिन्ह भूई साथ गयन निम्ह साथा । पाने क्ठे भार गय भागा (पद०--कायसो, श्रेश्य), जिन्ह जिल्ह सीम क्रमण कानी करे निमार (पद०---क्षायसी, श्रमक

न्दिर ज्ञाना

- (१) जिनमे पत्रना । प्रयोग—यह नहीं कि क्लके इकाके में अमानियों में साथ कोई जान रिपायत की जाती हो अ अ गमर यह सारी अपनामी मुक्तारों के निए जानी की (मोदान—मेनचंद, १२)
- (२) सिर कटनर । प्रयोग-नार कहा कू तेकतां, से सिर सार्व श जाक 'कहोर प्रवाठ-क्योर, ७०)

स्मित्र भुकता

सरिशन होता। पर्यात -तुम्हारा विर सके यह नहीं बाहुती की दिसी के बाग नहीं नदीं - बाहे व नहें

निय भूका कर

भाषत विजय से । प्रधान—विश् भूषा कर त्यान रणदना है उस प्रपर्त बनानेवाले के बाममें विवते हम सब की बनाया (ब्रेसर०—क्सार), पर्छ)

मिर भुका कर जान होता.

विना विभी प्रतिकाद के क्योतहर कर केमर (प्रयोज— इन्त्रजा-क्षण्ये और प्रव्यवाद-दान के अनन्तर में 'बहुमत' की पाना के जाने जिस जुकाकर इस दुर्गम मार्ग में प्रवृत्त होता हूं (पहल प्रशा—पहलेश क्षणी, 50%), क्यो आ-वाण मो बहु उसकी किर सुकाकर नाम केमा ही इस कोगों का काम नहीं है ? (एंडर-इरिसीस, १५-२०

निर क्कानः

- (१) हर माननी, संधीतमा माननी : संधीत—मीह दिस्ट कर हरि न नाई । वेर्ड देना मो रहा किर माई (घंट०-- कारमी, ११६६): बहां कवीर की बृद्धि मी किर मुक्त ती है पूर्व निव—मान्यूव पूर्व, सप्ती: रामर किराना ही तथन ही; पर न्याप का बोरक रामने के निर्ध कवी-मानी राजा की मो निप मुकाना परना है (रंगव ११, —पेमचंद, १०६ , व्यानिवर नगर को बोरान कर दिया किर भी स्थानिवर के क्रिक ने न नी कारक कोने बोर न नर अवस्था मुगव—मु ० दमी, ३:
- (3) बादन करना । प्रयोग--वृत्ति के निनाइने युनाई । वित्नाइके यू जोजियो बनाइ के कहन वित्र नाइ के क्य एक सेनायांत. व . बह कम बादर नहीं है कि नीत तीक, कार-अपन इन्यामे बहती भी दिनके सम्बद्धे किर भूकतो है (गोदान--देमबद, क), कारन के विद्यानों में भी इन्यादी के सामने नित्र भूनाया है पहन प्राप्त पद्धमान सर्मी. इन्या
- (४) सबका ने मध्य गोषो करती । प्रयोग भूरवास प्रभू वृति-वृति बार्च, रहे भूमि सिर नाए (सुल्सा० - सुर सल्द्रभ); सिन जिनको युव्य बीर सबै सिर रहे सवर्ग सामाल प्रजाल - गामाल दास. ६९६३), विभे स्तीय कुमानी बहुतने हैं उसके साथ यदि हम किसी देव मन्दिए के मान बहुतने हैं उसके साथ यदि हम किसी देव मन्दिए के मान बहुतने हुए , सानव-प्रतास प्रवास स्थीत का अवाह नहीं

रस का प्रवाह नहीं---शृष वीयान कृष्य है, विसे देखना सांसे पृष्ठ भेर जेली है हुएय विर सृष्य नेता है (सानः १)---प्रमचंद, १५२)

(५) अग्रस्कार करना ।

स्मिर होंकना

मतानाना । इयोग —का बोहन बोबी में मूना नो किए डोक किया: भारती⊙—रां० रां०, ३१६

भिर बालगर

दाविका बाकता । प्रयोग-- १५व कुमत करि करटू गर्भेका । सी जनस्य वसके किर वेका स्टायक ,याः --कुलसी, १४व

रिवर तोहरा

सावा करता । मधीन—तो । देवें निर वाप्यत का म नवा शह दवों के माच जनपत के सने । है जन्दी की पूक कमार महा को दूट नाचे किए साहर हनकर सने जोसक-हरियोध ११

निय देशर

प्रशान निवासन करना-जान होती । यथीय-चेन न संगी भीवनी प्रेम न प्रार्थितिकाई । राजा करना निर्म क्षेत्री कि है तो से काई समीर संदर्श-क्षेत्रीर कार, केम पूजन कर पूज्य राज्य । कांद्रन केम सिर हेद्र जी सामा (प्रदर्श-सामसी, पाद), मूजवास किर हैत सुप्ता, माह जाने क्योद्वार सुरु साल-शृह कुप्ताल

स्तिर धरना,---मानता

मारर स्थीकार करता । प्रयोग—मान्, विना, वित वस गुजन वहि, तिनह की कहियो दिन बारवी (क्) मान स्थ, ४१६२), जागू गृष्य करि राजी बोकी, में शावनु विश मान नियी (सून साल-सूर, ३४४६०, कारण विश्व प्रयाद सिर बरेड (साल- बाल) - मुलकी, २४४

सिर धून कर गाउनाना

सहस प्रधान। प्रयान सका साम अमृतिक आक नित्र सूनि पति परिशामी सूठ सान सु १०० व प्र प्रापृत को पून गांसा निर्माणी कि प्रदेशि प्रियम्ब १।२० वास सुप्ता १६ नित्र सुद्र ग्राम की सूच्या सीम सनद परिशाह साठ बहु । सारस्य सुद्र ।

सिर धुन धुन कर

इत्य बारों से प्रसीय मापका प्रदिश बनाव प्रसन्द

आहें. यह मुनकर अपने भाग्य की की है सो "विकास भागत" जाने खिर भूग-मृत कर तराहता कर रहे हैं ।पट्टम्० के पत्र -पट्टम० समी १५८५।

मिर धुनना

- (१) वसताना १ द्रयोग—साथी मूद में गाँव रहरे, पत्र गाँव स्वराद । वागी पोर्ट सिप पूर्णे, भीठे कोई साद (क्योर प्रकार—कारेट, क्ष्या)। मो मो धूर्णे पूर्णे किर राजा प्रीर्टि के होट समाह । असे वनवन नाहि साम मुखदा बाउर करिए काह खद्या—साथरों, क्ष्या), मो मह सुनद्व पूर्णे सिप सोई रामक आ, —एलसी, अर्थाः, वस विहोन में सब्दार मुनहीं । ने सब्बार किरि निम किम पूर्णे। (नद्य प्रवाद म्यूने) । ने सब्बार किरि निम किम पूर्णे। (नद्य प्रवाद म्यूने) । ने स्वराद के बाद समाद के स्वराद मूर्णे। (नद्य प्रवाद मुनहीं। वे सुन्न सोम पूर्णे की सुन्न की सीम मारी पूर्णे की सुन्न की नीम मारी पूर्णे की सूर्णे की साथ मारी पूर्णे की सुन्न की मारी साथ की मूल को सोम सुन्न की मारी सुन्न की साथ की मूल को सोम स्वर्णे की स्वर्णे की सुन्न की साथ की पूर्णे की सुन्न को को प्रवाद की साथ की सूर्णे की सुन्न की साथ साथ साथ सुन्न सुन्न सुन्न की साथ साथ सुन्न की साथ साथ सुन्न की सुन्
- (२) प्रवास करना : प्रयोग—मुनल बावशाहों से ह्यार निर चुनः पर उरवपुर के रामाओं ने बहर सकलीक उठाने पर भी और तक x × प्रत्यामों को अपनी सक्की स रिवा भिट्टानि०—बाठ थ्यू. ३०): देखिए प्रयोग (१) में [★] भी।
- (३) विभी वंद्रायाचित्रं वात से स्ताब्व रह प्रामा, धहरा प्रभाव राजा । यदान व ही नहीं यादी संघानिक धृत रही वी (मान० ४)—प्रेमक्ष्य, ११%)

मिर व उठा व्यक्ता

- (१) काम में कार्यम कारत होता। प्रयोग—समेरवरी सबर में क्यारे में पूर्ण को काम तब विकास प्रदासकी मानक के प्रमुख्य किया प्रमादार का तक सकता केंद्रीक कियान ६४
- (- न्याना का का का मारे मित्र भूका रहना र प्रयोग ---नानाको न मामन ना सह मित्र तक नही प्रठाने पान नव नेता भाग अस्य घरहा नवा कारो पेटने प्रमादेद, १५० १८१
- (के) प्रभाव प्रकाशिक हो आहर ।



न्दिर तवाहर

- (१) सारर मगाम करना । प्रयोग-मेरा मन सुनिर्व राम कू, मेरा मन धार्माह साहि। सब मन रामहि से रहा, मीस नवाबी करि (स्वीर ग्रेसा०-करोर, भ), पूरव सरर होत्र के सिर भावा (स्ट०-सामसी, १७११); क्षेम वाहि राजा करे, सागह सिर नार्च (स्व० सा०- सूर, भ)। एहि विमि निज पून दोन कहि नवहि वहि सिर नाइ (गम० साल)- सूनसी, भ१); धरि दे वन सब नोत नवस्य (स्व० प्रमाठ-नेट्व, १५०), तारी प्रचमहि नाइमा नवस्य कहन सन्द । पूनिस जनामित भावती मु कनिन की जिए लाई (प्राठ-स्वाव, १), पत सुन्नामित भावती मु कनिन की जिए लाई (प्राठ-स्वाव, १), पत नुन्नामित भावती मु कनिन की जिए लाई राज्य साम की विमायता भावती सुन्नामित साम के साम है जन्म साम सीमावी, एक), धर्मि से स्वावि कर्मी सिर नाम । स्वावित मन सीमावी, एक), धर्मि से साम नामित साल का साव, प्रमावी है सिर नाम (प्रेम साव-जना साव, १९४१); एक तेरे सामने ही निए नमा सिर नवी के सम जनह को रहे (विस्त-हरिसीध, छ)
- (२) सन्त्रा में सिर क्ष्यांतर । स्थोप—काड़ी कहा कहिये अब तुम मों, तिय सिर कीची नायी (सु० सा०—सुर. ४६०६ , सब तब घटवरि, अस तर देवनि निर्माण तिर्माण सिर साम् (नैसेवंट (३)—केशव, ३००)
- (६) विवसता पूर्वक कुछ करना । प्रयोग—कर सेवा for ताइ के पर न पालू वीन और पद्म आदाने ४४ व अपी किन्सी आयुरी यूरी रहाँद विश्व के इ केशक १ कैशक, ५७): क्षाच और निर्मार है, होन नरे दून काचि । परम अस है कहन है, शैन बचन धनि आधि आठ देशक (६)—सारतेम्द देवेदे।

निय सीचा करना

- (१) लक्ष्मा से सिर प्रकृताना, जनमा अनुभव करना । प्रमोप—ऐसी क्वेरियों को कीन गृहत्व अपनी क्रमां कह कर गिर नीचा करेगा (अंकाल—प्रसाद, ३६)। में विशव प्राप्त मा सो बचा से, पर किसी की चीच सो न महेगा, किसी के सामने सिर तो भीचा नहीं करता (प्रेमाण— प्रेम बद, १२)
- (२) मरित्रत करनाः। अयोग—वेश सिर पाद तक किसी में नीमा नहीं किया यो यो इसन वेशो इतनी नेशन्तनी की (राष्ट्राठ प्रदाठ—नोशाठ दास, ६२०): वर्गे-वरी का निर

नीपा कर मुन्त हूं, इन्हें सिटाते ज्या देश लगती है संगण स्क्रि-चेमधट, २१५.

सिरं शीचा पहला का होता

निक्त होता । प्रणेत—कभी दरका कोण पू नो निक नीचा हो जान (वीदान—केमबद, ३३), वेलका के अपन्त वेनावित का निक नीचा पर गया (सांसोठ—वृ ० वर्मा, ४३५)

मिर पक्रद कर बैटना

निर्वेदर वेंक्ष्या, निर्वेदय श्रीया । प्रयोग—तो य हम वेंट्रते पद्म कर मिर देट मुख्य न वो कसर होती (कोसेंठ— वरिजीध, ११४)

व्यव वकदमा

बहुत पहलाता । प्रयोग—नीय विर पर वय पता लोगा न तथ जिर सकतो हो अना अब किन निर्दे (वीक्ष०— हरिक्रोध २०१

(बयान मुहान-स्थित एकड कर योगा)

निर प्रकारता स्थिर-पृष्टकी करना

- (१) विश्वास नवामा । प्रयोश—सस्सू, इस वेमोक के गहर दाया प्रायम हाता है पाने को लाज के पीछ सिर प्रयास हुआ कृतिकों को उत्पर-पुन्नट कर देखा अ अ (शह नि०— काठ स्ट्रेट २२), इतनी निर-पत्रची करने के बाद की जनक। इतनी साथ के होती की कि विजा-पहित जीवन विना स्थल सूठ सूठ सुद्धान, १९५
- (२) दम करना ।

ब्बर परकार

- (१) बहुन परिचय वा प्रयान करना : वयोग—यह से जानती की कि मेरे इनने निय परकर पर भी तुम्हारे सम में भेग का उरव न होता त्यार मार (१)—किंग गरिर, पर तु जिलक तुरे मान निय परकरे पर भी बाबार न जाने पर इस प्रवत वयमें विवाह की भूगी की चले गए। एगर (२,—प्रेमबंद, १४), मुनीक किर परक कर यह क्या (केंग्रर—देश सर, २०२); इस प्रवत्ते ही रही सिय पर विवय विय परकरी कूटते होहम यह बोसर—हरियोध, १३
- (२) प्रमुखाना । प्रवीय--देखिए प्रमोग (१) में (💠) ।

भिर पहला

) । बस्ये पाना - प्रयास -इतियत परी जिल्हा साथे **वह हांगी हुन रोड (सुरु साय- सुर,** ४४३व. (२) हिन्ते में बाना, म्यतना । प्रकार—मी परने अपूर्व नित परचे । भी का काह में भरति काई (पट० —स्वसा), दश्य , बात मृद्धि में यह क्या कीन्त्रों, जो परे कीन पर्नों (सूठ साठ—सूर, २७१८); जब अपने निर परेशों उस दनकों होता सामेगा (सानंद्र (१०—पेनसंद १५६%) कर समा मो, नाक न दल हो असा तुम न नुपरे, निर पत्रों हमने नहीं बीसोठ—हरिकोध ६८

बिर पर आ पहना

- (१) शांवित्य अपन क्रार का पड़ना । धनाय—हां, हुणीय-यो यह काम मेरे ही निर पहा १९३० हो — क्रेस्क्ट, ३,६६, इस बीच न एक और काम सिर पर घर पहा है (पहुंचन के पल-महमन क्रमी, १९१), यह वस निर पर यो गई है, तब राजा कृत न कृत अवश्य करेना (सुर्गत—हुण बमी, १९६) (— , और, पन जी निर पर बा पड़ी है, निपटा जानेना १९७०—सोठ क्रमी, १९७)
- (२) भोपने को को सा एक्ष्या। बयोगः स्थित मृणि नई तय, मोच करत प्रय, पर्य गिर क्रांग आई क्याय०—क्याया ३०६ . बाप बहो जो सिर पर भर्य होत्से है यई होत्सी है सुरु नि० ⊶बाठ मृत गुरु, करत), वेशित प्रयोग (१) में (+) भी।

सिर पर का पहुँचमा या भागा

(१) बहुत समीय था पहुँचना । प्रमोण पासे ककू न हीइता की तिर पर भावे काल (क्योर प्रधाठ--क्योर, २५१ , बाद तयो सिर में बहाय जैन बान जिन किराहित रोति कीति प्रानन कालायो हाथ (भाव प्रधाठ (२१--भारतेन्द्र, १६५ , वृस विर पर जा नवा, कामल के विना हार में पान की बहु किसी तथा नहीं भी जनता अस्तर (१)-- प्रेमक्द, १६६३ (४०)

ि स्टब्स्पोला सम्बद्ध स्था प्रशास — स्थित सर स्थाकत स्थानक नेपरियम करण के दिल उद्धा गांच विकास नेप्रस्था समाहे सङ्घाक दिल्लान ५७% देशिय प्रधास (१) मि () स्थी ।

बिग पर साफन प्राचा

विधानि सम्बद्धि प्रदेशक जाता दशायां धावत नक्षा ह्याया विभी रिष्याधिका क्ष्मी करता कि सिंग पर अध्यक्ति को जाया - वोद्यास प्रस्थात क्षम्

चित्र पर भारा लेगा

भारत जारीर विश्वा देवर। प्रयोग-सिर कावत तम करसी है के बहुत कीके तेति जान (पद०-आयसी, १०११६)

बिर पा सामधान उठा लेना

- (१) बहुन वर्ष परका । अयोध---भागमा विसर्व इटा सर पर निया यह बडायर चार कर्यो पर यथा गीलक हिस्सीध, १४६
- (२) बहुत बीलगर-विस्ताना । प्रयोग—जनके स्वर ने फिर सिर का अल्यान प्रकासिया (क्ट्रिक—अ० मी० २४

स्मिर कर उठा लेगा

- (२) बहुत संदश्या करनाइ नवाई-अन्दा करनाः। स्वांत— वर्शनिया की बादन इत्तो है कि बहु नदा ती दान के जिन वृह्मी घर को विश् घर घर इटा मेते हैं (गु० नि०—बाठ मु० गु०, प्रथ२), कमर बाहव भी जिमका है ती सारा प्रकृत विश् घर बहु किया है (मीर०—सगठ माधुर, ७०) (३) बहुत बादर करना । स्रयोध—मही अंते, बच्च में उनस कहू या कि बार सामकुमार है और सम्मार से बाद करके सामहे हैं, तो वे सामको निर पर दशा संगे बेशानी०—स्वरूर०, १८००

सिर पर वक भी बाल न बबना

प्य इसिंग होता प्रयोग गाँग हो गई। यहाँ शाली हाची नष् तो यह में भाग को प्रयोग कि तर में एक शाल भी न रहते सर्वता संघाठ प्रयाठ संधा । हास, श्वर्धनश्चाई)

न्दिर पर कफल बांधना

यरत तर व देवार होना । प्रयोग देव नीच म माधानर इ राज्य मिर पर वयन काम कर गृज्यान के अपनी स सरव किरत लोहा लेख रह सुपेट सुंद समी पट प्रालिक पट आधार के क्यार साम किर यह नमा कि आधारों भी हो रही है दिसमें भी भी। लोकरी भी चन रही है सहीय महास क्यार

स्थिर पर कहा हाता

बहुन नर्माप बाना । प्रयास । बया मा बणे निरं पणि दावे,

पन हारि कहा विकाद करोत संक्षाय-करोत स्पक्षण श्रांत के अर्थ नहीं है तो उसी पहने मिर पर कही कियति दिलाई देवी पर्णहरू मिन्न-प्रसाद, १४-३६ , मैंनी सर बचा भेषा, स्वाप्त विक सह। है पीन बचा होगह है जानक (एक प्रेमस्ट इ.३ स्वित सह सोजना

भाग तक की परवाह न करती । प्रयंत्य—तेश भूड है नहीं कि कामर गिर में मू कर्णमा है (असंक पूर्वत्योध १४२ स्मिर पर मूलरकार

गम्भा । त्रामि — साम्पर्य है कि कलके जिस्का को हुछ गमर्थे, प्रमुख्यामा भी हरी क्या जबने (१०००) — प्रमुख्य, २०४०-२०८०

मिर पर घडा कोडना

दाय देशा। प्रयोग-स्तो कह, किन स्थ्या के मान २४ अपना यह कीता ? (स्था)०- गुप्त दथ

स्पिर पर सदकर अध्यक्त

- (१) हरती होता। प्रकोण-त्यानं मृद्य वर्षा नावति है, मोधनि नीच वटी (सुठ साठ-सुर, ६८)
- (२) महत्रवादीवा।

सिर पर सहना

- (१) गहण प्रभाव होता। प्रयोग—नाइ बहुत वहत सिन माहिनो हो, कँग गर्भ वर्त प्रश्न भोड नाम तक के (एन०) कविता प्रमाठ, १३७१; हो। त्रात देश का वह तमकोर निर गर मही रही (मृनीता— केंगेन्द्र, ९३
- (+) अहंड बनना । प्रवास त्यां त्यो तीय चढ़न निर अगर प्रमा प्रशं मील वस होत्त रहें हैं ,विनयाः - जुलसी १३९ भील निर दश वस बहा मीला स तक निर भवदन हो भना सह दिन । यह - दोना - हरियोध, १० , योजनानेत से स्वीत निर चनने बले साते हैं (देशमो०—स्टाठ देशों, पड़
- (३) उमार पश्की होता (प्रयोग---अभी वनिष के ५०) जिल्लाम पर्व हैं (साम्रक (१,--प्रेमघंट, ६८.
- (४) तिबंध होता । प्रयोत—वेदी हत्या का पाप मृददार सिप क्येना (माठ मात १५)—किंठ गोठ, ३६
- (२) मान मिलता

न्दिर पर श्रदाशा

बहन सहाय देवर घर्डण दिशापना । घरणायः । नगः न ००० को सर पर नदः । स्था पीदानः प्रस्ति रक्षत

मिर पर आवर शाहर

काई बहारा का वा वाद होता । इस्तान-प्रश्ने पहा ह्न्द्रारी संभा तम कीम दिसानत संभाव प्रशान-नाधाय दोना, प्रो, किर किए में बाबों की युवली, सक्टी दिस बहा के बार की विदेशों न केन पह कनके साथा रही वा दिसके निर्मा की डीटेडिंग व्यक्तिक क्षेत्र

बिर पर जाद कालता

माद्र के प्रभाव में बार में करना । क्रिकेट करायी करन्ति रिनिट क्या मेंना । सजा मीर्टिट स्टब्ट निर्माणिया । यहंग -क्रायमी ज्ञान

नियं पर जाता

जिन्हे परता । ध्यांन—शाती है को विरः मानीनाती वे कम, नाव-वेन के दुई, दूव केसर बाजाय में बाह्र गोदान-वेक्सर २४

निय पर जना बहना

प्रत्य कार प्रकी । प्रयोग-शास्त्र भ्रम सुरुष् प्रयो यह नहें निरुप्रधान क्षेत्र । पर्यंत अथक दिवरण तोह सार्य काह न सुरुष्ये विन्योग-स्मारी, स्ट्

नियं का टूट पहला

- । हो संचानमा कर देना । अवरेग---वस के तीन क्रीता हो माने में बार्ग के जिल्हा भागे में ती मस्याब, में निकाद ह हुइ एडंड्रें मुष्ठ- युंध बार्ग ३३
- (२) प्रतिन होनर । वंश्वीय न्यत वालाग्यत, यह विप्रति को का शहर सम्बन्ध कीम नियं पर पुरः पहाः प्रदेश प्रशिम — प्रदेशक लग्नी केर

लिंग पर ठीकरा फोर्ना

द्राची ठारावर । प्रयोग—विष वया पृथ किस रियं प्रथमा द्रीवश कीर दूसरों के स्थित वीस०—हा छोध क

ब्याद पर द्वारता

- (०) दिनी पर राधित्य देना । प्रयोग—वनाव अपने निर को को दुवनों के सिन पर पान ! मिर्मक्र—हिं(श्रीध प्रश्नो, दानों में बाग्रे जिम्बदानी देन्ही के निर्मापर पान दी धीर नह विश्वकृत समय हो गर्वे गुरुन—केमपद, ३१६ (०)

(म्बाहरण प्रतिस्कार हिन्द्र स्वास्ति । सर्वे स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति ।

ब्रिक घर धुन्द जानतम

पहासार विश्व प्रकार प्रशेष —्वय स्वतः व्यव सर्व स्वीर साथ गर्यद्र प्रति विश्व वेचे ३६० क्यांसी प्रशास्त्र

क्ति पर ध्रय तसम्बा

चरात गण केरी । भारत करता । अनेतः उत्तर केरण एम केरते एक तिर पर जनव नगा नेते पूर्णते । सरिजीय प्रो

निवार कर जेको अध्यक्षक सरकारा

हर स्थाप सर्वत्र भी जान्याच्या करते. तथी र प्रतीय — इस्तरात्र तथी सक के कि क्येया जित्र पर नकी सम्बद्धाः सम्बद्धाः क्यो के क्यायाः क्षेत्र स्थाप

निय प्रमान होना

जिताकरम् प्रा देशकीय करने बाज्य कोर्न व कोर्यन । कंगोर क्र इस्त्र क्यानंत्र मित्र पर कोर्न अपन्य क्षान सम्बद्ध कुन्द भा जिल्लाम नहीं और आफ भी पृत्रना स्थान नहीं है सकते। 'बीलम नश्चात, १३९

श्चिर वर ताबता

(१) वासाम कामना । प्रयोग — समय भी मृत्र कात न का ने प्राप्त सिवय गीम वह गानी भूत सात प्रमुख मीद नव तात भार जिस नाक्षी स्वियम के सुन शास्त्री स्थात चंताल — गोसीत देशी, १२

(१) निकट माना । प्रतेष---नवरे तरेत राज पर जानी निव निक की कृतीन पर नाकी सम्बद्ध प्रते-- मुल्ली ५०५) जिन तर प्रतारी कंपना

दर्श व को गोरण मिनना । प्रकोन—पाप तम देशिये स देशी करतुर्ति मेरी जगन प्रपारित की लेदे हित पास के कथारण सेनापांस करते किया गार पर की सरहार। गगर। बादी गई की जिल्हा के जान का पर प्रपार गंदर हुए, प्रथ

विक पर परिचा गाउना

शुनारकी भार केनल का देन' अब से केनल । क्रमान के मेरे शिर्द्रात्या पार्ट क्या कहि नहाई मुरुक्ताल सुर क्षणपुर

सिर पर पड़तर,—बंजिता

(१) जिस्से कहता । अशोव—न्यकु छोड़ कोच और विसि सार्ट । तुर्व कोच हरि सहके आहे (पटक—आधानी फाइ), करीं सबै जिस सके ही किति परे प्रवेती विनयत -मुख्यों, १९७

ब्लि क वहाड़ जिर करता, --दह परना

गरायक चौर विश्वाम का या प्रया । प्रयोश—कंगम के निर पर मुनी बरो का पराव मी इर पदा (मुश्य—अस्म १६) समझे निर पर एक पराव मा दृष्ट पदा (मेरान प्रेनप्रद, ६२,, क्टा करे भी दिने पूर्णा रेचा । नव कि निर पर प्रदाह ट्ट पद (बीला)—वृश्योध, प्र.; जी पढ पत्री प्रमाद गिर पत्र निर नव असर दृष्ण रहे पूर्णी के ही सुमरीण—मीरिजीश,

स्मर पर पहाड़ इट पहला इ.सिर पर पहाट सिर पहला

स्वित **पर पाज देता** यव को प्रेयत कोच करते रहाता विभाग स्थापीय हुए । करना र प्रेयोग अल्लाह कोचित यह राज स्थापीय अस्तिक देवाहरू

स्तिर प्राप्ति या प्राप्त कर अध्यक्त जनसङ्ख्या अस्ति । प्राप्ति । द्वार विरोध प्राप्त स्वरूप इंपर-उपा भागे कालीक कॅंक्सनी इयद नाम न सह तन ही सिर पर तेर रचना जाग शाव धरतीक क रेपी, शंकर जुमन किनारी की जरह कमरे से शिक्सी चीर सिर पर पांच रख कर मानी सानक एक संस्कृत, १७६

मिर पर पुर रस्का

- (१) परणित करना, जिस्स करना । प्रयोग—बद्धिः आपु कीती पूरी तद्धि भागि इदानान । यस को क्रिक पासी गाँगी पन्ति सीम वै सातः साव प्रव कि —सारोग्युः १८६
- (२) देवशा करती ।

स्तिर पर बन्धा आजा

अपने उत्तर कोई सभट मा गरनी । प्रयोग—जो कुमले है सन्तर में और को रथी अन्तर आनी म उनके निक सन्तर बोलo—कृत्याधि, पुरुष

जिस पर चिज्ञानी विकास

पत्रम होता। हयोग---वृत्राणी के काठी तो करत क जुन मही। मालूब हुना, तिर पर कित्रकी पिर परी (रंगक ह ---पेक्सट, ३९०)

निर पर पिठाना

- (१) बहुत आवर करना । अधीन वेकिन घरने चनकर इन लोगों को मिर पर भी नहीं डिडमरना है जातीं — पु'o हमी, इप्पर्ध, जीन की की बिडा सिया मिर पर । क प की बोजिया गई जोनी (चुमलें > हर्ष क्रमा कर
- (२) सक्ते बेन्ड बनाना । प्रधाय —सारतक्षे की जन-बाय में ही कृत ऐसा तृत्व है कि वहां के प्राचक कीर पंजित स्थान प्रकृतित पीराणिड परस्परा को स्थीकार बनत है × × और अनने स्थास्त्रदेश को सबके सिर पर बेटा दन है स्कारि—सुक पर हिंदा हो?)
- (३) सिय चनाना ।

सिर पा बीतना देश स्थित पर पहला

ब्रिट पर बैठा होगा

अजिभावक होता; रक्षण होता । एकोग---अमुर का यप-एव विभावक विक ,पर के स्वाद है मुख्या । मृत ६-६ पिर पा योक वा भार लेता वा होता.

र किन्त केना । श्रतीम—न्द्रा किरि तीर्ति जीव्ह की प्राणा, मो नय न वर्षे जान की प्रतिपत्ता (क्षतीत प्रशाय—कर्तार, १३४ : नव-वर्षे नहीं पात्र करीं नह-नहं केह कोटि विष पात्र (मृत्याल—सुर ५२७०); क्षता म निर पर बीव्ह प्राणी १ अटन वर्षा म सरहन पर समा चुपा रक्षा (वीक्षर— वर्षिक १३५

निर पर मृत बदना,—सदार होता.

(३) जरारत की शेवन होती । अथाय—कर क्तारा हम जनारन हमें कृत किर पर में किसी के बद गया (मील०--मिक्टिंग), १५%, धर्म नहीं चररत हैं। उनके मिर पर सो कम बदा हुना है जनका उनार मेरे पान है विभाठ— वैज्ञाद १६

लिश का भूत संचार ताता १० मिर का भूत बदना

स्थिर पर संदर्गना

- (१) कियो क्रिकेन कर करते जो गो पेरना १ प्रशेष जो कृत क्रमणारी का नवी और नज मंग्र को नियं पर करतान केलकर जान गई थी अम्बर (७) केमनद, २७ ; कुने । मेरा नका मेरे निरं महता रहा है (देवकोठ— संक्रा करत
- (a) हर समय परंप ग्रना (

निर पर मुमाबतों का डोकरा पटक देना

बहुत वहीं सूनीयत में बान देना । प्रयोग—स्मां क्या बाल्य का कि बाप केरे लिए वर यह सूनीवर्ती की डीकरी बहुत हमें रे गयत छेन्वंद, २०)



भिन पर सीत् केयता, नर्संदरासा

ऐसी मनानास स्थिति में होता विशय मृत्यु का अन हो। प्रयोग—मृते, तुम्हारे शिक पर होत सेन पही है बार्य के प्रेमचंद्र क्ष्मपुर तक प्रतान क्या कर प्रताने तुम कर्म कर्मक सिक पर सोन संक्षाने नहां बोलक न्यंत्योध है!

श्वित पर सील संद्रवाला देव स्थित पर सील खेळता

मिर पर केना

(१) बिहमे सेवर, सबसे आर नेवर । प्रशेष-कर्वार वन प्रमान किर पानता है में भाग कोट कर्ग किर ने परमा नेता न देनों भाग करोर ऐशांक-कर्वार इस , बधा में करो प्राप्त कार्न का पान करने माने पर मू े (माठ रकांच क) --आर्टिन्दू ६३६); वरे ही बुक्तरम से प्रवचन का यह कोड आया है धीर में ही अपन माथ वर इसे मू नर (मानक क --देशभद, १९३ अब सबसी क विचाह को लोग निर पर तम के लिए गया आरो भागक (द)---यापान १९६

(२) सहन करना ३ करोन-अनंगर्व एके इत बार्ड और श्रास की विश्ववानेकारी अकरूर कुर्व विश्ववर की पड़म दूरान अद्भाव असी, १६२

स्तिर पर प्रज गिरता

- (१) अहम करी मुगोबल करनी । प्रयोग—वर्श न प्रश्नः बहु देता जिसके तिप का क्या वह ? (सर्थत --हर्श प्रीत. इस्ट
- (२) अप्रत्यागित यदना का ही बानगा

स्मिर पर क्रियांचा का विज्ञान समया बहुत मुख्येयम्) का पेरे क्ष्मर । धर्माम—श्रीर होने कथी प्रपीद नहीं क्यों न सिर पर क्षित विज्ञान तमें क्ष्मित्तः हरिकोश ५०

विक पर सफलता का मुक्ट बदना

पण नहां सिवनो । प्रथमा साह रन्तान पण र का का का सिन के पण्टी किया है। पण नीत के देश नहां के विशेष के सिन पर सफल पा के सिन पर सफल पा के सिन पर सफल पा के सिन पर सफल के सिन के प्रथम के सिन के हैं। प्रथम के सिन के मुले हैं। पूर्वित के मुले हैं। प्रथम के मुले हैं।

निर पर शवार होता

- (१) तमारा करना वा होना ३ प्रयोग—उस पठनी की इंगान की नाह बकानी कानी बाधी की दसी दि के निर्म, नेकिन उम्म स्थानन निर्माप ने स्थान ही गयी थी। पदा करनों रे (सःन० १ -वेंगवद, २४ , बाम की महिम निर्म पर पदार है कीर क्रमी उस बोद क्यान की स्थान निर्मा किया (पहन० ६ एक -बहुमार शमी, १३)
- (२) पून नननी । प्रयोध—को भन्ने फिसन्तिय कर मूर्छ, हो न विर पर सवार नरपानी (सर्मठ -१६८३१॥, ६६ , तमद के क्या कहा ने भाएते, यही विना क्यके निर पर नवार की गोटास- केमबंद १६
- (३) पीके माना । प्रधाय मर निम्न घर मही अनिम उपन्य है कि में इस दौनात के बिर पर समाप हो आक भीर उससे महत्त्वर-सूच वाले करके इस समस्या की तह यह पहुंचने की पंछा कम (सीत्रण ३)--प्रमुख्य २०:
- (त) जुट रहना, निषट होता । प्रयास—एक-नन्तम मह-कान भीत समस्य की बानि सिर पर नवार रहते हैं मानं (१)—प्रेमकर, ३११।, अन्तरभा और कृष्ण कहना कारने के पर नई राजी किए पर सवार की गोलों -कतुर्त, २५६ , योज बोई स कोई किला निर पर सवार है (रैजर्मीo—रामंव हमी, ६०
- (५) वादिन्य होनर । प्रयोग-नार्ज निय कर सवार रहेगा तो उनको किया हाक रोक्ट प्रश्नी नगान- प्रमश्नद ५६

मिर पर सहना

नपने उपर नहन्। धरोम--शो दुल कडिन न सहा भाग । मो बनदा कानुम निष्ठ भाग (पट०--आयमी, ४७ -

सिर पर भागा होता

प्रतिभावनाम् । यस्य १८५० म १८५० है हि. इ.स.सीटा इ.सि.स.स. १८५० मध्य प्रति वटन देन। बन्ध रहे (५३म० € ६८ - ४६म० सम्बं ५५४

सिर पर मुख्याद का पर लगना

कार्य कि प्रकार है जा । प्रकार अध्योग के मान पर भी । क्या मुरमान का कर जाता है, जा कार काम मुख्य मुद्री भर्मार महत्त्व प्रकार के आस्तीन्द्र सुरक्ष



中田本

मिर पर से छाया उह आजा

कोई महायक का कविभावक व होता। क्योब —दोशी बच्चे ही थे, जब उनके सिर से उनके निना की सुन्ता हठ गई थी (बेंसन—नाइक २१४)

(मग' - मुहार — मिर का से साका वट जाता)

स्मिर पर सेटरा बाधना

वाधित्व नेता । प्रयोग - बीस पर तृष्टारे तथ हेहता संस्य का बांप मेंजा है प्रशह्मक होने को बांसला कें ,पांठ---निशाला, ३२१-३२२

मिर पर मेहरा होता

- (१) प्रमानिक होता । प्रधान-स्मार भिक्त वर्षेकी वर जो इसके सिर बेहरा धरना है (वृश्य-भक्त ५५
- (२) प्रवास क्षेत्रा ।

मिन पर हाथ केरना

- (१) प्राणीनीय देना; प्रणा करनी; धाराय में देशा । प्रणा—नेतरह फेर से पर्वे इस हैं । फेरले दाज प्रणा नहीं निष पर (भूभरे≎--सुरिधीध, ३)
- (२) कोमा देता या बहकाना ।
- (३) हेल दिवास ।

निश पर हाथ बनकर रोगा

धपने भाष्य को रोना। प्रयोग—मृद्धि को यन यन नानि विधि नानको मृद्ध में इस्थ चरि बहुत कोमो (भार प्रयोग (३) —भारतेन्द्व, ४३७); न मानोगी, भी निरु पर हाम पर कर योगी ही (मा—शीक्षिक, ५३) अर नाकांगा नी माप निर पर हाम घर कर रोगों ,गोदान—पेमनेट, २५)

स्थिर पर हाध रकता

स्तिर पर होता

- (१) निकर होना। वर्षात—नरम प्रकर्ष संत् में अपर सक्षयि साम न दान रामक मं)—नृक्षमी, दक्षर): मुक्तमा बाकर करने के निम साथी अपनी करने हैं नेकिन यह गुलेश्वम निरं पर सा नपा है और सुन्त सन के फिल्फ बड़ी है संदान प्रसक्त, ३३६८, वरीचा निकं पर है, कहीं का ही देशे गानी हैं क्टाक(१) सामका दक्षर)
- (२) बरावण होता । जयोग वया पया हो में आह बनी वित्र पति वारिय त्राव भनी ,क्योग प्रसाठ—स्वीर, १६%), बहुत पूर कवि भागू तम पूर्व निर पर प्रमू राम (रामण मू — एक्सी, ६५१): काह की न कर, नेमणति ही निकर बरा, बाक सिर कारर पूथाई पास नोगी है (कठ र० — मेनापति, ६९): कुछ मामूब हो कि में भी न्यी है, मेरे निर वर भी कोई है (करीठ —प्रेमचंद, १५६)
- (१) अलग होता; विश्वके वस्त्र में हम हो। प्रयोग—सब विश्वतर जिस सहा म नोर्टे। पानसाहि है सिर पर मोट पट0—आयसी, १९६६), दुर्शायगढ़ इस नमन को ध्यवन्ता हमात्र विश्व पर है, उसमें इस काम की सूट है (स्वाहीक0— हम पेठ दिए, १५७)
- (४) यान्य होता । प्रयोग-- सी यह बचन ती मार्च मोर्च । बाह्य करी नाढ़ कर जोटे (पट०--आयसी, श्रुप्तत); समाह की बच्चा हवारे निरं पर है (सम्बर्ध - सर्व है), दवी
- (१) शांवाच हातर । प्रवास-व्या के विश्व कहा पाप है, इसमें इसमा चोध ठीक नहीं बाटाठ-मगठ वर्गो, ६५); यह काम उपने इसमा चड़ने क्यमा है कि उसका भार सारे बनुकों को बाट दिया है, को-बाग माननीय कोगों के ही किस पर नहीं कोड़ देखा है (बिलीठ (१)--मुक्स, २०)

क्रिर पीर जेता

धाम कर रोकर केंद्र सामा । वयोष — बच्छा हो सम रहत्व कृषा । केंग्रे किर पीट नियह (मान्य प्रान्त्येमबद, २८०

मिर पीट-पार कर होगा

बहुत होना का राजनाता । अयोग-नाज निर्म पीट पी कर सेई निर्माणी पेट पेटवानी का (बोल०—हरिज़ोध स्वर्



ब्दिर पीडना

- (१) कोक धरमा । प्रशेष-मृदिश नायका वित्र पीट रही हो (साम्) (२)-वेनक्य ५४)
- (३) प्रथम करना ।

निर फंडरा

सिर में बहुत वीका होती है बयोस—मारी दें। २० रा बुद्ध-कृष हो रही की व ४ विक भीरत में बदा बदता जा (मानक (१) जोमबंद, २३९

निर फिर जाना

- (१) विवार बरण मानः। सर्वाय-न्योकरी तो ऐसी न की पर लीट के बाय अवका निरु भी फिर नवा कर्मठ--देवचंद्र, १९४५, है नुसारों की बसायर कान करा ही यहां कर निरु बसो का निरु फिरा (कुमतेठ- नुश्क्रीय, १९६५ -)
- (२) प्रश्नाच होना : प्रयोग—सम्बो निक्षण कोनी— तुम्हात। सिंग किए समा है (कारीक-नेषु, का): समा इसके बनका हो बाता तो हमागा क्या सिंग किया हुआ का कुठ सुठ-सुदर्शन ३५६
- (१) मनक होता । प्रयोग---शृतक हो अभी केवन एक कश्या पान किया है और अभी से शृत्यामा निर्माक कम स्मानक (१/---प्रेमकोद पर्श, वेलिए प्रयोग (१) में (२) मी (

सिंद फोइनर

- (१) जायाध्ययको सरको । प्रयोग—निर्वे कर्म को संस्का, पार्टि हुमा नद शान । जिस कोई मुख्ये नहीं, को सर्विका स्थान (समीद पंधार—कार्डिस, १९)
- (२) तुन्तु पैन्में करनी अयोग—वय तक समावर गभाओं में सावार एक दूसरे का जिर इत्तीलिये कोश्ते हैं जिसम बण्ये की सम्बन्धि हो (११६४० एशा०—राधा० द्वारा इ.स.
- (६) कपान-विधा करती ।

मिंग बेनता

- (१) पूर्ण सम्बंधा काना प्रयोग वय मेरे हाम विसन निर दिया फिर उथ नया मिर गया था मिर रहा बोल्स-हरियोध, ठ
- (२) माण जाने की समावना होते हुए भी विभी काम की कारता (

निरं सहता

- (१) जबरदाको कियो वस्तु को कियों के जिस्स समाना धरोन —बाल जो ने पर गई है तो पर वर्ग मुगीनत बन्ही किर बहुने व्यक्ति—हर्गिकोध, १६०.
- (२) दियों कार्य के नियं दियों को अलग्दायी ठहराता। इयोग नीत धारा कार्य स्त्रीहरा करते हैं अब स्वीकार करते हैं अब स्वीकार करते हैं अ अप स्वाक्त अपने कार्यों की दूसरी स्त्रीकृतिया के नियं अपने हैं (किलोठ .) स्वतः, १२३% वह लिल के नियं तो बहुत स्त्राधक के नियं भी मृत्री को लेखक के नियं तो बहुत स्त्राधक के नियं भी नहीं बात पूर्व कि नियं बात सूर्य पूर्व हैं। स्तरं बात कर स्वयं की स्तरी बेदन्सर्थियों का इसकाय बायके ही नियं बात रहे में (है-नेट--प्रेमचंद, २०२) नियं द्वासता
- है। जिस्स भारता

निवर सारता

- (१) अमधान-नगधान हैरान होना । वर्धन-नवा क्रमी तीर संघर पर पणा कुछ ने निर्माणते क्या तक यह बोला-स्थिति १८.
- (२) निर वणाना; स्थान करना । प्रशंव बहुनाह जैस गेड निर नारा । हान न रहना सूठ सनारा (प्रदेव — क्षायसो, नेकाथ - वर्ष क्रमी कृदान ही करना है भी नरास सं किनानों ने निर नारते की क्षा क्रमान है (शानक (द) — क्षेत्रक, दक्षः, वहिष्यन ने प्रशंतकाल क्षीनी जिस पारा, परम्पू वर्ष नगर के सानीन इनिहास को ठीक सरह से न नान पासा कृदक - अकनाक, २२६६ मेरा भी जिसाने नहीं है जहें ही ने दुवर उपराधित सार रही है सहस्त हरियोक्ष, हैन
- (3) तब-विनयं करना; करकद करनी | प्रयोग---कल बहुरी ने पर्शे विर मारा (मान्व (४)--वेनवंद, १००)

सिर मुँहाने ही ओर्ड पहला

कंप्योगस्य होत ही विश्वत परना या स्टार्थान क्षिणन । प्रयोग -- में बातना कि निरं मृत्यत ही बोले पहते, तो में विकाद के नामधिक ही न जाता गावस प्रेमनंद ३५ है मनीयन को बना बहरा रही गयी न घोल निर्मा गुगान ही यह क्षेत्रक हरियोध १५



थिर रचना

गाउँ स्थेकार करना । प्रशास-स्थित सामन् प्रजात निर राजी अमेठ (स. जुलसी ४०४

भिर रगइकर मर आमा

किताना भी प्रवस्त करना । प्रजीत—मन्द्रव निर स्वरूपण घर भागें, तो भी भव वमीन नहीं सा ववनें प्रगत (१) — भंगचंद, २५०

मिर रहरू।

निविविद्यालयः सुनायतः सानी । सतीत — यो वहीस वस कर पूर्वः दवनि वास यस भीतः नहोत्र कवित –रहोत, १०)

मिर लेग

है। स्पन्न यह क्रमा

लिए सफोद होना

मुनाया भारता । प्रयोग---करण करण करि करणन कर, याप करण स कर मुद्द, तीन जड़ी नेत है (कंटरंट -मैन:पति १००१

सिर हुं पना

मिर से बेलता

(२) दुवरों को नदाना।

न्धिर से पेर तक

सारम में अंत नक; मर्थाय । मधीय-व्यादन के विक मी मधि के कर्ता बोधा समा बरनी यक खोटी ,क्ष्मक --बोधा, १०); चारदिवाधी के बाहर विक्यते ही कर्ता है— धिर से यांच नक सानम् छं। प्रमाद ५ पण्डा नीरिया, धेरा कहा सब एउ है। बिर से पात नक मन कर्त्यामी सीनेन्द्र, ५०); बलार विक्यी, बाहर गुमकी सिर से चैर नक न रंग दिया सीर मचा ने रिया नी मेशा नाम किन्दी मही (द्याठ-वृत्वमी, ॥)

भिन्न से पैर नक आग कता ज्ञाना — अस जाना क्ष्मिन भीव होशा । जारेक आश्रवणी के सिर में शाब नक क्षम सह नहें (स्थार १०) - सेक्स्ट - १०३० वर्गा क

नक पान नव वहँ (सान्धाः)—योगचंद, १०३); सनाव सं एक भी कोई वर्ष है, विश्वका धनि उसका स्नृतार तेशकर विश्वने पवि नक सक ३५ (सान्धाः) --वेशन्यः, २३

विकास के के तक अब जाना के किए से के तक जान सम जाना किए में कता दुखना का दासना

- (1) बरवन के सम्बद्ध हरना या दरस्या । प्रयोग हिली करते के बचा जिए के रखे जार चैन के लीव (मानव ३) —पैनक्ट ५१
- (२) विना का ने साथ सरना ।

मिर ने बोक बाक देना

नानारिकना के बोध्य से मुक्त करना वा होना। प्रयोश — नतन्त्र की क्रमा भई, कारना निर्माने नोध्य समीर प्रशास ↔ स्कीर, अप्रा

मिर में भूत उत्तरका

वृत पूर क्षानी । वयोग---वय तक एक वक्ते सम्भी तरह बार न का बावमा, इनके लिए के पून न अपनेतर (१०० २ - अम्बद, १३२

नियर से लेकर पैर तक ब्रेजना

बच्ची बरह देखना । प्रयोग-व्यक्तिन में एक बार फिर उसे विश् में पैत्र तक देखा (जीसर (३)---अपूर स, ५२)

श्वित मीचना

बात्य-वानिकान करना । प्रयोश----प्रच नव निष्यां वीहे नहीं काइक निर्देश न होड़ (क्वीर प्रशाय-क्वीर, दश)

लिंग इवंग्री पर लिपे पिरना

वृष्यु में स दश्या, जान की बाबी अमाकर कोई काय काला। प्रयोग—बोक दिन के हाथ जिनके निर जिसे वे द्वेमी वर किय ही बिर फिरे (बोल्ड-स्पियींड, ६): वो प्रथमी पर सिने ही शिर फिरे टायने को जानि के बिर की बना (बुमसेड-स्पियोंड, १०४)

(समार नहार सिंग हथेकी पर किये ग्हना, दाख क्र हिन्ने फिरमा)

सिर होता

- (१) बार-बार किनी बात वा प्रायत करके तथ करना। प्रयोग नाजू की कुलान को जन करना को नवा कि मुझानी कर न करेंगी जी बीर की उनके निय ही वयी ग्राह्म (१)—प्रेमक्ट क्श्रम्भ): कह दिया का हो नकेगर अब म कुछ करने किर करी भाष यो निर हो गर्म कीस्ट- -मुद्दारी। १३
- (२) सम्बद्ध पहलर; तंत्र क्षणमा । प्रयोग —क्ष्म में नहीं हो सपला कि कोई दी-मार दिन के निरु का महत्र तो उसके जिन हो बाज़ (मानठ 'श्रो —केमबंद १०४'
- (२) साहर स्वीकार होता । प्रयोग---राज्य याय रामायम् होई राज्ये अथव सती जिस ओई 'रामक प्राप्त-स्कृतको. ६५४'
- (४) जिस्से होना । प्रयोग —श्यनिक्षिणी में कार्य निवाह का बरेम एक बण्डाए के बिर नहीं है विशेषाः—-ग्रीव दाला का
- (६) सदेह सरवा ।

क्रिक-धामते के बल करना

वर्षे प्रश्नात में बंधना । प्रशीय-पीर जी काम तम वहीं बह विरुक्ताओं के क्षेत्र शकती मन्दर पर करने की सम्बन्ध म बड़ी (मानक (क) प्रमानक, 2001

पिर-भाष्टी पर रेडन्ता --वसता

वंतृत कादर-जांकार करना । वजीन—केने वैसे विदान की के जीव जिर-आंकों पर वजनं लागन —का एक प्रतित, १९३० ; वॉर्ड मेहसान का जाता भी उसे वच-वांचों वर वैदाने हैं। —वैस्थर, वो, व्याद खबकरा है जिनकी आंचों के नोंच कर्षों उसे म विश् चांकों पर विशेतक—हरिकांड, १३०

(समाज पुराक - स्मित आंखों पर आजा)

न्ति आची पर बैठाजा -- स्वाजा

- ि। मन्द्रण स्थीतार कार्या १८०० काम प्रशासिकाओं पर तेवर की हुए अपनी स्पृति से चरण करेगी, वह सिर्फ भागों पर कम्मा पैस के प्रसिद्ध १५५
- (-) देश स्मिर आस्त्रों पर वैद्याना

भिर अंखों पा रहता

वर्षे स्नतं का भारत सं रहता। प्रकार -- नवका इसरे किनी

बाड पर सरमा है, हमारे भिर घानों पर रहे (म्युन्ड (फ)---पेनपट, १४

निर धानों पर क्षेत्र

- (१) सहर्ष श्रीकार होता । अयोगः—में समसमे हु, तो उनको सबसी मेंने निर्देश मोंनो के हमोकार की (भांठ प्रंठ १२!—सारतेन्द्र, १५१), अनकान की सहता विर्देश प्रांची पर (सम्बद्ध---राठ पेठ, ५०), वृत्रमी प्रक्षते कह नयी है यह तेने विश्वली बार ती कहर था, और की नुम कोकापो निर्देश पर्या ११, मनर पर्वत पर सपरस्थ की संबनी काह कु तब म जदीठ—कहोस २६५-२६६।
- (२) माननीय होता । प्रयोग-आव भोग मेरे मिर गर है पर में त्या कर्ण परीचि में पराचीत हूं (माठ ग्रेट (१) --मारतेन्द्र इच्छ । मेम्पर्स १८ श मोनी-औ नामान् (मानन की न्यावन) बिन आंची पर शामने साथ मेंटिये गर स्ट्राट १ --सामानि ६४)

मिर-अंग्लों से

नहर्ष । धर्मेन —विकेश नेवड —वी नाप ही चरे बाहर न है दिवह वेबड--किर धीर चानों है, वेस ताम मनदा है। चंग्रिक १)--हेमबंद हदा

न्यर वर्गा करना १० व्हिट बचानर

मिर-बद्दा

मृंद्र समा--- पृष्ट । प्रयोग --- सोग यहँ यह सब यही ही सी यही विक सामि 'प्रदेश--- साम्यसी कातक): यह विक-वदी सी स्था ही दुष्टा कोण यह आते हैं (लिससी--प्रसाद, १६१%) ये सभी होंड, अंथत, समयही सहेवियों की तरह सुधे केर केमी हे (कनूठ--- साम्बी, ३६

निरतरम होता

क्षंचेक होता । प्रयोग —हमानी मधी सब वर्शकों की विश्वास तो वर्ष भागपेकार १ भागतेन्द्र ३०६

मित्र और

बहर बहुन क्रिक मी जान में । प्रयोग आराधान कारती कर पीयने और मिर सीह परिचय वर्गने यह ही मूर्तित व जिल करन आसीक जीक वर्ग हरें। और देन के



लिये कर जानि की जो कि है जिन तीर काजिय कर ग्रहा (भूमतेष--- श्रीकोध, १०६)

स्थिय-वर्ष

व्यथं की संघट । प्रयोग ---नृषदी विकि रजवाद बहरती । बरहत है वे पृष्ट पिरायी , सुकसाठ-- सुर, १००९); वादे इस बर्द-विर की फुर्नत नहीं हैं (देशाठ --चेमकट, ६५

स्मिर-वर्द केनर

भार्य भी संभद्ध में पहना । प्रकीत —जब तक कोई ऐसा भारती म हो, जिसके माथ माम काशान के फिल्टकी बहार होत का इस्मीनान हो। में यह दर्द निय नहीं नेना भारती कम0—प्रमाद, १०१

(समाव मुनाव—स्विक-दर्द स्रोत लेगा)

व्यय-धरा

मिर-प्रका करना वैश सिर प्रवान

सिर प्रज न होना,—वेर न होना

कोई आंबार सा तथा न होना । स्वांन -- यह जो शायने गह्महू कई एक बारव x x प्रमत दिवे हैं, दमका कुछ विश्मित है हैं (गुठ निठ-- साठ मृठ गुठ, ४३६), बाहर के असे हुए विद्वारों को देखता भी ना, अंट-जंट कदने का रहे हैं। स वार न पूछ (अनुसेठ-- निरासा, ४४): नवनों के विर-वेश नहीं होने ननदीं--- असे ये, ३१३), नव से को अववश्यों में का रहा है उपका निश्मित क्याना मुख्यिक है (स्वयेठ---क्रोमेन्द्र, ४३९)

क्तिर पैर न होता के सिर-पूंछ न होता

शिर-पैर समक में न नाना

177 O. P.—185

मिट-फिया

भीवर वृद्धियाला । अगाय-है हमी कुछ इस सरह के शिर-फिर अग्य स सरका पट्टा करा रही सुधनेश हो(जीध, ५६)

सिर-माचे बदाना

पत्यन बादर करना, जारतपूर्वक स्नीकार करना । प्रयोग —कन्तवर की विश्वति नकसीय कर ही है। यहने निर-याचे करते, जाको के जातई (प्रयुक्त के एक-प्रयुक्त करों, १९६६) बादन के करत नक्ष्मी की कन चुनी के के प्रभूत अपने विश्व बाच करानी की कन चुनी के के प्रभूत

सिर-काधी पर

मारक यक्ष्य करमा । प्रथान - नियम मान मेन क्ष्मम नुष्टारा भारत (सर्गन्त--नुष, २३%), भारती मुख को कहें क्या हम मारकी रोज, मुख निय मान (वेलन-हरिजोध, %)

लिया और होना

क्रिक्की नाजना

कोराची बना कर राज्या । बयाग —वंधा मा चाहमा है कि इस दोशो अपना दशानका नेचर चलते घौर बही सपनी किराबी साहम 'प्यन-प्रमुख्य, १६६.

मिरे का

शक्तम दरके का । प्रवास --स्वयम में कू सिगाद रख निरं बहुत तक कोड (जगठ--पद्मांकर, दे.

ओंग कटाकर बसड़ों में मिलना



शाम पहना है ? साथ मूल न्यां० पह, यूको, मानको जो कविता बजामाथा में पुराने इस की होती है, यह यूक कविता पहन काली है, आप उसी हम पर निम्मा की जिए। बीता कटाकर बजारों में सामित्र म हुविता, अपना स्टाइस मुख्यानियें (प्रदेश्य के पश्च -प्रदेश्य क्षती २२०

लींग सभादा

प्रकारका होता, हिल्लाना होता । प्रयोग-नद नगाय धहा प्रकार राज गर कर १ त वर्ष योज हरियो

भी करना

작성학

कुष प्रदेश । एयोग -धिक्तमा चार्न दहनते थे नहीं निर स्थाने किस निर्दे के की का पुनर्तेय-हरिजीके क

ब्यंबा धरना

उपरेश देशा । प्रयाग-नीती विद्धि वर्गाः दिश राजत बीरति गील वरी प्रशान नम् ४३१०

(बराव पहारू-संग्रह देगा।

सींडी झाना

विश्वान सदमा । वयोग जानस नहि वाने मन, मागरि श्रमें सीठी (मृ० साथ-सुर प्रश्नदः

मोधा करना

(१) यह देवर दीन नाना। प्रयोग --वर नमभने हैं कि हमें नम की आनोबना करने का अधिकार नित्त नया है भीर हमारों जानोबना कोई को तो हमारे अर्थ कम् ८ १८ भागों बोर से नद्द नेकर सदावता के नित्त था पमके और विकास नित्ती तो जोन नद्द में सरेक कर द 'गूठ निठ---माठ मूठ नूच, प्रयम्), यहमाओं और पुनहनारों को नीवा सरना मानका काम है गोले जनुष्ठ १६५ काई ग्यों भागों से मी देख प्रांत नो जून मार मार का मोबा कर

इ. सु० सु०—सुद्धांत १९१

- (३) कावा बबुल करना ।
- (३) सक्य की बार लहाता :

सीधा-सादा

मंग्डर माना प्रवाद मृती हीन्द्रवाल हन पार्शकरों प में बर मीचा के माद बीच दोड़ है, पर हवां के साद न्दें ही मही संसाद हो जात है पहल प्रवट ह

माधा उसला प्रांतिकालना

सरमना व काम बनानर । य न को नर्ता मध्ये न कार्ष है बोड़ । नृत्री क्षत्री म निकार्य चौड़ (पद्दः आदमी अक्षार , के करना रहम न कार्यू, यह पढ़ी नहीं है पट्टी बीची बांग्यी से हरित्य निकार है कर्यों नहीं पी नृत्य-धन्त २५ जान कार्यों है, बोची पंचनी भी नहीं निकारण मान्य 5 प्रस्वद १३३

संप्री बात व भागा

रोड-डॉक बान सं करना । स्थोत--कनमनेन की कनि नर्रा ३ चानन संबंध न सूची सुननाम सुर ४३०४

मोधी कार व कारका

मान तीर विश्व तान न बोलना । प्रकोग -- किया वयन मुक्ष नहीं दिक्की एक पुर्वारण की बात को (अधीर प्रेसाय---बंदीर, १९०० जान वीची किया तुरह में तब कहे बाट म क्या बार नेती ही पड़ी 'मुनतित हरिजीध पद

मंशी राह

भवमन्त्रात्म का बार्य नर्गता । काण-इत्हा स्वत्र इत्तरा स्वतानी है कि नीचे साम्य इत्यं पुरस्ताना प्रसम्बद्ध है विपक्त प्रयो ३५:

नीची गद्द पर

प्रतिक कार्य कार्य हुए। अवस्थ-न्यस्य अब भी इह स्रोध सीची गाह कर अस्पर्य कर्यन्यमं पूजार काल की क्षेत्रियां कर कारिक (सट्ट नि०-नात सट्ट, २५), वस क्षत्र सूच सीची गाह से कसी क्षत्रों (साठ माठ १ -क्षित गीठ, १२५

सीधे बोलगा

नसना से बोमना, डीवन्डीक सबन्ध देशा । प्रधान—प्रभू ने नुम कदन दुरासन अप काल न बोजन सुरु साठ सुर ६९७

साधे बार्न पर आना

(१) मुक्ट अता , उद्योग — जगर अभ विश्वाम होता कि सम्पन्ति समाप्त कर के वह सीथ समा पर अग द संग, तो सुख दगा की शुक्त न होता सम्बन्ध छ जैसनद छ?
(४) होक सीच इतिन करम करता ।

ममन पराव कांचे रास्ते पर आका



मोधे मेंद्र बात न करता.

कहुत गर्व के कारण टेड बोनना, प्रयास स स बोलना ; प्रयोग
— मी पर, हो वह, यहुन- कहाबन, जूचे कहन व कान
(स्० माध—स्ट, उद्दार), नो हरों ने यह मोध जूद पान न
सरका वा (मानक (१)—प्रेमकंट, १०६); वर्ध मो कहता
पालिस कर के मकान के लेगा किर बीचा पृष्ट बात नहीं
करेगा (पैतरे—सरक, १३०); वस मानकी वो कि बहनाथा
पोइनवर्धि फिर बोम मुद्र बात परि व करनों है (सा— कौतिक, घ८); वो नाविधा बोध मुद्र बात नहीं कर
सकता, नमें नो नाव कथाने कर साम खोडकर कोई बार
साम कर नेना वालिस जानना स्टेट सन, ४८.

संधि राज्ने कात

- (१) क्रीक कार्य की क्षीर अवृत्ति करा देगा, मुशारमा । द्रयोग---क्या दृगहराशी को करन करके मू देन्द्रे नीचे राज्ये वर मे जायना ? भागव १, पंसवद १८४
- (२) श्रद्धा यसक विकास ।

मोता काक करता

क्रिनाय करना। प्रणेव—क्षुक्तक भीता पाक करे की मैं प्रभों मा वृद्ध रहें (चक्र≎ -दिनकर, (द)

मीना थींदा होना

गर्व होतर । प्रयोत-स्वयदा के मृत वे दवदर्ग की बत बात सुरकर हमारा भीना वीक हो गया वेक ! ,वक्ष० -मागाठ, १५४

(ममा) प्राः-माना फुलना)

मीता तात कर कहे दोगा

श्रीता तान कर कलना

- (१) यदं करना । प्रयाग —सिए जी बाइक टीजी के नहनी का मीना नान कर प्रजना दरद्वान नजी का नकता मैंगील —रेणु संप्
- (२) श्रवत कर चमना ।

(समार मुहार- सामा निकाल का खलता)

मीना घरकमा

पर जनना । ध्यांन — हीरवी निवस्त्रत समझ्यि की समस् मुलि नय काह जुल्य है जोते च्चायत है (सूरम् प्रधात → भूपन, २०६

र्मानाचारी सरना

मकारम्मी करनी । चर्चाम---चीमी और बीनाधीरी । वंगोपी सन् पीन कर ग्रास्थी वानव ३)--केमप्रद दव्ह भागी और बीनवारी की हो बान ही दौर है (साठ सीठ ---महारु द्वितेही दद

ब्याने पर इस्त कुराना

नायान कृष्य देना । प्रधान—क्षेत्र बादा की क्ष्म ही प्रशा के सम्बन्धी नहीं हवार मीर्न पर सूत्र दक्ष नहीं ,पैतरें = अपन, १९२

भाने या सांच सोरमा

- (१) रेडको होती । प्रधान—को दशक कोर्न पर करह जाना है बाप (बुद्दक लगहबन, ५३), दुश्यको के जीवी पर अस विवाह के बाप बोट गए। दुश्याक्ष – देठ संघ, २५४)
- (२) प्रथम भयानीत हो जाता।
- (३) पर हो अला (

लाने में शंगग होगा

नाय से समुद्र इकाबना

र्व्यक्त होना

ज्ञानिक कररकारका नक पश्चमता । क्योग---मृंदराना रम गुन की कीचा, कृष शामिका स्वरम (कु० साठ--सूर १६६६), कोचा मीच मृषय कोए कीचा (समठ ,काल)--सूलमी, नक्षठ

र्वाची मार्गा वान

जबी कही या अभी बूरी बात । अवीय-च्यक् वीरी, कुछ भागी बाकी काम्हरि देश दुशाई 'सूठ साठ-सूरि, बे४४४

सीमी सरक्ता हा सरकाना

निद्धी-विद्धी सूचे होती वर कर देवी । अयोग---एक बाग तो निवासी की ही बोको सडका दिया या (मैगाठ---रेष्ट्र, ६६)

मनी देह

मठी दुवसी देश । प्रयोग—अवस्था प्रवास-स्थत के कीव कही थी । कुनुसे दादी । तम बाग । सुनी देश । वध्यासा कहा (जय०---प्रोनेन्ड, इद्व-

महरि हीता

धनुकुत होता । इयोग-एक वर्षे दान दिश्व शर्रात्म इयको प्रयो उन कीशो चीड, इन को मुक्तीक वर्षे है (प्रोता० को-नुसारी ३४)

अपन का दीका केतर

के र प्रताप के । ६ १० - अवर ने एक र वनर नवाजी केंद्र सुवस्त को टीको सुरु सारु--शुरु शास्त्र ह

शक्ष का अपना हो जाना

मृत्य का केशर भी ज रह जानर । अयोग_{्राम}नका करों कर्य कहन ज बावे, जुल मनका जयो नोड (मुल्माल-सुर, ३९९८)

म्बाका हिंदोला भलता

सुन में जीनत विकास । प्रयोग — नह समानी गांनी योग करणती सुराधिक समकर सामा मुख्ये के हिसाने पर प्रभूति सुराधिक - जार मार्थ, भारत में पाने दुखी के हैं पत्र जी गया मुख्यायन में ही पत्र मुख्येल श्रुटिकोस, प्रकृ

मुख की जात होता

बहुत मुक्तकार होना । प्रयोग--- प्रयोश मृत्रुति विहि काय प्रवादे, शहरि बहुत सूच बालि (द्वेश साध-- सुद, प्राप्त,

लुख की तींच् भांका

ि यम हा तर रहनर प्रयोग-स्वादन न रामा कि दहा मै जाते भाषत सारतकों की ऐसा कर मार्डेगा कि मेरे तहर सही करते कहें माटों को क्यों तक पुंच करना न पहचा, में दिनत ही क्यों मुख की मीड मोते रहेने पूठ निठ---भाठ मूठ पुठ दहर

मुख की मीत वह बाग

मुख स्थान्त हो जाना । प्रयोग मुग को भीज उठी ता दिन ते पुरुष् स्थान किनाने सुरु सारु-सूर ४३९३

शुक्त भरना

मृत्य की बनवाति होती । पर्याय—सीव सकाम अनवो सुख बरही (रामक स —तुलसी, १०५१)

भूक सारता

मृत्य को चनुवानि करती; जुल के नाम (चयोग---नीन्द्र अक्टबर्गन कर मृत्य वाने (सम्रः (क्षाल --चुलसी ३३३)

मुख में राते होता

बरवत कृत वे होता । अयोग--- वे सपने मुख ही के राते तरिवत यह बनहारे सुर सार--- भूर, प्रश्वह

, पश्च नुप्राय-सुवा में पूर्व होता, -- मण्ड होता।

क्षुच न्रमा

मुक्त मोयना । अक्षेत्र—राम विया-कर परस नगर अस्, कीतृह विश्वि साथी बुक्त क्रुंट (सुरु सार्य—सूर, श्रद्धः, गृष्य गोयान करी राम कीना हम क्रुंटी मुख्य रामी , सूरु सार्य—सूर, श्रद्धः, इन प्रार्थापार्थ विना वह भीवति रामि कहा मृत्य कृटती है (बारु पंचरूर (१)—मारसन्द, ३३), इमकी तो वयस क्षेत्रके-भाने भीर बीचन का मृत्य कृटने की है (मसारु —क्षेत्रीक, श्रं

युष्प-स्वर्ग श्रमानाः

युक्त की बरुपमा करती । प्रधान—केंत्र प्रधानी कोर्डलको से उनकी मुहानगात की कथाएं युक्त सुन कर अपनी कल्पना में यूको का मी स्वयं बनाया था, उस अस्पन किसनी निदयमा में नक्ट कर दिया ।मानक कि असमेट, को

(नमान वृहान—**सुध-स्थप्त देखता**)

मुख्ये का सेमल होता

भ्रमपूर्ण होता । अयोग-सुपत्त मानि वर्ग टकेट तोरा । भूगा क नवर र्द्र भा मोरा (घट०-आयकी, २१%)

मुकरी वे पोत पोहना

संदर्भ कार कृतर अध्य स्टब्स । प्रकार-सुरक्षास सह गुनी

भुताग्याली देह

मुंबोल दानार विदाय-मुझा को उन्न प्रकास होयो। सम्बो प्रमारकाको देशी पुरु देह चोटी० जिल्ला २

मुखानम में बोधी

सन्तर, तप्र १ वर्गन- औन मुनाई सभी वर्गकानि विशा इत काननि के कहा प्राद्ध (हत्व कर्णकान्यकाः, प्रदा

मुधाका निवने शह लिखा ज्ञाना

सन्दा नाम काने क्राःही जाना । प्रवीत -निकास स्वाचर या निकाराह । किस व्यक्ति बाग मधी तक काहु समाठ (क्रा ---व्यक्तमी ४२३

मुनगुन

भाषास्य सुरात । वदीय —सैने यस यह स्वयन स्वी की की मयकाया या । मंक्षतं तो याफ वक्षा नवे (१३२० के उड यहम् सर्वा, १६९

(বলঃ মুলাং -- জুনমুৰাল্ড)

सुनमा-उपना बात

ककाता । प्रयोग-- मार्ड हमें भी सुननी-उपनी काम करने हैं 'मैल'त हैन् २९९)

मुदना

भ्यास हैन्द्रः विवती मान नेनी । प्रकार-प्रवास ने वेद्री मूल भी (मानक (१ —प्रेमचंद्र १४५)

सुनदरा मीका

धनकृत धनमा । प्रयोग-चर्च ग्रादा, यह मुक्तरा वीचा धना हम हाच में जाने देते हैं (भूनेक-मगत वर्ग, १६०): कल के दिन के में बेटद जमम्दूब्द हूं । एक कु हला कीचा विला घर देव मेंने प्रमान कोई वर्गदवर उपयोग नहीं किया प्रश्नियक-देवराज, १२२): एना मुनहरा वचनव नावच मी मुक्ते जनने कापदा जलाना नहीं जाना (रीम (१) -धनमदे,

स्कृत्य क्रीच कारी

स्तुवह का दीपक होना

भोडोन होना, मरिन हरना । प्रयोग प्रश्नि रणकोड को बनन अन्यना की दीनि, अभी विकित्स अस्ती नीयक निहान का (गीलांक ,बार-- सुलक्षी चम्ह)

स्र बर्जना

कल बदलना । प्रयोग नाक सुर म काहने वाना धगर पर

গৈল বট কৰ কংশ কাৰা বলী গৈট**লত—পুৰিয়েটা চ**∯০) নতে স্বৰুৱ

विनो माने क्षणानेकाने का लक्षणा देते के जिल क्षण जनाता। प्रयोग—की नवास नाम जन वाली नहीं तरमपूरे की चंडा कर सुरू कर बोजांo—हाँदेशीय, १५७०

स्र में भ्र भिनावा

(र) नार्यप्रस्ता स्थापित करना । वसीम्—स्था सूर से भीवते तो एका नहीं सूर क्यार कृत के सिमाला भागते बीम⊙ हरिकीश, १३९

(२) पालपारी पानी (

(1) हा में हा विकास ४

(नवार वृत्रात - व्यव है सूर अपना)

वक्षाम अन्या, म्वयंत्र को वास लेला स्थिताता वस्य को वस्त्र होता । अनेन-त्वृ श्रीरद्धि वस्त्रर विस्तृ शह वस्त्र स्वयंत्र (राम० (स)-तृक्ष्मी प्रश्य); सर्वार न्यद्धि वृत्र का शारेष्ठ (राम० (स)-तृक्ष्मी, प्रश्य); ते तत् र्वात नृत्रमोस विसाद (राम० (सार्व)--दुक्रमी, श्र्य); राक्षर वहाराम विसाद के बहुने की सुरक्षाय गानी हुए (राक्षा० पंष्ठा०--रामा० दास, १८४), यह से बेर को निक्ते; साहर से द्वारा कर नृत्युर की गान की (मान० (१)--

मुनपुर की गांद लेगा रे॰ मुरधास जाना

श्ववद्य सिपारणा देश सुरक्षात ज्ञाना

अवकास कर पर संगंतर

कोई व्यक्तिक होती । प्रशेष---व्यक्त प्रीर स्तीप पी प्रश सरकाव के पर नमें हैं ? (दुधागत दें) सन ३०३) जनमें पहतर क्षत्रम कीर से मुनीद के पर नम जायमें (प्रैमां) --प्रेमांट १३३

स्रात बंधना

कार जानी । प्रयोग---मॉनें, ३ठते बेटलें, काले जील, देव-जाना ही की करता करको जंग गती है (ठंडरू--हरियोध इ.स



मृरमा पुताला

मुख्या बुलाना

भाषारे में सुरक्षा बताना । श्रमेण-तमें व नुरका पुरुष के श्रांक पर परम्हान्त बनायं हो ने में पत्तवकाती जुब चौर को तक पत्तक तहारी (बीठ प्रंठ १)—मधरीन्द्र, ३३८

म्बन्धा पानर,— विसना,—स्थाना

शाधास होता मूनगुरी होनी । प्रयोग---मिन्द पूर्तिन छाप के ठीक नहते समय के पर नह मूलना देने पर्व में कही ने सबर-नुवान का कर कि पाणी, पूर्विस भी रही है । अपनी सबर---छप, २३% यह नगरावहा को यह मूनग विनव और यह रजन के पाम-नुव में प्राथा, तो वह मनाक बामी देश। या (बहुत देव कर, २६६), किर उनका नुवान केने नगा सहश---देव कव, १६९

मराग मिलना १ - मुत्राम गाना

म्हापा क्षमता ६- सुरक्षा प्राप्ता

व्यापा लगाना

मध्य रीति से कथा पना समाना । चनोत—मध सम्बंध नगर विरोदियों से पाक ही गया 🗶 🗷 तो विश्व में सोकी का नुपार कमाने के लिए कमर बाबी (रंगठ (३)—देशबंट EU

सुर्के ६ पत्ता वा काला

प्रस्थी, प्रतिष्टित होना , प्रदेशा अधिया व इहर— बिराइपी म स नाम क्या तर्थ गरेटा प्रसाद १४% क्षान यह है कि गरा दक ना स्वारत म मनमन म इगार संबर मर्गतिक के सामन भवती के ग्यांच्या किन्द्रान है र मुख्य बनव है भीर संद्री गरम कान्य है पहुंचल के प्रत— भहमें वाली, १५५ , पर ने वहा, पर का मन्ते के निमें, वहां सीने दक्षी काई सामग्री ह अमुकंक क्षान के किन्सि, वहां महर्ग बान नगा आए (रंग्ठ (१)—देशबंद, २१६)

मुकी होता

नोबा सम्म, अभेबकः । प्रयोग-स्वारं के सम्बारं की समापि वटी मुखी गरी की कि कुरीकी साहब कायस गाँव कर मन्त्रिम सीगान कार्यिक सामग्र क्लण-देश स्वर ३५० मृत्यानर

भीतर ही भातर तरराज होता। प्रयोग कीतर में अपन कवर के इस्ट बद करके कृषी जहर भी। बन्दी मुभाई और बारपरईपर बैंड कर मुख्यन नगर औसर १)—मधीय ३५।

युलक्षना

(१) वधन पर क्रमट से बृदन होना । प्रयोग—साम सह-पटो दना निपट पटनटी को, नवी हू पन भाग्य न सूझे मुरु फनि है धेन≎ कदित न्यताठ, १७०

(२) जनधन हुई होनी ।

मुला देवा

वार कावनः । प्रयोग —कर पूर्ण क्षण-विष्या सभी शास स मुकाह से मुख्ये (प्रायण-मृद्या १९)

मुद्दार्ग अवल रहना, सुदाग-भर्ता रहना

वीयाम्यवती रहता । प्रवीय —ह्दयं समीमहि सेमबस र्गहबह यको बोहाय समेठ स जुलसी, ६०४ , त्रथ मक वयान्यमृता व परतो है, सावका बोहाव अवस रह भारत देशाव कृत्—सारतेन्द्र, २००

मुद्रस्य बजहमा,—सृद्रमा

विश्वा होता । अयोग — भागी का तो मुहाव ही अवह तथा (कोनेक-पोठ सठ, ठड़ , जुट तका के निसे तथा सरवार वाक क्या नोहान है कोनी (वोलंक-हरियोध, हरू)

(१९१० मुराः—सुद्राग कोना)

मुद्दाग बड़ा दोना

रिकाह होना । अयोग—स्मी मोनिया के मिल में के की बोटा महान या स्थाद पर किस नया था तब ही दूसका मुहान महा हुआ था बीनेठ--संठ संठ, व्य

स्टाम लटना देव स्टाम इक्टना

सहाग भरी रहता

रे- मुद्राम अचल गहला

भूतं का पहार होना

क्रिंग की काना। बहन का जाता। प्रसाय-स्टाई की के कीम में को जन। बान की विकार का नो मुद्दे का प्रशास की संग्रह क्षित-प्रसाद १०० सहै के ताके से हाथी निकलना या निकलना किया मा अस्त्रम काम होता या करना । अयोग—मूर्त के सेंद्र सहायी निवाद जन को किया हो बाज मही बद्धि है मैलोठ-चेन्, २२६

(समाव मुहार — मुद्दे के नाके से म्युदाई को या सब को निकास्त्रता)

सुध कर कांटा होना

भगान दुवं व बोना । प्रवास--- प्रथमा -- ची ! मृत्य का काटा ही नयं म नव (१ प्रेममट, ४०), यह निन चटनो ही भानी है, हो नई तुल कर काटा है मुख्य नक, ३५ (गमान प्रशाक सूच्य कर निमक्ता होना करनकई। होना)

म्या ज्ञानः

(१) यर शामा । प्रयोग यह वासी मृति व्यारं प्रशान पूर साथ पूर राज्य प्रशान पूर स्थान पूर राज्य प्रशान पूर स्थान प्रशान प्रशाम प्रशान प्र

(८) बोध होता । प्रयोग—दधर यह निमनिका भी सब-भग सूल प्रमा पर (स्थाग०⊶जेनेन्द्र, ६,

स्मते धान में पानी पहना

मदा

भीरम प्रशास-इलाहाच द हेम साम सरण में भी में दो सी कृ क देशर दा (देसमोठ-राम्छ वर्षा, १४३ १४४)

धवा जवल देना

मान्य द्रन्यात करना ६ प्रयोग—दुसरी और बढ़ों का महत दुख करप्यन जिस्सा जान, नहीं-नहरे शामी महरे ही आप मा मृत्या प्रधान देश पर्य (जिसाठ (१)—शुक्स, ६६); मे मना भाग कृत काले क्या मृत्य न नृत्या जनान सृत्या सुन कृतिक—हरिक्रोध, १०

मका विस

भाव-जन्म पुरुष । प्रयोग---काम तुम्सारे पृथ्वे हुए विक पर धर्मा के बारण ब्राम्स कर करन स्थते (मोर०--जग० मे सुर २६

न्त्री मुन्कान —हर्मा

लगी हमी को दिन के माजिकती हैं। इ. इ. इ.स.स. मूर्यी सम्बद्धि, को को वर्ष कोनेठ--रोठ राठ, उप्पाद क्षिण समझ न मुखी हनी हम कर कहर (रंगठ (१)--प्रेमचंद २५६). को माज्या भूग के पाने पढ़ क्यों माजूबर मूह हम मूर्यी हनी कोसठ न्यांकींध. ६२)

मर्का हैया

रेश सूची शुम्काम

मर्का हर्दियां

ब्रान्दे से स्वरत जरीर । प्रयोग-कायर ! स्रोत है नहीं तो रिका पूजा कि इन पूजी हर्दियों में कितना जम है कारना प्रसाद, १४

मुनी मेदा प्रंथकार

सत की तरह तीवृत्रा

विका परिचयन तीन देशा । प्रयोग---यह पुरु-मान कृत गी सोरपी परी नहीं ध्यवतार सुरु मान--सुर १६१४)

मनक संधना

सन नवती । प्रयोग-- 355 वंडत स्तर नार्य सूनक परे श्मोई क्यार प्रकार--क्योर २५५,

म्याज की तरह बदना

वाम् प्रताप से पत्र है करती । वदाव न्यृति है को मार् शहर रतन होई अन मीत (पद० न्यायसी, अधार

स्रज को लहर जाना

म् वयसे बेमा कार होना । प्रयोगः मुनवहि सामा ना मुनकाई । जानहं अप्रति मृत्या के साई प्रदेश जायसः १०७३)

स्वात के सम्मूच हुवन्

मुख्या में भागमें मानास्य होता। प्रशेष—वितयः प्राप्ततः प्रोप्ति पति प्रीती त्रीय सन्धन वर्षानि श्रीयोगी राम्छ (स. ० मुख्यी प्रणा)

मरज को ई।एक विकास

मगान खटना

भारत हुए क्य देव होती। यसाय-मागत विदान काल पृति वद्या । नाम्पद्वं समा क्षेत्र विधि नद्या (पट०-सादानी १८८८), सूत्रे कद्य साथा और सूत्र्य व्यवस्थ वृद्धं (पट्टम प्रशास-प्रदेशक सन्ती, २०२)

सरह भूकरा

(१) लाम होती । एकोय-क्यातक के बाले करते हो यह राहें भाग नहीं एका घर यह सूर्व अंकते नवा वा देशको र ११०, ४०।

🕞 🐧 ध्यानिक हो 🕕

(यम 🕫 मरा 🦠 नोर्ग स दलमा

सरमा प्रवती

काम के समय सर्पका अंग डाला। द्वारोग करिया र सा चित्रिकाम चडक विद्यार कि मीच रुप्य

(समाव गराव —सरक्र स्ट्रियना)

र देते पर भूते फकता

विका निर्माण या साथ प्रत्य का जाएन जागावर आयोग सन्द्र जिल्ला कर प्रत्य कियो जात असका स्थाह कर जीदेशिक विकास अस

(ववाव ववाव-स्टूरज पर धूकता । धूल आंकनर)

संस्थ किर पर सद माना

भारत आंखों से व इतरता

हर समय स्वान बना रहनर । प्रशेष---वशकी सुरत वशकी बर्ग्यों श्रुपती न दनरती ती (प्रेमाठ -प्रेमवद, ३६८) (१वर- युगाव --सरस्य आंखीं के फिरस्या)

स्रत दिखाता

(१) मायने प्राचा । प्रयोग-न्तव भना वया निवासको सुरस कव वि मुक्त मके नहीं विकास (चुमवेल हरियोध ५७) (२) योके समय के निक किसी में विकास ।

स्थल निकासका

- (१) कृषात का बन्धा बनाना । अयोग—इन प्रकार ही काँगों के धन और नये समिनगावों की कान सहयोग और सहस्थान के सेने अभिनेना वों का इचकारण हीन कर प्रतितिन विद्याल केवर नाटक की मृत्ति निकास की धेसरें -भारत २६
- कोई पुष्ति नोयता । यथीय-अस भक्ता वया जिला-नते स्टन यह कि न्रत तक नहीं विकास (भूभतिक-हरियोध २०.

मन्त्री पर बहुना

- (१) कि की संघट या मानते के काम की करता । प्रयोग कर वर्ष पर करा मृत्री पर मतवाल सन्न च ता करता दिखाल क्षेत्रक कर द
- (२) कांगी क्षारा कृष्य को क्षाप्त होता । (भवान मुद्दार----भूनी पर सटक आया) मैंन कर

बहुत समाधाः, विना साम का । अयोष-सुन् भेया । याक क्य कोगी, क्य मोहि सबी बुनाई । वहित में वटा मन की मंदि को वर्त कहाई (सुरु साठ-सुर, २४०

संद मारक

(रं) प्रतिक करना नेशन नकता प्रश्नेत स्थाने स्थीत को एक जनते हैं एकोकों के स्थानहा से सह स्थान है प्रमुख प्रस्ति १९०

(२ मध्यम् प्रश्न वनस्या कालो क्यानी । (१९८१ - महार क्या स्टब्स्ट्रामा

श्चिर पर से छाया वह जाना

कोई सहायक मा प्रतिकाशक का होतर । अलेक-डॉकी अक्ट जो के, कब उनके तिर है। उनके विधा की खुश्या उठ गई की (अंतन-पाइक २०४)

(पमान महान-स्थित पर में साथा उठ प्राता)

म्दिर पर सेहरा बांधना

न्तिर पर भेटना होना

- (१) प्रारमित होता । प्रयोग—सिर निय हचनी पर यो इसके मिर मेहरर परवर है (मृंद्य—मन्त, ५५
- (२) प्रधान होना ।

सिर पर हाथ फेरना

- (१) प्राथिति वेशाः काः करतीः समाग म नतः। प्रयोग-चेत्रसङ् केर में पढ़े हम है। केरने हान वेश नही शिक्ष गृष्ट (भूमतिक सुनियोधः ३)
- (२) योगा वेता वा बहुआगा ।
- (६) प्रेम रिम्माना ।

श्चिर पर हाथ रककर रोना

प्रापते थाम्य को होना । अयोग-स्विष्ट को धन वन वर्धन विभिन्नावस्ते मृत्र में द्रश्य परि बटन रहे हैं। मार्थ ग्रेटांक द स्थानतेन्द्र, प्रश्रेत्र), मुन्यान्तेनी, ती तिर पर हाण पर कर रोवेगी भी (मा-कोजिक, प्रदे), यह बार्ड का की सार्थ किर पर बाब भर कर होगी (मीदान-नेमकंट, १५)

स्थिर धर हाथ रखना

स्टिर पर होता

- (१) निकर होता। प्रदोत नश्य ब्रह्म हिन्दू सीम पर नविष मोन न बान प्राप्तः सो — नृक्षको, प्रदर्शः, ब्रह्मण दावरं करने व चित्रः सभी काको बन्त है विकिश यह एलकार विष वरः शाः वशः है और मुखे नव से किन्छ मही है बोदान प्रस्तद, २६६१; प्रशिक्षाः निर पर है, कहीं ना ही नहीं पानी है सुडाव १९ क्षायाल, दशः
- (२) यहावत होता । घर्षाय—अब स्वर सोर्थ आह नते। विर परि नार्तित राज वर्गी कांग पंचार—करोद, ११%), बहुत तुर कपि चालू जर पृति मिन तर प्रजू यह (रामध् तु :—चुलसी, घ्यांग्), काह की न चर, नेनार्गत ही विदय बदा, साथ भिर कनर जुलाई राज नोगी है ,बार राज्य सेनायति, घर): बुध्दें बाकूब हो कि से परि ग्यी है, मेरे विर पर जी कोई है (कार्य —प्रेमचंद, १४६
- (1) अपर होता, जिनके बन में हम हो। अमोत --तब बिनडर जिन कहा मा नोरें। पानसाहि है निर पर मोर पद्छ --जायमी ४७६): दुर्थाप्यन दम समय में व्यवस्था हमार निर पर है, उभने दम बान की कृद है , सहोक्त--हुछ पठ दिए, १४६
- (४) वश्य होता । प्रयोग वी यह बचन ती मार्च मोरे ।
 यद करी ठल कर भोरे (पद०—आयसी, ४५/६): सच्चाट की बच्चा तथारे विश् वर है (अध्यय न्याव वैद, ६०)
- (४) वादित्य होना । चयोग—वह के लिए कहा पाप है, इसमें इसका बोज होड नहीं (क्षण्टा०—अक्क दर्मो, ५४); यह काम क्षमें इकता चारों क्षमध्य है कि इसका बार सारे बन्दाने को लाट दिया है, वी-चार अध्यक्षिय लोगों के ही विद चय नहीं होड स्थवा है (किस्स० १ — सुक्स, ३०)

न्दि पीट देगा

भारत वर रोकर बैठ काना । एवोन — बच्या तो सब रक्षम्य मृत्य । मेने सिर पीट निवा (मानव (१) —प्रेमधद्, उद्यु

चित्र पीट-पांड का शंना

बहुत श्रेता का प्रकार ना । प्रकार नाम (रंग मीन श्री कर लोई निर वर्ष पेट पेटवाली का श्रीलाय-श्री औध सम्र



श्वित वीदका

- (१) क्रोक करना । अभीन ज्युवियर नायका निर्म पीट
 गृहि भी सिमानक २)—प्रेमवर्द ४४
- (२) श्रमस्य प्राप्ताः ।

मिर करना

सिर में बहुन पीड़ा हरेगी। प्रयोग—मारी देह एक कर मूक्त-मूत्र हो दही थी क किन्द्र गोहर में फटा प्रश्नास्था (साल्य हो -- प्रेमण्ड, प्रश्नुव

चित्र फिल जाना

- (१) विकास करण जाना । प्रतीय-व्योकरी तो संसी म वी पर तीर के साथ प्रमण विकासी किन नहीं क्या-वेसबंद, १९४1, है नुवारों की बंदा पर काम क्या ही गरी बह दिए एसी का विश् फिरा (कुमनैक- हार्(औध, १९८))
- (२) बन्यार ब्रोका । प्रशेष---धानी विदेशर श्रीती--मुम्हाश किए किए बना है (पर्तात-रेषु ३०१ - अवर स्मिते बहुका हो जाना के हमारा क्या किए किए हुआ का सुरु सुरू- सुदर्शन, ३४६
- (१) प्रशाहीनाः। प्रयोग—नृष्यं सी सभी केवण एक इत्था प्रशासिकाः । और अभी में नृष्याः। किर किर गया [माम्क १।—प्रेमचंद प्रशाहीका प्रयोग(१) में (→) भी।

सिर फोइना

- (१) माधा-प्रकार करती (प्रशेष--- विशे कर्ण की कंपनी पहरि हुना नर अथ्य) सिर कोई मुर्क नहीं, की धानिया संभाग (क्वीर ग्रेश्ट---क्वीर, ४३)
- (२) तातृ में मं करती । यक्षात—प्रश्नासन करा करा कर गभाकी मानावार एक दूसरे कर किर इत्यानिक काइक है जिसमा भावों की उपलब्धि है। स्थान ग्रेडाठ राध्यय दूसर 138
- (दे क्यानर्वण्या काली

मिर इंद्रता

- (१ पुण समयका नामा। प्रदेश अस तेर त्याचे जिस्ता (तर रिक्षा फिर तुम क्या सिर स्था का सिर रहा होत्स्यः) इतिकोधः स
- (+) प्राण जरने की सभावना होते हुए भी किसी काम की कारता।

निर सहना

- (१) जनगरस्ती किसी नम्मू को किसी के दिव्यों नगाना । प्रयोग —शाय को वे नय गहे हैं को सर क्यों क्योंनत संयुही किर कहते ज्यति—हाँ(ऑफ, १६०)
- (२) किसी कार के लिए किसी को जलरहानी हहराना । प्रधान कोए पाना कीन स्कोबार करते हैं अह स्वीकार करते हैं X X पर ईम्पों का नाम कभी मृद्ध पर अही नाते: ईम्पों ने जल्मन अपने कार्यों को बूधनी धनोन्नियों के लिए परंग हैं (किसीट (१) - जुन्छ, १२३), यह लिल देनी मृत्रों को लेमक ने लिए तो कहा नवापक के सिर भी नहीं बदल रहे लिए-सांठ मृद्ध हुट, १४३); हानी नह-संस्थार महिन अहरूनवालों की सारी केइन्लाविद्या का रूप प प्रधान हो जिए यह रह न प्रभान-प्रसद्ध २८३

स्पिर शासना

६ मिर धरना

विक सारका

- (१) सम्भान-नमभात हैगान होना । क्योग-न्नवर करते तीर त्रेम्य पर पत्था कुढ से पिर भारते कब तक रहे ,बीन०--हरिक्कोत, १६)
- (२) निर जनावा; प्रयास करता । वताय—बहुतमह जैस रेड किर जारा । हाथ न रहता कुठ वतारा (पद०—प्राधसी, ३७३३० वर्ष कुन्यों कुरता ही करता है तो बहरते में किराबों से किर शरके को क्या जकरता ? (मान० (६)— पंत्रवद, ६३०, वरिशाम ने समस्मात्रम महीकों सिर जारा, परम्यू वह नगर के शामीन इतिहास को ठीव तरह से म मान पापा (बुद०- अ०नाव, २२० । वेचा मी डिकामें तरा के मुठदी में इसर-क्यर किर मार रही हूं ,ठठ०—हरिसोध,
- (। तक विनयों करना, अस्थान करनी । प्रयोग कार बहुरों के चर्च विरुद्धारा सान्छ ॥ देसबह १८०

निय मेंद्राने ही ऑस्ट्रे पहला

कार्योगम्य होत हो। वियन पेक्षण के बरा कल विस्तात । विकास में जानका कि विस्त्र महान हो आने पेक्स, नी में विकास के नक्षण हो ने जाना पेक्स क्षम कर क्षेत्र है में क्षेत्रन को करा चहरा रही क्या स क्षांत किर मुद्दान ही यह कीन्छ हरिक्षीय १४



भिर स्थला

संस्टर स्थोकार करना । प्रकीत—िन्नि कार्यन् प्रजीत जिल् संभी (सम्बद्धः) —तृहाती प्रकार

स्तिन रहाजनार प्रद जानन

कितना भी द्वपरन करना । जबोन क्लाइन निर स्वर्कर घर अर्थ, तो भी अब अर्थन नहीं स करने (१०० (१) — प्रेमस्ट, २००

स्मिर रगहरा

रिवरिवरमा; मुझानक करनी । स्थान-भी रहीक वह नर यदै, दवनि नाक धन नीम (वहीन कंठ० -रहीन, इ०,

सिए हेना

रेश भिर पर लेगा

स्पिर सफेट होना

म्हणा भारत । प्रयोग --- करम करम करि करवात कर, पाप करम स कर बृद, सीन भगी नेस है (कारत --सन पति, १००

स्पिर सूँ घना

स्पिर से बंदरना

(१) प्राम्मो की पश्चाह किए दिना किसी काब से कम भारत । प्रयोग-स्था हम बोडा मिना वाली विके निर भवामा जो म निर से खेम कर (बोल०--हमंत्रीय, १३

(२) दूसरों को नदाशा ।

बिर से पैर तक

सारक्ष में अन नक, सर्थात । स्योग—पाइन ने निम् भी सिंग में कदि योगा था। बरनी एक छोटी (इरक्क)— योगा, १०); वार देशरी के बातर निक्यते ही कवि है— मिर से पांच तक (मानेक (क)—सम्बंध थ); बच्छा नीविण, मेरा कहा पथ गुरु है। सिर स पांच नक अन् कर्याना -जैनेन्द्र, ४०); बाहर निकली, बाहर तुमको किर में पर महा ह रंग दिया ग्रीर नंगा न दिया तो पेशा नाम निन्ना मही (मुग्क—वृष्ठ वर्मी, था।

स्वित से पैर नक अस्य नग जाना,—जल जाना

बनवन्त कांच होता। अशोग --शामकारी के मिर में गाव तक बाम जब नहें (मानव (४)--पेमबंद, १०३), सनार व पूनी भी कोई नको है, विशवस पनि उसका सुनार देखकर निरुत्त पांच तक कर इंड मानव (३) --पेमबंद, ३३)

सिर में पैर नक इस हाना देश सिर में पैर नक चारा स्टा जाना सिर से बना दसना या दस्सना

 ११) मध्यत वर मध्यत हटना पर हटना । प्रयोग चित्रको सम्बद्ध प्रयोग निर्माण स्था बार चौन व भीषा (मान्य ११) च्यानगढ, दश

(२) विना यन से काम करना ।

निर से बोध हात देता

नामारिकता के बीध ने मुक्त करना का हाता । प्रकीत — ननमुख्यो कृषा भई, बारवा निर में बीध क्योर प्रकार म्हार क्योर, प्रश्ला

मिर में भूत उत्तरमा

धन हर होती । क्योन---वस तक एक वर्ष सम्बो तरह बार न बा सानना, इसके नियं ने मृत त कतरेता (१०० (२)----प्रमुद्ध, १८२

रियर में लेकर पैर तक देखता

बच्ची तरह देशना । प्रवास-नांबर ने एक शार किर हम विरुष्टि के के देश की कीमा (३)— अज्ञाय ४२

सिर मौंपना

ब्राय-अस्तिहान करना । स्थान—अब नग निर भीते नही कारक निर्माण होतु (क्वीर ग्रंडा०—कवीर, ६५

भित्र हुधेनी पर तिये फिरना

वृत्यू में व दरवा, जान की बाधी भयाकर कोई काय करना । प्रधीय—नाक दिन के द्वार जिनके सिर विके वे हकती पर विके ही निर किरे बोलक—हरिकोध, प्री: वें हबती पर निय ही सिर किरे टानके को अनि के निर की बना (वृतके—हरिकोध, १०४)

(१९६१) वहार विक हथेली पर स्थिपे रहता, हास पर लिखे फिरना)



विषर होना

- (१) बार-बार कियाँ बार या प्रायत करके रच करना र प्रधीन—पाप की कुनश्य को कर बानुस हो पका कि स्प्रामी कर न करेगी तो और भी अपके बिर हो थयों सान् (१ -क्सबंद २४०), यह दिया या हो वर्षनर कर न मूख शास किर क्यों जान यो किर हो एके बीना -हरिसीध १३)
- (२) अलग्न प्रत्या, तंत्र करतर । स्थीत—मृक्ष से नार्ष हो सकता कि कोई वी-पार दिन के लिए बा बाक तो उपवे दिए हो बाक (मानंद्र क्ष. -वेन बंद १०५)
- (क) मारवानवीकार होता । प्रशेष —रावर राव रावायम् होई रावर्षि मार्थ गार्थिको सिंव ओई 'रामक साथ सुकती ६५४
- (त) निवर्ते होना १ प्रयोग -अ्यनिविधेनीनी के बाये निवर्तत का बोजा एक कारका के विश् नहीं है (प्रशेक्षक -बीच संबर्ध क्य
- (4) nite meer i

जिप-आंश्रों के बाद करना

मर्थे प्रभाग में भारता । प्रतीत-स्वीत जो काम पूक्त कही मार्ग सिट-भागों के इस कम्मी जनत पर करने को संभाग मानको (सिस्ट (पू)) प्रेमक्ट २५००

विकासमार्थे पर वैद्याना —क्याना

भिक्षेत्र पृत्तेक-स्थित अध्यक्षे एव प्रत्या। स्वित साम्बो पर वैद्याला —स्वत्या

(१) महदेर व्यक्तिकार कारता प्रदर्भग काम पास हो जान पेर तर्वार की कुछ भागी व्यक्ति से समाक्ष्यें में सह किय भागा पहें तथा व्यक्ति के प्रवास्त्र क्ष्य

्रा है। सिर भागों का बेहातर दिन भागों का रहता

बार्ड बनेहे पर माध्य म रहता। प्रधान -महका इतने कि ही

बार कर माना है, हमारे किर माली वर १हे ४मान० (६)---इसवट, १४

लिर प्रांश्यों पर होता

- (१) बहुई स्वीकार होता । प्रयोग—में अनवरे हूं, हा रनकी सकती केंग किए बांची के अवीकार की स्थाद पंद ११—स्वासिन्द ६८१ । भगवान की बांका किए प्रांथों नव स्थानक—स्टब्सिट प्रदर्भ, बृतुर्वी बचने प्रद नवी है यह मंग निवाली बार ही बहुई बांचाय की नव भीकारों किए प्रांखों कर, बचर पर्दे नह अपवास की क्यानी आहे कु तथ से नदीठ—ध्यांच २८५-२६६
- (२) मध्यमेव तैना । अशेष—जाव मोन मेरे जिस कर है वर में क्या कर्ण क्योंकि में पराधीन हूं (माठ एंट (१) --धारीन्द्र, ३०६), मेमावेद अ अ कार्यो—की आधान् (भाषत को स्थानन) किर मांगो पर नाहबे आप मेडिये ना १९३० ११—सम्बद्धान ६४)

सिर वाको से

वर्ण । ज्योग —विसक्ष ने एड — यो जाप ही क्या जाएव जा है रिक्ट केंच्य —र्रिंग क्योग क्यांओं में है जिला मध्यर समझा ही र्रम्मा १३ —केंग्सर १९६१

निर-क्षपी करना रेट सिर क्षपाना

निर-बढा

वृत्र नका—भव्द । प्रयोग—कोत को यह कर करी हो को कर्त कि वामि '95%—आधारी उत्तर्ध): यह सिर-करी भी कर्त ही दुव्हा कोत कर वर्त है (शितली—प्रसाद, १८१%) वे क्यी तीत, कंक्य, करवड़ी बंडेंक्शों की तरह कुते केर केती हैं (कनूक—भारती, २४%)

विकास होता

सर्वश्रास्त होता । इक्ष्मां स्वयो स्था कृष्टिया की सिरमार्थ की तरंस के प्रदेशक है। आस्त्रीस्तु ३७६

नियर नांच्

बरद बर्ड बॉपर की वान में । प्रदोग जागाइल इपन्नी इंग्न गीमने बीर सिर मोह परिचल बंधने पहा की पुष्ट के लिए करने क्षांनीठ दें ठ देनों हुए। बॉस्ट इन के



स्वरंग करता,—बेराना,—धरना

(१) भूनी समस्य करती; तीय करता । प्रमीय—देखा नेशी स्थान वर्ष भूने घटना बाजि (करोर संद्वात -कर्तीर, २५॥); कर्ता चयी प्रति स्थान बनायी, धनरियाची निकट स आयी (करोर राष्ट्राठ—करोर, १३३) की कर्ता नियर स्थान बीचित में, वेगीर स्थान कार्च १६० साठ—क्ष्र, सरदेश कार्तित पत्र बण्या क्यान वचनी भाग वैद्या के नियं ही किया पर पा कृष्ण बीच (नेयन -प्रसद्ध, १७ परान् विम काम की सभी बहा विद्या, देवे करने बहा बनता, क्याय भागे नेही बनना (क्याद्ध, म्याय प्रस्त प्रस्त , विस्तानत द्वा या देना प्रति मध्य प्रयोग प्रस्त देव प्रस्त

- (२) नेश सदलमा ।
- (३) दिनी का उपहास करने के नियं भ() यहन बनाकर मजाक उपाना ।

स्वांग वशस्ता १० स्वांग करना

स्थाग भग्ना रे० स्थाम करना

न्वाई कंत्रतर

संपूर्णने करना । अयोग---हो क्के बेझ कर निवादर की स्वाद को अधि प्याद का क्क वो (जूमतेत--हरिक्रोध, ॥)

म्बाद क्याना

कियों को उसक किये विकास का ग्रंड केया। प्रतीस—-१८ उनका क्याद कृतवीर विकास समाई राह्या प्रेक्स राह्याक क्षम, पुरस्क

न्यार्थ का प्रचाश होता

वन का स्थाने में बीज होता । जहांच-नारा अनार स्थाने का बाबारा हो तो है (क्षत्रोंक-नुक का दिक, १३)

न्दार्थ के गाइक होता

नवाची होता । प्रयोग-नृष असि सत स्थारण के गाहक, नव न मानस प्राथी (सुरु सार-सुर, शहर द

म्बार्ध में बंध

यनवर्षे दोन्त । प्रयोज—नेदा बनी को नहीं, वय स्थानक बनी नोह कनीर प्रकार—कडीर, २६ (बना= नहा=—स्थार्थ के सनी)

भारक क्लिना

स्वारक बराव होता। अयोष—वेरा स्वास्थ्य वस दिनो विकास भूग हो कृता का (वैदर्श—सकत, २८)



संमक्तर

(१) कड़ी-ज़ुशी र प्रशेष —कोशीर न करों हो निवाह, हारे होता काली, भीति कड़ धनान क बस—समान, १६१

(१) प्रथम का भाग ।

हैन्द्र कर टाम्ट देना, हंस्सी में इन्हर देना १९६६ मा लागान्य बनावर राज देना । प्रयोग----तव मना भीर बाज क्या बन्ते राज देते न वान क्यों हम कर शालक- श्रिकींध, १०६ . किया नगह से हैंनी उद्योग हम में हमी माला उद्यादन बोलक-श्रीकींध १०५

हेस का आग कीय द्वारा सिया जाना बाम व्यक्त की विजयकाती कर्यू बंधीय के पास असी। प्रधान—परिवित वर्ष बाद तुमदी की, हम की बाद कार से बाद सुरु सार्थ—सुर स्टब्स

होन बनाते बनाने कीओ बना देवा

क्रान्दी और जारत करह जनात-जनाते कुरी जना देना । प्रकार-च्या पढ़ि दूपरा देगीह दर्ग विरुवार हुन बान र र-

शंस कांग का सक्ष्ये र ज

4 4 4

वस स स स प्राप्त

क्ष्मित्रका

हरू रेस पर एक उसे ना

प्रतास के स्वास्त्र के तो स्वास्त्र स्वास्त्र प्रतास के स्वास्त्र स्वास्त्र

श्यते हसने

प्रमानका पूर्वत । प्रभोत -- किन प्रशास्त्री में प्रवाह के पान की देखा के किए सहा हमने हमने जाता बढाए हैं x x उनक दा-एक सरकारों की पुनित्र का देव सम्पूर्ण सामार को देशा जीवन मुझे होना (दियक--प्रमों, 51

(पणाः सुराः – संस्ते केलने, – बोलने ।

हमने तसने दशका हर जाना विद्याप्त पहला ----साटपाट को जाना

वहन हमी वाली । अमीत-आ साहत के हंसत इसते पैट म नव पत्र पत् ,द्धामछ देव सव, वह), अस्तिम अमते-इसत टोइनी हो वर्ष व्यव-देव सव, १९११ वित्तृ वर्षि मेनक के दूष्टिशाम के देवा मान ती जिसे वेनका वर्णक इसी के बारे बोसपीट हो पत्र, वह केवस माटक की पैसोड़ा माम है (पैटने--- करण, ६९); देवा धेर मीदक का बनका अपने-ईसते सोट यह इस (बोसत--हरिश्रीय, १९६

हमते हेमते हैं। मैं बस प्रांता देश हमते हमते दौहरा होता राहते राजे पा या पातर र पते पते होत्या होता

"सना

रंगते लायक

इपहरम करने केंग्य । प्रयोग-स्हितंत्र होम हमें अदि कोटी रामक (क्षारा)-- सुलसी, १५

हेमार्च होना

उपहास होता । अधाय : भी जनगण विन सर भूष कर्य । भी यम् करि होतेच सहसाई शामक (ताल —कुससी २६०

हंमी उद्धालना

हतामा । प्रयोग--- व्यवस्थान का पालिक क्ये व्यवस्थाता, हाम मध्यमा शिकार की तरक बढ़ा और एवं बंगकम्प्यक हमी उद्यासने हुए बामा---- कुस भी जुन बीजिए क्ट०---देव सव, १२

शंमी उड़वाला या उड़ाना

वर्षमप्तमें भिद्रा करना, या करवाना। प्रयोग—नामा शीनाराम को सन्दर्भ कर पंचरत बनाकर उनकी बहुत हुनी उन्नार है पुठ निठ—वांठ सूठ गुठ, प्रदर्भ, इस दारिक बामना की प्रसर करने बन्ने अपनी हमी न उत्तरामा चाहनी भी (प्रसन प्रमण्ड प्रथा; यह दक्ष के नारके की नापका साम भाषत के अने हैं, हालांकि नाहर के और वह दर्शन बी हमी उद्यान है (प्रेमाठ—प्रेमक्ट, ठप्था, विन संबद्ध ने प्रमण कर नद रहनी साथ कर दन नाम होन्योग

909

हमी काला

हणहान्त्रास्त्रण वन्त्राः । प्रयोग---काहे की पट् वस्त्र कहत सी, करत वादनी हायी (सुर स्थान-सूर क्षांका) वर अपूर विकास सुप्त के जना प्रवेग्न पर पूर्व के वे वक्त (बाह्य---सुन्त्रसी, 198

हर्बर का काम करना

पुन करम करना विश्वयं कोवों की अपना करन का हमी इन्होंने का मीका विशेष । प्रयोग—हम हमी का करने दें सह जोत कह सम्बद्ध करते हैं

हमा का फील्बाश कुना

व तथा अपनी प्राप्त पूसरो प्राप्त का स्थानका नामी और प्रश्निय में उपने अपने प्रश्निक के कार्य प्राप्त के कार्य प्राप्त के कार्य क

हंगा की रेखा

हम्बी हमी । प्रयंग्य—गक बहुते के जिस सब भीगी हैंगी की नेका प्रचके मुखे द्वयार्थ कर खेल गई (वश्यक—हरू प्रव दिरु १३८)

हक्त केवल

हमी हा वानी । प्रयोग-नाधी के कुरके क्यांको पर हमी केवनी है (क्रिजी--निराक्ष ६५)

हंसर में उड़ा देना क टंमवार टास देना

हमा पारना

पंतरी हंती कृत्य व आय' — इस सर्व में प्रयोग । प्रयोग — पठ देडू केरे आय अहेर्द, आयो मेवी हाती ,सूर प्रायः— सुर ३७२०

हमी से दोहरा दोना

हंमले-हंमले मोट-बोट होता (प्रयोग-स्वर्के हुनी से सीहरे हुए आ गाँ के (पैतरे-अपन २३)

तंसी होता

उपलाम होता । प्रयोग-स्थानी होत मधी एक में, भीगति शामक गोर्ड मूठ माठ- सुर. श्रुद्धां, हम गई है सीम मी श्रमके गई है प्रयोग होती हमी होती गई (बीमठ- हा प्रोध प्रथम

हंगी केन होगा

वाधारण या गुण्य काम होता । प्रयोग प्रशते जीर सी क कार्रक हो व कालों को शबक विकेशा कि किसी का प्रयम्भ करवा होती सीच नहीं है (सेतर (द)—माश्र स, प्रयो; प्रायम-पन र वाच करवा कर के किस से किसी है (विद्याद हो) समझ्दारी की काल कर के निकास है जाती है (विद्याद हो)

हक्ता-बका वह जीनी

विध्यत होना । प्रकीय -- यह मृत्य विश्व यहा ४ ४ तन नो कुमर वर्द बान मृत्या काला निर्मेश, ममादेशों भीर कंगररप्रयों मैना इक्सा बनका होके बानका सर्वा इंदर्न इसा-इसाठ, वर्शः अव्युक्त रह म नो सबी बादवर्ष की इसा क्या कुम के दोत बाब, मृत्र केलान के इनका-वर्षत इस बहुत है १९० पीठ--- थठ नात सिठ, क्यान क्यानी हरका- 0

बक्का होतर जनका मूह नाक्य नहीं (मानका) - नेमबंद. १९), बहमी बात यह बात मून कर हक्यों वर्षणी रह गई , ब्रेमे उनके हरकों ने कीने उस नव हो। नदक-देव सब, २१०

हिजारे करके हकार तक में लेगा किसी बस्तू का पान को एक्टम अपने नई एक देना, कबड़ी कोई किसा-प्रतिकास ने पना करनी। एनी नार इस्त्रे प्राप्ता । प्रयोग जान नो परे कई नको को उस्त कर गरी, क्यार नक न नो बानो पहुंच तक न निर्मा

हाजम करका

(1) किमी के बान की वेडमानी के पान कारत हुआ। शामर 1 मंदीय - 1 > उदादा नगम हुन पर दिया कार के शिमा मीच पान्त में हुइक नहां निर्ण कर नवाल शिंटीत --किसामा १०६३ मध्याप मनीवादिय प्रदेश गढ़ी है कि बद्ध का बाग मान दिन्नी ना विभी हीन में बाव हुदम करों शिंता १ -- दोनांद, देव

(२) बात की सकत ही नई वसना ह

षद्वम**् त** पत्र प्रदेशक शर्मा, १४०

हजार शब्द भे

बहुत तरह में । प्रयास-याणे विका करियाम क्याहर, केल के पूत्र हकार क्यारे ,व्यतिक सकत--विशास, पश्

हज़ार मूंह से

क्षांत्रिकः वर्गत क्षांत्र से । वर्गत-स्ववं संगहन सहस्र सन्द्र ज्ञान जनम निज कादि (समेठ (वास) —मृत्यसी ३१६)

हालार हाथ

निष्यम हो। बामाओं में । वदाय-मणस्त्रम हे बाम तो हुए र राम नदनपार पन नामणा पूर्व प्राणा नदन

हरू में हंगीला रहना या हाना

विद्यम्य संस्थानस्य राज्यः । १६ मा संस्था भाषः राज्या सद्याहास्य । कश्ची प्रश्निक कर्ता ६५ प्रस्ति सर्वे हासर सर्वेष सूच्या सर्वेश्व सूच्या संस्थानु सूच्या १९ छ। १९६३

हरक न मानता

विशो के सभा करने पर घी राष्ट्रकाल न (कन्) । प्रमेश -श्रमीयित सुदुकान पान हो गुरुबन (८६) न पाननि (मुद्दे हिंद प्राटकार)

हटनाय होना

ं भी नवती । प्रयोग —वह कर भी राजि वसी तसे त नवी वर्गकर से अन्तर यह साम्र कवित—धमार, १३९

हरा सहा

होत्र पुरत । प्रयोग — हभी यह हुटूम बहुर साह हमा है अस भा पह राजा मुरत है जो दहन्त में तो सात प्रयुक्त का देवा भाव प्रयाक है। स्थानेन्द्र प्रदेवल भागन्या के च हट्टा-गृहा है स्थानकर दल तरह हथाएं की यह से मेंत प्रान्थ हैं प्रदेवल के प्रक प्रदेवल क्षणों २०६ (इसक् हो) द्या से मैं संभी महान है, हहूं। एड्टा है सिक्षांच - कोशिक, सुन्दे।

हर परना —हड मारना

किए वर यह पड़ना। प्रणीय -वयु हरू वरा म सुनद विकास सम्बद्ध वास - सुनती, यम, स्वी हरू माहि दही री समनो ! परम स्थास सुनास सुर हिल्लाक साठ)

· —६६ हानमा, —पकदनाः—बांधनाः)

लह सम्बद्धा

र हर प्रति

हर्द्दियां वापना

हर्ष्ट्रपर लाहे का होना

च र १ क कर कर देवन राजा सरे होक , प्रयोग पुरुषा का सो दुवसा-प्रथमा, पर क्रम ही हड़ियां कोह की एक र के प्रश्निद्ध के स

हर्द्री-सोह परिश्रम

बहुत करी वेहनता। अयोज—संकेशायके यहां शील स्थ्य सन्दर्भ का स्थलन चोडाम करणारी नाम करियम इस्स, स्थलन क

हरू प्रकल नारना

कटुर सारका प्राप्त । प्रश्नाम भाग के सार सेव भागी तक इसके सारकार अंदरे के प्रश्नाद र प्रस्ता नोइस है इसके प्रश्नाम करते के

^{। समा}ं नरार दर्श हक्षेत्र नीहनर तुरुक्त करना। ह°से सदना

(१) राय म बातर, जान काना । प्रकात-अब बहा भी



रुख तस्यै पदमा न दिलाई दिशा भी बार्न के बचा आय० (४)—प्रमुदंद, २०३ , धर, यह दी भी बचा, वे म जान कियन वा भी बाम्मी नव कही तस्ये बहुनी हाम —क्षित्रक, ३००) (→), दीनी चीर कुमावाय पृष्य की सुन्दरी वॉल्स्सा भी बामानी म दिलागियों के तस्ये वह जानी है से कांत्रत →-भाव साव, पुष्प (→)

(२) वस में होना । ध्योम—सानह नट् दूची एक वाचा । भग मा नट् वहें वह डावर (५८०—डाइसी, ४१५०) धनर कोई दलक हरने नड़ी कहा तो वह दलेका वचानिह में वो हान में इस इनाके में आधे के गोटान—केमचट १२९), देनिस प्रधान (१) में (÷) भी ।

(संवात संग्रह हुन्ये पडना)

हर्य चदाना

मझ थ कर नका । वकाग---मठ जो ने गवधा वा इक्त बाले को इस्ते का नदा जिला (मान० (४)--प्रेमकट, ३०

हत्या करका

- (१) नगर कारणा । प्रयोश—नेतिल पुरीवल में विद्वालये की कुछ न कुछ हरवा करती हैं। पहले हैं गाँदान प्रयक्त, 198
- (२) एप विशरदशाः)

हत्या का डांका बाधे पर दोना

हरपा के निर्ण विश्वेदार होता । प्रयोग-व्यव्य माती बालको की हस्या का शिका देरे ही मार्च पर है (गंगा०-छप्न, व्यः)

श्रमा के बाद उतारमा

मार कानना । वंदोग—नया काठव क्वने को भी वेदी नवा भाग हुन्दा के बाट बनारगी हैं (गंगक-च्छा, ३०)

हुन्या सगरा

क) ई. अ.अ.ट. समे प्रदेश । प्रयोग —वह तो कही हुम्या मधी । इ.संस कीम विद्यास्त्राच्या । मध्य प्रसात १ - भारतेल्युः, ५३४

हत्या होना

(१) हताच्य होना नध्य होता। प्रयोग — कृत न कही; कुछ दिस को उपन बालगा को मुखी रका । उपकी व्यक्त कालों की हरवा हो व होने दी ,स्वन— विवस्त, १८८

(२) दुसर होगा ।

६थ-कंटा होता

पानाकी की बुक्ति होती । सम्बद्ध-नुष्ठताम प्रविक्ता परि किनी कारण के नुष्ठारे इचलाई नाइ और साथ को किनो से प्रकासित करने के बाम का न नह (90 पीठ--90 माठ मिठ, ६६ - महरूकती के इचलाई और प्रश्वम समन्दे मामने गोक ही एक बाने से (कर्मठ--प्रश्नाद, हु)। इस सूट यह हमकरों के हाम जान कर बोना है 'मर्मठ--हर्गडोंग, १३१)

हय-केर

रचर-इसर से लगेकों से । प्रवास-असे समाये जी को इस काम क्या काम सब हकता से हैं यह रहा (श्रीशय-अ सर्वात, 201

हच-केंग्र क्या

ना यम की विश्वा मिला-गड़ी वा निरमी के बोब समय है भिर्म दिया का लियर जाय । अयोग—काश्वार में तो सम प्रमुक्त रूपी मन की जान में दही थी, प्रथमार प्रभिन्न हो नव यं—कोई को की बीम को भी म प्रमियामा, इसलिय मिली में हवफर प्रथम नेकर काम मनद्वार करने (१९० (३) --प्रमुक्त २१६)

हय-संपद्ध होता

इय-जेवा होना

विवाह होना । प्रशंत—अब कम वीव घरना नहीं, काशा संकारी अर्थन हमश्रम हीने निया, मुनदान पढ़ी विद्यारित क्योर दक्षाo—क्योर, ४०

हचिया हेना

समरकारी विविद्यार कर नेता । प्रयोध-नानीय गीयता है सपान के पान कोई बादू की अंगड़ी हो नहीं दिवार जोग है उसने प्रयोग कुमले हिंगवा निया दिवागा-दैव सक, ३५६ , सिनने वेकार करने है पहले पारिचांगक के कहा में पान क्षत्र हिंगवा निये के और है - प्रश्नक, १६ वह अपनी पाल कार्याची देवी के, अनेक क्षत्र के बहान करके, प्रति पाल की वह भी कार हिंगवा केते के 'मा के जिल २५३



हथिपार डालना

हार परवर्ते । प्रयोग—एड सरवसके से पहलका न । हरियाद सलकार वेरे गाम मा जाओ स्वासी०—॥ व वर्णः, ३८६

व ॥ १८ व्यक्तियात्र धर देता । सम्बद्धाः

हथेला का आंबला, हाथ का सावला

- (१) बहुद बाया कान् । प्रयोग-हाम कर शावला न है धानमर नावनर यन उनावला न वर्ग मुननेक-हरियोध १६): इस का भी वर्ड विद्यान भीरत में मूंने ही नमें है भीर यह भी वर्ड मोजूद है, विश्व कियो संस्कृत-माना देनकर मानूब होता है कि वह दर्भो करनेवतंत याक्षण्यक्त हो पही है (साठ साठ -महाद्य दिन ४५): तक सब हरनायनक यह भूकिनाकास सोल, बानको ने यह किए वस पुष्ठ दिनके सोल कुरुक-दिनका, ११
- (२) प्रमाणि तरह नामी समयो कात । प्रतीय—स्वय नवाः मान तक समय सारा हो गगाः सम्बद्धा हवेली हतः चोक्कि— हरिकोध, १६२०

(६) बहुत निष्टं सी परत् ।

स्पेनी पर जान रक्षना, — सेना, — स्वर रक्षना सरने भक्ष की रक्षाह सं करती । प्रयोग — अब नागेह केहि के विस्त की है अगानु पर होया जिल्ली में (एड० — सामती. देशव बाथ विस्त की तिर प्रकार किया न उपना पर निया हो जिल्ला की तिर मोजिए की की सम्बद्ध प्रवेश करता भागा, जान देह हम से पर ना जान प्रमाद क्षेत्रका 194 कि जिल्लाहक्षणी पर है जी उपक कि प्रदेश हरता हरता है नुक्क भागा प्रशेष

ष्ट्रपेकी पर ज्ञान लेका देन हुयेकी पर ज्ञान सकता

इंधेली पर बात जमाना

अस्थत काम करता प्रयोग नाइ वसली है सिनाना धार्म म नहें हमेली पर बसाव बाल है कोसैंठ हरियाँध, स्टब्स

हर्चेना पर लिये रहता

उन्मणं करत को प्रस्तुत रहना । प्रयोग-सन्देश यह दिमाना बरहता था कि उसके शिष्ट धीर वह विश्वव कप से बहु कियों भी सर्दुद्दय की पृति के लिय सदा स्वयंत्र नन-पन-धन हमली पर नियं तैयार श्रष्ट रहते हैं .¶६०— 50 वाठ, १४९

हथेली पर सिर्ट श्वामा है- हथेली पर जान राममा

हथेजी में आना वा हाता

याम्य डोना, बना मं होना । प्रयोग---स्थानाय किन कास नर नकत प्रताल कर । यूग्मरन करनल शिक्ष सम प्रयोग करकार कलिए सुनामे २७ आप को हिर विशे की तरह नारकन्याला करिना भी श्रम केमी हमता म है औरक--जान माश्रम, ३५

सम-व्यामा होता

विमरी-डॉम्स होता । प्रधाय-क्लीस यह मंद उदायहर केर यह हुआ वर्ष सेर्विम इक्क्याने कोच प्रशानी ही से उदायनों सबर सुष्ट, २३

(नगर प्रार - सम निकासा होना)

इंग्लंख फ्रिकाता

वर्षाय हो। जानतः। अयोगः —शतयः अपनी कृती साम्ती हे। योगे नार्य कृतो पर हरनाण किए नती है। करनाः —छप्र, ३५,

हरकी बने सा एक रंग हो जाना

कोई भेर व दह जाना । स्थान—एक हो वह हरती-पूर-रम न्यी, कोन वे जात निक्यारि माई (सूर्व साव—सूर २५९२

हरर हो जाना

- (१) प्रमुख हिंगा । अभोष-नेती भग गामा हुती, ताना नामीर नोत । या तम की आदि पर क्याम हिंग्स-पृति होड़ दिहारी एवा०- विहारी, १ - हो है मोऊ घरी अभा उपरी भगरणन सुरम कर्राम छान्य देखिली हुती हुने (धन) कर्रमण ---धनीर कर्रा; साम की कवितास बाना भी पान जाती है तो नगामन हुना हो जाती है सुर सुर - सुदर्शन १६०१); समून भी पान्यमारण में है मोगा विरम्म पन को बना दे भा हुना सम्बद्ध पर
- (-) पाट का जाना। प्रयोग—क्षित किन कान **पृथा**न दिनकि दिन क्ष्यान होते हुए हैं। गोना**ः सुं — गुलसी,** ३६७)
- (३) वाबा हो बाना ।



हरा भरा होता

भन-वास्त्य से पूर्ण, मुझी । प्रकान—जानि की कन इस्त भरा पाक्षर दिन हमारा उद्युव उपद उपना पुभनेत — हरिसीच, १०६ : बुरा-करा स्त्रमा महिराध्यम जन पर पर पाम पाला (मार्०—वस्त्रम, २५), यह नीति और नदायाणी का महान जाध्यर-पृष्ठ—नप्त वास्तावय—हरा-भरा रहे (स्कंद०—प्रसाद, १६८)

हरा हरा मुखना, इरियाकी स्थना

हवायन होना

हुमी अजी हाली । प्रयोग - तब हवारी जिल्हामे व हरणान या बोकावन वा (भोग०— सम्मानमम् सर्

सराम की कीड़ी

भगवित रीति में का मुफ्त में भिना कर । प्रयोग—मैं यह हर्गाक नहीं बरहना कि मेरे कर में हरान की जीती भी भारते (सकन—प्रेसकंड, भ्याः

(स्था० पृहाक—हरास का मान्त)

प्रशास-घाउँ उतारकर

बूरे राज्ये पर संगानः। प्रयोग—वृक्ष नहीं की सैकड़ों सक्ष्मां को उन्होंन हराम पाट पर इस उक्साई से उनार दिया श्रीतर मार्गे राज ही का चान समान है रहे हैं अपनी सनर—संग. ६९)

हरियाकी सुकता

दे। इटा-इरा स्थला

हुई फिट्टियों के बिना बोबा रंग होना

विशा सर्वे का परिकास के बहिया काम होना वा बहुत सवा बाता । प्रयोग----वहा मुख्यी-अंदा है कि बिता हरे-फिटकिसी के बोबा रंग देता है (सातव (१)--वेमक्ट,

989

हुरें लगे न फिटकिरी

जिना परिश्वम के मुक्त में । प्रयोग जानने हाथे कि यहां क्यार बरग रहे हैं जस जिना हुने फिरकिनो के प्रनापः। हाथ था जस्ता है (प्रेमाल-प्रेमकंट, १३३)

इस एकड्ना

मंड में इक बनानाः, बीना बारती (प्रयोग—विस्के साल उत्तन वर्णकः का दल वक्षा वा (सत्तमी०—स्ट्रालवः, ६) (वमाव वृहावः हन्द्र जीननाः)

हरूका करम

वीरे-पीटे, पेंग दशके । प्रशेष — कमा प्रशे के बस, हरूके बदकों ने दृष्टकी जान कमी हा दही की (शामक-प्रश्नपाल, दश

हतका होता

(१) विना-रहिन । प्रयोग—जामको धूनने विकल नया ।
यहा हरता धनजा कर रहा था (स्वय०-स्निन्द्र, १६६)
१३) नुक्य तोना । प्रयोग—निर्देद नेह विकोध बद्दी नय
तो, तर जावन बीन के नाथ गई । निर्दे के भरि चार
यहार वर्ष, करा साम्य नई विन ने हरते (सन० वर्धक स्नांव, श्रुष्टा, बाज में नय बी आनों में हनका तो रहा है
सील-या सक नद्दी हातियों कर ऐसा हमका बनाव देख
कर निर्भोक इरिस्काद में चानकेरी मजिस्हें ही ना चार
३वी रच सक्ती पर्दन में उनशर कर कंत्र दिया पुर्व विक—
वात मूल पूर्व, इत्तरहा हो स आही नके कची हलके हैं न
(स्तुन) मुन्ते हुई बान कोरोल हरिकीय २६ 'मून होना
बहती हो', नाव ने कहा, ''में हमका नहीं उत्तर सकता
का सोर क्ल विकान सामद यह उर्धन हो हुना समें।

(३) किनी किन्नेकारी से मुस्ति गामी ।

हमकापन दिवाना या होना

नृष्ट्यना दिखानी वा होती । प्रयोग—गर-वर गए रहीन होड अवस्ति हलकार समाश्र प्रयोग—संघाठ दोसे, ३५), क्य म सामी वरत कह भागी वर्त बाव हमनी कह बने हलके क कब (बोल०—हर्शकोध, १५०): बना करती हो होटी सामवित्र, सरता हल्कापन दिखानी हो (पृह्मण०— अठ ना०, १५०

हनकी बान

- (१) वृदी बात र वयोग-स्थान वारी वात यह सारी इसे बात इसकी यह वर्षे हमके व कर ,बोलप्र--हरिकीण. २१० (--)
- (२) खोरी बात । प्रयोग—वेशिय प्रयोग (१) में (÷)

हन्दी का कुटी गांठ हो जाना

पुर का नाल होना। प्रयोग---पुनव होता को धनने में मिलबहुँ के बीच में हम्पी की कुटी यात हो सता। (बीने० --रो० शक १७३

हाटक उडावर

क्ष्मण सामा । जयोग- गुधरीयाणी ज्ञानातः समीन के सिद् सरक्षण बाक् में हत्तक उठा कर कह दिया जा (पालीo—रेणु, ३२७

(गमा: मृहा:---हारफ्: लेगा)

हरूक का दुकड़ा काता

सहा बोजनर

भागमन करना । अयोग---काच तोच रंपन भोग कीच जून काम हरूका नोवंगी सम्चय--दिनका, ३५०

हणा उन्दर्श

रीय में रक् सामा । अयोग—महर में इनकी हमा समय सर्दे (बुद्ध—मा) नाए, 206

(शरा: गुरा:-- दवा वदवा,

क्ष्मा कर देनर

नाम नेवं कानी । स्वीत-वैने बाइनिकिम की और भी हना कर दिया (मूठ कहाठ-मुक्ति), ११।

इवा करना,—डोलाना

पत्ते में इया करना । मानि—मानु शीम में केंद्री कोरा । पत्तन वानामंद्र सन्ति महु भारा पद्मक जायसी उठ्यत . पाप मनाधि केंद्रि तद सुद्धी । करिहन वाप भृदिन वन्न माही त्यासक मा —मुलसी, ४३४ , थाके मान कमस मामी-मी, सम मान बाद कोनामीकी प्रोसाक । अ —मुससी, ६ . महस्यान कारपन नेहरपन मैनपन को है किया कानी हमा । भूमसीय —हरिग्रीस, १३९

इवा के बोड़े पर सवार होता

(१) अपनी हो करता, किनी की त मुनना प्रयोग-गण्ड विन, यस में, इसा के मोदयर शकार हो रही भी तक नेरी काज क्या कुम्हारे वामें कुछ बाको जनी भी हैं (माठ माछ ३)—कि≎ ग'o, १९

🌖 बहुत जन्दी में होना ।

हपा चाना

- (१) ब्रह्म बाबू के बेक्स के किस बाहर निकलना रहनना। '
 प्रयोग—बान को किसवा पुनाम अहते की बानी बोहा है
 बाद उक्ते उस पर बैंड हवा बान सो बाते हो ,गुंठ निक—
 बाद उक्ते उस पर बैंड हवा बान सो बाते हो ,गुंठ निक—
 बाद पुठ पुठ, ६२६.' बोलपु के राजा X X में इसमें
 बहुन ही कोई था, निस्थ निकतं सीर हवा बाने भाने का
 विश्व था (राधाद देशाठ—स्थाद द्वाह, ६२१); वो का सन
 हवा बानी की बाव हवा बतकाने गुंदठ—असा, ६८), उस
 बबक की बहु बीर बोहन बानी पर अहदार हवा बाने समे
 ब क्षांत्र पुरा बाने बोने के (राज (१)—प्रेमचंद ११)
- (२) वर्षण्यन निर्मित्तक न पहुंचता, कुछ न निरुत्त । इयोच--वृष्टारी वर्षा है, बचनी प्रकीय इनके नाम करा यू और वें इया बाऊं, बही ? (कर्म०--वेमचंद, १६२) (३) प्रमान परना । इयोग---क्षनक की इस मा के मू कहा बंट हो पना है नोचर (मोदान--वेमचंद, २१६), प्रका मानू नगण्या वे कार्य वह विद्यान न के, दस्त व नक महे वे । यूस दिनो बद्यान की तुबा बा अर्थ के और करों

मनरेवी शोचने का क्षत्रावक रोज जब कहा वर (प्रदूत

- (४) इस का मानव नेना । अपोन कोई कुछ है है हैं। जून को उदी-इसी हवा ना गही की भार प्रशान की नहार भारतेल्द्र अस्ट नादन परशा रह है करनान की नहार है उसी नवान कह रही है, जान भी हमा का नवस्य पदम से पत्र- पदमक कार्य अप
- (४) कोई सम्प्रक रेपना । प्रयोग जीनवाद जानी बोडी क वजी इपर तथर की हका ही नहीं लान संधान देखान-राधान दोस, कोप

इया जिलाका

प्राम—धर्म० सभी, १२०)

(१) सन्वय कराना जानद उपलोग कराना । प्रयोग----वयनो करण्याती ने डास्ट्रो को अध्याती सुनिस्तानी से



मा इर सोदने भीर हर नरह हुन। विशासने सम्बन्ध करा तिते हैं कि निया भवानी सन्यता के निकारे के निश्च साम्यता का गाँधी में साथा मन्द्रय के गने के हुबहु नहीं भिन्न संगता, जगाँधी कार्यद नी गये की भूगकार है रिज़ी- निश्ना, १००।

(२) हेल जिल्लामा (

ह्या संदेती, --परता

(१) किसी प्रणा या गीरान का स्थाना; विश्वति होना। प्रणाम—सहां काव्य है कहें दी अब हब, कीन बचार बहें सूंत भाव-न्त्रा, 3436), सभी बढ़ बहुने हुए सर्व खानी है कि इन स्थान सीर नपरया की भूकि भारत के भी कृत यही हमा सकते कही है / गोदान - दीन्यद नंदकी: गांद डवा ही स्थान गई कि सभात मही की नीन्य अपने दिक्की की सांकी में मूल आका सह अपने हैं नीन्य को अवनी की सांकी में मूल आका सह अपने हें नियो को अवनी की रहें कोठेंठ - साठ नात, यह

(२) दल होतर है स्थोग - स्थानेत का यह कहना ना वि हमाही जल गई कि क्यान का रामाधन्य बान्सीकि के गुरुष्ठे आहे गुलेरी ग्रेक्षा १) -- गुलेरी, १०३१

(क) कारों ओर करों होगी। अयोग — को इस कुरुति शही भी भारी, हैसेही बहु करपू बहानी (कु० कर० — सुर २०४४

(४) बाव होती । प्रयोग—बाजस्य में बेची हवा चल व्हो है, यह विश्वहुक अनव बात है (दुधगक्क—देव स०, २५८

शका बोलागा देव हवा करना

ह्यानक न छना

(ग्रहाक मृहाक—एका लक्ष व समझा)

सचा देश कर पास तानवा - पाट देना - हम देता पश्चिमित होर हम देशकर काम करवा , प्रमान मूररान प्रमु आयुद्धि जैये, चैनो तयारि नेनो दोने पीटि -क्षु- सा0—-क्षु, ३१८५३; दरवार में इसती वसी दरवत मो । चेनो हवा कहतो जैना हो सब दन में मूद0— अं० नाथ, ४८७), जिल्हान हवा देव का पास नाना। जिल्हे या नया कान जिनकी बनाना (मुख्ये०—हिंगोध १०

(नवार मुहार-स्वा देख का घाट देशा)

हवा देखका वीद देना है। हवा देख का पान सामना

हवा देख कर रख देगा रे- इक्ट देल कर पास शासना

हवा देना

क्याना; जब क्याना । अयोग-न्या नो समारै अयहाँ को इक्ट देनर है आक्रक-देठ मरू ३०%

हपा व स्माना

(०) पर्वे से शहना । प्रशंत—सभा हु न नामती से हमा त विहरण आहे, जानम की भीत में संभागनी न वाली है पुरुष रंगाठ—मूचन, २११ (०)

(२) कुण-मुश्यिम में रहता । जयोग---देशिए मयोग (१) म र)

हवा व लगते देना

(१) स्विक पाल स्व परकतं देना । प्रधाय-नर्ने को संधी अपनी प्राणी वेटी को अनेच्य-कुल-कलक की एका भी न समने दू ही अधार प्रधार-स्थार दोश, ६५२।

(२) कोई संबंध न होने देना ।

हवा फिर हाना.--वर्ग हाना

हरम के आब बरन वाना, सान्दिक क्य ने विचारों में वरिवर्तन होता। वर्णम--हबा बरन नहें। एक अध में बासियों का नौता बंध नया (१९० (३)--पेमश्रद, २५७), भो किस में न कंपनेवाले नी किये की हवा किये कैस हासक क्षांक्री प्रद

इशा फेलना

दिन्नी दिनार का प्रकार होता । प्रवास-स्या देहातो प्र भी कह हवा केंत्रत पर्यो है प्रमाठ प्रमुख्य उपका

हवा वंचना

प्रयाज जनको है करानस में बसी (कोसे०—हरियाँध, १५%

तवा यनातः

हथा बरल जाना देशहवा फिर जाना

हवा बहना वैश्वहदा बसना

हवा बांधता

(१) श्रीका प्रभाग गमाना; शीन होणती । प्रयोध---द्वीरवरों में अपने निश्ना, शांचा, तरक कादि सबसे केना परिचय मगाम सीर पनी सांतदायोगिन के साथ । ऐसी हमा आयों कि कृत्य न पृथ्वित (सामेट १)--द्रेसबंद, १०६३, वृश्विक में सम्बद्धियां के बेहनों पर हमाद्या उनने समनी भी (मुम्लीट (मूट)--शृतिकीध ३)

(२) नाम करना; प्रभार करना ।

हवा विगद्धश

रीति का पास विवयती: वृदे विकास कैनना : प्रयोग— साहोर की इका कानी कमी किनड जायती, क्यू तो कुछे साह्य न का किठ0—हैं0 स्तृत, १९६): इस संक की कुछ इका ही जिसके हो है। में यह करा समाहता है केन : कैनस्ट १९

ह्या विमानमा

हवा मिलता

पना नमना । प्रयोगः कभी कात दिन भर ये कई बार होत्री भी पर बनेपांडननाय की कभी दनकी हवा नी न मिलनो भी मा कोजिक २९

हवा से बढ़ा देता

कांद्र ध्यान न देनां । प्रयोग---वालेडकरी ने इस दाया का

मानो श्या के प्रशासन कहा र ४ (शवन—प्रेमचंद्र ५)। हावा में स्पिरह स्वमाना

भनमन बान करनी । क्योग—ऐसा पलना हुवा आदमी तो बेन देशा ही नहीं । इष्ट में निष्ट नगति हैं (मा— क्रिक, ३६९

। ^{प्रदे} पर हवा में किने बनाना,

ह्या में भरता

नम का नियार में क्यांबित होता । प्रयोग—पर क्यांस की योगी कावल के समय कोट काट कामसित साहब की हमा में भर कर उत्तरने मुगमवायों की हिन्सुनी से कटकर यमने की सनाह ही गुंध नि0—810 मुत गुंध, 240)

त्या में महत्व बनावर

बन्धनाओंक में विकास करना । अधीय-सरी परानी, सू को प्रकार बन्दर कमा गई। है (मा कोशिक, क)

(वयर वृहार-इया में सहस्र वांधना) हवा में से पकड़ना

भूती-मृतार्थ जान को से सेता । प्रयोग---ये एक विचार्थ का या उन प्रभवित क्या है जिल्ला अपना स्थानित्यकरण आसानी से द्वा में से पक्षा केता है , आशोकo--हरू द्वाठ दिल, अस

दयां स्टाना

भगर होता । प्रयोग—कक्ष यामती के विस्तृते तथ है आगरें विश्व को बाद जाते। इंडका से श्री देश देश देश ना गर बड़ी, तृषकों भी अर्थ में भी हवा लग नहें (सुठ सुठ— सुदर्भन, १६६); उन्हें योगीय की सूरी हवा कव नहें भी (बुटिंग—क्षठ नाठ, १८६); बालूम होता है, बायकों भी तथे समाने की तृषा नम देशी (मानठ (१)—क्षेत्रपंद, १३९.

दना से अखना रहना

वोई बसर न होतर । प्रणेष—वार्षिक शोगः कारणी और मर्थानकोः परिवर्षन को उदार में अञ्चली रहती है। स्मीठ

कुमान १३५

हवा से बकता

प्रभाव संबद्धना । प्रधान । भाई साहब की नजर संधिर उनका सर रहन मं अनद कायदे सं । पहले की सर संपादे हारा-क्लो वहीं बहना, दूसर उनको जिल्लाकों से कामकीला कासी भी वृत्ये हवा में में बब्धा तीमी अ अ (अपनी वज्रा— एवं ३६)

हवा से बार्ते करना

- (१) बहुत तोब बोहतर या अभना । प्रयोग—कार हुना के बात करने समी (कड़ें) देंग सा, ५०); जान करना खजी हुना के तुना है बहु कभी बंद भव बसता है। कुछ सरना कभी सुनान है सन कभी कुरता उत्तरना है (बोसें)— हरिजींध, १५५)
- (२) माप ही जाए या व्यवं बहुत की बानें काली।

हवा होना

- (१) पायन हो जाना । प्रयोग—प्रयक्ष्यल की लागी वर् स्तार हमा हो गयी (मान०(२)—प्रेमबंद, १६६); कतिहालो में रनले हुए भनाको का सुना-साना सब हका हो बया। (यहम प्राम- यहम० समा, ३९,
- (२) तेको से निकल जाना; स्रतिष्ठ । वर्शन—क्षत्र वृद्ध महत्ता कृत्र बोल, यह हवा हो गर्थी (गोदान—प्रेमचट ६३ वेर हुई यम निकल दशकर करा हवा हो वाला (नुरंश भक्त, यह), तकर कृत्हार निकलो नेकर जनका करने एक दस हवा हो बचा (वीजालोश (३) - चतुरंश, १६)

हवाह्यां बहता था बहरता

(स्थान मृहान-स्वाह्यां स्ट्ला)

हवाईकिमा दा देना

भारी कामनाए अध्य धरती । प्रयोग--वर्ड बार अध्याद-सा हुआ कि अभी सारी कथा किथी तम में घरवा हूं, सारी कलई ओक हूं, सार हवाई किये के हूं ,गवन--

हुकर्षकिला बनामा या होना

भूतंत्रक प्रमास करता का होता: बदानी पुताब प्रकारा पर होता। प्रदोत-साम गेमी बचारे, साम हवाई किस बनाये, सच्चाई तो सम्बाई है 'स्तुo-देव सठ, १४१); क्रफ़ विमार हॅम पड़े, बोरि--वे यह प्रवाई किसे है (शिसाठ--कोश्रिक, १६२

हवाई दंग

काम्पनिक, बारमविकना से हुए । प्रयोग-स्थापनाचना की धांपरनार इवार्र इत को होने सबी (बिलावाड़)--शुक्त २४१)

हयी-लागे

रेहममा । प्रकान—सबरे ही मान्य परवसोहर द्वामारी के निय बयह पहल रहे के ,प्रांक्षात झीतदास, ६८), रश्योगाहर कई शहर में दिल्हों पर द्वाभोगी करते हैं (मनुराठ—निराला, ३४

हवासात की हवा व्यक्त

नस की सका नुगतनी । इसोग —कनवटर भाहन ने कहा कि नुगतने नामनूर कर हुं, वो-एक दिन हुवानात की तवा बाने हूं उन्हें, तो किर क्या करता है। (भूतेक—मगठ वर्मा, ४४५

हरत रेखा होता

अंगर म हाता । प्रशास - प्रम स्वामी सदि कहं निनिहि दरी हुन्त अनि रेजह (रामव (बाल)—सुलस), पन,

हरनक्षेत्र करमा

र्गनी काम या कार में दशम देश। प्रयोग—स्वाय में इस्त्रकार कार्य काम इस मुद्ध की निकास की (कासनाः— प्रसाद, ५१): उनके कहिए कि यिक क्यांके के हुस्तरीय से मेरा कामान होगा (१९० (१)—प्रेसमंद, ३६६)

हम्बी विद्या का विद्याला

बहमून के बर्बार हो जाना या कर देना । प्रयोग—नक्षाण कह रहे है कि बहुत जल्द हमारे वर्ष की हम्ती बिट आन-बानी है पोटान—प्रवर्ष, १४,, बर्ग प्रमम सी प्राथमी की हस्ती तक बिट जाती है, बीआ किन बंस की मुन्ते हैं (असा0—कीतिक, १५५

हरं में हो मिन्सना



हा विसर्वार्धे 🗴 च जनगरिए ती आन कर तक राहे घर न परवर्षे (प्रश्रेष्ठ--प्रक्राविक, ४८ (👉 ,

(२) बुरो-मती कालों का समर्थन करना | प्रकोध-सोकर में कटाझ किया-नके सार्थनकों की को में ना मिनान प कृद-न-नृत्व अत्यक्ष को विकला हो है मोदान-प्रकार 10), सायन बीरी को हा थे हा विभावन वह नेश्नपणि को मीका दिलाने वह नृत्य हंगा वा महा०-देश स्थ, ७० देखिए प्रकार (१) में (÷) भी।

श्रीक मापना

बोर के बुकारका (प्रयोग-करानु पूराने करण म अन्यक प्राचा को भारते गांधकों को ताक भार कर उनक सह किया मितासन पर बैंदने का अवसर नहीं मिनना होया (द्वित) प्रशा १)-पूर्वती १६)

(नमा= महा+- होक इसा)

होक लगाना

- (१) बोर रेकर कहनां। प्रयोग---शो नीन प्रृत्यात नहीं भागना पाहते हैं प्रतको वाधिय कि सच्यो दर्शाओं ने काम से मेनुकी हाक न नगामां कर (गुंध मिठ---सठ मूठ गुंध. 192
- (२) बोर से पुरारमा ।

हांकना

- (१) मांगना । प्रयोग—देशमा एक कार का ध्यान रणना, मर मरेनी १ हो, कही जनाय-बनाय हार्के (मा—कोडिक १३८
- (२) बडी-बड़ी बात करती।

क्षांगी अवना

हानी घरता रजीवारि इसा अवीच प्राप्त सारि पूज्य घनदात नशारि बहरी, तेंस रसन्द्र हुं हैं करी न बच्च होती को पद्मार किस्सा सार

हांकी के खायल का यहा होता

भाषासम्म संस्थानकं नयत् शान कर पनः होन्यः प्रश्नास स् भाषत्रत्र कर स्वीक्तिया ना उत्तर संद्रो किसी अपने का पना भाषत्र या कार्यस्य संभोतिका का हान्ये के भावने का भी क्ला रहता है मैलां के रेषु १९००

हर-हा साना

निर्द्धावस्थाः, बहुव विश्वती करती । प्रयोग —पश्ये मानः, तृश्ये साम आगे कान हर हा बरतः, कई 'तृश्योग ! द्यांति राम ही भी देति के कविक—सुप्तमी, बर्द्ध, मेने प्यारी में इस्म बोह्दे हान्सा बार्ड पर्यात आ (मान प्रयात (१) — नारसेन्द्र, क्षांत्र, मनेक नमस्त्री में विश्वी । बर्द्धन की मून प्राती । सम के हान्स बाई (पर बकार (गोली-क्षांत्र),

(गमार मुक्तर-सहन्द्वा करना)

दा दा ही दो करता

(१) हंगी-कराक करना । प्रयोग---हा हा--ही ही शवती व यह हरहा-होहर करना छोसी ,बोलठ--ह्याजीध, १०४)

(२) बहुत इसका (

हाजदी देवर

वका वं उपस्थित होना । प्रयोग—नियमुक्त मुद्रम् साम हरतरी देने पाते और अपना था पृष्ठ के कर मीट पाते व्यान कर—प्रमाद, १६१; सोरम के संगमन में मारे मारे पि.मी. हाजनी देवी अ अ (कासीक—हुँक वर्षा, १५० . ये कर जनके अनुगोब का पासन कर्मगा। जनकी कुटीर पर हाजनी सूना (पट्टमठ के पत्र--पट्टमठ सर्गा, ११६), मूअ महा बाद दी दिन हुत पर भावकी सुमोदी पर भाव ही हाजिसी ही है भिसाठ—कोशिक, १६०)

हार्रज्ञर-जवाच दोना

विकी भी बात का ठीक-ठीक धौर तुपत जनग देवे वाला । १९६१क--धनः यक भागारी वर्ते हाजिए जनस्य होता वाहित (विक-गुलावक, १६)

(नमा । पुरान-दाक्ति-दिसान होना)

हार बदना

हा कर मा जनमार जिल्ला आता। प्रयोग —परिच ताह सी १४८ च चरा । बही विकाद मृश्विमा पढ़ा (पटन-जायसी, सत

होध अरुग रचना

कार जोग न हता। प्रयोग दूसरे त्रीर सोर प्रयोग करें कर नहीं रान त्रय अन्तर रहते चूसतेल वर्श श्रीर, १६६० इस्थ सामग्र

विसना प्रवाह व अति। इन्होंने क्लीर यन विकरे

w

पर्या नवा स्थाद के शार्ति । मनवा बाबा करवता, जब बम् बार्व हापि (कवीर प्रदाठ-कक्षार, २५); साती सम्ब साम अनु प्राण ग्री मानी कविनाम (पदेव-∹तावसी, २६४६). निमिन्त्रासर मोहि बहुन मनावी यस इपि हामहि बाए सुर सार---सुर, ५१७), जहरवी द्वाप व बापई, भी हैं वाद जराम (वैजव० (१)—वैद्यत ६३% वर्षि वर्षे ६४% बदर्गमें वेशनगर का राज्य भी दृश्य द्वाए जो जो तथा व क्षकः (माठ प्रसाठ (१)--मारतेन्द्र, ६३१); पश्लू एक वच गाहित्य का हित तरनिती सामग्र मित्रका औ प्रतन्त्रक कास (शाका) भी के हात बावा है। गामी प्रसाद--गामी देख, २१४), बनर नहा बाहर बैठ बाह तो रोज दन-पाव क्यमें हाम भा अध्ये (गधन-न्यनक्द, र३); एका स्वाधा प्रथम जिलको याज्ञ यो हत्य शाया (विद्य०—हर्मकोच) बक्ता, अमनी क्योज के निषय हो गय, बाहे और उपने भी क्षित्र गर्वे, मुद्द सारीय गया, पर बरर कोई हार ग क्षामा (श्रीसर ,१) — अंश य. १०३

हाथ उठा कर कदना

मुक्ते साम जोर नेकर कहा। प्रयोग—नड पत्ती हिम के लिसे कम कर कमर है उड़ा कर हाथ हम कहने नहीं (मोलo—हर्दकोध, १६५)

द्वाच उठाना

- (१) मारमा; बाम से भारता । प्रतात-न्याता है इकती मालार कि मेरी यह पर ताथ उठाको (शव्यान-प्रमण्ड, 30); विश्वाममूच या भारत्यास के विश्वी नाथ का कोई विश्वामी पून परदेशी पश्चिम प्रमाताल नहीं बढाता जिल्ले हैंद का, 49); हान उत पर भारत उठाय को को कि है ठोक कुल ही जैसे (कोसेंट—हिंदगोध, १०)
- (२) हाम त्रवर करके बालीय कैना। प्रजीव—प्रवची बार शारी समय करते पार्वार्थोंद का कृष्य गरी उत्तवा (मृतक—प्रवचनी, ३५०)
- (३) कृता-अना कहना। प्रयोध-विश्व न नाम वन नाम में, किस पर शाम बढ़ाई में है पूज्य पिता वह बाता पर रे पा कि भारत में अध्या तक रे महिल सुम पदि भेग मुख्य कार्य न जड़ाओ, दुवनह-वतना बहदमा हु (इस्तर (१)-व्यवद, ३१)
- (४) हाथ तठाकर बीट देशा । प्रशेष—में दठात हाथ दे।

र्वत है जब्द क्यों न उस पर हान इस देवें प्रदा (कुमतेo— हर्वि प्रोध: १५०)

(%) देना । सर्वाय---विस्त नगह राज नव उठावे हम कुछ न मन हाथ व इफले हो। बासक --हरिग्रोध, १७०

राय कथा शीता.

विनों कान या कना के करने में हाव में कुशनता न हानों : प्रधान—इस्टीने थी चाना, बनोगों समाय, यर इनका तथ नो अब भी कबना है 'सुनोता-सोनेन्द्र, ५९)

होष कर जाना

- (२) विकान्यहो पर दश्यवन हो आसी ।

दाध कटा देतर

- (१) कुछ करने नायक न रह माना। प्रयोग---वन विभी का रेक कार्ट होड क्यों हाय तो इनने कटाया है नहीं (कुमते)---हरिक्रीय, भ्रा,
- (२) विवानारी के इस्त बन जाता (

हाथ करमा

क्षत्रमे सरिवारी में करना । प्रशास-न्तृत्र ।सन्द्रध-नागृर-भिनोकति निवारी हाम किसी (सूठ साठ-न्यः १६-८४ (समार-भनार-न्युष्टक्षां कर्मारमा)

हाथ का

पान कर । प्रमाण-मोनी वनति भोति दिन मार्गति करत द्वाप के नमून प्रकारीत (४६०--आससी, १४८), माल समाधान करन समाधा नहीं द्वाप का तीम देन बोना पहा कोला-हरियोठ कर)

हाथ का भाषता दे॰ हवेली का भाषता

हाथ का काम

तो करण किया का नहर ही। अधीय-नव बैन हाय के तर करण छोड़ कर घरना नारक "दूरतन छ पहले" निया चैतरे-चड़क, २०

हरध का जिल्हाना

(१) बनवानी की या बने, ऐसी चीड । प्रयोग---

साकार उत्तरे हरत ६३ विक्रोता है गोदान - प्रेस्टर, उहरें। इस अक्षाकार से अबने के किए एस १ किस की अबकीतों की सुराम जिले हैं और करवलों की की अस्ति वासे के सामी का किसीना करते हैं गोदान-- के बंद, शहर काहित्य-सर्वेजन भोतिशक्त भीता के हाम का किसीना उस दहां है (बहुमार के पश्च-- पहांच सन्ते, १३)

(२) खाली भीता।

हाच का पांचा होता

पूरी तरह बार व होता । प्रयोग--पूरी तो असके हाथ का प्राचन कर प्रवास व्यक्तिक २ - अज्ञवल अपन

बाध का समयो ने उद्दाना

कुछ भी स करना, जहन बरमणी हुंग्या । प्रयोग-नक कार्ययो पर्ना विस्त पन्न होत्र यह बच्ची बडा पात नहीं ,कोलव- हरिकीय देश

हाथ का मैंन होना,—पैंग का मैन होना

मून्त्र बान् होती । प्रक्षीय—स्थ्यस्थिता हाण वाण की चैन है (सह तिक—बाक भट्ट. १६ , कान, बहाई संनादी नृष्य से कार को सनकार के हाथ के दिन है संवाद—काठ कठ, ३४), यह तमें वट नोक-नेवा तम क द हाथ का यह चैन है वह पाल है (श्वासीक—हरिकोध, १६६, को बढ़-को कावा पाल भीतों के हाथ का सेन है वीस्टाक—संगठ वर्षा, १५,

हाथ का मधा

- (१) ईमानदार । प्रशंत-स्वारकी वटा देवता था, हाव का भरका और शंक का वी पण्या कुठांग (१/स्वायकात, १२६., दिया कुमाने यह कवी न वीनदा और हाव का दिशावर वर्षा कारण प्रशंत वर्षा
- (४) पराप लियान यो नव प

दाच का कठपुतली हातर

प्रश्निक प्रति । प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रत

हाथ को कन

स्पन दश की बात । प्रमाद । यो भाग मई अच्छ पर

हाथ की लकही होना

नगाम किया । अयोग-किर विश्वको बावा की पुतरी, प्रमुटो निया कुटा के कर की दिनेशी अ वीत बहु कर्तनो प्राथा गरी के जिसके जिस की (ग्रीटेही०-हरिग्रीस, ५०)

हाय का सफाई

हाथ के नाने उह जाना

दाय कार्यो जाना

- (१) कर कुठा परमा । प्रमोक—केमी यह हाथ बाली क भाग सांधाठ ध्रहाठ—संधाठ दासे, ६२५
- (२) द्यांग म विक्रमा ।
- (३) क्येट हुछ बाए बले जाता ।

दाध साजी होता

- ा प्रशास काका विकास होता कि स्वरामा (प्रयोग इस सद स्वर्गित हाल विकास सामा का हिन्द्रामा स्वर्गित विकास कुर
- () समय विकास कृषण भिन्नती () प्रधान शास्त्र पर म नाट पन में हैं। जा रूप मानी हाला भानत है इमेन्द्री पुर

हाश लंग्नन

(१) देश केंद्र होता-बहत च नयी ये सूच करता । प्रयोग -तब अजनाय द्वार जन्म यह प्रशासका कि प्रतका संस्तृ क्षांध खुक्ता

(१) मुक्ताहरू होकर वर्ष करना । प्रकेत—स्वरीत सामा के वीओ अबाद हुदथ हरिशकत का हाक जुना (राधात द्वाराठ—संघात दास, ३६६)

- (२) भारने वी आवत पानी ह
- (३) कमा में सकाई सानी ।
- (४) द्वाब का सम्बन्ध होता ।

क्षाच त्युका होना

साल करन या नोई तह दर सा पान्य होती। प्राप्त हरत मुन्ता हुया है जिसाद जिलाब कर कि विकास में पर स्मृष्टित-स्मृत वर्मी, श्रीया सालाजान ने भी सम हक वीतरा के बारे में स्थला हाथ काशी सुन्ता स्था था (क्ट्रा) —के सक, संभी

द्वाथ खून से रंगा होना

हत्यामां होता । ययोग-नाथ जनके नहीं बटायमे हाथ जिनके नह करे होते (भूमते:)-हर्रकीय, ११)

हुन्ध शरम करता

(१) सहभ्र करना (सम्बाहत प्रणोग घोण के नत से हान रग कर समन्द्र स्थापन प्रथम प्रशास स्थापन स्थापन हास्त्रिकेट वे

(१) व्यक्त नेता हवा ।

् वृद्ध दश

दग्य गरम होता

इन्द्र निभना । प्रयोग—यह यनगरो सुनीय भी, कि नेज-गोर दी राजरी क्ष्यों में हमारा हाथ भी गरब ही सकतर है या नहीं क्ला--टेंट मट, इसके

राष्ट्र सदना

- (१) विकास : प्रयोग-नृति यंदिन केवली वन योगा । इतथ न थहा वहा परितरामा (पद्य-सामानी, ४२% , ही ए इत्य पहुंचा निर्मातिक कृष्टि नई संसामी (क्योर प्रेसाय-क्यों), २०७७
- (२) वस में होना 1 असेल-वी मानी पर्मार्थत साल पर बाब हाथ बड़ी को नेट के स्थम भी आएंड नाल (पट०-वासमी, २३/१७); क्यों हठ के वड़ ! जगान मोचन होन कहा धन की नरने में हाथ बड़े जिकि स्थाय न्यान कह तिहि बायम ने परने में हाथ बड़े जिकि स्थाय न्यान कह तिहि बायम ने परने में हाथ बड़े जिकि स्थाय न्यान कह तिहि बायम ने परने में हाथ पर्व वन्य के नाथ बड़-कोट कृत्यत के (मृपण एखा०--मृपण, १४%). ताथ परिष्ट कविजनन की नेने साथ स्थाय ! जिह नृपति तथ होने हैं, इस्त बड़े बायगाय (प० संग---वृप्य छ) , विष्ट कह तथ की नेने साथ स्थाय ! जिह नृपति तथ होने हैं, इस्त बड़े बाय बड़े की में बाय पुरानी क्यार निवाक मूं काल प्रवाल (१)---मारहेल्ड, १६६९), इनम ने एक भी हाम बढ़ साथ तो हमरी को भी हाम मंगे (मृग्य--- हम कार्य, १२२
- (3) किसी के कहें में माना ।

हाम बारता

- (१) प्रीप्रता में बाय करता; काय करता । प्रयोग-नेट तम केंद्रे बागमें बल यक यह कियरे हर दान ही बलता नहीं (बोलक-हरिक्सेंस, १६८
- (३) गाम्बा (

हाथ सन्दर्भा

(१) बारत के लिए हाच उठाना-मारना । प्रशीत— मस्त्रम में बाद देखा न नाच उत्त पर दाच बना दिया (इ.20—20 माठ, 30६); में तो बर-बर दांप रही पी कि बही मृद्धारे उत्तर हाच बचा दें (गतन—मेमचंद, 100), यह देखी, तब हाच बचा बंडता है ,मा—क्रीफ़िंछ, ३६। (२) काम करना । बनोग—हाच की बचाने परते ही रत की बोनेठ—में राट, १४३ (४) साम करता । प्रधान —गरके राज-मान वेककर हात समाने के, यस निशाक हो गर्व पंतरण—गमनद, २४)

हाध वप्नना

(१) प्राप्त करना । प्रयोग च्याप ने ही हाथ है जिस हाथ कि चूमने की बाह क्यते ही वह त्युमतित-हरियोध, द.

(2) हार-कीतन पर विशेष हो जाना । प्रशेष---ग्सं धन्त्रों कृष पतं कर म द कि सकत क्षा पृटी को बात करते हैं। की बाहबा है कि बररीयार के हाथ कुम म्हें (परीक्षक --श्रीत दास अन्य , बाह की विश्वकार मिस काब, हाक को संग्रह सेमें जुन (बेंदेह क--श्री) और १६

ट्राध छोटा होता

कानुस होता । प्रवेश-वानिकादन का दान कोटा है। सप्तकाद करा परोसनी ही नहीं तो कनावा नेहमान क्या सामेशा और नवा प्रोहता ? वीलाल-नेसाल, दव

हाम सोपटा

(१) मध्या, यहार करना । प्रयोग---कोई एक तयह कर की बटनी पर हरन धारना है ? शोदान - कैमक्ट, ११११ में बदना हूं जीक्या हूं। यह रहना है कि हाचे छोड़ केंद्र (क्यामी--प्रोनेन्द्र १२१

(२) बाय कीर देश । प्रयोग-न्यम हवाया द्वाप न क्या । ब्याहे दिन दुर पुत्रा वर (पाटा०-निराह्य, १२४

हाथ तोइकर

हाथ संस्का

(१) उमानार पारमा । ३ था सन् निर्माणमी एमी पार्ट् अधि नंगित राम पार्ट्ट ने पार्मी ११५ कर जार रहि विद्यार नि के दिन करि नाम गरि प्राप्टिन होता पार्टिन एम पार्ट्टिप स्थाप पर कम्म गरि प्राप्टिन होता पार्टिन राम क्षाम सुन्देशी १३८ राजर निर्माण नाम मुक्ती, स्थाप मिल्ल मेल् पर नाम गरि हो स्टाप नाही, जाने दुस् कारण काल इन्यांन के काल काल होना क्रिक महिल्लाहोंने काल काल इन्यांन के काल काल संस्थाप काल महिल्लाहोंने ३३१: ताम शाव विश्व नाइ है, जान तरे तृब शांकि । धरम नेव क्षें वहल है, दीन बचन वाँग शांकि आठ प्रशांक (२) — सारतेन्द्र, ६३३ , इपर हम हम्ब शोहमी, उपर वे हम्प एमने ,विताठ ,1)—शुक्त, ६४) (+); दूक पाने यह होत सनाय बहने करियों से बोह हाथ (अनाठ—निराला, २६) (२) बन्नम-विनय करनी | अयोग—चम सानद शीन स्वान हहा बुनियं विनयों कर बोरि करें (एनठ कविश्व— एनठ, ६० , देरेबार प्रशांक (१) में (+) औ।

(३) हाच मनाना; बोद देना । चयोम---धर्यो पर पेणि दनपण्य हु के बाब पर, मीरी बाद हाथ मनपल्य बाहु-बस ये क०१०--मनापति ६०

हस्य अरहे ग्हना

नेवा में स्थरियत रहना, बाजाकारी होना । स्वीय—प्रात में नहान, तक घरत साके सकत, नाहि चसह शहत हाथ मारे (कुठ काठ—सुर, २२२), वर्टान्तू बहुत नहीं कर कोरे बंग्ड हु को मोरे (माठ पंचाठ (२)—मासिन्दू, ५००), किस मोड स्थानि के गोंस के हाथ आग्रे नहीं किरे जनने हमने कैना किनारा कमा (पूजेश पंच १)—गुलेशो, २६६)

बाध आह कर बड़ा होता

यह रिकामा कि मेरे पान कुछ नहीं है। प्रमान —केन व्यवस्थ हारि नेयह पाना । हाथ यहरि होद भवहि निराता (पद०—सम्बद्ध, अरह)

हाथ काइकर यस देना

नव कुछ सीर कर यम देना । प्रशेष-कर्ष करोर अंस की वारी, हाच काहि नेमं पने मुनारी (कबोर ग्रेडाय-कडोर, १९६

हाच भारते

नाराय से, जानानी है। इसोय—देश में न प्रायो ०० कीर नाने नेते कही दिल्ली चर नीई कर द रन किने कर्म करण प्रस्त कर्म करन

(वकार वृहार हाथ फडकारले

हाथ हालवा

रिकी काम को असराध करता । ध्रमान (त) काम धर कुन के कर है। सम्म हाथ कामकर तथा धनती जिल्हाणी माराम कम (सान्ध्र है। असमोद ६० , कर्नन में कामन

- को इस गरमी म हाय न राजने का कारेस दिया पा पूर्वण- ठांव नाव, प्रदेश, जिस काम के वह हाथ साथ प्रम की अपने में करना चालिये साथ सीव-नहाव दिवेदी पुजद, (-
- (२) योग येका । एकान-काममा श्रीवर्णालय स्थर में डांके --- वित्रने ही के हो में असीति में हाथ नहीं शता काइता (मानव ए प्रेसन्द, ६०) देनित एकंस (१) म (२) भी । (३) हरतशंप करना । प्रवाद-करणा पर्य में बावले व हाथ नहीं बान पायमें भूगव- युव दर्मा २१६ - वानन क याओं में तृत वो हर्गाय हाथ न वा १ - व्यक्त क में बाग कहूं, औं कुम करत हा अन्य ये १ - व्यक्त क गायनी (ठेठ०-हारऔप ४३)
- (त) अवृत्तिह तरीक में पान की हरणा करनी। उद्योग---वित्त राजपून कीरी की जातापना के बच्च नृद्ध वह प्रवाद प्राप्त हुआ है, है कुनावार, उच्चा की वह वेटिका पर दान प्राप्ति तृष्टी गुरुषा मही आती। पाधांठ देशंठ---वादाठ दास, इत्हा, केल में जिला है कि देखियों पर हाथ प्राप्तने में कैंस संबद्ध सीर हरित्रवाद्य का नाश हो बचा, ऐसे ही र अ का नाश हो भागवा (पहुंचठ के पदा---पद्चठ श्रेमी, देशंड

हाथ मंग्र होता

(समान मुनान-साथ दन जाना)

हाथ संपाद होता 💎

हम्मदना कादि में बहुत क्रमान्य एवं कुमक होता । प्रयोग —क्रमा विकार से भी अवदा क्या । वहां तैयस हाय है [प्रह्मक के प्रथ्म-प्रह्मक श्रेसी, १म६)

हाब भागना

कृत्य प्राप्तन से प्रोक्ता । प्रयोग न्याद-व्यवस्तार की इंग्टि स अनिकट से अपने क्याने के लिए इस्ट नहीं है कि दस इ. १ र १ र प म और जान का कर कि (२) कराण दशः । वर्षाय — बादत द्वान बदा बही मेरा दे करा द्वान मध्यमे मध्यः मुस्तिकः सुविद्योध दशः । यम् स्थला का कर के पामः बीतररामः, बीतरणस्य स्वर्णे धृतिः । यतः १४९

राम देवाकर

- (१) कीरे मीरे । क्योन--गर, यस अप्तू समाना भी कटी जाना x x हान रवाकर नमा असंठ--वेमजद, ३६४
- (२) रिकायन व ।

हाथ विकास

- (२) कराई में बीरमा का प्रयस्त करना । प्रमोग मीर सभारत्य ! तथानावक विकास को किन अपने तान । कह दो, मेना नामार कर नहीं पान मेरे नाम मुस्ट — धरा १०व
- (३) इन्छ-त्या दिलाकर भाग्य गानना ।
- (c) du ut aift femini :

दान देना

- (1) महरण देशा । प्रयोग—दोनों है महरत अ अ वे वेगे याथ औ हंने हाथ मुद्धक—बक्का, पक्का, वया उपर अब नहीं नवने हम हाथ देवर दर्शास्त्र हमश्री (मुनतेक— व्हारश्री 3
- (a) किमी में आसी बात को पट्ट करान के नियं हाय म हाय देना ।
- (व. अंदरशास्त्र) ।
- (ह) किसी बाद वे नीग छा।

हाथ भारत येखे परना

- 🕝 (हायी काम में की जान से लग आगा।

400

हाम यो वंस्ता

को देन। प्रभाव को सभावना न होनी । प्रयोग — रामी वापनी बोध्यक्ष म नामकात न को समी-कानी तो विद्याल स विश्वकों है। प्रथि भी वेडना है। सीध सुरू-बोध मह देव वाद्य घोना

(१) भी दतर, प्राप्ति की समावता स रहती । स्वर्गन - मृश्र प्रस है कि और विश्वत कारने स तायद प्राप्ति न हाए स्थान पर्ट स्थानका नू प्रमुख राज्या, सहस्र हो एतने हैं सब भी दिखा से बारे प्रस्तान विश्वत है दशक बहुत समावती है हाथ मृश्री ही भा से अहरू-हार्ग और, १२६,

(श) श्रीका या मुख्याचा भागा ।

हरपे व अपनर

हाथ संस्थित । हाथ से हाल संस्थान

चीहा क्षेत्रे हरू प्रधान अहती नात कर साम्य है भीगाप र रस्ता प्रधानक रणाय के उद्योग क्षेत्र है प्रशित्त के क्षेत्र प्रधान प्रमाण कर तथा है जो उद्योग हो है के के प्रधानक रूप के प्रधान है हैं है

ट्राय त लागर

र्, पोण ने तीना व ेरन रची कर प्राहर

िक्ष नक्ष का अनुसार क्षेत्री का का का अनुसार क्षीती का का का अनुसार

(०, पाम मं न होना, पाप्त कारोना। प्रयोग —कादीर सूचन केर पन वायन वाचि कहोड़ किरोर संदाठ-कारीर, ३३१। (२) रजनका होना ।

हाय साहर पर होता.

बन्तरिक स्थिति में अवगत होन की बच्दा करती। प्रदान —कारा है व लोगों को नाडों पर है। कम उन्हें पहेंचा, बन्दू गयी कहाती वार्तिया, कक पश्चिक्तरर श्रीत कोश्री को क सह तम वह खूब जातन है (वैसरे—अक्ष्य, ५०, दान विकट्टना

(१) बहार। दनाः परम थ कता । बरोग — र्वेणो दमा मण एरवी नपर विन्तः दिन-वृत्रति कोन सभारे । है तिन ही बी इता पन बानद हाम नहे निय-राधान पार्ट (प्रस्त कार्यस — व्यान, हथा । बान स्थान के बास तो प्राथि निर्मा गरि हान ,राधान प्रशान-राधान दान, दश, है नहें सब कृती वन्त पर ही नाम सा दान हान से परम पर। (मुम्लेन— हार्योग, इ., बह मानम के बासा पर पर कीन रही भी धानी जिनम प्रमुख कर प्रस्ता जनकी मूरत नह बोका नुरन-भाग, २०

3 44 44

हेड्स राज्य व्याप हिन्दा र क्या कर या राज्य जा है जो कर के प्रदेश के क्या राज्य कर या राज्य जा है यो कर कर हैसे के क्या राज्य प्रदेश के के स्थाप

हर्ष धकरतन

fathe ger gar mein gin frag ein big

प्रतदा दये, उसी की व्योक्त कर नात (विचा) में जिल, 55)

(०) मुप्तं बल्ला ।

हाथ प्रचला

भिलता । यत्रीम-क्वीर निव न्यावति प्रवा, नावा कन सम्राप्त । सामर साहि व्हीजना होई पदि बना तथन क्कीर प्रशास-क्कीर, १५ - एड अब हाब बरनी नुबलन मृत्ये, सह देव दाठ ३० (सुव साठ—सुर ४३३५ - वृत्यि मीन हीर्न गी, मानू व दिक् शहरहा । वेनी भीवृत् इ दिवे पुनै हाम परि आहा विहासी स्थाउ—विहासी अपक्र)

हाय किये रहना

बद्या भारतर करना । यथीमा देनी हो अनको हावीं पर निरु प्रश्नी (मान्य ४: -प्रमाद ६३

प्ताय पर हाथ घरे बंदे शहता

the state of the s

कुछ कृत्या बाधा न करना निष्यंपट रहता । प्रयोग---इन वाव में भाव हान वर हाय करे केंद्र नहीं सनते । धूओं 60--ह0 प्रव द्विया, १६७) जिल्ला भी रामा फाटको के मोनाकी हान वर हाम भरे स बह में 'मोसीठ- एक वर्ग, इंडर , हम बनवर है। रक्ष निकास हो बेठ, यदे हाथ पर हाथ (नुरक्क मक, क), भग र तद्र में चन महाहा तद्वत आरम समार ! हाब पर श्रम परे ! शिशी०--तमठ वर्मा,

295

हा है प्रशास्त्रा

क्षोरिय स्था का विकास चला । विसे द्वाध प्रतारि वै बहुनि प्रतार वांच कुन्क०--ह सर दास, ४६,, पर अधिय का तो वय उही कि किसी य या हाथ वमारे (माठ प्रशांत १३)-- भारतेन्द्र, ३५% . भूत पूर्व के उक्कारी जात या न प्रमुख कर जा पार्ट प्रस्ता क प्रश्निक अप्रोक्त कोई दीन काताल नक्की व्याहर क रिकारका सम्बद्धे हाल प्रसारमध्यो यह लागो अस्त न ला । संभाष प्रमाद अप कर वाली हु, जिल रिकड़ा रहे हैं। इटा के घटक राज के सका प्रकार 96

(स्था एट हार) केंग्रास

साथ कराते जाना

- (१) नानी हाथ बाना । चनीर -बार दिन म ताथ पनारे बर्ने चेरो । ई ताम नुभरे क्या व बाई चेना० प्रवास 755 f 1 1
- (२) मध्य के नमय साथ कुछ व के अध्या । प्रजीव---दल्लि प्रयोग (३३ वॉ (७) ।

शाम क्यारी स सक्तार

करण अवेशा होता । इदोध-अनी जात ही वर्ष जही बती मीन को नहीं कुलका पनाते हरूब (कोलo--वरिज़ीध क्**9**0).

हाम पीन्या होला

विकार होता । वर्षात-इसमें तो दलकी पान कराइन योगों के दश्य मीने कम चिने (हमा०-उत्तराम ५५): or the same of the same of the same of

हाच कंकमा

- (१) राव बनानों । प्रयोग-भाग मी अन्य फेंनने ही दे बाब नहीं ज्ञान केंक्ज़ें भी बच्छा (बोल्फ - व्यक्तिपीध (१७६८ / ५-)
- (२) बारबा । प्रकोत---देखिन् प्रवास (१) में (🛧)
- (३) अ्ष्या में राथ की क्षीक्षी फोरती ।

शाध केंग्या

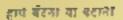
काबाओं के प्रतिया तथा। जबीन -शब फर घरीए बना कर, दिन पर मान हान हैंगा हैमान अर्थ हट . बकानी मं देला नहीं अहबीयतार मानम् ने इसारी पर अप पत दिया द्वियांक.. दंशबंट ६

- (३) महता । प्रयोग-अन्य पटने पत्र श्रष्ट को पेश अपका क्रकार है कर और में पेर भर घोषन है। उपर भी वेड वर इस्य कारे हैं किएक 12)- शुरुत 60', शास बीर गई मा सी क्षा केर कर कार्य केरेगा (निसंत) प्रीम्बंद, 53)
- (३) कोई बाब काले का प्राप्त करना । प्रयोग--- परस्कृ क्रम्य में विकार की बारण म संपर्क कीता। यह हान फेरने as farents of the o

21st \$ 71.4T

259

T gram g marthage displayed * 4 4 4 7 7 7 7 7



एक्ट्री: वर-पर कार्यक भीन दिन कर जोरण पान देह (पहाराठ— पदाराकर, १०) कार्यक जागर नक वण्यो ही पारास राधार संख्या—साधार द्वारा, ४६ , मनीकर व ही जारायी कुरती के मामने बान कैनाना है औदान- इसवद, 4१% क्षत उपके सामने शक कैनान वह है वरश ? ,मनठ—-हरिकोध, १२२

द्वाच बंदना या बंदाना

काम में नशावता किलती का देवी ज पर बरा बहु की रोटी विश्वास देव में। बट बाद (मुसेक--मंद्रक देवी ११), मार्किकी की चाहिये कि अ अ रवस ही नीवन का शाब कराया करें मेर्निक-गुलावत, १६३-१६४), विमृति के बाद में हम भी उन मोगा का हाब बरामा चाविए (द्वागाए--देव सठ, २६४) देश का करांक मोने में शाब घटर, कम कांका होती कामना— मसांद ६४), शाब दनके नहीं बटावते हाथ विश्व के मह भरे होंगे मुम्लोक--हान्सीय, ११

हार्य येद करता

कर्ष क्षत्र मा बरु करता । घराय-न्याद करी-कर्म दिवस होती की कि करोबे राज बरु व किया हो। अनेता क्या क्षेत्रा करेमारंठ के --प्रमण्ड दर्दा

क्षाप वंश्व सामा

निर्देशित प्रथमा निर्धायिक के अनिविधन कुछ न कर सकता। प्रयोग—कोई अरहा मारि देख कहता। हाल की क्या है पहुंची। जीवाक्षा, १५३ , काटिय तोइया क्यी क्या बेहकर इन्म यस क्या होत्र (बोल्स)—हरिस्तीय, १६७

हाथ वंशाना

शांध बर्गका

भागित मेर का स्थाप अस्तार के स्थाप असे का क्षेत्र हैं। इस का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप का स्थाप (•) कि भी उत्तर स्थाप का साम का स्थाप का स्थाप का स्थाप (•)

हाभ बद्धाना

🚺 , किसी काम की कार्य के लिए हात छ। स्थाप । प्रदान

इतक जिल गल नव गण के जिल क्या गरी रहता जब नक कि भज प्राप्त न हो पांच, बॉल्क उमी यमय में भीका-पीता करके विभन सम्पर है जब में कर्म की मीर हाथ स्वाप्त हैं किसार के पुरस्त, इस

- (२) तेने की द्रष्याः होनी, तेन का ज्यसं के जिल हाथ आये करना । प्रयोग—पर क्य उन नामु को और हाथ कार्युत का जीनों को उनकी जार हाथ बनाने स दल नव बहुत से जीकों का प्यान हमारे क्या हुन्य पर आवका कितात १९ - इंक्स करा, बोई प्रवनी जावसार पर प्रथम सन्ती हाथ बहुत्वसा तो में लहन पर प्रताम हो ही मालग नेगर (१)—प्रेमचंद, बरुद
- (३) सहारे के लिए द्वाप बहाना ।
- (त) मेको इत्याहि के भिए प्रश्नुत क्षेत्रा ।

हाय बांधकर

विनीत होका । प्रवास - वयाह ने पहले मैंने प्रधानमा से हाम बायकर जिल्लाका की व के निरु प्राचना को थी, मुक्त जनमंत्री करिक मिल क्यां मुख्युंत-सुंदर्शन, वर्ष्याः

द्वाप योजकर संस्था रहना

क्ष्यत बाह्यकारे होना; बाह व रहता, मेबा के बरावर प्रकार रहता । प्रकार — मह विवस तिह वह बमा साथ विक्त हाती यह बावि हाम (राधाव प्रधाव—राधाव दाम, रवा, इब वेदा के हावि में बावि में नाम पर मापने के, रामा बहाराना होगी हिलान के बावके काम बाध हाजिए होने के यूव निव—बाव पूर्व पूर्व, २१का, यह विस्त्र हाजिस सामने राम बाबे कहा रहता (मानव (धा—प्रमण्ड, धा, बाई काह बाह्य बोही है की मीम हाम बाम सह रहते मेंसाव— श्रि

हान बाध कर खन्न भएता।

रे सार्वास्त्र करता ६ व्या १ १ व्या १ व्य

हरव पाधना

- १ के बरन व कहना। प्राप्ति क्षेत्र प्राप्ति स्त्री पर प्रस्कृतिक स्था च चूमल्ड स्थ
- (पन इस इंग्ला



क्षाप कांचा जाना

धिरकताय किया जाता । अधीय न्तान कीय नव न नाक जार्यने । सब माद्र तम हाल कार्य ही एवं प्रमुखन्य-हीं फीस, १८४

हाय बांधे बैटनर

भूगमाण केंद्रना | प्रयोग---हाथ कींग नक न कार्य प्रायन क्षत्र माने प्रथा शांच कार्य ही शहे भूगतिक-- हा उत्तेव १०४०

हाय वैदन

- (१) हुआ-कार्य ने सम्मान्त होता । प्रणीत—कार्याओः, निवक्त, सम्मदानी पर भी हाल मान्य वंटा है (सी० इं० स०, ५१)

हाथ भर का कलेजा होना

- (१) बहुत साहसी होता । यदान --मच बांतने के निग हान मरका करेगा चाहित, कुचारी में विस्त पेनी संक
- (२) जन्माह दवता ।

हाथ अग्र होना

भाग के प्रयोक्त का कहत होता । प्रयोक—जाप एक नयी भी मोरास कहती निर्मित् में अभर आपकी करर करना । इस क्रम की मेरे हरवा भी है चितरे— चरक कर

शाय अञ्चल करना या होना

नियति दृष्ट करोती मा ज्ञानी । अधीय-स्टबारे हान अस सरफ से मणाहर है जुड़क-अक अब्द दन

हाथ अरोज्ञा

पास्ताना । प्रशंत-स्वाभा बहुत मृत्य तथि नाइ नाइ नुई भाष । काई कुर्वे न धारे तथ् सरोरत क्षत्र (पदक न्यानको, १०१५

हाथ इलकर पढ़तानी

किही कीय के न मिनाने का प्रधानना होगा । अयोग---मृति नृति सीस धुनहि यह कर यम वस प्रक्रियादि (प्रदेश---क्राधनी, प्रशास), शृक्शमः वस अहं कियह है, कर कीय परिवर्गात (सुरु सारु सुरू क्षारक्ष); कर मोर्ग सहस्रीर परिवर्गार्थ । कुरु विश्वास गीन क्याई (संदर्भ प्रदार)—मद्दर, १०६१ जा । म जर्म सुरू पर, जीर सर्व से बाद परिद्य स्थी सब परिकरण, तथा सर्व गींद्यस्य (यूंच स्टब्स्ट्रेट, ११६%) हार पर वस कर के क्यों प्रदास हम इंड एवं सीने हमार्थ शांव के मुम्हीय—हरिशीय, ६१)

हास संस्कृत भरता - वह जाना

पर्णना कर रह आता । प्रशंत—मुरवास विशिष्ट में पाए सम्बंध बीच कर अधि सर्व (क्षुठ साठ व्यक्ति ह)—सूर ११॥), योको अधी को—नहीं पीचे हर्थ की समने प्रशंग भारत्यसाठ (१)—सारतेन्द्र, ६६१ , जब स्टब्स्ट नवामी शर्व भार्दि जिल्ह्य केव पहुंचे तो बाबूब हुआ, विश्वा सम्बंध है विशिध पढ़ वर्ष । द्वाब समकर रह वर्ष (१४० (२)— धनवंद, १६२ , आव संध यन कब न गई द्वाना पदा कर सवा परवर न कानों वर गया बोसठ—हरियोग १५०)

हर्थ सन्द्र कर रहे जेली रेट हाथ सन्दर्भर सरना

हाच मलना

(१) बहुत पक्षकानर। प्रयोग - हाच मेरिज निष्ट- मूर्ने मी रावें को निर्देश कम जोब (मद्य आयमी बरारा) कर मोर्ट्स क्रिंट चन्नि मारि वय, यह परिन्नांह पविनाती सुर सार - सुर, ३८४०), का भी और । तर भूनि गास्त्राही रामक 🗷 —तुनसी ५४३६ नव न नियानी माथः भीडनि रे पड हार, बनावनि श्रामां विवा द्वात गर्हे केव रेठ-रीजायसि, सर्वे 🐎 🖫 महत्रम शक्त भावत भागनर वी मापुरः कुरन की नार्कि होई हातन मनति 🖁 भूपन प्रसाध—सूधन शायः 🗇 ् मीरिव के लेख कर भीविवार्ड हान नायो सी ब नवी हाव श्रद्धी बङ्गि नवान मी अन्य क्रिक्ट चेनांव १६६) (÷1; होती वह हाच कोई कहा तक बना करे \$300-- \$ 900, ६६), जनम सेन मेशार्येंड अस्ति सचि हरपनि मीची (पंचावपेका०) चन्द्रावदास, ६७६० 🗀 🚉 🤫 नो भवेतो शास प्रकृषे बाउक शांध न्यतन पर प्रवर अस्ता क्या ,चोसेल-हरिजीध, १६ (), बार दुनिया म नामे, मा कुछ दिव हैंद अवाद का पानुमा भी इस्तानो, मही ता गक दिन को ही हाथ अपने चने अध्येते (मान्ध ,द)---धनसंद हुए

- (२) निरास चौर दुकी होता। वर्षान-सीता हाय सहज गोहुल बन, सिन्ह दिक्क बेहान (सुरु साथ क्षेत्र, दृश्का, हुमरे ची पनते हैं हरच, है बनाय हिन्ह, मनदनीय ही बहुत है अस्थानाच (परिश्-निरामा, २२७), देनिए बयोग (१) में (२) भी।
- (६) होत्र के कारण द्वार जलना । वर्यन—समय दलन दिन वीजत द्वारा (दास० क्षां —शुलतो, व्यथा; देनिया प्रयोग (१) में (÷ १) भी ।

हाथ सारका

- (१) कियो वर्त को पुष्टि करती | क्योन—किवन्ति शक दूसरा वर्त्त कारके हाम कारते हम है अवेक्ट-शिकीय १०३ , १४
- (२) प्रतिप्रान्यक कीना । प्रयोग येथी प्रीर्ण है भी एका क्षाद मादे काल भूक साव---दुर प्रदेश । देखिल प्रयोग (१) मैं (३) भी ।
- (१) माजानक मध्य प्रहाला । वयोध—वन की बाद बदा क्षम बादा है स्मृतेक—मठ बद्ध वर्गा, २२३
- (v) बोरो करती।

द्वाध भिकाना

- (१) मुकादका भरता । प्रयोग--विश्वावकी तो यह देखता कि किसी कहे आवनी से हाच मिनाते । इस सायक को बीट निया, को कीन-की बहादुकी विवाद (४०० (१)--पेनक्ट, ९१)
- (१) नियस करती | प्रयोध—संसान बही | तो सकते हुरमण में भी करा हरक निभाग के लिए तैयार पड़े (कुट्टा —100 माठ, २०४% होना कोई तथ जिलाना किया तरह होना हमने नम बहावा ही नहीं बोला हुए होंग्योध १६७ (३) किसी कात का स्वोद्धान करना ।

TU Ä

पास में । प्रयोग इसकिए गाम भी बाद भी की हाक क्षेत्र, वह साब दिन काम ही प्राचना लागत - जैमेन्ड इ.स.)

∎ण्यः में भारता, —करता, — यहना अधिकार या वदा य आना थः करता विश्वता अयोग— महित भनेह सकोच सूच स्वेर, कर युवकानि । सार

हाथ में करना देव हाथ में जाना

दाथ में जन्मकी होना

- (१) कराने को इच्छा होती। प्रयोग—स्या शृद सून ताझ नोर मनरज समात था, यर आहवो को सेन्छे देशकर नगढ़े इस्य में सूनली होते स्वती की गहन—प्रनबंद २०-२१।
- (२) इक्ष मिनने का बद्दन होता ।

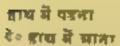
दाय में अंदर होता

कियों काम को करने कर निश्चन करना । प्रदीत—संकटों की नक को परवाह क्या हाच संका तब मुवारों का निया पुगति—सरिप्रीय, १००

क्षाय में दिया होते कुछा में विकता

हाथ में बनेक रखना या होता, जागहोर रखना वा होता

अपन बार मा रमाना । १ गए--- सका माहम महा पहुंगा ही कीर के द्वार मानवास गढ़ विकार हरियोध १७०५ और १२३) यहान्य को साध्यास साध्युको सामग्रीत है कसंब । इसबंद, १०३



हाच में परमड़ीर रकता वा होता. है॰ हाच में नफेल रकता या होता

द्याध्य में मेहर्दा लगना

मृद्धान करमा चयमशा कर रतना । यसका ज्ञास्त स्थलके नहीं नया गाम संस्थास न ते नता स्थल स्थल स्थलके. महिद्योग प्राप्त

सच्छ में रकता

या में 'साना । प्रयोग—मोबार नृष्टे हाथ नहि जीते । जहां भार नहें साह न ही में 'पद०- प्रायमी १८%। वहें महायम याप भी नवने वीगीमाच । तो विदेशों की शक्तिके हाथनु कवि मन् प्राप्त 'विद्यांश स्थान-विद्यांश अन्तर, इसको हाथ में रक्तने ने पायन में निष्ण वासा स्थानिक म होगी ,सांसीत-सुत वर्षा १७६)

क्षांच्य में बहना

हाथ में लेगा

- (१) अपने बद्ध में क्ष्मा । प्रवेत—सात-कृपाम-दियानम सा विवारी बसुधा जिल हाथ लई है केस्रवर ३ केस्रव २४९) बद्ध में इनकी भाषा की व प्रकृप अपने हाथ म व क्षिमा है जैसे घर लक्ष्मी था वसी है (मान० १ फेस्स्ट घक्क) (क)
- (२) कि ही काण की करने का विश्वा नेवा। वयोग— पूर ती ने पृथि और शतक का वासना राज में सिन्ध नो भवने स्वभाव और वश्यास के बनवार नगे द्योग्य हो निव्दर देशा बाहा क्षेत्रा २ संश्रमंत ३१२ द्रीला प्रमेख (१) में (⊕) भी।

दाय में हाथ देना वा मेना

- (१) नहमंत्र हेना । धरोम -पर समय समय दिना नवर्षे हुए क्यो दिनी क दान में तथ दल्य हैं (बीलठ-हरिसीछ, १६९
- (२) विशास कोना । अधीय-में हूं नहीं दिवसा किया था साथ काम हाथ में (अयठ-मनुष्ट ३५)
- (६) यन्त्रम प्रसिद्धमा होती ।

बाध में होना

- (१) पान में बोना। अयोव—हाब में मान रीने आहे तो परावें भी सारने हो आहते जिल्ला-वैश्वयद १००), भीन भाने क्या नहीं विभागी पह नवें हाल में नहीं पैने (भूनतेंठ--मानकीत का
- विने पान में होता। असेन कार पराम हरन है मुस्त विने पान में होता। असेन आसी इल्लाइं। विना हरन ने सेरे सामी हिल साम सुन हर हरा, क्ष्म नुर काल सुर के हाना वानक (मा) सुन की इन्हें पर हिंगी नहीं जम सुन के हाना वानक (मा) सुन की इन्हें पर का प्रशित विने पर समय विना मुख्य के परित भागों है धनक किया समाव, वानक विना में साम में राधांक प्रशान में से सुन के पर पर प्रशान हरा है साम में राधांक प्रशान में से सुन हो पर बाद प्रीपाम हरता है से हान में है (पहारक के प्रश्न स्वाप्त साम, १६०० किया हरता है से साम में है (पहारक के प्रश्न स्वाप्त साम, १६०० की प्रश्न में है (पहारक के प्रश्न स्वाप्त साम, १६०० की प्रश्न में है (पहारक के प्रश्न स्वाप्त साम, १६०० की प्रश्न में है कि स्वप्त करना बाप है) के हान प्रश्न है कि स्वप्त करना बाप है) के हान प्रका है (प्रशान के) सम्ब दे, प्रश्न में
- (2) विकी काय की करने की मामध्य होना । अयोग बीचे बनवार को कड़ि में जनाई नेने अध्य ही कराई बनवार्यक मुख्य की चनत कॉन्स-अनोठ, २३१)

हाच राजना

- (१) काल करना । प्रयोग---देवनाना पर हाथ व उन यक्ते का उने बहुन लेंड या अल्ल--देव सव, २४८)
- (२) पारका । वदान--वे सोचतर हु, काराथ क्यानेवाला वर एक हाथ रक्तू नो खड़ी का दूच याद था जाव (चतुरीक --विराह्य, ४५)
- (१) कामाको की वार्त करनी ।
- (ब) योग होना र



हीथे रह जाना

द्वाध कर बक बाना । प्रयोग—सुब तक पहुंचने के लिए मुर्फ बहुत तेज बच्च कलाना पड़ा । बेरे तो दाव पढ नरे प्रकृत—देव पत, ३५०% बेलरह यह तथा रहा चनता किस सरह होच तब न रह बाना कोसक—हर्ग ग्रोध, १६८.

हाय ग्हना

- (१) क्षेत्र होता १ प्रकार—देश के राज्यान, समस्य की प्रकारत प्रोप्त सार्वाचक भावा के विकास म किसने ही नायों का हास रहना है कुछ—५० पूर्व संस्कृत ११॥)
- (२) मिलना, पत्ने परवा । १वोव---वश्चव्ह सँग दोड विद प्राचा । हृत्य व दहर भूठ संसाम (पद्क--जायको, ३५१५ , करिहरे मान मदनगोशन मी, वार्व हाच रहेगी पूर्व सिठ-- सुर, ३४४४६ किंग तरे सरमा ही सरमा हाथ यह मानी है ,विस्ति (१)-- सुक्स, ६५७

हराथ कफना

- (१) सम्म में कभी होती। प्रयोग—राज्यु जिस जानन पिता जातरीवार की संतान के उपकार के नियं इनका चन व्यव औना का कारकों क्या से माने कभी एनका द्वारा का भीतान करने के समय के भूगी ही नहें (fruito प्रशास —नाधार दास, ३६०)
- (२) किसी वस्तुकी कशी के काणानुकाश में सकावट सानी।

हाथ शेकक

- (१) किकायसं करता । अयोग—अस्य पास काया हो तो यह उसके मुदानें ये क्षांच नहीं गोलना (प्रतीक्षत—अरोठ द्वास, १०६ वाल दी को पाय प्रांगा है जो पत्स दूर होता का सीट अक्टर होता है अधिन पास मूल है या गोहना प्रदेश सीटक ६ फेसबह उपका
- (२ काम रोक देनाः। घषातः जेति किन साह सन्द से सुके सरवस नेद हामेका हुकै पद०----जादानी हुन ह
- (३) वटा बयाना

हाय रोपना

- (१) हाम मेंनानाः, यागनाः । प्रयोगः ६ न निज प्रानिष् गनाः परितयं रखः पान प्राप्त पर न अप हास हमः बोल्डः हरिजीक्षः १७४
- (२) महायुगा करेली ।

हम्थ लवनर

- (१) हान में साना, जाप्त होता। स्रयोग -सन्हें कान्
 जयकं होत सान निस् मोर। पूर्त किस हान न नार्विह
 मिस बाहि कर नोर (पट०--साथिती, ११६); भी भीत
 नार्विद्ध गई असरे भीत नार्विह कर्णु हान दुस्तारे
 राज्या (अ)- सुससी, क्षान); मन मेरो महाउर पायित न्ये
 त्व पार्यात नार्वित्व कार्य भीते सेना करिता- राज्या, १२६०,
 इस हान सत्तरे पर नग नीन जमाई (भाव प्रकार) (२)-सारतेन्द्र, १९५), परगह नहीं निकारह नार्वो न माने हान राज्या प्रकार-नासार देशो, २९०, सेन्सिन इनमा आनती की कि शहने विर न मिनने भीर करीनान्त्र कर्य के रिका कृत हान न नगेया (मानत (१)--पेराबंद, १५०, इन इसरत मन्द्र को कही ने यंग हान सरी (पद्मा प्रधान--पद्मा असी, १७०)
- (२) कोई काम मुख्य होना । प्रयोग-व्यानी, कारवानी म कम में जाब नगंना (रंगक १)--क्रेमबद, ३०॥), सब नगनी न देव होने म यह नगा हाब नगमाने का , मुस्तिक --हरिजींक, दव

(अस्य स व अभागाः ।

राध स्वाका

- (१) काम प्राप्तम करना । प्रयोग—अनुर पाये, प्रायं नाये प्र प्र न काम किननी कार्तियों यहां व्यक्ति आक क जाननवर्ष क्यान में अपना हाथ मता गई (अशोकo— १० ५० दिए, ५) (-); तथ एक विन हमें अपनी अतेपकी क्यानों है तो वर्षों न प्रभी से हाथ स्था ने (कर्म0— एनवद, ४६)
- (- कियो काम मान देता) मधील पह जन्मी वही पान है। सर्वेट साम की नगह जन्म है। मोन दिया का हाम दो नहीं समान देती जिसाठ—कीदीक बहुठ, देखिन प्रचान है) संह है भी।
- (६) काला । अधोध —भन्नस की सील अध्य को उत्तर सन्तर्भ है, सुस्थय गरिका है समीप अध्य है । सहरू -१० २० ३२
- (+) बाइ अहिन करना (घटन) प्रदान किया गा स्थान है कि हमरा देशबान का हुग्य करा गक ? वहार देशक ७९

हरण क्यूप स्वर

िक्की बीज की बरा हैजा; बोरी करती ! वर्षाय — वे भवानी को किकी के तले बाब हो हूं निक्ति की संस्थान कही इत्त्व अवकादा हो यह हो बेरी सहस्र प्रवर्ग गोहान — प्रेमवट २१४

शार्थ माफ करता

- (१) वयने ने सा धोले में बोई बस्त वया के काता वा के तेता ! प्रयोग मां के बहुनो एक काल मान्य करके जारा धार्ट क्रमती दिल होई करने वहाँ के (महत्त्व) (१ प्रेमकंट एक , साली पर हाथ साथ करके मध्ये नहांनेकाले कियी प्रयोगक की दिल्ह गई बावनी हो दो-गक वाई कुछ दे ही देशा सिस्सडी— एसाइ, २३०): माजियों को महते हो, सब महत्त्वेवाकों ही पर हाथ साथ करने वर्ग क्या क्या है एमक्ट इस्हों
- (२) साना । प्रयोग—पर क्यांकी जिल्हा एकाकी कर प्राच साफ अन्ते हैं, क्या जनकर साम केने भीर केट कर हाज पॉर के के के अजनकी काना को दूका देने हैं? गुठ विठ—बाट सुठ गुठ, ४५६% सहस्तर ने कनेने पर हाज साफ करने सक कर दिसे (सुगठ जुठ वर्ग छन्न
- (३) बयुक्ताह मध्य करता । प्रयोग-अराधन में भी अबके हाथ मध्य दिन भाग्यकात १)--आरतेन्द्र, ४०६
- 😿 बाधान करता ।
- (५) ब्राम की वॉक्ट करनी।

हाथ माफ होना

- (१) प्रश्तकीयान में निषय होना । प्रयोग रतहरा के सक्त्यूरी हैं। और कोन ऐपा मास शाम कमानवा सेनाव --रेन्, २५५): विदेशी था कितनर बाजाक साथ के शब, नारी नीम हो गड़ी थी उनका (पुंड) -वश्यन ४३
- (२) रेमानसार होता ।

ताच सिर से समामा

प्रस्थानका । प्रमान के उन्हासन १ प्राप्त क्रियाका भीत्रसद्द जिल्ली प्रस्तिपुर

हणा से

है।≱द्वार रेषणांग जर्शक विस्तार संदेश । व.स. सन्दर्भिक गांगहेल र मुख्ये दें के ...

(1 4 4)

186

43.77 385

शब के को जातर, करा काता, – अभा फारा — निकल जाता

करने वर वक में न रहना। एडान- की की हाथ में बनी नातें की अप्रदंश के व्यवस्थ कर किलान के स्वी की लागा उन्नें करने के प्रयान में नाम देना चाइनों की खुटांठ की -बहरान के इस बहन में हम के पान में चीन निकल मान का बहना न कहा (धर'माठ--चीठ दास, भाग दह इस सेनों की वर्षा इस समझ मानों के नहींच हैं। धीर के ही बब हान से निकल माने हैं। धानठ (६%--मेंसबद, ६व% ''कहा किला मना है से का में होका बिक्स, विकल निकलान 'पंचान-- गृह, ३६% हाथ, इस कि का मान मा, वह भी हान में मिनक गया (गवन-- मेमबंद, नवस), भाग की विक्रमान हो गया कि पहिल्ल हान के गया मूठ मूठ--- मुदर्शन, १००% मनोन कान, भावनी हरा मी बागके हान के मई (हुआह) देंठ सठ, १९॥

इत्य में बारा जाना रेट हाथ में को जाना

ताथ से कुटना

चने शामा । प्रयोग—सम् कपत के शाम से सहे गी । नाम केरे तो रही की विक्रों मुंगतिक⊷हरियांध क्षेत्र

हाय से जाता करना ६० हस्य से बरे जाता

हाथ से जाने देता

- (१) क्षणार को देशा। प्रयोग—कीन ऐसे देश ध्यनकर कार को अगर्भ राज के जाने शामे दिया है कीला (२) — अगर १८०

हाथ से देना

- (२) स्वय दे देवा र



10

शाय से व उना

त्रिक्त भी तीन या सम्पर्कत राजनाः। प्राप्तन — कार्यः ह्रेप हास से तरे सूची रही, जान की धीन को (मानः) । प्रमुखंद २५७

हाय में निकल जाना ६० हाथ से जो जाता

द्वाप से बेहाध होता

शाय से हाथ त स्थला रे॰ हाथ व स्थला

हाय संस्था होता

पान म क्या विमान । प्रतीत—प्रकारण का का साथा मा कि बाजार की भवी के कारण इस समय प्रकार हाता मैना नहीं, कंपना फरकरी मार्च तम कंपने पृटक— अन्मार, १०३

द्वाम हिकाने बावना

माराम के निरित्त भाव में कलना । प्रकेष---वक हिना में पहें नहीं हिल्हिम तक क्षेत्र द्वार क्या कियाने हक बोला-- हरिजीस, १६%)

हाय होता.

- (१) धीम होता । प्रयोग—केविन में तृष्टे क्वीन विकास है कि इस का में देहा कोई हाथ नहीं है (मृते०--म्यो० बनी, १७६८ इस तरह को सोविडमों के स्वरेशन और स्वा-सन में मन्दें के पर है सर्वा का में प्रयोग रेगा मां प्रमान है। प्रयोग न्यार रेग्ड़ कि नर है के ति सम मार्थि का कि नर महिन्दासन के हैं वे भा स्वर्ध मार्थित है प्रस्ति हैं
- (४) मन्यावसित होता | वर्षाय-स्वाहत ४०० साथ मा। सम्बद्धियाल को बनकन है १४० १ - वर्षाच्छ ३४४
- है। हंशदर्भन के बीच दिन ग्रह है स
- मनावर होकी (शिक्षको)

हर्ष श्रम

करण र सर्व । प्रधान । स्वयं से इ.ध व्या करे राज कर के किय देने में संभाव देखींव रोधान राख्य ५७६

हाच पांच बनना थर खपाता

- (१) काई करने की सामान्ये होती या काथे पानता। प्रशेष--- में को समी हासलेक कमाकर की मानव्य से रह सफता है क्लिकों समाद ११२ - सभी को हाम-पेर समी है, मान कावर है अग० १ - सफबंदे सेट
- (२) शावपीर होनी या कम्मी । प्रधान—सम् शांत का क्वार क्षण में होजिए । शाय-वास वर्गी वक्षण समें २ कुलार (२) क्षण-मान, १४५

हाय-पांच जोडना

रंबन्दीर बार्की र प्रतीत —वह तो हम मीनो की बेहम भेग रह ये केविन इन जोतों ने हाथ-दान कोंग, एक इस बाटा, तब जाके प्रभाने क्षेत्रा गोदान —वेनवट, १८५१, वयो-वदी यूनीयनों से हाथ-वेर बोधने यह तो हुमारे वस्त्रों को दूप विकार से केठिए। अंध नोट, १९

हाब वर्षय ठंडा परमा या होना

- (२) बरावानाम् होता । अयोग---श्रमी गम् सत्त पद्गेष वर्षणे में पत्नी वासा था पर जन्न तन वह पानी साथे उसका मी हुट तथा चीर हाय-श्रम ठन्ने ही समें (मानव (१) --- प्रस्कद, स्थार्ड
- (२) अब वा प्राप्तका सं त्याला ही माना ।

तथ-पाव द्यान हेना

हान पांच दाने हाता

रवण पर —ताथ याद्य देख्य देखा हाम वैर होस्ड देखा

हार पांच न चलका

विकास क्रिकेटर काला क्राइटेस स्माहित ह्याँ हाती. क्रिकेटर स्माहित हो स्थाह महाकार हर%

हालं भाग प्रायाना - मानवा

(४ गणकारन प्रतिसम् ४४२० ४ उपनि = इन्छ

हाज-गांव को बहुक वाने, पर इसकी कुछ वसी नही ₁स्o स्o⊶स्टरीन, ५५., जाम परकन् इत्य-गांच पर १४ने

(२) शहपटाया (

(समाव महाय-साम-साम पीटनर --कटाकटरना हिलाना)

क्ष कृष होत का ? (मधुठ-सहबद, पट छ०)

हाय-पांच फूल जन्ता

कियमंद्रा विश्व हो अस्ता; दर या गाँव से पश्चः अस्ता । प्रयोग---नश्रम् उनको देखन हो। इस क्ष्मकान पुरुष के हाथ पांच कृत गए (परोडा०--ओठ दास, ७०), देव म करे, आव में भीमार हो बार्ज, तो तुम्हारे हाचनांव फुल बातन (मान्) (१)--प्रेमचंद्रे, पर्शः कात्र सम्भः के मुक्दने का भीममा मुनामा भागमा । इन भोगो के क्षाय-वेट यूके हुए है (प्रेसा०—पेनबंद, ४६) द 🔀 अवने पुत्र को कोह से समाच हेस मो के हाय-पांच फुल वर्ष (बेशन-अदक, ४६)

हाय यांच बचाना

क्षत्र मान्धरत रहता । प्रयोग-नव की पाप जावकात हो कार चीर आगे से हान पेर बनावर वर्गे मां० मा०. १)— ब्रिक ICo, १६४ , फिर यह नमें निरे में प्रत्यन-नवाम न प्रदेश क्षेत्रा, हाथ-वाच अवस्थर काल करेगा, लवली वात्रप के शहर की भर भी पांच न चौतादवा शवन-जेमबंद १४८

श्राध-पांच हिन्ताना

(६) काम करता । प्रयोग-- अवने झाव-वाच हिन्दाने ही ज्ञास्त्र मही जामक (१,-प्रेमचंद, १०६)

[4] परिवास कामा (

देखिए "हाच पर के मुहाबरे मी

हाथ-मेर कट जाना

देवशास ही जाना, कोई सहायमा देनवाना व वहना। प्रयोग -जिस तरह गई के मए जाने में लोगत अनाय हो शाती है बसी तरह घोरत से घर बाने से वर्ट के हामनाक क्ट जाल है। गोदान प्रेमचंद, फ

हाथ-पर कांचना

कर अवसर । धरोग-- महस्त्रे में तार का बचारनी सामा कि हास्त्यार कापने यसं , गु० क्हा०—सुतीरो, १०,

हाम भैन का मेल होना ा हाथ का क्षेत्र होता

हाष-पेर शन्त्रमा

महत का होती । प्रयोज-पानी मृते जान पान मनते हैं **ত০ বাব—বাব লাব নিব ১৫**৬০

हाय के सोह देना

निव्यंत्र्य होना । प्रतीन-इत्य कर क्षाव-पर छोए देने ने एम नहीं विश्वता (सेकि-गुलाबंध, प्रद

हरप-पर पहला

होन आबान क्षत्रका करकी । क्षयोग---में की तो कह भूका, कही और शाब-नेर पर्, पर होना-हवाना कुछ नहीं १रा० ३) ग्रेमबर, २५३

हाय पेर अध्यक्त

वहन प्रकार करना । प्रयोग—नामम नेकी की है, ती उनका लंब दिलेश वेश्वी और उपने जिल्ला वश विम यक्ता है उनमें क्या स्वादा ही पाने के जिल् हाथ-वाब बारेती गोदान--ग्रेमबंद, २५७

हाम-वेश सम्हामना

- (१) कुछ कार्य-वास करत जानतः। वधाय---नत नक माहिर सभी भी हात देंद बराहत केंदा, फिर बेन ही-बेन है रंग्य १ - यमपद १३६०
- (२) थावपानी गमनो ।

हाम-पर हिन्दाना

बरम करना । चयोग---इनिया में अन्य देन दिलाना नहीं Mean बर बाला में पुरके बड़ी बाना नहीं अच्छा Hid do ti = मासिन्द् अन्ताः तम् × × मिना हाथ-वेर हिमाल् ही बाहरे हो कि चोई सुध्हारे युव में बदन मोर बनन श्वका है। १९७ ३ -प्रसंद, १०३

हाभ-वेर हरेना

- (+) दाव दाने वे तरुव रोना । प्रधीय-सम इनम झाप-पैर हो प्रापम, बिर कीव प्रश्ना है। बानत है। प्रमाद
- ६२) हर काम कानवाते । प्रशेष-चनवाता का वर हाब-केर बा । जबके बिमा धानरातामा काम ही नही कबन्द्र का गाँथी—बतुर्गः १३६

हास-मुद्द फीनाना

बर्क बाज्य करना : प्रणेश -कुछ क्यर काह बेहत्यी की

0.5%

हरपालाई जनभर पर जीवह

है तो बहुत हाथ वृह न कंशाये (शिला)--हरिकोस, १६९) हाधापाई करना या श्रीना, हाधापांडा करना यर होना

सराई करना मार्ग्येट कानी। प्रयोग किर्राविधी ने ब्राइट विह्यार पर हाथाबारी बारटन की राधां० प्रयोग— राधांध दांस, ३०६ फिरटर हरिसाड बेरियटर में तो गढ दिन प्रधापाई की नीवन जा गयी (प्रेमा० - प्रेमबंद ११० , पाई तीन स्थाई दिन से क्यों करते हैं स्थापाई (बोस्ट० हरियोध १७० इन होनी में ने तो हाथा-बाही हुई है और स सिर फ्राइट्स स्माठ-बुँच हमी ४४ - को व बाय मोग प्राथान है पर प्रशाह हो गया धमान- छ० सह

हाधायाही करता वा होना के हाधायाई करता था होतर

हावां के बाद क्य होता

भीतर से कालका यह पूज कर कुत्या हाना । इसीय— एक तो जुद ही यह जब पहिता के ताड़ उन पर करवी मनी, समायद हुई x x बय हाकी के बात की बहे तत (भार पंथार १) जारतेन्द्र शुरुद

हाओं की फेरी होता

- (१) समृतिम सबस होता । प्रधार--शाक या, जिस आको इका में पण-पुन कर यह नहीं हुई थी। प्रसम यह एत्यरे की भारी रही होती। समय-अगांत, १५
- (३) मानाकी से भीओ पा दशर त्यार होता ।

हाथा पर बहुर त्येना

कर्मा नक्ष्य केले हे सक् रूपन व <u>गा</u>व

हाथां विक ताला या वेलता

प्रश्निक वार भ काला । प्रयोग जा वस निकार को प्रति भागों सेवनाव तान विकार है हु साठ पुरे ? प्रकार साथ प्रके कालों हुए जातक रनाय मा तर । किया कृति जुम्मा १६० जटर सभी विकास का का किया दिस निकृत कियों है दिनकार कुल्या का का कि वा प्राप्ति सुद्धा मा तन जा किया न उस उस दिसामी बद्धा प्राप्ति सुद्धा के कि दिस्स नी हुउद के की निकार तान, नृत्र क्रमान इत्यं कीन के विकास है है के किए के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्मण के निर्मण

हाशहें भीचे देना

सरक्षक का देक रेम में रख देवा । प्रयोग — शपने शिक्षा को नेते भोगन व्यक्तिको का रूपन की। दिशा है जिल्ला — मार्क्त समीक्ष

द्याची शास्त्रम

मानने बता न नगरा । प्रयोध-सोती परे म्, दहे, यन कर्मर क्षणो गील के शावनि सामिने क्षमत कवित -क्षणान, क

शामी-हाथ

वरेरन, नत्यस्या है। इस्रोय—हत्यों मेररी सन हाती हात चर्मने भाव देखांव ३ —सारतेम्बू, २५३१, निवाह तूम बाता मयम्बर होता है हैं अब दूप हत्यों हाथ जिल जाता सामव १ पेमनट देश भीनहर हार स करिहार विश्व के स्नोंनी बीच पार धाने यह अपर जानू हायों हाय उठा हैने है मैनाव—मेनू १३

राधा वंश संबर

निकार देश साम के प्राप्त कर के कि प्राप्त कर कर के कि प्राप्त कर कर के कि प्राप्त कर कर के कि प्राप्त कर कर के कि प्राप्त कर कर के कि प्राप्त कर के कि प्राप्त कर के कि प्राप्त

हरसी भगना

स्थीनार करना । प्रयोगः चल गके हाल यांच नव चैल यब कि हामी रहा न चल प्रस्तर (बोलo—हरिजीध, २०९)

हाय-नोका सम्बन्ध का होता

भीता-विश्वास का काय-ताब होती । वर्षाय-न्यूनने वर भी केवल जन्द्रहार व होने में बहुर हाय-नीवा क्या वर्षी काल- क्रेंसनंद 20'

बाय-काम पडी रहता

अभाव का योगर होना । प्रयोग---वर में तक देहरिया है भीर एक बृद्धिया मा । पना यान-दिन इस्प-हाय पड़ी रहती है इंगत (१) --चेमबंद, २५-२५)

हार कामा

हारता । प्रधीन — प्रेसे कि बानैस्थर के हर्ववर्षक में और यब देशों की वीम अर्थदा तट पर पुरुकेशों (दिनोध) से हार बाई मुलेनी संस—मुझेरों, २१६)

शास्त्रिक की अकड़ी होना

महारा होता (प्रयोग—इसारे इदि हारिक की कक्षणे मुख्याठ-अस्य, ४६०६)

हाल पनले होना। हालन कराब होना — पनली होना

- (१) क्षाचिक स्थिति अगस्य होती । प्रयोग-स्थानी हातस्य बहुत अगस्य है ।शीनेण- शंव संख्, २०३.
- (२) रक्षक्रम कामब होता । सरोय—मुचना रङ्गको हो पेरियमध्यको के तो हाल पतने होते समे सुनायक—स्व नाठ, ६६), हवाबी तो हालत दिन वर दिन पतनी हो गड़ी है (ये कोर्टेठ – स्वठ नाठ, १९)

(तथा० पृहाक--हास्य कराव होता)

इत्लित सराच होता

रे॰ हरल पतले होना

हालन पनली होना

देव हाल पतले होना

हासन विगदना

- (५) संविक विश्वति नागव होती । वर्षाय तम नोगा की हानत तो विश्व पदी है क्लुप्रेठ (२) - यसापाल, ५०७)
- (२) मधीयतं वहतं कराव होती; मुन्य् निकट दोनी ।

हालत संगीत होता

हो बन है। सनश्र होना ६ प्रयोग-- वह य हम्मी की हानत

और मधीन हुई, तब से उनकी हवी के बहरे एक झरा चैन नहीं बचने (कुल्लोक--निराला, १३५

हियको लगना

- (१) पंकि नेते क्या हाना हीना—हिषकी अस्ते जानी। अनोन—नार करता न आसूचों का है जान भी हिचकियां नहरं सनती क्युमरीठ—हर्वजीच, ६३
- (*) बरवे के निकट होना । वर्धन—है हिकिको प्रात्त नव को छोटन या हवी के बाज है हिनको सती (वीटन-हरियोध, १३२

हिम्थन का जवाब देगा, छुटना हुटना पस्त होना

वायं की वरित्रता के वायम् नाहत बरता बहुता । प्रधान
--वर में मूनी मांग नहीं है तो भी त पित्रता परत
भाव प्रवाद कर नहां हो गया, इसकी हिश्यत में ही बीचार
के विषय कर नहां हो गया, इसकी हिश्यत में प्रवाद के
दिया गीक्षान--कैमकद, १३६१, जदमी हानम को नेसकर
दिया गीक्षान--कैमकद, १३६१, जदमी हानम को नेसकर
दियम कुट गूरी है (पटनद के मूश--पट्टमव अमी, २१६),
कभी-नानी पर्द-नाई रमा का जी एता धनगता है कि
पुलिस में यह कर बागी कथा कह मुनाय। मी कुछ होता
है, हो बाव म × नेकिस एक क्षणा में दिश्यत दूट मानी
तसम क्षमद १५६)

हिन्सन स्टना

है- विकास का जवाब देश

हिम्मन हरना

रेंट दिम्मल का अक्षाब देगा

हिम्मत पम्त होगा

वेट हिम्मत का जवाब देशा

हिम्मन बॉधना

साहत करना । प्रयोग-करतम का क्लेशा प्रका । पर हिस्सल कानी और बाबा हो नवर जोटोज-निराला, ६१।

हिच की तपन विदेश वा मिटाना

- (१) मत का गु-क अंच होता । वयोग--- मूरताम किसीर मिलवन्, मेटि दिस की तात सुरु साफ--सुर शुरुवर्ड,
- (२) इंप्यों का संद होना ।

(मया वराव हिस का लपन बुखना या बुफाना)

हिया में परेना

हिय में धरना

मन म जिलार जाना - द्वारण विश्वपत हरण में है। क्कु क्रमूह (सम्म≎ (बालो--- दुलसी, १५९)

हिय में भवाना

स्वीकार होता, शुद्रम की विश्वास ग्रोगा । प्रपंप सी मन मन रहत अवस्ति भी तरी साह्ये नम - सू स

Hit Brisa

हिय हारसर

सारक स्वेत्रका । प्रकार । प्रकार दक्षि सम्र जय हिन्न हारे (सम्रक (क्षांस) —सुकारी ३५२)

हिया मिनामा

ह त को चार को सामागा विश्वसा प्रयोग — सुरहास कारी प्रतक विकि तक्ष्य कि की विकाद सुंक की कार सुंद कुन्न कि कि कि बाव को किया विकाद हुए की कार से सामागर तक को पास्ताह को कार सेन्यांत के जिल्हां कार्या प्रत्य कारण सामाग्री कार्या कार्या प्रत्य कार्या स्वास कारण स्वास कार्या क

,मगाव गराव हिंदा तुन्नावा

हियाच प्रदेश

मालग होना । यथोप---शामी कही काह भी न वदन दिवार मा किन्यव मुखारों १८३

निये की आंख खलना

क्षान होता। इसाथ होत सरोहि पूर्व किन्न साली । ये कीन्द्र जिल्लान अपनी साली पद्दे उत्पादनो अगाप प्रकृति विस्ता किसायन होता गामत दाला सुल्यो ४

दिएम हो उपना

भाग प्राप्तः काफार हो शामा । प्रयोगः प्राप्तिः को राज-मीनि भाग द्विरत हो शो जो (देवडोठ--रोठ राठ, १२१)

हिनकी बंधना

रोक सत बरा हरन होता। प्रकार प्रभाव का उनक बीन दतर बर्जा की तो हिन्तकी बंधी हुई की छा कौंग्रक ३५३

दिनग

ि) निचरित होता। प्रदोग हिलावमे दिला भी त् हिलाना बाहिस । प्राय हिलावमे मेटे का पानी हिल्ले कुंगलं≎—हरिक्कीश 3% (०) प्रायं ग्रहको जिल्लाहरने । प्रयोग चटनर निसंत्यन्त्र १९०० रतको दश्च रहत्र दिल्ला दिल्लान हम चुललेक इतिभोध, १२७)

E - 7 R41

(४) वर्ग शाम (

दिता देवा

्र विकारण करका ६ से वह नाम सहादिता इत दिव को ध्वान वर्गातिमा स्टब्स सकल दूस ३०७ के दिरापन जातका सो साहीर के प्रमान है हिमे सोक्स**्ट्रियोध, १८९**

(२) यह कमबोर का देश_ा

हिमाब का देना

(१) जी करियो हर नर क्षणांग जनन प्रयक्त क्रियांश करिया वर्षक प्रश्नाना गया क्षणांक स्थापाल, ४० (८) रुजरंग की क्षित्रीय स्थाप क्षणां

(समान मार्ट हिमान हेना)

दिसाव साफ करता था होता

वनस्दाना का कर का ना जाता। प्रधात-कार्या का दिनाव की माफ ही कार्यका और बंगते का काम भी अतम हो अवस्था विद्यार अरु दिस्स १७

र्दारा होता. शारे का ट्रकटा हाता.

(र परन परिक्रमान कोर गरा का वन होता । प्रयोग-कर्मर साथ कीर अंग को छन न सुसान विकाह दिसा होता नो पर होता पा बामुकी स्था होता। सह छन ॥ । जोड़ी २६ वह परत प, छड़का होते का रुक्का, गरमान का पाय है लही निर्माण १९ - मूजकी नहीं होता है सुन मुन सुदर्शन ३१९

(व) बहुन सन्दर्भन या सहस्वपूर्ण क्षाता ।

हींगे का दकता होता

देव हीता हाला

हीर्व का शेंडगार करने के बाद काल देखना

हीरे की करो सरदना

हीते को कुर मानव प्रश्नम हत्य। जनने : प्रयोग आपके

र्वमा जिमे हीरा भिने क्यों मने बह बाट हीने की क्यों कोसे०—वृश्यिक, हुए

सुक्तरं यद हातर, हुका धरती यंद करता या हाता गति-वाहर करतर या होता । प्रयोग-- हमारी विश्वदरी से भीग प्रमान है कि तुम यंद शास्त्र की जीवनी करोत भी प्रभान्यानी यंद हो आपना (मानंद (क -- प्रमाद १५० मानी हम एमा कहे ती अर्थन बाहर कर दिवे वस्त -- माई विरादकी में हक्का पानी कर ही आप क्षिमांद-- कोड़िक, 120), दिरादकी में यह कान फंपनी, तो हुक्या वह ही सावना (रंगद (१) हैमबंद, १६३

(समार महार-जूबकर-पानी व प्रकार)

हुकका धानी वंद करना या होता देश हुकका चंद होना

हुन वरसना

हुनर चलना

कोई क्यान हान याना; नामाकी धननो । वयाम-- नन्नर मान मोह जब भीना । इन्ह कर हुनर न कर्मानह योग (शम० (स)--सुलसी, १०४७

हुए हो जाना

मन देशा। प्रयोग---सहमा एक बादमी ने बहा---पृष्टन चा रही है। और अब के यह हर हो गर्ने मानक (३)---प्रेमचंद, ७%।

पूर्व बोलना

हर्षकारि करती । अयोग--शामी पर हो रहे नितानर है आज ने बोध भोज कर हुएँ (युपति)--हरिजीध, १३३

हुर्गे उड़ाना

सरमाथ करमा। तिरम्कार करना । एकोश—करवाधियो के केस में जनमंत्र काले इनकी हुनों ज्ञेचा रहे हैं वो उन्हें भी कही की बहु उस्तानमी ची (बृदेध—क्स्म्मा०, ४२

हालिया बाह्य होना

बहुत हैरान हो जाना । ज्ञयोग-अब तो कम्यूनिस्ट बावरं

मानुनी, और इनकी हुनिया टाइट कर देते (मुद०— २००७ ४१

(वयः वरः दुन्तिया जंग होता)

हें व रह जाना

अन्य भाव विश्वासा, अहरार दूर होता. प्रथमा तु तुकरता पुरुष, युक्ष संस्थाय हु कथार प्रशास कथार प्र

हुक उरमा

हृदय स वीका होती । प्रयोश—के मृत से सवगृत सुन हरि के, हृदय उर्जात है हुक (कुठ साठ-- सूर, प्रवर्धक)

(भवा+ पृहा+-हक बैठना)

हुडा देना

श्रीतप्यता के पृथ्य बटकानर, उंगा विकास । प्रधान— बार्गार, विकिथ विकास वर्षण, बजी वर्षारमु आहि सूर्णन में मनवर्षण मू हुएको है इस्ताहि विकास स्थाब विकास, भारत

हर की बच्चा

बहुत बृदद अदसी : प्रदोध—वंश तो दोनों अस्त्री हैं, पर मुन्ते ने विश्वदृष्ट हो क्यान है की कीशांक, २९२

इदय चछन पहना

प्रभव्य होता । प्रयोग—ने होने में प्रम, हृदय में असते माते (मेंटेहीं)— हरियोध, २)

हर्य तमह भागा

आवारितर होना । प्रयोग---शर्त विकास पर्द रंगना वै दिवी उपस्था कर्ष्म एको च आई (धने० कवित -धना०, ९४ : समका देशाई हृदय बेग्र यूद रेसकर उपम् प्रमा (बाग्र०---शु० प्रक हिए, १३८), केली कश्या-जनक वृद्धि है हृदय अवस कर बाद्या है (मुक्त)--सुन हु० चीठ, ४४,

हृदय कांपना



 (ए) भीत के ब्रश्तेष में क्ष्येश होता । व्यक्ति—काम दिया एक का मीळ । लो ने बाद होड़ मंग पीळ (पट०—उप्यक्ती, हवाद

ब्रुट्रय का कांद्रग निकलना

कृष्टिकारा, प्रास्तवार कर कुर्धांक हुन क्षेत्रण । प्रयोध----वन बार्गा सार्ट बहुन प्रश्नात्रण, बार्गा प्रत्ये हुदक कर वहता विकास समाही आनव (१)---प्रेमसद सप्त

बुक्य का संध्य

हरत भी नीहा । समीत-धापने दंग्ययं की वर्गिनियों से प्रकार प्रमाने ह्रांच का यान सम्बद्धा नहीं हो क्षण्या था, पार्शित्य में प्रमाने पड़ी बीधा था (विजय-भगत देश), १४६

हरू का बाद करना

हरम का चीवा पहुंचनी । हमोग----सी वे काते न कर इसको, दृष्ट काली न बासार । चोट माता न पर करका की ज को हम काना र्राष्ट्रसम्---हरिसीध, २०११

हुदय का युक्तका

पायन विश्व । यदगर —हाय वह नयम्बिनी वृद्धा काना । > भ असका तो > > ह्ययं का दुक्ता आको का नामः बहार्ष का महारा, आशा का जनसम्ब, वक कृष् अस्ता गाः बहुत प्रशा—पहुन्न क्षमी, ३५:

हर्य का दाह

ह्रव की वीवा । प्रधीय — बोड करी जब्दे विटे ह्र्टे की शाह वर्ष तर बीरक सुरु सारु—सूर, ५४४३)

हुन्य का धर्मा

विसास एवं उत्था हु १० शामा ध्वन्ति । प्रयास वे पनी न हाना प्रवारणका चहुत्व के पनी है रैझम्बोठ न्यासत द्वर्णा रक्षा

हुटय का शुक्त होता

(१) हुन्दरशो होता । प्रदोग---श्या पात्र एक गंधी शत हो गंधी में इस जाति की और प्रदक्षिके विक बाह राज मदरा होती पृथिया के बिरा हुइस का शुन की प्रान्ध १ ---प्रमुखंद ४९७:

(🖅 दुरमन होना

हृदय का हार

धन्यतः विषे । प्रयोग-स्थान मराता है । यह बन आता है कभी हु:य का द्वार भी सामेद्र-गुप्त, ३६४७

इत्य की ओक

नुभव्य, प्रावश्यक प्रातः। प्रथाय — भूमा का पहें प्रश्ना कैमा। लेहि कन कृषि केहि हिए न बैना (प्रहल---क्रायस), अप): नवा व के सुधिरन पहाहि, मिनि न कहाँह प्रियं कैमा। से में निक्तके प्राति कर किस्तु के हिये न मैन होहा० — सुनारी ३३६

हृद्य की करी जिल जाना

प्रसम्तर्भः होती । प्रणीय--किन् झानधकार के हृदय की क्ली यहां भी व जिली (प्रेमाण-प्रेमण्ड, १०६); ठीक वस्तृ विन्द भाग ने भनके हृदय की क्ली ऐसे ही जिल्ह आतंग है नेम बात्यज्ञान से किसी वेताओं की (मेरिक स्टूलावक, प्रश्नावक, प्रावक, प्रश्नावक, प्र

हुंदय की बटक

कृष्टियता । धरोत-भनवातव स्थाय मुजान हरी जिल-कार्ताक के दिव की बाटके (धरूठ कविस-धानाठ, १७०

हर्व की गांड

भाषा-मोह, दुर्भोष साहि । प्रयोग---वासा पहर्या हुस् नही, गाठि हिन्दा की बोद क्वीर प्रयाण--कवीर, श्रद

हुद्य की गांठ कोनना

पनीमासिन्द हुए काका । प्रयोश-मुर स्थाम अब शारी निद्रुष्ट बादि हुरव की सोजी जू सुव छोठ--सुर ३१२७., इंड रहे क्यो पूज को बोजो, दिव की गाउँ हम हुए सोनी भोठ प्रश्नात के भारतेन्द्र, १६४ अन्तर जा गुन विश्व के कोण विद्रम कर बाठ हुटव की बोल सोठ--अक्ट्रम, १४

हुक्त की भूक

मन की इनकार प्रयोग —व्यक्ति अपन हुट्य का मारी भूख बहुद्भ पत्र माम्बर्टनी जेला है समाय १०%

इत्य कुचलना

हृदय का पीटा पहुन्तानीः प्रवास किया श्रीण क्यानि स्थक हृदयको कुल्ल कामनी वी प्रवतः प्रवत्नदः, २७)

हरय कुरदमा, सदना

मन को धीड़ा पहुँचती। प्रयोग -क्षेत्र प्रकार हिती का है पन भगनेत की जान काले प्रत्याने कारे मुनवन के (ग्राम्व किशो--धानात, १३६) जान किश्वा (प्रान् काक) की पननीत क्षण का क्षण परित जी के नोजन हुत्य की बरावर कुरेदना रहता था (पद्धां प्रत्या--ध्रह्माव क्षरी, ५)

हदय कुलिश के भवान होना

अञ्चल कटोर हृदय बाला होता । अयोग—विने करे अब भूपनि सामा योग हृत्य यह कृतिस समाना स्थान (स. — मुख्यो, ४३८)

हृद्य कृदमा

धरवंश शृष्य में साली का बाधान करना । बयोक—सै भोली हुं हृदय सकत करनी हूं नदा ही 'प्रिटेश -हिस्कींध. १३०)

इष्य के इकड़े-युकड़े करना या होना

गहन दुःस देशर यो शेला । प्रयोग-स्वार वधार्तन्य को बहुत दूर में गया था । यस दुश्य के दुक्के-इंक्ये हुए श रहे के (लिसी-निराला, ४५); तुमके येरे हुश्य के दुक्के-दुक्के कर दिल् (गि० (२) - प्रेमक्द, २७)

हर्य को सना

हरद पर हमाच पहला। प्रयोग—कम जपते ने नात पंत्र मारी, तुल सम ने नाथ में वह जफो, नर्व वे सम लको, हादय यू शको (कसाठ—पंत, ३५), माने के वकर ने मो इस या नत नम्मा के तुन्य को सु समा (कान्य)—अक्षपक्ष पक्ष)

प्रवय को सपना

गीहा देवी । प्रयोग-वाची के कठीर चरान उनके हुएव की मध रहे वे (प्रमाण-प्रेमबंद, २७)

हत्य स्वया

रे० ह्रदय कुरेदला

हृत्य को देगा

भरमतः महत्वयता आदि हुम्य के मृत्यो को क्ष्य कर देता। प्रतीत-—हो अभन्य भाव से धर्य-मध्यता में ही बीत रहेता बहु हुदय को देता (क्लिक (१)—शुक्त, २६४)

हृद्य कोलका

भी जब कर, सबल भाव से । प्रयोग जस बयाल लाज

विव बार जय हरम कानि वयहिन कको (साधाः प्रकार-राधाः दास. के). जहाँ वृद्क एव पविक-को की हृदय बांच विव करता था (सनार-निराक्षा, अद

हरव गहना

वन इतित होना । वयोग भूव मोगों का पानत-सम, कन्मत-राम अवलोक है हुदय इसाश गलमा, आलू स्थ पाना होके .वेदहोल-हरिक्कीय, ठळा, अद्विमी के सबसम्ब् ये मेगा हुदय मनने क्यां (दाल०--१० प्रवृद्धि), २५१

हरफ सरकता

दुनी होता, हरन किल होता । प्रयोग--मा का हृदय जमी कात कीतर ही भीतर करक तथा (मासीक--शंकरात),

हदय चुगना

की पुराना । प्रशेष---शीनकता वीका प्रशाह के की हात्रह पुराक है (पक्क--दिनकर, 526

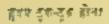
हरच छेद हालमा

हरव को बहुत पीका पहुंचानी । प्रयोग न्यापित श्री के अस्तिक समाचार क्यी क्षात्र के बच्चों के हुसुम-कोमन किल को खा कोके अहम प्रथम- पहुंचा असी, ३६।

इंद्रच क्रम्यना

- (१) इत्य को क्षेत्र होना । प्रयोग—ना मुल हन् रहत इस शक्ष्य, तिम् दिल कृष्ट बदात हिसी री (पुण्याण --सुर १५८४ ६ क्ष्यह जुक्य बद्दा तेहि सामर (रामम (क्षा -- नृक्ष्यो ५०६
- (२) ईच्यों होती: प्रयोग इधर राजा साहब का हुदय प्रथमें सामने है एक छोकते की जन्मित से जन्म हुआ कर राधार प्रसार---राधार दासे. इदरो; कीम जाने किस चिन का हुएस जल रहा है कि छौरमेन के अविधित प्रधाराज कम की बदने अधिक जिय नहीं कार्यक सम्माट जनासंक की कदन, आज पादन विशासन पर देवस्थित है (देवकीर ---राठ राठ अप

हृद्य तुडानाः



हृक्ष्य हुक-हुक होना

सहस्र प्राथमिक कार होता । एक्स — विनाजी, पामा गीनी का प्राथम अन्य व । हडार पाड शास होता है । समाज कोशिक १५०

ह्मच देखा होना

दुष्य हा कृष्टिम शानर । धरीय-न्योग कहते हैं विश्वेश के विचार सकृष्यत हैं अवका अस्तियक क्षेत्रश्चेत के उत्तर हुटस हेंका हैं (बीसर ११)---सांध के, केंग्र

हृदय इनम्यान' डांबा इन्ट हाना

धन का किकासित होतर। यह ता उत्तर र र ता के क्रिक्स रहा का मा कोशिक, इन्हें, क्रमते के बार्ट मा रामनाथ का क्रुवा का वांचीन हो वहा (निकाल-कोशिक, 200)

हदय दावादोल होना

वे- श्रुद्ध शामगाना

ह्रदय नक पर्देचना

मन का भाव पता नगाना। प्रयोग---दारोगा में इसे प्रामीयक मंत्री से पेका और स्वयं हृदयं तक प्रमुख नव स्वीद-न-प्रमाद ११३.

ह्रा पाधकर

विको प्रकार सारम और यह करके आर्थन को हुआ। संकृष्णों में हुवस भावकर पैनमा बूगा (मानंत (दा)—सम्बद क्षेत्र हुआ पाम नदा समाय, सुन मून पार कार कुन र पारत किल्ला १६७

हरप दे दता

पूरी त्यार बनायन होता प्रयोग—आस्ता धारण (नक हुत्य को द्याम या दे सुनी हैं प्रियंत— हरिश्रोध कुरक साह में एम पुरुष को हुत्य दे कर कुन कुन्य हुद संज्ञानीय व चतुर्य ३७

इत्य दो उक्त होना

कर्मन दृश्य होता । प्रयोग—कथ बान पूर्न सहतेह वियोग की होन यहें दृष्ट ट्रुक हिलों केंद्र80 १८ अन्तर, १९५८

इद्य धहरूना

मय सा बाराना म होना प्रयोग प्रवासनाय वा सूर्य महत्त्व नया मा---क्षेत्रिक ३५०

हृदयः नामां उठना

हत्य निकास कर रख देना

बहुत नामिक बात कहनी, हुइव की बात कहनी। इयोर—आप तो पन मुद्द ही मुनये, गुन्ने में अपना हुदय निकास कर रख दिया है (सान्छ (स)—सम्बद्ध, सद-सद्ध); बान्यक में आपने बड़ा सनीय बन्देन किया है। हुदय निकासकर रख दिया है पद्धनंठ से एल—पद्धमंठ समी, 20)

हदय निकास लेगा

किनी के बन को पूरी शरह मध्ये भग्न में कर केना। प्रणेत—पति विश्वित देशांत्र मी ठांती। जिल के विश्व कोन्ड जिल काही पदण—सम्बन्धी, शुक्रारह)

इत्य पन्धर होता

नन्यत वडोर होना । प्रयोज—के हरि कवा न कर्राह रित निकाद दिन पंचाय राम्य उ — तुम्मारी १०६६ हुइस ! पंचार के राजर नम यह मधानान नाम के मुत्री आल्यस व (१)—नारतेन्द्र, २६४); स्त्री धीर शवा के वियोज के बाद हरव कथर ही बना (कुकी)—निसासा, मत)

हृदय पर सोट समना

हरन को कब्द क्यूंचना। प्रचान---परम्मू यस कोई हुट उनके चित्र चाना, उनकी ईमानवारी वर प्रदेह करता अ अतक मृत्री की के हुरन पर नहीं कोट नगती (मानव (%)---प्रेमक्ट, 10)

(वमा पूरान इंदय को बोट लगना)

ह्रिय पर छनका ज्ञाना

हरात् हृत्य को भाषात प्रदुषता । प्रशास अस्माना के हृत्य पर वक खुरुका क्या । यह भीता ही भीता सिन्द-मिना तर सिन्दांत कीविक, २१३,

इटय पर सांच जोहना

(t) धन्यतं प्रदेशान हो शान्तः । इस्रोतः मोटना हो स्यो



तुनम् पर संप्, सभव की शिलार सूर्यका काच-काके कर, करने भगी उपमार-स्वयन, निचन, परव सौर पुकार स्मार्कत-पुन्न, १९१

- (२) गम्म रद्व पानर ।
- (४) ध्या होती ।

हृद्य पर हाथ रख का

मण-मण पृथी रेमानदारी है । धरोण-प्रवर्ग योग देखो, हृदय पर हाथ रम पर पृत्री (मंग-श-प्रसाद १६०

हुद्य पर्भाक्षमा -- पिक्लना

- (१) दवास् होता, दवाह होना । धनान-आनु दया-गृण्ति हुन्य वर्षा हम हार्गाह मन्तेन । विगण्ति चनन हो सीर नित्र मेटन को दुन दीन (शामा द्यान-स्थान दास् ७ धूयले देश योग व वि को दुन्न दायानम में दाप होता देलकर उनका हुन्य गारी व गया यहम याख्य यहमा सहना समी
- (२) कहोरता पूर होती, भारपूर्व हो गाना । जनीय— प्रमन्त्रात को बंदत उठको असि, सोचि, पसोचि दियो हुम्मतीते शब्दक देव ३३ जन उसम समस्दर्भ के गान्या से किया का हुक्य क्यांच पदा और ने गाना के सम्बद्धना मुगात समे शाना देव का उठकर बाहर बना हमा शिला (२)—अश्चित, १४३

हृदय पित्रलंबा दे॰ हृद्य प्रमीतना

हृद्य फटना --विज्ञाना

(१) अन्यन इतित हाना देन होना। पंचाय हिया मार वह प्रयोग करनी। पर अपनु होत्र होत यह अपने पर्दा कार्या होता होता यह अपने पर्दा कार्या होता हो। यह अपने पर्दा कार्या होता हो। यह पर्दा कार्या होता पर्दा पर्दा कार्या हो। यह पर्दा कार्या हो। यह विश्व पर्दा कार्या हो। यह विश्व पर्दा कार्या हो। यह विश्व पर्दा कार्या है केर्न स्था कर्या है केर्न स्था कर्या है या कर्या है केर्न स्था कर्या है या है या स्था प्रयोग क्षेत्र है या है या है या स्था पर्दा है या है

(पट्टमा के प्रज्ञ—पट्टमा छानी, ३३२); इंड कार्नी की पान परके उनका हुरन क्या जाना का (पटम—प्रेमजेंदे, 1947 (२) किनों के कृति कन्ने विकारों में स्वृतना पानी। प्रयोग—परन्तृ वक्षकार के इस ईपॉपूर्ण कुर इस्य के बातगी का हुरन क्या का (बीजालोंक (क) बाहांक, १०१)

हृदय करक उठना

धमन्त्र हो जाना । वर्षात्र — भूने काहि हंगनि निहारी ''हरिक्द'' नेती कांको चित्रवनि हिम कर्राह कर्राह उठे (भाव प्रजात (२)—मारहेन्द्र १४%)

हरव बहियों बक्षलवा

इलांक्स होता । वयोत--पृत्तित है वस्थावारों से सिव्हे-विवटे पड़े हुए इसके बृदय मेंने वस्थियों उद्यम रहे वे (अस्थाय--इठ जोजी, पर)

(तथा वटा - जूदप बांग्से इछलता)

हुदय विधना

हरत को नीवा पहुंचनी । प्रयोग-स्ती चनडानंद याँ वांचवे जिस्सान विषयो सांनवारिये कोशनि (यन० कवित यन्तर ११०

हुन्य कित्रमाना रेज् हुद्दय फरना

इत्य किनोमा

भी बालोक्त करना: व्याकृत करना: प्रधोप-नीम क्रिकेटई बार्गत है दिव, बोहिट टोहॉन पानी अकोर्र (श्रम्य करित-क्रिनाय, १४३)

हृदय बैठना

क्य का बहुत दुओं और उस्माहतीन होना। प्रयोग— विश्वय के निने रमायकार को उप्पार म की । उसकी चीट लागे) यो। हुन्य नेट वचर था। लिलो निराला ४६-४७ । ट्रेंग कम बी, राजनाम का दुवस नेटने कथा (विश्वा०— क्रोफिक, इन्टर

हृदय बोरा होना

दम का पूरी शब्द किली श्रमान में होता। श्रमोन--वापुन पर मन्दर मुक्त रत, हृदय रहत जिल कारे शुणसाठ ---सुर ४२१८

(समार पृश्य इदय दका होना)



हुवप भर सानः या होना

हरके स बुक्त पा कामार होगी। संगोध---वर इन पैयानि कोन पश्ची प्रस्थिति होति हिए। हुए सार--- पूर 1050 । सार नहीं कार न कहें हुएवं पर साना है रिश्मीक रामक सार्थ पुरु

हर्य भीगमा

हरश्र का काम या प्रस्ताय हुतना । क्योग की श्रीव में विश्वकी दिवसा यन का तर स्टास सुताम हुन्छ का चन्छ कादक छन्छ

हृद्य में भगर लगना

क स्व शा बंध्यों के दोन्तिक होता । प्रयोग- सभी येख हैं प्रोप्त हैं: निरंकपट सुध्य में काम-मी मुलमती देहती की संदर्भ के प्रदा 20-24

हर्य है आस स्थान

यस को बीहा है शता विष्टाति सता बाधा । वयात-सँग वर्गा वृत्त वृत्ति । सँगुत नेष्ट्र ज्वाह साथि सँग काई विश्व केरे गई वर्गात (मंदिठ वर्गाठ- मंतिराम, ३४०)

हश्य में कांद्रा खदकता

र्षणी बात का बन के स्टर वीवर पहुंचाहे दशना। अयोग —वेरे हुनव के भी यह काटा दाव जर कटकण करण रिवसण—कोशिक, २१३ , किंतु केरी के हुदय में अदेव वह बोटा घटकर करना था (१४० (३)—६मवट, १८५

हरूप में सामा क्या होता

योग का कुराई होती । प्रधीम—जनके कुरा के कुरा केंद्र फाले पाने में किन्तु दिवाने का उसे बादण मा होता था 'कुराठ—प्रेमकद ३७१

हेदय में कामक अधान दाना

मन्द्र शिक्षाः प्रदेशकः प्रदेशकारम् के ह्या व अकर चर स्थान पर निरुप्त करी कामन स्थान पर नो वह नेका क किस या सरक्षाः प्रदेशक

हृद्य में बदकता

भागाय ज्याना । प्रयास अवस्थित विकासी आधान पर प्रशास पर कीट प्राथमान के दियान स्थानक है सुरस प्रशास स्थास १६७

हृदय में गहता

(), सन को अकता कामा असीम-सहसी संगड कार

हरव परिष्ठ हार, कृतक-निभव-स्तृति तथी कवि जियरे गोराक बाक-स्थानी, ४३), वरे हुएय में यह हंती नम् मर्ड हे सिट्टक-सक विश्व १४६)

(2) यह करे बुश लहता :

इदय में यर करना

- (१) प्रधान बाकता । अवस्था— धीरे-धीरे विज्ञा की भी काल रहतें सना हैं। बाधीबाद बीवाद के मुख्य के धर करता जा रहा है (क्षेत्रा .१) जाहाँ ये, १२०
- (२) स्तेत पाना । जनस्य प्रत्य के हृदय के प्रश्नासम्बद्धाः इताह क्ष्म्याः — जगह क्याना ,

हृद्य में चुभवा --सालवा

हृद्य को क्या पहुँकामा । एपोन-सी मृश्य को हिम में यम आनन्त कामति वयो है कई स कहाई (धमा) क्षांक्त-यन्त्रात. ६., यह काम कार-भाष हृद्य में मृश्य करती है र्यात (१)-प्रेमनंद, १४

हर्व में एवा जाना

यम का आह सबट म होने देश । प्रयोग---कदशा तुम प्रयोगतं ही बाहर निक्स भागी पर शामितत ही कामना हृदय म देशकर एक नवी (सामध (१)--क्रेमक्ट, हुदः

हृदय में इशार पहचा

- (१) पत्यम जनभोत होना । प्रयोग—नायहि करि नदीति पत्रात्र पुनि कायर इर आहि दशका (शमक हो)—तुलसी, ९००
- (२) व्यवाने व्यक्ति ही माना । प्रशंस—निनके संस स्टब्स्टी कर्ष दियं वर्षि कहान दशर प्रशः केशकः १ —केशकः ४

हुव्य में न लाला

हरन में स्थान न देशा, महत्त्व न देशा । प्रयोग —(वस्तु हरि मननि हम्म नहिं कानी (धान० (बान)—सुप्रयो, १२६)

हदय में न समाना

- (र प्राचानिक्य होन। प्रयोग क्रांति प्राचि क्रांचे स्वयः हरण न प्रमान समान सामान सामा मुल्ली राज प्रमान स्वारि मानन समाह सान् न हुत्य समाह सामान प्र सुकारी अध्य
- (२) बर्व गणिक होना

हुद्य में नमक लगाना

भी को तुम देना । प्रयोग---दृषि दुषि दन की बोट करा दिम भोन मगावी (नंद० प्रकार)-- संदय, १९६०)

हदय में ककांने पहना

बहुत भीता होनी । प्रयोग--- मैं यहां श्रामिकृष्ट में बाद रहा है, बृदय में फकोजे यह हुए हैं, बड़ा किसी को अकर जी सही (१०० (१)--- प्रेमकंट, ६००)

ह्वय में पश्चमा — वर्षेरा करता, श्रम्भा — समाना भहत्य, प्रेम या भवित पाना । एथोगा-— महित क्यामा करा कर्ष हिरदे वर्ष पृथान (कवीर प्रशाठ — कवीर, २५६); हेरें कर्त्य न पानी बत्तद्व तो दिर्ग नाह (क्ट०— जावको हुए। हुए।३); नह नुमार को हिए समाना । विश्वपर थाह न मुमिरेज भागः (पट०—जायसी २००१५); नावणी की मनन मुर्गति, हुएव पाही राम रही (कुण साठ— सूर, ४४८६); करम क्यार नन राउट वेंशा राम करह तहि के वर देवा (शामा (अ)— सुलसी, ४५६)

हृदय में बसेरा करना रे॰ हृदय में बसना

हुन्य में रचना

- (१) प्रस्ती तरह ध्यान में रक्षका। प्रयोग—उमा सी क्षम हृदय परि राजा (राम० (काल)—कुलसे, ५०)
- (२) प्यार करना । बधोन-मी प्रति गीता राणि डर रटति रहति हरि नाम (रान० (अ)--सुतसी, ०३१)
- (०) विशासा ।

हत्व में रमना दे॰ हृद्य में बसना

ह्नव्य में सूछ वर्डना, नासमा हुत्य में क्टर होना । प्रमाप पृथ्विम् स्व सर्वे हिंद पुर क्षते हम औं हिंद ऐसे अह ए वहें (श्रम्थ कविया समाथ, १०४): सहेवा वह केंग्रे अपमान ? तहेगा वया हुद्य में ब्रूक्ष (मुकुल-पुष्ट कुष्ट व्यय, १)

हृद्य में शुल बदना हृदय की वीटा में पृष्टि होती । प्रयोग - गृह तिन्हें से बने वस्पुरी, हिरदे सून बढ़ाह (शुरु सारु - शुर, १४९०) हृदय में शुन सालना दे॰ हृदय में शुन्त वटना हृदय में समाना दे॰ हृदय में बसना हृदय में भारता दे॰ हृदय में बुधना

हृदय में स्वान होता

त्नेह होना । धर्मक-कमला की यह इतन। ध्यार कर पूका का कि तब विवाह की तरक से क्लियुल जीतरहरू हो रहे। या । यन उड़ा किरता या । हुदय में अनह न बी, या दर्द (किसी-निरासा, 1/8)

इदय में इल्डबर होगा

हुद्व में इक क्रमा

हुदब को बच्ट होना । प्रवाय—मोरन की कृते मूनि उर्कत दिये के दुर्क चुके नहीं चानिक-करेशों कवियों भरें (यनक कवित-धनाव, २२६)

ह्वय में होती लगाना

यन को कमाना, कर वह पाना; ईप्यों का कारण होता । प्रयोग-तो बुध बाम । युकार्लाह काम से मीनिन के हिम होती मनाई (यन० कमिय-यना०, १२१)

हृद्य शोशा

बहुत हुआ होना । प्रयोग-इत वही वेश हुश्य यो रहा है, उनमें उपरेच और जान की बात नहीं पह प धकती (संद (१)-केमबंट, १६)

हृद्ध लगना वा लगाना

वेच होना या काना । प्रयोग—ने ठावे, उपराह तह, यह व कुचे बहुवानि । बाही की कान्यी हियो ताही के हिए लागि ।विहारी स्टना०—विहारी, इपरां; दिवस बनाय कार्ये चित्र याच निक राये, दिवसा जनान हुन बांगहि बंगानहीं (छना० कवित्र--छना०, 12%)

हृद्य वज्ञ भा होता

बारीर मन होता । प्रयोध-सुनदात क्षिप्रथ तहि रंगमी एक समान हियो (सुर म ० - सुर, ४१८३)

हुद्य शीतल करना पा होना

धानन्द प्रश्न करना या होगा। प्रयोग-मानी हीत गाव पुत विकी। सोतज भारी मानु की किकी। सुर का सुर goal; प्रमाद बले प्रांत्रों के अरते, हुदय न बीवन हो पाधा (मानना प्रसाद २१)

हृद्य से बीक हटना

कियो बड़ी पुरिचला का दूर होता | प्रयोग - के नगान के श्रुद्धय में एक भार सा हुए गता वित्रक सनक दर्भ ६३)

द्भवय से लगाना

- (१) व्यार कत्रना हर समय साथ रखना । प्रवीय-प्रीय विसास को बह आवन की सबसे सादकान वस्त् नमानती मी और नुगेहृदय से लगाय रहना बाहुती थी (कर्रा०grade, thi
- (२) बालियन करना । प्रयोग-सोक विकय कह करे न पररा हुन्दर्व कारायन बारतीहं बारा (शान० (क) - तुमसी, 815 : मानि लगावी हिये हो दियी अरि मादी नहीं कहि बागी कम् वा जिनक-पद्माकर, ५८।

इदय हर लेगा

श्रीयम मोहिस कर लेगा। प्रयोग—देखि देखि हरि की हरनता हुरिन नैनि, वेमी बड़ा देवत ही दियों हरे केन हैं (केंब्रव० (१) -केंब्रव, २१९): क्रोब्रेट हाच एकी विकास हाट नीके बजाय हुई हियरा हो। धन० कवित-धनात, १८६: विह्नों का मधुर स्थर हृदय क्यों लेता हर ? (स्वर्ण व्यक्ति - da, 50)

इत्य हलका होता

दुस या चिता का मार इस होता । प्रयोग-वह कहकर कालुकी क्ली गई। सीकी का हुदय हुनका ही नवा (१०० (१)-प्रमधंद, १४०)

हुद्य हिस्ता था हिस्ताना

दिवनित होना। दयाई होता का कर देना । प्रयोग--प्राचन पिषमे किनु मुम्हारा तब भी हुदय दिनेता क्या ? (पना

-ga. 21), and were not give al femu dur # | FIND | 3 | - Q- 85 2*L8

ष्ट्रद्य विदायक

मनवी करन करर देने काचा । प्रजीत- ने वन करि पर-वन व बाने बोव की हुरव विदाश (सुरु सारु-सुर, ४२१०)

हत उत्तरका

प्रेम ये कथो होती। प्रकार — कर यदि केव करें शे थाना नश्च न देन उतार माता (कवी प्रथात -कवीर, १२३)

हेत सामा

वेम करना । प्रयोग —कारित वेट पढ़ाई करि, हरि सून लाया होत (कबीर ग्रंडा० - कठीर, ३६)

(पदा । पृशा -- हेत करवा)

हेपी देना

पुराहना, कायस्य देनी । प्रयोग-हेरी देत गला सब आल क्षे बरावर गेवा (शुर-हिल्डाव साव)

हेम-बेम

मोन-विकार । प्रधोण— इसी हैस सेंग से तीन दिन ग्राप्ट त्र (रग० (१) - देमचंद, 538)

हर रहना

(१) निर्धर करना, सन्दर्भन होना । प्रणीय—को आहो का स रक्षी मी विकि वह आम दिन सच-दुन्द श

(२) कही बाकर वही रह अला ।

नो सेना

हित्यन पत्न हो आना । प्रशेष-हुसरे कावर के बात-आले में हो विया या (गुठ कहात-पुलेशे, १२)

होड काइना

मीनरी कोष या साम बगढ करना । प्रयोग-सम किसी का देख कार्ट होड वर्षों (चुनते०-हरियोध, प्रश्) (समाव महाव - होत सदाना)

दोड ख्राडमर

कुछ कहना । प्रयोग-नर सवाधव गया मितम प्यामा कन हमारा सवा न अर भी सब (कुमलेठ-हरिक्रीय, वह)

होट शवाकर

पुरने से । प्रयोग-नहीं न जादें बढ़ा बढ़ाबी की होठ की करा बचा बचा होना (बीस०-हरिजीछ, १०१)

होड पर जाना या होता

कहते के लिए मूह तक घाना । प्रयोग — यस हते हम बना नहीं सकते होट कर बान तक नहीं भी क्या (गोल० — हरिजीध (१०१)

होट फरफना

प्रावेश वर कीम के कारण होटी में स्पंतन होता । क्योन— रहपट फाकत नगम रिजोर्डे (सम्ब० (कास)—सुलसी, आल); किस तरह बांद नव करक उटती होंड की यह कहब नहीं पाता (बोलo—हरिजोध, १०१)

होठ विवकाना

भवनि या उपेक्षा प्रगट अस्ती । प्रयोग—सम्ब सुन करके विवारों से भरी कम नहीं के होंठ विवकति रहें (बोलाः — हरिम्मीध, १०३)

होट मलना

पूर्वभव कोलने के कारण दंग केना। प्रयोग—जब निकनने लगे कलाम बुदे लोग नवीं होड़ तब न व प दंगे (वें संo — सुरिधोध, १०३)

होडों में कहना

यहम भीरे से कहना । प्रयोश—नशक्ति कृंद्र सोलकर यहमा जिसे मोन होठों में उसे कैसे कहें वोलक—हर्विकीय, १०२)

होंडों में मुसकराना

एंसा हंगना कि दान न दिये । धरीय- भी रहा दूल से समलता एक का मुश्कुराता एक होतों में रहा (क्रीक०-हरिजीश, १०२)

होभहार पेड के पत्ते शुद्ध से हरे होगा

मारफ से ही भावी अफता का प्रामान विकता । प्रणोप— होत हरे होने विश्वति दण, सुमति कहति वनवर्गत है (गीलाठ (शक्त)—तुलसी, प०)

(मगाव महाव-होतहार पेह के पत्ते खिकते होता)

होती कहता

अपना बोबन क्लांत कहना । प्रतीय-वानमीय नाग्द यदकोगी । निज निज युक्ति कही निज होनी (एम० (बाल) - जुलसी, ६)

होम कर देवा

- (१) जना रामता, तथ्ट करता । प्रयोग—हम स्रतिक कोड बीर नकान में नवकर सन्ते तीचन के यून बीर स्रात्निका होन कर देने हैं (एवन-ईसक्द दूर)
- (२) बत्वर्ग करना । प्रयोग—जब गानी वे धी-उ बायन गर्ज, नव का लगर्द और देश बानन, अब संपर्न को हीम देने (सामी०—इं० क्यां, १५२): बनोवी भी में पब को बाने के पृथक्ष नहीं बनावा, मैंसको उपने कमाए और हमार्थ उसी व होम दिश्य (कुमेरी एंड (१)—पृक्षेरी, २७४)

(1) mit ber :

होस काते हाच अल्ला

यान्य वार्ष करते कृत कम शिवना । प्रयोग—कृतरे दिव वानविद की भी जान्य ही नका x > नोशता का हीम करते हाय जना वित्र - शृंध कर्या. ३८३३; वर्ष्य रहन्ती की नगरी है, होन करते हाय जनते की बहा प्राय: मंत्राः बना गहनी है (वै कोहेंच - त्रच नाठ, ३१); संसार की भी क्या बीना है कि होन करते हाथ जनते हैं (१९० (३)---प्रेम्बंट, १०१)

होशी करना

नध्द करना । प्रयोग—चीवन मरवट पर चनने सब झर-यानों को कर होती (सोठ-बण्डल, १५४)

(नवा० नृद्ध--वोनी जानामा)

होत उड़ जाना

विकर्तमार्थवश्व ही जाता । प्रयोग-नाम, इन दोनों के चरित्र को देखकर वेदे तो दोश प्रद पर (माठ माठ (१) — किठ तोठ, प्रश्नो; यह खबर मूनते ही दोनों के होगा प्रद पर (१४० (१)-विमन्द, १६): पर कीतर पेट रखते ही उनके होस प्रद वर्षे (केटी०-निराता, ६)

(श्या न्ता - श्रीश काक्र होना)

होता डिकाने सगाना

- (१) वच्या नवक विकासना । धरोप-- वे अमरा होता अस्ट्री डिवाने कराजमा (मुग०-- वृ ० वर्मा, १८)
- (२) वर्ति तीक करती, 'सांति या भीत पूर होता ।

(जवा: नृहा:-होश ठिकाने बरना,-सामा)

हीसका बांधका



32克

होक फ़ास्ता हो जाना

मुख समध्य में न काला । अयोग—इस सीखें बंदे को देखकर देने तो होम आक्ता हो आते ये (अपनी सबर— एड. हु६): अयद अहोने बात व धानी तो दलने इनने सबाल किसे आधारे कि होता फाक्ता हो बायके (बंदिए— जिस्सा, २००)

हींथा होना

प्रतासना होना । स्वीय—हिन्दू के लिए उर्दू हम्बर सही है, व्यवसानों के लिए हिन्दी भने ही हम्बा ही (पट्टन परात —पट्टमा कमो, २०६)

हींस मिरता

इच्या पूरी होती । प्रधोय-विश्व न होत हान वा नवकी

The most one transfer of the control of the control

00 000 B. ALC 1946

(भार प्रेटा० (२) - भारतेन्द्र, ६१७)

हीसमा छलकरा

यन में इच्छा होनी । प्रयोग--होताल हो समस रहा दिल में (बुमरी०--हर्गओंच, ३४)

हीसका पस्त होना

वंशें कूट थाना । प्रयोग-न्तू ने तो ऐसी सट्ट भी बार की कि वेरे तभी होंसते पत्त हो नए (एका० एका०—राधा० दास, ७०४)

हीसका बांधना

हिन्यत या दुण्या करनी । प्रयोश-ही संकानया न होसला होचे (चुमते०-हरिजीय, ३०)

TOTAL SOUTH ASSESSMENT

CORP. CO. P. P. L. C. C. C. C.

19.3.71